शब्द-संख्या—२१०८२

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

चौथा खंड

[फ से ल]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रथम संस्करण
शकाब्द १८८७ : सन् १९६५

मूल्य
पच्चीस रुपया

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने कुछ वर्ष पूर्व 'मानक हिन्दी कोश' को पाँच खडो मे प्रकाशित करने की योजना कार्या-न्वित की थी। तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं। यह चौथा खंड हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्येताओ के हाथ मे प्रस्तुत करते हमे स्वभावत. हर्ष हो रहा है। पाँचवें खड के प्रकाशन मे भी हम यथासम्भव शीघ्रता कर रहे है। हमे आशा है कि इस कोश के सभी खडो के प्रकाशन के बाद इसके दूसरे सस्करण के प्रकाशन का काम भी शुरू करने की तुरत आवश्यकता पड़ेगी, क्योकि हिन्दी मे नये शब्दो की संख्या निरन्तर बढ रही है और हिन्दी की नयी आवश्यकताओ के कारण कोश की माँग भी देश के विभिन्न क्षेत्रो मे और विदेशो मे भी खूब बढ रही है।

पाँचवे खड के अत मे हम दो परिशिष्ट भी देंगे। इनमे से पहला परिशिष्ट ऐसे छूटे हुए शब्दो और अर्थो का होगा जो इस कोश के मुद्रण काल के उपरान्त सपादको के ध्यान मे आये है अथवा भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे प्रयुक्त होते हुए देखे गये हैं। दूसरे परिशिष्ट मे अँगरेजी हिन्दी शब्दावली होगी जिसमे अनुमानत. ७, ८ हजार ऐसे अँगरेजी शब्द होगे जो भिन्न-भिन्न राजकीय, वैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रो मे प्रचलित है और जिनके हिन्दी पर्याय प्राय लोग ढूँढा और पूछा करते हैं। इनमे से अधिकतर अँगरेजी शब्दो के हिन्दी पर्याय भारत सरकार की नयी वैज्ञानिक शब्दावली के अनुरूप ही होगे। साराश यह कि इस कोश को अद्यतन और परम उपयोगी बनाने मे हम अपनी ओर से कोई बात उठा नही रखेंगे। हमे आशा है कि इस कार्य मे हमे हिन्दी जगत् से उत्तरोत्तर और भी अधिक प्रोत्साहन तथा सहायता मिलती रहेगी।

पिछले प्रकाशित तीन खडो को मनीषियो, शब्द तत्त्ववेत्ताओ, साहित्यिको और हिन्दी प्रेमियो ने हिन्दी का प्रतिनिधि कोश मानकर उसका जो स्वागत किया है, उसमे हमे यह विश्वास है कि यह खड भी उन्ही पूर्व विशेषताओ के कारण ग्राह्य और स्वागतार्ह होगा।

चिन्तनशील समालोचको, कोशकारो तथा जागरूक पाठको से हमारा अनुरोध है कि इस खड की विशेषताओ और न्यूनताओ की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर हमे अनुगृहीत करे जिससे हम इस कोश के द्वारा हिन्दी के संवर्द्धन के प्रति अपना कर्तव्य पालन करने मे और अधिक समर्थ हो सके।

हम इस 'मानक हिन्दी कोश' के रचना सिद्धान्त तथा प्रकाशन के उद्देश्य से सबद्ध अपने संकल्प को यहाँ दोहराना चाहते हैं कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने गुरुतर कर्तव्य के प्रति निष्ठावान् बनकर सतत जागरूक रहेगा।

'मानक हिन्दी कोश' के प्रधान सपादक तथा उनके सहयोगियो एवं उन सभी लोगो के प्रति हम कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके सम्पादन, मुद्रण तथा प्रकाशन मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है।

मोहनलाल भट्ट
सचिव
प्रथम शासन-निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक मे) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो की बोली
इव०—इवरानी भाषा
उग्र०—पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र'
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कवीर०—कवीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोक०—कोकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थशास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि०प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावाद्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिव्वती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी०—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखे
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीर प्रसाद द्विवेदी
नपु०—नपुसकलिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
प०—पजावी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पु०—पुलिंग
पु० हि०—पुरानी हिन्दी
पुर्त०—पुर्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिंदी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशकर 'प्रसाद'
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रा०—फ्रासीसी भाषा
वंग०—वगाली भाषा
वर०—वरमी भाषा
वहु०—वहुवचन
विहारी—कवि विहारीलाल
बु० ख०—वुन्देलखण्डी बोली
भारतेन्दु—'भारतेन्दु' हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवाँ-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम 'रसखान'
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिन्दुस्तानी जहाजियों की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
सयो०—संयोजक अव्यय
सयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सि०—सिंधी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
हि०—हिन्दी भाषा

* यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

† यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० व०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पंचमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० व० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
व० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनो पाणिनीय व्याकरण के संकेत है। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दो की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दो की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रो से सम्भव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियो का प्रयोग किया जाता है। इन विधियो से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णो के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते है।

मानक हिन्दी कोश

चतुर्थ खण्ड

फ

फ—देवनागरी वर्णमाला का वाइसवाँ व्यजन जो पवर्ग के अन्तर्गत दूसरा वर्ण है तथा जो भाषा-विज्ञान और व्याकरण की दृष्टि से ओष्ठ्य, अघोष, महाप्राण तथा स्पृष्ट वर्ण है।

फंक—स्त्री०=१. फाँक। २. =फकी।

फँकनी†—स्त्री०=फकी।

फंका—पुं० [हिं० फाँकना] [स्त्री० अल्पा० फकी] १. अजुलि या हथेली मे लिया हुआ खाद्य पदार्थ (विशेषत दाने या बुकनी) फाँकने या झटके से मुँह मे डालने की क्रिया। २ खाद्य-पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी एक बार उक्त ढग से मुँह मे डाली जाती हो।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी चीज का) **फका करना**=नाश करना। नष्ट करना। **फंका मारना या लगाना**=मुँह मे रखकर फाँकना।

३. किसी चीज का छोटा खड या टुकडा।

फंकी—स्त्री० [हिं० फका] १. कोई चीज फाँकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जो फाँककर खाई जाय। ३ किसी चीज की उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जाय। (मुहा० के लिए दे० 'फका' के मुहा०) ४ किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा।

फंग—पु० [स० बध] १ बधन। २ फदा। ३. अधीनता। ४. अनुराग या प्रेम का बन्धन।

फंट†—पु०=फणि।

फंड—पु० [अ०] वह धन-राशि जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से इकट्ठी की गई अथवा अलग या सुरक्षित रखी गई हो। कोश। जैसे—चेरिटी फड, प्राविडेंट फड।

पु० [स०] उदर। जठर।

फंद—पु० [हिं० फदा] १ फदा। २. जाल। पाश। ३. किसी को फँसाने के लिए उसके साथ किया जानेवाला छल या धोखा। ४. फदे मे फँसने पर होनेवाला कष्ट। ५. कष्ट। दुःख। ६ मर्म। रहस्य। ७ नथ की काँटी को फँसाने का फदा। गूंज।

फंदना—अ० [हिं० फदा] १ फदे अर्थात् जाल मे फँसना। २. किसी के धोखे मे आना। ३. मुग्ध होना।

स० १. फदा या जाल विछाना। २. फदे मे फँसाना।

†स०=फाँदना।

फंदरा †—पु०=फदा।

फंदवार—वि० [हिं० फंदा+वार (प्रत्य०)] १. फाँदने अर्थात् फँदे या जाल मे दूसरो को फँसानेवाला। २. फदा विछानेवाला।

फंदा—पु० [स० पाश या वधन] १ रस्सी आदि मे एक विशेष प्रकार की गाँठ लगाकर बनाया जानेवाला घेरा जो किसी चीज को फँसाकर रखने या बाँधने के काम आता है। जैसे—(क) कूएँ से पानी निकालने के समय घडे के गले मे लगाया जानेवाला फदा। (ख) फाँसी पर लटकाने के लिए अभियुक्त के गले मे डाला जानेवाला उक्त प्रकार का घेरा।

क्रि० प्र०—देना।—बनाना।—लगाना।

पद—फंदेदार। (दे०)

२. कोई ऐसी कपटपूर्ण बात या योजना जिसका मुख्य प्रयोजन किसी को फँसाना होता है। ३ रस्सियो आदि का बुना हुआ जाल।

मुहा०— **फदा लगाना**=किसी को फँसाने के लिए छलपूर्ण आयोजन या युक्ति करना। **(किसी के) फदे में पड़ना या फँसना**=किसी के जाल या धोखे मे फँसना।

४ कोई ऐसी बात जिसमे पड़कर मनुष्य विवश हो जाता और कष्ट भोगता हो। ५ कुछ खाने या पीने के समय, अचानक हँसने आदि के कारण खाद्य या पेय पदार्थ का गले मे इस प्रकार अटक या रुक जाना कि आदमी बोल न सके। उदा०—किसी ने रूमाल मे हँसी रोकी तो किसी के गले मे चाय का फदा पड गया—अजीम बेग चगताई।

फँदाना—स० [हिं० फदना] ऐसा काम करना जिससे कोई फदे में जा फँसे।

†स० [हिं० फाँदना] किसी को फाँदने मे प्रवृत्त करना।

फँदावना† —स०=फँदाना।

फंदेदार—वि० [हिं०+फा०] जिसमे फदा लगा या बना हो।

पु० अकन, सीयन आदि मे ऐसी रचना, जिसमे एक कडी या लड के अन्तिम सिरे से कुछ पहले ही दूसरी कडी या लड का पहला सिरा आरम्भ होता है।

फंदैत† —पु० [हिं० फँदा+ऐत (प्रत्य०)] १ वह जो फदा डालकर या जाल विछाकर पशु-पक्षियो को फँसाता हो। बहेलिया। व्याध। २ वह पालतू तथा सिखाया हुआ पशु जो अपनी जाति के अन्य पशुओं को जाल मे फँसाता है।

फँफाना—अ० [अनु०] १. बोलने मे हकलाना। २ दूधमे उबाल आना।

फँसना—अ० [स० पाश, हिं० फांस] १. पाश अर्थात् फँदे मे पड़ना और फलत कसा जाना। २. किसी प्रकार के जाल मे इस प्रकार अटकना कि उससे छुटकारा या मुक्ति न हो सके। ३. किसी चीज मे किसी दूसरी चीज का इस प्रकार अन्दर चले जाना, अटकना या उलझना कि सहज मे वह वाहर न निकल सकती हो। जैसे—वोतल मे काग फँसना। ४. एक चीज मे दूसरी चीज का उलझकर अटक जाना। जैसे—काँटो मे पल्ला फँसना। ५. लाक्षणिक अर्थ मे, अधिक अथवा विकट कामो मे इस प्रकार व्यस्त रहना कि उनसे अवकाश या छुटकारा मिलने की जल्दी आशा न हो। जैसे—झझट या मुकदमे मे फँसना। ६ किसी की चिकनी-चुपडी या छलपूर्ण वातो मे आना और छला जाना। ७ पर-पुरुप या पर-स्त्री के प्रेम मे पडने के कारण उससे ऐसा अनुचित सवध स्थिर होना जो जल्दी छूट न सके।

फँसनी—स्त्री० [हिं० फँसना] एक प्रकार की हथौड़ी जिससे कसेरे लोटे, गगरे आदि का गला वनाते हैं।

फँसरी†—स्त्री० १. =फाँसी। २ =फँसौरी।

फँसवार†—पु०=फदा।

फँसाना—स० [हिं० फँसना] १. ऐसा काम करना जिससे कोई चीज फँसती हो। वधन, फदे या जाल मे लाना और जकडकर रखना। २. कोई चीज इस प्रकार अटकाना या किसी दूसरी चीज मे उलझाना कि वह जल्दी छूट न सके। जैसे—वोतल मे काग फँसाना। ३. धन आदि किसी ऐसे व्यक्ति को देना या ऐसी स्थिति मे लगा रखना कि उससे या वहाँ से जल्दी वह लौटकर प्राप्त न हो सकता हो। ४. किसी चाल, युक्ति आदि के द्वारा किसी को इस प्रकार अपने अधिकार मे लाना कि उसे ठगा या धोखा देकर अपना स्वार्थ साधा जा सके। जैसे—असामी फँसाना। ५. पर-पुरुप या पर-स्त्री को अपने प्रेम-पाश मे आवद्ध करके उससे अनुचित सवध स्थापित करना।

फँसाव—पु० [हिं० फँसना+आव (प्रत्य०)] १. फँसने की क्रिया या भाव। २ ऐसी चीज या वात जो दूसरों को फँसाने के लिए हो।

फँसिहारा†—वि० [हिं० फांस+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला।

फँसौरी†—स्त्री० [हिं० फांसना+औरी (प्रत्य०)] १. फदा। पाश। २ वह रस्सी जिसके फदे मे अभियुक्त का गला फँसाकर उसे फांसी दी जाती है।

फ—पु० [स०√फक्क् (नीचे जाना)+ड] १. कटु वाक्य। रूखी वात। २. दुत्कार। ३. व्यर्थ की वातें। ४. यज्ञ करना। ५. अवड। आँधी। ६ जँभाई। ७. फल की प्राप्ति।

फक—वि० [स० स्फटिक] १. स्वच्छ। साफ। २ खूव सफेद।
वि० [फा० फक] १ (व्यक्ति) भय, लज्जा आदि के कारण जिसके चेहरे का रग उड़ गया हो।
क्रि० प्र०—होना।—पडना।
पद—फक रेहन=रेहन रखी हुई चीज का वधक से मुक्त होना।
मुहा०—फक कराना=रेहन रखी हुई चीज धन देकर छुटाना।

फकड़ा†—पु० [हिं० फक्कड] वहुत ही निम्न कोटि और व्यर्थ की कविता या तुक-वदी।

फकड़ी—स्त्री० [हिं० फक्कड] १. फक्कड़पन। २. दुर्दशा। दुर्गति।

फकत—अ० य० [अ० फकत] १. वस इतना ही। २ केवल। सिर्फ।

फकर*—पु०=फखर (गर्व)।

फका†—पु०=१. फका। २.=फाँक।

फकीर—पु० [अ० फकीर] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी; भाव० फकीरी] १. भीख अथवा भीख के रूप मे कोई चीज माँगनेवाला व्यक्ति। २. त्यागी। महात्मा। ३. सत। साधु। ४. वहुत ही निर्धन व्यक्ति। कगाल।

फकीरी—स्त्री० [हिं० फकीर+ई (प्रत्य०)] १ ऐसी अवस्था जिसमे कोई भीख माँगकर निर्वाह करता हो। फकीर होने की अवस्था या भाव। २. कगालपन। निर्धनता।
वि० फकीर-सम्वन्धी। फकीर का। जैसे—फकीरी दवा।
पु० एक प्रकार का अगूर।

फक्कड़—पु० [हिं० फाका=उपवास] [भाव० फक्कडपन] १ ऐसा निर्धन व्यक्ति जो फाको या उपवासो के वावजूद भी खुश और मस्त रहता हो। २ ऐसा व्यक्ति जो वहुत ही वुरी तरह से या लापरवाह होकर धन उडाता हो और अपने भविष्य का कुछ भी ध्यान न रखता हो। ३. वहुत वडा उच्छृखल और उद्धत व्यक्ति। ४ फकीर। भिखमगा।
पु०[स० फक्किका] अश्लील वातें और गाली-गलीज। कुवाच्य।
क्रि० प्र०—वकना।
मुहा०—फक्कड़ तौलना=गाली-गुफ्ता वकना। कुवाच्य कहना।

फक्कड़वाज—पु० [हिं०+फा०] [भाव० फक्कडवाजी] वह जो वहुत फक्कड अर्थात् गाली-गुफ्ता वकता या प्राय अश्लील वातें करता हो।

फक्कड़ाना—वि० [हिं० फक्कड+ आना (प्रत्य०)] १ फक्कडो का। २ फक्कड़ो की तरह का।

फक्किका—स्त्री० [स०√फक्क्+ण्वुल् (भाव मे)—अक,+टाप्, इत्व] १. वह वात जो शास्त्रार्थ मे दुरूह स्थल को स्पष्ट करने के लिए पूर्व-पक्ष के रूप मे कही जाय। कूट-प्रश्न। २ अनुचित व्यवहार। ३ धोखे-वाजी।

फक्कुल्रेहन—पुं० [अ०] वधक या रेहन रखी हुई चीज छुडाना।

फखर—पु० [फा० फख्र] सात्त्विक अभिमान। गौरवजन्य गर्व। जैसे—अपनी कौम या मुल्क का फखर।

फख्र—पु०=फखर।

फग†—पुं०=फग (वधन)।

फगवा—पु०=फगुआ (फाग)।

फगुआ—पु० [हिं० फागुन] १ होलिकोत्सव का दिन। होली। २ उक्त अवसर पर होनेवाला आमोद-प्रमोद। ३ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले एक तरह के अश्लील गीत। फाग। ४ उक्त अवसर पर दिया जानेवाला उपहार, भेंट या त्योहारी।

फगुआना—स० [हिं० फगुआ] फागुन के महीने मे किसी के ऊपर रग छोड़ना या उसे सुनाकर अश्लील गीत गाना।
अ० फागुन के महीने मे इतना अधिक उच्छृखल तथा मस्त होना कि सम्यता का ध्यान न रह जाय।

फगुनहट—स्त्री० [हिं० फागुन+हट (प्रत्य०)] १. फागुन मास की तेज हवा।

क्रि० प्र०—चलना।
२ फागुन मे होनेवाली वर्षा।
फगुनिया—पु० [हिं० फागुन+इया (प्रत्य०)] त्रिसधि नामक फूल। वि० १ फागुन-सबधी। फागुन का। २ फागुन मास मे होनेवाला।
फगुहरा†—पु०=फगुहारा।
फगुहारा—पु० [हिं० फगुआ+हारा (प्रत्य०)] १ वह जो फाग खेलता हो। विशेषत ऐसा व्यक्ति जो दूसरो के यहाँ फाग खेलने के लिए जाय। २ फाग नामक गीत गानेवाला व्यक्ति।
फजर—स्त्री० [अ०फज्र] १. प्रात काल। सवेरा। २. प्रात काल के समय पढी जानेवाली नमाज।
फजल—पु० [अ० फज्ल] अनुग्रह। कृपा। मेहरवानी।
फजा—स्त्री० [अ० फजा] [वि० फजाई] १. खुला हुआ मैदान। विस्तृत क्षेत्र। २ शोभा। ३ मनोरजक और सुन्दर वातावरण। ४. वातावरण।
फजिअत†—स्त्री०=फजीहत।
फजिर†—स्त्री०=फजर।
फजिल†—पु०=फजल।
फजिहतिताई*—स्त्री० [अ० फ़ज़ीहत] १ फजीहत। २. फजीहत करानेवाली वात।
फजीता†—पु०=फजीहत।
फजीती†—स्त्री०=फजीहत।
फजीलत—स्त्री०[अ० फज़ीलत] १ उत्कृष्टता। श्रेष्ठता। २ प्रधानता।
पद—**फजीलत की पगड़ी**=(क) विद्वता-सूचक पगडी। (ख) विद्वत्ता सूचक कोई चिह्न। (मुसलमानो मे एक प्रथा है जिसमे वे गुणी और विद्वान् व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए उसके सिर पर पगडी वाँधते हैं।)
फजीहत—स्त्री० [अ० फजीहत] १ पूरी या वहुत अधिक दुर्दशा। कलककारी तथा घृणित रूप मे होनेवाली खराबी। २ वहुत ही घृणित और हेय रूप मे होनेवाला झगडा या तकरार।
पद—**थुक्का-फजीहत**। (दे०)
फजीहती†—स्त्री०=फजीहत।
फजूल—वि० [अ० फुजूल] जो किसी काम का न हो। निरर्थक। अव्य० व्यर्थ। वे-फायदा।
फजूलखर्च—वि० [अ+फा०] अधिक खर्च करनेवाला। अपव्ययी। पु० व्यर्थ का व्यय। अपव्यय।
फजूलखर्ची—स्त्री० [अ+फा०] व्यर्थ वहुत अधिक व्यय करना। अपव्यय। फजूलखर्च।
फज्ल—पु०=फजल।
फट—स्त्री० [अनु०] १ फटने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के फटने से होनेवाला शब्द। ३ मोटर, मशीन आदि के चलने अथवा चिपटी हलकी चीज के आघात से होनेवाला शब्द।
पद—**फट से या फटाफट**=वहुत जल्दी। तुरन्त।
†स्त्री०=फटकार।
फटक—स्त्री० [हिं० फटकना] १ फटकने की क्रिया या भाव। २. अन्न को फटकने पर उसमे से निकलनेवाला रद्दी अश। फटकन।
†पु०=स्फटिक।
†पुं०=फाटक।
†अव्य० [हिं० फट] फट से। तत्काल। तुरन्त।
फटकन—स्त्री० [हिं० फटकना] १. फटकने की क्रिया या भाव। २. फटकने, झाडने आदि पर निकलनेवाली धूल, मिट्टी आदि। ३. अनाज फटकने पर निकलनेवाला निरर्थक या रद्दी अश।
फटकना—स० [अनु० फट] १ फट-फट शब्द करना। २ कपड़े को इस प्रकार झटके से झाड़ना कि उसमे लगी हुई धूल तथा पड़ी हुई सिलवटें निकल जायँ। ३. पटकना। ४. अस्त्र आदि चलाना या फेंकना। ५ सूप मे अनाज रखकर उसे इस प्रकार वार वार उछालना कि उसमे मिला हुआ कूडा-करकट छँटकर अलग हो जाय।
मुहा०—**फटकना-पछोड़ना**=(क) सूप या छाज पर रखा हुआ अन्न हिलाकर साफ करना। (ख) अच्छी तरह देख-भालकर पता लगाना कि कही कोई त्रुटि या दोष तो नही है।
६ रूई आदि फटके या धुनकी से धुनना।
अ० १ किसी का इस प्रकार कही जा या पहुँचकर उपस्थित होना कि लोग उसकी उपस्थिति का अनुभव करने लगें।
विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग अधिकतर नहिक रूप मे होता है। जैसे—वहाँ कोई फटक नही सकता (या फटकने नही पाता)। पर कुछ उर्दू कवियो ने इसका प्रयोग सहिक रूप मे भी किया है। जैसे—अक्सर औकात आ फटकते है।
२ अलग या दूर होना। न रह जाना। ३ विवशता की दशा मे हाथ-पैर पटकना। फटफटाना। ४ कुछ करने के लिए हाथ-पैर हिलाना। प्रयत्नशील होना।
पुं० गुलेल का फीता जिसमे गुल्ला रखकर फेंकते है।
फटकनी—स्त्री० [हिं० फटकना] १ फटकने की क्रिया या भाव। २ अनाज फटकने का सूप।
फटकरना—अ० [हिं० फटकारना का अ०] फटकारा जाना।
†स०=फटकना।
फटकरी—स्त्री०=फिटकरी।
फटकवाना—स० [हिं० फटकना का प्रे०] फटकने मे प्रवृत्त करना। फटकने का काम किसी से कराना।
फटका—पु० [अनु०] १. फटफटाने अर्थात् विवश होकर हाथ-पैर पटकने की क्रिया या भाव। २ धुनिये की धुनकी जिससे वह रूई आदि धुनता है।
क्रि० प्र०—खाना।
३. फले हुए पेडो मे वँधी हुई वह लकडी जिसके साथ वँधी हुई रस्सी हिलाने से उससे फट-फट शब्द होता है। (इससे फल खानेवाली चिड़ियाँ वहाँ से उड जाती या पास नही आती।) ४ काव्य के रस आदि गुणो से हीन ऐसी कविता जिसमे वहुत सी साधारण तुकवन्दी के सिवाय कुछ भी न हो।
क्रि० प्र०—जोडना।
पु० [हिं० फटकन] एक प्रकार की वलुई भूमि जिसमे पत्थर के टुकडे अधिक होते है। इसी कारण यह उपजाऊ नही होती।

†पु०=फाटक।

फटकाना—स० [हि० फटकना] १. किसी को कुछ फटकने मे प्रवृत्त करना। फटकवाना। २. अलग करना। ३ फेंकना।

फटकार—स्त्री० [हि० फटकारना] १. फटकारने की क्रिया या भाव। २. ऐसी कठोर बात जिससे किसी की भर्त्सना की जाय। फटकार कर कही हुई बात। झिड़की। दुत्कार।
क्रि० प्र०—पड़ना।—बताना।—सुनना।—सुनाना।
३ शाप। (क्व०) ४. वह कोड़ा या चाबुक जो घोडो को सधाने-सिखाने के समय जोर की आवाज करने के लिए चलाते या फटकारते हैं।

फटकारना—स० [अनु०] १. कोई चीज इस प्रकार वेगपूर्वक और झटके से हिलाना कि उसमे से फट शब्द हो। जैसे—कोड़ा या चाबुक फटकारना। २. एक मे मिली हुई बहुत सी चीजें इस प्रकार हिलाना या झटका मारना जिसमे वे छितरा जायँ। जैसे—जटा या दाढी फटकारना। ३ इस प्रकार झटके से हिलाना कि कोई चीज दूर जा पडे। झटकारना। ४. शस्त्र आदि का प्रहार करने के लिए इधर-उधर हिलाना। जैसे—गदा फटकारना। ५. कपड़े को पत्थर आदि पर पटक कर धोना। ६ क्रुद्ध होकर किसी से ऐसी कड़ी बातें कहना जिससे वह चुप हो जाय या लज्जित होकर दूर हट जाय। खरी और कड़ी बातें कहकर चुप कराना। जैसे—आप जब तक उन्हे फटकारेंगे नही, तब तक वे नही मानेंगे।
सयो० क्रि०—देना।
७. बहुत शान से या ऐंठ दिखाते हुए धन अर्जित या प्राप्त करना। जैसे—दस-पाँच रुपए रोज तो वह बात की बात मे फटकार लेता है।
सयो०क्रि०—लेना।

फटकिया—पु० [देश०] मीठा नामक विष का एक भेद जो गोबरिया से कम विषैला होता है।

फटकी—स्त्री० [हि० फटक] १. वह झाबा जिसमे बहेलिया पकड़ी हुई चिड़ियाँ रखते है। २. दे० 'फटका'।

फटकेबाज—पु० [हि० फटका+फा० बाज़] [भाव० फटकेबाजी] वह जो बहुत ही निम्न कोटि और बाजारू कविताएँ करता हो।

फटन—स्त्री० [हि० फटना] १. फटने की क्रिया या भाव। फटने के कारण किसी चीज मे पड़नेवाली दरार या बननेवाला रेखाकार चिह्न। ३. भूगोल मे, चट्टानों आदि पर दबाव पड़ने के कारण होनेवाली दरार। (क्लीवेज)

फटना—अ० [हि० फाड़ना का अ० रूप] १. आघात लगने के कारण या यों ही किसी चीज का बीच मे से इस प्रकार खडित होना या उसमें दरार पड़ जाना कि अन्दर की चीजें बाहर निकल पड़ें या बाहर से दिखाई देने लगें। जैसे—जमीन या दीवार फटना।
मुहा०—फट पड़ना=अचानक बहुत अधिक मात्रा मे आ पहुँचना। सहसा आ पड़ना। जैसे—(क) दौलत तो उनके घर मानो फट पडी है। (ख) आफत तो उनके सिर मानो फट पड़ी है। **फटा पड़ना**=इतनी अधिकता होना कि अपने आधार या आधान मे समा न सकें। जैसे—उसका रूप तो मानों फटा पड़ता था।
२. किसी पदार्थ का बीच से कटकर अलग या दो टुकड़े हो जाना। जैसे—कपडा फटना। ३ बीच या सीध मे से निकलकर किसी ओर असगत रूप से बढना या अलग होकर दूर निकल जाना।
मुहा०—फट जाना या पड़ना—बीच या सीध मे से अचानक निकलकर इधर या उधर हो जाना। जैसे—यह घोडा चलते चलते रास्ते मे फट पड़ता है; अर्थात् अचानक सीधा रास्ता छोडकर दाहिनी या बाईं ओर बढ जाता है।
४. किसी गाढे द्रव पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी अलग और सार भाग अलग हो जाय। जैसे— खून फटना, दूध फटना। ५ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अग मे ऐसी पीडा या वेदना होना कि मानो वह अग फट जायगा। जैसे—दरद के मारे आँख या सिर फटना, बहुत अधिक थकावट के कारण पैर फटना, हो-हल्ले से कान फटना। ६ लाक्षणिक रूप मे, मन या हृदय पर ऐसा आघात लगना कि उसकी पहलेवाली साधारण अवस्था न रह जाय। जैसे—किसी के दुर्व्यवहार से चित्त (मन या हृदय) फटना, शोक से छाती फटना। ७. किसी चीज या बात का अपनी साधारण या प्रसम अवस्था मे न रहकर विकृत अवस्था मे आना या होना। जैसे—चिल्लाते-चिल्लाते आवाज (या गला) फटना। ८ किसी पर विपत्ति के रूप मे आकर गिरना। उदा०—सीता असगुन कों कटाई नाक बार, सोई अब कृपा करि राधिका पै फेर फाटी है।—रत्ना०।

फट-फट—स्त्री० [अनु०] १. फट-फट शब्द। जैसे—(क) चप्पल या जूते की फट-फट। (ख) मोटर की फट-फट। २. व्यर्थ की बकवाद। ३ कहा-सुनी। तकरार।

फटफटाना—स० [अनु०] फट-फट शब्द उपन्न करना।
अ० १. फट-फट शब्द करते हुए इधर-उधर व्यर्थ घूमना। मारा मारा फिरना। २. विवश होने पर कुछ चिन्तित या विकल होना। ३. व्यर्थ का प्रलाप या बकवाद करना।

फटहा†—वि० [हि० फटना] १ फटा हुआ। २ अड-बड और अश्लील बातें बकनेवाला।

फटा—वि० [हि० फटना] १ जो फट गया हो। जैसे—फटा कपडा।
मुहा०—किसी के फटे में पैर देना=दूसरे की विपत्ति अपने सिर लेना।
२ जो बहुत ही बुरी या हीन अवस्था मे आ गया हो।
पद—फटे हाल (या हालों)=बहुत ही दुर्दशाग्रस्त रूप मे। जैसे—महीने भर मे ही भागा हुआ लडका फटेहाल (या हालों) घर आ पहुँचा।
३. जो बहुत ही विकृत अवस्था मे हो। जैसे—फटी आवाज़।
पु० किसी चीज के फटने से बना हुआ गड्ढा या दरार।
स्त्री० [स० फट+टाप्] १. साँप का फन। २. अभिमान। घमड। ३. छल। धोखा। ४ छिद्र। छेद।

फटाका—पु० [अनु०] फट की तरह होनेवाला जोर का शब्द।

फटाटोप—पुं० [सं० प० त०] साँप का फैला हुआ फन।

फटाना†—स्त्री० [हि० फटना] १. फटन। २. वृक्ष का खोडर।

फटिक—पु० [स० स्फटिक, पा० फटिक] १ स्फटिक। बिल्लौर। २. सग-मरमर।

फटिका—स्त्री० [स० स्फटिक] १. एक प्रकार की शराब जो

जौ आदि से खमीर उठाकर बिना चुवाए बनाई जाती है। २. गुलेल की डोरी के बीचो-बीच रस्सी से बुनकर बनाया हुआ वह चौकोर हिस्सा जिसमे मिट्टी की गोली रखकर चलाई जाती है। उदा०—बीच परे भौंर फटिका से सुधरत हैं।—सेनापति।

फटीचर—वि०[हिं० फटा+चीर?] १. (व्यक्ति) जो फटे-पुराने कपडे पहनता हो या पहने रहता हो। २ बहुत ही तुच्छ या हेय।

फटेहाल—क्रि० वि०[हिं०+अ०] बहुत ही दीन या बुरी अवस्था मे। दुर्दशाग्रस्त रूप मे।

फट्टा—पु० [हिं० फटना] [स्त्री० अल्पा० फट्टी] १. लकडी आदि को चीरकर निकाला हुआ छोटा तख्ता। २. बाँस आदि को चीरकर निकाला हुआ पतला खंड या छड।

पु०[स० पट] टाट।

मुहा०—फट्टा उलटना=टाट उलटना। दिवाला निकालना।

फट्टी—स्त्री०[हिं० फट्टा] १ छोटा तख्ता। २ बाँस की चिरी हुई पतली छडी। ३. बच्चो के लिखने की पटिया। पट्टी। (पश्चिम)

फड़—पु०[स० पण] १. वह कपडा जो छोटे दुकानदार जमीन पर बिक्री की चीजें सजाकर रखने के लिए बिछाते हैं। २ कोठी, दूकान आदि का वह भाग जहाँ बैठकर चीजें खरीदी और बेची जाती हैं।

पद—फड़ पर=मुकाबले मे। सामने। उदा०—भगे बलीमुख महाबली लखि फिरें न फट (फड) पर झेरे।—रघुराज।

३. बिछावन। बिछौना। उदा०—सूल ,से फूलन के फर (फड) पैंतिय फूल-छरी सी परी मुरझानी। ४. जूएखाने मे, वह स्थान जहाँ जुआरी बैठकर जूआ खेलते हैं। ५. दल। समूह।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पु० [स० पटल पा फल] १. गाड़ी का हरसा। २. वह गाडी जिस पर तोप रखकर ले चलते हैं। चरख।

† पु०=फल।

फड़क—स्त्री० [हिं० फडकना] फड़कने की क्रिया या भाव। फडकन।

फड़कन—स्त्री० [हिं० फड़कना] १ फड़कने की क्रिया या भाव। फड़क। फड़फड़ाहट। २. धड़कन। ३. उत्सुकता।

वि० १ भडकनेवाला। जैसे—फडकन बैल। २ चचल। ३. तेज।

फड़कना—अ० [अनु०] १ इस प्रकार बार बार नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना कि फड-फड शब्द हो। २. शरीर के किसी अग मे स्फुरण होना। अग का वायु-विकार आदि के कारण रह-रहकर थोडा उभरना और दबना। जैसे—आँख या कँधा फडकना।

मुहा०—(किसी की) बोटी-बोटी फड़कना=(किसी का) बहुत अधिक चंचल होना।

३ कोई बहुत बढिया या विलक्षण चीज देखकर या बात सुनकर मन मे उक्त प्रकार का स्फुरण होना जो उस चीज या बात के विशेष प्रशसक होने का सूचक होता है।

सयो० क्रि०—उठना।—जाना।

४. पक्षियो के पर हिलना। फड़फडाना।

† अ०=फटकना।

फड़काना—स० [हिं० फड़कना का प्रे०] १. किसी को फड़कने मे प्रवृत्त करना। २ उत्तेजित करना। भड़काना। ३. विचलित करना। ४. हिलाना-डुलाना।

फड़का-पेलन—पु० [देश०] एक प्रकार का बैल जिसका एक सींग सीधा ऊपर को उठा और दूसरा नीचे को झुका होता है।

फड़नवीस—पुं० [फा० फर्दनवीस] मराठो के राजत्वकाल का एक राजपद।

विशेष—मूलत यह पद राजसभा के साधारण लेखकों को दिया जाता था। पर बाद मे यह दीवानी या माल विभाग के ऐसे कर्मचारियों को भी दिया जाने लगा था जो बडे-बड़े इनाम या जागीरें देने की व्यवस्था करते थे।

फड़फड़ाना—अ० [अनु०] १. फड-फड़ शब्द होना। २ पक्षियो आदि का पकड़े जाने पर बधन से निकल भागने के लिए जोरो से पर मारते हुए फड-फड शब्द करना। ३. लाक्षणिक अर्थ मे घोर कष्ट, विपत्ति, सकट आदि से अत्यधिक सतप्त होना और उससे छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करना। ४. विशेष उत्सुकता के कारण चंचल होना।

स० १ कोई चीज बार-बार हिलाकर फड़-फड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे—पर फडफडाना। २ दे० 'फटफटाना'।

फडबाज—पु० [हिं० फड+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० फडबाजी] वह जो अपने यहाँ जूआ खेलने के लिए बुलाता हो। अपने यहाँ लोगो को जूआ खेलानेवाला व्यक्ति।

फड़िया—पु० [हिं० फड=दुकान+इया (प्रत्य०)] १ वह बनिया जो फुटकर अन्न बेचता हो। २. वह जो अपने यहाँ जूए का फड़ रखकर लोगों को जूआ खेलाता हो। फडबाज।

फड़ी—स्त्री० [हिं० फड़] ईंटो, पत्थरो आदि का परिमाण स्थिर करने के लिए लगाया जानेवाला वह ढेर जो तीस गज लम्बा, एक गज चौडा और एक गज ऊँचा हो।

फडुआ† —पुं० [स्त्री० फडुही] =फावडा।

फडई, फड़ही—स्त्री० १. फरुही। २. छोटा फावडा।

फड़ोलना† —स० [स० स्फुरण] किसी चीज को उलटना-पलटना। इधर-उधर या ऊपर-नीचे करना।

फण—पु० [स०√फण् (विस्तृत होना)+अच्] १ साँप के सिर का वह रूप जब वह अपनी गर्दन के दोनों ओर की नलियों मे वायु भरकर उसे फुलाकर छत्राकार बना लेता है। फन। २. रस्सी का गाँठदार फदा। मुद्धी। ३ नाव का ऊपरी अगला भाग।

फणकर—पु० [म० ब० स०]=फणधर।

फणधर—पु० [स० ष० त०] साँप।

फणा—स्त्री० [स० फण+टाप्]=फण।

फणाकृति—वि० [स० फणा-आकृति, ब० स०] साँप के फन के आकार का। गोलाकार छितराया या फैला हुआ।

फणि-कन्या—स्त्री० [सं० ष० त०] नागकन्या।

फणि-केसर—पुं० [ब० स०] नागकेसर।

फणि-चक्र—पु० [स० मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे नाडीचक्र जो सर्पाकार होता है और जिससे विवाह मे वर-कन्या का नाड़ी मिलान किया जाता है। नाडीनक्षत्र। (दे०)

फणिजिह्वा, फणिजिह्विका—स्त्री० [स० ष० त०] १ महाशतावरी। बडी सतावर। २ कघी नाम का पौधा।

फणित—भू० कृ० [स०√फण्+क्त] १ गया हुआ। गत। २. तरल किया हुआ।

फणि-तल्पग—पु० [स० फणि-तल्प, उपमि० स०, √गम्+ड] विष्णु।

फणि-नायक—पु० [स० प० त०] वासुकि।

फणि-पति—पु० [स० प० त०] १ वासुकि। २ पतजलि।

फणि-प्रिय—पु० [स० प० त०] वायु। हवा।

फणि-फेन—पु० [स० प० त०] अफीम।

फणि-भाष्य—पु० [स० मध्य० स०] पाणिनी के सूत्रो पर लिखा हुआ पतजलि कृत महाभाष्य नामक व्याकरण ग्रथ।

फणि-भुज्—पु० [स० फणिन्√भुज् (खाना)+क्विप्] वह जो साँपो का भक्षण करता हो। जैसे—गरुड, मोर आदि।

फणि-मुक्ता—स्त्री० [स० ष० त०] साँप की मणि।

फणि-मुख—पु० [सं० ब० स०] साँप के मुख के आकार का एक तरह का पुरानी चाल का औजार जिससे चोर मकानो मे सेंध लगाते थे।

फणि-लता—स्त्री० [उपमि० स०] नागवल्ली। पान की लता।

फणि-वल्ली—स्त्री०=फणिलता।

फणींद्र—पु० [सं० फणिन्-इद्र, प० त०] १ शेषनाग। २ वासुकि। ३. फनवाला साँप।

फणी (णिन्)—पु० [स० फण+इनि] १ साँप। २ केतुग्रह। ३. सीसा। ४ मरुआ नामक पौधा। ५ सर्पिणी नामक ओषधि।

फणीश—पु० [स० फणिन्-ईश, प० त०] १ शेषनाग। २ वासुकि। ३. पतजलि।

फणीश्वर—पु० [सं० फणिन्-ईश्वर, प० त०]=फणीश।

फणीश्वर-चक्र—पु० [सं० मध्य० स०] शनि की नक्षत्र-स्थिति के आधार पर जबू, प्लक्ष आदि सात द्वीपो का शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र। (ज्यो०)

फतवा—पु० [अ० फत्वा] धर्म-गुरु विशेषत किसी मुसलमान धर्म-गुरु द्वारा धर्म-सबधी किसी विवादास्पद बात के संबध मे दिया हुआ शास्त्रीय लिखित आदेश। व्यवस्था।

फतह—स्त्री० [अ० फत्ह] १ युद्ध मे होनेवाली विजय। जीत। २. किसी काम मे होनेवाली महत्त्वपूर्ण सफलता। कामयाबी।

फतह-पेंच—पु० [अ० फत्ह+हिं० पेच] १ पगडी बाँधने का एक विशिष्ट ढग या प्रकार। २ स्त्रियो के बाल गूँथने और चोटी बाँधने का एक विशिष्ट ढग या प्रकार। ३ हुक्के का एक प्रकार का नैचा।

फतहमंद—वि० [अ० +फा०] [भाव० फतहमदी] १ विजयी। २ सफल।

फतहयाब—वि० [अ०+फा०] [भाव० फतहयाबी]=फतहमद।

फतिंगा—पु० [स० पतग] [स्त्री० फतिंगी] १ पाँवोवाला कोई छोटा कीडा। २ पाँवोवाला वह छोटा कीडा जो आग की लपट या दीए की लौ के चारो ओर घूमता रहता है और अत मे जल मरता है।

फतीर—पु० [अ० फतीर] चपातियाँ आदि पकाने के लिए गूँथा तथा सँवारा हुआ ताजा आटा। ('खमीर' इसी का विपर्याय है।)

फतील—पु० [अ० फतील] १ दीए की वत्ती। २ वह बत्ती जो भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए जलाई तथा प्रेत-बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को दिखलाई जाती है। पलीता।

फतीलसोज—पु० [फा० फतीलसोज] १ धातु की वह चौ-मुखी दीअट जिसमें नीचे-ऊपर कई दीये जलाये जाते हैं। २ दीअट।

फतीला—पुं० [अ० फतील] १. दीये की बत्ती। २ बत्ती। ३. जरदोजी का काम करनेवालो की लकडी की वह तीली जिस पर बेलबूटे और फूलो की डालियाँ बनाने के लिए कारीगर तार को लपेटते है। दे० 'पलीता'।

†पु०=पतीला (बरतन)।

फतुही†—स्त्री०=फतूही।

फतूर—पु० [अ० फुतूर] १. दोप। विकार। २. उत्पात। उपद्रव। ३ बाधा। विघ्न। ४ शरारत।

फतूरिया—वि० [हिं० फतूर+इया (प्रत्य०)] १ उपद्रवी। २. शरारती।

फतूह—स्त्री० [अ० फत्ह के बहुवचन रूप फुतूह से] १ विजय। २ विजय के उपरात लूट-पाट मे मिला हुआ धन या सम्पत्ति। ३ प्राप्ति। लाभ। ४. समृद्धि। ५ ऊपर से होनेवाली आय।

फतूही—स्त्री० [अ० फुतूही] बिना बाहों की एक तरह की कुरती या बडी। स्त्री० [अ० फुतूह] लूट-पाट मे प्राप्त किया हुआ धन।

फते†—स्त्री०=फतह।

फतेह—स्त्री०=फतह।

फदकना—अ० [अनु०] १ फद- द शब्द होना। २ भात, रस आदि का पकते समय फद-फद शब्द करके उछलना। खद-बद करना। †अ०=फुदकना।

फदका†—पु० [हिं० फदकना] गुड का वह पाग जो बहुत अधिक गाढा न हुआ हो।

फदफदाना—अ० [अनु०] १ फदफद शब्द होना। २ वृक्षो मे नई कोपलें या पत्तियाँ निकलना। ३ शरीर मे बहुत सी फुसियाँ या गरमी के दाने निकल आना। ४. फदकना। स० फद-फद शब्द उत्पन्न करना।

फदिया†—स्त्री० =फरिया (एक तरह का लहँगा)।

फदुक्का†—पु० [हिं० फुदकना] टिड्डी का छोटा बच्चा।

फन—पु० [स० फण] साँप के सिर के आसपास का वह भाग जिसे साँप आवेश अथवा मस्ती मे हवा भरकर फुला और फैला लेता है। **मुहा०—फन मारना**=आवेश में आकर विशेष प्रयत्न करना।
पु० [फा० फन] १ गुण। खूबी। २ विद्या। ३ कला। ४ दस्तकारी। ५. चालबाजी। धूर्तता। ६. कौशल।
पद—हरफन मौला=बहुत ही कुशल व्यक्ति। हर काम मे होशियार।

फनकना—अ० [अनु०] १ फनफन शब्द करना। जैसे—बैल या साँप का फनकना। २ इस प्रकार तेजी से चलना कि हवा से वस्त्र फनफन करने लगे।

फनकार†—स्त्री० [अनु०] १ फन-फन होनेवाला शब्द। २ वह फन-फन शब्द जो साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से होता है।

फनगना—अ० [हिं० फुनगा] १. वृक्षो आदि का फुनगियो अर्थात् अकुरो से युक्त होना। २ अच्छी तरह उन्नति करना।

फनगा—पु० [सं० पतग] फतिंगा।

†पु०=फुनगा।

फनना—अ० [हिं० फाँदना] १ फदा बनना या लगना। २. काम का आरम्भ होना। ठनना।

फनफनाना—अ० [अनु०] १ मुँह से हवा छोड़कर फन फन शब्द उत्पन्न करना। जैसे—साँप का फनफनाना। २. चचलतापूर्वक इधर-उधर हिलना।

फनस—पु० [सं० पनस, प्रा० फनस] कटहल।

फना—स्त्री० [अ० फना] १. पूरा विनाश। बरबादी। २ मृत्यु। मौत। ३ सूफी मत मे, भक्त का परमात्मा मे लीन होना।

वि० नष्ट। बरबाद।

फनाना—स० [हिं० फाँदना] १. फदा बनाना। २. काम शुरू करना। ठानना।

फनिग†—पु०=फणीद्र (साँप)।

फनिंद†—पु०=फणीद्र (साँप)।

फनि†—पु० १ =फणी। २ =फन।

फनिक†—पु०=फणिक।

फनिग—पु० [हिं० फतिगा] फतिगा।

†पु० [स० फणिक] साँप।

फनिधर†—पु० [स० फणिधर] साँप।

फनिपति†—पु०=फणिपति।

फनियर†—पु० [स० फणिधर] १. फनवाला। २ अजगर।

फनियाला—पु० दे० 'तूर'।

पु०=फनियर (साँप)।

फनिराज—पु०=फणीद्र (साँप)।

फनी—पु०=फणी।

स्त्री०=फन (साँप का)।

पु०=फनियर।

वि० [फा० फन्नी] १ फन-सबधी। २. फन या हुनर जाननेवाला। ३ चालाक। धूर्त्त।

फनूस†—पु०=फानूस।

फन्नी—स्त्री० [स० फण] १ लकड़ी का वह टुकड़ा जो छेद आदि बद करने के लिए किसी चीज मे ठोंका जाता है। पच्चर। २ वास्तुकला मे, लोहे का वह मोटा पत्तर या कोनिया जो बाहर निकले हुए बोझ को सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। ३ कघी की तरह का जुलाहों का एक औजार जो बाँस की तीलियों का बना होता है और जिससे बुना हुआ बाना दबाकर ठीक किया जाता है।

फफका†—पु०=फफोला।

फफकस—वि० [अनु०] स्थूल किंतु बलहीन या शिथिल काया वाला।

फफकना—अ० [अनु०] रुक-रुक कर और फफ-फफ शब्द करते हुए रोना।

फफका†—पु० [अनु०] फफोला। छाला।

फफदना—अ० [?] अधिक विस्तृत होना। इधर-उधर फैलना।

फफसा—पु० [स० फुप्फुस] फेफडा।

वि० १. फूला हुआ और पोला। २ जिसमे रस या स्वाद न हो। फीका। ३ (फल) जिसका स्वाद विगड गया हो।

फफूँदी—स्त्री० [हिं० फुबती] स्त्रियों के पेड़ू पर धोती, लहँगो आदि मे लगाई जानेवाली गाँठ। विशेष दे० 'नीवी'।

स्त्री० [?] बरसात के दिनो मे वनस्पतियो आदि पर जमनेवाली एक तरह की सफेद रग की काई। भुकडी।

फफोर†—पु० [स०] एक प्रकार का जगली प्याज।

†पु०=फफोला।

फफोला—पु० [स० प्रस्फोट] १. त्वचा के जलने पर पड़नेवाला वह छाला जिसमे पानी भरा होता है और जो सफेद झिल्ली से युक्त होता है। (ब्लिस्टर) २ शारीरिक विकार के कारण होनेवाला उक्त प्रकार का छाला।

क्रि० प्र०—डालना। —पडना।

मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने दिल की जलन या रोष प्रकट करना। दिल का बुखार निकालना।

३ पानी का बुलबुला।

फबकना†—अ०=फफदना।

फबती—स्त्री० [हिं० फबना] ऐसी व्यग्यात्मक तथा हास्यपूर्ण बात जो किसी व्यक्ति की तात्कालिक स्थिति के अनुसार बहुत ही उपयुक्त रूप से फबती अर्थात् ठीक बैठती हो। (रेलरी)

क्रि० प्र०—उडाना।—कसना।

फबन—स्त्री० [हिं० फबना] १. फबने अथवा फबे हुए होने की अवस्था या भाव। उदा०—अगोछे की अब तुम फबन देखना।—बालमुकुद गुप्त। २ सुदरता।

फबना—अ० [स० प्रभवन] १ उपयुक्त प्रकार से अथवा उपयुक्त स्थान पर रखे जाने पर किसी चीज का शोभन तथा सुदर लगना। जैसे—लाल साडी पर काली गोट का फबना। २ बात आदि का ठीक मौके पर उपयुक्त और शोभन लगना। जैसे—तुम्हारे मुँह पर गाली नही फबती। ३. व्यक्ति का बढिया कपडे आदि पहने होने पर सुदर लगना।

फबाना—स० [हिं० फबना] १. इस प्रकार किसी चीज को उपयुक्त स्थान पर रखना कि वह शोभन या सुदर जान पडने लगे। २. अच्छे वस्त्र आदि पहनाकर किसी को सुदर बनाना।

फबि†—स्त्री०=फबन।

फबीला—वि० [हिं० फबि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] जो फब रहा हो। फबता हुआ।

फरंगिस्तान—पु० [फा०] इँग्लैंड।

फरगी—वि० [फा०] अग्रेजो का।

पु० अग्रेज जाति का व्यक्ति। फिरगी।

फरअन—पु० [अ० फिरअन] १ मिस्र के प्राचीन राजाओ की उपाधि। (फरो, फराओ) २ लोक-व्यवहार मे ऐसा व्यक्ति जो बहुत ही अत्याचारी, अभिमानी तथा उद्दड हो।

फरक—पु० [अ० फर्क] १ अलगाव। पार्थक्य। २ ऐसा भेद जो पार्थक्य के कारण हो अथवा पार्थक्य का सूचक हो। ३ दो विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियो आदि मे होनेवाली विषमता। ४ हिसाब-किताब आदि मे भूल-त्रुटि आदि के कारण पडनेवाला अतर। ५ एक रकम या संख्या को दूसरी रकम या सख्या मे से घटाने पर निकलनेवाला

शेपाश। वाकी। ६. दो विंदुओ या स्थानो मे होनेवाली दूरी या फासला। ७ भेद-भाव। दुराव।

†क्रि० वि० अलग। पृथक्।

†स्त्री०=फडक।

फरकन—स्त्री० [हिं० फरकना] फडकने की क्रिया या भाव। फडक।

फरकना—अ० [अ० फर्क=अतर] १ अलग या दूर होना। २. कटकर निकल जाना।

†अ०=फडकना।

फरका—पु० [स० फलक] १. ऐसा छप्पर जो अलग से वनाकर वँडेर पर चढाया या रखा जाता है। २ वँडेर में एक ओर की छाजन। पल्ला। ३ झोपड़ियो, दरवाजो आदि के आगे लगाया जानेवाला टट्टर।

†पु० दे० 'फिरका'।

फरकाना†—स० [हिं० फरक=अलग] १ अलग या दूर करना। २. फरक या अन्तर निकालना या स्थिर करना।

†स०=फडकाना।

फरकिल्ला—पु० [हिं० फार+कील] गाडी आदि मे लगाया जानेवाला वह खूँटा जिसके सहारे ऊपर का ढाँचा खडा रहता है।

फरकी†—स्त्री० [हिं० फरक] १ चिडीमारो की लासे से युक्त वह लकडी जिस पर चिडियो के वैठने पर उनके पैर, पख आदि चिपक जाते है। २ दीवार की चुनाई मे खडे वल मे लगाया जानेवाला पत्थर।

फरकौहाँ†—वि० [हिं० फरकना+औहाँ (प्रत्य०)] १ फड़कनेवाला। २ फडकता हुआ।

फरक्क†—पु०=फरक।

फरगान—पु० [तु० फर्गाना] तुर्की के फरगाना नामक प्रदेश का निवासी।

फरगाना—पु० तुर्की के अन्तर्गत एक प्रदेश, जहाँ वावर का पैतृक राज्य था।

फरचा—वि० [स० स्पृश्य, प्रा० फरस्स] [भाव० फरचाई] १. (खाद्य पदार्थ) जो किसी ने जूठा न किया हो। २ शुद्ध, साफ या स्वच्छ।

फरचाई†—स्त्री० [हिं०फरचा+ई (प्रत्य०)] 'फरचा' होने की अवस्था या भाव। शुद्धता।

फरचाना—स० [हिं० फरचा] १ वरतन आदि धोकर साफ करना। फरचा करना। २. पवित्र या शुद्ध करना।

फरजंद—पु० [फा० फर्जंद] पुत्र। वेटा।

फरजंदी—स्त्री० [फा० फर्जंदी] पुत्र-भाव। वाप-वेटे का नाता।

मुहा०—(किसी को) फरजंदी में लेना=(क) पुत्र या वेटा वनाना। (ख) दामाद अर्थात् पुत्र-तुल्य वनाना।

फर्जिंद†—पु०=फरजद (वेटा)।

फरज—पु०=फर्ज (कर्तव्य)।

स्त्री०=फर्ज (भग)।

फरजाना—वि० [फा० फरजान] [भाव० फरजानगी] वुद्धिमान्।

फरजाम—पु० [फा० फर्जाम] १. अत। समाप्ति। २ परिणाम। फल।

फरजी—पु० [फा० फर्जी] शतरज का क मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं।

वि० [फा० फ़र्ज़ी] १. कल्पना मे होनेवाला। काल्पनिक। २. जो फर्ज किया या मान लिया गया हो। ३. नकली।

फरजीवंद—पु० [फा०] शतरंज के खेल मे वह स्थिति जिसमे फरजी अर्थात् वजीर किसी प्यादे के जोर पर वादशाह को ऐसी शह देता है कि विपक्षी की हार हो जाती है।

फरतूत—वि० [फा० फर्तूत] अति वृद्ध। वहुत वूढा।

फरद—स्त्री० [अ० फर्द] १. वह वही जिसमे हिसाव-किताव लिखा होता है। २. सूची। तालिका।

पु० [अ० फ़र्द] १. एक या अकेला आदमी। एक व्यक्ति। २. एक ही तरह की और एक साथ वननेवाली अथवा एक साथ काम मे आनेवाली चीजो के डोड़े मे से हर एक। जैसे—एक फरद धोती, एक फरद चादर आदि। ३. दुलाई, रजाई आदि का वह ऊपरी पल्ला जिसके नीचे अस्तर लगाया जाता है। ४. दो चरणो या पदो की कविता।

विशेष—यह शव्द उक्त अर्थों मे लोक मे प्राय स्त्री रूप मे प्रयुक्त होता है।

५. वह पशु या पक्षी जो जोडे के साथ नही, वल्कि अकेला और अलग रहता हो। ६. एक प्रकार का पक्षी जो वरफीले पहाडो पर होता है, और जिसके विषय मे वैसी ही वातें प्रसिद्ध है, जैसी चकवा और चकई के विषय मे है। ७. एक प्रकार का लक्का कवूतर जिसके सिर पर टीका होता है।

वि० १. अकेला। २. वेजोड़।

फरना†—अ०=फलना।

फरफंद—पु० [हिं० फर+ अनु० फद (जाल)] १ दाँव-पेंच। छल-कपट। २ केवल दूसरों को दिखाने और धोखे मे डालने के लिए किया जानेवाला झूठा आचरण। ३. नखरा। चोचला।

क्रि० प्र०—खेलना।—दिखाना।—रचना।

फरफदी—वि० [हिं० फरफद] १. फरफद करनेवाला। छल-कपट या दाँव-पेच करनेवाला। धूर्त। चालवाज। फरेवी। २ नखरेवाज। नखरीला।

फरफर—पु० [अनु०] किसी पदार्थ के उड़ने, फडकने या हिलने से उत्पन्न होनेवाला फरफर शव्द।

क्रि० वि० फरफर शव्द करते हुए।

फरफराना—स० [अनु०] फरफर, शव्द उत्पन्न करना।

अ० फरफर शव्द करते हुए हिलना। जैसे—झडा फरफराना।

†अ०, स०=फडफडाना।

फरफुदा—पुं०=फर्तिगा।

फरमाँवरदार—वि० [फा० फर्मावरदार] [भाव० फरमावरदारी] आज्ञाकारी।

फरमा—पु० [अ० फ्रेम] १. वह ढाँचा जिसमे रखकर उसी के अनुरूप कोई दूसरी चीज ढाली या वनाई जाती हो। डौल। साँचा। २. लकडी आदि का वना हुआ वह ढाँचा या साँचा जिसपर रखकर चमार जूता वनाते है। कालवूत।

पु० [अ० फार्म] १. कागज का पूरा तखता या ताव जो एक वार मे प्रेस मे जाता है। जुज। २. पुस्तको आदि का उतना अश जितना उक्त प्रकार के कागज पर एक साथ छपता है। जैसे—इस पुस्तक के

१० फरमे छप गये है, अभी पाँच फरमे और वाकी है। ३ छापेखाने मे, ढाँचे मे कसी हुई छपनेवाली सामग्री।

फरमाइश—स्त्री० [फा० फर्माइश] १ वह चीज जिसके लिए किसी ने अनुरोध किया हो। २. किसी काम या वात के लिए दी जानेवाली आज्ञा विशेषत प्रेमपूर्वक दिया हुआ आदेश।

फरमाइशी—वि० [फा०] १. जो फरमाइश करके वनवाया या मंगाया गया हो। जैसे—फरमाइशी जूता। २. फरमाइश के रूप मे होनेवाला।

फरमान—पु० [फा० फर्मान] १ कोई आधिकारिक विशेषत. राजकीय आदेश। २ वह पत्र जिसमे उक्त आदेश लिखा हो।

फरमाना—स० [फा० फर्मान] कोई वात कहना। (वड़ो के सवंध में सम्मान-सूचक रूप मे प्रयुक्त) जैसे—आपका फरमाना विलकुल दुरुस्त है।

फरयाद†—स्त्री०=फरियाद।

फरयारी†—स्त्री० [हिं० फाल] हल मे की वह लकडी जिसमे फाल (फल) लगा रहता है। खोपी।

फरराना†—अ०, स०=फहराना।

फरलांग—पु० [अ० फरलाग] भूमि की दूरी नापने का एक मान जो २२० गज के वरावर होता है।

फरलो—स्त्री० [अ० फरलाग] सरकारी नौकरो को आधे वेतन पर मिलनेवाली लवी छुट्टी।

फरवरी—पु० [अ० फ़ेब्रुअरी] अँगरेजी सन् का दूसरा महीना जो अट्ठाइस दिनो का, परन्तु लौद के वर्ष, उन्तीस दिनो का होता है।

फरवार†—पु०=खलिहान।

फरवारी†—स्त्री० [हिं० फरवार+ई (प्रत्य०)] उपजे हुए अन्न या फसल का वह भाग जो किसान खलिहान मे से राशि उठाने के समय ब्राह्मण, वढई, नाई आदि को देते हैं।

फरवी—स्त्री० [सं० स्फुरण] १. एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भुनने पर अन्दर से पोला हो जाता है। मुरमुरा। २. दे० 'लाई'। 'फरुही'।

फरश—पु० [अ० फर्श] १. वैठने के लिए विछाने का कपडा। विछावन। २ कमरे आदि की पक्की और समतल भूमि जिस पर लोग वैठते है। ३ समतल प्रसार या फैलाव। जैसे—फूलो का फरश।

फरशवद—पु० [फा०] वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ गच का फरश वना हो।

फरशी—वि० [अ० फर्शी] १. फरश-सवधी। फरश का।

पद—फरशी सलाम=वादशाहो आदि को किया जानेवाला वह सलाम जिसमे आदमी को इस प्रकार झुकना पडता था कि उसका सिर लगभग फरश तक पहुँच जाता था।

२. जो फर्श पर रखा जाता या काम मे लाया जाता हो। जैसे—फरशी जूता, फरशी झाड, फरशी हुक्का आदि।

पद—फरशी गोला=आतिशवाजी मे वह गोला जो फरश पर पटकने पर आवाज देता है।

स्त्री० १ कुछ खुले मुँह का धातु का वह आधान या पात्र जिस पर नैचा और सटक लगाकर तमाकू पीते है। २ उक्त पात्र और नैचे, सटक आदि से युक्त हुक्का। गुडगुडी। ३ पुरानी चाल की वदूक का वह अग जिसमे गज रखा जाता था।

फरसंग—पु० [फा० फर्संग] ४००० गज या सवा दो मील की दूरी का एक नाप।

फरस—पु० १ दे० 'फरसा'। २ दे० 'फरश'।

फरसा—पु० [स० परशु] १ पैनी और चौडी धार की एक प्रकार की कुल्हाडी, जो प्राचीन काल मे युद्ध के काम आती थी। २ फावडा।

फरसी—वि०, स्त्री०=फरशी।

फरहंग—स्त्री० [फा० फरहग] शब्द-कोश।

फरहटा†—पु० [हिं० फाल] [स्त्री० अल्पा० फरहटी] वाँस, लकड़ी आदि की पतली, लवी पट्टी।

फरहत—स्त्री० [अ० फर्हत] १ आनद। प्रसन्नता। २. मन की प्रफुल्लता।

फरहद—पु० [स० पारिभद्र, पा० परिभद्द, प्रा० पारिहद्द] एक प्रकार का वृक्ष जो वगाल मे समुद्र के किनारे बहुत होता है। वहाँ के लोग इसे पालितेमदार कहते हैं।

फरहर†—वि० [स० स्फार, प्रा० फार=अलग-अलग, अथवा फरहरा] १ जो एक मे लिपटा या मिला हुआ न हो, अलग-अलग हो। जैसे—फरहर भात। २. साफ। स्पष्ट। ३. निर्मल। शुद्ध। ४. (मन) जिसमे उदासीनता, खेद आदि न हो। प्रफुल्लित। प्रसन्न। ५. चालाक। होशियार।

फरहरना—अ०, स०, [अनु० फरफर] १=फरफराना। २. =फहराना।

फरहरा—पु० [हिं० फहराना] १. कपड़े आदि का वह तिकोना या चौकोना टुकडा जिसे छड के सिरे पर लगाकर झडी वनाते हैं और जो हवा के झोंके से उड़ता रहता है। २ झडा। पताका।

†वि०=फरहर। (देखें)

फरहराना—अ०, स०=फरहरना।

फरहरी†—स्त्री० [हिं० फल+हरा (प्रत्य०)] वृक्षो के फल या उन्ही के वर्ग की और चीजे जो खाई जाती हों। फलहरी।

†वि०, स्त्री० फलाहारी। उदा०—सुख करिगार फरहरी खाना।—जायसी।

फरहा†—पु० [हिं० फल] धुनियो की कमान का वह चौडा भाग जिस पर से होकर ताँत दोनो सिरो तक जाती है।

फरहाद—पु० [फा० फर्हाद] इतिहास-प्रसिद्ध एक प्रेमी जिसने अपनी प्रेमिका शीरी के आदेश पर पहाड काटकर नहर वनाई थी। कहते है कि किसी कुटनी के धोखा देने पर वह अपना सिर फोडकर मर गया।

फरही†—स्त्री० [हिं० फरहा] लकडी का वह चौडा टुकडा जिस पर ठठेरे वरतन रखकर रेती से रेतते हैं।

फरा†—पु० [देश०] एक प्रकार का व्यजन जो चावल के आटे को गरम पानी मे गूँथकर और पतली वत्तियाँ वनाकर पानी की भाप मे उवालने से वनता है।

फराक†—पु० [फा० फराख] १. मैदान। २. आयताकार स्थान।

वि० लवा-चौडा। विस्तृत।

पु० [अ० फ्राक] छोटी लडकियो के पहिनने का अँगरेजी ढग का एक तरह का लंवा पहनावा।

फराकत—वि०=फराख।

स्त्री०=फरागत।

फराख—वि० [फा० फराख] लम्बा-चौडा। विस्तृत।

फराखदिल—वि० [फा० फराख दिल] [भाव० फराखदिली] उदार हृदयवाला।

फराखी—स्त्री० [फा० फराखी] १. फराख अर्थात् विस्तृत होने की अवस्था या भाव। विस्तार। २ धन-धान्य आदि की उचित सपन्नता। ३. वह तस्मा या चौडा फीता जो घोडे की पीठ पर बाँधकर कसा जाता है। तग।

फरागत—स्त्री० [अ० फरागत] १ छुटकारा। मुक्ति।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

२ कार्य आदि की समाप्ति पर होनेवाली निश्चितता। ३ मल-त्याग, शौच आदि की क्रिया। जैसे—आप भी फरागत हो आवें।

क्रि० प्र०—जाना।

३ दौलतमदी। धन-सपन्नता। ४ सुख।

वि० जिसे किसी काम, बधन आदि से छुटकारा मिल गया हो।

फराज—वि० [फा० फराज़] ऊँचा।

पद—न शेव व फराज=किसी वात का ऊँच-नीच या भला-बुरा (पक्ष)।

पु० ऊँचाई।

फरामुश†—वि०=फरामोश।

फरामोश—वि० [फा० फ़रामोश] [भाव० फरामोशी] १ भूलनेवाला। २ (व्यक्ति) जो किसी काम या वात का वादा करके भी उसे भूल जाय और फलत' वादे के अनुसार काम न करे।

पु० लडको का एक खेल जिसमे वे आपस मे एक-दूसरे को कोई चीज देते है, और यदि पानेवाला तुरन्त 'फरामोश' कह देता है तो उसकी जीत समझी जाती है नही तो वह हार जाता है।

क्रि० प्र०—वदना।

फरामोशी—स्त्री० [फा० फरामोशी] भूलने की अवस्था या भाव। विस्मृति।

फरार—वि० [अ० फरार] (अपराधी) जो शासन की हिरासत मे आने से बचने के लिए कही भाग अथवा छिप गया हो। पलायित।

†पु० दे० 'फैलाव' (विस्तार)।

फरारी—स्त्री० [फा० फरार] फरार होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†वि० फरार।

फरालना—स०=फैलाना।

फराश—पु० [?] झाऊ की जाति का एक प्रकार का बडा वृक्ष जो पजाब, सिध और फारस मे अधिकता से होता है।

†पु० १ =फर्राश। २ =पलाश।

फरास—पु०=फर्राश।

फरासीस—प० [अ० फ्रास] १. फ्रास देश। २. उक्त देश का निवासी।

स्त्री पुरानी चाल की एक प्रकार की लाल छीट।

फरासीसी—वि० [हिं० फरासीस] फ्रास देश का।

स्त्री० फ्रास देश की भाषा।

पु० फ्रास देश का निवासी।

फराहम—वि० [फा०] [भाव० फराहमी] इकट्ठा किया हुआ।

फरिका†—पु०=फरका।

फरिया—स्त्री० [हिं० फेरना] १ वह लहँगा जो सामने की ओर सिला नही रहता। २. वह ओढनी जो स्त्रियाँ लहँगा पहनने पर ऊपर से ओढती हैं।

पु० [हिं० फिरना] रहट के चरखे के चक्कर मे लगी हुई वे लकडियाँ जिन पर मिट्टी की हँडियों की माला लटकती है।

पु० [हिं० परी=मिट्टी का कटोरा] मिट्टी की नाँद जो चीनी के कारखानो मे पाग छोड़कर चीनी बनाने के लिए रखी जाती है। हौद।

फरियाद—स्त्री० [फा० फर्याद] १ विपत्ति, सकट आदि मे पडने पर सहायतार्थ की जानेवाली पुकार। २ विशेषत. दूसरा द्वारा सताये जाने आदि पर प्रमुख अधिकारी या शासक के समक्ष न्याय पाने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। ३. न्याय की याचना के लिए न्यायालय मे दिया जानेवाला प्रार्थना-पत्र।

फरियादी—वि० [फा० फर्यादी] १ फरियाद-सबधी। २. फरियाद के रूप मे होनेवाला। ३. फरियाद करनेवाला। ४ अभियोग उपस्थित करनेवाला। अभियोक्ता।

फरियाना—स० [स० फलन या फलीकरण] १ साफ या स्वच्छ करना। २. अनाज फटककर उसकी भूसी आदि अलग करके उसे साफ करना। ३ विवाद का इस प्रकार अन्त करना कि दोना पक्षो की भूलें स्पष्ट हो जायँ और दोनो का न्याय से सतोष हो जाय। निपटाना।

†अ० १. साफ या स्वच्छ होना। २ अनाज का भूसी आदि से अलग होना। ३ विवाद का निर्णय होना।

फरिश्ता—पु० [फा० फरिश्त] १ मुसलमानी धर्मग्रन्थो के अनुसार ईश्वर का वह दूत जो उनकी आज्ञानुसार काम करता हो। जैसे—मौत का फरिश्ता। २ देव-दूत। ३ देवता। ४ कृपालु लोकोपकारी तथा सात्त्विक वृत्तिवाला व्यक्ति।

फरिश्तानी—स्त्री० फारसी फरिश्ता का स्त्री०। (परिहास और व्यग्य)

फरी—स्त्री० [स० फल] १ हल की फाल। कुशी। २ गाडी का हरसा। फड। ३. गतके का वार रोकने की चमडे की ढाल।

फरीक—पु० [अ० फरीक] १ दो परस्पर विरोधी पक्षो या व्यक्तियो मे से हर एक पक्ष या व्यक्ति।

पद—फरीके सानी=विरुद्ध पक्ष। मुखालिफ दल।

२ वादी अथवा प्रतिवादी। ३ शत्रु। वैरी।

फरीकैन—पु० [अ० फरीकैन] परस्पर विरोधी दोनो पक्षोकी सामूहिक सज्ञा। उभयपक्ष।

फरीजा—पु० [अ० फरीज] खुदा का हुक्म जिसका पालन करना बन्दो के लिए कर्तव्य होता है। जैसे—नमाज, रोजा, हज, आदि। २ पुनीत कर्तव्य।

फरीद-बूटी—स्त्री० [अ० फरीद+हिं० बूटी] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी पत्तियाँ बरियारे की तरह होती है।

फरुआ†—पु० [?] लकडी का वह बरतन जिसमे भिक्षुक भीख लेते है।

फरुई†—स्त्री० १ =फरवी। २ =फरुही।

फरुहरी†—स्त्री०=फुरहरी।

फरुहा†—पु०=फावड़ा।

फरुही†—स्त्री० [हिं० फावडा] १. छोटा फावडा। २ फावडे के आकार का लकडी का वना हुआ एक औजार जिससे खेत मे क्यारी वनाने के लिए मिट्टी हटाई जाती है। ३ मथानी।
†स्त्री०=फरवी (भुने हुए चावल)।

फरेंद, फरेंदा—पु० [स० फलेन्द्र, प्रा० फलेंद] जामुन की एक जाति जिसके फल वड़े और गूदेदार होते है। फलेंदा।

फरे-ता—वि० [फा० फिरेफ्त] १ लुभाया हुआ। आसक्त। मुग्ध। २ धोखा खाया हुआ।

फरेव—पु० [फा० फिरेव] १ प्राय सत्य वात को छिपाने तथा अपने को दोष-मुक्त सिद्ध करने अथवा दूसरे को धोखा देने तथा अपना काम निकालने के लिए कही जानेवाली झूठी या वनावटी वात। २ छल-कपट।

फरेविया†—वि०=फरेवी।

फरेवी—वि० [फा० फिरेव] १ फरेव-सवधी। २ फरेव या छल-कपट करनेवाला। धोखेवाज। कपटी।

फरेरा†—पु०=फरहरा।

फरेरी—स्त्री०=फरहरी (फल)।

फरैंदा—पु० [फा० फरिंद] एक प्रकार का तोता।
†पु०=फलेंदा।

फरो†—वि० [?] १ दवा हुआ। २ जिसका अस्तित्व न रह गया हो। ३ जो दूर हो गया हो।

फरोख्त—स्त्री० [फा० फिरोख्त] वेचने या विकने की क्रिया या भाव। विक्रय। विक्री। जैसे—खरीद-फरोख्त।
वि० [फा० फिरोख्त] विका या वेचा हुआ।

फरोख्तगी—स्त्री० [फा० फिरोख्तगी] फरोख्त करने अर्थात् वेचने का काम। विक्रय।

फरोग—पु० [फा० फुरोग] १ रोशनी। २ रौनक। ३ ख्याति। ४ उत्कर्ष। उन्नति।

फरोदस्त—पु० [फा० फरोदस्त] १ सगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो गौरी, कान्हडा और पूरवी के मेल से वना होता है। २. १४ मात्राओ का एक ताल जिसमे ५ आघात २ खाली होते है। (सगीत)

फरोश—वि० [फा० फरोश] [भाव० फरोशी] समस्त पदो के अन्त मे, विक्री करने या वेचनेवाला। जैसे—दिलफरोश, मेवाफरोश।

फरोशी—स्त्री० [फा० फरोशी] १ वेचने की क्रिया या भाव। २ वह माल जो विक चुका हो। ३ विके हुए माल से प्राप्त हुआ धन। विक्री।

फर्क—पु०=फरक।

फर्च—वि०=फरच।

फर्चा—वि०=फरचा।

फर्जंद—पु०=फरजद। (वेटा)।

फर्ज—पु० [अ० फर्ज] १. मुसलमानी धर्मानुसार वे आवश्यक कर्म जिसे न करने से मनुष्य धार्मिक दृष्टि से दोषी और पतित होता है। आवश्यक धार्मिक कृत्य। जैसे—नमाज, रोजा आदि कर्म हर मुसलमान के लिए फर्ज हैं। २ आवश्यक और कर्तव्य कर्म। जैसे—मालिक की खिदमत करना नौकर का फर्ज है।
क्रि० प्र०—अदा करना।
३ तर्क-वितर्क के प्रसग में, वह तथ्य या वात जो वास्तविक न होने पर कुछ समय के लिए यो ही कल्पित कर ली या मान ली जाय। अनुमानित वात। जैसे—फर्ज कीजिए कि आप वहाँ चले गये, तो क्या होगा।

फर्जी—वि० [फा० फ़र्जी] १ जो फर्ज कर लिया अर्थात् तर्क-वितर्क के लिए मान लिया गया हो। २ कल्पना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ। कल्पित। ३. जिसकी कोई वास्तविक या विशिष्ट सत्ता न हो।
पु० [फा० फर्जी] शतरज की फरजी नाम की गोटी।

फर्द—स्त्री० [फा० फर्द] १ कागज, कपडे आदि का वह टुकडा जो किसी के साथ जुडा या लगा न हो। २ वह कागज जिस पर कोई लेखा, विवरण या वस्तुओ की सूची लिखी हो। फरद।
पद—फर्द-जुर्म=किसी के अपराधो या अभियोगो की सूचीवाला पत्र। **फर्देसजा**=अपराधी को दिये हुए दडो आदि का लेखा या विवरण।
पु० [अ०] १ वह जो अकेला हो या अकेला रहता हो। २ दे० 'फरद'।

फर्दन्फर्दन्—अव्य० [अ० फर्दन फर्दन] १ एक एक करके। २ हर एक को। ३ अलग-अलग।

फर्म—पु० [अं० फर्म] कोई व्यापारिक वडी सस्था।

फर्माना—स०=फरमाना।

फर्याद—स्त्री०=फरियाद।

फर्रा—पु० [अनु०] १. गेहूँ और धान की फसल का एक रोग जो उसके फूलने के समय तेज हवा चलने पर पैदा होता है। २ मोटी ईंट।

फर्राटा—पु० [अनु०] वेग। तेजी। क्षिप्रता। जैसे—फर्राटे से सवक सुनाना।
मुहा०—फर्राटा भरना या मारना=बहुत तेजी से दौडना।
अव्य० खूब तेजी से। वेगपूर्वक।
†पु०=खर्राटा।

फर्राश—पु० [अ० फर्राश] [भाव० फर्राशी] १ प्राचीन काल मे वह नौकर जिसका मुख्य काम जमीन पर दरी, चाँदनी आदि विछाना होता था। २. खिदमतगार। सेवक।

फर्राशी—वि० [फा० फर्राशी] १ फर्श-सवधी। जैसे—**फर्राशी पंखा**=छत मे लगाया जानेवाला पखा। २ फर्श पर विछाया जानेवाला। ३ दे० 'फर्शी'।
स्त्री० फर्राश का काम और पद।

फर्श—पु० [अ० फर्श] १. कमरे, घर आदि की पक्की तथा समतल जमीन जिस पर वैठते हैं। फरश। २. उक्त पर विछाने की कोई चीज।

फर्शी—वि०, स्त्री० दे० 'फरशी'।

फलंक—पु०=फलक (आकाश)।
†स्त्री०=फलाँग।

फलंग†—स्त्री०=फलाँग।

फलंगना†—अ०=फलाँगना।

फलंत—स्त्री० [हिं० फलना+अत (प्रत्य०)] पौधो, वृक्षो आदि के फलने की क्रिया या भाव।

फल—पु० [स०√फल्+अच्] १ वनस्पतियो, वृक्षो आदि मे विशिष्ट ऋतुओ मे लगनेवाला वह प्रसिद्ध अग जो उनमें फूल आने के बाद लगता है, जो प्राय खाया जाता है तथा जिसके अदर प्राय: उस वनस्पति या वृक्ष के बीज और कुछ अवस्थाओ मे गूदा और रस भी होता है।

विशेष—वनस्पति विज्ञान मे अनाज के दानो (गेहूँ, चावल, दाल आदि) और वृक्षों के फलो (अनार, आम, नारगी, सेब आदि) में कोई अन्तर नही माना जाता पर लोक-व्यवहार मे ये दोनो अलग-अलग चीजें मानी जाती हैं।

२. किसी प्रकार की क्रिया, घटना, प्रयत्न आदि के परिणाम के रूप मे होनेवाली कोई बात। नतीजा। जैसे—परीक्षा-फल। ३ धार्मिक क्षेत्र मे, किये हुए कर्मों का वह परिणाम जो दु.ख-सुख आदि के रूप मे मिलता है। ४. जीवन मे किये जानेवाले कार्यों के वे चार शुभ परिणाम, जो मनुष्य के लिए अभीष्ट या उद्दिष्ट कहे गये हैं। यथा—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ५. किये हुए कामों का प्रतिफल। बदला। उदा०—सबकी न कहे, तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फलु है। —तुलसी। ६. किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ। ७. अको आदि के रूप मे वह परिणाम जिसकी प्राप्ति के लिए गणित की कोई क्रिया की जाती है। जैसे—क्षेत्र-फल, गुणन-फल, योग-फल। ८ गणित मे त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति मे का दूसरा पद। ९ फलित ज्योतिष मे, ग्रहो की स्थिति और योग के परिणाम के रूप मे होनेवाले दु ख, सुख आदि। १०. न्याय-शास्त्र मे, दोष या प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न होने या निकलनेवाला अर्थ जिसे गौतम ने प्रमेय के अन्तर्गत माना है। ११. किसी प्रकार के विस्तार का क्षेत्र-फल। १२. छुरी, तलवार, तीर, भाले आदि की वह तेज धारवाला या नुकीला अग जिससे उक्त चीजें आघात या काट करती हैं। १३. फलक। १४. ढाल। १५. पासे पर का चिह्न या बिंदी। १६. व्याज। सूद। १७. जायफल। १८ ककोल। १९. कोरैया वृक्ष।

फल-कंटक—पु० [स० ब० स०] १ कटहल। २. श्वेत-पापडा।

फल-कंटकी—स्त्री० [स० फलकटक+ङीप्] इदीवरा।

फलक—पु० [स० फल+कन्] १. तखता। पट्टी। पटल। २. वह लबा-चौडा कागज जिस पर कोई कोष्ठक, मान-चित्र या विवरण अकित हो। फरद। (शीट) जैसे—दुर्वृत्त फलक। (देखें) ३. चादर। ४. तबक। वरक। ५. पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ। ६ हथेली। ७. चौकी। ८. खाट या चारपाई का बुनावटवाला वह अंश जिस पर लोग लेटते हैं।

पु० [अ० फलक] १. आकाश। आसमान। २ ऊपरवाला लोक जो मुसलमानो मे भाग्य का विधाता और सुख-दु ख का दाता माना जाता है।

स्त्री० [अ० फलक] सवेरे का उजाला। उषा।

फलकना—अ० [अनु०] १. छलकना। २. उमगना। ३. दे० 'फडकना'।

फलक-यंत्र—पु० [स० मध्य०स०] ज्योतिष मे एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से ज्या आदि का निर्णय किया जाता है।

फल-फर—पु० [स० प० त०] वृक्षो के फलो पर लगनेवाला कर।

फलका—पु० [अ० फलक] १. दो या अधिक खडोवाली नाव मे का वह दरवाजा जिसमे से होकर लोग ऊपर नीचे आते-जाते हैं। २. मुलायम मिट्टी। ३. अखाड़ा (पहलवानो का)।

†पु० फफोला।

फल-काम—वि० [सं० फल√कम्+णिङ्+अण्, उपपद स०] किसी विशिष्ट फल की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला काम।

फल-काल—पु० [स०ष०त०] वह ऋतु या मौसिम जिसमे कुछ विशिष्ट वृक्ष फल देते हो। जैसे—आमो का फल-काल गरमी और बरसात है।

फल-कृच्छ्र—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत जिसमे फलो का क्वाथ मात्र पीकर एक मास बिताया जाता है।

फल-कृष्ण—पु० [स० स० त०] १. जल आँवला। २ करज।

फल-केसर—पु० [स० ब० स०] नारियल का वृक्ष।

फल-कोष—पु० [स० ष० त०] १ पुरुष की इद्रिय। लिंग। २. अड-कोश।

फल-ग्रह—वि०=फलग्राही।

फलग्राही (हिन्)—पु० [स० फल√ग्रह्+णिनि] वृक्ष। पेड़।

वि० फल ग्रहण करनेवाला।

फल-चमस—पु० [स०] एक प्रकार का पुराना व्यजन जो बड की छाल को कूटकर दही मे मिलाकर बनाया जाता था।

फलचारक—पु० [स०] १. प्राचीन काल का एक राजकीय अधिकारी। २ बौद्ध विहार का एक अधिकारी।

फलचोरक—पु० [स० ब० स०,] चोरक या चोर नाम का गधद्रव्य।

फलड़ा†—पुं०=फल (हथियारो का)।

फलतः—अव्य० [स० फल+तस्] उक्त बात के फल के रूप मे। परिणामत। इसलिए। जैसे—लोगों ने धन देना बद कर दिया, फलत चिकित्सालय बद हो गया।

फलत—स्त्री० [हिं० फलना] १. वृक्षो के फलने की क्रिया या भाव। २. वह जो कुछ फला हो। बीजो, फलो आदि के रूप मे होनेवाली उपज। ३ कुल उपज।

फलत्रय—पु० [स० प० त०] १ वैद्यक मे, द्राक्षा, परुप और काश्मीरी इन तीनो फलो का समाहार। २. त्रिफला।

फल-त्रिक—पु० [स० प० त०] १ भाव प्रकाश के अनुसार सोठ, पीपल और काली मिर्च। २ त्रिफला।

फलद—वि० [स० फल√दा+क] १. फलनेवाला (वृक्ष)। २. फल देनेवाला।

पु० पेड। वृक्ष।

फलदाता (तृ)—वि० [स० ष० त०] फल देनेवाला।

फल-दान—पु० [सं० प० त०] १ हिंदुओ की एक रीति जो विवाह के पहले वरवरण के रूप मे होती है। इसे वरक्षा भी कहते है। २ विवाह के पूर्व होनेवाली टीके की रसम।

फलदार—वि० [हिं० फल+फा० दार (प्रत्य०)] १ (वृक्ष) जिसमे फल लगे हो। २ (अस्त्र) जिसके आगे धारदार फल लगा हो।

फलद्रू—पु० [स० फलद्रुम] एक प्रकार का वृक्ष जिसे धौली भी कहते है।

वि० दे० 'धौली'।

फलन—पु० [स०√फल्+ल्युट्—अन] [भू०कृ० फलित] १ वृक्षों

मे फल उत्पन्न होना या लगना। २. किसी काम या बात का परिणाम निकलना।

फलना—अ० [सं० फलन] १. वृक्ष का फलो से युक्त होना। फल लगाना। २. स्त्रियो का उत्पत्ति, प्रसव आदि करना। ३. गृहस्थो का सतान आदि से युक्त होना। जैसे—सदाचारी गृहस्थ का फलना-फूलना। ४. किसी काम या बात का शुभ फल या परिणाम प्रकट होना। उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होना। जैसे—नया मकान उन्हे खूब फला है। उदा०—इतने पर भी किंतु न उसका भाग्य फला।—मैथिली शरण। ५ इच्छा या कामना का पूर्ण होना। सफल मनोरथ होना। पद—फलना-फूलना=(क) धन-धान्य, सतान आदि से अच्छी तरह युक्त और सुखी होना। (ख) उपदश या गरमी नामक रोग के कारण सारे शरीर मे छोटे-छोटे घाव होना। (परिहास और व्यग्य)
६ शरीर के किसी भाग पर बहुत से छोटे-छोटे दानो का एक साथ निकल आना जिसमे पीड़ा होती है। जैसे—गरमी से सारी कमर (या जीभ) फल गई है।
†पु० [हिं० फाल] सगतराशो की एक तरह की छेनी।

फल-परिरक्षण—पु० [स० ष० त०] फलो को इस प्रकार रखना कि वे सडने-गलने न पावें। फलो को क्षतिग्रस्त होने से बचाना। (प्रिजर्वेशन आफ फ्रूट्स)

फल-पाक—पु० [सं० ब० स०] १. करौंदा। २. जल-आँवला।

फल-पुच्छ—पुं० [स० ब० स०] वह वनस्पति जिसकी जड मे गाँठ पड़ती हो। जैसे—प्याज, शलजम आदि।

फल-पुष्प—पु० [स० ब० स०] [स्त्री० फल-पुष्पा] वह पौधा या वृक्ष जिसमे फल और फूल दोनो हो।

फल-पूर—पु० [स० फल√पूर्+क] दाडिम। अनार।

फल-प्रिय—पु० [स० ब० स०] द्रोण काक। डोम कौवा।
वि० जिसे खाने मे फल अच्छे लगते हो।

फलफंद—पु०=फरफद।

फल-फूल—पु० [हिं०] १ फल और फूल। २ भेंट के रूप मे दी जानेवाली वस्तु।

फल-भरता—स्त्री० [सं० फल+हिं० भरना] फलो से भरे अर्थात् लदे होने की अवस्था या भाव। उदा०—झुक जाती है मन की डाली अपनी फल-भरता के डर मे। —प्रसाद।

फल-भूमि—स्त्री० [स० च० त०] स्थान जहाँ कर्मों के फल भोगने पडते हो। जैसे—पृथ्वी, नरक, स्वर्ग आदि।

फल-भोजी (जिन्)—वि० [सं० फल√भुज् (खाना)+णिनि] १ फल खानेवाला। २. केवल फलो पर निर्वाह करनेवाला।

फल-मंजरी—स्त्री० [स० ष० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

फल-मुख्या—स्त्री० [स० तृ० त०] अजमोदा।

फल-मुद्‌रिका—स्त्री० [स० स० त०] पिंड खजूर।

फल-योग—पु० [स० ष० त०] नाटक मे वह स्थिति जिसमे फल की प्राप्ति या नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है। फलागम।

फल-राज—पु० [सं० ष० त०] १. फलो का राजा। श्रेष्ठ फल। २. तरबूज। ३ खरबूजा। ४. आम।

फल-लक्षणा—स्त्री० [स० मध्य० स०] साहित्य मे एक प्रकार की लक्षणा।

फलवर्ति—स्त्री० [स०] घाव मे भरी जानेवाली बत्ती।

फल-वस्ति—स्त्री० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का वस्ति कर्म जिसमे अँगूठे के बराबर मोटी और बारह अगुल लम्बी पिचकारी गुदा मे दी जाती है।

फलवान्—वि० [स० फल+मतुप्, म-व., फलवत्] [स्त्री०फलवती] (वृक्ष आदि) जिसमे फल लगे हो।
पु० फलदार वृक्ष।

फलविष—पु० [स० ष० त०] वह वृक्ष जिसके फल विषैले होते हैं। जैसे—करभ।

फलश—पु०=फल-शाक।

फल-शर्करा—स्त्री० [स० ष० त० या मध्य० स०] फलो मे रहनेवाली शर्करा या चीनी जो ओषधि आदि के कार्यों के लिए विशिष्ट प्रक्रिया से निकाली या बनाई जाती है। (फ्रूट-शूगर)

फल-शाक—पु० [स० मयू० स०] तरकारी बनाकर खाया जानेवाला फल।

फल-श्रुति—स्त्री० [स० ष० त०] १ ऐसा कथन जिसमे किसी कर्म के फल का वर्णन होता है और जिसे सुनकर लोगों की वह कर्म करने की प्रवृत्ति होती है। जैसे—दान करने से अक्षय पुण्य होता है। २. उक्त प्रकार का वर्णन सुनना।

फल-श्रेष्ठ—पु० [स० ष० त० वा स० त०] आम।

फल-संस्कार—पु०[स० ष० त०]ज्योतिष मे, आकाश के किसी ग्रह के केंद्र का समीकरण या मद-फल-निरूपण।

फलसफा—पु० [अ० फलसफ] १ ज्ञान। २ विद्या ३ दर्शन-शास्त्र। ४ तर्क-शास्त्र। ५. तर्क। दलील।

फलसा†—पु० [स० पाली] १ मुहल्ला। २ दरवाजा।
†पु०=फालसा।

फल-स्थापन—पु० [स० ब० स०] फलीकरण या सीमन्तोन्नयन सस्कार।

फलहरी—स्त्री० [हिं० फल+हरी (प्रत्य०)] १. वन के वृक्षों के फल। वन-फल। २. सब प्रकार के फल।
†वि०=फलहारी।

फलहार—पु० [स० फलाहार] १ फलो का भक्षण। २ व्रत आदि के दिन खाये जानेवाले फल अथवा कुछ विशिष्ट फलों का बनाया जाने वाला व्यजन।

फलहारी—स्त्री० [स० फल√हृ+अण्, फलहार+ङीप्, ब० स०] कालिका देवी।
वि० [हिं० फलहार] १ फलहार-सबंधी। २ फलहार के रूप मे होनेवाला।

फलाँ—वि० [फा० फलाँ] कोई अनिश्चित। अमुक।

फलांग—स्त्री० [?] १ एक स्थान मे उछलकर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव। कुदान। चौकड़ी। छलाँग। क्रि० प्र०—भरना।—मारना।
२ उतनी दूरी जो फलांग मे पार की जाय। ३ व्यायाम की एक कसरत।

फलाँगना—अ० [हिं० फलांग+ना (प्रत्य०)] एक स्थान मे उछलकर दूसरे स्थान पर जाना या गिरना। फलाँग भरना। फाँदना।

फलांश—पु० [स० फल-अंश, मयू० स०] १. तात्पर्य। १. सारांश।

फला—स्त्री० [स०√फल्+अच्+टाप्] १ शमी। २ प्रियगु। ३. झिझिरीट।

फलाकना†—स०=फलाँगना।

फलाकाक्षा—स्त्री० [सं० फल-आकाक्षा, प० त०] फल-प्राप्ति की आकाक्षा या कामना।

फलागम—पु० [स०फल-आगम, प० त०] १. वृक्षो मे फलो के आने का काल। फल लगने की ऋतु या मौसिम। २ वृक्षो मे फल आना या लगना। ३ शरद्-ऋतु। ४ साहित्य मे, रूपक की पाँच अवस्थाओ मे से पाँचवी और अतिम अवस्था, जिसमे नायक आदि के अभीष्ट की सिद्धि होती है।

फलाढ्य—वि० [स० फल-आढ्य] फलो से लदा या भरा हुआ।

फलादन—पु० [स० फल-अदन, ब० स०] १ वह जो फल खाता हो। २ तोता।

फलादेश—पु० [स० फल-आदेश, प० त०] १ किसी बात का फल या परिणाम बताना। फल कहना। २ ज्योतिष मे, वे बातें जो ग्रहो के प्रभाव या फल के रूप मे बतलाई जाती हैं।

फलाध्यक्ष—पु० [स० फल-अध्यक्ष, प० त०] १ फलो का मालिक या स्वामी। २ ईश्वर जो सब प्रकार के फल देता है। ३ खिरनी का पेड।

फलानी—स्त्री० [अ० फलाँ] स्त्री की भग। योनि। (बाजारू)

फलाना—स० [हिं० फलना का प्रे०] १ किसी को फलने मे प्रवृत्त करना। फलने का काम कराना। २. फलो से युक्त करना।
वि० [अ० फलाँ] [स्त्री० फलानी] (वह) जिसका नाम न लिया गया हो। अमुक।

फलानुमेय—वि० [स० फल-अनुमेय, तृ०त०] जिसका अनुमान फल या परिणाम देखने से ही किया जाय।

फलापेक्षा—स्त्री० [स० फल-अपेक्षा, प० त०] फल की अपेक्षा या कामना।

फलाफल—पु० [स० फल-अफल, द्व० स०] किसी कर्म या कार्य के शुभ-अशुभ या इष्ट-अनिष्ट फल। फल और अफल।

फलाम्ल—पु० [स० फल-अम्ल, ब० स०] १ खट्टे रसवाला या खट्टा फल। २ अम्लवेत। ३ विषावली। विषाविल।

फलाम्ल-पंचक—पु० [स० ष० त०] बेर, अनार, विषाविल, अम्लवेत और बिजौरा ये पाँच खट्टे फल।

फलार†—पु०=फलाहार।

फलाराम—पु० [स० फल-आराम, प० त०] फलदार वृक्षो का बाग।

फलारी†—वि०=फलाहारी।

फलार्थी (र्थिन्)—पु० [स० फल√अर्थ्+णिनि] वह जो फल की कामना करे। फलकामी।

फलालीन†—स्त्री०=फलालैन।

फलालैन—स्त्री० [अ० फ्लानेल] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो बहुत नरम और ढीली-ढाली बुनावट का होता है।

फलावरण—पु० [स० फल-आवरण, प० त०] फलनेवाले पेड-पौधो के फलो का वह ऊपरी आवरण जिसके अदर बीज रहते है। (पेरिकॉर्प)

फलाशन—पु० [स० फल-अशन, ब० स०] १ वह जो फल खाता हो। फल खानेवाला। २ तोता।

फलाशी (शिन्)—पु० [स०√फल अश्+णिनि] वह जो फल खाता हो। फल खानेवाला।

फलासंग—पु० [फल-आसग, स० त०] किसी कर्म के फल के प्रति होनेवाला आसग या आसक्ति।

फलासव—पु० [स० फल-आसव, प०त०] चरक के अनुसार दाख, खजूर आदि फलो के आसव जो २६ प्रकार के होते है।

फलाहत—स्त्री० [हिं० फलाना=फलो से युक्त करना] १ वृक्षो, आदि से फल उत्पन्न करने की क्रिया, भाव या व्यवसाय। २ कृषि-कर्म। खेती-बारी। (पश्चिम)

फलाहार—पु० [स० फल-आहार, प० त०] फलो का आहार।
स्त्री०[स०फलाहार] अन्न-वर्ग के खाद्यान्नो से भिन्न, कुछ विशिष्ट फलो से बनाये जानेवाले व्यजन जो हिंदुओ मे व्रत के दिन खाये जाते हैं। जैसे—एकादशी को स्त्रियाँ फलाहार करती है।

फलाहारी (रिन्)—पु० [स० फलाहार+इनि] [स्त्री० फलाहारिणी] वह जो फल खाकर निर्वाह करता हो।
वि० १. फलाहार-सबधी। २ (खाद्य पदार्थ) जिसकी गिनती फलाहार मे होती हो। (फलाहारी चीज मे अन्न का मेल नही होता।) जैसे—फलाहारी मिठाई।

फलि—पु० [स०√फल्+इन्] १. एक प्रकार की मछली। २ प्याला।

फलिक—वि० [स०फल+ठन्—इक] १ फल का उपभोग करनेवाला। २. किसी कार्य, घटना या बात के उपरात उसके फल या परिणाम के रूप मे होनेवाला। (रिजल्टैन्ट)
पु० पर्वत। पहाड।

फलिका—स्त्री० [सं० फलिक+टाप्] १. एक प्रकार का बोडा जो हरे रग का होता है। २. किसी चीज के आगे का नुकीला भाग।

फलित—भू० कृ० [स० फल+इतच्] १. फला हुआ। २ पूरा या सपन्न किया हुआ। ३.जिसमे कुछ विशिष्ट स्थितियो आदि के परिणामो के सबध मे विचार हुआ हो। जैसे—फलित ज्योतिष। (दे०)
पु० १ पेड़। वृक्ष। २ पत्थर-फोड। छरीला।

फलित ज्योतिष—पु० [स० कर्म० स० वा प० त०]ज्योतिष की दो शाखाओ मे से एक जिसमे ग्रह, नक्षत्रों आदि के मनुष्य जाति तथा सृष्टि के अन्य अगो पर पडनेवाले शुभाशुभ फलो का विचार होता है। (एस्ट्रालोजी) ज्योतिष की दूसरी शाखा गणित ज्योतिष है।

फलितव्य—वि० [स०√फल्+तव्य] जो फलने को हो अथवा फलने के योग्य हो।

फलिता—स्त्री० [स० फलित+टाप्] रजस्वला स्त्री।

फलितार्थ—पु०[स० फलित-अर्थ कर्म० स०] १. तात्पर्य। २. सारांश। निचोड।

फलिन—वि० [स० फल+इनच्] (वृक्ष) जिसमे फल लगते हो।
पुं० १ कटहल। २ स्योनाक। ३ रीठा।

फलिनी—स्त्री० [स० फल+इनि+ङीप्] १ प्रियगु। २ अग्नि-शिखा

नामक वृक्ष। ३ मूसली। ४ इलायची। ५ मेहदी। ६ सोना-पाढा। ७ भायमाणा लता। ८ जल-पीपल। ९ दुद्धी घास। १० दाख से बनाया हुआ आसव या मद्य।

फली—पु० [स० फल+अच्+ङीप्] १ सोनापाढा। २ कटहल। ३. प्रियगु। ४ मूसली। ५ आमडा।

वि० [स० फल+इनि] १ फलो से युक्त। फलवाला। २ जिसमे फल लगते हो। ३ लाभदायक।

स्त्री० [हिं० फल+ई (प्रत्य०)] १ पेड-पौधो का फल के रूप मे होनेवाला वह लबोतरा अग जिसके अदर केवल बीज रहते है। गूदा या रस नही रहता। (पॉड) २. उक्त प्रकार का कोई चिपटा, छोटा, लबोतरा तथा हरा फल जो तरकारी आदि के रूप मे खाया जाता हो। छीवी। (बीन) जैसे—सेम की फली।

फलीकरण—पु० [स० फल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० फलीकृत] १ अनाज को भूसे या भूसी से अलग करना। मॉडना। फटकना। २ भूसी।

फलीता—पु० [अ० फतील] १. पलीता।

क्रि० प्र०—दिखाना।

२ बत्ती। ३ कपडो मे शोभा के लिए गोट के साथ टॉकी जाने-वाली डोरी। ४ तावीज।

मुहा०—फलीता सुघाना= तावीज या यत्र की धूनी देना।

फलीदार—वि० [हिं०+फा०] (पौधा या फसल) जिसमे फलियाँ लगती हो। (लेग्यूमिनस)

फलीभूत—भू० कृ० [स० फल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√भू+क्त] जिसका फल या परिणाम प्रत्यक्ष हो चुका या निकल चुका हो।

फलेंदा—पु० [स० फलेंद्र] एक प्रकार का जामुन जिसका फल वडा, गूदेदार और मीठा होता है। फरेंद।

फलेंद्र—पु० [स० फल-इद्र, सुप्सुपा स०] फलेदा या वडा जामुन।

फलोत्तमा—स्त्री० [स० फल-उत्तमा, स० त०] १ काकलीदाख। २. दुद्धी या दूधिया घास। ३ त्रिफला।

फलोत्पत्ति—स्त्री० [स० फल-उत्पत्ति, प० त०] १ फल की उत्पत्ति। फल का प्रकट या प्रत्यक्ष होना। २ व्यापार आदि मे होनेवाला आर्थिक लाभ।

पु० आम (वृक्ष)।

फलोदय—पु० [स० फल-उदय, प० त०] १ फल का प्रत्यक्ष होना। २ हर्ष। ३ दड। ४ स्वर्ग।

फलोद्देश—पु० [स० फल-उद्देश, प० त०] दे० 'फलापेक्षा'।

फलोद्भव—वि० [स० फल-उद्भव, ब० स०] फल मे से उपजने या जनमने वाला।

पु० फल का उद्भव या उत्पत्ति।

फलोपजीवी (विन्)—वि० [स० फल-उप√जी+णिनि] जिसकी जीविका फलो के व्यवसाय से चलती हो।

फल्क—वि० [स०√फल्+क] जो फैला हुआ हो अथवा जिसने अपने अग फैलाये हो।

फल्गु—वि० [स० √फल्+ड, गुगागम] १ जिसमे कुछ तत्त्व न हो। निस्सार। २ निरर्थक। व्यर्थ। ३ छोटा। ४ क्षुद्र। तुच्छ। ५ साधारण। सामान्य।

स्त्री० [स०] बिहार की एक छोटी नदी जिसके तट पर गया नगरी वसी हुई है। २ वसत काल। ३ मिथ्या वचन। ४. कठगूलर।

फल्गुन—पु० [स० √फल्+उनन्, गुगागम] १ अर्जुन। २ फागुन का महीना।

वि० १. फाल्गुनी नक्षत्र-सबधी। २ जिसका जन्म फाल्गुनी नक्षत्र मे हुआ हो। ३ लाल।

फल्गुनाल—पु० [स० फल्गुन√अल्+अच्] फाल्गुन मास।

फल्गुनी—स्त्री०=फाल्गुनी।

फल्गुनीभव—पु० [स० फल्गुनी√भू+अप्] बृहस्पति।

फल्गुवाटिका—स्त्री० [स० फल्गु+वाटी, प० त०,+कन्, टाप्, ह्रस्व] कठगूलर।

फल्य—वि० [स० फल+यत्] १ फूल। २ कली।

फल्ला—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशम जो बगाल से आता है।

फसकड़ा—पु० [अनु०] टाँगें फैलाकर तथा चूतड के बल बैठने का ढग या मुद्रा।

क्रि० प्र०—मारना।

फसकना—अ० [अनु०] १ घिसने, खिंचने, दबने आदि के फलस्वरूप कपडे का कही से कुछ फट जाना। मसकना। २ नीचे बैठना। धँसना। ३ तडकना। फटना। ४ स्त्री या मादा पशु का गर्भवती होना।

†वि० १ (पदार्थ) जो जल्दी फसक या मसक जाता हो। २ जो जल्दी धँस या बैठ जाय।

फसकाना—स० [हिं० फसकाना का स०] १ कपडे का मसकना या दबाकर कुछ फाडना। २ धँसाना। ३ गर्भवती करना।

फसद—स्त्री० [अ० फस्द] यूनानी या हकीमी चिकित्सा शास्त्र मे, नसो या रगों मे से विकारग्रस्त रक्त निकालने की क्रिया या भाव।

मुहा०—फसद खुलवाना या लेना=(क) शरीर का दूषित रक्त निकल-वाना। (ख) मूर्खता या पागलपन का इलाज करना। (व्यग्य)

फसल—स्त्री० [अ० फस्ल] १ ऋतु। मौसम। २ उपयुक्त काल या समय। जैसे—गेहूँ या चना बोने की फसल। ३ खेत मे बोये हुए अनाजो आदि की पैदावार। (साधारणत वर्ष मे दो फसले होती है—रबी और खरीफ।) ४ खेत मे खडे हुए अनाजो आदि के पौधे। (क्राप) ५ दाने आदि निकालने के लिए उक्त के काटे हुए अश या वाले। (हार्वेस्ट) ६ अध्याय। प्रकरण।

फसली—वि० [हिं० फसल] १ फसल-सम्बन्धी। फसल का। २ किसी विशिष्ट फसल या ऋतु मे होनेवाला। जैसे—फसली बीमारी, फसली बुखार।

स्त्री० हैजा नामक रोग।

फसली कौआ—पु० [अ० फस्ल+हिं० कौआ] १ पहाडी कौआ जो शीत ऋतु मे पहाड से उतरकर मैदान मे चला आता है। २ वह जो केवल अच्छे समय मे अपना स्वार्थ साधन करने के लिए किसी के साथ लगा रहे और उसकी विपत्ति के समय काम न आवे। स्वार्थी। मतलबी।

फसली बीमारी—स्त्री० [हिं०] हैजा नामक रोग।

फसली बुखार—पु०[अ० फस्ल+बुखार] १. दो ऋतुओं के सधिकाल के समय होनेवाला ज्वर। २. वर्षा ऋतु मे, जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी। (मलेरिया)

फसली सन्—पु०[?] एक प्रकार का सन् या सवत्। सम्राट् अकबर द्वारा चलाया गया एक सन् जिसका उपयोग आजकल जमीन, लगान, मालगुजारी आदि का हिसाब रखने के कामो मे होता है। इसका आरम्भ भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा से होता है।

फसाद—पु०[अ० फसाद] [वि० फ़सादी] १ बिगाड। विकार। खराबी। २ उत्पात। उपद्रव। ३. दगा। बलवा। ४. लडाई। झगडा।

फसादी—वि०[फा० फसादी] १ फसाद खडा करनेवाला। २. विकार उत्पन्न करनेवाला। ३. उपद्रवी। पाजी।

फसाना—पु० [फा० फसानः] १. कोई कल्पित तथा साहित्यिक रचना। २. उपन्यास।

पद—फसानानवीस या फसानानिगार=कहानियाँ लिखनेवाला या उपन्यासकार।

फसाहत—स्त्री०[अ० फसाहत] १ कहने, लिखने आदि की वह शैली जिसमे दैनिक बोलचाल के शब्दो तथा प्रयोगो की बहुलता हो और इसी लिए जिसमे स्वाभाविकता तथा प्रसाद गुण हो। २. भाषण या साहित्यिक रचना मे होनेवाले उक्त गुण।

फसिल—स्त्री०=फसल।

फसील—स्त्री०[अ० फसील] चहारदीवारी। परकोटा।

फसीह—वि०[अ० फसीह] [भाव०फसाहत] (रचना) जिसमे फसाहत अर्थात् बोलचाल के शब्दो और प्रयोगो की बहुलता हो और फलत जिसमे स्वाभाविकता, प्रसाद गुण तथा प्रवाहशीलता हो।

फस्त†—स्त्री०=फस्द।

फस्द —स्त्री०=फसद।

फस्ल—स्त्री० [अ०]=फसल।

फस्ली—वि०, पु०[अ०]=फसली।

फह्म—स्त्री०[अ० फह्म]१ ज्ञान। २ बुद्धि। समझ। ३ तमीज।

फहमाइश—स्त्री०[फा० फह्माइश]१ शिक्षा। सीख। २. आज्ञा। हुकुम। ३ चेतावनी।

फहरन—स्त्री०[हिं० फहरना] फहरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फहरना—अ०[स० प्रसरण] खुले या फैले हुए वस्त्र आदि का हवा मे फरफर शब्द करते हुए उडना।

फहरान—स्त्री० [हिं० फहराना]१ फहराने की क्रिया या भाव। २. दे० 'फहरन'।

फहराना—स०[हिं० फहरना] वस्त्र आदि को इस प्रकार एक तरफ से खुला छोडना कि वह हवा मे फर-फर शब्द करते हुए उडने, लहराने या हिलने लगे। जैसे—झडा या दुपट्टा लहराना।

अ० हवा के कारण इधर-उधर हिलना।

फहरिस्त—स्त्री०=फेहरिस्त (सूची)।

फहश—वि०[अ० फुहश] फूहड। अश्लील।

फाँक—स्त्री०[स० फलक]१ फल आदि का कटा हुआ लबोत्तरा टुकडा। (विशेषत लबाई के बल कटा हुआ टुकडा।) जैसे—आम या सेब की फाँक। २ नारगी, मुसम्मी आदि फलो के अन्दर उक्त प्रकार का होनेवाला अंग जो ऐसे ही अन्य अगो से जुडा रहता है। ३. खरबूजे आदि फलो पर बने हुए उन प्रकृति चिह्नो मे से हर एक जहाँ पर से काटकर फाँकें बनाई जाती है।

फाँकड़ा—वि० [देश०] १ बाँका। तिरछा। २ हृष्ट-पुष्ट। तगडा।

फाँकना—स०[हिं० फाँक]१. चूर्ण के रूप में कोई औषधि या अन्य पदार्थ अजलि मे लेकर झटके से मुँह मे डालना। जैसे—सत्तू फाँकना, सुर्ती फाँकना। २. भुने हुए दाने खाना। जैसे—चने फाँकना।

मुहा०—धूल फाँकना=व्यर्थ मे चारो ओर घूमना तथा मारा-मारा फिरना।

फाँका†—पु०=फाका।

फाँकी—स्त्री०[स० फक्किका]१. धोखा देते हुए किसी को किसी काम या बात से अलग रखना। वंचित रखना। २. छल। धोखा।

क्रि० प्र०—देना।

†स्त्री०=फाँक।

फाँग†—स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

फाँगी —स्त्री०=फाँग।

फाँट—स्त्री०[हिं० फाटना, फटना]१ यथा-क्रम कई भागो मे बाँटने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

पद—फाँट बदी=वह कागज जिसमे जमीदारी के हिस्सो का ब्योरा लिखा रहता है।

२. उक्त प्रकार से किये हुए विभाग। ३ किसी चीज की दर आदि का बैठाया जानेवाला पडता।

वि० जो आसानी से तैयार किया गया हो।

पुं० [?] ओषधियों को उबालकर निकाला जानेवाला रस। काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना—स०[हिं० बाँटना]१. किसी वस्तु को कई भागो मे बाँटना। विभाग करना। २. ओषधियो का रस निकालने के लिए उन्हे उबालना।

फाँटा—पु०[हिं० फाँटना]१ लोहे या लकड़ी का वह झुका हुआ या कोणाकार टुकडा जो दो वस्तुओ को परस्पर जकड़े रखने के लिए जोड पर जडा जाता है। कोनिया।

†पु०=फट्टा।

फाँड—पु०=फाँडा।

फाँडा—पु०[स० फाड =पेट] धोती के लबाई के बल का उतना अश जितना कमर मे लपेटा जाता है। फेंटा।

क्रि० प्र०—कसना।—बाँधना।

मुहा०—(किसी का) फाँड़ा पकड़ना=किसी से कुछ पाने या लेने के लिए इस प्रकार उसे पकडना कि वह भागने न पावे।

फाँद —स्त्री०[हिं० फाँदना] फाँदने की क्रिया, ढग या भाव।

†पु०=फदा।

फाँदना—अ०[स० फणन; हिं०फानना] झोक से शरीर को ऊपर उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा पडना। कूदना। उछलना।

स० १ कोई स्थान कूदकर लाँघना। जैसे—नाला फाँदना। २ नर-पशु का मादा-पशु से सभोग करना।

स० [हिं० फदा] १ किसी को फदे या जाल मे फँसाना। २ कोई कार्य आरम्भ करना। ठानना।

फाँदा†—पु०=फदा।

फाँदी—स्त्री० [हिं० फदा] १ वह रस्सी जिससे कई वस्तुओं को एक साथ रखकर बाँधते है। गट्ठा बाँधने की रस्सी। २. उक्त प्रकार से बाँधी हुई चीज। गट्ठा।

फाँक†—स्त्री० [देश०] दरज। सधि।

फाँकी—स्त्री० [स० पर्पटी] १ बहुत महीन झिल्ली। बारीक तह। २ दूध के ऊपर की मलाई की हलकी तह या परत। ३ आँख के ढेले पर पडनेवाला जाला। माँडा।

फाँस—स्त्री० [स० पाश] १ रस्सी मे बनाया हुआ वह फदा जिसमे पशु-पक्षियो को फँसाया जाता है। २ वह रस्सी जिसमे उक्त दृष्टि से फदा डाला या बनाया गया हो। फाँसा।

स्त्री० [स० पनस] १ बाँस, सूखी लकडी आदि का सूक्ष्म किन्तु कडा ततु जो त्वचा मे चुभ जाता है। उदा०—जैसे मिसिरिहु मे मिली निरस बाँस की फाँस।—रहीम।

क्रि० प्र०—गडना।—चुभना।—निकलना।—लगना।

२ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसी अप्रिय बात जो मन मे बहुत अधिक खटकती रहे। गाँस। ३ बाँस, बेत आदि को चीरकर बनाई हुई पतली तीली। पतली कमाची।

मुहा०—फाँस निकलना=मन मे होनेवाली खटक दूर होना।

फाँसना—स० [स० पाश, प्रा० फाँस] १ फाँस अर्थात् फदे मे किसी पशु या पक्षी को फँसाना। २ छल, ढग, युक्ति आदि से किसी को इस प्रकार अपने अधिकार या वश मे करना कि उससे लाभ उठाया या स्वार्थ सिद्ध किया जा सके। ३ बोलचाल मे, किसी को फुसलाकर उससे अनुचित सबध स्थापित करना।

फाँसा—पु० [हिं० फाँसना] वह लम्बा रस्सा (या रस्सी) जिसके एक सिरे पर फदा बना होता है, और जिसकी सहायता से पशुओ का गला या पैर फँसाकर उन्हे पकडा अथवा शत्रु के गले मे फँसाकर उन्हे पकड़ा या मारा जाता है। (लैस्सो)

फाँसी—स्त्री० [स० पाशी] १ फँसाने का फदा। पाश। २ रस्सी आदि का वह फदा जिसे लोग अपने गले मे फँसाकर आत्म-हत्या करने के लिए झूल या लटक जाते हैं।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ आज-कल देश-द्रोहियो, हत्यारो आदि को दड देने का एक प्रकार जिसमे दो खम्भो के बीच मे एक लबा रस्सा बँधा रहता है और रस्से के दूसरे निचले सिरे के फदे मे अपराधी का गला फँसाकर इस प्रकार झटके से उसे नीचे गिरा दिया जाता है कि गला घुटने से वह मर जाता है।

मुहा०—(किसी के लिए) फाँसी खड़ी होना=(क) किसी को फाँसी दिये जाने के लिए उसकी तैयारी होना। (ख) प्राणो का सकट उपस्थित होना। जान-जोखिम होना। **फाँसी चढ़ाना, लटकाना या देना**=उक्त प्रकार का दड देकर मार डालना।

४. अपराधियो को उक्त प्रकार से दिया जानेवाला प्राण-दड। ५ कोई ऐसा सकटपूर्ण बधन जिसमे प्राण जाने का भय हो अथवा प्राण निकलने का सा कष्ट हो। जैसे—प्रेम की फाँसी।

फाइल—स्त्री० [अ० फाइल] १ कार्यालयो आदि मे एक ही प्रकार या विषय के आवश्यक कागज-पत्रो की नत्थी। मिसिल। २ मोटे कागज, दफ्ती आदि का एक तरह का खोल जिसमे उक्त कागज रखे जाते है। ३. तार, दफ्ती आदि का बना हुआ वह उपकरण जिसमे उक्त प्रकार के कागज-पत्र एक साथ रखे जाते है। नत्थी। ४. पत्र, पत्रिका आदि के ग्रथो का समूह।

फाका—पु० [अ० फाक] निराहार रहने की अवस्था या भाव। उपवास।

पद—फाका कशी, फाकामस्त।

मुहा०—फाको मरना=उपवास का कष्ट भोगते हुए दिन बिताना। कई कई दिन तक भूखे रहकर कष्ट भोगना।

फाकाकश—वि० [अ०+फा०] [भाव० फाकाकशी] भोजन न मिलने के कारण फाके या उपवास करनेवाला।

फाकामस्त—वि० [फा०] [भाव० फाकामस्ती] जो भूखो रहकर भी आनदित तथा प्रसन्न रहता हो।

फाका-मस्ती—स्त्री० [अ०+फा०] १ बुरे दिनो मे भी प्रसन्न रहने की वृत्ति।

फाके-मस्त—वि०=फाका-मस्त।

फाके-मस्ती—स्त्री०=फाका-मस्ती।

फाखतई—वि० [हिं० फाखता] पडुक के रग का। भूरापन लिये हुए लाल। पु० उक्त प्रकार का रग।

फाख्ता—स्त्री० [अ० फाख्त.] [वि० फाखतई] पडुक नाम का पक्षी।

फाग—पु० [हिं० फागुन] १ फागुन के महीने मे होनेवाला उत्सव जिसमे लोग एक दूसरे पर रग या गुलाल डालते और बसत ऋतु के गीत गाते है।

क्रि० प्र०—खेलना।

२ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीत जो प्राय. अश्लील होते है।

फागुन—पु० [स० फाल्गुन] शिशिर ऋतु का दूसरा महीना। माघ के बाद का मास। फाल्गुन। विक्रमी सवत् का बारहवाँ महीना।

फागुनी—वि० [हिं० फागुन] फागुन-सबधी। फागुन का।

फाजिल—वि० [अ० फाज़िल] १ आवश्यकता से अधिक। जरूरत से ज्यादा। २ बचा हुआ। अवशिष्ट। ३ किसी विषय का बहुत बडा ज्ञाता या विद्वान्। स्नातक।

फाजिल बाकी—स्त्री० [अ०] लेने-देन का हिसाब निकालने पर बची हुई वह रकम जो दी या ली जाने को हो।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

फाटक—पु० [स० कपाटक] १ कारखानो, बाड़ो, बडे मकानो, महलो आदि का बडा और मुख्य द्वार। बडा दरवाजा। तोरण।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) फाटक में देना=कारागार या जेल मे बद करना। **(किसी पशु को) फाटक में देना**=काजीहौस या मवेशीखाने मे बद करना।

२ मकान की चहारदीवारी मे लगा हुआ दरवाजा।

पु० [हिं० फटकन] अनाज फटकने पर निकलनेवाला फालतू या रद्दी अश। पछोडन। फटकन।

फाटका—पु० [हिं० फाटक] चीजो की दर की केवल तेजी-मदी के विचार

से किया जानेवाला वह क्रय-विक्रय का निश्चय जिसकी गिनती एक प्रकार के जूए में होती है। रोला। सट्टा। (स्पेक्युलेशन)

विशेष—सम्भवत. यह पहले बडे-बडे बाडो मे फाटक के अन्दर होता था, इसी से इसका यह नाम पडा होगा।

फाटकी—स्त्री० [स०√स्फुट्+णवुल्, पृषो० सिद्धि, ङीप्,] फिटकरी।

फाटना†—अ०=फटना।

फाड़-खाऊ—वि०[हिं० फाड+खाना] १. फाड खानेवाला। कट-खन्ना। २. बहुत बडा क्रोधी। ३. भीषण।

फाड़न—स्त्री० [हिं० फाड़ना] १. फाड़ने की क्रिया या भाव। २. कागज, कपडे आदि का टुकड़ा जो फाडने से निकले। ३. मक्खन को तपाकर घी बनाने के समय उसमे से निकलनेवाली छाँछ।

फाड़ना—स०[स० स्फाटन; हिं० फाटना] १. कागज, वस्त्र आदि विस्तार-वाले किसी पदार्थ का कोई अश बलपूर्वक इस प्रकार खीचना या तानना कि वह बीच मे दूर तक अपने मूल से अलग हो जाय। जैसे—(क) कपड़ा या कागज फाडना। (ख) गुब्बारा फाडना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२. तेज अस्त्र से किसी चीज पर आघात करके उसे कई अगो मे विभक्त करना। जैसे—कुल्हाडी से लकड़ी फाडना। ३. किसी नुकीली या पैनी चीज से किसी वस्तु का कोई अग काटकर अलग करना या निका-लना। जैसे—शेर का अपने पजो से किसी का पेट फाडना।

विशेष—'तोड़ना' और 'फाडना' मे मुख्य अन्तर यह है कि 'तोडना' मे तो किसी वस्तु का कोई खड बलपूर्वक अलग कर लेने का भाव प्रधान है परन्तु 'फाड़ना' मे किसी विस्तार मे दूर तक वस्तु को बीच से अलग करने का भाव मुख्य है। इसके अतिरिक्त कोई चीज पटककर तोडी तो जा सकती है परन्तु फाडी नही जा सकती।

४. किसी गोलाकार वस्तु का मुँह साधारण से अधिक और दूर तक फैलाना या बढाना। जैसे—आँखें फाडकर देखना, मुँह फाड़कर उसमे कोई चीज डालना। ५. किसी गाढे द्रव पदार्थ के सबध मे ऐसी क्रिया करना कि उसका जलीय अश अलग तथा ठोस अश अलग हो जाय। जैसे—खटाई डालकर दूध फाडना।

फातिहा—पु० [अ० फातिह.] १. आरभ। २ प्रार्थना। ३. कुरान की पहली आयत, जो प्राय. मृत व्यक्तियो की आत्मा की शाति और सद्गति की कामना से उनकी कब्र या मजार पर पढ़ी जाती है।

क्रि० प्र०—पढना।

फानना†—स०[स० फारण] रूई या धुनना।

†स० [हिं० फाँदना] १. कार्य आरंभ करना। ठानना। २. दे० 'फाँदना'।

फानी—वि० [अ० फानी] नष्ट हो जानेवाला। नश्वर।

फानूस—पु० [अ० फानूस] १. शीशे की चिमनी जिसमे से रोशनी छन कर चारो ओर फैलती है। २ उक्त आकार-प्रकार का शीशे का वह आधान जो प्राय. छतो मे लटकाया जाता है और जिसमे लगे हुए गिलासो आदि मे अनेक मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं। ३ एक प्रकार का दीपाधार जिसके चारो ओर महीन कपडे या कागज का घेरा बना होता है। कपड़े या कागज से मढी हुई पिंजरे की शकल की एक प्रकार की बड़ी कदील। ४. समुद्र के किनारे का वह ऊँचा स्थान जहाँ रात को प्रकाश होता है और उसे देखकर जहाज बदरगाह पर पहुँचता है। कंदीलिया।

पुं० [अ० फरनेस] ईंटों आदि की भट्ठी जिसमें लोहा आदि गलाते हैं।

फाफर—पु०[स० पर्पट]। दे० 'कूटू'।

फाफा—स्त्री० [अनु०] दाँत गिर जाने से फा फा करके बोलनेवाली बुढ़िया। पोपली बुढ़िया।

पद—फाफे कुटनी—वह बुढ़िया (या स्त्री) जो इधर की बातें उधर लगाकर दो पक्षों मे झगड़ा कराती हो।

फाफुंदा—पु०=फनिगा।

फाब—स्त्री० [स० प्रभा] फबने की क्रिया या भाव। फबन।

फाबना†—अ०=फबना।

फायदा—पु० [अ० फायद] १. किसी काम या बात में होनेवाला किसी प्रकार का लाभ। जैसे—यह दवा बुखार मे बहुत फायदा करती है। २. आर्थिक क्षेत्र मे होनेवाली किसी प्रकार की प्राप्ति। जैसे—इस साल उन्हे रोजगार मे दस हजार रुपयों का फायदा हुआ है। ३ किसी काम या बात से होनेवाला वह इष्ट या शुभ परिणाम जो किसी रूप मे लाभदायक या हितकर हो। किसी तरह का अच्छा असर या प्रभाव। जैसे—व्यर्थ झगडा बढाने से कोई फायदा नही होगा।

फायदेमंद—वि०[फा०] लाभदायक। उपकारक।

फायर—पु०[अ० फायर] १ आग। २. तोप, बदूक आदि दागने की क्रिया या भाव। फैर।

फायर ब्रिगेड—पु०[अ०] पुलिस विभाग के अतर्गत वह दल या वर्ग जिसका काम आग बुझाना, अकस्मात् जमीन के नीचे दब जानेवाले लोगों को निकालना तथा इसी प्रकार के दूसरे काम करना होता है।

फाया†—पुं०=फाहा।

फार—पु०[स० स्फार] १. खड। टुकड़ा। २. किसी प्रकार का चौडा, पतला अग का विस्तार। ३. वृक्षों के पत्तों का वह मुख्य, पतला और चौड़ा अग जो डठल के आगे निकला रहता है। (लैमिना)

†पु०=फाल।

फारखती—स्त्री०[अ० फारिग+फा० खती] १ रुपया अदा होने की रसीद। ऋण-मुक्ति का सूचक पत्र। २ वह कागज या लेख्य जिस पर यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति अपने अधिकार या उत्तरदायित्व आदि से पूर्णत मुक्त हो गया है और प्रस्तुत विषय से उसका कोई सबध नही रह गया है। जैसे—बाप ने बेटे से फारखती लिखा ली है, अर्थात् यह लिखा लिया है कि हमारी सम्पत्ति पर उसका कोई अधिकार नही है।

क्रि० प्र०—लिखना।—लिखाना।

फारना—स०=फाडना।

फारम—पुं० [अ० फार्म] १. प्रार्थना, विवरण आदि से सबध रखनेवाले पत्रो आदि का वह निश्चित और विहित रूप जिनमे भिन्न-भिन्न ज्ञातव्य बातो का उल्लेख करने के लिए अलग अलग कोष्ठक, स्तंभ या स्थान बने होते है। रूपक। २ इस प्रकार का बना अथवा छपा हुआ कोई कागज। ३ खेलो आदि मे, खिलाडी की वह शारीरिक और मानसिक

स्वस्थ स्थिति जो उन्हें अच्छी तरह से खेलने मे समर्थ करती है। जैसे—क्रिकेट का अमुक खिलाडी फारम मे नही है।

पु० [अ० फार्म] खेती-बारी की जमीन का वह बडा खंड या टुकडा जिसमे कुछ विशिष्ट रीतियों से अधिक मात्रा मे चीजें बोई जाती हों अथवा पशु-पक्षी आदि पालन और वर्धन के लिए रखे जाते हों। (फार्म)

फारस—पु०[स० पारस्य; फा० फार्स] अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्रसिद्ध देश जिसे आज-कल ईरान कहते हैं तथा जिसमे वैदिक युग मे आर्य लोग रहते थे, जहाँ कुछ दिनो बाद फारसी धर्म और अत मे इस्लाम का प्रचार हुआ था।

फारसी—वि०[फा० फार्सी] फारस या ईरान देश मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। फारस का।

स्त्री० फारसी अर्थात् आधुनिक ईरान की भाषा जो वस्तुत आर्य-परिवार की ही है।

फारा—पु० १.=फार (फाल)। २.=फरा (व्यजन)।

फारिग—वि०[अ० फारिग] १. जो अपना कोई काम करके निश्चिन्त हो गया हो। जिसने किसी काम से छुट्टी पा ली हो। बे-फिक्र। २. जिसे किसी प्रकार के बधन से छुटकारा मिल गया हो। मुक्त। स्वतत्र। आजाद। ३. काम से फुरसत पाया हुआ। सावकाश। अवकाश-प्राप्त।

फारिग-खती—स्त्री० दे० 'फारखती'।

फारिगुलबाल—वि० [अ० फारिग-उल्बाल] [भाव० फारिगुलबाली] १. *जिस पर बाल बराबर भी भार न रह गया हो।* फलत. सब प्रकार से बेफिक्र या निश्चित। २. जो सब प्रकार से सपन्न और सुखी हो।

फारी—स्त्री०=फरिया (ओढनी)। उदा०—चनौटा खीरोद फारी।—जायसी।

फार्म—पु० दे० 'फारम'।

फाल—पु०[स० फल+अण् वा√फल्+घञ्] १. महादेव। २. बलदेव। ३. कुछ विशिष्ट पौधों या फलों के रेशों से बुना हुआ कपडा।

विशेष—मध्य युग मे रूई से बुना हुआ कपडा भी इसी के अन्तर्गत माना जाता था।

४ रूई का पौधा। ५ फरसा। फावडा।

पु० नौ प्रकार की दैवी परीक्षाओं या दिव्यों मे से एक जिसमे लोहे की तपाई हुई फाल अपराधी को चटाते थे और जीभ के जलने पर उसे दोषी और न जलने पर निर्दोष समझते थे।

स्त्री० लोहे का लबा, चौकोर छड जिसका सिरा नुकीला और पैना होता है और जो हल की लकडी के नीचे लगा रहता है। कुस। कुसी।

पु०[सं० प्लव] १ चलने मे एक स्थान से उठाकर आगे के स्थान मे पैर डालना। डग। २ कूदने मे उक्त प्रकार से एक के बाद रखा जाने-वाला दूसरा पैर। फलाँग। ३. उतनी दूरी जितनी उक्त क्रियाओं के समय एक के बाद दूसरा पैर रखने मे पार की जाती है।

क्रि० प्र०—भरना।—रखना।

मुहा०—फाल बाँधना=फलाँग मारना। कूदकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। उछलकर लाँघना।

स्त्री०[सं० फलक या हिं० फाडना] १ किसी ठोस चीज का काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। जैसे—सुपारी की फाल। २. सुपारी के कटे हुए टुकड़े। छालिया।

स्त्री०[अ० फ़ाल] रमल में, पाँसा आदि फेंककर शुभ-अशुभ बतलाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देखना।—निकालना।

फाल-कृष्ट—भू० कृ०[स० तृ० त०] १. (खेत) जो जोता जा चुका हो। २. (अन्न) जो हल से जोते हुए खेत मे उपजा हो। ३. कृषि या खेती से प्राप्त होनेवाला।

फालतू—वि०[?] १. (पदार्थ) जो उपयोग में न आ रहा हो और यों-ही पडा या रखा हुआ हो। २ जो किसी काम का न हो। जिससे किसी प्रकार का काम न सरता हो। निरर्थक। रद्दी। जैसे—फालतू आदमी।

फाल-नामा—पु०[अ०+फा०] वह ग्रथ जिसे देखकर फाल की सहायता से शकुनो या शुभा-शुभ का विचार किया जाता है।

फालसई—वि० [हिं० फालसा+ई (प्रत्य०)] फालसे के रग का। ललाई लिये हुए कुछ कुछ नीला।

पु० उक्त प्रकार का रग।

फालसा—पु०[सं० परुषक, पुरुष; प्रा० फरुस] १. एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसमे छड़ी के आकार की सीधी डालियाँ चारो ओर निकलती है और उनमे दोनों ओर सात-आठ अगुल भर के गोल खुरदरे पत्ते तथा मटर के आकार के फल लगते हैं। २. उक्त वृक्ष का छोटा गोलाकार फल जो वैद्यक मे, ज्वर, क्षय तथा वात को नष्ट करनेवाला माना गया है।

पु०[?] मैदानो मे भागकर आया हुआ जगली पशु।

फालिज—पु०[अ० फालिज] अर्धांग या पक्षाघात नामक रोग। लकवा।

क्रि० प्र०—गिरना।—मरना।

फालूदा—पु० [फा० फालूदः] १. गेहूँ के सत्त से बननेवाला एक प्रकार का पेय पदार्थ। २. निशास्ते, मैदे आदि का बना हुआ एक प्रकार का व्यजन जो सेवईं की तरह का होता है और जो शरबत, कुल्फी आदि के साथ खाया जाता है।

फाल्गुन—पु० [सं०√फल्+उनन्, गुक्,+अण्] १. चांद्र वर्ष का अंतिम महीना जो माघ के बाद और चैत के पहले पडता है। फागुन। २. दूर्वा नामक सोम लता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४. अर्जुन वृक्ष। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६ बृहस्पति का एक वर्ष जिसमे उसका उदय फाल्गुनी नक्षत्र मे होता है।

फाल्गुनिक—वि० [स० फल्गुनी या फाल्गुनी+ठक्—इक] १. फागुनी नक्षत्र-सबधी। २ फाल्गुनी की पूर्णिमा से सबंध रखनेवाला।

पु० फाल्गुन मास।

फाल्गुनी—स्त्री० [स० फाल्गुन+ङीप्] १ फाल्गुन मास की पूर्णिमा। २. पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा—पु०[स० फाल; प्रा० फाड] [स्त्री० अल्पा० फावड़ी] मिट्टी खोदने का प्रसिद्ध उपकरण। फरसा।

क्रि० प्र०—चलाना।

मुहा०—फावडा बजना=खुदाई का काम आरभ होना।

फावड़ी—स्त्री० [हिं० फावडा] १. छोटा फावडा। २. फावड़े के आकार का काठ का एक उपकरण जिससे घास, लीद, मैला आदि हटाया जाता है।

फुरती से दूसरे हाथ के कधे पर मालखंभ को लेते हुए उडान करते है। ६ कुश्ती का एक दाँव या पेंच ।

फिरकी दंड—पु० [हिं०] एक प्रकार की कसरत या दड जिसमे दड करते समय दोनों हाथो को जमीन पर जमाकर उनके बीच मे से सिर देकर चारों ओर चक्कर लगाते है।

फिरकेवदी—स्त्री० [फा० फिर्क वदी] दलवदी।

फिरकैया—स्त्री० [हिं० फिरना] १ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। उदा०—फिरकैया लै निर्त्त अलायन, विच विच तान रसीली।—ललित किशोरी। २. दे० 'फिरकी'।

फिरगाना*—पु०=फिरगी।

फिरता—वि० [हिं० फिरना या फेरना] १. जो जाकर फिर आया हो। लौटा हुआ। २ जो फेर दिया गया हो। लौटाया या वापस किया हुआ। जैसे—फिरता माल। ३. जो घूम-फिर रहा हो अथवा घूम-फिर कर कोई काम करता हो।

पु० १. फिरने, लौटने या वापस होने की अवस्था क्रिया या भाव। २ फेरने, लौटने या वापस करने की क्रिया या भाव। ३. दलाली के रूप मे मिलनेवाला धन। (दलाल)

फिरदौस—पु० [अ० फिर्दौस] १ वाटिका। वाग। २. स्वर्ग। वहिश्त।

फिरदौसी—वि० [अ० फिर्दौसी] स्वर्ग मे रहनेवाला।

प० फारसी भापा का एक महान कवि जिसकी प्रसिद्ध रचना 'शाहनामा' महाकाव्य है।

फिरना—अ० [हिं० फेरना का अ०] १ किसी चीज का ऐसी स्थिति मे आना, होना या लाया जाना कि वह किसी अक्ष या धुरी पर अथवा किसी विशिष्ट घेरे मे या मार्ग पर घूमने या चक्कर खाने लगे। जैसे—(क) चक्की का पहिया फिरना। (ख) मनका या माला फिरना। २ किसी दिश मे घूमना या मुडना अथवा घुमाया या मोडा जाना। मुडना। जैसे—(क) ताले मे ताली फिरना। (ख) यह गली आगे चलकर दाहिनी ओर फिर गई है। ३ किसी मार्ग या पथ पर किसी का घूमना, विशेपत वार वार चक्कर लगाना। जैसे—गली मे चोरो या शहर मे सिपाहियों का फिरना। ४. जहाँ से कोई चला हो उसका लौटकर फिर वही आना या पहुँचाना। वापस लौटना। जैसे—साजन अव क्या फिरेगे। ५ जो चीज जहाँ से आई हो उसका वही वापस भेजा जाना। जैसे—विका हुआ माल फिरना। ६ सूचना आदि के रूप मे सव के सामने घुमाया जाना। जैसे—(क) डुग्गी या डोगी फिरना। (ख) दुहाई फिरना। ७. घूम, मुड या पलटकर विरुद्ध दिशा मे आना। जैसे—पीछे की ओर मुँह फिरना।

मुहा०—जी फिरना=चित्त विरक्त होना।

८ उन्मुख होना। जैसे—ध्यान फिरना।

मुहा०—किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना।

९ लाक्षणिक अर्थ मे, पहले से विलकुल विपरीत स्थिति मे आना। दशा वदलना। जैसे—(क) किस्मत फिरना। (ख) दिन फिरना। १० सामान्य या साधारण अवस्था की अपेक्षा हीन अवस्था को प्राप्त होना। जैसे—(क) वुद्धि फिरना। (ख) आँखे फिरना। (मर जाना)

मुहा०—सिर फिरना=वुद्धि भ्रष्ट होना। हर वात उलटी समझ मे आना।

११. कही हुई वात या दिये हुए वचन पर दृढ न रहना। मुकरना। १२ किसी तरल पदार्थ का पोता जाना। जैसे—कमरे मे चूना या दरवाजों पर रग फिरना। १३. धीरे से मला जाना। जैसे—सिर पर हाथ फिरना। १४. गुदा से गूह या विष्टा का त्यागा जाना। जैसे—झाडा या टट्टी फिरना।

फिरनी—स्त्री० [?] चीनी, मेवे आदि से युक्त एक प्रकार का खाद्य जो दूध मे चौरठे को उवाल तथा जमाकर तैयार किया जाता है।

फिरवा—पु० [हिं० फिरना] १. गले मे पहनने का एक आभूषण। २. सोने के तार मे कई फेरे डालकर वनाई जानेवाली अँगूठी।

फिरवाना—स० [हिं० फेरना का प्रे०] फेरने का काम दूसरे मे कराना।

फिराई—स्त्री० [हिं० फिराना] फिराने या फेरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

फिराऊ—वि० [हिं० फिरना] १. जो लौट रहा हो। वापस आने या लौटनेवाला। जैसे—फिराऊ मेला। २. जिसके सवध मे यह निश्चय हो कि कोई शर्त पूरी होने या न होने की दशा मे फेरा या लौटाया जा सकेगा। जैसे—फिराऊ रेहन। ३. दे० 'जाक'।

फिराक—पु० [अ० फिराक] १. वियोग। विछोह। २ किसी वात की अपेक्षा या आवश्यकता होने पर उसके संवध की चिंता या सोच। जैसे—नौकरी के फिराक मे इधर-उधर घूमना।

†स्त्री०=फाक।

फिराद (दि)—स्त्री०=फरियाद।

फिराना—स० [हिं० फिरना] १ फिरने मे प्रवृत करना। ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ फिरने लगे। २ घुमाना, टहलाना या सैर कराना। ३ चारो ओर चक्कर देना। घुमाना। ४ ऐंठना। मरोडना। ५ वापस करना। लौटाना। ६ दे० 'फेरना'।

फिरार†—वि०=फरार।

फिरारी—स्त्री० [देश०] ताश के खेल मे उतनी जीत जितनी एक हाथ चलने मे होती है। एक चाल की जीत।

वि०=फरार (भागा हुआ)।

फिरि—क्रि० वि०=फिर।

फिरियाद—स्त्री०=फरियाद।

फिरियादी—वि०=फरियादी।

फिरिश्ता—पु०=फरिश्ता।

फिरिहरा—पु० [हिं० फिरना] एक प्रकार की चिडिया जिसकी छाती लाल और पीठ काले रग की होती है।

फिरिहरी—स्त्री० [हिं० फिरना+हारा (प्रत्य०)] फिरकी नाम का खिलौना।

फिरौती—स्त्री० [हिं० फेरना] १. फिराने या फेरने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. वह धन जो दूकानदार किसी वेची हुई वस्तु को वापस लेते वक्त विक्रय-मूल्य मे से काट लेते है। २ वापस आने या लौटने का भाव।

पद—फिरौती में=आती या लौटती वार। वापसी मे।

फिर्का†—पु०=फिरका।

फ़िलहकीकत—अव्य०[अ० फिलहकीकत] हकीकत मे। सचमुच। वस्तुत।

फिलहाल—अव्य०[अ०फ़िलहाल] इस समय। अभी।

फिल्म—स्त्री० [अ० फिल्म] [वि० फिल्मी] १ फोटो या छाया-चित्र उतारने के लिए रासायनिक क्रिया से बनाई हुई एक प्रकार की लबी पट्टी। २ उक्त प्रकार की वह पट्टी जिस पर चल-चित्र या सिनेमा के चित्र अकित होते हैं। ३. उक्त की सहायता से दिखाया जानेवाला चल-चित्र।

फिल्मी—वि०[अ० फिल्म+हि० ई (प्रत्य०)] १ फिल्म-सबधी। फिल्म का। २ चल-चित्र या सिनेमा सबधी। जैसे—फिल्मी गाने।

फिल्ली—स्त्री० [देश०] १. लोहे की छड का एक टुकडा जो जुलाहो के करघे मे तूर मे लगाया जाता है।
स्त्री०=पिंडली।

फिस—अव्य०[अनु०] कुछ भी नही। (व्यग्य) जैसे—टाँय टाँय फिस।

फिसड्डी—वि० [अनु० फिस] [भाव० फिसड्डीपन] १ जो किसी प्रकार की प्रतियोगिता मे सबसे पीछे रह गया हो या हार गया हो। २ सबसे पिछडा हुआ। ३. जिससे कुछ करते-धरते न बनता हो। अकर्मण्य। निकम्मा।

फिसफिसाना—अ०[अनु० फिस] ढीला, मद या शिथिल पडना या होना।

फिसलन—स्त्री०[हिं० फिसलना] १. फिसलने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान जहाँ से अथवा जहाँ पर कोई फिसलता हो। ३. ऐसा स्थान जहाँ कोई चिकनाई आदि के कारण पैर फिसलता हो।

फिसलना—अ० [स० प्रसरण] १. किसी स्थान पर काई, चिकनाहट, ढाल आदि के कारण पैरो, हाथो आदि का ठीक तरह से जमकर न बैठना और फलत' उस पर रगड खाते हुए कुछ दूर आगे बढ जाना। रपटना। जैसे—(क) सीढियो पर पैर फिसलने के कारण नीचे आ गिरना। (ख) शीशे पर हाथ फिसलना। २ लाक्षणिक रूप मे किसी प्रकार का आकर्षक या लाभदायक तत्त्व देखकर उचित मार्ग से भ्रष्ट होते हुए सहसा उस ओर प्रवृत होना। जैसे—तुम तो कोई अच्छी चीज देखकर तुरत फिसल पडते हो।
सयो० क्रि०—जाना।—पडना।
वि० जिसपर सहज मे कुछ या कोई फिसल सकता है। फिसलनवाला। जैसे—फिसलना पत्थर।

फिसलाना—स०[हिं० फिसलना का स०] किसी को फिसलने मे प्रवृत करना।

फिहरिस्त—स्त्री०=फेहरिस्त (सूची)।

फींचना—स०=फीचना।

फी—अव्य०[अ० फी]हर एक। प्रत्येक। जैसे—फी आदमी दो आने लगेंगे।
स्त्री०[अनु०] ऐब। त्रुटि। दोष।
क्रि० प्र०—निकालना।
स्त्री० [अ० फी] फीस।

फीचना—स०[अनु० फिच् फिच्] कपडे को गीला करके और बार बार पटककर साफ करना। पछाड़ना।

फीक—स्त्री०[?] चाबुक की मार।

फीका—वि० [स० अपक्व; प्रा० अपिक्क] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमे आवश्यक, उपयुक्त अथवा यथेष्ट मिठास, रस अथवा स्वाद न हो। जैसे—फीका दूध (जिसमे यथेष्ट मिठास न हो), फीकी तरकारी (जिसमे यथेष्ट नमक-मिर्च न हो)। २ (रग) जो यथेष्ट चमकीला या तेज न हो। धूमिल। मलिन। जैसे—चार दिन मे ही साडी का रग फीका हो जायगा। ३ (खेल, तमाशा आदि) जिसमे आनद की प्राप्ति न हुई हो। ४ (पदार्थ या व्यक्ति) काति, तेज, प्रभा आदि से रहित या हीन। जैसे—मुझे-देखते ही उसके चेहरे का रग फीका पड गया।
मुहा०—(किसी व्यक्ति का) फीका पड़ना=लज्जित होने के कारण निष्प्रभ या श्री-हत होना।
५ जिसका अभीष्ट या यथेष्ट परिणाम न हुआ हो अथवा प्रभाव न पडा हो। उदा०—नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।—बिहारी।
६ (व्यक्ति का शरीर) जो हलके ज्वर के कारण कुछ गरम और तेजहीन या सुस्त हो गया हो। (स्त्रियाँ) जैसे—हाथ लगाकर देखा तो पिंडा फीका लगा।

फीता—पु०[पुर्त०] १. सूत आदि की बुनी हुई बहुत कम चौडी और बहुत अधिक लबी वह धज्जी या पट्टी जो कई प्रकार की चीजे बाँधने और कई प्रकार के कपडो पर टाँकने के काम आती है। जैसे—जूता बाँधने का फीता, साडी पर टाँकने का फीता। २ उक्त प्रकार की वह धज्जी या पट्टी जिस पर इचो आदि के चिह्न बने होते है और जो चीजो की ऊँचाई, गहराई, लबाई आदि नापने के काम आती है। (टेप)

फीफरी—स्त्री०=फेफरी।

फीरनी—स्त्री०=फिरनी (खाद्य पदार्थ)।

फीरोज—वि० [फा० फीरोज] १. विजयी। २ सफल। ३ सुखी और सम्पन्न। ४. भाग्यवान्। फीरोजे के रग का। हरापन लिये पीले रग का।

फीरोजा—पु० [फा० फीरोज] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो हरापन लिये नीले रग का होता है।

फीरोजी—वि०[फा० फीरोजी] फीरोजे के रग का। हरापन लिये नीला।
पु० उक्त प्रकार का रग।

फील—पु०[फा० फील] हाथी।

फीलखाना—पु०[फा०] वह स्थान जिसमे हाथी रखे जाते है। हस्तिशाला। हथिसार।

फीलपा—पु०[फा०] एक प्रकार का रोग जिसमे पैर या हाथ फूलकर बहुत मोटा हो जाता है।

फीलपाया—पु०[फा० फीलपा] १ ईंटो का बना हुआ वह मोटा खभा जिस पर छत ठहराई जाती है। २ पाँव सूजने का एक रोग।
पु०=फीलपा (रोग)।

फीलवान—पु०=महावत (हाथीवान)।

फीला—पु०[फा० फील.] शतरज के खेल मे हाथी नाम का मोहरा।

फीली—स्त्री०=पिंडली।

फीस—स्त्री०[अ० फी] १ कुछ विशिष्ट व्यवसायियो को उनके विशिष्ट कृत्यो के बदले मे पारिश्रमिक के रूप मे दिया जानेवाला धन। जैसे—डाक्टर या वकील की फीस। २. वह धन जो विद्यार्थी को किसी विद्यालय मे शिक्षा ग्रहण करने के बदले मे मासिक रूप से देना पड़ता है। शुल्क। ३. कर।

फी सदी—अव्य० [फा० फी सदी] हर सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

फुंकना—अ० [हिं० फूंकना का अ० रूप] १. वस्तु आदि का जलकर पूर्णतया भस्म होना। जैसे—मकान या शव फुंकना। २. वायु का फूंककर किसी मे भरा जाना। जैसे—गुब्बारा फुंकना। ३. धन आदि का बहुत ही बुरी तरह से और व्यर्थ बरबाद या व्यय होना।
पु० १ धातु, बाँस आदि की वह पतली नली जिससे हवा फूंककर आग सुलगाई जाती है। २. भाथी। ३. फुंकैया। (दे०) ४. गुरदा (शरीर का अग)।

फुंकरना—अ० [हिं० फुंकार] फूत्कार करना। फूं फूं शब्द करना।

फुंकवाना—स० [हिं० फूंकना का प्रे०] फूंकने का काम दूसरे से कराना।

फुंकाना—स०=फुंकवाना।

फुंकार—स्त्री०=फूत्कार।

फुंकारना—अ०=फुंकरना।

फुंकैया—पु० [हिं० फूंकना] १. हवा फूंकने या फूंककर भरनेवाला व्यक्ति। २. व्यर्थ धन नष्ट, बरबाद या व्यय करनेवाला व्यक्ति।

फुँदना—पु० [हिं० फूल+फदा?] [स्त्री० अल्पा० फुंदिया] १. कली, फूल आदि के रूप मे ऊन, सूत आदि की बनी हुई वह छोटी गाँठ या लच्छी जो दुपट्टे चादर, साडी आदि के किनारे पर बनी या लगी हुई झालर के नीचे लटकाई जाती है। २ उक्त आकार-प्रकार की कोई गाँठ। जैसे—तराजू की डडी का फुँदना।

फुंदारा†—वि० [हिं० फुंदना] जिसमे फुंदने टँके या लगे हो।

फुंदिया—स्त्री० हिं० फुंदना का स्त्री० अल्पा०।

फुंदी—स्त्री०=बिंदी।

फुंसी—स्त्री० [स० पनसिका, पा० फनस] रक्त आदि के विकार के कारण त्वचा पर निकालनेवाला ऐसा छोटा दाना जिसमे कुछ मवाद भी हो।

फुआ—स्त्री०=बुआ।

फुआरा—पु०=फुहारा।

फुकना—स्त्री० [हिं० फुंकना] १ फुंकने की अवस्था या भाव। २. दाह। जलन।

फुकना—अ०=फुंकना
पु० [स्त्री० अल्पा० फुकनी] वह नली जिससे फूंक मारकर आग सुलगाते है।

फुकनी—स्त्री० हिं० 'फुकना' का स्त्री० अल्पा०।

फुकाना—स०=फुंकाना।

फुक्क—वि० [हिं० फुंकना] १ जो जलते या जलाये जाने पर पूर्णत· भस्म हो गया हो। २ (धन) जो पूर्णत· बरबाद या व्यर्थ व्यय हो चुका हो।
पु०=फुक्कू।

फुक्कू—वि० [हिं० फूंकना] १. फूंकने या भस्म करनेवाला। २ धन व्यर्थ नष्ट करनेवाला।

फुचड़ा—पु० [देश०] बुनावटवाली वस्तुओ मे बाहर निकला हुआ सूत या रेशा। जैसे—इस झोले मे जगह-जगह फुचडे निकल आये है।
क्रि० प्र०—निकलना।

फुजला—पु० [अ० फुज़्ल] १ जूठा बचा हुआ भोजन। जूठन। २. बचा हुआ रद्दी अश। सीठी। ३. मैल। ४ गुह। मल।

फुट—वि० [स० स्फुट] १ जिसका जोडा न हो। एकाकी। अकेला। २ जो किसी क्रम या शृखला से अलग हो। पृथक्। जुदा।
वि० [हिं० फूटना] टूटा हुआ। जैसे—फुटमत।
पु० [अ०] १ लबाई नापने का एक उपकरण जो १२ इच लबा होता है। २. उक्त लबाई का मान।

फुटक*—पु०=फुटका। उदा०—पानी पर पराग परि ऐसी बीर फुटक भरी आरसि जैसी।—नददास।

फुटकर—वि० [स० स्फुट+हिं० कर (प्रत्य०)] १. जो युग्म न हो। जिसका जोड़ या जोडा न हो। अयुग्म। २. जो किसी विशिष्ट मद या वर्ग मे न हो और इसी कारण उन सबसे अलग रहकर अपना अलग वर्ग बनाता हो। भिन्न भिन्न या अनेक प्रकार का। कई मेल का। जैसे—फुटकर कविता, फुटकर खर्च, फुटकर चीजो की दूकान। ३. (माल या सौदा) जो इकट्ठा या एक साथ नही, बल्कि अलग अलग या खडो मे आता या रहता हो। 'थोक' का विपर्याय। जैसे—फुटकर माल बेचनेवाला दूकानदार।

फुटकल—वि०=फुटकर।

फुटका—पु० [स० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फुटकी] १ फफोला। छाला। २. उक्त आकार-प्रकार का कोई छोटा दाग या धब्बा। ३. उक्त आकार-प्रकार का कोई छोटा कण।
क्रि० प्र०—पडना।
४ भुनी हुई ज्वार, धान, मक्के आदि का लावा।
पु० [?] ऊख का रस पकाने का बड़ा कडाहा।

फुटकी—स्त्री० [स० पुटक] १. किसी वस्तु के छोटे लच्छे, या जमे हुए कण जो किसी तरल पदार्थ मे अलग अलग ऊपर तैरते हुए दिखाई पडते है। बहुत छोटी अठी। जैसे—(क) जब दूध फट जाता है तब उसके ऊपर फुटकियाँ-सी दिखाई पड़ती है। (ख) रोगी के कफ (या थूक) मे खून की फुटकियाँ दिखाई देती हैं। ३. फुदकी (चिडिया)।

फुट-नोट—पु० [अं०] पाद-टिप्पणी।

फुट-बाल—पु० [अ०] १ हवा भरा हुआ रबड का वह बडा गेंद जिस पर चमड़े की खोली भी चढी होती है तथा जिसे पैर की ठोकर से उछाल-कर खेला जाता है। २ गेद से खेला जानेवाला खेल।

फुट-मत—पु० [हिं० फूटना+स० मत] १. ऐसी स्थिति जिसमे दो या अधिक पक्षो विशेषत· परिवार, सस्था आदि के विभिन्न सदस्यो मे किसी बात के सबध मे कई परस्पर विरोधी मत होते है। मत-भेद। २ फूट। (देखें)

फुटहरा†—पु०=फुटेहरा।

फुटा—पु० [अ० फुट] लबाई नापने का वह उपकरण जिस पर इचो और फुटो के निशान और अक बने रहते है। (फुट रूल)

फुटेहरा—पु० [हिं० फूटना+हरा=फल] १ ज्वार, मकई आदि का भुना हुआ वह दाना जो फूटकर खिल गया हो। २ खूब जोरो की हँसी।
मुहा०—फुटेहरा फुटना=जोर की हँसी होना। (व्यग्य)

फुटैल—वि०=फुट्टैल।

फुट्ट—वि० दे० 'फुट'।

फुट्टक—पु० [स०] [स्त्री० फुट्टिका] एक तरह का कपड़ा।

फुट्टैल—वि० [स० स्फुट, पा० फुट+ऐल (प्रत्य०)] १ पक्षी या पशु

जो झुड या दल से फूटकर अलग हो गया हो। २ जो अपने जोडे के साथ न रहता हो। ३ बदकिस्मत। हत-भाग्य।

फुतूर—पु०=फतूर।

फुतूरिया—वि०=फतूरिया।

फुतूरी—वि०=फतूरिया।

फुत्कार—पु०=फूत्कार।

फुत्कृत—भू० कृ० [स०] फूंका हुआ।

फुत्कृति—स्त्री० [स० फूत्√कृ+क्ति]=फूत्कृति (फूत्कार)।

फुदकना—अ० [अनु०] १. थोडी थोडी दूर पर उछलते हुए यहाँ से वहाँ तथा वहाँ से यहाँ आते-जाते रहना। जैसे—चिडियो का पेडो की डालियो पर फुदकना। २ उमग मे आकर अथवा प्रसन्नतापूर्वक उछलते हुए इधर-उधर आना-जाना।

फुदकी—स्त्री० [हि० फुदकना] १ फुदककर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का भाव।

क्रि० प्र०—भरना।

२ एक प्रकार की छोटी चिडिया जो उछल-उछलकर या फुदकती हुई चलती है। ३ टिड्डी।

फुनंग—पु०=फुनगा।

फुन—अव्य० [स० पुन] १ पुन। फिर। २ और। ३. भी।

फुनक—स्त्री० १ =फुत्कार। २ =फुनगी (छोटा फुनगा)।

फुनकार—स्त्री०=फुत्कार।

फुनगा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० फुनगी] १. वृक्षकी शाखा का अग्र भाग जिसमे कोमल पत्ते होते है। फुनग। २ आलू, कपास आदि की फसलो का एक रोग। सूंडी।

फुनना—पु०=फुंदना।

फुनि*—अव्य०=फुन (फिर)।

पद—फुनि फुनि=(क) बार-बार। (ख) रह-रहकर।

फुप्फुस—पु० [स०] [वि० फौप्फुसीय] फेफडा।

फुफंदी—स्त्री० १ =फुबती (नीवी)। २ =फफूंदी।

फुफकाना—अ०=फुफकारना।

फुफकार—स्त्री० [अनु०] १ फुफकारने की क्रिया या भाव। २ मुंह से निकाला जानेवाला फूं फूं शब्द। फुफकारने से होने-वाला शब्द। जैसे—बैल या साँप की फुफकार।

फुफकारना—अ० [हि० फुफकार] क्रोध मे आकर मुंह से फूं फूं करना (जिससे आघात करने का भाव भी सूचित होता है)। फूत्कार करना।

फुफी—स्त्री०=फूफी (बूआ)।

फुफनी—स्त्री०=फफूंदी।

फुफू—स्त्री०=फूफी (बूआ)।

फुफेरा—वि० [हि० फूफा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुफेरी] १ फूफा-सबधी। २. फूफा से उत्पन्न। जैसे—फुफेरा भाई।

फुर—वि० [हि० फुरना] सत्य। सच्चा। उदा०—पिता बचन फुर चाहिअ कीन्हा।—तुलसी।

अव्य० सचमुच। वास्तव मे।

पु० [अनु०] पक्षियो के उडने पर होनेवाला शब्द।

४-४

पद—फुर से=(क) फुर शब्द करते हुए। (ख) एकाएक। जल्दी से।

फुरकत—स्त्री० [अ० फुर्कत] वियोग। जुदाई। बिछोह।

फुरकना—स० [अनु०] जुलाहो की बोली मे किसी वस्तु को मुंह से चबाकर साँस के जोर से थूकना।

अ०=फडकना।

फुरकाना—स०=फडकाना।

फुरती—स्त्री० [स० स्फूर्ति] [वि० फुरतीला] १. स्वस्थ शरीर का वह गुण जिससे कोई उमग से तथा शीघ्रतापूर्वक किसी काम मे प्रवृत्त या सलग्न होता तथा अपेक्षाकृत थोडे समय मे ही उसका सपादन करता है। २ शीघ्रता।

क्रि० प्र०—करना।

फुरतीला—वि० [हि० फुरती+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फुरतीली] १ जिसमे फुरती हो। फुरती से काम करनेवाला। २. बहुत तेज चलनेवाला।

फुरन—स्त्री० [हि० फुरना] फुरने की क्रिया या भाव।

फुरना—अ० [स० स्फुरण, प्रा० फुरण] [भाव० फुरन] १ स्फुरित होना। उद्भूत या प्रकट होना। निकलना। जैसे—मुंह से बात फुरना। २ ठीक या पूरा उतरना। सत्य सिद्ध होना। ३ अर्थ या आशय समझ मे आना। ४ किसी सोची हुई बात का पूरा या सफल होना। ५ चमकना। ६ परो का फडफडाना।

फुरनी-दाना—पु० [फुरनी ?+हि० दाना] एक प्रकार का चबैना जिसमे चना और चिडवा एक साथ मिला रहता है और जो प्राय घी या तेल मे भुना हुआ होता है।

फुरफुर—स्त्री० [अनु०] पक्षियो के उडते समय तथा परो के फडफडाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

फुरफुराना—अ० [अनु० फुर फुर] [भाव० फुरफुराहट] १. किसी चीज का इस प्रकार हिलना कि उससे फुर फुर शब्द हो। जैसे—चिड़ियो या फतिगो का फुरफुराना। २ फहराना।

स० १ कोई चीज इस प्रकार हिलना कि उससे फुर फुर शब्द हो। २ फडफडाना।

फुरफुराहट—स्त्री० [अनु०] फुर फुर शब्द करने या होने की क्रिया या भाव।

फुरफुरी—स्त्री० [अनु० फुर फुर] १. कुछ समय तक बराबर होता रहनेवाला फुर फुर शब्द।

मुहा०—(चिड़ियों का) फुरफुरी लेना=उड़ने के लिए पख फड़फडाना।

फुरमान—पु०=फरमान।

फुरमाना—स०=फरमाना।

फुरसत—स्त्री० [अ० फुर्सत] १ अवसर। समय। २ हाथ मे कोई काम न होने के कारण अवकाश का समय।

क्रि० प्र०—देना।—निकालना।—पाना।—मिलना।

पद—फुरसत से=अवकाश के समय।

३ झझट, बखेडे, रोग आदि से होनेवाली मुक्ति।

फुरसा—पु० [?] बालू के रंग का एक प्रकार का छोटा किंतु भीषण साँप।

फुरसी—स्त्री० [?] एक प्रकार की सजा जो किसी अपराधी को सजा

भोगते रहने की दशा में फिर पहले का-सा अपराध करने पर दी जाती है और पहले मिली हुई सजा के साथ जोड़ दी जाती है।

फुरहरना—अ० [स० स्फुरण] फूटकर निकलना। प्रादुर्भूत होना।

फुरहरा—पु० [हिं० फुरना=स्फुरण] १. ज्वार, मकई आदि के दाना का वह खिला हुआ रूप जो उन्हें भूनने पर प्राप्त होता है। २. खूब जोरों की हँसी। ठहाका।
क्रि० प्र०—फूटना।

फुरहरी—स्त्री० [अनु०] १. फुर फुर शब्द करने या होने की अवस्था या भाव। फुरफुराहट। २. पक्षियों के पर फड़फड़ाने का शब्द।
मुहा०—(पक्षियों का) फुरहरी खाना या लेना=पक्षियों का मग्न होकर अपने पर फड़फड़ाना।
३ कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। फरफराहट। ४. सरदी, भय आदि के कारण होनेवाली थरथराहट या रोमांच। रोमांचयुक्त कंप।
क्रि० प्र०—आना।—खाना।—लेना।
५. वह सींक जिसके सिरे पर हलकी रूई लपेटी हो और जो तेल, इत्र, दवा आदि में डुबोकर काम में लाई जाय।

फुराना—स० [हिं० फुर] १. कथन आदि पूरा उतारना। सच्चा ठहराना। २. प्रमाणित या सिद्ध करना।
अ०=फुरना।

फुरी†—वि०=फुर।

फुरेरी†—स्त्री०=फुरहरी।

फुरेरू—स्त्री० [अनु० फुर] १. आवेश। जोश। २. साहस। हिम्मत। (बुंदेल०) उदा०—देशराज के साथ अपने को पाकर विक्रम को फुरेरू आ गई।—वृन्दावनलाल वर्मा।

फुर्र—अव्य० [हिं० फुरना] सचमुच।

फुर्ती—स्त्री०=फुरती।

फुर्सत—स्त्री०=फुरसत।

फुलंगो—स्त्री० [हिं० फुल ?] पहाड़ों में होनेवाली जंगली भाँग का वह पौधा जिसमें बीज बिलकुल नहीं लगते (कलगो से भिन्न)।

फुल—पु० [हिं० फूल] हिं० 'फूल' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—फुलझड़ी, फुलवारी आदि।
पु०=फूल। (पश्चिम)

फुलई—स्त्री० [हिं० फूल] वनस्पतियों में वह सींका जिसके अगले भाग में फूल लगे होते हैं। जैसे—सरकंडे की फुलई।

फुलका—वि० [हिं० 'हलका' का अनु०] फूल की तरह हलका। फूल जैसा। जैसे—हलका फुलका।
पु० [स्त्री० अल्पा० फुलकी] १ हलकी और फूली हुई रोटी। चपाती। २. एक प्रकार का छोटा कड़ाहा जिसमें रस से चीनी बनाई जाती है। ३ छाला। फफोला।

फुलकारी—स्त्री० [हिं० फूल+कारी (प्रत्य०)] १. कपड़े पर सूत आदि से फूल-पत्तियाँ बनाने का काम। २ एक प्रकार का कपड़ा जिसमें मामूली मलमल आदि पर रंगीन रेशमी डोरियों से फूल-बूटियाँ आदि काढ़ी हुई होती हैं।

फुलमुही—स्त्री०=फुलसुंघी (चिड़िया)।

फुलझड़ी—स्त्री० [हिं० फूल+झड़ना] १. छोटी, पतली छड़ी की तरह की एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें फूल की-सी चिनगारियाँ निकलती हैं। २. लाक्षणिक अर्थ में ऐसी बात जिसका मुख्य उद्देश्य दो पक्षों में झगड़ा कराकर स्वयं तमाशा देखना होता है।
क्रि० प्र०—छूटना।—छोड़ना।

फुलझरी—स्त्री०=फुलझड़ी।

फुलनी—स्त्री० [हिं० फूलना] ऊसर भूमि में होनेवाली एक तरह की घास।

फुलरा—पु०=फुँदना।

फुलवर—स्त्री० [हिं० फूल+वर (प्रत्य०)] फूलदार या बूटीदार रेशमी कपड़ा।

फुलवा—पु० [हिं० फूल] १. एक प्रकार की गोंद जो उबटन तथा दवा के रूप में काम आती है। २. एक प्रकार का बेल। ३ देशी सफेद आलू।
†पु०=फूल (पुष्प)।

फुलवाई—स्त्री०=फुलवारी।

फुलवाड़ी—स्त्री०=फुलवारी।

फुलवार—वि० [स० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न।

फुलवारा—पुं० [देश०] चिउली नाम का पेड़।

फुलवारी—स्त्री० [हिं० फूल+वारी] १. वह छोटा उद्यान या बगीचा जिसमें सुन्दर फूलों के पौधे ही हों, झाड़ियाँ या वृक्ष न हों। पुष्प-वाटिका। २. कागज के बने हुए फूल और पौधे जो तख्तों पर लगाकर विवाह में बरात के साथ शोभा के लिए निकाले जाते हैं। ३. लाक्षणिक रूप में, बाल-बच्चे जो माता-पिता के लिए परम आनन्ददायक होते हैं।

फुलसरा—पु० [हिं० फूल+सार] काले रंग की एक चिड़िया जिसके सिर पर छींटे होते हैं।

फुलसुंघी—स्त्री० [हिं० फूल+सूँघना] एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जिसका रंग नीलापन लिये काले रंग का होता है तथा जो फूलों पर फुदकती तथा मँडराती रहती है। इसका घोसला बहुत ही सुन्दर तथा कलापूर्ण होता है।

फुलहरा†—पु० [हिं० फूल+हारा] सूत, रेशम आदि के बने हुए झब्बेदार बंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाये जाते हैं।
पु०=फुलहारा (माली)।

फुलहा†—वि० [हिं० फूल (धातु)] [स्त्री० फुलही] फूल नामक धातु का बना हुआ। जैसे—फुलही बटलोही।
†पु०=फुलवा।

फुलहारा—पु० [हिं० फूल+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुलहारिन, फुलहारी] माली।

फुलांग—स्त्री०=फुलगो (भाँग)।

फुलाई—स्त्री० [हिं० फूलना] १. फूले हुए होने की अवस्था या भाव। २ फुलाने की क्रिया या भाव। ३. एक प्रकार का बबूल जो पंजाब में सिंधु और सतलज नदियों के बीच की पहाड़ियों पर होता है। फुलाह। ४ दे० 'सर-फुलाई'।

फुलाना—स० [हिं० फूलना] १. वृक्षों आदि को फूलों से युक्त करना।

पुष्पित करना। २ किसी चीज को फूलने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज हवा से भरकर फूल जाय। जैसे—गुब्बारा फुलाना, फुल्का फुलाना।

मुहा०—गाल या मुँह फुलाना=अभिमानपूर्वक रुष्ट होना।

३. किसी को आनदित, पुलकित या प्रसन्न करना। ४ किसी के मन मे अभिमान या गर्व उत्पन्न करना। गर्वित करना। घमड बढाना। जैसे—तुम्ही ने तो तारीफ कर करके उसे और फुला दिया है।

†अ०=फूलना।

फुलायल—पु०=फुलेल।

फुलाव—पु० [हिं० फूलना] १ फूले हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दे० 'फुलावट'।

फुलावट—स्त्री० [हिं० फूलना] १ किसी चीज के फूले हुए होने की अवस्था या भाव। फुलाव। २ वृक्षो आदि के फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फुलावा—पु० [हिं० फूल] स्त्रियो के सिर के बालो को गूँथने की डोरी जिसमे फूल या फुँदने लगे रहते है। खजुरा।

फुलिंग—पु० [स० स्फुलिंग, प्रा० फुलिंग] चिनगारी।

फुलिया—स्त्री० [हिं० फूल] १ किसी चीज का फूल की भाँति उभरा और फैला हुआ गोल सिरा। २ लोहे का एक प्रकार का बड़ा काँटा जिसका ऊपरी भाग या सिरा गोलाकार फैला हुआ होता है। ३ नाक मे पहनने का फूल या लौग नाम का गहना।

फुलिसकेप—पुं० [अ० फूल्स्कैप] आकार के विचार से वह कागज जो १६ इच लबा और १२ इच चौडा होता है।

फुलुरिया—स्त्री० [देश०] कपडे का वह टुकडा जो छोटे बच्चो के चूतड़ के नीचे विछाया जाता है। पोतडा।

फुलेरा—पु० [हिं० फूल] फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओ के ऊपर लगाई जाती है।

फुलेला—पु० [हिं० फूल+तेल] फूलो की महक से सुवासित किया हुआ तेल जो सिर मे लगाने के काम आता है। सुगधित तेल।

पु० [हिं० फूल] एक प्रकार का पहाडी वृक्ष।

फुलेली—स्त्री० [हिं० फुलेल] काच आदि का वह बडा बरतन जिसमे फुलेल रखा जाता है।

फुलेहरा—पु०=फुलहरा।

फुलौरा—पु० [हिं० फूल+बडा] [स्त्री० अल्पा० फुलौरी] चौरेठे, मैदे आदि के घोल को उबालकर बनाई जानेवाली एक तरह की बरी जो तले जाने पर काफी फूल जाती है।

फुलौरी—स्त्री०=छोटा फुलौरा।

फुल्ल—वि० [स०√फुल्ल् (खिलना)+अच्] १ फूला हुआ। विकसित। २ प्रसन्न। हर्षित।

पु० फूल। पुष्प।

फुल्लदाम (न्)—पु० [स० ष० त०] उन्नीस वर्णो की एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे ६, ७, ८, ९, १०, ११ और १७वाँ वर्ण लघु होता है।

फुल्ला—पु० [हिं० फुलना] १ अन्न का वह दाना जो सेंकने से फूल गया हो। फुरेहरा। (पश्चिम) २. खील। ३ फूली हुई या फूल की तरह की कोई चीज। ४ आंख का फूली नामक रोग।

फुल्ली—स्त्री० [हिं० फूल] १. फूल के आकार का कोई आभूषण या उसका कोई भाग। २. दे० 'फुलिया'। ३. दे० 'फूली'।

फुवारा†—पु०=फुहारा।

फुस—पु० [अनु०] वह शब्द जो मुँह से फूटकर साफ न निकले। बहुत धीमी आवाज। जैसे—फुस से किसी के कान मे कुछ कहना।

फुसकारना—अ० [अनु०] फूंक मारना। फूत्कार छोडना।

फुसकी—स्त्री० [अनु०] १. किसी के कान मे धीरे से कुछ कहना। २. गुदा मार्ग से निकलनेवाली वह हवा जिससे शब्द नही होता। ठुसकी।

फुसड़ा—पु०=फुचड़ा।

फुसफस—स्त्री० [अनु०] १. किसी के कान के पास मुँह करके इतने धीरे से कुछ कहना कि आस-पास के लोग न सुन सकें। २. इस प्रकार आपस मे होनेवाली बात-चीत। काना-फूसी। (ह्लिस्पर)

फुसफुसा—वि० [हिं० फूस या अनु० फुस] १. जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। जो कडा या करारा न हो। कमजोर और नरम। २. जिसमे तीव्रता न हो। मंद। मद्धिम।

फुसफुसाना—स० [अनु०] फुसफुस शब्द करते हुए कुछ कहना। बहुत ही दबे हुए या धीमे स्वर से बोलना।

फुसलाना—स० [हिं०] १ किसी को मीठी मीठी बातो से या बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाकर अपने अनुकूल करना। जैसे—बच्चे या स्त्री को फुसलाना। २. रूठे हुए व्यक्ति को मनाना।

सयो० क्रि०—लेना।

फुहार—स्त्री० [स० फूत्कार=फूंक से उठा हुआ पानी का छीटा या बुलबुला] १ आकाश से बरसनेवाली पानी की बहुत ही छोटी छोटी बूँदें जो देखने मे झरने या फुहारे से उड़नेवाली बूँदो के समान जान पड़ें। (ड्रिज़िल)। २ ऊपर से गिरनेवाली किसी तरल पदार्थ की बहुत छोटी छोटी बूँदें। जैसे—गुलाब जल की फुहार।

क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।

फुहारना—स० [हिं० फुहार] किसी चीज को धोने, रँगने आदि के लिए उस पर किसी तरल पदार्थ की फुहार डालना।

फुहारा—पु० [हिं० फुहार] १. एक विशिष्ट प्रकार का उपकरण जिसकी सहायता से पानी या किसी तरल पदार्थ की बहुत छोटी-छोटी बूँदें चारो ओर गिराई जाती हैं। जल यन्त्र। २. जल या किसी तरल पदार्थ की तेजधार। जैसे—सिर से खून का फुहारा छूटना।

क्रि० प्र०—छूटना।

फुही†—स्त्री०=फूही।

फुहुँकना—अ०=फुफकारना। उदा०—भृगुटि के कुडल वक्र मरोर, फुहुँकता अघ रोष फन खोल?—पन्त।

फूंक—स्त्री० [अनु० फूफू] १. मुँह से वेगपूर्वक निकाली जानेवाली हवा।

क्रि० प्र०—मारना।

२. श्वास-प्रश्वास जो किसी के जीवित होने के सूचक होते हैं।

मुहा०—फूंक निकलना या निकल जाना=शरीर से प्राण निकल जाना। मरना।

३ किसी की ओर मत्र पढकर मुँह से छोडी जानेवाली वायु जो अनेक प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करनेवाली मानी जाती है।

पद—झाड़-फूंक। (देखें)

फूंकना—स० [हिं० फूंक] १ मुंह का विवर समेटकर वेग के साथ हवा छोड़ना। होंठों को चारों ओर से दबाकर झोंक से हवा निकालना। जैसे—यह बाजा फूंकने से बजता है।

संयो० क्रि०—देना।

मुहा०—**फूंक फूंककर चलना या पैर रखना**=बहुत ही सतर्क तथा सावधान रहकर आगे बढ़ना।

२. शंख, बाँसुरी आदि मुंह से बजाये जानेवाले बाजों को फूंककर बजाना। जैसे—शंख फूंकना। ३. मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारना। ४. किसी के कान में धीरे से कोई ऐसी बात कहना जिसका कोई अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न हो। जैसे—न जाने किसने उन्हें फूंक दिया है कि वे मुझसे नाराज हो गये हैं। ५. मुंह की हवा छोड़कर आग दहकाना या सुलगाना। फूंककर अग्नि प्रज्वलित करना। जैसे—चूल्हा फूंकना। ६ पूरी तरह से भस्म करने के लिए आग लगाना। जलाना। जैसे—किसी का घर या झोपड़ी फूंकना। ७. धातुओं का वैद्यक की रासायनिक रीति से अथवा जड़ी-बूटियों की सहायता से भस्म करना। जैसे—सोना-फूंकना। ८ बुरी तरह से नष्ट या बरबाद करना। जैसे—दुर्व्यसनों में धन या सम्पत्ति फूंकना।

पद—**फूंकना-तापना**=सुख-भोग के लिए व्यर्थ और बहुत अधिक खर्च करना। उड़ाना।

९. बहुत दुःखी या संतप्त करना।

फूंका—पु० [हिं० फूंक] १ भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया या भाव। २. गौओं-भैंसों के स्तनों से अधिक से अधिक दूध उतारने या निकालने की एक प्रक्रिया जिसमें बाँस की नली में चरपरी या झालदार चीजें (जैसे—मिर्च आदि) भरकर फूंक मारते हुए उनके स्तनों के अन्दर इसलिए पहुँचा देते है कि वे अपने बच्चों के लिए दूध चुराकर न रख सकें। ३ बाँस आदि की वह नली जिससे उक्त क्रिया की जाती है। ४ छाला। फफोला।

फूंद—स्त्री०=फुंदना।

पद—**फूंद-फूंदारा**=जिसमें बहुत से झब्बे या फुंदने लगे हों।

फूंदरी—स्त्री०=छोटा फुंदना। (बुन्देल०) उदा०—गहरे लाल रंगवाले फूलों की फूंदरी लटक रही थी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

फुंदा—पु०=फुंदना।

फुई—स्त्री०=फूही।

फूकना—स०=फूंकना।

फूजना—पु० [?] अस्त-व्यस्त होना। बिखरना। (पूरब)

फूट—स्त्री० [हिं० फूटना] १ फूटने की क्रिया या भाव। २. जिन लोगों को आपस में मिलकर रहना या जो आपस में मिलकर रहते आये हों, उनमें उत्पन्न होनेवाला पारस्परिक विरोध या वैमनस्य। आपसी अनबन या बिगाड़।

पद—**फूट-फटक**=आपस में होनेवाली अनबन या फूट।

मुहा०—**फूट डालना**=जो लोग मिलकर रहते हों उनमें भेद-भाव या विरोध उत्पन्न करना।

३ एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर प्रायः खेतों में ही फट जाती है।

फूटन—स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २. वह खंड या टुकड़ा जो फूटकर अलग हो गया या निकल आया हो। ३. शरीर के जोड़ों में होनेवाली वह पीड़ा जिसमें अंग फूटते हुए-से जान पड़ते हैं। जैसे—हड़फूटन।

फूटना—अ० [सं० स्फुटन] १. मिट्टी, धातु आदि की बनी हुई वस्तु का आघात लगने पर अथवा गिरने के फलस्वरूप अनेक छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त होना। जैसे—(क) शीशा फूटना। (ख) ईंट फूटना। २ विशेषतः किसी कड़ी और प्रायः गोलाकार चीज का आघात लगने पर या दबाव पड़ने पर इस प्रकार टूटना कि उसके अंदर का अवकाश आस-पास के अवकाश के साथ मिलकर एक हो जाय। जैसे—मटका या हँड़िया फूटना। ३. शरीर के किसी अंग में ठोकर लगने पर उसमें से रक्त बहने लगना। जैसे—पाँव या सिर फूटना। ४. अन्दर या दबाव पड़ने से अथवा किसी प्रकार की बाहरी क्रिया से किसी चीज का ऊपरी आवरण या स्तर फटना। जैसे—आँख फूटना, कटहल फूटना, फोड़ा फूटना। ५ रासायनिक पदार्थों विशेषतः गोले, बम आदि का धमाके के साथ फटना। विस्फोट होना। ६. किसी प्रकार या रूप में ऊपर या बाहर आकर दृश्य, प्रकट या स्पष्ट होना। जैसे—(क) चन्द्रमा या सूर्य की किरणें फूटना। (ख) अंग अंग से शोभा या सौंदर्य फूटना। ७. किसी चीज का अपने ऊपरी आवरण को तोड़ या भेद कर वेगपूर्वक बाहर निकलना। जैसे—पहाड़ में से पानी का सोता फूटना। ८. ऊपरी दबाव हटाकर निकलना। बाहर आना अथवा प्रकट होना। जैसे—(क) गरमी के कारण शरीर में दाने फूटना। (ख) वनस्पतियों में अंकुर या वृक्ष में डालें फूटना।

मुहा०—**फूट पड़ना**=मन में भरा हुआ आवेश बाहर निकलना या निकालना। जैसे—जी चाहा कि फूट पड़ूँ। **फूट-फूटकर रोना**=बिलख-बिलखकर रोना। बहुत विलाप करना।

९. उक्त के आधार पर शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। जैसे—थोड़ी दूर पर सड़क से एक और रास्ता फूटा है। १०. कली का खिलकर फूल का रूप धारण करना। प्रस्फुटित होना। ११. मत-भेद, राग-द्वेष आदि होने पर दल, मंडली, समाज आदि में से निकल कर किसी का अलग होना। जैसे—(क) दल में से बहुत से लोग फूटकर विरोधियों में जा मिले हैं। (ख) इस मुकदमे का एक गवाह फूट गया है। १२. संयुक्त या साथ न रहकर अलग होना। जैसे—यह नर (पशु) अपनी मादा से फूट गया है। १३ शरीर के अंगों या जोड़ों में ऐसा दर्द होना कि वह अंग फटता हुआ-सा जान पड़े। फटना।

मुहा०—**उँगलियाँ फूटना**=खींचने या मोड़ने से उँगलियों के जोड़ों का खट खट बोलना। उँगलियाँ चटकना।

१४ इस प्रकार या इतना अधिक विकृत होना कि किसी काम का न रह जाय। जैसे—भाग्य फूटना।

पद—**फूटी आँखों का तारा**—कोई ऐसी बहुत ही प्रिय वस्तु जो उसी प्रकार की बहुत सी वस्तुओं के नष्ट हो जाने पर अकेली बच रही हो। जैसे—सात बच्चों में यह एक बच्चा फूटी आँखों का तारा रह गया है। **फूटी कौड़ी**=वह टूटी हुई कौड़ी जिसका कुछ भी महत्त्व या मूल्य न रह गया हो। जैसे—इसे बेचने पर तो फूटी कौड़ी भी न मिलेगी।

मुहा०—**फूटी आँखों न देख सकना**=जरा भी देखने की प्रवृत्ति या रुचि

न होना। जैसे—सौत के लडको को तो वह फूटी आँखो नही देख सकती। **फूटी आँखो न भाना**=तनिक भी अच्छा न लगना। बहुत बुरा या अप्रिय लगना। जैसे—तुम्हारा यह आवागमन मुझे फूटी आँखो नही भाता। **फूटे मुँह से न बोलना**=उपेक्षा, द्वेष आदि के कारण किसी से साधारण बात-चीत भी न करना।

१५ पानी का या तरल पदार्थ का इतना खौलना कि उसके तल पर छोटे छोटे बुलबुलो के समूह दिखाई देने लगे। जैसे—जब दूध (या पानी) फूटने लगे, तब उसमे चावल छोड देना। १६ पानी या किसी तरल पदार्थ का किसी तल के इस पार से उस पार निकलना। जैसे—यह कागज अच्छा नही है, इस पर स्याही फूटती है। १७ मुँह से शब्द उच्चरित होना या निकलना। जैसे—(क) लाख समझाओ, पर वह मुँह से कुछ फूटता ही नही है। (ख) अब भी तो मुँह से कुछ फूटो। १८ कोई गुप्त बात, भेद या रहस्य सब पर प्रकट हो जाना। जैसे—देखो, यह बात कही फूटने न पावे, अर्थात् किसी पर प्रकट न होने पावे।

फूटा—पु० [हिं० फूटना] १ फसल की वह बालें जो टूटकर खेतो मे गिर पडती है। २. शरीर के जोडो मे होनेवाला वह दरद जिसमे अग फूटते हुए जान पडते है।

वि० [स्त्री० फूटी] १ जो फूट चुका हो। २ फलत खराब या बिगडा हुआ। जैसे—फूटी आँख।

फूत्कार—पु० [स० फूत्√कृ+घञ्] वह शब्द जो कुछ जतुओ के वेगपूर्वक साँस बाहर निकालते समय होता है। फू-फू। जैसे—साँप की फूत्कार।

फूत्कृति—स्त्री० [स० फूत्√कृ+क्तिन्] फूत्कार। (दे०)

फूफा—पु० [स्त्री० फूफी] [वि० फुफेरा] सबध के विचार से फूफी अर्थात् बुआ का पति।

फूफी—स्त्री० [स० पितृश्वसा, पा० पितुच्छा, पा० पिनच्छा ?] बाप की बहन। बुआ।

फूफू—स्त्री०=फूफी।

फूर—पु०=फूल।

फूरना†—अ०=फूलना।

फूल—पु० [स० फुल्ल] १ पौधो और वृक्षो का वह प्रसिद्ध अग जो कुछ नियत ऋतुओ मे गोल या लबी पखडियो के योग से गाँठो आदि के रूप मे बना होता है। कुसुम। पुष्प। सुमन। (फ्लावर)

विशेष—वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से इसे पेड-पौधो की जननेंद्रिय कह सकते है, क्योकि फल उत्पन्न करनेवाला मूल तत्त्व या शक्ति इसी मे निहित होती है। भिन्न भिन्न फूलो के आकार-प्रकार और रूप-रग भिन्न होते है और प्रत्येक वर्ग के फूल मे प्राय कुछ अलग प्रकार की और विभिन्न गध या सुगध भी होती है। लोक मे फूल अपनी कोमलता, सुदरता और हलकेपन के लिए प्रसिद्ध है।

क्रि० प्र०—चुनना।—झडना।—निकलना।—फूलना।—लगना।—लोढना।

पद—**फूल-सा**=बहुत ही सुन्दर, सुकुमार या हलका। **फूलो की चादर**=फूलो से गूँथ कर चादर की तरह का बनाया हुआ वह जाल जो मुसलमान पीरो आदि की कब्रो पर चढाते है। **फूलो की छड़ी**=दे० 'फूल-छडी'। **फूलो की सेज**=वह पलग या शय्या जिस पर सजावट और कोमलता के लिए फूलो की पखडियाँ फैलाई या बिछाई गई हो। (शृगार की एक सामग्री)

मुहा०—**(पेड़ पौधो में) फूल आना**=शाखाओ आदि मे फूल उत्पन्न होना या निकलना। **फूल उतरना**=पेड-पौधो मे से फूलो का झडकर या तोडे जाने पर इस प्रकार अलग होना कि काम मे आ सकें। जैसे—बेल की इस क्यारी मे रोज सेरो फूल उतरते है। **फूल चुनना**=वृक्षो के फूल तोडकर इकट्ठे करना। **(किसी के मुँह से) फूल झड़ना**=मुँह से बहुत ही मनोहर और मीठी बाते निकलना, बहुत ही प्रिय-भाषी होना। **फूल सूँघ कर रहना**=बहुत ही कम खाना। अत्यन्त अल्पाहारी होना। जैसे— आप खाते तो क्या है, फूल सूँघकर रहते है।

२ किसी चीज पर अकित किये या और किसी प्रकार बनाये हुए फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी। ३ फूल के आकार-प्रकार की बनाई हुई कोई चीज या रचना। जैसे—(क) कान या नाक मे पहनने का फूल। (ख) मथानी के डडे के सिरे पर का फूल, कागज या चाँदी-सोने के फूल।

मुहा०—**(किसी के गालो पर) फूल पड़ना**=बोलने, हँसने आदि के समय गालो पर छोटे गोलाकार गड्ढे से बनना जो सौदर्यसूचक होते है। जैसे—जब यह बच्चा मुस्कराता है, तब इसके गालो पर फूल पडते है।

४ कोई ऐसी चीज जो देखने मे वृक्षो के फूलो के आकार-प्रकार की हो। जैसे—चार फूल मेथी (सूखे हुए दाने), दस फूल लौग। ५ किसी प्रकार के चूर्ण का वह रूप जिसके दाने या रवे फूल की तरह खिले हुए और अलग हो। जैसे—आटे या चीनी के फूल। ६ किसी चीज का सत्त या सार। जैसे—फूल शराब=सुरासार। ७ किसी पतले या द्रव पदार्थ को सुखाकर जमाया हुआ पत्तर या रवा। जैसे—अजवायन के फूल, देशी स्याही के फूल। ८ एक प्रकार की मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है। ९ दीपक की जलती हुई बत्ती पर पडे हुए गोल दमकते दाने जो उभरे हुए मालूम होते है। गुल।

क्रि० प्र०—झडना।—झाडना।

मुहा०—**(दीपक को) फूल करना**=दीआ बुझाना।

१० शरीर पर पडनेवाला वह लाल या सफेद धब्बा जो श्वेत कुष्ठ नामक रोग होने पर होता है। ११ स्त्रियो का वह रक्त जो मासिक धर्म मे निकलता है। रज। पुष्प।

क्रि० प्र०—आना।

पद—**फूल के दिन**=स्त्री के रजस्वला होने के दिन। उदा०—स० महीने मे कुढाते थे मुझे फूल के दिन। बारे अब की तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रगीन।

१२ स्त्रियो का गर्भाशय। १३ घुटने या पैर की गोल हड्डी। चक्की। टिकिया। १४ शव जलाने के बाद मृत शरीर की बची हुई हड्डियाँ जो प्राय इकट्ठी करके किसी पवित्र जलाशय या नदी मे फेंकी या प्रवाहित की जाती है।

क्रि० प्र०—चुनना।

स्त्री० [हिं० फूलना] १ वृक्षो आदि के फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव। फुलावट। २ मन के फूलने अर्थात् प्रफुल्लित होने की अवस्था या भाव। प्रसन्नता। प्रफुल्लता। उदा०—मृग नैनी दृग की फरक, उर उछाह, तन फूल।—बिहारी।

वि० (रगो के सबंध मे) साधारण से कम गहरा। हलका। (यौ० पदो के आरभ मे 'नीम' और 'हवा' की तरह प्रयुक्त)। जैसे—इस साडी का रंग गुलाबी तो नही, हाँ फूल-गुलाबी कहा जा सकता है।

फूलकारी—स्त्री० [हिं० फूल+फा० कारी] १. बेल-बूटे बनाने का काम। २. दे० 'फूलकारी'।

फूलगोभी—स्त्री० [हिं० फूल+गोभी] एक प्रकार का पौधा जिसमे बड़े फूल के आकार का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। यह तरकारी के काम आती है। गोभी।

फूल-छड़ी—स्त्री० [हिं०] १ श्रृंगार, सजावट आदि के काम आनेवाली वह छडी जिसके चारो ओर बहुत से फूल टाँके या बाँधे गये हो। २. चित्रो, मूर्तियो आदि मे उक्त प्रकार का चित्रण या लक्षण।

फूलझाड़—पु० [हिं०] काँस आदि की (फूलो के आकार की) सीको का बना हुआ झाड़ू जिससे महीन धूल बहुत अच्छी तरह साफ होती है।

फूल-डोल—पु० [वि० फूल+डोल] चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जानेवाला एक उत्सव जिसमे देवता की मूर्ति को फूलो के हिंडोले मे रखकर झुलाते हैं।

फूल ढोंक—पु० [?] १ प्राय हाथ भर लबी एक प्रकार की मछली जो भारत के सभी प्रातो मे पाई जाती है।

फूलदान—पु० [हिं० फूल+फा० दान (प्रत्य०)] मिट्टी, धातु, शीशे आदि का वह पात्र जिसमे शोभा के लिए, फूल, गुलदस्ते आदि लगाकर रखे जाते हैं। गुलदान।

फूलदार—वि० [हिं० फूल+दार (प्रत्य०)] जिस पर बेल-बूटे बने अर्थात् फूलकारी का काम हुआ हो।

फूलना—अ० [हिं० फूल+ना (प्रत्य०)] १ पौधो, वृक्षो आदि का फूलो से युक्त होना। पुष्पित होना। जैसे—वह पौधा वसत मे फूलता है।
मुहा०—(किसी व्यक्ति का) फूलना-फलना=लाक्षणिक रूप मे, धन-धान्य, सतति आदि से परिपूर्ण और सुखी रहना। सब तरह से बढना और सम्पन्न होना।
२ कली का सपुट इस प्रकार खुलना कि उसकी पखडियाँ चारो ओर से पूरे फूल का रूप धारण कर लें। ३ लाक्षणिक रूप मे बहुत अधिक आनद या उल्लास से युक्त होना। बहुत प्रसन्न या मगन होना।
मुहा०—फूले अंग न समाना=आनद का इतना अधिक उद्वेग होना कि बिना प्रकट किये रहा न जाय। अत्यत आनदित होना। **फूले फिरना या फूले फूले फिरना**=बहुत अधिक आनद, उत्साह या उमग से भरकर निश्चित भाव से इधर-उधर घूमना। उदा०—स्वतंत्र सिरताज फिरत कूकत कै फूले।—दीनदयाल गिरि।
४ लाक्षणिक रूप मे, मन मे विशेष अभिमान या गर्व का अनुभव करना। जैसे—अपनी प्रशसा सुनकर वह फूल जाता है। ५ किसी वस्तु के भीतरी अवकाश मे किसी चीज के भर जाने के कारण उसका ऊपरी या बाहरी तल बहुत अधिक उभर आना या ऊँचा हो जाना। जैसे—(क) हवा भरने से गेंद फूलना। (ख) वायु का विकार होने या बहुत अधिक भोजन करने पर पेट फूलना। ६ उक्त के आधार पर अभिमान, रोष आदि के कारण किसी से रूठना या कुछ समय के लिए विरक्त होना। जैसे—हम उनके यहाँ नही जायँगे, आज-कल वे हमसे फूले हुए हैं। ७. आघात, आंतरिक विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग का कुछ उभर आना। सूजना। जैसे—इतने जोर का तमाचा लगा है कि गाल फूल गया है। ८. किसी व्यक्ति का असाधारण रूप से मोटा या स्थूल होना। जैसे—उसका शरीर बादी से फूला है।

फूल-पत्ती—स्त्री० [हिं०] १. वे फूल-पत्ते जो देवी-देवताओं को चढाये जाते हैं। २. वनस्पति विज्ञान मे किसी फूल का प्रत्येक दल अथवा पत्ती के आकार का अग। (फ्लॉवर-लीफ)

फूल-पान—वि० [हिं० फूल+पान] (फूल या पान के समान) बहुत ही कोमल। नाजुक।

फूल-बत्ती—स्त्री० [हिं०] देवताओ की आरती आदि के लिए बनाई जानेवाली रूई की एक प्रकार की बत्ती जिसके नीचे का भाग खिले हुए फूल की तरह गोलाकार फैला हुआ होता है।

फूल-बाग—पु० [हिं०+अ०] वह छोटा बगीचा जिसमे केवल फूलो के पौधे हो।

फूल बिरज—पु० [हिं० फूल+बिरंज] एक प्रकार का बढिया धान।

फूल-भाँग—स्त्री० [हिं० फूल+भाँग] हिमालय मे होनेवाली एक प्रकार की भाँग। फुलगो।

फूलमती—स्त्री० [हिं० फूल+मत (प्रत्य०)] एक देवी जो शीतला रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

फूल-वाला—वि० [हिं० फूल+वाला (प्रत्य०)] १. फूलो से युक्त। २ फूलो अर्थात् बेल-बूटो का काम जिस पर हुआ हो।
पु० [स्त्री० फूलवाली] माली, विशेषत. फूल बेचनेवाला व्यक्ति।

फूल-शराब—स्त्री० दे० 'सुरासार'।

फूल-सँपेल—वि० [हिं० फूल+साँप] बैल या गाय जिसका एक सीग दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर गया हो।

फूल सुंघनी—स्त्री०=फुल-सुंघनी।

फूला—पु० [हिं० फूलना] १. भुने हुए अनाज की खील। २ पक्षियो को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३ गन्ने का रस पकाने का बडा कडाहा। ४ फूली (आँख का रोग)।

फूली—स्त्री० [हिं० फूल] १. सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड जाता है और जिससे दृष्टि मे बाधा होती है। २ एक प्रकार की सज्जी। ३ एक प्रकार की रूई।

फूस—पु० [स० तुष, पा० भूस, फुस] १ एक प्रकार की घास जो सुखा कर छप्पर आदि डालने के काम आती है। २ तृण। तिनका।
वि० फूस की तरह बहुत ही तुच्छ या हीन। उदा०—पूस मास अति फूस ए सखि, जडवा मे फूटेला बालि।—ग्राम्य गीत।

फूह—स्त्री०=फूही (फुहार)।

फूहड़—वि० [?] [भाव० फूहडपन] १ सभ्यो की दृष्टि से, अश्लील और हेय। जैसे—फूहड शब्द। २ (व्यक्ति) जो उजड्ड या गँवार हो तथा जिसे किसी बात का शऊर न हो। ३. बहुत ही निकम्मा (व्यक्ति)।

फूहड़पन—पु० [हिं० फूहड+पन (प्रत्य०)] फूहड होने की अवस्था या भाव।

फूहर—वि०=फूहड।

फूहा—पु० [देश०] रूई का गाला। फाहा।

फूही—स्त्री० [हिं० फुहार] १. पानी का महीन छीटा। सूक्ष्म जल-कण। २. बरसनेवाले, पानी की छोटी छोटी बूंदो की झडी। झीमी। जैसे—फूही फूही तालाब भरता है। उदा०—निशि के तम मे झर झर, हलकी जल की फूही, धरती को कर गई सजल।—पन्त। ३ घी, दूध, मलाई आदि के ऊपर दिखाई देनेवाले चिकनाई के छोटे छोटे कण। ४ फफूंदी। भुकडी।

फेंक—स्त्री० [हिं० फेंकना] फेंकने की क्रिया या भाव।
वि० फेकनेवाला (समस्त पदो के अत मे)। जैसे—दिल-फेंक औरत या मरद।

फेंकना—स० [स० प्रेपण; प्रा० पेखण] १ हाथ मे ली हुई वस्तु जोर या झटके से इस प्रकार छोडना कि वह उडती-उडती कुछ दूर जा गिरे। जैसे—(क) ईंट, पत्थर या रोडा फेंकना। (ख) नदी मे जाल फेंकना। २ हाथ मे ली हुई कोई चीज इस प्रकार पकड से अलग करना कि वह नीचे जा गिरे। गिरा या छोड देना। जैसे—पाठशाला से घर आते समय लडका रास्ते मे किताब कही फेंक आया। ३. किसी प्रकार की कमानी, दाव आदि से दवी हुई चीज के प्रति ऐसी क्रिया करना कि वह जोर या झटके से दूर जा गिरे। जैसे—कमान से तीर या तोप से गोला फेंकना। ४ असावधानी, आलस्य, भूल आदि के कारण चीज या चीजें अस्त-व्यस्त रूप मे इधर-उधर फैलाना या छोड देना। जैसे—कपडे (या पुस्तकें) इस तरह फेंका मत करो, सँभाल कर रखना सीखो। ५ उपेक्षापूर्वक कोई चीज किसी के आगे पटकना। जैसे—बच्चा वस्ता फेंककर उसी समय कही चला गया। ६ आघात, प्रहार आदि के उद्देश्य से अथवा ठीक लक्ष्य पर पहुँचने के लिए वेगपूर्वक कोई चीज उछालते हुए कही दूर पहुँचाना। जैसे—(क) चिड़ियो (या मछलियो) पर ढेले या पत्थर फेंकना। (ख) खेल मे गेंद फेकना। ७. अनावश्यक और व्यर्थ समझकर दूर हटाना। जैसे—ये पुराने कपडे फेंको और नये कपडे पहनो। ८ अनावश्यक रूप से या व्यर्थ व्यय करना। जैसे—तुम सौदा खरीदना नही जानते, यो ही रुपए फेंक आते हो। ९ जुए के खेल मे, उसका कोई उपकरण दाँव लाने के लिए चलना। जैसे—कौडी, गोटी, ताश आदि का पत्ता या पाँसा फेंकना। १० शरीर के अगो के सबध मे, उछालते या ऊपर उठाते हुए नीचे गिराना या पटकना। जैसे—यह बच्चा नीद मे प्राय हाथ-पैर फेकता है। ११ क्रिकेट के खेल मे उछली हुई गेंद को ठीक न लोक पाने के कारण नीचे गिरा देना। १२ इस प्रकार ऊपर से कोई चीज गिराना कि नीचे से उसे कोई लोक ले। १३ कुश्ती मे प्रतिद्वद्वी को जमीन पर गिराना या पटकना। १४ काम-धन्धे आदि के सबध मे, स्वय पूरा न करके उदासीनता या उपेक्षापूर्वक दूसरो पर उसका भार डालना। जैसे—तुम सब काम मुझ पर फेंककर निश्चिंत हो जाते हो।

फेंकरना—अ०=फेकरना।

फेंकाना—अ० [हिं० फेंकना] फेका जाना।

फेंट—स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १ कमर के चारो ओर का घेरा। २ धोती का लबाई के बल का उतना अश जो रस्से की तरह मरोडकर कमर के चारो ओर बांधा या लपेटा जाता है। फेंटा। (मुहा० के लिए दे० फेंटा के मुहा०)। ३ घुमाव। फेरा। लपेट।
स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव। जैसे—ताश के पत्तो की फेंट।

फेंटना—स० [स० पिष्ट, प्रा० पिट्ठ+ना (प्रत्य०)] १ किसी गाढे द्रव को इस प्रकार उँगलियों अथवा किसी उपकरण से बार बार हिलाना कि उसमे कण आदि न रह जायँ। जैसे—खोया, दही या पीठी फेंटना। २ उँगली से हिलाकर खूब मिलाना। जैसे—यह दवा शहद मे फेंट कर खाई जाती है। ३ ताश के पत्तो को इस प्रकार मिलाना कि उनका क्रम बदल जाय।

फेंटा—पु० [हिं० फेंट] [स्त्री० अल्पा० फेंटी] १. कमर का घेरा। †२ धोती का वह भाग जो कमर के चारो ओर लपेटकर बांधा जाता है (जिससे धोती नीचे खिसकने या गिरने न पावे)।
मुहा०—(अपना) फेंटा कसना या बाँधना=किसी काम या बात के लिए कमर कसकर तैयार होना। कटिबद्ध या सन्नद्ध होना। (किसी का) फेंटा पकडना=धोती का उक्त अश पकडकर रोकना या और किसी प्रकार किसी को पकड रखना।
३ कमरबद। फटका। ४. छोटे या कम लबे कपडे से सिर पर बाँधी जानेवाली हलकी पगडी। ५. अटेरन पर लपेटी हुई सूत की बडी अटी।

फेकरना—अ० [अनु० फेंकें] १ फूट-फूट कर रोना। चिल्ला-चिल्ला कर रोना। २. जोर से चिल्लाते हुए कर्ण-कटु शब्द उत्पन्न करना। जैसे—गीदड़ का फेकरना।

फेकारना—स० [हिं० फेंकना] सिर के बाल खोलकर झटकारना। (स्त्रियाँ)

फेकैत†—पु०=फिकैत।

फेच—पु०=पेच। (पूरब)

फेट—स्त्री०=फेंट।

फेटना—स०=फेंटना।

फेटा—पु०=फेंटा।

फेड़—पु०=फेर।
अव्य०=फिर।

फेण—पु०=फेन।

फेणक—पु० [स० फेण+क] १ फेन। २ फेनी नाम का व्यंजन। बतासफेनी।

फेद—पु०=फेटा।

फेदा—पु० [देश०] घुंइया। अरुई।

फेन—पु० [स०√स्फाय् (बढना)+नक्, फे—आदेश] [वि० फेनिल] १ बहुत छोटे छोटे बुलबुलो का वह गठा हुआ समूह जो पानी या किसी द्रव पदार्थ के खूब हिलने, सडने, खौलने आदि से ऊपर दिखाई पडता है। झाग।
क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।
२ नाक से निकलनेवाला कफ। रेंट।

फेनक—पु० [स० फेन+कन्] १ फेन। झाग। २. ऐसी चीजो से शरीर मल या रगडकर धोना जिनमे से फेन निकलता हो। ३ फेनी नाम का व्यजन।
वि० फेन उत्पन्न करने या बनानेवाला। जिससे फेन उत्पन्न हो।

फेनका—स्त्री० [स० फेन√कै+क+टाप्] एक तरह की पीठी।

फेनना—स० [हि० फेन] ऐसा काम करना जिससे किसी तरल पदार्थ में फेन उत्पन्न होने लगे।

फेन-मेह—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें वीर्य फेन की भाँति थोड़ा-थोड़ा गिरता है।

फेनल—वि० [सं०√फेन+लच्] फेनयुक्त। फेनिल।

फेना—स्त्री० [सं० फेन+अच्+टाप्] एक प्रकार का क्षुप।

फेनाग्र—पु० [सं० फेन-अग्र, ष० त०] बुद्बुद। बुलबुला।

फेनिका—स्त्री० [सं० फेन+ठन्—इक,+टाप्] फेनी नाम की मिठाई।

फेनिल—वि० [सं० फेन+इलच्] जिसमें फेन हो। फेन या झाग से युक्त।

पु० रीठा।

फेनी—स्त्री० [सं० फेनिका] लपेटे हुए सूत के लच्छे की तरह मैदे की एक प्रसिद्ध मिठाई जो प्रायः दूध में भिगोकर खाई जाती है।

वि० १ टेढ़ा। २. कुटिल।

फेनोच्छ्वासित—वि० [सं० फेन-उच्छ्वासित, तृ० त०] रोग, परिश्रम आदि के कारण जिसके मुँह से फेन निकल रहा हो।

फेनोज्ज्वल—वि० [सं० फेन-उज्ज्वल, उपमि० स०] फेन की तरह उजला।

फेफड़ा—पु० [सं० फुप्फुस+हि० ड़ा (प्रत्य०)] शरीर के भीतर थैली के आकार का वह अवयव जो प्रायः दो भागों में होता है तथा जिसके द्वारा जीव हवा अंदर खींचते तथा बाहर छोड़ते हैं। श्वसन अंग। फुप्फुस। (लंग)

पद—फेफड़े की कसरत=बच्चों के रोने का परिहासात्मक पद।

फेफड़ी—स्त्री० [हि० फेफड़ा] चौपायों का एक रोग जिसमें उनके फेफड़े गल जाते हैं और उनका रक्त सूख जाता है।

स्त्री०=पपड़ी

फेफरी—स्त्री०=फेफड़ी।

फेरंड—पु० [सं० फे√रण्ड+अच] गीदड़। सियार।

फेर—पु० [हि० फेरना] १. फिरने या फेरने की क्रिया या भाव। २. ऐसी स्थिति जिसमें किसी को अथवा किसी के चारों ओर फिरना पड़ता है। घुमाव। चक्कर।

क्रि० प्र०—पड़ना।

पद—फेर की बात=घुमाव की बात। ऐसी बात जो सीधी या सरल न हो, बल्कि जिसमें घुमाव-फिराव, पेंच या चालाकी भरी हो।

मुहा०—फेर खाना=सीधे रास्ते से न जाकर घुमाव-फिरावदार रास्ते से जाना।

३ किसी प्रकार का ऐसा क्रम या सिलसिला जिसमें आवश्यकतानुसार थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता रहे। जैसे—अभी तो काम शुरू किया है, जब फेर बँध (या बैठ) जायगा, तब कुछ न कुछ अच्छा परिणाम ही निकलेगा।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—बैठना।—बैठाना।

४ कोई बड़ा या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन। कुछ से कुछ हो जाना।

पद—उलट-फेर (दे० स्वतंत्र शब्द)। दिनों (या भाग्य) का फेर=दैवी घटनाओं का ऐसा क्रमिक परिवर्तन जिससे रूप या स्थिति बिलकुल बदल जाय विशेषतः अच्छी दशा से निकलकर बुरी दशा की होनेवाली प्राप्ति।

५ ऐसी स्थिति जिसमें भ्रम-वश कुछ का कुछ समझ में आवे। धोखा। जैसे—(क) और कुछ नहीं, यह सब स्थान का ही फेर है। (ख) मैं इस फेर में रहकर भी बहुत धोखा खा गया। ६. ऐसी स्थिति जिसमें बुद्धि ठीक काम न करती हो। असमंजस, उलझन या दुविधा की स्थिति। जैसे—हम बड़े फेर में पड़ गए हैं कि क्या करें।

क्रि० प्र०—में डालना।—में पड़ना।

७ ऐसी स्थिति जो छल से उत्पन्न की गई हो। जैसे—उसकी बातों में आकर मैं उसके फेर में पड़ गया।

क्रि० प्र०—में आना।—में डालना।—में पड़ना।

८ भाग्य की या ग्रहों की भोगी हुई चाल या दशा। जैसे—(क) तुम उसी फेर में न पड़ना। [illegible] (ख) ... फेर में पड़ गया है। उदा०—फेर कछु करि पौरि तें फिरि चितई मुसकाइ।—बिहारी।

क्रि० प्र०—में आना।—में डालना।—में पड़ना।—में रहना। लगाना।

पद—फेर-फार (दे० स्वतंत्र शब्द)।

९. उपाय। तरकीब। युक्ति। उदा०—दैउ जो मारी दुई किरि, मिले सो फेर न फेर।—जायसी।

मुहा०—फेर बाँधना=तरकीब या युक्ति लगाना।

१०. लेन-देन, व्यवहार आदि के प्रसंग में, समय समय पर कुछ लेने और कुछ देने की अवस्था या भाव।

पद—हेर-फेर=लेन-देन या क्रय-विक्रय का व्यवहार। जैसे—इसी तरह हेर-फेर चलता रहता है।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

११. जंजाल। झंझट। बखेड़ा। जैसे—रोग (या रुपए-पैसे) का फेर बहुत बुरा होता है।

पद—निन्नावे का फेर=अधिक धन कमाने की चिंता या धुन।

विशेष—यह पद एक ऐसी कहानी के आधार पर बना है जिसमें किसी आदमी को ठीक मार्ग पर लाने के उद्देश्य से उसे ९९) दे दिए। आदमी ने सोचा था कि ये किसी प्रकार पूरे सौ हो जायँ, और फलत वह धीरे धीरे धन इकट्ठा करने लगा था।

१२. भूत-प्रेत का आवेश या प्रभाव। जैसे—कुछ फेर है इसी से वह अच्छा नहीं हो रहा है। (इस अर्थ में प्रायः ऊपरी फेर पद का ही अधिक प्रयोग होता है।) १३ ओर। तरफ। दिशा। उदा०—सगुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर। प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर।—तुलसी। १४. दे० 'फेरा'।

अव्य०—फिर।

पु० [सं० फे√रु+ड] शृगाल। गीदड़।

फेरना—स० [हि० फेर या फेरा] १ कोई चीज किसी घेरे या घेरे में बार बार मंडलाकार अथवा किसी धुरी पर चारों ओर घुमाना। जैसे—(क) माला फेरना (अर्थात् एक एक दाना या मनका सरकाते हुए बार-बार ऊपर नीचे करते हुए चक्कर देना)। (ख) लकड़ी फेरना। (ग) मुगदर फेरना (बार बार घुमाते हुए शरीर के चारों ओर ले जाना और ले आना) घोड़ा फेरना (घोड़े को ठीक तरह से चलना सिखाने के लिए खेत या मैदान में मंडलाकार चक्कर लगाने में प्रवृत्त करना)। २ किसी तल पर कोई चीज चारों ओर इधर-उधर ऊपर-नीचे ले जाना

और ले आना। जैसे—(क) किसी की पीठ या सिर पर हाथ फेरना (ख) दीवार पर चूना या रग फेरना। (ग) पान फेरना=पान की गड्डी या ढोली के पानो को वार वार उलट-पलटकर देखना और सडे-गले पान निकालकर अलग करना। ३. कोई चीज लेकर चारो ओर या चक्कर-सा लगाते हुए सबके सामने जाना। जैसे—(क) अतिथियो के सामने पान, इलायची फेरना। (ख) नगर मे डुग्गी या मुनादी फेरना। ४ जो वस्तु या व्यक्ति जहाँ या जिधर से आया हो, उसे लौटाते हुए वही या उसी ओर कर या भेज देना। वापस करना। जैसे—(क) वुलाने के लिए आया हुआ आदमी फेरना। (ख) दुकानदार से लिया हुआ माल या सौदा फेरना। ५ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु न लेना और फलत उसे लौटा देना। लौटाना। ६ किसी काम या चीज या वात की गति की दिशा वदलना। किसी ओर घुमाना या मोडना। जैसे—(क) गाडी या घोडे को दाहिने या वाएँ फेरना। (ख) कुजी या पेच इधर या उधर फेरना। ७ जो चीज जिस दिशा मे हो, उसका पार्श्व या मुँह उससे विपरीत दिशा मे करना। जैसे—(क) किसी की ओर पीठ फेरना। (ख) किसी की ओर से मुँह फेरना। ८ जैसा पूर्व मे रहा हो या साधारणत रहता हो, उससे भिन्न या विपरीत करना। उदा०—कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं।—तुलसी। ९ किसी चीज या वात की पहले की स्थिति विलकुल उलट या वदल देना। जैसे—(क) जवान फेरना=वात कहकर मुकर जाना या वचन का पालन न करना। (ख) किसी के दिन फेरना=किसी को बुरी से अच्छी दशा मे या प्रतिक्रमात् लाना। १०. अभ्यास या कठस्थ करने के लिए वार वार उच्चारण करना या दोहराना। जैसे—लडको का पाठ फेरना=अच्छी तरह याद करने के लिए दोहराना।

फेर-पलटा—पु० [हिं० फेरना+पलटा] गौना। द्विरागमन।

फेर-फार—पु० [हिं० फेर+अनु० फार] १ वहुत वड़ा तथा महत्वपूर्ण परिवर्तन। उलट-फेर। २ घुमाव-फिराव। चक्कर। ३ घुमाव-फिराव या छल-कपट की वात-चीत। धूर्तता का व्यवहार। चालाकी। जैसे—हमसे इस तरह की फेर-फार की वातें मत किया करो। ४ लेन-देन या व्यवहार के चलते रहने की अवस्था या भाव। जैसे—रोजगारियो का फेर-फार चलता रहना चाहिए।

फेरब—पु० [स० फेरव] गीदड़। उदा०—फेरवि फफ् फारिस गाइआ। विद्यापति।

फेरव—वि० [स० फे-रव, व० स०] १ धूर्त। चालवाज। २ हिंसक। पु० १ राक्षस। २ गीदड़।

फेरवट—स्त्री० [हिं० फेरना] १. फेरने या फिरने का भाव। २. फेरे जाने पर होनेवाला चक्कर। फेरा। ३ घुमाव-फिराव। ४. अतर। फरख।

फेरवा—पु० [हिं० फेरना] सोने का वह छल्ला जो तार को दो, तीन वार लपेटकर वनाया जाता है। लपेटा हुआ तार।

पु०=फेरा।

†पु० [स० फेरव] गीदड।

फेरा—पु० [हिं० फेरना] [स्त्री० फेरी] १ किसी चीज के चारो ओर फिरने अर्थात् घूमने की क्रिया या भाव। चक्कर। परिक्रमण। जैसे—यह पहिया एक मिनट मे सौ फेरे लगाता है। २ किसी लम्वी तथा लचीली चीज को दूसरी चीज के चारो ओर घुमाने, आवृत करने, लपेटने आदि की क्रिया या भाव। ३ उक्त प्रकार से किया हुआ आवर्तन, घुमाव या लपेट। जैसे—इस लकड़ी पर रस्सी के चार फेरे अभी और लगाने चाहिए।

सयो० क्रि०—देना।—लगाना।

४ वार-वार कही आने-जाने की क्रिया या भाव। जैसे—यह भिखमगा दिन भर मे इस वाजार के चार फेरे लगाता है।

सयो० क्रि०—डालना।—लगाना।

५ कही जाकर वहाँ से लौटना या वापस आना विशेपत: निरीक्षण करने, मिलने, हाल-चाल पूछने आदि के उद्देश्य से किसी के यहाँ थोडी देर या कुछ समय के लिए जाना और फिर वहाँ से वापस लौट आना। जैसे—दिन भर मे तकाजे के उद्देश्य से दस फेरे लगाता हूँ।

सयो० क्रि०—लगाना।—लगाना।

६ आवर्त। घेरा। मडल। ७ विवाह के समय वर-वधू द्वारा की जानेवाली अग्नि की परिक्रमा। भाँवर। ८ (विवाह के उपरात) लडकी का ससुराल जाने का भाव। जैसे—उसे दूसरे फेरे घडी और तीसरे फेरे वाइसिकिल मिली थी। (पश्चिम) ९ दे० 'फेर'।

फेरा-फेरी—स्त्री० [हिं० फेरना] १ वार वार इधर-उधर फेरने की क्रिया या भाव। २ दे० 'हेरा-फेरी'।

क्रि० वि० १. वारी-वारी से। २. रह-रहकर।

फेरि—अव्य० [हिं० फिर] फिर (पुन)।

पद—फेरि फेरि=फिर फिर। वार वार।

फेरी—स्त्री० [हिं० फेरना] १ देवी-देवता आदि की की जानेवाली परिक्रमा। प्रदक्षिणा। २ विवाह के समय वर और वधू की वह प्रदक्षिणा, जो अग्नि के चारो ओर की जाती है। भाँवर।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

३ भिक्षुको का भिक्षा के उद्देश्य से गली-मुहल्ले का लगाया जानेवाला चक्कर।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

४ छोटे व्यापारी द्वारा गलियो, गाँवो आदि मे फुटकर ग्राहको के हाथ समान वेचने के उद्देश्य से लगाया जानेवाला चक्कर।

पद—फेरीवाला। (दे०)

५ वार वार कही आते-जाते रहना। ६ एक तरह की चरखी जिससे रस्सी पर ऐंठन डाली जाती है। ७ फेर। ८ फेरा।

फेरीदार—पु० [हिं० फेरी+फा० दार] [भाव० फेरीदारी] वह जो किसी दूकानदार या महाजन की ओर से घूम-घूमकर कर्जदारो से पावना वसूल करने का काम करता हो।

फेरीदारी—स्त्री० [हिं० फेरीदार] फेरीदार का काम, पद या भाव।

फेरीवाला—पु० [हिं० फेरी+वाला] वह छोटा व्यापारी जो गली-गली या गाँव-गाँव मे घूम-घूमकर फुटकर ग्राहको के हाथ सौदा वेचता हो।

फेरुआ—पु०=फेरवा।

फेरुक—पु० [स०] गीदड। सियार।

फेरौती—स्त्री० [हिं० फेरना] टूटे-फूटे खपरैलो के स्थान पर नये खपरैले रखने की क्रिया या भाव।

फेल—पु० [अ० फेल] १ कार्य, कृत्य या क्रिया। २. बुरा कर्म।
पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसे वेयार भी कहते हैं।
पु० [स०] १ जूठा भोजन। २ जूठन।
वि० [अ० फेल] १ जो परीक्षा मे अनुत्तीर्ण हुआ हो। २. जो अपने प्रयास मे विफल हुआ हो। ३ जो समय पर ठीक और पूरा काम न दे।

फेला—स्त्री० [स०] १. जूठा भोजन। २. जूठन।

फेलिका—स्त्री०=फेला।

फेली—स्त्री० [स०] दे० 'फेला'।
वि० [अ० फेल] १ बुरा या बुरे काम करनेवाला। २ दुराचारी। ३ व्यभिचारी। ४ धूर्त।

फेलो—पु० [अ० फ़ैलो] १ सहयोगी। २ किसी वहुत उच्च तथा बड़ी सभा या सस्था का सदस्य या सभासद। जैसे—विश्वविद्यालय का फेलो।

फेल्ट—पु० [अ०फेल्ट] १. जमाया हुआ ऊन। नमदा। जैसे–फेल्ट की टोपी। २ एक तरह की टोपी जो वहुत-कुछ हैट से मिलती-जुलती होती है।

फेहरिस्त—स्त्री० [अ० फ़ेहरिस्त] १ सूची। २ सूची-पत्र।

फैंसी—वि० [अ० फैंसी] १ जो किसी ठीक करपना तथा रुचि के अनुकूल हो। फलत अलकृत तथा सुदर। २. काट-छाँट, रग-रूप आदि के विचार से अपने वर्ग की औसत चीजो से उत्कृष्ट और सुन्दर। जैसे—फैंसी साडी।

फैकल्टी—स्त्री० [अ०] विश्वविद्यालय के अन्तर्गत किसी विद्या या शास्त्र के पडितो और आचार्यों का वर्ग। विद्वन्मडल।

फैक्टरी –स्त्री० [अ०] वह स्थान जहाँ यत्रों की सहायता से वस्तुओं का उ पादन या निर्माण किया जाता हो। कारखाना। निर्माणशाला।

फैज—पु० [अ० फैज़] १ दानशीलता। २ फायदा। लाभ।
क्रि० प्र०—पहुँचाना।
३ उपकार। भलाई। ४ यश। कीर्ति।

फ़ैदम—पु० [अ०] जलाशयो की गहराई की एक नाप जो छ फुट की होती है। पुरसा।

फैयाज—वि० [अ० फैयाज] [भाव० फैयाजी] १. जिसमे फैज अर्थात् दानशीलता हो। दानी। मुक्तहस्त। २ वहुत वडा उदार और भलमानुस।

फैयाजी—स्त्री० [अ०फैयाजी] १. फैयाज होने की अवस्था, गुण या भाव। दानशीलता। २. उदारता।
क्रि० प्र०—दिखलाना।

फैर—स्त्री० [अ० फायर] १ वदूक, तोप आदि हथियारो को दागने की क्रिया या भाव। २ उक्त के दागने से होनेवाले शब्द। ३ वंदूक आदि की गोली का लगने या होनेवाला आघात।

फैल—स्त्री० [हि० फैलना] १. फैलने या फैले हुए होने की अवस्था या भाव। विस्तार। २ लड़कों का वह दुराग्रह जो वे जमीन पर फैल अर्थात् इधर-उधर लोट-पोटकर प्रकट करते हैं। ३ और अधिक प्राप्त या वसूल करने के लिए किया जानेवाला हठ अथवा इधर-उधर की बातें।
क्रि० प्र०—मचाना।
†पु०=फेल (कर्म)।
†पु० [अ० फ़ेल] क्रीडा। खेल।

फैलना—अ० [सं० प्रसरण प्रा० पयल्ल+ना (प्रत्य०)] १. किसी चीज का चारों ओर दूर तक विस्तृत प्रदेश मे स्थित रहना या होना। विस्तार से युक्त होना। जैसे—(क) यह पर्वत (प्रदेश) सैकडो मील तक फैला है। (ख) कपडे पलगनी पर फैले है। २. किसी चीज का अभिवर्द्धित होकर अथवा पनपकर वहुत दूर तक पहुँचना। इधर-उधर वढते हुए अधिक स्थान घेरना। जैसे—वगीचे मे लताओं का फैलना। ३. किसी क्षेत्र, प्रदेश या स्थान मे प्रभावपूर्ण तथा सक्रिय होना। जैसे—(क) शहर मे बीमारी फैलना। (ख) गाँव मे आग फैलना। ४. आकार, रूप आदि मे पहले से अधिक वड़ा या वढा हुआ होना। जैसे—(क) वादी से शरीर फैलना। (ख) आवादी वढने से वस्ती का चारों तरफ फैलना। ५ अधि-क्षेत्र या कार्यक्षेत्र की सीमाएँ वढना। जैसे—विदेशो मे व्यापार फैलना। ६. वात आदि का व्यापक क्षेत्र मे चर्चा का विषय वनना। जैसे—हड़ताल की खबर फैलना। ७. चारो ओर छितरा या विखरा हुआ होना। जैसे—कमरे में सारा सामान फैला पडा है। ८ किसी प्रकार के अवकाश, विवर आदि का यथा-साध्य अधिक विस्तृत होना। जैसे—मुँह फैलना। ९, किसी काम, चीज या वात का प्रचलन या प्रचार मे आना। जैसे—आज-कल स्त्रियों मे फैशन वहुत फैल गया है। १०. किसी रूप मे दूर दूर तक पहुँचा हुआ होना या लोगों की जानकारी मे होना। जैसे—वदनामी फैलना, वदवू फैलना। ११. व्यक्तियों के संवध मे, कुछ अधिक पाने या लेने के लिए आग्रहपूर्वक याचना या हठ करना। जैसे—दस रुपए इनाम मिल जाने पर भी पडे कुछ और पाने के लिए फैलने लगे। १२ गणित के प्रसग मे, लेखे या हिसाव का परिकलन होना या वैठाया जाना।

फैल-फुट्ट—वि० [हिं० फैलना+फुट=अकेला] १. इधर-उधर फैला या विखरा हुआ। २. फुटकर।

फैलसूफ—वि० [यू० फिलसफ=दार्शनिक] [भाव० फैलसूफी] १ वहुत वडा अपव्ययी। फजूलखर्च। वहुत ठाट-वाट या शान-शौकत से रहनेवाला। ३ फरेवी और धूर्त।
पु० दार्शनिक।

फैलसूफी—स्त्री० [हिं० फैलसूफ] १. आवश्यकता से अधिक धन व्यय करना। अपव्यय। फजूलखर्ची। २. झूठा और दिखावटी ठाट-वाट। ३ चालाकी। धूर्तता।

फैलाना—स० [हिं० फैलना का स०] १. किसी को फैलने मे प्रवृत्त करना। २. कोई चीज खीचकर उस विस्तार या सीमा तक ले जाना, जहाँ तक वह जा सकती हो अथवा जहाँ तक उसे ले जाना आवश्यक या सगत हो। लवाई-चौडाई अथवा चौडाई के वल विस्तार वढ़ाना। पसारना। जैसे—(क) सुखाने के लिए पेड़ या रस्सी पर कपडे फैलाना। (ख) कुछ पकडने या लेने के लिए हाथ फैलाना। ३ किसी चीज को तानते हुए आगे वढाना। जैसे—(क) पक्षियो के पर फैलाना। (ख) आराम से वैठने के लिए पैर फैलाना। ४ ऐसा काम करना जिसमे कोई चीज आवश्यक या उचित से अधिक स्थान घेरे। विखेरना। जैसे—चौकी पर तो तुमने कागज-पत्र फैला रखे हैं। ५ किसी पदार्थ के क्षेत्र, मर्यादा, सीमा आदि का विस्तार करना। वढाना। जैसे—उन्होंने अपने कार-वार सारे देश मे फैला रखा है। ६. किसी प्रकार के घेरे या विवर का विस्तार वढाना। जैसे—(क)

कुछ लेने के लिए झोली फैलाना। (ख) दाँत उखाडने के लिए मुँह फैलाना। ७ ऐसी क्रिया करना जिससे दूर तक किसी प्रकार का परिणाम या प्रभाव पहुँचे। जैसे—यश (या सुगन्ध) फैलाना। ८. ऐसी क्रिया करना जिससे दूर तक के लोगो को किसी वात की जानकारी या परिचय हो। जैसे—फूलो का सुगन्ध फैलाना। ९ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज का लोगों मे यथेष्ट प्रचार या व्यवहार हो। उदा०—राज-काज दरवार मे फैलावहु यह रत्न।—भारतेन्दु। १०. कोई चीज ऐसी स्थिति मे लाना कि उस पर विशेष रूप से या अधिक लोगों की दृष्टि पडे या ध्यान आकृष्ट हो। जैसे—आडम्वर या ढोंग फैलाना। ११. गणित के क्षेत्र मे, किसी प्रकार लेखा या हिसाव तैयार करने के लिए अथवा तैयार किये हुए हिसाव की जाँच करने के लिए किसी प्रकार का परिकलन करना। जैसे—(क) व्याज या सूद फैलाना। (ख) लागत फैलाना।

फैलाव—स्त्री० [हि० फैलाना] १. फैले हुए होने की अवस्या या भाव। विस्तार। २ उतनी लवाई-चौड़ाई जिसमे कोई चीज फैली हुई हो।

फैलावट—स्त्री०=फैलाव ।

फैशन—पु० [अ० फैशन] १ समाज मे विशेपत. समाज के उच्च वर्गों द्वारा किये जानेवाले वनाव-श्रृंगार, धारण की जानेवाली वेश-भूषा आदि का इस रूप मे होनेवाला प्रयत्न जिसे जन-सावारण भी अपनाने मे अग्रसर हो रहा हो। २ ढग। रीति।

फैसला—पुं० [अ० फैसल:] १ न्याय-कर्ता द्वारा दी जानेवाली व्यवस्था। निर्णय। निवटारा।

मुहा०—फैसला सुनाना=न्यायाधीश अथवा निर्णायक द्वारा किसी विवादास्पद विपय के सवध मे अपना निर्णय सुनाना।

२ किसी वात के सवध मे किया जानेवाला अतिम तथा दृढ निश्चय। क्रि० प्र०—करना।

फैसिज्म—पु० [अ० फैसिज्म] शासन का वह प्रकार जिसमे प्रभुसत्ता किसी राष्ट्रवादी निरकुश शासक मे केन्द्रीभूत होती है।

फैसिस्ट—पु० [अ० फ़ैसिस्ट] १ वह जो फैसिज्म के सिद्धान्त मानता हो। २ फैसिज्म के सिद्धान्तो पर वना हुआ इटली मे एक राजनैतिक दल। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो सारा अधिकार अपने हाथ मे रखना चाहता तथा विरोधियो को कुचल डालने का पक्षपाती हो।

फोंक—पु० [स० पुख] १. तीर का पिछला सिरा जिसपर पख लगाये जाते हैं। २. दे० 'भोगली'।

†वि० पु०=फोक।

फोंकली—स्त्री० दे० 'भोगली'।

फोंका—पु० [स० पुंख या हिं० फुंकना] १. लवा और पोला चोगा। फोकी। २ पोले डठलवाले शस्यो की फुनगी। जैसे—मटर का फोका।

†पुं० १.=फूंका। २. =सर-फोका।

फोंका गोला—पु० [हिं० फोक+गोला] तोप का एक प्रकार का लवा गोला।

फोंदा†—पु०=फुंदना।

फोंफर—वि० [अनु०] १ खोखला। २. पोला। ३. निस्सार। थोथा। पुं० दो तलो के वीच की ऐसी दरज या सन्धि जिसमे से उस पार की चीजें दिखाई देती हो।

फोंफी—स्त्री० [अनु०] १. गोल लवी नली। छोटा चोंगा। २. सुनारो की वह नली जिससे वे आग धौंकते हैं। ३ दे० 'भोगली'।

फोक—पु० [सं० स्फोट] १. वह नीरस अश जो किसी रसपूर्ण पदार्थ मे से रस निचोड़ कर निकाल लेने के उपरान्त वच रहता है। सीठी। २. लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी चीज जिसमे कोई तत्त्व न रह गया हो।

पु० [?] एक तृण जिसका साग वनाया जाता है।

स्त्री० [?] पीडा। वेदना।

वि० [?] चार। (दलाल)

फोकट—वि० [मरा० फुकट] १ जिसमे कुछ भी तत्त्व या सार न हो। निस्सार। २ जिसके लिए कुछ भी परिश्रम या व्यय न करना पडा हो। मुफ्त का। जैसे—फोकट का माल।

पद—फोकट का=मुफ्त। **फोकट में**=(क) विना कुछ व्यय किये। मुफ्त। (ख) व्यर्थ वे-फायदा।

फोकला—पु० [स० वल्कल, हिं० वोकला] [स्त्री० फोकलाई] किसी फल आदि का ऊपरी छिलका।

वि०=फोका।

फोकलाप—वि० [देश०] चौदह। (दलाल)

फोका—वि० [हिं० फोक] [स्त्री० फोकी] १ फोक के रूप मे होनेवाला अर्थात् रस-हीन और वेस्वाद। २ जिसमे मिठास न हो। ३ जिसमे कोई तत्त्व न हो। ४ खाली। रिक्त। ५. खोखला। पोला। जैसे—फोका वाँस। ६. हलके दरजे का। घटिया।

अव्य० केवल। निरा।

†पु०=पोका।

फोकी—स्त्री० [हिं० फोका] ऐसी मुलायम भूमि जिसमे आसानी से हल चल सके।

फोग—पुं० [?] राजस्थान मे होनेवाला एक प्रकार का क्षुप।

फोट—पु० [सं० स्फोट] स्फोट।

पु० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २ मुँह से निकलनेवाली मन की वात। उद्गार।

फोटका†—वि०=फोकट।

फोटा—पु० [स० स्फोटक] १ माथे पर लगाई जानेवाली गोल विंदी। २. किसी प्रकार का गोलाकार चिह्न। ३ दे० 'टीका'।

फोटो—पु० [अं० फोटोग्राफ] १ एक विशिष्ट यात्रिक उपकरण द्वारा खीचा हुआ चित्र। छाया-चित्र। २ वह पत्र जिसपर उक्त चित्र छपा होता है।

क्रि० प्र०—उतारना।—खीचना।—लेना।

फोटोग्राफ—पुं०=फोटो।

फोटोग्राफर—पुं० [अ०] फोटो अर्थात् छाया चित्र वनानेवाला कलाकार।

फोटोग्राफी—स्त्री० [अ०] फोटो उतारने के यत्र के द्वारा फोटो या छाया-चित्र वनाने की कला तथा कृत्य।

फोडन—स्त्री० [हिं० फोड़ना] वे मसाले जो दाल-तरकारी आदि आँच पर रखने से पहले उन्हे छौंकने या वघारने के लिए डाले जाते हैं। तडका।

†वि० फोडनेवाला।

फोड़ना—स० [स० स्फोटन; प्रा० फोडन] १. हिं० 'फूटना' का स०

रूप । ऐसा काम करना जिससे कोई चीज फूटे । २. खरी या करारी वस्तुओं को दबाव या आघात द्वारा तोडना । खड खड करना । जैसे—घडा फोडना ।

पद—तोड़ना-फोड़ना ।

३ ऊपरी आवरण या तल मे स्थान स्थान पर अवकाश उत्पन्न करना कि अन्दर की चीज बाहर निकल आये या निकलने लगे । जैसे—(क) कच्चा पारा शरीर को फोड देता है । (ख) वरसात मे जमीन को फोडकर उसमे से नये कल्ले निकलते है । ४. किसी दल या पक्ष के व्यक्ति या व्यक्तियो को प्रलोभन आदि देकर अपनी ओर मिलाना । दूसरो मे फूट डालकर उनमे से कुछ को अपनी ओर मिला लेना । जैसे—शत्रुओ ने कई अधिकारियो को फोडकर अपनी ओर मिला लिया । ५ व्यर्थ ऐसा परिश्रम करना जिसका कोई फल न हो या बहुत ही कम फल हो । जैसे—(क) किसी महीन काम के लिए आँखें फोडना । (ख) किसी को समझाने के लिए अपना सिर फोडना अर्थात् माथा-पच्ची करना । ६ किसी का भेद या रहस्य सब पर प्रकट करना । जैसे—किसी का भडा फोडना । ७ उँगलियो के सबध मे उनके पोरो को इस प्रकार ऐंठना या खीचना कि उनमे से खट् खट् शब्द हो । जैसे—बार बार उँगलियाँ फोडते रहना अशुभ होता है ।

फोड़ा—पु० [स० स्फोटक, प्रा० फोड] [स्त्री० अल्पा० फोडिया] शारीरिक विकार के कारण होनेवाला ऐसा व्रण जिसमे रक्त सडकर मवाद का रूप धारण कर लेता है । (एब्सेस)

फोड़िया—पु० [हिं० फोडा, या स० पिडिका] छोटा फोडा ।

फोता—पु० [फा० फोत] १. कमरबन्द । पटका । २ लुगी । ३ पगड़ी । ४ खेत या जमीन पर लगनेवाला राज-कर । पोत । लगान ।

मुहा०—फोता भरना—कर या लगान देना ।

५ रुपये आदि रखने की थैली । ६. अड-कोश ।

फोतेदार—पु० [फा० फ़ोतदार] १ कोषाध्यक्ष । खजाची । २ रोकडिया । पोतदार ।

फोनोग्राफ—पु० [अ० फोनोग्राफ] एक प्रकार का यत्र जिसमे कही हुई बातें और बजाये हुए बाजो के स्वर आदि चूडियो मे भरे रहते है और ज्यो के त्यो सुनाई पडते हैं । (ग्रामोफोन इसी का विकसित रूप है ।)

फोरना—स०=फोडना ।

फोरमैन—पु० [अ० फोरमैन] कारखानो मे कारीगरो और काम करने वालो का प्रधान या सरदार । जैसे—प्रेस का फोरमैन ।

फोहा—पु०=फाहा ।

फोहारा—पु०=फुहारा ।

फौंकना—अ० [अनु०] आवेश मे आकर डीग मारना । शेखी हाँकना ।

फौंदना†—पु०=फुदना ।

फौआरा—पु०=फुहारा ।

फौक—वि० [अ० फौक] १ उच्च । श्रेष्ट । २. उत्तम ।

पु० १ उच्चता । ऊँचाई । २. प्रधानता । श्रेष्ठता ।

मुहा०—(किसी से) फौक ले जाना=किसी से बहुत बढकर या श्रेष्ठ सिद्ध होना ।

फौज—स्त्री० [अ० फ़ौज] [वि० फौजी] १. सेना । २. झुड । जैसे—बदरो या बच्चो की फौज ।

फौजदार—पु० [अ० फौज+फा० दार] [भाव० फौजदारी] सेना का एक छोटा अधिकारी ।

फौजदारी—स्त्री० [अ०] १. फौजदार का कार्य या पद । २ वह न्यायालय जिसमे मार-पीट, हत्या आदि सबधी मुकदमो की सुनवाई होती है । ३ गहरी मार-पीट की कोई घटना ।

फौजी—वि० [फा० फौजी] १ फौज का । जैसे—फौजी अफसर । २. फौज या फौजो मे होनेवाला । जैसे—फौजी लड़ाई ।

फौत—वि० [अ० फौत] १. मरा हुआ । मृत । २ जो नष्ट हो गया हो । जैसे—किसी बात का मतलब फौत होना ।

स्त्री० मृत्यु । मौत ।

फौती—वि० [अ० फौत] १. मृत्यु-सबधी । मृत्यु का । ३. मरा हुआ । मृत ।

स्त्री० १. मृत्यु । मौत । २ किसी विशिष्ट स्थानीय शासक विशेषत जन-गणना करनेवाले किसी अधिकारी को दी जानेवाली किसी की मृत्यु की सूचना ।

फौतीनामा—पु० [अ० फ़ौत+फा० नामा] १ मृत व्यक्तियो के नाम और पते की सूची जो नगरपालिका आदि की चौकी पर तैयार की जाती है, और प्रधान कार्यालय मे भेजी जाती है । २ सेना द्वारा किसी मृत सैनिक के घर उसकी मृत्यु का भेजा जानेवाला समाचार ।

फौरन—क्रि० वि० [अ० फौरन्] तत्क्षण । उसी समय । जल्दी ही । तत्काल । तुरन्त ।

फौरी—वि० [अ० फौरी] (काम) जो चट पट या तुरत किया जाने को हो ।

फौलाद—पु० [फा० फौलाद] असली लोहा ।

फौलादी—वि० [फा०] १ फौलाद का बना हुआ । जैसे—फौलादी ढाँचा । २. बहुत ही दृढ या पक्का ।

स्त्री० वह डडा जिसके सिरे पर बल्लम या भाला जड़ा रहता है ।

फौवारा†—पु०=फुहारा ।

फ्रांस—पु० [अ०] यूरोप का एक प्रसिद्ध देश जो स्पेन के उत्तर मे है ।

फ्रांसीसी—वि० [हिं० फ्रास+ईसी (प्रत्या०)] फ्रास का ।

पु० फ्रास देश का निवासी ।

स्त्री० फ्रान्स देश की भाषा

फ्राक—पु० [अ० फ़्राक] लबी आस्तीन का ढीला ढीला एक प्रकार का छोटे बच्चो विशेषत. लड़कियो के पहनने का कुरता ।

फ्री—वि० [अ० फ़्री] १. जिस पर किसी का दबाव या नियन्त्रण न हो । स्वतत्र । २. जिसके लिए कोई कर या देन नियत न हो । ३ जो किसी प्रकार का कर या देन चुकाने से मुक्त कर दिया गया हो ।

फ्रीमेसन—पु० [अ०] फ्रीमेसनरी नामक सम्प्रदाय का अनुयायी या सदस्य ।

फ्रीमेसनरी—स्त्री० [अ०] अमेरिका और यूरोप मे मध्ययुग का एक रहस्य सम्प्रदाय ।

फ्रेंच—वि० [अ० फ्रेंच] फ्रास देश का ।

स्त्री० फ्रास देश की भाषा ।

पु० फ्रास देश का निवासी ।

फ्रेम—पुं० [अं० फ़्रेम] १ चित्रो आदि का या और किसी प्रकार का चौकठा । २. ढाँचा ।

व

व—देवनागरी वर्णमाला का पवर्गीय वर्ण जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ओष्ठ्य, अघोप, अल्पप्राण तथा स्पृष्ट व्यजन है।
पु० [स०√वल् (जीवन देना)+ड] १. वरुण। २ समुद्र। ३. जल। पानी। ४. सुगधि।५. ताना। ६ घडा। ७. भग। योनि।
अव्य०[फा०]एक अव्यय जो अरबी-फारसी शब्दो के पहले लगकर ये अर्थ देता है—(क) सहित। साथ। जैसे—बखैरियत=खैरियत से। (ख) पूर्वक। जैसे—बखूबी। (ग) के द्वारा। जैसे—बज-रिया=जरिये द्वारा। (घ) पर या से। जैसे—खुद-ब-खुद=आप से आप। (च) किसी की तुलना मे। जैसे—ब-जिन्स=किसी के ठीक अनुरूप। (छ) अनुसार। जैसे—बदस्तूर, बमूजिब।

बंक—वि० [सं० वक्र, वक] १ टेढा। तिरछा। २. जिसमे पुरु-पार्थ और विक्रम हो। ३. दुर्गम। ४. विकट।
पुं० दे० 'बांकरा'।
†पु० अस्थि। हड्डी। उदा०—मचक्कहिं रीढक बक अमाप।—कविराज सूर्यमल।
पु० [अ० बैंक] वह महाजनी सस्था जो मुख्य रूप से सूद पर रुपयो के लेन-देन का काम करती हो।

बंकर—वि० [स० वक] १. वक। टेढा। २. तीव्र। ३. विकट।
पु० [स० व्यकट?] हनुमान।

बंकनाल—स्त्री० [हिं० वक+नाल] १ सुनारो की एक नली जो बहुत बारीक टुकडों की जोडाई करने के समय चिराग की लौ फूँकने के काम आती है। बगनहा। २ कोई टेढी पतली नली। ३. हठ-योग मे शखिनी नाडी का एक नाम।

बंकराज—पु० [हिं० वक+राज] एक प्रकर का साँप।

बँकवा† —पु० [सं० वंक] एक तरह का बढिया अगहनिया घान।

बंकसाल—पु० [देश०] जहाज का वह बडा कमरा जिसमे मस्तूलो पर चढाई जानेवाली रस्सियाँ या जंजीरे ठीक करके रखी जाती हैं।

बंका—वि० [स० वक] [भाव० बकाई] १. टेढा। तिरछा। २. दुर्गम। ३. विकट। ४. पराक्रमी। ५. बाँका।

बंकाई—स्त्री० [हिं० वक+आई (प्रत्य०)] टेढापन। तिरछापन। वक्रता।

बंकी—स्त्री०=बाँक।

बंकुर† —वि० [भाव० वंकुरता]=वंक (वक्र)।

बंकुरा† —वि०=वक।

बँकैअन* —अव्य०, पु०=बकैयाँ।

बंग—पु०=वग।

बंगई—स्त्री० [सं० वंग] सिलहट की भूमि मे होनेवाली एक तरह की कपास।
† स्त्री० [हिं० बंगा] १. उद्दंडता। २. झगडालूपन। ३ † बदमाशी। लुच्चापन।

बंगउरा† —पु०=बिनौना।

बंगडी† —स्त्री० [देश०] १. *लाख या काँच की बनी हुई चूडी या कंगन*। २. आलू की फसल मे होनेवाला एक तरह का रोग।

बँगला—वि० [हिं० बंगाल] १. बंगाल प्रदेश-सबंधी। २. बंगाल में बनने या होनेवाला। जैसे—बँगला मिठाई।
स्त्री० १ बगाल देश की भाषा। २ उक्त भाषा की लिपि जो देव-नागरी का ही एक स्थानिक रूप है।
पु० १ एक मजिला हवादार तथा बरामदेवाला छोटा मकान जिसकी छत प्राय खपरैल की होती है तथा जो खुले स्थान मे बना हुआ होता है। २. कोई छोटा हवादार तथा बरामदेवाला मकान। † ३ बोल-चाल मे, ऊपरवाली छत पर बना हुआ हवादार कमरा।

बंगलिया—पु० [हिं० बगाल] १ एक प्रकार का घान। २ एक प्रकार की मटर।

बँगली—स्त्री० [?] स्त्रियो का एक आभूषण जो हाथों मे चूडियो के साथ पहना जाता है।
पु० [हिं० बगाल] एक प्रकार का पान।
पु० [?] घोड़ा। (डिंगल)

बंगसार—पु०[?] समुद्र मे बनाया हुआ वह चबूतरा जिस पर से यात्री जलयान मे चढते है। बनसार।

बंगा—वि० [स० वक] [स्त्री० बगी] १ टेढा। २. झगडालू। ३. पाजी। लुच्चा। ४. अज्ञानी। मूर्ख। ५ उद्दड।

बंगारी—पु० [स० वग+अरि] हरताल। (डिं०)

बंगाल—पु० [स० वग] १ भारत का एक पूर्वी प्रदेश जिसका आधा भाग पूर्वी बगाल (पाकिस्तान) और आधा भाग पश्चिमी बगाल (भारत) के नाम से प्रसिद्ध हैं। वंग प्रदेश। २ सगीत मे एक प्रकार का राग जिसे कुछ लोग भैरव राग का और कुछ लोग मेघ राग का पुत्र मानते हैं।

बंगालिका—स्त्री० [?] एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघराग की पत्नी मानते हैं।

बंगाली—पु० [हिं० बगाल+ई (प्रत्य०)] बगाल अर्थात् वग-प्रदेश का निवासी।
वि० १ बगाल देश का। बगाल-सम्बन्धी।
स्त्री० १ बँगला भाषा। २ सगीत मे सम्पूर्ण जाति की रागिनी जो ग्रीष्म ऋतु मे प्रात.काल गाई जाती है। ३ विशुद्ध अद्वैत का ज्ञान प्राप्त होने की अवस्था। (बौद्ध)

बंगुरी—स्त्री०=बँगली (आभूषण)।

बंगू—पु० [देश०] १ वग तथा दक्षिण भारत की नदियो मे होनेवाली एक तरह की मछली। २ जगी या भौरा नाम का खिलौना।

बंगोभा—पु० [देश०]गगा और सिंधु नदियो मे होनेवाला एक तरह का कछुआ।

बंचक—वि० [भाव० बचकता]=वचक (ठग)।

बंचकताई—स्त्री०=वचकता।

बचन—पु०=वचन।

बंचना—स० [स० वंचन] ठगना। छलना।
अ० ठगा जाना।
स्त्री०=वचना।

स० [सं० वाचन] पढ़ना। वाँचना।
वंचर—पु०=वनचर।
वंचवाना—हिं० [स० वाँचना का प्रे०] वाँचने (पढने) का काम दूसरे से कराना। पढवाना।
वंचित—वि०=वंचित।
वंछना†—स० [स० वाछा] वाछा अर्थात् इच्छा करना। चाहना।
वंछनीय†—वि०=वांछनीय।
वंछित†—वि०=वांछित।
वंज—पु० [देश०] हिमालय प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का बलूत जिसकी लकडी का रग खाकी होता है। इसे सिल और मारु भी कहते हैं।
†पु०=वनिज।
वंजर—वि० [स० वन+उजड] (भूमि) जिसमे कोई चीज न उगती हो फलत. जो उपजाऊ न हो। ऊसर।
पु० वजर भूमि।
वंजर भूमि—स्त्री० [स०]शुष्क प्रदेशो मे कटा-फटा या ऊबड-खाबड भू-खड जिसमे कोई वनस्पति नही होती। ऐसी भूमि मे बीच बीच मे छोटी-मोटी चट्टाने या टीले भी होते है। (बैड लैंड)
वंजरिया†—वि०=वजर।
स्त्री०=वन-जरिया।
वंजारा—पु०=वनजारा।
वंजुल—पु०=वजुल (अशोक)।
वंझा—वि०, स्त्री०=वांझ।
वँटन—पु०[हि० वाँटना] वाँटने की क्रिया या भाव।
वँटना—अ० [हिं० 'वाँटना' का अ०] ? अलग अलग हिस्सों मे वाँटा जाना। २ किसी प्रकार या रूप में विभक्त या विभाजित होना। सयो० क्रि०—जाना।
†पु०=वटना।
वँटवाई—स्त्री० [हिं० वँटवाना] वँटवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
†स्त्री०=वटाई।
वँटवाना—स० [हिं० वाँटना] दूसरो को कोई चीज वाँटने में प्रवृत्त करना।
स०=वटवाना।
वँटवारा—पु० [हिं० वाँटना] १ वाँटने का काम। २ भाइयो, हिस्सेदारों आदि मे होनेवाला सपत्ति का विभाजन। अलगोझा। जैसे—(क) खेत का वँटवारा। (ख) देश का वँटवारा।
वटा—पुं० [स० वटक, हिं० वटा+गोला] [स्त्री० अल्पा० वंटी] कोई छोटा गोल चौकोर डिब्बा। जैसे—पान का वंटा।
वि० छोटे कद का। नाटा।
वँटाई—स्त्री० [हिं० वाँटना] १ वाँटने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ वाँटे जाने की अवस्था या भाव। ३. किसी को जोतने-वोने के लिए खेत देने का वह प्रकार जिसमे खेत का मालिक लगान के वदले मे उपज का कुछ अंश लेता है। जैसे—यह खेत इस साल वँटाई पर दिया गया है।
वँटाधार†—वि० [सं० विनष्ट+आधार] पूरी तरह से चौपट, नष्ट या भ्रष्ट किया हुआ। (पूरब)
वँटाना—स० [हिं० वाँटना] १ किसी संपत्ति आदि के हिस्से लगवाकर अपना हिस्सा लेना। जैसे—उसने सारी जायदाद वँटा ली है। २. किसी काम या बात मे इस प्रकार सम्मिलित होना कि दूसरे का भार कुछ हलका हो जाय। जैसे—(क) किसी का दुःख वँटाना। (ख) किसी काम मे हाथ वँटाना। ३. दे० 'वँटवाना'।
वँटायन—वि० [हिं० वँटवाना] वँटवाकर अपना हिस्सा लेनेवाला।
वँटी—स्त्री० [?] हिरन आदि पशुओं को फँसाने का जाल या फंदा।
स्त्री० हिं० 'वंटा' का स्त्री० अल्पा०।
वँटैया—वि० [हिं० वाँटना] वाँटनेवाला।
वि० [हिं० वँटवाना] वँटवाकर अपना हिस्सा ले लेनेवाला।
वँड—वि०=वाँड़ा।
पु०=वंडा।
वँडल—पुं० [अं०] रस्सी आदि से अच्छी तरह वँधा हुआ पुलिंदा।
वँडवा†—वि०=वाँड़ा।
वंडा—पु० [हिं० वंटा] १. अरुई की जाति की एक लता। २. उक्त लता के कंद जिनकी तरकारी बनाई जाती है। ३ अनाज रखने का बखार।
वंडी—स्त्री० [हिं० वाँड़ा=कटा हुआ] १. विना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती। फतूही। मिरजई। २. बगलबन्द नाम का पहनने का कपड़ा।
वँडेर—स्त्री० [सं० वरदंड ?] वह बल्ला या शहतीर जिसके ऊपर छाजन का ठाठ स्थित होता है।
वंडेरा†—पु०=वँडेर।
वँडेरी†—स्त्री०=वंडेर।
वंद—पु० [सं० बध से फा०] १. वह चीज जो किसी दूसरी चीज को वाँधती हो। जैसे—डोरी, रस्सी आदि। २. लोहे आदि की वह लम्बी पट्टी जो बडी बड़ी गठरियों, सदूको आदि पर इसलिए रक्षा के विचार से वाँधी जाती है कि माल वाहर भेजते समय उसमें से कुछ चुराया या निकाला न जा सके। ३. किसी प्रकार की लम्बी धज्जी या पट्टी। जैसे—कपडे या कागज का वन्द। ४. वास्तुरचना मे, पत्थर की वह पटियाँ या पत्थरो की वह शृंखला जो दीवारों मे मजबूती के लिए लगाई जाती है और जिसके ऊपर फिर दीवार उठाई जाती है। ५. पानी की बाढ आदि रोकने के लिए वनाया जानेवाला धुस्स। वाँध। ६ फीते की तरह सीकर वनाई हुई कपडे की वह डोरी या फीता जिनसे अँगरखे, चोली आदि के पल्ले आपस मे वाँधे जाते हैं। ७ कागज, धातु आदि की पतली लवी धज्जी। पट्टी। ८ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार का नियत्रण या वधन। जैसे—वदे के जाये वंदी मे नही रहते। ९. उर्दू कविता मे वह पद जो पाँच या छ चरणो का होता है। १०. कविता का कोई चरण या पद। ११ शरीर के अगो का जोड या सधि-स्थान। जैसे—वद वद जकडना या ढीला होना। १२. कोई काम कौशलपूर्वक करने का गुण, योग्यता या शक्ति। १३. तरकीव। युक्ति। उदा०—कस्वोहुनर के याद है जिनको हजार वन्द।—नजीर।

वि० १. (पदार्थ या व्यक्ति) जो चारो ओर से घिरा या रुका हुआ हो। जैसे—(क) कोठरी मे सब सामान बंद है। (ख) पुलिस ने उसे थाने मे बन्द कर रखा है। २. (स्थान) जो चारो ओर से खुलता या खुला हुआ न हो फलत जो इस प्रकार घिरा हो कि उसके अन्दर कुछ या कोई आ-जा न सके। जैसे—वह मकान तो चारो तरफ से बन्द है; अर्थात् उसमे प्रकाश, वायु आदि के आने का यथेष्ठ मार्ग नही है। ३. (स्थान) जिसके अन्दर लोगो के आने-जाने की मनाही या रुकावट हो। जैसे—जन-साधारण के लिए किला आज-कल बन्द हो गया है। ४. (किसी प्रकार का मार्ग या रास्ता) जो अवरुद्ध हो अर्थात् जिसके आगे ढकना, ताला, दरवाजा, या ऐसी ही कोई और बाधक चीज या बात लगी हो जिसके कारण उसके अन्दर पहुँचना या बाहर निकलना न हो सकता हो। जैसे—नाली का मुंह बन्द हो गया है, जिससे छत पर पानी रुकता है। ५ ढकने, दरवाजे, पल्ले आदि के सबंध मे, जो इस प्रकार भेडा या लगाया गया हो कि आने-जाने या निकालने-रखने का रास्ता न रह जाय। जैसे—कमरा (या सदूक) बद कर दो।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग ढकने, दरवाजे आदि के सबध मे भी होता है; और उस चीज के सबध मे भी जिसके आगे वे लगे रहते हैं।

६. शरीर के अगों, यत्रो आदि के सबध मे, जिनकी क्रिया या व्यापार पूरी तरह से रुक गया हो अथवा रोक दिया गया हो। जैसे—(क) बुढापे के कारण उनके कान बन्द हो गए हैं। (ख) घोड़े के पिछले पैर दो दिन से बन्द हैं, अर्थात् ठीक तरह से हिल-डुल नही सकते। (ग) पानी की कल (या बिजली) बन्द कर दो। ७. किसी प्रकार के मुख या विवर के सबंध मे, जिसका अगला भाग अवरुद्ध या सपुटित हो। जैसे—(क) कमल रात मे बन्द हो जाता है और दिन मे खुलता (या खिलता) है। (ख) थोड़ी मिट्टी डालकर यह गड्ढा बन्द कर दो। ८. (कार्य करने का स्थान) जहाँ अस्थायी या स्थायी रूप से कार्य रोक दिया गया हो या स्थगित हो चुका हो। जैसे—(क) जाडे मे रात को ९ बजे सब दूकाने बन्द हो जाती हैं। (ख) उनका छापाखाना (या विद्यालय) बहुत दिनो से बद पडा है। ९. कोई ऐसा कार्य, गति या व्यापार जो चल न रहा हो, बल्कि थम या रुक गया हो। जैसे—(क) अब थोडी देर मे वर्षा बन्द हो जायगी। (ख) उन्होंने प्रकाशन का काम बन्द कर दिया है। १०. (व्यक्ति) जो अक्रिय तथा उदास होकर बैठा हो। (क्व०) जैसे—आज सवेरे से तुम इस तरह बन्द से क्यो बैठे हो? ११. लेन-देन या हिसाब-किताब जिसके व्यवहार का अन्त हो चुका हो। जैसे—आज-कल हमारा उनका लेन-देन बन्द है। १२. (व्यक्ति) जिसके साथ सामाजिक व्यवहार का अन्त हो चुका हो। जैसे—वह साल भर से बिरादरी से बन्द है। १३ कोई परिमित अवधि या समय जिसकी समाप्ति हो गई या हो चली हो। जैसे—एक दो दिन मे यह महीना (या साल) बन्द हो रहा है। १४. शस्त्रो की धार आदि के सबंध मे, जिसमे कार्य करने की शक्ति न रह गई हो। जो कुठित हो गया हो। जैसे—यह चाकू (या कैंची) तो बिलकुल बन्द है, अर्थात् इससे काटने या कतरने का काम नही हो सकता।

वि० शब्दो के अन्त मे प्रत्यय के रूप मे, प्रयुक्त होने पर, जड़ने, बाँधने या लगानेवाला। जैसे—कमर-बन्द, नाल-बन्द, नैचा-बद।

† वि०=वद्य (वदनीय)।

† पु०=विंदु।

बंदक†—वि० १. =वंदक (वदना करनेवाला)। २. बधक (बाँधनेवाला)।

†वि० [हिं० वद+क (प्रत्य०)] बन्द करनेवाला।

बंदगी—स्त्री० [फा०] १. किसी के सामने यह मान लेना कि मैं बन्दा (सेवक) हूँ और आप मालिक (स्वामी) है। अधीनता और दीनता स्वीकृत करना। २. मन मे उक्त प्रकार का भाव या विचार रखकर की जानेवाली ईश्वर की वदना। ईश्वराराधन। ३. किसी को आदरपूर्वक किया जानेवाला अभिवादन। नमस्कार। सलाम। ४. आज्ञा पालन। ५. टहल। सेवा। उदा०—जैसी बन्दगी, वैसा इनाम। (कहा०)

बंद-गोभी—स्त्री० [हिं० वद+गोभी] १. करमकल्ला। पातगोभी का पौधा। २ उक्त पौधे का फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

बंदन—पुं० [स० वदनी=गोरोचन] १. रोचन। रोली। २. ईंगुर। सिंदूर।

पुं०=वदन।

बंदनता†—स्त्री०=वदनीयता।

बंदनवान†—पु० [स० बधन] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंदनवार—पु० [स० वदनमाला] आम, अशोक आदि की पत्तियो को किसी लम्बी रस्सी मे जगह-जगह टाँकने पर बननेवाली श्रृखला जो शुभ अवसरो पर दरवाजो, दीवारो आदि पर लटकाई जाती है। तोरण।

बंदनसाल†—स्त्री० [स० बधन+शाला] कारागार।

बंदना—स० [स० वंदन] १. वदना या आराधना करना। २. नमस्कार या प्रणाम करना।

† स्त्री०=वदना।

बदनी—स्त्री० [स० वदनी=माथे पर बनाया हुआ चिह्न] स्त्रियो का एक आभूषण जो सिर पर आगे की ओर पहना जाता है। इसे बदी या सिरबदी भी कहते हैं।

वि०=वदनीय। जैसे—जग-बदनी।

बंदनीमाल—स्त्री० [स० वदनमाल] वह लम्बी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो। घुटनो तक लटकती हुई लबी माला।

बंदर—पु० [स० वानर] [स्त्री० बँदरिया, बँदरी] १. एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अनेक बातों मे मनुष्य से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता और प्राय वृक्षो आदि पर रहता है। कपि। मर्कट। शाखा-मृग।

पद—बंदर का घाव=दे० 'बँदर-खत'। बंदर घुड़की या बदर भभकी=बदरो की तरह डराते हुए दी जानेवाली ऐसी धमकी जो दिखावे भर को हो पर जो पूरी न की जाय।

२. राजा सुग्रीव की सेना का कोई सैनिक।

पु० [फा०] बंदरगाह।

बंदर-खत†—पु० [हिं० बदर+क्षत=घाव] १. बन्दर के शरीर मे होनेवाला घाव जिसे वह प्राय. नोच-नोच कर बढाता रहता है। २. ऐसा कार्य या बात जिसकी खराबी या बुराई जान-बूझकर बढ़ाई जाय।

बंदरगाह—पु० [फा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।
बंदर बाँट—स्त्री० [हिं० बंदर+बाँटना] न्याय के नाम पर किया जानेवाला ऐसा स्वार्थपूर्ण बँटवारा जिसमें न्यायकर्ता सब कुछ स्वयं हजम कर लेता है और विवादी पक्षों को विवाद-ग्रस्त संपत्ति में से कुछ भी प्राप्ति नहीं होती।
बँदरा—पु० दे० 'बनरा'। २ दे० 'बन्दर'।
बंदरिया—स्त्री० हिं० बंदर का स्त्री० रूप।
बंदरी—स्त्री० [फा० बन्दर] १. बन्दर या बन्दरगाह-सम्बन्धी। २ बन्दरगाह में होकर आनेवाला, अर्थात् विदेशी। जैसे—बंदरी तलवार।
स्त्री० हिं० बन्दर (जानवर) का स्त्री०। मादा बंदर।
बंदली—पु० [देश०] रुहेलखंड में पैदा होनेवाला एक प्रकार का धान जिसे रायमुनिया और तिलोकचंदन भी कहते हैं।
बंदवान—पु० [स० बंदी+वान] बंदी गृह का रक्षक। कैद खाने का प्रधान अधिकारी।
बंदसाल—पु० [स० बंदीशाला] बंदीगृह। कैदखाना।
बंदा—पु० [फा० बंद·] १ दास। सेवक। २ भक्त। ३. मनुष्य। विशेष—वक्ता नम्रता सूचित करने के लिए उसका प्रयोग अपने लिए भी करता है। जैसे—लीजिए बन्दा हाजिर है।
पु० [स० बंदी] कैदी। बंदी।
बंदा-नवाज—वि० [फा० बंद.नवाज] [भाव० बंदा-नवाजी] १. आश्रितों और दीनों पर अनुग्रह या कृपा करनेवाला। दीन-दयालु। २. भक्त-वत्सल।
बंदा-परवर—पु० [फा० बंद पर्वर] [भाव० बंदा-परवरी]=बंदा-नवाज।
बंदार्नी—पु० [?] गोलंदाज। तोप चलानेवाला। (लश्करी)
पु० [?]एक प्रकार का हलका गुलाबी रंग जो प्याजी से कुछ गहरा होता है।
वि० उक्त प्रकार के रंग का।
बंदारु—वि०[सं० वंदारु,√वन्द्+आरु] आदरणीय और पूज्य। वंदनीय।
†पु०=बंदाल।
बंदाल—पु० [?] देवदाली। घघरबेल।
बंदि—स्त्री० [स० बंदि] बंधन। २. कैद।
†स्त्री०=बंदीगृह (कारागार)।
पु०=बंदी या बंदी (कैदी)।
बंदि कोष्ठ—पु० [सं० बंदीकोष्ठ] बंदीगृह (कारागार)।
बंदि छोर—वि०=बंदीछोर।
बंदिया—स्त्री०=बंदी (आभूषण)।
बंदिश—स्त्री० [फा०] १ बाँधने की क्रिया या भाव। २. किसी प्रकार का बन्धन या रुकावट। ३. कविता के चरणों, वाक्यों आदि में होनेवाली शब्द-योजना। रचना-प्रबंध। जैसे—गजल या गीत की बंदिश। ४. किसी को चारों ओर से बाँध रखने के लिए की जानेवाली योजना। ५. कोई बड़ा काम छेड़ने अथवा किसी प्रकार की रचना आरंभ करने से पहले किया जानेवाला आयोजन या आरंभिक व्यवस्था। ६. षड्यंत्र।

बंदी—पु० [सं०] चारणों की एक जाति जो प्राचीन काल में राजाओं का कीर्तिगान किया करती थी। भाट। चारण। दे० 'बंदी'।
पु० [सं० बन्दिन्] कैदी। बँधुआ।
स्त्री०=बंदनी (सिर पर पहनने का गहना)।
वि० फा० 'बंदा' (दास या सेवक) का स्त्री०।
स्त्री० [फा०] १. बंद करने की क्रिया या भाव। जैसे—दुकान बंदी। २. बाँधने की क्रिया या भाव। जैसे—नाकेबंदी। ३. व्यवस्थित रूप में लाने का भाव। जैसे—दलबन्दी।
बंदीखाना—पु० [फा० बंदीखान:] जेलखाना। कैदखाना।
बंदीघर—पु० [स० बंदिगृह] कैदखाना। जेलखाना।
बंदीछोर—वि० [फा० बंदी+हिं० छोर (ड़) ना] १. कैद से छुड़ानेवाला। २. संकटपूर्ण बंधन से छुड़ानेवाला।
बंदीवान—पु० [स० बंदिन्] कैदी।
बंदूक—स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें कारतूस, गोली आदि भरकर इस प्रकार छोड़ी जाती है कि लक्ष्य पर जाकर गिरती है।
क्रि० प्र०—चलाना।—छोड़ना—दागना।
मुहा०—बंदूक भरना=बंदूक में कारतूस, गोली आदि रखना।
बंदूकची—पु० [अ० बंदूक+फा० ची (प्रत्य०)] १. बंदूक चलानेवाला सिपाही। २. बंदूक की गोली से लक्ष्य-भेदन करनेवाला व्यक्ति।
बंदूख†—स्त्री०=बंदूक।
बँदेरा†—पुं० [फा० बन्द.] [स्त्री० बँदेरी] १. दास। २. सेवक।
बंदोड़†—पुं० [फा० बन्द·] गुलाम। दास।
बंदोबस्त†—पु० [फा०] १. प्रबंध। व्यवस्था। २. खेतों की हदबंदी, उनकी मालगुजारी आदि निश्चित करने का काम।
पद—बंदोबस्त आरिजी=कृषि-संबंधी होनेवाली अस्थायी व्यवस्था। बंदोबस्त-इस्तमरारी या दवामी=पक्की और सदा के लिए निश्चित कृषि व्यवस्था।
बंध—पुं० [सं०√बंध् (बंधना)+घञ्] १. वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज बाँधी जाय। जैसे—डोरी, फीता, रस्सी आदि। २. बाँधने की क्रिया या भाव। ३. बंधन। ४. किसी को पकड़कर बाँध रखने की क्रिया। कैद। ५ कोई चीज अच्छी तरह गठ या बाँधकर तैयार करना। जैसे—काव्य-ग्रंथ का सर्ग-बंध। ६. रचना करना। बनाना। ७. कल्पना करना। ८. गद्य या पद्य के रूप में साहित्यिक रचना करना। निबंध रचना। ९. लगाव। संबंध। १०. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय। ११. योग-साधन की कोई मुद्रा। जैसे—उड्डीयान बंध। १२. कोक शास्त्र में, रति के मुख्य सोलह आसनों में से एक आसन। १३. रति या स्त्री-संभोग करने का कोई आसन या मुद्रा। १४. चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिसमें कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार उसकी पंक्तियों के अक्षर बैठाने से किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। जैसे—अश्वबंध, खड्गबंध, छत्र-बंध आदि। १५. बनाये जानेवाले मकान की लंबाई और चौड़ाई का योग। १६. काया। शरीर। १७. जलाशय के किनारे का बाँध।
†पुं० १. =बंधु।
बंधक—वि० [स०√बंध् (बंधना)+ण्वुल्—अक] १. बाँधनेवाला

२. (पदार्थ) जो किसी से रुपए उधार लेने के समय इस दृष्टि से जमानत के रूप मे उसके पास रखा गया हो कि जब तक रुपया (और सूद) चुकाया न जायगा, तब तक वह उसी के पास रहेगा। रेहन। ३. अदला-बदली या विनिमय करनेवाला।

पु० [स० बंध+कन्] लेन-देन या व्यवहार का वह प्रकार जिसमे किसी से रुपया उधार लेने के समय कोई मूल्यवान् वस्तु इस दृष्टि से महाजन के पास जमानत के तौर पर रख दी जाती है कि यदि ऋण और व्याज न चुकाया जा सके तो महाजन वह वस्तु बेचकर अपना प्राप्य धन ले सकता है। रेहन। (मार्टगेज)

बंध-करण—पु० [ष० त०] कैद करना। कारावास मे बंद करना।

बंधक-कर्ता (र्तृ)—पु० [सं० ष० त०] वह जो कोई चीज बंधक रूप मे किसी के यहाँ रखता हो। (मार्टगेजर)

बंधकी—स्त्री० [स० बंधक+ङीष्] १. व्यभिचारिणी स्त्री। २. रंडी। वेश्या।

वि० [हिं० बंधक] जो बंधक के रूप मे पड़ा हुआ या रखा गया हो। जैसे—बंधकी मकान।

बंध-तंत्र—पु० [मध्य० स०] किसी राजा अथवा राज्य की संपूर्ण सैनिक शक्ति। पूरी सेना।

बंधन—पु० [स०√बंध्+ल्युट्—अन] १ बँधने या बाँधने की क्रिया या भाव। २ बाँधनेवाली कोई चीज, तत्त्व या बात। जैसे—जंजीर, डोरा, रस्सी, प्रतिज्ञा, वचन आदि। ३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी को उच्छृंखल होने या मन-माना आचरण अथवा व्यवहार करने से रोकती हो। कोई ऐसा तत्त्व या बात जो किसी को नियमित या मर्यादित रूप से आचरण करने के लिए बाध्य करती हो। जैसे—प्रेम या समाज का बंधन। ४ वह स्थान जहाँ कोई बाँध या रोककर रखा गया हो अथवा रखा जाता हो। जैसे—कारागार आदि। ५ कोई चीज अच्छी तरह गठ या बाँधकर तैयार करना। जैसे—सेतु-बंधन। ६. शरीर के अन्दर की रगे जिनसे भिन्न-भिन्न अंग बँधे रहते हैं।

मुहा०—(किसी के) **बंधन ढीले करना**=(क) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ख) सारी शेखी या हेकडी निकाल देना।

७. नदियो आदि का बाँध। ८. पुल। सेतु। ९. वध। हत्या। १०. हिंसा। ११. शिव का एक नाम।

बंधन-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] १. शरीर मे वह हड्डी जो किसी जोड पर हो। २ फाँस। ३. पशुओ को बाँधने की डोरी या रस्सी।

बंधन-पालक—पु० [ष० त०] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंधन-रक्षी (क्षिन्)—पु० [स० बंधन√रक्ष्+णिनि] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंधन स्तंभ—पु० [ष० त०] वह खंभा या खूँटा जिससे पशुओ को बाँधा जाता है।

बँधना—अ० [हिं० 'बाँधना' का अ० रूप] १ बंधन मे आना या पड़ना। बाँधा जाना। २ डोरी रस्सी आदि से इस प्रकार लपेटा जाना अथवा कपडे आदि की गाँठ से इस प्रकार कसा या जकडा जाना कि जल्दी उससे छूटा न जा सके। जैसे—गौ या घोडा बँधना; गठरी या पारसल बँधना। ३. किसी प्रकार के नियमन, प्रतिबंध आदि से युक्त होना। जैसे—प्रतिज्ञा या वचन से बँधना। ४. कारागार आदि मे रखा जाना। कैद होना। जैसे—दोनों गुडे साल-साल भर के लिए बँध गए। ५. अच्छी तरह गठकर ठीक या प्रस्तुत होना। बनाया जाना। रचित होना। जैसे—मजमून बँधना। ६ पालन, प्रचलन आदि के लिए नियत या निर्धारित होना। जैसे—कायदा या नियम बँधना। ७. किसी के साथ इस प्रकार संबद्ध, संयुक्त या संलग्न होना कि जल्दी अलगाव या छुटकारा न हो। उदा०—अली कली ही तें बँध्यो आगे कौन हवाल।—विहारी। ८. ध्यान, विचार आदि के संबंध मे, निरंतर कुछ समय तक एक ही रूप मे बना या लगा रहना। जैसे—किसी आदमी या बात का ख्याल बँधना।

बंधनागार—पु० [स० बंधन-आगार, ष० त०] कारागार।

बंधनालय—पु० [स० बंधन-आलय, ष० त०] कारागार।

बँधनि—स्त्री०=बंधन।

बंधनी—स्त्री० [स०√बंध्+ल्युट्—अन, ङीप्] १. शरीर के अन्दर की वे मोटी नसें जो संधि स्थान पर होती है और जिनके कारण दो अवयव आपस मे जुडे रहते है। २ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय।

बंधनीय—वि० [स०√बंध्+अनीयर्] जो बाँधा जा सके या बाँधा जाने को हो।

पु० १ बाँध। २ पुल। सेतु

बंध-पत्र—पु० [स० ष० त०] १ विधिक दृष्टि से मान्य वह पत्र जिस पर हस्ताक्षर करनेवाला व्यक्ति अपने आप को कोई काम करने के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध करता है। जैसे—नियत काल तक कोई काम या नौकरी करते रहने, नियत समय पर कही उपस्थित होने या कुछ धन देने का बंध पत्र। २ एक प्रकार का सार्वजनिक ऋण-पत्र जिनमे निश्चित समय के अन्दर कुछ विशिष्ट नियमो या शर्तों के अनुसार लिया हुआ ऋण चुकाने की प्रतिज्ञा होती है। (बांड)

विशेष—अंतिम प्रकार का बंध-पत्र प्राय राज्यो, नगर-निगमो और बडी बडी व्यापारिक संस्थाओ के द्वारा प्रचलित होते हैं।

बंध-मोचनिका—स्त्री० [स० ष० त०] एक योगिनी का नाम।

बंध-मोचिनी—स्त्री०=बंधमोचनिका।

बंधव †—पु०=बाँधव।

बँधवाना—स० [हिं० बाँधना का प्रे०] १ बाँधने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ बाँधने मे प्रवृत्त करना। जैसे—बिस्तर बँधवाना। २ नियत या मुकर्रर कराना। ३ वास्तु आदि की रचना कराना। जैसे—कूआँ या तालाब बँधवाना। ४ बंधन अर्थात् कारागार आदि मे डलवाना या रखवाना। जैसे—चोरो को बँधवाना।

बंधान—स्त्री० [हिं० बँधना] १. बँधे हुए की अवस्था या भाव। २. वह नियत परम्परा या परिपाटी जिसके अनुसार कुछ विशिष्ट अवसरो पर कोई विशिष्ट काम करने का बंधन लगा होता है। ३. वह धन जो उक्त परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ४ संगीत मे गीत, ताल, लय, स्वर आदि के संबंध मे बँधे हुए नियम। ५ बाँध।

बंधाना—स०=बँधवाना।

बंधानी—पु० [स० बंध] बोझ ढोनेवाला। मजदूर। कुली।

स्त्री०=बंधान।

बंधाल—पु० [हिं० बधान] जलयान, नाव आदि के पेंदे का वह भाग जिसमे छेदों मे से रिसकर आया हुआ पानी जमा होता है और जो बाद मे उलीचकर बाहर फेंका जाता है। गमतखाना। गमतरी।
बंधिका—स्त्री० [हिं० बधन] करघे मे की वह डोरी जिससे ताने की साँथी बाँधी जाती है। (जुलाहे)
बंधित—भू० कृ० [म० वंध्या] बाँझ। (डिंगल)
बंधित्र—पु० [स०√बध्+इत्र] १. काम-देव। २ तिल (चिह्न)। ४ चमडे का बना हुआ पखा।
बंधी (धिन्)—वि० [म० बध+इनि] १ बधन मे कसा, जकड़ा या पड़ा हुआ। २ जिसमे या जिसके लिए किसी प्रकार का बंधन हो। स्त्री० [हिं० बाँधना] १. बधे हुए होने की अवस्था या भाव। २. बँधा हुआ क्रम। नियमित रूप से या नियत समय पर नित्य किया जानेवाला काम। जैसे—हमारे यहाँ दूध की बँधी लगी है।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
बंधु—पु० [स०√बन्ध् (बन्धन)+उ] १ भाई। भ्राता। २. परम आत्मीय और भाइयो की तरह साथ रहने या काम आनेवाला व्यक्ति। ३. ऐसा प्रिय मित्र जिसके साथ भाइयो का सा व्यवहार हो। ४. पिता। ५ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश: तीन तीन भगण और दो दो गुरु होते हैं। दोधक। ६. बंधूक नामक पौधा और उसका फूल।
बँधुआ—वि० [हिं० बँधना+आ (प्रत्य०)] १. जो बँधा रहता हो। २. (पशु आदि) जिसे बाँधकर रखा गया हो।
पु० कैदी। बदी।
बंधुक—पु० [स०√बधु+उक] १. डेढ़-दो फुट ऊँचा एक तरह का क्षुप जिसमे गोलाकार लाल रंग के फूल दोपहर के समय खिलते हैं। २ उक्त क्षुप का फूल जो वैद्यक मे वात तथा पित्त नाशक और कफ बढानेवाला माना गया है। दुपहरिया। ३. जारज सतान।
बंधुका—स्त्री० [स० बंधु+कन्+टाप्] व्यभिचारिणी स्त्री।
बधुकी—स्त्री० [स० बधु+कन्+ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री।
बधु-कृत्य—पु० [स० प० त०] व्यक्ति का अपने भाई-बंधुओं तथा स्वजनो के प्रति होनेवाला कर्तव्य।
बंधु-जीव—पु० [सं० बधु√जीव् (जीना)+णिच्+अच्] बधूक (पौधा और फूल)। दुपहरिया।
बंधु-जीवक—पु० [स० बंधुजीव+कन्] बंधूक। दुपहरिया।
बंधुता—स्त्री० [स० बंधु+तल्+टाप्] १. बधु होने की अवस्था या भाव। २. बधुओं अर्थात् स्वजनो मे परस्पर होनेवाला उचित व्यवहार। भाई-चारा। ३. दोस्ती। मित्रता। ४. भाई-बंधु तथा स्वजनो का वर्ग।
बंधुत्व—पु० [म० बधु+त्व]=बधुता।
बधु-दत्त—भू० कृ० [स० तृ० त०] बधुओं द्वारा दिया हुआ। बंधुओं से प्राप्त। पु० बधुओं, स्वजनों आदि द्वारा कन्या को उसके विवाह के अवसर पर दिया जानेवाला धन।
बधुदा—स्त्री० [मं० बंधु√दा (देना)+क+टाप्] १. दुराचारिणी स्त्री। बदचलन औरत। २. रडी। वेश्या।
बंधुमान् (मत्)—वि० [स० बधु+मतुप्] जिसके कई या बहुत से बंधु या स्वजन हों।

बंधुर—पुं० [सं०√बध्+उरच्] १. बहरा आदमी। २. हस। ३. बगला। ४. मुकुट। ५. गुल दुपहरिया का पौधा या फूल। ६. काकड़ा-सिंघी। ७. विडग। ८. चिड़िया। पक्षी। ९ खली। वि० १. मनोहर। सुन्दर। २. नम्र। विनीत। ३ झुका हुआ। ४. ऊँचा-नीचा।
बंधुरा—स्त्री० [सं० बंधुर+टाप्] बंधुदा। (दे०)
बंधुल—वि० [सं०√बध्+उलच्] १ झुका हुआ। वक्र। २. सुन्दर। नम्र।
पु० १. वह व्यक्ति जो पर-पुरुष से उत्पन्न हुआ हो पर किसी दूसरे के घर मे पला हो तथा पराये के अन्न से पुष्ट हुआ हो। २. बदचलन स्त्री का लड़का। ३. वेश्या का लड़का।
बँधूआ†—पुं०=बँधुआ।
बंधूक—पुं० [सं०√बध्+ऊक]=बंधुक।
बधूप†—पु०=बधूक।
बंधूर—पु० [सं०√बंध्+ऊरच्] १. झुका हुआ। २. ऊँचा-नीचा। ३. मनोहर।
पुं० छेद।
बंधेज—पु० [हिं० बधना+एज (प्रत्य०)] १. कोई नियत और परम्परागत प्रथा। विशेषत: बँधी हुई तथा सर्वमान्य ऐसी परम्परा जिसके अनुसार सबंधियों, सेवकों आदि को कुछ विशिष्ट अवसरो पर धन आदि दिया जाता है। २. उक्त प्रथा के अनुसार दिया अथवा किसी को मिलनेवाला धन। ३ दे० बाँधनूं (छपाई)। ४. प्रतिबध। रुकावट। ५ ऐसी युक्ति जिससे वीर्य को जल्दी स्खलित नही होने दिया जाता वाजीकरण।
बंध्य—वि०[सं०√बंध्+यक्] १. जो बाँधा जा सके अथवा बाँधने के योग्य हो। २. कारावास मे रखे जाने के योग्य। ३. जो तैयार किये जाने, बनाये जाने अथवा निर्मित किये जाने को हो। ४. जो उपजाऊ न हो। ऊसर। ५ बाँझ (स्त्री)।
बंध्या—स्त्री०[सं० बध्य+टाप्] १. स्त्री या मादा प्राणी जिसे सतान न होती हो। बाँझ।
पद—बध्या-पुत्र। (देखें)
२ योनि का एक रोग। ३. एक गध-द्रव्य।
बंध्या-कर्कोटकी—स्त्री०[स० ष० त०] कड़वी ककड़ी। बाँझ-ककोड़ा।
बंध्यापन—पु०=बाँझपन।
बंध्यापुत्र—पु०[स० ष० त०] १. बाँझ स्त्री का पुत्र अर्थात् ऐसा अनहोना व्यक्ति जो कभी अस्तित्व मे न आ सकता हो। २. लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज या बात जो वध्या के पुत्र के समान अनहोनी हो।
बंध्यासुत—पु० [ष० त०] बध्यापुत्र।
बं-पुलिस—स्त्री०[अ० बम+पुलिस] सार्वजनिक शौचालय।
बंब—पु०[अनु०] १. बब शिव शिव आदि शब्दों की ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्ति की उमग में शिव को प्रसन्न करने के लिए किया करते हैं। २. युद्धारभ में वीरों का उत्साहवर्धक नाद। रणनाद। उदा०—नारद कब बदूक चलाया व्यासदेव कब बंब बजाया।—कबीर। ३. बहुत जोर का शब्द।
क्रि० प्र०—देना।—बोलना।

४. धौंसा। नगाड़ा। ५. सीग का बना हुआ तुरही की तरह का एक बाजा। ६. दे० 'बम'।

बंबई—स्त्री०[स० वल्मीक] १. दीमकों की बांबी। २ रहस्यवादी संतों की भाषा में, देह। शरीर।

बंबा—पु०[अ० मबा] १ स्रोत। सोता। २ उद्गम। ३. पानी की कल। पप। ४. जल-कल। ५. पानी बहाने का नल। ६. कोई लबोतरा गोल पात्र। जैसे—डाक की चिट्ठियां डालने का बबा।

बंबाना—अ०[अनु०] गौ आदि पशुओं का बौं बौं शब्द करना। रँभाना।

बंबू—पु०[मलाया० वम्बू=बांस] १. चडू पीने की बांस की नली। २. नली।
क्रि० प्र०—पीना।

बंबूकाट—पु०[मलाया बंबू+अ० कार्ट] एक प्रकार की टॉगे की तरह की सवारी। (पश्चिम)

बंबूर—पु०=बबूल।

बंभ†—पु०=ब्रह्म।

बँभनाई—स्त्री०[स० ब्राह्मण] १ ब्राह्मणत्व। ब्राह्मणपन।२ ब्राह्मणो की यजमानी धोती। ३. दुराग्रह। ४. जिद। हठ।

बंस—पु०=वश।

बंसकपूर—पु०=बस-लोचन।

बंसकार*—पु०[स० वंश] बांसुरी।

बँसगर—पु०[हिं० बांस+फा० गर (प्रत्य०)] बांस की चटाइयां, टोकरियां आदि बनानेवाला व्यक्ति।
वि०[सं० वश] अच्छे वशवाला। कुलीन।

बँस-दिया—पु० [हिं० बांस+दिया] गाड़े हुए बांस के ऊपरी सिरे पर लटकाया जानेवाला दीया। विशेष दे० 'आकाश दीप'।

बंसमुरगी—स्त्री० [हिं० बांस+मुरगी] एक प्रकार की चिड़िया जो तालो के किनारे तथा घनी झाड़ियो के आस-पास प्राय रहती है। इसे दहक भी कहते हैं।

बसरी*—स्त्री०=बांसुरी।

बँसली—स्त्री०=बांसुरी।

बंस-लोचन—पु०=वशलोचन।

बंसवाड़ा—पु० [हिं० बांस+वाडा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बँसवाडी] १. वह बाजार या मुहल्ला जहाँ बांस बेचनेवालों की बहुत सी दुकानें या घर हो। २. एक जगह उगे हुए बाँसों का समूह। कोठी।

बंसवार†—पु०[स्त्री० अल्पा० बसवारी]=बँसवाडा।

बँसहटा—पु०[हिं० बांस] [स्त्री० अल्पा० बँसहटी] वह चारपाई जिसमें पाटी की जगह बांस लगे हुए हो।

बसार—पु०[देश०] बगसार। (लश्करी)

बंसी—स्त्री०[स० वशी] १ बांसुरी। बशी। २. देवताओं के चरणों में मानी जानेवाली एक प्रकार की रेखा जो बाँसुरी के आकार की होती है। ३. लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज या बात जिससे किसी को फँसाया जाता हो। ४ धान के खेतो में होनेवाली एक प्रकार की घास। बांसी। ५ एक प्रकार का गेहूँ। ६. तीस परमाणुओं की एक तौल। त्रसरेणु।
स्त्री०[स० वरिशी] मछली फँसाने की कँटिया।

बंसीधर—पु०=वशीधर (श्रीकृष्ण)।

बँसुला, बँसूला—पु०=बसूला।

बँसोर—पु०[हिं० बांस] बांस की चटाइयां, टोकरियां आदि बनानेवाली एक जाति।

बँहगी—स्त्री०[स० वह] भार ढोने का एक प्रकार का उपकरण जिसमें एक लबे बांस के टुकड़े के दोनो सिरो पर रस्सियों के बड़े-बड़े छीके या दौरे लटका दिये जाते है और जिनमे बोझ रखा जाता है।
क्रि० प्र०—उठाना।—ढोना।

बँहरखा†—पु० [हिं० बांह] बांट पर पहनने का एक गहना।

बँहिया—स्त्री० १=बांह। २=बँहगी।

बँहूटा, बँहूँटा†—पु०[हिं० बांह] बांह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

बँहोल (ी)—स्त्री०[हिं० बांह] आस्तीन।

बँहोलनी, बँहोली†—स्त्री०=बँहोल।

बइठना†—अ०=बैठना।

बइर*—पु० १.=बैर। २=बेर (पेड़ या फल)।
वि०=बधिर (बहरा)।

बउर†—पुं० १ दे० 'बौर'। २. दे० 'मौर'।

बउरा†—वि०=बावला।

बउराना—अ०, स०=बौराना।

बक—पु०[स०√वक् (टेढ़ा होना),+अच्, पृपो०सिद्धि] १. बगला। २ एक प्राचीन ऋषि। ३. अगस्त्य नामक वृक्ष और उसका फूल। ४. कुबेर। ५. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ६. एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
वि० बगले की तरह सफेद।
स्त्री०[हिं० बकना] १ बकने की क्रिया या भाव। २ बकवाद।
क्रि० प्र०—लगाना।
पद—बक बक या बक झक=(क) बकवाद। प्रलाप। व्यर्थवाद। (ख) कहा-सुनी।
३. मुँह से निलकनेवाली बात। वचन।

बकचंदन—पु०[देश०] एक वृक्ष का नाम जिसकी पत्तियां गोल और बड़ी होती हैं। भकचंदन।

बक-चक—स्त्री०[अनु०] मध्य युग का एक प्रकार का हथियार।

बकचन—पु०=बक-चदन।
†स्त्री०=बकुचन।

बकचर—वि०[स० बक√चर् (गति)+ट] ढोंगी।

बकचा—पुं०=बकुचा।

बक-चिचिका—स्त्री०[स०] कौआ नाम की मछली।

बकची—स्त्री०=बकुची।

बकचुन—स्त्री०=बकुचन।

बकजित्—पु० [स० बक√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्, उप० स०] १. भीम। २ श्रीकृष्ण।

बकठाना—अ०[स० विकुठन] बहुत कसैली चीज खाने से जीभ का कुछ ऐंठना या सिकुड़ना।

बकतर—पु०[फा० बक्तर] [स्त्री० अल्पा० बकतरी] मध्य-युग मे युद्ध

के समय पहना जानेवाला एक तरह का अँगरखा जिसमें आगे और पीछे दो-दो तवे लगे रहते थे। चार-आईना। सन्नाह। (जिरह से भिन्न)

बकतर-पोश—पु० [फा० बक्तर+पोश] वह योद्धा जो बकतर पहने हो।

बकता†—पु०=वक्ता।

पु०=बखता।

बकतार†—पु०=वक्ता।

बकतिया—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

ब-कदर—क्रि० वि० [फा० ब+अ० कद्र] १. अमुक दर, मान या हिसाब से। २ अनुसार।

बक-ध्यान—पु० [स० ष० त०] कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए उसी प्रकार भोले-भाले या सीधे-सादे बनकर विचार करते रहना जिस प्रकार बगला जलाशयो मे से मछलियाँ पकडकर खाने के लिए चुपचाप खड़ा रहता है। बनावटी साधु-भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

बक-ध्यानी (निन्)—वि० [हिं० बकध्यान+इनि] बक-ध्यान लगानेवाला।

बकना—स० [सं० वचन] १. उटपटाँग या व्यर्थ की बहुत-सी बातें कहना। व्यर्थ बहुत बोलना।

पद—बकना-झकना=क्रोध मे आकर बिगडते हुए बहुत-सी खरी खोटी बातें कहना।

२ निरर्थक बातों या शब्दो का उच्चारण करना। प्रलाप करना। बटबडाना। ३. विवश होकर अपने अपराध या दोष के सम्बन्ध की सब बातें बतलाना।

बक-निषुदन—पु० [स० ष० त०] १. भीम। २. श्रीकृष्ण।

बक-पंचक—पु० [सं० ब० स०,+कप्] कार्तिक महीने मे शुक्लपक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन जिनमें मास, मछली आदि खाना बिलकुल मना है।

बकम—पुं०=बक्कम।

बकमौन—पु०[स० ष० त०]अपने दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त बगुले की भाँति मौन तथा शात बनकर चुपचाप रहने की क्रिया, भाव या मुद्रा। वि० जो उक्त उद्देश्य तथा प्रकार से बिलकुल चुप या मौन हो।

बक-यंत्र—पु०[स० उपमि० स०] वैद्यक मे औषधो का सार निकालने के लिए एक प्रकार का यत्र, जो काँच की शीशी के आकार का होता है।

बकर—पु०[अ० बकर] गाय या बैल।

बकर-ईद—स्त्री०=बकरीद।

बकर-कसाव—पु० [हिं० बकरी+अ० कस्साव=कसाई] [स्त्री० बकर-कसायिन] बकरो का मास बेचनेवाला पुरुष। कसाई।

बकरना—स०[हिं० बकार अथवा बकना] १. आप से आप बकना। बड़बडाना। २ अपने अपराध या दोष की बातें विवश होकर कहना।

बकरम—पु० [अ० बक्रम] गोद आदि लगाकर कड़ा किया हुआ वह करारा कपडा जो पहनने के कपडो के कालर, आस्तीन आदि मे कड़ाई लाने के लिए अन्दर लगाया जाता है।

बकरवाना—स०[हिं० बकरना का प्रेर०]किसी को बकरने मे प्रवृत्त करना।

बकरा—पुं० [सं० वर्कर] [स्त्री० बकरी] एक प्रसिद्ध नर पशु जिसके सींग तिकोने, गठीले और ऐंठनदार तथा पीठ की ओर झुके हुए होते हैं। पूँछ छोटी होती है और शरीर से एक प्रकार की गंध आती है। अज। छाग।

बकराना—स०=बकरवाना।

बकल†—पु०=बकला।

बकलस—पुं०=बकसुआ।

बकला—पु०[स० वल्कल] [स्त्री० अल्पा० बकली] १. पेड़ की छाल। २ फल के ऊपर का छिलका।

बकली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बड़ा और सुन्दर वृक्ष जिसे धावा, धव आदि भी कहते हैं।

बकवती—स्त्री० [स० बक+मतुप्, ङीप्+बकवती] एक प्राचीन नदी।

बकवाद—स्त्री० [हिं० बक+वाद] लंबी-चौड़ी, बेसिर-पैर की तथा बिना मतलब की कही जानेवाली बातें।

क्रि० प्र०—करना।

बकवादी—वि०[हिं० बकवाद+ई (प्रत्य०)] १. (व्यक्ति) जो बकवाद करता हो। २. बहुत अधिक बातें करने वाला। जो प्रकृतिश. प्राय. बातें करता रहता हो। ३. बकवाद सबधी या बकवाद के रूप मे होनेवाला।

बकवाना—स०[हिं० बकना का प्रे०] १. किसी को बकने या बकवाद करने मे प्रवृत्त करना। २ किसी से कोई बात कहलवा लेना। कहने मे विवश करना।

बकवास—स्त्री०[हिं० बकना+वास(प्रत्य०)] १. बकवाद। २. बकवाद या बक-बक करने की प्रवृत्ति या शौक।

क्रि० प्र०—लगना।

बकवासी—वि०=बकवादी।

बक-वृत्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] बको या बगलों (पक्षियो) की-सी वह वृत्ति जिसमे वह ऊपर से देखने पर तो बहुत भोला-भाला या सीधा-सादा बना रहता है, पर अन्दर ही अन्दर अनेक प्रकार के छल-कपट की बातें सोचता रहता है।

वि० [ष० त०] (व्यक्ति) जिसकी मनोवृत्ति उक्त प्रकार की हो। बक-ध्यानी।

बकव्रती (तिन्)—वि०[स० बक-व्रत, ष० त०,+इनि] बक वृत्तिवाला। कपटी।

बकस—पु० [अ० बाक्स]१. लकडी, लोहे आदि का बना हुआ एक तरह का ढक्कनदार चौकोर आधान जिसमे वस्त्र आदि सुरक्षा की दृष्टि से रखे जाते हैं। सदूक। २. गहने, घडियाँ आदि रखने का खाना।

बकसना—स० [फा० बख्श+हिं० ना(प्रत्य०)] १ उदारतापूर्वक किसी को कुछ दान देना। २. अपराधी या दोषी को दण्डित न करके उसे क्षमा करना। माफ करना। ३ दयापूर्वक छोड देना या जाने देना।

बकसवाना—स०=बखशवाना।

बकसा—पु०[देश०] जलाशयो के किनारे होनेवाली एक तरह की घास।

†पु०=बकस (संदूक)।

बकसाना—स० [हिं० 'बकसना' का प्रे० रूप] क्षमा या माफ कराना। बखशवाना।

बकसी† —पु०=बख्शी।

बकसीला—वि० [हिं० बकठाना] [स्त्री० बकसीली] जिसके खाने मे मुँह का स्वाद बिगड़ जाय और जीभ ऐंठने लगे। बकबका।

बकसीस—स्त्री० [फा० बख्शिश] १ दान। २ इनाम। पुरस्कार। ३ शुभ अवसरों पर गरीबो तथा सेवकों को दिया जानेवाला दान।

बकसुआ†—पु० [अ० बकल] पीतल, लोहे आदि का एक तरह का चौकोर छल्ला जिससे तस्मे, फीते आदि बाँधे जाते हैं।

बका—स्त्री० [अ० बका] १ नित्यता। २. अनश्वरता। ३ अस्तित्व मे बने रहना। ४. जीवन।

बकाइन†—पु०=बकायन (वृक्ष)।

बकाउ†—स्त्री०=बकावली।

बकाउर†—स्त्री०=बकावली।

बकाना—स० [हिं० बकना का प्रे० रूप] १ किसी को बकने मे प्रवृत्त करना। २. किसी को दबाकर उसके मन की छिपी हुई बात कहलाना।

बकायन—पु० [हिं० बडका+नीम?] नीम की जाति का एक पेड जिसकी पत्तियाँ नीम की पत्तियो के समान तथा कुछ बडी और दुर्गन्ध-युक्त होती हैं। महानिंब।

बकाया—वि० [अ० बकाय] बाकी बचा हुआ। अविशिष्ट। शेष।
पु० १. वह धन जो किसी की ओर निकल रहा हो। ऐसा धन जिसका भुगतान अभी होने को हो। २ बचा हुआ धन। बचत। ३ किसी काम या बात का वह अश जिसका अभी सपादन होना शेष हो।

बकारि—पु० [सं० बक-अरि, ष० त०] बकासुर के शत्रु अर्थात् श्रीकृष्ण।

बकारी—स्त्री० [सं० बकार या वाक्य] वह शब्द जो मुँह से प्रस्फुटित हो। मुँह से निकलनेवाला शब्द।
क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।
†स्त्री०=विकारी।

बकावर†—स्त्री०=बकावली।

बकावली—स्त्री० [सं० बक-आवली ष० त०] १. बगलो की पक्ति। बक-समूह। २. दे० 'गुल-बकावली' (पौधा और फूल)।

बकासुर—पु० [स० बक-असुर, मध्य० स०] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकिनवा†—पु०=बकायन (वृक्ष)।

बकिया—वि० [अ० बकिय.] बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट।

बकी—स्त्री० [स० बक+ङीष्] बकासुर की बहिन पूतना नामक राक्षसी।

बकुचन*—स्त्री० [?] १. हाथ जोडना। २ मुट्ठी या पजे मे पकडना।

बकुचना—अ० [स० विकुचन] सिमटना। सिकुडना। सकुचित होना।

बकुचा—पु० [हिं० बकुचना] [स्त्री० बकुची] १. छोटी गठरी। बकचा। २ ढेर। ३ गुच्छा। ४ जुडा हुआ हाथ।

बकुचाना—स० [हिं० बकुचा] किसी वस्तु को बकुचे मे बाँधकर कधे पर लटकाना या पीछे पीठ पर बाँधना।

बकुची—स्त्री० [स० वाकुची] एक प्रकार का पौधा जो हाथ सवा हाथ ऊँचा होता है। इसके कई अग ओषधि के काम मे आते हैं।
†स्त्री० हिं० 'बकुचा' (गठरी) का स्त्री० अल्पा०।

बकुचौहाँ—अव्य० [हिं० बकुचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बकुचौही] बकुचे की भाँति। बकुचे के समान।
वि० जो बकुचे या गठरी के रूप मे हो।

बकुर—पु० [स० भास्कर या भयंकर पृपो० सिद्धि] १ भास्कर सूर्य। २ बिजली। विद्युत। ३ तुरही।
†पु०=बक्कुर।

बकुरना—अ०=बकरना।

बकराना—स० [हिं० बकुरना का प्रे० रूप] अपराध या दोष कबूल कराना या मुँह से कहलाना।

बकुल—पु० [स०√वक्+उरच्, र—ल] १ मौलसिरी। २ शिव ३ एक प्राचीन देश।
वि० [स्त्री० बकुली]=वक्र (टेढा)।

बकुलटर—पु० [हिं० बकुला+टरर अनु०] पानी के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की चिडिया जिसका रंग सफेद होता है और जो दो-तीन हाथ ऊँची होती है।

बकुला†—पु०=बगला।

बकुली†—स्त्री० हिं० बक (बगला) की मादा। उदा०—बकुली तेहि जल हस कहावा।—जायसी।

बकूल—पु०=बकुल।

बकेन—स्त्री० [स० बष्कयणी] ऐसी गाय या भैंस, जिसे व्याये ५-६ महीने से ऊपर हो चुका हो, और जो बराबर दूध देती हो। दे० 'लवाई' का विपर्याय।

बकेना†—स्त्री०=बकेन।

बकेरुका—स्त्री० [स० बक (टेढा)+ड+एरुक्+कन्,+टाप्,.] १ छोटी बकी। २ हवा से झुकी हुई वृक्ष की शाखा।

बकेल—स्त्री० [हिं० बकला] पलाश की जड जिसे कूटकर रस्सी बनाते है।

बकैयाँ—स्त्री० [स० बक+ऐयाँ (प्रत्य०)] छोटे बच्चो का घुटनो के बल चलने की क्रिया।

बकोट—स्त्री० [स० प्रकोष्ठ वा अभिकोष्ठ, पा० पक्कोष्ठ] १. बकोटने की क्रिया या भाव। २ बकोटने के फल-स्वरूप पडा हुआ चिह्न। ३ बकोटने के लिए बनाई हुई उँगलियो और हथेली की मुद्रा। ४. किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी उक्त मुद्रा मे समाती हो। चगुल। जैसे—एक बकोट चना इसे दे दो।

बकोटना—स० [हिं० बकोट+ना (प्रत्य०)] १ नाखूनो से कोई चीज विशेषत शरीर की त्वचा या मास नोचना। २ लाक्षणिक रूप मे कोई चीज किसी से बलपूर्वक लेना या वसूल करना। उदा०—ये चदा बकोटनेवाले फिर जेल से बाहर आ गये।—वृन्दावनलाल वर्मा।

बकोटा—पु० [हिं० बकोटना] १ बकोटने की क्रिया या भाव। २. बकोटने से पडनेवाला चिह्न या निशान। ३ उतनी मात्रा जितनी चंगुल या मुट्ठी मे आ जाय।

बकोरी—स्त्री०=गुलबकावली।

बकौंड़ा—पु० [हिं० बक्कल] पलाश के पेड की जडो का कूटा हुआ वह रूप जिसे बटकर रस्सी बनाई जाती है।

†पु०=बकौरा।

बकौरा—पु० [हिं० बाँका] [स्त्री० अल्पा० बकौरी] वह टेढ़ी लकड़ी जो बैलगाड़ी के दोनों ओर पहिए के ऊपर लगाई जाती है। पैंजनी। पैंजनी।

†पु०=बकोड़ा।

बकौरी†—स्त्री०=गुल-बकावली। उदा०—कोइ बोल सिरि पुहुप बकौरी।—जायसी।

बकौल—अव्य० [अ० बकौल] (किसी के) कथनानुसार। जैसे—बकौले शख्से=किसी व्यक्ति के कथनानुसार।

बक्कम—पु० [अ० बक्कम] एक प्रकार का वृक्ष जो मद्रास, मध्यप्रदेश, तथा बर्मा में अधिक होता है। यह आकार में छोटा और कँटीला होता है। पतंग।

बक्कल—पु० [सं० वल्कल, पा० वक्कल] १ छिलका। २. छाल।

बक्का—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बक्की] धान की फसल में लगनेवाले एक तरह के सफेद या खाकी रंग के छोटे छोटे कीड़े।

बक्काल—पु० [अ० बक्काल] १ सब्जी बेचनेवाला व्यक्ति। कुंजड़ा। २ बनिया। वणिक्। ३. परचूनिया।

बक्की—वि० [हिं० बकना] बकवाद करनेवाला। बकवादी।

स्त्री० [देश०] गादों में पककर तैयार होनेवाला एक तरह का धान।

बक्कुर—पु० [सं० वाक्य] मुँह से निकला हुआ शब्द। बोल। वचन।

क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।

पु०=बक्कर।

बक्खर—पु० [देश०] १. कई प्रकार के पौधों की पत्तियों और जड़ों आदि को कूटकर तैयार किया हुआ वह खमीर जो दूसरे पदार्थों में खमीर उठाने के लिए डाला जाता है। २. वह स्थान जहाँ पर गाय-बैल बाँधे जाते हैं।

†पु०=बखार। (तृण)।

बक्षोज*—पु०=वक्षोज (स्तन)।

बक्स—पु०=बकस।

बखत—पु० १=वक्त (समय)। २ =बख्त (भाग्य)।

बखतर—पु०=बकतर।

बखता†—पुं० [?] भुना हुआ चना जिसका ऊपरी छिलका उतारा जा चुका हो।

बखर†—पु० [?] खेत जोतने के उपकरण।

पु०=बखार।

बखरा—पु० [फा० बखर.] १ भाग। हिस्सा। २. किसी चीज या चीजों का कई अंशों मे होनेवाला वह विभाजन जो अलग-अलग हिस्सेदारों को मिलता है।

पु०=बखार।

बखरी—स्त्री० [हिं० बखार का स्त्री अल्पा०] गाँव मे, वह मकान जो साधारण घरों की अपेक्षा बड़ा तथा बढ़िया हो।

बखरैत—वि० [हिं० बखरा+ऐत (प्रत्य०)] बखरा या हिस्सा बँटानेवाला। हिस्सेदार। साझीदार।

बखसना—अ०=बख्शना (क्षमा करना)।

बखसीस—स्त्री०=बख्सीस।

बखसीसना—स० [फा० बखशिश] बखशिश के रूप में देना। प्रदान करना।

बखान—पुं० [सं० व्याख्यान; फा० बखान] १. बखानने की क्रिया या भाव। २. बखान कर कही जानेवाली बात। ३. विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन। ४. तारीफ। प्रशंसा।

बखानना—स० [हिं० बखान+ना (प्रत्य०)] १. विस्तारपूर्वक कहना या वर्णन करना। २ तारीफ या प्रशंसा करना। ३. विस्तारपूर्वक तथा गालियाँ देते हुए किसी के दुर्गुणों, दोषों आदि का उल्लेख करना। ४. गालियाँ देते हुए किसी का उल्लेख करना। जैसे—किसी का बाप-दादा बखानना।

बखार—पु० [सं० आकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] १ दीवार या टट्टी आदि से घेरकर बनाया हुआ गोल और विस्तृत घेरा जिसमें गाँवों मे अन्न रखा जाता है। २. वह स्थान जहाँ किसी चीज की प्रचुरता हो।

बखारी—स्त्री० [हिं० बखार] छोटा बखार।

बखिया—पु० [फा० बखिय] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई, जिसमे दोहरे टाँके लगाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—उधड़ना।—उधेड़ना।—करना।

मुहा०—बखिया उधेड़ना=भेद खोलना। भंडा फोड़ना।

२. जमा। पूँजी। ३ योग्यता। ४. शक्ति। सामर्थ्य। ५ गति। पहुँच।

बखियाना—स० [हिं० बखिया] बखिया (सिलाई) करना।

बखीर—स्त्री० [हिं० खीर का अनु०] गन्ने के रस में चावल पकाकर बनाई जानेवाली एक तरह की खीर।

बखील—वि० [अ० बखील] [भाव० बखीली] कृपण। कंजूस। सूम।

बखीली—स्त्री० [अ० बखीली] कंजूसी। कृपणता।

बखूबी—अव्य० [फा०] १. खूबी के साथ। भली भाँति। अच्छी तरह से। २ पूरी तरह से या पूर्ण रूप से।

बखेड़ा—पु० [हिं० बिखरना] १. किसी चीज के इस प्रकार बिखरे हुए होने की स्थिति कि उसे इकट्ठा करने तथा सँवारने में अधिक परिश्रम तथा समय अपेक्षित हो। २ व्यर्थ का विस्तार। आडंबर। ३ कोई उलझनवाला और बहुत कठिन काम जिसे सरलता से सुलझाया और संपन्न न किया जा सकता हो। ४. कोई सासारिक क्रिया-कलाप। ५. झगड़ा। विवाद।

बखेड़िया—वि० [हिं० बखेड़ा+इया (प्रत्य०)] बखेड़ा करनेवाला। बखेड़ा अर्थात् विवाद करनेवाला। बहुत अधिक झगड़ालू।

बखेरना—स०=बिखेरना।

बखेरी—स्त्री० [देश०] छोटे कद का एक प्रकार का कँटीला वृक्ष जिसके फलों से चमड़ा रंगा तथा सिझाया जाता है। इसे कुती भी कहते हैं।

बखोरना†—स० [हिं० खोर=गली] सीधे रास्ते से छुड़ा या बहकाकर किसी और रास्ते पर ले जाना। बहकाकर इधर-उधर ले जाना। उदा०—साकरि खोरि बखोरि हमे किन खोरि लगाय खिसैबो करौं कोइ।—देव।

बख्त—पु० [फा० बख्त] किस्मत। भाग्य।

पद—बख्तो-जला=बहुत बड़ा अभागा।

पु०=वक्त (समय)।

बख्तर—पु०=वकतर।

बख्तावर—वि० [फा० वख्तावर] [भाव० वख्तावरी] १. सौभाग्यशाली। २. धनी। सम्पन्न।

बख्श—वि० [फा० वख्श] १. समस्त पदो के अन्त मे, देने या प्रदान करनेवाला। जैसे—जाँ-वख्श=जीवन देनेवाला। २ वख्शने अर्थात् क्षमा करनेवाला। जैसे—खता-वख्श=अपराध क्षमा करनेवाला। ३ नामो के अन्त मे वख्शिश, देन, प्रसाद। जैसे—करीम-वख्श, मौला-वख्श।

बख्शना—स० [फा० वख्श] १. प्रदान करना। देना। २. क्षमा करना। ३ दयापूर्वक छोड देना या जाने देना।

बख्शनामा—पु०=वख्शिशनामा।

बख्शवाना—स० [हिं० वख्शना का प्रे० रूप] किसी को कोई चीज वखसीस रूप मे देने अथवा किसी अपराधी को क्षमा करने मे प्रवृत्त करना।

बख्शाना—स०=वख्शवाना।

बख्शिश—स्त्री० [फा० वख्शिश] १. दानशीलता। २ दान। ३. इनाम। पुरस्कार। ४ क्षमा।

बख्शिशनामा—पु० [फा० वख्शिशनामः] वह पत्र जिसके अनुसार कोई सम्पत्ति वख्शी या प्रदान की गई हो। दान-पत्र।

बख्शी—पु० [फा०] १ मध्य-युग मे सैनिको को तनख्वाह बाँटनेवाला एक कर्मचारी। २ खजाची। ३ गाँव, देहातो में कर वसूल करनेवाला अधिकारी।

बख्शीश—स्त्री०=वख्शिश।

बग—पु०=वगला।

स्त्री० हिं० वाग (लगाम) का सक्षिप्त रूप। जैसे—वगछुट, वग-मेल।

बगई†—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तो पर वहुत वैठती है। कुकुरमाछी। २. पतली और लवी पत्तियोंवाली एक प्रकार की घास, जिससे डोरियाँ वटी जाती है।

बगछुट—वि० [हिं० वाग+छुटना] १ (घोड़ा) जिसकी वाग या लगाम छोड़ दी गई हो और इसी लिए जो वहुत तेजी से दौड़ा जा रहा हो।

अव्य० इस रूप मे दौडना या भागना कि मानो कोई नियंत्रण न रह गया हो। वे-तहाशा। सरपट।

बगट्टुट—वि०, अव्य०=वगछुट।

बगड़—पु० [?] वाड़ा। घेरा।

†पु०=वागड। (राज०)

†स्त्री०=वगल।

बगड़ा†—पु० [?] गौरैया (चिडिया)।

बगतर†—पु०=वकतर।

बगदना—अ० [स० विकृत, हिं० विगडना] १. विगडना। खराव होना। २ रास्ता भूलकर कही से कही चले जाना। भटकना। ३. कर्तव्य, सुमार्ग आदि से च्युत होना।

बगदर†—पु० [देश०] मच्छर।

बगदवाना—स० [हिं० वगदाना का प्रे० रूप] किसी को वगदाने में प्रवृत्त करना।

बगदहा†—वि० [हिं० वगदना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० वगदही] १ विगडनेवाला। २ (पशु) जो गुस्से मे आकर जल्दी विगड़ खड़ा होता हो। ३ लडनेवाला।

बगदाद—पु० [फा० वगदाद] इराक नामक राज्य की राजधानी।

बगदाना—स० [हिं० वगदना] १. नष्ट या वरवाद करना। २. भ्रम मे डालकर भटकाना। ३ गिराना। लुटकाना। ३ कर्तव्य, प्रतिज्ञा आदि से च्युत कराना।

बगना†—अ० [सं० वल्गन] १ घूमना-फिरना। २ गमन करना। जाना। ३. दौडना। ४ भागना।

बगनी†—स्त्री० [?] १ एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।

स्त्री०=वगई (घास)।

बगबगाना—अ० [अनु०] ऊँट का काम-वासना से मत्त होना।

बग-मेल—पु० [हिं० वाग+मेल] १ दूसरे के घोड़े के साथ वाग मिलाकर चलना। एक पक्ति मे या वरावर-वरावर चलना। २. घुड़सवारो की पक्ति या सतर। ३ यात्रा, युद्ध आदि मे होनेवाला संग-साथ। ४. वरावरी। समानता।

क्रि० वि० १ घोडो के सवारो के सवध मे, वाग मिलाये हुए और साथ साथ। २ वरावर साथ रहते हुए।

बगर—पु० [स० प्रघण, प्रा० पघण] १ महल। प्रासाद। २. घर। मकान। ३. कमरा। कोठरी। ४ आँगन। सहन। ५. गौए-भैंसे आदि वाँधने का स्थान।

†स्त्री०=वगल।

बगरना†—अ० [सं० विकिरण] फैलना। विखरना। छितराना।

बगरवाना—स० [हिं० वगराना का प्रे० रूप] किसी को कुछ वगराने अर्थात् विखेरने मे प्रवृत्त करना।

बगरा—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली जो जमीन पर उछलती हुई चलती है। इसे धुमा भी कहते हैं।

बगराना—स० [हिं० वगरना का स० रूप] विखेरना। छितराना।

अ० विखरना।

बगरिया†—स्त्री० [देश०] गुजरात राज्य के कच्छ-काठियावाड़ आदि प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की कपास।

बगरी†—पु० [हिं० वगर का स्त्री० रूप] १ छोटा महल। २. मकान। वखरी। ३. गौएँ, भैंसे आदि वाँधने का छोटा वाडा।

पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

बगल—स्त्री० [फा० वगल] १. वाहु-मूल के नीचे का गड्ढा। काँख।

पद—वगल-गंध। (देखें)

मुहा०—वगलें वजाना=वहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना।

विशेष—प्राय. लड़के वहुत प्रसन्न होने पर वगल मे हथेली रखकर उसे जोर से वाँह से दवाते हैं जिससे विलक्षण शब्द होता है। उसी के आधार पर यह मुहा० वना है।

२ छाती के दोनो किनारो का वह भाग जो वाँह गिराने पर उसके नीचे पडता है। पार्श्व।

पद—बगल-बंदी। (देखें)

मुहा०—(किसी की) बगल गरम करना=सहवास या संभोग करना। बगल में दावना या लेना=(क) कोई चीज उठाकर ले चलने के लिए उसे बगल में रखना तथा भुजा से अच्छी तरह दबाकर थामे रखना। जैसे—गठरी बगल में दबाकर चल पड़ना। (ख) अपने अधिकार में करना। उदा०—लै गो अनूप रूप-संपति बगल में दाबि उनिके अचान कुच कंचन पहार से।—देव। बगलें झाँकना=निरुत्तर या लज्जित होने पर यह समझने के लिए इधर-उधर देखना कि अब क्या करना या कहना चाहिए।

३ कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगरखे, कुरते आदि की आस्तीन में बगल के नीचे पड़नेवाले अंश में लगाया जाता है। ४ वह जो किसी की दाहिनी या बाईं ओर स्थित या प्रतिष्ठित हो। जैसे—(क) सभापति की बगल में अतिथि विराजमान थे। (ख) उनकी दूकान की बगल में पान की एक दूकान है। ५ समीप का स्थान। पास की जगह। जैसे—सड़क के बगल में ही एक नया मकान बना है।

पद—बगल में=(क) पास में। (ख) एक ओर। जैसे—बगल में हो जाओ।

बगल गंध—स्त्री० [हिं० बगल+गंध] १ बगल या काँख में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा। कँखवार। कँखौरी। २ एक प्रकार का रोग जिसमें बगल या काँख में से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगलगीर—वि० [अ० बगल+फा० गीर] [भाव० बगलगीरी] १. जो बगल या पास में स्थित हो। जिसे बगल में सटाकर बैठाया गया हो। पार्श्ववर्ती। २ जो गले मिला हो अथवा जिसे गले से लगाया गया हो। आलिंगित।

मुहा०—बगलगीर होना=आलिंगन करना।

बगलबंदी—स्त्री० [हिं० बगल+बंद] एक प्रकार की मिरजई जिसमें बगल में बन्द बाँधे जाते हैं।

बगला—पु० [हिं० बक+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] १ सारस की जाति का सफेद रंग का एक पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा और पूँछ बहुत छोटी होती है।

पद—बगला-भगत। (देखें)

२ रहस्य संप्रदाय में, मन।

पु० [हिं० बगल] थाली की बाढ़। अँवठ।

पु० [देश०] एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा।

बगला भगत—पु० [हिं०] वह जो देखने में बहुत धार्मिक तथा सीधा-सादा जान पड़ता हो, पर वास्तव में बहुत बड़ा कपटी या धूर्त्त हो।

बगलामुखी—स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार एक देवी। कहते हैं कि इसकी आराधना करने से शत्रु की वाणी कुंठित एवं शेष इंद्रियाँ स्तंभित हो जाती हैं।

बगलियाना—अ० [हिं० बगल+इयाना (प्रत्य०)] बात-चीत या सामना न करते हुए बगल से होकर निकल जाना। कतराकर निकल जाना।

स० १ बगल में करना या लाना। २ बगल में दबाना। ३ अलग करना या हटाना।

बगली—वि० [हिं० बगल+ई (प्रत्य०)] १ बगल से संबंध रखनेवाला। बगल का।

पद—बगली घूंसा। (देखें)

२. एक ओर का।

स्त्री० १ ऊँटों का एक दोष जिसमें चलते समय उनकी जाँघ की रग पेट से लगती है। २ मुगदर चलाने का एक ढंग। ३ वह थैली जिसमें दरजी सूई-तागा आदि रखते हैं। तिलेदानी। ४. अंगरखे की बगल में लगाई जानेवाली सेंध।

क्रि० प्र०—काटना।—मारना।

५ अँगरखे की आस्तीन में लगाया जानेवाला कपड़े का वह टुकड़ा जो बगल के नीचे पड़ता है। बगल।

स्त्री० [हिं० बगला] १ मादा बगला। २. बगले की जाति की एक छोटी चिड़िया जो ढीठ होने के कारण मनुष्यों के इतने पास आ जाती है कि लोग उसे 'अंधी बगली' भी कहते हैं।

बगली घूंसा—पु० [हिं०] १. वह घूंसा जो किसी की बगल में अथवा किसी की बगल में स्थित होकर लगाया जाय। २ वह वार जो आड़ में रहकर अथवा छिपकर किया जाय। ३ वह वार जो साथी बनकर या साथी होने का ढोंग रचकर किया जाय। ४ वह व्यक्ति जो धोखे से उक्त प्रकार का वार करता हो।

बगली टाँग—स्त्री० [हिं० बगली+टाँग] कुश्ती का एक पेंच।

बगली बाँह—स्त्री० [हिं० बगली+बाँह] एक प्रकार की कसरत जिसमें दो आदमी बराबर खड़े होकर अपनी बाँह से एक दूसरे की बाँह में धक्का देते हैं।

बगलेंदी—स्त्री० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

बगलौहाँ—वि० [हिं० बगल+औहाँ] [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना—स०=बख्शना। उदा०—होउ कृपाल हस्तिनी सग बगसी रुचि सुन्दर।—चंदबरदायी।

बगा—पु० [सं० बक] बगला।

†पु०=बागा (पहनने का)।

बगाना—स० [हिं० बगना] घुमाना-फिराना। सैर कराना।

†स० [सं० विकीरण] फैलाना। बिखेरना। उदा०—टूटि तार अगार बगावै।—सददास।

†स०=भगाना।

†अ०=भागना।

बगार†—पु० [देश०] गौओं के बांधने का स्थान। गो-शाला।

बगारना†—स० [सं० विकिरण, हिं० बगरना] १. फैलाना। २ छितराना। बिखेरना।

स०=बगराना। उदा०—सब देसनि मैं निज प्रभात निज प्रकृति बगारति—रत्नाकर।

बगावत—स्त्री० [अ० बगावत] १. आज्ञा, आदेश आदि की की जानेवाली स्पष्ट अवज्ञा। २ विद्रोह। सैनिक विद्रोह अथवा युद्धात्मक भावना से युक्त विद्रोह।

बगितारा†—पु० [सं० वक्तृ] १. जोर से की जानेवाली पुकार। २ बकबक। बकवाद।

बगिया—स्त्री० [हिं० बाग+इया] छोटा बाग विशेषत फुलवारी।

बगीचा—पुं० [फा० बागचः] [स्त्री० अल्पा० बगीची] १ छोटा बाग। २ फुलवारी।

बगुरदा—पुं० [?] पुरानी चाल का एक अस्त्र।

बगुलपतोख—पुं० [हिं० बगला+पतोख] एक प्रकार का जल-पक्षी।

बगुला—पुं० १ =बगला। २. =बगूला।

बगुली†—स्त्री०=बगली (चिड़िया)।

बगूरा†—पुं०=बगूला।

बगूला—पुं० [हिं० बाउ (वायु)+गोला] तेज हवा की वह अवस्था जिसमे वह घेरा बाँधकर चक्कर लगाती हुई तथा ऊपर उठती हुई आगे बढ़ती है। चक्रवात। बवंडर।

बगेड़ी†—स्त्री०=बगेरी (चिड़िया)।

बगेदना*—स० [हिं० बगदना] १. धक्का देकर गिरा या हटा देना। २ विचलित करना।

बगेरी—स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। बगीधा। भरुही।

बगैचा†—पुं०=बगीचा।

बगैर—अव्य० [अ० बग़ैर] न होने की दशा मे। बिना। जैसे—आपके बगैर काम नही चलेगा।

बगौधा†—पुं० [देश०] [स्त्री० बगौंधी] बगेरी (चिड़िया)।

बग्गा-गोटी—स्त्री० [?] लड़को का एक प्रकार का खेल। उदा०—तीनो बग्गा-गोटी खेला करेंगे।—वृन्दावनलाल वर्मा।

बग्गी†—स्त्री०=बग्घी।

बग्घी—स्त्री० [अं० बोगी] चार पहियों की पाटनदार गाड़ी जिसे एक या दो घोड़े खींचते है।

बघंबर†—पुं०=बाघंबर।

बघ—पुं० [हिं० बाघ] हिन्दी 'बाघ' का संक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरंभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बघ-छाला, बघ-नखा।

बघ-छाला—स्त्री० [हिं० बाघ+छाला] बाघ की खाल। बाघंबर।

बघनखा—पुं० [हिं० बाघ+नखा (नखोंवाला)] [स्त्री० अल्पा० बघनखी] १ बाघ के नख के आकार-प्रकार के प्राचीन अस्त्र। शेर-पंजा। २ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे चाँदी या सोने के मढ़ो मे बाघ के नाखून पड़े रहते है।

बघनहाँ*—पुं०=बघनखा।

बघनहियाँ†—स्त्री० दे० 'बघनखा'।

बघना†—पुं०=बघनहाँ।

बघबाव†—पुं० [हिं० बाघ+वायु] बाघ या शेर के शरीर की दुर्गंध।

बघरूरा—पुं० [हिं० वायु+गड़ूरा] बगूला। चक्रवात। बवंडर।

बघवार*—पुं० [हिं० बाघ+बाल] बाघ की मूँछ का बाल।

बघार—पुं० [हिं० बघारना] १ बघारने की क्रिया या भाव। २ वह मसाला जो बघारते समय घी मे डाला जाय। तड़का। छौंक।

क्रि० प्र०—देना।

३. बघारने से निकलनेवाली सोंधी गंध।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—निकलना।

४. पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए किसी विषय की की जानेवाली थोथी चर्चा। ५ शराब पीने के समय बीच-बीच मे तमाकू, बीड़ी आदि पीने की क्रिया। (व्यंग्य)

बघारना—स० [सं० व्याघारण] १ कलछी या चिमचे मे घी को आग पर तपाकर और उसमे हींग, जीरा आदि सुगंधित मसाले छोड़कर उसे तरकारी, दाल आदि की बटलोई मे उसका मुँह ढाककर छोड़ना जिससे वह सुगंधित हो जाय। तड़का देना या लगाना। छौंकना। २ अपनी योग्यता, शक्ति का बिना उपयुक्त अवसर के ही आवश्यक से अधिक या निरर्थक प्रदर्शन करना। जैसे—अँगरेजी या संस्कृत बघारना। ३ डींग या शेखी के संबंध मे, आतंक जमाने के लिए, बढ़ा-चढ़ाकर चर्चा करना। जैसे—शेखी बघारना।

बघूरा† —पुं०=बगूला।

बघेरा† —पुं० [हिं० बाघ] लकड़बग्घा।

बघेलखंड—पुं० [हिं० बघेल (जाति)+खंड] [वि० बघेलखंडी] आधुनिक मध्यप्रदेश के अन्तर्गत नागौद, रीवाँ, मैहर आदि भूभागों की सामूहिक संज्ञा।

बघेलखंडी—वि० [हिं० बघेलखंड] बघेलखण्ड का। बघेलखंड-संबंधी। पुं० बघेलखंड का रहनेवाला।

स्त्री० बघेलखंड की बोली। बघेली। (देखें)

बघेली—स्त्री० [हिं० बघेलखंड] बघेलखंड की बोली जो पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत मानी गई है और अवधी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है।

स्त्री० [हिं० बाघ+एली (प्रत्य०)] बरतन खरादनेवालों का वह खूँटा जिसका ऊपरी सिरा आगे की ओर कुछ बढ़ा होता है।

बघैरा† —पुं०=बगेरी (चिड़िया)।

बच—स्त्री० [सं० वचा] पर्वतीय प्रदेश के जलाशयो के तट पर होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके अंगों का उपयोग औषधो मे होता है।

†पुं० [सं० वचः] वचन। बात।

बचका† —पुं०=बजका (पकवान)।

बचकाना—वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बचकानी] १ बच्चों के पहनने या काम मे आनेवाला। जैसे—बचकानी टोपी। २ बच्चों की तरह छोटे आकार-प्रकार का। जैसे—बचकाना पेड़। ३. बच्चों के स्वभाव का। जैसे—बचकानी बुद्धि।

बचत—स्त्री० [हिं० बचना] १. बचे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—इस तरह करने से काम मे समय की बहुत बचत होती है। २ व्यय आदि के बाद बच रहनेवाली धन राशि। ३ लागत, व्यय आदि निकालने के बाद बचा हुआ धन। मुनाफा। लाभ। (सेविंग) ४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी प्रकार से होनेवाला छुटकारा या बचाव। जैसे—झूठ बोलने से तुम्हारी बचत नहीं हो सकेगी।

बचता† —पुं० [हिं० बचना] [स्त्री० बचती] देन चुकाने, उपयोग, व्यय आदि करने के उपरांत बचा हुआ धन।

बचन—पुं० [सं० वचन] १. मुँह से कही हुई बात। वचन। २. वाणी। ३. दृढ़ता, प्रतिज्ञा, शपथ आदि के रूप मे कही हुई ऐसी बात जिसमे कभी अन्तर न पड़े। प्रतिज्ञा। जैसे—हम तो अपने वचन से बँधे है।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—तोड़ना।—देना।—निभाना।—पालना।—लेना।

मुहा०—बचन देना = दृढ़ प्रतिज्ञापूर्वक यह कहना कि हम तुम्हारा अमुक काम अवश्य कर देंगे। (किसी से) बचन बँधाना = दृढ़ प्रतिज्ञा कराना।

उदा०—नन्द जसोदा वचन बँधायो, ता कारण देही धरि आयो।—सूर। **वचन माँगना**=किसी से यह प्रार्थना करना कि आपने जो वचन दिया था, उसका पालन करें। **वचन हारना**=प्रतिज्ञापूर्वक किसी से कही हुई बात या किसी को दिए हुए वचन का पालन करने के लिए विवश होना।

४ किसी से निवेदन या प्रार्थनापूर्वक कही जानेवाली बात।

मुहा०—(किसी के आगे) वचन डालना=किसी काम या बात के लिए प्रार्थना या याचना करना।

वचन-विदग्धा—स्त्री०=वचन-विदग्धा।

वचना—अ० [सं० वचन=न पाना] १ उपयोग, कार्य, व्यय आदि हो चुकने के बाद भी कुछ अंश, पास या शेष रह जाना। अवशिष्ट होना। जैसे—(क) दस रुपयों में से तीन रुपए बचे हैं। (ख) दो कुरते बन जाने पर भी गज भर कपड़ा बचेगा। २ बंधन, विपद्, संकट आदि में किसी प्रकार अलग या दूर या सुरक्षित रहना। जैसे—वह गिरने से बाल बाल बच गया। ३ किसी कार्य में संलग्न न होना अथवा दूसरों द्वारा किए जानेवाले कार्यों के परिणाम, प्रतिक्रिया, प्रभाव आदि से अछूता रहना। जैसे—(क) किसी के आक्षेप से बचना। (ख) झूठ बोलने से बचना। ४ किसी का सामना करने या किसी के सम्पर्क में आने से घबराना या सकोच करना और सहसा उसका सामना न करना या उसके सम्पर्क में न आना। जैसे—वह तगादा करनेवालों से बचता फिरता है। ५. किसी गिनती, वर्ग, समाज आदि के अन्तर्गत न आना या न होना। छूट या रह जाना। जैसे—इनके व्यंग्य-बाणों से कोई बचा नहीं है।

†स० [सं० वचन] कथन करना। कहना।

वचपन—पु० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १ 'बच्चा' (अल्प-वयस्क) होने की अवस्था या भाव। २ बाल्यावस्था। लडकपन। ३ बालकों की तरह किया जानेवाला सयानों द्वारा कोई कार्य। बच-पना।

वचपना—पु० [हिं० बचपन] १ बचपन। २ सयाने व्यक्तियों द्वारा किया जानेवाला कोई ऐसा अशोभनीय कार्य जो उनकी बुद्धि की अपरि-पक्वता का सूचक होता है।

वचवा†—पु० [हिं० बच्चा] १ बालक। बच्चा। २. हाथ में पह-नने की अँगूठी में लगे हुए छोटे घुँघरू। उदा०—उँगली तेरी छल्ला सोहे, बचवे की बहार। (झूमर)

वचवैया—वि० [हिं० बचाना+वैया (प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।

वचा—पु० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ, हिं० बच्चा] [स्त्री० बच्ची] १. लड़का। बालक। २ एक प्रकार का तुच्छतासूचक सबोधन। जैसे—बच्चा बचा, तुमसे भी किसी दिन समझ लूँगा।

वचाना—स० [हिं० बचना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई बचे। २ उपयोग, व्यय आदि के उपरांत भी कुछ अव-शिष्ट रखना। जैसे—वह दो-चार रुपए रोज बचा लेता है। ३ किसी प्रकार के कष्ट, बंधन, संकट आदि से किसी प्रकार अलग करके मुक्त या सुरक्षित करना। जैसे—जुरमाने, रोग या सजा से बचाना। ४ दुष्कर्म, दूषित प्रभाव आदि से अलग और सुरक्षित रखना। जैसे—किसी को कुमार्ग में पड़ने से बचाना। ५. आघात, आक्रमण आदि से सुरक्षा करना। ६ सामना न होने देना या सपर्क में न आने देना। जैसे—(क) किसी से आँख बचाना। (ख) किसी का सामना बचाना।

वचाव—पु० [हिं० बचना] १ कष्ट, सकट आदि से बचे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—इस पेड़ के नीचे धूप (या वर्षा) से बचाव रहेगा २. त्राण। रक्षा। २. कष्ट, सकट आदि से बचने के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। †३ बचत।

वचिया—स्त्री० [हिं० बच्चा=छोटा] कसीदे के काम में छोटी-छोटी बूटियाँ।

बचुआ—पु० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पु०=बच्चा।

बचूना—पु० [हिं० बच्चा] भालू का बच्चा। (कलंदर)

बचो—पुं० [देश०] एक तरह की लता।

बच्चा—पु० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ से फा० बच्च.] [स्त्री० बच्ची]
१. किसी प्राणी का नवजात शिशु। जैसे—कुत्ते या बिल्ली का बच्चा, आदमी का बच्चा। २. मनुष्य जाति का कम अवस्थावाला प्राणी। बालक।

पद—बच्चे-कच्चे=छोटे छोटे बच्चे। बाल-बच्चे।

मुहा०—बच्चा देना=गर्भ से सतान उत्पन्न करना। प्रसव करना।

पद—बच्चों का खेल=बहुत ही तुच्छ, सहज या साधारण काम।

वि० १ कम उमरवाला। २. नादान। ३ अनुभवहीन।

बच्चाकश—वि० [फा०] बहुत बच्चे जननेवाली (स्त्री)। (विनोद)

बच्चादान—पु० [फा०] गर्भाशय।

बच्ची—स्त्री० [हिं० बच्चा का स्त्री० रूप] १ छोटी लडकी। २. वह छोटी घोडिया जो छत या छाजन में बड़ी घोडिया के नीचे लगाई जाती है। ३. वे बाल जो होठ के नीचे बीच में जमते है। ४ दे० 'बचिया'।

बच्चेदानी—स्त्री०=बच्चादान (गर्भाशय)।

बच्छ—पु० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] १ बच्चा। २ बेटा। ३ बछड़ा।

बच्छनाग†—पु०=बछनाग।

बच्छल—वि०=वत्सल।

बच्छस—पु० [सं० वक्षस्] वक्षस्थल। छाती।

बच्छा—पु० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] [स्त्री० बछिया] १ गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा। २. किसी पशु का बच्चा। (क्व०)

बछ—पु० [सं० वत्स; प्रा० वच्छ] गाय का बच्चा। बछड़ा।

†स्त्री०=बच (ओषधि)।

बछड़ा—पु० [हिं० बच्छ+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।

बछनाग—पु० [सं० वत्सनाग] एक स्थावर विष। (एकोनाइट)

बछरा†—पु०=बछड़ा।

बछरू†—पु०=बछड़ा (गाय का बच्चा)।

बछल†—वि०=वत्सल।

बछवा—पु० [हिं० बच्छ] [स्त्री० बछिया] गाय का बच्चा। बछड़ा।

बछा†—पु०=बच्छा।

बछिया—स्त्री० [हिं० वछा] गाय का मादा वच्चा।
पद—बछिया का ताऊ या वावा=(वैल की तरह) निर्वुद्धि या मूर्ख।
बछेड़ा—पु० [स० वत्स, प्रा० वच्छ; पु० हिं० वच्छ] [स्त्री० वछेडी] घोडे का वच्चा।
बछेरा†—पु०=वछेडा।
बछेरू†—पु०=वछडा।
बछौटा—पु० [हिं० वाछ+औटा (प्रत्य०)] वह चदा जो हिस्से के मुताविक लगाया या लिया जाय।
बजंत्री—पु० [हिं० वाजा] १ वाजा वजानेवाला। वजनियाँ। २ वाजे वजानेवालो की मण्डली। ३ मुसलमानी राज्य-काल मे वाजा वजानेवालो से लिया जानेवाला एक तरह का कर।
बजकद—पु० [सं० वज्रकद] एक प्रकार की जगली लता।
बजकना—अ० [अनु०] तरल पदार्थ का सडकर या वहुत गदा होकर वुलवुले फेंकना। वजवजाना।
बजका—पु० [हिं० वजकना] १ वेसन आदि की वे पकौडियाँ जो दही मे डाली जाने से पहले पानी मे फुलाई जाती हैं। २ दे० 'वचका'।
बजगारी—स्त्री० [स० वज्र] वज्रपात। उदा०—देऊ जवाव होई वजगारी।—कवीर।
†वि० दे० 'वज-मारा'।
बजट—पुं० [अं०] १. आय-व्यय का मासिक या वार्षिक लेखा। २ आय-व्यय पत्रक।
बजड़ना—स० १. टकराना। २ कही जाकर पहुँचना।
बजड़ा—पु०=वजरा।
बजनक—पु० [?] पिस्ते का फूल जिससे रेशम का सूत रँगा जाता है।
बजना—अ० [हिं० वाजा] १ किसी चीज पर आघात किये जाने पर ऊँची ध्वनि निकलना। जैसे—(क) घटा वजना। (ख) तवला या मृदग वजना। २ ऐसा आघात लगना जिससे किसी प्रकार का उच्च शव्द उत्पन्न हो। जैसे—किसी के सिर पर डडा वजना। ३ अस्त्र-शस्त्र आदि का शव्द करते हुए प्रहार होना। जैसे—लाठी वजना। ४ ऐसी लडाई या झगडा होना जिसमे मार-पीट भी हो। ५. हठ करना। जिद करना। अडना। ६ किसी नाम से ख्यात या प्रसिद्ध होना।
†वि० वजनेवाला। जो वजता हो।
पु० १ चाँदी का रुपया जो ठनकाने या पटकने से वजता अर्थात शव्द करता है। (दलाल) २ दे० 'वाजा'।
बजनियाँ—पु० [हिं० वजना+इया (प्रत्य०)] वह जो वाजा वजाने का व्यवसाय करता हो। वह जिसका पेशा वाजा वजाना हो। (प्राय व्याह-शादी आदि के अवसरो पर वाजे वजानेवालो के लिए प्रयुक्त)
बजनिहाँ—पु०=वजनियाँ।
बजनी—स्त्री० [हिं० वजाना] ऐसी लडाई या झगडा जिसमे उठा-पटक या मार-पीट भी हो।
वि० वजने या वजाया जानेवाला। वजनूँ।
बजनूँ—वि० [हिं० वजाना] वजने या वजाया जानेवाला। जो वजता या वजाया जाता हो।

बजबजाना—अ० [अनु०] १ उमस, गरमी आदि के कारण किसी जलीय या तरल पदार्थ मे खमीर उठने पर अथवा उसके सडने पर उसमे से वुलवुले निकलना। जैसे—कटहल या भात वजवजाना। २ इस प्रकार वुलवुले निकलने से पदार्थ का दूषित होना।
बजमारा—वि० [स० वज्र+हिं० मारा] [स्त्री० वजमारी] १. वज्र से आहत। जिस पर वज्र पड़ा हो। २ वहुत वडा अभागा।
बजरग—वि० [स० वज्र+अग] १ वज्र के समान कठोर अगोवाला। २ परम शक्तिशाली और हृष्ट-पुष्ट।
पु० हनुमान।
बजरंगबली—पु० [हिं० वजरग+वली] हनुमान्। महावीर।
बजरंगी बैठक—स्त्री० [हिं० वजरग+वैठक] एक प्रकार की वैठक जिससे शरीर वहुत अधिक पुष्ट होता है।
बजर—वि० [स० वज्र] १ वहुत मजवूत। दृढ या पक्का। उदा०—किसू सफीला भुरज की, काहू वजर कपाट।—वाकीदास। २ कठोर।
पु०=वज्र।
बजरबट्टू—पु० [हिं० वजर+वट्टा] १. एक प्रकार के वृक्ष के फल का दाना या वीज जो काले रग का होता है और जिसकी माला नजर आदि की वाधा से वचाने के लिए लोग वच्चो को पहनाते हैं। २ व्यापक अर्थ मे कोई ऐसी चीज जो किसी प्रकार का अपशकुन तथा दूषित प्रभाव रोकती है। ३ एक प्रकार का खिलौना।
बजरबोंग—पु० [हिं० वजर+वोग(अनु०)] १. एक प्रकार का धान जो अगहन मास मे पकता है। २ वडा भारी या मोटा डडा।
बजर-हड्डी—स्त्री० [हिं० वजर+हड्डी] घोडो के पैरो मे गाँठें पडने का एक रोग।
बजरा—पु० [स० वज्रा] वह वडी नाव जो कमरे के समान खिडकियो तथा पक्की छतवाली होती है।
†पु०=वाजरा।
बजरागि—स्त्री०=वज्राग्नि (विजली)।
बजरिया—स्त्री० [हिं० वाजार+इया (प्रत्य०)] छोटा वाजार।
बजरी—स्त्री० [स० वज्र] १. पत्थर को तोडकर वनाये जानेवाले वे छोटे छोटे टुकडे जो फरश, सडक आदि वनाने के काम आते हैं। २. आकाश से गिरनेवाला पत्थर। ओला। ३ वह छोटा नुमायशी कँगूरा जो किले आदि की दीवारो के ऊपरी भाग मे वरावर थोडे-थोडे अतर पर वनाया जाता है और जिसकी वगल मे गोलियाँ चलाने के लिए कुछ अवकाश रहता है।
† स्त्री०[हिं० वाजरा] वह वाजरा जिसके दाने वहुत छोटे-छोटे हो।
बजवाई—स्त्री० [हिं० वजवाना+ई (प्रत्य०)] १. वाजा वजवाने का कार्य या भाव। २ वह मजदूरी जो किसी से वाजा वजवाने के फल स्वरूप उसे दी जाती है।
बजवाना—स० [हिं० वजाना का प्रे०] [भाव० वजवाई] किसी को कुछ वजाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—वाजा वजवाना।
बजवैया—वि० [हिं० वजाना+वैया (प्रत्य०)] वजानेवाला। जो वजाता हो।
बजा—वि० [फा० वजा] १ जो अपने उचित, उपयुक्त या ठीक स्थान पर हो। २ उचित। वाजिव।

३. सिल पर चीजे पीसने का बट्टा। ४ बाट। मार्ग। रास्ता। ५ चीजों को तौलने का बटखरा। बाट। ६ बडा नाम का पकवान।
पु० [हिं० बटना=बल डालना] १ बटे हुए होने की अवस्था या भाव। २. रस्सी आदि के वह ऐंठन जो उसे बटने से पडती है। बल।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।
३ पेट मे होनेवाली ऐंठन या पडनेवाली मरोड।
पु० हिं० बाट का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बट-खरा, बट-मार।
पु० [हिं० बँटना] बँटने पर मिलनेवाला अश। बाँट। हिस्सा। उदा०—लाज अजाद मिली औरन कौ मृदु मुसुकानि मेरे बट आई।—नारायण स्वामी।

बटई†—स्त्री० =बटेर। उदा०—तीतर बटई लवा न बाँचे।—जायसी।

बटकना—अ०=बचना। (बुन्देल०) उदा०—ईसुर कान बटकने नइयाँ देख लेव यह ज्वानो।—लोकगीत।

बटखर—पु०=बटखरा।

बटखरा—पु० [स० वटक] धातु, पत्थर आदि का किसी नियत तौल का टुकडा जिससे अन्य पदार्थ तराजू पर तौले जाते है।

बट-छीर*—पु० [स० वट+हिं० छीर] वट वृक्ष की वह छाल जो पहनने के काम आती थी। उदा०—होत प्रात बट-छीर मँगावा।—तुलसी।

बटन—स्त्री० [हिं० बटना] १. रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव। २ बटने के कारण रस्सी आदि मे पडी हुई ऐंठन। बल।
पु० [अ०] १ धातु, सीग, सीप आदि की बनी हुई चिपटे आकार की कडी गोल घुडी, जो कोट, कुरते अगरखे आदि मे टाँकी जाती है और जिसे काज नामक छेद मे फँसा देने से खुली जगह बद हो जाती है और कपडा पूरी तरह से बदन को ढक लेता है। बुताम। २ उक्त आकार-प्रकार की वह घुडी जिसे उठाने, दबाने, हिलाने आदि से कोई यात्रिक क्रिया आरभ या बद होती है। जैसे—बिजली का बटन।
क्रि० प्र० —दबाना।
३ बादले का एक प्रकार का तार।

बटना—स० [स० वट्=बटना] कई ततुओ, तागो या तारो को एक साथ मिलाकर इस प्रकार मरोडना कि वे सब मिलकर एक हो जायँ। ऐंठन देकर मिलाना। जैसे—डोरी, तागा या रस्सी बटना।
पु० रस्सी आदि बटने का कोई उपकरण या यन्त्र।
†स० बाटना (बट्टे से पीसना)।
पु० [स० उद्वर्त्तन, आ० उव्वाट्टन] सिल पर पीसी हुई सरसो, चिरौजी, आदि का लेप जो शरीर की मैल छुडाने के लिए मला जाता है। उबटन।

बटपरा—पु०=बटपार।

बटपार—पु० [स्त्री० बटपारिन] दे० 'बट-मार'।

बट-पारी—स्त्री० दे० 'बट-मारी'।
†पु०=बट-पार (बट-मार)।

बटम—पु० [?] पत्थर गढनेवालो का एक औजार जिससे वे कोना नापकर ठीक करते है। कोनिया।
†पु०=बटन।

बटम-पाम—पुं० [बटम+अ० पाम=ताड] बगाल मे होनेवाला एक प्रकार का ऊँचा पेड।

बट-मार—पु० [हिं० बाट+मारना] पथिको या यात्रियो को मार्ग मे मारकर धन, सपत्ति छीन लेनेवाला लुटेरा।

बट-मारी—स्त्री० [हिं० बटमार] बटमार का काम या भाव।

बटला—पु० [स० वर्तुल, प्रा० वट्टल] [स्त्री० अल्पा० बटली] चावल, दाल आदि पकाने का चौडे मुँह का गोल बरतन। बडी बटलोई। देग। देगचा। बटुआ।

बटली—स्त्री०=बटलोई।

बटलोई—स्त्री० [हिं० बटला] छोटा बटला। बटली। देगची।

बटवाँ—वि० [हिं० बाटना=पीसना] सिल पर पीसा या पिसा हुआ।
उदा०—कटवाँ बटवाँ मिला सुबासू।—जायसी।
वि० [हिं० बटना=बल डालना] बटा हुआ।

बटवा—पु०=बटुआ।
†पु०=बटला।

बटवाई—स्त्री० [हिं० बटवाना+आई (प्रत्य०)] बटवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बटवाना—स० [हिं० बाटना का प्रे०] बाटने या पीसने का काम किसी से करवाना।
†स०=बँटवाना।

बटवार—पु० [हिं० बाट] १ रास्ते पर पहरा देनेवाला व्यक्ति। पहरेदार। २ रास्ते पर खडा होकर वहाँ का कर उगाहनेवाले कर्मचारी।

बटवारा—पु०=बँटवारा।

बटा—पु० [स० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटिया] १ कोई गोलाकार चीज। गोला। २ कदुक। गेंद। ३ पत्थर का टुकडा। ढोका। ४ सिल पर चीजे पीसने का बट्टा।
पु० [हिं० बाट] बटोही।
पु० १ गणित मे एक प्रकार का चिह्न जो छोटी किंतु सीधी क्षैतिज रेखा के रूप मे (–) होता है और जो किसी पूरी इकाई का भिन्न अर्थात् अश या खड सूचित करता है। जैसे—$\frac{3}{4}$ (तीन बटा चार) मे ३ और ४ के बीच की पाई बटा कहलाती है। २ गणित मे भिन्न, अर्थात् पूरी इकाई के तुलनात्मक अश या खड का वाचक शब्द। जैसे—दो बटा (या बटे) तीन का अर्थ होगा—पूरी इकाई के तीन भागो मे से दो भाग।

बटाई—स्त्री० [हिं० बटना] बटने या ऐंठन डालने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
†स्त्री०=बँटाई।

बटाऊ—पु० [हिं० बाट=रास्ता+आऊ (प्रत्य०)] १ बाट अर्थात् राह पर चलता हुआ व्यक्ति। राही। २ अनजान। अपरिचित या राह-चलता नया आया हुआ व्यक्ति।
मुहा०—**बटाऊ होना**=चलता होना। चल देना।
पु० [हिं० बाँटना] १ बँटवाने या विभाग करानेवाला। २. अपना अश या प्राप्य बँटवा या अलग कराकर लेनेवाला।

वटाक—वि० [हिं० बड़ा ?] १ बड़ा। २ ऊँचा। ३ विशाल।
वटाटा—पु० [अ० पोटैटो] आलू (कद)।
वटाना—स० [हिं० वटना का प्रे०] वटने या बाटने का काम किसी और से कराना।
† अ० पटाना (बन्द होना)।
वटालियन—पु० [अ०] पैदल सेना का एक बड़ा विभाग।
वटाली—स्त्री० [लश०] बढइयो का एक औजार। रुखानी। (लश०)
वटिका—स्त्री०=वटिका।
वटिया—स्त्री० [हिं० वटा=गोला] १ गोली। वटी। २. सिल पर पीसने का छोटा बट्टा। लोढिया।
†स्त्री०=बँटाई (खेतो की उपज की)।
वटी—स्त्री० [स० वटी] १ किसी चीज की बनाई हुई छोटी गोली। वटी। २ पीठी की बड़ी या बरी।
स्त्री०=वाटिका।
वटु—पु०=वटु (ब्रह्मचारी)।
वटुआ—पु० [स० वटक या हिं० वटना] [स्त्री० अल्पा० बटुई] १ कपडे, चमडे आदि का खाने तथा ढक्कनदार एक उठौआ छोटा आधान जिसमे रुपये पैसे, आदि रखे जाते है।
वटुई—स्त्री०=बटलोई।
वटुक—पु०=वटुक (ब्रह्मचारी)।
पु० [?] लवग।
वटुरना—अ० [हिं० वटोरना का अ०] १ इकट्ठा या एकत्र होना। २ सिमटना। ४ वटोरा जाना।
सयो० क्रि०—जाना।
वटुरी—स्त्री० [देश०] खेसारी या मोठ नाम का कदन्न।
स्त्री० =वटलोई।
वटुला—पु० [स्त्री० अल्पा० बटुली]=वटला।
वटुवा—पु०=बटुआ।
†पु०=वटला।
वटे—पु०=बटा (गणित का)।
वटेर—स्त्री० [स० वर्त्तिर] तीतर की तरह की एक छोटी चिडिया जो अधिक उड नही सकती। इसका मास खाया जाता है। कुछ शौकीन लोग वटेरो को आपस मे लडाते भी है।
वटेरवाज—पु० [हिं० वटेर+फा० बाज] [भाव० वटेरवाजी] वटेर पकडने, पालने या लड़ानेवाला व्यक्ति।
वटेरवाजी—स्त्री० [हिं० वटेर+फा० वाजी] वटेर पकडने, पालने या लड़ाने का काम या शौक।
वटेरा—पु० [हिं० वटा] कटोरा।
† पु०=नर वटेर।
वटेरी—स्त्री० [हिं० बाँटना] हिन्दुओ मे विवाह के समय की एक रस्म जिसमे कन्या-पक्षवाले वर-पक्षवालो को आभूषण, धन, वस्त्र, आदि देते है।
वटोई—पु०=वटोही।
स्त्री०=वटलोई।
वटोर—पु० [हिं० वटोरना] १ वटोरने की क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से बहुत से आदमियो को इकट्ठा करना। जैसे—विरादरी के लोगो की अथवा पचायत की वटोर। ३ चीजें वटोर कर उनका लगाया हुआ ढेर। ४. कूडे-करकट का ढेर। (कहार)
वटोरन—स्त्री० [हिं० वटोरना] १ वटोरने की क्रिया या भाव। २ वह जो कुछ वटोर कर रखा गया या हुआ हो। ३ कमरे, घर, आदि के झाडे-बुहारे जाने पर निकलनेवाला कूडा जो प्राय. एक स्थान पर इकट्ठा कर लिया जाता है। ४ खेत मे पडे हुए अन्न के दाने जो वटोर कर इकट्ठे किये जायँ।
वटोरना—स० [हिं० वटुरना] १ छितरी या विखरी हुई वस्तुओ को उठा या खिसकाकर एक जगह करना। जैसे—(क) गिरे हुए पैसे वटोरना। (ख) कूडा वटोरना।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
२ इकट्ठा करना, जोडना या जमा करना। जैसे—धन वटोरना।
३. फैलाई या फैली हुई चीज समेटना। जैसे—चादर या पैर वटोरना।
४. चुनना।
वटोही—पु० [हिं० वाट] वाट अर्थात् रास्ते पर चलनेवाला या चलता हुआ यात्री। राही। पथिक। मुसाफिर।
वट्ट—पु० [हिं० वटक] १ वटा। गोला। २. कन्दुक। गेंद। ३. वटखरा। वाट।
पु० [हिं० वटना] १. कोई चीज वटने से पडा हुआ वल। वट। २. शिकन। सिलवट।
† पु०=वाट (रास्ता)।
वट्टन—पु० [हिं० वटना] वादले से भी पतला एक प्रकार का तार।
वट्टा—पु० [स० वटक, हिं० वटा=गोला] [स्त्री० अल्पा० वट्टी, वटिया] १. पत्थर का वह गोल टुकडा जो सिल पर कोई चीज कूटने या पीसने के काम मे आता है। कूटने या पीसने का पत्थर। लोढा। २ पत्थर आदि का कोई गोल-मटोल टुकडा। ढेला। ३ छोटा गोल डिब्बा। जैसे—गहने या पान के वीडे रखने का वट्टा। ४. छोटा गोलाकार दर्पण। ५ वह कटोरा या प्याला जिसे औंधा रखकर बाजीगर उसमे किसी वस्तु का आना या निकल जाना दिखलाते है।
पद—वट्टेवाज। (देखें)
६ एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।
पु० [स० वर्त्ति, प्रा० वाट्ट=वनिये का व्यवसाय] १ किसी चीज के पूरे दाम मे होनेवाली वह कमी जो उस चीज मे कोई खोट, त्रुटि, दोष या मिलावट होने के कारण की जाती है।
पद—वट्टे से=त्रुटि, दोष मिलावट आदि के कारण किसी चीज की अंकित, नियत या प्रसम दर की अपेक्षा कुछ कम मूल्य पर। जैसे—जिस गहने मे टाँके अधिक होते हैं, वह पूरे दाम पर नही, वल्कि वट्टे से विकता है।
क्रि० प्र०—काटना।—देना।—लगाना।
२ सिक्के आदि तुडाने या वदलवाने मे होनेवाली मूल्य की कमी। भाँज। जैसे—सौ रुपए का नोट भुनाने मे दो आना वट्टा लगता है।
क्रि० प्र०—लगना।
पद—व्याज-वट्टा। (देखें)

३. उक्त दृष्टि या विचार से होनेवाला घाटा या टोटा। जैसे—वह थान अन्दर से कटा हुआ निकला था, इसलिए दूकानदार को एक रुपया बट्टा सहना पडा।
क्रि० प्र०—सहना।
पद—बट्टा-खाता। (देखे)
४ दस्तूरी, दलाली आदि के रूप मे दिया जानेवाला धन। ५ किसी चीज या बात मे होनेवाला ऐब, कलक या दोष। दाग। जैसे—तुम्हारा यह आचरण तुम्हारी प्रतिष्ठा मे बट्टा लगानेवाला है।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

बट्टा-खाता—पु० [हिं० बट्टा+खाता] महाजनो के यहाँ वह बही या लेखा जिसमे डूबी हुई अथवा न वसूल हो सकनेवाली रकमे लिखी जाती है।
मुहा०—**बट्टे खाते लिखना**=न प्राप्त हो सकनेवाली रकम डूबी हुई रकमो के खाते मे चढाना।

बट्टाढाल—वि० [हिं० बट्टा+ढालना] इतना चौरस और चिकना कि उस पर कोई गोला लुढकाया जाय तो लुढकता जाय। खूब समतल और चिकना।
पु० उक्त प्रकार का चिकना और चौरस समतल स्थान।

बट्टाबाज—वि०, पु०=बट्टेबाज।

बट्टी—स्त्री० [हिं० बट्टा] १ पत्थर आदि का छोटा टुकडा। २ सिल पर चीजें पीसने का छोटा बट्टा। ३ किसी चीज का प्राय गोलाकार खड। टिकिया। जैसे —साबुन की बट्टी।

बट्टू—पु० [देश०] १ धारीदार चारखाना। २ दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का ताड। बजरबट्टू। ताली। ३ बोडा या लोबिया नाम की फली। ४ लोहे का वह गोला जिसे नट लोग उछालते, गायब करते और फिर निकालकर दिखलाते है। बट्टा। उदा०—जिहि बिधि नट के बट्टू।—नागरी दास।

बट्टे-खाते—वि० [हिं०] (रकम) जो डूब गई हो या वसूल न हो सकती हो।
क्रि० प्र०—डालना।—लिखना।

बट्टेबाज—पु० [हिं० बट्टा+फा० बाज] १ नजर-बद का खेल करनेवाला जादूगर। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त।
वि० दुश्चरित्रा (स्त्री)। पुश्चली।

बठिया—स्त्री० [देश०] पाथे हुए सूखे कडो का ढेर। उपलो का ढेर।

बड़गा—पु० [हिं० बडा+अग+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बडगी] दीवारो पर लबाई के बल बीचो-बीच रखा जानेवाला बल्ला जिस पर छाजन टिकी होती है।

बडगी—पु० [हिं० बडा+अग] घोडा। (डिं०)

बड़गू—पु० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का जगली पेड।

बड़—स्त्री० [अनु० बड बड] १ बडबडाने या मुँह से बड बड शब्द उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। ३ निरर्थक या व्यर्थ की बातें। प्रलाप। जैसे—पागलो की बड। ३ डीग। शेखी।
क्रि० प्र०—मारना।—हाँकना।
पु० [स० वट] बड का पेड़। वट वृक्ष।
वि० १ हिं० 'बडा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बड-बोला, बड-भागी। २. उदा०—पुनि दातार दइअ बड कीन्हा।—जायसी।

बड़का†—वि० [हिं० बडा] [स्त्री० बडकी] बोल-चाल मे (वह) जो सबसे बडा हो। जैसे—बडके भैया, बडकी दीदी। (पूरब)

बड़ कुँइयाँ—स्त्री० [हिं० बडा+कूआँ] कच्चा कूआँ।

बड़-कौला—पु० [हिं० बड+कोपल] बरगद का फल।

बड़-गुल्ला—पु० [हिं० बड+बगुला] एक प्रकार का बगला।

बड़-दंता—वि० [हिं० बडा+दाँत] [स्त्री० बडदती] बडे-बडे दाँतो वाला।

बड़-दुमा—पु० [हिं० बडा+फा० दुम] वह हाथी जिसकी पूँछ पाँव तक लबी हो। लबी दुम का हाथी।
वि० [स्त्री० बड-दुमी] बडी दुम या पूँछवाला।

बड़प्पन—पु० [हिं० बडा+पन (प्रत्य०)] बडे अर्थात् श्रेष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। महत्त्व। श्रेष्ठता। बडाई। जैसे—तुम्हारा बडप्पन इसी मे है कि तुम कुछ मत बोलो।

बड़-फर—पु० [हिं० बड+फलक] ढाल। (डिं०) उदा०—बड-फरि ऊछजतै बिरुधि।—प्रिथीराज।

बड-फन्नी—स्त्री० [हिं० बडा+फन्नी] वह मठिया (हाथ मे पहनने का गहना) जो साधारण से अधिक चौडी होती है।

बड़-बट्टा—पु० [हिं० बड+बट्टा] बरगद का फल।

बड़बड़—स्त्री० [अनु०] १ मुँह से निकलनेवाले ऐसे शब्द जो न तो स्पष्ट रूप मे दूसरो को सुनाई पडें और न जिनका जल्दी कोई सगत अर्थ निकल सकता हो। बडबडाने की क्रिया या भाव। २ व्यर्थ की बातचीत। प्रलाप। बकवाद।
क्रि० प्र०—करना।—लगाना।
३ क्रोध मे आकर अपने मन की भडास निकालने के विचार से बहुत धीरे-धीरे मुँह से उच्चरित होने वाले शब्द।

बड़बडाना—अ० [अनु० बडबड] १ धीरे-धीरे तथा अस्पष्ट रूप से इस प्रकार बोलना कि 'बड बड' के सिवा और कुछ सुनाई न दे। २ क्रोध मे आकर आप ही आप कुछ कहते रहना। कुडबुडाना। ३ बक-बक करना। बकवाद करना।

बडबड़िया—वि० [अनु० बड़बड+इया (प्रत्य०)] १ बडबड अर्थात् बकवाद करनेवाला। २ कोई बात अपने मन मे न रख सकने के कारण दूसरो से कह देनेवाला।

बड-बोल—पु० [हिं० बडा+बोल] [स्त्री० बड-बोली] अपने कर्तृत्व, योग्यता, शक्ति आदि का अत्युक्तिपूर्ण कथन। डीग या शेखी की बात।
वि०=बड-बोला।

बड़-बोला—वि० [हिं० बडा+बोल] [स्त्री० बड-बोली] बडी बडी बातें बघारने या डीग हाँकनेवाला। बढ-बढकर लबी-चौडी बातें करनेवाला।

बड़-भाग—वि०=बडभागी।

बड़-भागा—वि० [हिं० बडा+भागी (स० भागिन्)] [स्त्री० बड-भागी] बडे अर्थात् उत्तम भाग्यवाला। सौभाग्यशाली। उदा०—ऊधो आज भई बड-भागी।—सूर।

बड़-भागी—वि०=बडभागा।

वड-भुज†—पु०=भड-भूंजा।

वड़रा†—वि०[स्त्री० वडरी]=वड़का।

वड़राना†—अ०=वर्राना।

वड़वा—स्त्री० [स० वल√वा+क,+टाप्, ल—ड] १ घोडी। २ सूर्य की पत्नी की सज्ञा जिसने घोडी का रूप धारण कर लिया था। ३ अश्विनी नक्षत्र। ४ वायु देव की एक परिचारिका। ५. एक प्राचीन नदी। ६ दासी। सेविका। ७ वडवानल।

†पु०[हि० वडा] भादो मास के अत मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

वड़वाग्नि—स्त्री०=वडवानल (समुद्र की अग्नि)।

वड़वानल—पु०[स० वडवा-अनल, ष० त०] समुद्र के अन्दर चट्टानो मे रहनेवाली आग जो सबसे अधिक प्रवल तथा भीषण मानी गई है।

वड़वामुख—पु०[स० वडवा-मुख, ष० त०, अच्] १. वडवाग्नि। २ शिव का मुख।

वड़वार†—वि० [भाव० वडवारी] वडा।

वड़वारी—स्त्री०[हि० वडवार] १ वडप्पन। २ वडाई। महत्त्व। ३ प्रशसा।

वड़वाल—स्त्री०[देश०] हिमालय की तराई मे होनेवाली भेडो की एक जाति।

वड़वा-सुत—पु०[सं० ष० त०] अश्विनीकुमार।

वड़वाहृत—पु०[स० तृ० त०] स्मृतियो के अनुसार वह व्यक्ति जिसे किसी दासी से विवाह करने के कारण दासत्व ग्रहण करना पडा हो।

वड़-हंस—पु०[हि० वड+स० हस] एक राग जो मेघ राग का पुत्र माना जाता है। कुछ लोग इसे सकर राग भी कहते हैं।

वड़-हंस-सारंग—पु०[हि० वडहस+सारग] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

वड़-हंसिका—स्त्री०[हि० वड+सं० हसिका] एक रागिनी जो हनुमत् के मत से मेघराग की स्त्री कही गई है।

वड़हना—पु०[हि० वडा+धान] १ एक तरह का धान। २ उक्त धान का चावल।

†वि०=वडा।

वड़हर†—पु०[?] वह स्थान जहाँ पर जलाने के लिए सूखे कडे इकट्ठे करके रखे जाते हैं।

पु०=वडहल।

वड़हल—पु०[हि० वडा+फल] १ एक प्रकार का वडा पेड जो पश्चिमी घाट, पूर्व वगाल और कुमाऊँ की तराई आदि मे वहुत होता है। २. उक्त पेड का फल जो अचार वनाने अथवा यो ही खाने के काम आता है।

वड़हार—पु०[हि० वर+आहार] विवाह हो जाने के उपरान्त कन्या-पक्षवालो द्वारा वर और वरातियो को दी जानेवाली ज्योनार।

वड़ा—वि०[स० वर्द्धन, प्रा० वड्ढन, हि० वढना या स० वड्] [स्त्री०-वड़ी] १. जो अपने आकार, धारिता, मान, विस्तार आदि के विचार से औरो से वढ-चढकर हो। प्रसम या साधारण से अधिक डील-डौल वाला। जैसे—(क) वड़ा पेड, वडा मकान, वडा सदूक। (ख)वडा दिन।

पद—वड़ा आदमी, वड़ा घर, वड़ा-वूढ़ा। (दे० स्वतत्र शब्द)

मुहा०—वड़ी वड़ी वातें करना=अपनी अथवा किसी की योग्यता, शक्ति आदि के सवंध मे वहुत-कुछ अत्युक्तिपूर्ण या वढा-चढ़ाकर वातें करना।

२ जो गरिमा, गुण, मर्यादा, महत्त्व आदि के विचार से औरो से वहुत आगे वढा हुआ हो। जैसे—(क) वडा दिल। (ख) वडा साहस। (ग) वडा कारीगर। ३ जो अधिकार, अवस्था, पद, मर्यादा, शक्ति आदि के विचार से वढा हुआ या वढ-चढकर हो। जैसे—(क) वडा अधिकारी। (ख) वडे-वूढे (या वडे लोग) जो कहे, वह मान लेना चाहिये। ४. जो किशोर विशेषत युवावस्था को प्राप्त हो चुका हो। जैसे—लडकी वड़ी हो गई है अव इसका विवाह कर देना चाहिए। ५ तुलनात्मक दृष्टि से जिसकी अवस्था या वय अपने वर्ग के औरो से अधिक हो। ज्यादा उमरवाला। जैसे—वडा भाई, वडे मामा। ६. जो मात्रा, मान, सख्या आदि के विचार से औरो से वढ-चढकर हो। जैसे—(क) उन्हे इस वर्ष सवसे वडा इनाम मिला है। (ख) खाते मे एक वडी रकम छूट गई है। ७. जो वहुत अधिक स्थान घेरता हो। अधिक जगह घेरनेवाला। जैसे—वडा कारखाना, वड़ी दूकान। ८ जो देखने मे तो वहुत वढ-चढकर, महत्त्वपूर्ण या प्रभावशाली हो (फिर भी जिसमे कुछ तत्त्व या सार न हो)। जैसे—वड़ा वोल वोलना, वड़ी वडी वातें वघारना। ९. कुछ अवस्थाओं मे किसी अनिष्ट, अप्रिय या अशुभ क्रिया के स्थान पर अथवा ऐसी ही किसी संज्ञा के साथ प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—(क) दीया वडा करना (अर्थात् वुझाना); वडा जानवर (अर्थात् गीदड या साँप)।

क्रि० वि० वहुत अधिक। उद०—वड़ी लवी है जमी, मिलेंगे लाख हमी—। कोई शायद।

पुं० [स० वटक; हिं० वटा] [स्त्री० अल्पा० वडी] १ एक प्रकार का पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल चक्राकार टिकियो के रूप मे होता और घी या तेल मे तलकर वनाया जाता है। २ उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की वरसाती घास।

वड़ा आदमी—पु० [हि०] १. ऐसा आदमी जिसके पास यथेष्ट धन-सम्पत्ति हो। अमीर। धनवान। २. ऐसा आदमी जो गुण, पद, मर्यादा आदि के विचार से औरो से वहुत वडकर हो।

वड़ाई—स्त्री०[हि० वडा+ई (प्रत्य०)] १ वडे होने की अवस्था या भाव। वड़ापन। २. किसी काम या वात मे औरो की अपेक्षा वढ-चढकर होनेवाला कोई विशेष गुण या श्रेष्ठता। ३ उक्त के आधार पर किसी की होनेवाली प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा। महिमा। ४ किसी मे होनेवाले विशिष्ट गुण के सवध मे कही जानेवाली प्रशसात्मक उक्ति। ५. प्रशसा। तारीफ।

मुहा०—(किसी की) वड़ाई देना=किसी के गुण, योग्यता आदि का आदर करते हुए उसका आदर या प्रशसा करना। **(अपनी) वडाई मारना**=अपने मुँह से आप अपनी योग्यता का वखान या प्रशसा करना।

वडा कुंवार—पु० [हिं० वडा+कुंवार] केवडे की तरह का एक पेड़ जिसके पत्ते किरिच की तरह लम्वे होते है।

वड़ा घर—पु० [हिं०] १ कुलीन, प्रतिष्ठित और सम्पन्न कुल। ऊँचा और कुलीन घराना। २. लाक्षणिक अर्थ मे, कारागार या जेलखाना।

मुहा०—वड़े घर की हवा खाना=कैद भुगतना।

बड़ा दिन—पु०[हिं० बडा+दिन] २५ दिसम्बर का दिन जो ईसाइयो का प्रसिद्ध त्यौहार है।

विशेष—प्राय इसी दिन या इसके कुछ आगे-पीछे दिन-मान का बढना आरम्भ होता है, इसी से इसे बडा दिन कहते है।

बड़ा नहान—पु० [हिं०] वह स्नान जो प्रसूता को प्रसव के चालीसवें दिन कराया जाता है।

बड़ानी।—वि०=बडा।

बडा पीलू—पु० [हिं० बडा+पीलू] एक प्रकार के रेशम का कीडा।

बडा बाबू—पु०[हिं०] किसी कार्यालय का प्रधान लिपिक जिसके अधीन कई लिपिक काम करते हो।

बड़ा-बूढ़ा—पु०[हिं०] ऐसा व्यक्ति जो अवस्था या वय के विचार से भी और गुण, योग्यता आदि के विचार से भी औरो से बढ-चढकर या श्रेष्ठ हो। बुजुर्ग।

बडि(लि)श—पु० [स० बलिन्√शो (तीक्ष्ण करना)+क, ल—ड] १ मछली फँसाने की कँटिया। बाँसी। ३ शल्य-चिकित्सा मे काम आनेवाला एक शस्त्र।

बड़ी—स्त्री०[हिं० बडा] १ आलू, दाल, सफेद कुम्हडे आदि को पीसकर तथा उसमे नमक, मिरच, मसाला आदि डालकर उसका सुखाया हुआ कोई छोटा टुकडा जो दाल, तरकारी आदि मे डाला जाता है। कुम्हडौरी। २ मास की बोटी। (डि०)।

बड़ी इलायची—स्त्री०[हिं०] १. एक तरह का इलायची का पेड जिसका फल कुछ बड़ा और काले रग का होता है। २. उक्त का फल जिसके दाने या बीज मसाले के रूप मे प्रयुक्त होते है।

बड़ी गोटी—स्त्री०[?] चौपायो की एक बीमारी।

बड़ी बात—स्त्री० [हिं०] कोई महत्त्वपूर्ण किंतु कठिन काम। जैसे—उन्हे रास्ते पर लाना कौन बडी बात है।

बड़ी माता—स्त्री०[हिं० बडी+माता] शीतला। चेचक। (पॉक्स)

बडी मैल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिडिया जो बिलकुल खाकी रग की होती है।

बड़ी राई—स्त्री०[हिं० बडी+राई] एक प्रकार की सरसो जो लाल रग की होती है। लाही।

बड़ूजा—।पु०=बिडौजा।

बड़ेरा।—वि०[हिं० बडा+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० बडेरी] १ बडा। २ प्रधान। मुख्य।

पु०[स० बडीभि, प्रा० बडीहि+रा] [स्त्री० अल्पा० बडेरी] कुएँ पर दो खभो के ऊपर ठहराई हुई वह लकडी जिसमे घिरनी लगी रहती है।

पु० १ =बँडेर। २ =बवडर।

बडे लाट—पु०[हिं० बडा+अ० लार्ड] अगरेजी शासन-काल मे भारत का सर्व-प्रमुख प्रधान शासक। गवर्नर-जनरल।

बडैला।—पु० [हिं० बडा] जगली सूअर।

बड़ौखा।—पु०[हिं० बडा +ऊख] एक प्रकार का गन्ना जो बहुत लबा और नरम होता है।

बड़ौना।—पु० [हिं० बडापन] १ बडाई। महिमा। २ प्रशसा। तारीफ।

बड्ड—वि०=बडा।

बड्डान—अ०=बडबडाना।

बढ़ती।—स्त्री०=बढती।

बढ़—वि०[हिं० बढना] १. बढा हुआ। २. अधिक। ज्यादा। ३ मूर्ख। ४ हिं० बढना (क्रि०) का विशेषण की तरह प्रयुक्त होने वाला सक्षिप्त रूप।

स्त्री० १ =बढती। २ बाढ।

बढ़ई—पु०[सं० वर्द्धकि, प्रा० वड्डइ] १. लकडी को छील तथा गढकर उसके उपयोगी उपकरण बनानेवाला कारीगर। २ उक्त कारीगरो की जाति या वर्ग। ३ रहस्य सप्रदाय मे, गुरु जो शिष्य रूपी कुन्दे को गढ-छीलकर सुन्दर मूर्ति का रूप देता है।

बढ़ई मधु-मक्खी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की मधु-मक्खी जिसका रग काला और पख नीले होते है। यह वृक्षो के काठ तक काट डालती है।

बढ़ती—स्त्री०[हिं० बढना+ती(प्रत्य०)] १. बढने अथवा बढे हुए होने की अवस्था या भाव। २. गिनती, तौल, नाप, मान आदि मे उचित या नियत से अधिक या बढा हुआ अश। ३. धन-धान्य, परिवार आदि की वृद्धि।

पद—बढ़ती का पहरा=उन्नति और समृद्धि के दिन।

४ आवश्यकता, उपभोग, व्यय आदि की पूर्ति हो चुकने पर भी कुछ बच रहने की अवस्था या भाव। बचत (सरप्लस) ५ मूल्य की वृद्धि।

पद—बढ़ती से=अश-पत्र, राज-ऋण, विनिमय आदि की दर के सबध मे अकित या नियत मूल्य की अपेक्षा कुछ अधिक मूल्य पर।

बढ़ती फसल—स्त्री० [हिं०+अ०] वह फसल जो अभी खेत मे बढ रही हो, पर अभी पूरी तरह से तैयार न हुई हो। (ग्रोइंग क्रॉप)

बढवार।—स्त्री० [हिं० बाढ=धार?] पत्थर काटने की टाँकी।

बढन—स्त्री० [हिं० बढना] बढने तथा बढे हुए होने की अवस्था या भाव। बढती। वृद्धि।

बढना—अ० [स० वर्द्धन, प्रा० वड्ढन] १. आकार, क्षेत्र, विस्तार व्याप्ति, सीमा आदि मे अधिकता या वृद्धि होना। जितना या जैसा पहले रहा हो, उससे अधिक होना। जैसे—(क) पेड़-पौधो या बच्चों का बढना। (ख) कर्मचारियो की छुट्टियाँ बढना। (ग) दाढी या नाखूनो का बढना। २ परिमाण, मात्रा, सख्या आदि मे अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) घर का खरच बढना। (ख) देश की जन-सख्या बढना। (ग) नदी मे जल बढना। ३ कार्य-क्षेत्र, गुण आदि का विस्तार होना। व्याप्ति मे अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) झगडा-तकरार या वैर-विरोध बढना। (ख) प्रभाव-क्षेत्र या व्यापार बढना। ४ तीव्रता, प्रबलता, वेग, शक्ति आदि मे अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) किसी चलनेवाली चीज की चाल बढना। (ख) रोग या विकार बढना। ५ किसी प्रकार की उन्नति या तरक्की होना। जैसे—वह तो हमारे देखते देखते इतना बढा है। ६ आगे की ओर चलना या अग्रसर होना। जैसे—(क) आज-कल औद्योगिक क्षेत्र मे अनेक पिछडे हुए देश आगे बढने लगे है। (ख) आकाश मे गुड्डी या पतग बढना। (ग) तुम्हारे तो पैर ही नही बढते।

मुहा०—बढ चलना=(क) उन्नति करना। (ख) अपनी योग्यता, सामर्थ्य आदि से अतिरिक्त आचरण या व्यवहार करना। (ग) अभिमान या ऐंठ दिखाना। इतराना।

७ प्रतियोगिता, होड आदि मे किसी से आगे होना। जैसे—अब वह

कई बातों मे तुमसे बहुत आगे बढ गया है। ८. रोजगार या व्यापार मे लाभ के रूप मे धन प्राप्त होना। जैसे—चलो, इस सौदे मे हजार रुपए तो बढे; अर्थात् हजार रुपए की आय या लाभ हुआ। ९. कुछ विशिष्ट प्रसगो मे, मगल-भाषित के रूप मे, कुछ समय के लिए किसी काम, चीज या बात का अन्त या समाप्ति होना। जैसे—(क) किसी स्त्री के हाथ की चूड़ियाँ बढना; अर्थात् उतारी या तोड़ी जाना। (ख) दीया बढना, अर्थात् बुझाया जाना, दूकान बढ़ना अर्थात् कुछ समय के लिए बन्द होना।

*स० बढाना। विस्तृत करना। उदा०—स्रवन सुनत करना सरिता भए बढ़ैयो बसन उमगी।—सूर।

बढ़नी†—स्त्री० [स० वर्द्धनी, प्रा० वड्ढनी] १ झाड़। बुहारी। कूचा। मार्जनी। २. वह अनाज या धन जो किसानों को खेती-बारी आदि के काम पर पेशगी दिया जाता और बाद में कुछ बढ़ाकर लिया जाता है।

स्त्री० [हिं० बढना] पेशगी। अग्रिम।

बढ़वाना*—स० [हिं० बढाना का प्रे०] किसी को कुछ बढाने में प्रवृत्त करना।

बढ़वारि†—स्त्री०=बढ़ती।

बढ़ाना—स० [हिं० बढना का स०] १. किसी को बढ़ने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिसमे कुछ या कोई बढे। २. कोई चीज या बात का विस्तार करते हुए उसे किसी दूर के बिंदु, समय आदि तक ले जाना। विस्तार अधिक करना। जैसे—(क) उपन्यास या कहानी का कथा-भाग बढाना। (ख) नौकरी की अवधि या समय बढाना। (ग) धातु को पीटकर उसका तार या पत्तर बढाना। ३. परिमाण, मात्रा, सख्या आदि मे अधिकता या वृद्धि करना। जैसे—(क) किसी चीज की दर या भाव बढाना। (ख) किसी का वेतन (या सजा) बढाना। (ग) अपनी आमदनी बढाना। ४. किसी प्रकार की व्याप्ति मे विस्तार करना। जैसे—झगडा या बात बढाना। कार-बार या रोजगार बढाना।

पद—बढ़ा-चढ़ाकर=(क) इतनी अधिकता करके कि अनुचित के क्षेत्र तक जा पहुँचे। जैसे—बढा-चढाकर किसी की प्रशसा करना या कोई बात कहना। (ख) उत्तेजित या उत्साहित करके। बढावा देकर। जैसे—किसी को बढ़ा-चढाकर किसी के साथ लड़ा देना।

५ जो चीज आगे चल या जा रही हो, उसके क्षेत्र, गति आदि में अधिकता या वृद्धि करना। जैसे—(क) चलने मे कदम या पैर बढाना; अर्थात् जल्दी जल्दी पैर रखते हुए चलना। (ख) गुड्डी या पतग बढाना अर्थात् उसकी डोर या नख इस प्रकार ढीली करना कि वह दूर तक जा पहुँचे। ६ गुण, प्रभाव, शक्ति आदि मे किसी प्रकार की तीव्रता या प्रबलता उत्पन्न करना। जैसे—(क) किसी का अधिकार (या मिजाज) बढाना। (ख) अपनी जानकारी या परिचय बढाना। ७ जो चीज जहाँ स्थित हो, उसे वहाँ से और आगे बढने मे प्रवृत्त करना। जैसे—जलूस या बरात बढ़ाना। ८ प्रतियोगिता आदि मे किसी की तुलना मे आगे ले जाना या श्रेष्ठ बनाना। जैसे—घुड-दौड़ में घोडा आगे बढाना। ९. किसी को यथेष्ट उन्नत, सफल या समृद्ध करना। उदा०—सूरदास करुणा-निधान प्रभु जुग जुग भगत बढा दो।—सूर। १० कुछ प्रसगो मे मगल-भाषित के रूप मे, कुछ समय के लिए किसी काम या चीज का अन्त या समाप्ति करना। जैसे—(क) चूडियाँ बढाना=उतारना या तोड़ना। (ख) दीया बढ़ाना=बुझाना। (ग) दूकान बढ़ाना=बन्द करना।

अ० खतम या समाप्त होना। बाकी न रह जाना। चुकना। उदा०—मेघ सबै जल बरसि बढ़ाने बिबि गुन गये सिराइ।—सूर।

बढ़ा-बढ़ी—स्त्री० [हिं० बढ़ना] १ आचरण, व्यवहार आदि मे आवश्यकता या औचित्य से अधिक आगे बढ़ने की क्रिया या भाव। मर्यादा या सीमा का उल्लंघन। जैसे—इस तरह की बढ़ा-बढ़ी ठीक नहीं है। २. प्रतिद्वंद्विता। होड़।

बढ़ार—पु० दे० 'बढ़हार'।

बढ़ाली—स्त्री० [देश०] कटारी। कटार।

बढ़ाव—पु० [हिं० बढ़ना+आव (प्रत्य०)] १ बढ़ने या बढ़े हुए होने की अवस्था या भाव। २. फैलाव। विस्तार। ३. मूल्य आदि की वृद्धि। बढ़ती। बाढ़।

बढ़ावन—स्त्री० [हिं० बढ़ावना] गोबर की टिकिया जो बच्चों की नजर झाड़ने में काम आती है।

बढ़ावना—स०=बढ़ाना।

बढ़ावा—पु० [हिं० बढ़ाना] १ आगे बढ़कर कोई महत्त्वपूर्ण काम करने के लिए किसी को दिया जानेवाला प्रोत्साहन। २ प्रोत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—देना।

बढ़िया—वि० [हिं० बढ़ना] (पदार्थ) जो गुण, रचना, रूप-रंग, सामग्री आदि की दृष्टि से उच्च कोटि का हो। उम्दा। जैसे—बढ़िया कपड़ा, बढ़िया चावल, बढ़िया पुस्तक, बढ़िया बात।

पु० १. गन्ने, अनाज आदि की फसल का एक रोग जिसमें कल्ले नहीं निकलते और बढाव बन्द हो जाता है। २. प्राय छेढ सेर की एक पुरानी तौल। ३. एक प्रकार का कोल्हू।

स्त्री० १. एक प्रकार की दाल। २. जलाशयों आदि की बाढ।

बढ़ियार†—वि० [हिं० बढना] (जलाशय या नदी) जिसमे बाढ आई हो। जैसे—बढ़ियार गगा।

स्त्री० नदियों आदि मे आनेवाली पानी की बाढ।

बढ़ेल—स्त्री० [देश०] हिमालय पर पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड़।

बढ़ेला—पु० [स० वराह] बनैला सूअर। जगली सूअर।

बढ़ैया—वि० [हिं० बढाना, बढना] १. बढानेवाला। २ उन्नति करनेवाला।

वि० [हिं० बढना] बढनेवाला। उन्नतिशील।

†पु०=बढई।

बढ़ोतरी—स्त्री० [हिं० बाढ+उत्तर] १ उत्तरोत्तर होनेवाली वृद्धि। बढती। २ उन्नति। तरक्की। ३ व्यापार मे होनेवाला लाभ।

बणिक—पु० [स० वणिक्] १ वह जो वाणिज्य अर्थात् रोजगार या व्यापार करता हो। रोजगारी। व्यवसायी। व्यापारी। २. कोई विशिष्ट चीज बेचनेवाला सौदागर। ३. गणित, ज्योतिष मे छठा करण।

बणिक-पथ—पु० [स० वणिक्पथ] १ वाणिज्य। २ व्यापार की चीजो की आमदनी। रफ्तनी। ३. व्यापारी। ४. दुकान। ५ तुला राशि।

वणिक-सार्य—पु० [सं० वणिक्सार्थ] दे० 'वणिक् कटक'।
वणिग्वधु—पु० [स० वणिग्वधु] नील का पौधा।
वणिग्वह—पु० [स० वणिग्वह] ऊँट।
वणिज्वीथी—स्त्री० [स० वणिग्वीथी] बाजार।
वणिग्वृत्ति—स्त्री० [स० वणिग्वृत्ति] वणिक का पेशा। व्यापार।
वणिज्—पु०=वणिक्।
वत—स्त्री० [हिं० 'बात' का सक्षिप्त रूप] हिंदी 'बात' का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—वत-कही, वत-रस।
स्त्री० [अ०] १ वतख की जाति की एक मौसिमी चिडिया जो मटमैले रग की होती है। २ वतख।
वतक—स्त्री० [हिं० वत्तख] १. वतख की गरदन के आकार की एक प्रकार की सुराही जिसमे शराब रखी जाती थी। (राज०) २ वतख नाम की चिडिया।
वत-कट—वि० [हिं० वात+काटना] १. वात काटने अर्थात् उसकी यथार्थता को चुनौती देनेवाला। २ किसी के वोलने के समय वीच मे उसे वार-वार टोकनेवाला। उदा०—नस-कट खटिया, वत-कट जोय।—घाघ।
वत-कहाव†—पु०=वत-कही।
वत-कही—स्त्री० [हिं० वात+कहना] १. साधारणत' केवल मन वहलाने या समय विताने के लिए की जानेवाली इधर-उधर की वातचीत। उदा०—करत वत-कही अनुज सन, मन सिय-रूप लुभान।—तुलसी। २ वात-चीत की तरह का वहुत ही तुच्छ या साधारण काम। उदा०—दसकंधर मारीच वत-कही।—तुलसी। ३ वाद-विवाद। कहा-सुनी। तकरार। ४ झूठ-मूठ या मन से गढ़कर कही जानेवाली वात।
वतख—स्त्री० [अ० वत] हस की जाति की पानी की एक चिड़िया जिसका रग सफेद, पजे झिल्लीदार और चोच का अग्र भाग चिपटा होता है, और जिसके अडे मुरगी के अडो से कुछ वडे होते हैं।
वत-चल—वि० [हिं० वात+चलाना] वकवादी। वक्की।
स्त्री०=वात-चीत।
वत-छुट—वि० [हिं० वात-+छूटना] विना सोचे-समझे अच्छी-वुरी सव तरह की वातें कह डालनेवाला।
वत-धर—वि० [हिं० वात+स० धर=धारण करनेवाला] जो अपनी कही हुई वात या दिये हुए वचन का सदा पूरी तरह से पालन करता हो।
वत-वढ़ाव—पु० [हिं० वात+वढाव] १ वात वढ़ने अर्थात् झगड़ा खडे होने की अवस्था या भाव। २ छोटी या तुच्छ वात को दिया जानेवाला विकट और विस्तृत रूप।
वत-वातीं†—स्त्री० [हिं० वात] १ वे-सिरपैर की वात। वकवाद। २. किसी से छेड-छाड़ करने या घनिष्ठता वढाने के लिए की जानेवाली वात-चीत। उदा०—कछुक अनूठे मिस वनाय ढिग आय करत वतवाती।—आनन्दघन।
वतर—वि०=वदतर।
वत-रस—पु० [हिं० वात+रस] वातो से मिलनेवाला आनंद।
वत-रसिया—वि० [हिं० वात+रसिया] १ हर वात में रस लेनेवाला। २ जिसे वहुत वात-चीत करने का चस्का हो। वातों का शौकीन।
वतरान—स्त्री० [हिं० वतराना] वातचीत।
वतराना—अ० [हिं० वात+आना (प्रत्य०)] वातचीत करना।
उदा०—हम जाने अव वात तिहारी सूधे नहिं वतराति।—सूर।
वतरानि†—स्त्री०=वतरान (वात-चीत)।
वतरावनि†—स्त्री० [हिं० वतराना] १ वात-चीत। वार्तालाप।
उदा०—'ललित किसोरी' फूल झरनि या मधुर-मधुर वतरावनि।—ललित किशोरी। २ वात-चीत करने का ढग या प्रकार।
वतरौहाँ†—वि० [हिं० वात] [स्त्री० वतरौंही] वहुत वातें करनेवाला।
वतलाना—स०=वताना।
अ०=वतराना (वात-चीत करना)।
वत-वन्हा—पु० [देश०] एक तरह की नाव।
वताना—स० [हिं० वात+ना (प्रत्य०), या स० वदन=कहना] १. कोई वात कहकर किसी को कोई जानकारी या परिचय कराना। जैसे—तुम्हारी नौकरी लगने की वात मुझे उसी ने वताई थी। २. कोई कठिन काम या वात इस प्रकार कर दिखलाना या समझाना कि उससे अनजानों का ज्ञान या योग्यता वढे। जैसे—(क) गुरु जी ने अभी तुम्हे व्याकरण का विषय नही वताया है। (ख) नौकर ने मालिक को खर्च का हिसाव वताया। ३ किसी प्रकार का निर्देश या सकेत करना। जैसे—किसी की ओर उंगली दिखाकर वताना। ४. नाचगाने आदि के प्रसग में ऐसी मुद्राएँ वनाना जो गीत के भाव के अनुरूप या उनकी स्पष्ट परिचायक हों। जैसे—वह गाता (या नाचता) तो उतना अच्छा नही है, पर भाव वहुत अच्छा वताता है।
मुहा०—भाव वताना=किसी काम या वात के समय स्त्रियों के से हाव-भाव प्रदर्शित करना।
५. किसी को धमकाते हुए यह आशय प्रकट करना कि हम तुम्हारा अभिमान दूर कर देंगे या तुम्हारी वुद्धि ठिकाने कर देंगे। जैसे—अच्छा किसी दिन तुम्हे भी वताऊँगा। ६. दिखलाना। जैसे—वावली को आग वताई, उसने ले घर में लगाई। (कहा०)
पु० [स० वर्तक=एक धातु] १ हाथ में पहनने का कडा। २. वह फटा-पुराना या साधारण कपडा जो पगड़ी वाँधने से पहले यों ही सिर पर इसलिए लपेट लिया जाता है कि वालो से पगड़ी गंदी या मैली न होने पावे।
वताशा—पु०=वतासा।
वतास—स्त्री० [स० वातास] १. वात के प्रकोप के कारण होनेवाला गठिया नामक रोग।
क्रि० प्र०—धरना।—पकड़ना।
२. वायु। हवा।
वतासना†—अ० [हिं० वतास] हवा चलना या वहना। (पूरव)
वतासफेनी—स्त्री० [हिं० वतासा+फेनी] टिकिया के आकार की एक मिठाई।
वतासा—पु० [हिं० वतास=हवा] १. एक प्रकार की मिठाई जो

चीनी की चासनी टपकाकर वनाई जाती है और जो फूल की तरह फूली हुई और वहुत हलकी होती है। २ एक प्रकार की छोटी आतिशवाजी जो मिट्टी के कसोरे मे मसाला रखकर वनाई जाती है। ३. पानी का वुलवुला ।

वतासी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कालापन लिए हुए गेरुए रंग की चिड़िया जिसकी आँख की पुतली गहरी-भूरी, चोंच काली और पैर लाल-छोंह होते है।

वतिया†—स्त्री० [सं० वर्तिका; प्रा० वत्तिआ=वत्ती] सब्जी के काम मे आनेवाला कोई छोटा कच्चा ताजा हरा फल। जैसे—कद्दू या वैगन की वतिया।

† स्त्री०=वात ।

वतियाना—अ० [हिं० वात] वातचीत करना।

वतियार—स्त्री० [हिं० वात] वातचीत।

वतीसा—पु० [हिं० वत्तीस] [स्त्री० अल्पा० वतीसी] १ वत्तीस वस्तुओं का समाहार या समूह। २. वत्तीस दवाओं और मेवों के योग से वनाया हुआ लड्डू या हलवा जो प्रसूता को पुष्टि के लिए खिलाया जाता है। ३ दांत से काटने का घाव या चिह्न।

वतीसी—स्त्री०=वत्तीसी।

वतू—पु०=कलावत्तू ।

वतोला—पु० [हिं० वात+ओला (प्रत्य०)] १. धोखा देने के उद्देश्य मे कही जानेवाली वात। २ झाँसा ।

मुहा०—वतोले वनाना=(क) वातें वनाना। (ख) भुलावा देना ।

वतौर—अव्य० [अ०] १ (किसी की) तरह पर। रीति से। तरीके पर। २. के सदृश। के समान।

वतौरी—स्त्री० [?] रसौली ।

वतौल कुती—स्त्री० [हिं० वात] कान मे वातचीत करने की नकल जो वदर करते हैं। (कलदर)

वत्त† —स्त्री०=वात।

वत्तक—स्त्री०=वतक।

वत्तर—वि०=वदतर।

वत्तरी†—स्त्री०=वात।

वत्ता—पु० [सं० वर्त्तक] सरकडे के वे मुट्ठे जो छाजन के छप्पर के अगले भाग मे वाँधे जाते है।

वत्तिस—वि०=वत्तीस।

वत्ती—स्त्री० [सं० वर्त्ति, प्रा० वत्ति] १ प्रकाश के निमित्त जलाया जानेवाला सूत, रूई, कपड़े आदि का वटा हुआ लंवोतरा लच्छा जो तेल आदि से भरे हुए दीए मे रखा जाता है।

मुहा०—वत्ती चढ़ाना=शमादान मे मोमवत्ती लगाना। वत्ती जलाना=अँधेरा होने पर प्रकाश के लिए दीपक जलाना। (किसी चीज में) वत्ती लगाना=पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट करना। जैसे—वह लाखो रुपए की सपत्ति मे वत्ती लगाकर कगाल हो गया।

३ दीपक। चिराग। ४ रोशनी। प्रकाश।

मुहा०—वत्ती दिखाना=प्रकाश दिखाना।

५ लपेटा हुआ चीथडा जो किसी वस्तु मे आग लगाने के लिए काम मे लाया जाय। फलीता। पलीता। ६. वत्ती के आकार-प्रकार की कोई गोलाकार लंवी चीज। जैसे—घाव में भरने की वत्ती, लाह की वत्ती। ७ छाजन मे लगाने का फूस आदि का पूला। ८. कपड़े की वह लंवी धज्जी जो घाव मे मवाद साफ करने के लिए भरते हैं। ९. सींक आदि पर गंध-द्रव्य या ज्वलनशील पदार्थ लपेटकर वनाई जानेवाली वत्ती जो पूजन आदि के समय जलाई जाती है। जैसे—अगर-वत्ती, धूप-वत्ती, मोमवत्ती। १०. पगड़ी या चीरे का ऐंठा या वटा हुआ कपड़ा। ११. कपड़े के किनारे का वह भाग जो सीने के लिए मरोड़कर वत्ती के रूप मे लाया जाता है।

वत्तीस—वि० [सं० द्वात्रिंशत्, प्रा० वत्तीसा] गिनती या संख्या मे जो तीस से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती (३२) है।

वत्तीसा—पु०=वत्तीसी।

वत्तीसी—स्त्री० [हिं० वत्तीस] १. एक ही तरह की वत्तीस चीजों का समूह। २. मनुष्य के मुँह के ३२ दाँतों का समूह।

मुहा०—वत्तीसी खिलना=मुँह पर स्पष्ट रूप से हँसी दिखाई देना। (किसी की) वत्तीसी झाड़ना=इतना मारना की सब दाँत टूट जायँ। वत्तीसी दिखाना=निर्लज्जतापूर्वक हँसना। वत्तीसी वजना=सर्दी के कारण दाँतो का काँपकर कटकट शब्द करना।

वत्रीस—वि०, पुं०=वत्तीस।

वथना†—अ० [सं० व्यथा] पीड़ा या दर्द होना।

वथान†—पु० [सं० वास+स्थान] १. पशुओं के वाँधे जाने की जगह। पशु-शाला। २. गरोह। झुंड।

स्त्री० [हिं० वथना] पीड़ा। दर्द।

वथिया—स्त्री० [?] सूखे गोवर का ढेर।

वथुआ—पु० [सं० वास्तुक, प्रा० वात्थुआ] १ मोटे, चिकने हरे रंग के पत्तोंवाला एक पौधा जो १ से ४ हाथ तक ऊँचा होता है तथा गेहूँ, जौ आदि के खेतों मे अधिक होता है। २. उक्त के पत्ते अथवा उनका वना हुआ साग।

वथ्थ—स्त्री० [सं० वस्तु] चीज।

वद—स्त्री० [सं० वर्धन=गिल्टी] १. आतशक या गरमी की वीमारी के कारण या यो ही सूजी हुई जांघ पर की गिलटी। गोहिया। वाघी। २. चौपायो का एक सक्रामक रोग जिसमे उनके मुँह से लार वहती है और खुर तथा मुंह मे दाने पड जाते हैं।

वि० [फा०] [भाव० वदी] १. खराव। वुरा। २. दुराचारी। ३. दुष्ट। पाजी।

स्त्री० [हिं० वदना] १ पलटा। वदला। एवज। जैसे—इसके वद मे कुछ और दे दो। २ किसी का निश्चित पक्ष। जैसे—दो गाँठ रूई हमारी वद की भी खरीद लो, अर्थात् उसके घाटे-नफे के हम जिम्मे-दार रहेंगे।

वद-अमली—स्त्री० [फा० वद+अ० अमल] राज्य या शासन का कुप्रवंध। शासनिक अव्यवस्था। अराजकता।

वतजामी—स्त्री० [फा०] कुप्रवंध। अव्यवस्था ।

वदइकार—वि० [फा०] [भाव० वदकारी] १. वुरा काम करने-वाला। कुकर्मी। २ दुराचारी।

वदकारी—स्त्री० [फा०] १ कुकर्म। २. व्यभिचार।

बदकिस्मत—वि० [फा० बद+अ० किस्मत] बुरी किस्मतवाला। फूटे भाग्यवाला। अभागा।

बदखत—वि० [फा० बदखत] [भाव० बदखती] लिखने मे जिसके अक्षर सुन्दर और स्पष्ट न होते हो।

बदख्वाह—वि० [फा० बदख्वाह] [भाव० बदख्वाही] १ बुराई चाहनेवाला। २ जो शुभचिंतक न हो।

बद-गुमान—वि० [फा०] [भाव० बद-गुमानी] जिसके मन मे किसी के प्रति बुरी धारणा हो।

बद-गुमानी—स्त्री० [फा०] किसी के प्रति होनेवाली बुरी धारणा।

बद-गो—वि० [फा०] [भाव० बद-गोई] १ दूसरो की निन्दा या बुराई करनेवाला। २. चुगलखोर। ३. गालियाँ बकनेवाला।

बद-गोई—स्त्री० [फा०] १. किसी के सबध मे बुरी बात कहना। निंदा या निंदा करने की क्रिया या भाव। २ बदनामी। ३ चुगल-खोरी। ४. गाली-गलौज।

बद-चलन—वि० [फा०] [भाव० बद-चलनी] १ बुरे रास्ते पर चलनेवाला। २ दुश्चरित्र। ३. वेश्यागामी।

बद-चलनी—स्त्री० [फा०] बद-चलन होने की अवस्था या भाव।

बद-जबान—वि० [फा० बद-ज़बान] [भाव० बद-जबानी] १ अनुचित, गदी या दूषित बाते करनेवाला। २. गाली-गलौज करनेवाला।

बदजात—वि० [फा० बद+अ० जात] [भाव० बदजाती] अधम। नीच।

बद-तमीज—वि० [फा० बद+तमीज] [भाव० बदतमीजी] शिष्टाचार और सलीके का ध्यान न रखते हुए अनुचित आचरण या व्यवहार करनेवाला (व्यक्ति)।

बद-तमीजी—स्त्री० [फा० बदतमीजी] १ बदतमीज होने की अवस्था या भाव। २ शिष्टाचार और सलीके से रहित कोई अशोभनीय आचरण या व्यवहार।

बदतर—वि० [फा०] बुरे से बुरा। बहुत बुरा।

बददिमाग—वि० [फा०+अ०] [भाव० बद-दिमागी] १ जरा सी बात पर बुरा मान जानेवाला (व्यक्ति)। २ अभिमानी। घमडी।

बद-दिमागी—स्त्री० [फा०+अ०] १ जरा सी बात पर बुरा मानने की आदत। २ अहकार।

बद-दुआ—स्त्री० [फा०+अ०] ऐसी अहित कामना जो शब्दो के द्वारा प्रकट की जाय। शाप।

क्रि० प्र०—देना।

बदन—पु० [फा०] तन। देह। शरीर।

मुहा०—**बदन टूटना**=शरीर की हड्डियो विशेषत जोडो मे पीडा होना। अग अग मे पीडा होना। **बदन तोडना**=पीडा के कारण अगो को तानना और खीचना। **तन-बदन की सुध न रहना**=(क) अचेत रहना। बेहोश रहना। (ख) इतना ध्यानस्थ रहना कि आस-पास की बातो का कुछ भी पता न चले।

†पु० [स० वदन] मुख। चेहरा। जैसे—गज-बदन।

स्त्री० [हिं० बदना] कोई बात बदने की क्रिया या भाव। बदान। उदा०—बदन बदी थी रग-महल की टूटी मँड़ैया मे ल्याइ उतारयो। (गीत)

बदन-तौल—स्त्री० [फा० बदन+हिं० तौल] मालखभ की एक कसरत जिसमे हत्थी करते समय मालखभ को एक हाथ से लपेटकर उसी के सहारे सारा बदन ठहराते या तौलते हैं।

बदन-निकाल—पु०[फा० बदन+हिं० निकालना]मालखभ की एक कसरत जिसमे मालखभ के पास खडे होकर दोनो हाथो की कैंची बाँधते हैं।

बद-नसीब—वि० [फा०+अ०] [भाव० बद-नसीबी] बुरे नसीबवाला। अभागा।

बद-नसीबी—स्त्री० [फा०] दुर्भाग्य।

बदना—स० [स०√ वद्=कहना] १. कथन या वर्णन करना। कहना। २ बात करना। बोलना। ३. दृढता या निश्चयपूर्वक कोई बात कहना।

पद—**बदकर या कह-बदकर**=(क) बहुत ही दृढता या निश्चयपूर्वक कहकर। जैसे—वह कह-बदकर कुश्ती जीतता है। (ख) दृढता-पूर्वक आगे बढकर।

४ प्रमाण के रूप मे मानना। ठीक समझना। सकारना। उदा०—औरहू न्हायी सु मैं न बदी, जब नेह-नदी मे न दी पग-आँगुरी।—नागरी-दास। ५ आपस मे नियत, निश्चित या पक्का करना। ठहराना। जैसे—दोनो पहलवानो की कुश्ती बदी गई है। उदा०—(क) बदन बदी थी रग-महल की टूटी मँड़ैया मे ल्याइ उतारयो। (ख) अवधि बदि सैयाँ अजहूँ न आये।—गीत। ६. किसी प्रकार की प्रतिद्वद्विता या होड के सबध मे बाजी या शर्त लगाना। जैसे—तुम तो बात बात मे शर्त बदने लगते हो। ७ बडा या महत्त्व का मानना। उदा०—हिरदय मे से जाइहौं, मरद बदौंगी तोहि। ८ किसी को किसी गिनती या लेखे मे समझना। ध्यान मे लाना। मान्य समझना। जैसे—वह तो तुम्हे कुछ भी नही बदता। उदा०—(क) सकति, सनेहु कर सुनति करीऐ, मैं न बदउँगा भाई।—कबीर। (ख) बदतु हम कौं नेकु नाँही, मरहिं जौ पछिताहिं।—सूर। १०. नियत या मुकर्रर करना। जैसे—किसी को अपना गवाह बदना।

अ० पहले से नियत, निश्चित या स्थिर होना। जैसे—जो भाग्य मे बदा होगा, वही होगा।

बदनाम—वि० [फा०] [भाव० बदनामी] जिसका बुरा नाम फैला हो, अर्थात् कुख्यात।

बदनामी—स्त्री० [फा०] वह गर्हित या निन्दनीय लोक-चर्चा जो कोई अनुचित या बुरा काम करने पर समाज मे विपरीत धारणा फैलने के कारण होती है। अपकीर्ति। कुख्याति। लोक-निंदा। (स्कैंडल्)

क्रि० प्र०—फैलना।—फैलाना।

बदनी—वि० [फा०] १. शारीरिक। २ शरीर से उत्पन्न।

पु० [हिं० बदना] एक तरह का शर्तनामा जिसके अनुसार किसान अपनी फसल बाजार भाव से कुछ सस्ते मूल्य पर महाजन को उससे लिए हुए ऋण के बदले में देता है।

बद-नीयत—वि० [फा० बद+अ० नीयत] [भाव० बद-नीयती] १ जिसकी नीयत बुरी हो। जो सदाशय न हो। बुरे भाववाला। २. लोभी। लालची। ३. बेईमान।

बदनीयती—स्त्री० [फा०+अ०] १ नीयत बुरी होने की अवस्था या भाव। २ लालच। ३. बेईमानी।

वदनुमा—फा० [फा० वद=बुरा+नुमा=दिखानेवाला] [भाव० वद-नुमाई] जो देखने मे कुरूप, भद्दा या भोंडा हो।

वद-परहेज—वि० [फा० वद-परहेज़] [भाव० वद-परहेजी] व्यक्ति जो ऐसी चीजो का भोग करता हो जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकर हो और जिनसे उसे वस्तुत परहेज करना चाहिए।

वद-परहेजी—स्त्री० [फा० वद-परहेजी] १. परहेज न करने की अवस्था या भाव। बीमार का खाने-पीने मे परहेज न करना। २ कुपथ्य का भोग।

वदफेल—वि० [फा० वद+अ० फेल] [भाव० वद-फेली] दुष्कर्म करनेवाला। दुष्कर्मी।

वदफेली—स्त्री० [फा० वद+अ० फेली] १. दुष्कर्म। २. पर-स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग।

वदवख्त—वि० [फा० वदवख्त] [भाव० वदवख्ती] अभागा।

वदवख्ती—स्त्री० [फा० वदवख़्ती] अभागापन।

वद-वला—स्त्री० [फा०] चुडैल। डाइन।

वि० १ चुडैल या डाइन की तरह का। २ दुष्ट। ३ उपद्रवी।

वद-वाछ—पु० [फा० वद+हि० वाछ] बेईमानी या अनुचित रूप से प्राप्त किया जानेवाला हिस्सा।

वदबू—स्त्री० [फा०] बुरी गंध या दुर्गन्ध।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—निकलना।—फैलना।

वदबूदार—वि० [फा०] जिसमे से बुरी वास निकल रही हो। दुर्गन्ध-युक्त।

वद-मजगी—स्त्री० [फा० वदमज़गी] 'वद-मजा' होने की अवस्था या भाव।

वद-मजा—वि० [फा० वदमज़ा] [भाव० वद-मजगी] १. (वस्तु) जिसका मजा अर्थात् स्वाद बुरा हो। २ (स्थिति आदि) जिसके रंग मे भंग पड गया हो फलत जिससे पूरा पूरा आनंद न मिल सका हो।

वद-मस्त—वि० [फा०] [भाव० वदमस्ती] १. मदोन्मत्त। २. कामोन्मत्त।

वदमस्ती—स्त्री० [फा०] १. वद-मस्त होने की अवस्था या भाव। २ नशा।

वदमाश—वि० [फा० वद+अ० मआश=जीविका] [भाव० वदमाशी] १. जिसकी जीविका बुरे कामो से चलती हो। २. बुरे और निकृष्ट काम करनेवाला। दुर्वृत्त। ३. कुपथगामी। वदचलन। ४. गुंडा और लुच्चा।

वदमाशी—स्त्री० [फा० वद+अ० मआशी] १. वदमाश होने की अवस्था या भाव। २. वदमाश का कोई कार्य। ३. कोई ऐसा कार्य जो लडाई-झगडा कराने अथवा किसी के अहित के उद्देश्य से जानबूझकर किया जाय। ४. व्यभिचार।

वद-मिजाज—वि० [फा० वदमिजाज] [भाव० वद-मिजाजी] (व्यक्ति) जो चिड़चिड़े स्वभाव का हो।

वद-मिजाजी—स्त्री० [फा० वद+मिज़ाजी] बुरा स्वभाव। चिड-चिडापन।

वदरंग—वि० [फा०] १ बुरे रंगवाला। २. जिसका रंग उड गया हो या फीका पड गया हो। ३. विवर्ण। ४. खराब। खोटा। ५. (ताश के खेल में वह व्यक्ति) जिसके पास किसी विशिष्ट रंग का पत्ता न हो।

पु० १ वदरंगी। २. चौसर के खेल में, वह गोटी जो रंग न हुई हो; अर्थात् पुगनेवाले घर में न पहुँची हो।

वदरंगी—स्त्री० [फा०] १. रंग का फीकापन या भद्दापन। २. ताश के खेल में किसी विशिष्ट रंग के पत्ते न होने की स्थिति।

वदर—पु० [सं०√वद् (स्थिर होना)+अरच्] १. वेर का पेड या फल। २. कपास। ३. विनौला।

क्रि० वि० [फा०] दरवाजे पर। जैसे—दर-वदर भीख माँगना।

मुहा०—(किसी को) वदर करना=घर से निकालकर दरवाजे के वाहर कर देना। जैसे—किसी को शहर वदर करना अर्थात् इसलिए दरवाजे तक पहुँचा देना कि वह जहाँ चाहे चला जाय, परन्तु लौटकर न आवे। (किसी के नाम) वदर निकालना=किसी के जिम्मे रकम वाकी निकालना। किसी के हिसाव मे उसके नाम वाकी वताना।

वदर-नवीसी—स्त्री० [फा०] १. हिसाव-किताव की जाँच। २. हिसाव-किताव मे से गडवड़ रकमे छाँटकर अलग करना।

वदरा—स्त्री० [सं० वदर+टाप्] वराह क्राति का पौधा।

†पुं०=वादल (मेघ)।

वदराई†—स्त्री०=वदली (आकाश की मेघाच्छन्नता)।

वदरामलक—पु० [म० उपमि० स०] पानी आमला।

वद-राह—वि० [फा०] १ बुरे रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। २. दुष्ट। पाजी।

वदरि—पु० [स०√वद् (स्थिर होना)+अरि, वा०] १. वेर का पेड। २. उक्त पेड़ का फल।

वदरिका—स्त्री० [स० वदरी+कन्+, टाप्, ह्रस्व] १. वेर का पेड और उसका फल। वदरि। २. गंगा का उद्गम-स्थान तथा उसके आस-पास का क्षेत्र।

वदरिकाश्रम—पु० [सं० वदरिका-आश्रम, मध्य० स०] उत्तर प्रदेश के गढवाल जिले के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल जहाँ किसी समय नर-नारायण ऋषियों ने तपस्या की थी।

वदरी—स्त्री० [स० वदर+ङीप्] वेर का पेड और उसका फल। वदरि।

†स्त्री०=वदली।

स्त्री० [देश०] १. थैली। २. बोझ। ३ माल का वाहर भेजा जाना।

वदरीच्छद—पु० [स० व० स०] एक तरह का गंध द्रव्य।

वदरी-नाथ—पु० [स० ष० त०] १. वदरिकाश्रम नाम का तीर्थ। २ उक्त तीर्थ के देवता या उनकी मूर्ति।

वदरी-नारायण—पु० [स० ष० त०] वदरी-नाथ।

वदरी-पत्रक—पु० [स० व० स०,+कन्] एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। नखरी।

वदरीफला—स्त्री० [स० व० स०] नील शेफालिका का वृक्ष और उसका फल।

वदरीवण—पुं०=वदरीवन।

बदरी-वन—पु० [सं० ष० त०] १ वह स्थान जहाँ बेर के बहुत से पेड़ हैं। २ बदरिकाश्रम।

बदरुन—पु० [?] पत्थर या लकड़ी मे की जानेवाली एक प्रकार की जालीदार नक्काशी जिसमे बहुत से कोने होते है।

बदरोब—वि० [फा०+अ०] [भाव० बदरोबी] १ जिसका रोब होना तो चाहिए, फिर भी कुछ रोब न हो। २ तुच्छ। ३ भद्दा।

बदरौंह—वि० [फा० बदरौ] बदचलन। बदराह।
पु० [हिं० बादल] आकाश मे छाये हुए हलके बादल।

बदरौनक—वि० [फा० बदरौनक] १ जिसमे कोई शोभा न हो। श्री-हीन। २ उजाड़।

बदल—पु० [अ०] १. बदलने की क्रिया या भाव। २ बदले मे दी हुई वस्तु। ३. पलटा। प्रतिकार। ४ क्षतिपूर्ति।
पु० [हिं० बदलना] बदले हुए होने की अवस्था या भाव।

बद-लगाम—वि० [फा०] जिसके मुँह मे लगाम न हो, अर्थात् जिसे भला-बुरा कहने मे सकोच न हो। मुँहजोर। मुँहफट।

बदलना—अ०[अ० बदल=परिवर्तन+ना(प्रत्य०)] १ किसी चीज या बात का अपना पुराना रूप छोड़कर नया रूप धारण करना। एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप मे आना या होना। जैसे—ऋतु बदलना, रग बदलना, स्वभाव बदलना। २. किसी चीज, बात या व्यक्ति का स्थान किसी दूसरी चीज, बात या व्यक्ति को प्राप्त होना। जैसे—(क) इस महीने से कई गाड़ियो का समय बदल गया है। (ख) जिले के कई अधिकारी बदल गये हैं। (ग) कल सभा मे हमारा छाता (या जूता) किसी से बदल गया था। ३. आकार-प्रकार, गुण-धर्म, रूप-रग आदि के विचार से और का और, अथवा पहले से बिलकुल भिन्न हो जाना। जैसे (क) इतने दिनो तक पहाड़ पर (या विदेश मे) रहने से उसकी शकल ही बिलकुल बदल गई है।
सयो० क्रि०—जाना।
स० १ जो कुछ पहले से हो अथवा चला आ रहा हो, उसे हटाकर उसके स्थान पर कुछ और करना, रखना या लाना। जैसे—(क) कपड़े बदलना अर्थात् पुराने या मैले कपड़े उतारकर नये या साफ कपड़े पहनना। (ख) नौकर, पहरेदार या रसोइया बदलना, अर्थात् पुराने को हटाकर नया रखना। २ जो कुछ पहले से हो, उसे छोड़कर उसके स्थान पर दूसरा ग्रहण करना। जैसे—(क) उन्होने अपना पहलेवाला मकान बदल दिया है। (ख) रास्ते मे दो जगह गाड़ी बदलनी पड़ती है। ३ अपनी कोई चीज किसी को देकर उसके स्थान पर उससे दूसरी चीज लेना। विनिमय करना। जैसे—हमने दूकानदार से अपनी कलम (या किताब) बदल ली है।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।
४ किसी के आकार-प्रकार, गुण-धर्म, रग-रूप आदि मे कोई तात्त्विक या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करना। जैसे—(क) उन्होने मकान की मरम्मत क्या कराई है, उसकी शक्ल ही बिलकुल बदल दी है। (ख) विद्रोहियो ने एक ही दिन मे देश का सारा शासन बदल दिया। (ग) अब मैंने अपना पुराना विचार बदल दिया है।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।

बदलवाना—स० [हिं० बदलना का प्रे०] बदलने का काम दूसरे से कराना।

बदला—पु० [अ० बदल, हिं० बदलना] १. बदलने की क्रिया, भाव या व्यापार। २ वह अवस्था जिसमे एक चीज देकर उसके स्थान पर दूसरी चीज ली जाती है। आदान-प्रदान। विनिमय। जैसे—किसी की घड़ी (या छड़ी) से अपनी घड़ी (या छड़ी) का बदला करना। ३ किसी की कोई क्षति या हानि हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन या कोई चीज। क्षति-पूर्ति। जैसे—यदि आपकी पुस्तक मुझसे खो जायगी, तो मै उसका बदला आपको दे दूँगा।
पद—बदले या बदले में=रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए। किसी के स्थान पर। जैसे—हमारी जो कलम उनसे टूट गई थी, उसके बदले (या बदले मे) उन्होने यह नई कलम भेज दी है।
४ किसी ने जैसा व्यवहार किया हो, उसके साथ किया जानेवाला वैसा ही व्यवहार। प्रतिकार। पलटा। जैसे—सज्जन पुरुष बुराई का बदला भी भलाई से ही देते है। ५ जिसने जैसी हानि पहुँचाई हो, उसे भी अपने सतोषार्थ वैसी ही हानि पहुँचाने की भावना, अथवा पहुँचाई जानेवाली वैसी ही हानि।
मुहा०—(किसी से) बदला चुकाना या लेना=जिसने जैसी हानि पहुँचाई हो, उसे भी वैसी ही हानि पहुँचाना। अपने मनस्तोष के लिए किसी के साथ वैसा ही बुरा व्यवहार करना जैसा पहले उसने किया हो। जैसे—भले ही आज उन्होने मुझ पर झूठा अभियोग लगाया हो, पर मै भी किसी दिन उनसे इसका बदला लेकर रहूँगा।
६ किसी काम या बात से प्राप्त होनेवाला प्रतिफल। किसी काम या बात का वह परिणाम जो प्राप्त हो या भोगना पड़े। जैसे—तुम्हे भी किसी न किसी दिन इसका बदला मिलकर रहेगा।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।
७. वह धन या और कोई चीज जो किसी को कोई काम करने पर उसे प्रसन्न या सतुष्ट करने के लिए दिया जाय। एवज। मुआवजा। जैसे—उनकी सेवाओ का बदला यह सामान्य पुरस्कार नही हो सकता।

बदलाई—स्त्री० [हिं० बदलना+आई (प्रत्य०)] १ बदलने की क्रिया या भाव। अदल-बदल। विनिमय। २. बदले मे ली या दी जानेवाली चीज। ३ बदलने के लिए बदले मे दिया जानेवाला धन। ४ अपकार, हानि आदि करने पर किसी की की जानेवाली क्षति-पूर्ति।

बदलाना—स०=बदलवाना।
†अ०=बदलना (बदला जाना)।

बदली—स्त्री० [अ० बदल+ई (प्रत्य०)] १. बदले हुए होने की अवस्था या भाव। २ किसी सेवा के कर्मचारी को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेजा जाना। तबादला। स्थानातरण। (ट्रान्सफर)
स्त्री० [हिं० बादल] १ छोटा बादल। २ आकाश मे बादलो के छाये हुए होने की अवस्था या भाव।
† स्त्री०=बदरी (बेर का फल)। उदा०—भली विधि हो बदली मुख लावै।—केशव।

बदलौअल—स्त्री० [हिं० बदलना] १ अदल-बदल करने की क्रिया या भाव। २. बदले जाने की अवस्था या भाव।

बदलौवल—स्त्री०=बदलौअल।

बद-शक्ल—वि० [फा० बदशक्ल] [भाव० बदशक्ली] बुरी और भद्दी शक्ल-सूरत का। कुरूप। बेडौल।

बदशऊर—वि० [फा० बद+अ० शऊर] [भाव० बदशुऊरी] १ जो ठीक ढंग से तथा शिष्टतापूर्वक कोई काम करना न जानता हो। २ बदतमीज। ३. मूर्ख।

बदशगून—वि० [फा०] १. अशुभ। २ मनहूस।

बदशगूनी—स्त्री० [फा०] शगुन का खराब होना।

बदसलीका—वि० [फा० बद+अ० सलीक़] १. बदशुऊर। २. बदतमीज।

बदसलूकी—स्त्री०, [फा० बद+अ० सलूक] बुरा व्यवहार। अशिष्ट व्यवहार।

बदसूरत—वि० [फा० बद+अ० सूरत] [भाव० बद-सूरती] भद्दी सूरतवाला। कुरूप। बेडौल।

बदसूरती—स्त्री० [फा० बद+अ० सूरती] बद-सूरत होने की अवस्था या भाव।

ब-दस्त—अव्य० [फा०] किसी के हाथ से या द्वारा। मारफत। हस्ते।

बदस्तूर—अव्य० [फा०] १. जिस प्रकार पहले से होता आया हो, उसी प्रकार। २ जिस रूप में पहले रहा हो, उसी रूप में। बिना किसी परिवर्तन या हेर-फेर के। यथापूर्व। यथावत्।

बदहज़मी—स्त्री० [फा० बद+अ० हज़्मी] १. खाई हुई चीज हजम न होने की अवस्था या भाव। अजीर्ण। अपच। २. वह स्थिति जिसमें कोई चीज या बात ठीक तरह से नियंत्रित न रखी जा सके, और अनावश्यक रूप से प्रदर्शित की जाय। जैसे—अक्ल या दौलत की बद-हज़मी।

बदहवास—वि० [फा० +अ०] [भाव० बद-हवासी] १. जिसके होश-हवास ठिकाने न हों। बौखलाया हुआ। २ उद्विग्न। विकल। ३ अचेत। बेहोश।

बद-हाल—वि० [फा०+अ०] [भाव० बद-हाली] १. दुर्दशाग्रस्त। २ रोग से आक्रांत और पीड़ित। ३. कंगाल।

बदान—स्त्री० [हिं० बदना+आन (प्रत्य०)] १. बदने की क्रिया या भाव। २. बाजी या शर्त का बदा जाना।

अव्य० १ शर्त से। बाजी लगाकर। २. दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए।

बदा-बदी—स्त्री० [हिं० बदना] १. ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे से आगे निकलना अथवा एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते हों। २ दे० 'बदान'।

क्रि० वि० बढ़-बढ़कर। उदा०— बदा-बदी ज्यौं लेत है ए बदरा बदराह।—बिहारी।

बदाम—पुं०=बादाम।

बदामा—वि० [फा०] बादाम के आकार-प्रकार का। अंडाकार। (ओवल)

बदामी—पुं० [हिं० बादाम] कौडियाले की जाति का एक प्रकार का पक्षी। वि० बादाम के रंग का। बादामी।

बदि—स्त्री० [सं० वर्त्त=पलटा] किसी काम या बात का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला काम या बात। बदला।

अव्य० १. किसी काम या बात के पलटे या बदले में। २. किसी की खातिर से। ३. लिए। वास्ते।

†स्त्री० -बदी (कृष्ण पक्ष)।

बदी—स्त्री० [सं० बहुल में का ब+दिवस में का दि=बदि] चांद्र मास का कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख। 'सुदी' का विपर्याय। जैसे—भादों बदी अष्टमी।

स्त्री० [फा०] १. बद अर्थात् बुरे होने की अवस्था या भाव। खराबी। बुराई।

पद—नेकी-बदी=(क) उपकार और अपकार। भलाई और बुराई। (ख) घर-गृहस्थी में होनेवाले शुभ और अशुभ काम या घटनाएँ। (विवाह, मृत्यु आदि)। जैसे—वह नेकी-बदी में सबका साथ देते (या सबके यहाँ आते जाते) हैं।

२ किसी का किया जानेवाला अपकार या अहित। जैसे—इन्होंने तुम्हारे साथ कोई बदी तो नहीं की है।

३. किसी की अनुपस्थिति में की जानेवाली उसकी निंदा।

बदीत—वि० [सं० विदित] प्रसिद्ध। मशहूर। उदा०—जगत बदीत करी मन-मोहना।—मीरां।

बदूख†—स्त्री०=बंदूक।

बद्दर(ल)†—पुं०=बादल।

बद्दे—अव्य० [हिं० बद=पक्ष] वास्ते। लिए। खातिर। (पूरब) उदा०—मैंवल छयल या तुव से नाजा तोरे बद्दे।—नेवाजी।

पुं० वह मूल्य जिसमें दलालों की रकम भी सम्मिलित हो। (दलाल)

बदौलत—अव्य० [फा० ब०+अ० दौलत] १. कृपापूर्ण अवलंब या सहारे से। जैसे—उन्हें यह नौकरी आपकी ही बदौलत मिली थी। २. कारण या वजह से।

बद्दरा†—पुं०=बादल।

बद्दल†—पुं०=बादल।

बद्दू—पुं० [अ० बद्दू] अरब की एक असभ्य खानाबदोश जाति। वि० [फा० बद]=बदनाम।

बद्ध—वि० [सं० √बध्+क्त] १ जो बँधा हो या बाँधा गया हो। जकड़ा या बंधन में पड़ा हुआ। २ जो किसी प्रकार के घेरे में हो। जैसे—सीमा-बद्ध। ३. जिस पर कोई प्रतिबंध या रुकावट लगी हो। जैसे—नियम-बद्ध, प्रतिज्ञा-बद्ध। ४. जो किसी प्रकार निर्धारित या निश्चित किया गया हो। जैसे—आज्ञा-बद्ध। ५ अच्छी तरह जमाया या बैठा हुआ। स्थित। जैसे—पंक्ति-बद्ध। ६ जो पकड़कर कहीं रोक रखा गया है। जैसे—कारावद्ध। ७ किसी के साथ जुड़ा, लगा या सटा हुआ। जैसे—कर-बद्ध। ८ कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार किसी निश्चित और विशिष्ट रूप में लाया या रचा हुआ। जैसे—छंदोबद्ध, भाषा-बद्ध। ९. उलझा या फँसा हुआ। जैसे—प्रेम-बद्ध, मोह-बद्ध। १०. जिसकी गति, मार्ग या प्रवाह रुका हुआ हो। जैसे—कोष्ठ-बद्ध। ११. धार्मिक क्षेत्र में, जो सांसारिक बंधनों या मोह-माया में पड़ा हो। 'मुक्त' का विपर्याय।

बद्धक—वि० [सं० बद्ध+कन्] जो बाँध या पकड़कर मँगाया गया हो। पुं० बँधुआ। कैदी।

बद्ध-कक्ष—वि० [सं० ब० स०] बद्ध-परिकर। तैयार। प्रस्तुत।

बद्धकोष्ठ—पुं० [सं० ब० स०] पाखाना कम या न होने का रोग। कब्ज। कब्जियत।

वि० जिसे उक्त रोग हुआ हो। कब्ज से पीड़ित।

बद्ध-कोष्ठता—स्त्री० [स० बद्ध-कोष्ठ+तल्, टाप्] वह स्थिति जिसमे पाखाना कम या न होता हो। कब्जियत।
बद्ध-गुद—पु० [स० ब० स०] आँतो मे मल अवरुद्ध होने का रोग।
बद्ध-गुदोदर—पु० [सं० व० स०] पेट का एक रोग जिसमे हृदय और नाभि के बीच मे पेट कुछ बढ़ आता है और जिसके फलस्वरूप मल रुक-रुककर और थोडा-थोडा निकलता है।
बद्ध-ग्रह—वि० [स० व० स०] हठी।
बद्ध-चित्त—वि० [स० व० स०] जिसका मन किसी वस्तु या विषय पर जमा हो। एकाग्र।
बद्ध-जिह्व—वि० [स० व० स०] जो चुप्पी साधे हो। मौन।
बद्ध-दृष्टि—वि० [सं० व० स०] जिसकी दृष्टि किसी पर जमी या लगी हो।
बद्ध-परिकर—वि० [स० व० स०] जो कमर वाँधे हुए कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्दत। तत्पर।
बद्ध-प्रतिज्ञ—वि० [स० व० स०] प्रतिज्ञा से बँधा हुआ। वचन-बद्ध।
बद्ध-फल—पु० [सं० व० स०] करज।
बद्ध-भूमि—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ मकान बनाने के लिए ठीक की हुई भूमि। २ मकान का पक्का फर्श।
बद्ध-मुष्टि—वि० [स० व० स०] १ जिसकी मुट्ठी बँधी रहती हो; अर्थात् जो निर्धनो को भिक्षा, ब्राह्मणो को दान आदि न देता हो। २ बहुत कम खरच करनेवाला। कजूस।
बद्ध-मूल—वि० [स० व० स०] १ जिसने जड पकड ली हो। २ जो मूलत. दृढ और अटल हो गया हो।
बद्ध-मौन—वि० [स० ब० स०] चुप्प। मौन।
बद्ध-रसाल—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का बढिया आम।
बद्ध-राग—वि० [स० ब० स०] किसी प्रकार के राग या प्रेम मे बँधा हुआ। अनुरक्त।
बद्ध-वर्चस—वि० [स० व० स०] मल-रोधक। कब्जियत करनेवाला।
बद्ध-वाक्—वि० [स० व० स०] वचन-बद्ध।
बद्ध-वैर—वि० [स० ब० स०] जिसके मन मे किसी के प्रति पक्का वैर हो।
बद्ध-शिख—वि० [स० व० स०] १ जिसकी शिखा या चोटी बँधी हुई हो। २ अल्पवयस्क।
पु० छोटा बच्चा। शिशु।
बद्ध-शिखा—स्त्री० [स० बद्ध-शिख+टाप्] भूम्यामलकी।
बद्ध-सूतक—पु० [स० कर्म० स०] रसेश्वर दर्शन के अनुसार पारा जो अक्षत, लघुद्रावी, तेजोविशिष्ट, निर्मल और गुरु कहा गया है।
बद्ध-स्नेह—वि० [स० ब० स०] किसी के स्नेह मे बँधा हुआ। अनुरक्त। आसक्त।
बद्धांजलि—वि० [स० बद्ध-अजलि, ब० स०] सम्मान-प्रदर्शन के लिए जिसने हाथ जोडे हो। कर-बद्ध।
बद्धानुराग—वि० [स० बद्ध-अनुराग, ब० स०]=आसक्त।
बद्धी—स्त्री० [स० बद्ध+हि० ई (प्रत्य०)] १ वह जिससे कुछ कसा या बाँधा जाय। जैसे—डोरी, तस्मा, फीता आदि। २ माला या सिकडी के आकार का चार लडो का एक गहना जिसकी दो लडे तो गले मे होती है और दो लड़ें दोनो कधो पर से जनेऊ की तरह बाँहो के नीचे होती हुई छाती और पीठ तक लटकी रहती है। ३ किसी लबी चीज की चोट से शरीर पर पडनेवाला लबा चिह्न या निशान। साँट। जैसे—बेंत की मार से शरीर पर बद्धियाँ पडना।
क्रि० प्र०—पडना।
बद्धोदर—पु० [स० बद्ध-उदर, ब० स०] बद्ध-गुदोदर रोग। बद्ध-कोष्ठ।
बध—पु०=वध।
†स्त्री०=बढती (अधिकता)।
बधइया†—स्त्री०=बधाई।
बध-गराड़ी—स्त्री० [हिं० बाध+गराडी] रस्सी बटने का एक उपकरण।
बधना—स० [स० वधू+हिं०ना(प्रत्य०)] वध या हत्या करना। मार डालना।
पु० [सं० वर्द्धन] मुसलमानो का एक तरह का टोटीदार लोटा।
पु० [देश०] लाख की चूडियाँ बनानेवालो का एक औजार।
बध-भूमि—स्त्री० [स० वध-भूमि] १ वध करने का नियत स्थान। २ वह स्थान जहाँ अपराधियो को प्राण-दड दिया जाता हो।
बधवा†—पु० १=बधावा। २ दे० 'बधाई'।
बधाई—स्त्री० [स० वर्द्धन, प० वधना=बढना] १ बढने की अवस्था, क्रिया या भाव। बढती। वृद्धि। २ किसी की उन्नति या भाग्योदय होने अथवा किसी के यहाँ कोई मागलिक अथवा शुभ कार्य होने पर प्रसन्नतापूर्वक उसका किया जानेवाला अभिनदन और उसके प्रति प्रकट की जानेवाली शुभ-कामना। यह कहना कि हम आपके अमुक अच्छे काम या बात से बहुत प्रसन्न हुए हैं, और आपकी इसी प्रकार की उन्नति या वृद्धि की हार्दिक कामना करते है। मुबारकबाद। (काग्रे-चुलेशनस्) जैसे—किसी के यहाँ पुत्र का जन्म या विवाह होने पर या किसी के प्रतिष्ठित पद पर पहुँचने अथवा कोई बहुत बडा काम करने या सफल-मनोरथ होने पर उसे बधाई देना।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।
३ घर मे पुत्र जन्म, विवाह आदि शुभ कृत्यो के अवसर पर होनेवाला आनद-मगल या उसके उपलक्ष मे होनेवाला उत्सव। ४ उक्त अवसरो पर होनेवाले नृत्य, गीत आदि।
क्रि० प्र०—गाना।—बजना।—बजाना।
५. वह उपहार या धन जो उक्त प्रकार के आनदमय अवसरो पर अपने आश्रितो, छोटो या निकटस्थ सबधियो को अपनी प्रसन्नता के प्रतीक के रूप मे दिया या बाँटा जाता है। जैसे—उन्होने अपने सबधियो को दो दो रुपए बधाई के दिये है।
क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।
बधाऊ†—पु०=१. बधाई। २=बधावा।
बधाना—स० [हिं० बधना का प्रे०] बधने या हत्या करने का काम दूसरे से कराना।
†अ० [हिं० बधिया] (बैल आदि का) बधिया किया जाना।
†स०=बढाना।
बधाया—पु० [हिं० बधाई] १ बधाई। २ बधावा।
बधावड़ा†—पु०=बधावा।
बधावना†—स०=बधाना।
पु० दे० 'बधाई'।

बधावा—पु० [हिं० बधाई] १ बधाई। २. शुभ अवसर पर होनेवाला आनन्दोत्सव या गाना-बजाना।
क्रि० प्र०—बजना।
३. वह उपहार या भेट जो गाजे-बाजे के साथ कुछ विशिष्ट मागलिक अवसरो पर सबधियो के यहाँ भेजी जाती है। ४. इस प्रकार उपहार ले जानेवाले लोग।

बधिक—पु० [स० घातक] १. बध करने या मार डालनेवाला। हत्यारा। २ वह जो अपराधियो के प्राण लेता हो। फाँसी देने या सिर काटनेवाला। जल्लाद। ३ व्याध। बहेलिया।

बधिया—वि० [हिं० बध=मारना] (वह बैल या कोई नर पशु) जिसका अडकोश कुचल या निकाल लिया गया हो और फलत उसे पड कर दिया गया हो। नपुसक किया हुआ चौपाया। खस्सी। आख्ता। 'आँडू' का विपर्याय।
पु० उक्त प्रकार का बैल जिस पर प्राय. बोझ लादकर ले जाते हैं।
मुहा०—बधिया बैठना=इतना अधिक घाटा होना कि कारबार बद हो जाय।
†पु० [?] एक प्रकार का गन्ना।

बधियाना—स० [हिं० बधिया] कुछ विशिष्ट नर पशुओ का शल्य से अडकोश निकालकर उन्हे बधिया करना। बधिया बनाना।

बधिर—पु० [स०√बन्ध् (बाँधना)+किरच्, न-लोप][भाव० बधिरता] जिसमे सुनने की शक्ति न हो या न रह गई हो। बहरा।

बधिरता—स्त्री० [स० बधिर+तल्×,टाप्] श्रवण-शक्ति का अभाव। बहरापन। बधिर होने की अवस्था या भाव।

बधिरित—भू० कृ० [स० बधिर+क्विप्+क्त] बहरा किया या बनाया हुआ।

बधिरिमा (मन्)—स्त्री० [स० बधिर+इमनिच्] बधिरता। बहरापन।

बधू—स्त्री० [स०√बन्ध् (बाँधना)+ऊ, न लोप]=वधू।

बधूक—पु०=बधूक।

बधूटी—स्त्री० [स० वधू+टि+ङीष्] १ पुत्र की स्त्री। पतोहू। २ सौभाग्यवती स्त्री। ३. नई व्याही हुई स्त्री।

बघूरा†—पु०=बगूला (बवडर)।

बधैया—स्त्री०=बधाई।

बध्य—वि० [सं० वध्य] १ जिसे वध किया जा सके या जो वध किये जाने को हो। २ वध किये या मारे जाने के योग्य।

बन—पु० [स० वन] १ वह पर्वतीय या मैदानी क्षेत्र जिसमे न तो मनुष्य रहते हो और न जिसमे खेती-बारी होती हो, बल्कि जिसमे प्रकृति-प्रदत्त पेड़-पौधो तथा जगली जानवरो की बहुलता हो। जगल। कानन।
पद—बन की धातु=गेरु नामक लाल मिट्टी।
२. समूह। ३. जल। पानी। ४. उपवन। बगीचा। ५ निराने या नीदने की मजदूरी। निरौनी। निंदाई। ६ वह अन्न जो किसान लोग मजदूरो को खेत काटने की मजदूरी के रूप मे देते हैं। ७ कपास का पौधा। उदा०—सनु सूक्यौ, बीतौ बनौ, ऊखौ लई उखारि।—बिहारी। ८ वह भेट जो किसान लोग अपने जमीदार को किसी उत्सव के उपलक्ष मे देते हैं। शादियाना। ९ दे० 'वन'।
पु०=बद।

स्त्री० [हिं० बनाना] १. सज-धज। बनावट। २ बाना। भेस।

बन-आलू†—पु० [हिं० वन+आलू] जमीकद की जाति का एक कद।

बनउर†—पु० १.=बिनौला। २.=ओला।

बन-कंडा—पु० [हिं० वन+कंडा] वह कडा या गोहरी जो पाथकर न बनाई गई हो बल्कि जगल मे गाय-बैल आदि के गोबर के सूख जाने पर आप से आप बनी हो।

बनक—स्त्री० [सं० वन+क (प्रत्य०)] वन की उपज। जगल की पैदावार। जैसे—गोंद, लकडी, शहद आदि।
स्त्री० [?] एक प्रकार की साटन।
†स्त्री०=बानक।

बन-ककड़ी—स्त्री० [स० वन-कर्कटी] एक पौधा जिसका गोद दवा के काम आता है।

बनकटी—स्त्री० [हिं० वन (जगल)+काटना] १. जगल काटकर उसे आबाद करने, खेती-बारी अथवा रहने के योग्य बनाने का हक। २. एक प्रकार का पहाड़ी बाँस जिससे टोकरे बनाये जाते हैं।

बनकर—पु० [स० वनकर] १ शत्रु के चलाये हुए हथियार को निष्फल करने की एक युक्ति। २. सूर्य। (डिं०)
पु० [स० वन+कर] वह कर जो जगल मे होनेवाली वस्तुओं के क्रय-विक्रय पर लगता है।

बन-कल्ला—पु० [हिं० बन+कल्ला] एक प्रकार का जगली पेड।

बन-कस—पु० [हिं० वन+कुश] एक प्रकार की घास जिसे बनकुस, बँभनी, मोप और बाभर भी कहते है। इससे रस्सियाँ बनाई जाती हैं।

बनकोरा—पु० [देश०] लोनिया का साग। लोनी।

बनखंड—पु० [स० वनखड] १. वन का कोई खण्ड या भाग। २ वन्य प्रदेश।

बनखंडी—स्त्री० [हिं० वन+खड=टुकडा] १ वन का कोई खड या भाग। २ छोटा जंगल या वन।
वि० वन या जगल मे रहने या होनेवाला।

बनखरा—पु० [हिं० वन+खरा] वह भूमि जिसमे पिछली फसल मे कपास बोई गई हो।

बनखोर—पु० [देश०] कौंर नामक वृक्ष।

बनगाव—पु० [हिं० वन+फा० गाव=हिं० गौ] १ एक प्रकार का बडा हिरन जिसे रोझ भी कहते है। २ एक प्रकार का तेंदू (वृक्ष)।

बनगोभी—स्त्री० [हिं० वन+गोभी] एक तरह की जगली घास।

बनचर—पु० [स० वनचर] १ जगल मे रहनेवाला पशु। वन्य पशु। २ वन या जगल मे रहनेवाला आदमी। जगली मनुष्य। ३ जल मे रहनेवाले जीव-जन्तु।
वि० वन मे रहनेवाला।

बनचरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जगली घास जिसकी पत्तियाँ ज्वार की पत्तियो की तरह होती ह। बरो।
पुं०=बनचर।
वि० बनचर का। बनचर-सम्बन्धी। जैसे—बनचरी रग-ढग।

बनचारी—वि० [स० वनचारिन्] वन मे घूमने-फिरने या रहनेवाला।
पुं० १ वन मे रहनेवाले; पशु, मनुष्य आदि। २. जल मे रहनेवाले जीव-जन्तु। जलचर।

बनचौर—स्त्री० [स० वन+चमरी] पर्वतीय प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की गाय जिसकी पूंछ की चँवर वनाई जाती है। सुरागाय।

बनचौरी—स्त्री०=वनचौर।

बनज—पु० [स० वनज] जगल मे होने या रहनेवाला जीव। वि० दे० 'वनज'।
†पु०=वाणिज्य (व्यापार)।

बनजना*—स० [हिं० वनज] १ व्यापार करना। २ किसी के साथ किसी तरह की वात-चीत या लेन-देन निश्चित करना। जैसे—किसी की लडकी के साथ अपना लडका बनजना (अर्थात् व्याह पक्का करना)। स० १ व्यापार करने के लिए कोई चीज खरीदना।
†२ किसी को इस प्रकार वश मे करना कि मानो उसे मोल ले लिया गया हो।

बनजर—स्त्री०=वजर।

बनजरिया—स्त्री० [हिं० वन+जारना=जलाना] भूमि का वह टुकडा जो जगल को जला या काटकर के खेती-वारी के लिए उपयुक्त बनाया गया हो।

बनजात—पु० [स० वनजात] कमल।

बनजारा—पु० [हिं० वनिज+हारा] १ वह व्यक्ति जो बैलो पर अन्न लादकर वेचने के लिए एक देश से दूसरे देश को जाता है। टांडा लादनेवाला व्यक्ति। टँडैया। टँडवरिया। वजारा। २ व्यापारी। सौदागर।

बनजी—पु० [स० वाणिज्य] १ व्यापार या रोजगार करनेवाला। सौदागर। २ वाणिज्य। व्यापार।

बनज्योत्स्ना—स्त्री० [स० वनज्योत्सना] माधवी लता।

बनड़ा—पु० [?] विलावल राग का एक भेद। यह झूमडा ताल पर गाया जाता है।
पु० [हिं० वना=दूल्हा] विवाह के समय वर-पक्ष मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बनड़ा जैत—पु० [हिं० वनडा+स० जयत] एक शालक राग जो रूपक ताल पर गाया जाता है।

बनड़ा-देवगरी—पु० [हिं० वनडा+स० देवगिरि] एक शालक राग जो एकताले पर गाया जाता है।

बनत—स्त्री० [हिं० वनना+त (प्रत्य०)] १ किसी चीज के वनने या वनाये जाने का ढग, प्रक्रिया या भाव। २ किसी चीज की वनावट या रचना का विशिष्ट ढग या प्रकार। अभिकल। भात। (डिजाइन) ३ पारस्परिक अनुकूलता या सामजस्य। मेल। ४ गोटे-पट्टे की तरह की एक प्रकार की पतली पट्टी। बाँकडी।

बनताई†—स्त्री० [हिं० वन+ताई (प्रत्य०)] १. वन या जगल की सघनता। २ वन की भयकरता।

बनतुरई—स्त्री० [हिं० वन+तुरई] वदाल।

बन-तुलसी—स्त्री० [स० वन+तुलसी] वर्वर नाम का पौधा जिसकी पत्ती और मजरी तुलसी की-सी होती है। वर्वरी।

बनद—पु० [स० वनद] बादल। मेघ।
वि० जल देनेवाला। जलद।

बनदाम—स्त्री० [स० वनदाम] वन माला।

बनदेवी—स्त्री० [स० वनदेवी] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु—स्त्री० [स० वनधातु] गेरु या और कोई रगीन मिट्टी।

बनना—अ० [स० वर्णन, प्रा० वण्णन=चित्रित होना, रचा जाना] १. अनेक प्रकार के उपकरणो, तत्त्वो आदि के योग से कोई नई चीज तैयार होना अथवा किसी नये आकार या रूप मे प्रस्तुत होकर अस्तित्व मे आना। जैसे—कल-कारखानो मे कागज, चीनी या धातुओ की चीजें बनाना।
पद—वना वनाया=(क) जो पहले से वनकर ठीक या तैयार हो। जैसे—वना-वनाया कुरता मिल गया। (ख) जिसमे पहले से ही पूर्णता हो, कोई कोर-कसर न हो। उदा०—मैं याचक वना-वनाया था।—मैथिलीशरण।
मुहा०—(किसी का) वना रहना=ससार मे कुशलतापूर्वक जीवित रहना। जैसे—ईश्वर करे यह वालक वना रहे। **(किसी का किसी स्थान पर) वना रहना**=उपस्थित या वर्तमान रहना। जैसे—आप जव तक चाहे तव तक यहाँ वने रहे।
२ किसी पदार्थ का ऐसे रूप मे आना जिसमे वह व्यवहार मे आ सके। काम मे आने के योग्य होना। जैसे—दवा या भोजन वनना। ३. किसी प्रकार के रूप-परिवर्तन के द्वारा एक चीज से दूसरी नई चीज तैयार होना। जैसे—चीनी से शरवत वनना, रुई से डोरा या सूत वनाना। ४ उक्त के आधार पर, पारस्परिक व्यवहार मे किसी के साथ पहलेवाले भाव या सवध के स्थान पर कोई दूसरा नया भाव या सवध स्थापित होना। जैसे—(क) मित्र का शत्रु, अथवा शत्रु का मित्र वनना। (ख) किसी का दत्तक पुत्र या मुँह-वोला भाई वनना। ५ आविष्कार आदि के द्वारा प्रस्तुत होकर सामने आना। जैसे—अव तो नित्य सैकडो तरह के नये नये यत्र वनने लगे है। ६ पहले की तुलना मे अधिक अच्छी, उन्नत या सतोषजनक अवस्था या दशा मे आना या पहुँचना। जैसे—वे तो हमारे देखते देखते वने है।
पद—वनकर=अच्छी तरह। पूर्ण रूप से। भली-भाँति। उदा०—मनमोहन से विछुरे इतही वनि कै न अवै दिन द्वै गये है। —पद्माकर। **वन ठनकर**=खूव वनाव-सिगार या सजावट करके। जैसे—आज-कल तो वह खूव वन-ठनकर घर से निकलते है।
७ किसी विशिष्ट प्रकार का अवसर, योग या स्थिति प्राप्त होना।
मुहा०—वन आना=अच्छा अवसर, योग या स्थिति प्राप्त होना। जैसे—उन लोगो के लडाई-झगडे मे तुम्हारी खूव वन आई है। **प्राणों पर आ वनना**=ऐसी स्थिति आ पहुँचना कि प्राण जाने का भय हो। जान जाने की नौवत आना। जैसे–तुम्हारे अत्याचारो (या दुर्व्यवहारो) से तो मेरे प्राणो पर आ वनी है। **(किसी का) कुछ वन वैठना**=वास्तविक अधिकार, गुण, योग्यता आदि का अभाव होने पर भी किसी पद या स्थिति का अधिकारी वन जाना अथवा यह प्रकट करना कि हम उपयुक्त या वास्तविक अधिकारी हैं। जैसे—वह कुछ सरदारो को अपनी ओर मिलाकर राजा (या शासक) वन वैठा। (हिं० के हो वैठना' मुहा० की तरह प्रयुक्त।)
८ किसी काम का ऐसी स्थिति मे होना कि वह पूरा या सम्पन्न हो सके। सभव होना। जैसे—जिस तरह वने, उसकी जान वचाओ। ९. किसी प्रक्रिया से ऐसे रूप मे आना जो वहुत ही उपयुक्त, ठीक या सुदर जान पडे। जैसे—(क) नई वेल टँकने से यह साड़ी वन गई है। (ख) दफ्ती

पर चढने और हाशिया लगने से यह तस्वीर बन गई है। १० किसी प्रकार के दोष, विकार आदि दूर किये जाने पर या मरम्मत आदि होने पर किसी चीज का ठीक तरह से काम मे आने के योग्य होना। जैसे—पाँच रुपये मे यह घडी बनकर ठीक हो जायगी। ११. किसी पद या स्थान पर नियुक्त या प्रतिष्ठित होकर नये अधिकार, मर्यादा आदि से युक्त होना। जैसे—किसी कार्यालय का व्यवस्थापक (या मदिर का पुजारी) बनना।

मुहा०—बन बैठना=अधिकार ग्रहण करके या रूप धारण करके किसी पद या स्थान पर आसीन होना। जैसे—उनके मरते ही उनका भतीजा मालिक बन बैठा।

१२. आर्थिक क्षेत्र मे, किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ होना। जैसे—चलो, इस सौदे मे १०) बन गये। १३ आपस मे यथेष्ट मित्रता के भाव से और घनिष्ठतापूर्वक आचरण, निर्वाह या व्यवहार होना। जैसे—इधर कुछ दिनो से उन दोनो मे खूब बनने लगी है। १४ अभिनय आदि मे किसी पात्र की भूमिका मे दर्शको के सामने आना। किसी का रूप धारण करना। जैसे—मैं अकबर बनूँगा और तुम महाराणा प्रताप बनना। १५ समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने आपको अधिक उच्च कोटि का या योग्य सिद्ध करने के लिए प्राय गभीर मुद्रा धारण करके औरो से कुछ अलग अलग रहना। जैसे—अब तो बाबू साहब हम लोगो से बनने लगे है। १६. किसी के बढावा देने या बहकाने पर अपने आपको अधिक योग्य या समर्थ समझने लगना, और फलत दूसरो की दृष्टि मे उपहासास्पद तथा मूर्ख सिद्ध होना। जैसे—आज पडितो की सभा मे शास्त्री जी खूब बने।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय सकर्मक रूप मे ही अधिक होता है। (जैसे—शास्त्री जी खूब बनाये गये।) अकर्मक रूप मे अपेक्षया कम ही होता है।

बनिनि†—स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २ बनाव-सिंगार। ३. सजावट।

बननिधि—पु० [स० वननिधि] समुद्र।

बन-पति—पु० [स० वनपति] सिंह। शेर।

बन-पथ—पु० [स० वनपथ] १ समुद्र। २. ऐसा रास्ता जिसमे नदियाँ या जलाशय बहुत पडते हो। ३ ऐसा रास्ता जिसमे जगल बहुत पडते हों।

बन-पाट—पु० [हिं० बन+पाट] जगली सन। जगली पटुआ।

बन-पाती—स्त्री०=वनस्पति।

बन-पाल—पु० [स० वनपाल] वन या बाग का रक्षक। माली।

बन-पिंडालू—पु० [हिं० बन+पिंडालू] एक प्रकार का मझोला जगली वृक्ष। इसकी लकडी कघी, कलमदान या नक्काशीदार चीजें बनाने के काम आती है।

बनप्रिय—पु० [स० वनप्रिय, ब० स०] कोयल। कोकिल।

बन-पती†—स्त्री०=वनस्पति। उदा०—भएउ बसत राती बनपती।—जायसी।

बन-फूल—पु० [हिं० बन+फूल] जगली वृक्षो के फूल।

बन-फ्शई—वि० [फा०] १. नीले रग का। २. हलका हरा।

पु० उक्त प्रकार का रग।

बनफ्शा—पु० [फा० बनफ्शा] एक प्रकार की वनस्पति जो नेपाल, कश्मीर और हिमालय पर्वत के अनेक स्थानो मे होती और औषध के काम आती है।

बनबकरा—पु० [हिं० बन+बकरा] पर्वतीय प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का बकरा।

बन-बास—पु० [सं० वनवास] १. वन मे जाकर रहने या बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन भारत मे, एक प्रकार का देश-निकाले का दड।

बन-बासी—वि० [हिं० बनवास] १. वन मे रहनेवाला। जगली। २. वन मे जाकर बसा हुआ। ३. जिसे वनवास (दड) मिला हो।

बनवाहन—पु० [स० वनवाहन] जलयान। नाव। नौका।

बन-बिलार†—पु०=बन-बिलाव।

बनबिलाव—पु० [हिं० बन+बिलाव=बिल्ली] बिल्ली की तरह का, या उससे कुछ बडा और मटमैले रग का एक जगली हिंसक जतु जो प्राय. झाडियो मे रहता और चिड़ियाँ पकडकर खाता है। कुछ लोग इसे इसलिए पालते भी हैं कि उससे चिडियो का शिकार करने मे बहुत सहायता मिलती है। इसके कानो का ऊपरी या बाहरी भाग काला होता है, इसी लिए इसे 'स्याहगोश' भी कहते हैं।

बनबेर—पुं० [हिं०] एक प्रकार का जगली बेर।

बन-मानुस—पु० [हिं० बन+मानुष] बदरो से कुछ उन्नत और मनुष्य से मिलते-जुलते जगली जतुओ का वर्ग जिसमे गोरिल्ला, चिंपैंजी, ओरग, ऊटग आदि जन्तु है।

बनमाल—स्त्री०=बनमाला।

बनमाला—स्त्री० [स० वनमाला] १. जगली फूलो को पिरो कर बनाई हुई माला। २. पैरो तक लबी वह माला जो तुलसी की पत्तियो और कमल, परजाते और मदार के फूलो को पिरो कर बनाई जाती है।

बनमाली—वि० [स० वनमाली] जो वनमाला धारण करता या धारण किये हुए हो।

पु० १ श्रीकृष्ण। २ नारायण। विष्णु। ३. बादल। मेघ। ४. ऐसा प्रदेश जिसमे बहुत से वन या जगल हों।

बनमुरगा—पु० [हिं० बन+फा० मुर्ग] [स्त्री० बनमुर्गी] एक तरह का जगली मुरगा जो पालतू मुर्गों की अपेक्षा कुछ बडा होता है।

बनमुरगिया—स्त्री० [हिं० बन+फा० मुर्ग+हिं० इया (प्रत्य०)] हिमालय की तराई मे रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका गला और छाती सफेद और सारा शरीर आसमानी रग का होता है।

बनमुर्गी—स्त्री० [हिं० +फा०] कुकुट्टी नामक जगली चिडिया।

बनरखा—पु० [हिं० बन+रखना=रक्षा करना] १ जगल और उसमे की संपत्ति की रक्षा करनेवाला व्यक्ति। २ एक जगली जाति जो पशु-पक्षी पकडने और मारने का काम करती है।

बनरा—पु० [हिं० बनना] [स्त्री० बनरी] १. वर। दूल्हा। २. विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

†पु०=बदर।

बनराज—पु० [स० वनराज, ष० त०] १ वन का राजा अर्थात् सिंह। २. बहुत बडा वृक्ष।

†पुं०=वृंदावन।

बनराय†—पुं०=वनराज।

बनराह†—पुं० [सं० वन+राज] घना या बड़ा जंगल।

बनरी—स्त्री० [हिं० बनरा का स्त्री०] नई ब्याही हुई वधू। दुल्हन। †स्त्री०=वंदरी (मादा बंदर)।

बनरीठा—पुं० [हिं० वन+रीठा] एक प्रकार का जंगली रीठे का वृक्ष जिसके बीजों से लोग कपड़े तथा केश धोते है।

बनरीहा—स्त्री० [हिं० वन+रीहा (रीस) या सं० रुह=पौधा] एक प्रकार का पौधा जिसकी घास को बटकर रस्सी बनाई जाती है। रीसा।

बनरुह—पुं० [सं० वनरुह] १. जंगली पेड़। २ कमल।

बनरुहिया—स्त्री० [सं० वनरुह] एक तरह का पौधा और उसकी कपास।

बनरोह—पुं० [हिं०] एक प्रकार का चौपाया जो देखने मे बड़ी छिपकली की तरह होता है। (पैंगेलिन)

बनवना†—स०=बनाना।

बनवरा—पुं०=बिनौला।

बनवसन—पुं० [सं० वनवसन] वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।

बनवा†—पुं० [सं० वन=जल+वा (प्रत्य०)] पनडुब्बी नामक जल-पक्षी। पुं० [?] एक प्रकार का बछनाग (विष)।

बनवाना—स० [हिं० बनाना का प्रे० रूप] बनानेका काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ बनाने मे प्रवृत्त करना।

बनवारी—पुं०=वनमाली (श्रीकृष्ण)।

बनवासी—वि०, पुं०=वनवासी।

बनवैया—वि० [हिं० बनाना+वैया (प्रत्य०)] बनानेवाला। वि० [हिं० बनवाना+वैया (प्रत्य०)] बनवानेवाला।

बनसपती—स्त्री०=वनस्पति।

बनसार—पुं० [सं० वन+शाला] समुद्र तट का वह स्थान जहाँ से जहाज पर चढ़ा या जहाँ पर जहाज से उतरा जाता है।

बनसी†—स्त्री० [हिं० बसी] १ बाँसुरी। २. मछलियाँ फँसाने की कटिया।

बनस्थली—स्त्री०=वनस्थली (वन की भूमि)।

बनस्पति—पुं० =वनस्पति।

बनहटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी नाव।

बनहरदी—स्त्री० [सं० वन हरिद्रा] दारुहल्दी।

बना—पुं० [?] एक प्रकार का छंद जिसमे १०, ८ और १४ के विश्राम से ३२ मात्राएँ होती हैं। इसे 'दंडकला' भी कहते हैं। †पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।

बनाइ*—अव्य० [हिं० बनाकर=अच्छी तरह] १ अच्छी तरह। भली-भाँति। (दे० 'बनाना' के अन्तर्गत पद 'बनाकर') २ अधिकता से। ३ निपट। बिलकुल।

बनाउ†—पुं०=बनाव।

बनाउरि†—स्त्री०=बाणावलि (बाणो की पंक्ति)।

बनाग्नि—स्त्री० [सं० वनाग्नि] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

बनात—स्त्री० [हिं० बनाना] [वि० बनाती] एक प्रकार का बढ़िया तथा रंगीन ऊनी कपड़ा।

बनाती—वि० [हिं० बनात+ई (प्रत्य०)] १ बनात-संबंधी। २ बनात का बना हुआ।

बनान—स्त्री० [हिं० बनाना] बनाने की क्रिया, ढंग या भाव। बनावट।

बनाना—स० [हिं० बनना का स०] १. किसी चीज को अस्तित्व देना या सत्ता मे लाना। रचना। जैसे—(क) ईश्वर ने यह संसार बनाया है। (ख) सरकार ने कानून बनाया है। २ भौतिक वस्तुओं के संबंध मे, उन्हे तैयार या प्रस्तुत करना। रचना। जैसे—(क) मकान या कारखाना बनाना। (ख) गंजी या मोजा बनाना। ३. अभौतिक तथा अमूर्त वस्तुओ के संबंध मे, विचार-जगत से लाकर प्रत्यक्ष करना। जैसे—कविता बनाना।

पद—बनाकर= खूब अच्छी तरह। भली-भाँति। जैसे—आज हम बनाकर तुम्हारी खबर लेंगे।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) बनाये रखना=अच्छी दशा मे अथवा ज्यों का त्यो रखना। रक्षापूर्वक रखना। **(किसी व्यक्ति को) बनाये रखना**= सकुशल, जीवित या वर्तमान रखना। जैसे—ईश्वर आपको बनाये रखे। (आशीर्वाद) (ख) किसी को अनुकूल या अपने प्रति दयालु रखना। जैसे—उन्हे बनाये रखने से तुम्हारा लाभ ही होगा। ४. ऐसे रूप मे लाना कि वह ठीक तरह से काम मे आ सके अथवा भला और सुन्दर जान पड़े। ५ किसी विशिष्ट स्थिति मे लाना। जैसे—उन्होने अपने आपको बना लिया है, अथवा अपने लड़के को बना दिया है।

मुहा०—बनाये न बनना=बहुत प्रयत्न करने पर भी कार्य की सिद्धि या सफलता न होना। जैसे—अब हमारे बनाये तो नही बनेगा। उदा०—जौं नहिं जाऊँ रहइ पछितावा। करत विचार न बनइ बनावा।—तुलसी।

६. आर्थिक क्षेत्र मे, उपार्जित या प्राप्त करना। लाभ करना। जैसे—उन्होने कपड़े के रोजगार मे लाखो रुपए बना लिए है। ७. किसी पदार्थ के रूप आदि मे कुछ विशिष्ट क्रियाओ के द्वारा ऐसा परिवर्तन करना कि वह नये प्रकार से काम मे आ सके। जैसे—गुड़ से चीनी बनाना; चावल से भात बनाना, आटे से रोटी बनाना। ८ एक विशिष्ट रूप से दूसरे विपरीत या विरोधी रूप मे लाना। जैसे—(क) मित्र को शत्रु अथवा शत्रु को मित्र बनाना। (ख) झूठ को सच बनाना। ९ दोष, विकार आदि दूर करके उचित या उपयुक्त दशा या रूप मे लाना। जैसा होना चाहिए, वैसा करना। जैसे—पछोड़ या फटककर अनाज बनाना। १० जो चीज किसी प्रकार बिगड़ गई हो, उसे ठीक करके ऐसा रूप देना कि वह अच्छी तरह काम दे सके। मरम्मत करना। जैसे—कलम बनाना, घड़ी बनाना। ११. किसी प्रकार का आविष्कार करके कोई नई चीज तैयार या प्रस्तुत करना। जैसे—नई तरह का इंजन या हवाई जहाज बनाना। १२ अंकन, लेखन आदि की सहायता से नई रचना प्रस्तुत करना। जैसे—गजल या तसवीर बनाना। १३. किसी को किसी पद या स्थान पर आसीन अथवा प्रतिष्ठित करके अधिकार, प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि से युक्त करना। जैसे—(क) किसी को मठ का महंत या सभा का सभापति बनाना। (ख) अपना प्रतिनिधि बनाना। १४. किसी के साथ कोई नया पारिवारिक संबंध स्थापित करना। जैसे—किसी को अपना दामाद, भाई या लड़का बनाना। १५ बात-चीत

में किसी की प्रशंसा करते हुए या उसे बढावा देते हुए ऐसी स्थिति मे लाना कि वह आत्म-प्रशंसा करता करता औरों की दृष्टि मे उपहासास्पद और मूर्ख सिद्ध हो। जैसे—आज पडित जी को लोगो ने खूब बनाया। १६. कोई विशिष्ट क्रिया या व्यापार सम्पन्न करना। जैसे—(क) खिलाड़ी का गोल बनाना। (ख) नाई का दाढी बनाना। (ग) डाक्टर का आँख बनाना।

बनाफर—पु०[स० वन्यफल ?]राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।

बना-बनत—स्त्री०[हिं० बनना] वर और कन्या का सम्बन्ध स्थिर करने से पहले उनकी जन्म-पत्रियो का गणित ज्योतिष के अनुसार किया जाने-वाला मिलान।

क्रि० प्र०—निकालना।—बनाना।—मिलाना।

बनाम—अव्य०[फा०]१. किसी के नाम पर। नाम से। जैसे—बनामे खुदा = ईश्वर के नाम पर। २. किसी के उद्देश्य से किसी के प्रति। ३. किसी के विरुद्ध। जैसे—यह दावा सरकार बनाम बेनीमाधव दायर हुआ है, अर्थात् सरकार ने बेनीमाधव पर मुकदमा चलाया है।

बनाय—अव्य० [हिं० बनाकर=अच्छी तरह] १. अच्छी तरह बनाकर। २. ठीक ढग से। अच्छी तरह। ३ पूरी तरह से। पूर्णतया।

बनार—पु०[?]१ चाकसू नामक ओषधि का वृक्ष। २. काला कसौदा। कासमर्द। ३. एक मध्ययुगीन राज्य जो वर्तमान काशी की सीमा पर था।

†अव्य० दे० 'बनाय'।

बनारना—स०[?] काटना; विशेषत. काट-काटकर किसी चीज के टुकडे करना।

बनारस—पु०[स० वाराणसी] [वि० बनारसी] हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ काशी का आधुनिक नाम।

बनारसी—वि० [हिं० बनारस+ई (प्रत्य०)] १. बनारस (नगर) सबधी। २. बनारस मे बनने, रहने या होनेवाला। जैसे— बनारसी साडी।

पु० बनारस का निवासी।

बनारी—स्त्री०[स० प्रणाली] कोल्हू मे नीचे की ओर लगी हुई नाली की वह लकडी जिससे रस नीचे नाँद मे गिरता है।

बनाल†—पु०=बदाल।

बनाला†—पु० =बदाल।

बनावत —स्त्री० दे० 'बना-बनत'।

बनाव—पु०[हिं० बनना+आव (प्रत्य०)] १. बनने या बनाये जाने की क्रिया या भाव। २ बनावट। रचना। ३. शृगार। सजावट।

पद—बनाव-सिंगार।

बनावट—स्त्री०[हिं० बनाना+आवट (प्रत्य०)] [वि० बनावटी]१. किसी चीज के बनने या बनाये जाने का ढंग या प्रकार। रचने या रचे जाने की शैली। रूप-विधान। २. किसी वस्तु का वह रूप जो उसे बनाने या बनाये जाने पर प्राप्त होता है। रूप-रचना। गढ़न। जैसे—इन दोनों कमीजों की बनावट मे बहुत थोडा अन्तर है। ३. किसी चीज को विशिष्ट और सुन्दर रूप मे लाने की क्रिया या भाव। रूपाधान। (फार्मेशन) ४. केवल दूसरो को दिखाने के लिए बनाया जानेवाला ऐसा आचरण, रूप या व्यवहार जिसमे तथ्य, दृढ़ता, वास्तविकता, सत्यता आदि का बहुत कुछ या सर्वथा अभाव हो। केवल दिखावटी आकार-प्रकार, आचार-व्यवहार या रूप-रग। ऊपरी दिखावा। आडंबर। कृत्रिमता। जैसे—(क) यह उनकी वास्तविक सहानुभूति नही है; कोरी बनावट है। (ख) उसकी बनावट में मत आना, वह बहुत बड़ा धूर्त है। ५. वह दभपूर्ण मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य अपने आपको यथार्थ अथवा वास्त-विकता से अधिक योग्य, सदाचारी आदि सिद्ध करने का प्रयत्न करता है। पाखंडपूर्ण मिथ्या आचरण और व्यवहार। (एफेक्टेशन) जैसे—यों साधारणतः वे अच्छे विद्वान हैं, पर उनमें बनावट इतनी अधिक है कि लोग उनकी बातों से घबराते हैं। ६. दे० 'रचना'।

बनावटी—वि० [हिं० बनावट]१. जिसमे केवल बनावट हो, तथ्य या वास्तविकता कुछ भी न हो। ऊपरी या बाहरी। जैसे—बनावटी हँसी। २. वास्तविक के अनुकरण पर बनाया हुआ । कृत्रिम। नकली। जैसे—बनावटी नगीना।

बनावन—पु०[हिं० बनाना]१. बनाने की क्रिया या भाव। २. अन्न मे मिली हुई वे कंकड़ियाँ आदि जो बिनकर निकाली जाती हैं। ३. इस तरह बिनकर निकली हुई रद्दी चीजों का ढेर।

बनावनहारा—वि० पु० [हिं० बनाना+हारा (प्रत्य०)] १. बनानेवाला। २. सुधारनेवाला।

बनाव-सिंगार—पु०[हिं०] किसी चीज की विशेषत. शरीर की वह सजावट जो प्राय. दूसरों को आकृष्ट करने या उन पर प्रभाव डालने के लिए की जाती है।

बनास—स्त्री०[देश०] राजपूताने की एक नदी जो अर्वली पर्वत से निकलकर चंबल नदी मे गिरती है।

बनासपती—स्त्री०=वनस्पति।

†वि० वनस्पतियो से बनाया हुआ। जैसे—बनासपती घी।

बनि†—अव्य०[हिं० बनाना] पूर्ण रूप से। अच्छी तरह। बनाकर।उदा०—अमित काल मैं कीन्ह मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी।—तुलसी।

बनिक†—पु०=वणिक।

बनिज—पु०[स० वाणिज्य] १. रोजगार। व्यापार। २. व्यापार की वस्तु। सौदा। ३. ऐसा असामी जिससे यथेष्ट आर्थिक लाभ किया जा सके। ४ धनी या सम्पन्न यात्री। (ठग)

क्रि० प्र०—फँसना।

बनिजना—स०[सं० वाणिज्य; हिं० बनिज+ना (प्रत्य०)] १. खरीदना और बेचना। रोजगार करना। २. मोल लेना। खरीदना। ३ किसी को मूर्ख बनाकर कुछ रुपए ठगना।

बनिजारा—पु०=बनजारा।

बनिजारिन†—स्त्री०=बनजारिन।

बनिजारी—स्त्री०=बनजारिन।

बनिजी—वि०[स० वणिज्] वाणिज्य-सम्बन्धी।

पु० घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी। फेरीदार।

बनित—स्त्री० [हिं० बनना] बानक। बाना। वेश।

बनिता—स्त्री० [स० वनिता]१. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी। भार्या।

बनिया—पु०[स० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन, बनैनी] १. व्यापार

करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। वैश्य। २ आटा, दाल, नमक-मिर्च आदि बेचनेवाला दूकानदार। मोदी। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, व्यापारिक मनोवृत्तिवाला फलत स्वार्थी व्यक्ति।

बनियाइन—स्त्री०[अ० बैनियन] कमीज, कुरते आदि के नीचे पहनने का एक तरह का सिला हुआ कम लंबा पहनावा। गजी।

†स्त्री० हिं० 'बनिया' का स्त्री०।

बनिस्बत—अव्य० [फा०] किसी की तुलना या मुकाबले मे। अपेक्षया। जैसे—उस कपडे की बनिस्बत यह कपडा कही अच्छा है।

बनिहार—पु०[हिं० बन+हार (प्रत्य०) अथवा हिं० बन्नी] वह आदमी जो कुछ वेतन अथवा उपज का अश लेकर दूसरों की जमीन जोतने, बोने, फसल आदि काटने और खेत की रखवाली का काम करता है।

बनी—स्त्री०[हिं० बन]१. वन का एक टुकडा। वनस्थली। २. बगीचा। वाटिका। उदा०—महादेव की सी बनी चित्र लेखी।—केशव। ३ एक प्रकार की कपास।

स्त्री०[हिं० बना] १. दुल्हन। वधू। २. सुन्दरी स्त्री। नायिका।

पु०=बनिया।

बनीनी—स्त्री० [हिं० बनी+ईनी (प्रत्य०)] १. वैश्य जाति की स्त्री। बनिये की स्त्री।

बनीर—पुं०=वानीर (बेत)।

बनेठी—स्त्री०[हिं० बन+सं० यष्टि] एक तरह की छड़ी जिसके दोनो सिरो पर एक एक लट्टू लगा रहता है और जिसका उपयोग मुख्यत पटेबाजी के खेलो मे होता है।

बनेला—पु०[देश०] रेशम बनानेवाला एक प्रकार का कीडा।

वि०=बनैला

बनैया†—वि०[हिं० बनाना] बनानेवाला।

†वि०=बनैला।

बनैल†—वि०=बनैला।

बनैला—वि०[हिं० बन+ऐला (प्रत्य०)] जगली। वन्य।

पु० जगली सूअर।

बनोवास†—पु०=बनवास।

बनौआ—वि०[हिं० बनाना+औआ (प्रत्य०)]१. बना या बनाया हुआ। २ कृत्रिम। बनावटी।

बनौट†—स्त्री०=बिनवट।

बनौटी—वि०[हिं०बन+औटी(प्रत्य०)]कपास के फूल का सा। कपासी। पु० एक प्रकार का रग जो कपास के रग से मिलता-जुलता है।

†स्त्री०=बिनवट।

बनौरी†—स्त्री० [हिं० बन=जल+ओला] आकाश से बरसनेवाले हिमकण। ओला।

बन्ना—पु०[हिं० बनना या बना] [स्त्री० बन्नी]१. लोक गीतो मे, वर। दूल्हा। २ विशेषत वह व्यक्ति जिसका विवाह हो रहा हो। ३. विवाह के समय मे, वर पक्ष की स्त्रियो के द्वारा गाया जानेवाला एक तरह का लोकगीत। बनडा।

बन्नात—स्त्री०=बनात (एक तरह का ऊनी रगीन कपडा)।

बन्नी—वि०[हिं०बन] बन मे होनेवाला। जैसे—बन्नी खड़िया, बन्नी मिट्टी आदि।

स्त्री०[हिं० बन्ना]१ दुल्हिन। २ कन्या जिसका विवाह हो रहा हो।

स्त्री०[?]१ खेत मे काम करनेवालो को मिलनेवाला खड़ी फसल का कुछ अंश। २. उतनी भूमि जिसमें उक्त अश हो।

बन्हि—स्त्री०=वहिन (वह्नि)।

बपंस—पु०[हिं० बाप+स० अश] १. पिता की सपत्ति मे से पुत्र को मिलनेवाला अश। २ वह गुण जो पुत्र को पिता से प्राप्त हुआ माना जाय।

बप—पु०[स० वप्तृ] बाप। पिता।

पु०=वपु (शरीर)।

बपतिस्मा—पु० [अ० बैप्टिज्म] नव-जात शिशु अथवा अन्य धर्मावलबी को मसीही धर्म मे दीक्षित करते समय होनेवाला एक सस्कार।

बपना—स०[स० वपन] वपन करना। बीज बोना।

बप-मार—वि० [हिं० बाप+मारना] [भाव० बप-मारी] १. जिसने अपने पिता का वध किया हो। २ जो अपने पूज्य और बडे व्यक्तियो तक का अपकार करने से भी न चूके। बडो तक के साथ द्रोह या विश्वासघात करनेवाला।

बपु—पु०[स० वपु] १. शरीर। देह। २ ईश्वर का शरीरधारी रूप। अवतार। ३ आकृति। रूप। शकल।

बपुख*—पु०[स० वपुष्] देह। शरीर।

बपुरा†—वि० बापुरा (बेचारा)।

बपौती—स्त्री०[हिं० बाप+औती (प्रत्य०)] १ पिता की ऐसी सपत्ति जो पुत्र को उत्तराधिकार के रूप मे मिली हो, मिलने को हो, अथवा उसे प्राप्य हो। २ वह अधिकार जो किसी को अपने पिता तथा पितृ-पक्ष की सपत्ति पर होता है।

बप्पा—पु०[हिं० बाप] पिता। बाप।

पद—बप्पा रे बप्पा=आश्चर्य, दु ख आदि के समय मुँह से निकलनेवाला पद।

बफरना†—अ०[स० विस्फालन] १. अभिमान या गर्वपूर्वक लडने के लिए ताल ठोंकना या किसी प्रकार का शब्द करना। २ उत्पात या उपद्रव करना।

बफारा—पु०[हिं० भाप+आरा (प्रत्य०)]१ ओषधि से युक्त किये गये जल को उबालने पर उसमे से निकलनेवाली भाप। ३. उक्त भाप से किया जानेवाला सेंक।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

३ वे ओषधियाँ जो उक्त कार्य के लिए गरम पानी मे उबाली जाती हैं।

बफौरी—स्त्री०[हिं० भाप] भाप से पकाई जानेवाली या पकी हुई बरी।

†अ० [हिं० बफरना ?] उछलने की क्रिया या भाव। उछाला।

बबकना—अ०=बमकना। (दे०)

बबर—पु०[अ०] १. बिल्ली की जाति का एक बिना पूँछवाला वन्य पशु जो शेर को भी मार डालता है। २. बडा शेर। सिंह। ३. वह कम्बल जिसपर शेर की खाल की सी धारियाँ बनी होती हैं।

वि० शेर के साथ विशेषण रूप मे प्रयुक्त होने पर, भयानक और विकराल। जैसे—बबर शेर।

बबरी—स्त्री०[हिं० बबर]१ लटका हुआ बाल (विशेष कर घोडे का)। २ बालो की लट।

बबा†—पुं०=बाबा।

बबुआ—पुं० [हिं० बाबू] [स्त्री० बबुआइन, बबुई] १. दामाद और पुत्र के लिए प्यार का संबोधन। (पूरब) २. जमींदार और रईस। ३. छोटे लड़कों के लिए प्यार का संबोधन।

बबुई—स्त्री० [हिं० बबुआ का स्त्री०] १. बेटी। कन्या। २. बड़े जमींदार या रईस की लड़की। ३. पति की छोटी बहन। छोटी ननद।

बबुनी—स्त्री०=बबुई।

बबूर—पुं० =बबूल।

बबूना—पुं० [?] एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसका ऊपरी बदन हरापन लिये सुनहला पीला और दुम गहरी भूरी होती है। इसकी आँखों के चारों ओर एक सफेद छल्ला-सा रहता है।

बबूल—पुं० [सं० बब्बूर] एक प्रसिद्ध कँटीला पेड़ जिसकी पतली पतली शाखाएँ दतुअन के काम आती हैं। कीकर।

बबूला†—पुं० [देश०] हाथियों के पाँव में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा। वि० समस्त पदों के अन्त में; उक्त फोड़े के समान तना और सूजा हुआ।

पद—आग-बबूला। (दे०)

पुं० १.=बगूला। २.=बुलबुला। ३.=बबूला।

बब्लू—पुं० [?] उल्लू (पक्षी)।

पुं० [हिं० बाबू] छोटे बच्चों के लिए प्यार का एक संबोधन। (पश्चिम)

बभनी†—स्त्री० =बम्हनी।

बभूत—स्त्री०=१. भभूत। २.=विभूति।

बभ्रवी—स्त्री० [सं० बभ्रु+अण्+ङीप्] दुर्गा।

बभ्रु—वि० [सं० √भृ+कु] १. गहरे भूरे रंग का। २. खल्वाट। गंजा। पुं० १. गहरा भूरा रंग। २. अग्नि। ३. नेवला। ४. चातक। ५. विष्णु। ६. शिव।

बभ्रु-धातु—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. सोना। स्वर्ण। २. गेरू।

बभ्रु-लोमा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] भूरे बालोंवाला।

बभ्रुवाहन—पुं० [सं० ब०स०] चित्रांगदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र जो मणिपुर का शासक था।

बम—पुं० [अनु०] १. शिव के उपासकों का वह 'बम बम' शब्द जिससे शिवजी का प्रसन्न होना माना जाता है।

महा०—बम बोलना या बोल जाना=शक्ति, धन आदि की समाप्ति या अंत हो जाना। बिलकुल खाली हो जाना। कुछ न रह जाना।

२. शहनाईवालों का वह छोटा नगाड़ा, जो बजाते समय बाईं ओर रहता है। मादा नगाड़ा। नगड़िया।

पुं० [कन्नड़ बंबू=बाँस] १. बग्घी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके दोनों ओर घोड़े जोते जाते हैं। २. इक्के, टाँगे आदि में के वे बाँस या लंबोतरे अंग जिनमें घोड़ा जोता जाता है।

पुं० [अं० बाम्ब] १ वह विस्फोटक रासायनिक गोला जिसके फूटने से घोर शब्द होता तथा व्यापक बरबादी और जीव-संहार होता है। २ एक तरह की आतिशबाजी जिसमें से जोर का शब्द निकलता है।

बमकना—अ० [अनु०] १. क्रुद्ध होकर जोर से बोलना। २. डींग हाँकना।

बमकाना—स० [हिं० बमकना] ऐसा काम करना जिससे कोई बमके। किसी को बमकाने में प्रवृत्त करना।

बमगोला—पुं० [हिं० बम+गोला] बम (विस्फोटक तथा रासायनिक गोला)।

वि० १. आफत का परकाला। २. हो-हल्ला करने वाला।

बम-चख—स्त्री० [अनु० बम+चीखना] १. शोरगुल। हल्ला-गुल्ला। २. लड़ाई-झगड़ा।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—मचना।—मचाना।

३. कहा-सुनी।

बमना—स० [सं० वमन] १. वमन करना। कै करना। २ उगलना।

बम-पुलिस—पुं०=बपुलिस (सार्वजनिक शौचालय)।

बम-बाज—वि० [हिं० बम+फा० बाज़] [भाव० बम-बाजी] १. (वायुयान) जो बम गिराता हो। २. (व्यक्ति) जो शत्रुओं पर बम फेंकता हो।

बम-बाजी—स्त्री० [हिं० बम+फा० बाजी] बम गिराने या फेंकने की क्रिया या भाव।

बम-बारी—स्त्री० [हिं० बम+फा० बारी=वर्षा] बमों की वर्षा करना। बहुत अधिक बम गिराना या फेंकना।

बम-भोला—पुं० [हिं० बम+भोला] महादेव। शिव।

बम-वर्षक—पुं० [हिं० बम+सं० वर्षक] एक तरह का बहुत बड़ा हवाई जहाज जो बम फेंकने के काम आता है। (बॉम्बर)

बम-वर्षा—स्त्री० [हिं० बम+वर्षा] बम-बारी।

बमीठा†—पुं०=बाँबी (दीमकों की)।

ब-मुकाबला—अव्य० [फा०+अ०] १. मुकाबले में। समक्ष। सामने। २. तुलना में। अपेक्षया।

ब-मुश्किल—अव्य० [फा०+अ०] कठिनता से।

ब-मूजिब—अव्य० [फा०+अ०] अनुसार। मुताबिक। जैसे—हुकुम बमूजिब।

बमेल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बमोट—पुं०=बमीठा (दीमकों की बाँबी)।

बम्मण—पुं०=ब्राह्मण।

बम्हनी—स्त्री० [स० ब्राह्मण; हिं० बाम्हन] १. छिपकली की तरह का एक रेंगनेवाला छोटा पतला कीड़ा। इसकी पीठ चित्तीदार, काली दुम और मुँह लाल चमकीले रंग का होता है। २. आँख की पलकों पर होनेवाली फुंसी। गुहाजनी। बिलनी। ३. वह गाय जिसकी पलकों पर के बाल झड़ गये हों। ४. ऊख या गन्ने को होनेवाला एक रोग। ५. हाथी का एक रोग जिसमें दुम सड़-गलकर गिर जाती है। ६ ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी लाल हो। ७. कुश की जाति का एक तृण। वन-कुस।

बयंड—पुं० [हिं० गयंद=सं० गजेन्द्र] हाथी। (डिं०)

बय—स्त्री०=वय (अवस्था)।

पुं०=बै (विक्रय)।

बयन—पुं० [सं० वचन] वाणी। बोली। बात।

बयना—स० [सं० वपन; प्रा० वयन] खेत में बीज बोना।

स० [सं० वचन] कहना।

†पु०=बैना।

बयनी—वि०[हिं० बयन] यौ० के अन्त मे, बोलनेवाली। विशेषत. मधुर स्वर मे बोलनेवाली। जैसे—पिक-बयनी।

बयर†—पुं०=बैर।

बयल—पुं०[?]सूर्य। (डिं०)

बयस—स्त्री० [सं० वयष] अवस्था। उमर।

बयसर—स्त्री० [देश०] कमखाब बुननेवालो की वह लकड़ी जो उनके करघे मे गुलने के ऊपर और नीचे लगती है।

बयसवाला—वि० [सं० वयस+हिं० वाला] [स्त्री० बयसवाली] युवक। जवान।

बयस-शिरोमनि—पुं० [सं० वयस् शिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

बया—पुं० [सं० वयन=बुनना] पीले तथा चमकीले मायेवाली एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जो खजूर, ताड़, आदि ऊँचे पेड़ो पर बहुत ही कलापूर्ण ढंग से अपना घोंसला बनाती है।

पुं० [अ० बाय =बेचनेवाला] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो। अनाज तौलनेवाला। तौलैया।

बयाई—स्त्री० [हिं० बया+आई (प्रत्य०)] १. 'बया' का काम या पद। २. अन्न आदि तौलने की मजदूरी। तौलाई।

बयान—पुं०[फा०] १. बात-चीत। २ जिक्र। चर्चा। ३ वृत्तात। हाल। ४. न्यायालय मे अभियुक्त द्वारा दिया जानेवाला अपना वक्तव्य।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

बयाना—पुं०[अ० बै =(विक्री)+फा० आन (प्रत्य०)] वह धन जो किसी वस्तु का खरीददार उसके बेचनेवाले को क्रय-विक्रय की बात पक्की करने के समय पहले देता है। पेशगी।

†अ०=बडबडाना।

बयाबान—पुं० [फा०] [वि० बयाबानी] १. जगल। २ उजाड या सुनसान जगह।

बयाबानी—वि०[फा०]१ जंगली। २. वनवासी।

बयार—स्त्री०[सं० वायु] हवा । पवन।

मुहा०—बयार करना=पंखा झलकर किसी को हवा पहुँचाना। बयार भखना= प्राणायाम करने के लिए नाक से वायु अदर खीचना। उदा०—ऊधौ हाय हम कौ बयारि भखिबौ कहौ।—रत्नाकर।

बयारा—पुं० [हिं० बयार] १. हवा का झोका। २. अबड़। तूफान।

बयारि—स्त्री०=बयार।

बयारी—स्त्री०=बयार (हवा)।

बयाला—पुं०[सं० बाह्य+हिं० आला] १ दीवार मे का वह छेद जिसमे से झांककर उस पार की घटनाएं या दृश्य देखे जाते हैं। २ आला। ताखा। ३ किले की दीवारो पर तोपें रखने के लिए बना हुआ स्थान। ४. उक्त स्थान के आगे दीवार मे बना हुआ वह छेद जिसमे से तोप का गोला बाहर जाकर गिरता है। ५. पटे या पाटे हुए स्थान के नीचे का खाली स्थान।

बयालीस—वि०[सं० द्विचत्वारिंशत्, प्रा० बिचत्तालीसा] जो गिनती मे चालीस से दो अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४२।

बयालीसवाँ—वि० [हिं० बयालीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम, संख्या के विचार से बयालीस के स्थान पर पडने या होनेवाला।

बयासी—वि०[सं० द्वि+अशीति; प्रा० बिआसी] जो गिनती में अस्सी से दो अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक सख्या जो अंकों मे इस प्रकार लिखी जाती है—८२।

बरंग—पुं०[देश०] मझोले कद का एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी का रग सफेद होता है। पीला।

पुं०[?] बकतर। कवच। (डिं०)

बरंगा—पुं०[देश०] छत पाटते समय धरनो पर रखी जानेवाली पत्थर की पटिया या लकड़ी की तख्ती।

बरंगिनी†—स्त्री०=वरागना (सुन्दरी)।

बर—पुं०[सं०√वृ (वरण करना)+अप्] १. वह व्यक्ति जिसका विवाह हो रहा हो या निश्चित हो चुका हो। वर।

पद—बर का पानी=विवाह से पहले नहछू के समय का वह पानी जो वर को स्नान कराने पर गिरकर बहता है और जो एक पात्र मे एकत्र करके कन्या के घर उसे स्नान कराने के लिए भेजा जाता है।

२. वह आशीर्वाद-सूचक वचन जो किसी की अभिलाषा, प्रार्थना, मनोकामना आदि पूरी करने लिए कहा जाता है। वर।

क्रि० प्र०—देना।—मांगना।—मिलना।

वि० १ अच्छा। बढिया। २. उत्तम । श्रेष्ठ।

पुं०[सं० वट] वट वृक्ष। बरगद।

पुं०[सं० बल] १. शक्ति। उदा०पु-बर करि कृपा सिंधु उर लाये। —तुलसी २ रेखा। लकीर। ३ दृढता या प्रतिज्ञापूर्वक कही हुई बात।

मुहा०—बर खांचना=(क) कोई प्रतिज्ञा करने या बात कहने के समय अपनी दृढता सूचित करने के लिए उँगली से जमीन पर रेखा खीचना। (ख) किसी काम या बात के लिए जिद या हठ करना।

पुं०[सं० वर्ग] १. कपडे या किसी लंबी चीज की चौडाई। अरज। २ व्यापारिक क्षेत्रो मे किसी तरह या मेल की चीजो मे का कोई अलग और छोटा वर्ग। जैसे—बनारसी कपड़ो के व्यवसाय मे लहँगे, साड़ी या साफे का बर। अर्थात् वह क्षेत्र जिसमे केवल लहँगे, केवल साडियाँ अथवा केवल साफे आते हैं।

पुं०[देश०] एक प्रकार का कीडा जिसे खाने से पशु मर जाते हैं।

† अव्य० = 'बरु' (बल्कि या बरन्)।

पुं०[फा०] वृक्ष का फल।

वि० १. फल से युक्त। सफल। जैसे—किसी की मुराद बर आना; अर्थात् मनोकामना सफल होना। २ किसी की तुलना, प्रतियोगिता आदि मे बढकर। श्रेष्ठ।

मुहा०—(किसी से) बर आना या पाना=प्रतियोगिता, बल-परीक्षा आदि मे किसी की बराबरी का ठहरना। जैसे—चालाकी मे तुम उससे बर नही सकते (या नही पा सकते)। (किसी से) बर पड़ना=बढकर या श्रेष्ठ सिद्ध होना।

अव्य० [सं० वर से फा०] १. ऊपर। जैसे—बर-तर=किसी के ऊपर अर्थात् किसी से बढकर। २ आगे। जैसे—बर-आमद =बरामदा। ३ अलग। पृथक्। जैसे—बर-तरफ। ४. विपरीत या सामने की दिशा मे। जैसे—बर-अक्स।

बर-अंग—स्त्री०[सं० वर+अंग ?] योनि। (डिं०)

बरई—पु०[हिं० बाड=क्यारी] [स्त्री० बरइन] १. पान की खेती तथा व्यापार करनेवाली एक जाति। तमोली। २ इस जाति का कोई व्यक्ति।

बरकंदाज—पु०[अ० बर्क़+फा० अंदाज] [भाव० बरकंदाजी] १ चौकीदार। २. सिपाही। ३. तोपची।

बरक—स्त्री० [अ० बर्क] बिजली। विद्युत्।

बरकत—स्त्री०[अ०] १. वह शुभ स्थिति जिसमे कोई चीज या चीजें इस मात्रा मे उपलब्ध हो कि उनसे आवश्यकताओ की पूर्ति सहज मे तथा भली-भाँति हो जाय। जैसे—(क) घर मे गाय-भैस होने पर ही दूध-दही की बरकत होती है। (ख) अब तो रुपए-पैसे मे बरकत नही रह गई। (ग) ईश्वर तुम्हे रोजगार मे बरकत दे।

मुहा०—(किसी से या किसी चीज में) बरकत, उठना या उठ जाना=पहले की-सी शुभ स्थिति या सपन्नता न रह जाना।

२. किसी चीज का वह थोडा सा अंश जो इस भावना से बचाकर रख लिया जाता है कि इसी मे आगे चलकर और अधिक वृद्धि होगी। जैसे—अब थैली मे बरकत के ११) ही बच रहे है, बाकी सब खरच हो गये।

३. अनुग्रह। कृपा। जैसे—यह सब आपके कदमो की ही बरकत है।

४. मगल-भाषित के रूप मे गिनते समय एक की सख्या।

विशेष—प्राय' लोग गिनती आरभ करने पर 'एक' की जगह 'बरकत' कहकर तब दो, तीन, चार आदि कहते हैं।

५. मगल-भाषित के रूप में अभाव या समाप्ति का सूचक शब्द। जैसे—आज-कल घर मे अनाज (या कपडों) की बरकत ही चल रही है, अर्थात् अभाव है, यथेष्ठता नही है।

बरकती—वि०[अ० बरकत+ई (प्रत्य०) १ जिसके कारण या जिसमे, बरकत हो। बरकतवाला। जैसे—जरा अपना बरकती हाथ लगा दो तो रुपए घटेंगे नही। २. जो बरकत के रूप मे या शुभ माना जाता हो। जैसे—बरकती रुपया।

बरक-दम—स्त्री०[अ० बर्क+फा० दम] एक प्रकार की चटनी जो कच्चे आम को भूनकर उसके पने मे चीनी, मिर्च आदि डालकर बनाई जाती है।

बरकना—अ०[सं० वर्जन] १. अलग या दूर रहना या रखा जाना। २. कोई अप्रिय या अशुभ बात घटित न होने पाना। ३ सकट आदि से बचने के लिए कही से हटना। ४ बचाया जाना।

स० =बरकाना।

बर-करार—वि०[फा० बर+अ० करार] १. जिसका अस्तित्व या स्थिति वर्तमान हो। सकुशल, वर्तमान और स्थिर। जैसे—आपकी जिन्दगी बर-करार रहे। २. उपस्थित। मौजूद। ३ पुनर्नियुक्त किया हुआ। बहाल।

क्रि० प्र०—रखना।—रहना।

बर-काज—पु०[सं० वर+कार्य] शुभ-कार्य। जैसे—मुडन, विवाह आदि अवसरो पर होनेवाले कार्य।

बरकाना—स०[सं० वारण, वारक] १. कोई अनिष्ट अथवा अप्रिय घटना या बात न होने देना। निवारण करना। बचाना। जैसे—झगडा बरकाना। २. अपना पीछा छुडाने के लिए किसी को भुलावा देकर अलग करना या दूर रखना। ३. मना करना। रोकना।

बरख†—पु०=वर्ष (बरस)।

बरखना†—अ०=बरसना (वर्षा होना)।

बरखा—स्त्री०[सं० वर्षा] १. आकाश से जल बरसना। वर्षा। बारिश। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु। बरसात।

बरखाना†—स०=बरसाना (वर्षा करना)।

बरखास†—वि०=बरखास्त।

बरखास्त—वि०[फा० बरख़ास्त] [भाव० बरखास्तगी] १. (अधिवेशन, बैठक, सभा आदि के सबध मे) जिसका विसर्जन किया गया या हो चुका हो। समाप्त किया हुआ। २ (व्यक्ति) जिसे किसी नौकरी या पद से हटा दिया गया हो। पदच्युत।

बरखास्तगी—स्त्री०[फा० बरखास्तगी] बरखास्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

बर-खिलाफ—अव्य०[फा० बर+अ० खिलाफ] उलटे। प्रतिकूल। विपरीत। वि०=खिलाफ।

बरखुरदार—वि०[फा० बरखुर्दार] [भाव० बरखुरदारी] १ सौभाग्यशाली। २. सफल-मनोरथ। ३. फला-फूला। सपन्न।

पु० १ पुत्र। बेटा। २. छोटो के लिए आशीर्वाद सूचक सबोधन।

विशेष—मूलत बर-खुरदार का शब्दार्थ है—जीविका पर बने रहो, अर्थात् खाने-पीने से सुखी रहो।

बरखुरदारी—स्त्री०[फा० बरखुर्दारी] १ बर-खुरदार होने की अवस्था या भाव। २. धन-धान्य आदि की यथेष्ठता। सम्पन्नता। ३. आशीर्वाद के रूप मे, किसी के सौभाग्य तथा सम्पन्नता की कामना।

बर-गध†— पु०[सं० वर+गध] सुगधित मसाला।

बरग—पु०[फा० बर्ग] पत्ता। पत्र।

†पु०=वर्ग।

†पु०=वरक।

बरगद—पु०[सं० वट, हिं० बड़] पीपल, गूलर आदि की जाति का एक बडा वृक्ष जो भारत मे अधिकता से पाया जाता है। बड का पेड। वट वृक्ष। (साधु संतो की कृतियों मे यह विश्वास का प्रतीक माना गया है।)

बरगश्ता—वि०[फा० बरगश्त.] १. अभागा। हत-भाग्य। २. विमुख।

बरगा—वि०[सं० वर्ग] [स्त्री० बरगी] तरह या प्रकार का। जैसे—उसके बरगा और कौन है?

बरगी—पु०[फा० बरगीर] १. अश्वपाल। साईस। २ अश्व। घोडा। ३. मुगल काल मे घोडे पर सवार होकर शासन व्यवस्था करनेवाला सैनिक।

बरगेल—पु० [देश०] एक प्रकार का लवा (पक्षी) जिसके पजे कुछ छोटे होते हैं।

बरचर—पु०[देश०] देवदार की एक जाति।

बरचस—पु०[सं० वर्चस्क] विष्ठा। मल। (डिं०)

बरच्छा—पु० [सं० वर+ईक्षा] कन्या पक्षवालो द्वारा वर को देखकर पसद कर तथा धन आदि देकर वैवाहिक सबध स्थिर करने की एक रसम।

बरछा—पुं०[सं० व्रश्चन=काटनेवाला] [स्त्री० अल्पा० बरछी] भाला नामक अस्त्र। दे० 'भाला'।

बरछी—स्त्री०[हिं० बरछा] छोटा बरछा।

बरछैत—पुं०[हिं० बरछा+ऐत (प्रत्य०)] बरछा धारण करने या चलाने वाला। भाला-बरदार।

बरजन—पुं०=वर्जन (मनाही)।

बरजनहार—वि०[हिं० बरजना+हार (प्रत्य०)] मना करने या रोकने-वाला।

बरजना—स०[सं० वर्जन] १ मना करना। रोकना। २ ग्रहण न करना। त्यागना। ३ प्रयोग या उपयोग मे न लाना।

बरजनि—स्त्री०=वर्जन (मनाही)।

बर-जबान—वि०[फा० बरजबाँ] जो जबान पर हो अर्थात् रटा हुआ हो। कंठस्थ।

बर-जबानी†—वि०=बर-जबान।

बरजस्ता—वि०[फा० बर-जस्त] बात पडने पर तुरन्त कहा हुआ। बिना पहले से सोचा हुआ (उत्तर, कथन आदि)।

अव्य० तुरंत। फौरन।

बरजोर—वि०[हिं० बल+फा० जोर] [भाव० बर-जोरी] १ प्रबल। बलवान। जबरदस्त। २ अत्याचारी। ३. बहुत कठिन या भारी। उदा०—को कृपाल बिनु पालि है, बिरुदावलि बर जोर।—तुलसी।

बर-जोरन—पुं०[सं० वर=पति+हिं० जोरना=मिलान] १. विवाह मे वर और वधू का गठ-बधन। २ विवाह। (डिं०)

अव्य० जबरदस्ती से।

बरजोरी—स्त्री०[हिं० बरजोर] १. बलात् किया या किसी से कराया जानेवाला कोई काम विशेषत. कोई अनुचित काम। २ बल-प्रयोग।

क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक। बलात्।

बरटना†—अ०[?] सडना।

बरणी†—स्त्री०[सं० वरणीया] कन्या। (राज०)

बरत†—पुं०=व्रत।

स्त्री०[सं० वर्त्त] डोरी। रस्सी। उदा०—डीठि बरत बाँधी अटनु चढि धावत न डरात।—बिहारी।

बरतन—पुं०[सं० वर्तन] मिट्टी, धातु आदि का बना हुआ कोई ऐसा आधान जो मुख्यत खाने-पीने की चीजे रखने के काम आता हो। पात्र। जैसे—कटोरा, गिलास, थाली, लोटा आदि।

†पुं० [सं० वर्त्तन] १. बरतने की क्रिया या भाव। २ बरताव या व्यवहार।

बरतना—अ०[सं० वर्त्तन] १. पारस्परिक संबंध बनाये रखने के लिए किसी के साथ आपसदारी का व्यवहार होना। बरताव किया जाना। जैसे—भाई-बंदो या बिरादरी के लोगो से बरतना। २ किसी के ऊपर कोई घटना घटित होना। जैसे—जैसी उन पर बरती है, वैसी दुश्मन पर भी न बरते। ३. समय आदि के संबंध मे, व्यतीत होना। गुजरना। जैसे—आज-कल बहुत ही बुरा समय बरत रहा है। ४ उपस्थित या वर्तमान रहना। उदा०—लट छूटी बरतै बिकराल।—कबीर। ५. खाने-पीने की चीजो के संबंध मे, भोजन के समय लोगो के आगे परोसा या रखा जाना। जैसे—दाल बरत गई है (परोसी जा चुकी है)।

स० १. कोई चीज अपने उपयोग, काम या व्यवहार मे लाना। जैसे—कपडा या मकान बरतना। २. दे० 'बरताना'।

बरतनी—स्त्री० [सं० वर्तनी] १. लकडी आदि की एक प्रकार की कलम जिससे छात्र मिट्टी, गुलाल आदि बिछाकर उस पर अक्षर लिखते हैं अथवा तांत्रिक यंत्र आदि भरते हैं। २ शब्द लिखने मे अक्षरो का क्रम। हिज्जे। वर्त्तनी। (देखें)

बर-तर—वि०[फा०] [भाव० बरतरी] १ श्रेष्ठतर। अधिक अच्छा। २. ऊँचा।

बर-तरफ—वि०[फा० बर+अ० तरफ] [भाव० बर-तरफी] १. एक ओर। किनारे। अलग। २ नौकरी, पद आदि से अलग किया या हटाया हुआ। बरखास्त किया हुआ।

बर-तरफी—स्त्री० [फा० बर+अ० तरफी] १. बर-तरफ होने की अवस्था या भाव। २. पद-च्युति।

बरताना—स०[सं० वर्त्तन या वितरण] बारी बारी से कोई चीज अथवा उसका कुछ अंश लोगो मे बाँटते चलना। जैसे—पंगत में भोजन करने-वालो को पूरी बरताना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

बरताव—पुं०[हिं० बरतना का भाव०] १ किसी के साथ बरतने की क्रिया, ढंग या भाव। २ किसी के साथ क्रिया जानेवाला आचरण या व्यवहार।

बरती—वि०[सं० व्रतिन्, हिं० व्रती] जो व्रत रखे हुए हो।

स्त्री०[?] एक प्रकार का पेड।

† स्त्री०=बत्ती।

बरतेल†—पुं० [देश०] जुलाहो की वह खूँटी जो करघे की दाहिनी ओर रहती है और जिसमे ताने को कसा रखने के लिए रस्सी बंधी रहती है।

बरतोर†—पुं०=बाल-तोड।

बरदना—अ० दे० 'बरदाना'।

बरदवान—पुं०[हिं० बरद+फा० वान (प्रत्य०)] कमखाब बुननेवालों के करघे की एक रस्सी जो पगिया मे बँधी रहती है। 'नथिया' भी इसी मे बँधी रहती है।

पुं०[फा० बादबान] जोर की या तेज हवा। (कहार)

बरदवाना—स०[हिं० बरदाना का प्रे०]बरदाने का काम किसी से कराना।

बरदा—स्त्री०[देश०] दक्षिण भारत में होनेवाली एक प्रकार की रूई।

पुं०[फा० बर्द] गुलाम। दास।

पद—बरदा फरोश। (देखें)

पुं०=बरधा (बैल)।

बरदाना—स०[हिं० बरधा=बैल] गौ, भैंस आदि पशुओ का गर्भाधान कराने के लिए उनकी जाति के नर पशुओ से संभोग या संयोग कराना। जोड़ा खिलाना।

संयो० क्रिया०—डालना।—देना।

अ० गौ, भैंस आदि का जोड़ा खाना।

बरदा-फरोश—पुं० [तु० बर्द+फा० फरोश] [भाव० बरदा-फरोशी] वह व्यक्ति जो गुलामो या दासों का क्रय-विक्रय करता हो।

बरदा-फरोशी—स्त्री० [फा०] गुलाम या दास खरीदने और बेचने का पेशा या व्यवसाय।

वरदार—वि० [फा०] [भाव० वरदारी] १. उठाने, धारण करने या वहन करनेवाला। जैसे—नाज-वरदार, भाला-वरदार। २. पालन करनेवाला। जैसे—फरमाँ-वरदार।

वरदारी—स्त्री० [फा०] १. वरदार होने की अवस्था या भाव। २ उठाने, धारण करने या वहन करने का काम।

वरदाश्त—स्त्री० [फा०] सहनशीलता। सहन।

वरदि (या)†—पु०=वरधिया।

वरदुआ—पु० [देश०] वरमे की तरह का एक औजार जिससे लोहा छेदा जाता है।

वरदौर—पु० [स० वर्द+हि० और (प्रत्य०)] गोशाला। मवेशी-खाना।

वरद्—पु० [स० बलीवर्द] वैल।

वरघ†—पु०=वरधा।

वरघ-मुतान—स्त्री० [हि० वरधा+मूतना] वह अकन या रेखा जो उसी प्रकार लहरियेदार हो, जिस प्रकार चलते हुए वैल के मूतने से जमीन पर निशान पडता है। गो-मूत्रिका।

वरघवाना—स०=वरदवाना।

वरधा—पु० [स० बलीवर्द मे का वर्द] वैल।

वरधाना—स०=वरदाना।
अ०=वरदाना।

वरधिया†—पु० [हि० वरधा] १ वह व्यक्ति जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर वैलो पर माल ढोकर पहुँचाता हो। २. हलवाहा। ३. चरवाहा।

वरधी—पु० [हि० वरधा ?] एक प्रकार का चमड़ा (कदाचित् वैल का चमडा)।

वरन†—पु०=वर्ण।
अव्य० [स० वर्ण] तरह। प्रकार। उदा०—तरुन तमाल वरन तनु सोहा।—तुलसी।
अव्य० वरन् (वल्कि)

वरन धरम†—पु० दे० 'वर्णाश्रम'।

वरनन†—पु०=वर्णन।

वरनना†—स० [स० वर्णन] वर्णन करना।

वरनर—पु० [अ० वर्नर] लप, लालटेन आदि का एक उपकरण जिसमे वत्ती लगाई जाती है।

वरना—स० [स० वरण] १. वर या वधू के रूप मे ग्रहण करना। पति या पत्नी के रूप मे स्वीकार करना। वरण करना। व्याहना। २ कोई काम करने के लिए किसी को चुनना या ठीक करना। नियुक्त करना। ३ दान के रुप मे देना।
स्त्री० [स० वरुणा] काशी के पास की वरुणा नाम की नदी।
पु० [स० वरुण] एक प्रकार का सुन्दर वृक्ष जो प्राय. सीधा ऊपर की ओर उठा रहता है। वल्ला। वलासी।
† अ०=वलना (जलना)।
†स० वटना (डोरा रस्सी आदि)।

वरनावरन*—वि० [स० वर्ण] १ अनेक वर्णोवाला। रग-विरंगा। २ अनेक प्रकार का। तरह तरह का।

वरनाला—पु० [हि० परनाला] समुद्री जहाज मे की वह नाली जिसमे से उसका फालतू पानी निकलकर समुद्र मे गिरता है। (लश०)

वरनि—स्त्री० [हि० वरना] वरने अर्थात जलने की अवस्था या भाव।

वरनी—वि० स्त्री० [स० वरण] वरण की हुई।
स्त्री० दुल्हिन। उदा०—दुहुँ सँकोच सँकुचित वर वरनी।—तुलसी।
† स्त्री०=वरणी।

वरनैत—स्त्री० [हि० वरना=वरण करना+एत (प्रत्य०)] विवाह के मुहूर्त से कुछ पहले की एक रसम जिसमे कन्या पक्षवाले वर-पक्ष के लोगो को मडप मे वुलाकर उनसे गणेश आदि का पूजन कराते हैं।

वरन्न†—पु०=वर्ण।

वरपटे—वि० [हि० वर+पटना] (हिसाव) जो पट गया या चुकता हो चुका हो।

वरपा—वि० [फा०] १ जो अपने पैरो पर खडा हो। २ (उत्पात या उपद्रव) जो उठ खडा हुआ हो। ३. उपस्थित।

वरफ—स्त्री० [फा० वर्फ] १. हवा मे मिली हुई भाप के अत्यन्त सूक्ष्म अणुओ की तह जो वातावरण की ठढक के कारण आकाश मे वनती और भारी होने के कारण जमीन पर गिरती है। पाला। हिम। तुषार।
क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।
२. वहुत अधिक ठढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी हो जाता है और आघात लगने पर टुकडे-टुकड़े हो जाता है।
क्रि० प्र०—गलना।—जमना।
३. कृत्रिम उपायो या रासायनिक क्रियाओ के द्वारा जमा हुआ पानी जो वहुत ठढा और ठोस हो जाता है तथा खाने-पीने की चीजें ठढी करने के काम आता है।
क्रि० प्र०—गलना। गलाना।—जमना।—जमाना।
४. उक्त प्रकार से जमाया हुआ दूध, फलो का रस या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—मलाई की वरफ।
वि० जो वरफ के समान ठढा हो। जैसे—सरदी से हाथ वरफ हो गये।

वरफानी—वि० [फा० वर्फानी] वर्फ से ढका हुआ या युक्त। जैसे—वरफानी तूफान। वरफानी पहाड़।

वरफिस्तान—पु० [फा० वर्फिस्तान] वह स्थान जहाँ चारो ओर वरफ ही वरफ हो।

वरफी—स्त्री० [फा० वर्फी] १ खोए आदि की वनी एक प्रकार की मिठाई जो चौकोर चुकडो के रूप मे कटी हुई होती है और जिसमे कभी कभी खोए के साथ और चीजे भी मिली रहती हैं। जैसे—पिस्ते या वादाम की वरफी। २ वुनाई, सिलाई आदि मे, चौकोर वनाये हुए खड या खाने।
क्रि० प्र०—काटना।

वरफीदार—वि० [हि० वरफी+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे वरफी की तरह चौकोर खाने वने हो। जैसे—रूईदार अगे मे होनेवाली वरफी-दार सिलाई।

वरफीला—वि० [फा० वर्फ़ से] [स्त्री० वरफीली] १ जिसमे या जिसके साथ वरफ भी हो। २. जो वरफ के योग से या वरफ की तरह ठढा हो। जैसे—वरफीली हवा।

वरफीला तूफान—पु० [हि० +अ०] वह तूफान या वहुत तेज हवा जिसमे

प्राय वरफ के वहुत छोटे छोटे कण भी मिले रहते है। हिम झझावात। (ब्लिजर्ड)

विशेष—ऐसे तूफान अधिकतर ध्रुवीय प्रदेशो और वरफ से ढके हुए पहाडो की चोटियो पर चलते हैं जिनके कारण आस-पास के प्रदेशो मे सरदी वहुत वढ जाती है। इनकी गति प्रति घण्टे ५०-६० मील होती है और इनमे पड़ने पर किसी को कुछ भी दिखाई नही देता।

बरफी-संदेस—पु० [फा० वरफी+व० सदेश] एक प्रकार की वगला मिठाई।

बरवंड—वि० [स० वलवत्] १. वलवान्। ताकतवर। २ प्रताप-शाली। ३. उद्दड। उद्धत। ४. वहुत तेज। प्रखर। प्रचड।

बरवट†—अव्य०=वसवस।

†पु०=वरवट (तिल्ली)।

बरवट्टा†—पुं० दे० 'वोडा' (फली)।

बरवत—पु० [अ०] एक तरह का वाजा।

बरवर—स्त्री०=वडवड (वकवाद)।

पु० [अ० वर्वर] [भाव० वर-वरता, वर-वरीयत] १ अफ्रीका का एक प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी।

वि० असभ्य और राक्षसी प्रकृतिवाला।

बरवरिस्तान—पु० [अ० वर्वर] अफ्रीका का एक देश।

बरवरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की वकरी।

पु० [अ० वर्वर] वरवर देश का निवासी।

बरवस—अव्य० [स० वल+वश] १ वलपूर्वक। जवरदस्ती। दृढात्। २ निरर्थक। व्यर्थ। वे-फायदे।

वि० जिसका कोई वश न चलता हो। लाचार।

बरवाद—वि० [फा०] [भाव० वरवादी] १ (रचना) जो पूर्ण-तया ध्वस्त हो गई हो। २ (देश) जिसकी अवस्था वहुत ही शोच-नीय हो गई हो। ३ (काम) जो चौपट हो गया हो। ४ (व्यक्ति) जिसकी सपत्ति उसके हाथ से निकल चुकी हो। जो लुट चुका हो।

बरवादी—स्त्री० [फा०] वरवाद होने की अवस्था या भाव। तवाही। विनाश।

बरम—पु०=वर्म (कवच)।

बरमना†—पुं०=वर्मा।

बर-मला—अव्य० [फा०] १ खुले आम। सवके सामने। २. मन-माने ढग या रूप से। जी भरकर। जैसे—किसी को वर-मला खारी-खोटी सुनाना।

बरमहल—अव्य० [फा०] १ उपयुक्त, ठीक अथवा प्रत्यक्ष अवसर या समय पर। २ वदला लेने की दृष्टि से। मुंहतोड।

बरमा—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० वरमी] लकडी आदि मे छेद करने का लोहे का एक प्रसिद्ध औजार।

पु० [स० ब्रह्म देश०] भारत की पूर्वी सीमा पर वगाल की खाडी के पूर्व और आसाम, चीन के दक्षिण का एक पहाडी प्रदेश।

†पु०=वर्म्मा।

बरमी—वि० [हिं० वरमा=ब्रह्म देश] वरमा-सवधी। वरमा देश का। जैसे—वरमी चावल।

पु० वरमा या ब्रह्म देश का निवासी।

स्त्री० वरमा या ब्रह्म देश की भाषा।

स्त्री० [?] धातु, लकडी आदि मे छेद करने का छोटा वरमा।

स्त्री० [?] गीली नाम का पेड़।

बरम्हबोट—स्त्री० [हिं० वरमा (देश) अ० वोट=नाव] प्राय चालीस हाथ लंवी एक प्रकार की नाव। इसका पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा अधिक चौडा होता है।

बरम्हा†—पुं० १ दे० 'ब्रह्मा'। २ दे० 'वरमा'। ३ दे० 'वर्म्मा'।

बरम्हाउ†—पु०=वरम्हाव।

बरम्हाना—सं० [स० ब्रह्म] [भाव० वरम्हाव] (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना। उदा०—तोरन तूर न ताल वजै वरम्हावत भाट गावत ठाढी।—केशव।

बरम्हावा†—पु० [स० ब्रह्म+आव (प्रत्य०)] १ ब्राह्मणत्व। २ ब्राह्मण का दिया हुआ आशीर्वाद। उदा०—वाएँ हाथ देइ वरम्हाऊ। —जायसी।

बरराना—अ०=वर्राना।

बररे, बररें†—पुं०=वर्रे (भिड)।

बरवट†—स्त्री० दे० 'तिल्ली' (रोग)।

बरवल—पु० [देश०] एक प्रकार की भेड।

बरवह†—पु० [?] मछलियाँ खाकर निर्वाह करनेवाली एक चिडिया।

बरवा—पु०=वरवै।

बरवै—पु० [देश०] एक छद जिसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरणो मे वारह-वारह और सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरणो मे सात-सात मात्राएँ होती हैं। सम चरणो की अतिम चार-चार मात्राओ का जगण के रूप मे होना आवश्यक होता है।

बरष*—पु०=वर्ष।

बरषना†—अ०=वरसना।

बरषा†—स्त्री०=वर्षा।

बरषाना†—स०=वरसाना।

बरषासन—पु० [स० वर्षाशन] साल भर की भोजन सामग्री जो एक व्यक्ति अथवा एक परिवार के लिए यथेष्ट हो।

बरस—पु० [स० वर्ष] १. उतना समय जितना पृथ्वी को सूर्य की पूरी एक परिक्रमा करने मे लगता है अर्थात् ३६५ दिन ५ घटे, ४८ मिनट और ४५ ५१ सेकड का समय। २ ३६५ दिनो का समय। अधिवर्ष मे इसका मान ३६६ दिनो का होता है। ३ विभिन्न पचागो के द्वारा नियत ३६५ दिनो का विशिष्ट समय।

पद—बरस दिन का दिन=ऐसा दिन। (त्योहार आदि) जो साल मे एक ही वार आता हो। वडा त्यौहार।

४ वह समय जो एक जन्म-दिन से दूसरे जन्म-दिन तक मे पडता है। जैसे—इस समय इसका तीसरा वर्ष चल रहा है।

बरस गाँठ—स्त्री० [हिं० वरस+गाँठ] १ वह तिथि या दिन जो किसी के जन्म की तिथि या जन्म-दिन के क्रमात् ३६५-३६५ दिनो के उपरात पडता है। साल-गिरह। २ उक्त दिन मनाया जानेवाला उत्सव।

बरसना—अ० [स० वर्षण] १ वादलो से जल का वूंदो के रूप मे गिरना। वर्षा होना। २ वर्षा के जल की तरह ऊपर से कणो या छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे गिरना। जैसे—मकानो पर से फूल वरसना।

३. बहुत अधिक मात्रा, मान या सख्या में लगातार आना या आता रहना। जैसे—(क) किसी के घर रुपए बरसना, किसी पर लाठियाँ बरसना (निरतर लाठियों का प्रहार होना)।

मुहा०—(किसी पर) बरस पडना=बहुत अधिक क्रुद्ध होकर लगातार कुछ समय तक डाँटने-डपटने लगना। बहुत कुछ बुरी-भली बातें कहने लगना। जैसे—तुम तो जरा-सी बात पर नौकरों पर बरस पडते हो। ४ बहुत अच्छी तरह और यथेष्ट मात्रा मे दिखाई देना या खूब प्रकट होना। जैसे—किसी के चेहरे से शरारत बरसना, किसी जगह शोभा बरसना। ५ दाँये हुए गल्ले का इस प्रकार हवा मे उडाया जाना जिसमे दाना-भूसा अलग अलग हो जाय। ओसाया जाना। डाली होना।

बरस बियावर—वि० स्त्री० [हिं० बरस+बियावर (बच्चा देनेवाली)] हर साल बच्चा देनेवाली (मादा चौपाया)।

बरसाइत†—स्त्री०=बरसायत।

बरसाइन†—वि० स्त्री०=बरस-बियावर।

बरसाऊ—वि० [हिं० बरसना+आऊ (प्रत्य०)] बरसनेवाला। वर्षा करनेवाला (बादल आदि)। उदा०—हूँ कै बरसाऊ एक बार तौ बरसते।—सेनापति।

वि० [हिं० बरसाना] बरसानेवाला। वर्षा करनेवाला।

बरसात—स्त्री० [स० वर्षा, हिं० बरसना+आत (प्रत्य०)] [वि० बरसाती] १ वह समय जिसमे आकाश से जल बरस रहा हो। जैसे—बरसात हो रही है, अभी घर मे मत निकलो। २ वर्ष की वह ऋतु या मास जिसमे प्राय पानी बरसता रहता है। वर्षाकाल। ३. वर्षा।

बरसाती—वि० [हिं० बरसात+ई (प्रत्य०)] १ बरसात-सबधी। बरसात का। जैसे—बरसाती हवा। २. बरसात के दिनो मे होनेवाला। जैसे—बरसाती तरकारियाँ, बरसाती मेले।

स्त्री० १ प्लास्टिक, मोमजामे आदि का बना हुआ एक प्रकार का ढीला-ढाला कोट जिसे पहनने से शरीर या कपडो पर वर्षा के पानी का कोई प्रभाव नही पडता। २ कोठियो आदि के प्रवेश-द्वार पर बना हुआ वह छायादार थोडा-सा स्थान जहाँ सवारियाँ उतारने के लिए गाडियाँ खडी होती है।

पु० १ घोडो का एक रोग जो प्राय बरसात मे होता है। २ प्राय बरसात के दिनो मे आँख के नीचे होनेवाला एक प्रकार का घाव। ३ बरसात के दिनो मे पैर की उँगलियो मे होनेवाली एक प्रकार की फुसियाँ। ४ चरस नाम का पक्षी। चीनी मोर।

बरसाना—स० [हिं० बरसना का प्रे०] १ बादलो का जल की वर्षा करना। २. वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सी चीजें ऊपर से नीचे गिराना। जैसे—फूल बरसाना। ३ बहुत अधिक मात्रा मे चारो ओर से प्राप्त करना। ४ अनाज को इस प्रकार हवा मे गिराना जिसमे दाने और भूसा अलग हो जायँ। ओसाना। डाली देना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

बरसायत—स्त्री०=बरसाइत।

स्त्री० [स० वट+सावित्री] जेठ बदी अमावस जिस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री की पूजा करती है।

बरसावना†—स०=बरसाना।

बरसिंघा—पु० [हिं० बर=ऊपर+हिं० सीग] वह बैल जिसका एक सीग खड़ा और दूसरा सीग नीचे की ओर झुका हुआ हो। मैना।

†पु०=बारहसिंगा।

बरसी—स्त्री० [हिं० बरस+ई (प्रत्य०)] १ वह तिथि या दिन जो किसी के मरने की तिथि या दिन के ठीक वर्ष-वर्ष बाद पडता हो। २. मृत का वार्षिक श्राद्ध।

बरसीला*—वि० [हिं० बरसना+ईला (प्रत्य०)] बरसनेवाला।

बरसू—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

बरसोदिया—पु० [हिं० बरस+ओदिया (प्रत्य०)] वह नौकर जो साल भर तक कोई काम करने के लिए नियुक्त हुआ या किया गया हो।

बरसौड़ी†—स्त्री० [बरस+औडी (प्रत्य०)] वर्ष के बरे दिया जानेवाला कोई कर।

बरसौंहा*—वि० [हिं० बरसना+औंहा (प्रत्य०)] [स्त्री०] बरसौंही। १ बरसनेवाला। २ जो बरसने को हो।

बरहँटा—पु० [स० भटाकी] कडवे भट का पौधा और फल।

बरह—पु० [फा० बर्ग] दल। पत्ता। पत्ती।

बर-हक़—वि० [फा०] १ जो धर्म अथवा न्याय की दृष्टि मे बिलकुल ठीक हो। २. उचित। वाजिब।

बरहना—वि० [फा० बर्हन] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नगा। नग्न।

बरहमंड†—पु०=ब्रह्मांड।

बरहम—वि० [फा० बरह्म] [भाव० बरहमी] १ जिसे क्रोध आ गया हो। क्रुद्ध। २ भडका हुआ। उत्तेजित। क्षुब्ध। ३ इधर-उधर छितरा या बिखरा हुआ।

†पु०=ब्रह्म।

बरहा—पु० [हिं० बहना] [स्त्री० अल्पा० बरही] छोटी नाली विशेषत दो मेंडो के बीच की वह छोटी नाली जिसमे खेतो को पानी पहुँचाया जाता है।

पु० [स० बर्हि] मोर।

पु० [हिं० बरना=बटना] मोटा रस्सा।

पु० [स० वाराह] [स्त्री० अल्पा० बरही] जगली सूअर।

बरीह—पु०=बरही।

बरहिया†—स्त्री० [हिं० बारह ?] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो बारह हाथ चौडी होती थी।

बरही—पु० [स० बर्हि] १ मयूर। मोर। २ साही नामक जगली जतु। ३ अग्नि। आग। ४ कुक्कुट। मुरगा।

स्त्री० [हिं० बारह] १ सतान उत्पन्न होने मे बारहवाँ दिन। २. उक्त अवसर पर प्रसूता को कराया जानेवाला स्नान और उसके साथ होनेवाला उत्सव।

स्त्री० [हिं० बरहा] १ पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा। २ जलाने की लकडियो का गट्ठर। ईंधन का बोझ (रस्सी से बँधी होने के कारण)।

बरहीपीड़—पु० [स० बर्हि पीड] मोर के परो का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट।

बरही-मुख—पु० [स० बर्हिमुख] देवता।

बरहाँ†—पु० [हि० बरही]=बरही (सन्तान-जन्म की)।

बरह्मना—स०=बरम्हाना।

बरांडल—पु० [देश०] १ जहाज का वह रस्सा जो मस्तूल को सीधा खडा रखने के लिए उसके चारो ओर ऊपरी सिरे से लेकर नीचे तक जहाज के भिन्न भिन्न भागो मे बाँधे जाते हैं। बराडा। २ जहाजी काम मे आनेवाला कोई रस्सा।

बराडा—पु० १ दे० 'बरामदा'। दे० 'बडल'।

बरांडी—स्त्री० [अ० ब्रैंडी] आडू, सेब आदि के रस मे बनाई जानेवाली एक तरह की बढिया शराब।

बरा—पु० [स० वटी] उडद की पीसी हुई दाल का बना हुआ टिकिया के आकार का एक प्रकार का पक्वान्न जो घी या तेल मे पकाकर यों ही अथवा दही, इमली के पानी आदि मे डालकर खाया जाता है। बडा।

†पु०=बरगद (वट वृक्ष)।

†पु०=बहूँटा (बाँह पर पहनने का गहना)।

बराई†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गन्ना।

स्त्री०=बडाई।

बराक—पु० [स० वराक] १ शिव। २ युद्ध। लडाई।

वि० १ शोचनीय। सोच करने के योग्य। २ अधम। नीच। ३ पापी। ४ बापुरा। बेचारा।

बराट—पु० [स० वराटिका] कौडी।

वि०=बराट्।

बराड़ी—स्त्री०=बरारी।

बरात—स्त्री० [स० वरयात्रा] १ विवाह के समय वर के साथ कन्या-वालो के यहाँ जानेवाले लोगो का दल या समूह जिसके साथ शोभा के लिये बाजे, हाथी, घोडे आदि भी रहते है। जनेत।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—निकलना।—सजना।—सजाना।

२. एक साथ मिलकर या दल बाँधकर कही जानेवालो का समूह।

बराती—वि० [हि० बरात+ई (प्रत्य०)] बरात-सबधी।

पु० किसी बरात मे सम्मिलित होनेवाला या होनेवाले व्यक्ति।

बरान कोट—पु० [अ० ब्राउन कोट] १ सिपाहियो के पहनने का एक प्रकार का बडा तथा ढीला-ढाला ऊनी कोट। २ ओवर कोट।

बराना—स० [स० वारण] १. प्रसग आने पर भी कोई बात न कहना। मतलब छिपाकर इधर-उधर की बाते कहना। बचाना। २ बहुत सी वस्तुओ या बातो मे से किसी एक वस्तु या बात को किसी कारण छोड देना। जान-बूझकर अलग करना। बचाना। ३ रक्षा या हिफा-जत करना। खेतो मे से चूहे आदि भगाना।

स० [स० वरण] बहुत सी चीजो मे से अपनी इच्छा के अनुसार चीजें चुनना। देख-देखकर अलग करना। चुनना। छाँटना।

स० [स० वारि] १ सिंचाई का पानी एक नाली से दूसरी नाली मे ले जाना। २ खेतो मे पानी देना। सींचना।

† स०=बालना (जलाना)

बराबर—वि० [फा० बर] १ गुण, महत्त्व, मात्रा, मान, मूल्य, सख्या आदि के विचार से जो किसी के तुल्य या समान हो। जो तुलना के विचार से न किसी से घटकर और न किसी से बढकर ही हो। समान। जैसे—(क) दोनो किताबें तौल मे बराबर है। (ख) कानून की दृष्टि में सब लोग बराबर है।

पद—बराबर का=(क) पूरी तरह से तुल्य या समान। जैसे—इसमे आटा और चीनी दोनो बराबर के पडते है। (ख) बहुत कुछ तुल्य या समान। जैसे—जब लडका बराबर का हो जाय, तब उसे मारना-पीटना नही चाहिए।

२ (तल) जो ऊँचा-नीचा या खुरदुरा न हो। सम। जैसे—वह सारा मैदान बराबर कर दो। ३ जैसा होता हो या होना चाहिए, वैसा ही। उपयुक्त और ठीक। ४ (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। ५ जिसका अत या समाप्ति कर दी गई हो। जैसे—सारा काम बराबर करके तब यहाँ से उठना।

मुहा०—(कोई चीज) बराबर करना=समाप्त कर देना। अत कर देना। न रहने देना। जैसे—उन्होंने दो ही चार बरस मे बड़ो की सारी सम्पत्ति बराबर कर दी।

६ जिसके अभाव, त्रुटि, दोष आदि की पूर्ति या सशोधन कर दिया गया हो। जैसे—गड्ढे बराबर करना।

क्रि० वि० १. बिना रुके हुए। लगातार। निरतर। जैसे—बराबर आगे बढते रहना चाहिए। २ एक ही पक्ति या सीध मे। जैसे—सडक के दोनो तरफ बराबर पेड़ लगे हैं। ३. सदा। हमेशा। जैसे—हमारे यहाँ तो बराबर ऐसा ही होता आया है। ४ पार्श्व मे। बगल मे। जैसे—दुश्मन की कब्र तेरे बराबर बनायेंगे।—दाग। ५. बिना किसी परिवर्तन, विकृति आदि के। ६ साथ-साथ। जैसे—भीड मे हमारे बराबर रहना, इधर-उधर मत हो जाना। ७ किसी से समान दूरी पर। समानान्तर। जैसे—इसी के बराबर एक और रेखा खींचो।

बराबरी—स्त्री० [हि० बराबर+ई (प्रत्य०)] १ बराबर होने की अवस्था या भाव। समानता। तुल्यता।

पद—बराबरी से=अशपत्र, राज-ऋण, विनिमय आदि की दर के सबध मे अकित, नियत या वास्तविक मूल्य पर। (ऐट पार)

२ गुण, रूप, शक्ति आदि की तुल्यता या सादृश्य। ३ वह स्थिति जिसमे प्रतियोगिता, स्पर्धा आदि के कारण किसी का अनुकरण करने, अथवा उसके तुल्य या समान बनने का प्रयत्न किया जाता है। मुकाबला। जैसे—वह तो बडे आदमी है, तुम उनकी क्या बराबरी करोगे? ४. कुश्ती, खेल आदि के परिणाम की वह स्थिति जिसमे दोनो पक्ष न तो एक दूसरे को हरा ही सके हो और न एक दूसरे से हारे ही हो।

बरामद—वि० [फा०] १ जो बाहर निकला हुआ हो। बाहर आया हुआ। सामने आया हुआ। २ (चुरा या छिपाकर रखा हुआ पदार्थ) किसी के घर से ढूँढकर बाहर निकाला या सामने लाया हुआ। जैसे—किसी के यहाँ से चोरी या चोर-बाजारी का माल बरामद होना।

स्त्री० १ बाहर जानेवाला माल। निर्यात। २ प्राप्य धन की होने-वाली वसूली। ३ दे० 'गग-बरार'।

बरामदगी—स्त्री० [फा०] १. बरामद होने अर्थात् बाहर आने की क्रिया या भाव। २ खोये या चोरी गये हुए माल का किसी के पास से निकाल कर प्राप्त किया जाना। ३. विदेशों को माल भेजने की क्रिया या भाव। निर्यात करना।

बरामदा—पु० [फा० बरामद] १ मकानो मे वह छाया हुआ लबा

बरुवा†—पु०=बरुआ।
बरूथ—पु०=बरुथ।
बरूथी—स्त्री० [स० वरूथ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच मे है।
बरेंड़ा—स्त्री० [स० वरडक=गोला, गोल लकडी] [स्त्री० अल्पा० बरेंडी] १ छाजन के नीचे लम्बाई के बल लगी हुई लकडी। बलीडा। २ खपरैल या छाजन के बीचवाला सबसे ऊँचा भाग।
बरे—अव्य० [स०√वल, हिं वर] १. जोर मे। २ ऊँचे स्वर से। बलपूर्वक। ३ जबरदस्ती। ४ बदले मे। ५. निमित्त। लिए। वास्ते।
बरेखी—स्त्री० [हिं० बाँह+रखना] बाँह पर पहनने का एक गहना। स्त्री० [हिं० वर+रक्षा] विवाह-सबध निश्चित और स्थिर करने के लिए वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।
बरेच्छा—पु०=बरच्छा।
बरेजा—पु० [स० वाटिका, प्रा० वाडिअ] पान का भीटा।
बरेठा†—पु० [स० वरिष्ठ?] धोबी।
बरेत—पु०=बरेता।
बरेता—पु० [हिं० बरना, बटना+एत (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बरेती] सन का मोटा रस्सा। नार।
बरेदी†—पु० [देश०] चरवाहा।
बरेपी—स्त्री०=बरेखी।
बरैंडा†—पु०=बरेडा।
बरो—स्त्री० [हिं० वार=बाल] १ आलू की जड का पतला रेशा। (रगरेज) २ एक प्रकार की घास।
बरोक—पु० [हिं० बर+रोकना] १ विवाह-सबध निश्चित होने के पहले होनेवाला एक कृत्य। विशेष दे० 'बरच्छा'। २ वह धन जो उक्त अवसर पर कन्या-पक्ष की तरफ से वर-पक्षवालो को दिया जाता है।
अव्य० [फा० ब+हिं० रोक] बिना किसी रोक-टोक या बाधा के।
*पु० [स० वलीक] सेना।
बरोजा†—स्त्री० [स० वट+ज] बरगद की जटा। बरोह।
बरोठा—पु० [स० द्वार+कोष्ठ, हिं० बार+कोठा] १ ड्योढी। पौरी।
पद—बरोठे का चार=विवाह के समय होनेवाली द्वार-पूजा।
२. दीवानखाना। बैठक।
बरोधा—पु० [देश०] वह खेत जिसमे पिछली फसल कपास की हुई हो।
बरोबर†—वि०=बराबर।
बरोह—स्त्री० [स० वा+रोह=आनेवाला] बरगद के पेड के ऊपर की डालियो मे टँगे हुए सूत या रस्सी के जैसा वह अग जो क्रमशः नीचे की ओर झुकता तथा जमीन पर पहुँचकर जम जाता तथा नये वृक्ष का रूप धारण करता है।
बरोही—अव्य० [हिं० बर=बल] १ किसी के बल या आधार पर। २ बलपूर्वक।
बरौंछी—स्त्री० [हिं० बार+ओछना] वह कूँची जिसमे सूअर के बाल लगाये गये हो।

बरौखा—पु० [हिं० बड़ा+ऊख] एक प्रकार का बडा गन्ना।
बरौठा—पु०=बरोठा।
बरौनी—स्त्री० [स० वरण=ढांकना] पलको के आगे के बालो की पक्ति।
बरौरी—स्त्री० [हिं० बडी-बरी] बडी या बरी नाम का पकवान।
बर्क—स्त्री० [अ० बर्क] बिजली। विद्युत।
वि० १ बहुत जल्दी काम करनेवाला। तेज। २ (पाठ) जो इतना कठस्थ हो कि तुरन्त कहा या सुनाया जा सके।
बर्कत†—स्त्री०=बरकत।
बर्कर—पु० [स० बर्कर] १. बकरा। २. पशु का बच्चा। ३ हँसी-मजाक।
बर्की—वि० [अ० बर्की] बर्क अर्थात् बिजली-सबधी। विद्युत् का।
बर्खास्त—वि० [भाव० बर्खास्तगी]=बरखास्त।
बर्ग—पु० [फा०] दल। पत्ता। पत्ती।
बर्छा—पु०=बरछा।
बर्ज*—वि० [स० वर या वर्य] अपने वर्ग मे श्रेष्ठ। उदा०—व्यास आदि कवि बर्ज बखानी।—तुलसी।
बर्जना—स०=बरजना।
बर्णन—पु०=वर्णन।
बर्णना—स० [हिं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।
बर्त†—पु०=व्रत।
बर्तन—पु०=बरतन।
बर्तना—स०=बरतना।
बर्ताव—पु०=बरताव।
बर्द—पु० [स० बलद] बैल।
बर्दवानी—स्त्री० [बर्दवान (स्थान)] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार जो कदाचित् बर्दवान मे बनती थी।
बर्दाश्त—स्त्री०=बरदाश्त।
बर्न†—पु०=वर्ण।
बर्न्य—वि०=वर्ण्य।
बर्फ—पु०=बरफ।
विशेष—'बर्फ' के सभी विकारी रूपो के लिए दे० 'बरफ' के विकारी रूप।
बर्बट—पु० [स०√बर्ब् (गति)+अटन्] राजमाष।
बर्बटी—स्त्री० [सं० बर्बट+ङीष्] १ राजमाष। २ वेश्या।
बर्बर—पु० [स०√बर्ब् (जाना)+अरन्?] १. प्राचीन काल मे, आर्यो से भिन्न कोई व्यक्ति। २ उत्तर काल मे कोई ऐसा व्यक्ति जिसमे आर्यो के से गुण न हो, बल्कि जो असभ्य, क्रूर और हिंसक हो। जगली व्यक्ति। ३ जगली जातियो का नृत्य। ४. अस्त्रो आदि की झकार। ५ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग। ६ घुँघराले बाल। ७. एक तरह का पौधा। ८ एक तरह की मछली। ९ एक तरह का कीडा।
वि० [भाव० बर्बरता] १ जो असभ्य, क्रूर, जगली और हिंसक हो। २ उद्धत। उद्दड। ३. घुँघराला (बाल)।
बर्बरक—पु० [स०] एक प्रकार का नक्षत्र जिसे शीत चन्दन भी कहते हैं।

बर्बरता—स्त्री० [सं० बर्बर+तल्+टाप्] १. बर्बर अर्थात् परम असभ्य, क्रूर तथा हिंसक होने की अवस्था या भाव। २. बर्बर व्यक्ति का कोई विशिष्ट आचरण या कार्य।

बर्बरा—स्त्री० [सं० बर्बर+टाप्] १. बर्बरी। वन-तुलसी। २. एक प्रकार की मक्खी। २. एक प्राचीन नदी।

बर्बरी—स्त्री० [सं० बर्बर+ङीष्] १. वन तुलसी। २. ईंगुर। सिंदूर। ३. पीला चन्दन।

बर्रा—पु०=बर्रे।

पु० [हिं० बरना] रस्सा-रस्सी।

बर्राक—वि० [अ० बर्राक] १ जगमगाता हुआ। चमकीला। २ बहुत उजला। सफेद। ३ वेगवान्। तेज। ४ चतुर। चालाक। ५. जिसका पूरी तरह से अभ्यास किया गया हो। ६ कंठस्थ। मुखाग्र।

बर्राना—अ० [अनु० बर बर] १ बर बर या बड़ बड़ करना। व्यर्थ बोलना। बकना। २ नींद में पड़े पड़े व्यर्थ की बातें करना।

बर्रे—पु० [सं० वरण] १ मधु-मक्खियों की तरह छत्ते बनाकर रहने-वाला एक तरह का भौंरे के आकार-प्रकार का एक मांसभक्षक कीड़ा जो उड़ते समय भूँ-भूँ शब्द करता रहता है। भिड़। २ दे० 'कुसुम'।

बर्रो—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

बर्सात—स्त्री०=बरसात।

बर्हं—पु०=बर्ह (मोर का पंख)।

बर्ही—पु०=बर्ही (मोर)।

बलंद—वि० [फा०] १. उच्च। ऊँचा। २. महान्।

बलंदी—स्त्री० [फा०] १. ऊँचाई। २. महत्ता।

बलंधरा—स्त्री० [सं०] भीमसेन की पत्नी। (महाभारत)

बलंबी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल खट्टे होते है और अचार के काम आते है। २ उक्त पेड़ का फल।

बल—पु० [सं०√बल् (जीवन देना)+अच्] १. वह शारीरिक तत्त्व जिसके सहारे हम चलते-फिरते और सब काम करते है। यह वस्तुतः हमारी शक्ति का कार्यकारी रूप है; और चीजें उठाना, खींचना, ढकेलना, फेंकना आदि काम इसी के आधार पर होते है।

मुहा०—बल बाँधना=विशेष प्रयत्न करना। जोर लगाना। उदा०—जनि बल बाँधि बढावहु छीति।—सूर। बल भरना=जोर या ताकत दिखाना या लगाना।

२. उक्त का वह व्यावहारिक रूप जिसमें दूसरो को दबाया, परिचालित किया अथवा वश में रखा जाता है। ३. राज्य या शासन के सशस्त्र सैनिकों आदि का वर्ग जिसकी सहायता से युद्ध, रक्षा, शांति-स्थापन आदि कार्य होते है। (फोर्स, उक्त तीनों अर्थों में) ४. शरीर। ५ पुरुष का वीर्य। ६ ऐसा परकीय आधार या आश्रय जिसके सहारे अपने बूते या शक्ति से बढ़कर कोई काम किया जाता है। जैसे—तुम तो उन्ही के बल पर बढ़-बढ़कर बातें कर रहे हो।

पद—किसी के बल=किसी के आसरे या सहारे से। जैसे—हाथ के बल उठना, पैरो के बल बैठना।

७ पहलू। पार्श्व। जैसे—दाहिने (या बाएँ) बल लेटना।

पु० [सं० बल] १. बलराम। बलदेव। २. कौआ। ३. एक राक्षस का नाम। ४. वरुण नामक वृक्ष।

पु० [सं० वलि=झुर्री, मरोड़ या वलय] १ वह घुमाव, चक्कर या फेरा जो किसी लचीली या नरम चीज़ के बटने या मरोड़ने से बीच बीच में पड़ जाता है। ऐंठन। मरोड़। जैसे—रस्सी जल गई पर उसके बल नहीं गये।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—निकालना।

मुहा०—बल खाना=(क) बटने या घुमाए जाने से घुमावदार हो जाना। ऐंठा जाना। (ख) कुंडली या ढेरा होना। बल देना (ग) ऐंठना। मरोड़ना। (घ) बटना। जैसे—डोरी या रस्सी में बल देना।

२. किसी चीज को गोल अथवा किसी दूसरी चीज के चारों ओर घुमाने पर हर बार पड़नेवाला चक्कर या फेरा। लपेट। जैसे—रस्सी के दो बल डाल दो तो गठरी मजबूती से बँध जायगी।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

३. गोलाई लिये हुए वह घुमाव या चक्कर जो लहरों के रूप में दूर तक चला गया हो। ४. ऐसा अभिमान जिसके कारण मनुष्य नम्रतापूर्वक आचरण या व्यवहार न करता हो। जैसे—थोड़े दिन ठहरो मैं तुम्हारा सारा बल निकाल दूँगा।

मुहा०—बल की लेना=घमंड करना। इतराना।

५ ऐसा अन्तर, त्रुटि या दोष जिसके कारण कोई चीज ठीक तरह से काम न करती हो। जैसे—न जाने इस घड़ी में क्या बल है कि यह रोज एक दो बार बंद हो जाती है।

क्रि० प्र०—निकालना।—पड़ना।

६ कपड़ों आदि में पड़नेवाली सिकुड़न। शिकन। जैसे—इस कोट में दो जगह बल पड़ता है; इसे ठीक कर दो। ७. वह अवस्था जिसमें कोई चीज सीधी न रहकर बीच में या और कहीं कुछ झुक, दब या उभर जाती है। लचक।

मुहा०—(किसी चीज का) बल खाना=बीच में से कहीं कुछ टेढ़ा होकर किसी ओर थोड़ा मुड़ जाना। मुड़ना। लचकना। जैसे—कमानी का दबने पर बल खाना। (शरीर का) बल खाना=कोमलता, दुर्बलता, सुकुमारता आदि के कारण अथवा भार-सहीं सकने के रूप में शरीर के किसी अंग का बीच में से कुछ लचकना। जैसे—चलने में कमर या हँसने में गरदन का बल खाना।

८. सहसा झटका लगने पर शरीर के अन्दर की किसी नस के कुछ इधर-उधर हो जाने की वह स्थिति जिसमें उस नस के आसपास स्थान पर कुछ पीड़ा होती है। जैसे—आज सबेरे सोकर उठते (या झुककर लोटा उठाने) के समय कमर में बल पड़ गया है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

९ अंतर। फरक। जैसे—हमारे और तुम्हारे हिसाब में ५) का बल है।

क्रि० प्र०—निकलना।—पड़ना।

मुहा०—बल खाना या सहना=हानि सहना। जैसे—चलो, ५ पाँच रुपए हम ही बल खाये।

स्त्री०=बाल (अनाज की)।

पु० हिं० बाल का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में प्राप्त होता है। जैसे—बल-तोड़।

वलक—पु० [सं०] स्वप्न, विशेषतः आधी रात के बाद आनेवाला स्वप्न। पु० [हिं० वलकना] वलकने की अवस्था, क्रिया या भाव। वि० दे० 'वलकना'।

वल-कटी—स्त्री० [हिं० वाल (अनाज की)+काटना] मुसलमानी राज्य-काल मे फसल काटने के समय किसानो आदि से उगाही जानेवाली कर की किस्त।

वलकना—अ० [अनु०] १ उवलना। उफान आना। खौलना। २ आवेग या उमग मे आना। ३. उभडना।

वलकर—वि० [स० प० त०] [स्त्री० वलकारी] १. वल देनेवाला। २ वल वढानेवाला।

पु० अस्थि। हड्डी।

वलकल†—पु०=वल्कल (छाल)।

वलकाना—स० [हिं० वलकना] १. उवालना। खौलाना। २ उत्तेजित करना। उभाडना। ३ उमंग मे लाना। उदा०—जोवन ज्वर केहि नहिं वलकावा।—तुलसी।

वल-काम—वि० [स०] वल या शक्ति प्राप्त करने का इच्छुक।

वलकुआ—पु० [देश०] एक तरह का वाँस।

वलक्ष—वि० [स० √वल्+क्विप्, वल्√अक्ष्+घञ्] श्वेत। सफेद। पुं० सफेद रग।

वलख—पु० [फा० वलख] अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर।

वलगम—पु० [अ०] [वि० वलगमी] नाक, मुँह आदि मे से निकलने-वाला एक तरह का लसीला गाढा पदार्थ। कफ। श्लेष्मा।

वलगमी—वि० [फा०] १ वलगम-सवधी। २. कफ-प्रधान (प्रकृति)। ३ कफजन्य अर्थात् वलगम के कारण होनेवाला।

वलगर—वि० [हिं० वल+गर] १. वलवान्। २. दृढ। पक्का। मजवूत

वलचक्र—पु० [स० मध्य० स०] १. राज्य। २ राजकीय शासन। ३ सेना।

वलज—पु० [स० वल√जन् (पैदा होना)+ड] १. अन्न की राशि। २ अन्न की फसल। ३ खेत। ४ नगर का मुख्य द्वार। ५ दरवाजा। द्वार। ६ युद्ध। लड़ाई।

वि० वल से उत्पन्न। वलजात।

वलजा—स्त्री० [स० वलज+टाप्] १. पृथ्वी। २ सुदर स्त्री। ३ एक तरह की जूही और उसकी कली। ४. रस्सी।

वल-तोड़†—पु०=वाल-तोड।

वलद—पु० [स० वल√दा (देना)+क] १. वैल। २. जीवक नामक वृक्ष। ३ वह गृह्याग्नि जिससे पौष्टिक कर्म किये जाते थे।

वि० वल देनेवाला।

वल-दर्शक—पु० [स० प० त०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार का सैनिक अधिकारी।

वलदाऊ*—पु०=वलदेव (वलराम)।

वलदिया—पु० [हिं० वलद=वैल] १. वैल आदि चरानेवाला। चरवाहा। २ वनजारा।

वलदेव—पु० [स० वल√दिव्+अच्] १ वलराम। २ वायु।

वलन—पु० [स०√वल् (जीवन)+ल्युट्—अन] वलवान् वनाने की क्रिया। वल देना या वढाना।

वलना—अ० [स० वर्हण या ज्वलन] १. जलना। २ किसी चीज का इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट या लौ निकले। जैसे—आग या दीआ वलना।

वल-नीति—स्त्री० [स० प० त०] १. आधुनिक राजनीति में वह नीति जिसके अनुसार कोई राष्ट्र सैनिक-वल के प्रयोग या सहायता से अपना वल, प्रभाव, हित आदि वढाने का प्रयत्न करता रहता है। २. प्रतियोगियो की तुलना में अपना वल या शक्ति वढाते चलने की चाल या नीति। (पावर-पॉलिटिक्स)

वल-नेह—पु० [हिं० वल+नेह] एक प्रकार का सकर राग जो रामकली, श्याम, पूर्वी, सुदरी, गुणकली और गाधार से मिलकर वना है।

वल-पति—पु० [स० प० त०] १ सेनापति। २. इंद्र।

वल-परीक्षा—स्त्री० [स० प० त०] १. वह क्रिया जिससे किसी का वल जाना जाता हो। २ विरोधी दलो या वर्गों मे होनेवाला वह द्वंद्व जो वलपूर्वक एक दूसरे को दवाने अथवा एक दूसरे से अपनी वात मनवाने के लिए होता है। (शोडाउन)

वल-पुच्छक—पुं० [स० व० स०] कौआ।

वल-पूर्वक—अव्य० [सं० व० स०, कप्] १. वल लगाकर। शक्ति-पूर्वक। २. किसी की इच्छा के विरुद्ध और अपने वल का प्रयोग करते हुए। वलात्। जवरदस्ती।

वल-पृष्ठक—पु० [स० व० स०,+कप्] रोहू (मछली)।

वल-प्रयोग—पु० [सं०] १. किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए शक्ति का किया जानेवाला प्रयोग। (कोअर्सन) २. अनुचित दवाव।

वल-प्रसू—स्त्री० [स० प० त०] वलराम की माता, रोहिणी।

वलवलाना—अ० [अनु० वलवल] [भाव० वलवलाहट] १. जल अथवा किसी तरल पदार्थ का उवलते समय वल-वल करना। २. ऊँट का वलवल शब्द करना।

†अ०=विलविलाना।

†अ०=वडवडाना।

वलवलाहट—स्त्री० [हिं० वलवलाना] वलवलाने से होनेवाला शब्द।

†स्त्री०=विलविलाहट।

† स्त्री०=वडवड़ाहट।

वलवीज—पु० [स० वला–वीज] कंघी के वीज।

वलवीर—पु० [हिं० वल (=वलराम)+वीर (=भाई)] वलराम के भाई श्रीकृष्ण।

वलवूता—पु० [हिं० वल+वूता] १. वल तथा विसात या सामर्थ्य जो किसी दुष्कर काम के सपादन के लिए आवश्यक होते हैं। २. शारी-रिक शक्ति और आर्थिक सपन्नता का समाहार।

वलभ—पु० [स० वल√भा (चमक)+क] एक प्रकार का विषैला कीडा।

वलभद्र—पु० [स० वल+अच्, वल-भद्र, कर्म० स०] १. वलदेव जी का एक नाम। २ लोध का पेड़। ३. नील गाय। ४. पुराणानुसार एक पर्वत।

वलभद्रा—स्त्री० [स० वलभद्र+टाप्] १ कुमारी कन्या। २. त्राय-माण लता। ३. नील गाय।

वलभी—स्त्री० [स० वलभि] मकान की सबसे ऊपरवाली छत पर की कोठरी या कमरा। ऊपर का खड। चौबारा।
वलम—पु० [सं० वल्लभ] प्रियतम। पति। वालम।
वलमीक—पु०=वल्मीक (वाँबी)।
वल-मुख्य—पु० [सं० स० त०] सेनानायक।
वलय—पु०=वलय।
वलया*—स्त्री०=वलय।
वलराम—पु० [स०√रम् (रमण)+घञ्, वल-राम, व० स०] श्रीकृष्ण-चन्द्र के वडे भाई जो रोहिणी से उत्पन्न थे। वलदेव।
वलल—पु० [स० वल√ला (लेना)+क] १ वलराम। २ इद्र।
वलवंड*—वि० [सं० वलवत] वलवान्।
वलवत—वि० [स० वलवत्] वलवान्। ताकतवर।
वलवत्—वि० [स० वल+मतुप्] (ऐसा विधान या नियम) जो चलन मे हो और इसी लिए जो अपना वल प्रदर्शित कर रहा हो। (इन-फोर्स)
† अव्य० वलपूर्वक। वलात्।
वलवती—वि० स्त्री० [स० वलवत्+ङीप्] जो बहुत अधिक प्रवल हो और जिसे रोका या मिटाया न जा सकता हो। जैसे—वलवती इच्छा।
वलवत्ता—स्त्री० [सं० वलवत्+तल्+टाप्] १. वलवान् होने की अवस्था या भाव। २. श्रेष्ठता।
वल-वर्धक—वि० [स० प० त०] वल वढानेवाला।
वल-वर्धन—पु० [स० प० त०] वल या शक्ति वढाने का काम।
वल-वर्धी—वि०=वलवर्धक।
वलवा—पु० [फा० वल्व] १. दो दलो या सप्रदायो मे होनेवाला वह उग्र सघर्प जिसमे मार-काट, अग्निकाड आदि उपद्रव भी होते हैं। २ वगावत। विद्रोह।
वलवाई—पु० [फा० वलवा+ई (प्रत्य०)] १. वलवा करनेवाला। २. विद्रोही। वागी।
वलवान् (न्)—वि० [स० वल+मतुप्, वत्व] [स्त्री० वलवती, भाव० वलवत्ता] १ जिसमे अत्यधिक वल हो। शक्तिशाली। २. पुष्ट। मजवूत। वलिष्ठ।
वलवार†—वि०=वलवान्।
वल्वीर—पु०=वलवीर।
वल-व्यसन—पु० [सं० प० त०] सेना की हार। सैनिक पराजय।
वलशाली(लिन्)—वि० [स० वल√शल् (प्राप्ति)+णिनि] [स्त्री० वलशालिनी] वलवान्। वली।
वल-शील—वि० [स० व० स०] वलवान्।
वलसुम—वि० [हिं० वालू+?] (जमीन) जिसमे वालू हो। वलुआ।
वलसूदन—पु० [स० वल√सूद् (नाश)+णिच्+ल्यु—अन] १. इन्द्र। २. विष्णु।
वल-स्थिति—स्त्री० [सं० प० त०] सैनिक शिविर। छावनी।
वलहन्—पु० [स० वल√हन् (मारना)+क्विप्] १ इन्द्र। २. कफ। श्लेष्मा।
वलहा—वि० [सं० वलहन्] १ वल अर्थात् शक्ति का नाश करनेवाला। २. वल अर्थात् सेना का नाश करनेवाला।
वल-हीन—वि० [स० तृ० त०] जिसमें वल न हो। अशक्त। शक्ति-हीन।
वला—स्त्री० [स० वल+अच्+टाप्] १. वरियारा नामक क्षुप। २. वैद्यक मे पौधो का एक वर्ग जिसके अतर्गत ये चार पौधे है—वला या वरियारा, महावला या सहदेई, अतिवला या कँगनी और नागवला या गँगरेन। ३. वह क्रिया या विद्या जिसके वल से युद्ध-क्षेत्र में योद्धाओं को भूख-प्यास नही लगती थी। ४ दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ५ नाटको मे छोटी वहन के लिए सबोधन-सूचक शब्द। ६. पृथ्वी। ७ लक्ष्मी। ८ जैनों के अनुसार एक देवी जो वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवे अर्हत् के उपदेशों का प्रचार करनेवाली कही गई है।
स्त्री० [अ०] १ कोई ऐसा काम, चीज या वात जो बहुत अधिक कष्ट-दायक हो और जिससे सहज मे छुटकारा न मिल सकता हो। आपत्ति। विपत्ति। सकट। २. कोई ऐसा काम, चीज या वात जो अनिष्टकारक या कष्टप्रद होने के कारण वहुत ही अप्रिय तथा घृणित मानी जाती हो या जिससे लोग हर तरह से वचना चाहते हों। जैसे—वियोगियों के लिए चाँदनी रात (या वरसात) भी एक वला ही होती है। ३ वहुत ही अप्रिय, घृणित, तुच्छ या हेय वस्तु। जैसे—यह कहाँ की वला तुम अपने साथ लगा लाये।
पद—वला का=(क) वहुत अधिक तीव्र या प्रवल। जैसे—आज तो तरकारी (या दाल) मे वला की मिरचें पडी है। (ख) वहुत ही उग्र, प्रचड, भीषण या विकट। जैसे—वह तो वला का लटाका निकला। वला से=कोई चिंता नही। कुछ परवाह नही। जैसे—वह जाता है तो जाय, हमारी वला से। हमारी वला ऐसा करे=हम कभी ऐसा नही कर सकते।
मुहा०—(किसी की) वलाएँ लेना=किसी के सिर के पास दोनो हाथ ले जाकर धीरे-धीरे उसके दोनो पार्श्वों पर से नीचे की ओर लाना जो इस वात का सूचक होता है कि तुम्हारे सव कष्ट या विपत्तियाँ हम अपने ऊपर लेते है। (स्त्रियों का शुभ-चिंतना सूचक एक अभिचार या टोटका)
४ भूत-प्रेत आदि अथवा उनके कारण होनेवाला उपद्रव या वाधा। (स्त्रियाँ) जैसे—उसे तो कोई वला लगी है।
वलाइ—स्त्री०=वला (विपत्ति)।
वलाक—पु० [स० वल√अक् (जाना)+अच्] [स्त्री० वलाका, वला-किका] १. वक। वगला। २ एक राजा जो भागवत के अनुसार पुरु का पुत्र और जह्नु का पौत्र था। ३ एक राक्षस का नाम।
वलाका—स्त्री० [स० वलाक+टाप्] १ मादा वगला। वगली। २. वगलो की पक्ति। ३ प्रेयसी। ४ कामुक स्त्री। ५ नृत्य मे एक प्रकार की गति।
वलाकिका—स्त्री० [स० वलाक+कन्+टाप्, इत्व] १ मादा वगला। वलाका। २ वगलो की एक जाति।
वलाग्र—पु० [स० वल-अग्र, प० त०] १. सेना का अगला भाग। २ सेनापति।
वि० वलवान्। शक्तिशाली।
वलाघात—पु० [सं० वल+आघात, तृ० त०] १. किसी काम चीज या वात पर साधारण से कुछ अधिक वल लगाने या जोर देने की क्रिया

या भाव। (स्ट्रेस) २. मनोभाव, विचार आदि प्रकट करते समय उनकी आवश्यकता, उपयोगिता, महत्त्व आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए उन पर डाला जानेवाला जोर। (एमफैसिस) ३ दे० 'स्वराघात'।

बलाट—पु० [स० बल√अट् (जाना)+अच्] मूँग।

बलाढ्य—वि० [स० बल–आढ्य, तृ० त०] बलवान्।
पु० उरद। माष।

बलात्—अव्य० [स०बल√अत् (निरन्तर गमन)+क्विप्] १ बल-पूर्वक। जबरदस्ती से। बल से। २ हठ-पूर्वक। हठात्।

बलात्कार—पु०[स० बलात्√कृ (करना)+घञ्]१ बलात् या हठ-पूर्वक कोई काम करना। विशेषत किसी या दूसरो की इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना। २ पुरुष द्वारा किसी पर-स्त्री की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक धमकाकर या छलपूर्वक किया जानेवाला सभोग। (रेप) ३ स्मृति मे, महाजन का ऋणी को अपने यहाँ रोककर तथा मार-पीटकर पावना वसूल करना।

बलात्कारित—भू० कृ०=बलात्कृत।

बलात्कृत—भू० कृ०[स० बलात्√कृ (करना)+क्त] १ जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। २ जिससे बलपूर्वक या जबरदस्ती कोई काम कराया गया हो।

बलात्मिका—स्त्री० [स० बल-आत्मन्, ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व] हाथी-सूँड नाम का पौधा।

बलाधिक्य—वि०[स० स० त०] [भाव० बलाधिक्य] अधिक बलवाला।

बलाधिकरण—पु०[स० बल-अधिकरण, ष० त०] सैनिक कार्रवाई।

बलाधिकृत—पु०[स० बल-अधिकृत, ष० त०] सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी।

बलाध्यक्ष—पु०[स० बल-अध्यक्ष, ष० त०] सेना का अध्यक्ष। सेनापति।

बलाना†—स०=बुलाना।

बलानुज—पु०[स० बल-अनुज, ष०त०] बलराम के छोटे भाई श्रीकृष्ण।

बलान्वित—भू० कृ०[स० बल-अन्वित, तृ०त०] १ बल से युक्त किया हुआ। २ बली। बलशाली।

बला-पंचक—पु०[स० ष० त०] वैद्यक मे बला, अतिबला, नागबला, महाबला और राजबला नाम की पाँच ओषधियो का समुदाय।

बलाबल—पु० [स० द्व० स०] किसी मे होनेवाले बल और निर्बलता दोनो का योग। जैसे—पहले अपने बलाबल का विचार करके काम मे हाथ लगाना चाहिए।

बलामोटा—स्त्री०[स० बल+आ√मुट् (मर्दन)+अच्+टाप्] नाग-दमनी नाम की ओषधि।

बलाय—पु०[स० बल-अय, ष० त०] बरुना नामक वृक्ष। बन्ना। बलास।
स्त्री० [अ० बला] १ आपत्ति। विपत्ति। सकट। २ कष्टदायक चीज या बात। दे० 'बला'। ३ एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ की किसी उँगली के सिरे पर गाँठ निकल आती है या ऐसा फोडा हो जाता है जो उँगली टेढी कर देता है।

बलाराति—पु०[स० बल-आराति, ष० त०]१ इद्र। २ विष्णु।

बलालक—पु०[स० बल√अल् (पर्याप्त)+ण्वुल्—अक] जलआँवला।

बलावलेप—पु०[स० बल-अवलेप, तृ० त०]१ अपने सम्बन्ध मे यह कहना कि मुझमे बहुत अधिक बल है। २. अभिमान। घमड।

बलाश—पु०[स० बल√अश्+अण्]१. कफ। २ क्षय।

बलास—पु०[स०बल√अस् (फेंकना)+अण्]१ कफ। २ कफ के बढने से होनेवाला एक रोग जिसमे गले और फेफडे मे सूजन और पीडा होती है।
पु०[स० बला] बरुना नाम का पौधा।

बलासी (सिन्)—वि०[सं० बलास+इनि] बलास अर्थात् क्षय (रोग) से पीडित।
पु०[स० बलास] बरुना या बन्ना नाम का पौधा।

बलाहक—पु०[स० बल+आ√हा (छोडना)+क्वुन्—अक] १ बादल। मेघ। २ सात प्रकार के बादलो मे से एक प्रकार के बादल जो प्रलय के समय छाते है। ३ मोथा। ४. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोडे का नाम। ५ सुश्रुत के अनुसार दर्वीकर साँपो का एक भेद या वर्ग। ६. एक तरह का बगला। ७ कुश द्वीप का एक पर्वत।

बलाहर—पु०[देश०]१ मछुओ या धीवरो की एक जाति। २. गाँव का चौकीदार।

बलाही—पु०[?]१ चमडा कमानेवाला व्यक्ति। २. चमडे का व्यव-साय करनेवाला-व्यक्ति।

बलिदम—पु०[स० बलि√दम् (दमन करना)+खश्, मुम्] विष्णु।

बलि—पु०[स०√बल् (देना)+इन्]१ प्राचीन भारत मे (क) भूमि की उपज का वह छठा अश जो भूस्वामी प्रतिवर्ष राजा को देता था। राजकर। (ख) वह कर जो राजा अपने धार्मिक कृत्यो के लिए प्रजा से लेता था। २ वह अश या पदार्थ जो किसी देवता के लिए अलग किया गया हो या निकालकर रखा गया हो। ३ देवताओ के आगे रखा जाने-वाला भोजन। नैवेद्य। भोग। ४ देवताओ पर चढाई जानेवाली चीजें। चढावा। ५ देवताओ के पूजन की सामग्री। ६ वह पशु जो किसी देवता या अलौकिक शक्ति को प्रसन्न तथा सतुष्ट करने के लिए उसके सामने या उसके उद्देश्य से मारा जाता हो।
क्रि० प्र०—चढाना।—देना।
२ वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति अपने प्राण या शरीर तक किसी काम, बात या व्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से अर्पित कर देता है।
मुहा०—(किसी पर) बलि जाना=किसीके महत्त्व, मान आदि का ध्यान करते हुए अपने आपको उस पर निछावर करना। बलिहारी होना। उदा०—तात जाऊँ बलि बेगि नहाहू।—तुलसी।
८ पच महायज्ञो मे से भूत यज्ञ नामक चौथा महायज्ञ। ९ उपहार। भेंट। १० खाने-पीने की चीज। खाद्य सामग्री। ११ चँवर का डडा। १२ आठवे मन्वन्तर मे होनेवाले इद्र का नाम। १३ प्रहलाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र जो दैत्यो का राजा था, जिसे विष्णु ने वामन अवतार धारण करके छलपूर्वक बाँध लिया था और ले जाकर पाताल मे रख दिया था।
स्त्री० १ शरीर के चमडे पर पडनेवाली झुर्री। २ बल। शिकन। ३ एक प्रकार का फोडा जो गुदावर्त के पास अर्श आदि रोगो मे उत्पन्न होता है। ४ बवासीर का मसा।
स्त्री०[स० बला=छोटी बहन] सखी। उदा०—ए बलि ऐसे बलम को विविध भाँति बलि जाऊँ।—पद्माकर।

बलि-कर—वि०[स० बलि√कृ (करना) +अच्]१ बलि चढानेवाला। २ कर या राजस्व देनेवाला। ३. शरीर मे झुर्रियाँ उत्पन्न करनेवाला।

वलि-कर्म(न्)—पु०[सं० ष० त०] वलि देने या चढाने का काम।

वलित—भू० कृ० [हिं० वलि] (पशु) जो वलि चढाया गया हो।

वलि-दान—पु०[सं० ष०त०][वि० वलिदानी] १. देवताओ आदि को प्रसन्न करने के लिए उनके उद्देश्य से किसी पशु का किया जानेवाला वध। २. किसी उद्देश्य या बात की सिद्धि के लिए अपने प्राण तक दे देना। जैसे—देश-सेवा के लिए अपने आपको वलिदान करना।

पद—वलिदान का बकरा=ऐसा व्यक्ति जिस पर किसी काम या बात का व्यर्थ ही सारा अपराध या दोष लाद दिया जाय; और तब उसे पूरा पूरा दड दिया जाय। (प्राय: अपने आपको उस अपराध या दोष का भागी बनने से बचाने के लिए और दूसरे को उसका भागी बनाने के लिए)।

वलिदानी—वि० [सं० वलिदान] १ वलिदान-संबधी। वलिदान का। जैसे—वलिदानी परम्परा, वलिदानी बकरा। २. वलिदान करने या चढानेवाला।

स्त्री० =वलिदान।

वलिद्विट्(ष्)—पु०[सं० वलि√ द्विष् (वैर करना)+क्विप्] विष्णु।

वलिध्वंसी (सिन्)—पु० [सं० वलि√ध्वस् (नाश)+णिनि] विष्णु।

वलि-नंदन—पु०[सं० ष० त०] बाणासुर।

वलि-पशु—पु०[सं० मध्य० स०] वह पशु जो यज्ञ आदि मे अथवा किसी देवता को सतुष्ट तथा प्रसन्न करने के लिए उसके नाम पर मारा जाता हो।

वलि-पुष्ट—पु०[तृ० त०] कौआ।

वलि-प्रदान—पु०[सं० ष० त०]=वलि-दान।

वलि-प्रिय—पु०[सं० वलि√ प्री+क] १. लोघ का पेड। २. कौआ।

वलि-बंधन—पु०[सं० वलि√बध् (बांधना)+णिच्+युच्—अन] विष्णु, जिन्होंने राजा वलि को बाँधा था।

वलिभुज् (क्)—पुं०[सं० वलि√ भुज्+क्विप्] कौआ।

वलि भुज्—पु०[सं०] वलि-भुक् का वह रूप जो उसे सम्बोधन कारक मे प्रयुक्त होने पर प्राप्त होता है। उदा०—किन्तु कौन पा सकता, वलिभुज् अमिट कामना पर जय।—पत।

वलिभृत्—वि०[सं० वलि√भृ (भरण करना)+क्विप्, तुक्] १. वलि अर्थात् राज-कर देनेवाला। २. अधीनस्थ।

वलिभोजी (जिन्)—पु० [सं० वलि√भुज् (खाना)+णिनि] कौआ।

वलि-मदिर—पुं०[ष० त०] राजा वलि के रहने का स्थान, पाताल-लोक।

वलि-मुख—पुं०[ब० स०] बन्दर।

वलिवर्द—पु०= वलीवर्द।

वलि-वेश्म(न्)—पु०[ष० त०] =वलि-मदिर।

वलि-वैश्वदेव—पु०[कर्म० स०] पच महायज्ञों मे से भूतयज्ञ नाम का चौथा महायज्ञ।

वलिश—पु० [सं० वलि√शो (पैना करना)+क] मछली फँसाने की कांटिया। बसी।

वलिष्ठ—वि०[सं वलिन्+इष्ठन्] जो सबसे अधिक वलवान् हो।

पु० ऊँट।

वलिष्णु—वि० [सं०√वल् (सवरण)+इष्णुच्] अपमानित।

वलिहरण—पु०[ष० त०] सब प्रकार के जीवो को वलि देना।

वलिहारना—स०[हिं० वलि+हारना] कोई चीज किसी पर से निछावर करना। जैसे—जान वलिहारना।

वलिहारी—स्त्री० [हिं० वलि+हारना] वलिहारने अर्थात् निछावर करने की क्रिया या भाव। कुर्बान जाना।

मुहा०—वलिहारी जाना= निछावर होना। वलिहारी लेना=वलाएं लेना। (दे० 'वला' के अतर्गत)।

पद—वलिहारी है=मैं इतना मोहित या प्रसन्न हूँ कि अपने को निछावर करता हूँ। वाह-वाह! क्या बात है!

वलिहृत—वि०[सं० वलि√हृ (हरण करना)+क्विप्, तुक्] १ वलि या भेंट लानेवाला। २. कर देनेवाला।

पु० राजा।

वलींडा†—पु०[सं० वरंडक] १ छाजन के नीचे लवाई के वल लगी हुई लकडी। वरेंडा। २ सतों की परिभाषा मे, ज्ञान की उच्च अवस्था।

वली (लिन्)—वि०[सं० वल+इनि,] वलवान्। वलवाला। पराक्रमी।

पु० १. भैसा। २. सांड। ३. ऊंट। ४. सूअर। ५. वलराम।

पु० ६. सैनिक। ७. कफ। ८. एक तरह की चमेली।

स्त्री० [हिं०वल] १. वल। शिन। सिलवट। ३. त्वचा पर पडनेवाली झुर्री।

वलीक—पु०[सं०] छप्पर का किनारा।

वलीन—पु०[सं० वल+ख—ईन] बिच्छू।

वि०=वलवान्।

वलीना—स्त्री०[यू० फैलना] एक प्रकार की ह्वेल मछली।

वलीबैठक—स्त्री०[हिं० वली +बैठक] एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमे जघे पर भार देकर उठना-बैठना पडता है।

वलीमुख—पु०[सं० ब० स०] बंदर।

वलीवर्द—पु०[सं०√वृ+क्विप्+वर, ई+वर, द्व० स०, ईवर् √दा+क, वलिन्-ईवर्द, कर्म० स०]१. सांड। २ बैल।

वलुआ—वि०[हिं० वालू] [स्त्री० वलुई] (स्थान) जिसकी मिट्टी मे वालू भी मिला हुआ हो।

पु० रेतीली जमीन।

वलूच—पुं०=वलोच।

वलूचिस्तान—पु०=वलोचिस्तान।

वलूची—पु०=वलोच।

वलूत—पु०[अ०] ठढे प्रदेशो मे होनेवाला माजूफल की जाति का एक पेड।

वलूल—वि०[सं० वल+लच्—ऊङ] वलवान्।

वलूला†—पु०=वुलवुला।

वलै†—पुं०=वलय।

वलैया—स्त्री०[अ० वला, हिं० वलाय] वला। वलाय।

मुहा०—(किसी की) वलैया होना=दे० 'वला' के अन्तर्गत 'वलाए लेना'।

वलोच—पु० आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर मे वसनेवाली एक योद्धा मुसलमान जाति।

वलोचिस्तान—पु० [फा०] आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर का एक प्रदेश।

वलोची—पु०[हिं० वलोच] वलोचिस्तान का निवासी।

स्त्री० वलोचिस्तान की वोली।

वि० बलोच जाति का।

बल्कल—पु० दे० 'वल्कल'।

बल्कस—पु०[स० वल्क√अस् (फेंकना)+अच्, शक० पररूप] आसव की तलछट।

बल्कि—अव्य०[फा०] एक अव्यय जिसका प्रयोग यह आशय सूचित करने के लिए होता है कि —ऐसा नही इसके स्थान पर . । प्रत्युत। वरन्। जैसे—मैं नही, वल्कि आप ही वही चले जायँ।

बल्ब—पु०[अ०]१ शीशे की नली का अधिक चौडा भाग। २ पतले शीशे का एक उपकरण जो विजली के योग से चमकने और प्रकाश करने लगता है। लट्टू।

बल्य—वि० [स० वल+यत्] वलकारक। शक्ति-वर्धक।

पु० वीर्य। शुक्र।

बल्या—स्त्री० [स० वल्य+टाप्] १ अतिवला। २. अश्वगधा। ३. प्रसारिणी। ४ चगोनी।

बल्ल—पु०=वल्ल।'

बल्लकी—स्त्री०=वल्लकी।

बल्लभ—पु०=वल्लभ।

बल्लम—पु०[स० वल, हिं० वल्ला] १. मोटा छड। २ लकडी का वडा और मोटा डडा। बल्ला। ३. डडा। सोटा। ४. वह सुनहला या रुपहला डडा जिसे प्रतिहारी या चोबदार राजाओ या वडे आदमियो के आगे आगे शोभा के लिए लेकर चलते थे और जो अब भी वरातों आदि के साथ लेकर चलते है।

पद—आसा-बल्लम।

५ बरछा। भाला।

बल्लमटर—पु० [अ० वालटियर के अनुकरण पर हिं० वल्लम से] १. स्वेच्छापूर्वक सेना मे भरती होनेवाला सैनिक। २ दे० 'स्वयसेवक'।

बल्लम नोक—वि०[हिं०] १ जिसकी नोक या अगला सिरा वल्लम के फल की तरह नुकीला हो। २ वहुत ही चुभनेवाला, तीखा या पैना। जैसे—तुमने भी खूब वल्लम नोक सवाल किया।

बल्लम-बरदार—पु०[हिं० वल्लम+फा० वर्दार] वह नौकर जो राजाओ की सवारी या वरात के साथ हाथ मे वल्लम लेकर चलता हो।

बल्लरी—स्त्री०=वल्लरी।

बल्लव—पु० [स०√वल्ल् (छिपाना)+घञ्, वल्ल√वा (गमन)+क] [स्त्री० वल्लवी] १ चरवाहा। २. भीम का उस समय का कृत्रिम नाम जब वह राजा विराट के यहाँ रसोइया था। ३ उक्त के आधार पर, रसोइया।

बल्ला—पु०[स० वल्ल=लट्ठा या डडा] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १ लवी, सीधी और मोटी लकडी या लट्ठा जिसका उपयोग छते आदि पाटने और मकान बनाने के समय पाइट आदि बाँधने के लिए होता है। २. मोटा डडा। ३ नाव खेने का डडा या बाँस। ४. गेद के खेल मे छोटे डडे के आकार का काठ का वह चपटा टुकडा जिससे गेद पर आघात करते है। (बैट)

पद—गेंद-बल्ला।

पु० [स० वलय] गोवर की सुखाई हुई गोल टिकिया जो होली जलने के समय उसमे डाली जाती है।

बल्लारी—स्त्री०[देश०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें केवल कोमल गाधार लगता है।

बल्लि†—स्त्री०=वल्ली (लता)।

बल्ली—स्त्री०[हिं० बल्ला] १ लकडी का लवा छोटा टुकडा। छोटा वल्ला। २. नाव खेने का बाँस।

†स्त्री०=वल्ली (लता)।

बल्व—पु०[स०] गणित ज्योतिष मे, एक करण का नाम।

बल्वल—पु०[स०] इल्वल नामक दैत्य का पुत्र जिसका वध बलराम ने किया था।

बवंड़ना†—अ०[स० व्यावर्तन, प्रा० व्यावट्टन]व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना।

बवंडर—पु० [स० वायु-मडल?] १ हवा का वह तेज झोका जो चक्कर खाता हुआ चलता है और जिसमे पडी हुई धूल खभे के रूप मे ऊपर उठती हुई दिखाई पडती है। चक्रवात। बगूला।

क्रि० प्र०—उठना।—चलना।

२. आँधी। तूफान। ३. व्यर्थ का वहुत वडा उपद्रव।

क्रि० प्र०—खडा होना।

बवड़ा†—पु०—ववडर।

बवंड़ियाना†—अ०=ववंडना (भटकना)।

बव—पु०[स०] गणित ज्योतिष मे, एक करण का नाम।

बवघूरा†—पु०=ववडर (वगूला)।

बवन—पु० १ =वपन। २.=वमन।

बवना—स० [सवपन] १. जमने के लिए जमीन पर बीज डालना। बोना। २ छितराना। बिखेरना।

अ० छितराना। बिखरना।

†पु०=बौना (वामन)।

बवरा*—वि०[स्त्री० ववरी]=बावला (पागल)। उदा०—आसनु पवनु दूरि कर ववरे।– कवीर।

बवाल†—पु०=ववाल। (देखे)

बवासीर—स्त्री०[अ० ववासिर] गुदेंद्रिय मे मस्से निकलने का एक रोग जो खूनी और वादी दो प्रकार का होता है। (पाइल्स)

बशर—पु०[अ०] मनुष्य। आदमी।

बशरी—वि०[अ०] [भाव० वशरीयत] मनुष्य-सवधी।

बशरीयत—स्त्री०[अ०] आदमीयत। मनुष्यत्व।

बशर्ते कि—अव्य० [अ०] शर्त यह है कि।

बशिष्ट—पु०=वशिष्ट।

बशीर—वि०[अ०] शुभ सवाद सुनानेवाला।

बशीरी—पु०[अ० वशीर] एक प्रकार का वारीक रेशमी कपड़ा।

बष्कय—वि० [स० √मस्क् (जाना)+अयन्, म—ब, पृपो०, स्—ष्] १. (बछड़ा) जो काफी वडा हो गया हो। २. हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट।

बष्कयणी—स्त्री०[स० वष्कय+इनि+ङीप, न—ण] वह गाय जिसको वच्चा दिये वहुत समय हो गया हो। वकेना।

बसत—पु०[स० वसत] [वि० वसती] वसत ऋतु।

पद—उल्लू बसत=निरा या वहुत वडा मूर्ख।

बसंत-बहार—पु० [सं० बसन्त+हि० बहार] एक प्रकार का संकर राग जो बसंत और बहार के योग से बनता है।

बसंत मुखारी—पु० [सं० बसंत+मुखरी] संगीत में एक प्रकार का राग।

बसंतर†—पु०=बसंदर (अग्नि)।

बसंता—पु०[सं० बसन्त] भूरे रंग की एक प्रकार की चिड़िया।

पु०[सं० वास] कहीं बसने या रहनेवाला। निवासी।

बसंती—वि० [हि० बसंत] १ बसंत ऋतु-संबंधी। २ बसंत ऋतु में होनेवाला। ३ सरसों के फूल की तरह का। पीला। जैसे—बसंती सेहरा।

पु० १ सरसों के फूल की तरह का चमकदार और खुलता पीला रंग। (क्रोम) २ पीला कबूतर।

स्त्री० एक प्रकार की चेचक या माता (रोग)।

बसंदर—पु०[सं० वैश्वानर] अग्नि। आग।

बस—अव्य०[फा०] १. यथेष्ट है कि। पर्याप्त है कि। जैसे—बस इतनी ही दया चाहिए। २ समाप्ति का सूचक एक अव्यय। जैसे—अब बस करोगे या नहीं! ३ इतना मात्र। केवल। सिर्फ।

वि० १ यथेष्ट। पर्याप्त। २ समाप्त। खतम।

पु०[सं० वश] १. अधिकार या शक्ति। जैसे—(क) यह हमारे बस की बात नहीं है। (ख) वह तो अब पूरी तरह से तुम्हारे बस में है।

मुहा०—(किसी को) बस करना=दे० नीचे 'बस में करना'। (किसी के आगे या सामने) बस चलना=किसी के मुकाबले में अधिकार या शक्ति का काम करना। जैसे—ईश्वर की इच्छा के आगे किसी का बस नहीं चलता।

मुहा०—(किसी को) बस में करना या लाना=किसी को इस प्रकार अपने अधिकार में लेना कि वह अपनी इच्छा के अनुसार कोई काम न कर सके।

स्त्री०[अं० ओमनी बस का संक्षिप्त रूप] प्रायः किसी नगर की सीमा के अंदर किसी निश्चित पथ पर चलने वाली बड़ी मोटर गाड़ी जो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सवारियाँ उतारती तथा चढ़ाती चलती है।

बसकर†—वि० [सं० वशीकर] [स्त्री० बसकरी] १ किसी को अपने वश में कर लेनेवाला। वशीकर। २ परम आकर्षक और मनोहर। उदा०—बसुधा की बसकरी मधुरता सुधा पगी बतरानि।—रहीम।

बसत†—स्त्री०[सं० वास] बसा हुआ स्थान। बस्ती।

स्त्री०=वस्तु।

बसतर†—पु०=वस्त्र।

बसति†—स्त्री०=बस्ती।

बसदेवा†—पु०[सं० वासुदेव] एक जाति जो भीख माँगने का पेशा करती है।

बसन—पु०[सं० वस्=प्रेम करना] स्त्री का पति। स्वामी। उदा०—बसन हीन नहि सोह सुरारी।—तुलसी।

बसना—अ०[सं० वसन=निवास करना] १. जीव-जन्तुओं, पक्षियों आदि का बिल या घोसला बनाकर अथवा मनुष्यों का गुफा, झोंपड़ी, मकान आदि बनाकर उसमें निवास करना या रहना। जैसे—किसी समय यहाँ जंगली जानवर बसते थे, पर अब तो यहाँ मनुष्य बस गये हैं। २ घर, नगर या किसी प्रकार के स्थान की ऐसी स्थिति में होना कि उसमें प्राणी या मनुष्य निवास करते हों। जैसे—यह गाँव पहले तो उजड़ चला था, पर अब यह धीरे-धीरे फिर से बसने लगा है। ३. घर या मकान के संबंध में गृहस्थियों और धन-धान्य से भरा-पूरा और सुखपूर्ण होना। जैसे—चाहे किसी का घर बसे या उजड़े, तुम तो मौज करते रहो।

मुहा०—(किसी का) घर बसना (क) विवाह होने पर घर में गृहिणी या पत्नी का आना। जैसे—नए-साल उसकी नौकरी लगी थी, इस साल घर भी बस गया। (ख) घर धन-धान्य और बाल-बच्चों से भरा-पूरा या युक्त होना। जैसे—पहले तो घर में पति-पत्नी दो ही आदमी थे, पर अब बाल-बच्चे हो जाने से उनका घर बस गया है। (किसी का घर में) बसना=किसी का अपने घर में रहकर गृहस्थी के कार्यों का सुचारु रूप से निर्वाह और पालन करना। जैसे—यह औरत तो चार दिन भी घर में नहीं बसेगी, अर्थात् घर छोड़कर (किसी के साथ या यों ही) कहीं निकल जायगी। उदा०—नारद का उपदेश सुनि, कहहु बसेउ को गेह।—तुलसी।

४. कुछ समय तक कहीं अवस्थान करना। टिकना। ठहरना। जैसे—हम तो रमते राम हैं, जहाँ जी चाहा,वहीं दस-पाँच दिन बस गये। ५ लाक्षणिक रूप में किसी चीज, बात या व्यक्ति का ध्यान या विचार मन में दृढ़तापूर्वक जमना या बैठना। जैसे—(क) तुम्हारी बात मेरे मन में बस गई है। (ख) उनके मन में तो भगवान् की भक्ति बसी हुई है।

संयो० क्रि०—जाना।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग मन के सिवा आँखों के संबंध में भी होता है। जैसे—तुम्हारी सूरत मेरी आँखों में बसी हुई है।

६ स्थित होना। ७. बैठना। (क्व०)

अ०[हि० बासना (गंध से युक्त करना) का अ०] किसी वस्तु का किसी प्रकार की गंध या बास से युक्त होना। महक से भरना। बासा जाना। जैसे—(क) इत्र में बसे हुए कपड़े या (सिर के) बाल। (ख) गुलाब में बसी हुई गँडेरियाँ या रेवड़ियाँ।

पु०[सं० वसन] १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। वेष्टन। बेठना। जैसे—बही-खाते का बसना। २. वह थैली जिसमें दुकानदार अपने बटखरे आदि रखते हैं। ३ टाट आदि की वह जालीदार थैली जिसमें रुपए आदि भरकर रखे जाते हैं। ४ वह कोठी जहाँ ऋण आदि देने का कारबार होता है।

†पु०=बासन (बरतन)।

बसनि—स्त्री०[हि० बसना] निवास। वास।

बसर—स्त्री०[फा०] १. जीवन-निर्वाह। २. गुजारा। निर्वाह।

बसवार—पु०[सं० वास=गंध] छौंक। बघार।

बसवास—पुं० [हि० बसना+सं० वास] १. निवास। रहना। २. ढंग। रहन-सहन। ठहरने या रहने का सुभीता।

†पु०=विश्वास।

बसह—पु०[सं० वृषभ; प्रा० बसह] बैल।

बसाँधा—वि०[हि०बास=गन्ध] बासा या सुगन्धित किया हुआ। सुवासित।

बसा—स्त्री० [देश०] १ बर्रे। भिड़। २ एक प्रकार की मछली।

स्त्री०=बसा (चरबी)।

बसात—स्त्री०=बिसात।

बसाना—स०[हि० 'बसना' का स०] १. व्यक्ति के सम्बन्ध में रहने

के लिए घर अथवा जीवन-निर्वाह के लिए उचित साधन या सुभीते देना। जैसे—शरणार्थियों को बसाने के लिए सरकार को बहुत अधिक धन व्यय करना पड़ा है। २ स्थान के सम्बन्ध मे, नये घर आदि बनाकर अथवा गाँव या बस्तियाँ बनाकर उनमे लोगो को स्थिर रूप से रखने की व्यवस्था करना। ३ घर-गृहस्थी या जीवन-यापन के साधनो से युक्त करना।

मुहा०—(अपना) घर बसाना=(क) विवाह करके पत्नी को घर में लाना। (ख) गृहस्थी की सब सामग्री इस प्रकार एकत्र करना कि कुटुंब के सब लोग सुख से रह सके। (किसी का) घर बसाना=किसी का विवाह करा देना।

४ अस्थायी रूप से किसी को कही टिकाने या ठहराने की व्यवस्था करना। (क्व०) जैसे—इन यात्रियो को दो दिन के लिए अपने यहाँ बसा लो। उदा०—नूपुर जनि मुनिवर कल-हसनि, रचे नीड दे बाँह बसायो।—तुलसी। ५ स्थिति मे लाना स्थान देना। उदा०—सुनि कै सुक सो हृदय बसायौ।—सूर। ६. लाक्षणिक रूप मे, किसी बात या व्यक्ति का ध्यान अथवा विचार अपने मन मे दृढतापूर्वक स्थित करना। जैसे—यदि आपका उपदेश हृदय मे बसा लोगे तो तुम्हारा बहुत बडा कल्याण होगा। ७ स्थापित करना। रखना। ७ बैठाना। (क्व०)

स० [हिं० वास+ना (प्रत्य०)] वास अर्थात् गंध से युक्त करना। जैसे—फूलो से तेल बसाना।

†अ०=बसना (गध से युक्त होना)।

†अ० [स० वश] अधिकार, जोर या वश चलना। शक्ति या सामर्थ्य का काम देना अथवा सफल सिद्ध होना। उदा०—मिला रहे और ना मिलै तासो कहा बसाय।—कबीर।

बसारत—स्त्री०[अ०] १ देखने की शक्ति। दृष्टि। २ अनुभव करने या समझने की शक्ति। समझ।

बसाव—पु०[हिं० बसना+आव (प्रत्य०)]बसने की अवस्था, क्रिया या भाव। निवास। जैसे—बसाव शहर का; खेत नहर का।—कहा०।

बसिऔरा†—पु०[हिं० बासी] १ वर्ष की कुछ विशिष्ट तिथियाँ जिनमे स्त्रियाँ बासी भोजन खाती और बासी पानी पीती है। बासी। २ वह भोजन जो उक्त तिथियो मे खाने के लिए एक दिन पहले बनाकर रख लिया जाता है। ३ बासी खाने की प्रथा।

बसिया—स्त्री०=बासी।

स्त्री०=बशी।

बसियाना—अ० [हिं० बासी, या बसिया+ना (प्रत्य०)] बासी हो जाना।

स० किसी चीज को रखकर बासी करना।

अ०[हिं० बास] वास अर्थात् गध से युक्त होना।

बसिष्ठ†—पु०=वसिष्ठ।

बसीकत—स्त्री०[हिं० बसना] १. बसने की क्रिया या भाव। २ बसने का स्थान। ३ बस्ती। आबादी।

बसीकर†—वि०=वशीकर।

बसीकरन†—पु०=वशीकरण।

बसीगत—स्त्री०=बसीकत।

बसीठ—पु०[स० अवसृष्ट] १ दूत। २ पैगम्बर। ३ गांव का मुखिया। ४ हल मे का जुआठा।

४—१२

बसीठी—स्त्री०[हिं० बसीठ] बसीठ होने की अवस्था या भाव। दूत का पद या भाव।

बसीत—पु०[अ०] जहाज पर का एक यंत्र जिसमे सूर्य का अक्षांश जाना जाता है। कमान।

बसीता†—पु०१.=बस्ती। २=बसाव। उदा०—जुद्ध जुरे दुर-जोधन सों कहि कौन करै जमलोक बसीतो।—केशव।

बसीना†—पु०[हिं० बसना] बसने की क्रिया या भाव।

बसीला—वि०[हिं० बास=गंध] १. बास अर्थात् गन्ध से युक्त। २. दुर्गंध युक्त। बदबूदार।

बसु—पु०=वसु।

बसुकला—स्त्री०=वसुकला (वर्ण वृत्त)।

बसुदेव—पु०=वसुदेव।

बसुधा—स्त्री०=वसुधा।

बसुमति—स्त्री०=वसुमती।

बसुरी†—स्त्री०=बाँसुरी।

बसुला—पु०=बसूला।

बसुली—स्त्री० १=बसूली। २.=बाँसुरी।

बसू—पु०=वसु।

बसूला—पु०[स० वाशी+ल (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसूली] बढइयों का एक प्रसिद्ध औजार जिससे वे लकडी छीलते और गढते हैं।

बसूली—स्त्री० [हिं० बसूला] १. छोटा बसूला। २ राजगीरों का एक औजार जिसमे वे ईंटे गढते या तोडते है।

†स्त्री०=वसूली।

बसेंडा†—पु० [हिं० बाँस+ड़ा(प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसेंडी] पतला बाँस।

बसेंधा—वि० [हिं० बास=गध] [स्त्री० बसेंधी] १ बसाया अर्थात् गध या बास से युक्त किया हुआ। २ खुशबूदार। सुगंधित।

बसेढ़†—पु० [हिं० बसना] १. बसने या रहने की जगह। २. दे० 'बसेरा'।

बसेरा—पु० [हिं० बसना] १ वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते है। मार्ग मे टिकने की जगह। २ वह स्थान जहाँ ठहरकर चिड़ियाँ रात बिताती है।

मुहा०—बसेरा लेना=रात बिताने के लिए कहीं टिकना या ठहरना।

वि० विश्राम करने के लिए कहीं टिकने या ठहरनेवाला।

बसेरी†—वि० [हिं० बसेरा] १ बसेरा लेनेवाला। २ निवासी।

बसैंधा†—वि०=बसेंधा।

बसैया†—वि० [हिं० बसना] बसनेवाला। रहनेवाला।

वि० [हिं० बसाना] बसानेवाला। बसवैया।

बसोवास—पु० [स० वास+आवास] १ निवास। २ निवास-स्थान। रहने की जगह।

बसौंधी—स्त्री० [हिं० बास+औंधी] अत्यधिक खौलाये हुए दूध का वह लच्छेदार रूप जिसमे दूध का अंश कम और मलाई का अंश अधिक होता है तथा जिसमे चीनी, मेवा आदि भी मिलाया गया होता है। रबडी।

वस्ट—पु० [अ०] चित्र-कला और मूर्ति-कला मे वह चित्र या वह मूर्ति, जिसमे किसी व्यक्ति के मुख और छाती के ऊपर के भाग की आकृति बनाई गई हो।

वस्त—पु० [स०√वस्त् (याचना करना)+घञ्] १ सूर्य। २ बकरा।

वस्तर|—पु०=वस्त्र (कपडा)।

वस्ताबु—पु० [स० वस्त-अबु, ष० त०] बकरे का मूत्र।

वस्ता—पु० [फा० वस्त] १ कपडे का वह चौकोर टुकडा जिसमे कागज के मुट्ठे, वही-खाते और पुस्तके आदि बाँधकर रखते है। वेठन। २ इस प्रकार बँधी हुई पुस्तकें या कागज-पत्र।

क्रि० प्र०—बाँधना।

३ थैले या वेठन की तरह का वह उपकरण जिसमे विद्यार्थी अपनी पुस्तकें रखकर विद्यालय ले जाता है। जैसे—सब लडके अपना अपना वस्ता खोलें।

मुहा०—वस्ता बाँधना=उठाने या चलने की तैयारी कर पुस्तकें आदि वस्ते मे बाँध या रखकर चलने को तैयार होना।

वस्ताजिन—पु० [स० वस्त-अजिन, ष० त०] बकरे की खाल।

वस्तार—पु० [फा० वस्त] एक मे बँधी हुई बहुत-सी वस्तुओ का समूह। मुट्ठा। पुलिदा।

वस्ति—स्त्री०=वस्ति।

वस्ती—स्त्री० [स० वसति] १ बहुत से मनुष्यों का एक जगह घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग घर बनाकर एक साथ रहते हों।

क्रि० प्र०—बसना।—बसाना।

वस्तु—स्त्री०=वस्तु।

वस्त्र—पु०=वस्त्र।

वस्य—वि०=वश्य।

वस्साना—अ० [स० वास] वास अर्थात दुर्गंध से युक्त होना।

वहँगा—पु० [हिं० वहँगी का पु०] वडी वँहगी।

वहँगी—स्त्री० [स० विहगिका] तराजू की तरह का एक प्रसिद्ध ढाँचा जिसके दोनो पलड़ों मे बोझ रखकर ढोया जाता है।

वहक—स्त्री० [हिं० वहकना] १ बहकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ पथ-भ्रष्ट होने की अवस्था या भाव। ३ बहुत बढ-बढकर और व्यर्थ कही जानेवाली बातें। ४. केवल शब्दों के ध्वनि-सादृश्य के आधार पर बिना समझे-बूझे या अनुमान से कही हुई कोई बहुत बडी भ्रमपूर्ण और हास्यास्पद बात। (हाउलर) जैसे—मथुरा नगरी केकेयी की दासी मन्थरा के नाम पर बसी है।

वहकना—अ० [?] १ पालतू पशुओ के सबध मे, गुस्से, हठ आदि के कारण सीधा मार्ग छोडकर गलत मार्ग की ओर प्रवृत्त होना। २ व्यक्तियों के सबध मे, दूसरो के भुलावे मे आकर अथवा उनकी देखा-देखी पथभ्रष्ट होना। ३ आवेग या मद मे चूर होना।

मुहा०—वहकी वहकी बातें करना=आवेश मे आकर पागलो की-सी या बढी-चढी बातें करना।

४ ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर या जगह जा पडना। चूकना। जैसे—किसी पर वार करते समय लाठी या हाथ वहकना।

वहकाना—स० [हिं० वहकना का स०] १ किसी को वहकने मे प्रवृत्त करना। २ ऐसा काम करना जिसमे कोई बहके, और ठीक रास्ता छोडकर पथ-भ्रष्ट हो। चकमा या भुलावा देना।

सयो० क्रि०—देना।

३ दे० 'बहलाना'।

वहकावट—स्त्री०=वहकावा।

वहकावा—पु० [हिं० वहकाना] १ बहकाने की क्रिया या भाव। २ ऐसी बात जो किसी को बहकाने के उद्देश्य से कही जाय। भुलावा।

क्रि० प्र०—देना।

वहड़—पु० [देश०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २१ मात्राएँ और अन्त मे जगण होता है।

वहतोल—स्त्री० [हिं० बहना+ओल (प्रत्य०)] पानी बहने की नाली।

वहत्तर—वि० [स० द्विसप्तति, प्रा० बहत्तरि] जो क्रम या गिनती के विचार से सत्तर से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७२।

वहत्तरवाँ—वि० [हिं० बहत्तर+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बहत्तरवी] जो क्रम या गिनती मे इकहत्तर वस्तुओं के पीछे अर्थात् बहत्तर के स्थान पर पडे।

वहदुरा—पु० [देश०] चने, धान आदि की फसल के पत्तों को काटने-वाला एक प्रकार का कीडा।

वहन—स्त्री० [स० भगिनी, प्रा० बहिणी] १ किसी व्यक्ति (या जीव) के सबध के विचार से वह स्त्री (या मादा जीव) जो उसी के माता-पिता की सतान हो अथवा सतान के तुल्य हो। २. उक्त अथवा उक्त की समवयस्क स्त्री के लिए प्रयुक्त होनेवाला सबोधन।

|पु०=वहन।

वहना—अ० [स० वहन] १ द्रव पदार्थ का धारा के रूप मे किसी नीचे तल की ओर चलना या बढना। प्रवाहित होना। जैसे—खून वहना, जल वहना।

मुहा०—वहती गंगा में हाथ धोना=किसी ऐसे अवसर या बात से, जिससे और लोग भी लाभ उठा रहे हों, अनायास सहज मे लाभ उठाना। (कही कही ऐसे अवसरो पर 'हाथ धोना' की जगह 'पाँव पखारना' का भी प्रयोग होता है।)

२ उक्त प्रकार की धारा मे पडकर उसके साथ आगे चलना या बढना। जैसे—नदी मे नाव वहना।

सयो० क्रि०—चलना।

३ किसी आधार या पात्र मे पूरी तरह से भर जाने पर तरल पदार्थ का इधर-उधर चलना। जैसे—घोर वर्षा के कारण तालाब का वहना।

४. किसी घन पदार्थ का गलकर या अपना आधार छोडकर द्रव रूप मे किसी ओर चलना। जैसे—फोडा वहना, मोमबत्ती वहना।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग उस पदार्थ के लिए भी होता है जो निकलता है और इस आधार के सबध मे भी होता है जिसमे से वह निकलता है। जैसे—(क) फोडा वहना, और (ख) फोडे मे से मवाद वहना।

५ अधिक मात्रा या मान मे निरतर किसी ओर गतिशील होना। जैसे—हवा वहना। ६ नियत या नियमित स्थान से हटकर दूर होना या दूसरे रास्ते पर चलना या जाना। जैसे—(क) पहनी हुई धोती या

पाजामा बहना, अर्थात् नीचे खिसकना। (ख) गोल मे से कबूतर बहना। (ग) हवा मे पतग बहना। ७ विशेष आवेग के कारण खूब खुलकर किसी ओर प्रवृत्त होना। उदा०—अपनी चाँड सारि उन लीन्हों, तू काहे अब वृथा बहै री।—सूर।

मुहा०—बहकर=खूब खुलकर। मनमाने ढग से या निस्सकोच होकर। उदा०—ताही सो रसाल बाल बहि कै बैराई है।—भारतेन्दु। ८ दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना। उदा०—कब लगि फिरिहो दीन बह्यो।—सूर।

मुहा०—बहा फिरना=किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उसका आदर घट जाय या विशेष मूल्य न रह जाय। जैसे—आज-कल बाजारो मे अमरूद (या आम) बहे फिरते है।

९. व्यक्ति का आचरण भ्रष्ट या कुमार्गी होना। सन्मार्ग से च्युत होना। जैसे—यह लडका तो बह चला। १० पशुओ का गर्भस्राव होना। अडाना। जैसे—गाय या भैस का बहना। ११ पक्षियो का अधिक या प्राय अंडे देना। जैसे—कबूतरी या मुरगी का बहना।

पद—बहता हुआ जोडा=ऐसे नर और मादा पशु-पक्षियो का जोडा जिससे साधारण से बहुत अधिक अडे निकलते हो।

१२ धन का व्यर्थ के कामो मे या बहुत अधिक व्यय होना। जैसे—साल भर मे उनके बीस हजार रुपए बह गये। १३. किसी चीज या बात का नष्ट, पतित या विकृत होना। उदा०—(क) सुक सनकादि सकल मन मोहे, ध्यानिन ध्यान बह्यो—सूर। (ख) निज दिव्य जनपद की कहाँ चिर चेतना बह बह गई।—मैथिलीशरण। १४ आघात या प्रहार के लिए शस्त्र या हाथ का ऊपर उठना। उदा०—बहहि न हाथ दहहि रिसि छाती।—तुलसी।

*स० १ अपने ऊपर भार रखना या लादना। ढोना। उदा०—बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम को दड सह्यो।—कबीर। २ पशुओ का कोई चीज खीचकर ले चलना। उदा०—श्वेत तुरग बहै रथ काँही।—रघुराज। ३ अपने उत्तरदायित्व, महत्त्व आदि का ध्यान रखकर किसी बात का निर्वाह या पालन करना। उदा०—मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, लाज बिरद की बही।—मीराँ। ४ कोई चीज अपने शरीर पर धारण करना। पहनना। जैसे—कवच या कुडल बहना।

स० [स० वध] वध करना। मार डालना। बधना।

†स्त्री० [हिं० बहन] 'बहन' के लिए सबोधनकारक रूप। जैसे—ना बहना, ऐसा मत कहो।

स० दे० 'बाहना'।

बहनापा—पु० [हिं० बहन+आपा (प्रत्य०)] स्त्रियों का वह पारस्परिक सम्बन्ध जिसमे वे एक दूसरी की बहन न होने पर भी ठीक बहनो का-सा व्यवहार करती है। स्त्रियों मे बहनो की तरह का होनेवाला पारस्परिक सबध।

क्रि० प्र०—जोडना।—लगाना।

बहनावा†—पु०=बहनापा।

बहनी—स्त्री० [हिं० बहना] १ पानी आदि बहने की नाली। २. वह गगरी जिसमे कोल्हू मे से रस निकलकर इकट्ठा होता है।

†स्त्री०=बहन।

*स्त्री०=वह्नि (आग)।

बहनु*—पु० [स० वाहन] सवारी।

†पु०=बहन।

बहनेली—स्त्री० [हिं० बहन+एली (प्रत्य०)] स्त्री की दृष्टि से वह दूसरी स्त्री जिससे उसका बहनो का-सा सबध हो। बनाई, मानी हुई या मुँह-बोली बहन।

बहनोई—पु० [स० भगिनीपति] सबध के विचार मे किसी की बहन का पति।

बहनोली†—स्त्री०=बहनेली।

बहनौता†—पु० [हिं० बहन+औता] बहन का लडका। भाँजा। उदा०—स्वय अपने बहनौते की परिचर्या करना चाहती थी।—वृन्दावन लाल वर्मा।

बहनौरा†—पु० [हिं० बहन+औरा (प्रत्य०)] १ सबध के विचार से किसी की बहन का घर। बहन का ससुराल। २ बहनोई अथवा उसके परिवार से होनेवाला सबध।

बहबहा—वि० [भाव० बहबही]=बेहतू (बहने अर्थात् इधर उधर व्यर्थ घूमनेवाला।

बहबही—स्त्री० [हिं० बहबहा] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहने की क्रिया या भाव। २ उपद्रव। ३ नटखटी। ४ शरारत।

बहम—अव्य० [फा० बाहम] १. साथ। सग। २ एक दूसरे के साथ या प्रति। परस्पर।

बहमन† —पु०=ब्राह्मण।

बहर—पु० [अ० बह्र] १. बहुत बडा जलाशय या नदी। २ समुद्र। ३. उर्दू-फारसी कविताओ का कोई छन्द। जैसे—इस बहर मे मैंने भी एक गजल लिखी है।

अव्य० [फा० ब+हर] १. हर एक। प्रत्येक। २ हर प्रकार से। हर तरह से। जैसे—बहर हाल=प्रत्येक दशा मे।

बहरना†—१ =बहुरना। २ =बहराना।

बहरा—वि० [स० वधिर, प्रा० बहिर] [स्त्री० बहरी, भाव० बहरापन] १. जिसे कानो से सुनाई न पडता हो। जिसकी श्रवण-शक्ति नष्ट हो गई हो। २ किसी की बात पर ध्यान न देनेवाला।

मुहा०—बहरा बनना=जान-बूझकर किसी की सुनी बात अनसुनी करना।

बहराना†—पु० [हिं० बाहर] किस नगर या बस्ती की सीमा पर अथवा उससे बाहरवाला भाग या मुहल्ला।

†स० १. बाहर करना या निकालना। २ (नाव आदि) किनारे से दूर और धार की तरफ ले जाना।

अ० १ बाहर होना। निकलना। २ अलग या दूर होना।

स० [हिं० भुलाना] १. बहलाना। २ सुनकर भी अन-सुनी करना। टाल मटोल करना। बहलाना। उदा०—जबही मै बरजति हरि सगहि तब ही तब बहरायो।—सूर। ३ बहकाना। ४. फुसलाना।

बहरिया—पु० [हिं० बाहर+इया (प्रत्य०)] वल्लभ सम्प्रदाय के मदिरो के छोटे कर्मचारी जो प्राय. मडप के बाहर ही रहते है।

† वि०=बाहरी।

वहरियाना†—स० [हिं० वाहर+इयाना (प्रत्य०)] १. वाहर करना या हटाना। २ (नाव आदि) किनारे से दूर करके धारा की ओर ले जाना। ३. अलग या जुदा करना।
अ० १ वाहर की ओर होना। २. (नाव का) किनारे से दूर हटना। ३. अलग या जुदा होना।

वहरी—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया जिसका रूप रंग और स्वभाव वाज का-सा होता है, पर आकार छोटा होता है।
वि० [हिं० वाहर+ई (प्रत्य०)] वाहरी।
पद—वहरी अलग (ओर या तरफ)=नगर के वाहर या वस्ती से कुछ दूरी पर का वह एकांत और रमणीक स्थान जहाँ लोग प्रायः सैर-सपाटे के लिए जाते है।

वहरू—पु० [देश०] मध्य प्रदेश, वरार और मदरास मे होनेवाला एक प्रकार का मझोला पेड़ जिसकी लकड़ी सुन्दर चमकीली और मजबूत होती है।
†वि०=वहरा।

वहरूप—पु० [हिं० वहु+रूप] १ वैलों का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २ एक जाति जो वैलो का व्यवसाय करती है।

वहरूपिया—पु०=वहुरूपिया।

वहल†—स्त्री०=वहली (गाड़ी)।

वहलना—अ० [हिं० वहलाना का अ०] १. ऊवे, थके, खाली वैठे या दुःखी व्यक्ति अथवा उसके मन का मनोरंजक या रमणीक वस्तुओं से परचना या कुछ समय के लिए प्रसन्न और शांत होना। २ झंझट-वखेड़े, चिंता आदि की वात भूलकर मन का किसी दूसरी ओर लगना, और फलत कुछ स्वस्थ या हलका अनुभव करना। जैसे—दिन भर काम करने के वाद संध्या को थोड़ा टहल लेने से मन वहल जाता है। सयो० क्रि०—जाना।

वहलवान—पु० [हिं० वहल या वहली+वान (प्रत्य०)] वहल या वहली हाँकनेवाला।

वहलाना—स० [फा० वहाल=अच्छी या ठीक दशा मे] १. कष्ट, रोग, विरक्ति आदि की दशा में दुःखी या चिन्तित को इधर-उधर की वातो मे लगाकर प्रसन्न, शांत या सुखी करने का प्रयत्न करना। जैसे—वीमारी के दिनो मे पड़ा पड़ा मैं ताश खेलकर मन वहला लेता था। २ झंझट या वखेड़े की वातो से अलग रहकर मन की चिंताएँ दूर करने का प्रयत्न करना। मनोरंजक कामो, चीजो या वातो से मन पर पड़ा हुआ भार हलका करना। ३ किसी एक काम या वात मे लगा हुआ मन इस उद्देश्य से किसी दूसरे काम या वात मे लगाना कि शिथिलता दूर हो जाय और प्रफुल्लता आ जाय। जैसे—वह हर एतवार को मन वहलाने के लिए वगीचे चले जाया करते हैं। ४ इधर-उधर की वाते करके किसी को भुलावा देते हुए उसका ध्यान या मन दूसरी ओर लगाना। जैसे—रोते हुए लड़के को वहलाने के लिए उसे खिलौना देना। सयो० क्रि०—देना।

वहलाव—पु० [हिं० वहलना] १. वहलाने की क्रिया या भाव। २. मन-वहलाव। मनोरंजन।

वहलावा—पु० १. =वहलाव। २. =वहकावा।

वहलिया†—पु०=वहेलिया।

†स्त्री०=वहली।

वहली—स्त्री० [सं० वाह्याली या वाहाली] वैलों द्वारा खींची जानेवाली एक तरह की पुरानी चाल की सवारी गाड़ी।

वहला—वि० [फा० वहाल] आनंदित। खुश।
पु० आनंद। खुशी।

वहस—स्त्री० [अ० वह्स] १ ऐसा तर्क-वितर्क या वातचीत जिसमें दो पक्ष अपना अपना मत ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न करते हों। तर्क, युक्ति आदि के द्वारा होनेवाला खंडन-मंडन।
पद—वहस-मुवाहसा।
२ उक्त के फलस्वरूप होनेवाली होड़। उदा०—मोहि तुम्हैं वाढ़ी वहस को जीतै जदुराज। अपने अपने विरद की दुहुँ निवाहैं लाज।—विहारी। ३. न्यायालय में, मुकदमे मे गवाहियों, वयानों आदि के उपरांत वकीलों का होनेवाला तर्क-वितर्क पूर्ण भाषण।

वहस-तलव—वि० [अ० वहस तलव] जिसमें तर्क-वितर्क या वाद-विवाद की अपेक्षा हो। जिसके सम्बन्ध मे तर्क-वितर्क हो सकता हो या होना आवश्यक तथा उचित हो।

वहसना—अ० [अ० वहस+ना] १ वहस या विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २ प्रतियोगिता करना। होड़ लगाना।

वहस-मुवाहसा—पु० [अ० वह्सोमुवाहसः] तर्क-वितर्क या खंडन-मंडन के रूप मे होनेवाला वाद-विवाद।

वहा—पु० [हिं० वहना] छोटी नहर या नाला।

वहाउ†—पु०=वहाव।

वहाऊ—वि० [हिं० वहाना] १. वहनेवाला। २. वहाये जाने के योग्य। ३. वुरा। हेय। उदा०—तरी पातरी कान की कौन वहाऊ वानि।—विहारी।

वहादर†—वि०=वहादुर।

वहादुर—वि० [तु०] वीर। शूर। सूरमा।

वहादुराना—वि० [फा० वहादुरान] वीरो का-सा। वीरों जैसा।
अव्य० वीरता-पूर्वक।

वहादुरी—स्त्री० [तु०] वहादुर होने की अवस्था या भाव। वीरता। शूरता।

वहादुरी टोड़ी—स्त्री० [हिं०] संगीत मे टोडी रागिनी का एक प्रकार या भेद।

वहाना—स० [हिं० वहना क्रिया का स०] १. द्रव पदार्थ को धारा के रूप मे किसी ओर चलाना या प्रवृत्त करना। जैसे—दूध या पानी वहाना। २ ऐसी क्रिया करना कि कोई चीज उक्त प्रकार की धारा मे पड़कर किसी ओर चले या आगे वढ़े। जैसे—पानी गिराकर कूड़ा या गंदगी वहाना। ३ किसी आधार पर या पात्र मे का कोई तरल पदार्थ किसी रूप मे निकालकर नीचे की ओर ले जाना। जैसे—आँसू वहाना, पसीना वहाना, फोड़े मे का मवाद वहाना। ४. वेग-पूर्वक गति मे लाकर किसी अनिर्दिष्ट दिशा मे ले जाना। जैसे—हवा का वादलो को वहाना। ५ नियत या नियमित स्थान से हटाकर दूर ले जाना। ६ किसी को आचरण-भ्रष्ट करके कुमार्ग मे लगाना। ७ वहुत वुरी तरह से नष्ट, पतित या विकृत करना। वहुत ही गया-वीता कर देना। जैसे—(क) इस लड़के की काली करतूतो ने घर

वहा डाला है। (ख) उन्होंने अपनी सारी मर्यादा वहा दी। ८ ऐसी क्रिया करना जिसमे पशु-पक्षियो का गर्भ-स्राव हो जाय। जैसे—उसने कोई दवा खिलाकर गाभिन भैंस को वहा दिया। ९. व्यर्थ के कामो मे या विना सोचे-समझे वहुत अधिक धन व्यय करना। जैसे—आज-कल कुछ देश अपना प्रभुत्व वढाने के लिए पानी की तरह धन वहा रहे हैं। १०. वहुत ही सस्ता या महत्वहीन कर देना। जैसे—कुछ लोगो ने पुस्तक प्रकाशन का काम विलकुल वहा दिया है।

पु० [फा० वहान=कारण, सवव] १. चालाकी या धूर्तता की ऐसी बात जो दूसरो को ऐसे तथ्य की प्रतीति कराने के लिए कही जाती है जो वस्तुत. अ-वास्तविक या मिथ्या होता है। जैसे—पेट मे दर्द होने का वहाना करके वह चला गया।

विशेष—इसका मुख्य उद्देश्य अपने आपको अभियोग, आक्षेप, कर्तव्य-पालन आदि से बचाते हुए अपने आपको दोष-रहित सिद्ध करना होता है।

क्रि० प्र०—करना।—वताना।—वनाना।

२ उक्त अवस्था और रूप मे उपस्थित किया जानेवाला तथ्य। जैसे—असल मे तो उन्हे छुट्टी चाहिए, वीमारी तो सिर्फ वहाना है। ३ दे० 'मिस' और 'हीला'।

वहानेवाज—वि० [फा० वहान.वाज] वहाने वनानेवाला।

वहानेवाजी—स्त्री० [फा० वहान वाजी] वहाने वनाने का काम।

वहार—स्त्री० [फा०] १ फूलो के खिलने का मौसिम। वसंत-ऋतु। २ मन का आनन्द और प्रफुल्लता। मजा। मौज। जैसे—किसी जगह (या किसी की वातो) की वहार लेना।

क्रि० प्र०—उडाना।—लूटना।—लेना।

३ किसी वस्तु या व्यक्ति का यौवन-काल जिसमे उसे देखकर मन प्रसन्न होता है। ४. सौंदर्य आदि के फल-स्वरूप होनेवाली रमणीयता या शोभा। जैसे—पगड़ी पर कलगी खूब वहार देती है।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—(किसी चीज का) वहार पर आना=ऐसी अवस्था मे आना या होना कि उसकी शोभा या श्री देखकर मन प्रसन्न हो जाय। वहार वजना=आनद उमड़ना। खुशी छाना। उदा०—मिले तार उनके औरो से नही, नहीं वजती वहार।—निराला।

५ सगीत मे, वसंत राग से मिलती-जुलती एक प्रकार की रागिनी।

वहार-गुर्जरी—स्त्री० [फा० वहार + स० गुर्जरी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सव शुद्ध स्वर लगते हैं।

वहारना—स०=वुहारना।

वहारदुर्ज—पु० [फा०+अ०] किले, महल आदि का सवसे ऊँचा वह कमरा जो चारो ओर से खुला होता है और जिसमे वैठकर लोग चारो ओर की शोभा और सौन्दर्य देखते हैं। हवा-महल।

वहारी—स्त्री०=वुहारी।

वहाल—वि० [फा०] १. जो फिर उसी हाल (दशा या हालत) मे आया हो जिसमे वह पहले था। फिर से अपनी पूर्व दशा या स्थिति मे आया हुआ। जैसे—(क) जो कर्मचारी हड़ताल करने के लिए मुअत्तल हुए थे, वे फिर वहाल कर दिये गये, अर्थात् अपने पूर्व पद पर ले लिये गये। (ख) उच्च न्यायालय ने अपील खारिज करके छोटी अदालत का फैसला वहाल रखा, अर्थात् उसे ज्यो का त्यो उसी रूप मे रहने दिया। ७ (व्यक्ति) शारीरिक दृष्टि से भला-चंगा। स्वस्थ। ३ (मन) प्रफुल्लित और प्रसन्न। जैसे—ताजी हवा मे रहने से तवीयत वहाल रहती है।

वहाली—स्त्री० [फा०] १. वहाल करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी को फिर से उसी हाल (दशा या हालत) मे लाना जिसमें वह पहले रहा हो। ३ अपने पद से अस्थायी रूप से हटाये हुए व्यक्ति को फिर से उस पद पर नियुक्त करने की क्रिया या भाव। ४ आरोग्य। तदुरुस्ती। ५. प्रसन्नता।

स्त्री० [हिं० वहलाना] १. किसी को वहलाने अर्थात् धोखे मे रखने की क्रिया या भाव। २. धोखा देनेवाली वात। झाँसा-पट्टी। दम-वुत्ता। ३. वहाना।

क्रि० प्र०—देना।—वताना।

वहाव—पु० [हिं० वहना] १. वहने की क्रिया या भाव। प्रवाह। २. नदियो आदि के जल की वह गति जो उसके निम्न तल की ओर जाने या वहने से होती है। ३ समुद्र के जल की वह स्थिति जिसमे उसके तल पर किसी दिशा मे वहती हुई हवा लगने से गति उत्पन्न होती है। (ड्रिफ्ट) ४. पानी की वहती हुई धारा। जैसे—नाव का वहाव मे पड़ना। ५. लाक्षणिक रूप मे, किसी विशिष्ट दिशा मे होनेवाली ऐसी वेगपूर्ण गति जिसे रोकना या जिसका विरोध करना सहज न हो। जैसे—आज-कल जिसे देखो वही अनाचार (या भ्रष्टाचार) के वहाव मे वहता चला जा रहा है।

वहि (हिस्)—अव्य० [सं० √वह् +इसुन्] वाहर। 'अन्त' (अन्दर) का विपर्याय।

वहिअर—स्त्री० [स० वधूवर=हिं० वहुवर] स्त्री। औरत।

वहिक्रिनी—स्त्री० [स० वहि +कृ] वाहर के काम करनेवाली मजदूरनी। गृहदासी।

वहिक्रम—पु० [सं० वय क्रम] अवस्था। उम्र।

वहित्र—पु० [स० वहित्र] जल-यान, नाव, जहाज आदि।

वहिन†—स्त्री०=वहन

वहिनापन†—पु०=वहनापा।

वहिनापा†—पु०=वहनापा।

वहिनौता†—पु०=वहनौता।

वहियाँ†—स्त्री०=वाँह (भुजा)।

वहिया—स्त्री० [हिं० वहना] नदियो आदि मे आनेवाली पानी की वाढ।

पु० [स० वाही=वहन करनेवाला] १. मजदूर। २. नौकर। सेवक।

वहिरंग—वि० [स० वहिस्-अग, व० स०] १ वाहर का। वाहरी। 'अतरग' का विपर्याय। २ जो किसी क्षेत्र, दल, वर्ग आदि से अलग, वाहर या भिन्न हो। ३ अनावश्यक। फालतू। (क्व०)

पु० १. किसी प्रकार की रचना का वाहरी अग जो ऊपर से दिखाई देता है। जैसे—इस पुस्तक का अन्तरग और वहिरग दोनो वहुत ही सुन्दर है। २. ऐसा व्यक्ति जो यो ही कही से आ गया या आ पहुँचा हो। ३ पूजन आदि के आरभ मे किये जानेवाले औपचारिक कृत्य।

वहिरा†—वि०=वहरा।

वहिरत—अव्य० [स० वहि] वाहर।
वहिरति—स्त्री०=वहिरति।
वहिरर्थ—पु० [स० कर्म० स०] वाहर या ऊपर से दिखाई देनेवाला उद्देश्य।
वहिराना—स०=वहराना (वाहर करना)।
पु०=वहराना।
वहिरिंद्रिय—स्त्री० [स० वहिस्-इद्रिय, मध्य० स०] वाह्य विपयो को ग्रहण करनेवाली इद्रिय। कर्मेन्द्रिय। जैसे—आँख, नाक, कान, आदि।
वहिर्गत—भू० कृ० [स० वहिस्-गत, द्वि० त०] १ वाहर आया या निकला हुआ। २. वाहरवाला। वाहर का। ३ अलग, जुदा पृथक्।
वहिर्गमन—पु० [स० वहिस्-गमन, सुप्सुपा स०] वाहर जाना। वाहर निकलना।
वहिर्गामी (मिन्)—वि० [स० वहिस्√गम् (जाना)+णिनि] वाहर या वाहर की ओर जानेवाला।
वहिर्गिरि—पु० [स० वहिस्-गिरि, मध्य० स०] १. पर्वत-माला की वाहरी या सिरे पर की पहाडी या पहाड। २. हिमालय की वह वाहरी शृखला जिसमे ६ हजार फुट तक की ऊँचाई के पर्वत है। जैसे—नैनीताल, मसूरी, शिमला आदि।
वहिर्जगत्—पु० [स० वहिस्-जगत्, मध्य० स०] वाह्य अर्थात् दृश्य जगत्।
वहिर्जानु—अव्य० [स० वहिस्-जानु, अव्य० स०] हाथो को दोनो घुटनो के वाहर किये या निकाले हुए।
वहिर्जीवन—पु० [स० वहिस्-जीवन, मध्य० स०] १ वाहरी अर्थात् दृश्य और लौकिक जीवन। 'आध्यात्मिक जीवन' से भिन्न। २ इस जीवन के आचरण, व्यवहार आदि।
वहिर्देश—पु० [स० वहिस्-देश, मध्य० स०] १ गाँव या नगर के वाहर का स्थान। परदेश। विदेश। ३ अनजानी या नई जगह।
वहिर्द्वार—पु० [स० वहिस्-द्वार, मध्य० स०] घर का वाहरी दरवाजा।
वहिर्द्वारी (रिन्)—वि० [स० वहिर्द्वार+इनि] जो घर के वाहर हो या होता हो।
पु० फुटवाल, हाकी आदि का खेल जो खुले मैदानो मे खेला जाता हो। (आउटडोर)
वहिर्ध्वजा—स्त्री० [स० वहिस्-ध्वजा, व० स०] दुर्गा।
वहिर्भूत—वि० [स० वहिस्-भूत, सुप्सुपा स०] १ जो वाहर हुआ हो। २ वाहर का। वाहरी। ३ अलग। जुदा। पृथक्।
वहिर्भूमि—स्त्री० [स० वहिस्-भूमि, मध्य० स०] वस्ती से वाहर की भूमि, जहाँ लोग प्राय शौच आदि के लिये जाते है।
वहिर्मनस्क—वि० [स० वहिस्-मनस्, व० स०+कप्] जिसका मन किसी दूसरी तरफ लगा हो।
वहिर्मुख—वि० [सं० वहिस्-मुख, व० स०] १ जिसका मुँह वाहर की ओर हो। २. जो प्रवृत्त या दत्तचित्त न हो। पराङ्मुख। विमुख। ३ विपरीत।
पु०=देवता।
वहिर्मुखी (खिन्)—वि० [स०] १. जिसका मुँह या अगला भाग वाहर की ओर हो। २. जो वाहर की ओर उन्मुख या प्रवृत्त हो।
वहिर्योग—पु० [स० वहिस्-योग, स० त०] १. वाह्य विपयो पर ध्यान जमाना। २ हठ-योग।
वहिर्रति—स्त्री० [स० वहिस्-रति, मध्य० स०] रति के दो भेदो मे से एक। ऐसी रति या समागम जिसके अन्तर्गत, आलिंगन, चुवन, स्पर्श, मर्दन, नखदान, रददान और अवर पान हैं। ('लैंगिक' रति से भिन्न)
वहिर्रेखा—स्त्री० [स० वहिस्-रेखा, मध्य० स०] [भू० कृ० वहिर्रेखित, भाव० वहिर्रेखन] १. वह रेखा जो किसी दृश्य वस्तु या उसके विभागो का विस्तार या सीमा सूचित करती हो। २ किसी चीज या वात का वह स्थूल रूप जो उसके आकार-प्रकार इतिवृत्ति, सिद्धात, स्वरूप आदि का ज्ञान कराती हो। (आउट-लाइन) जैसे—विद्युत् शास्त्र की वहिर्रेखा।
वहिर्लंब—पु० [स० वहिस्-लव, मध्य० स०] रेखा गणित मे वह लव जो किसी क्षेत्र के वाहर आये हुए आधार पर आकर गिरता और अधिक कोण वनाता है।
वहिर्लापिका—स्त्री० [स० वहिस्-लापिका, प० त०] एक प्रकार की पहेली जिसमे उसके उत्तर का शब्द उस पहेली के शब्दो मे नही रहता है। 'अन्तर्लापिका' का विपर्याय।
वहिर्लोम, वहिर्लोमा (मन्)—वि० [स० वहिस्-लोमन्, व० स०] जिसके वाल वाहर की ओर निकले हों।
वहिर्वाणिज्य—पु० [सं० वहिस्-वाणिज्य, मध्य० स०] किसी देश का दूसरे या वाहरी देशो के साथ होनेवाला वाणिज्य या व्यापार। (एक्स्टर्नल ट्रेड)
वहिर्वासा (सस्)—पु० [स० वहिस्-वासस्, मध्य० स०] कोपीन के ऊपर पहनने का कपडा।
वहिर्विकार—पु० [स० वहिस्-विकार, मध्य० स०] गरमी नाम की वीमारी। आतशक।
वहिर्व्यसन—पु० [स० वहिस्-व्यसन, मध्य० स०] [वि० वहिर्व्यसनी] लपटता।
वहिला—वि० [स० वेहत् या हिं० वाँझ ?] ऐसी गाय या भैस जो वच्चा न देती हो। वाँझ। ठाँठ।
वहिश्चर—वि० [स० वहिस्√चर् (चलना)+ट,] १. वाहर जानेवाला। २ वाहरी।
पु० १. वाहरी या दूसरे देश का भेदिया। २ केकडा।
वहिश्त—पु० [स० वशिष्ट(=प्रकाशमान) से फा० विहिश्त] स्वर्ग।
वहिश्ती—वि० [हिं० वहिश्त] वहिश्त-सवधी।
पु० स्वर्ग का निवासी।
वहिष्क—वि० [स०] वाहर का।
वहिष्करण—पु० [स० वहिस्-करण, सुप्सुपा स०] १ वाहर करना या निकालना। २ किसी क्षेत्र से अलग या दूर करना। दे० 'वहिष्कार'। ३ शरीर की वाहरी इन्द्रिय। 'अत.करण' का विपर्याय।
वहिष्कार—पु० [स० वहिस्-कार, सुप्सुपा स०] [वि० वहिष्कृत] १. वाहर करना। निकालना। २ अलग या दूर करना। हटाना। ३ एक प्रकार का आधुनिक आन्दोलन जिसमे किसी व्यक्ति से या

किसी के काम या वात से असन्तुष्ट और रुष्ट होकर उसके साथ सब प्रकार का व्यवहार या सम्वन्ध छोड दिया जाता है। ४. देश-विशेष के माल का सामूहिक व्यवहार-त्याग। (बॉयकाट, उक्त दोनो अर्थों मे)

बहिष्कृत—भू० कृ० [स० वहिस्-कृत, सुप्सुपा स०, स—ष्] १ जिसका वहिष्कार हुआ हो या किया गया हो। २. वाहर किया हुआ। निकाला हुआ। ३ अलग या दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ४ जिसके साथ सम्वन्ध रखना छोड दिया गया हो। त्यक्त।

बहिष्क्रिया—स्त्री० [स० वहिस्क्रिया, सुप्सुपा स०] १ किसी चीज पर या उसके सम्वन्ध मे वाहर की ओर से की जानेवाली क्रिया। २ वहिष्करण।

बहिष्प्रज्ञ—वि० [सं० वहिस्-प्रज्ञ, व० स०] जिसे वाह्य विषयो का अच्छा ज्ञान हो।

वही—स्त्री० [स० वद्ध, हिं० वँधी ?] लवी पुस्तिका के रूप मे वनाई हुई कागजो की वह गड्डी जिस पर क्रम से नित्य प्रति का लेखा या हिसाव लिखा जाता हो।

मुहा०—**वही पर चढाना या टाँकना**=वही पर लिखना। दर्ज करना।

†पु० [स० वहि.] घर से दूर का स्थान। (क्व०)

†स्त्री० [हिं० 'वहा' का स्त्री० अल्पा०] १ खेत सीचने के लिए वनाई हुई पानी की नाली। २ कुएँ से पानी खीचने की रस्सी।

वही-खाता—पु० [हिं०] हिसाव-किताव की पुस्तकें, वहियाँ,खाते आदि।

वहीर—स्त्री० [?] १. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड जिसमे साईस, सेवक, दुकानदार आदि रहते हैं। २ सैनिक सामग्री।

†स्त्री०=भीड।

†अव्य०=वाहर।

वहीरा—पु०=वहेडा।

वहु—वि० [स०√वंह् (वढना)+कु, न-लोप] १ सख्या मे एक से अधिक। अनेक। जैसे—वहुमुखी, वहुरगा आदि। २ मान, मात्रा आदि मे वहुत अधिक। ज्यादा। जैसे—वहुमत, वहुमूत्र, वहुमूल्य।

†स्त्री०=वहू।

वहुअर—स्त्री० [स० वधूवर] नई व्याही हुई स्त्री। वहू।

वहु-कंटक—पु० [स० व० स०] १ जवासा। २ हिंताल वृक्ष।

वहु-कटा—स्त्री० [स० व० स०] कटकारी।

वहु-कद—पुं० [व० स०] सूरन।

वहुक—पु० [स० वहु+कन्] १ केकडा। २. आक। मदार। ३. चातक। पपीहा। ४ सूर्य। ५ तालाव।

वि० १ 'वहु'-सम्वन्धी। २. वहुत। ३ अधिक दाम का। मँहगा।

वहुकर—पु० [स० वहु√कृ (करना)+ट] १ झाडू देनेवाला। २. ऊँट।

स्त्री० [स० वहुकरी] झाडू। (पश्चिम)

वहुकरी—स्त्री० [स० वहुकर+ङीप्] झाडू। वुहारी।

वहुकर्णिका—स्त्री० [स० व० स०,+कप्,+टाप्, इत्व] मूसाकानी।

वहुक-वाद—पु० [सं० प० त०] [वि० वहुकवादी] दर्शन मे, वह विचार-प्रणाली जिसमे किसी वात या वस्तु के एक की जगह अनेक या वहुत से मूल कारण या सिद्धान्त माने जाते हो। 'अद्वैतवाद' का विपर्याय। वहुत्ववाद (प्लूरलिज्म)

वहुकवादी (दिन्)—वि० [स० वहुकवाद+इनि] १ वहुकवाद-सवधी। २. वहुकवाद के सिद्धान्तो के अनुकूल।

पु० वहुकवाद का अनुयायी।

वहुगध—पु० [स० व० स०] १ दारचीनी। २ कुदुरू। ३ पीत चन्दन।

वहुगधा—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] १ जूही। २ काला जीरा।

वहुगव—पुं० [स० व० स०,+टच] एक पुरुवशीय राजा। (भागवत)

वहुगुण—वि० [स० व० स०] १ जिसमे वहुत से गुण हो। २. जो मान या सख्याओ मे अनेक गुना अधिक हो। (मल्टिपुल) ३ जो कई अगो, तत्त्वो आदि से युक्त हो।

वहुगुना—पु० [हिं० वहु+गुण] चौडे मुँह का एक गहरा वरतन जिसके पेंदे और मुँह का घेरा वरावर होता है।

वहुग्रथि—पु० [स० व० स०] झाऊ का पौधा।

वहुज्ञ—वि० [स० वहु√ज्ञा+क] [भाव० वहुज्ञता] १ वहुत-सी वातें जाननेवाला। २ अनेक विषयो का ज्ञाता।

वहुटनी—स्त्री० [हिं० वहूँटा] वाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा वहूँटा।

वहुत—वि० [स० प्रभूत, प्रा० पहुत्त] १ जो गिनती मे दो-चार से अधिक हो। ज्यादा। 'थोडा' का विपर्याय। जैसे—आज वहुत दिनो पर आप से भेंट हुई है। २. परिमाण, मात्रा आदि मे आवश्यक या उचित से अधिक। जैसे—वहुत वोलना अच्छा नही होता।

पद—**वहुत अच्छा**=(क) स्वीकृति सूचक वाक्य। एवमस्तु। ऐसा ही होगा। (ख) डराने-धमकाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। जैसे—वहुत अच्छा! तुमसे भी किसी दिन समझ लूँगा। **वहुत करके**=(क) अधिकतर अवसरो पर या अधिकतर अवस्थाओ मे। प्राय। वहुधा। (ख) वहुत सभव है कि। सभवत। जैसे—वहुत करके तो वह कल चला ही जायगा। **वहुत कुछ**=विशेष, अधिक या यथेष्ट न होने पर भी, आवश्यक अथवा उचित मात्रा या मान मे अथवा उससे कुछ ही कम। जैसे—इस झगडे मे उन्हे सव तो नही, फिर भी वहुत-कुछ मिल गया। **वहुत हो लिये**=तुम जितना कर सकते थे वहुत कर चुके, अव रहने दो, क्योकि तुमसे यह काम नही होगा।

३ जितना होना चाहिए, उतना या उससे कुछ अधिक। यथेष्ट। जैसे—मेरे लिए तो आध सेर दूध भी वहुत होगा।

पद—**वहुत खूव**=(क) वाह! क्या कहाना है। (किसी अनोखी वात पर) (ख) दे० ऊपर 'वहुत अच्छा'।

क्रि० वि० अधिक परिमाण या मात्रा मे। ज्यादा। जैसे—वहुत विगडा और उठकर चला गया।

वहुतक—वि० [हिं० वहुत+एक अथवा क] वहुत से। वहुतेरे।

वहुताँ—वि०=वहुत।

वहुता—स्त्री० वहु (वहुत) होने की अवस्था या भाव। वहुत्व।

†वि०=वहुत।

वहुताइत—स्त्री०=वहुतायत ।
वहुताई—स्त्री० [हिं० वहुत+आई (प्रत्य०)] वहुत होने की अवस्था या भाव। वहुतायत। अधिकता । ज्यादती।
वहुतात—स्त्री०=वहुतायत ।
वहुतायत—स्त्री० [हिं० वहुत+आयत (प्रत्य०)] वहुत होने की अवस्था या भाव। अधिकता। ज्यादती।
वहुतिक्ता—स्त्री० [स० व० स०] काकमाची। मकोय।
वहुतेरा—वि० [हिं० वहुत+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० वहुतेरी] १ मान या मात्रा मे वहुत अधिक। २ प्रचुर। यथेष्ट।
क्रि० वि० वहुत तरह से । अनेक प्रकार से ।
वहुतेरे—वि० [हिं० वहुतेरे] सख्या मे अधिक। वहुत से । अनेक ।
वहुत्व—पु० [स० वहु+त्व] वहुत होने की अवस्था या भाव। आधिक्य। अधिकता ।
वहुत्वक् (च्)—पु० [स० व० स०] भोजपत्र ।
वहुत्ववाद—पु० [स०] [वि० वहुत्वादी] =वहुकवाद ।
वहुदर्शिता—स्त्री० [स० वहुदर्शिन्+तल्+टाप्] वहुदर्शी होने की अवस्था या भाव।
वहुदर्शी (शिन्)—वि० [स० वहु√दृश्+णिनि] [भाव० वहुदर्शिता] जिसने ससार वहुत कुछ देख-भाला हो। विशेषत जिसने अच्छी तरह से दुनिया देखी हो।
वहुदल—पु० [स० व० स०] चेना नाम का अन्न।
वहुदला—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] चेच नाम का साग। चचु।
वहुदुग्ध—पु० [स० व० स०] गेहूँ।
वहुदुग्धा—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] दुधार गाय।
वहुदुग्धिका—स्त्री० [स० व० स०,+कप्] थूहड ।
वहुदेव-वाद—पुं० [सं० वहु-देव, कर्म० स०, वहुदेव-वाद, ष० त०] यह मत या सिद्धान्त कि धर्म मे वहुत से छोटे-वडे देवता और देवियाँ होती हैं, और समाज मे लोग अपनी अपनी रुचि के अनुसार उनमे से किसी न किसी के उपासक होते है। (पॉलीथीज़्म)
विशेष—यह ऐश्वरवाद से भिन्न और प्राय उसका विरोधी है।
वहुदेववादी (दिन्)—पु० [स० वहुदेववाद+इनि] वह जो वहुदेव वाद का अनुयायी या समर्थक हो।
वहुधन—वि० [सं० व० स०] जिसके पास वहुत धन हो।
वहुधर—पु० [स० ष० त०] शिव। महादेव।
वहुधा—अव्य० [स० वहु+धाच्] १. अनेक प्रकार से। वहुत तरह से । २. अधिकतर अवसरो पर। अक्सर। प्राय ।
वहुधान्य—पु० [स० ष० स०] साठ सवत्सरो मे से वारहवाँ संवत्सर ।
वहुधार—पु० [स० व० स०] एक प्रकार का हीरा । वज्रहीरक।
वहुनाद—पु० [स० व० स०] शख।
वहुनामा (मन्)—वि० [स० व० स०] जिसके वहुत-से नाम हो।
वहुपतित्व—पु० [सं० वहु-पति, व० स०,+त्व] वह सामाजिक प्रथा जिसमे एक स्त्री एक ही समय या एक साथ कई पुरुषो से विवाह करके उन के साथ दाम्पत्य जीवन विताती है। (पालियैण्ड्री)
वहुपत्नीक—वि० [स० व० स०,+कप्] जिसकी वहुत सी पत्नियाँ हो।
वहुपत्नीत्व—पु० [स० व० स०,+त्व] वह सामाजिक प्रथा जिसमे एक पुरुष एक ही समय मे या एक साथ कई स्त्रियों से विवाह करके उनके साथ दाम्पत्य जीवन विताता है। (पालिजिनी)
वहुपत्र—वि० [स० व० स०] वहुत से पत्तोंवाला।
पु० १. अभ्रक। अवरक । २ प्याज। ३. वशपत्र। ४. मुचकुद वृक्ष। ५. ढाक। पलाश।
वहुपत्रा—स्त्री० [स० वहुपत्र+टाप्] १. तरुणी पुष्प वृक्ष। २. वहुलिंगी लता। ३. दूबिया घास । ४. भूआँवला । ५ घीकुआर । ६ वृहती। ७. जतुका लता।
वहुपत्रिका—स्त्री० [स० व० स०,+कप्,+टाप्, इत्व] १. भूम्यामलकी। २. महाशतावरी। ३. मेथी। ४. वच। वचा।
वहुपत्री—स्त्री० [स० वहु-पत्र+ङीप्] १. भूम्यामलकी । २ शिवलिंगनी लता । ३. तुलसी। ४ जतुका। ५. वृहती। ६. दूबिया घास ।
वहुपद (द्)—वि०, पु०=वहुपाद।
वहुपाद—वि०[स० व० स०] वहुत से पैरोवाला।
पु० वरगद का पेड़। वट वृक्ष।
वहु-पुत्र—पु० [स० व० स०] १. पाँचवें प्रजापति का नाम। २. सप्तपर्ण।
वि० जिसके वहुत से पुत्र हो।
वहु-पुत्रिका—स्त्री० [स० वहुपुत्रा+कन्,+टाप्,इत्व] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका ।
वहु-पुष्प—पु० [स० व० स०] १. परिभद्र वृक्ष । फरहद का पेड। २ नीम का पेड़।
वहुपुष्पिका—स्त्री० [सं० वहुपुष्प+कन् +टाप्, इत्व] धातकी वृक्ष। धाय का पेड़।
वहु-प्रकार—वि० [स० व० स०] वहुविधि।
अव्य० वहुत प्रकार से।
वहु-प्रज—वि० [स० व० स०] जिसके वहुत से वच्चे हो।
पु० १ सूअर। २. मूँज का पौधा।
वहु प्रद—वि० [स०] १. वहुत देनेवाला। २. दानवीर।
वहु-फल—पु० [स० व० स०] १ कदव। २. वन-भटा । कटाई। विककत ।
वि० जिसमे वहुत अधिक फल लगते हो।
वहुफला—स्त्री० [स० वहुफल+टाप्] १. भूम्यामलकी । २ खीरा। ३ एक प्रकार का वन-भटा जिसे क्षविका कहते है। ३ काक-माची। ४ छोटा या जगली करेला । करेली।
वहु-फली—स्त्री० [स० वहुफल+ङीप्] एक प्रकार की जगली गाजर जिसका पौधा अजवाइन का-सा पर उससे छोटा होता है ।
वहु-फेना—स्त्री० [स० व० स०] १ पीले दूधवाला थूहर। सातला । २. शखाहुली ।
वहु-वल—पु० [स० व० स०] सिंह ।
वि० वहुत अधिक वलवाला ।
वहु-वीज—पु० [स० व० स०] १. विजौरा नीवू। २. शरीफा। ३ वीजदार केला।
वि० जिसमे वहुत से वीज हो।

बहुव्रीहि—पुं० [सं० ब० स०] व्याकरण मे समास का वह प्रकार, जिसमे समस्त पदो के योगार्थ से भिन्न कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे—बहुबाहु (रावण), चन्द्रमौलि (शिव)।

बहु-भाग्य—वि० [सं० ब० स०] बडभागी।

बहु-भाषी (षिन्)—पु० [सं० बहु√भाष् (बोलना)+णिनि] १ बहुत बोलनेवाला। २ बकवादी।

बहु-भुजा—स्त्री० [सं० ब० स०+टाप्] दुर्गा।

बहु-भूमिक—वि० [सं० ब० स०+कप्] कई मजिलोवाला।

बहु-भोक्ता (क्तृ)—वि० [सं० ष० त०] १. बहुत तरह की चीजो का या बहुत अधिक भोग करनेवाला। २ बहुत खानेवाला। पेटू। ३ भुक्खड।

बहु-भोग्या—स्त्री० [सं० तृ० त० या ष० त०] वेश्या।

बहु-मंजरी—स्त्री० [सं० ब० स०] तुलसी।

बहु-मत—पु० [सं० ष० त०] १. बहुत से लोगो का अलग-अलग मत। २ किसी संस्था, समिति आदि के आधे से अधिक सदस्यो का मत। ३ किसी संस्था के दल आदि की ऐसी स्थिति जिसमे समर्थक या अनुयायी कुल सदस्यो मे से आधे से अधिक हो। ४ आधे से अधिक मतदाताओं का समाहार। जैसे—इस बँटवारे मे हमारा बहुमत होगा।

बहुमल—पु० [सं० ब० स०] सीसा नाम की धातु।
वि० बहुत मैला।

बहुमात्र—वि० [सं० ब० स०] जो मात्रा मे बहुत अधिक हो। बहुत अधिक मानवाला। ढेर-सा। (मास) जैसे—बहु-मात्र उत्पादन।

बहुमात्र-उत्पादन—पु० [सं० कर्म० स०] आधुनिक उद्योग-धन्धो मे कोई चीज एक साथ बहुत अधिक मात्रा या मान मे तैयार करना या बनना। (मास प्रोड्क्शन)

बहुमान—पु० [सं० कर्म० स०] अधिक आदर। अधिक मान।

बहुमानी (निन्)—वि० [सं० कर्म० स०] बहुत आदरणीय।

बहु-मार्ग—वि० [सं० ब० स०] जिसमे या जिसके अनेक मार्ग हों।
पु० चौराहा।

बहु-मूत्र—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी को मूत्र बहुत अधिक और बार-बार आता है। पेशाब अधिक आने का रोग।

बहुमूर्ति—पु० [सं० ब० स०] १ बहुरूपिया। २ विष्णु। ३ बन-कपास।

बहुमूल—पु० [सं० ब० स०] १ रामशर। सरकडा। २ नरसल। नरकट। ३. शोभाजन। सहिजन।

बहुमूलक—पु० [सं० बहुमूल+कन्] खस। उशीर।

बहुमूला—स्त्री० [सं० बहुमूल+टाप्] शतावरी।

बहुमूल्य—वि० [सं० ब० स०] १ जिसका मूल्य बहुत हो। २ जो आदर, गुण, महत्त्व आदि की दृष्टि मे अति प्रशसनीय या उपयोगी हो। जैसे—बहुमूल्य उपदेश।

बहुरगा—वि०, पु०=बहुरगी।

बहुरगी—वि० [हिं० बहु+रग] १ जिसमे बहुत से रग हो। अनेक रगो-वाला। २ जिसके मन मे अनेक प्रकार के भाव या विचार आते-जाते रहते हो। ३ मन-मौजी। अनेक प्रकार या भाँति का।
पु० बहुरूपिया।

बहुरगी-पतंग—पु० दे० 'झाँगा'।

बहुरना—अ० [सं० प्रघूर्णन; प्रा० पहोलन] १ वापस आना। लौटाना। २ कोई चीज फिर से मिलना या हाथ मे आना। फिर से प्राप्त होना।

बहुरि—अव्य० [हिं० बहुरना] १. पुन। फिर। २ अनन्तर। उपरान्त। पीछे।

बहुरिया—स्त्री० [सं० वधूटी, वधूटिका; प्रा० वहुरिआ] नई बहू।

बहुरी—स्त्री० [सं० वाटुक या हिं० भौरना=भूनना ?] भूना हुआ खडा अन्न। चर्वण। चबेना।

बहुरूप—वि० [सं० ब० स०] अनेक रूप धारण करनेवाला।
पु० [हिं० बहुरूपिया] वह रूप जो बहुरूपिया धारण करता है।
क्रि० प्र०—भरना।
पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्म। ४ कामदेव। ५. एक बुद्ध का नाम। ६. पुराणानुसार एक वर्ष या भूमि-खड का नाम। ७. ऐसा ताडव नृत्य जिसमे अनेक रूप धारण किये जाते हो। ८. गिरगिट। सरट।

बहुरूपक—पु० [सं० बहुरूप+कन्] एक प्रकार का जंतु।

बहुरूपा—स्त्री० [सं० बहुरूप+टाप्] १ दुर्गा। २ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक।

बहुरूपिया—वि० [हिं० बहु+रूप] १. अनेक प्रकार के रूपोंवाला। २ अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला।
पु० वह जो जीविका-निर्वाह के लिए अनेक प्रकार के वेष धारण करके या स्वाँग बनाकर लोगो के सामने उनका मनोरंजन करता और उनसे पुरस्कार लेता हो।

बहुरूपी—वि० [सं० बहुरूप] अनेक रूप धारण करनेवाला।
पु० बहुरूपिया।

बहुरेता (तस्)—पु० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।
वि० जिसमे बहुत वीर्य हो।

बहुरोमा (मन्)—पु० [सं० ब० स०] १. मेष। मेढा। २ लोमडी। ३ बन्दर।
वि० बहुत अधिक बालोवाला। जिसका शरीर बालो से भरा हो।

बहुरौ—अव्य० दे० 'बहुरि'।

बहुल—वि० [सं० बहि (वृद्धि)+कुलच्] [भाव० बहुलता] अधिक। बहुत।
पु० १ शिव। २ अग्नि। ३ आकाश। ४ काला रग। ५ चान्द्र मास का कृष्ण पक्ष। ६. सफेद गोल मिर्च।

बहुलच्छद—पु० [सं० ब० स०] लाल सहिजन।

बहुलता—स्त्री० [सं० बहुल+तल्+टाप्] बहुल होने की अवस्था या भाव। अधिकता।

बहुला—स्त्री० [सं० बहुल+टाप्] १ गाय। गौ। २ एक विशिष्ट गौ जो पुराणानुसार बहुत ही सत्यनिष्ठ थी और जिसके नाम पर लोग भादो बदी चौथ और माघ बदी चौथ को व्रत रखते हैं। ३ एक देवी का नाम। ४ पुराणानुसार एक नदी। ५ कृत्तिका नक्षत्र। ६ इलायची। ७. नील का पौधा। ८ एक प्रकार की समुद्री मछली।

का वह शिकंजा जिसमे वे चीजो को कसकर रखते हैं। ७. गन्ना छीलने का सरौते के आकार का एक उपकरण। ८ एक प्रकार की टेढ़ी-बेढ़ी छुरी या कटारी। ९ उक्त छुरी या कटारी चलाने का कौशल या विद्या। १० उक्त कौशल या विद्या सीखने के लिए किया जानेवाला अभ्यास।

वि० १ घुमावदार। टेढा। वक्र। २. दे० 'बांका'।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

पु० [?] जहाज के ढांचे मे वह शहतीर जो खड़े बल मे लगाया जाता है।

बांकडा†--पु० [स० बंक] छकडे के आंक की वह लकड़ी जो धुरे के नीचे आडे बल मे लगी रहती है।

वि०=बांकुडा।

बांकडी—स्त्री० [सं० बंक+हिं० डी] कलावत्तू या बादाले की बनी हुई वह पतली डोरी या फीता जो साडियो आदि के किनारो पर शोभा के लिए लगाया जाता है।

बांक-डोरी—स्त्री० [हिं० बांक] एक प्रकार का शस्त्र।

बांकनल—पु०[स० वकनाल] सुनारो का एक औजार जिससे फूंक मारकर टांका लगाते है।

बांकना—स०[सं० वक] टेढा करना।

†अ० टेढा होना।

बांकपन—पु०[हिं० बांका+पन (प्रत्य०)] १ टेढापन। तिरछापन। २. बांका होने की अवस्था या भाव। ३ बनावट, रचना या रूप की अनोखी सुन्दरता।

बांका—वि०[स० वक] [स्त्री० बांकी]१ टेढा। तिरछा। २ जिसमे बहुत ही अनोखा माधुर्य और सौन्दर्य हो। जैसे—बांकी अदा। ३ (व्यक्ति) जिसकी चाल-ढाल, वेप-भूषा, सज-धज आदि मे अनोखा सौन्दर्य हो। जैसे—बांका जवान। ४ छैला। ५ बहादुर और हिम्मतवर। वीर और साहसी। जैसे—बांका सिपाही। ६ विकट। बीहड। (राज०)

पु० १ लोहे का बना हुआ एक प्रकार का हथियार जो टेढा होता है। २. वह गुडा या बदमाश जो बराबर अपने पास उक्त शस्त्र रखता हो। ३ सदा बना-ठना रहनेवाला बदमाश और लुच्चा। गुडा। (लखनऊ) ४. बरातो आदि मे अथवा किसी जुलूस मे वह बालक या युवक जो खूब सुन्दर वस्त्र और अलकार आदि से सजाकर तथा घोडे या पालकी मे बैठाकर शोभा के लिए निकाला जाता है। ५. धान की फसल को नुकसान पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा।

बांकिया—पु०[स० वक=टेढा] १ नरसिंहा नाम का बाजा जो आकार मे कुछ टेढा होता है। २ रथ के पहिये की आगे की वह टेढी लकडी जिस पर उसकी धुरी टिकी रहती है।

बांकी—स्त्री०[हिं० बांका] बांस को काटकर खपाचियां, तीलियां आदि बनाने का एक प्रकार का उपकरण।

वि०, स्त्री०=बाकी।

बांकुड़—वि०[स्त्री० बांकुडी]=बांकुरा।

बांकुर—वि०[हिं० बांका]१ बांका। टेढा। २ नुकीला। पैना। ३ चतुर। होशियार।

बांकुरा—वि० [हिं० बांका] १. बांका। टेढा। २. तेज धार का। ३ कुशल। चतुर।

बांग—स्त्री०[फा०]१ ध्वनि। स्वर। २ नमाज के समय नमाज पढने-वालो को मसजिद मे आकर नमाज पढने के लिए बुलाने के निमित्त मुल्ला द्वारा की जानेवाली उच्च स्वर में पुकार। ३. भोर के समय मुर्गे के बोलने का स्वर।

बांगड़—पु० [देश०] करनाल, रोहतक, हिसार आदि के आस-पास का प्रदेश। हरियाना।

स्त्री० उक्त प्रदेश की बोली जो खडी बोली या पश्चिमी हिन्दी की एक शाखा है। हरियानी।

वि०=बांगड।

बांगडी—वि०[हिं० बांगड] बांगड या हरियाना प्रदेश का।

स्त्री०=बांगड (बोली)।

बांगड़ू—वि०[हिं० बांगड]असभ्य, उजड्ड और पूरा गँवार।

बांगदरा—स्त्री० [फा० बांग] १. घटे या घडियाल की ध्वनि। २. काफिले मे प्रस्थान के समय बजनेवाले घण्टो की ध्वनि या आवाज।

बांगर—पु०[देश०]१ छकडा गाडी का वह बांस जो फड के ऊपर लगाकर फड के साथ बांध दिया जाता है। २ ऐसी ऊँची जमीन जिस पर आस-पास के जलाशय की बाढ का पानी न पहुँचता हो। 'खादर' का विपर्याय। ३ वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए छोड दी गई हो, अथवा जिसमे पशु चरते हो। चरागाह। चरी। (मेडो) ४ अवध प्रान्त मे होने-वाला एक प्रकार का बैल।

बांगा—पु०[देश०] ऐसी रुई जिसमे से बिनौले अभी तक न निकाले गये हो। कपास।

बांगुर—पु०[सं० वागुरा]१. पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा। २ फँसने या फंसाने का कोई स्थान। उदा०—तुलसीदास यह विपति बांगुरो, तुमहिं सौं बनै निबेरे।—तुलसी।

बांचना—स० [सं० वाचन]१ पढना। २ पढकर सुनाना।

†अ०=बचना।

†स०=बचाना।

बांछना—स०[सं० वाछा]१ इच्छा या कामना करना। चाहना। २ चुनना। छांटना।

स्त्री०=वाछा (कामना)।

स० दे० 'वाछना'।

बांछा—स्त्री० =वाछा (इच्छा)।

बांछित—भू० कृ०=वाछित।

बांझ—स्त्री०[स० वन्ध्या]१. वह स्त्री जिसे किसी शारीरिक विकार के कारण सतान न होती हो। वन्ध्या। २. कोई ऐसा मादा जतु या पशु जिसे शारीरिक विकार के कारण बच्चा न होता हो। ३ ऐसी वनस्पति या वृक्ष जिसमे आन्तरिक विकार के कारण फल, फूल आदि न लगें।

वि० मतो की परिभाषा मे, अज्ञानी या ज्ञानहीन।

स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पहाडी वृक्ष जिसके फलों की गुठलियां बच्चो के गले मे, उनको रोग आदि से बचाने के लिए बांधी जाती हैं।

बांझ ककोड़ी—स्त्री० [सं० वध्या-कर्कोटकी] बनककोड़ा। खेखसा। बन-परवल।

बाँझपन—पुं० [हिं० बांझ+पन (प्रत्य०)] बांझ होने की अवस्था या वन्ध्यत्व।

बाँट—स्त्री० [हिं० बाँटना] १ बांटने की क्रिया या भाव। २ बांटने पर हर एक को मिलनेवाला अलग-अलग अंश या भाग। हिस्सा।

मुहा०—(कोई चीज किसी के) बाँट या बाँटे पड़ना=इस प्रकार अधिकता से होना कि मानो सब कुछ छोड़कर उसी के हिस्से में आई या उसी को मिली हो। जैसे—जी हाँ, सारी अक्ल तो आप के ही बाँटे पड़ी है। (व्यंग्य)

३. संगीत में गीत के नियत बोलों को नियमित तालों में ही सुन्दरता-पूर्वक कहीं कुछ घटाकर और कहीं कुछ बढ़ाकर उच्चारित करना।

पुं०[देश०]१ गौओं आदि के लिए एक विशेष प्रकार का भोजन, जिसमें खरी, बिनौला आदि चीजें रहती हैं। २. धान के खेत में फसल को हानि पहुँचानेवाली टेंटर नाम की घास। ३. घास या पयाल का बना हुआ एक मोटा सा रस्सा जिसे गांव के लोग कुआर सुदी १४ को बनाते हैं और दोनों ओर से कुछ कुछ लोग उसे पकड़कर तब तक खींचते हैं जब तक वह टूट नहीं जाता।

†पुं०=बाट (बटखरा)।

बाँट-चूंट—स्त्री० [हिं० बांट+चूंट (अनु०)] बाँटने या लोगों को उनका हिस्सा देने की क्रिया या भाव।

बाँटना—स०[सं० वण्ट; गु० वांटवूं; मरा० वाटणें]१ किसी चीज को कई भागों में विभक्त करना। जैसे—यह जिला चार तहसीलों में बाँटा जायगा। २ सपत्ति आदि के सबध में उसके हिस्सेवार कई विभाग करके उसे उनके अधिकारियों को देना या सौंपना। ३. खानेवाली चीज के सबध में, उसका थोड़ा-थोड़ा अश सब लोगों को देना। जैसे—बच्चों को मिठाई बाँटना। ४ आर्थिक क्षेत्र में, किसी निर्माणशाला या कार्यालय में काम करनेवालों को उनके पावने का भुगतान करना। जैसे—अधि-लाभ या वेतन बाँटना।

†स०=बाटना (पीसना)।

बाँटा—पुं० [हिं० बाँटना]१. बाँटने की क्रिया या भाव। बाँट। २. गाने-बजानेवाले लोगों का इनाम या पारिश्रमिक का धन आपस में यथा-योग्य बाँटने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ बँटने या बाँटने पर प्रत्येक को मिलनेवाला अश या भाग। हिस्सा। उदा०—रूप लूट कीन्ही तुम काहे अपने बाँटे की धरिहौ ली।—सूर।

क्रि० प्र०—पाना।—मलाना।

मुहा०—(किसी चीज का) बाँटे पड़ना=किसी सपत्ति आदि के हिस्से लगना।

बाँटा चौदस—स्त्री०[स्त्री० बाँट=एक प्रकार का रस्सा+चौदस (तिथि)] कुआर सुदी १४ जिस दिन देहात के लोग बांट (रस्सा) बटकर खींचते और तोड़ते हैं। वि० दे० 'बाँट'।

बाँड़—पुं० [देश०] दो नदियों के सगम के बीच की भूमि जो वर्षा में नदियों के बढ़ने से डूब जाती है और पानी उतर जाने पर फिर निकल आती है।

†पुं०=बाँड़ा।

बाँड़ा—पुं० [सं० वंड] १. वह पशु जिसकी पूँछ कट गई हो। २. वह [illegible] जिसकी [illegible] या [illegible] न हो। ३. साँड़। वि०[स्त्री० बाँड़ी] जिसकी पूँछ न हो। दुम-कटा या बिना दुम का। पुं०[देश०] [illegible] की [illegible]।

बाँड़ी—स्त्री० [हिं० बाँड़ा]१. बिना पूँछ की गाय। २. छोटी लाठी। छड़ी।

बाँड़ीबाज—पुं०[हिं० बाँड़ी+फा० बाज]१. [illegible]। [illegible]। २ उपद्रवी। [illegible]।

बाँद—पुं० बंदा (दास)।

बाँदर—पुं० बदर। (पश्चिम)

बाँदा—पुं०[सं० वन्दाक] किसी वनस्पति की वह जाति जो भूमि पर नहीं उगती बल्कि दूसरे वृक्षों पर टिककर उन्हीं की शाखाओं आदि [illegible] और अपना पोषण करती है।

बाँदी—स्त्री०[हिं० बंदा का स्त्री०] लौंडी। दासी।

पद—बाँदी का बेटा (क) वह जो पूरी तरह से [illegible] किया गया हो। (ख) तुच्छ। हीन। (ग) [illegible]। [illegible]।

पुं०[फा० बंदी] कैदी। [illegible]।

बाँदू—पुं०[फा० बंदी] कैदी। [illegible]।

बाँध—पुं० [हिं० बाँधना]१ बाँधने की क्रिया या भाव। २ वह बंधन जो किसी बात को रोकने या उसके आगे बढ़ने पर नियन्त्रण रखने के लिए लगाया जाता हो। (बार) ३ जलाशय या [illegible] पानी रोकने के लिए उसके किनारे लगाया हुआ मिट्टी, पत्थर आदि का धुस। पुश्ता। बंद। (एम्बैंकमेन्ट) ४ वह वास्तु-रचना जो किसी नदी की धारा रोकने के लिए अथवा किसी और प्रयुक्त करने के लिए बनाई गई हो। (डैम) जैसे—भाखरा या हीराकुण्ड बाँध। ५. लाक्षणिक अर्थ में किताबों, पोथी आदि के लिए किसी चीज के ऊपर बाँधी हुई दूसरी चीज।

मुहा०—बाँध बाँधना=आडम्बर रचना।

बांधकिनेय—पुं०[सं० बंधकी+ढक्—एय, इनङ्] अविवाहिता स्त्री का जारज पुत्र।

बाँधना—स० [सं० बंधन]१ डोरी, रस्सी आदि घुमाकर किसी चीज के चारों ओर लपेटना। जैसे—घाव पर पट्टी बाँधना। २. डोरी, रस्सी आदि के द्वारा किसी एक चीज के साथ आबद्ध करना। जैसे—कमर में पेटी या नाड़ा बाँधना। ३. रस्सी आदि के दो छोरों को गांठ लगाकर आपस में जोड़ना या सम्बद्ध करना।

मुहा०—गाँठ बाँधना=दे० 'गाँठ' के अन्तर्गत।

४. रस्सी आदि के बनाये हुए फंदे में कोई चीज इस प्रकार फँसाना कि वह छूटने, निकलने या भागने न पाये। जैसे—गौ या भैंस बाँधना। ५. पुस्तक के फरमों को इस प्रकार सिलाई करना कि वे एक ओर से आपस में जुड़े रहें, अलग, अलग न होने पावें और उनके ऊपर से दफ्ती आदि लगाना। जैसे—जिल्द बाँधना। ६. कागज, कपड़े आदि से किसी चीज को इस प्रकार लपेटना कि वह बाहर न निकल सके अथवा सुरक्षित रहे। जैसे—दवा की पुड़िया बाँधना, कपड़ों या किताबों की गठरी बाँधना। ७ ऐसी क्रिया करना कि जिससे कोई चीज किसी विशिष्ट क्षेत्र या सीमा में ही रहे, उससे आगे या बाहर न जाने पाये। जैसे—नदी का पानी बाँधना। ८. उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में, किसी

बात, भाव या विचार को इस प्रकार शब्दों मे सजाना कि उसमे कोई कोर-कसर, त्रुटि या शिथिलता न रह जाय, अथवा उसे कोई विशिष्ट रूप प्राप्त हो जाय। ९ किसी व्यक्ति को कैद या बंधन मे डालना। बँधुआ बनाना। १० तंत्र-मंत्र आदि के प्रयोग से ऐसी क्रिया करना जिससे किसी की गति या शक्ति नियन्त्रित और सीमित हो जाय अथवा मनमाना काम न कर सके। जैसे—जादू के जोर से दर्शको की नजर बाँधना, मन्त्र के बल से साँप को बाँधना (अर्थात् इधर-उधर बढने मे असमर्थ कर देना) ११ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे दूसरा कोई किसी रूप मे अधिकार या वश मे आ जाय अथवा किसी रूप मे विवश हो जाय। जैसे—किसी को प्रेमसूत्र मे बाँधना। १२ किसी चीज को ऐसे रूप या स्थिति मे लाना कि वह इधर-उधर न हो सके और अपने नये रूप या स्थान मे यथावत् रहे। जैसे—किसी चूर्ण से गोली या लड्डू बाँधना, कमर मे कटार या तलवार बाँधना। १३ कुछ विशिष्ट प्रकार की वास्तु-रचनाओ के प्रसग मे बनाकर तैयार करना। जैसे—कुँआ, घर, नया पुल बाँधना। १४ बौद्धिक क्षेत्र या विचार के प्रसग मे, सोच-समझकर स्थिर करना। जैसे—बन्दिश बाँधना, मन्सूबा बाँधना। १५ साहित्यिक क्षेत्र मे, किसी विषय के वर्णन की रचना-सामग्री एकत्र करके उसका ढाँचा खडा करना। जैसे—आलकारिक वर्णन के लिए रूपक बाँधना, गजल मे कोई मजमून बाँधना। १६ ऐसी स्थिति मे लाना कि नियमित रूप से अपना ठीक और पूरा काम कर सके या प्रभाव दिखला सके। जैसे—किसी की तनख्वाह या भत्ता बाँधना, किसी पर रग बाँधना, किसी काम या बात का डौल या हिसाब बाँधना। १७ उपमा देना। सादृश्य स्थापित करना। उदा०—सब कद को सरो बाँधे हैं, तू उसको ताड बाँध।—कोई कवि। अर्थात् सब लोग कद की उपमा सरो (वृक्ष) से देते है तुम उसकी उपमा (ताड वृक्ष) से दो। १८ उपक्रम या योजना करना।

बाँधनी-पौरि—स्त्री० [हिं० बाँधना+पौरि] वह घेरा या बाडा जिसमे पालतू पशुओं को बाँधकर रखा जाता है।

बाँधनू—पु० [हिं० बाँधना] १. वह उपाय या युक्ति जो किसी कार्य को आरंभ करने से पहले सोची या सोचकर स्थिर की जाती है। पहले से ठीक की हुई तस्वीर या स्थिर किया हुआ विचार। उपक्रम। मसूबा। २ किसी सम्भावित बात के सबध मे, पहले से किया जानेवाला सोच-विचार।

क्रि० प्र०—बाँधना।

३ किसी पर लगाया जानेवाला झूठा अभियोग। ४ मनगढ्त बात। ५ रँगने से पहले कपडे मे बेलबूटे या बुदकियाँ रखने के लिए उसे जगह जगह डोरी, गोटे या सूत से बाँधने की क्रिया या प्रणाली।

पद—बाँधनू की रँगाई=कपडे रगने का वह प्रकार जिसमे चुनरी, साडी आदि रँगने से पहले बुदकियाँ डालने या कलात्मक आकृतियाँ बनाने के लिए उन्हे जगह जगह सूतो से बाँधा जाता है। (टाई एण्ड डाई)

३. उक्त प्रकार से रगी हुई चुनरी या साडी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रगा गया हो। उदा०—कहै पद्माकर त्यों बाँधनू बसनवारी ब्रज बसनहारी ह्यौ हरनवारी है।—पद्माकर।

बाँधव—पु० [स० बन्धु+अण् स्वार्थे] १ भाई। बन्धु। २ नाते-रिश्ते के लोग। ३ घनिष्ठ मित्र। गहरा दोस्त।

बाँधव्य—पु० [स० बाधव+ष्यञ्] १ बन्धु होने की अवस्था या भाव। बधुता। २. रक्त-सबध। नाता। रिश्ता।

बाँधुआ—वि०, पु०=बँधुआ।

बाँब—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो साँप के आकार की होती है।

बाँबा घोडी—स्त्री० [?] एक प्रकार का रत्न जो लहसुनिया की जाति का होता है।

बाँबाँ रयो—पु० [स० वामन] वामन। बौना। बहुत ठिगना।

बाँबी—स्त्री० [स० वम्री] १ दीमको द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का स्थान जो रेखाकार होता है। बँबीठा। २ साँप का बिल।

बाँभन—पु०=ब्राह्मण।

बाँभी—स्त्री०=बाँबी।

बाँया—वि०=बायाँ।

बाँवना*—स० दे० 'रखना'।

बाँवला—वि०=बावला।

बाँस—पु० [स० वश] १ तृण जाति की गन्ने आदि की तरह की एक गाँठदार वनस्पति, जिसके काण्ड बहुत मजबूत किन्तु अन्दर से खोखले होते हैं तथा जो छप्पर आदि छाने और इमारत के दूसरे कामो मे आते हैं।

मुहा०—**बाँस पर चढना**=(क) बहुत उच्च स्थिति तक पहुँचना। (ख) बहुत प्रसिद्ध होना। (ग) बहुत बदनाम होना।

मुहा०—**(किसी को) बाँस पर चढाना**=(क) बहुत बढा देना। बहुत उन्नत या उच्च कर देना। (ख) बहुत प्रसिद्ध करना। (ग) बहुत बदनाम करना। (घ) व्यर्थ की प्रशसा करके घमड या मिजाज बढा देना। **(कलेजा) बाँसो उछलना**=कलेजे मे बहुत अधिक धडकन या विकलता होना। **(व्यक्ति का) बाँसो उछलना**=बहुत अधिक प्रसन्न होना। खूब खुश होना।

२. लबाई की एक माप जो सवा तीन गज की होती है। लाठी। ३ पीठ के बीच की हड्डी जो गरदन से कमर तक चली गई है। रीढ। ४ भाला। (डिं०)

बाँसपूर—पु० [हिं० बाँस+पूरना] एक तरह की बढिया महीन मलमल।

बाँसफल—पु० [हिं० बाँस+फल] एक प्रकार का धान। बाँसी।

बाँसली—स्त्री० [हिं० बाँस+ली (प्रत्य०)] एक प्रकार की जालीदार लबी पतली थैली जिसमे रुपया-पैसा रखा जाता है और जो कमर मे बाँधी जाती है। हिमयानी।

†स्त्री०=बाँसुरी (वशी)।

बाँसा—पु० [हिं० बाँस] १ बाँस का बना हुआ चोंगे के आकार का वह छोटा नल जो हल के साथ बँधा रहता है। इसी मे बोने के लिए अन्न भरा जाता है। अरना। तार। २ एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ बाँस की पत्तियों की तरह होती हैं।

पु० [स० प्रियावास ?] १ पियाबाँसा नाम का पौधा जिसमे चपई रग के फूल लगते है और जिसकी लकडी के कोयले से बारूद बनती थी। २ उक्त पौधे का फूल।

पु० [स० वश=रीढ] १ रीढ की हड्डी। २. नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनो नथनो के बीचोबीच रहती है।

मुहा०—**बाँसा फिर जाना**=नाक का टेढा हो जाना। (मृत्यु के बहुत समीप होने का लक्षण)

बाँसिनी—स्त्री० [हिं० बाँस] एक प्रकार का छोटा बाँस जिसे बरियाल, ऊना अथवा कुल्लुक भी कहते है।

बाँसी—स्त्री० [हिं० बाँस+ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का छोटा, पतला और मुलायम बाँस जिससे हुक्के के नैचे आदि बनते है। २. एक प्रकार का गेहूँ। जिसकी बाल कुछ कुछ काली होती है। ३. एक प्रकार का धान जिसका चावल बहुत सुगंधित, मुलायम और स्वादिष्ट होता है। इसे बाँराफल भी कहते है। ४ एक प्रकार की घास जिसके डठल कडे और मोटे होते है। ५ एक प्रकार की चिड़िया। ६. कुछ सफेदी लिए हुए पीले रंग का एक प्रकार का पत्थर।

बाँसुरी—स्त्री० [हिं० बाँस] पतले बाँस का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। मुरली। वशी।

बाँसुली—स्त्री० [हिं० बाँस] १. एक प्रकार की घास जो अन्तर्वेद मे होती है। २ बाँसुरी। वशी।

बाँसुलीकद—पु० [हिं० बाँसुली+स० कद] एक प्रकार का जगली मूरन या जमीकद जो गले मे बहुत अधिक लगता है।

बाँह—स्त्री० [स० बाहु] १ मनुष्य के शरीर मे कंधे से लेकर कलाई के बीच का अवयव। भुजा।

मुहा०—(किसी की) बाँह ऊँची (या बुलंद) होना=(क) वीर और साहसी होना। (ख) उदार और परोपकारी होना। **(किसी की) बाँह गहना या पकड़ना**=(क) किसी की सहायता करने के लिए प्रस्तुत होना। सहारा देना। (ख) किसी स्त्री को अपने आश्रय मे लेकर और पत्नी बनाकर रखना। पाणिग्रहण करना। **बाँह चढाना**=(क) कुछ करने के लिए उद्यत होना। (ख) किसी से लडने या हाथा-बाँही करने के लिए तैयार होना। आस्तीन चढाना।

२ कमीज, कुरते, कोट आदि का वह अश जिससे बाँह ढकी रहती है। ३ एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते है और जिसमे दोनो विशिष्ट प्रकार से एक दूसरे की बाहे पकडकर बलपूर्वक स्वय आगे बढते और दूसरो को पीछे हटाते है। ४. भुजबल। शक्ति।

मुहा०—(किसी की) बाँह की छाँह लेना=किसी की शरण मे जाकर उसके भुज-बल का आश्रित होना।

५. वह जो किसी का बहुत बडा मदद करनेवाला या सहायक हो।

पद—बाँह-बोल=आश्रय या सहायता देने, रक्षा करने आदि के सबध मे दिया जानेवाला वचन। उदा०—लाज बाँह-बोल की, नेवाजे की सॉमर सार, साहेब न राम सो, बलैया लीजै सील की।—तुलसी।

मुहा०—बाँह टूटना=बहुत बडे सहायक का न रह जाना। जैसे—भाई के मरने से उसकी बाँह टूट गई।

६ सहायता या सहारे का आसरा। भरोसा।

मुह०—(किसी को) बाँह देना=सहायता या सहारा देना। मदद करना।

बाँहड़ली—स्त्री०=दे० 'बाँह'। उदा०—राम मोरी बाँहडली जी गहो। —मीराँ।

बाँहतोड़—पु० [हिं० बाँह+तोडना] कुश्ती का एक पेच।

बाँहबोल—पु० [हिं० बाँह+बोल=वचन] बाँह पकडने अर्थात् रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

बाँहाँ जोड़ी—क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोड़ना] किसी के कधे के साथ अपना कधा मिलाते हुए। साथ-साथ। उदा०—सूरदास दोउ बाँहाँ जोरी राजत स्यामा स्याम।—सूर।

स्त्री० कधे से कधा मिलाकर खडे होने या बैठने की मुद्रा या स्थिति।

बाँही—स्त्री०=बाँह।

बा—पु० [स० वा=जल] जल। पानी।

पुं०=बार (दफा)

स्त्री० [अनु०] माता। माँ। (गुजरात और राजस्थान)

अव्य० [फा०] १ सहित। साथ। जैसे—बा-अदब=अदब से। २ युक्त। सम्मिलित। जैसे—बा-ईमान (बे-ईमान का विपर्याय)।

स्त्री०=बाई का सक्षिप्त रूप। (स्त्रियों का सबोधन)

बा०—हिं० 'बाबू' का संक्षिप्त रूप। जैसे—बा० दुर्गाप्रसाद।

बाइ—स्त्री० [स० वापी] छोटा तालाब। बावली। उदा०—अति अगाधु अति औथरो नदी कूपु सरु बाई।—बिहारी।

*स्त्री०=वायु (हवा)।

बाइगी—स्त्री० [स० वार्ता या हिं० बाई=वायु ?] व्यर्थ की बकवाद। उदा०—कौन बाइगी सुनै ताहि किन मोहि बतायौ।—नन्ददास।

बाइबिल—स्त्री० [अ०] ईसाइयों की मुख्य और प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक।

बाइस—पु० [फा०] सबब। कारण। वजह।

वि०, पु०=बाईस।

बाइसवाँ—वि०=बाईसवाँ।

बाइसिकिल—स्त्री० [अ०] आगे-पीछे बँधे हुए दो पहियों की एक प्रसिद्ध सवारी जो पैरो से चलाई जाती है।

बाई—स्त्री० [स० वायु] वात, जो त्रिदोषो मे से एक है। वि० दे० 'वात'।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढना।

पद—बाई की झोंक=(क) वायु का प्रकोप। (ख) किसी प्रकार के मनोवेग का बहुत ही तीव्र या प्रबल आवेग।

मुहा०—बाई चढ़ना=(क) वायु का प्रकोप होना। (ख) किसी प्रकार का बहुत ही तीव्र या प्रबल मनोवेग उत्पन्न होना। **बाई पचना**=(क) वायु का प्रकोप शान्त होना। (ख) उग्र या तीव्र मनोवेग शान्त होना। (ग) व्यर्थ का घमड टूटना या नष्ट होना। **(किसी की) बाई पचाना**=अभिमान नष्ट करना। घमड तोडना।

स्त्री० [हिं० बाबा] १ स्त्रियो के लिए एक आदर सूचक शब्द। जैसे—लक्ष्मी बाई। २ उत्तर भारत मे प्राय नाचने-गानेवाली वेश्याओ के के साथ लगनेवाला शब्द। जैसे—जानकी बाई, मोती बाई।

पद—बाई जी=नाचने-गानेवाली वेश्या।

बाईस—वि० [स० द्वाविंशति, प्रा० बाइसा] जो गिनती मे बीस से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—२२.

बाईसवाँ—वि० [हिं० बाईस+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बाईसवी] क्रम के विचार से बाईस के स्थान पर पडनेवाला।

बाईसी—स्त्री० [हिं० बाईस+ई (प्रत्य०)] १ एक ही प्रकार की बाईस वस्तुओ का समूह। जैसे—खटमल बाईसी। २ मुगल सम्राटो के काल मे वह सेना जो उसके बाईस सूबो के सैनिको से बनाई जाती थी। ३ बाईस हजार सैनिको की सेना।

मुहा०—(किसी पर) बाईसी टूटना=पूरी शक्ति से आक्रमण होना।
बाउँ—वि०=वाम (बायाँ)।
क्रि० वि०=बाएँ।
बाउ—स्त्री०=वायु।
बाउर—वि०[स० वातुल] [स्त्री० बाउरी] १. बावला। पागल। २. भोला-भाला। ३ बेवकूफ। मूर्ख। ४ गूंगा। ५ खराब। बुरा।
बाउरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।
†स्त्री०=बावली।
बाउल—पु०[स० वातुल]१ बगाल का एक वैष्णव सम्प्रदाय जो विवेक को ईश्वर और अपना प्रियतम मानकर उसी की उपासना करता है। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
†वि०=बावला।
बाऊ—पु०[स० वायु] हवा। पवन।
बाएँ—क्रि० वि०[हिं० बायाँ]१ जिधर बायाँ हाथ हो उधर अथवा उस दिशा मे। बाएँ हाथ। २. वस्तु आदि के सबध मे, जिस का मुँह जिस ओर हो उसमे उत्तर दिशा मे।
बाओटा—पु०[स० वायु] वात के कारण होनेवाला, गठिया नामक रोग।
†पु०१=बावटा (झडा)। २ = बाहुटा (बाजूबद)।
बाकचाल—वि०=वाचाल।
बाकना—अ०=बकना।
बाकर—वि०[फा० बाकिर] पडित। विद्वान्।
बाकरखानी—स्त्री० [बाकर खाँ नाम] एक प्रकार की मुसलमानी रोटी (या खिचडी)।
बाकरी—स्त्री०=बावली।
बाकल—पु०=वल्कल (छाल)।
बाकलि—पु०=बकरा।
स्त्री०=वल्कल।
बाकली—स्त्री०[स० बकुल] एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते रेशम के कीडो को खिलाये जाते है। इसे धौरा और बोदार भी कहते है।
बाकस—पु०=बक्स।
बाकसी—स्त्री० [अ० बैंकसेल] जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करने का काम।
बाका—स्त्री०[स० वाक्] बोलने की शक्ति। वाणी।
बाकी—वि०[अ० बाकी]१ जो कुल या समस्त मे से अधिकाश निकाल लिये जाने, क्षय अथवा व्यय होने पर बच रहा हो। २ (काम, चीज या बात) जो अभी किये, बनाये, होने या कहे जाने को हो। जैसे—बाकी काम कल करूँगा।
क्रि० प्र०—पडना।—बचना।—रहना।
३ (धन, राशि या रकम)जो अभी किसी को देय हो अथवा किसी से प्राप्य हो। जिसका लेन-देन अभी होने को हो। जैसे—अभी खाते मे सौ रुपए उनके नाम बाकी है।
क्रि० प्र०—निकलना।—पडना।—होना।
४ (अवधि या समय) जो अभी व्यतीत न हुआ हो। जैसे—अभी महीना पूरा होने मे चार दिन बाकी है।
क्रि० प्र०—रहना।
५ जो अन्त मे या सबसे पीछे होने को हो। जैसे—अब तो मरना बाकी है।
स्त्री०१. गणित मे वह क्रिया जो किसी बडी सख्या (या मान) मे से छोटी सख्या (या मान) घटाने के लिए की जाती है। एक बडी और दूसरी छोटी सख्या का अन्तर निकालने की क्रिया या प्रकार। जैसे—७ मे से ५ घटाना या निकालना। २. उक्त क्रिया करने पर निकलनेवाला फल। वह मान या सख्या जो एक बडी सख्या मे से दूसरी छोटी सख्या घटाने पर प्राप्त होती है। जैसे—१० मे मे यदि ६ घटावें तो बाकी ४ होगा।
क्रि० प्र०—निकलना।
३ वह धन या रकम जो अभी तक वसूल न हुई हो और वसूल की जाने को हो। जैसे—इतना तो ले लीजिए, और जो बाकी निकले, वह नये खाते मे लिख लीजिए। ४ वह जो सबके अन्त मे बचा रहे। जैसे—अब तो यही बाकी है कि उन पर मुकदमा चलाया जाय। ५ अवशेष।
अव्य० परन्तु। मगर। लेकिन। जैसे—आपका कहना तो ठीक है बाकी मैं स्वय चलकर उनके घर नही जाऊँगा। (बोल-चाल)
पु०[देश०] एक प्रकार का धान।
बाकुभा—पु०[हिं० कुभी] कुभी के फूल का सुखाया हुआ केसर जो खाँसी और सरदी मे दवा की भाँति दिया जाता है।
बाखड़ी—स्त्री०=बाखली (गौ या भैंस)।
बाखर—पु० [देश०] एक प्रकार का तृण।
बाखरि—स्त्री० दे० 'बखरी'।
बाखल—स्त्री०=बखरी।
बाखली—स्त्री० [देश०] वह गाय या भैंस जो बच्चा देने के बाद पाँच महीने तक दूध दे चुकी हो।
बाख़ैर—वि० [फा० बा+अ० खैर] खरियत से। कुशलपूर्वक।
बाख्तर—पु०[फा० बख्तर] १ पूर्व। पूरब। २ हिन्दुकुश और वक्षु (आक्सस) के बीच एक प्राचीन जनपद। बल्ख नामक प्रदेश।
बाग—पु०[अ० बाग़] खेती के योग्य भूमि का वह टुकडा जो चारो ओर से प्राय दीवार से घिरा होता है तथा जिसमे फूलो और फलोवाले अनेक प्रकार के पौधे और वृक्ष होते हैं।
स्त्री०[स० वल्गा] १ लगाम। २. शक्ति। सामर्थ्य। उदा०—मम सेवक कर केतिक बागा।—तुलसी।
मुहा०—बाग मोडना=किसी ओर चलते हुए को किसी दूसरी ओर प्रवृत्त करना। किसी ओर घुमाना। बाग हाथ से छूटना=अवसर, नियन्त्रण आदि हाथ से निकल जाना।
† स्त्री०[स० वाक्] वाणी।
बागड़—पु० [?] १ बिना बस्ती का देश। उजाड। २ दे० 'शाद्वल'।
बागडोर—स्त्री०[हिं० बाग+डोर=रस्सी]१. वह रस्सी जो घोडे की लगाम मे बाँधी जाती है और पकडकर साईस लोग उसे टहलाते हैं। २ लगाम। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसी चीज या बात जिसके द्वारा किसी को वश मे किया जाता है।
बागदार—पु० [फा० बाग+दार] बाग का स्वामी।
बागना—अ० [फा० बाग] १. बाग मे घूमना। २ सैर करना। घूमना।

क्रि० प्र०—लिखना। —लिखाना

बाजना—पु०=बाजा।

बाजना—अ०[स० व्रजन] १ जाना। २ पहुँचना।

अ० [स० वादन] १ तर्क-वितर्क या बहस करना। २ लड़ाई-झगड़ा करना।

अ०[स० वदन] १. कहना। बोलना। २ किसी नाम से प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ३ आघात लगना। प्रहार होना।

वि० बजनेवाला। जो बजता हो।

बाजरा—पु०[स० वर्जरी] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानो की गिनती मोटे अन्नो मे होती हैं। २ उक्त पौधे के दाने जो उबाल या पीसकर खाये जाते हैं।

बाजरा मुर्ग—पु०[हि०+फा०] एक प्रकार की काली चिड़िया जिसके ऊपर बाजरे की तरह के पीले पीले दाग होते है।

बाजहर—पु०=जहर मोहरा।

बाजा—पु०[स० वाद्य] १ सगीत मे, वह उपकरण जो फूँके अथवा आघात किये जाने पर बजता है तथा जिसमे से अनेक प्रकार के स्वर आदि निकलते हैं।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

पद—बाजा-गाजा। (दे०)

२ बच्चो के बजाने का कोई खिलौना।

वि० [अ० बअज] कोई-कोई। कुछ। जैसे—बाजे आदमी किसी की पुकार पर जरा भी ध्यान नही देते।

बाजा-गाजा—पु०[हि० बाजा +गाजना=गरजना] तरह तरह के बाजे और उनके साथ होनेवाली धूम-धाम या हो-हल्ला। जैसे—बाजे-गाजे से बरात निकलना।

बा-जाब्ता—अव्य०[अ० बा+फा०जाबित] जाब्ते के साथ। नियम,विधान आदि के अनुसार। जैसे—किसी के माल की बा-जाब्ता कुर्की कराना।

वि० जो जाब्ते अर्थात् नियम, विधान आदि के अनुसार ठीक हो।

बाजार—पु०[फा० बाजार] [वि० बाजारी, बाजारू] १ वह स्थान जहाँ किसी एक चीज अथवा अनेक चीजो के विक्रय के लिए पास-पास अनेक दूकाने हों।

मुहा०—**बाजार करना**=चीजे खरीदने के लिए बाजार जाना और चीजे खरीदना। **बाजार गरम होना**=बाजार मे चीजो या ग्राहको आदि की अधिकता होना। खूब लेन-देन या खरीद-बिक्री होना। (**किसी काम या बात का) बाजार गरम होना**=किसी काम या बात की बहुत अधिकता या बाहुल्य होना। जैसे—आज-कल चोरियो (या जुए) का बाजार गरम है। **बाजार लगना**=(क) बहुत सी चीजो का इधर-उधर ढेर लगना। बहुत-सी चीजो का यो ही सामने रखा होना। (ख) बहुत भीड़-भाड़ इकट्ठी होना और वैसा ही हो-हल्ला होना जैसा बाजारो मे होता है। **बाजार लगाना**=(क) चीजे इधर-उधर फैला देना। (ख) अटाला या ढेर लगाना। (ग) भीड़-भाड़ लगाना और वैसा ही हो-हल्ला करना जैसा बाजारो मे होता है।

२ वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय, वार, तिथि या अवसर आदि पर सब तरह की चीजो की दुकाने लगती हों। हाट। पैठ।

मुहा०—**बाजार लगना**=बाजार मे सब तरह की दुकाने आकर खुलना या लगना। **बाजार लगाना**=ऐसी व्यवस्था करना कि किसी स्थान पर आकर सब तरह की दुकानें लगें। जैसे—राजा साहब हर मगलवार को अपने किले के सामने बाजार लगवाते थे।

३ किसी चीज की बिक्री की वह दर या भाव जिस पर वह साधारणतः सब जगह बाजारो मे बिकती या मिलती हो।

क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।—चढना।—घटना।

पद—**बाजार-भाव**=किसी चीज का वह भाव या मूल्य जिस पर वह साधारणत. सब जगह बाजारो मे मिलती हो।

मुहा०—(**किसी का) बाजार के भाव पिटना**=बहुत बुरी तरह से मारा-पीटा जाना। (व्यग्य) **बाजार तेज होना**=चीजो की माँग की अधिकता के कारण उनका मूल्य बढना। **बाजार मंदा होना**=चीजो की माँग कम होने के कारण चीजो का भाव या मूल्य घटना।

४ व्यापारिक क्षेत्रो मे व्यापारियो आदि का वह प्रत्यय या साख जिसके आधार पर उन्हे बाजार से चीजे और रुपए उधार मिलते हैं। जैसे—व्यापारियों को अपना व्यापार चलाने के लिए अपना बाजार बनाये रखना पड़ता है।

बाजारी—वि०[हि० बाजार] १ बाजार-सबधी। बाजार का। २. जो बहुत अच्छा या बढ़िया न हो। बाजारू। साधारण। ३. बाजार मे होनेवाला। बाजार मे प्रचलित। जैसे—बाजारी बोल-चाल। ४ बाजार मे रहने या बैठनेवाला। जैसे—बाजारी औरत। ५. दे० 'बाजारू'।

बाजारू—वि० [फा० बाजार] १ बाजार का। बाजारी। (देखें) २ (शब्द या प्रयोग) जिसका प्रयत्न बाजार के साधारण लोगो मे ही हो, शिक्षित या शिष्ट समाज मे न होता हो।

बाजिंदा—पु० [फा० बाजिन्द] १ खेल-तमाशे दिखानेवाला। खेलाड़ी। २ लोटन कबूतर।

बाजि—पु० [स० वाजिन्, वाज+इनि] १ घोड़ा। २ चिड़िया। ३ तीर। बाण। ४ अडूसा।

वि० चलनेवाला।

बाजी—स्त्री०[फा० बाजी] १. किसी प्रकार की घटना के अनिश्चित परिणाम के प्रसग मे दो या अधिक पक्षो मे होनेवाला यह पारस्परिक निश्चय कि जो पक्ष हार जायगा, उसे जीतनेवाले को इतना धन देना पडेगा, अथवा अपनी हार का सूचक अमुक काम करना पडेगा। खेलो या लाग-डाँटवाली बातो के सबध मे लगाई जानेवाली ऐसी शर्त जिसके अनुसार हार-जीत के साथ कुछ लेना-देना भी पडता हो अथवा पुरस्कार भी मिलता हो। बदान। शर्त। २ इस प्रकार होनेवाला लेन-देन या मिलनेवाला पुरस्कार।

क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—लगना।—लगाना।—हराना।

मुहा०—**बाजी मारना**=बाजी जीतना। **बाजी ले जाना**=बाजी जीतना। ३ प्रत्येक बार आदि से अत तक होनेवाला कोई ऐसा खेल जिसमे हार-जीत के भाव की प्रधानता हो। जैसे—आओ दो बाजी ताश (या शतरज) हो जाय।

क्रि० प्र०—जीतना।—हारना।

४ उक्त प्रकार के खेलो मे प्रत्येक खेलाड़ी या दल के खेलने की पारी या बारी। दाँव।

स्त्री० [फा० बाज का भाव०] १ 'बाज' होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात के व्यसनी या शौकीन होने की अवस्था या भाव। जैसे—कबूतरबाजी, पतगबाजी। ३. किसी प्रकार की क्रिया कुछ समय तक होते रहने का भाव। जैसे—दोनो मे कुछ देर तक खूब घूँसेबाजी हुई।

पु०[सं० वाजिन्] घोडा।

पु०[हिं० बाजा]वह जो बाजा बजाने का काम करता हो। बजनिया।

बाजीगर—पु० [फा० बाजीगर] [भाव० बाजीगरी] जादू के खेल करनेवाला। जादूगर। ऐंद्रजालिक ।

बाजु—अव्य० [फा० बाज] १ बिना। बगैर। उदा०—को उठाइ बसाग्इ, बाजु पियारे जीवँ।—जायसी। २ अतिरिक्त। सिवा।

पु०[फा० बाजू] १ भुजा। बाँह। २ बाजूबद।

बाजू—पु०[फा० बाजू] १ भुजा। बाहु। बाँह। २ वह जो हाथ की तरह सदा साथ रहता और पूरी सहायता देता हो। ३. किसी चीज का कोई विशिष्ट अग या पक्ष। पार्श्व। ४ पक्षियो का डैना। ५ बाजूबद नाम का गहना। ६ उक्त गहने के आकार का गोदना।

बाजूबंद—पु०[फा० बाजूबंद] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। भुजबद।

बाजूबीर—पु०=बाजूबद।

बाजोटा—पु०[सं० वाद्य+पट्ट] १. चौकी। २. बैठने की ऊँची जगह। (राज०) उदा०—बाजोटा ऊनरि गादी बैठी।—प्रिथीराज।

बाझ—अव्य०[सं० वर्जन] बगैर। बिना। उदा०—भिस्त न मेरे चाहिए बाझ पियारे तुज्झ।—कबीर।

बाझन—स्त्री०[हिं० बझना=फँसना] १ बझने या फँसने की क्रिया या भाव। फँसावट। २. उलझन। पेच। ३ झझट। बखेडा। ४. लडाई-झगडा।

बाझना—अ० [हिं० बझना] १ उलझना। फँसना। बझना। २. गुत्थम-गुत्था या हाथा-बाँही होना। ३. दे० 'बझना'।

बाट—पु०[सं० वाट=मार्ग] रास्ता।

पद—बाट घाट=नगर या बस्ती के इधर-उधर के छोटे-मोटे सभी प्रकार के स्थान।

मुहा०—बाट करना=रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट काटना=चलकर रास्ता पार करना। बाट जोहना या देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा या रास्ता देखना। (किसी के) बाट पडना=(क) रास्ते मे आ-आकर बाधा देना। तग करना। पीछे पडना। (ख) रास्ते मे डाकुओ का आकर लूट लेना। डाका पडना। बाट पारना=रास्ते मे यात्रियो को लूटना। डाका डालना। (किसी को) बाट लगाना=(क) ठीक रास्ता बतलाना या ठीक रास्ते पर लाना। (ख) काम करने का ठीक ढग बतलाना। बाट रोकना=(क) मार्ग मे बाधा या रुकावट खडी करना। (ख) किसी के काम मे अडचन खड़ी करना। बाधक होना।

पु०[सं० वटक] १. पत्थर आदि का वह टुकडा जो चीजे तौलने के काम आता है। बटखरा।

मुहा०—बाट हडना=(क) इस बात की जाँच या परीक्षा करना कि कोई बटखरा तौल मे पूरा है या नही। (ख) किसी की प्रामाणिकता, सत्यता आदि की जाँच या परीक्षा करना। (ग) तग या परेशान करना। जैसे—रात दिन मुझसे बाट हडता है। (स्त्रियाँ)

२. पत्थर का वह टुकडा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाती है। बट्टा।

स्त्री०[हिं० बटना] १. डोरी, रस्सी आदि बटने की क्रिया या भाव। २ बटने के कारण डोरी, रस्सी आदि मे पडी हुई ऐंठन। बल।

स्त्री०[हिं० बाटना=पीसना] बाटने अर्थात् पीसने की क्रिया, ढग या भाव

बाटकी—स्त्री०=बटलोई।

बाटना—स० [हिं० बट्टा या बाट] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना। उदा०—यो रहीम जस होतु है उपकारी के सग, बाटन वारे कौ लगैं ज्यो मेहदी को रग।—रहीम।

†स०=बटना (बल देना)।

†पु०=बटना।

बाटली—स्त्री [अ० बटलाइन] जहाज के पाल मे ऊपर की ओर लगा हुआ वह रस्सा जो मस्तूल के ऊपर से होकर फिर नीचे की ओर आता है। इसी को खीचकर पाल तानते हैं। (लश०)

†स्त्री०=बोतल।

बाटिका—स्त्री०[सं० वाटिका] १ छोटा बगीचा जिसमे शोभा के लिए फूल तथा फलो के छोटे-मोटे पौधे लगाये गये हो। २ गद्य काव्य का एक भेद ।

बाटी—स्त्री०[सं० वटी] १ गोली। पिंड। २ उपलो या अगारो पर सेंका हुआ आटे का गोलाकार लोदा।

†स्त्री०[प०] चौडे मुँहवाली एक तरह की बडी कटोरी।

बाड—स्त्री०=बाढ। उदा०—यह ससार बाड का काँटा।—मीराँ।

बाडकिन—पु० [अं०] १ छापेखाने मे काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ जिसमे पीछे की ओर लकडी का दस्ता लगा रहता है। २ दफ्तरी खाने मे काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ जिससे दफ्ती आदि मे छेद किया जाता है।

बाड़ना†—स० [हिं० बडना=घुसना या पैठना का स०] अन्दर प्रविष्ट करना। घुसाना। (पश्चिम)

बाडव—पु० [सं० बडवा+अण्] १ ब्राह्मण। २ घोडियो का झुड। ३ बडवानल।

वि० बडवा-सम्बन्धी।

बाडव-अनल—पु०=बडवानल।

बाड़व-वह्नि—स्त्री०=बडवानल।

बाडा—पु० [सं० वाट] १ चारो ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २ वह स्थान जहाँ पर पशु आदि घेरकर या बद करके रखे जाते हो। पशुशाला।

बाड़ि—स्त्री०=बाडिस।

बाडिस—स्त्री० [अं०] स्त्रियो के पहनने की एक प्रकार की अगरेजी ढग की कुरती।

बाडी—स्त्री०=बाडिस।

बाड़ी—स्त्री० [सं० वारी] १ वाटिका। बारी। फुलवारी। २ घर। मकान। (पूरब) जैसे—ठाकुरबाडी। ३ कपास का खेत। (पश्चिम)

†स्त्री० [?] कपास।

बाडी-गार्ड—पु०=अंग रक्षक। (दे०)

बाडौ*—पु०=बाडव।

बाढ़—स्त्री० [हिं० बढना] १ बढने की क्रिया या भाव। बढाव। वृद्धि। जैसे—पेड-पौधो की बाढ।

मुहा०—**बाढ पर आना**=ऐसी अवस्था मे आना कि निरन्तर वृद्धि होती रहे। जैसे—अब यह पेड बाढ पर आया है।

२. नदी-नाले की वह स्थिति जब उसका पानी किनारो के बाहर बहने लगता है और आस-पास के झोपडो, मकानो, फसलो, पशुओ आदि को बहाने लगता है।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।

३ कँटीले पौधो आदि की वह लबी पक्ति जो खेतो, बगीचो आदि मे इसलिए लगाई जाती है कि पशु आदि अन्दर न आ सके।

क्रि० प्र०—रूँधना।—लगाना।

४. कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजो मे किनारे या सिरे पर की ऊँचाई। जैसे—टोपी या थाली की बाढ। ५ व्यापार आदि मे अधिकता से होनेवाला लाभ या वृद्धि। ६ किसी प्रकार का जोर या तेजी। प्रबलता। ७ तोप, बन्दूक आदि से गोलो-गोलियो का निरन्तर छूटते रहना। ८ उक्त से लगातार होता रहनेवाला प्रहार। जैसे—तोपो की बाढ के सामने शत्रु सेना न ठहर सकी।

क्रि० प्र०—दगना।—दागना।

स्त्री० [स० वाट, हिं० वारी] कुछ विशिष्ट प्रकार के हथियारो की धार जिससे चीजें कटती है। जैसे—कैंची, छुरी या तलवार की बाढ।

मुहा०—**बाढ रखना**=उक्त चीजो को सान पर चढाकर उनकी धार तेज करना।

†पु०=टॉड (बाँह पर पहनने का गहना)।

बाढ़ काढ—स्त्री० [हिं० बाढ=हथियार की धार] १ तलवार। २ खड्ग। खाँडा। (डिं०)

बाढना—स० [हिं० बाढ=धार] १ धारदार चीज से काटना। मार डालना। वध या हत्या करना। ३. नष्ट या बरबाद करना।

†अ०=बढना।

बाढाली—स्त्री० [हिं० बाढ=धार] १ तलवार। २. खड्ग। खाँडा। (राज०)

बाढि—स्त्री०=बाढ।

बाढी—स्त्री० [हिं० बढना या बाढ] १ बढती। वृद्धि। २ वह व्याज जो किसी को अन्न उधार देने पर मिलता है। ३ उधार दिया या लिया हुआ ऐसा ऋण जिसका सूद दिन पर दिन बढता चलता हो। जैसे—वह उधार बाढी का काम करता है। ४ व्यापार मे होनेवाला लाभ। मुनाफा। ५ पानी की बाढ।

बाढ़ीवान्—पु० [हिं० बाढ=धार+स० वान्] वह जो छुरी, कैंची आदि सान पर चढाकर उनकी धार तेज करता हो। औजारो पर सान रखनेवाला।

बाण—पु० [स०√वण् (शब्द)+घञ्] १. एक प्रकार का नुकीला अस्त्र जो कमान या धनुष पर चढाकर चलाया जाता है। तीर। शर। सायक। २ उक्त का अगला नुकीला भाग जो जाकर शरीर के अन्दर धँस जाता है। ३ वह चीज जिसे वेधने के उद्देश्य से वाण या तीर चलाया जाता है। निशाना। लक्ष्य। ४ कामदेव के प्रसिद्ध पाँच बाणो के आधार पर पाँच की सख्या का वाचक शब्द। ५ गाय का थन। ६ अग्नि। आग। ७ रामसर। सरपत। ८. नीली कटसरैया। ९ दे० 'बाणभट्ट'।

बाण गंगा—स्त्री० [स० मध्य० स०] हिमालय के सोमेश्वर गिरि से निकली हुई एक प्रसिद्ध नदी।

बाण गोचर—पु० [प० त०] उतनी दूरी जितनी कोई बाण छूटने पर पार करता है। बाण की पहुँच या मार तक की दूरी।

बाण-पति—पु० [प० त०] बाणासुर के स्वामी महादेव। (डिं०)

बाण-पाणि—वि० [ब० स०] बाणो से लैस।

बाणपुर—पु० [प० त०] शोणितपुर (आधुनिक तेजपुर, आसाम) जो बाणासुर की राजधानी थी।

बाणरेखा—स्त्री० [तृ० त०] बाण से शरीर पर होनेवाला लबा घाव।

बाणलिंग—पु० [मध्य० स०] नर्मदा मे मिलनेवाला एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका शिवलिंग बनता है।

बाणविद्या—स्त्री० [प० त०] वह विद्या जिससे बाण चलाना आवे। बाण चलाने की विद्या। तीरदाजी।

बाणवृष्टि—स्त्री० [प० त०] लगातार बाण चलाते रहना। बाणों की वर्षा।

बाणावती—स्त्री० [स०] बाणासुर की पत्नी का नाम।

बाणावलि—स्त्री० [स० बाण-अवलि, प० त०] १ बाणो की पक्ति। २ शत्रुओं पर होनेवाली बाणो या तीरों की बौछार।

बाणाश्रय—पु० [सं० बाण-आश्रय, प० त०] तरकश।

बाणासन—पु० [स० बाण-आसन, प० त०] धनुष।

बाणासुर—पु० [स० बाण-असुर, कर्म० स०] राजा बलि के सौ पुत्रो मे से सबमे बडे पुत्र का नाम जो बहुत ही वीर, गुणी और सहस्रबाहु था।

बाणिज्य†—पु०=वाणिज्य।

बात—स्त्री० [स० वार्ता] १ किसी से अथवा किसी विषय मे कहा जानेवाला कोई सार्थक वाक्य। कथन। वचन। वाणी। जैसे—तुम तो मुँह से बात भी नही निकालने देते।

क्रि० प्र०—कहना।—निकलना।—निकालना।

मुहा०—**(मुँह से) बात न निकलना**=मुँह से शब्द तक न निकलना। चुप या मौन हो जाना। **(मुँह से) बात फूटना**=मुँह से बात या शब्द निकलना।

२ किसी विशिष्ट उद्देश्य से या अपने मन का भाव प्रकट करने के लिए किया जानेवाला कथन।

पद—**बात कहते**=उतनी थोडी देर मे जितनी मे मुँह से कोई बात निकलती है। पल भर मे। चटपट। तुरत। **बात का कच्चा या हेठा**=वह जिसके कथन या बात का सहसा विश्वास न किया जा सकता हो। प्रतिज्ञा, वचन आदि का ध्यान न रखनेवाला। **बात का धनी, पक्का या पूरा**=वह जो अपने कथन, प्रतिज्ञा, वचन आदि का पूरी तरह से पालन करता हो। **बात का बतगड़**=साधारण सी बात को व्यर्थ

वार्तालाप। जैसे—(क) काम-धन्धे या रोजगार की बात। (ख) व्याह-शादी की बात।

मुहा०—बात ठहरना=किसी विषय मे यह स्थिर होना कि ऐसा होगा। मामला तै होना। **बात डालना**=प्रस्ताव के रूप मे किसी के सामने कोई विषय उपस्थित करना। मामला पेश करना। जैसे—चार मले आदमियो के बीच मे यह बात डालकर निपटा लो। **(अपनी) बात पर आना या रहना**=अपने कहे हुए वचन के अनुसार ही काम करने के लिए प्रस्तुत होना या रहना। यह आग्रह या हठ करना कि जैसा मैंने कहा, वैसा ही हो। **बात लगाना**=विवाह सबध स्थिर करने के लिए कही कहना, सुनना या प्रस्ताव रखना। **बात हारना**=ऐसी स्थिति मे होना कि अपनी कही हुई बात या दिये हुए वचन का पालन करना आवश्यक हो जाय। जैसे—मैं तो उनसे बात हार चुका हूँ, अब इधर-उधर नही हो सकता।

५ सामान्य रूप से होनेवाली किसी विषय की चर्चा। जिक्र।

क्रि० प्र०—आना। —उठना। —चलना। —छिड़ना। —पडना।

मुहा०—बात चलाना, छेड़ना या निकालना=ऐसा प्रसग उपस्थित करना कि किसी विषय या व्यक्ति के सबध मे कुछ बातें हो। चर्चा या जिक्र चलाना। **बात पडना**=किसी विषय का प्रसग प्राप्त होना। चर्चा आरभ होना। जैसे—बात पडी, इसलिए मैंने कहा, नही तो मुझ से क्या मतलब? **बात मुँह पर लाना**=(किसी विषय की) चर्चा कर बैठना। जैसे—किसी के सामने ऐसी बात मुँह पर नही लानी चाहिए।

६ कोई ऐसा कार्य या घटना जिसकी लोगो मे विशेष चर्चा हो। लोक मे प्रचलित कोई प्रसग।

मुहा०—बात उड़ना या फैलना=चारों ओर या बहुत से लोगो मे चर्चा होना। **बात नाचना**=बात चारो ओर प्रसिद्ध होना या बहुत अच्छी तरह फैलना। विशेष प्रसिद्ध होना। उदा०—मेरे ख्याल परौ जनि कोऊ बात दसो दिसि नाची।—हितहरिवंश। **बात बहना**=किसी बात की चर्चा चारो ओर फैलना। उदा०—जो हम सुनति रही सो नाही, ऐसे ही यह बात बहानी।—सूर।

७ ऐसा कथन या कार्य जो ठीक या प्रामाणिक माना जा सकता हो अथवा सभी दृष्टियो से उचित समझा जा सकता हो। जैसे—भला यह भी कोई बात है। ८ विशेष महत्त्व का कोई कथन अथवा दृढ, निश्चित या प्रामाणिक मत, विचार या सिद्धान्त।

मुहा०—बात (किसी के) कान पडना=बात का किसी के द्वारा इस प्रकार सुना जाना कि वह उसका भेद समझ जाय और उससे अनुचित लाभ उठा सके। जैसे—जहाँ यह बात किसी के कान पडी, तहाँ सारा काम बिगड जायगा।

९ किसी विषय मे किसी की कोई आज्ञा, आदेश, या उपदेश। नसीहत। सीख। जैसे—बडो की बात माननी चाहिए।

मुहा०—(किसी की) बात आँचल या गाँठ में बाँधना=अच्छी तरह और सदा के लिए अपने ध्यान या मन मे बैठाना। उपभोग या व्यवहार मे लाने के लिए अच्छी तरह याद रखना। जैसे—हमारी यह नसीहत गाँठ मे बाँध रखो, नही तो किसी समय बहुत पछताओगे।

१० किसी काम या चीज मे होनेवाला कोई विशिष्ट गुण या तत्व। जैसे—उसमे अगर कुछ बुरी बाते है तो कई अच्छी बाते भी है।

११ कोई उक्ति, कथन या कार्य जिसमे कुछ विशिष्ट कौशल या चमत्कार हो, अथवा जिससे प्रभावित होकर लोग प्रशसा करें। जैसे—(क) उनकी हर बात मे एक बात होती है। (ख) वे साधारण कामो मे भी एक नई बात पैदा कर देते है। (ग) तुम भी इन्ही की तरह काम करके दिखलाओ, तब बात है। (घ) उसे हराना कोई बडी बात नही है। उदा०—कितक बात यह धनुप रुद्र को सकल विश्व कर लैहो।—सूर।

पद—क्या बात है!=बहुत प्रशसनीय काम या बात है। (साधारण रूप मे भी और व्यग्य के रूप मे भी) जैसे—(क) क्या बात है! बहुत सुन्दर चित्र बनाया है। (ख) आप बहुत बहादुर हैं, क्या बात है!

१२ कोई ऐसा कार्य या घटना जिससे कोई विशेष महत्त्व का प्रयोजन सिद्ध होता हो। जैसे—(क) ये सब झगडा छोडो, काम (या मतलब) की बात करो।

क्रि० प्र०—करना।—कहना।—बनना।—बनाना।—बिगडना।—बिगाडना।—होना।

१३. किसी के कथन, वचन, व्यवहार आदि की प्रामाणिकता। प्रतीति। साख। जैसे—(क) बाजार मे उनकी बडी बात है। (ख) अब तुम बहुत झूठ बोलने लगे हो, इससे मित्र-मडली मे तुम्हारी वह बात नही रह गई।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।—बनना।—बनाना।

मुहा०—(किसी की) बात जाना=बात की प्रामाणिकता नष्ट हो जाना। एतबार या विश्वास न रह जाना। **बात हेठी होना**=बात की प्रामाणिकता या साख न रह जाना। विश्वास उठ जाने के कारण प्रतिष्ठा या मान मे बहुत कमी होना।

१४ किसी के गुण, महत्त्व आदि के विचार से उसके प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाला आदर-भाव।

मुहा०—बात न पूछना=अवज्ञा के कारण ध्यान न देना। तुच्छ समझकर बात तक न करना। कुछ भी कदर न करना। जैसे—तुम्हारी यही चाल रही तो मारे मारे फिरोगे, कोई बात न पूछेगा। उदा०—सिर हेठ ऊपर चरन संकट, बात नहिं पूछै कोऊ।—तुलसी। **बात न पूछना**=दशा पर ध्यान न देना। खयाल न करना। परवाह न करना। उदा०—मीन वियोग न सहि सकै नीर न पूछै बात।—सूर। **बात पूछना**=(क) खोज रखना। खबर लेना। सुख या दुख है, इसका ध्यान रखना। (ख) आदर या कदर करना।

१५. लोक या समाज मे होनेवाली प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा। धाक। जैसे—बिरादरी (या शहर) मे उनकी बडी बात है।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।—जाना।—बनना—बनाना।—बिगडना।—बिगाड़ना।—रखना।—रहना।

१६ मन मे छिपा हुआ अभिप्राय या आशय। मन का गूढ भाव या विचार। जैसे—तुम्हारे मन की बात कोई कैसे जाने।

मुहा०—(मन मे कोई) बात खौलना=किसी अभिप्राय या उद्देश्य के सिद्ध न हो सकने पर मन ही मन उसके सम्बन्ध मे उद्वेग बना रहना। **(मन मे कोई) बात रखना**=अपना अभिप्राय या उद्देश्य किसी पर प्रकट न होने देना।

१७. कोई गुप्त या रहस्यमय तत्त्व या तथ्य। भेद या मर्म का प्रसग या विषय। जैसे—(क) उसका आना मतलब से खाली नही है, जरूर इसमे कोई

बात है। (ख) उसने मुझे ऐसी बात बतलाई कि मेरी आँखें खुल गईं।
मुहा०—बात खुलना या फूटना=भेद, मर्म या रहस्य प्रकट होना। बात (या बात की तह) तक पहुँचना=दे० नीचे 'बात पाना'। बात पाना=असल मतलब या गूढ़ तत्त्व समझ जाना।
१८ कोई ऐसा अनुचित कथन या कार्य जिससे किसी पर कोई दोष या लाछन लगता या लग सकता हो।
मुहा०—(किसी पर) बात आना=ऐसी स्थिति होना कि किसी पर कोई दोष या लाछन लग सकता हो। (किसी पर कोई) बात रखना, लगाना या लाना—किसी को दोषी सिद्ध करने का प्रयत्न करना। कलक या दोष की बात किसी के सिर पर मढ़ना।
१९ कोई ऐसा कथन या बात जो किसी को धोखा देकर अपना कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए की जाय। जैसे—उनकी बातो मे मत आना, नही तो पछताओगे।
मुहा०—बातें बनाना=किसी को कौशलपूर्वक अपने अनुकूल करने के लिए तरह-तरह की झूठी या बनावटी बाते कहना। (किसी की) बात (या बातो) पर जाना=(किसी की) बात (या बातो) मे आना। (किसी की) बात या बातो में आना=किसी की बातो पर विश्वास करके उनके अनुसार आचरण या व्यवहार करना। बात लगाना=किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किसी दूसरे से उसकी कोई बात कहना। बातो मे लगाना=किसी का ध्यान बँटाने या उसे किसी ओर प्रवृत्त होने से रोकने के लिए छलपूर्वक उससे इधर-उधर की बाते छेड़ना। जैसे—इधर तो उसने मुझे बातो मे लगा रखा, और उधर अपना आदमी भेजकर अपना काम करा लिया।
२० ऐसा झूठा या बनावटी कथन जो किसी को धोखा देने के लिए हो या जिसमें कोई बहानेबाजी हो। जैसे—यह सब उसकी बात (या बाते) है। २१ अपनी हैसियत, योग्यता, गुण, सामर्थ्य, आदि के सबध मे बढा-चढाकर किया जानेवाला उल्लेख। जैसे—अब तो वह बहुत लबी-चौडी बाते करता है।
†पु०=बात।

बात-चीत—स्त्री० [हिं० बात+स० चितन?] १. दो या अधिक व्यक्तियों, पक्षो आदि मे परस्पर होनेवाली औपचारिक तथा मौखिक बाते। वार्तालाप। २ लेन-देन, समझौता, सधि आदि करने के उद्देश्य से होनेवाली मौखिक बाते या लिखा-पढी। जैसे—ठेके की बात-चीत चल रही है।

बातड़—वि० [स० वातुल] १ वायु-युक्त। वायुवाला। २. बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।

बातप—पु० [स० वाताप] हिरन। (अनेकार्थ०)

बात फरोश—पु० [हिं० बात+फा० फरोश] [भाव० बात-फरोशी] वह जो केवल उटपटाग या व्यर्थ की बाते गढ-गढकर सुनाता और उन्ही के भरोसे अपने सब काम चलाता हो।

बात-बनाऊ—वि० [हिं० बात+बनाना] १ झूठ-मूठ व्यर्थ की बाते बनानेवाला। २ दूसरो का काम पूरा करनेवाला।

बातर—पु० [देश०] पजाब मे धान बोने का एक प्रकार।

बातला—पु० [स० वात] एक प्रकार का योनि रोग जिसमे सूई चुभने की-सी पीड़ा होती है।

बातावी—पु० [बटेविया देश०] चकोतरा।

बातासा|—पु० [स० वात] हवा। वायु।

बातिन—पु० [अ०] [वि० बातिनी] १. किसी चीज का भीतरी भाग। २. अन्त.करण।

बातिनी—वि० [अ०] १ भीतरी। २ अन्त करण का।

बातिल—वि० [अ०] १. जो सत्य न हो। झूठ। मिथ्या। २. निकम्मा। रद्दी। व्यर्थ। ३ नियम-विरुद्ध।

बाती—स्त्री० [स० वर्ती] १. वह लकड़ी जो पान के खेत के ऊपर बिछाकर छप्पर छाते हैं। २. दे० 'बत्ती'।
†स्त्री०=बात।

बातुल—वि० [स० वातुल] पागल। सनकी।
वि० [हिं० बात] १ बहुत बातें करनेवाला। बकवादी। २. बहुत बातें बनानेवाला। बातूनी।

बातूनिया—वि०=बातूनी।

बातूनी—वि० [हिं० बात+ऊनी] (प्रत्य०)] १ जिसे बातें करने का चस्का हो। २ बहुत बढ़-चढकर और व्यर्थ की बाते करनेवाला।

बाथ—पु० [?] अंकवार। अक। उदा०—दृग मीचत मृग लोचनी भरयो उलटि भुज बाथ।—बिहारी।

बाथू—पु० [स० वस्तुक, प्रा० वत्थु] बथुआ नाम का साग।

बाद—पु० [स० वाद] १ खडन-मडन की बात-चीत। तर्क-वितर्क। बहस-मुबाहसा। २ झगडा। तकरार। बाद-विवाद।
क्रि० प्र०—बढाना।
३. नाना प्रकार के तर्क-वितर्कों के द्वारा बात का किया जानेवाला व्यर्थ का विस्तार। उदा०—त्यो पद्माकर वेद पुरान पढयो पढि के बहु बाद बढायो।—पद्माकर।
४. प्रतिज्ञा। ५ बाजी। होड।
मुहा०—बाद मेलना=शर्त बदना। बाजी लगाना।
अव्य० [स० वाद, हिं० बादि=बाद करके, हठ करके, व्यर्थ] निष्प्रयोजन। बिना मतलब। व्यर्थ।
अव्य० [अ०] १. पश्चात्। अनतर। पीछे। २ अतिरिक्त। सिवा।
वि० किसी प्रकार के वर्ग से अलग किया या निकाला हुआ। जैसे—आमदनी मे से खरच बाद करना, दाम मे से लागत बाद करना।
क्रि० प्र०—करना।—देना।
पु० १. छूट या दस्तूरी जो दाम मे से काटी जाती हो। २ किसी अच्छी चीज मे की वह घटिया मिलावट जो निकाली जाती हो या जिसके विचार से चीज का दाम घटता हो। जैसे—इस सोने मे दो रत्ती टाँका (या ताँबा) बाद जायगा। ४ देन, मूल्य आदि की वह कमी जो किसी चीज के खराब होने या बिगडने के फल-स्वरूप की जाती है। जैसे—पाले के कारण फसल मे चार आने बाद है। (पूरब)
पु० [स० वात से फा०] वात। हवा।
†पु०=वाद्य।

बाद-कश—पु० [फा०] १ छत मे लटकाने का पखा। २ धौंकनी।

बाद-गर्द—पु० [फा०] बवडर। बगूला।

बादना—अ० [स० वाद+हिं० ना (प्रत्य०)] १ बकवाद करना।

२ तर्क-वितर्क करना। ३ झगड़ा या तकरार करना। जैसे—काहुहि बादिन देइअ दोमू।—तुलसी। ४ बढ़-बढ़कर बातें करना। उदा०—बादत बड़े सूर की नाईं, अबहिं लेत हौं प्रान तुम्हारे।—सूर। ५ ललकारना।

बादनुमा—पु० [फा०] वायु के प्रवाह की दिशा सूचित करनेवाला एक प्रकार का यन्त्र। पवन-प्रचार।

बादबान—पु० [फा०] नाव या जहाज का पाल। पोत-पट। मरुत्पट।

बादबानी—वि० [फा०] १. बादबान संबंधी। २ जिसमे बादबान लगाया जाता है। बादबान के द्वारा चलनेवाला।

बादर—वि० [सं०] १. बदर या बेर नामक फल का, उसमे उत्पन्न या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। २. कपास या रूई से सम्बन्ध रखने या उससे बननेवाला। ३ भारी या मोटा। बारीक, या सूक्ष्म का विपर्याय।

पु० नैऋत्य कोण का एक देश। (बृहत्संहिता)

पु० [?] १ कपास का पौधा। २ कपास या रूई मे बना हुआ। कपड़ा।

†वि० [?] आनंदित। प्रसन्न।

†पु०=बादल (मेघ)।

बादरा—स्त्री० [सं० बादर+टाप्] १ बदरी या बेर का पेड। २ कपास का पौधा। ३ जल। पानी। ४. रेशम। ५. दक्षिणावर्त शख।

†पु०=बादल।

बादरायण—पु० [सं० बदरी+फक्—आयन] वेदव्यास का एक नाम।

बादरायण संबंध—पु० [कर्म० स० ?] बहुत खीचतानकर जोडा हुआ नाम मात्र का संबंध। बहुत दूर का लगाव या सम्बन्ध।

बादरायण-सूत्र—पु० [मध्य० स०] ब्रह्मसूत्र।

बादरिया—स्त्री०=बदली (मेघ)।

बादरी—स्त्री०=बदली (मेघ)।

बादल—पु० [सं० वारिद, हिं० बादर] १ आकाश मे होनेवाला जल-कणों का वह जमाव जो वाष्प के हवा मे घनीभूत होने पर होता है। मेघ। **मुहा०—बादलों का फट पड़ना**=ऐसी घोर या भीषण वर्षा जो प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर दे। मेघस्फोट।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—उमड़ना।—गरजना।—घिरना।—चढना।—छटना।—छाना।—फटना।

२ लाक्षणिक अर्थ मे, चारो ओर छाया रहने या मँडरानेवाला तत्त्व या पदार्थ। जैसे—दुःख के बादल, धूएँ का बादल। ३ एक प्रकार का पत्थर। जिस पर बैंगनी रग की बादल की-सी धारियाँ पडी होती है।

बादला—पु० [हिं० पतला ?] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार जो गोटा बुनने या कलाबत्तू बटने और कपडो पर टाँकने के काम आता है। कामदानी का तार।

बादली—स्त्री०=बदली।

बादशाह—पु० [फा०] १ वह जो किसी बडे साम्राज्य का शासक या स्वामी हो। सम्राट्। २ वह जो किसी कला, कार्य, क्षेत्र या वर्ग मे सबमे बहुत बढ-चढकर हो। जैसे—शायरो का बादशाह, झूठो का बादशाह। ३ वह जिसका आचरण या व्यवहार बादशाहो की तरह उच्च, उदार या स्वेच्छाचारपूर्ण हो। जैसे—तबीयत का बादशाह। ४ शतरज का एक मोहरा जो सब मोहरो मे प्रधान होता है और किस्त लगने से पहले केवल एक बार घोडे की चाल चलता है और दौड-धूप से बचा रहता है। इसे केवल राह दी जा सकती है, यह मारा नही जाता। जब इसके चलने के लिए कोई घर नहीं रह जाता, तब खेल की हार मानी जाती है। ५ ताश का एक पत्ता जिस पर बादशाह की तस्वीर बनी रहती है।

बादशाही—वि० [फा०] १ बादशाह से संबंध रखनेवाला। २ बादशाहो की तरह का अर्थात् वैभवपूर्ण। जैसे—बादशाही ठाट। ३ शासन या राज्य-संबंधी।

स्त्री० १ बादशाह का राज्य या शासन। २ बादशाहो का-सा मन-माना आचरण या व्यवहार।

बाद-हवाई—क्रि० वि० [फा० बाद+हवा] फिजूल। व्यर्थ।

वि० १ (काम या बात) जिसका कोई सिर-पैर न हो। आधार, तत्त्व, सार आदि से बिलकुल रहित। जैसे—तुम तो यों ही बाद-हवाई बातें किया करते हो।

बादहि*—अव्य० [हिं० बाद=व्यर्थ] व्यर्थ ही।

बादाम—पु० [फा०] १ मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिमी एशिया मे अधिकता से और पश्चिमी भारत (काश्मीर और पंजाब आदि) मे कहीं कहीं होता है। २ उक्त वृक्ष का फल जो मेवो मे गिना जाता है और जिसकी गिरी पौष्टिक होती है।

बादामा—पु० [फा० बादाम] १ एक प्रकार का रेशमी कपडा। २ मुसलमान फकीरो के पहनने की एक प्रकार की गुदडी।

बादामी—वि० [फा० बादाम+ई (प्रत्य०)] १ बादाम के ऊपरी कठोर छिलके के रग का। २ बादाम के आकार-प्रकार का। लबो-तरा। गोलाकार। जैसे—बादामी आँख, बादामी मोती।

पु० १ बादाम के छिलके की तरह का ऐसा लाल रग जिसमे कुछ पीलापन भी मिला हो। २ एक प्रकार का धान। ३. एक प्रकार की लबोतरी गोलाकार डिबिया जिसमे स्त्रियाँ गहने आदि रखती हैं। ४ बादशाही महलों मे ऐसा हिजडा जिसकी इंद्रिय बहुत ही छोटी या बादाम की तरह होती थी। ५ बादाम के रग का घोडा। ६. एक प्रकार की छोटी चिडिया जो पानी के किनारे रहती है और मछलियाँ खाती है। किलकिला।

बादि—अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फिजूल। निष्फल।

पु० [सं० वाजिन्] घोडा। उदा०—बादि मेलि कै खेल पसारा।—जायसी।

बादित—भू० कृ०=वादित (बजाया हुआ)।

बादित्य—पु०=वादित्य।

बादिया—पु० [देश०] १. लोहारो का पेच बनाने का एक औजार। २ एक प्रकार का कटोरा।

बादिहि—अव्य० [हिं० बाद+ही] व्यर्थ ही। उदा०—जनम तौ बादिहि गयौ सिराई।—सूर।

बादी—वि० [फा० बाद=हवा से] १ वात संबंधी। वायु-संबंधी। २ शरीर के वायु सम्बन्धी विकार के कारण होनेवाला। जैसे—बादी बवासीर। ३. शरीर मे वात या वायु का विकार उत्पन्न करने-वाला। जैसे—मटर बहुत बादी होता है।

स्त्री० शरीर की वायु के बिगडने के कारण होनेवाला प्रकोप।
स्त्री० [देश०] लोहारो का वह औजार जिससे वे लोहे पर सिकली करते है।
वि०, पु०†=वादी।
वादीगर—पु०=बाजीगर।
वादी-बवासीर—स्त्री० [हि०] बवासीर के दो भेदो मे से एक जिसमे मस्सो मे से खून नही निकलता। (खूनी बवासीर से भिन्न)
बादुर—पु० [हि० गादुर] चमगादड।
बादूना—पु० [देश०] हलवाइयो का एक उपकरण जो घेवर नाम की मिठाई बनाने के काम आता है।
बाध—पु० [स०√बाध् (रोकना)+घञ्] [वि० बाध्य, भाव० बाघता, कर्ता बाधक] १ अडचन। बाधा। २ कठिनता। दिक्कत। मुश्किल। ३ साहित्य मे किसी कथन या प्रतिपादन मे आनेवाली वह असगति या कठिनता जो उसके अर्थ, आशय या वाक्य-रचना मे तर्क-सगत सम्बन्ध के अभाव के कारण स्पष्ट दिखाई देती है। जैसे—जहाँ वाच्यार्थ ग्रहण करने मे अर्थ की बाधा हो वहाँ लक्ष्यार्थ ग्रहण करना चाहिए। ४. तर्क या न्याय मे वह पक्ष जिसमे साध्य का अभाव-सा दिखाई देता हो। ५ आज कल किसी प्रकार की उन्नति, प्रगति आदि के मार्ग मे किसी विशिष्ट उद्देश्य से खडी की जानेवाली वह रुकावट जिसे पार करने के लिए विशिष्ट कार्यक्षमता योग्यता, स्थिति आदि दिखानी पडती हो। जैसे—बडी बडी सरकारी नौकरियो मे कर्मचारियों को समय समय पर कई बाध पार करने पडते हैं। (बार, उक्त सभी अर्थों मे) ६ कष्ट। पीडा।
पु० [स० बद्ध] [स्त्री० बाधी] मूँज की रस्सी जो प्राय साधारण चारपाइयाँ बुनने के काम आती है।
बाधक—वि० [स० बाध् (रोकना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० बाधिका, भाव० बाधकता] १ बाधा के रूप मे होनेवाला। २ बाधा अर्थात् विघ्न उत्पन्न करनेवाला। ३ किसी काम मे अडचन डालनेवाला। ४. ऐसा कष्टदायक जो कुछ हानिकारक भी हो।
पु० स्त्रियो का एक रोग जिसमे उन्हे सतति नही होती या सतति होने मे बडी पीडा या कठिनता होती है।
बाधकता—स्त्री० [स० बाधक+तल्+टाप्] १. बाधक होने की अवस्था या भाव। २ बाधा।
बाधण—पु०=बढना। उदा०—बाधण लागा बधाइहार।—प्रिथीराज। स०=बाधना।
बाधन—पु० [स०√बाध् (रोकना)]+ल्युट्—अन] [वि० बाधित बाधनीय, बाध्य] १ बाधा या विघ्न उत्पन्न करने या रुकावट डालने की क्रिया या भाव। २ कष्ट देना। पीडित करना। ३. किसी अनुचित या निंदनीय काम के सबध मे होनेवाली मनाही। ४. दे० 'अभिनिषेध'।
बाधना—स० [स० बाधन] १ बाधा डालना। रुकावट या विघ्न डालना। २ कष्ट देना पीडित करना।
स्त्री० बाधा। उदा०—नाम रूप ईश की बाधना।—निराला।
†स० [स० वर्द्धन] बढाना।
†अ०=बढ़ना।
बाधयिता—पु० [स०√बाध् (रोकना)+णिच्+तृच्] वह जो दूसरो के काम या मार्ग में बाधाएँ खडी करता हो।
बाधा—स्त्री० [स०√बाध्+अ+टाप्] १. वह बात या स्थिति जो किसी को आगे बढने अथवा कोई काम सपादित करने मे रोकती है। उन्नति या प्रगति मे बाधक होनेवाला तत्त्व। (आब्स्टैकल)
क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पडना।—पहुँचना।
२ कष्ट। सकट। ३ डर। भय। उदा०—कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा।—तुलसी। ४. भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाला कोई भौतिक या शारीरिक उपद्रव या कष्ट। जैसे—लोग कहते हैं कि उसे रोग नही है, कोई बाधा है।
†पु० [स० वृद्धि] १. बढती। वृद्धि। २ मुनाफा। लाभ। (पश्चिम)
बाधित—भू० कृ० [स०√बाध्+क्त] १ जिसके मार्ग मे बाधा खडी की गई हो। बाधा से जिसका मार्ग अवरुद्ध हो। २. जो किसी प्रकार की बाधा, बधेज आदि के द्वारा परिमित या सीमित किया गया हो। (बार्ड) जैसे—अवधि-बाधित। ४ भूत-प्रेत आदि की बाधा से ग्रस्त। निषिद्ध ठहराया हुआ। ५ दे० 'अभिनिष्ठ'।
बाधिर्य—पु० [स० बधिर+ष्यञ्] =बधिरता (बहरापन)।
बाधी (धिन्)—वि० [स० बाध+इनि, दीर्घ, नलोप] बाधा देनेवाला। बाधक।
बाध्य—वि० [स० बाध् (रोकना)+ण्यत्] [भाव० बाध्यता] १ जिस पर कोई बाधा या बाधक तत्त्व लगा हो या लगाया गया हो। २ जो आज्ञा, नियम, मनोवेग, परिस्थिति आदि से कुछ करने मे विवश हो। मजबूर।
बाध्य-रेता (तस्)—पु० [स० ब० स०] क्लीव। नपुसक।
बान—पु० [स० बाण] १ बाण। तीर। २ उक्त के आकार की एक प्रकार की अतिशबाजी जो उडकर आकाश मे जाती और वहाँ फुल-झडियाँ छोडती है। ३ नदी, समुद्र आदि मे उठनेवाली ऊँची लहर। ४ वह छोटा डडा जिसके दोनो सिरो पर गोलाकार लट्टू लगे होते हैं और जिससे धुनकी (कमान) की ताँत को झटका देकर धुनिए रुई धुनते हैं।
पु० [स० वर्ण] १ रग। वर्ण। २ आभा। काति। चमक।
स्त्री० [हि० बनना] १. ऐसा अभ्यास या आदत जो बनते बनते स्वभाव का अग बन गई हो। टेव। उदा०—होली के दिन मान न करिए, लाडली, कौन तिहारी बान। (होली)
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।—लगना।
२. रचना-प्रकार। बनावट।
पु० [देश०] १ जडहन (धान) रोपने के समय उतनी पेड़ियाँ जितनी एक साथ एक थान मे रोपी जाती है। जडहन के खेत मे रोपी हुई धान की जूरी।
क्रि० प्र०—बैठना।—रोपना।
२. अफगानिस्तान से असम प्रदेश तक और प्राय हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।
†पु० [हि० बाध] खाट बुनने की मूँज की रस्सी। बाध। उदा०—

सोने की वह नार कहावै बिना कसौटी बान दिखावे। (खाट या चारपाई की पहेली)
†पु०=बाना (वेष)।
प्रत्य० [फा०] देख-रेख या रखवाली करनेवाला। रक्षक। जैसे—दरबान, निगहबान।
बानइत†—पुं०=बानैत।
बानक—पु० [स० वर्ण, हिं० बानक] १ भेस। वेष। २ सुन्दर बनावट या रूप। सज-धज। सजावट। उदा०—या बानकी बट बानिक (बानक) या बन ही बनि आवै।—नन्ददास। ३ ढग। तरीका। उदा०—जोग रत्नाकर मे साँस घूँटि बूड़ै, कौन ऊधो हम सूधो यह बानक बिचार चुकी।—रत्नाकर। ४ पीले या सफेद रंग का एक प्रकार का रेशम।
पु० [हिं० बनना] किसी घटना के घटित होने के लिए उपयुक्त परिस्थिति या सयोग।
मुहा०—बानक बनना या बैठना=(क) किसी काम या बात के लिए बहुत ही उपयुक्त सयोग या सुयोग उपस्थित होना। उदा०—हम पतित तुम पतितपावन दोऊ बानक बने।—तुलसी। (ख) मेल या सगति बैठना।
बानगी—स्त्री० [सं० वर्ण, हिं० बाना] १. वह अश, अवयव या भाग जो आकार-प्रकार रूप-रग स्थिति आदि की दृष्टि से किसी राशि, वर्ग या समूह का परिचायक, प्रतीक और प्रतिनिधि होता है। (सैम्पुल) जैसे—गेहूँ (जौ या चावल) की बानगी देखकर सौदा करना चाहिए। २. दे० 'नमूना'।
बानना†—स०[हिं०बाना] १ किसी प्रकार या बात का बाना ग्रहण अथवा धारण करना। २ किसी काम या बात का उपक्रम करना। ठानना। उदा०—दिन उठि विषय-बासना बानत।—सूर।
स०=बनाना। उदा०—कदम तीर तैं मोहि बुलायो गढि गढि बातें बानति।—सूर।
बानबे—वि०[स० द्विनवति, प्रा० बाणवइ] जो गिनती मे नव्वे से दो अधिक हो। दो ऊपर नव्वे।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९२।
बानर—पुं०[स० वानर] [स्त्री० बानरी] बदर।
बानवर—पु०[?] बत्तखो की जाति की काले रग की एक प्रकार की बडी चिड़िया जो लगभग तीन फुट की होती है। साँप जैसी लम्बी और पतली गरदन के कारण इसे 'नागिन' भी कहते है।
बाना—पु०[स० वर्ण] १ पहनावा। पोशाक। २ विशेषत वह पहनावा जो वीर लोग पहनकर रण-क्षेत्र मे जाते थे। जैसे—केसरिया बाना। ३ कोई विशिष्ट प्रकार का वेष-विन्यास। भेस। उदा०—सोना पहिरि लजावै बाना।—कबीर। ४ वह स्थिति जो किसी को उसके पद, मर्यादा आदि के कारण प्राप्त होती है। (पोजीशन) जैसे—महाराज को अपने बाने की लाज रखने के लिए बहुत बडा इनाम देना पडा। ५ वह कार्य या धर्म जो किसी विशिष्ट स्थिति मे अगीकृत या गृहीत किया गया हो। अपनाई हुई चाल या रीति। उदा०—ह्वै है प्राणविहीन देखि दसरथ को बानो।—दीनदयाल गिरि।
मुहा०—बाना बाँधना=किसी प्रकार का उत्तरदायित्व, कार्य का भार, चाल या परिपाटी अपनाना या ग्रहण करना।
६. व्यापारिक क्षेत्र में, कुछ ऐसी विशिष्ट वस्तुओ का वर्ग या समूह जिनका क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—बनारसी बाना, विसात बाना।
पुं०[स० वयन=बुनना] १ बुनावट। बुनन। बुनाई। २ कपड़ो की वह बुनावट जो चौडाई के बल मे समानान्तर होती है। भरनी। (ताने से भिन्न)
विशेष—कपड़े की लबाई के बल मे लगे हुए सूत 'ताना' और चौड़ाई के बल मे लगे हुए सूत 'बाना' कहलाते हैं।
३ एक प्रकार का बटा हुआ महीन रेशम जिससे कुछ लोग गुड्डी या पतंग उड़ाते हैं। ४ खेत मे एक बार अथवा पहली बार होनेवाली जोताई।
पु०[स० बाण] १. एक प्रकार का हथियार जो तीन या साढे तीन हाथ लबा होता है। २ भाले या साँग की तरह का एक हथियार।
स०[सं० व्यापन] ऐसी चीज का अगला गोलाकार अग, छेद या मुँह फैलाना जो साधारणत. बद रहता या कम खुलता हो। जैसे—मुँह बाना।
उदा०—दिखरायो मुख बाई।—सूर।
मुहा०—(किसी वस्तु के लिए) मुँह बाना=पाने या लेने के लिए बहुत ही आतुर या लालायित होना। जैसे—तुम तो हर चीज के लिए मुँह बाये रहते हो।
†स० [स० वादन]=बजाना। उदा०—रास कइ यह बमली बाई।—नरपति नाल्ह।
†स० [हिं० बाहना] बालो मे कघी करना।
बानात—स्त्री०=बनात (कपडा)।
बानावरी—स्त्री०[हिं० बाण+फा० आवरी (प्रत्य०)] बाण चलाने की विद्या या ढंग।
बानि—स्त्री०[स० वर्ण, हिं० बाना] १ वर्ण। रग। २ बाना। भेस। वेष। ३ सुन्दर और सजीली बनावट या वेष। उदा०—कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहि बिसरति वह बानि।—सूर। ४. आभा। काति। चमक।
अव्य० तरह या प्रकार से। भाँति। उदा०—अन्रित बानि कपूर सुबासू।—जायसी।
†स्त्री०=वाणी (वचन)।
†स्त्री०=बान (आदत, टेव)।
बानिक—पु०=बानक।
†पु०=वणिक्।
बानिज—पु०=वाणिज्य।
बानिन—स्त्री०[हिं० बनी=बनिया] बनिया जाति की या बनिये की स्त्री।
बानिया—पु० [स० वणिक्] [स्त्री० बानिन] =बनिया।
बानी—स्त्री०[स० वाणी] १. मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द, बात या वचन। २ दृढ़ता या प्रतिज्ञापूर्वक कही हुई बात। ३ साधु-महात्माओ की उपदेशपूर्ण बात। जैसे—कबीर, दादू या नानक की बानी। ४. सरस्वती। मनौती। मन्नत। ५ सरस्वती। ६ दे० 'वाणी'।
स्त्री०[स० बाण] बाना नामक हथियार।
स्त्री०[स० वर्ण] १. रग। वर्ण। २. आभा। काति। चमक। जैसे—बारह बानी का सोना। (दे० 'बारह बानी') उदा०—एक रूप बानी

जाके पानी की रहति है।—सेनापति। ३. एक प्रकार की पीली मिट्टी जिससे पकाये जाने से पहले मिट्टी के बरतन रगे जाते है। कपसा।
वि० [फा०] १. किसी काम या बात की बुनियाद (नीव) डालने या जड जमानेवाला। २. आरमिक या मूल प्रवर्तक।
पु०[सं० वणिक्] बनिया।
बानैत—पु०[हिं० बाना+ऐत (प्रत्य०)] १. वह जो बाना चलाता या फेरता हो। २. वह जो कोई बाना या वेष धारण किये हो।
पु० [हिं० बान=तीर] १. वह जो तीर चलाता हो। तीरदाज। २. योद्धा। सैनिक।
बानो—स्त्री०[फा०] महिला अर्थात् भले घर की स्त्री के नाम के साथ लगाया जानेवाला एक आदरार्थक शब्द। जैसे—जमीला बानो, हुस्न बानो।
बाप—पु०[स० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।
पद—बाप का=पैतृक। बाप-दादा=पूर्व-पुरुष। पूर्वज।
बाप-माँ=सब प्रकार से पालन और रक्षण करनेवाला। जैसे—सरकार बाप-माँ है, जो चाहे सो कहे। बाप रे!=बहुत अधिक आश्चर्य, भय, सकट आदि के समय कहा जानेवाला पद।
मुहा०—(किसी का) बाप-दादा बखानना=किसी के बाप-दादा के दुर्गुण बतलाते हुए उन्हे गालियाँ देना और उनकी निंदा करना। (किसी को) बाप बनाना=(क) बहुत अधिक आदरपूर्वक अपना पूज्य और बडा बनाना। (ख) अपना काम निकालने के लिए खुशामद करते हुए बहुत आदर-सम्मान प्रकट करना।
बापा—पु०=बप्पा।
बापिका—स्त्री०=वापिका (बावली)।
बापी—स्त्री०=वापी (बावली)।
बापु—पु०=बाप।
बापुरा—वि०[?] [स्त्री० बापुरी] १. जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। हीन। २ जिसकी देख-रेख करने, बात पूछने या रक्षा करने-वाला कोई न हो। बेचारा।
बापू—पु०[फा० बाप] १. बाप। पिता। २ पिता तुल्य कोई वृद्ध पुरुष। ३ महात्मा गाधी के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक शब्द।
बापूकारना—स० [हिं० बापू+कारना (प्रत्य०)] 'बापू' कहकर लल-कारना।(राज०)उदा०—वेली तदि बालभद्र बापूकारे।—प्रिथीराज।
बापोती—स्त्री०=बपौती।
बाफ—वि० [फा० बाफ] १. बुननेवाला। जैसे—जर-बाफ, दरी-बाफ। २. बुना हुआ।
†स्त्री०=भाप (वाष्प)।
बाफता—पु०[फा० बाफ्त] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपडा।
बाब—पु०[अ०] १ पुस्तक का कोई विभाग। परिच्छेद। २. मुकदमा। ३. तरह। प्रकार। ४ विषय। ५ अभिप्राय। आशय। मतलब।
बाबची—स्त्री० दे० 'बकुची'।
बाबड़ी†—स्त्री०=बावरी।
बाबत—स्त्री०[अ०] १. सबध। २ विषय।
अव्य० विषय या सबध मे। जैसे—इसकी बाबत आप की क्या राय है?
बाबननेट—स्त्री०[अ० बाबिननेट]=बाबरलेट।
बाबर—पु०[फा०] भारत मे मुगल राज्य की स्थापना करनेवाला एक प्रसिद्ध सम्राट्।
बाबरची—पु०=बावरची।
बाबरलेट—स्त्री०[अ० बाबिननेट] एक प्रकार का जालीदार कपडा जिसमे गोल या छकोने छोटे छोटे छेद होते है।
बाबरी—स्त्री०[हिं० बबर=सिंह] १ सिर के बढाये हुए लबे बाल। २. पट्टा। जुल्फ।
बाबल—पु०=बाबुल (पिता या बाप)। उदा०—बाबल वैद बुलाइया रे पकड दिखाई म्हाँरी बाँह।— मीराँ।
बाबस—वि० [स० विवश] १. लाचार। विवश। २ निराश। हताश।
बाबा—पु०[स० वाप, प्रा० बप्प] १ पिता। २ पितामह। दादा। ३. बडे-बूढो के लिए आदरसूचक सम्बोधन। ४ किसी भले आदमी विशेषतः साधु-महात्माओं के लिए आदरसूचक सम्बोधन। ५. लडको के लिए स्नेहसूचक सम्बोधन।
बाबिल—पु० [बाबुल देश] एशिया खंड का एक अति प्राचीन नगर जो फारस के पश्चिम फरात नदी के किनारे था। (बैबिलोन)
बाबी—स्त्री०[हिं० बाबा] १. साधु स्त्री। सन्यासिनी। २ लडकियो के लिए स्नेह सूचक सम्बोधन।
बाबीहा†—पु०=पपीहा। (राज०)
बाबुना†—पु०=बाबूना।
बाबुल—पु०[हिं० बाबा] १ बाबू। २. पिता। बाप।
†पु०=बाबिल।
बाबू—पु०[हिं० बाप या बाबा] १. एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका प्रयोग पहले राजाओ आदि के सम्बन्धियो के लिए होता था, और अब सभी प्रकार के प्रतिष्ठित क्षत्रियो, वैश्यो आदि के नाम के साथ होता है। जैसे—बाबू महादेवप्रसाद। २. पिता या बडो के लिए सम्बोधन।
बाबूडा†—पु०[हिं० बाबू +डा (प्रत्य०)] 'बाबू' के लिए उपेक्षा सूचक शब्द।
बाबूना—पुं० [देश०] १. पीले रग का एक पक्षी जिसकी आँखो के ऊपर का रग सफेद, चोंच काली और आँखें लाल होती है। २ एक प्रकार का छोटा पौधा जो फारस और यूरोप मे होता है।
बाभन—पु० १. दे० 'ब्राह्मण'। २ दे० 'भूमिहार'।
बाम—पु०[फा०] १. अटारी। कोठा। २ घर मे सबसे ऊपर का कोठा और छत। ३ लबाई, ऊँचाई आदि नापने का एक मान जो साढे तीन हाथ का होता है। पुरसा।
स्त्री०[स० ब्राह्मी] १ एक प्रकार की मछली जो देखने मे साँप सी पतली, गोल और लबी होती है। २. कान मे पहनने का एक गहना।
†स्त्री०=बामा।
बामदेव—पु०=वामदेव।
बामन—पु०=वामन।
बामा—स्त्री०=वामा।
बामी—स्त्री० १. दे० 'बाँबी'। २ दे० 'लाही'।

बायँ—वि०[सं० वाम] १ (निगना) जो अपने ठीक लक्ष्य पर न लगा हो। चूका हुआ।
मुहा०—बायँ देना=(क) किसी के वार करने पर इस प्रकार इधर-उधर हो जाना कि आघात न लगने पावे। (ख) उपेक्षापूर्वक छोड देना। ध्यान न देना। जाने देना। (ग) किसी के चारो ओर चक्कर या फेरा लगाना।
२. दे० 'बायाँ'।
स्त्री०[अनु०] पशुओ आदि के मुँह से निकलनेवाला बाँ बाँ या बायँ बायँ शब्द।
बाय—स्त्री०[सं० वायु] १ वायु। हवा। २. शरीर मे होनेवाला वात का प्रकोप। बाई।
स्त्री०=बावली (वापी)। उदा०—अति अगाध अति औथरौ नदी, कूप, सर, बाय।—विहारी।
बायक—पु०[सं० वाचक] १ वाचक। २ वक्ता। ३ पढनेवाला। पाठक। ४ दूत।
बायकाट—अव्य० [अ०] वहिष्कार। (देखे)
बायद व शायद—अव्य०[फा०] ऐसा अच्छा जैसा होना चाहिए, फिर भी जैसा बहुत कम होता या सिर्फ कभी कभी दिखाई देता हो। जैसे—उसने ऐसे अनोखे करतब दिखाये कि बायद व शायद।
बायन—पु०[सं० वायन] १ वह मिठाई या पकवान आदि जो लोग उत्सव आदि के उपलक्ष मे अपने इष्ट-मित्रो के यहाँ भेजते हैं। बैना। २ उपहार। भेंट। ३ किसी काम या बात का निश्चय करने के लिए उसके सम्बन्ध मे पहले से दिया जानेवाला धन। पेशगी । बयाना।
क्रि० प्र०—देना।—पाना—मिलना—लेना।
मुहा०—बायन देना=किसी के साथ कोई ऐसा व्यवहार करना, जिसका बदला उसे आगे चलकर चुकाना पडे। उदा०—भले भवन अब बायन दीन्हा।—तुलसी।
बायबरंग—स्त्री०=बायबिडंग।
बायबिडंग—स्त्री०[सं० विडंग] एक लता जो हिमालय पर्वत, लका और बरमा मे होती है।
बायबिल—स्त्री०=बाइबिल।
बायबी—वि०[सं० वायवीय] ऐसा अपरिचित या बाहरी जिससे किसी प्रकार की आत्मीयता या सबध न हो।
बायरा—पु०[देश०] कुश्ती का एक पेंच।
बायल—वि०[हिं० बायाँ, बयँ] १ (प्रहार या वार) जो खाली गया या निष्फल हुआ हो।
क्रि० प्र०—जाना।—देना।
२ (जूए का दाँव) जो खाली गया हो और किसी का न आया हो।
क्रि० प्र०—जाना।
बायलर—पु०[अ०] १ वह पात्र जिसमे कोई पदार्थ उबाला या गरम किया जाता है। २ विशेषत इजन का वह बडा आधान जिसमे भरे हुए पानी को गरम करके भाप तैयार की जाती है तथा जिसकी शक्ति से यन्त्र चलाये जाते है।
बायला†— वि०[हिं० बाय+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बायली] शरीर मे वायु का विकार उत्पन्न करने या बढानेवाला । जैसे—किसी को बैंगन बायला किसी को बैंगन पथ्य। (कहा०)
बायली—वि०=बायबी।
बायव्य—पु०=वायव्य।
बायस—पु०=वायस।
बायस्कोप—पु०[अ०] एक प्रसिद्ध यन्त्र जिसके द्वारा परदे पर चल-चित्र दिखलाये जाते हैं।
बायाँ—वि०[सं० वाम] [स्त्री० बाई] १. शरीर के उस पक्ष से सबध रखनेवाला अथवा होनेवाला जो शारीरिक दृष्टि से अपने विपरीत पक्ष से कुछ दुर्बल और कम कर्मशील होता है। 'दाहिना' का विपर्याय। जैसे—बायाँ हाथ, बाई आँख। २. जिस ओर उक्त पक्ष हो, उस ओर मे स्थित होनेवाला।
मुहा०—बायाँ देना=(क) किनारे से निकल जाना। (ख) उपेक्षा पूर्वक छोड देना।
३. मकानो आदि के सबध मे, उनके मुख्य द्वार की ओर पीठ करके खडे होने पर बायें हाथ की ओर का। ४ चित्र के उस पार्श्व से सबध रखनेवाला जिस ओर द्रष्टा का बायाँ हाथ हो (चित्र का वस्तुत यह दाहिना पक्ष होता है)। ५ उलटा। 'सीधा' का विपर्याय। ६ प्रतिकूल। विरुद्ध।
पु० तबले के साथ प्राय बाएँ हाथ से बजाया जानेवाला उसका जोड़। डुग्गी।
बायु†—स्त्री०=वायु।
बायें—अव्य० [हिं० बायाँ] १ जिस ओर बायाँ हाथ पडता हो उस ओर। बाईं ओर। बाईं तरफ। २ विपरीत पक्ष मे। ३ प्रतिकूल या विरुद्ध रूप मे। ४ अप्रसन्न और असन्तुष्ट रहकर या होकर।
बारबार—अव्य० [सं० वारवार] अनेक, कई या बहुत बार। पुन पुन।
बार—पु०[सं० द्वार] १ द्वार। दरवाजा। उदा०—हस्ति सिंघली बाँधे बारा।—जायसी। २. आश्रय लेने की जगह। ठौर-ठिकाना। ३. राज-सभा। दरबार।
स्त्री० [सं० वार या वेला?] १ काल। वक्त। समय। २ देर। विलब। उदा०—भइ बडि बार जाइ बलि मैया। —सूर।
क्रि० प्र०—करना। लगाना।—होना।
*पु०[सं० वारि] जल। पानी।
स्त्री०[फा०] १ दफा। मरतबा। जैसे—पहली बार, दूसरी बार।
पद—बार बार=रह-रहकर कुछ देर बाद। कई फिर। फिरफिर। पुन।
पु०[सं० भार से फा०] १ बोझ । भार।
क्रि० प्र०—उठाना।—रखना।—लादना।
२ कही भेजने के लिए गाडी , जहाज आदि पर लादा जानेवाला माल।
मुहा०—बार करना=जहाज पर माल लादना। (लश०)
३ वृक्षो आदि की पैदावार या फसल।
†स्त्री० [सं० वाट] १ किसी स्थान को घेरने के लिए बनाया हुआ घेरा। बाढ। २. किनारा। छोर। सिरा। ३ हथियारो की तेज धार। बाढ। ४ दे० 'बारी'।
†पु०[सं० वाल] बालक। लडका।
पु०=बाल (सिर या शरीर के)।
†स्त्री०=बाला (युवती स्त्री)।

बारका†—अव्य० [हिं० बार+एक] एक दफा। एक बार।
स्त्री०=बैरक।

बारककत—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो साँप का विष दूर करनेवाला माना जाता है।

बारगाह—स्त्री० [फा०] १ ड्योढ़ी। २. खेमा। डेरा। तंबू। ३. राजाओं आदि का दरबार। कचहरी। ४ राजमहल।

बारगी—वि० [फा० बारगाह] लड़ाई का एक ढंग या प्रकार।
पु० [फा०] अश्व। घोड़ा।

बारगीर—वि० [फा०] बोझ ढोनेवाला। भारवाहक।
पु० १ घोड़े के लिए घास, चारा काटकर लाने और साईस की सहायता करनेवाला घसियारा। २ मध्ययुग में, वह सिपाही या सैनिक जो किसी राजा या सरदार के घोड़े पर सवार युद्ध आदि करता था। ३ घोड़ा। ४ ऊँट। ५ बैल।

बारजा—पु० [हिं० बार=द्वार+जा=जगह] १ मकान के सामने के दरवाजे के ऊपर पाटकर बनाया हुआ छज्जा। बरामदा। २. कमरे के आगे का छोटा दालान। ३. छत के ऊपर का कमरा। अटारी। कोठा।

बारण†—पु०=वारण।

बारता†—स्त्री०=वार्ता।

बारतिय—स्त्री० [हिं० बार+तिय] वेश्या।

बारतुंडी—स्त्री० [बं० स०] आल का पेड़।

बारदाना—पु० [फा० बारदान] १. वह चीज जिसमें बोझ विशेषतः व्यापार के सामान बाँधे या रखे जाते हैं। जैसे—खुरजी, बोरा आदि। २. वे टाट आदि जिनमें बाँधकर माल के बड़े-बड़े गट्ठर बाहर भेजे जाते हैं। ३. फौज के खाने-पीने की सामग्री। रसद। ४. टूटी फूटी चीजें या सामान। अंगड़-खंगड़।

बारदार—वि० [फा०] १. जिस पर किसी प्रकार का भार या बोझ हो। २. (वृक्ष) जो फलों से भरा या लदा हो। ३ (स्त्री) जिसे गर्भ हो।

बारन†—पु० [सं० वारण] हाथी।
†पु०=वारण।

बारना—अ० [सं० वारण] १. मना करना। २. बाधा डालना।
स०=बालना (जलाना)।
स०=वारना (निछावर करना)।

बारनिश—स्त्री०=वारनिश।

बार-बँटाई—स्त्री० [फा० बार=बोझ+हिं० बाँटना] दाये जाने से पहले कटी हुई फसल का होनेवाला बँटवारा।

बार-वधू—स्त्री० [सं० वारवधू] वेश्या।

बार-वधूटी—स्त्री० [सं० वारवधूटी] वेश्या।

बार-बरदार—वि० [फा०] [भाव० बारबरदारी] भार उठानेवाला। बोझ ढोनेवाला।

बार-बरदारी—स्त्री० [फा०] १. माल या सामान ढोने की क्रिया या भाव। २. उक्त के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।

बारमुखी—स्त्री० [सं० वारमुख्या] वेश्या।

बार-रुकाई—स्त्री० [हिं० बार=द्वार+रोकना] १ विवाह की एक रस्म जिसमे लड़कीवाले के घर की स्त्रियाँ दरवाजे पर वर को रोककर कुछ नेग देती हैं।

बारवा—स्त्री० [देश०] एक रागिनी जिसे कुछ लोग श्री राग की पुत्रवधू मानते हैं।

बारह—वि० [सं० द्वादश; प्रा० बारस; पा० बारस] [वि० बारहवाँ] जो गिनती में दस और दो हो।
पु० दस और दो की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१२।

बारहखड़ी—स्त्री० [सं० द्वादश अक्षरी] १ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों की मात्राएँ व्यंजनों के साथ लगाकर बोलने या लिखने की क्रिया। २. वह [illegible] जिसमें वर्णों के साथ उक्त स्वर लगाकर लिखे रहते हैं।

बारहटा†—स्त्री० [हिं०] १. [illegible] में [illegible] के [illegible] प्रकार [illegible] जो अपने को [illegible] के [illegible] प्रसिद्ध है।

बारहठ—पु० [सं० द्वारहट्ट] राजपूताने में चारणों का एक भेद या वर्ग।

बारहदरी—स्त्री० [हिं० बारह+फा० दर=दरवाजा] किसी इमारत या उद्यान का वह कमरा जिसमें चारों ओर तीन-तीन दरवाजे अर्थात् कुल मिलाकर बारह दरवाजे हों।

बारह पत्थर—पु० [हिं० बारह+पत्थर] १. वे बारह पत्थर जो छावनी की सरहद पर गाड़े जाते थे। २. सैनिक शिविर। छावनी।

बारह बाट—पु० [हिं०] १. इधर-उधर गये हुए बहुत से मार्ग। जैसे—बारहबाट अठारह पंथ। २. नाश या प्रकार का [illegible]। ३ किसी विषय में लोगों के ऐसे परस्पर विरोधी मत या विचार जो एकता, दृढ़ता आदि में बाधक हों।
वि० १. छिन्न-भिन्न। तितर-बितर। २. नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।
मुहा०—बारह बाट करना या घालना=तितर-बितर या छिन्न-भिन्न करना। व्यर्थ इधर-उधर करके नष्ट करना। बारहबाट जाना या होना=(क) तितर-बितर होना। छिन्न-भिन्न होना। (ख) नष्ट-भ्रष्ट होना। बरबाद होना।
३ ऐसा निरर्थक जो घातक भी सिद्ध हो या हो सकता हो।

बारहबान—पु० [सं० द्वादश वर्ण] [वि० बारहबानी] एक प्रकार का खरा और बढ़िया सोना।
पु० [हिं० बारह+बाना] मध्ययुगीन भारत में अच्छे सैनिक के पास रहनेवाले ये बारह हथियार—कटार, कमान, तीर, जमधर, तमंचा, तलवार, बंदूक, बाल्लम, बाँस, बिछुआ और साँग।

बारह-बाना—वि० [हिं०] १ सूर्य के समान चमक-दमकवाला। २ खरा और चोखा (सोना)।

बारह-बानी—वि० [सं० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वन्न] १ सूर्य के समान चमक-दमकवाला। बहुत चमकीला। २ (सोना) बिलकुल खरा, चोखा और बढ़िया। ३. जिसमें कोई खोट, दोष या विकार न हो। निर्मल और स्वच्छ। ४. जिसमें कोई कसर या त्रुटि न हो। ठीक और पक्का।
स्त्री० १ सूर्य की सी चमक। २. आभा। चमक। दीप्ति। ३ बारह बाना सोना।

बारहमासा—पु० [हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरही या विरहिनी के मुँह से कराया गया हो।

बारहमासी—वि० [हिं० बारह+मास] १. बारहों मास होनेवाला।

२. वर्ष के वारहो महीनो मे से अलग अलग प्रत्येक भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—वारह-मासी चित्रावली=ऐसी चित्रावली जिसमे चैत, वैसाख, जेठ आदि महीनो की प्राकृतिक स्थिति और उनके ध्यान अर्थात् कल्पित स्वरूपो के अलग अलग चित्र हो। ३. सब ऋतुओ मे फलने फूलनेवाला। ४ (काम या वात) जो वरावर या सदा हुआ करे।

वारह वफात—पु०[हिं० वारह+अ० वफात] अरवी महीने रवी-उल-अव्वल की वे वारह तिथियाँ, जिनमे मुसलमानो के विश्वास के अनुसार मुहम्मद साहव वीमार रहकर अन्त मे पर-लोकवासी हुए थे।

वारहवाँ—वि०[हिं० वारह] [स्त्री० वारहवी] सख्या मे वारह के स्थान पर पडनेवाला।

वारहसिंगा—पु०[हिं० वारह+सीग] एक प्रकार का वडा हिरन जो तीन चार फुट ऊँचा और सात आठ फुट लवा होता है। नर के सीगो मे कई शाखाएँ निकलती है। इसी से इसे 'वारह सिगा' कहते हैं। झिकार। साल-साँभर।

वारहाँ—वि०[हिं० वारह] जो वारह (अर्थात् वहुत से) लोगो मे सवसे प्रवल हो। जैसे—वारहाँ गुडा, वारहाँ मिस्तरी।

वि० वहादुर। वीर।

वि०=वारहवाँ।

वारहा—अव्य० [फा०] अनेक वार। प्राय । वहुधा।

वारही—स्त्री०=वरही (जन्म से वारहवाँ दिन)।

वारहो—पु०[हिं० वारह] १ किसी मनुष्य के मरने के दिन से वारहवाँ दिन। वारहवाँ। द्वादशाह। २ वरही (जन्म से वारहवाँ दिन)।

वाराँ—वि०[फा०] वरसनेवाला।

पु० वरसनेवाला पानी। वर्षा। मेह।

वारा—वि०[स० वाल] छोटी अवस्थावाला। अल्पवयस्क। 'प्रौढ' या 'वयस्क' का विपर्याय। जैसे—नन्हा वारा वच्चा।

पद—वारे तें*=वाल्यावस्था से ही। छोटे पन से ही।

पु० वच्चा। वालक। लडका।

पु०[हिं० वाढ=ऊँचा किनारा] १ वह कँगनी जो वेलन के सिरे पर लगी रहती है और जिसके फिरने से वेलन फिरता है। २ जते से तार खीचने का काम।

पु०[हिं० वारह] मृतक के वारहवे दिन होनेवाला भोज।

पु०[हिं० वार] वह दूब जो चरवाहा चौपायो को चराने के वदले मे आठवें दिन पाता है।

पु०[?] १ वह आदमी जो कूएँ पर खडा होकर भरकर निकले हुए चरसे या मोट का पानी उलटकर गिराता है। २ वह गीत जो चरस या मोट खीचनेवाला उक्त समय पर गाता है।

वारा जोरी—क्रि० वि०=वर-जोरी (वल-पूर्वक)।

वारात—स्त्री०=वरात।

वाराती—पु०=वराती।

वारादरी—स्त्री०='वारहदरी'।

वारानी—वि०[फा०]वर्षा सवधी। वरसाती।

स्त्री० १ ऐसी भूमि जिसकी सिंचाई केवल वर्षा के जल से होती हो। २. उक्त प्रकार की सिंचाई से अर्थात् वर्षा के जल मे होनेवाली फसल। ३ दे० 'वरसाती' (ओढने का कपडा)।

वाराह†—पु०=वाराह (सूअर)।

वाराही†—स्त्री०=वाराही।

वाराही कद†—स्त्री०=वाराही कद।

वारि†—पु०=वारि।

स्त्री०=वारी।

वारिक—पु०[अ० वैरक] ऐसे वँगलो या मकानो की श्रेणी या समूह जिनमे फौज के सिपाही रहते है। छावनी।

वारिगर—पु०[हिं० वारी+फा० गर] हथियारो पर वाढ या सान रखनेवाला। सिकलीगर।

वारिगह—स्त्री०=वारगाह। उदा०—चिरउर सौहँ वारिगह तानी। —जायसी।

वारिज—पु०=वारिज।

वारिद—पु०=वारिद।

वारिधर—पु०[स० वारिधर] १ वादल। मेघ। २. एक वर्णवृत्त।

वारिधि—पु०=वारिधि।

वारिवाह—पु०[स० वारि+वाह] वादल।

वारिश—स्त्री०[फा०] [वि० वारिशी] १ वर्षा। वृष्टि। २ वर्षा ऋतु। वरसात।

वारिस्टर—पु०=वैरिस्टर।

वारी—स्त्री०[स० अवार] १ किनारा। तट। २ किसी प्रकार के विस्तार का अतिम सिरा। किनारा। हाशिया। ३ खेतो, वगीचो आदि के चारो ओर या किसी पार्श्व मे खडा किया जानेवाला घेरा। वाढ । ४. किसी प्रकार का उठा हुआ किनारा या घेरा। अवँठ। जैसे—कटोरी। या थाली की वारी। ५. किसी प्रकार का पैना किनारा या सिरा। धार। वाढ।

स्त्री०[स० वाटी, वाटिका] १ वह स्थान जहाँ वहुत से पेड लगाये गये हो। जैसे—आम की वारी। २ उपवन। वगीचा। ३ वगीचे का माली। वागवान। उदा०—वारी आइ पुकारै, लिहै सबै कर पूँछ।—जायसी। ४ खेतो वगीचो आदि मे अलग किया हुआ विभाग। क्यारी। ५ घर। मकान। (दे० 'वाडी') ६ खिडकी। झरोखा। ७ जहाजो के ठहरने की जगह। वदरगाह। ८ रास्ते मे विखरे हुए काँटे या झाड-झखाड। (पालकी ढोनेवाले कहार)

पु० हिंदुओ मे दोने, पत्तले आदि वनानेवाली एक जाति।

स्त्री० [फा० वारी] १ थोड़े थोडे समय या रह-रह कर होनेवाले कामो के सवध मे, क्रम से हर वार आनेवाला अवसर या समय। पारी। जैसे—(क)पहले लडके के वाद दूसरे लडके की और दूसरे के वाद तीसरे की वारी आयगी।

क्रि० प्र०—आना।—पडना।—वधना।

२ उक्त प्रकार के क्रम मे, वह आदमी या चीज जिसे नियमत अवसर मिलता हो, जिसे काम करना पडता हो या जिसका उपयोग होता हो। जैसे—आज जिस सिपाही की पहरा देने की वारी है वह वीमार है।

पद—वारी वार, से=कालक्रम मे एक के पीछे एक करके। अपनी वारी आने पर। समय के नियत अतर पर। जैसे—सव लोग एक साथ मत वोलो, वारी वारी से वोलो।

स्त्री० दे० 'वाली'।

वि० हिं० 'बारा' का स्त्री०।
पु० [अ०] ईश्वर। परमात्मा।
बारीक—वि० [फा०] [भाव० बारीकी] १ जिसका तल बहुत पतला हो। बहुत ही थोड़ी मोटाईवाला। महीन। जैसे—बारीक मलमल। २. जिसका घेरा या मोटाई बहुत ही कम हो। पतला। जैसे—बारीक तार, बारीक सूत। ३. अपेक्षाकृत बहुत ही छोटा। जैसे—बारीक अक्षर, बारीक सिलाई। ४. जिसके अणु या कण बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों। जैसे—बारीक आटा। ५ (विचार) जिसमे भावो के बहुत ही सूक्ष्म अन्तर हो, और इसी लिए जो सहसा सबकी समझ मे न आता हो। जैसे—बारीक फरक, बारीक बात। ६ गूढ़। ७. जटिल।
बारीका—पु० [फा० बारीक] चित्रकारी मे, रेखाएँ खीचने की एक तरह की महीन कलम।
बारीकी—स्त्री० [फा०] १. बारीक होने की अवस्था या भाव। सूक्ष्मता।
क्रि० प्र०—निकालना।
२ गूढ़ता। ३. जटिलता।
बारीदार—पु० [हिं० बारी=पारी+फा० दार (प्रत्य०)] [स्त्री० बारीदारनी, भाव० बारीदारी] पारी पारी से पहरा देनेवाले पहरे-दारो मे से हर एक।
बारीश—पु०=बारीश (समुद्र)।
बारुणी—स्त्री०=वारुणी (मदिरा)।
बारुन†—पु० [स० वारण] हाथी। (राज०)
बारू†—पु०=बार (द्वार)। उदा०—मँहि धूँबिअ पाइअ नहिं बारू।—जायसी।
†पु०=बालू।
बारूत†—स्त्री०=बारूद।
बारूद—स्त्री० [सं० वारुद (अग्नि) मे फा०] १ गधक, शोरे, कोयले आदि का वह मिश्रण जो विस्फोटक होता है और आतिशबाजी तथा तोपें, बन्दूकें आदि चलाने के काम आता है।
पद—गोला बारूद—युद्ध मे काम आनेवाली तोपे, बन्दूके, उनके गोले-गोलियाँ तथा अन्य आवश्यक सामग्री।
२ कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो जरा सा सहारा पाकर बहुत भीषण परिणाम उत्पन्न करता या कर सकता हो।
बारूदखाना—पु० [फा० बारूदखान] वह स्थान जहाँ बारूद तैयार किया जाता अथवा सुरक्षित रखा जाता हो।
बारूदी—वि० [फा०] १ बारूद-सबधी। २ जिसमे बारूद हो अथवा रखा या बिछाया गया हो। जैसे—बारूदी सुरग।
बारे—अव्य० [फा०] १. अतत। आखिरकार। २. अस्तु। खैर। ३ चलो, अच्छा हुआ। कुशल है कि। जैसे—मुझे तो बहुत चिंता हो रही थी, बारे आप आ गये। अब काम हो जायगा। उदा०—हर महीने मे कुढाते थे मुझे फूल के दिन। बारे अब की तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रंगीन।
पद—बारे मे=(किसी के) प्रसग, विषय, या सम्बन्ध मे। विषय में। जैसे—उनके बारे मे आपकी क्या राय है?

बारोठा—पु०=बरोठा (द्वार)।
बारोमीटर—पु०=बैरोमीटर।
बार्डर—पु० [अ०] १. छोर। किनारा। २ धोती के किनारे पर की पट्टी। ३ सीमा। हद।
बार्बर—वि० [सं० बर्बर+अण्] १. बर्बर देश मे उत्पन्न। बर्बर देश का। २ बर्बर सम्बन्धी।
पु० [अ०] नाई। हज्जाम।
बार्ह—वि० [स० बर्ह+अण्] १. बर्हि या मोर सम्बन्धी। २ मोर के पख का बना हुआ।
बार्हस्पत्य—वि० [स० बृहस्पति+अण्] बृहस्पति-सम्बन्धी।
पु० १ गणित ज्योतिष मे, साठ सवत्सरो मे से एक। २ नास्तिक भूतवादियों का लोकायत सम्प्रदाय जो गुरु बृहस्पति द्वारा प्रवर्तित माना गया है।
बार्हिण—वि० [स० बर्हिण+अण्] मयूर-सबधी। मोर का।
बालंगा—पु० [फा० बालिंग्] एक ओषधि जिसके बीज जीरे की तरह के होते है। तूत-मलगा।
बाल—पु० [स०√बल् (जीवनदाता)+ण] [स्त्री० बाला] १ वह जो अभी जवान या सयाना न हुआ हो। बच्चा। बालक।
पद—बाल-गोपाल=बाल-बच्चे। सतान। (मगला-भाषित) जैसे—बाल-गोपाल सुखी रहे। (आशीर्वाद) २. वह जिसे समझ न हो। नासमझ। ३. किसी पशु का बच्चा। ४ नेत्रवाला। सुगधवाला।
वि० १ जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ को न पहुँचा हो। २ जिसे अभी यथेष्ठ ज्ञान या समझ न हो। ३. जिसका आरभ, उदय या जन्म हुए अभी अधिक समय न हुआ हो। जैसे—बाल इंदु, बाल रवि।
†स्त्री०=बाला (युवती स्त्री)।
पु० [स०] १. जीव-जतुओ के शरीर मे, चमडे मे से ऊपर निकले हुए वे सूक्ष्म ततु जो रोयो से कुछ अधिक बडे और मोटे होते तथा प्राय बढते रहते है। केश। जैसे—दाढी या मूँछ के बाल, सिर के बाल।
क्रि० प्र०—गिरना।—झडना।—निकलना।
पद—बाल बराबर या बाल भर=(क) बहुत ही कम या थोडा। (ख) बहुत ही पतला, महीन या सूक्ष्म।
मुहा०—नहाते समय भी बाल तक न खसना=नाम को भी किसी प्रकार का आघात न लगना या कष्ट अथवा हानि न होना। उदा०—नित उठि यहीं मनावति देवन, न्हात खसै जनि बार।—सूर। **बाल न बाँकना**=दे० नीचे 'बाल बाँका न होना'। उदा०—परै पहार न बाँकै बारू।—जायसी। (किसी काम मे) **बाल पकाना**=(कोई काम करते करते) बुड्ढे हो जाना। बहुत दिनो का अनुभव प्राप्त करना। जैसे—मैंने भी सरकारी नौकरी मे ही बाल पकाये है। **बाल बनवाना**=हजामत बनवाना। **बाल बनाना**=हजामत बनाना। **बाल बाँका न होना**=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना। जैसे—निश्चिंत रहो, तुम्हारा बाल तक (या भी) बाँका न होगा। (दुर्घटना आदि से) **बाल बाल बचना**=बहुत ही थोडे अन्तर या कसर के कारण दुर्घटना, सकट आदि से बच जाना या सुरक्षित रह जाना। जैसे—मोटर का धक्का लगने (या मरने) से बाल बाल बचना।

२ कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजो के तल में आघात आदि से चटकने दरकने, फटने आदि के कारण पडनेवाली वह बहुत पतली धारी या रेखा जो देखने मे शरीर के वाल की तरह होती है। जैसे—इस मोती (या शीशे) मे वाल आ गया है।
क्रि० प्र०—आना।—पडना।
पु० [स० वल्ल या वालु=तीन रत्ती की तौल] किसी चीज का बहुत थोडा अश।
मुहा०—वाल भर भी फरक न होना=नाममात्र का भी अन्तर न होना।
स्त्री० कुछ अनाजो के पौधो के डठल का वह अग्र भाग जिसके चारो ओर दाने निकले या लगे रहते हैं। जैसे—जौ या गेहूँ की वाल।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।
पु० [अ० वॉल] १ गेद। २ युरोपीय ढग का नाच।

वालक—पु० [स० वाल+कन्] [स्त्री० वालिका, भाव० वालकता] १ वह जिसकी अवस्था अभी अभी १५-१६ वर्ष से अधिक न हो। वच्चा। लडका। २. पुत्र। वेटा। ३ वह जो किसी वात या विषय मे अनजान या अवोध हो। ४ हाथी का वच्चा। उदा०—वालक मृणालिन ज्यौ तोरि डारै सव काल, कठिन कराल त्यौ अकाल दीह दुखकी।—केशव। ५ घोडे का वच्चा। वछेडा। ६ केश। वाल। ७ हाथी की दुम। ८ कगन। ९ अँगूठा। १० नेत्र-वाला। गन्ध-वाला।

वालकता—स्त्री० [स० वालक+तल्+टाप्] वालक होने की अवस्था या भाव।

वालकताई†—स्त्री० [स० वालकता+हिं० ई (प्रत्य०)] १ वाल्यावस्था, लडकपन। २. वालको की तरह ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे समझदारी कुछ भी न हो या वहुत कम हो। लडकपन।

वालकपन—पु० [स० वालक+हिं० पन (प्रत्य०)] १. वालक होने की अवस्था या भाव। २ वालको की तरह की ना-समझी।

वालक-प्रिया†—स्त्री० [स० प० त०] १ केला। २. इद्रवारुणी।

वालकांड—पु० [स० मध्य० स०] रामचरित्र मानस का प्रथम प्रकरण जिसमे मुख्य रूप से भगवान रामचन्द्र जी की वाललीला का वर्णन है।

वाल-काल—पु० [स० प० त०] वालक होने की अवस्था। वाल्यावस्था। वचपन।

वालकी—स्त्री० [स० वालक+ङीप्] १ कन्या। लडकी। २. पुत्री। वेटी।

वालकृमि—पु० [सं० प० त०] जूँ।

वाल-कृष्ण—पु० [सं० कर्म० स०] वहुत छोटी या वाल्यावस्था के कृष्ण।

वाल-केलि—स्त्री० [स० प० त०] १. लडको का खेल। खिलवाड। २ ऐसा काम जिसमे वहुत ही थोडी वुद्धि या शक्ति लगती हो।

वाल-क्रीडा—स्त्री० [स० प० त०] वे खेल आदि जो छोटे छोटे वच्चे किया करते है। लडको के खेल और काम।

वालखडी—पु० [?] ऐसा हाथी जिसमे कोई दोप हो।

वालखिल्य—पु० [स०] पुराणानुसार ब्रह्मा के रोएँ से उत्पन्न ऋषियो का एक वर्ग जिसका प्रत्येक ऋषि डीलडौल मे अँगूठे के वरावर कहा गया है।

वालखोरा—पु० [फा०] एक प्रकार का रोग जिसमे सिर के वाल झडने लगते है।

वाल-गोपाल—पु० [स० कर्म० स०] १ वाल्यावस्था के कृष्ण। २ गृहस्थ के वाल-वच्चे।

वाल-गोविंद—पु० [स० कर्म० स०] कृष्ण का वालक-स्वरूप। वाल-कृष्ण।

वाल-ग्रह—पु० [स० प० त०] ऐसे नौ ग्रहो का एक वर्ग जो छोटे वच्चो के लिए घातक माने गये हैं। यथा—स्कंद, स्कदापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, गधपूतना, शीतपूतना, मुख-मडिका, और नैगमेय।

वाल-चंद्रिका—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वालचर—पु० [स० कर्म० स०] १ वह वालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाएँ करने की शिक्षा मिली हो। (वॉय स्काउट) २ उक्त प्रकार के वालको का दल या सघटन।

वालचर्य—पु० [स० प० त०] १. वालको की चर्या। वाल-क्रीडा। २ [व० स०] कार्तिकेय।

वालछड़—स्त्री० [देश०] जटामासी।

वालटी—स्त्री० [पुर्त० वॉल्डे] डोल की तरह का पानी रखने का एक प्रसिद्ध पात्र।

वालटू—पु० [अ० वॉल्ट] लोहे आदि का वह पेचदार छल्ला जो एक तरह की पेचदार कील पर चढाया तथा कसा जाता है।

वाल-तंत्र—पु० [स० प०त०] वालको के पालन पोपण की विद्या। कौमार भृत्य।

वाल-तनय—पु० [स० व०स०] खैर का पेड।

वालती†—स्त्री० [स० वाल] कन्या। कुमारी। उदा०—ज्यो नवजोवन पाइ लसति गुनवती वालती।—नददास।

वाल-तोड—पु० [हिं० वाल+तोडना] एक तरह का फोडा जो शरीर पर किसी वाल के टूटने या तोडने विशेपत जड से उखडने या उखाडने के फलस्वरूप होता है।

वालद—पु० [स० वलिवर्द] वैल। उदा०—दास कवीर घर वालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द।—मीराँ।

वालदार सुंडा†—पु० दे० 'भालू सुडा'।

वालधि—पु० [स० वाल√धा+कि] दुम। पूँछ।

वालधी—स्त्री० [स० वालधि] दुम। पूँछ।

वालना—स० [स० वालन] जलाना।

वाल-पक्व—वि० [स० कर्म० स०] १. जो वाल्य अथवा प्रारम्भिक अवस्था मे ही पक्व हो गया हो। २ समय से कुछ पहले पका हुआ।

वाल-पत्र—पु० [स० व० स०] १ खैर का पेड। २ जवासा।

वालपन—पु० [स० वाल+हिं० पन (प्रत्य०)] १ वालक होने की अवस्था या भाव। २. वालको का सा आचरण-व्यवहार। लड़कपन। ३ वालको की सी मूर्खता।

वाल-पुष्पी—स्त्री० [स० व० स०+ङीप्] जूही।

वाल-वच्चे—पु० [स० वाल+हिं० वच्चा] लडके-वाले। संतान। औलाद।

वाल-वुद्धि—स्त्री० [स० प० त०] वालको की-सी वुद्धि। छोटी वुद्धि। थोडी अक्ल।
वि० जिसकी वुद्धि वालको की-सी हो।

बाल-बोध—पुं० [सं० ब० स०] देवनागरी लिपि। (मध्य-प्रदेश)

बाल-ब्रह्मचारी (रिन्)—पुं० [सं० कर्म० स०] [स्त्री० बाल-ब्रह्मचारिणी] वह व्यक्ति जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य-व्रत धारण कर रखा हो और पूर्ण रूप से उसका पालन किया हो।

बाल-भोग—पुं० [सं० ष० त०] वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे सवेरे रखा जाता है।

बाल-भैषज्य—पुं० [सं० ष० त०] रसांजन।

बाल-भोज्य—पुं० [सं० ष० त०] चना।
वि० बालकों या लड़कों के लिए उपयुक्त (खाद्य पदार्थ)।

बालम—पुं० [सं० वल्लभ] १ स्त्री का पति। स्वामी। २ युवती या स्त्री की दृष्टि से वह व्यक्ति जिससे वह प्रणय करती हो। प्रेमी। प्रियतम।

बालम-खीरा—पुं० [हिं०] १ एक प्रकार का बढ़िया मोटा खीरा।

बालम चावल—पुं० [हिं०] १ एक प्रकार का धान। २. उक्त धान का चावल।

बाल-मुकुंद—पुं० [सं० कर्म० स०] १ बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण। बालकृष्ण। २. श्री कृष्ण की शिशुकाल की वह मूर्ति जिसमें वे घुटनों के बल चलते हुए दिखाये जाते हैं।

बाल-मूलक—पुं० [सं० कर्म० स०] छोटी और कच्ची मूली, जो वैद्यक में कटु, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण तथा श्वास, अर्श, क्षय और नेत्ररोग आदि की नाशक, पाचक एवं बलवर्द्धक मानी गई है।

बालरखाई—पुं० [हिं० बाल (अनाज की)+रखना] १. खेतों में बना हुआ वह ऊँचा चबूतरा जिस पर बैठकर फसलें की देख-भाल की जाती है। २ खेत की फसल की रखवाली करने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

बाल-रस—पुं० [सं० मध्य० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का औषध जो पारे, गंधक और सोनामक्खी से बनाया जाता है और बालकों के पुराने ज्वर, खाँसी, शूल आदि का नाशक कहा गया है।

बालराज—पुं० [सं० बाल√राज् (शोभित होना)+अच्] वैदूर्यमणि।

बाल-लीला—स्त्री० [सं० ष० त०] बालकों की क्रीड़ाएँ।

बालवाँ—पुं०=बालमखीरा। उदा०—औ हिंदुआना बालवाँ खीरा।—जायसी।

बाल-विधवा—वि० [सं० कर्म० स०] (स्त्री) जो बाल्यावस्था में विधवा हो गई हो।

बाल-विधु—पुं० [सं० कर्म० स०] अमावास्या के उपरान्त निकलनेवाला नया चन्द्रमा। शुक्लपक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा।

बाल-विवाह—पुं० [सं० ष० त०] वह विवाह जो बाल्यावस्था में हुआ हो। छोटी अवस्था में होनेवाला विवाह।

बाल-व्यंजन—पुं० [सं० ष० त०] चामर। चँवर।

बालव्रत—पुं० [सं० ब० स०] मंजुश्री या मंजुघोष का एक नाम।

बालसाँगड़ा—पुं० [सं० बाल-शृंखला] कुश्ती का एक पेंच।

बाल-साहित्य—पुं० [सं० मध्य० स०] ऐसी पुस्तकें आदि जो मुख्यतः बालकों का मनोविनोद करने के साथ ही उन्हें अध्ययन की ओर प्रवृत्त करनेवाली भी हों। (जुवेनाइल लिटरेचर)

बाल-सूर्य—पुं० [सं० कर्म० स०] १. उदयकाल के सूर्य। प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य। २. वैदूर्य मणि।

बाला—स्त्री० [सं० बाल+टाप्] १. बारह वर्ष से सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २. जवान स्त्री। युवती। ३. औरत। पत्नी। भार्या। ४. औरत। स्त्री। ५. बहुत छोटी लड़की। बच्ची। ६. कन्या। पुत्री। ७. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या। ८. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन रगण और एक गुरु होता है। ९. एक वर्ष की अवस्था की गौ। १०. [बाल+अच्+टाप्] नारियल। ११. हलदी। १२. एक प्रकार की चमेली। १३. घी कुआर। घृतकुमारी। १४. सुगंधबाला। १५. बेर का पेड़। १६. चीनी ककड़ी। १७. मोइया नामक वृक्ष। १८. नीली कट-सरैया। १९. इलायची।
वि० [सं० बाल+बालक] १. बालकों के समान अनजान और सीधा-सादा। निश्छल और निष्कपट।
पद—बाला-भोला=बहुत ही सीधा-सादा। सरल प्रकृति का।
२. बच्चों की प्रकृति का। जैसे—सिर आगा, मुँह बाला। (क्व०)
पुं० [सं० वलय] हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा। (पूरब)
पुं० [?] एक प्रकार का कीड़ा जो गेहूँ की फसल के लिए बहुत घातक होता है।
वि० [फा०] १. जो सबसे ऊँचा या ऊपर हो। जैसे—तुम्हारा बोल-बाला हो, अर्थात् तुम्हारी बात सबके लिए मान्य हो।
पद—बाला-बाला=(क) इस प्रकार अलग अलग या ऊपर ऊपर जिसमें और लोगों का पता न चले। जैसे—तुमने बाला-बाला सारी कार्रवाई कर ली, और हम लोगों को पता भी न चलने दिया। (ख) अलग से या बाहर बाहर बिना परिचित या सूचित किये। जैसे—वे यहाँ आये भी और बाला-बाला चले भी गये। हम लोगों को पता ही न चला।
२. सबसे अच्छा, बढ़िया या श्रेष्ठ। उदा०—गोरा लाल गेंदा, मोरा बाला जोबन।—दादरा। ३. अलग। पृथक्।
मुहा०—(किसी को) बाला बताना=टाल-मटोल या बहानेबाजी करना।

बालाई—वि० [फा०] १. ऊपर का। ऊपरी। २. वेतन, वृत्ति, व्यापार आदि से होनेवाली आय के अतिरिक्त या उससे भिन्न। ऊपरी। जैसे—बालाई आमदनी।
स्त्री० मलाई।

बालाखाना—पुं० [फा० बाला खान:] १. अट्टालिका। २. मकान का सबसे ऊपरवाला कमरा।

बालाग्र—पुं० [सं०] १ शरीर के बाल का अगला भाग। २. प्राचीन काल का एक परिमाण जो ६४ परमाणु या ८ रज के बराबर कहा गया है।

बालातप—पुं० [सं० बाल-आतप, कर्म० स०] बालसूर्य का ताप। सवेरे की धूप।

बालादवी—स्त्री० [?] टोह लेने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना। उदा०—यह कह (नाजिम) शूर सिंह ने बिदा हो बालादवी के वास्ते चला गया।—देवकीनन्दन खत्री।

बाला-दस्त—वि० [फा०] [भाव० बालादस्ती] १ बलवान। जबर-दस्त। २. प्रधान। मुख्य। ३. श्रेष्ठ। ४. ऊँचा।
बालादस्ती—स्त्री० [फा०] १. जबरदस्ती। बल-प्रयोग। २ प्रधानता। ३. श्रेष्ठता। ४. ऊँचाई। उच्चता।
बालादित्य—पु० [स० बाल-आदित्य, कर्म० स०] बालसूर्य।
बालानशीन—वि० [फा० बालानशीं] १. मान्य। प्रतिष्ठित। २ सबसे अच्छा। जैसे—कम खरच और बालानशीन।
पु० सभापति।
बालापन—पु० [स० बाल+हिं० पन] बाल्यावस्था। बचपन।
बाला-बाला—अव्य० दे० 'बाला' (फा०) के अन्तर्गत पद।
बालामय—पु० [स० बाल-आमय, ष० त०] बच्चो को होनेवाले रोग। बाल-रोग।
बालार्क—पु० [सं० बाल-अर्क, कर्म० स०] १ प्रातःकाल का सूर्य। बाल-सूर्य। २. कन्या राशि मे स्थित सूर्य।
बालि—पु० [स० बल्+इन्, णित्व] किष्किंधा का एक प्रसिद्ध वानर राजा जिसका वध भगवान राम ने किया था।
बालिका—स्त्री० [स० बाला+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व] १. छोटी लडकी। कन्या। २ पुत्री। बेटी। ३ कान मे पहनने की बाली। ४. छोटी इलायची। ५. बालू। रेत।
बालिग—वि० [अ० बालिग] [भाव० बालिगी] (व्यक्ति) जो कानून की दृष्टि से युवावस्था प्राप्त कर चुका हो और फलत जिसे विधिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो गया हो। वयस्क।
बालिनी—स्त्री० [स० बाल+इनि+ङीप्] अश्विनी नक्षत्र का एक नाम।
बालिमा (मन्)—स्त्री० [सं० बाल+इमनिच्] बचपन। बाल्यावस्था।
बालिश—पु० [स०√बाड्+इन्, बाडि√शो+ड, ड—ल] [भाव० बालिश्य] १ बालक। शिशु। २. अबोध या नासमझ व्यक्ति।
वि० अबोध। नासमझ।
पु० [फा०] तकिया। सिरहाना।
बालिश्त—पु० [फा०] कोई चीज नापने मे हाथ के पंजे को भरपूर फैलाने पर अँगूठे की नोक से लेकर कानी उंगली की नोक तक की दूरी, जो लगभग नौ इंच के बराबर मानी जाती है। बित्ता।
बालिश्तिया—वि० [फा० बालिश्त+हिं० इया (प्रत्य०)] बहुत ही छोटा या नाटा।
बालिश्य—पु० [स० बालिश+ष्यञ्] १ बाल्यावस्था। लडकपन। २ बडे हो जाने पर भी छोटे बालको की तरह अबोध और कम समझ होने की अवस्था या भाव। इसकी गणना मानसिक रोगो मे होती है। (एमेन्शिया)
बालिस—वि० [स० बालिश] नासमझ। मूर्ख। उदा०—माही बल बालिसो विरोध रघुनाथ सो।—तुलसी।
बाली (लिन्)—पु० [स० बाल+इनि] किष्किंधा का एक प्रसिद्ध वानर राजा जिसका वध भगवान राम ने किया था।
स्त्री० [स० बालिका] कानो मे पहनने का एक तरह का वृत्ताकार आभूषण।
स्त्री० [देश०] हथौड़े के आकार का कसेरों का एक औजार जिससे वे लोग बरतनों की कोर उभारते हैं।
†स्त्री०=बाल (अनाज की)।
वि० [हिं० 'बाला' का स्त्री० रूप] नया। उदा०—पीव कारन पीली पडी बाली जोबन बाली वेस।—मीराँ।
बाली-कुमार—पु० [स०] अंगद।
बालीसबरा—पु० [बाली?+हिं० सबरा] एक तरह का उपकरण जिससे कसेरे थाली, परात आदि की कोर उभारते हैं।
बालुकी (लुंगी)—स्त्री०=बालुकी।
बालुक—पु० [सं०√बल्+उण्+कन्] १. एलुआ नामक वृक्ष। २. पनियालू।
बालुका—स्त्री० [सं०√बल्+उण्+कन्+टाप्] १. रेत। बालू। २. एक प्रकार का कपूर। ३. ककडी।
बालुका-यंत्र—पु० [म० मध्य० स०] औषध आदि फूंकने का वह यंत्र जिसमे औषध को बालू भरी हाँडी मे रखकर आग से चारो ओर से ढँकते हैं। (वैद्यक)
बालुका-स्वेद—पु० [स० मध्य० स०] बालू से सेंकने पर होनेवाला पसीना।
बालू—पुं० [स० बालुका] पत्थरो का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो रेगिस्तानो तथा नदियो के तटो पर अत्यधिक मात्रा मे पडा रहता है तथा जो चूने, सीमेंट आदि के साथ मिलाकर इमारतों में जोड़ाई के काम आता है।
पद—बालू की भीत=ऐसी चीज जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न किया जा सके।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो दक्षिण भारत और लंका के जलाशयो मे पाई जाती है।
बालूड़ा†—पु० [सं० बाल] बच्चा। बालक।
बालूदानी—स्त्री० [हिं० बालू+फा० दानी] एक प्रकार की झँझरी-दार डिबिया जिसमे लेख आदि की स्याही सुखाने के लिए बालू रखा जाता है।
बालूबुर्द—वि० [हिं० बालू+फा० बुर्द=ले गया] जो नदी के बालू के नीचे दब गया हो।
पु० वह भूमि जिसकी उर्वरा शक्ति नदी की बाढ या बालू पड़ने के कारण नष्ट हो गई हो।
बालूशाही—स्त्री० [हिं० बालू+शाही=अनुरूप] मैदे की बनी हुई एक तरह की प्रसिद्ध मिठाई।
बालूसूअर—पु० [हिं०] एक प्रकार का छोटा सूअर जो नदी तट की रेतीली भूमि मे रहता और प्राय रात के समय निकलकर पेड़ो की जड़ें और मछलियाँ खाता है। कुछ लोग भूल से इसे 'भालू सूअर' भी कहते हैं।
बालेंदु—पु० [स० बाल-इंदु, कर्म० स०] शुक्लपक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा। दूज का चाँद।
बाले-मियाँ—पु०=गाजी-मियाँ (महमूद गजनवी का भाजा)।
बालेय—वि० [स० बाल+ढञ्—एय] १ कोमल। मृदु। २. जो बलि दिए जाने के योग्य हो। ३ जो बालको के लिए लाभदायक या हितकर हो।

पु० १. चावल। २ भात।
वालेष्ट—पु० [स० वाल-इष्ट, ष० त०] वेर।
वालोपचार—पु० [स० वाल-उपचार, ष० त०] वच्चों की चिकित्सा।
वालोपवीत—पु० [स० वाल-उपवीत, ष० त०] १. लँगोटी। २ जनेऊ।
वाल्टी|—स्त्री०=वालटी।
वाल्य—वि० [स० वाल+यत्] १. वालक-संबंधी। २ वालपन का। जैसे—वाल्य अवस्था। ३ वालकों का सा। जैसे—वाल्य-व्यवहार।
पु० १ वाल का भाव। २ वचपन। लड़कपन।
वाल्यावस्था—स्त्री० [स० वाल्य-अवस्था, कर्म० स०] वालक होने की अर्थात् सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था। युवावस्था से पहले की अवस्था। लड़कपन।
वाल्हक—वि० [स० वल्हि+कुक्—अक] वलख देश।
पु० १. वलख देश का निवासी। २. वलख का घोड़ा। ३ केसर। ४ हींग।
वाल्हा|—पु० [स० वल्लभ] प्रियतम। उदा०—(क) वाल्हा मैं वैरागिण हूँगी हो।—मीराँ। (ख) वाल्हा आव हमारे गेहरे।—कबीर।
वाल्हिक—वि०, पु० वाल्हक।
वाल्हीक—वि०, पु० =वाल्हक।
पु०=वाह्लीक।
वाव—पु० [स० वायु] १. वायु। हवा। पवन। २ वात या शारीरिक प्रकोप। वाई। ३. अपान-वायु। पाद।
क्रि० प्र०—निकलना।—सरना।
†पु० दे० 'वाव'।
वावजा|—स्त्री०=वातचीत।
वावजूद—अव्य० [फा० वावुजूद] १. यद्यपि। २. इतना होने पर भी।
वावटा|—पु० [हिं० वाव=हवा] झंडा।
वावड़ी—स्त्री०=वावली (जलाशय)।
वावन—वि० [स० द्वि पचाशत, पा० द्विपण्णासा, प्रा० विपण्णा] जो गिनती में पचास से दो अधिक हो।
पद—वावन तोले पाव रत्ती=हर तरह से ठीक या पूरा।
विशेष—कहते हैं कि मध्ययुग के रसायनिकों का विश्वास था कि सच्चा रसायन वही है जो वावन तोले ताँवे में पाव रत्ती मिलाया जाय तो वह सव सोना हो जाता है। इसी आधार पर यह पद वना है।
वावनवीर=वहुत वड़ा वहादुर या चालाक।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५२।
†पु०=वामन।
वावनवाँ—वि० [हिं० वावन+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० वावनवीं] क्रम, संख्या आदि के विचार से ५२ के स्थान पर पड़नेवाला।
वावना|—वि०=वौना (वामन)।
स०=वाहना (हल चलाना)।
वावनी—स्त्री० [हिं० वावन] १ एक ही तरह की ५२ चीजों का वर्ग या समूह। जैसे—शिवा-वावनी। २ वहुत से लोगों का जमावड़ा या समूह। ३ मध्य-युग में वह वर्ग या समुदाय जो होली के अवसर पर गाने-वजाने आदि की व्यवस्था करता था। ४. ठाकुरों का अनुयायी वर्ग [illegible]। ५. [illegible] पर लिखी [illegible] और [illegible] जाता। [illegible] ५२ [illegible]।
वावभार—स्त्री० [हिं० वाव=वायु+हिं० भार] वायु के प्रकोप के कारण होनेवाला पागलपन। विक्षिप्तता। सनक।
वावर—पु० [फा०] यकीन। विश्वास।
वि०, पु० =वावरा (पागल)।
वावर्ची—पु० [फा०] रसोइया। पाचक।
वावर्चीखाना—पु० [फा० वावर्चीखाना] रसोईघर।
वावरना—अ० [हिं० वाव=वायु+ना (प्रत्य०)] १. शरीर में वायु या वात का प्रकोप उत्पन्न [illegible]। उदा०—[illegible]।—[illegible]। २. दे० '[illegible]'।
वावरी—स्त्री० वावली (जलाशय)।
वि० हिं० 'वावरा' का स्त्री०।
स्त्री० [हिं० वावरा पागल] [illegible]।
वावल—पु० [स० वायु] आँधी। अंधड़। (पश्चिम)
वावला—वि० [स० वातुल; पा० वाउल] वायु के प्रकोप के कारण जिसका मस्तिष्क विकृत हो गया हो, अर्थात् पागल। विक्षिप्त।
वावलापन—पु० [हिं० वावला+पन (प्रत्य०)] पागलपन। विक्षिप्तपन। सनक।
वावली—स्त्री० [हिं० वाव+ली (प्रत्य०)] १ चौड़े मुँह का एक प्रकार का कूआँ या जलाशय जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ वनी हों। उदा०—मरहुँ की प्यास पर वुझाती, मैंने कूप वावली नहीं थी।—कोई शायर। २. ऐसा छोटा तालाव जिसके किनारे सीढ़ियाँ वनी हों। ३ हजामत का एक प्रकार जिसमें माथे से लेकर चोटी के पास तक के वाल चार पाँच अंगुल की चौड़ाई में मूँड़ दिये जाते हैं।
वावाँ|—वि०, पु० वायाँ।
वाशिंदा|—वि० [फा० वाशिन्द.] रहनेवाला।
पु० निवासी।
वावर—पु०=वास (घर)। उदा०—वहुत सुनाई वावर ल्याई।—गोरखनाथ।
वाष्कल—पु० [स०] १ योद्धा। वीर। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. एक उपनिषद। ४ एक दानव।
वाष्प—पु० [स०√वा+प, पुक् आगम] भाप। वाष्प।
वाष्पकल—वि०[स० मध्य० स०] (शब्द) जो आँखों से आँसू वहने के कारण मुँह से स्पष्ट न निकल रहा हो।
वाष्प-दुर्दिन—पु० =वाष्पपूर।
वाष्पपूर—पु० [स० तृ० त०] आँखों से वहनेवाले आँसुओं की धारा।
वाष्प-मोचन—पु० [ष० त०] आँसू वहाना। रोना।
वाष्प-वृष्टि—स्त्री० [स० ष० त०] आँखों से आँसुओं की धारा वहना।
वाष्प-सलिल—पु० [स० ष० त०] अश्रु-जल। आँसू।
वाष्पांवु—पु० [स० वाष्प-अंवु, ष० त०] अश्रु-जल। आँसू।

बाष्पाकुल—वि० [स० वाष्प-आकुल, तृ०, त०] जो रोता-रोता विकल हो रहा हो।

वाष्पी—स्त्री० [स० वाष्प+ङीप्] हिंगुपत्री।

बासतिक—वि० [स० वासतिक] १ वसतऋतु-सबधी। २ वसत ऋतु मे होनेवाला।

बासंती—स्त्री० [स० वासती] १ अडूसा। वासा। २ माधवी लता। ३ दे० 'वासती'।

वि० [हि० वसत] पीले रग का। पीला।

बास—पु० [स० वास] १ रहने की क्रिया या भाव। निवास। २ रहने का स्थान। निवास-स्थान। ३ कपडा। वस्त्र। ४ एक प्रकार का छन्द।

स्त्री० १ गन्ध। बू। महक। २ बहुत ही छोटा या थोडा अश। जैसे—उसमे मल-मनसत की बास तक नही है।

स्त्री० [स० वाशि] १ अग्नि। आग। २ एक प्रकार का अस्त्र। ३. पत्थर, लोहे आदि के टुकडे जो तोप के गोलो मे भरकर फेंके जाते हैं।

†स्त्री०=वासना।

पु० [स० वासर] दिन।

पु० [देश०] एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी लकडी लाल रग की और बहुत मजबूत होती है। विपरसा।

*पु० [स० वसन] वस्त्र। उदा०—मद मद हास वदन बासि (बास) मे दुरावै।—अलबेली अलि।

बासक†—पु० [स० वासुकि] साँप। उदा०—पेट्याँ बासक भेजिया जी।—मीराँ।

†पु०=वासक।

स्त्री० [फा०] जँभाई।

बासक-सज्जा—स्त्री०=वासक-सज्जा (नायिका)।

बासठ—वि० [स० द्विषष्टि, प्रा० द्वासट्ठि वासट्ठि] जो गिनती मे साठ और दो हो। इकतीस का दूना।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६२।

बासठवाँ—वि० [स० द्विषष्ठितम, हि० बासठ+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बासठवी] क्रम या गिनती के विचार से बासठ के स्थान पर पडनेवाला। जैसे—बासठवी वर्ष-गाँठ।

बासदेव†—पु० [स० वाशिदेव] अग्नि। आग। (डिंगल)

पु०=वासुदेव।

बासन†—पु०=बरतन।

बासना—स्त्री० [स० वास] १ गध। महक। २ विशेषत. हल्की गध।

स०=सुगधित करना।

स्त्री०=वासना।

बासफूल—पु० [हि० बास=गध+फूल] १ एक प्रकार का धान। २ उक्त धान का चावल।

बासमती—पु० [हि० बास=महक+मती (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का धान। २ उक्त धान का चावल जो बहुत बढ़िया और सुगधित होता है।

बासर—पु० [स० वासर] १ दिन। २ प्रात-काल। सवेरा। ३ प्रात काल गाये जानेवाले, प्रभाती, भैरवी आदि गीत या भजन।

बासव—पु०=वासव (इन्द्र)।

बासवी—पु० [स० वासवि] अर्जुन। (डि०)

बासवी दिशा—पु० [स० वासवी दिशा] पूर्व दिशा जो इन्द्र की दिशा मानी जाती है।

बाससी—पु० [स० वास] वस्त्र।

बासा—पु० [स० वास=निवास] १ रहने की जगह। निवास-स्थान। २ बसेरा उदा०—मानस पाँख लेहि फिर बासा।—जायसी। ३. वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी-पकाई रसोई, (चावल, दाल, रोटी आदि) खाने को मिलती हो। भोजनालय।

पु० [स० वासक] १ अडूसा। २ एक प्रकार की घास।

पु० [देश०] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

†पु० दे० 'पिया-बाँस'।

पु० [स० वास=कपडा] कपडा। वस्त्र। उदा०—मंद मद हास बदन, बासि मे दुरावै। —अलबेली अलि।

†पु०=बाँसा।

बासिग*—पु०=वासुकि (नाग)।

बासित—भू० कृ०=वासित।

बासिन—पु०=बासा (शिकारी पक्षी)।

बासिष्ठी*—स्त्री० [स० वासिष्ठी] बनास नदी का एक नाम जो वशिष्ठ जी के तप प्रभाव से उत्पन्न मानी गई है।

बासी—वि० [हि० बास=दिन+ई (प्रत्य०)] १ (खाद्य पदार्थ) जो एक या कई दिन पहले का बना हुआ हो। जैसे—बासी रोटी। २ (फल आदि) जो एक या अनेक दिन पहले पेड (या पौधे) मे तोडा गया हो। 'ताजा' का विपर्याय।

विशेष—बासी अन्न मे कुछ बू सी आने लगती है, और बासी फल कुछ मुरझा से जाते हैं।

पद—बासी-तिवासी। (देखे)

३ जो कुछ समय तक रखा या यो ही पडा रहा हो। जैसे—(क) रात का रखा हुआ बासी पानी। (ख) बासी मुँह।

पद—बासी मुँह=बिना कुछ खाये-पीये हुए।

४ सूखा या कुम्हलाया हुआ। जो हरा-भरा न हो। जैसे—बासी फूल।

मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना=बहुत समय बीत जाने पर किसी काम के लिए उत्सुकतापूर्वक प्रयत्न होना।

पु० १ धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट अवसरो पर पहले दिन का बना हुआ बासी भोजन दूसरे दिन खाना।

२ दे० 'बसिऔरा'।

वि०=वासी (निवासी)।

बासी-तिवासी—वि० [हि० बास+तीन+बासी] दो-तीन दिन का रखा हुआ। जो बासी से भी कुछ और अधिक बिगड चुका हो। जैसे—बासी-तिवासी रोटी।

बासु—स्त्री०=बास।

बासुकी—स्त्री०=वासुकि।

बासू—पु०=वासुकि (नाग)।

बासूर—स्त्री० [अ०] बवासीर।

बासौंधी—स्त्री०=बसौंधी (रबडी)।

बाहु-योधी (धिन्)—पु० [सं० बाहु√युध् +णिनि] कुश्ती लड़नेवाला। पहलवान।

बाहुरना—अ०=बहुरना।

बाहुरूप्य—पु०[सं० बहुरूप+ष्यञ्] बहुरूपता।

बाहुल—पु०[सं० बहुल+अण्] १ युद्ध के समय हाथ मे पहनने का एक उपकरण जिससे हाथ की रक्षा होती थी। दस्ताना। २ कार्तिक मास। ३ अग्नि। आग।

बाहुल-ग्रीव—पु०[सं० ब० स०] मोर।

बाहुल्य—पु० [सं० बहुल+ष्यञ्] बहुल होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बाहु-विस्फोट—पु० [सं० ष० त०] ताल ठोकना।

बाहु-शाली (लिन्)—पु० [सं० बाहु√शाल्+णिनि] १. शिव। २ भीम। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. एक दानव।

बाहुशूल—पु० [सं० ष० त०] बाँह मे होनेवाला एक प्रकार का वायु रोग जिसमे बहुत पीड़ा होती है।

बाहु-श्रुत्य—पु० [सं० बहुश्रुत+ष्यञ्] बहुश्रुत होने की अवस्था या भाव। बहुत सी बातो को सुनकर प्राप्त की हुई जानकारी।

बाहु-संभव—पु० [सं० ब० स०] क्षत्रिय, जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की बाँह से मानी जाती है।

बाहु-हजारा—पु०=सहस्रबाहु।

बाहू—स्त्री०=बाहु।

बाह्मन—पु०=ब्राह्मण।

बाह्य—पु० [सं० बहिस्+यञ्, टि-लोप] १. बाहरी। बाहर का। २. प्रस्तुत विषय से भिन्न। ३. किसी मूल से अलग या भिन्न। जैसे—बाह्य प्रभाव। ४ समस्त पदो के अत मे, क्षेत्र, परिधि, सीमा के बाहर रहने या होनेवाला। जैसे—आलबन बाह्य=स्वय आलबन मे न होकर उससे अलग या बाहर का। ५ किसी घिरे हुए स्थान मे न होकर उससे अलग और खुले हुए स्थान मे होनेवाला। जैसे—बाह्य खेल।
पु० [सं० बाह्य] १. भार ढोनेवाला पशु। जैसे—बैल आदि। २ यान। सवारी।

बाह्य-तपश्चर्या—स्त्री०[सं० कर्म० स०] जैनियो के अनुसार तपस्या का एक भेद जिसमे अनशन, औनोदर्य, वृत्तिसक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश और लीनता ये छ बातें होती है।

बाह्य-द्रुति—पु०[सं० कर्म० स०] पारे का एक संस्कार। (वैद्यक)

बाह्य-नाम—पु०[सं० कर्म० स०] किसी का नाम और ठिकाना जो उसे भेजे जानेवाले पत्र के ऊपर लिखा जाता है। ठिकाना। पता। (एड्रेस)

बाह्यनामिक—पु०[सं० बाह्यनामन्+ठक्—इक] वह जिसके नाम पर और पते से पत्र या और कोई चीज भेजी गई हो। (एड्रेसी)

बाह्य-पटी—स्त्री०[सं० कर्म० स०] नाटक का परदा। यवनिका।

बाह्यप्रर—पु०[सं० कर्म० स०] वह जो किसी चीज के बिलकुल अन्तिम सिरे पर स्थित हो। विस्तार के अन्तिम भाग का अग। (एक्स्ट्रीम)

बाह्य-प्रयत्न—पु०[सं० कर्म० स०] व्याकरण मे, कठ से लघु ध्वनि उत्पन्न करने के उपरान्त होनेवाली क्रिया या प्रयत्न। इसके घोष और अघोष दो भेद हैं।

बाह्य-रति—स्त्री०[सं० कर्म० स०] आलिंगन, चुबन आदि कार्य जो बाहरी रति के विशेष रूप माने गये हैं।

बाह्य-रूप—पु० [सं० कर्म० स०] ऊपरी या बाहरी रूप। दिखाऊ रूप।

बाह्यवासी—वि० [सं० बाह्य √वस् (निवास)+णिनि, उप० स०] बस्ती के बाहर रहनेवाला।
पु० चांडाल।

बाह्य-विद्रधि—स्त्री०[सं० कर्म०स०] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर के किसी स्थान मे सूजन और फोडे की सी पीडा होती है। इसमे रोगी के मुँह अथवा गुदा से मवाद भी निकलती है।

बाह्य-वृत्ति—स्त्री०[सं० कर्म० स०] प्राणायाम का एक भेद जिसमे अन्दर से निकलते हुए श्वास को धीरे-धीरे रोकते हैं।

बाह्यांचल—पु० [सं० बाह्य अचल, कर्म० स०] बस्ती के बाहर का स्थान। (आउटस्कर्ट्स)

बाह्यांतर—वि०[सं०] बाहर और अन्दर दोनो का। जैसे—बाह्यातर शुद्धि।
क्रि० वि० बाहर और अन्दर दोनो ओर।

बाह्याचरण—पु०=बाह्याचार।

बाह्याचार—पु०[सं० बाह्य-आचार, कर्म० स०] वह आचरण विशेषत धार्मिक या नैतिक आचरण जो केवल दूसरो को दिखलाने के लिए हो, शुद्ध मन से न हो। आडम्बर। ढकोसला।

बाह्याभ्यंतर—पु०[सं० द्व० स०] प्राणायाम का एक भेद जिसमे आते और जाते हुए श्वास को कुछ-कुछ रोकते रहते हैं।

बाह्याभ्यंतराक्षेपी (पिन्)—पु०[सं० बाह्याभ्यंतर-आक्षेप, ष० त०, +इनि, दीर्घ, न-लोप] प्राणायाम का एक भेद जिसमे श्वास वायु को भीतर से बाहर निकलते समय निकलने न देकर उलटे लौटाते और अन्दर जाने के समय उसको बाहर रोकते है।

बाह्येंद्रिय—स्त्री० [सं० बाह्य-इंद्रिय कर्म० स०] आँख, कान, नाक जीभ और त्वचा, ये पाँच इन्द्रियाँ जिनसे बाहरी विषयो का ज्ञान होता है।

बाह्लीक—पु०=बाह्लीक।

बिंग—पु०=व्यग्य।
क्रि० प्र०—छोड़ना।—बोलना।

बिंजन—पु०=व्यंजन।

बिंट—पु०=वृत्त।

बिंद—पु०[सं० बिंदु]१. पानी की बूंद। २ वीर्य की बूद जिससे गर्भाधान होता है। ३ दोनो भौंहो के बीच का स्थान। भ्रू-मध्य। ४. माथे पर लगाई जानेवाली बिंदी। ५ दे० 'बिंदु'।
†पु०[?] दूल्हा। वर। (राज०)

बिंदक—वि०=विदक।

बिंदना—स०[सं० वन्दन]१ वदना करना। २ ध्यान करना। उदा०—सबद बिंदौरे अवधूस बद बिंदी।—गोरखनाथ। ३ प्रशसा करना। उदा०—कोई निन्दौ कोई बिन्दौ म्हे तो गुण गोविंद।—मीराँ।

बिंदा—पु०[सं० बिंदु] १ माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा। बडी बिंदी। २ उक्त आकार का कोई चिह्न।
†स्त्री०=बृंदा (गोपी)।

बिंदी—स्त्री०[सं० बिंदु] १. शून्य का सूचक चिह्न। सिफर। सुन्ना।

दिया जाना।। मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना। २ किसी का पूर्ण अनुगामी, अनुचर या दास होना।
सयो० क्रि०—जाना।

बिकरम—पु०=१ विक्रमादित्य। २ विक्रम।

बिकरार†—वि०=बेकरार।
वि०=विकराल।

बिकल†—वि०=विकल।

बिकलाई†—स्त्री०=विकलता।

बिकलाना—अ० [स० विकल] विकल या व्याकुल होना। बेचैन होना।
स० विकल या व्याकुल करना। बे-चैन करना।

बिकवाना—स० [हिं० बिकना का प्रे०] बेचने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को बेचने मे प्रवृत्त करना।

बिकवाल†—पु० [हिं० बिकना+वाला] वह जो कोई चीज बेचता हो। बेचनेवाला। विक्रेता।

बिकसना—अ०[स० विकसन] १ विकसित होना। खिलना। २ बहुत प्रसन्न होना।

बिकसाना—स०[स० विकसन] १ विकसित करना। खिलाना। २ बहुत प्रसन्न करना।
†अ०=बिकसना।

बिकाऊ—वि०[हिं० बिकना+आऊ (प्रत्य०)] (वस्तु) जो बिक्री के लिए रखी गई हो।

बिकाना†—स०=बिकवाना।
†अ०=बिकना।

बिकार†—पु०[स० वि√कृ (करना)+घञ्, विकार] १ विकार। खराबी। २. बीमारी। रोग। ३. ऐब। खराबी। दोष। ४ बुरा काम। दुष्कर्म।

बिकारी—वि० [स० विकार+इनि] १. जिसका रूप बिगडकर और का और हो गया हो। विकारयुक्त। विकृत। २ विकार उत्पन्न करनेवाला।
स्त्री०[स० विकृत या वक्र] एक प्रकार की टेढी पाई जो अको आदि के आगे सख्या या मान आदि सूचित करने के लिए लगाई जाती है। लिखने मे रुपये-पैसे या मन-सेर आदि का चिह्न, जिसका रूप) होता है।

बिकास—पु०=विकास।

बिकासना—स०[स० विकास] विकसित करना।
†अ०=विकसित होना।

बिकुंठ—पु०=वैकुंठ।

बिकुटा†—वि० [हिं० बि=दो+कुटा प्रत्य०] [स्त्री० बिकुटी] दूसरा। द्वितीय। उदा०—इकुटी बिकुटी त्रिकुटी सधि।—गोरखनाथ।

बिक्ख*—पु०=विष।

बिक्रमाजीत—पु०=विक्रमादित्य।

बिक्रमी—पु०[स० विक्रम] वह जिसमे विक्रम हो। पराक्रमी
वि०=वैक्रमीय।

बिक्री—स्त्री०[स० विक्रय] १ बिकने का भाव। २ बेचने की क्रिया या भाव।
पद—बिक्री-बट्टा=दूकानदारो की होनेवाली बिक्री और उससे प्राप्त होनेवाला धन।
३ वस्तुओ के बिक जाने पर प्राप्त होनेवाला धन।

बिक्री-कर—पु०[स०] वह राजकीय कर जो विक्रेता बेची जानेवाली वस्तु के दाम के अतिरिक्त क्रेता से वसूल करता और तत्पश्चात राज्य सरकार को देता है। (सेल्स टैक्स)

बिक्रू—वि०=बिकाऊ।

बिख—पु०[स० विष] जहर।
मुहा०—बिख बाना=बहुत बडे अनर्थ का सूत्र-पात करना। बिख बोलना=बहुत ही कटु और लगती हुई बात कहना।

बिखम—वि०[स० विष] विष। जहर। गरल।
†वि०=विषम।

बिखय*—पु०=विषय।
अव्य०=विषय मे। सम्बन्ध मे।

बिखयी*—वि०=विषयी।

बिखरना—अ०[स० विकीर्ण] १. किसी चीज के कणो, रेशो, इकाइयो आदि का अधिक क्षेत्र मे फैल जाना।
सयो० क्रि०—जाना।
२ एक-साथ, साथ-साथ या सयुक्त न होना। अलग-अलग या दूर-दूर होना। जैसे—परिवार के सदस्यो का बिखरना।

बिखराना—स०=बिखेरना।

बिखराव†—पु० [हिं० बिखरना] १ बिखरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ आपस मे होनेवाली फूट।

बिखाद†—पु०=विषाद।

बिखान—पु०[स० विषाण] १ पशुओ के सीग। २ सिंगी नाम का बाजा।

बिखिया†—स्त्री०=विषय-वासना।

बिखे*—अव्य०, पु०=विषय।

बिखेरना—स० [हिं० बिखरना का स०] १ कणो, रेशो आदि के रूप मे होनेवाली वस्तु के कणो को अधिक विस्तृत क्षेत्र मे यो ही अथवा किसी विशेष ढग से गिराना या फेकना। जैसे—खेत मे बीज बिखेरना। २ वस्तुओ को बिना किसी सिलसिले के फैलाकर रखना। जैसे—पुस्तकें बिखेरना।

बिखै†—अव्य०[स० विषय] किसी विषय मे। सबध मे। उदा०—जगत बिखै कोई काम न सरही।—गुरु गोविंदसिंह।
*पु० १ =विषय। २ =विषय-वासना।

बिखोडा—पु०[हिं० बिख=विष] ज्वार की जाति की एक प्रकार की बडी घास जो बारहो महीने हरी रहती है। काला मुच्छ।

बिगंध—स्त्री०[स० वि+गध] दुर्गंध। बदबू।

बिग†—पु०=बीग।

बिगडना—अ०[स० विकार, हिं० बिगाड] १ किसी तत्त्व या पदार्थ के गुण, प्रकृति, रूप आदि मे ऐसा विकार या खराबी होना जिससे उसकी उपयोगिता, क्रियाशीलता या महत्त्व कम हो जाय या न रह जाय। प्रकृत स्थिति से गिरकर विकृत या खराब होना। जैसे—(क) बासी होने या सडने के कारण खाद्य पदार्थ का बिगडना। (ख) पुरजा टूटने के कारण कल या यत्र बिगडना। २ किसी क्रिया के होते रहने या किसी चीज के

बनने के समय उसमें कोई ऐसी खराबी आना कि काम ठीक या पूरा न उतरे। जैसे—(क) पकाने के समय भोजन या सिलाई के समय कुरता या कोट बिगड़ना। (ख) गवाही देते समय गवाह बिगड़ना। ३. अच्छी या ठीक अवस्था से खराब या बुरी स्थिति में आना। जैसे—(क) जरा सी भूल से किया-कराया काम बिगड़ना। (ख) घर की स्थिति या देश की शासन-व्यवस्था बिगड़ना। ४. आपस के व्यवहार में ऐसी खराबी या दोष आना कि सुगमतापूर्वक निर्वाह न हो सके। जैसे—(क) शासन से पीड़ित होने पर प्रजा का बिगड़ना। (ख) बातों में आपस में बिगड़ना। ५. आचरण, प्रवृत्ति, स्वभाव आदि में ऐसा दोष या विकार उत्पन्न होना जो नीति, न्याय, सभ्यता आदि के विरुद्ध समझा जाता हो। उचित पथ से भ्रष्ट होना। जैसे—(क) गंवारों के लड़कों के साथ रहते-रहते तुम्हारी जबान भी बिगड़ चली है। (ख) बुरी संगति में अच्छा आदमी भी बिगड़ जाता है। ६. व्यक्तियों के संबंध में, किसी पर क्रुद्ध या नाराज होकर उसे कड़ी बातें सुनाना। जैसे—आज साहब हम लोगों पर बिगड़े थे। ७. पशुओं आदि के संबंध में, क्रुद्ध होने के कारण नियंत्रण या वश से बाहर होकर उपद्रव या शरारत करना। जैसे—बिगड़े हुए घोड़े (या बैल) जब बिगड़ जाते हैं, तब गाड़ी (या हल) तक तोड़ डालते हैं। ८. रुपये-पैसे के संबंध में, बुरी तरह से व्यर्थ व्यय होना। जैसे—तुम्हारे फेर में हमारे दस रुपये बिगड़ गये।

बिगड़े-दिल—पु० [हिं० बिगड़ना+फा० दिल] १. उग्र या विकट स्वभाववाला। २. जिसकी प्रवृत्ति प्राय: कुमार्ग की ओर रहती हो। †३. बात बात पर बिगड़ने या नाराज होनेवाला व्यक्ति।

बिगड़ैल—वि० [हिं० बिगड़ना+ऐल (प्रत्य०)] १. जो बात-बात में और बहुत जल्दी बिगड़ने या नाराज होने लगता हो। हर बात में क्रोध करनेवाला। क्रोधी स्वभाव का। २. जो प्राय: कुमार्ग की ओर प्रवृत्त रहता हो। ३. जिद्दी। हठी। (क्व०)

बिगत—पु० [?] प्रकार। भाँति। तरह। उदा०—बिगत बिगत के नाम धरायो यक माटी के भांडे।—कबीर।
*वि०=विगत।

बिगर†—अव्य०=बगैर(बिना)।

बिगरना†—अ०=बिगड़ना।

बिगराइल†—वि०=बिगड़ैल।

बिगरायल†—वि०=बिगड़ैल।

बिगसना*—अ०=विकसना।

बिगसाना*—स०=विकसाना (विकसित करना)।
†अ०=विकसना (विकसित होना)।

बिगहा†—पु०=बीघा (जमीन की नाप)।

बिगही†—स्त्री०[देश०] खेत की क्यारी। बरही।

बिगाड़—पु०[हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ने की क्रिया या भाव। विकार। २. ऐब। खराबी। दोष। ३. पारस्परिक संबंध बिगड़े हुए होने की अवस्था या भाव। आपस में होनेवाला द्वेष और वैमनस्य। ४ नुकसान। हानि।

बिगाड़ना—स०[हिं० बिगड़ना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी काम, चीज या बात में किसी तरह की खराबी हो। इस प्रकार विकृत करना कि अच्छी या ठीक स्थिति में न रह जाय। जैसे—असावधानी से कोई काम (या चीज) बिगाड़ना। २. कोई ऐसा काम करना जिससे उसमें ऐसा दोष या विकार आ जाए कि वह अभीष्ट या उपयुक्त रूप में न रह जाए। जैसे—(क) पानी ने कुरता [illegible] बिगाड़ दिया। (ख) [illegible] बिगाड़ दिया। ३. अच्छी दशा या अवस्था से बुरी दशा या स्थिति में लाना। जैसे—[illegible] घर बिगाड़ना। ४. किसी को उचित या ठीक मार्ग से हटाकर अनुचित या दूषित मार्ग पर लगाना या ले जाना। जैसे—(क) बुरी आदतें डालकर लड़के को बिगाड़ना। (ख) इधर-उधर की बातें करके किसी का मिजाज बिगाड़ना। (ग) [illegible] किसी का [illegible] बिगाड़ना। ५. कुमारी अथवा स्त्री के संबंध में, कौमार्य या सतीत्व नष्ट करना। ६. रुपए-पैसे के संबंध में, व्यर्थ नष्ट या व्यय करना। जैसे—आज मेले में हम भी पाँच रुपए बिगाड़ आए।

बिगाड़ू†—वि० [illegible] (वाला)।

बिगार—पु० = बिगाड़।
स्त्री० = बगार।

बिगारना†—अ० [सं० विकिरण] १. चारों ओर फैलना। २. [illegible]। उदा०—[illegible] —कबीर।
†स० = बिगाड़ना।

बिगारि—स्त्री० = बेगार।

बिगारी—स्त्री० = बेगारी।
पु० = बेगार।

बिगास†—पु० = विकास।

बिगासना*—अ० = विकसना।

बिगाहा—पु० = बिगहा।

बिगिर†—अव्य० = बगैर।

बिगुन—वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित।
वि० = बेगुन ([illegible])।

बिगुचन—स्त्री० = बिगूचन।

बिगुचना*—अ० [सं० विकुंचन] असमंजस, कठिनता, या संकोच में पड़ना।

बिगुरदा—पु० [देश०] मध्ययुग का एक प्रकार का हथियार।

बिगुर्चन†—स्त्री० = बिगूचन।

बिगुल—पु० [अं०] १. पाश्चात्य ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्राय: सैनिकों को एकत्र करने अथवा उसी प्रकार का कोई और काम करने के लिए संकेत रूप में बजाई जाती है। २. उक्त बाजे का शब्द।

बिगुलर—पु० [अं०] फौज में बिगुल बजानेवाला।

बिगूचन—स्त्री० [सं० विकुंचन अथवा विवेचन] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाता है। असमंजस। २. कठिनता। दिक्कत। अड़चन।

बिगूचना—अ० [सं० विकुंचन] १. कठिनता या दिक्कत में पड़ना। २. असमंजस में पड़ना। ३. पकड़ा या दबाया जाना।
† स० धर दबाना। दबोचना।

बिगूतना—अ० = बिगूचना।
स० [सं० विगत] १. नष्ट करना। २ बिगाड़ना।

*अ० १. नष्ट होना। २ विकृत होना। बिगड जाना। ३ दुर्दशाग्रस्त होना। उदा०—मैं मेरी करि बहुत बिगूता।—कबीर।
†अ० १ दे० 'बिगूचना'। २ दे० बिगुरचना'।

बिगोउ, बिगोऊ—पु० [हिं० बिगोना] १ नाश। बरबादी। २ खराबी। बुराई।

बिगोना—स० [स० विगोपन] १ खराब या नष्ट करना। बिगाडना। २ दुरुपयोग करना। ३ छिपाना। चुराना। ४ तग, दिक या परेशान करना। ५ धोखा देना। ६ बहकाना। ७ व्यतीत करना। बिताना।

बिग्गाहा—पु० [स० विगाथा] आर्या छद का एक भेद जिसे 'उद्गीति' भी कहते है। इसके पहले पद मे १२, दूसरे मे १५ तीसरे मे १२ और चौथे मे १८ मात्राएँ होती है।

बिग्यान†—पु०=विज्ञान।

बिग्रह—पु० [स० विग्रह] १. शरीर। देह। २ झगडा। लडाई। ३ विभाग। ४ दे० 'विग्रह'।

बिघटना—स० [स० विघटन] १ विघटित करना। तोडना-फोडना। २ नष्ट करना।
अ० विघटित होना। नष्ट या भ्रष्ट होना।

बिघन†—पु०=विघ्न।

बिघनहरन—वि० [स० विघ्नहरण] बाधा या विघ्न हरनेवाला। बाधा दूर करनेवाला।
पु०=गणेश।

बिघार†—पु०=बाघ।

बिच†—क्रि० वि०=बीच।

बिचकना—अ० [स० विकुचन ?] (मुँह) इस प्रकार कुछ टेढा होना जिससे अप्रसन्नता, अरुचि आदि सूचित हो। जैसे—मुझे देखते ही उनका मुँह बिचक जाता है।

बिचकाना—स० [हिं० बिचकना का स०] १ कोई चीज देखकर उसके प्रति अपनी अप्रसन्नता, अरुचि आदि प्रकट करते हुए मुँह कुछ टेढा करना। जैसे—किसी को देखकर या किसी चीज के अप्रिय स्वाद के कारण मुँह बिचकाना। २ किसी का उपहास करने या मुँह चिढाने के लिए उसकी तरह कुछ विकृत करके मुँह बनाना। किसी को चिढाने के लिए बिगाड-कर उसी की तरह मुँह बनाना।

बिचच्छन†—वि०=विचक्षण।

बिचरना—अ० [स० विचरण] १ इधर-उधर घूमना। चलना-फिरना। विचरण करना। २. यात्रा या सफर करना।

बिचलना†—अ० [स० विचलन्] १ विचलित होना। इधर-उधर हटना। २ कहकर मुकरना। ३ साहस या हिम्मत छोडना। हतोत्साह होना। ४ सम्बन्ध छोडकर अलग होना।
† अ० १ =बिछलना (फिसलना)। २ बिछडना। ३ मचलना।

बिचला—वि० [हिं० बीच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बिचली] १ बीच मे होने या पडनेवाला। २. जो न बहुत बडा हो और न बहुत छोटा। ३. मध्यम श्रेणी का।

बिचलाना—स० [स० विचलन] १ विचलित करना। डिगाना। २ उचित मार्ग से इधर-उधर करना। बहकाना। ३ तितर-बितर करना। बिखेरना। ४ हिलाना।

बिचवई—पु० [हिं० बीच+वई (प्रत्य०)] १ बीच-बचाव करनेवाल २ मध्यस्थ।
स्त्री० दो आदमियो का झगडा निपटाने के लिए की जानेवाली मध स्थता।

बिचवान†—पुं०=बिचवई।

बिचवानी†—स्त्री०=बिचवई (मध्यस्थता)।

बिचार†—पु०=विचार।

बिचारना†—अ० [स० विचार+ना (प्रत्य०)] १ विचार करन सोचना। गौर करना। २ प्रश्न करना। पूछना।

बिचारा—वि० [स्त्री० बिचारी]=बेचारा।

बिचारी—पु० [हिं० बिचारना] विचार करनेवाला। विचारशील।

बिचाल—पु० [स० विचाल] अतर। फरक।
†स्त्री०=बे-चाल।

बिचुरना—स० [स० विचयन] १ चयन करना। चुनना। २ कपास बिनौले अलग करना।
स० [स० विचूर्णन] चूर्ण या टुकडे-टुकडे करना।

बिचेत—वि० [स० विचेतस्] १ मूर्च्छित। बेहोश। अचेत। २. जिसर्क बुद्धि ठिकाने न रह गई हो। बद-हवास।

बिचोलिया†—पुं०=बिचौली।

बिचौली—पु० [हिं० बीच+औली (प्रत्य०)] १ वह व्यक्ति जो उत्पा दक से माल खरीदकर और बीच मे कुछ नफा खाकर दुकानदारो आदि के हाथ बेचता हो। वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का देन चुकानेवाल से वसूल करके मूल अधिकारी या स्वामी को देता हो और इ प्रकार बीच मे स्वय भी कुछ लाभ करता हो। (मिडिल मैन, उक्त दोनो अर्थो मे) जैसे—जमीदार, जागीरदार आदि सरकार औ किसानो के बीच मे रहकर बिचौली का काम करते थे।

बिचौहाँ*—वि० [हिं० बीच+औहाँ (प्रत्य०)] बीच का। बीचवाला

बिच्छा—पु० [हिं० बीच] १ बीच की दूरी या जगह। २ बीच का काल या समय। ३ अन्तर। फरक।
†पु० [स्त्री० बिच्छी] बिच्छू।

बिच्छित्ति—स्त्री०=विच्छित्ति।

बिच्छी—स्त्री० [हिं०] बिच्छू। मादा बिच्छु।

बिच्छू—पु० [स० वृश्चिक] [स्त्री० बिच्छी] १ एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर जो प्राय गरम देशो मे अबेरे स्थानो मे (जैसे—लकडियो या पत्थरो के नीचे, बिलो मे) रहता है। २ एक प्रकार की घास जो शरीर से छू जाने पर जलन उत्पन्न करती है। ३ काकतुडी का पौधा या फल।

बिच्छेप†—पु०=विक्षेप।

बिछडन—स्त्री० [हिं० बिछडना] १ बिछडने की क्रिया या भाव। २ बिछडे हुए होने की अवस्था या दशा। बिछोह। वियोग।

बिछडना—अ० [स० विच्छेदन] १ साथ रहनेवाले दो व्यक्तियो का एक दूसरे से अलग होना। जुदा होना। अलग होना। २ प्रेमी और प्रेमिका का किसी कारण इस प्रकार एक दूसरे से अलग होना कि दोनो का मन दुखी हो। ३ साथी के अलग होने या छूट जाने के कारण अकेला पड जाना।

बिछत—स्त्री०[अ० बिदअत] १ पुरानी अच्छी बात को बिगाड़नेवाली नई खराब बात। २ खराबी। दोष। ३. कष्ट। तकलीफ। ४ विपत्ति। संकट। ५ अत्याचार। जुल्म। ६. दुर्दशा।
क्रि० प्र०—भोगना।—सहना।

बिछना—अ०[हिं० बिछाना का अ०] १ (बिस्तर आदि का) बिछाया जाना। फैलाया जाना। २ (छोटी छोटी चीजों का) दूर तक फैलाया या बिखेरा जाना। जैसे—जमीन पर फूलों का बिछना। ३ (व्यक्ति का) मारे-पीटे जाने के कारण जमीन पर गिर या लेट जाना। जैसे—दंगों में बहुत से आदमी बिछ गये (या लाशें बिछ गईं)।

बिछलना†—अ० =फिसलना।

बिछलाना†—अ० =फिसलना।

बिछवाना—स०[हिं० बिछाना का प्रे०] बिछाने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को बिछाने में प्रवृत्त करना।

बिछाना—पुं०=बिछौना।

बिछाना—स०[सं० विस्तरण] १ (बिस्तर या कपड़े आदि का) जमीन पर उतनी दूर तक फैलाना जितनी दूर तक फैल सके। जैसे—बिछौना बिछाना। २ बिखाना। कोई चीज या चीजें जमीन पर दूर तक फैलाना या बिखेरना। जैसे—फर्श पर फूल बिछाना। ३ इस प्रकार मारना-पीटना कि आदमी जमीन पर गिरकर पड़ या लेट जाय।

बिछायत†—स्त्री०=बिछावन (बिछौना)।

बिछावन—पुं०=बिछौना।

बिछावना†—स०=बिछाना।

बिछिआ†—स्त्री० [हिं० बिच्छू+इया (प्रत्य०)] पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

बिछिप्त†—वि०=विक्षिप्त।

बिछुआ—पुं०[हिं० बिच्छू] १ पैर में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार का छोटा टेढ़ा छुरा जिससे प्रायः प्रहार करते हैं। ३. अगियासन। ४. घास आदि का पूला।

बिछुड़न—स्त्री०=बिछड़न।

बिछुड़ना†—अ०=बिछड़ना।

बिछुरंता—पुं०[हिं० बिछुड़ना+अंता (प्रत्य०)] १ बिछड़नेवाला। २. बिछड़ा हुआ।

बिछुरना—अ०=बिछड़ना।

बिछुरनि†—स्त्री०=बिछड़न।

बिछुवा†—पुं०=बिछुआ।

बिछूना—वि०[हिं० बिछुड़ना] बिछड़ा हुआ। जो बिछड़ गया हो।
†पुं०=बिछोह (वियोग)। उदा०—जल महँ अगिनि सो जान बिछूना।—जायसी।

बिछोई—वि०, पुं० दे० 'बिछूना'।

बिछोड़ा—पुं०[हिं० बिछड़ना] १. बिछड़ने की क्रिया या भाव। अलग अलग होना। ३. बिछड़े हुए होने की अवस्था। बिछोह। वियोग।

बिछोय†—पुं०=बिछोह (वियोग)।

बिछोया†—पुं०=बिछोह (वियोग)। उदा०—मित्र बिछोया कठिन है, जनि दीजौ करतार।

बिछोहा†—पुं०=बिछोड़ा (वियोग)।

बिछोहा—वि०[हिं० बिछोह] १ जिससे कोई बिछड़ गया हो। २ जो बिछोह या वियोग के फलस्वरूप दुःखी हो।

बिछौन—पुं०=बिछौना।

बिछौना—पुं०[हिं० बिछाना] १ दरी, गद्दा, चादर आदि ऐसे कपड़े जो बैठने या लेटने के लिए जमीन पर बिछाये जाते हैं। बिछावन। बिस्तर।
क्रि० प्र०—बिछाना।
२. बिछी या बिछाई हुई ऐसी वस्तुओं का विस्तार जिस पर लेटा जाय। जैसे—काँटों का बिछौना, फूलों का बिछौना, पत्थरों का बिछौना।
स०=बिछाना।

बिजई†—वि०=विजयी।

बिजउर—पुं०=बिजौरा (नीबू)।

बिजड़—स्त्री०[?] तलवार। खग। (डिं०)

बिजड़ा—पुं०[हिं० बिजड़] बड़ी तलवार।

बिजन—पुं०[फा० बिजन] जनता का वध। कत्ल-आम।
†पुं०=व्यजन (पंखा)।
†वि०=विजन (जन-रहित)।

बिजना†—पुं०[सं० व्यजन] पंखा।
वि०[सं० विजन] १. एकान्त (स्थान)। २. जिसके साथ कोई न हो। अकेला।

बिजनी†—स्त्री० [सं० विजन] हिमालय पर रहनेवाली एक जंगली जाति।

बिजय—स्त्री०=विजय।

बिजयघंट—पुं०[सं० विजयघण्ट] वह बड़ा घंटा जो मंदिरों में लटकाया रहता है।

बिजयसार—पुं०[सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड़ जिसके पत्ते पीपल के पत्तों से कुछ छोटे होते हैं। इस पेड़ की लकड़ी ढोल आदि बनाने के काम आती है।

बिजरी†—स्त्री०=बिजली।

बिजली—स्त्री०[सं० विद्युत; प्रा० विज्जु] १. एक प्रसिद्ध प्राकृतिक शक्ति जो तत्त्वमात्र के मूल-भूत अणुओं या कणों में नहिक और नहिक अथवा ऋणात्मक और धनात्मक रूपों में वर्तमान रहती है और जो संघर्ष तथा रासायनिक परिवर्तन या विकारों से उत्पन्न होती है। विद्युत्। (इलेक्ट्रिसिटी)
विशेष—इसका कार्य चारों ओर अपनी किरणें या धाराएँ फैलाना, आकर्षण तथा विकर्षण करना और पदार्थों में रासायनिक परिवर्तन या विकार उत्पन्न करना है।
२. उक्त का वह रूप जो कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओं अथवा जलप्रपातों के संघर्ष आदि से कुछ विशिष्ट यंत्रों के द्वारा उत्पादित किया जाता है और जिसका उपयोग घरों में प्रकाश करने, गाड़ियाँ, पंखे आदि चलाने और कल-कारखाने चलाने के लिए तारों के द्वारा चारों ओर वितरित किया जाता है।
विशेष—प्रायः ढाई हजार वर्ष पूर्व थेल्स नामक व्यक्ति ने पहले-पहल यह देखा था कि रेशम के साथ कुछ विशिष्ट चीजें रगड़ने से उसमें हलकी चीजों को अपनी ओर खींचने की शक्ति आ जाती है। बाद में लोगों ने देखा कि मोर का पंख थोड़ी देर तक रगड़ने, रेशम को शीशे से रगड़ने तथा लोहे को फलालेन से रगड़ने पर भी यह शक्ति उत्पन्न होती है। तब से

पाश्चात्य वैज्ञानिक इसके सबध मे अनेक प्रकार के अनुसधान और परीक्षण करने लगे, जिनके फलस्वरूप अब यह शक्ति सारे ससार के सभ्य-जीवन का एक प्रधान अंग बन गई है, और इससे सैकडो तरह के काम लिए जाने लगे है। यह धातुओ, प्राणियो के शरीर, जल आदि मे बहुत ही तीव्र गति से चलती है। ऊन, चूना, मोम, रेशम, लाह, शीशा आदि अनेक ऐसे पदार्थ भी हैं, जिनमे इसका सचार नही होता। अब इसका उपयोग बिना तार के सम्पर्क के दूर दूर तक समाचार भेजने और अनेक प्रकार के रोगो की चिकित्सा करने मे भी होने लगा है। ३. उक्त शक्ति का वह घनीभूत रूप जो आकाश के बादलो मे प्रवाहित होता और कभी कभी बहुत ही घोर शब्द करता हुआ तीव्र वेग से तथा क्षणिक प्रबल प्रकाश से युक्त होकर पृथ्वी पर आता या गिरता हुआ दिखाई देता है और जिसमे बहुत अधिक नाशक शक्ति होती है। चपला। (लाइटनिंग)

क्रि० प्र०—कडकना।—चमकना।

मुहा०—बिजली कडकना= बादलो मे बिजली का प्रवाह या सचार होने के कारण बहुत जोर का शब्द होना, जिसके परिणामस्वरूप बहुत तीव्र प्रकाश दिखाई देता है। और कभी-कभी बिजली गिरती भी है। बिजली गिरना या पड़ना= आकाश से बिजली तिरछी रेखा के रूप मे पृथ्वी की ओर बडे वेग से चलकर आती है, जिससे रास्ते मे पडनेवाली चीजें जलकर नष्ट हो जाती या टूट-फूट जाती हैं।

४ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना, जिसमे बहुत चमकीला लटकन लगा रहता है। ५. गले मे पहनने का उक्त प्रकार का हार। ६. आम की गुठली के अन्दर की गिरी।

वि०१ बिजली की तरह बहुत अधिक चमकीला। २ बिजली की तरह बहुत अधिक तीव्र गति या वेगवाला। ३. बिजली की तरह चचल या चपल।

बिजली-घर—पु०[हिं०] वह स्थान जहाँ रासायनिक प्रक्रियाओ, जल-प्रपातो आदि से बिजली उत्पन्न करके कल-कारखाने आदि चलाने और घरो मे प्रकाश आदि करने के लिए जगह-जगह तार की सहायता से पहुँचाई जाती है।

बिजली-बचाव—पु०[हिं०] लोहे का वह टुकडा और तार जो ऊँची इमारतो आदि पर आकाश से गिरनेवाली बिजली आकृष्ट करके जमीन के अन्दर पहुँचाने के लिए लगा रहता है और जिसके फलस्वरूप बिजली गिरने के नाशक प्रभावो से रक्षा होती है। तडिद्रक्षक। (लाइटनिंग प्रोटेक्टर)

बिजली मार—पु०[हिं०] एक प्रकार का बहुत सुन्दर और छायादार बड़ा वृक्ष।

बिजहन—पु०[हिं० बीज+हन] अनाजो आदि का ऐसा दाना या ऐसा बीज जिसकी उत्पादन-शक्ति नष्ट हो चुकी हो। निर्जीव बीज।

बिजाती—वि०[स० विजातीय]१ दूसरी जाति का। और जाति या तरह का। २ जाति से निकाला हुआ। जाति से बहिष्कृत।

बिजान†—वि०=अनजान।

बिजाय—पु०[स० विजय]बाजूबद (गहना)।

बिजार—पु०[देश०] १ बैल। २ साँड।

बिजुरी†—स्त्री०=बिजली।

बिजूका—पु०=बिजूखा।

बिजूखा—पु०[देश०]१ खेत मे गाडा हुआ छोटा बाँस या डडा जिस पर काली हाँडी टँगी होती है और जिस का मुख्य प्रयोजन पशु-पक्षियो को डराकर फसल से दूर रखना होता है। उजका। धोखा। २. छल। धोखा।

बिजै*—स्त्री०=विजय।

बिजैसार—पु०=विजयसार।

बिजोग†—पु०=वियोग।

बिजोटा—पु०[?] केशव के अनुसार एक छद का नाम।

बिजोना*—स०[हिं० जोवना या जोहना]१ अच्छी तरह देखना। २ देख-रेख करना।

अ०[हिं० बीज=बिजली] बिजली चमकना।

†स०[हिं० बीज] बीज बोना। उदा०—आछी भाँति सुधारि कै खेत किसान बिजोय।—दीनदयाल गिरि।

बिजोरा—वि०[स० वि+फा० ज़ोर=ताकत] कमजोर। अशक्त। निर्बल।

†पु० बिजौरा।

बिजौरा—पु० [स० बीजपूरक] एक प्रकार का नींबू।

वि० [हिं० बीज+ औरा (प्रत्य०)] बीज से उत्पन्न होनेवाला। बीजू। 'कलमी' से भिन्न।

बिजौरी—स्त्री० [हिं० बीज +औरी (प्रत्य०)] बडी कुम्हडौरी।

बिज्जल—स्त्री०=बिजली।

बिज्जु†—स्त्री०=बिजली।

बिज्जुपात—पु०[स० विद्युत्पात]आकाश से बिजली गिरना। वज्रपात।

बिज्जुल†—पु०[स० विज्जुल] त्वचा। छिलका।

†स्त्री०=बिजली।

बिज्जू—पु०[देश०]बिल्ली की तरह का एक जगली जानवर। बीजू।

बिज्जूहा—पु०[?] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो 'रगण' होते है।

बिझँवारी—स्त्री० [देश०] छत्तीसगढ मे बोली जानेवाली एक उपभाषा या बोली।

बिझकना*—अ०=बिचकना।

बिझरा—पु०[हिं० मेझरना=मिलाना] एक मे मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जौ।

बिझुकना—अ०[हिं० झुकना] १. भडकना। २ डरना। ३ तनने के कारण कुछ टेढा होना। ४. चचल होना।

अ०=बिचकना।

बिझुका†—पु०= बिजूखा।

बिझुकाना—स०[हिं० बिझुकना] १ भडकाना। २ डराना। ३. टेढा करना।

अ०=बिझुकना।

बिटउ†—पु०=वितडा। उदा०—करसि बिटउ मरम नहिं करसी।—जायसी।

बिटंबना—अ०[स० बिडबना] हँसी उडाना।

†स्त्री०=बिडबना।

बिट—पु०[स० विट्]१ वैश्य। २ दे० 'विट'।

स्त्री०=बीठ (पक्षियो की विष्ठा)।

बिटक—पु०[सं० बिटक] [स्त्री० अल्पा० बिटका]फोड़ा।

विटप—पु०=विटप (वृक्ष)।
विटपी—पु०=विटपी।
विटरना—अ०[हिं० विटारना का अ० रूप] घँघोले जाने पर गदा होना।
विटारना—स०[स० विलोटन] १. घँघोलना। २. घँघोलकर गदा करना।
विटिनिया—स्त्री०=बेटी।
विटिया—स्त्री०=बेटी।
विटौरा—पु०[सं० विट]१ सूखे कडों का ढेर। २. ढेर। राशि। उदा०—करयौ सवनि परनाम, विटौरा रूप पेटतर।—भगवत रसिक।
वि० बहुत बडा और भारी।
विट्ठल—पु०[स० विष्णु, महा० विठोवा] १ विष्णु का एक नाम। २. विष्णु की एक विशिष्ट मूर्ति जिसकी उपासना प्राय: दक्षिण भारत मे होती है और जिसकी प्रधान मूर्ति पढरपुर मे है।
विठलाना†—स०=बैठाना।
विठाना†—स०=बैठाना।
विठालना—स०=बैठाना।
विडंब—पु०[स० विडम्ब] आडवर। दिखावा।
विडबना—अ० [स० वि√डम्ब+युच्—अन] किसी को चिढाने या उपहास्यास्पद बनाने के लिए उसकी नकल उतारना।
स्त्री०=विडम्बना।
विड—पु०[स० विट] १. गुह। मल। विष्ठा। २ एक प्रकार का नमक।
वि०१ दुष्ट। पाजी। २. नीच।
विडर—वि०[हिं० विडरना] विखरा या छितराया हुआ।
†वि०=निडर।
*वि०=विरल।
विडरना—अ०[स० विट्=तीखे स्वर से पुकारना, चिल्लाना]१. विखरना। २ पशुओं आदि का विचकना या विदकना। ३ नष्ट होना। ४ विगड़ना।
अ०[हिं० डरना] भयभीत होना। डरना।
विडराना—स०[स० विट्=जोर से चिल्लाना]१. इधर-उधर करना। तितर-वितर करना। विखराना। २. भगाना।
†स०=डराना।
विडवना—स०[स० विट्=जोर से चिल्लाना] तोडना।
विड़से—वि०=विडायते। (दलाल)
विड़ायते—वि०[सं० वर्द्धायते] अधिक। ज्यादा। (दलाल)
विड़ारना—स०[हिं० विडरना] १. भयभीत करके भगाना। २. वाहर करना। निकालना।
†स०=विगाडना।
विड़ाल—पु०[स० विडाल]१. विल्ली। विलाव। २. दोहे के वीसवें भेद का नाम जिसमे ३ अक्षर गुरु और ४२ अक्षर लघु होते हैं। ३ आँख का ढेला। ४. आँख के रोगो की एक प्रकार की चिकित्सा। ५ दे० 'विड़ालाक्ष'।
विड़ालक—पु०[स० विडालक]१. आँख का गोलक। नेत्र-पिंड। २ आँखो पर लेप चढ़ाना। ३. नर विडाल। विरला।
विड़ालपाद—पु० [स० विडालपाद] एक तौल जो एक कर्ष के बराबर होती है।
विड़ालवृत्तिक—वि०[स० विडालवृत्तिक] विल्ली के समान स्वभाववाला। लोभी, कपटी, दभी, हिंसक, सबको धोखा देनेवाला और सबसे टेढा रहनेवाला।
विड़ालाक्ष—वि० [स० विडालाक्ष] जिसकी आँखें विल्ली की आँखो के समान हों।
पु० एक प्रसिद्ध राक्षस जिसे दुर्गा ने मारा था।
विड़ालिका—स्त्री०[स० विडालिका]१ विल्ली। २ हरताल।
विड़ाली—स्त्री०[स० विडाली]१. विल्ली। २. आँखो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३ एक योगिनी जो उक्त रोग की अधिष्ठात्री कही गई है।
विडिक—स्त्री०[स० विडिक] पान का बीडा। गिलौरी।
विड़ी†—स्त्री०=बीडी।
विड़ौजा—पु०[स० विडौजस्] इद्र का एक नाम।
विढतो†—पु०[हिं० वढना] नफा। लाभ।
विढवना—स०[स० वृद्धि; हिं० वढना] १ वढाना। २ इकट्ठा करना।
विढ़ाना—स०=विढवना।
वित†—पुं०=दे० 'वित्त'।
विततना—अ०[स० व्यथित]१ व्यथित होना। २ विलाप करना। विलखना।
स० दु खी या सतप्त करना।
अ०[स० वितान] पसरना। फैलना।
स० पसारना। फैलाना।
वितनु*—वि०=वितनु (कामदेव)।
वितपन्न*—वि०=व्युत्पन्न।
वितरना—स०[सं० वितरण]१. वितरण करना। बाँटना। २ चारो ओर फैलाना। विखेरना।
वि० [स्त्री० वितरनी] बाँटनेवाला। उदा०—चतुरानन हरि ईस परम पद विसद वितरनी।—रत्ना०।
वितराना†—स०[हिं० वितरना]१. वितरण करना। २. चारो ओर फैलाना।
अ०[?]१ बुरा कहना या बताना। ऐब या दोष लगाना। २ किसी को झूठा बनाना। यह कहना कि अमुक झूठा है या झूठ बोलता है।
वितवना—स०=विताना।
विता†—पु०=वित्ता।
विताना—स०[स० व्यतीत, हिं० बीतना का सक्षिप्त रूप] अवधि, समय आदि के सम्बन्ध मे, व्यय या व्यतीत करना। जैसे—उन्होने सारा दिन सोकर विताया।
वितात†—पु०=वैताल।
वितावना†—स०=विताना।
वितिरिक्त†—वि०=व्यतिरिक्त (अधिक)।
वितीतना—अ०[स० व्यतीत] व्यतीत होना। बीतना।
स०=विताना।

वितुंड—पु०=वितुड (हाथी)।
वितु†—पु०=वित्त।
बित—पु०[स० वित्त]१ धन। दौलत। २ निजी साधनो के बल पर कोई काम कर सकने की समर्थता। बिसात। बूता। ३ आर्थिक सम्पन्नता। औकात। हैसियत। ४ ऊँचाई या आकार।
बित्ता—पु०[?] १ मनुष्य के एक हाथ के अँगूठे और कनिष्ठिका के सिरो के बीच की अधिकतम दूरी। २ उक्त दूरी की एक नाप जो नौ इच के बराबर होती हे।
पद—बित्ता भर=आकार मे बहुत छोटा।
वित्ती†—स्त्री०[स० वित्त] आय आदि मे से धर्म-कार्यो के लिए निकाला हुआ धन।
वि०१ वित्तवाला। सम्पन्न। २. समर्थ।
स्त्री० [?] लडको का एक प्रकार का खेल जिसमे एक लडका ककड या ठीकरा दूर फेकता और दूसरा उसे उठाकर लाता है।
वियकना—अ०[हिं० थकना] १ थकना। २ चकित होना। ३ मोहित होना।
वियकाना—स०[हिं० वियकना]१ थकाना। २ चकित करना। ३ मोहित करना।
अ०=वियकना।
बिथरना—अ०[स० विस्तरण]१ छितराना। २ अलग-अलग होना। ३ छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट होना।
स० १ बिखेरना। २ (बीज) बोना। उदा०—वारि बीज बिथरैं। —सूर।
बिथा—स्त्री०=व्यथा।
बिथारना—स०[हिं० बिथरना] बिखेरना।
बिथित†—वि०=व्यथित।
बिथुरना†—अ०=बिथरना।
बिथुराना†—स०=बिथराना (बिखेरना)।
बिथुरित*—भू० कृ०[हिं० बिथुरना]१ बिखरा हुआ। २ छिन्न-भिन्न। नष्ट-भ्रष्ट।
बिथुलना†—अ०=बिथुरना।
बिथोरना—स०=बिथराना।
बिद*—वि० [स० विद्] जाननेवाला। ज्ञाता। जैसे—जोग बिद= योग का ज्ञाता।
बिदकना†—अ०[स० विदारण]१. कुछ डरते हुए पीछे हटना। भडकना। २ विदीर्ण होना। चिरना। फटना। ३ घायल होना।
बिदकाना—स०[स० विदारण]१ चौका या डराकर पीछे हटाना। भडकाना। २ चीरना या फाडना। ३ घायल करना।
बिदर—पु०=बीदर। (विदर्भ देश)
पु०=विदुर। (दे०)
बिदरन—स्त्री०[स० विदीर्ण]१ विदीर्ण होने अर्थात् फटने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दरज। दरार।
वि० विदीर्ण करने या फाडनेवाला। (यौ० के अन्त मे)
बिदरना†—अ०[स० विदारण]१ विदीर्ण होना। फटना। उदा०—जो वासना न बिदरत अतर तेई तेई अधिक अनुअर चाहत।—सूर। २ नष्ट होना।
स० विदीर्ण करना। फाडना।
बिदरी—वि०, स्त्री०=बीदरी।
बिदलना*—अ०[स० विदलन] १ दलित करना। २ छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना।
बिदहना—स०[स० विदहन]१ भस्म करना। जलाना। २. बहुत अधिक दुखी या सतप्त करना। ३ धान या ककुनी आदि की फसल मे आरम्भ मे पाटा या हेगा चलाना।
बिदहनी—स्त्री०[हिं० बिदहना] बिदहने की क्रिया या भाव।
बिदा—स्त्री० [फा० विदाअ]१ कही से कुछ अधिक समय के लिए चले जाना या प्रस्थान करना। रवाना होना। प्रस्थान। २. उक्त के लिए मिलने या माँगी जानेवाली अनुमति या आज्ञा।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।
३ विवाहित पुत्री का मायके से ससुराल जाना। ४. द्विरागमन। गौना।
बिदाई—स्त्री०[फा०विदाअ+हिं०आई (प्रत्य०)]१ विदा होने की अवस्था क्रिया या भाव। २ वह धन जो विदा होनेवाले को विदा देनेवाले देते, हैं। ३ वह उत्सव जिसमे किसी को सम्मानपूर्वक विदा किया जाता है। ४ विदा होने के लिए मिलनेवाली आज्ञा। ६ विवाहिता कन्या, बहू अथवा दामाद को विदा करने की रस्म।
बिदाम—पु०=बादाम।
बिदामी—वि०, स्त्री०=बादामी।
बिदायत—पु० [स० विद्यापति] गाने बजानेवालो का वह दल या मण्डली जो मिथिला मे घूम घूम कर मैथिल कोकिल विद्यापति के पद गाती है।
बिदायगी—स्त्री०=बिदाई।
बिदारना—स०[स० विदारण]१. विदीर्ण करना। चीरना। फाडना। २. नष्ट करना। न रहने देना।
बिदारी—पु०[स० विदारी]१ शालपर्णी। २. भुई कुम्हडा। ३. एक प्रकार का कठरोग। ४ दे० 'विदारी कद'।
बिदारीकद—पु०[स० विदारी कद] एक प्रकार का कद जिसकी बेल के पत्ते अरुई के पत्तो के समान होते हैं। बिलाई कद।
बिदाहना†—स०[?]खेत को उस समय पुन जोतना जब उसमे नई फसल के अकुर निकल आते है।
बिदिसा†—स्त्री०=विदिशा।
बिदोरना—स०=बिदारना।
बिदुराना—अ०=मुस्कराना।
बिदुरानी—स्त्री०[हिं० बिदुराना]मुस्कराहट। मुस्कान।
बिदूरित—भू० कृ०[स० विदूर+इतच्, विदूरित] दूर किया हुआ या हटाया हुआ।
बिदूखना—अ०[स० विदूषण]१ दोष या कलक लगाना। २. खराब करना। बिगाडना।
बिदूसक—वि०, पु०=विदूषक।
बिदेस—पु०[स० विदेश] अपने देश के अतिरिक्त और कोई देश। परदेस। विदेस।

विदेसिया—पु०[हिं० विदेशी] पूरब मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जिनमे विदेश गये हुए पति के सम्बन्ध मे उसकी प्रियतमा के उद्गार होते हैं और जिनके प्रत्येक चरण के अन्त मे 'विदेसिया' शब्द होता है। जैसे—दिनवाँ बितैला सइयाँ बटिया जोहत तोर रतिया बीतैली जागि जागि रे विदेसिया।
विदेसी—वि०=विदेशी।
विदोख†—पु०[स० विद्वेष] वैर। वैमनस्य।
विदोरना—स०[स० विदारण] दीनतापूर्वक मुँह या दाँत खोलकर दिखाना।
विद्ध—वि०=विद्ध।
विद्दत—स्त्री०[अ० विद्दअत]१ खराबी। बुराई। २. कष्ट। ३ विपत्ति। ४ अत्याचार। ५ दुर्दशा।
विद्रूप—वि०=विद्रूप।
विधंसना—स०[स० विध्वसन] विध्वस करना। नष्ट करना।
विध—स्त्री०[स० विधि] १. विधाता। ब्रह्मा। २. तरह। प्रकार। उदा०—जाही विध राखे राम, ताही विधि रहिये।
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।
३ जमा और खर्च की मदों को जोडते-घटाते हुए उनका हिसाब मिलाने की क्रिया या भाव।
मुहा०—विध मिलना= (क) जोडने-घटाने आदि पर आय-व्यय आदि का योग ठीक होना। हिसाब मिलना। (ख) किसी के साथ मेल या सगति बैठना। अनुकूलता होना। जैसे—वर और वधू के ग्रहो की विध मिलना। विध मिलाना—(क) आय और व्यय की मदों का जोड लगाकर यह देखना कि लेखा ठीक है या नही। (ख) यह देखना कि अनुकूलता या सगति बैठती है या नही।
पु०[?] हाथियो का चारा या रातिब।
विधना—पु०[स० विधि+न (प्रत्य०)] ब्रह्मा। विधाता।
†अ०=विधना।
विधवदी—स्त्री०[हिं० विधि=जमा+फा० वंदी] मध्य युग मे भूमि-कर देने की वह रीति जिसमे बीघे आदि के हिसाब से कोई कर नियत नही होता था, बल्कि सारी जमीन के लिए यो ही अदाज से कुछ रकम दे दी जाती थी। बिलमुकता।
विधवपन—पु०=वैधव्य।
विधवा—वि०=विधवा।
विधवाना—स०=विधवाना।
विधांसना—स०[स० विध्वसन] विध्वस करना। नष्ट करना।
विधाई—पु०[स० विधायक] वह जो विधान करता हो। विधायक।
विधाता—पु०=विधाता।
विधान—पु०=विधान।
विधाना—स०=विधाना।
†अ०=विधना।
विधानी†—पु०=विधायक।
विधि—स्त्री०=विधि।
*पु०=विधि (ब्रह्मा)।
विधितात*—पु०[स० विधि+तात] ब्रह्मा का जनक अर्थात् कमल।
विधिना—स्त्री०=विधना (विधाता)।
विधिवान—पु० दे० 'ब्रह्मास्त्र'।
विधुतुद—पु०=विधुतुद (राहु)।
विधुंसना*—स० [विध्वसन]विध्वस करना। नष्ट करना।
विधुली*—पु०[देश०] एक प्रकार का बाँस जो हिमालय की तराई मे पाया जाता है। नल-बाँस। देव-बाँस।
विन—अव्य०=विना (वगैर)।
पु० विद नाम की जाति।
पु०[अ०]पुत्र पु० बेटा।
विनई†—वि०=विनयी।
स्त्री०=विनाई।
विनउ†—स्त्री०=विनय।
विनकार—वि० [हिं० बुनना] बुनकर। जुलाहा।
विनकारी—स्त्री०[हिं० विनकार] जुलाहे का काम।
विनठना—स्त्री०[हिं० विनष्ट] नष्ट होना।
स० नष्ट करना।
विनता—स्त्री०[देश०] पिडकी नाम की चिडिया।
स्त्री०[हिं० विनती] १ विनय। २ विवशता। ३ दीनता।
विनति—स्त्री०=विनती।
विनती—स्त्री० [स० विनय] प्रार्थना। निवेदन। अर्ज।
विनन—स्त्री०[हिं० विनना=चुनना]१ विनने या चुनने की क्रिया या भाव। २. विनने या चुनने पर निकलनेवाला कूडा-करकट। ३. बुने हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। बुनावट।
विनना—स०[स० वीक्षण] १ छोटी छोटी वस्तुओ को एक एक करके उठाना। चुनना। बीनना। २. छाँटकर अलग करना। ३. दे० 'बुनना'।
†स०=बीधना।
विनय—स्त्री०=विनय।
विनयना*—स० [स० विनयन] विनय या प्रार्थना करना।
विनरी†—स्त्री०=अरनी (वृक्ष)।
विनवट—स्त्री०[?] रूमाल या रस्सी मे पैसा आदि बाँधकर बनेठी भाँजने की क्रिया या खेल।
†स्त्री० १.=विनावट। २ =बुनावट।
विनवना—अ०[स० विनय] विनय करना। प्रार्थना करना।
विनवाना—स०[हिं० बीनना]बीनने या चुनने का काम किसी से कराना।
स०=बुनवाना।
विनसना†—अ०[स० विनाश]नष्ट होना। बरबाद होना।
स० नष्ट या बरबाद करना
विनसाना—स०[स० विनाश] विनाश करना। बिगाड डालना। नष्ट कर देना।
†अ० नष्ट या बरबाद होना।
विनस्टी†—स्त्री०=विनाश।
विनहा†—अव्य०=विना।
विना—अव्य०[स० विना]१. न रहने या न होने की दशा मे। २ वगैर। जैसे—रुपये के विना काम न चलेगा। ३. अतिरिक्त। सिवा।

उदा०—राम बिना कछु जानत नाही।
स्त्री० [अ०] १ नीव। बुनियाद। २ कारण। सबब। जैसे—यही तो सारे झगडे की बिना है।
बिनाई—स्त्री० [हिं० बिनना या बीनना] १ बीनने या चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'बुनाई'।
स्त्री० [अ० बीनाई] आँखो की ज्योति।
बिनाती—स्त्री०=विनती।
बिनाना—स०=बुनवाना।
बिनानी—वि० [स० विज्ञानी] अज्ञानी। अनजान।
स्त्री० [स० विज्ञान] विशिष्ट रूप मे किया जानेवाला चिन्तन या विचार।
बिनावट—स्त्री०=बुनावट।
बिनास—स्त्री० [स० पीनस] नाक से खून गिरना या जाना। नकसीर।
क्रि० प्र०—फूटना।
पु०=विनाश।
बिनासना—स० [स० विनष्ट] १ विनष्ट करना। बरबाद करना। २. सहार करना।
बिनाह†—पु०=विनाश। उदा०—साकत सग न कीजिए जाते होइ बिनाह।—कबीर।
बिनि—अव्य०=बिना।
बिनु†—अव्य०=बिना (बगैर)।
बिनुआ—वि० [हिं० बीनना] १ जो बीन तथा चुनकर इकट्ठा किया गया हो। जैसे—बिनुआ कडे। २ छांटा हुआ।
बिनूठा—वि० [हिं० अनूठा] अनूठा। अनोखा। विलक्षण।
बिनै*—स्त्री०=विनय।
बिनैका—पु० [सं० विनायक] वह पकवान जो पहले घान मे से निकालकर गणेश जी के निमित्त अलग कर देते है।
बिनौरा†—पु०=बिनौला।
बिनौरिया—स्त्री० [हिं० बिनौला] एक प्रकार की घास जो खरीफ के खेतो मे पैदा होती है।
बिनौरी—स्त्री० [हिं० बिनौला] बिनौले के छोटे-टुकडे।
बिनौला—पू० [?] कपास का बीज।
बिपक्ष—पु०=विपक्ष।
बिपक्षी—वि०, पु०=विपक्षी।
बिपच्छ—पु० [स० विपक्ष] शत्रु। वैरी। दुश्मन।
वि० १ जो विरोधी पक्ष मे हो। २ अप्रसन्न। नाराज।
बिपच्छी—पु०=विपक्षी।
बिपणि—स्त्री०=विपणि।
बिपता†—स्त्री०=विपत्ति।
बिपति†—स्त्री०=विपत्ति।
बिपत्त†—स्त्री०=विपत्ति।
बिपत्ति†—स्त्री०=विपत्ति।
बिपथ†—पु०= विपथ।
बिपद—स्त्री० [स० विपद] आफत। मुसीबत। विपत्ति।
बिपदा—स्त्री० = विपद।
बिपर—पु०=विप्र (ब्राह्मन)।
बिपरसा†—पु० [?] दे० 'बाँस' (वृक्ष)।
बिपाक—पु०=विपाक।
बिफर—वि०=विफल।
बिफरना—अ० [स० विप्लवन?] १. नाराज होना। बिगडना। २ हठ करना। ३ अभिमान आदि मे फूलना। ४ लडने को तैयार होना। ५. विद्रोह या विप्लव करना। बागी होना।
अ०=बफरना।
बिफुलता—स्त्री०=प्रफुल्लता। उदा०—तो तन दुति अतिबदन बिफुलता कहै देति छवि निरखत बात।—ललित किशोरी।
बिबछना—अ० [स० विपक्ष] १. विरोघी पक्ष मे जाना, रहना या होना। २ अटकना। उलझना। फँसना।
बिबर*—पु०=विवर।
बिबरजित—भू० कृ० =विवर्जित।
बिबरन†—वि० [स० विवर्ण] १. जिसका रग खराब हो गया हो। बदरग। २ चिंता आदि के कारण जिसका रंग फीका पड गया हो।
पु०=विवरण।
बिबराना*—स० [सं० विवरण] १. (बाल) सुलझाना। २ उलझन या विकटता दूर करना। ३. स्पष्ट रूप से विवरण बतलाना।
बिबर्ध*—वि०=विवर्ध (बहुत बढा हुआ)।
बिबस—वि० [स० विवश] १ मजबूर। विवश। २ पराधीन। परवश।
क्रि० वि० विवश होकर। लाचारी हालत मे।
बिबसना*—अ० [हिं० बिबस] विवश होना।
बिबहार†—पु०=व्यवहार।
बिबाई†—स्त्री०=बिवाई।
बिबाक†—वि०=बेबाक।
बिबाकी†—स्त्री० =बेबाकी।
बिबादना*—अ० [स० विवाद] विवाद करना। झगडना।
बिबाहना*—स० [स० विवाह] ब्याह करना। ब्याहना।
बिबि—वि० [स० द्वि] १ दो। २. दोनो।
बिबेक*—पु०=विवेक।
बिबेचना—स० [स० विवेचन] विवेचन करना।
स्त्री०=विवेचन।
बिब्बोक—पु० [स० विव्वोक] स्वाभिमान, गर्व आदि के फलस्वरूप प्रिय के प्रति प्रदर्शित की जानेवाली उदासीनता।
बिभचारी—वि०, पु०=व्यभिचारी।
बिभाना*—अ० [स० विभा+हिं० ना (प्रत्य०)] १ चमकना। २. सुशोभित होना।
स० १ चमकाना। २ सुशोभित करना।
बिभिचारी—वि०, पु०=व्यभिचारी।
बिभिनाना*—स० [स० विभिन्न] अलग या पृथक् करना।
बिभीषक—वि०=विभीषक।
बिभीषका—स्त्री०=विभीषिका।
बिभै—पु०=विभव।
बिभोर†—वि०=विभोर।
बिभौ*—पु०=विभव।

विमन—वि० [स० विमनस्] [स्त्री० विमना] जिसका मन या चित्त ठिकाने न हो। अन्य-मनस्क। विमन।

बिमकल†—पु०=बिवफल (कुदरु)।

बिमला—स्त्री०=विमला। (दे०)

बिमली—स्त्री०[स० विमल] इडा नाडी।

बिमान*—पु०=विमान।

बिमानी—वि०[स० वि+मान] जिसे अभिमान न हो। निरभिमान।
†स्त्री०=बेईमानी।

बिमुद—वि० [स० वि+मुद्] १ जिसे मोद या प्रसन्नता न हो। फलत खिन्न या दुखी। २ चिंतित।

बिमोचना—स०[स० विमोचन] मुक्त कराना। छुडाना।

बिमोहना—स०=मोहना।
अ०=मोहित होना।

बिमौट, बिमौटा—पु०=बांबी (वल्मीक)।

बिमौर—पु०[स० वल्मीक]बांबी। (दे०)

बिय—वि०[स० द्वि]१ दो। युग्म। २. दूसरा। द्वितीय। ३. अन्य। और।
† पु०=बीया (बीज)।

बियत—पु०[स० वियत्]१ आकाश। २. एकात स्थान।

बियन —पु० [स० विजन] एकान्त स्थान। सुनसान जगह। उदा०—बियन भजन दृढ गहि रहै तजि कुटुब परिवार।—ध्रुवदास।

बियना—स०=बीजना।
†पु०=बीज।

बियर—स्त्री०[अ०] एक तरह का विलायती मादक तथा शीतल पेय जो जौ के रस को सडाकर बनाया जाता है। यविरा।

बियरसा—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।

बियहुता—वि०=ब्याहता।

बिया—वि०[स० द्वि] दूसरा। अन्य। अपर।
पु० शत्रु। (डि०)
†पु०=बीया (बीज)।

बियाज†—पु०=ब्याज (१ सूद २ बहाना)।

बियाजू†—वि०[स० व्याज+ऊ]२ ब्याज या सूद-सबधी। २ ब्याज के रूप मे या ब्याज पर दिया जानेवाला (धन)।

बियाड—पु०[हिं० बिया+ड (प्रत्य०)]वह खेत जिसके पौधे उखाडकर अन्य खेतों मे रोपे जाने को हों।

बियाध (धा)†— पु०=व्याध (बहेलिया)।

बियाधि†—स्त्री०=व्याधि।

बियान—पु०[हिं० बियाना] बियाने अर्थात् बच्चा देने की क्रिया या भाव। प्रसव।

बियाना—स०=ब्याना (पशुओं का बच्चा देना)।

बियापना—अ०[स० व्याप्त] व्याप्त होना।

बियावान—पु०[स० वि+आप् (जल-रहित) से फा०] जगल। वन।

बियावानी—वि० [फा०] १. बियावन का जगल-सबधी। २ जगली।

बियारी†—स्त्री०=ब्यालू (रात का भोजन)।

बियारू—स्त्री०=ब्यालू।

बियारा—पु० =ब्यालू।

बियालू—स्त्री० =ब्यालू (रात का भोजन)।

बियाव†—पु० १. बियान। २ बिवाह।

बियाउर—वि० स्त्री० [हिं० बियाना=बच्चा देना] (मादा जीव या पशु) जो गाभिन हो और जल्दी ही बच्चा देने को हो। जैसे—बियाउर गाय या भैंस।
पद—परसु बियाउर। (देखें)

बियाह†—पु० =बिवाह।

बियाहता†—वि० =ब्याहता।

बियाहना*—स० [हिं० ब्याह] ब्याह करना।

बियाहा†—वि० [सं० विवाहित] [स्त्री० बियाही] जिसका विवाह हो चुका हो।

बियो—पु० [डि०] बेटे का बेटा। पोता।

बियोग†—पुं० =वियोग।

बिरंग (१)—वि० [सं० विरंग] [स्त्री० बिरंगी] १ कई रंगोंवाला। २ बिना किसी प्रकार के रंग का। वर्णहीन।

बिरंचना —स० =विरचना।

बिरंज—पु० [फा०] १ चावल। २ पका हुआ चावल। भात।

बिरंजी—स्त्री० [?] लोहे की छोटी कील। छोटा कांटा।
वि० [फा० बिरंज] चावल या भात सम्बन्धी।

बिरई†—स्त्री० [हिं० बिरवा] १. छोटा पौधा। २ जड़ी-बूटी।

बिरख†—पु० वृक्ष।

बिरखभ—पु० =वृषभ (बैल)।

बिरखा†—स्त्री० वर्षा।

बिरगिड—पुं० [अ० ब्रिगेड] सेना का एक विभाग जिसमें कई रेजिमेंट या पलटनें होती हैं।

बिरचना*—स० [सं० विरचन] रचना। बनाना।
अ० [सं० वि+रुचि] १ मन उचटना। ऊबना। उदा०—बिरचो किहि दोष न जानि सकों जु गयो मन मो तनि गोरन तें।—घनआनंद।
२ अप्रसन्न होना। नाराज होना।

बिरछ—पु०=वृक्ष।

बिरछिक—पु०=वृश्चिक।

बिरज†—पु०=व्रज।

बिरजफूल—पु०[?] एक प्रकार का जडहन—धान।

बिरझना—अ०[स० विरुद्ध]१ उलझना। २ झगडना।

बिरझाना—स० [हिं० बिरझाना]१ उलझाना। २ लडाई झगडे मे किसी को प्रवृत्त करना।
†अ०=बिरझना।

बिरतत†—पु०=वृत्तात।

बिरतात†—पु०=वृत्तात।

बिरता—पु०=बूता (सामर्थ्य)।

बिरताना†—स० =बरताना।

बिरतिया—पु०[स० वृत्ति+इया (प्रत्य०)]१ वह व्यक्ति (विशेषत नाई या भाट) जो एक पक्ष की ओर से दूसरे पक्षवालों के यहां वैवाहिक सबध स्थिर करने के लिए तथा उनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति

का पता लगाने के लिए भेजा जाता था। २ वह जो दान, पुण्य आदि प्राप्त करके जीविका चलाता हो।

बिरया†—अव्य०=वृथा (व्यर्थ)।
†वि०=वृथा (निरर्थक)।

बिरद—पु०=विरुद (यश)।
वि०=बिरद (दतहीन)।

बिरदैत—पु०[हिं० बिरद+ऐत (प्रत्य०)] कीर्तिवान योद्धा। यशस्वी वीर।
वि० प्रसिद्ध। मशहूर।

बिरध†—वि०[स्त्री० बिरधा]=वृद्ध।

बिरधाई—स्त्री०[हिं० वृद्ध+आई (प्रत्य०)] वृद्धावस्था। बुढापा।

बिरधापन—पु०[स० वृद्ध+हिं० पन (प्रत्य०)]वृद्ध होने की अवस्था या भाव। बुढापा।

बिरमना—अ०[स०विरमण]१ किसी पर आसक्त या मोहित होकर उसके प्रेमपाश मे फँसना या फँसकर उसके पास रुक जाना। २ विलब करना। देर लगाना।
अ०[स० विराम]१. विराम करना। ठहरना। २ आराम करना। सुस्ताना। ३ अलग होना। उदा०—अपने कृत तैं ही नहिं बिरमत। —सूर।

बिरमाना—स०[हिं० बिरमना का स० रूप] १ किसी को बिरमने मे प्रवृत्त करना। (दे० 'बिरमना') २ किसी को अपने पर आसक्त या मोहित करना। ३ (समय) गुजारना। बिताना।
†अ० दे० 'बिरमना'।

बिरला—वि० [स० विरल] [स्त्री० बिरली] १.जो सब जगह या अधिकता से नही, बल्कि कमी-कमी और कही-कही दिखाई देता या मिलता हो। इक्का-दुक्का। जैसे—उसका स्वभाव भी कुछ बिरला ही है। २ अनेक या बहुतो मे से ऐसा ही कोई जिसमे किसी विशिष्ट काम को करने की समर्थता तथा साहस होता है। जैसे—कलियुग मे परोपकारी कोई बिरला ही होता है।
विशेष—इसके साथ 'ही' का प्रयोग होता है।

बिरव—पु०=बिरवा।

बिरवा—पु०[स० विटपक, प्रा० बिरवआ]१ वृक्ष। पेड। २ पौधा। उदा०—होनहार बिरवान के, होत चीकने पान।—३ चना। बूट।

बिरवाही—स्त्री०[हिं० बिरवा+ही (प्रत्य०)]१ वह स्थान जहाँ बहुत से पेड-पौधे हो। २ वह स्थान जहाँ छोटे-छोटे पौधे बिक्री, रोपाई आदि के लिए उगाये जाते हो।

बिरषभ†—पु०=वृषभ।

बिरष्य—पु० [स० वृक्ष] पेड़।

बिरस*—वि०[स० विरस] जिसमे रस न हो। रसहीन।
पु०१. रस (प्रेम) का अभाव। २ जहर। विष। (डिं०) ३. अनबन। बिगाड़।

बिरसना†—अ०[स० विलास]१ विलास करना। २ भोगना।

बिरह†—पु०=विरह।

बिरहना†—स० [स० विराधन] १ खडित करना। तोडना-फोडना। २ नष्ट करना।
अ०१ खडित होना। २ नष्ट होना।

बिरहा—पु०[स० विरह]भोजपुरी बोली मे, दो पक्तियोवाला एक प्रसिद्ध लोकछद।

बिरहागि—स्त्री०[सं० विरह+हिं० आग] विरह के कारण प्रिय (या प्रेयसी) को होनेवाली हार्दिक पीडा या कष्ट।

बिरहाना*—अ०[सं० विरह]विरह-व्यथा का अनुभव करना। उदा०—राधा विरह देख बिरहानी।—सूर।

बिरही†—पु०=विरही।

बिरहुला—पु०[पा० विरूल्हक=नाग] [स्त्री० बिरहुली] सर्प। साँप। उदा०—बोइनी सातो बीज बिरहुली।—कबीर।

बिरहुली—स्त्री०[हिं० बिरहुला का अल्पा० स्त्री० रूप] १ सर्पिणी। २ साँप के काटने पर उसका विष उतारने का मत्र।

बिरागना*—अ० [स० विराग] १ विरक्त होना। २ सन्यास ग्रहण करना।

बिराजना—अ०[स० वि+रजन] १ शोभित होना। शोभा देना। उदा०—सीस मोतियन का सेहरा बिराजै।—गीत। २. बैठना। (आदरसूचक) जैसे—आइए, बिराजिए। उदा०—राज-सभा रघुराज बिराजा।—तुलसी। ३. स्थित होना। जैसे—उनके मुख पर सदा राम नाम बिराजता है।

बिरादर—पु०[फा० बरादर] भाई। भ्राता।

बिरादराना—वि० [फा० बरादरान] (व्यवहार)जैसा भाइयो मे होता या होना चाहिए। भाइयो जैसा।

बिरादरी—स्त्री०[फा० बरादरी] १ भाईचारा बधुत्व। २ ऐसे लोगों का दल या वर्ग जिनमे परस्पर बधुत्व या भाईचारे का व्यवहार होता हो। ३ विशेषत किसी एक ही जाति या वर्ग के वे सब लोग जो सामाजिक उत्सवो पर एक दूसरे के यहाँ आते-जाते हो। जैसे—हिन्दुस्तानी बिरादरी।

बिरान†—वि०=बिराना (पराया)।
वि०=वीरान।

बिराना—स०[स० विरव या अनु० ?]किसी को चिढाने या हास्यास्पद बनाने के लिए उसकी आकृति को बिगाडकर या उसकी मुद्रा का विलक्षण अनुकरण करना। जैसे—किसी का मुँह बिराना।
वि०=बेगाना (पराया)।

बिराम†—वि०[हिं० बे+आराम] १ बीमार। रोगी। २ बेचैन। विकल।
पु०=विराम।

बिराल—पु०=बिड़ाल।

बिरावना—स०=बिराना।

बिरास†—पु०=विलास।

बिरासी—वि०=विलासी।

बिरिख—पु०=वृक्ष। २.=वृष।

बिरिछ†—पु०=वृक्ष।

बिरिध†—वि०=वृद्ध।

बिरियाँ—स्त्री०[हिं० वेला]१ समय। वक्त। वेला।
स्त्री०[स० वार]१ बार। दफा। मरतबा। २ पारी। बारी।

उदा०—मेरी बिरियाँ बिरह कितै बिसरायौ।—सूर।

बिरिया—स्त्री०[हिं० बाली]१. छोटी कटोरी के आकार का एक गहना जो कान में पहना जाता है। पश्चिमी जिलों में इसे 'ढार' भी कहते हैं। २. चरखे के बेलन में की कपड़े या लकड़ी की वह गोल टिकिया जो इस हेतु लगाई जाती है कि चर्खे की मूठी खूँटे में रगड़ न खाय।

†स्त्री०=बिरियाँ।

बिरियानी—स्त्री०[फा०] एक प्रकार का नमकीन पुलाव।

बिरी†—स्त्री०=बीड़ी।

बिरुआ—पु०[देश०] एक प्रकार का राजहंस।

बिरुझना—अ०[स० विरुद्ध या हिं० उलझना]१. उलझना। २. झगड़ा करना। झगड़ना।

बिरुझाना—स०[हिं बिरुझना] १ उलझाना। २. लोगों में झगड़ा करना।

†अ०=बिरुझना।

बिरुद†—पु०=विरुद (यश)।

बिरुदैत—पु०=बिरदैत।

बिरुधाई—स्त्री०=वृद्धावस्था।

स्त्री० [स० विरुद्ध] विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विरोध।

बिरूप—वि०=विरूप।

बिरोग—पु०[स० वियोग]१. वियोग। २. दुःख। ३. चिंता।

बिरोगी—पु०[स्त्री० बिरोगिन]=वियोगी।

बिरोजा—पु० दे० 'गंधा बिरोजा'।

बिरोधना—अ० [स० विरोध] १. (किसी व्यक्ति या बात का) विरोध करना। २. किसी से विरोध या शत्रुता करना। ३ मार्ग अवरुद्ध करना।

बिरोलना—स०=बिलोडना।

बिरोना†—स०=बिलोडना।

बिरौनी—स्त्री० [?] कोदों, बाजरे आदि के खेतों में होनेवाली एक प्रकार की जोताई जो उनके अंकुरित होने पर की जाती है।

बिर्छ*—पु०=वृक्ष।

बिर्ध*—वि०=वृद्ध।

बिलंगी—स्त्री०=अलगनी।

बिलंद†—वि० [फा० बुलंद] १ जो बुरी तरह पराजित या विफल हुआ हो। २ दे० 'बुलंद'।

बिलदना—अ० [हिं० बिलद] १. नष्ट होना। २. हारना।

स० १. नष्ट करना। २. हराना।

बिलंदा—वि० [हिं० बिलदना] १. नष्ट-भ्रष्ट। २. पराजित। ३. भ्रष्ट या हीन चरित्रवाला।

बिलंब—पु०=विलंब।

बिलंबत†—वि०=विलंबित।

बिलंबना—अ० [स० विलंब] १ विलब करना। देर करना। २ ठहरना। रुकना।

अ०=बिरमना।

बिलंबी—पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।

बिल—पु० [स०√बिल् (भेदन)+क] १. जमीन में, तल से नीचे की ओर गया हुआ वह खोखला मार्ग या स्थान जिसे कीड़े-मकोड़े, चूहे आदि ने अपने रहने के लिए बनाया होता है।

मुहा०—बिल ढूँढ़ते फिरना—अपनी रक्षा का उपाय ढूँढ़ते फिरना। बहुत परेशान होकर अपने बचने की तरकीब ढूँढ़ना। (व्यंग्य)

पु० [अं०] १. वह पुरजा जिसमें उन वस्तुओं का विवरण तथा मूल्य लिखा रहता है जो किसी के हाथ बेची गयी हों या उन सेवाओं का विवरण हो जिनका पारिश्रमिक प्राप्य हो। प्राप्यक। २ दे० 'विधेयक'।

बिलकना†—अ० =बिलखना।

बिलकारी (रिन्)—पुं० [सं० बिल√कृ (करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] चूहा।

वि० बिल में रहनेवाला।

बिलकुल—अव्य० [अ० बिलकुल] १. जितना हो, उतना सब। कुल। सब। सारा। जैसे—उसका हिसाब बिलकुल साफ कर दिया गया। २. निरा। निपट। जैसे—यह तो बिलकुल बेवकूफ है। ३ बिना कुछ भी बाकी छोड़े हुए। ४. कुछ भी। तनिक भी। जैसे—मैंने बिलकुल देखा ही नहीं।

बिलखना—अ० [स० विकल या विलाप] १. विलाप करना। रोना। २. रोते अथवा संतप्त होते हुए निरंतर अपने दुःख की चर्चा करना।

अ० [?] संकुचित होना। सिकुड़ना।

बिलखाना—स० [हिं० बिलखना का स०] ऐसा काम करना जिसमें कोई बिलखे। बहुत ही दुःखी या संतप्त करना।

†अ०=बिलखना। उदा०—बिगसित कंज, कुमुद बिलखाने।—तुलसी।

बिलग—वि० [हिं० बिलगाना] अलग। पृथक।

पु० १. बिलग अर्थात् अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। २. परकीय होने की अवस्था या भाव। परायापन। ३ पार्थक्य आदि के कारण मन में होनेवाला कुभाव या दुर्भाव। उदा०—देवि करौं कछु बिनय सो बिलगु मानब। तुलसी।

क्रि० प्र०—मानना।

बिलगना—अ० [स० विलग्न] अलग या पृथक होना।

बिलगाऊ—वि० [हिं० बिलग+आऊ (प्रत्य०)] अलग या पृथक् करनेवाला।

बिलगाना—अ०[हिं० बिलग+आना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।

स० १. अलग या पृथक करना। २. चुनना। छाँटना।

बिलगाव—पु०[हिं० बिलग+आव (प्रत्य०)] बिलग या अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य।

बिलगी—पु०[देश०] एक प्रकार का संकर राग।

बिलच्छन†—वि०=विलक्षण।

बिलछना†—अ०[सं० लक्ष] लक्ष करना। ताड़ना।

बिलटना†—अ० [स० विलुठन]१. उलटा या विपरीत होना। उदा०—विधि ही बिलटती दीखती है नियत नरकुल कर्म की।—मैथिली शरण। २ तहस-नहस होना। विनष्ट होना। ३ परीक्षा, प्रयत्न आदि में विफल होना।

†स०=बिलटाना।

बिलटाना—स०[हिं० बिलटना]१ उलटा या विपरीत करना। २. तहस-नहस या विनष्ट करना।

बिलटी—स्त्री० [अ० बिलेट] रेल से भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पानेवाले को वह माल मिलता है।

बिलना—अ०[हिं० बेलना का अ०] बेला जाना।

बिलनी—स्त्री०[हिं० बिल]१. काली भौरी जो दीवारो या किवाडों पर अपने रहने के लिए मिट्टी की बाँबी बनाती है। २ आँख पर होनेवाली गुहाजनी नाम की फुसी।

बिलपना—अ०[स० विलाप] विलाप करना। रोना।

बिल-फर्ज—अव्य०[अ०] यह फर्ज करते हुए। यह मान कर।

बिलफेल—अव्य० [अ०]वर्तमान अवस्था मे। इस समय। अभी। सप्रति।

बिलबिलाना—अ०[अनु०] १. छोटे-छोटे कीडो का इधर-उधर रेंगना। २ विकल होकर बे-सिर पैर की बातें करना। प्रलाप करना। ३ विलाप करना। रोना-चिल्लाना। ४ दे० 'बलबलाना'।

बिलम|—पु०=बिलब।

बिलमना—अ०[स० बिलब] बिलब करना। देर करना।

अ०[स० विरमण] किसी के प्रेम-पाश मे बंधकर कही ठहर या रुक जाना।

बिलमाना—स० [हिं० बिलमना का स०]१ ऐसा काम करना जिससे कोई बिलमे। उदा०—भाव बुद्धि के सोपानो मे बिलमाये न हृदय मन।—पन्त।

स०[स० विरमण] किसी को अपने प्रेम-पाश मे बाँधकर ठहरा या रोक रखना।

बिललाना—अ०[स० विलाना अथवा अनु०]१. बिलखकर रोना। विलाप करना। २ विकल होकर असबद्ध प्रलाप करना।

बिलल्ला—वि०[हिं० लल्ला (बच्चा) का अनु०] [स्त्री० बिलल्ली] जिसे कुछ भी बुद्धि या शऊर न हो। निरा मूर्ख।

बिलवाना—स०[हिं० बिलाना का स०] १ विलीन कराना। २. गुम कराना। खोवाना। ३. नष्ट या बरबाद कराना। ४ छिपवाना। लुकवाना।

सयो० क्रि०—देना।

स०[हिं० बेलना का स०] किसी से बेलने का काम कराना।

बिलवारी|—स्त्री०[?] बुदेलखड मे कुआर मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बिल-वास—वि० [स० ब० स०] दे० 'बिलकारी'।

बिलवासी (सिन्)—वि० [स० बिल√वस् (निवास)+ णिनि, दीर्घ, नलोप] दे० 'बिलकारी'।

बिलशय—वि०[स० बिल√शी (शयन करना) +अच्] बिल में रहने-वाला।

पु० बिल मे रहने वाला जन्तु ।

बिलशायी (यिन्)—वि०[स० बिल √शी (शयन रना)+ णिनि, दीर्घ नलोप] बिल मे रहनेवाला।

बिलसना—अ०[स० विलसन] विशेष रूप से शोभा देना। बहुत भला जान पडना।

स० उपयोग मे लाना। भोग करना। भोगना। जैसे—सपत्ति या सुख बिलसना।

बिलसाना—स०[हिं० बिलसना का स०] किसी को बिलसने मे प्रवृत्त करना।

बिलस्त|—पु०=बालिश्त।

बिलहरा—पु०[हिं० बेल ?] बाँस की पतली तीलियों का बना हुआ एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमे पान के बीडे बनाकर रखे जाते हैं।

बिला—अव्य०[अ०] बिना। बगैर।

बिलाई—स्त्री०[स० बिड़ाल]१ बिल्ली। २ सिटकिनी। ३. सतों की परिभाषा मे, बुरी बुद्धि। कुबुद्धि। ४. दे० 'बिलैया'।

बिलाई कंद—पु०=बिदारी कद।

बिलाना—अ०[स० विलायन]१. विलीन होना। न रह जाना। २. नष्ट या बरबाद हो जाना। ३. छिपना । लुकना।

बिलापना*—अ० [स० विलाप] विलाप करना।

बिलार—पु०[स० बिडाल] [स्त्री० बिलारी] बिल्ला। मार्जार।

बिलारी|—स्त्री०=बिल्ली।

बिलारी कंद—पु० [स० विदारी कंद] एक प्रकार का कद। दे० 'बिदारी कद'।

बिलाव—पु० दे० 'बिलार'।

बिलावर|—पु०=बिल्लौर।

बिलावल—पु०[देश०] षाड्व-सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर मे गाया जाता है।

बिलासखानी टोडी—स्त्री० [बिलास खाँ (व्यक्ति) +हिं० टोड़ी] सगीत मे एक प्रकार की टोड़ी रागिनी।

बिलासना—स०[सं० विलसन]१. भोग करना। भोगना। २. विलास या आनंद-मगल करना।

बिलिंबी—स्त्री०[मलाया० बलिंबा] एक प्रकार की कमरख का फल या उसका पेड।

बिलियर्ड—पुं०[अ०] एक तरह का पाश्चात्य खेल जो लाल, सफेद तथा चितकबरे रग के तीन गेंदों और लबी छडियो की सहायता से एक विशेष आकार-प्रकार की मेज पर खेला जाता है।

बिलिया—स्त्री०[देश०] गाय, बैल आदि के गले की एक बीमारी।

स्त्री० हिं० बेला (कटोरा) का अल्पा० स्त्री०।

बिलिश—पु०[?] १ मछली फँसाने का काँटा। २ उक्त मे लगाया जानेवाला चारा।

बिलुठना|—अ०=लोटना।

बिलुलित—वि०[स० विलुलित]अस्तव्यस्त। उदा०—बिलुलित अलक धूरि-धूसर तन, गमन लोट भुव आवनि ?—ललित किशोरी।

बिलूर|—पुं०= बिल्लौर।

बिलैया—स्त्री०=[हिं० बिल्ली]१. बिल्ली।

पद—बिलैया दंडवत्=केवल दिखाने के लिए बिल्ली की तरह बहुत ही झुककर किया जानेवाला नमस्कार। बिलैया भगत=वह जो केवल दूसरो को दिखाने के लिए भक्तो का सा वेश धारण किये हो।

२ लकडी का वह छोटा टुकडा जो अन्दर से दरवाजा फसने के लिए लगाया जाता है और आवश्यकतानुसार उठाया तथा गिराया जा सकता है। काठ की सिटकिनी। कुत्ता। ३ कुएँ मे गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा जो प्राय. लोहे का बनता है। ४ कद्दूकश। (देखें)

विलोकना—स०[सं० विलोकन] १. अच्छी तरह या ध्यानपूर्वक देखना। २ जांच-पड़ताल करने के लिए अच्छी तरह देखना।

विलोकनि—स्त्री०[सं० विलोकन] देखने की क्रिया या भाव। कटाक्ष। दृष्टिपात।

विलोड़ना—स०=विलोना।

विलोन—वि०[सं० वि+लावण्य]=विलोना।

विलोना—स०[सं० विलोडन]१. किसी तरल पदार्थ में कोई चीज डालकर अच्छी तरह हिलाना। २. घघोलना। ३ चीजें इधर-उधर करना। अस्त-व्यस्त करना। ४. (आँसू) गिराना या बहाना।

वि० [हिं० वि+लोन=नमक][स्त्री० विलोनी] १. जिसमें नमक न पड़ा हो। बिना नमक का। अलोना। उदा०—लोनि विलोनि तहाँ को कहाँ—जायसी। २. लावण्य या सौन्दर्य से रहित। कुरूप। भद्दा। ३ नीरस। फीका।

बिलोरना—स०=विलोना।

विलोलना—अ०[सं० विलोलन] इधर-उधर लहरें मारना।

स० इधर-उधर हिलाना। लहराना।

विलोवना—स०=विलोना।

बिलौर—पु०=विल्लौर।

विल्कुल—अव्य०=बिलकुल।

विल्मुक्ता—वि०[अ० बिल्मुक्त] सब फुटकर मदों को मिलाकर एक में किया हुआ। जैसे—आय विल्मुक्ता सौ रुपए दे, सब हिसाब साफ हो जायँगे।

पु० मध्ययुग में लगान का वह प्रकार जिसमें सब मदों के लिए एक साथ कुछ निश्चित रकम दे दी जाती थी।

बिल्ला—पु०[सं० बिडाल] [स्त्री० बिल्ली] बिल्ली का नर।

पु०[सं० पटल ?] कपड़े आदि की वह चौड़ी पट्टी जो कुछ विशिष्ट प्रकार का काम करनेवाले लोग अपनी पहचान के लिए छाती पर लगाते या बाँह पर बाँधते है। जैसे—स्वय-सेवकों का बिल्ला, कुलियों या चपरासियों का बिल्ला।

बिल्ली—स्त्री०[सं० बिडाल, हिं० बिलार] १. चीते, शेर आदि की जाति का, पर अपेक्षया बहुत ही छोटे आकार का एक प्रसिद्ध जन्तु जो प्राय. घरों में पाला जाता है।

मुहा०—बिल्ली के गले में घंटी बाँधना=किसी काम का सबसे कठिन अंश पूरा या संपादित करना।

२. किवाड़ की सिटकिनी जिसे कोढ़े में डाल देने से ढकेलने पर किवाड़ नहीं खुल सकता। ३. भारतीय नदियों में पाई जानेवाली एक प्रकार की मछली।

बिल्ली लोटन—स्त्री० [हिं० बिल्ली+लोटना] एक प्रकार की बूटी जिसकी गंध से बिल्ली मस्त होकर लोटने लगती है।

बिल्लूर—पु०=बिल्लौर।

बिल्लौर—पु० [सं० वैदूर्य्य प्रा० वेलुरिय मि० फा० बिल्लूर] [वि० बिल्लौरी] १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पत्थर जो शीशे के समान पारदर्शी होता है। स्फटिक। (क्रिस्टल) २. उक्त की तरह स्वच्छ और बढ़िया शीशा।

बिल्लौरी—वि०[हिं० बिल्लौर] १. बिल्लौर-संबंधी। २. बिल्लौर पत्थर का बना हुआ। ३. बिल्लौर की तरह चमकीला सफेद और स्वच्छ। जैसे—बिल्लौरी चूड़ियाँ।

बिल्व—पु०[सं०] बेल का वृक्ष और फल।

बिल्वपत्र—पु०[सं०] बेल के वृक्ष के पत्ते जो पवित्र मानकर शिवजी पर चढ़ाये जाते हैं।

बिल्हण—पु०[सं०] कश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि जिसने 'विक्रमांक देव चरित' की रचना की थी।

बिवरना—स०[सं० विवरण]१. एक में उलझी या गुथी हुई वस्तुओं को अलग-अलग करना। सुलझाना। जैसे—कंघी से सिर के बाल बिवरना। २. पूरा विवरण देना या बतलाना। ३. साफ करना। स्वच्छ करना। उदा०—बिवरौ काया, पावौ सिद्धि।—गोरखनाथ।

अ०१. सुलझाना। २. विवरण से युक्त या विस्तृत होना।

बिवराना—स०[हिं० बिवरना का प्रे०] १. आपस में उलझी या गुथी हुई चीजों को अलग अलग कराना। सुलझवाना। जैसे—बाल बिवराना। २ विवरण सहित वर्णन कराना।

बिवसाइ†—पु०=व्यवसायी।

बिवाई—स्त्री० [सं० विपादिका] एक रोग जिसमें प्राय जाड़े के दिनों में पैर के तलुए का चमड़ा फट जाता या उसमें छोटे-छोटे घाव हो जाते हैं।

बिवान†—पु०=विमान।

बिशप—पु०[अं०] मसीही धर्म का आचार्य।

बिश्नी†—पु०=बिसनी।

बिषान†—पु०=विषाण।

बिषारा†—वि०[सं० विष+आरा (प्रत्य०)] जहरीला। विषाक्त।

बिषिया*—स्त्री०=विषया।

बिसंच—पु०[सं० वि-संचय]१ संचय का अभाव। वस्तुओं की सँभाल न रखना। २ उपेक्षा। लापरवाही। ३ कार्य में होनेवाली बाधा या हानि। ४. अमांगलिक या अशुभ बात की आशंका।

बिसंभर—वि०[सं० वि+हिं० सँभार] १. जो ठीक स्थिति में रह या सँभल न सके। २ (व्यक्ति) जो अपने आप को सँभाल न सके। असावधान। ३. गाफिल। बेहोश। उदा०—राघौ मारा बीजुरी। बिसँभर कछु न सँभार।—जायसी।

बिसंभर†—पु०=विश्वम्भर।

बिसँभार—वि०[सं०वि+हिं० सँभार] जिसे तन-बदन की खबर न हो। गाफिल।

बिस—पु०[सं० विष] जहर। विष।

पद—बिस की गाँठ=ऐसा पदार्थ या व्यक्ति जिससे सदा बहुत बड़ा अपकार, अहित या हानि ही होती हो। बहुत अधिक अनर्थों, दोषों आदि का मूल।

बिसकरमा†—पु०=विश्वकर्मा।

बिसकुसुम—पु०[मध्यम० सं०] पद्म पुष्प।

बिस-खपरा—पु०[सं० विष+खर्पर]१. गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु। २. एक प्रकार की जड़ी या बूटी जिसकी पत्तियाँ बन-गोभी की सी पर कुछ अधिक हरी और लंबी होती है। ३. गदहपूरना। पुनर्नवा।

बिसखापर—पु०=विसखपरा।
बिसखोपडा†—पु०=विस-खपरा।
बिसटी—स्त्री०[देश०] वेगार। (डि०)
बिसतरना—स०[सं० विस्तरण] विस्तार करना। बढाना। फैलाना।
अ०=विस्तृत होना।
बिसतार†—पु०=विस्तार।
बिसथार*—पु०=विस्तार।
बिसद†—पु०=विशद।
बिसन†—पु०=व्यसन।
बिसनी—वि०[स० व्यसनी] १ जिसे किसी बात का व्यसन हो। किसी काम या बात का शौकीन।
पु०१ छैला। २ दुर्व्यसनी। ३ वेश्यागामी। रडीबाज।
बिसमउ†—पु० [स० विस्मय]१ आश्चर्य। ताज्जुब। २. दु ख। रज। —हरप समय बिसमउ कत कीजै।—तुलसी।
बिसमरना—स०[स० विस्मरण] विस्मृत करना। भूल जाना।
बिसमय†—पु०=विस्मय।
बिसमाद*—पु०=विषाद। उदा०—तहँ बिसमाद बीच मुख सोहै।—नूर मुहम्मद।
बिसमिल—वि०=विस्मिल।
बिसमिल्ला (ह)—अव्य०=विस्मिल्लाह।
बिसयक—पु०[स० विषय] १. देश। प्रदेश। २. छोटा राज्य। रियासत।
बिसरना—अ०[स० विस्मरण, प्रा० विम्हरण, विस्स]विस्मृत होना। भूलना।
स० विस्मृत करना। भुला देना।
बिसरात—पु०[स० वेशर] खच्चर।
बिसराना—स०[हिं० बिसरना] विस्मृत करना। भुला देना।
बिसराम†—पु०=विश्राम।
बिसरामी—वि०[स० विश्राम] १. विश्राम करने या देनेवाला। २. सुखद। ३ किसी के साथ रहकर सुख भोगनेवाला।
बिसरावना†—स०=बिसराना।
बिसवा—पु०=विस्वा।
*स्त्री०=वेश्या।
बिसवार—पु०[स० विषय=वस्तु+हिं० वार (प्रत्य०)] वह पेटी जिसमे नाई हजामत का सामान रखते है। किसवत।
बिसवास†—पु०=विश्वास।
बिसवासी—वि०[स० विश्वासिन्] [स्त्री० बिसवासिनी] १ जो विश्वास करे। २ जिस पर विश्वास हो। विश्वसनीय।
वि०[स० अविश्वासिन्] १ जिस पर विश्वास न हो। २ विश्वासघाती। उदा०—पै यह पेट भएउ बिसवासी।—जायसी।
बिससना—स० [स० विश्वसन] विश्वास करना।
स० [स० विशसन] १ मार डालना। वध करना। खतम करना। २ शरीर के अग काटना। ३ काटकर टुकडे टुकडे करना।
बिसहना†—स०=बिसाहना।
बिसहर—पु०=विषधर (साँप)।
वि०=विषाक्त (जहरीला)।
बिसहरू†—पु० [हिं० बिसहना+रू (प्रत्य०)] मोल लेनेवाला। खरीददार। ग्राहक।
बिसहिनी—स्त्री० [?] एक प्रकार की चिडिया।
बिसा*—पु०=विस्वा।
बिसाख†—पु०=वैशाख।
स्त्री०=विशाखा (नक्षत्र)।
बिसात—स्त्री० [अ०] १ वह कपडा या चटाई जिस पर छोटे दूकानदार विक्री की चीजे फैलाकर रखते है। २. वह कपडा, कागज आदि जिस पर चौपड, शतरज आदि खेलने और गोटियो, मोहरे आदि रखने के लिए खाने बने होते है। ३ धन सपत्ति, आदि के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। औकात। बिन्ना। हैसियत। ४ पास मे होनेवाला धन। जमा। पूँजी। ५. शारीरिक शक्ति, योग्यता आदि के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। ६ कुछ ग्रहण या धारण करने के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। समाई।
बिसात-खाना—पु० [अ० बिसातखान] १ बिसाती की दुकान। २ बिसाती की दुकान पर बिकनेवाले सामानो का समूह।
बिसातबाना—पु० [हिं०] वे सब सामान जो बिसातियो की दूकानो पर मिलते है।
बिसाती—पु० [अ०] १ वह जो बिसात पर सामान फैलाकर बेचता हो। २ सूई, तागा, बटन, साबुन, तेल आदि फुटकर सामान बेचने, वाला दूकानदार।
बिसाना—अ० [स० वश] वश चलना। काबू या जोर चलना।
अ० [स० विष=विस+ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना। जहरीला होना।
स० विष से युक्त या जहरीला करना।
स०=बिसाहना (मोल लेना)।
बिसायँध—वि० [स० वसा=मज्जा, चरवी+गध] सडी मछली या मास की-सी गधवाला।
बिसारद†—पु०=विशारद।
बिसारना—स० [हिं० बिसरना] स्मरण न रखना। ध्यान मे न रखना। विस्मृत करना। भुलाना।
सयो० क्रि०—देना।
बिसारा—वि० [स० विषालु] [स्त्री० बिसारी] विष भरा। विषाक्त। जहरीला।
पु०=बिसायँध।
बिसास*—पु० १ =विश्वास। २ दे० 'विश्वासघात'।
बिसासी—वि० [स० अविश्वसिन्] [स्त्री० बिसासिन, बिसासिनी] १ जिस पर विश्वास न किया जा सके। २ कपटी। धोखेबाज।
पु० [स० विश्व+आशिन्] विश्व का भक्षक, अर्थात काल।
बिसाह—पु० [स० व्यवसाय] बिसाहने की क्रिया या भाव।
† विश्वास। (पश्चिम)
बिसाहन—पु० [हिं० बिसाहना] मोल लेने की वस्तु। काम की वह चीज जो खरीदी जाय। सौदा।
बिसाहना—स० [हिं० बिसाह] १. दाम देकर कोई वस्तु लेना।

२ मध्ययुग मे, किसी बडे जमीदार के अधीन रहनेवाला छोटा जमीदार।

बिस्वास†—पु०=विश्वास।

बिहंग†—पु०=विहग (पक्षी)।

बिहंगम—पु०=विहग (पक्षी)।

वि०=वेहगम (वेढब या भद्दा)।

बिहडना—स० [स० विघटना, पा० विहडन] १ खड-खडकर डालना। तोडना। २ काटना-छाँटना या चीरना-फाडना। ३ जोर से हिलाना। झकझोरना। उदा०—धाइ धार अपार वेग सो वायु विहडित।—रत्ना०। ४ मार डालना। वध करना। ५. नष्ट या वरवाद करना।

बिहँसना—अ० [स० विहसन] १ मद मद हँसना। मुस्कराना। २ हँसना। ३. फूलो आदि का खिलना। ४ प्रफुल्लित या प्रसन्न होना।

बिहँसाना—अ०=विहँसना।

†स०=हँसाना।

बिहँसौहाँ†—वि० [हिं० विहँसना] हँसता हुआ।

बिहा†—पु० [स० विधि] विधाता। उदा०—छत्रपति गयद हरि हस गति, विहि बनाय सचै सचिय। —चदवरदाई।

पु० [स० विद्ध या वेध] किसी चीज मे किया हुआ छेद। जैसे—नथ पहनने के लिए नाक का या वाली पहनने के लिए कान का विह; मूँगे या मोती को पिरोने के लिए उसमे किया जानेवाला विह।

बिहग†—पु०=विहग।

बिहडना—अ०, स०=विहरना।

बिहतर—वि०=वेहतर।

बिहतरी—स्त्री०=वेहतरी।

बिहद†—वि०=वेहद।

बिहबल—वि०=विह्वल।

बिहरना—अ० [स० विहरण] विहार करना। घूमना। फिरना। सैर करना।

स० [स० विघटन, प्रा० विहडन] १ फटना। दरकना। विदीर्ण होना। २ टूटना-फूटना।

स० १. फाड़ना। २. तोडना-फोडना।

बिहराना—स० [हिं० विहरना] विहरने मे प्रवृत्त करना।

†अ०=विहारना।

बिहरी†—स्त्री०=वेहरी (चदा)।

बिहाग—पु० [?] ओडव-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो आधी रात के बाद लगभग २ बजे के गाया जाता है। यह हिंडोल राग का पुत्र भी माना जाता है।

बिहागड़ा—पु० [सं० विहाग] सगीत मे बिहाग राग का एक प्रकार या भेद।

बिहान†—पु० [स० विभात, प्रा० विहाड, विहाण] १ सवेरा। प्रात काल। २. आनेवाला दूसरा दिन। आगामी कल।

पु०=बियान।

बिहाना—स० [स० वि+हा=छोडना] छोडना। त्यागना।

स०=बिताना (व्यतीत करना)।

बिहार—पु० [स० विहार] १. गणतत्र भारत का एक राज्य जो उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बगाल और आसाम राज्यो से घिरा है। २ दे० 'विहार'।

बिहारना—अ० [स० विहरण] विहार करना।

बिहारी—पु० [हिं० विहारी] विहार राज्य का निवासी।

स्त्री० विहार की बोली।

वि० १. बिहार-सम्बन्धी। विहार का। २ विहार मे होनेवाला।

बिहाल—वि०=वेहाल।

बिहास†—पु० [हिं० विसाह] १. व्यवसाय। २ व्यवसायी। व्यापारी।

बिहि*—पु०=विधि (ब्रह्मा)।

बिहित—वि०=विहित।

बिहिश्त—पु० [फा०] स्वर्ग। वैकुंठ।

बिहिश्ती—वि० [फा०] १. विहिश्त या स्वर्ग-सबधी। स्वर्गीय। ३. स्वर्ग मे होने या रहनेवाला।

पु० स्वर्ग का वासी।

†पु०=भिश्ती।

बिही—स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार का पेड जिसके फल अमरूद से मिलते-जुलते है। २. उक्त पेड का फल। ३. अमरुद। (क्व०)

स्त्री० [फा०] मलाई।

पद—विहीख्वाह=शुभ चितक। हितैषी।

बिहीदाना—पु० [फा०] बिही नामक फल का वीज जो दवा के काम मे आता है।

बिहीन†—वि०=विहीन।

बिहुँ—वि० [स० द्वि] दो। उदा०—कनक वेलि विहुँपान किरि।—प्रिथीराज।

बिहुँसन†—अ०=बिहसना।

बिहुरना†—अ०=बियरना (विखरना)।

बिहून—वि०=विहीन।

बिहोरना†—अ०=विछुडना।

बींझ—पु० [?] चना।

बींट†—पु० [?] घेरा। (राज०)

बींड़—पु० १. =वीडा। २ =वीड़ा।

स्त्री०=वीड।

बींड़ा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० बीडी] १ पेड की पतली टहनियो से बुनकर वनाया हुआ मेडरे के आकार का लंबा नाल जो कच्चे कुएँ मे भगाड की मजवूती के लिए लगाया जाता है। २ धान के पयाल को बुन और लपेटकर बैठने के लिए वनाया हुआ गोल आसन। ३. घास आदि को लपेटकर वनाई हुई गेंडुरी जिस पर घड़े रखे जाते हैं। ४. किसी चीज को लपेटकर बनाया हुआ गोला पिंड। लुडा। ५ कोई चीज वाँध या लपेटकर वनाया हुआ बोझ।

बींडिया†—पु० [हिं० वीडी] तीन बैलोवाली गाडी मे सवसे आगे जोता हुआ बैल।

बींडी—स्त्री० [हिं० बीडा] १ वह मोटी और कपडे आदि मे लपेटी हुई रस्सी जो उस बैल के आगे गले के सामने छाती पर रहती है जो तीन बैलो की गाड़ी मे सबसे आगे रहता है। २ रस्सी या सूत की वह पिंडी जो लकडी या किसी और चीज के ऊपर लपेटकर वनाई जाती

है। ३. वह लकडी जिस पर उक्त प्रकार से सूत लपेटा जाता है। ४. बोझ के नीचे रखने की गेंडुरी।

बींदना—स० [स० विद्] अनुमान करना।

स०=बीधना।

बींधन—स्त्री० [हिं० बीधना] १ बीधने की क्रिया या भाव। २. बीधने पर पडनेवाला चिह्न या निशान। ३. कठिनता। दिक्कत। उदा०—उसने अपनी कुछ बीधनें गिनाईं। वृन्दावनलाल वर्मा।

बींधना—स० [स० विद्ध] १ किसी चीज मे आर-पार छेद करने के लिए उसमे नोकदार चीज गडाना या धँसाना। विद्ध करना। छेदना। जैसे—कान बीधना, मोती बीधना। २ ऊपर से छेद करके अन्दर गडाना या धँसाना। जैसे—किसी के शरीर मे तीर बीधना। ३ बहुत ही चुभती या लगती हुई बात कहना। ४. उलझाना। फँसाना। (क्व०)

अ० १ विद्ध या आबद्ध होना। २ फँसा या उलझा रहना।

बी—स्त्री० [फा० बीबी का सक्षिप्त रूप] दे० 'बीबी'। उदा०—बडी बी, आपको क्या हो गया है?—अकबर।

बीका—वि० [स० वक्र] टेढा। वक्र।

मुहा०—बाल तक बीका न होना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना।

बीख†—पु० [?] पद। कदम। डग।

†पु०=विष।

बीग—पु० [स० वृक] [स्त्री० बीगिन] भेडिया।

बीगना—स० [स० विकिरण] १. छितराना। बिखेरना। २ फेंकना।

बीगहाटी—स्त्री० [हिं० बीघा+टी (प्रत्य०)] वह लगान जो बीघे के हिसाब से लिया जाता हो।

बीघा—पु० [स० विग्रह, प्रा० विग्गह] खेत नापने का एक वर्ग-मान जो बीस बिस्वे का होता है। एक एकड का ५/८वाँ भाग।

बीच—पु० [स० विच्=अलग करना] १ किसी वस्तु का वह केन्द्रीय अश या भाग जहाँ से उसके सभी छोर समान दूरी पर पडते हों। २. किसी वस्तु के दो छोरों के भीतर का कोई बिंदु या स्थान। जैसे—काशी से दिल्ली जाते समय इलाहाबाद, कानपुर और अलीगढ बीच मे पड़ते है।

पद—बीच खेत=(क) खुले मैदान। सबके सामने। प्रकट रूप मे। (ख) निश्चित रूप से। अवश्य। बीच बीच मे।=(क) रह-रहकर। थोडी थोडी देर मे। (ख) थोडी थोडी दूर पर।

†२ जगह। स्थान। जैसे—वहाँ तिल धरने को बीच नही है। ३. अन्तर। फरक।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

मुहा०—बीच डालना या पारना=पार्थक्य या भेद उत्पन्न करना। बीच रखना=मन मे पार्थक्य का भाव रखना। दूसरा या पराया समझना।

४ दो पक्षो मे झगडा या विवाद होने पर उसे निपटाने के लिए की जाने वाली मध्यस्थता।

पद—बीच बचाव=दो विरोधी पक्षो के बीच मे आकर दोनों पक्षो के हितो की की जानेवाली रक्षा।

मुहा०—बीच करना=(क) लडनेवालों को लडने से रोकने के लिए अलग-अलग करना। (ख) दो दलों या पक्षों का आपस का झगडा निपटाना।

५ दो वस्तुओं या खंडों के बीच का अन्तर या अवकाश। दूरी।

मुहा०—(किसी को) बीच मान या रखकर=(क) किसी को मध्यस्थ बनाकर। (ख) किसी को साक्षी बनाकर। जैसे—ईश्वर को बीच मानकर प्रतिज्ञा करना। बीच में कूदना=अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अडाना। बीच में पडना=(क) झगडा निपटाने के लिए मध्यस्थ बनना या होना। पच बनना। (ख) किसी का जमानतदार या जिम्मेदार बनना।

६. अवसर। मौका। उदा०—चतुर गंभीर राम महतारी। बीच पाइ निज बात सवाँरी।—तुलसी।

अव्य० दरमियान। अन्दर। मे।

स्त्री०=बीचि(लहर)।

बीचु—पु०=बीच।

बीचोबीच—क्रि० वि०[हिं० बीच] बिलकुल बीच मे। जैसे—सडक के बीचो बीच नही चलना चाहिए।

बीछना—स०[स० विचयन] १. चुनना। छाँटना। २ सबको अलग अलग करके देखना।

बीछी—स्त्री०[सं० वृश्चिक] बिच्छू।

मुहा०—बीछी चढ़ना=बिच्छू के डक का विष चढना। बीछी मारना=बिच्छू का अपने डक से किसी पर आघात करना। बिच्छू का काटना।

बीछू—पु०१.=बिच्छू। २=बिछुआ।

बीज—पु०[स० बीज] १ अन्न का वह कण जो खेत मे बोने के काम आता है।

क्रि० प्र०—उगना।—डालना।—बोना।

२ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसी आरभिक बात जो आगे चलकर बहुत बडा रूप धारण करती हो। ३ किसी काम, चीज या बात का मुख्य अथवा मूल कारण। ४. जड़। ५ कारण। सबब। हेतु। ६ वीर्य। शुक्र। ७ नाटच-शास्त्र मे अर्थ प्रकृति की पाँच स्थितियों मे से पहली स्थिति जो उसमे हेतु का सकेत करती है और जो आगे चलकर फल का कारण होता है। ८ वह भावपूर्ण अव्यक्त सांकेतिक वर्ण-समुदाय या शब्द जिसका अर्थ या आशय सब लोग न समझ सकते हों, केवल जानकार समझ सकते हों। ९ वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमे तत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।

पद—बीज-मंत्र=बीजाक्षर। (देखे)

१०. मत्र का प्रधान अश या भाग। ११. वह अक्षर या चिह्न जो कोई अज्ञात अथवा अव्यक्त राशि या सख्या सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है।

पद—बीजगणित। (देखें)

†स्त्री०=बिजली।

बीजक—पु०[स० बीजक] १. सूची। फिहरिस्त। २ वह सूची जिसमे किसी को भेजे जानेवाले माल का ब्यौरा, दर, मूल्य आदि लिखा रहता है। (इन्वॉयस) ३. वह सूची जो मध्य युग मे जमीन मे गाडी जानेवाली धन-सपत्ति के साथ प्राय धातु के पत्तर पर उत्कीर्ण कर रखी जाती थी और जिस पर गाडनेवाले का नाम, समय और धन सपत्ति

का विवरण अंकित रहता था। ४ किसी संत या महात्मा के प्रामाणिक पदो या वाणियो का संग्रह। जैसे—कबीर का बीजक, दरियादास का बीजक आदि। ५ वैद्यक मे, जन्म के समय बच्चे की वह अवस्था जब उसका सिर दोनों भुजाओ के बीच मे होकर योनिद्वार पर आ जाता है। ६ अनाजो, फलो आदि का दाना। बीज। ७. बिजौरा नीबू। ८ असना नामक वृक्ष।

बीज-कोश—पु० [सं० बीजकोश] वनस्पति का वह अंग जिसके अन्दर उसके बीज या दाने बंद रहते हैं।

बीजक्रिया—स्त्री० [सं० बीजक्रिया] बीजगणित के नियमानुसार गणित के किसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए की जानेवाली क्रिया।

बीजखाद—पु० [हिं० बीज+खाद] वह रकम जो मध्य युग मे जमींदारो, महाजनो आदि की ओर से किसानो को बीज और खाद आदि खरीदने के लिए दी जाती थी।

बीजगणित—पु० [सं० बीजगणित] गणित का वह प्रकार जिसमे अक्षरो को अज्ञात संख्याओ के स्थान पर मानकर वास्तविक मान या संख्याएँ जानी जाती है। (अल्जबरा)

बीजगर्भ—पु० [सं० बीज गर्भ] परवल्ली।

बीजगुप्ति—स्त्री० [सं० बीजगुप्ति] १ सेम। २. फली। ३ भूसी।

बीजत्व—पु० [सं०] 'बीज' होने की अवस्था या भाव। बीज-पन।

बीजदर्शक—पुं० [सं० बीजदर्शक] नाटको मे वह व्यक्ति जो नाटकों के अभिनय की व्यवस्था करता हो। परिदर्शक।

बीजद्रव्य—पु० [सं० बीजद्रव्य] किसी पदार्थ का मूल तत्व या द्रव्य।

बीजधान्य—पु० [सं० बीजधान्य] धनियाँ।

बीजन—पु० [सं० व्यजन] पखा।

पु० [हिं० बीजना] १ बीजने या बोने की क्रिया, ढंग या भाव। २. बीज।

बीजना—स० [हिं० बीज] १. किसी अनाज, पेड या पौधे का बीज बोना। २ किसी काम या बात का बीजारोपण करना।

†पु० [सं० व्यजन] पखा।

बीजपादप—पु० [सं० बीजपादप] भिलावाँ।

बीजपुष्प—पु० [सं० बीजपुष्प] १. मरुआ। २ मदन वृक्ष।

बीजपूर—पु० [सं० बीजपूर] १ बिजौरा नीबू। २ चकोतरा।

बीजपूरक—पु०=बीजपूर।

बीजबंद—पु० [हिं० बीज+बाँधना] खिरैंटी या बरियारे का बीज। बला।

बीजमंत्र—पु० [सं० बीजमंत्र] १ तंत्रशास्त्र मे, किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित किया हुआ मूल-मंत्र। २. कोई काम करने का वह ढंग जो सबसे सुगम हो और जिससे वह काम निश्चित रूप से पूरा होता हो। मूल-मंत्र। गुर।

बीजमातृका—स्त्री० [सं० बीजमातृका] कमलगट्टा।

बीजमार्ग—पु० [सं० ष० त०] वाममार्ग का एक भेद।

बीजमार्गी—पु० [सं० बीजमार्गी] बीजमार्ग पंथ के अनुयायी।

बीजरत्न—पु० [सं० बीजरत्न] उड़द की दाल।

बीजरी†—पु०=बिजली।

बीजरेचन—पु० [सं० बीजरेचन] जमालगोटा।

बीजल—पु० [सं० बीजल] वह जिसमे बीज हो।

वि० बीज-युक्त।

स्त्री० [हिं० बिजली] तलवार। (डिं०)

बीजवाहन—पु० [सं० बीजवाहन] शिव।

बीजवृक्ष—पु० [सं० बीजवृक्ष] असना का पेड।

बीजसि—स्त्री० [सं० द्वितीय] चांद्र मास की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज। उदा०—पड़वा आनंदा बीजसि चंदा पाँचौं लेया पाली—गोरखनाथ।

बीजसू—स्त्री० [सं० बीजसू] पृथ्वी।

बीजहरा—स्त्री० [सं० बीजहरा] १ एक डाकिनी का नाम। २. जादू-गरनी।

बीजाक प्रक्रिया—स्त्री० [सं० बीजाक प्रक्रिया] गुप्त रूप से पत्र आदि लिखने या समाचार भेजने की वह प्रक्रिया जिसमे अभिप्रेत अक्षरो के स्थान पर साकेतिक रूप से कुछ दूसरे ही अक्षर, चिह्न आदि अंकित किये अथवा कुछ विशिष्ट और असाधारण क्रम से रखे जाते हैं। (साइफर प्रोसिज्योर)

बीजांकुर—पु० [सं० बीजांकुर] बीज से निकलनेवाला अंकुर।

बीजांकुर न्याय—पु० [सं० बीजांकुर न्याय] तर्कशास्त्र मे वह स्थिति जिसमे यह पता न चले कि दो तत्त्वो मे से कौन किसका कारण या मूल है। जैसे—पहले बीज हुआ या वृक्ष अथवा पहले अंडा बना या चिड़िया।

बीजांड—पु० [सं० बीज+अंड] १ जीव-विज्ञान मे भ्रूण का वह आरम्भिक और मूल रूप जिसके विकसित होने पर भ्रूण का रूप बनता है। २. वनस्पति विज्ञान मे, बीज का आरम्भिक और मूल रूप। (ओव्यूल)

बीजा—वि० [सं० द्वितीया, पा० द्वितियो, प्रा० दुओ पु० हिं० दूज्जा] दूसरा।

†पु०=बीज।

बीजाक्षर—पु० [सं० बीजाक्षर] किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर।

बीजाख्य—पु० [सं० बीजाख्य] जमालगोटा।

बीजाध्यक्ष—पु० [सं० बीज-अध्यक्ष] शिव।

बीजारोपण—पु० [सं० बीज-आरोपण] १ खेत मे बीज बोना। २ छोटे रूप मे कोई ऐसा काम करना जिसका आगे चलकर बहुत बड़ा परिणाम हो।

बीजाश्व—पु० [सं० बीज-अश्व] कोतल घोड़ा।

बीजित—भू० कृ० [सं० बीजित] जिसमे बीज बोया जा चुका हो। बोया हुआ।

बीजी—वि० [सं० बीजिन्] १ बीज या बीजो से युक्त। जिसमे बीज हो या हो। २ बीज-संबंधी।

पु० पिता। बाप।

स्त्री० [हिं० बीज] १ फल के अंदर की गिरी। मींगी। २ फल की गुठली।

†स्त्री०=बिजली।

बीजुपात†—पु०=वज्रपात।

बीजुरी†—स्त्री०=बिजली।

बीजू—वि० [हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] १ (पौधा) जो बीज बोने से उगा हो। कलमी से भिन्न। २ (फल) जो उक्त प्रकार के पौधे या वृक्ष का हो। जैसे—बीजू आम, बीजू नीबू।

पु० १=बिज्जु। २.=बिज्जू।

वीजोदक—पु०[स० वीज-उदक] ओला।

वीज्य—वि०[स० वीज्य] १ अच्छे वीज से उत्पन्न। २ अच्छे कुल मे उत्पन्न। कुलीन।

वीझ*—वि० [?] घना। सघन।

वीझना†—अ०=वझना।

वीझा—वि०[स० विजन] (स्थान) जहाँ मनुष्य न हो। निर्जन। एकात। पु० निर्जन स्थान।

वीट—स्त्री० [स० विट्] १. पक्षियो की विष्ठा। चिड़ियों का गुह। २. गुह। मल। ३ बहुत ही तुच्छ या हेय वस्तु। (व्यग्य) पु०=विटलवण।

वीटिका—स्त्री०=वीटिका (पान का बीड़ा)।

वीठल—पु०=विट्ठल।

वीड—स्त्री०[स० वीट या वीटक] एक पर एक रखे हुए सिक्को का थाक। जैसे—रुपयो की बीड़।
पु०=वीड।

वीड़ा—पु०[स० वीटक] १ पान के पत्ते पर कत्था, चूना आदि लगाकर तथा उस पर सुपारी आदि रखकर उसे (पत्ते को) विशेष प्रकार से मोड़कर दिया जानेवाला तिकोना रूप। खीली। गिलौरी।
मुहा०—बीड़ा उठाना=कोई महत्त्वपूर्ण या विकट काम करने का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेना। बीड़ा डालना या रखना=कोई कठिन काम करने के लिए सभा मे लोगो के सामने पान की गिलौरी रखकर यह कहना कि जो इसका भार अपने ऊपर लेना चाहता हो, वह यह बीडा उठा ले।
विशेष—मध्य युग मे राज-दरबारो मे यह प्रथा थी कि जब कोई विकट काम सामने आता था, तब थाली मे पान का बीडा, सबके बीच मे रख दिया जाता था। जो व्यक्ति वह काम करने का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेने को प्रस्तुत होता था, वह पान का बीडा उठा लेता था। इसी से उक्त मुहा० बने है।
२ उक्त प्रथा के आधार पर, परवर्ती काल मे, कोई काम करने के लिए किसी को नियुक्त करने के संबध मे होनेवाला पारस्परिक निश्चय।
मुहा०—बीडा देना=(क) किसी को कोई काम करने का भार सौपना। (ख) नाचने-गाने, बाजा बजाने आदि का पेशा करनेवालों को कुछ पेशगी धन देकर यह निश्चय करना कि अमुक दिन या अमुक समय पर आकर तुम्हे अपनी कला का प्रदर्शन करना होगा।
३ तलवार की म्यान के ऊपरी सिरे की वह डोरी जिससे तलवार की मूठ से म्यान बाँधी जाती है।

वीड़िया—वि०[हिं० बीड़ा+इया (प्रत्य०)] बीड़ा उठानेवाला।
पु० अगुआ नेता।

वीड़ी—स्त्री० [हिं० बीडा] १. पान का छोटा बीडा। २. मिस्सी, जिसे मलने से होठ उसी प्रकार रगीन हो जाते हैं, जिस प्रकार पान खाने से होते है। ३ तम्बाकू। ४ कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तों मे तम्बाकू का चूर्ण लपेटकर बनाया जानेवाला एक तरह का छोटा लबोतरा पिंड जिसे सुलगाकर सिगरेट की तरह पीया जाता है। ५ एक प्रकार की नाव। ६. कलाई पर पहनने का चूडी की तरह का एक गहना। ७. दे० 'बीड़' (गड्डी)। ८. वह सामान तथा नक़दी जो विवाह की बात पक्की होने पर कन्यापक्षवालो के यहाँ से वरपक्षो के यहाँ भेजी जाती है। (पूरब)

बीत—स्त्री०[सं० वृत्त] वह धन जो छोटे-मोटे काम करनेवाले लोगो नेगियों आदि को पारिश्रमिक या वृत्ति के रूप मे दिया जाता है।

बीतक—स्त्री[स०वृत्तक या हिं० बीतना] पुरानी हिंदी मे वह रचना जिसमे किसी पर बीती हुई या किसी से सम्बन्ध रखनेवाली मुख्य घटनाओ या बातो का उल्लेख होता था।

बीतना—अ०[स० व्यतीत] १. काल-मान की दृष्टि से घटना, बात आदि का वर्तमान से होते हुए भूत मे जाना। जैसे—दिन या समय बीतना। २. लाक्षणिक अर्थ मे किसी घटना, बात आदि का फल-भोग सहन किया जाना। जैसे—उन दिनो हम पर जो बीती थी, वह हम ही जानते हैं। ३. किसी काम, चीज या बात का अन्त या समाप्ति होना। उदा०—(क) बीती ताहि बिसारि देइ, आगे की सुध लेइ।—गिरधर। (ख) सब के भय बीते।

बीता—पु०=बित्ता (लबाई की नाप)।

बीथि (थी)—स्त्री०=वीथी।

बीथित*—वि०=व्यथित।

बीदर—पु०[सं० विदर्भ] १. विदर्भ देश का एक नगर। २ एक प्रकार की उपधातु जो तांबे और जस्ते के मेल से बनती है। (आरंभ मे वह बीदर नगर मे बनी थी, इसी लिए इसका यह नाम पडा।)

बीदरी—स्त्री० [हिं० बीदर]जस्ते और तांबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमे बीच-बीच मे सोने या चाँदी के तारो से नक्काशी की हुई होती है। बीदर की धातु का काम।
वि० १ बीदर-सबधी। बीदर का। २ बीदर की धातु का बना हुआ।

बीदरीसाज—पु० [हिं० बीदर+फा० साज] वह जो बीदर की धातु से बरतन आदि बनाता हो। बीदर का काम बननेवाला।

बीध—अव्य०[स० विधि] विधिपूर्वक।

बीधन†—स्त्री०=बीधन।

बीधना—स०=बीधना।
अ०=बिधना।

बीधा—पु०[सं० विधान]मालगुजारी निश्चित करने की क्रिया या भाव।

बीन—स्त्री०[स० वीणा] १ सितार की तरह का पर उससे बडा एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा। वीणा। २. सँपेरो के बजाने की तूमडी। ३. उक्त के बजाने पर होनेवाला शब्द। ४ बाँसुरी।
वि० [स० वीक्षण से फा०] [भाव० बीनी] १ देखनेवाला। यौ० के अन्त मे। जैसे—तमाशबीन। २ दिखानेवाला। जैसे—दूरबीन।

बीनकार—पु० [हिं० बीन+फा० कार] [भाव० बीनकारी] वह जो बीन या वीणा बजाने मे प्रवीण हो।

बीनना—स०[स० विनयन] १ दे० 'चुनना'। २. छोटी-छोटी चीजो को उठाना। ३ चीजे अलग करना। छाँटना।
स० १=बींधना। २.=बुनना। उदा०—बीनों स्नेह सुरुचि सयम से शील-वसन नव भव यौवन का।—पत।

बीनी—स्त्री० [फा०] देखने की क्रिया या भाव। जैसे—तमाशबीनी, सैरबीनी आदि।

बोफै†—पु० [स० वृहस्पति] वृहस्पतिवार। गुरुवार।

बीबी—स्त्री० [फा०] १ कुल वधू। कुलीन स्त्री। महिला। २ जोरू। पत्नी। ३ पश्चिम मे स्त्रियो के लिए आदरसूचक सम्बोधन। जैसे—बीबी हरवस कौर। ४. अविवाहित कन्या तथा माता के लिए सम्बोधन। (पश्चिम)

बीभच्छ—वि०=वीभत्स।

बीभत्स—वि०=वीभत्स।

बीभत्सु—पु० [स० वध्+सन्, द्वित्वादि,+उ] १ अर्जुन। २. अर्जुन नामक वृक्ष।

बीम—पु० [अ०] १ शहतीर। २ जहाज के पार्श्व मे लवाई के वल मे लगा हुआ वडा शहतीर। आडा। (लश०) ३ जहाज का मस्तूल।
पु० [फा० [डर। भय।

बीमा—पु० [फा० बीम=भय] १ किसी प्रकार की हानि विशेषत आर्थिक हानि पूरी करने की वह जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन मिलने पर उसके बदले मे अपने ऊपर ली जाती है। कुछ धन लेकर इस बात का भार अपने ऊपर लेना कि यदि अमुक कार्य मे अमुक प्रकार की हानि होगी तो उसकी पूर्ति हम इतना धन देकर कर देंगे। (इन्श्योरेन्स)
विशेष—ऐसी जिम्मेदारी बाहर भेजी जानेवाली चीजो और दुर्घटनाओ से होनेवाली धन-जन की हानि के सबंध मे, पारस्परिक समझौते से होती है, और बीमा करानेवाले को उसके बदले मे कुछ निश्चित धन एक साथ अथवा कुछ किश्तो में देना पडता है।
२. वह पत्र जिसपर उक्त प्रकार के समझौते की शर्तें लिखी होती हैं और जिस पर दोनो पक्षो के हस्ताक्षर होते हैं। ३ वह पत्र या पारसल जिसकी हानि आदि के सबंध मे उक्त प्रकार की जिम्मेदारी ली या सौपी गई हो।

बीमार—वि० [फा०] १ जो किसी रोग विशेषत किसी ज्वर से पीडित हो।
क्रि० प्र०—पडना।—होना।
२. लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा व्यक्ति जो किसी उग्र भावावेश, संताप आदि के कारण उत्क्षिप्त तथा अस्वस्थ बना रहता हो।

बीमारदार—वि० [फा०] [भाव० बीमारदारी] रोगी की सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

बीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगियो की सेवा-सुश्रूषा।

बीमारी—स्त्री० [फा०] १ बीमार होने की अवस्था या भाव। जैसे—बीमारी मे भी वे भोजन किये चलते हैं। २ वह विकार जिसके फलस्वरूप शरीर अस्वस्थ तथा रुग्ण रहता है। ३ बुरी आदत। दुर्व्यसन। ४. झगडे या झझट का काम।

बीय†—वि०=बीजा (दूसरा)।

बीया—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।
†पु० [हिं० बीज] बीज। (दे०)
†पु०=बया।

बीर—पु० [स० वीर] १ प्राय समस्त पदो के अत मे, किसी काम या बात मे औरो से बहुत आगे बढा हुआ या बहादुर। २ भाई के लिए प्रयुक्त होनेवाला सबोधन। ३ वह जो टोने, टोटके, यत्र-मत्र आदि का बहुत बडा ज्ञाता हो। ४ ऐसी प्रेतात्मा जिसे किसी ने वश मे किया हो।
स्त्री० [स० वीरा] १ स्त्रियो मे प्रचलित सखी या सहेली के लिए सबोधन। २. कान मे पहनने का बिरिया नामक गहना।
स्त्री० [सं० वृत्ति?] चरागाह मे पशुओं को चराने का वह महसूल जो पशुओ की सख्या के अनुसार लिया जाता था।
पु०=चरागाह।
†स्त्री०=बीड।

बीरउ—पु०=बिरवा।

बीरज—पु०=वीर्य।

बीरत—पु०=वीरत्व (वीरता)।

बीरन—पु० [स० वीर] स्त्रियो का अपने भाई के लिए सम्बोधन। बीर।

बीरनि—स्त्री० [स० वीर] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। तरना। बीरी।

बीर-बहूटी—स्त्री० [स० विर+वधूटी] गहरे लाल रंग का छोटा रेंगनेवाला कीडा, जो देखने मे बहुत ही सुन्दर होता है।

बीरा—पु० [हिं० बीडा] १ वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद स्वरूप भक्तो आदि को मिलता है। २ दे० 'बीड़ा'।

बीरी—स्त्री० [स० वीरि या हिन्दी बीडा] १ ढरकी के बीच मे लंबाई के बल वह छेद जिसमे से नरी भरकर तागा निकाला जाता है। २. लोहे का वह छेददार टुकडा जिस पर कोई दूसरा लोहा रखकर लोहार छेद करते हैं। ३ कान मे पहनने का तरना या बिरिया नाम का गहना ४ दे० 'बीडी'।

बीरो*—पु०='बिरवा'।

बील—वि० [स० बिल] अंदर से खाली। खोखला। पोला।
पु० वह नीची भूमि जिसमे पानी जमा होता है। जैसे—झील आदि की भूमि।
पुं० [स० बिल्व] १ एक प्रकार की ओषधि। २ बेल (वृक्ष और फल)।
पु० [स० बीज मत्र] मंत्र। उदा०—जब तें वह सिर पढि दियो हेरन मैं हित बील।—रसनिधि।

बीवी†—स्त्री०=बीबी।

बीस—वि० [स० विंशति, प्रा० वीशति, बीसा] १ जो संख्या मे दस का दूना या उन्नीस से एक अधिक हो।
पद—बीस बिस्वे=(क) इस बात की बहुत अधिक सभावना है कि। अधिकतम सभावित रूप मे। जैसे—बीस बिस्वे वे आज ही यहाँ आ जायँगे। (ख) भली भाँति। अच्छी तरह। बीसहू कै=बीस बिस्वे। भली-भाँति। उदा०— मातु-पिता बधु हित मोको बीसहू कै ईस अनुकूल आज भो।—तुलसी।
२ किसी की तुलना मे अच्छा या बढकर। जैसे—कुश्ती मे यह लडका औरो से बीस पडता है।
क्रि० प्र०—ठहरना।—पडना।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२०।

बीसना—स० [सं० वेशन] शतरज या चौसर आदि खेलने के लिए बिसात बिछाना। खेल के लिए बिसात फैलाना।

बीसरना*—अव्य०=बिसरना (भूलना)।

बीसवाँ—वि० [हिं० बीस+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बीसवी] क्रम, गिनती आदि मे बीस के स्थान पर पड़नेवाला।

बुड़ना—अ०[?] छोड़कर चला जाना या हट जाना। भागना।
बुड़ठ—स्त्री० [सं० वृष्टि] वर्षा। (राज०)
बुड़की—स्त्री०=डुबकी (गोता)।
बुड़ना—अ०=बूड़ना। (डूबना)।
बुड़बक—वि०[हिं० बूढ़ा+बक=बगला] ना-समझ। मूर्ख।
बुड़बुड़ाना—अ०[अनु०] मन ही मन कुढ़कर या क्रोध में आकर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना। बड़बड़ाना। बुढ़ापे में होनेवाली हिरस।
बुड़भस—स्त्री०[हिं० बूढ़ा+भस=इच्छा भोग] बुढ़ापे में होनेवाली हिरस।
बुड़भूँजा—पुं० दे० 'भड़भूँजा'।
बुड़ाना—स०=डुबाना।
बुड़ार—स्त्री०[हिं० बुड़ना?] एक प्रकार की छोटी पनडुब्बी बतख जिसका मुख्य भोजन पानी में उगनेवाले पेड़ों की जड़ें हैं। 'करछिया' और 'लालसर' इसके दो मुख्य भेद हैं।
बुड़ाव—पुं०=डुबाव।
बुड़ौन—वि०[हिं० बूड़ना] (प्राप्य धन) जो वसूल न हो सकता हो और इसी लिए डूबा हुआ मान लिया गया हो।
बुड्ढा—वि०[सं० वृद्ध] [स्त्री० बुड्ढी] १. युवावस्था पार करने के उपरांत जिसकी अवस्था अधिक हो गई हो। जैसे—बुड्ढा आदमी, बुड्ढा बैल। २. (जीव) जो साधारणतः मानी जानेवाली पूर्ण आयु का आधे से अधिक या लगभग तीन-चौथाई भाग पार कर चुका हो।
बुढ़ऊ—वि०=बुड्ढा।
पुं० १. बुड्ढा आदमी। २. पिता या दादा जो बहुत बुड्ढा हो गया हो।
बुढ़ना—पुं०[?] छड़ीला। पत्थर फूल।
†वि०=बूढ़ा (बुड्ढा।)
बुढ़वा—वि०[स्त्री० बुढ़िया]=बुड्ढा।
बुढ़ाई—स्त्री०[हिं०बूढ़ा+आई (प्रत्य०)] वृद्ध या बुड्ढे होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था। बुढ़ापा।
बुढ़ाना—अ० [हिं० बूढ़ा+ना (प्रत्य०)] वृद्धावस्था को प्राप्त होना।
स० बुड्ढा या बुड्ढों के समान कर देना। जैसे—रोग ने उन्हें बुढ़ा दिया है।
बुढ़ापा—पुं०[हिं० बूढ़ा+पा (प्रत्य०)] बुड्ढे होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था।
बुढ़िया—स्त्री०[सं० वृद्धा] बूढ़ी औरत।
पद—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की चीनी की मिठाई जो देखने मे काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।
बुढ़िया-बैठकी—स्त्री०[हिं०बुढ़िया+बैठक=कसरत] एक प्रकार की बैठक।
बुढ़ौती—स्त्री०=बुढ़ापा।
बुत—पुं०[सं० बुद्ध से फा०] १. मूर्ति। प्रतिमा।
विशेष—प्राचीन फारस में इसलाम के प्रचार से पहले स्थान स्थान पर गौतम बुद्ध की मूर्तियाँ और मन्दिर बहुत अधिक संख्या में थे। इसीलिए इसलाम का प्रचार होने पर यहाँ के लोग प्रतिमा या मूर्ति मात्र को बुत कहने लगे थे।
२. किसी की आकृति के अनुरूप बना हुआ चित्र या प्रतीक। ३. गढ़ी हुई मूर्तियों के सौन्दर्य और कठोरता के आधार पर फारसी-उर्दू कविताओं मे प्रियतमा या प्रेमी की संज्ञा।
वि० १. मूर्ति की तरह मौन और निश्चल। २. मूर्ख। ३. नशे में बेहोश।
बुतना—अ०=बुझना।
बुत-परस्त—पुं०[फा०] [भाव० बुतपरस्ती] मूर्तिपूजक। मूर्तियों का आराधक।
बुत-परस्ती—स्त्री०[फा०] मूर्तिपूजा।
बुत-शिकन—पुं०[फा०] वह जो मूर्ति-पूजा का विरोधी होने के कारण प्रतिमाओं को तोड़ता या नष्ट करता हो।
बुतात—स्त्री०[अ० मुअताद] १ किसी चीज की मात्रा या मान। २ खर्च। व्यय।
बुताना-बुतास—स०=बुझाना।
अ०=बुझना।
पुं०=बटन।
बुत्त—वि०, पुं०=बुत।
बुत्ता—पुं० [हिं० बुत=मूर्ख?] बातों में मूर्ख बनाकर किसी को दिया जानेवाला चकमा या धोखा।
पद—दम-बुत्ता। (देखें)
बुथिय*—वि०=बहुत।
बुद—वि०[देश०] पाँच। (दलाल)
बुदबुद, बुद्बुदा—पुं०[सं० बुद् बुद्] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
बुदबुदाना—अ० [अनु०] १. किसी तरल पदार्थ मे बुलबुले आना। २. मन ही मन या बहुत धीरे धीरे इस प्रकार बोलना कि और लोग सुन न सके।
बुदलाय—वि०[दलाली बुद+लाय (प्रत्य०)] पन्द्रह। दस और पाँच। (दलाल)
बुद्ध—वि०[सं० बुध् (ज्ञान करना)+क्त] १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञान-सम्पन्न। ज्ञानी। ३ पंडित।
पुं० शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन के पुत्र और बौद्ध धर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम का प्रचलित और प्रसिद्ध नाम (जन्म ई० पू० ५६६? मृत्यु ई० पू० ४८३?)।
बुद्धत्व—पुं०[सं० बुद्ध+त्व] बुद्ध होने की अवस्था या भाव।
बुद्धागम—पुं०[सं० बुद्ध-आगम, ष० त०] बौद्ध धर्म के सिद्धान्त।
बुद्धि—स्त्री०[सं०√बुध्+क्तिन्] १ शरीर का वह तत्त्व या शक्ति जिसके द्वारा किसी चीज या बात के विषय मे आवश्यक ज्ञान प्राप्त होता है और जिसकी सहायता से तर्क वितर्क-पूर्वक सब प्रकार के अन्तर-सम्बन्ध आदि समझ मे आते है। ज्ञान या बोध प्राप्त करने और निश्चय विचार आदि करने की शक्ति। अक्ल। समझ। मनीषा। धी।
विशेष—दार्शनिक दृष्टि से यह मन से भिन्न तत्त्व या शक्ति है। हमारे यहाँ इसे अन्तःकरण की चार वृत्तियों में से एक वृत्ति माना है,पर पाश्चात्य विद्वान् इसका अधिष्ठान मस्तिष्क में मानते है। सांख्यकार ने इसे २५ तत्त्वों के अन्तर्गत दूसरा तत्त्व माना है।
२. एक प्रकार का छंद,जिसके चरों पदों में क्रम से १६, १४, १४, १३, मात्राएँ होती हैं। इसे लक्ष्मी भी कहते है। ३ उक्त वृत्त का चौदहवाँ भेद जिसे सिद्धि भी कहते हैं। ४ छप्पय छंद का ४२ वाँ भेद।

बुद्धि-कृत—भू० कृ०[तृ० त०] सोच-समझकर किया हुआ।
बुद्धि-कौशल—पु०[ष० त०] १ बहुत ही समझ-बूझकर तथा ठीक ढग से काम करने की कला। २ चतुराई।
बुद्धि-गम्य—वि०[तृ०त०] बुद्धि के द्वारा जिसे जाना या समझा जा सकता हो।
बुद्धि-ग्राह्य—वि०[तृ० त०] बुद्धि द्वारा ग्रहण किये जाने के योग्य। जिसे बुद्धि ठीक मान सके।
बुद्धि-चक्षु (स्)—पु०[ब०स०] धृतराष्ट्र।
बुद्धिजीवी (विन्)—वि०[स० बुद्धि√जीव् (जीना)+णिनि] १. बुद्धि-पूर्वक काम करनेवाला। विचारशील। २ जिसकी जीविका दिमागी कामो से चलती हो। जैसे—वकील, मत्री आदि।
बुद्धितत्त्व—पु०=दे० 'महत्त्व'। (साख्य)
बुद्धि-दौर्बल्य—पु० [स०] बुद्धि के बहुत ही दुर्बल होने की अवस्था, भाव या रोग। बालिश्य (एमेन्शिया)
बुद्धिद्यूत—पु०[तृ० त०] शतरज का खेल।
बुद्धि-पर—वि० [पं० त०] जो बुद्धि की पहुँच से परे हो।
बुद्धि-प्रामाण्य-वाद—पु०[ष० त०] यह सिद्धान्त कि वही बात ठीक मानी जानी चाहिए जो बुद्धि-ग्राह्य हो।
बुद्धि-भ्रंश—पु०[ष० त० या ब० स०] दे० 'मनोभ्रंश'।
बुद्धिमत्ता—स्त्री०[स० बुद्धि+मतुप्+तल्, टाप्] बुद्धिमान् होने की अवस्था या भाव। समझदारी। अक्लमदी।
बुद्धिमान्—वि०[सं० बुद्धि+मतुप्, नुम्, दीर्घ] जिसकी बुद्धि बहुत प्रखर हो। जो बहुत समझदार हो। अक्लमंद। जिसमे अच्छी और यथेष्ट बुद्धि हो। जो सोच-समझकर कोई काम करता अथवा किसी काम मे हाथ डालता हो।
बुद्धिमानी—स्त्री० [हिं० बुद्धिमान्+ई (प्रत्य०)] १ बुद्धिमान् होने की अवस्था या भाव। बुद्धिमत्ता। २ बुद्धिमान् का किया हुआ कोई कार्य।
बुद्धि-मोह—पु०[ष०त०] वह स्थिति जिसमे बुद्धि कुछ गडबडा तथा चकरा गई हो।
बुद्धि-योग—पु०[ष० त०] पर-ब्रह्म के साथ होनेवाला बौद्धिक सपर्क।
बुद्धिवंत—वि०=बुद्धिमान्।
बुद्धि-वाद—पु०[ष० त०] १. यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि मनुष्य को समस्त ज्ञान बुद्धि द्वारा ही प्राप्त होते हैं। (इन्टलेकचुअलिज्म) २ आज-कल यह मत या सिद्धान्त कि धार्मिक आदि विषयो मे वही बातें मानी जानी चाहिए जो बुद्धि और युक्ति की दृष्टि से ठीक सिद्ध हो। (रैशनलिज्म)
बुद्धिवादी (दिन्)—वि० [स० बुद्धि√वद् (बोलना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] बुद्धि-वाद सम्बन्धी।
पु० बुद्धिवाद का अनुयायी। (इन्टलेकचुअलिस्ट)
बुद्धि-विलास—पु०[ष० त०] १. बौद्धिक कामो मे लगकर मन बहलाना। २ कल्पना।
बुद्धिशाली (लिन्)—वि०[स० बुद्धि√शाल् शोभित होना+णिनि] बुद्धिमान्।
बुद्धि-शील—वि०[ब० स०] बुद्धिमान्।
बुद्धि-सख—पु०[ब० स०] १ मत्री। २. परामर्शदाता।
बुद्धि-सहाय—पु०[स० त०] १ मत्री। वजीर। २ परामर्शदाता।
बुद्धि-हत—वि०[ब० स०] जिसकी बुद्धि नष्ट या भ्रष्ट हो गई हो।
बुद्धिहा (हन्)—वि० [स० बुद्धि√हन् (मारना)+क्विप्, दीर्घ, नलोप] (पदार्थ) जो बुद्धि का नाश करता हो। जैसे—मदिरा।
बुद्धि-हीन—वि०[तृ० त०] [भाव० बुद्धिहीनता] जिसमे बुद्धि न हो। निर्बुद्धि।
बुद्धींद्रिय—स्त्री०[बुद्धि-इंद्रिय, कर्म० स०] ज्ञानेंद्रिय। मन।
बुद्धी†—स्त्री०=बुद्धि।
बुद्‌बुद—पु०[स० बुद्+क, पृषो० द्वित्व] पानी का बुलबुला।
बुधगड़†—वि०[स० बुद्धि+हिं० अगड (प्रत्य०)] मूर्ख।
बुध—पु०[स०√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना) +क] १ बुद्धिमान् और विद्वान् व्यक्ति। पंडित। २. देवता। ३. सौर जगत् का सबसे छोटा ग्रह जो सूर्य से अन्य ग्रहो की अपेक्षा समीप है। सूर्य से इसकी दूरी ३६००००००० मील है और यह सूर्य की परिक्रमा ८८ दिनो मे करता है। (मर्करी)
विशेष—फलित ज्योतिष मे, यह नौ ग्रहो मे से चौथा ग्रह माना गया है, और पुराणानुसार इसकी उत्पत्ति उस समय हुई थी जब चन्द्रमा ने अपने गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा के साथ सभोग किया था।
४. कुत्ता।
बुध-चक्र—पु०[ष० त० मध्य० स०] ज्योतिष मे, एक चक्र जिससे बुध नक्षत्र की गति का शुभाशुभ फल जाना जाता है।
बुधजन—पु०[स० कर्म० स०] पडित। विद्वान्।
बुधजायी—पु० [स० बुध+हिं० जन्मना=उत्पन्न होना] बुध ग्रह को जन्म देनेवाला, चन्द्रमा।
बुधवान्†—वि०=बुद्धिमान्।
बुधवार—पु०[स० कर्म० स०] सात वारो मे से एक। मगलवार और गुरुवार के बीच का वार।
बुधि†—स्त्री०=बुद्धि।
बुधियार†—वि०=बुद्धिमान्।
बुधिल—वि०[स० बुध+किलच्] बुद्धिमान्।
बुधिवाही*—वि०=बुद्धिमान्।
बुध्य—वि०[स० बोध्य] जो जाना जा सके। जिसका बोध हो सके।
बुनकर—पु० [हिं० बुनना] कपडा बुननेवाला कारीगर। (वीवर)
बुनना—स० [पु० हिं० बिनना] १. करघे के द्वारा ताने तथा बाने के तारो को इस प्रकार एक दूसरे मे ऊपर नीचे करके फँसाना के वे वस्त्र का रूप धारण कर ले। जैसे—दरी बुनना। २ सलाइयो आदि के द्वारा विशेष रूप से किसी एक ही डोरी मे विशिष्ट प्रकार से फदे डालते हुए उन्हे वस्त्र का रूप देना। जैसे—स्वेटर बुनना। ३. सीधे तथा बेड़े बल मे बहुत से तार आदि स्थापित करके कोई चीज तैयार करना। जैसे—चटाई बुनना, जाला बुनना।
बुनवाना—स०[हिं० बुनना] [भाव० बुनवाई] बुनने का काम दूसरे से कराना।
बुनवाई—स्त्री०[हिं० बुनवाना] १ बुनवाने की क्रिया। भाव या पारिश्रमिक। २ दे० 'बुनाई,
बुनाई—स्त्री०[हिं० बुनना+ई (प्रत्य०)] १ बुनने की क्रिया, ढग

बुरापन—पु०=बुराई।
बुरुज—पु०=बुर्ज।
बुरुड—पु०[देश०] एक जाति जो टोकरे, चटाइयाँ आदि बनाने का काम करती थी।
बुरुला—पु०=रावरखा (वृक्ष)।
बुरुश—पु०[अं०ब्रुश] १ तारो, वालो अथवा किसी चीज का बना हुआ वह उपकरण जिससे रगडकर कोई चीज साफ की जाती अथवा पोती जाती है। २ तूलिका।
बुरुल—पु०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा वृक्ष।
बुरैया—पु० [हिं० बुरा]१ बुरा काम करनेवाला आदमी। २ दुष्ट। पाजी। ३ वह जो दूसरो की बुराई या निन्दा करता फिरे। ४ दुश्मन। शत्रु। (पूरब)
बुर्ज—पु०[अ०]१ किले आदि की दीवारो मे कोनो पर ऊपर की ओर निकला हुआ गोल या पहलदार भाग जिसमे बीच मे बैठने आदि के लिए थोडा सा स्थान होता है। गरगज। २ उक्त आकार प्रकार की मीनार का ऊपरी भाग। ३ गुबद। ४ गुब्बारा। ५ फलित ज्योतिष का राशि-चक्र।
बुर्जतोप—स्त्री०[हिं०] वह तोप जो मुख्यत किले के बुर्ज पर रखकर चलाई जाती है।
बुर्जी—स्त्री०[बुर्ज का अल्पा० रूप] छोटा बुर्ज।
बुर्द—स्त्री०[फा०]१ ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। २ प्रतियोगिता। होड। ३. प्रतियोगिता आदि मे लगाई जानेवाली बाजी या शर्त। ४ शतरज के खेल मे किसी पक्ष की वह स्थिति जिसमे उसके बादशाह को छोडकर अन्य मोहरे मारे जाते है। यह स्थिति आधी मात की सूचक होती है।
वि० १ डूबा हुआ। २. नष्ट-भ्रष्ट। चौपट। बरबाद। जैसे—उसने जुए मे सारा घर बुर्द कर दिया।
बुर्दबार—वि०[फा०] [भाव० बुर्दबारी] १. शान्तिप्रिय। २ सहनशील।
बुर्दाफरोश—पु०[फा० बर्द फरोश] [भाव० बुर्दाफरोशी] १ वह जो मनुष्य बेचने का व्यापार करता हो। २ वह व्यक्ति जो जवान स्त्रियो को भगाता और दूसरो के हाथ बेचकर धन कमाता हो।
बुर्राक—वि०[फा०] १ चमकता हुआ। चमकीला। २ बहुत ही साफ और स्वच्छ। जैसे—बुर्राक कपडे। ३ बहुत ही तीव्र गतिवाला। ४ चतुर। चालाक।
बुर्री—स्त्री०[हिं०बुरकना] बोने का वह ढग जिसमे बीज हल की जोत मे डाल दिये जाते हैं और उसमे से आपसे आप गिरते चलते है।
बुर्श—पु०=बुरुश।
बुलद—वि०[फा० बलद] [भाव० बुलदी] १ जिसकी ऊँचाई बहुत अधिक हो। बहुत ऊँचा। २ उत्तुग। भारी। जैसे—बुलद आवाज। ३ बहुत अधिक बढ़ा-चढा या उन्नत। जैसे—इकबाल बुलद होना।
बुलदी—स्त्री०[फा० बलदी] १ बुलद होने की अवस्था या भाव। ऊँचाई।
बुल-डाग—पु०[अं०]मझोले आकार किन्तु डरावनी सूरत के कुत्तो की एक जाति।

बुलबुल—स्त्री०[फा०] एक प्रसिद्ध गानेवाली चिडिया जो कई प्रकार की होती और एशिया, यूरोप तथा अमेरिका मे पाई जाती है।
विशेष—उर्दूवाले प्राय इसे पुलिंग मानते हैं और इसे आशिक के प्रतीक के रूप मे ग्रहण करते है।
बुलबुल-चश्म—स्त्री०[फा०] एक प्रकार की सहिली (चिडिया)।
बुलबुलबाज—पु०[फा०] [भाव० बुलबुलबाजी] वह जो बहुत सी बुलबुलें पालता तथा लडाता हो।
बुलबुलबाजी—स्त्री०[फा०] बुलबुले पालने या लडाने का काम या शौक।
बुलबुलहजार दास्ताँ—स्त्री०[फा०] बहुत ही मधुर स्वरवाला एक प्रसिद्ध ईरानी पक्षी जिसकी चर्चा अरबी और फारसी काव्यो मे अधिकता से होती है। सस्कृत मे इसे 'कलविक' कहते है।
बुलबुला—पु०[स० बुद्बुद]१ किसी तरल पदार्थ या पानी की बूँद का वह खोखला और फूला हुआ रूप जो उसे अन्दर हवा भर जाने के कारण प्राप्त होता है। बुदबुदा। बुल्ला। २ लाक्षणिक रूप मे कोई क्षण-भगुर चीज या बात। जैसे—जिन्दगी पानी का बुलबुला है।
बुलवाना—स० [हिं० बुलाना का प्रे०]१ किसी को बोलने मे प्रवृत्त करना। बोलने का काम किसी दूसरे से कराना। २. किसी को किसी के द्वारा यह कहलाना कि तुम यहाँ आओ। किसी को बुलाने का काम किसी के द्वारा कराना।
सयो० क्रि०—भेजना।
बुलाक—पु० [तु०] १. नाक की बीचवाली हड्डी। २. नाक मे पहनी-जानेवाली नथ। ३ वह लबोतरा मोती जो नथ मे लटकाया जाता है।
बुलाकी—पु० [तु० बुलाक] घोडे की एक जाति। उदा०—मुश्की और हिरमजि इराकी। तुरकी कगी भुथोर बुलाकी।—जायसी।
बुलाना—स०[हिं० बोलना का स० रूप] १ किसी को बोलने मे प्रवृत्त करना। बोलने का काम किसी से कराना। २ किसी को अपने पास आने या अपनी ओर प्रवृत्त करने के लिए आवाज देना। पुकारना। ३. किसी से यह कहना या कहलाना कि तुम यहाँ या हमारे पास आओ।
सयो० क्रि०—भेजना।
बुलावा—पु० [हिं० बुलाना+आवा (प्रत्य०)]१ बुलाने की क्रिया या भाव। २ आवाहन। निमत्रण।
क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।
बुलाह—पु०[स० बोल्लाह] वह घोडा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हो। (अश्व वैद्यक)
बुलाहट—स्त्री०[हिं०बुलाना] किसी को कही बुलाने के लिए भेजी जानेवाली आज्ञा या सदेश। बुलावा।
बुलिन—स्त्री०[अ० बुलियन] एक प्रकार का रस्सा जो चौकोर पाल के लघे मे बाँधा जाता है। (लश०)
बुलेटिन—पु०[अं०]किसी सार्वजनिक बात या विषय से सबध रखनेवाला वह सक्षिप्त सूचनापत्र जो किसी की ओर से आधिकारिक रूप मे प्रकाशित किया गया हो।
बुलेली—स्त्री०[तामिल] मँझोले आकार का एक तरह का पेड।
बुलौआ—पु०=बुलावा।
बुल्लन—पु०[देश०]१ गिरई की तरह की पर भूरे रग की एक मछली जिसके मूँछे नही होती। २ चेहरा। मुँह। (दलाल)

†पुं०[अनु०] पानी का बुलबुला।
बुल्ला†—पु०=बुलबुला।
बुवाई—स्त्री०=बोआई।
बुस—पु०[स० तुष] अनाज आदि के ऊपर का छिलका। भूसी।
बुसना—अ०[हिं० बासी] खाद्य पदार्थ का बासी पडने के कारण दुर्गन्ध युक्त होना। जैसे—कढी तो बुस गई है।
बुहरी†—स्त्री०=बहुरी।
बुहारना—स०[स० बहुकर+ना (प्रत्य०)] झाड़ू से जगह साफ करना। झाड़ू देना। झाडना। २ लाक्षणिक अर्थ मे अवांछित तत्त्व दूर करना या बाहर निकालना।
बुहारा—पु०[हिं० बुहारना] [स्त्री० अल्पा० बुहारी] ताड की सीको का बना हुआ बडा झाड़ू।
बुहारी—स्त्री०[स० बहुकरी, हिं० बुहारना+ई (प्रत्य०)] झाड़ू। बढनी।
बूंच—स्त्री०[हिं० गूछ] एक प्रकार की मछली जिसे गूंध भी कहते है।
बूंद—स्त्री०[स० बिंदु] १ जल अथवा किसी तरल पदार्थ का कण। कतरा।
पद—बूंद भर=बहुत थोडा। जरा-सा।
मुहा०—बूंदें गिरना या पड़ना= धीमी वर्षा होना। थोडा-थोडा सा पानी बरसना।
२ पुरुष के वीर्य का वह अश जो स्त्री के गर्भाशय मे पहुँचकर उसे गर्भवती करता है।
मुहा०—बूंद चुराना=स्त्री का पुरुष के समोग के कारण गर्भवती होना।
३. एक प्रकार का रगीन देसी कपडा जिसमे बूंदो के आकार की छोटी छोटी बूटियाँ बनी होती हैं और जो स्त्रियो के लहँगे आदि बनाने के काम मे आता है।
वि० बहुत तेज (अस्त्र)।
बूंदा†—पु० [हिं०बूंद]१ सुराहीदार मणि या मोती जो कान मे या नथ मे पहना जाता है। २ दे० 'बुंदा'।
बूंदा-बांदी—स्त्री० [बूंद] हलकी या थोडी वर्षा।
बूंदी—स्त्री०[हिं० बूंद+ई (प्रत्य०)]१ वर्षा के जल की बूद। २. एक प्रकार की मिठाई जो झरने मे से घुले हुए बेसन की छोटी छोटी बूंदे टपकाकर बनाई जाती है। बुंदिया।
बू—स्त्री० [फा०] १. बास। गध। महक। २ दुर्गंध। बदबू। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार का आभास। जैसे—(क) उसकी बातो मे शरारत की बू रहती है। (ख) उनमे से अभी तक रईसी की बू नही गई है।
पद—बू-बास=हलकी गध।
बूआ—स्त्री०[देश०]१. पिता की बहन। फूफी। २ बडी बहन। ३ स्त्रियो का परस्पर आदर-सूचक सबोधन। (मुसल०) ४. एक प्रकार की मछली। ककसी।
बूई—स्त्री०[देश०] एक तरह की वनस्पति।
बूक—पु०[देश०] ऊँची पहाडियो पर होनेवाला माजूफल की जाति का एक वृक्ष।
पु०[हिं० बकोटा] हाथ के पंजो की वह स्थिति जो उँगलियो को बिना हथेली से लगाये किसी वस्तु को पकडने, उठाने या लेने के समय होती है। चंगुल। बकोटा।
†पु०[सं० वक्ष]१. कलेजा। हृदय। २. छाती। वक्ष स्थल।
स्त्री०=बुक (कपड़ा)।
बूकना—स०[स० वृक्ण=तोडा-फोड़ा हुआ]१. सिल और बट्टे की सहायता से किसी चीज को महीन पीसना। पीसकर चूर्ण करना। २ अनावश्यक और हास्यास्पद रूप मे अपने किसी गुण, योग्यता आदि का प्रदर्शन करना। बघारना। जैसे—अगरेजी या सस्कृत बूकना, कानून या कारीगरी बूकना।
बूका—पु०[देश०] वह भूमि जो नदी के हटने से निकल आती है। गगबरार।
†पु०=बुक्का।
बूगा—पु०[देश०] भूसा।
बूच—पु०[अ० बच=गुच्छा] कपडे, कागज या चमडे आदि का वह टुकडा जो बंदूक आदि मे गोली या बारूद को यथास्थान स्थिर रखने के लिए उसके चारो ओर लगाया जाता है। (लश०)
पु०[अ० ब्रूच] बडी मेख। (लश०)
मुहा०—बूच मारना= गोले या गोली आदि की मार से होनेवाला छेद डाट लगाकर बद करना
बूचड़—पु०[अ० बुचर] वह जो पशुओ का मास आदि बेचने के लिए उनकी हत्या करता है। कसाई।
बूचडखाना—पु०[हिं० बूचड़+फा० खाना] कसाई-खाना।
बूचा—वि०[स० बुस=विभाग करना] [स्त्री० बूची] १ जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। २ जो कुछ अग या अवयव कट जाने के कारण कुरूप या भद्दा जान पडे। जैसे—बूचा पेड। ३ जो किसी चीज के अभाव के कारण अशोभन या भद्दा जान पडे। जैसे—बूचे हाथ, जिनमे चूडियाँ या गहने न हो। (स्त्रियाँ)
बूची—स्त्री०[हिं० बूचा] वह भेड जिसके कान बाहर निकले हुए न हो। बल्कि जिसके कान के स्थान मे केवल छोटा सा छेद ही हो। गुजरी।
बूजन—पु०[फा० बूजन] बंदर। (कलंदर)
बूजना—स०[?] किसी को धोखा देने के लिए कुछ छिपाना।
बूझ—स्त्री०[स० बुद्धि]१ बूझने की क्रिया या भाव। २. बूझने की शक्ति। बुद्धि। समझ।
पद—समझ बूझ=समझने की और ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता या शक्ति।
३ पहेली या बुझारत।
बूझन†—स्त्री० =बूझ।
बूझना—स० [हिं० बूझ] १. किसी प्रकार का ज्ञान या बोध प्राप्त करना। जानना और समझना। २. कोई गूढ या रहस्यपूर्ण बात समझना या उसकी तह तक पहुँचना। जैसे—पहेली बूझना। ३ प्रश्न करना। बूझना।
बूझनी†—स्त्री० [हिं० बूझना, स० बुध्य] १. प्रश्न। सवाल। उदा०—जब अति सखिन बूझनी लई, तब हसि कुँवरि गोद लुठि गई।—नन्ददास। २ पहेली। बुझारत।
बूट—पु० [स० विटप, हिं० बूटा] १ चने का हरा पौधा। २ चने का हरा दाना। ३ पेड या पौधा।
पु०[अ०] एक तरह का विलायती ढग का फीतेवाला जूता।

बूटना†—अ० [?] मागना।
बूटनि—स्त्री०[हि० वहूटी] वीर वहूटी नाम का कीडा।
बूट पुलाव—पु०[हि०] वह पुलाव जो चावल और हरे चने को मिलाकर पकाया जाता है।
बूटा—पु०[स० विटप]१. छोटा वृक्ष। पौवा। २. उक्त आकार का कोई अकन या चित्रण। जैसे—कपडे या दीवार पर वने हुए वेल-वूटे। ३. एक प्रकार का छोटा पहाडी पौधा।
बूटी—स्त्री०[हि० वूटा का स्त्री० रूप] १ ऐसी जगली वनस्पति जिसका उपयोग औपध आदि के रूप मे होता है।
पद—जडी-बूटी। (दे०)
२ छोटे पौधो या फूलो के आकार का कोई अंकन या चित्रण। जैसे—अशरफी वूटी। ३ भाँग। विजया। ४ ताश के पत्तो पर अकित रग के चिह्न। ५ एक प्रकार का पौधा जिसके रेशो से रस्सियाँ वनाई जाती है। ऊदल। गुल-वादला।
बूटेदार—वि०[हि० वूटा+फा० दार (प्रत्य०)] जिस पर वूटे वने हों।
बूठना—अ०[स० वर्पण] वरसाना। वर्पा होना। उदा०—आँधी पीछे जो जल वूठा।—जायसी।
बूड़—स्त्री०[हि० वूडना] जल की इतनी गहराई जिसमे आदमी डूव सके। डुवाव।
बूड़न—स्त्री०=वुड (डुवाव)।
बूडना—अ०[स० व्रुड=डूवना]१ निमज्जित होना। डूवना। २. किसी काम या वात या विषय मे निमग्न या लीन होना। उदा०—अनवूडे वूडे तिरे जे बूडे सव अग।—विहारी।
सयो० क्रि०—जाना।
बूडा—पु०[हि० डूवना]१ वर्पा आदि के कारण होनेवाली जल की वाढ। २ उतना गहरा पानी जिसमे आदमी डूव सकता हो। डुवाव।
क्रि० प्र०—आना।
वूडिया—पु०[हि० वूडना] गहरे पानी मे गोता लगाकर चीजे निकालनेवाला। गोताखोर। डुव्वा।
बूढ़—पु०[हि० वूढा]१ वीरवहूटी। २. वीरवहूटी की तरह का गहरा लाल रग।
†वि०=वूढा (वृद्ध)।
बूढा—पु०[स्त्री० वूढी]=वुड्ढा (वृद्ध)।
पद—बूढा आढा=बुढापे के वहुत कुछ पास पहुँचा हुआ।
†स्त्री०=वुढिया (वृद्धा स्त्री)।
बूढ़ी†—स्त्री०=वीर वहूटी।
बूता†—पु०=वूता। उदा०—है काकर अस बूता।—जायसी।
बूता—पु०[हि० वित्त]१ वल। पराक्रम। २ शक्ति। सामर्थ्य।
बूथडी—स्त्री०[देश०]१ आकृति। २ चेहरा। सूरत। शकल। ३ रुआँसा मुँह।
बूना—पु०[देश०] चनार नाम का वृक्ष।
बूबक—पु०[देश०]मूर्ख व्यक्ति।
बूबला†—पु०[?] वाजरे की भूसी।
बूबास—स्त्री० [फा०+हि०] १. गध। महक। २. किसी परम्परा का चिह्न या लक्षण। (प्राय. नहिक प्रयोगो मे प्रयुक्त) जैसे—उनमे वड़ो की वू-वास नही है।
वूबू—स्त्री० [अनु०] १ वडी वहिन। ३. वडी-वूढी स्त्रियो के लिए सम्वोधन।
बूम—पु०[फा०] १. उल्लू। २ वजर भूमि।
बूर—पु०[देश०]१ पश्चिमी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की घास जिसके खाने से गौओ, भैसो आदि का दूध और अन्य पशुओ का वल वहुत वढ जाता है। खोई। २. पशुओ के खाने का कटा हुआ चारा। ३. निकम्मी, फालतू या रद्दी चीज। ४ कुछ विशिष्ट प्रकार के कपड़ो के ऊपर निकले हुए रोएं। जैसे—वूरदार कम्वल, वूरदार तौलिया। ५. एक प्रकार की मिठाई जो अन्न की भूसी या छिलके से तैयार की जाती है। उदा०—वूर के लड्डू खाये तो पछताये, न खाये तो पछताये। (कहा०)
†स्त्री०=वुर(भग)।
बूरना—अ०=वूडना (डूवना)।
बूरा—पु०[हि० भूरा]१ कच्ची चीनी जो भूरे रग की होती है। शक्कर। २. एक प्रकार की साफ की हुई वढिया चीनी। ३. महीन चूर्ण।
बूरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की वहुत छोटी वनस्पति जो पौधों, उनके तनो, फूलो और पत्तो आदि पर उत्पन्न हो जाती है और जिसके कारण वे सडने या नष्ट होने लगते हैं।
बूला—पु०[देश०] पयाल का वना हुआ जूता। लतडी।
वृद—पु० दे० 'वृद'।
वृदा—स्त्री० दे० वृदा।
वृदारण्य—पु०[स० वृदारण्य] वृदावन।
बृंहण—वि०[स०√वृह् (वृद्धि करना)+ल्युट्—अन] पोपक। पुष्टिकर।
पु०१. पुष्ट करने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की मिठाई।
वृच्छ†—पु०=वृक्ष।
वृटिश—वि०=व्रिटिश।
वृष—पु०[स० वृष]१ साँड़। २. वैल। ३ मोरपख। ४ इद्र। ५ दे० 'वृप'।
बृहज्जन—पु०[स० वृहद्-जन, कर्म० स०] नामी, यशस्वी या वहुत वडा आदमी।
बृहत्—वि०[स०√वृह् (वृद्धि)+अति नि० सिद्धि]१ वहुत वडा या भारी। विशाल। २ दृढ। पक्का। मजवूत। ३ वलवान। ४. (स्वर) ऊँचा या भारी। ५ पर्याप्त। यथेष्ट। ६ घना। निविड।
पु० एक मरुत् का नाम।
बृहतिका—स्त्री०[स० वृहती+कन्+टाप्-ह्रस्व] उपरना। दुपट्टा।
बृहती—स्त्री०[स० वृहत्+ङीप्] १ कटाई। वरहटा। वनमटा। २. मटकटैया। ३. वाक्य। ४ उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ५ विश्वावसु गवर्व की वीणा का नाम। ५ सुश्रुत के अनुसार एक मर्मस्थान जो रीढ के दोनों ओर पीठ के बीच मे है। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नौ अक्षर होते हैं।
बृहतीपति—पु०[स० प० त०] वृहस्पति।
बृहत्कद—पु०[सं० व० स०] १ विष्णुकद। २ गाजर।

बृहत्केतु—पु०[स० ब० स०] अग्नि।
बृहत्तर—वि०[स० बृहत्+तरप्]१. किसी बड़े या बृहत् की तुलना मे और भी बड़ा। जिसमे मूल क्षेत्र के अतिरिक्त आसपास के क्षेत्र भी मिले हों। जैसे—बृहत्तर भारत।
बृहत्ताल—पु०[कर्म० स०] हिंताल।
बृहत्तृण—पु०[स० कर्म० स०] बाँस।
बृहत्त्वक् (च्)—पु०[स० ब० स०] नीम का वृक्ष।
बृहत्पत्र—पु०[स० ब० स०] १ हाथी कद। २ सफेद लोध। ३ कासमर्द।
बृहत्पर्ण—पु०[सं० ब० स०] सफेद लोध।
बृहत्पाद—पु०[स० ब० स०] वटवृक्ष। बड का पेड़।
बृहत्पीलु—पु०[सं० कर्म० स०] महापीलु। पहाड़ी अखरोट।
बृहत्पुष्प—पु०[स० ब० स०]१. पेठा। २ केले का पौधा।
बृहत्पुष्पी—स्त्री०[स० ब० स०, ङीप्] सन का पेड़। सनई।
बृहत्फल—पु०[स० ब० स०]१ चिचिंडा। चिचडा। २. कुम्हड़ा। ३ कटहल। ४ जामुन। ५ तितलौकी। ६ महेन्द्र-वारुणी।
बृहद—वि०=बृहत्।
बृहदारण्यक—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो दस मुख्य उपनिषदों के अन्तर्गत है। यह शतपथ ब्राह्मण के मुख्य उपनिषदो मे से और उसके अतिम ६ अध्यायों या ५ प्रपाठको मे है।
बृहदेला—स्त्री०[स० कर्म० स०] बड़ी इलायची।
बृहद्दंती—स्त्री०[स० कर्म० स०] एक प्रकार की दती जिसके पत्ते एरड के पत्तो के समान होते हैं। दे० 'दती'।
बृहद्बला—स्त्री०[सं० कर्म० स०] १. महाबला। २. सफेद लोध। ३ लज्जावती। लजालू।
बृहद्बीज—पु०[सं० ब० स०] अमड़ा।
बृहद्भानु—पु०[स० ब०स०] १. अग्नि। २ सूर्य। ३. चित्रक नामक वृक्ष। चीता। ४. विष्णु।
बृहद्रथ—पु०[सं० ब० स०]१. इन्द्र। २. सामवेद का एक अग। २ यज्ञ-पात्र।
बृहद्वर्ण—पु०[स० ब० स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।
बृहद्वल्ली—स्त्री०[स० कर्म० स०] करेला।
बृहद्वादी (दिन्)—वि०[स० बृहत्√वद् (कहना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] बहुत अधिक या बढ़-बढकर बातें करनेवाला।
बृहनट—पुं०[स० कर्म० स०] अर्जुन।
बृहनल—पु०[सं० कर्म० स०]१ अर्जुन। २ बाहु। बाँह।
बृहन्नारदीय—पु०[सं० बृहत्-नारदीय, कर्म० स०] एक उपपुराण।
बृहन्नारायण—पु० [स० बृहत्-नारायण, कर्म० स०] याज्ञिकी उपनिषद् का दूसरा नाम।
बृहन्निंब—पु०[स० बृहत्-निम्ब, कर्म० स०] महानिब।
बृहस्पति—पु०[स० बृहत्-पति, प० त०, सुट् नि०] १ एक प्रसिद्ध देवता जो अगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु कहे गये हैं। २. सौरजगत् का पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह जिसका व्यास ८७००० मील है। यह लगभग ११० वर्षो में सूर्य की परिक्रमा करता है। (जुपिटर)
बृहस्पति चक्र—पु०[प० त०] ६० संवत्सरों का चक्र। (गणित ज्योतिष)
बृहस्पतिवार—पु०[प० त०] बुधवार के बाद और शुक्रवार से पहले पड़नेवाले दिन की सज्ञा। गुरुवार। वीफै।
बेंग—पु०[स० व्यग] मेढक।
बेंगनकुटी—स्त्री०[देश०] अबाली। (दे०)
बेंच—स्त्री०[अं०]१ पत्थर आदि का बना हुआ पाश्चात्य ढग का एक आसन जो कुरसी से कई गुना लंबा होता है तथा जिस पर कई आदमी एक साथ बैठ सकते हैं। ३. राजकीय न्यायालयो मे न्यायाधीशो के बैठने का स्थान। ३. ससद भवन मे दल विशेष के सदस्यो का बैठने का स्थान।
बेंचना—स०=बेचना।
बेंट—स्त्री०[स० वट] औजारो आदि मे लगा हुआ काठ आदि का दस्ता। मूठ। दस्ता। जैसे—छुरी की बेंट।
बेंठ—स्त्री०=बेंट।
बेंड़—पु०[देश०] १. वह भेडा जो भेडो के झुड मे बच्चे उत्पन्न करने के लिए छूटा रहता है। (गड़रिये) २. नगद रुपया। (दलाल) ३. किसी भारी चीज को गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाया जानेवाला सहारा। चाँड। ४. पड़ाव। (क्व०)
स्त्री० [हिं० वेड़ा] टेक। चाँड़।
बेंड़ना—स०=बेढना (बाट लगाना)।
बेंड़ा†—पु०=बेवड़ा।
वि० [हिं० बेड़ा (आड़ा या तिरछा)] १. आड़ा। तिरछा। २. कठिन।
पु०=ब्योंडा।
बेंड़ी—स्त्री० [देश०] १. एक तरह की चौड़े मुँहवाली छिछली टोकरी जिससे गड्ढे आदि मे भरा हुआ पानी खेतो मे उलीचा जाता है। २. हँसिया के आकार का लोहे का एक औजार जिससे बरतनो पर जिला करते हैं।
बेंढ—पु० [?] जहाज के खभे के ऊपरी सिरे पर लगा रहनेवाला धातु का पत्तर जो हवा का रुख बतलाता है। (लश०)
बेंत—पु० [स० वेतस्] १. खजूर, ताड़ आदि की जाति की एक प्रसिद्ध लता जो पूर्वी एशिया और उसके आस-पास के टापुओ मे जलाशयो के पास अधिकता से होती है। इसकी छडियाँ बनती हैं और इसके छिलको आदि से कुर्सियाँ, टोकरियाँ आदि बुनी जाती है। २ उक्त के डंठल की बनी हुई छड़ी या डंडा।
मुहा०—बेंत की तरह काँपना=थरथर काँपना। बहुत अधिक डरना। जैसे—यह लड़का आपको देखते ही बेंत की तरह काँपता है।
बेंदली†—स्त्री०=बिंदी।
बेंदा—पु० [सं० बिंदु] १ माथे पर लगाया जानेवाला चदन आदि का गोल टीका। २. माथे पर पहनने का बंदी या बेंदी नाम का गहना।
बेंदी—स्त्री० [स० बिंदु, हिं० बिंदी] १ टिकली। बिंदी। २ बिंदा। सिफर। सुन्ना। ३. माथे पर पहनने का बेंदी नाम का गहना। ४. सरो के पेड़ की तरह का अंकन या चित्रण।
बेंवड़ा†—पुं०=ब्योंडा।
बेंवताना—स० [हिं० ब्योतना का प्रे०] ब्योतने का काम दूसरे से कराना। सिलाने के लिए किसी से कपड़ा नपवाना और कटवाना।

बे—अव्य० [सं० वि, मि० फा० बे] बिना। बगैर। (इसका प्रयोग प्राय अरबी, फारसी आदि शब्दो के साथ यौगिक बनाते समय पूर्व पद के रूप के रूप मे होता है। जैसे—बेइज्जत, बेईमानी आदि।
अव्य० [अनु०] हिं० अबे का सक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग उपेक्षासूचक सबोधन के लिए होता है।
मुहा०—बे ते करना=किसी को तुच्छ समझते हुए उसके साथ अशिष्टता-पूर्वक बाते करना।

बेअंत—वि० [हिं० बे=बगैर+सं० अत] जिसका कोई अत न हो। अनत। असीम। बेहद।
पद—बेअत माया=अत्यधिक मात्रा मे होनेवाली कोई चीज। (व्यग्य)

बेअकल—वि० [फा० बे+अ० अक्ल] [भाव० बेअकली] जिसे अकल न हो। निर्बुद्धि।

बेअकली—स्त्री० [फा० बे+अ० अक्ल] नासमझी। मूर्खता। बेवकूफी।

बेअदब—वि० [फा० बे+अ० अदब] [भाव० बेअदबी] १. जो बडो का अदब या आदर न करता हो। २ जो मर्यादा का ध्यान न रखकर अशिष्ट आचरण करता हो। अशिष्ट। उद्दड। धृष्ट।

बेआब—वि० [फा० बे+अ० आब] [भाव० बेआबी] १ जिसमे आब (चमक) न हो। २ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो।

बेआबरू—वि० [फा०] [भाव० बे-आबरुई] जिसकी कोई आबरू या प्रतिष्ठा न हो। फलत अपमानित और तिरस्कृत।

बेआबी—स्त्री० [फा० बे+अ० आब] १ बेआब होने की अवस्था या भाव। मलिनता। निस्तेजता। २ अप्रतिष्ठा।

बेआरा†—पु० [देश०] एक मे मिला हुआ जौ और चना।

बेइतिहा—वि० [अ०+फा०] अपार। असीम। बेहद।

बेइसाफ—वि० [फा०] [भाव० बेइसाफी] अन्यायी।

बेइज्जत—वि० [फा० बे+अ० इज्ज़त] १ जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २ जिसका अपमान किया गया हो अपमानित।

बेइज्ज़ती—स्त्री० [फा०+अ०] १ अप्रतिष्ठा। २ अपमान।

बेइलि—पु० दे० 'बेला'।
†स्त्री०=बेल (वल्ली)।

बेइल्म—वि० [फा० बे+अ० इल्म] [भाव० बेइल्मी] बे पढा-लिखा। अपढ।

बेईमान—वि० [फा० बे+अ० ईमान] [भाव० बेइमानी] १ जिसका ईमान ठीक न हो। जिसे धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २ अविश्वसनीय।

बेईमानी—स्त्री० [फा० बे+अ० ईमान] १ बेईमान होने की अवस्था या भाव। २ बुरी नियत से किया जानेवाला कोई कार्य।

बेउँगा—पु० [देश०] बाँस का वह चोगा जिसे कबल की पट्टियाँ बुनते समय ताने की साँथी अलग करने के लिए रखते हैं।

बेउ†—वि० [सं० द्वि+अपि] दोनो। उदा०—बाहाँ तिकरि पसारी बेउ।—प्रिथीराज।

बेउज्र—वि० [फा० बे+अ० उज्र] जो उज्र या आपत्ति न करता हो।

बेउसूल—क्रि० वि० [फा०+अ०] बिना किसी सिद्धात के।
वि० जिसका कोई उसूल या सिद्धात न हो। सिद्धातहीन।

बेएतबार—पु० [फा०+अ०] [भाव० बे-एतबारी] अविश्वास।
वि० १ जिस पर विश्वास न किया जा सके। २ जो विश्वास न करता हो।

बेऐब—वि० [फा०+अ०] निर्दोष।

बेओनी—स्त्री० [देश०] जुलाहो का कघी की तरह का एक औजार जिसे वे ताने के सूतो के बीच मे रखते हैं।

बेऔलाद—वि० [फा०+अ०] नि सतान।

बेकति†—पुं०=व्यक्ति।

बेकदर—वि० [फा० बे+अ० कद्र] [भाव० बेकदरी] १ जिसकी कुछ भी कदर न हो। २ जो किसी की कदर न करता हो।

बेकदरा—वि०=बेकदर।

बेकदरी—स्त्री० [फा०] १. बेकदर होने की अवस्था या भाव। २. अनादर।

बेकरा†—पु० [देश०] पशुओ का खुरपका नामक रोग। खुरहा।

बेकरार—वि० [फा० बे+अ० करार] [भाव० बेकरारी] १ बेचैन। विकल। २ परम उत्सुकता।

बेकरारी—स्त्री० [फा० बेकरारी] १. बेकरार होने की अवस्था या भाव। बेचैनी। व्याकुलता। २. परम उत्सुकता।

बेकल—वि० [सं० विकल] व्याकुल। विकल। बेचैन।

बेकली—स्त्री० [हिं० बेकल+ई (प्रत्य०)] १ बेकल होने की अवस्था या भाव। बेचैनी। व्याकुलता। २ स्त्रियो का एक रोग जिसमे उनकी धरन या गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है और जिसमे रोगी को बहुत अधिक पीडा होती है। उदा०—मीर गुल से अब के रहने मे हुई वह बेकली। टल गई का नाफदानी, पेडू पत्थर हो गया।—जान साहब।

बेकस—वि० [फा०] [भाव० बेकसी] १ नि सहाय। निराश्रय। २ दीन-हीन। २ कष्टग्रस्त।

बेकसूर—वि० [फा० बे+अ० कुसूर] [भाव० बेकसूरी] जिसका कोई कसूर न हो। निरपराध।

बेकहा—वि० [फा० बे+हिं० कहना] [स्त्री० बेकही] जो किसी का कहना न मानता हो। किसी के कहने के अनुसार न चलनेवाला।

बेकानूनी—वि० [फा० बे+कानून] अवैध।

बेकाबू—वि० [फा० बे+अ० काबू] १ जो काबू मे किया या वश मे लाया न जा सके। २ जिस पर किसी का काबू या वश न हो। अनियत्रित। ३ निरकुश।

बेकाम—वि० [फा० बे+हिं० कम] १ जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २ जिसमे कोई काम न निकल सके। रद्दी।
क्रि० वि० निरर्थक। व्यर्थ।

बेकायदा—वि० [फा० बे+अ० कायदा] जो कायदे अर्थात् नियम या विधान के विरुद्ध हो। अनियमित।

बेकार—वि० [फा०] [भाव० बेकारी] १. जो काम मे न लगा हुआ हो। २ जो काम न कर सकता या किसी काम मे न आ सकता हो। निरर्थक। निकम्मा।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

बेकारा†—पु० [स० वेकुरा=शब्द] किसी को जोर से बुलाने का शब्द। जैसे—अरे, हो आदि।

बेकारी—स्त्री० [फा०] बेकार होने की अवस्था या भाव। ऐसी स्थिति जिसमे आदमी या कुछ लोगो के हाथ मे कोई काम, धन्धा या रोजगार न हो, और इसी लिए जिसकी आय या जीविका-निर्वाह का कोई साधन न हो। (अन्-एम्प्लॉयमेन्ट)

बेंकूप†—वि०=बेवकूफ। उदा०—सबै स्वान बेकूप।—भगवत रसिक।

बेख—स्त्री० [फा०] जड़। मूल।

†पु० १=वेष। २=स्वाँग।

बेखटक—वि० [हिं० बे+हिं० खटका] बिना किसी प्रकार के खटके के। बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमजस के। निस्सकोच।

अव्य०=बेखटके।

बेखटके—अव्य० [हिं० बेखटक] बिना आशका या खटके के। फलत निर्भय होकर।

बे-खता—वि० [फा० बे+अ० खता=कुसूर] १. जिसने कोई खता या अपराध न किया हो। निरपराध। बेकसूर। २. जो कही खता न करे, अर्थात् कही न चूकनेवाला। अचूक। अमोघ। जैसे—बेखता निशाना लगाना।

बेखबर—वि० [फा० बे+खबर] [भाव० बेखबरी] १. जिसको किसी बात की खबर न हो। अनजान। नावाकिफ। २ जिसे कुछ भी खबर न हो। बेसुध। बेहोश। जैसे—सब लोग बेखबर सोये थे।

बेखबरी—स्त्री० [फा० बे०+अ० खबरी] १. बेखबर होने की अवस्था या भाव। अज्ञानता। २ बेहोशी।

बेखुद—वि० [फा० बेखुद] [भाव० बेखुदी] जो आपे मे न हो। अपनी सुध-बुध भूला हुआ।

बेखुदी—स्त्री० [फा०] बेखुद होने की अवस्था या भाव। आपे मे न होना।

बेखुर—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

बेखौफ—वि० [फा० बे+अ० खौफ] जिसे खौफ या भय न हो। निर्भय।

बेग—पु० [अ० बैग] कपडे, चमडे, प्लस्टिक आदि लचीले पदार्थों का कोई ऐसा थैला जिसमे चीजें रखी जाती हो और जिसका मुँह ऊपर से बद किया जा सकता हो। थैला।

पु० [तु०] [स्त्री० बेगम] १ अमीर। धनवान्। २ नेता। सरदार। ३. मुगलो का अल्ल।

†पु०=वेग।

†क्रि० वि० वेगपूर्वक। जल्दी से।

बेगड़ी—पु० [देश०] १. हीरा काटनेवाला कारीगर। हीरा तराश। २ जौहरी। ३. नगीने बनानेवाला कारीगर। हक्काक।

बेगती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बेगना*—अ० [हिं० वेग] १. वेगपूर्वक कोई काम करना। २ जल्दी करना या मचाना।

बेगम—स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] [बहु० बेगमात] १ भले घर की स्त्री। महिला। २ किसी बडे नवाब, बादशाह या सरदार की पत्नी। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर रानी या स्त्री का चित्र बना रहता है।

बे-गम—वि० [हिं० बे+अ० गम] जिसे किसी बात का गम या चिन्ता न हो। निश्चिन्त।

बेगम-फूली—पु० [तु० बेगम हिं० फूल+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का बढिया आम।

बेगम-बेलिया—पु० [अ० ब्रिगनोलिया] एक प्रकार की लता जिसमे कई रगों के फूल लगते हैं।

बेगमा—स्त्री० 'हिं० 'बेगम' का सम्बोधन कारक मे रूप।

बेगमी—वि० [तु० बेगम+ई (प्रत्य०)] १ बेगम-संबधी। बेगम का। २. बेगमो के लिए उपयुक्त अर्थात् उत्तम। बहुत बढिया।

वि० [फा० बे+अ० गमी] निश्चितता। बेफिक्री।

पु० १. एक प्रकार का बढिया कपूरी पान। २. एक प्रकार का बढिया चावल। ३. एक प्रकार का पनीर जिसमे नमक कम होता है।

बेगर†—अव्य०=बगैर।

बेगरज—वि० [फा० बे+अ० गरज] [भाव० बेगरजी] जिसे कोई गरज या परवा न हो।

क्रि० वि० बिना किसी गरज, प्रयोजन या मतलब के। नि स्वार्थ रूप से।

बेगरजी—स्त्री० [फा० बे+अ० गरज+ई (प्रत्य०)] बेगरज होने की अवस्था या भाव।

†वि०=बेगरज। जैसे—बेगरजी नौकर, बेगरजी सैंया।

बेगरा†—वि० [?] १. अलग। २. दूर का।

अव्य० दूर।

बेगल—अव्य०=बगैर।

बेगला†—वि०, अव्य०=बेगरा।

बेगवती—स्त्री० [सं० वेग+मतुप्,म=व, ङीप्] एक प्रकार का वर्णार्द्धवृत्त जिसके विषमपादो मे ३ सगण, १ गुरु और समपादो मे ३ भगण और २ गुरु होते है।

बेगसर—पु० [स० वेग√सृ (जाना)+अच्]। खच्चर। (डिं०)

बेगा—पु० [?] आत्मीय। 'पराया' का विपर्याय। उदा०—बेगा.. कै मुदई मिलत।—घाघ।

बेगानगी—स्त्री० [फा०] १. बेगाना होने की अवस्था या परायापन। २ अपरिचय।

बेगाना—वि० [फा० बेगाना] १ जो अपना न हो। गैर। पराया। २ जिससे आत्मीयता पूर्ण जान-पहचान, परिचय या सम्बन्ध न हो। ३. जो किसी काम या बात से अनजान या अपरिचित हो। ना-वाकिफ।

बेगार—स्त्री० [फा०] १ वह काम जो किसी से जबरदस्ती और बिना कुछ अथवा उचित पारिश्रमिक दिये कराया जाय। २ उक्त के आधार पर बिना किसी पारिश्रमिक या पुरस्कार की सभावना के चलता किया जानेवाला काम।

मुहा०—बेगार टालना=बिना चित्त लगाये कोई काम यो ही चलता करना। पीछा छुडाने के लिए कोई काम जैसे-तैसे पूरा करना। ३ ऐसा व्यर्थ और झगड़े का काम जिसका कोई अच्छा फल न हो। उदा०—नाहि तो भव बेगारि महँ परिही छूटत अति कठिनाई रे।—तुलसी।

बेगारी—पु० [फा०] १ वह मजदूर जिससे बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती काम लिया जाय। बेगार मे काम करनेवाला आदमी।

क्रि० प्र०—पकडना।
२ मन लगाकर काम न करनेवाला। काम चलता करनेवाला।
स्त्री०=बेगार।
बेगि—वि० [स० वेग] १. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २ चटपट। तुरंत।
बेगुन†—पु०=बैंगन।
वि०=विगुण (गुण रहित)।
बेगुनाह—वि० [फा०] [भाव० बेगुनाही] १. जिसने कोई गुनाह न किया हो। जिसने कोई पाप न किया हो। निष्पाप। २ जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध।
बेगुनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सुराही।
वि०=विगुण (गुण रहित)।
बेगैरत—वि० [फा० बे०+अ० गैरत] [भाव० बेगैरती] निर्लज्ज।
बेचक—पु० [हिं० बेचना] बेचनेवाला। बिक्री करनेवाला। विक्रेता।
बेचना—स० [स० विक्रय] १ अपनी कोई चीज या सपत्ति किसी से दाम लेकर उसे दे देना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
मुहा०—बेच खाना=पूरी तरह से रहित, वचित या हीन हो जाना। जैसे—तुमने तो लाज-शरम बेच खाई है।
२. स्वार्थ-सिद्धि के उद्देश्य से अपने किसी गुण को खो या छोड बैठना। जैसे—ईमान या धर्म बेचना।
बेचवाना—स०=बिकवाना।
बेचवाल—पु० [हिं० बेचना+वाना (प्रत्य०)] माल या सौदा बेचनेवाला। 'लिवाल' का विपर्याय।
बेचाना—स०=बिकवाना।
बेचारगी—स्त्री० [फा०] बेचारा होने की अवस्था या भाव।
बेचारा—वि० [फा० बेचार] [भाव० बेचारगी] [स्त्री० बेचारी] १ जिसके लिए कोई चारा (उपाय या साधन) न रह गया हो। २. जो दीन और नि स्सहाय हो। जिसका कोई साथी या अलवब न हो। गरीब। दीन।
बेचिराग—वि० [फा० बे+अ० चिराग] १ (स्थान) जहाँ दीया तक न जलता हो, अर्थात् उजडा हुआ। २ नि सतान। बे-औलाद।
बेची—स्त्री० [हिं० बेचना] १. बिक्री। विक्रय। २ बेचने के सम्बन्ध मे लिखा हुआ लेख। जैसे—इस हुडी पर बेची तो है ही नही।
बेचु—पु० [हिं० बेचना] बेचनेवाला। विक्रेता।
बेचैन—वि० [फा०] जिसे किसी प्रकार चैन न पडता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।
बेचैनी—स्त्री० [फा०] बेचैन होने की अवस्था या भाव। विकलता। व्याकुलता। बेकली।
बेजड़—वि० [फा० बे+हिं० जड] जिसकी कोई जड या बुनियाद न हो। जिसके मूल मे कोई तत्त्व या सार न हो। जो यो ही मन से गढ या बना लिया गया हो। निर्मूल।
बेजबान—वि० [फा० बे+जबान] [भाव० बेजबानी] १. जो कुछ कहना न जानता हो। २ जो किसी बात की शिकायत न करके सब कुछ चुपचाप सह लेता हो। ३ जो दीनता या नम्रता के कारण किसी प्रकार का दु ख या विरोध न करे। दीन। गरीब।
बेजबानी—स्त्री० [फा०] १. बेजबान होने की अवस्था या भाव। २ चुप रहना। ३. शिकायत न करना।
बेजर—वि० [फा० बेजर] [भाव० बेजरी] धनहीन। निर्धन।
बेजा—वि० [फा०] जो उचित या सगत न हो।
बेजान—वि० [फा०] १. जिसमे जान न हो। निर्जीव। २ मरा हुआ। मृत। ३ जिसमे कुछ भी दम या शक्ति न हो। बहुत ही अशक्त या दुर्बल।
बे-जाब्तगी—स्त्री० [फा० बे+अ० जाब्तगी] बेजाब्ता अथवा अनियमित या नियमविरुद्ध होने की अवस्था या भाव।
बेजाब्ता—वि० [फा० बे+अ० जाब्ता] [भाव० बेजाब्तगी] जो जाब्ते के अनुसार न हो। कानून या नियम आदि के विरुद्ध। अवैध।
बेजार—वि० [फा० बेजार] [भाव० बेजारी] १ जो किसी बात से बहुत तग आ गया हो। जिसका चित किसी बात से बहुत दु खी हो चुका हो। जैसे— आप तो जिंदगी से बेजार हुए जाते है। २. बहुत ही अप्रसन्न, खिन्न या नाराज। ३ विमुख। पराङ्मुख।
बेजुर्म—वि० [फा०+अ०] जिसने कोई जुर्म या अपराध न किया हो। निरपराध।
बेजू—पु० [अ० बैजर] डेढ दो हाथ लबा एक प्रकार का जगली जानवर जो प्राय. सभी गरम देशो मे पाया जाता है।
बेजोड़—वि० [फा० बे+हिं० जोड] १ जिसमे जोड न हो। जो एक ही टुकडे का बना हो। अखड। २ जिसके जोड या मुकाबले का और कोई न हो। अद्वितीय। अनुपम।
बेझ†—पु० दे० 'बेझा'।
बेझड़—पु० [हिं० मेझरना=मिलाना] एक मे मिले हुए कई तरह के अन्न। जैसे—गेहूँ, चने और जौ का बेझड।
बेझना†—स०=बेधना।
बेझरा†—पु०=बेझड।
बेझा—पुं० [स० वेध] निशाना। लक्ष्य।
बेट—स्त्री०=बेंट।
बेटकी—स्त्री० [हिं० बेटा] १ बेटी। २ पुत्री। ३ कन्या। लडकी।
बेटला†—पु० [स्त्री० बेटली]=बेटा।
बेटवा†—पु०=बेटा।
बेटा—पु० [स० वटु=बालक] [स्त्री० बेटी] पुत्र। सुत। लडका।
पद—बेटेवाला=वर का पिता अथवा वरपक्ष का और कोई बडा आदमी।
बेटा-बेटी—पु० [हिं० बेटा] बाल-बच्चे। औलाद।
बेटी—स्त्री० [स०] १ लड़की। पुत्री।
पद—बेटी का बाप=(क) वैसा ही दीन और नम्र जैसा विवाह के समय वधू का पिता होता है। (ख) सब प्रकार से दीन-हीन और विवश।
बेटीवाला=वधू का पिता अथवा वधू-पक्ष का और कोई बडा आदमी।
मुहा०—बेटी देना—अपनी पुत्री का किसी के साथ विवाह करना।
उदा०—जिसने बेटी दी उसने सब कुछ दिया। (कहा०)
बेटौना†—पु०=बेटा।
बेट्टा—पु० [देश०] एक प्रकार का भैंसा जो मैसूर देश मे होता है।
†पु०=बेटा (पुत्र)
बेठ—पु० [देश०] १ एक प्रकार की ऊसर जमीन जिसे बीहड भी कहते

है। २ ऋण के रूप में लिया हुआ वह पेशगी धन जो मजदूर, कारीगर आदि धीरे धीरे कुछ काम करके या सामान देकर चुकाते हैं।

मुहा०—बेठ भरना=काम करके या सामान देकर उक्त प्रकार का ऋण चुकाना। उदा०—नित उठ कोरिया बेठ भरत है।...।—कबीर।

बेठन—पु०[स० वेष्ठन] वह वस्त्र जो किसी चीज को धूल, मिट्टी आदि से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उस पर लपेटा जाता है।

पद—पोथी का बेठन=(क) जो कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो। (ख) जो पढ़ा-लिखा होने पर भी किसी काम का न हो।

बेठिकाने—वि०[फा० बे+हि० ठिकाना] १ जो अपने स्थान पर न हो। स्थानच्युत। २ जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो। ३ जिसका कोई सिर-पैर न हो। ४ निरर्थक। व्यर्थ।

अव्य० ठिकाने अर्थात् उपयुक्त या निश्चित स्थान पर न होकर किसी अन्य स्थान पर। अनुपयुक्त अवसर या स्थान पर।

बेड़—पु०[हि० बाढ़] खेतों या वृक्षों के चारों ओर लगाई हुई बाढ़। मेंड़।

पु०[हि० बीड़] नगद रुपया। सिक्का। (दलाल)

पु०[?] [स्त्री० बेड़नी, बेड़िन] नटों आदि के वर्ग की एक छोटी जाति जो गाने-बजाने का पेशा करती है।

बेड़ना—स०[हि० बेड़+ना (प्रत्य०)] नये वृक्षों आदि के चारों ओर उनकी रक्षा के लिए छोटी दीवार आदि खड़ी करना। थाला बाँधना। मेंड़ या बाढ़ लगाना।

स० [स० विडवन?] तोड़ना-फोड़ना नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—विजड़ा मुड़ै बेड़ते बलभद्र।—प्रिथीराज।

बेड़नी—स्त्री०[हि० बेड़] बेड़ जाति की स्त्री जो प्रायः देहातों में गाने-बजाने का पेशा करती है।

बेड़ा—पु०[स० वेष्ट] १ बड़े लट्ठों, लकड़ियों या तख्तों आदि को एक में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बाँस का टट्टर बिछा देते हैं और जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। तिरना।

मुहा०—बेड़ा डूबना=विपत्ति में पड़कर पूर्ण रूप से विनष्ट होना। (किसी का) बेड़ा पार करना या लगाना=किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना। विपत्ति के समय सहायता करके किसी का काम पूरा कर देना या रक्षा करना।

२ बहुत सी नावों या जहाजों आदि का समूह। जैसे—उन दिनों भारतीय महासागर में अमरीकी बेड़ा आया हुआ था। ३. नाव। (डिं०) ४ झुंड। समूह। (पूरब)

मुहा०—बेड़ा बाँधना=बहुत से आदमियों को इकट्ठा करना। लोगों को एकत्र करना।

वि०[हि० आड़ा का अनु० या स० वलि=टेढ़ा] १. जो आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर अथवा बाईं ओर से दाहिनी ओर गया हो। आड़ा। २. कठिन। मुश्किल। विकट। जैसे—बेड़ा काम।

बेड़िचा—पु०[देश०]बाँस की कमाचियों की बनी हुई एक प्रकार की टोकरी जो थाल के आकार की होती है और जिससे किसान लोग खेत सींचने के लिए तालाब से पानी निकालते हैं।

बेड़िनी—स्त्री०=बड़नी।

बेड़ी—स्त्री० [स०वलय] लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों या पशुओं आदि को इसलिए पहनाई जाती है जिसमें वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम-फिर न सकें। निगड।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पड़ना।—पहनना।—पहनाना।

२. बाँस की टोकरी जिसके दोनों ओर रस्सी बँधी रहती है और जिसकी सहायता से नीचे से पानी उठाकर खेतों में डाला जाता है।

३ साँप काटने का एक इलाज जिसमें काटे हुए स्थान को गरम लोहे से दाग देते हैं।

स्त्री०[हि० बेड़ा का स्त्री० अल्पा०] १. नदी पार करने का टट्टर आदि का बना हुआ बेड़ा। २. नाव। (पश्चिम)

बेडौल—वि०[हि० बे+डौल=रूप] १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २. जो अपने स्थान पर उपयुक्त न जान पड़े। बेढंगा।

बेढंगा—वि०=बेढँगा।

बेढँगा—वि०[हि० बे+हि० ढंग+आ (प्रत्य०)] १ जिसका ढंग ठीक न हो। बुरे ढंगवाला। २ जो ठीक क्रम या प्रकार से लगाया, रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३ कुरूप। भद्दा। भोंडा।

बेढंगापन—पु०[हि बेढंगा+पन (प्रत्य०)] बेढंगे होने की अवस्था या भाव।

बेढ़—पु०[?] १ नाश। बरबादी। २. बोया हुआ वह बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो।

स्त्री० वृक्षों आदि के चारों ओर लगा हुआ घेरा। बाढ़।

बेढ़ई—स्त्री०[हि० बेढ़ना] वह रोटी या पूरी जिसमें दाल, पीठी आदि कोई चीज भरी हो। कचौड़ी।

बेढन—पु०[हि० बेढ़ना] वह जिससे कोई चीज घेरी हुई हो। बेठन। घेरा।

बेढ़ना—स०[स० वेष्टन] १. वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिए चारों ओर से टट्टी बाँधकर, काँटे बिछाकर या और किसी प्रकार घेरना। रूँधना। २ चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।

बेढ़नी—स्त्री०=बेड़नी।

बेढब—वि०[हि० बे+ढब] १ जिसका ढब या ढंग अच्छा या ठीक न हो। २ भद्दा। भोंडा।

क्रि० वि० १ बुरी तरह से। अनुचित या अनुपयुक्त रूप से। २ अनावश्यक या असाधारण रूप से।

बेढा—पु०[हि० बेढ़ना=घेरना] १. हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा। २. घर के आसपास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हो।

बेढाना—स०[हि०बेढ़ना का प्रे०] १ घेरने का काम दूसरे से कराना। घिरवाना। २. ओढ़ना या ढाँकना।

बेढुआ—पु०[देश०] गोल मेथी।

बेणीफूल—पु० दे० 'सीसफूल'।

बेता—पु०=बेंत।

बेतकल्लुफ—वि०[फा० बे+अ० तकल्लुफ] [भाव० बेतकल्लुफी] जो तकल्लुफ अर्थात् दिखावटी ऊपरी शिष्टाचार का विशेष ध्यान न रखता हो। सीधा सादा और सच्चा व्यवहार करनेवाला, और मन की बात स्पष्ट रूप से कहनेवाला।

क्रि० वि० १. विना किसी प्रकार के तकल्लुफ या दिखावटी शिष्टाचार के। २. नि सकोच। वेधडक।

बे-तकल्लुफी—स्त्री०[फा०] वेतकल्लुफ होने की अवस्था या भाव। सरलता। सादगी।

बे-तकसीर—वि०[फा० वे+अ० तकसीर] जिसने कोई तकसीर या अपराध न किया हो। निरपराध। निर्दोप। वेगुनाह।

बेतना—अ०[?] जान पड़ना।

बे तमीज—वि०[फा० वे+अ० तमीज] [भाव० वेतमीजी] जिसे तमीज न हो। अशिष्ट और उद्दड।

बे-तरह—क्रि० वि०[फा० वे+अ० तरह] १ विकट रूप से। २. असाधारण रूप से। वहुत अधिक। जैसे—आज तो वे-तरह पानी वरसा।

बे-तरीका—वि०[फा० वे+अ० तरीका] जो सही ढग से न हुआ हो।
क्रि० वि० विना तरीके या ठीक ढग के।

बे-तरतीब—वि०[फा० वे+अ० तर्तीब] [भाव० वेतरतीवी] १ जो किसी क्रम से न रखा हुआ हो। क्रमहीन। २ अस्त-व्यस्त।

बेतला—वि०[?] [स्त्री० वेतली] अभागा।

बेतवा—स्त्री०[स० वेत्रवती] बुदेलखंड की एक नदी।

बे-तहाशा—क्रि० वि०[फा० वे+अ० तहाशा] १. अकस्मात् और तेजी से। अचानक और वेगपूर्वक। २ वहुत घवराकर या विना सोचे-समझे।

बे-ताव—वि०[फा०] [भाव० वेतावी] १ जिसमे धैर्य या सब्र न हो। २. विकल। व्याकुल। ३ परम उत्सुक। ४ अशक्त।

बे-तावी—स्त्री०[फा०] १. बेताव होने की अवस्था या भाव। २ विकलता। ३ परम उत्सुकता।

बेताल—पु०[स० वैतालिक] भाट। वदी।
पु०=वैताल।

बे-ताला—वि० [फा० वे+हिं० ताल] [स्त्री० वेताली] १. जो ठीक ताल के हिसाव से गाता या वजाता न हो। २ (गाना या वजाना) जो ताल के हिसाव से ठीक न हो। (सगीत)

बे-तुका—वि०[फा० वे+हिं० तुका][स्त्री० वेतुकी] १ (पद्यमय रचना) जिसकी तुके न मिलती हो। अत्यानुप्रास-हीन। २ (वात) जो अवसर, प्रसग आदि के विचार से वहुत ही अनुपयुक्त तथा महत्त्वहीन हो। मुहा०—वेतुकी हाँकना= वेढगी वात कहना। ऐसी वात कहना जिसका कोई सिर-पैर न हो।
३. (व्यक्ति) जो अवसर-कुअवसर का ध्यान न रखकर वेढगे या भद्दे काम करता अथवा वातें कहता हो। ४ (पदार्थ) जो ठीक ढग या ठिकाने का न हो। जैसे—वेतुकी पगडी।

बेतुका छंद—पु०[हिं० वेतुका+सं० छद] ऐसा छद जिसके तुकात आपस मे न मिलते हो। अमिताक्षर छंद।

बेतौर—क्रि० वि० [फा० वे+अ० तौर] बुरी तरह से। वेढगेपन से। वेतरह।
वि० जिसका तौर-तरीका या रग-ढग ठीक न हो।

बेद—पु०१ =वेद। २. वेत। ३ =मुश्क वेद।

बेदक—पु०[स० वैदिक] हिंदू। (डिं०)

बे-दखल—वि०[फा० वे+अ० दख्ल] [भाव० वेदखली] जिसका किसी चीज पर दखल अर्थात् कब्जा न रह गया हो। अधिकार-च्युत।

बे-दखली—स्त्री०[फा० वे+अ० दख्ली] दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना। अधिकार मे न रहने देने की अवस्था या भाव।

बेदन—पु०[स० वेदन] १. पशुओ का एक प्रकार का सक्रामक भीपण ज्वर जिसमे रोगी पशु काँपने लगता है, और उसे पाखाने के साथ आँव निकलती है। २. दे० 'वेदन'।

बेदना†—स्त्री०=वेदना।

बे-दम—वि०[फा०] १ जिसमे जीवनी शक्ति न हो अथवा नही के समान हो। २ मुरदा। मृतक। ३ जिसकी जीवनी-शक्ति वहुत कुछ नष्ट हो चुकी हो। जर्जर। वोदा।

बेद-मजनूँ—पु०[फा०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी शाखाएँ वहुत झुकी हुई रहती है और जो इसी कारण वहुत मुरझाया और ठिठुरा हुआ जान पडता है।

बेद-माल—पु०[देश०] लकडी की वह तख्ती जिस पर रगडकर सिकलीगर औज़ार चमकाते हैं।

बेद-मुश्क—पु०[फा०] एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिम भारत और विशेषत: पजाव मे अधिकता से होता है।

बेदरी—वि०=वीदरी।

बे-दर्द—वि०[फा०] [भाव० वेदर्दी] जो दूसरो के दु ख का अनुभव न करता हो। दूसरो के कष्टो को देखकर दु खी न होनेवाला। कठोर हृदय। पाषाण हृदय।

बे-दर्दी —स्त्री०[फा०] वेदर्द होने की अवस्था या भाव। निर्दयता। वेरहमी। कठोरता।
वि०=वेदर्द।

बेद-लैला—पु०[फा०] एक प्रकार का पौधा जिसमे सुन्दर फूल लगते हैं।

बेदवा—पु०[स० वेद] वेदो का ज्ञाता और अनुयायी। (उपेक्षासूचक)

बेदाग—वि० [फा० वेदाग़] १. जिसमे या जिसपर कोई दाग या धब्वा न हो। साफ। २ (व्यक्ति, उसका चरित्र या स्वभाव) जिसमे कोई ऐव या दोप न हो। वे-ऐव। निर्दोप। ३. निरपराव। वेकसूर।
क्रि० वि० विना किसी प्रकार की त्रुटि या दोष के। जैसे—वेदाग निशाना लगाना।

बेदाना—पु०[हिं० विहीदाना या फा० वे+दाना] १ पतले छिलकेवाला एक प्रकार का वढिया अनार जिसके दानो मे मिठास अधिक होती है। २ विहीदाना नामक फल। ३ उक्त फल के वीज जो रेचक और ठढे होते हैं। ४ दारु-हल्दी। ५. एक प्रकार का छोटा शहतूत। ६ वहुत छोटे दानोवाली बुँदिया नामक मिठाई।
†वि०=नादान (नासमझ)।
वि०[फा० वेदान] (फल) जिसमे वीज न हो। जैसे—वेदाना अमरूद।

बे-दाम—वि०[फा०] विना दाम का। जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।
क्रि० वि० विना दाम या मूल्य दिये।
† पु०=वादाम।

बे-दार—वि०[फा०] [भाव० वेदारी] जो जाग्रत तथा सचेत हो। जागा हुआ।

वेदारी—स्त्री०[फा०] जाग्रत और सचेत होने की अवस्था या भाव। जाग्रति।
वेदिल—वि०[फा०] [भाव० वेदिली] उदास। खिन्न।
वेदी*—स्त्री०=वेदी।
*पु० [स० वेद] वेदों पर श्रद्धा रखनेवाला व्यक्ति।
वेध—पु०[स० वेध] १ छेद। २ मोती, मूंगे आदि मे किया हुआ छेद। ३. दे० 'वेध'।
वे-धड़क—क्रि० वि० [फा० वे+हि० धड़क] १ भय, मर्यादा अथवा सकोच की परवाह न करते हुए। २. विना किसी आज्ञा या खटके या भय के। ३ विना किसी बात की चिन्ता या परवाह किये हुए। ४. विना कुछ सोचे-समझे हुए।
वि० १. जिसे किसी प्रकार का सकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २ जिसे किसी प्रकार की आशका या भय न हो।
वेधना—स०[स० वेधन] १ किसी नुकीली चीज की सहायता से छेद करना। सूराख करना। छेदना। भेदना। जैसे—मोती वेधना। २. शरीर पर किसी प्रकार का क्षत या घाव करना।
वे-धर्म—वि०[फा० वे+स० धर्म] [भाव० वेधर्मी] १ जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। २. जो अपना धर्म छोड चुका हो। धर्मच्युत।
वेधिया—पु०[स० वेध] अकुश।
वि० वेधने या छेदनेवाला।
वेधी—वि०=वेधी।
*स्त्री०=वेदी।
वेधीर—वि०=अधीर।
वेनग—पु०[देश०] एक प्रकार का छोटा पहाडी वांस जो प्राय. लता के समान होता है।
वेन—पु०[स० वेणु] १ वशी। मुरली। बाँसुरी। बाँस। ३ सँपेरों के बजाने की बीन। महुअर। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ दे० 'वेणु'।
पु० [अ० वेन] एक प्रकार की झडी जो जहाज के मस्तूल पर लगा दी जाती है और जिसके फहराने से यह पता चलता है कि हवा का रुख किधर है। (लश०)
पु०[अं० विड] वायु। हवा। (लश०)
वेनउर—पु०=विनौला।
वे-नजीर—वि०[फा० वे+अ० नजीर] अद्वितीय। अनुपम।
वेनट—स्त्री०[अ० वायोनेट] लोहे की वह छोटी किरच जो सैनिकों की बदूक के अगले सिरे पर लगी रहती है। सगीन।
वेनवरा—पु०=विनौला।
वे-नसीव—वि०[फा०+अ०] [भाव० वेनसीवी] अभागा। भाग्यहीन।
वेना—पु०[स० वीरण] खस।
पु० [स० वेणु] १ बाँस। २. बाँस का बना हुआ पखा।
पु०[स० वेणी] एक गहना जो माथे पर वेंदी के बीच मे पहना जाता है।
पद—वेना-वेंदी=वेना और वेंदी नाम के गहने जो प्राय एक साथ पहने जाते हैं।
वेनागा—क्रि० वि० [फा० वे+अ० नागा] विना नागा किये। निरंतर। लगातार। नित्य।
वे-नाम—वि०[फा०] १. जिसका कोई नाम न हो। २ अप्रसिद्ध।
वे-नामी—वि० [हि० वे+नाम] (सम्पत्ति) जिस पर उसके वास्तविक स्वामी ने अपना नाम न चढवाकर अपने किसी अधीनस्थ या दूसरे विश्वसनीय आदमी का नाम चढवा रखा हो।
वे-नियाज—वि०[फा०] [भाव० वेनियाजी] निस्पृह।
वेनी—स्त्री० [स० वेणी] १ स्त्रियों की चोटी। २ किवाड के एक पल्ले मे लगी हुई एक छोटी लकडी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है। ३. एक प्रकार का धान जो भादों के अत या कुआर के आरभ में तैयार होता है। ४. दे० 'त्रिवेणी'।
वेनी-पान—पु०=वेंदी(गहना)।
वेनु—स्त्री० १.=वेन। २. वेणु।
वेनुली—स्त्री०[हि० विदली] जाँते या चक्की मे वह छोटी सी लकडी जिसके दोनों सिरों पर जोती रहती है।
वेनौटी—वि०[हि०विनौला] कपास के फूल की तरह हलके पीले रंग का। कपासी।
पु० उक्त प्रकार का रग।
वेनौरा—पु०=विनौला।
वेनौरी—स्त्री०[हि० विनौला] ओला।
वेपरद—वि०[फा० वेपर्द] १. जिसपर कोई आवरण न हो। २ (स्त्री) जिसने परदा न किया हो अथवा बुरका न पहना हो। ३. नगा। नग्न।
क्रि० वि० विना किसी प्रकार के परदे (आवरण या ओट) के। खुल्लम-खुल्ला।
वे-परदगी—स्त्री०[फा० वे-पर्दगी] १. वे-परदा होने की अवस्था या भाव। २ स्त्री का परदे मे न रहना। विना परदा किये तथा निस्सकोच भाव से स्त्रियों का पर-पुरुषों के सामने आना।
वे-परवा—वि०[फा० वेपर्वा] [भाव० वेपरवाई] १ जिसे कोई परवा न हो। वेफिक्र। २. जो किसी बात की परवा न करता हो। ला-परवाह। ३. बहुत बडा उदार और दानी।
वेपर्द—वि०=वेपरद।
वे-पाया—वि०[हि० वे+स० उपाय] जिसे घबराहट के कारण कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्काबक्का। उदा०—पाव महावर देइ को, आप भई वे-पाय।—विहारी।
वेपार—पु०[देश०]एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जो हिमालय की तराई मे ६००० से ११००० फुट की ऊँचाई तक अधिकता मे पाया जाता है। फेल।
†पु०=व्यापार।
†वि०=अपार।
वेपारी†—पु०=व्यापारी।
वेपीरा—वि०[फा० वे+हि० पीर=पीडा] १ जिसके हृदय मे किसी के दु ख के लिए सहानुभूति न हो। दूसरो के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २. निर्दय। वेरहम।
वेपेंदा—वि०[हि० वे+पेंदा] [स्त्री० वेपेंदी] जिसमे पेंदा न हो और इसी कारण जो इधर-उधर लुढकता हो।
पद—वेपेंदी का लोटा=व्यक्ति जो अपने किसी निश्चय पर स्थिर न रहता हो बल्कि दूसरो की बातें सुन-सुनकर अपना निश्चय बारबार बदलता रहता हो।

बे-फायदा—वि० [फा० बे-फाइद] जिससे कोई फायदा न हो। जिससे कोई लाभ न हो सके। व्यर्थ का।
क्रि० वि० विना किसी फायदे या लाभ के। निरर्थक। व्यर्थ।

बे-फिकरा†—वि० [फा० बे-फिक्र] १ जिसे कोई फिक्र या चिन्ता न हो। २ अपनी ही मौज मे रहनेवाला तथा घर-बार की कुछ भी चिन्ता न रखनेवाला। ३ आवारा और निकम्मा।

बे-फिकरी—स्त्री० [फा० बे-फिक्री] बेफिक्र होने की अवस्था या भाव। निश्चितता।

बे-फिक्र—वि० [फा० बेफिक्र] [भाव०] [भाव० बे-फिकरी] जिसे कोई फिक्र न हो। निश्चिंत। बेपरवा।

बेबस—वि० [स० विवश] [भाव० बेवसी] १ जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २ पर-वश। पराधीन।

बे-बसी—स्त्री० [हिं० बेवस+ई (प्रत्य०)] १ बेवस होने की अवस्था या भाव। लाचारी। मजबूरी। विवशता। २. पर-वशता।

बे-बाक—वि० [फा० बे+अ० बाक] १ (देय) जो चुका दिया गया हो, और इसी लिए जिसका कुछ भी अश बाकी न रह गया हो। चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। २ ऋणमुक्त।
वि० [फा०] [भाव० बेबाकी] निडर। निर्भय।

बेबाकी—स्त्री० [फा० बेबाकी] ऋण का चुकता होना। पूर्ण परिशोध।

बे-बुनियाद—वि० [फा० बेबुन्याद] १ जिसकी कोई बुनियाद या जड न हो। निर्मूल। बेजड। २ आधार-रहित।

बे-ब्याहा—वि० [फा० बे+हिं० ब्याहा] [स्त्री० बे-ब्याही] जिसका विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुँआरा।

बे-भाव—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० भाव] विना किसी भाव (गिनती या हिसाब) के। बेहिसाब।
वि० बहुत अधिक। बेहद।
मुहा०—बेभाव की पडना=(क) बहुत अधिक मार पडना। (ख) बहुत अधिक भर्त्सना होना।

बेम—स्त्री० [देश०] जुलाहो की कघी। वय। बैसर।

बे-मग्ज—वि० [फा० बे+अ० मग्ज] निर्बुद्धि।

बेमजगी—स्त्री० [फा० बेमजगी] बेमजा होने की अवस्था या भाव।

बेमजा—वि० [फा० बेमज] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमे कोई स्वाद न हो। नीरस और फीका। २ (स्थिति) जिसके रग मे भग हो गया हो। ३. आनद-रहित।

बे-मन—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० मन] विना मन लगाये। विना दत्त-चित्त हुए।
वि० (काम मे) जिसका मन न लगता हो या न लग रहा हो।

बे-मरम्मत—वि० [फा०+अ०] [भाव० बेमरम्मती] जिसकी मरम्मत होने को हो, पर न हुई हो। टूटा-फूटा और बिगडा हुआ।

बे-मरमती—स्त्री० [फा०] बेमरम्मत होने की अवस्था या भाव।
†वि० बेमरम्मत।

बेमाई†—स्त्री०=बिवाई (रोग)।

बेमारी—स्त्री०=बीमारी।

बेमालूम—क्रि० वि० [फा०] ऐसे ढग से जिसमे किसी को मालूम न हो। विना किसी को पता लगे।
वि० जो ऊपर से देखने पर मालूम न पडता हो।

बेमुख†—वि०=विमुख।

बे-मुनासिब—वि० [फा०] जो मुनासिब न हो। अनुचित। ना-मुनासिब।

बे-मुरव्वत—वि० [फा०] जिसमे मुरव्वत न हो। जिसमे शील या सकोच का अभाव हो। तोता-चश्म।

बे-मुरव्वती—स्त्री० [फा०] बेमुरव्वत होने की अवस्था या भाव।

बे-मेल—वि० [फा० बे+हिं० मेल] जिसका किसी से मेल न बैठता हो। अनमेल।

बे-मौका—वि० [फा० बेमौका] जो अपने मौके पर न हो। जो अपने उपयुक्त अवसर या स्थान पर न हो।
क्रि० वि० विना मौके या उपयुक्त अवसर का ध्यान रखे हुए।
पु० मौके अर्थात् उपयुक्त अवसर का अभाव।

बे-मौत—अव्य० [फा० बे+हिं० मौत] विना मौत आये ही। जैसे—हम तो बे-मौत मर गए।

बे-मौसिम—वि० [फा०] १ जिसका मौसिम न हो। २ मौसिम न होने पर भी होनेवाला।

बेयरा†—पु०=बेरा।

बेरंग—वि० [फा०] निर्लज्ज।
वि० [अ० बियरिंग] (डाक द्वारा भेजा हुआ वह पत्र) जिस पर टिकट लगा ही न हो अथवा कम मूल्य का लगा हुआ हो।

बेर—पु० [स० बदरी] १ एक प्रसिद्ध पेड जिसके काड रेखा युक्त और विदीर्ण होते हैं, पत्र गोल, काँटेदार तथा वक्र, फल हरे तथा पकने पर पीले होते है। २ उक्त के फल जिनमे लम्बोतरी या गोल गुठली भी होती है।
†स्त्री० [स० वेला, हिं० वार] १ वार। दफा। २. देर। विलम्ब।

बेर-जरी—स्त्री० [हिं० बेर+झडी?] झडबेरी। जगली बेर।

बेरजा—पु०=बिरोजा।

बेरवा—पु० [देश०] कलाई पर पहनने का एक प्रकार का कडा।
†पु०=ब्योरा (विवरण)।

बेरस—वि० [फा० बे+हिं० रस] १ जिसमे रस का अभाव हो। नीरस। रस-हीन। फीका २ जिसमे कुछ स्वाद न हो। ३. जिसमे कोई आनन्द या मजा न हो।

बे-रसना†—स० [स० विलसन] १ विलास करना। २ भोगना।

बेर-हड्डी—स्त्री० [बेर?+हिं० हड्डी] घुटने के नीचे की हड्डी मे का उभार।

बे-रहम—वि० [फा० बेरहम] [भाव०] जिसके हृदय मे रहम अर्थात् दया न हो। निर्दय। निष्ठुर।

बेरहमी—स्त्री० [फा०] बेरहम होने की अवस्था या भाव। निर्दयता। निष्ठुरता।

बेरा—पु० [स० वेला] १ समय। वक्त। वेला। २ प्रभात का समय। तड़का।
पु० [हिं० मेझरा?] एक मे मिला हुआ जौ और चना। बेरी।
†पु०=बेडा।
पु० [अ० बेअरर=वाहक] चपरासी, विशेषत साहब लोगो का

वह चपरासी जिसका काम चिट्ठी-पत्री, समाचार आदि पहुँचाना और ले आना आदि होता है।

बे-राग—वि० [फा० बे+सं० राग] जिसमे किसी प्रकार का राग या प्रवृत्ति न हो। राग-रहित। उदा०—कौतुक देखत फिरेउ बेरागा।—तुलसी।

†पु०=वैराग्य।

बेरादरी†—स्त्री०=बिरादरी।

बेराम†—वि० [हि० बे+आराम] बीमार। रोगी।

बेरामी—स्त्री० [हि० बे+आरामी] बीमारी। रोग।

बेरास¹—पु०=विलास।

बे-राह—वि० [फा०] गलत या बुरे रास्ते पर चलनेवाला। पथभ्रष्ट।

बेरिआ†—स्त्री० [सं० वेला=समय] वेला। समय।

बेरियाँ—स्त्री० [हि० बेर] समय। वक्त। काल। वेला।

बेरी—स्त्री० [हि० बेर (फल)] १. हिमालय मे होनेवाली एक प्रकार की लता। इसे 'मुरकूल' भी कहते हैं। २ बेर का छोटा वृक्ष।

स्त्री० [?] एक मे मिली हुई तीसी और सरसों।

स्त्री० [हि० बार=दफा] १. उतना अनाज जितना एक बार चक्की मे पीसने के लिए डाला जाता है। २. बेर। दफा।

†स्त्री०१ =बेडी (पैरो की)। २ बेडी (नाव)। उदा०—नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूडत है बेरी।—मीराँ।

बेरी-छत—पु० [देश०] एक पद जो महावत लोग हाथी को किसी काम से मना करने के लिए कहते हैं।

बेरी बेरी—पु० [सिंह० बेरी=दुर्बलता] एक प्रकार का भीषण सक्रामक ज्वर। विशेष दे० 'वातबलासक'।

बेरुआ—पु० [देश०] बाँस का वह टुकड़ा जो नाव खीचने की गुन मे आगे की ओर बँधा रहता है और जिसे कधे पर रखकर मल्लाह नाव खीचते हुए चलते हैं।

बेरुई†—स्त्री० [हि० बेडिन] वेश्या। रडी।

बेरकी—स्त्री० [देश०] बैलो का एक रोग जिसमे उनकी जीभ पर काले छाले हो जाते है।

बेरुख—वि० [फा० बेरुख] [भाव० बेरुखी] १. जो समय पड़ने पर (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २ अप्रसन्न। नाराज।

क्रि० प्र०—पडना।—होना।

बेरुखी—स्त्री० [फा० बेरुखी] १ बेरुख होने की अवस्था या भाव। २ अपेक्षा।

क्रि० प्र०—दिखलाना।

बरूप—वि० [फा० बे+सं० रूप] कुरूप।

बेरोक—वि० [फा० बे+हि० रोक] जिस पर रोक न लगी हुई हो।

अव्य० बिना रोक के। स्वच्छद रूप में।

बे-रोजगार—वि० [फा० बेरोजगार] [भाव० बेरोजगारी] व्यवसाय-हीन। बेकार।

बे-रोजगारी—स्त्री० [फा०] बेरोजगार होने की अवस्था या भाव अर्थात् व्यवसायहीन या बेकार होने की अवस्था या भाव।

बे-रौनक—वि० [फा० बेरौनक] १. जिसमे या जिस पर रौनक न हो। २. श्रीहीन। शोभाहीन। ३ (स्थान) जहाँ चहल-पहल न हो।

बे-रौनकी—स्त्री० [बेरौनकी] बेरौनक होने की अवस्था या भाव।

क्रि० प्र०—छाना।

बेर्रा†—पु० [देश०] १. मिले हुए जौ और चने का आटा। २. कोई का फल।

बेर्रा-बरार—पु० [हि० बेर्रा=जौ और चना+फा० बरार=लादा हुआ] अन्न की उगाही।

बेलंद†—वि० [फा० बलद] १. ऊँचा। २ जो बुरी तरह परास्त या विफल हुआ हो। (व्यंग्य)

बेलंबा†—पुं०=विल्व।

बेल—पुं० [सं० बिल्व] १. एक प्रसिद्ध बहुत बड़ा पेड जिसकी त्वचा श्वेत वर्ण की होती तथा जिसके तने मे नहीं, बल्कि शाखाओं मे काँटे होते है। यह बहुत पवित्र माना जाता है और इसकी पत्तियाँ शिवजी पर चढाई जाती है। २. उक्त वृक्ष का गोलाकार फल जिसका गूदा पेट के रोग के लिए बहुत गुणकारी होता है।

स्त्री० [सं० वल्ली] वनस्पति का वह प्रकार या वर्ग जिसमे अधिक मोटा काट या तना नही होता और जो जमीन पर चारो ओर दूर तक फैलती या बाँसो, वृक्षो आदि के सहारे ऊपर की ओर बढती है। लहर। लता।

मुहा०—बेल मँढे चढ़ना=किसी कार्य का अन्त तक ठीक ठीक या पूरा उतरना। आरभ किये हुए कार्य में पूरी सफलता होना।

२. उक्त के आकार-प्रकार का अकन या नक्काशी। जैसे—बेल-दार किनारे की साडी।

पद—बेल-बूटे।

३. रेशमी या मखमली फीते आदि पर जर-दोजी आदि से बनी हुई इसी प्रकार की फूल-पत्तियाँ जो प्राय: पहनने के कपडो पर टाँकी जाती हैं। जैसे—इस दुपट्टे पर बेल टँक जाय तो और भी अच्छा हो।

क्रि० प्र०—टाँकना।—लगाना।

४. लाक्षणिक रूप मे, वश या सन्तान की परम्परा।

मुहा०—बेल बढना=वश-वृद्धि होना। पुत्र-पौत्र आदि होना।

५ विवाह आदि कुछ विशिष्ट अवसरों पर सबधियो और बिरादरी-वालो की ओर से हज्जामों, गानेवालियो और इसी प्रकार के नेगियो को मिलनेवाला थोडा-थोडा धन, जिसे पाकर वे वश-वृद्धि का आशीर्वाद देते या शुभ कामना प्रकट करते हैं।

क्रि० प्र० —देना।—पडना।

६. नाव खेने का डाँडा। बल्ली। ७. घोड़ो का एक रोग जिसमे उनके पैर सूज जाते हैं।

स्त्री० [सं० वेला] १. तरग। लहर। २ जलाशय का किनारा। तट। उदा०—गहि सु-बेल बिरलइ समुझि बहिंगे अपर हजार।—तुलसी।

पु० [फा० बेलच:] १. एक प्रकार की कुदाली जिससे मजदूर जमीन खोदते हैं। २ इमारत, सडक आदि बनाने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर जो केवल चिह्न के रूप मे और भिन्न-भिन्न विभागो की सीमा निर्धारित करने के लिए होती है।

क्रि० प्र०—डालना।

पद—दाग-बेल।

३. एक प्रकार का वडा और लवा खुरपा।

पु० [स० मल्ल या मल्ली] वह स्थान जहाँ शक्कर तैयार होती हो।

†पु०=वेला (पौधा और उसका फूल)।

पुं० [अं०] कपडे, कागज आदि की वह वडी गठरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए वनाई जाती है। गाँठ।

वेलक—पु० [फा० वेल्च] १ फरसा। फावडा। २ डाँडा।

बेलकी—पु० [हिं० वेल] चरवाहा।

बेल-खजी—पु० [देश०] एक प्रकार का वहुत ऊँचा वृक्ष जिसके हीर की लकडी लाल होती है।

वेल-गगरा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बे-लगाम—वि० [फा०] १. (घोडा) जिसके मुँह मे लगाम न लगी हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे, मुँह-फट।

बेल-गिरी—स्त्री० [हिं० वेल+गिरी=मीगी] वेल के फल का गूदा।

बेलचक—पुं०=वेलचा।

वेलचा—पु० [फा० वेल्च.] १ एक प्रकार की छोटी कुदाल जिससे माली लोग वाग की क्यारियाँ आदि वनाते हैं। २ किसी प्रकार की छोटी कुदाली। ३ एक प्रकार की लवी खुरपी।

बे-लज्जत—वि० [फा० वेलज्जत] १ जिसमे किसी प्रकार की लज्जत अर्थात् स्वाद न हो। स्वाद-रहित। २ नीरस। फीका। ३ जिसमे कोई आनन्द या सुख न हो। जैसे—गुनाह वेलज्जत।

बेलडी—स्त्री० [हिं० वेल+डी (प्रत्य०)] छोटी वेल या लता। वौर।

बेलदार—पु० [फा०] वह मजदूर जो फावडा चलाने, जमीन खोदने आदि का काम करता हो।

वि० [हिं० वेल+फा० दार] जिसमे वेल-वूटे वने हो। जैसे—वेलदार साडी।

बेलदारी—स्त्री० [फा०] फावडा चलाने का काम, भाव या मजदूरी।

बेलन—पु० [हिं० वेलना] १ लकडी, पत्थर, लोहे आदि का वह भारी, गोल और दंड के आकार का खड जो अपने अक्ष पर घूमता है और जिसे लुढकाकर कोई चीज पीसते, किसी स्थान को समतल करते अथवा ककड, पत्थर आदि कूटकर सडकें वनाते है। (रोलर) २ यत्र आदि मे लगा हुआ इस आकार का कोई वडा पुरजा जो घुमाकर दवाने आदि के काम मे आता है। जैसे—छापने की मशीन का वेलन। ३ कोल्हू का जाठ। ४ रूई धुनने की मुठिया या हत्था। ५ करघे मे का पौसार। ६ रोटी, पूरी आदि वेलने का 'वेलना' नामक उपकरण।

पु० [देश०] १. एक प्रकार का जडहन धान। २. एक मे मिलाई हुई वे दो नावे जिनकी सहायता से डूबी हुई नाव पानी मे से निकाली जाती है।

बेलना—स० [स० वलन] १ रोटी, पूरी, कचौरी आदि के पेडे या लोई को चकले पर रखकर वेलने (उपकरण) की सहायता से आगे-पीछे वार-वार चलाते हुए वढाकर वडा और पतला करना।

मुहा०—(कई तरह के) पापड वेलना=अनेक प्रकार के ऐसे काम करना जिनमे से किसी मे भी सफलता न हो। जैसे—वे कई तरह के पापड वेल चुके है।

२. कपास ओटना। ३ चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—पापड़ वेलना=काम विगाडना। चौपट करना। जैसे—यह सारा पापड आपका ही वेला हुआ है।

४ मनोविनोद के लिए जलाशय मे एक दूसरे पर पानी के छीटे उडाना।

पु० काठ, पीतल आदि का वना हुआ एक प्रकार का लवा उपकरण जो वीच मे मोटा और दोनो ओर कुछ पतला होता है और जो प्राय रोटी, पूरी, कचौरी आदि की लोई को चकले पर रखकर वेलने के काम आता है।

बेलनी—स्त्री० [हिं० वेलना] कपास ओटने की चरखी।

वेलपत्ती—स्त्री०=वेलपत्र।

वेलपत्र—पु० [स० विल्वपत्र] वेल (वृक्ष) के पत्ते।

वेलपात†—पु०=वेलपत्र।

वेलवागुरा—पु० [डिं०] हिरनो को पकडने का जाल।

वेलवूटे—पु० [हिं० वेल-+वूटे] किसी चीज पर अकित या चित्रित लताओ, पेड-पौधों आदि के अकन या चित्र।

वेलवाना—स० [हिं० वेलना का प्रे०] वेलने का काम दूसरे से कराना।

वेलसना—अ० [स० विलास+ना (प्रत्य०)] भोग-विलास करना। सुख लूटना। आनद करना।

वेलहरा†—पु०=विलहरा।

वेलहरी—पु० [हिं० वल+हरी (प्रत्य०)] साँची पान।

वेल-हाजी—स्त्री० [हिं० वेल+हाजी?] धोती आदि के किनारो पर लहरियेदार वेल छापने का लकड़ी का ठप्पा। (छीपी)

वेल-हाशिया—पु० [हिं० वेल+फा० हाशिया] धोती आदि के किनारो पर वेल छापने का ठप्पा।

वेला—पु० [स० मल्लिका?] १ चमेली आदि की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा जिसमे सफेद रग के सुगधित फूल लगते है। इसके मोतिया, मोगरा और मदनवान नामक तीन प्रकार होते हैं। २ मल्लिका। त्रिपुरा। ३ वेले के फ़ूल के आकार का एक प्रकार का गहना।

स्त्री० [सं० वेला] १ समय। वक्त। जैसे—सवेरे की वेला।

मुहा०—वेला वाँटना=सेवेरे या सन्ध्या के समय नियमित रूप से गरीवो को अन्न, धन आदि वाँटना।

२ पानी की लहर। ३ समुद्र का किनारा जहाँ लहरे आकर टकराती है। ४ एक प्रकार का छोटा कटोरा। ५ चमडे की वनी हुई एक प्रकार की छोटी कुप्पिया जिसमे लकडी की लवी डडी लगी रहती है और जिसकी सहायता से तेल नापते या दूसरे पात्र मे डालते हैं।

स्त्री० [अ० वायोलिन] सारगी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य वाजा।

बेलाई—स्त्री० [हिं० वेलना+आई (प्रत्य०)] १. वेलने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ धातु के पत्तरो को यत्र की सहायता से दवाकर चौडा या लवा करना।

स्त्री०=विलाई (विल्ली)।

वे-लाग—वि० [फा० वे+हिं० लाग=लगावट] १ जिसमे किसी प्रकार की लगावट या सवध न हो। विलकुल अलग और साफ या स्वतत्र। २ सच्चा और साफ। खरा।

वेलावल—पु० [स० वल्लभ] १ पति। २ प्रियतम।

†स्त्री० [स० वल्लभा] १ पत्नी। २. प्रियतमा।
पु०=विलावल (राग)।
वेलि*—स्त्री०=वेल (वल्ली)। उदा०—अँसुवन तन सींचि सींचि प्रेम वेलि वोई।—मीराँ।
वेलिया†—स्त्री० [हिं० वेला का अल्पा०] छोटी कटोरी।
वेली—पु० [हि० वल ?] रक्षक और सहायक। जैसे—गरीवों का भी है अल्लाह वेली।—कोई शायर।
स्त्री० [स० वल्ली] १ वेल। लता। २ रहस्य-संप्रदाय मे, (क) विषय-वासना। (ख) ईश्वर-भक्ति के रूप मे फैलनेवाली वेल।
वेलुत्फ—वि० [फा०+अ०] [भाव० वेलुत्फी] जिससे कोई लुत्फ या मजा न मिल रहा हो। वेमजा।
वे-लौस—वि० [फा० वे+अ० लौस] [भाव० वेलौसी] जो किसी से लौस अर्थात् कामनापूर्ण लगाव या सम्बन्ध न रखता हो, अर्थात् खरा और सच्चा व्यवहार करनेवाला। पाक-साफ।
वेवकूफ—वि० [फा० वे+अ० वुकूफ] [भाव० वेवकूफी] जिमे किसी प्रकार का वकूफ अर्थात् शऊर न हो। मूर्ख। निर्वुद्धि। नासमझ।
वेवकूफी—स्त्री० [फा० वे+अ० वुकूफी] १ वेवकूफ होने की अवस्था या भाव। २ वेवकूफ का कोई कार्य।
वे-वक्त—अव्य० [फा०+अ०] कुसमय मे।
वे-वजह—अव्य० [फा०+अ०] विना किसी वजह अर्थात् कारण या हेतु के। निष्प्रयोजन।
वेवट*—स्त्री० [?] १ विवशता। २. सकट।
वे-वतन—वि० [फा०] १ जिसका कोई वतन अर्थात् देश न हो। २ जिसके रहने आदि का कोई ठिकाना न हो। वे-घर वार का। २ परदेसी। विदेशी।
वेवतना—स० =व्योतना।
वेवपार†—पु०=व्यापार।
वेवपारी—पु०=व्यापारी।
वे-वफा—वि० [फा० वे+अ० वफा] [भाव० वेवफाई] १. जिसमे वफा अर्थात् निष्ठा, सद्भाव आदि वाते न हों, फलत कृतघ्न। २. वचन भग करनेवाला। दगावाज।
वेवफाई—स्त्री० [फा०+अ०] १ वेवफा होने की अवस्था या भाव। कृतघ्नता। २ वचन भग। दगावाजी।
वेवर—पु० [देश०] एक तरह की घास जो रस्सी वुनने के काम आती है।
वेवरा†—पु०=व्योरा।
वेवरेवाजी—स्त्री० [हिं० व्यौरा+फा० वाजी] चालाकी। चालवाजी। (वाजारू)
वेवरेवार—वि० [हिं० वेवरा+वार (प्रत्य०)] तफसीलवार। विवरण-सहित।
वेवसाउ†—पु०=व्यवसाय।
वेवस्था†—स्त्री०=व्यवस्था।
वेवहना—अ० [सं० व्यवहार] १. व्यवहार करना। वरताव करना। वरतना। २ सूद पर रुपयों का लेन-देन करना।
वेवहरिया—पु० [स० व्यवहार+इया (प्रत्य०)] १. सूद पर रुपयों का लेन-देन करनेवाला। महाजन। २. वही-खाता लिखनेवाला। लिपिक। मुनीम।
वेवहार—पु० [स० व्यवहार] १. सूद पर रुपए उधार देने का व्यवसाय। महाजनी। २ रोजगार। व्यापार। ३. दे० 'व्यवहार'।
वेवहारी† —पु०=वेवहरिया।
वेवा—स्त्री० [फा० वेव] विधवा स्त्री। राँड।
वेवाई†—स्त्री०=विवाई।
वेवान†—पु०=विमान।
वेवि*—वि०=विवि (दो)। उदा०—वेवि सरोरुह उपर देखल।—विद्यापति।
वेश—वि० [फा०] [भाव० वेशी] अधिक। ज्यादा। जैसे—वेश-कीमत=वहुत अधिक मूल्य का।
†अव्य० ऐसा ही सही। अच्छा। (पूरव)
†पु०=भेस (वेष)।
वे-शऊर—वि० [फा० वे+अ० शुऊर] [भाव० वेशऊरी] जिसे शऊर न हो अर्थात् जिमे कोई काम ठीक तरह से करने का ढग न आता हो। मूर्ख।
वेशऊरी—स्त्री० [फा० वे+अ० शुऊर+हिं० ई (प्रत्य०)] वे-शऊर होने की अवस्था या भाव।
वे-शक—अव्य० [फा० वे+अ० शक] १. विना किसी प्रकार के शक या सदेह के। २ अवश्य। जरूर। निःसन्देह।
वेश-कीमत†—वि० [फा० वेश+अ० कीमत] वहुमूल्य।
वेश-कीमती†—वि०=वेशकीमत।
वे-शरम—वि० [फा० वेशर्म] [भाव० वेशरमी] जिमे शरम या हया न हो। निर्लज्ज। वेहया।
वे-शरमी—स्त्री० [फा० वेशर्मी] निर्लज्जता। वेहयाई।
वेशी—स्त्री० [फा०] १ वेश होने की अवस्था या भाव। २ अधिकता। ज्यादती। ३ लाभ। नफा।
वे-शुवहा—अ० [फा० वे+अ० शुव्ह] विना किसी शक या शुवहा के। निःसदेह। वेशक।
वेशुमार—वि० [फा०] [भाव० वेशुमारी] जो गिना न जा सके। अगणित। असंख्य। अनगिनत।
वेशोकम—वि० [फा०] थोडा-वहुत।
वेश्म—पु० [स० वेश्म] घर। मकान।
वेसदर—पु० [स० वैश्वानर] अग्नि।
वे-संभार—वि० [फा० वे+हिं० सँभाल=सुध] जो अपने आपको सँभाल न सकता हो अर्थात् अचेत या वेसुध।
वेस†—स्त्री० [स० वयस्] उम्र। अवस्था। उदा०—वाल वेस ससि ता समीप, अम्रित रस पिन्निय।—चदवरदाई।
पुं०, वि०=वेश।
वेसन—पु० [देश०] चने की दाल का चूर्ण। चने का आटा।
वेसनी—वि० [हिं० वेसन+ई (प्रत्य०)] १. वेसन का वना हुआ। जैसे—वेसनी लड्डू। २ जिसमे वेसन पडा या मिला हो। जैसे—वेसनी पूरी या रोटी।

स्त्री० १ बेसन की बनी हुई पूरी। २. बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी।

बे-सबब—अव्य० [फा०] बिना कारण। अकारण।

बे-सबर(1)—वि० [फा० बे+अ० सब्र+हि० आ (प्रत्य०)] [भाव० बेसबरी] जिसे सब्र या सतोष न होता हो। जो सतोष न रख सके। अधीर।

बे-सबरी—स्त्री० [फा० बे+अ० सब्री] बेसबर होने की अवस्था या भाव। अधीरता।

बे-समझ—वि० [फा० बे+हि० समझ] मूर्ख। निर्बुद्धि। ना-समझ।

बे-समझी—स्त्री० [हि० बेसमझ+ई (प्रत्य०)] बे-समझ होने की अवस्था या भाव। मूर्खता। नासमझी।

बेसर—स्त्री० [?] नाक मे पहनने की एक तरह की बुलाक।
पु० १ गधा। २ खच्चर। ३. एक अत्यज जाति।

बेसरा—वि० [फा० बे+सरा=ठहरने का स्थान] जिसके लिए ठहरने का कोई स्थान न हो। आश्रयहीन।
†पु० एक प्रकार की चिडिया।

बे-सरोसामान—वि० [फा०] १ जिसके पास कुछ भी सामान या सामग्री न हो। २ दरिद्र। कगाल।

बे-सलीका—वि० [फा० बे+अ० सलीक] [भाव० बेसलीकगी] १. जिसे काम करने का सलीका या ढग न आता हो। २ अशिष्ट और असभ्य।

बेसवा†—स्त्री०=वेश्या।

बेसवार—पु० [देश०] वह सडाया हुआ मसाला जिससे शराब चुआई जाती है।

बेसहना†—स०=बेसाहना।

बेसा†—स्त्री०=वेश्या।
पु०=भेस।

बेसाख्ता—अव्य० [बे+फा० साख्त] [भाव० बेसाख्तगी] बिलकुल आप से आप और स्वाभाविक रूप से।

बेसारा—वि० [हि० बैठाना, गुज० बैसाना] १ बैठानेवाला। २ जमाकर रखने या स्थापित करनेवाला।

बेसाहना—स० [स० व्यवसन] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान-बूझकर अपने ऊपर लेना अथवा पीछे या साथ लगाना। बिसहना। जैसे—किसी से झगडा या बैर बेसाहना।

बेसाहनी†—स्त्री० [हि० बेसाहना] १ खरीदने या मोल लेने की क्रिया या भाव। क्रय। २ मोल ली हुई चीज। सौदा। ३ जान-बूझकर अपने पीछे लगाई हुई चीज या बात।

बेसाहा—पु० [हि० बेसाहना] १ खरीदी हुई चीज। सौदा। सामग्री। २. जान-बूझकर अपने ऊपर लिया हुआ संकट।

बे-सिलसिले—अव्य० [हि० बे+फा० सिलसिला] बिना किसी क्रम या सिलसिले के। अव्यवस्थित रूप से।

बेसी—स्त्री० =बेशी।
वि०=बेश।

बेसुध—वि० [फा० +हि० सुध-होश] १ जिसे सुध अर्थात् होश न हो। अचेत। बेहोश। २ जिसका होश-हवास ठिकाने न हो। बहुत घबराया हुआ। बद-हवास।

बेसुधी—स्त्री० [हि० बेसुध+ई (प्रत्य०)] बेसुध होने की अवस्था या भाव।

बेसुर—वि०=बेसुरा।

बेसुरा—वि० [हि० बे+सुर=स्वर] १ जो नियमित स्वर मे न हो। जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो। (सगीत) जैसे—बेसुरा गाना। २ (व्यक्ति) जो ठीक स्वर मे न गाता हो। ३ जो उपयुक्त अथवा ठीक अवसर या समय पर न हो। बे-मौका।

बेसूद—वि [फा०] जिसमे कुछ भी लाभ न हो। बेफायदा।

बेस्या—स्त्री० [स० वेश्या] १ रडी। वेश्या। २ एक प्रकार की बर्रे जो देखने मे बहुत सुन्दर होती है पर जिसका डक बहुत जहरीला होता है।

बे-स्वाद—वि० [हि० +स० स्वादु] १ जिसमे कोई अच्छा स्वाद न हो। स्वाद-रहित। २ नीरस। फीका।

बेहंगम—वि० [स० विहगम] १. जो देखने मे भद्दा हो। बेढगा। २. बेढब। ३ विकट।

बेहँसना—अ०=विहँसना (ठठाकर हँसना)।

बेह—पु० [स० वेध] १ छेद। सुराख। २ दे० 'नेव'।

बेहर—पु० [?] पहाडी इलाको मे वह नीची और ऊबड-खाबड भूमि जिसकी बहुत सी मिट्टी नदी या वर्षा के जल से बह गई हो, और जगह जगह गहरे गड्ढे पड गये हो।

बेहड†—वि०, पु०=बीहड।
पु०=बेहट।

बेहतर—वि० [फा०] अपेक्षाकृत अच्छा। किसी की तुलना या मुकाबले मे अच्छा। किसी से बढकर।
अव्य० प्रार्थना या आदेश के उत्तर मे स्वीकृति-सूचक अव्यय। अच्छा। (प्राय इस अर्थ मे इसका प्रयोग 'बहुत' शब्द के साथ होता है। जैसे—आप कल सुबह आइयेगा? उत्तर—बहुत बेहतर।

बेहतरी—स्त्री० [फा०] १ बेहतर होने की अवस्था या भाव। अच्छापन। २ उपकार। भलाई। ३ कल्याण। मगल।

बेहद—वि० [फा०] १ जिसकी हद या सीमा न हो। असीम। अपार। २ बहुत अधिक।

बेहन—पु० [स० वपन] अनाज आदि का बीज जो खेत मे बोया जाता है। बीया।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।
वि० [?] जर्द। पीला।

बेहना—पु० [देश०] १ जुलाहो की एक जाति जो प्राय रुई धुनने का काम करती है। २. धुनिया।

बेहनौर—पु० [हि० बेहन+और (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ धान या जडहन का बीज डाला जाय। पनीर। बियाडा।

बे-हया—वि० [फा०] [भाव० बेहयाई] (व्यक्ति) जिसे हया या लज्जा न हो। निर्लज्ज। बेशर्म।

बे-हयाई—स्त्री० [फा०] बेहया होने की अवस्था या भाव। बेशर्मी। निर्लज्जता।

बेहर†—वि० [स० विह्?] १ अचर। स्थावर। २ अलग। जुदा। पृथक्। उदा०—बेहर बेहर भाऊ तेन्ह खँड-खँड ऊपर जात।—जायसी।

पु०[?] वापी।=बावली।

बेहरना—अ०[हिं० बेहर] किसी चीज का फटना या तड़क जाना। दरार पड़ना।

बेहरा—पु० [देश०]१ एक प्रकार की घास जिसे चौपाये बहुत चाव से खाते है। (बुदेल०) २. मूंज की बनी हुई गोल या चिपटी पिटारी जिसमे नाक मे पहनने की नथ रखी जाती है।

वि०[हिं० बेहर] अलग। जुदा। पृथक्।

†पु०=बेयरा।

बेहराना—स०[हिं० बेहरना का स०] फाडना।

बेहरी—स्त्री०[स० विहृति=बलपूर्वक लेना] १ किसी विशेष कार्य के लिए बहुत से लोगों से चदे के रूप मे माँगकर थोडा-थोडा धन इकट्ठा करने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—उगाहना।—माँगना।

२. उक्त प्रकार से इकट्ठा किया हुआ धन। ३ वह किस्त जो असामी शिकमीदार को देता है। बाछा।

बेहला—पु० [अ० वायोलिन]सारगी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य बाजा।

बेहाई|—स्त्री० [फा० बे-हयाई] बेहया होने की अवस्था या भाव। निर्लज्जता। बेशरमी।

क्रि० वि० बे-हया बनकर। निर्लज्जता-पूर्वक। उदा०—आए नैन धाइ कै लीजै, आवत अब बेहया बेहाई।—सूर।

बे-हाथ—वि०[फा० बे+हिं० हाथ]१ जो अपने हाथ (अर्थात् कार्य करने की शक्ति या साधन) से रहित या हीन हो चुका हो। जैसे—फारखती लिखकर तो तुम बे-हाथ हो चुके हो। २. जो हाथ (अर्थात् अधिकार या वश) के बाहर हो गया हो। जैसे—अब तो लडका तुम्हारे हाथ से निकल कर बे-हाथ हो चुका हो।

बेहान|—पु०=बिहान।

बे-हाल—वि०[फा० बे+अ० हाल] [भाव० हाली] १. जिसका बेहाल अर्थात् दशा बहुत बिगड़ गई हो। मरणासन्न। २ दुर्दशाग्रस्त। ३. अचेत। संज्ञाहीन। ४ व्याकुल। विकल।

बे-हाली—स्त्री०[फा०] १ बेहाल होने की अवस्था या भाव। २ बेचैनी। व्याकुलता।

बे-हिसाब—अव्य० [फा० बे+अ० हिसाब] बहुत अधिक। बहुत ज्यादा। वि० असख्य।

बेही|—स्त्री०[?] नव विवाहित वर-वधू को गाँव के कुम्हारों द्वारा दिया जानेवाला नया बर्तन। (पूरब)

बे-हुनर|—वि० [फा० बे+हुनर] १. जिसे कोई हुनर न आता हो। २. जो कुछ भी काम न कर सकता हो। मूर्ख।

बे-हुनरी—स्त्री०[फा०] किसी प्रकार का हुनर या गुण न होने की अवस्था या भाव।

बे-हुरमत—वि०[फा०] [भाव० बेहुरमती] जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। बेइज्जत।

बे-हूदगी—स्त्री०[फा०]१. बेहूदा होने की अवस्था या भाव। असभ्यता। अशिष्टता। २. बेहूदेपन से भरा हुआ काम या बात।

बेहूदा—वि० [फा० बेहूद:]१. (व्यक्ति) जिसे तमीज या समझ न हो और इसी लिए जो शिष्टता या सभ्यतापूर्वक आचरण या व्यवहार करना न जानता हो। (२. काम या बात) जो शिष्टता या सभ्यता के विरुद्ध हो। अशिष्टता-पूर्ण।

बेहूदापन—पुं०[फा० बेहूदा+पन (प्रत्य०)] बेहूदा होने की अवस्था या भाव। बेहूदगी। अशिष्टता।

बे-हून—अ० य०[स० विहीन]बिना। बगैर। रहित।

बे-हैफ—वि०[फा० बेहैफ] बेफिक्र। जिससे कोई चिंता न हो। चिंता-रहित।

बे-होश—वि०[फा०] [भाव० बेहोशी] जिसे होश न रह गया हो। मूर्च्छित। बेसुध। अचेत।

बे-होशी—स्त्री०[फा०] बेहोश होने की अवस्था या भाव। मूर्च्छा। अचेतनता।

बैंक—पुं०[अं०] दे० 'बक' (महाजनी कोठी)।

बैंकर—पु०[अ०] महाजन।

बैंगन—पु०[स० वगण ?]१ एक पौधा जिसके लबोतरे फलो की तरकारी बनाई जाती है। भटा। २. उक्त पौधे का फल जिसकी तरकारी बनती है। ३ दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का धान और उसका चावल।

बैंगनी—वि०[हिं० बैंगन+ई (प्रत्य०)]बैंगन के रग का। जो ललाई लिये नीले रंग का हो। बैंजनी।

पु० उक्त प्रकार का रग।

स्त्री० एक प्रकार का पकवान जो बैंगन के टुकडो को घुले हुए बेसन मे लपेटकर और घी या तेल मे तलकर बनाया जाता है।

बैंचा—पु०[?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।

स्त्री०=बैंच।

बैंजनी—वि०=बैंगनी।

बैंटा|—पु०=बेंट (मुठिया)।

बैंड—पु०[अ०] १ झुड। दल। २ अँगरेजी बाजा बजाने वालो का दल जिसमे सब लोग मिलकर एक साथ बाजा बजाते हैं। ३. पाश्चात्य ढग के कुछ विशिष्ट बाजो का समूह जो एक साथ बजाये जाते हैं।

बैंड़ना|—स०=बेंडना।

बैंडा—वि० =बेंडा।

बैंडी|—स्त्री०[?] तालाब या जलाशय मे सीचने के लिए पानी उछालने का कार्य।

बैंत—पु०१.=बैत। २ बेत।

बै—स्त्री०[अ० बैऽ] रुपए, पैसे आदि के बदले मे कोई वस्तु दूसरे को इस प्रकार दे देना कि उस पर अपना कोई अधिकार न रह जाय। बेचना। बिक्री।

स्त्री०[स० वाय]करघे मे की कघी। बैसर।

स्त्री०=वय (अवस्था या उमर)।

बैकना|—अ०=बहकना।

बैकल—वि०[स० विकल, मि० फा० बेकल] १. विकल। बेचैन। २. पागल। उन्मत्त।

बैकुंठ|—पुं०=बैकुण्ठ।

बैखरी—स्त्री०=बैखरी।

बैखानस—वि०=वैखानस।
बैग—पु०[अ०]१. थैला। झोला। २ बोरा।
बैगन—पु०=बैंगन।
बैगनी†—पु०=बैंगनी (पकवान)।
बैजंती—स्त्री०[स० वैजयती] १ फूल के एक पौधे का नाम जिसके पत्ते हाथ-हाथ भर लबे और चार पाँच अगुल चौडे बड या मूल काड से लगे हुए होते हैं। २ विष्णु के गले की माला का नाम।
बैज—पु०[अ०]१. चिह्न। निशान। २ चपरास। ३ संस्था आदि का चिह्न सूचित करनेवाला पट्टा या कागज अथवा कपडे आदि का टुकडा। बिल्ला।
बैजई—वि०[फा० बैजावी] हलके नीले रग का।
पु० उक्त प्रकार का अर्थात् हलका नीला रग।
बैजनाथ*—पु०=वैद्यनाथ।
बैजयंती—स्त्री०=बैजंती।
बैजड़ा—पु०[देश०]१ उर्द का एक भेद। २. कबड्डी नामक खेल।
बैजवी—वि०[अ०बजावी]१ अडे का। २ अंडाकार।
बैजा—पु०[अ० बैज]१ अंडा। २ गलका नामक रोग जिसकी गिनती चेचक या शीतला मे होती है।
बैजावी—वि० [अ० बजावी] अडाकार।
बैजिक—वि० [स० बीज+ठक्—इक]१ बीज-सबधी २. मूल-संबधी। ३. पैतृक।
पु०१ अकुर। २. कारण। ३ आत्मा।
बैटरी—स्त्री०[अ०] १ तावे या पीतल आदि का वह पात्र जिसमे रासायनिक पदार्थो के योग से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम मे लाई जाती है। (बैटरी)
मुहा०—बैटरी चढाना=बैटरी या बिजली की सहायता से किसी चीज पर किसी धातु का मुलम्मा करना। २. तोपखाना।
बैटा†—स्त्री०[देश०] रुई ओटने की चरखी। ओटनी।
बैठ—पु०[हि० बैठना=पडता पडना] सरकारी मालगुजारी या लगान की दर। राजकीय कर या उसकी दर।
बैठक—स्त्री०[हि० बैठना]१. बैठने की क्रिया, ढग भाव या मुद्रा। जैसे—इस जानवर की बैठक ही ऐसी होती है। बैठकी। २. घर का वह कमरा जिसमे प्राय आये-गये लोग बैठकर आपस मे बात-चीत करते हैं। बैठका। ३. बैठने के लिए बना हुआ कोई आसन या स्थान। उदा०—अति आदर सो बैठक दीन्ही।—सूर। ४ नीचे का वह आधार जिस पर खभा, मूर्ति या ऐसी ही और कोई चीज खडी की या बैठाई जाती है। पद-स्तल। ५. सभा, सम्मेलन आदि का एक बार मे और एक साथ होनेवाला कोई अधिवेशन। (सिटिंग) जैसे—आज सम्मेलन की दूसरी बैठक होगी। ६ कुछ लोगो के आपस मे प्राय सग मिलकर बैठने की क्रिया या भाव। बैठकी। ७ एक प्रकार की कसरत जिसमे बार-बार खडा होना और बैठना पडता है। बैठकी।
क्रि० प्र०—लगाना।
८ किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी स्थान पर जाकर तब तक बैठने की क्रिया, जब तक वह काम पूरा न हो जाय। ९ काँच, धातु आदि का दीवट जिसके सिरे पर बत्ती जलती या मोमबत्ती खोंसी जाती है। बैठकी। १०. दे० 'बैठकी'।

बैठका—पु०[हि० बैठक] १ वह चौपाल या दालान आदि जहाँ कोई बैठता हो और जहाँ जाकर लोग उससे मिलने या उसके पास बैठकर बातचीत करते हों। २ बैठक।
बैठकी—स्त्री०[हि० बैठक+ई (प्रत्य०)]१ किसी स्थान पर प्राय जाकर बैठने की क्रिया। जैसे—आज-कल वकील साहब के यहाँ उनकी बहुत बैठकी होती है। २ बार बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। ३ बैठने का आसन। बैठक। ४ वेश्याओं का वह गान जिसमे वे बैठकर गाती है, नाचती नहीं। ५ शीशे का वह झाड़ जो जमीन पर रखकर जलाया जाता है। (छत मे लटकाये जानेवाले झाड़ से भिन्न) ६ वह नगीना जो किसी गहने मे जडकर बैठाया जाता है (बेधकर पिरोये जानेवाले नगीने से भिन्न) जैसे—अँगूठी मे जडा जानेवाला मोती 'बैठकी' कहलाता है।
वि० बैठने से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—बैठकी हड़ताल।
बैठकी हड़ताल—स्त्री० [हि०] हड़ताल का वह प्रकार या रूप जिसमे किसी कर्मशाला या कार्यालय मे कर्मचारी लोग उपस्थित तो होते हैं, पर अपने अपने स्थान पर खाली बैठे रहते हैं, अपना काम नहीं करते। बैठ हड़ताल। (सिट डाउन स्ट्राइक)
बैठन—स्त्री०[हि० बैठना]१ बैठने की क्रिया, ढग या भाव। २ आसन
पु०=बेठन
बैठना—अ०[स० वेशन, विष्ठ, प्रा० विट्ठ+ना (प्रत्य०)] १. प्राणियों का अपने घुटने टेक या टाँगें मोड़कर शरीर को ऐसी स्थिति मे करना या लाना कि धड सीधा ऊपर की ओर रहे और उसका सारा भार चूतड़ों और जाँघो के नीचेवाले तल पर पड़े। शरीर का नीचेवाला आधा भाग किसी आधार पर टिका या रखकर पुट्ठो के बल आसीन या स्थित होना (खडे रहने और लेटने या सोने से भिन्न) जैसे—कुरसी, चौकी या जमीन पर बैठना।
विशेष—पक्षियो को बैठने के लिए प्राय अपने पैर मोडने नहीं पडते और उनका खडा रहना तथा बैठना दोनो समान होते हैं। जब वे उड़ना छोडकर जमीन या पेड़ की डाल पर खडे होते हैं, तब उनकी वही स्थिति 'बैठना' भी कहलाती है। पर अडे सेने के समय जब वे बैठते हैं, तब उनकी टाँगें भी मुड जाती हैं।
पद—(कहीं या किसी के साथ) बैठना-उठना या उठना-बैठना=किसी के सग या साथ रहकर बात-चीत करना और समय बिताना। जैसे—उनका बैठना-उठना सदा से बडे आदमियो के यहाँ (या साथ) ही रहा है। बैठते-उठते या उठते-बैठते =अधिकतर अवसरों पर। प्राय। हर समय। जैसे—बैठते उठते (या उठते-बैठते) ईश्वर का ध्यान रखना चाहिए। बैठे-बैठे=(क) अचानक। सहसा। उदा०—बैठे-बैठे हमें क्या जानिए क्या याद आया।—कोई शायर। (ख) बिना कुछ किये। जैसे—चलो, बैठे-बैठे तुम्हे भी सौ रुपये मिल गये। (ग) दे० 'बैठे-बैठाये'। बैठे-बैठाये=अकारण, निष्प्रयोजन या व्यर्थ। जैसे—बैठे-बैठाये तुमने यह झगडा मोल ले लिया।
मुहा०—बैठे रहना=कर्तव्य, कार्य आदि का ध्यान छोडकर दया-माया उससे अलग या दूर रहना। जैसे—तुम जहाँ जाते हो, वहीं बैठ रहते हो। बैठे रहना= (क) कुछ भी काम-धधा न करना। जैसे—छुट्टी के दिन वे घर पर ही बैठे रहते है, कहीं आते-जाते नहीं। (ग) किसी

काम या बात मे योग न देना अथवा हस्तक्षेप न करना। जैसे—मैं भी वहाँ चुपचाप बैठा रहा, कुछ बोला नहीं। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए आसन या स्थान ग्रहण करना। जैसे—(क) विद्यार्थी का पढने के लिए (या परीक्षा मे) बैठना। (ख) अधिकारी का काम के समय अपनी जगह पर (या मालिक का गद्दी पर) बैठना। (ग) अपना चित्र अंकित कराने के लिए चित्रकार के सामने बैठना। (घ) चिड़ियों या मछलियों का अंडे सेने के लिए बैठना। ३. किसी का किसी पद या स्थान पर अधिकारी या स्वामी बनकर आसीन होना। जैसे—(क) उनके बाद उनका लड़का गद्दी पर बैठा। (ख) कल राज्य मे नये राज्यपाल बैठेंगे। ४. जिस काम के लिए कोई उद्यत, तत्पर या सन्नद्ध हुआ हो, उससे अलग दूर या विरत होना अथवा संबंध छोड़ना। जैसे—(क) चुनाव के लिए जो चार उम्मेदवार थे, उनमे से दो बैठ गये। (ख) अब उनके सभी सहायक और साथी बैठ गये है। ५. किसी प्रकार की सवारी पर आसीन या स्थित होना। जैसे—घोड़े, नाव, मोटर या रेल पर बैठना। ६. किसी चीज का नीचेवाला अंश या भाग या जमीन मे अच्छी तरह यथास्थान स्थित होना। ठीक तरह से लगना। जैसे—(क) वहाँ अभी एक खंभा और बैठेगा। (ख) इस जमीन मे जड़हन (या धान) नहीं बैठेगा। ७. किसी स्थान पर जमकर या दृढतापूर्वक आसीन या स्थित होना। उदा०—हजरते दाग जहाँ बैठ गये, बैठ गये।—दाग। ८. स्त्रियों के संबंध मे, किसी के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करके उसके घर मे जाकर पत्नी के रूप मे रहना। जैसे—विधवा होने पर वह अपने देवर के घर जा बैठी। ९. नर और मादा का संभोग करने के लिए किसी स्थान पर आना या होना, अथवा संभोग करना। (बाजारू) जैसे—उस बार यह कुतिया किसी बाजारू कुत्ते के साथ बैठी थी। १०. किसी रखी जानेवाली अथवा अपने स्थान से हटी हुई चीज का उपयुक्त और ठीक रूप से उस स्थान पर जमना, फिर से आना या स्थित होना; जहाँ उसे वस्तुत आना, रहना या होना चाहिए। जैसे—(क) घरन या पत्थर का अपनी जगह पर बैठना। (ख) टोपी या पगड़ी का सिर पर ठीक से बैठना। (ग) उखड़ी हुई नस या हड्डी का फिर से अपनी जगह पर बैठना। ११. जो ऊपर की ओर उठा या खड़ा हो, उसका गिर या हटकर नीचे आना या धराशायी होना। गिर पड़ना या जमीन मे आ लगना। जैसे—(क) इस बरसात मे पचासों मकान बैठ गये। (ख) कड़ाके की धूप या पाले से सारी फसल बैठ गई। (ग) भार की अधिकता के कारण नाव बैठ गई। १२. किसी काम, चीज या बात का अपने उचित या साधारण रूप मे न रहकर चौपट या नष्ट हो जाना। जैसे—(क) लगातार कई बरसों तक घाटा होने के कारण उसका कारबार बैठ गया। (ख) अधिक व्यय और कुव्यवस्था के कारण संस्था बैठ गई। १३. तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई चीज का नियर कर तल मे जा लगना। जैसे—पानी मे घोला हुआ चूना या रंग बैठना। १४. किसी उभारदार चीज का नष्ट या विकृत होकर कुछ गहरा या समतल हो जाना। पिचकना जैसे—(क) पुरिटस लगाने से फोड़ा (या दवा लगाने से सूजन) बैठना। (ख) शीतला के प्रकोप से किसी की आँख बैठना। (ग) बीमारी या बुढापे मे गाल बैठना। १५. किसी चीज का गल, पिघल या सड़कर अपना गुण, रूप, स्वाद आदि गँवा देना। जैसे—(क) अधिक आँच लगने से गुड़ का बैठना। (ख) गदे हाथ लगने से अचार का बैठना। (ग) पानी अधिक हो जाने से भात का बैठना। (घ) अधिक उमस के कारण अमरूद या आम बैठना। १६. नापने-तौलने, पड़ता निकालने या हिसाब लगाने पर किसी निश्चित मात्रा, मान, मूल्य आदि का ज्ञात अथवा स्थिर होना। जैसे—(क) तौलने पर गेहूँ का बोरा सवा दो मन बैठा। (ख) नाव और उसका सामान खरीदने मे तीन सौ रुपये बैठे। (ग) घर तक ले जाने मे यह कपड़ा तीन रुपये गज बैठेगा। १७. प्रहार आदि के लिए अस्त्र-शस्त्र, शारीरिक अंग अथवा ऐसी ही किसी चीज का चलाये जाने या फेंके जाने पर अपने ठीक लक्ष्य पर जाकर लगना। जैसे—(क) निशाने पर गोला या गोली बैठना। (ख) शरीर पर थप्पड़ या मुक्का बैठना। १७. ग्रहों, तारों आदि का आकाश मे नीचे उतरना या उतरते हुए क्षितिज के नीचे जाना। अस्त होना। जैसे—सूर्य के बैठने का समय हो चला था। १९. अर्थ, उक्ति, कथन सिद्धांत आदि का कहीं इस प्रकार लगना कि उसका ठीक ठीक आशय या रूप समझ मे आ जाय अथवा वह उपयुक्त रूप से घटित या चरितार्थ हो। जैसे—(क) यहाँ इस चौपाई का ठीक अर्थ नहीं बैठता। (ख) आपका वह कथन (या सिद्धांत) यहाँ बिलकुल ठीक बैठता है। २०. कार्यों, क्रियाओं आदि के सम्बन्ध मे, हाथ का इस प्रकार अभ्यस्त होना कि सहज में स्वभावत. उससे ठीक और पूरा परिणाम निकले। जैसे—बाजे पर (या लिखने मे) अभी उसका हाथ ठीक नहीं बैठता है।

संयो० क्रि०—जाना।

विशेष—'बैठना' क्रिया का प्रयोग कुछ मुख्य क्रियाओं के साथ संयोज्य क्रिया के रूप मे प्राय नीचे लिखे अर्थों मे भी होता है। (क) अवधारण या अधिक निश्चय सूचित करने के लिए, जैसे—कोई चीज खो या गँवा बैठना। (ख) कार्य की पूर्णता सूचित करने के लिए, जैसे——कहीं जा बैठना या मालिक बन बैठना। (ग) अनजान मे या सहसा होनेवाली आकस्मिकता सूचित करने के लिए; जैसे—कह बैठना, दे बैठना या मार बैठना और (घ) दृढता या धृष्टता सूचित करने के लिए, जैसे—चढ बैठना, पूछ बैठना, बिगड़ बैठना।

बैठनि—स्त्री०=बैठन (बैठक)।

बैठनी†—स्त्री०[हिं० बैठन] वह आसन या स्थान जिस पर बैठकर जुलाहे करघे से कपड़ा बुनते हैं।

बैठवाँ—वि०[हिं० बैठना+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बैठवी] बैठा या दबा हुआ। फलत चिपटा। जैसे—बैठवाँ जूता।

बैठवाई—स्त्री०[हिं० बैठवाना] १. बैठवाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'बैठाई'।

बैठवाना—स०[हिं० बैठाना का प्रे०] बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठ-हड़ताल—स्त्री०=बैठकी हड़ताल।

बैठाना—स०[हिं० बैठना का स०] १. किसी को बैठने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई बैठे। आसीन, उपविष्ट या स्थित करना। जैसे—जो लोग खड़े है, उन्हे यथा-स्थान बैठा दो। २. किसी उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए किसी को किसी पद या स्थान पर आसीन या नियुक्त करना। जैसे—(क) किसी को कहीं का प्रबंधक बनाकर बैठाना। (ख) झगड़ा निपटाने के लिए पंचायत बैठाना।

(ग) रखवाली के लिए पहरा वैठाना। ३ आये हुए व्यक्ति या व्यक्तियो को आदरपूर्वक उचित आसन या स्थान पर आसीन करना। जैसे—अतिथियो को वैठाना। ४. किसी को किसी काम मे इस प्रकार लगाना कि वह वहाँ आसन जमाकर काम करे। जैसे—पडित को पूजा-पाठ के लिए या लड़के को किसी के यहाँ काम सीखने के लिए वैठाना। ५. जिस काम के लिए कोई उद्धत, तत्पर या सन्नद्ध हुआ हो, उमसे उसे रोककर उदासीन या विरत करना। जैसे—चुनाव के लिए खड़े होनेवाले किसी उम्मेदवार को वैठाना। ६ जो चीज किसी प्रकार उठी, उमरी या अपने स्थान मे वढी या हटी हुई हो, उसे फिर यथा-स्थान करना या लाना। जैसे—नस, सूजन या हड्डी वैठाना। ७. किसी को किसी यान या सवारी पर आसीन कराना। जैसे—यात्रियो को जहाज या रेल पर वैठाना। किसी स्थान पर ठीक तरह से जमाकर रखना या लगाना। जैसे—वगीचे मे पेड-पौधे वैठाना। ९ उवालने, गरम करने, पकाने आदि के लिए आग या चूल्हे पर चढाना या रखना। जैसे—दाल या दूध वैठाना।

पद—वैठा भात=वह भात जो चावल और पानी एक ही साथ आग पर रख कर पकाया गया हो।

१० किसी प्रकार या रूप मे नीचे की ओर गिराना, दवाना या धँसाना। जैसे—उस कमरे के वोझ ने सारा मकान वैठा दिया। ११. कोई चलता हुआ काम इस प्रकार विकृत करना कि उसका अत या नाश हो जाय। जैसे—ये नये कार्यकर्ता तो चार दिन मे कारखाने (या सस्था) को वैठा देंगे। १२ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी अवस्था मे लाना कि वह निकम्मा, रद्दी या वेकार हो जाय। जैसे—(क) वीमारी (या वुढापे) ने उन्हें वैठा दिया है। (ख) तुमने लापरवाही से सारा अचार वैठा दिया। १३. किसी स्त्री को उपपत्नी वनाकर अपने घर ले आना और रखना। जैसे—उन्होंने एक वेश्या को वैठा लिया था। १४ नर और मादा को मभोग करने के लिए एक साथ रखना। जोडा खिलाना। जैसे—मुरगे को मुरगी के साथ वैठाना। १५ पानी आदि मे घुली वस्तु को तल मे ले जाकर जमाना। जैसे—यह दवा सव मैल नीचे वैठा देगी। १६. किसी काम मे कौशल प्राप्त करने के लिए इस प्रकार अभ्यास करना कि शरीर का कोई अग ठीक तरह से काम करने लगे। जैसे—चित्रकारी मे हाथ वैठाना। १७ प्रहार के समय फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। क्षिप्त वस्तु को निर्दिष्ट लक्ष्य या स्थान पर जमाना या लगाना। जैसे—निशाना वैठाना। १८ उक्ति, कथन, सिद्धान्त आदि कही इस रूप मे लगाना कि वह उपयुक्त या सार्थक जान पडे। घटित करना। घटाना। जैसे—(क) आप अपना यह सिद्धान्त हर जगह नही वैठा सकते। (ख) इस दोहे का अर्थ वैठाओ तो जानें कि तुम भी वडे पडित हो। १९ गणित-सम्वन्धी किसी प्रश्न का ठीक उत्तर या फल निकालने के लिए उचित क्रिया या हिसाव करना। जैसे—जोड, पड़ता या हिसाव वैठाना। २० उगाहने आदि के लिए कर या शुल्क नियत करना। जैसे—अव तो नित्य नए नए कर वैठाये जाते हैं। २१ कोई चीज किसी के पास गिरवी या रेहन रखना। (जुआरी) जैसे—उसने दाँव चुकाने के लिए अपनी अँगूठी वैठा दी।

सयो० क्रि०—देना।

वैठारना†—स०=वैठाना।

वैठालना†—स०=वैठाना।

वैड़ाल—वि०[स० विडाल+अण्] विल्ली-सम्वन्धी।

वैड़ाल-व्रत—पुं० [सं० उप० स०] विल्ली की तरह ऊपर से सौजन्य और सद्‌भाव प्रकट करने पर भी मन मे कपट छिपाये रखना और घात मे लगे रहना।

वैडालव्रती—पु० [सं० वैड़ालव्रत+इनि] १ वह जो वैड़ालव्रत धारण किये हो। विल्ली के समान ऊपर से सीधा-सादा पर समय पर घात करनेवाला। कपटी। २. ऐसा व्यक्ति जो स्त्री के अभाव मे ही सदाचारी वना हुआ हो, अपनी इन्द्रियो पर वश रखने के कारण सदाचारी न हो।

वैढ़ना—स०=वेढ़ना (घेरना)।

वैण—पु०[स० वेण] वाँस की खपाचियो से टोकरियाँ तथा अन्य सामान वनानेवाला कारीगर।

वैत—स्त्री० [अ०] किसी शेर (पद्य) के दोनो चरण। मिसरों मे से कोई मिसरा।

वैतडा†—वि०[फा० वदतर?]१ वदमाश। लुच्चा। २ वेहूदा।

वैतवाजी—स्त्री०[अ० +फा०] वह प्रतियोगिता जिसमे एक वालक एक शेर पढता है और दूसरा वालक उक्त शेर के अन्तिम शब्द मे आरम्भ होनेवाला दूसरा शेर पढता है और इसी प्रकार यह प्रतियोगिता चलती रहती है।

वैतरनी—स्त्री०[सं० वैतरणी] १ एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है। २ दे० 'वैतरणी'।

वैतरा†—पु०=वैतडा।

वैताल—पु०=वेताल।

वैतालिक—वि०, पु०=वैतालिक।

वैतुल्लाह—पु०[अ०] १ खुदा का घर। २ मुसलमानो का कावा तीर्थ।

वैद†—पु०[स्त्री० वैदिन]=वैद्य।

वैदई†—स्त्री०[हिं० वैद] वैद्य का काम, पेशा या भाव। वैदगी। उदा०—अर्थ, मुनारी, वैदई, करि जानत पतिराम।—विहारी।

वैदाई—स्त्री०=वैदई।

वैदूर्य—पु०=वैदूर्य।

वैदेही—स्त्री०=वैदेही।

वैन—पु०[स० वचन, प्रा० वयन]१ वचन। वात।

मुहा०—वैन झरना= मुँह से वात निकलना।

२ वेणु। वाँसुरी। उदा०—मोहन मन हर लिया सुवैन वजाय कै।—आनदघन। ३. घर मे मृत्यु होने पर कुछ विशिष्ट शोकसूचक पद या वाक्य जिन्हें स्त्रियाँ कह कहकर रोती हैं। (पजाव)

वैनतेय—पु०=वैनतेय।

वैनसगाई —स्त्री० [हिं० वैन+सगाई] रचना मे होनेवाला अनुप्रास। वर्णमैत्री। (राज०)

वैना—पु०[स० वायन] शुभ अवसरो पर इष्ट-मित्रो तथा सम्वन्धियो के यहाँ से आने अथवा उनके यहाँ भेजी जानेवाली मिठाई।

क्रि० प्र०—देना।—वाँटना।—भेजना।

स०[स० वपन] (वीज) वोना।

†पु०=वेंदा।

†पुं०=वैन।

वैनामा—पुं०[अ० वै+फा० नामा] वह पत्र जिसमे किसी वस्तु विशेषत मकान या जमीन, जायदाद आदि के बेचने और उसमे सबद्ध रखनेवाली शर्तों का उल्लेख होता है। विक्रय-पत्र। (सेल डीड)

वैयर—स्त्री०[स० वधूवर=हिं० बहुअर]औरत।

वैपार†—पुं०=व्यापार।

वैपारी†—पुं०=व्यापारी।

वैमातेर—वि०=वैमात्रेय।

वैयाँ—अव्य० [?] घुटनो के बल। घुटनो के सहारे।

वैया—पुं० [स० वाय] वै। वैसर। (जुलाहे)

वैरंग—वि० [अं० बियरिंग] १ वह (चिट्ठी) जिस पर टिकट न लगाया हो फलत जिसका महसूल उसे पानेवाले को चुकाना पडता हो। २. विफल।

मुहा०—वैरंग लौटना=बिना काम हुए, विफल लौटना।

वैर—पुं० [स० वैर] १ किसी का बहुत बडा अहित या अपकार करने की मन मे होनेवाली उत्कट भावना जो स्वभावजन्य, कारण-जन्य अथवा ईर्ष्याजन्य होती है। २ बदला लेने की भावना।

मुहा०—वैर काढना=किसी का अहित या अपकार करके उसके द्वारा किये हुए अहित या अपकार का बदला चुकाना। वैर चितारना, चुकाना या साधना=पुराना वैर याद करके उसका बदला लेना। उदा०—पपैया प्यारे कब को वैर चिताड्यो।—मीराँ। वैर ठानना=बदला लेने के लिए अथवा दुर्भावनावश किसी का अपकार करने के लिए तत्पर होना। वैर डालना=विरोध उत्पन्न करना। दुश्मनी पैदा करना। वैर निकालना =वैर काढना। (किसी के) वैर पड़ना =प्राय जान-बूझ-कर किसी को सताना। वैर बढ़ाना=अधिक दुर्भाव उत्पन्न करना। दुश्मनी बढाना। ऐसा काम करना जिससे अप्रसन्न या कुपित मनुष्य और भी अप्रसन्न और कुपित होता जाय। वैर बिसाहना या मोल लेना= जिस बात से अपना कोई सबंध न हो, उसमे योग देकर दूसरे को व्यर्थ अपना विरोधी या शत्रु बनाना। बिना मतलब किसी से दुश्मनी पैदा करना। वैर मानना=मन मे दुर्भाव रखना। बुरा मानना। दुश्मनी रखना। वैर लेना=किसी का अपकार करके वैर का बदला चुकाना।

पुं० [स० बदरी] बेर का पेड़ और उसका फल।

पुं० [देश०] तल मे लगा हुआ चिलम के आकार का चोगा जिसमे भरे हुए बीज हल चलाने मे बराबर कूँड में पडते जाते हैं।

वैरक—पुं० [तु० वैरक] १ छोटा झडा। झडी। २ अधिकार मे लाई हुई अथवा जीती हुई जमीन मे गाड़ा जानेवाला झडा।

मुहा०—वैरक बाँधना=कोई अनुष्ठान करने अथवा दूसरो को अपना अनुयायी बनाने के लिए झडा खडा करना। उदा०—अपने नाम की वैरक बाँधो सुबस बसौ इहि गाँव।—सूर।

स्त्री० [अ०] छावनी मे वह इमारत अथवा इमारतों की शृखला जिसमे सैनिक समूह रहते हों।

वैरख—पुं०=वैरक (झंडा)।

वैरन—स्त्री० [हिं० वैरी का स्त्री० रूप] १. वह स्त्री जो किसी से शत्रुतापूर्ण व्यवहार करती हो। २. सौत।

वैरा—पुं० [देश०] १ हल के मूठे मे बाँधा जानेवाला एक प्रकार का चोगा जिसमे बोते समय बीज डाले जाते हैं। माला। २. ईंट के टुकड़े, रोडे आदि जो मेहराब बनाते समय उसमे चुनी हुई ईंटो को जमी रखने के लिए खाली स्थान मे भर देते हैं।

पुं० [अं० बेयरर] होटलो आदि मे वह व्यक्ति जो अभ्यागतो को भोजन पहुँचाता है।

वैराखी—स्त्री०=बरेखी।

वैराग†—पुं०=वैराग्य।

वैरागर—पुं० [वैर?+स० आगार] रत्नो आदि की खान। उदा०—गुणमणि वैरागर धीरज को सागर।—केशव।

वैरागी†—पुं०=वैरागी।

वैराग्य†—पुं०=वैराग्य।

वैराना—अ० [हिं० बाइ=वायु] वातग्रस्त होना।

†अ०=बौराना।

वैरिस्टर—पुं० [अ०] इग्लैड के उच्चतर न्यायालयो मे बहस करने की मान्यता प्राप्त करनेवाला अधिवक्ता या वकील।

वैरिस्टरी—स्त्री० [अ० वैरिस्टरी+हिं० ई (प्रत्य०)] वैरिस्टरी का काम या पेशा।

वैरी—वि० [स० वैरी, वैर+इनि] जिसका किसी से वैर हो।

पुं० शत्रु।

वैरोमीटर—पुं० [अ०] वायु के दबाव या भार का सूचक एक वैज्ञानिक उपकरण।

वैल—पुं० [सं० वलिवर्द.] १ गाय से उत्पन्न प्रसिद्ध नर चौपाया जो गाड़ी, हल आदि मे जोता जाता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, (क) बहुत बड़ा मूर्ख व्यक्ति। (ख) परिश्रमी व्यक्ति। ३ रहस्य सप्रदाय मे (क) शरीर (ख) त्रिगुण।

वैल-मुतनी—स्त्री० दे० 'गोमूत्रिका'।

वैलर—पुं० [अं० व्यायलर] पीपे के आकार का लोहे का बड़ा देग जो भाप से चलनेवाली कलो मे होता है।

वैलून—पुं० [अ०] १. गुब्बारा। २. आज-कल वह बहुत बडा गुब्बारा जो विशिष्ट वैज्ञानिक अनुसंधानो आदि के लिए आकाश मे उड़ाया जाता है; अथवा जिसके सहारे लोग कुछ दूर तक ऊपर आकाश मे उड़ते हैं।

वैल्व—वि० [स० विल्व+अण्] १. बेल वृक्ष अथवा उसकी लकड़ी से सबंध रखनेवाला। २. बेल की लकड़ी का बना हुआ। ३. (स्थान) जिसमे बहुत से बेल के वृक्ष हो।

वैषानस†—पुं०=वैखानस।

वैश्क—पुं० [सं०] शिकार किये हुए पशु का मास।

वैसंदर—पुं०=वैसंतर (अग्नि)।

वैस—स्त्री० [स० वयस्] १ वयस। वय। उमर। उदा०—वारी वैस गुलाब की, सींचत मनमथ छैल।—रसनिधि। २ युवावस्था। जवानी।

क्रि० प्र०—चढना।

†पुं०=वैश्य।

पुं० (किसी मूल पुरुष के नाम पर) क्षत्रियो की एक प्रसिद्ध शाखा जो अधिकतर कन्नौज से अंतर्वेद तक बसी है।

बैंसना†—स०=बैठना।

बैंसरा—स्त्री० दे० 'कघी' (जुलाहों की)।

बैंसवाड़ा—पु० [हिं० बैंस+वाडा (प्रत्य०)] [वि० बैंसवाड़ी] अवव के दक्षिण-पश्चिमी भू-भाग का नाम।

बैंसवाड़ी—वि० [हिं० बैंसवाडा] बैंसवाडे मे होनेवाला।
 स्त्री० बैंसवाडे की बोली।
 पु० बैंसवाडे का निवासी।

बैंसवारा—वि० [सं० वयस+हिं० वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० बैंसवारी] जवान। युवक।
 पु०=बैंसवाडा।

बैंसा—पु० [सं० वंश=बाँस] औजारो की मूठ या दस्ता। उदा०—बैंसी लगै कुठार को ।—वृंद।

बैंसाख—पु० [सं० वैशाख] चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना। वैशाख।

बैंसाखी—स्त्री० [सं० वैशाख] १ सौर वैशाख का पहला दिन। २ उक्त दिन मनाया जानेवाला त्योहार।
 स्त्री० [सं० द्विशाखी=दो शाखाओंवाला] १ वह डडा जिसे बगल के नीचे रखकर लंगडे चलते हैं। २ डडा।

बैंसारना†—स०=बैठाना।

बैंसिक†—पु०=वैशिक।

बैंस्वा†—स्त्री०=वेश्या।

बैंहरा—वि० [सं० वैर=भयानक] भयानक। विकट।
 स्त्री० [सं० वायु] वायु। हवा।

बोंक—पु० [हिं० वक, बाँक ?] लोहे की वह नुकीली मोटी कील जो पुरानी चाल के दरवाजों में चूल का काम देती है।

बोंगना —पुं० दे० 'बहुगुना'।

बोंट†—पुं० [?] घास-पात मे रहनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा।

बोंड़री—स्त्री०=बोडरी।

बोंडा—पु० [?] बारूद मे आग लगाने का पलीता।

बोंड़ी—स्त्री०=बौंड़ी।

बोअनी†—स्त्री०=बोनी (बोआई)।

बोआई—स्त्री० [हिं० बोना] बोने की क्रिया, ढग, भाव या मजदूरी।

बोआना—स० [हिं० बोना] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोक†—पु०=बकरा।

बोकरा—पु०=बकरा।

बोकरी—स्त्री०=बकरी।

बोकला—पु०=बकला (छिलका)।
 †पु०=बकरा।

बोका—पु० [हिं० बोक=बकरा] १ बकरे की खाल। २. चमडे का डोल।
 वि० मूर्ख। (पूरव)

बोक्काण—पु० [सं०] वह पात्र जिसमे घोडे के खाने के लिए दाना आदि डालकर उसके गले मे बाँध दिया जाता है।

बोखार†—पु०=बुखार।

बोगदा—पु० [?] ऊँचे पहाड के बीचोबीच खोदकर बनाया हुआ रास्ता। (टनेल)

बोगस—वि० [अं०] १ रद्दी। व्यर्थ का। २. कृत्रिम। जाल ३. झूठा या नकली।

बोगुआ—पुं० [?] घोडे के पेट मे होनेवाला एक तरह का शूल।

बोज—पु० [?] घोडो का एक भेद।
 स्त्री० [?] पासग नामक बकरे की मादा।

बोजा—स्त्री० [फा० बोज.] चावल से बना हुआ मद्य। चावल की शर

बो-जोत—स्त्री० [हिं० बोना+जोतना] खेती-बारी। कृषि-कर्म।

बोझ—पु० [?] १ भारी होने की अवस्था या भाव। भार। २. ग गट्ठर। ३ भारी गट्ठर का भार। वजन। ४ उतनी वस्तु जि एक खेप मे ले जाई या ढोई जाती है। जैसे—चार बोझ लक ५ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा विकट और श्रम-साध्य कार्य जो भार-स्व जान पडता तथा जिसे करने की रुचि बिलकुल न हो।
 मुहा०—बोझ उठाना=कोई कठिन काम करने का उत्तरदायित्व अ पर लेना। बोझ उतारना=कोई विकट और श्रमसाध्य काम स करना अथवा उससे छुट्टी पाना।

बोझना†—स० [हिं० बोझ] बोझ से युक्त करना। भार रखना। लादन जैसे—नाव या बैलगाडी बोझना।

बोझला—वि०=बोझिल।

बोझा—पु० [?] वह कोठरी जिसमे राब के बोरे इसलिए नीचे ऊ रखे जाते हैं कि शीरा या जूसी निकल जाय।
 †पु०=बोझ (भार)।

बोझाई—स्त्री० [हिं० बोझना+आई (प्रत्य०)] बोझने या लादने का क ढग, भाव या मजदूरी।

बोझिल—वि० [हिं० बोझ] १ अधिक बोझवाला। भारी। वजनदा वजनी। २ जिस पर अधिक बोझ लदा हो। ३. (काम) जो कि हो तथा जिसमे रुचि न लगती हो।

बोट—स्त्री० [अं०] १ नाव। नौका। २ जहाज।
 पु० [?] टिड्डा नाम का कीडा।

बोटा—पु० [सं० वृत, प्रा० वोण्ट=डाल, लट्ठा] [स्त्री० अल्पा० बोट १. लकड़ी का वह मोटा टुकडा जो लबाई में हाथ दो हाथ से अधि का न हो। कुदा। २. किसी चीज का बडा टुकडा।

बोटी—स्त्री० [हिं० बोटा] मास का छोटा टुकडा। विशेषत ऐ टुकडा जिसमे हड्डी भी हो।
 मुहा०—बोटी-बोटी काटना=तलवार, छुरी आदि से शरीर को क कर खड-खड करना। (किसी की) बोटी बोटी फड़कना=उद्दड धृष्टता, युवावस्था आदि के कारण शरीर के सभी अगो का बहुत अधि चचल होना।
 †स्त्री०=टिड्डा।

बोड—स्त्री० [देश०] सिर पर पहनने का एक आभूषण।
 †स्त्री० =बौर (वल्ली)।

बोडना†—स०=डुबाना।

बोडरी—स्त्री० [हिं० बोडी] तोंदी। नाभि।

बोड़ल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

बोड़ा—पु० [देश०] एक प्रकार की पतली लबी कली जिसकी तरका बनती है। लोबिया। बजरबट्टू।

†पु० [स० वोड़] अजगर। (पूरव)

वोड़ी—स्त्री० [?] १ एक प्रकार की कोमल फली जिसका अचार और तरकारी वनती है। २ कौड़ी। कपर्दिका। ३ वहुत ही थोडा धन।

वोत—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।

स्त्री० [हिं० वोना ?] पान की पहले वर्ष की उपज या खेती ।

वोतल—स्त्री०[अ० वॉट्ल] १ काँच का लवी गरदन का गहरा वरतन जिसमे द्रव पदार्थ रखा जाता है। शीशी। २ शराव जो प्राय. वोतलो मे रहती है। जैसे—उन्हे तो हर वक्त दो वोतल का नशा रहता है।

मुहा०—वोतल चढ़ाना=मद्य या शराव पीना।

वोतलिया—वि०=वोतली।

वोतली—स्त्री० [हिं० वोतल] छोटी वोतल।

वि० साधारण वोतल की तरह का कालापन लिये हरा।

पु० उक्त प्रकार का हरा रग।

वोता—पु० [स० पोत] ऊँट का ऐसा वच्चा जिसपर अभी सवारी न होती हो।

वोद†—वि०=वोदा। उदा०—निसँहे वोद, वुद्धि वल मूला—जायसी।

वोदक—स्त्री० [देश०] कुसुम या वर्रे की एक जाति जिसमे काँटे नही होते और जिसके केवल फूल रँगाई के काम मे आते है। इसके वीजो से तेल नही निकाला जाता।

वोदर—स्त्री० [?] पतली छड़ी।

वोदला†—वि०=वोदा।

वोदा—वि० [सं० अवोध] [स्त्री० वोदी] १ जिसकी वुद्धि तीव्र या प्रखर न हो। कम-समझ। २ मट्ठर। सुस्त। ३ जिसमे अधिक दृढ़ता या शक्ति न हो। कमजोर। ४ कायर। डरपोक। ५. तुच्छ। निकम्मा।

वोदापन—पु० [हिं० वोदा+पन (प्रत्य०)] वोदे होने की अवस्था या भाव।

वोद्धव्य—वि० [स०√वुध् (जानना)+तव्यत्] १ जानने या ध्यान देने योग्य। २ जाग्रत करने योग्य।

वोद्धा (द्धृ)—पु० [स०√वुध् +तृच्] नैयायिक।

वोध—पु० [स० वुध्+घञ्] १ किसी के अस्तित्व, प्रकार, स्वरूप आदि का होनेवाला मानसिक भान। २ शब्दो के द्वारा होनेवाला किसी चीज या वात का ज्ञान। अर्थ। ४ तसल्ली। धीरज। सान्त्वना।

वोधक—वि० [स०√वुध्+णिच्—ण्वुल्-अक] १. वोध या ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला। ज्ञापक।

पु० [स०] शृगार रस के हावो मे से एक हाव जिसमे किसी सकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपना मनोगत भाव जताया जाता है।

वोधगम्य—वि० [स०] (विपय) जिसका वोध हो सके। समझ मे आने योग्य।

वोधन—पु० [स०√वुध्+णिच्+ल्युट्—अन] १ वोध या ज्ञान कराने की क्रिया या भाव। ज्ञापन। जताना। २. सोते हुए को जगाना। ३ अग्नि, दीपक आदि प्रज्वलित करना। ४. तेज या प्रवल करना। उद्दीपन। ५ मत्र आदि सिद्ध करना या जगाना।

वोधना—स० [म० वोधन] १ वोध या ज्ञान कराना। जताना। २. कुछ कह-सुनकर संतुष्ट या शात करना। समझाना-वुझाना। उदा०—मुकता पानिप सरिस स्वच्छ कहि कछु मन वोधत।—रत्ना०। ३. उद्दीप्त या प्रज्वलित करना।

वोधनी—स्त्री० [स० वोधन+ङीप्] १. प्रवोधनी एकादशी। २ पिप्पली।

वोधव्य—वि० [स० वोद्धव्य] १ जिसका वोध प्राप्त किया जा सकता हो अथवा किया जाने को हो। २. जिसे किसी वात का वोध कराया जा सके या कराया जाय।

वोधि—पु० [स०√वुध्+इन्] १. एक प्रकार की समाधि। २ पीपल का पेड।

वोधित—भू० कृ० [सं०√वुध् (जानना)+णिच्+क्त, गुण, इट्] जिसे वोध हो चुका हो।

वोधि तरु—पु० [स० कर्म० स०] दे० 'वोधिवृक्ष'।

वोधितव्य—वि० [स०√वुध्+णिच्+तव्य] जानने योग्य।

वोधिद्रुम—पु० दे० 'वोधिवृक्ष'।

वोधिवृक्ष—पु० [स० कर्म० स०] वुद्धगया मे पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे वुद्ध को वोध हुआ था।

वोधिसत्व—पु० [स० उपमि० स०] वह जो वुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो, पर वुद्ध न हो पाया हो। (वौद्ध)

वोधी (धिन्)—वि० [स० वोध+इनि] जाननेवाला।

वोध्य—वि० [स०√वुध् (जानना)+ण्यत्] जानने योग्य।

वोना—स० [स० वपन] १. वीज, पौधे आदि को इस उद्देश्य से जमीन मे स्थापित करना कि वह वढे तथा फले-फूले। २ किसी वात का सूत्रपात करना। ३ ऐसा काम करना जिसका फल आगे चलकर दिखाई दे। उदा०—कलम वोती है अपने गान।—दिनकर।

वोनी—स्त्री० [हिं० वोना] १ वोने की क्रिया या भाव। २ वीज आदि वोने का मौसम।

वोवा—पु० [अनु०] [स्त्री० वोवी] १ स्तन। थन। चूँची। २. ऐसा छोटा वच्चा जो अभी माता का दूध पीकर रहता हो। ३ घर-गृहस्थी का सामान, विशेषत टूटा-फूटा समान। अगड-खगड। ४ वडी गठरी। गट्ठर।

वि० निरा मूर्ख। गावदी।

वोय†—स्त्री० [फा० वू] १ गध। वास। २. दुर्गंध। वदवू।

वोर—पु० [हिं० वोरना] १ पानी आदि मे वोरने अर्थात् डुवाने की क्रिया या भाव। जैसे—दो वोर की रगाई। २. गोता। डुवकी।

क्रि० प्र०—देना।

पु० [स० वर्तुल] १ चाँदी या सोने का वना हुआ गोल और कँगूरेदार घुँघरू जो आभूषणो मे गूँथा जाता है। जैसे—पाजेव के वोर। २ सिर पर पहनने का एक गहना जिसमे मीनाकारी का काम होता है। इसे वीजू भी कहते हैं।

†पु० [?] १ गड्ढा। २ आहार। भोजन। (पूरव) ३ घमड। दर्प।

वोरका—पु० [हिं० वोरना] १. मिट्टी की वह दवात जिसमे लडके खडिया घोलकर रखते है। २. दवात।

†पु०=वुरका।

ोरना—स० [हिं० बूडना] १ जल या किसी तरल पदार्थ मे निमग्न करना। डुबाना। २ अच्छी तरह से तर करना। भिगोना। ३. बुरी तरह से चोपट या नष्ट करना। जैसे—कुल का नाम बोरना। ४. किसी चीज या बात मे पूरी तरह से युक्त करना। उदा०—कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।—तुलसी।

ोरसी—स्त्री० [हिं० गोरसी] मिट्टी का बरतन जिसमे आग रखकर जलाते है। अँगीठी।

ोरा—पु० [स० पुर=दोना या पत्र] [स्त्री० अल्पा० बोरी] १ टाट का बना थैला जिसमे अनाज आदि कही ले जाने के लिए रखते हैं।

†पु० [स० वर्तुल] घुघरू। (दे० 'बोर')

ोराबदी—स्त्री० [हिं० बोरा+बद (करना)] १ अनाज बोरो आदि मे भरकर बन्द करने का काम। २. अनाज आदि की बिक्री का वह प्रकार जिसमे पूरे और भरे हुए बोरे ही बेचे जाते हैं, खोलकर फुटकर रूप मे नही।

ोरिका†—पु०=बोरका।

ोरिया—पु० [फा०] १ चटाई। २ बिस्तर। बिछौना।

पद—बोरिया-बंधना=घर-गृहस्थी का बहुत थोडा-सा सामान।

मुहा०—(कहीं से) बोरिया या बोरिया-बंधना उठाना=चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

†स्त्री० बोरी (छोटा बोरा)।

बोरी—स्त्री० [हिं० बोरा] टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरी—पु० [स० बोरव] एक प्रकार का मोटा धान जो नदी के किनारे की सीड मे बोया जाता है।

बोरो-बाँस—पु० [देश० बोरो+हिं० बाँस] एक प्रकार का बाँस जो पूर्वी बगाल मे होता है।

बोर्जुआ—पु० [जर०] मध्यवर्ग का ऐसा व्यक्ति जो पुरानी प्रथाएँ मानता हो, और अपने आपको निम्नवर्ग की तुलना मे बहुत प्रतिष्ठित समझता हो तथा लोभी और स्वार्थी हो।

बोर्ड—पु० [अ०] १ किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। जैसे—म्युनिसिपिल बोर्ड। २ माल के मामलो के फैसले या प्रबध के लिए बनी हुई समिति या कमेटी। ३ कागज की मोटी दफ्ती। गत्ता।

बोल—पु० [हिं० बोलना] १ बोलने पर मनुष्य के मुख से निकला हुआ सार्थक पद, वाक्य या शब्द। वाणी।

क्रि० प्र०—बोलना।

मुहा०—दो बोल पढवाना=धार्मिक दृष्टि से कुछ मत्रो आदि का उच्चारण कराते हुए साधारण रूप से लडकी का विवाह करा देना। जैसे—कोई अच्छा लडका मिले तो मै भी इसके दो बोल पढवाकर छुट्टी पाऊँ। (किसी के कान मे) बोल मारना=किसी को कोई बात अच्छी तरह सुना और समझा देना। जैसे—तुम तो उनके काम मे बोल मार ही आये हो, वे अब मेरी बाते क्यो सुनने लगे।

२ कही हुई बात। उक्ति। कथन। वचन। जैसे—तुम्हारी बात का भी कोई मोल है (अर्थात् तुम्हारी बात का कोई विश्वास नही)। उदा०—(क) सुन रे ढोल, बहू के बोल।—कहा०। (ख) परदेशी दूर का मुख के बोल सँभाल।—लोक-गीत। ३ किसी की कही हुई बात का ऐसा भाव या महत्त्व जो उसकी प्रामाणिकता, शक्तिमत्ता आदि का सूचक होता है। उदा०—पचन मे मेरी पत रहे, सखियन मे रहे बोल। साईं से साँची रहूँ, बाज बाज रे ढोल।—लोकगीत।

पद—बोल-बाला=हर जगह होनेवाली प्रतिष्ठा या सम्मान। जैसे—सच्चे का बोला-बाला, झूठे का मुँह काला। (कहा०)

मुहा०—(किसी का) बोलबाला रहना=(क) बात की साख बनी रहना। (ख) ऐसी प्रतिष्ठा या मर्यादा बनी रहना कि हर जगह जीत और मान हो। जैसे—सरकार का सदा बोलबाला रहे। बोल बाला होना=प्रताप, भाग्य, मान-मर्यादा, यश आदि की वृद्धि होना। (किसी का) बोल रहना=मान-मर्यादा या साख बनी रहना। ३. चुभती या लगती हुई अथवा व्यग्यपूर्ण उक्ति। ताना। बोली।

क्रि० प्र०—सुनाना।

मुहा०—बोल मारना=व्यग्यपूर्ण या चुभती हुई बात कहना। उदा०—ननदिया री काहे मारे बोल।—गीत। ४. अदद या सख्या-सूचक शब्द। जैसे—सौ बोल लड्डू आये थे, सो चार चार सब को बाँट दिये। (स्त्रियाँ) ५. वे शब्द जिनसे गीत का कोई चरण या पद बना हो। जैसे—इस गीत के बोल है—'बँसुरिया कैसी बजाई श्याम'।

मुहा०—बोल बनाना=सगीत मे, गाने के समय किसी गीत के एक एक शब्द का कई बार अलग अलग तरह से बहुत ही कोमल और सुन्दरता-पूर्वक नये नये रूपो मे उच्चारण करना।

६. सगीत मे, बाजो से निकलनेवाली अलग-अलग ध्वनियो के वे गठे या बँधे हुए शाब्दिक रूप जो विद्यार्थियो को सुगमतापूर्वक सिखाने आदि के लिए कल्पित कर लिये गये हो। जैसे—तबले के बोल धा धा धिन ता, और सितार के बोल दा दा दिर दारा आदि।

पु० [देश०] एक प्रकार का सुगधित गोद जो स्वाद मे कडुवा होता है।

बोलक—पु० [देश०] जल-भ्रमर। (डिं०)

बोल-चाल—स्त्री० [हिं० बोलना+चालना] १. मिलने-जुलने या साथ रहनेवाले लोगो मे होनेवाली बात-चीत। वार्तालाप। जैसे—आज-कल उन दोनों मे बोल-चाल बद है। २ वह सबध-सूचक अवस्था या स्थिति जिसमे परस्पर उक्त प्रकार की बात-चीत होती है। ३. बात-चीत करने का ढग या प्रकार। जैसे—बोल-चाल से तो वे पजाबी ही जान पडते हैं। ४. साहित्यिक क्षेत्र मे, मुहावरो से भिन्न वे विशिष्ट गढे हुए पद जिनका प्रयोग कुछ निश्चित प्रचलित अर्थ मे ही होता है और जिनके रूप मे कभी किसी प्रकार का परिवर्तन या विकार नही होता। जैसे—(क) मुझे डर है कि कहीं कुछ उन्नीस-बीस (अर्थात् कोई सामान्य अनिष्ट कारक बात) न हो जाय। (ख) वे वे घर बार छोडकर त्यागी हो गये हैं। (ग) उन लोगो मे खूब तू-तू मैं-मैं हुई। (घ) आज-कल तो उन दोनों मे साहब-सलामत भी बंद है। उक्त वाक्यो मे उन्नीस-बीस, घर-बार, तू-तू मैं-मैं और साहब-सलामत पद बोल-चाल के है।

विशेष—ऐसे अवसरो पर उन्नीस-बीस की जगह बीस-इक्कीस घर-बार की जगह मकान-बार, तू-तू मैं-मैं की जगह हम-हम तुम-तुम और साहब-सलामत की जगह जनाब-सलामत या साहब-खैरियत सरीखे पदो का प्रयोग नही हो सकता। उर्दू मे इसी को 'रोजमर्रा' कहते हैं।

बोलता—पु० [हिं० बोलना] १ ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व अर्थात् आत्मा। उदा०—बोलते को जान ले पहचान ले। बोलता जो कुछ

कहे सो मान ले। २. जीवनी-शक्ति या प्राण। ३. सार्थक बातें कहनेवाला प्राणी, अर्थात् मनुष्य। ४. हुक्का।
वि० १. बोलनेवाला। जैसे—बोलता सिनेमा। २. बोल-चाल में चतुर। वाक्-पटु। ३. बहुत बोलनेवाला। बकवादी।
बोल-तान—स्त्री० [हिं०] संगीत में ऐसी तान जिसमें विशुद्ध स्वरों के स्थान पर उनके नामों के संक्षिप्त रूपों का उच्चारण होता हो। सरगम से युक्त तान।
बोलती—स्त्री० [हिं० बोलना] बोलने की शक्ति। वाक्। वाणी। २ बोलने में अत्यधिक पटु, जीभ।
मुहा०—बोलती बंद होना या मारी जाना=बहुत अधिक बड़बड़ करना बंद होना। जैसे—मुझे देखते ही उनकी बोली बंद हो गई।
बोलनहार—वि० [हिं० बोलना+हार (प्रत्य०)] बोलनेवाला।
पु० आत्मा जिससे बोलने की शक्ति प्राप्त होती है।
बोलना—अ० [सं० बल्ह, प्रा० बोल्ल] १ शब्द, ध्वनि आदि का साधारण स्वर में (गाने, चिल्लाने आदि से भिन्न) उच्चरित करना। जैसे—किसी की जय या जयजयकार बोलना।
मुहा०—बोल उठना=एकाएक कुछ कहने लगना। मुँह से सहसा कोई बात निकाल देना। जैसे—बीच में तुम क्यों बोल उठे?
२. शब्दों द्वारा कहकर अपना विचार प्रकट करना। जैसे—झूठ बोलने में उन्हें लज्जा नहीं आती। ३ किसी से बात-चीत करना और इस प्रकार उससे आपसदारी का संबंध बनाये रखना। जैसे—उनके क्षमा माँगने पर ही मैं उनसे बोलूँगा।
पद—बोलना चालना=परस्पर बातचीत करना।
३. किसी का नाम आदि लेकर इसलिए चिल्लाना जिसमें वह सुन सके। उदा०—ग्वाल सखा ऊँचे चढ़ि बोलत बार बार लै नाम।—सूर।
मुहा०—(किसी को) बोल पठाना=किसी के द्वारा बुलवाना या बुला भेजना।
५. किसी प्रकार की छेड़-छाड़ या रोक-टोक करना। किसी रूप में बाधक होना। जैसे—तुम चुप-चाप चले जाओ, कोई कुछ नहीं बोलेगा।
६. वस्तुओं के संबंध में, उनका किसी प्रकार का शब्द करना। जैसे—सिक्के का टनटन बोलना। ७. किसी चीज का विशेष रूप से अपनी उपस्थिति जतलाना। जैसे—खीर में केसर बोल रहा है। ८. इतना जीर्ण-शीर्ण होना कि काम में आ सकने योग्य न रह जाय।
सयो० क्रि०—जाना।
मुहा०—(व्यक्ति का) बोल जाना=(क) मर जाना। संसार में न रह जाना। (बाजारू) (ख) किसी के सामने बिलकुल दब या हार जाना। (ग) दिवालिया हो जाना। जैसे—सट्टे में बड़े बड़े धनी बोल जाते हैं। (पदार्थ का) बोल जाना=(क) निःशेष या समाप्त हो जाना। बाकी न रह जाना। चुक जाना। (ख) इतना निकम्मा, पुराना या रद्दी हो जाना कि उपयोग में आने योग्य न रह गया हो। जैसे—यह कुरता तो अब बोल गया है।
स० १ मन्नत पूरी होने पर भक्तिपूर्वक कुछ करने की प्रतिज्ञा करना। जैसे—एक रुपए का प्रसाद बोलो तो तुम्हारी कामना पूरी हो। †२ आवाज देकर पास बुलाना। उदा०—मुनिवर निकट बोलि बैठाये।—तुलसी।
सयो० क्रि०—पठाना।
३. आज्ञा या आदेश देकर किसी को किसी काम के लिए नियुक्त करना। जैसे—आज पहरे पर उसकी नौकरी बोली गई है।
बोलपट—पु० [हिं० बोलना+सं० पट] वह चलचित्र जिसमें पात्रों के कथोपकथन गीत आदि सुनाई पड़ते हों। (टॉकी)
बोलबाला—पुं० [हिं० बोल+फा० बाला=ऊँचा] १. वचन या बात जिसे सर्वोपरि महत्त्व प्राप्त हुआ हो। २. ऐसी स्थिति जिसमें किसी विशिष्ट व्यक्ति की बात को सबसे अधिक आदर मिलता या प्राप्त होता हो।
बोलवाना—स० [हिं० बोलना का प्रे०] १. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना। २ उच्चारण कराना। जैसे—पहाड़े बोलवाना।
†स० [हिं० बुलाना] बुलवाना।
बोलसर—स्त्री० मौलसिरी।
पु० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
बोलांग†—पु० [हिं० बोल+अंग] वह अंश जिसे किसी को देने का वचन दिया गया हो।
बोलचाली†—स्त्री०=बोलचाल।
बोलाना†—स०=बुलाना।
बोलावा†—पु०=बुलावा।
बोली—स्त्री० [हिं० बोलना] १. बोलने की क्रिया या भाव। २. किसी प्राणी के मुँह से निकला हुआ शब्द। मुँह से निकली हुई आवाज या बात। वाणी। जैसे—जानवरों या बच्चों की बोली। ३. ऐसी बात या वाक्य जिसका कुछ विशिष्ट अभिप्राय या अर्थ हो। ४. किसी भाषा की वह शाखा जो किसी छोटे क्षेत्र या वर्ग में बोली जाती हो। स्थानिक भाषा। विभाषा। जैसे—अवधी, मैथिली, ब्रज आदि की गिनती आधुनिक हिंदी की बोलियों में ही होती है।
क्रि० प्र०—बोलना।
५. विशिष्ट अर्थवाली कोई ऐसी उक्ति या कथन जिसमें किसी को चिढ़ाने या लज्जित करने के लिए कोई कूट या गूढ़ व्यंग्य मिला हो।
पद—बोली ठोली। (देखें)
मुहा०—बोली या बोली ठोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को चिढ़ाने के लिए व्यंग्यपूर्ण बात कहना।
६. नीलाम के द्वारा चीजों के बिकने का वह दाम जो कोई खरीददार अपनी ओर से लगाता है। जैसे—उस मकान पर हमारी भी पाँच हजार रुपयों की बोली हुई थी।
क्रि० प्र०—बोलना।
बोली ठोली—स्त्री० [हिं० बोली+अनु० ठोली] ताने या व्यंग्य से भरी हुई बात। बोली। (देखें)
क्रि० प्र०—छोड़ना।—बोलना।—मारना।—सुनाना।
बोलीदार—पु० [हिं० बोली+फा० दार] वह असामी जिसे जोतने के लिए खेत यों ही जबानी कहकर दिया जाय, कोई लिखा-पढ़ी न की जाय।
बोल्लक—पु० [सं० बोल्ल+कन्] वह जो बहुत बोलता हो।
बोल्लाह—पु० [देश०] घोड़ों की एक जाति।
बोल्शेविक—पु० [रूसी] रूस की बोल्शेविक दल, आधुनिक कम्युनिस्ट दल का सदस्य।
बोल्शेविकी—पु० [रूसी] मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का समर्थक एक रूसी

राजनीतिक दल जिसका नाम सन् १९१८ से कम्युनिस्ट पार्टी हो गया है।

बोल्शेविज्म—पु० [रूसी] मार्क्स के सिद्धातों के अनुसार शासन व्यवस्था अपनाने का वह विचार या सिद्धान्त जिसमे राष्ट्र की सारी प्रजा और सपत्ति पर शासन का पूरा पूरा अधिकार होता है।

बोवना†—स०=बोना।

बोवाई†—स्त्री०=बोआई।

बोवाना†—स० [हिं० बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह—स्त्री० [हिं० बोर, या सं० वाह] डुबकी। गोता।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

बोहड़†—पु०=बड (बरगद)।

बोहथ्य†—पु०=बोहित।

बोहना—अ० [हिं० बोह] डुबकी लगाना।
स० [सं० वयन, हिं० बोना का पु० रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।
उदा०—फटिक सिला के वाद विसाल मन विस्मय बोहत।—रत्ना०।

बोहनी—स्त्री० [स० बोधन=जगाना] १. दुकान खुलने अथवा दुकान पर दीया जलाने पर या फेरीवाले की होनेवाली पहली बिक्री। २. उक्त बिक्री से प्राप्त होनेवाला धन। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, कोई काम आरंभ करते ही होनेवाली प्राप्ति या सफलता।

बोहनी बटा—पु० [हिं०] किसी चीज की पहले-पहले होनेवाली बिक्री और उससे मिलनेवाला धन।

बोहरा—पु० [हिं० व्यवहारिया=व्यापारी] १ गुजरात और महाराष्ट्र राज्यो मे रहनेवाले एक प्रकार के मुसलमान जो बहुधा व्यापार करते हैं। २. रोजगारी। व्यापारी।

बोहारना—स०=बुहारना।

बोहारी—स्त्री०=बुहारी (झाड़ू)।

बोहित—पु० [स० बोहित्य] १ नाव। २. जहाज।

बोहित्थ—पु०=बोहित (जहाज)।

बोहिया—स्त्री० [देश०] एक तरह की काली पत्तीवाली चाय।

बोहियाना†—स०=बहाना।

बौंगा†—पु० [अनु०] बेवकूफ। मूर्ख।
† पु०=चोगा।

बौंड—स्त्री० [स० वोण्ट=वृत, टहनी] १. वृक्ष की वह टहनी जो दूर तक डोरी के रूप मे गई हो। २ बेल। लता।

बौंड़ना—अ० [हिं० बौंड] १. लता की भाँति बढना। २ टहनी का बढकर फैलना।

बौंडर—पु०=बवडर।

बौंड़ी—स्त्री० [हिं० बौंड़] १ पौधो या लताओ के वे कच्चे फल जो सार रहित होते हैं। डोडा। जैसे—मदार या सेमल के बौंडी। २ छीमी। फली।

बौआना—अ० [स० वायु, हिं० बाउ+आना (प्रत्य०)] १ सपने मे निरर्थक बातें कहना। स्वप्नावस्था में प्रलाप करना। २ पागलो की तरह व्यर्थ की बातें बकना। बड़बडाना।

बौखल—वि० [हिं० बौखलाना] १ बौखलाया हुआ। २ पागल। सनकी।

बौखलाना—अ० [हिं० बाउ+सं० स्खलन] १ आवेश या क्रोध मे आकर अड-बड बकना। २ होश-हवास मे न रहकर पागलो का-सा आचरण या व्यवहार करना।

बौखा—स्त्री० [स० वायु+स्खलन] हवा का तेज़ झोका जो वेग मे आँधी से कुछ हलका होता है।

बौछाड़†—स्त्री०=बौछार।

बौछार—स्त्री० [स० वायु+क्षण] १. वायु के झोंके मे वर्षा की तिरछी आती हुई बूँदो का समूह। बूँदो की झडी जो हवा के झोंके से तिरछी गिरती हो। झटास।
क्रि० प्र०—आना—पडना।
२. उक्त प्रकार या रूप से होने वाला बहुत-सी चीजो का पात। जैसे—गोलियो या ढेलो की बौछार। ३ बहुत अधिक संख्या मे लगातार किसी वस्तु का उपस्थित किया जाना। बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। झडी। जैसे—लडके के ब्याह मे उसने रुपयो की बौछार कर दी। ४. किसी के प्रति लगातार कही जानेवाली व्यग्यपूर्ण या लगती हुई बातो की झडी। आक्षेप से युक्त करके कही जानेवाली बाते। जैसे—उनके भाषण मे आधुनिक राजनीतिक नेताओं पर खूब बौछार थी।
क्रि० प्र०—छूटना।—छोडना।—पडना।

बौडना†—अ०=बौरना।

बौड़म—पु० [?] पागल। सनकी।

बौड़हा—वि० [स० वातुल, हिं० बाउर+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बौड़ही] बावला। पागल।

बौड़ी—स्त्री० [?] १ जमीन की एक नाप। २. कौंडी का बीसवाँ भाग।

बौद्ध—वि० [स० बुद्ध+अण्] १. बुद्ध-सबधी। २ बुद्ध द्वारा प्रचारित। जैसे—बौद्ध मत। ३ गौतम बुद्ध के धर्म का अनुयायी।

बौद्ध धर्म—पु० [सं० कर्म स०] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।

बौद्धिक—वि० [स० बुद्ध या बुद्धि+ठक्-इक] १ बुद्धि-सबधी। बुद्धि का। २ बुद्धि द्वारा ग्रहण किये जाने के योग्य। (इन्टलेकचुअल)

बौध—पु० [स० बुध+अण्] बुध का पुत्र। पुरूरवा।

बौना—पु० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी] बहुत ही छोटे कद का आदमी।

बौनी—स्त्री०=बोनी (बोआई)।

बौर—पु० [सं० मुकुल, प्रा० मउड] आम की मजरी। मौर।
वि० दे० 'बौरा' (पागल)।

बौरई—स्त्री० [हिं० बौराना] पागलपन। सनक।

बौरना—अ० [हिं० बौर+ना (प्रत्य०)] बौर से युक्त होना।

बौरहा—वि० [हिं० बौरा+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बौरही] पागल। विक्षिप्त।

बौरा—वि० [स० वातुल, प्रा० वाउड, पु० हिं० बाउर] [स्त्री० बौरी] १ बावला। पागल। विक्षिप्त। २ भोला-भाला। सीधा-सादा। ३ गूँगा। (क्व०)

बौराई—स्त्री० [हिं० बौरा+ई] बावलापन। पागलपन।

बौराना—अ० [हिं० बौरा+ना (प्रत्य०)] १ पागल हो जाना। सनक जाना। विक्षिप्त हो जाना। २. विवेक आदि से रहित होकर उन्मत्त होना।

स० १. किसी को बावला या पागल बनाना। २ बेवकूफ बनाना।
अ०=बौरना।

बौराह—वि०[हिं० बौरा] बावला। पागल। सनकी।

बौरी—स्त्री०=बावली।
वि० हिं० 'बौरा' का स्त्री०।

बौलड़ा—पुं० [हिं० वह+लड़] सिकड़ी के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना।

बौलसिरी—स्त्री०=मौलसिरी।

बौलाना—अ०, स०=बौराना।

बौसाना—अ० [सं० वस्=रहना] १. भोग-विलास करते हुए आनन्द लेना। २ उन्नति करना। बढ़ना।

बौहर—स्त्री०=बहु (बहू)।
†पुं०=व्यवहार।

बौहरगत†—स्त्री० [सं० व्यवहार=लेन-देन+गत] सूद पर रुपए उधार देने का व्यवसाय। (ब्रज०)

बौहरा—पुं० [हिं० व्यवहरिया] कर्ज देनेवाला महाजन। साहूकार। व्यवहरिया।

बौहिक—पुं०=बोहित (जहाज)।

ब्यंग्य†—पुं०=व्यंग्य।

ब्यंजन†—पुं०=व्यंजन।

ब्यक्ति†—पुं०=व्यक्ति।

ब्यजन—पुं०=व्यजन।

ब्यतीतना—स०[सं० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] व्यतीत होना। गुजरना। बीतना।

ब्यथा†—स्त्री०=व्यथा।

ब्यथित†—वि०=व्यथित।

ब्यलीक†—वि०=व्यलीक।

ब्यवसाय†—पुं०=व्यवसाय।

ब्यवस्था†—स्त्री०=व्यवस्था।

ब्यवहरिया—पुं०[हिं० व्यवहार] वह महाजन जो सूद पर रुपए उधार देता हो।

ब्यवहार—पुं०[सं० व्यवहार] १ सूद पर रुपयों का किया जानेवाला लेन-देन। महाजनी। २ उक्त प्रकार के लेन-देन का लगाव या सम्बन्ध ३ आपस में होनेवाला आत्मीयता का बरताव। व्यवहार। ४. दे० 'व्यवहार'।

ब्यवहारी—पुं०[सं० व्यवहार] १. व्यवहारिया। २. महाजनी सूद पर रुपए उधार देने का काम। ३ वह जिसके साथ मैत्री संबंध हो।

ब्यसन†—पुं०=व्यसन।

ब्यसनी†—पुं०=व्यसनी।

ब्याज—पुं०[सं० व्याज] १ वह धन जो ऋण लेनेवाले को मूल धन के अतिरिक्त देना पड़ता है। उधार दिये हुए रुपयों का सूद। वृद्धि।
क्रि० प्र०—जोड़ना।—फैलाना।—लगाना।
२ दे० 'व्याज'।

ब्याजखोर—पुं०[हिं० ब्याज+फा० खोर] वह जो सूद पर रुपया कर्ज दे। ब्याज की कमाई खानेवाला।

ब्याजू—वि०[हिं० ब्याज] १. ब्याज-संबंधी। २. ब्याज अर्थात् सूद पर लगाया हुआ (धन)।

ब्याध†—पुं०=व्याध।

ब्याधा†—स्त्री०=व्याधि।

ब्याधि†—स्त्री०=व्याधि।

ब्यान—पुं०[हिं० ब्याना] मादा पशुओं के गर्भ से, प्रसव करने की क्रिया या भाव।
पुं०=व्यान (पवन)।

ब्याना—स०[सं० वीज, हिं० बिया+ना (प्रत्य०)] मादा पशुओं का सन्तान प्रसव करना। बच्चा जनना।
अ० मादा पशुओं में सन्तान का प्रसव होना।
†अ० ब्याहना।

ब्यापक†—वि०=व्यापक।

ब्यापना—अ०[सं० व्यापन] १ किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय। किसी स्थान में पूरी तरह से भर जाना। व्याप्त होना। जैसे—[illegible]। २ चारों ओर से घिरना। ३. इस प्रकार प्रभाव होना कि किसी दूसरी चीज का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे। जैसे—शरीर में गरमी व्यापना। ४. मन में किसी बात की अनुभूति या ज्ञान होना। उदा०—यह माया मोहि निज [illegible], कोई न [illegible]।—कबीर।
संयो० क्रि०—जाना।

ब्यापार†—पुं०=व्यापार।

ब्यापारी†—पुं०=व्यापारी।

ब्यार—स्त्री०=बयार (हवा)।

ब्यारी†—स्त्री०[सं० विहार?] ब्यालू (रात का भोजन)।

ब्याल*—पुं०[स्त्री० ब्याली] व्याल (साँप)।
पुं०=व्याडि (शिव)।

ब्याला—स्त्री०=ब्यालू।

ब्यालू—पुं०[सं० विहार?] संध्या समय किया जानेवाला भोजन।

ब्याव*—पुं० १. ब्याज। २ ब्यान।

ब्याह—पुं०[सं० विवाह] देश, काल और जाति के नियम और प्रथा के अनुसार वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित होता है। पाणि-ग्रहण। विवाह।
मुहा०—ब्याह रचाना=विवाह सम्बन्धी उत्सव तथा कृत्य की व्यवस्था करना।

ब्याहता—वि० [सं० विवाहित] (स्त्री) जो ब्याह कर लाई गई हो। रखेली से भिन्न।
पुं० स्त्री का विवाहित पति।

ब्याहना—स०[सं० विवाह+ना (प्रत्य०)] [वि० ब्याहता] विवाह का सम्बन्ध स्थापित करना। ब्याह करना। जैसे—किसी की लड़की के साथ अपना लड़का ब्याहना।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।

ब्योंगा—पुं०[देश०] रांपी की तरह का लकड़ी का एक औजार जिससे चमार चमड़ा रगड़कर सुलझाते या सीधा करते हैं।

ब्योंचना—अ० [सं० विकुंचन, प्रा० विउंचन] नस का अपने स्थान से

हट-बढ या खिसक जाना जिसके फलस्वरूप अग या अगो मे पीडा और सूजन होने लगती है।
क्रि० प्र०—जाना।
ब्योंची—स्त्री०[हि० ब्योचना] उलटी। वमन। कै।
ब्योंत—स्त्री०[हि० ब्योतना] १. ब्योंतने की क्रिया, ढग, भाव या व्यवस्था। जैसे—कपडे की ब्योंत, काम की ब्योंत।
पद—कतर-ब्योंत।
क्रि० प्र०—करना।—बैठना।—बैठाना।
मुहा०—ब्योंत खाना=शक्ति, भावना, सामग्री आदि के विचार से ऐसी अवस्था या स्थिति होना जिसमे काम ठीक तरह से और पूरा हो सके। जैसे—जहाँ तक ब्योंत खाये वही तक कोई काम (या खर्च) करना चाहिए। ब्योंत फैलना*=ब्योंत खाना।
२. पहनने के कपडे बनाने के लिए कपडे को काट-छाँटकर और जोड या सीकर तैयार करने की क्रिया या भाव। जैसे—इस कपडे मे कुरते और टोपी की ब्योंत नही बैठती।
क्रि० प्र०—बैठना। बैठाना।
३ पहनने के कपडो की काट-छाँट का ढग। तराश। जैसे—इस बार किसी और ब्योंत की कमीज सिलवानी चाहिए। ४. कार्य-साधन की उपयुक्त प्रणाली। ढग। तरीका। विधि। ५. उपाय। तरकीब। युक्ति।
क्रि० प्र०—निकलना।— निकालना।— बनना।— बनाना।— बैठना।—बैठाना।
६ किसी काम या बात का आयोजन या उपक्रम। तैयारी। ७ इन्तजाम। प्रबंध। व्यवस्था।
क्रि० प्र०—बाँधना।
८ कोई काम या बात होने का अवसर या सयोग। नौबत। ९ विस्तृत विवरण। ब्योरा। हाल। उदा०—बलि बामन को ब्योंत सुनि को बलि तुमहि पत्याय।—बिहारी।
ब्योंतना—स०[?] १ कपडे को युक्ति-पूर्वक काटने और सीने की क्रिया या भाव। २ मारना। पीटना। ३ मार डालना। (बाजारू)
ब्योंताना—स०[हि० ब्योंतना का प्रे०] दरजी से नाप के अनुसार कपडा कटाना।
ब्योपार†—पु०=व्यापार।
ब्योपारी†—पु०=व्यापारी।
ब्योरन*—स्त्री०[हि० ब्योरना] १ ब्योरने अर्थात् सुलझाने, सँवारने की क्रिया या ढग। २ विवरण या ब्योरे मे युक्त कही जानेवाली बात। ३ दे० 'ब्योरा'।
ब्योरना—स०[स० विवरण] १. ब्योरेवार कोई बात बतलाना। २ २ उलझे हुए बालो या सूतो को सुलझाना।
अ० (किसी बात के सब अगो पर) अच्छी तरह विचार करना। सोचना-समझना।
ब्योरा—पु०[हि० ब्योरना] १ किसी घटना के अतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण से युक्त कथन या वर्णन। विस्तृत वृत्तान्त। तफसील। २ बीच मे पडने या होनेवाली कोई ऐसी बात जो अपनी समझ मे न आती हो। उदा०—वेई कर ब्यौरनि वहै ब्योरो कौन विचार।—बिहारी।
पद—ब्योरेवार।
२. किसी विषय के अंग-प्रत्यग से सबंध रखनेवाली भीतर की सारी बातें। किसी बात को पूरा करनेवाला एक एक खड। जैसे—जो बडी बड़ी रकमे खर्च हुई हैं, उनका ब्योरा भी आना चाहिए।
३ पूरा वृत्तात। सारा हाल।
ब्योरेबाज—वि० [हि०+फा०] [भाव० ब्योरेबाजी] १ युक्तिपूर्वक काम करनेवाला। २ धूर्त। चालाक।
ब्योरेबाजी—स्त्री०[हि०+फा०] चालाकी। धूर्तता।
ब्योरेवार—वि०[हि० ब्योरा+वार (प्रत्य०)] एक एक बात के उल्लेख के साथ। विस्तार के साथ। विवरण-युक्त।
ब्योसाय—पु०=व्यवसाय।
ब्योंहर—पु०=व्यवहार।
स०=व्यवहारना।
ब्योहरा—पु०=व्यवहरिया।
ब्योहरिया—पु०=व्यवहरिया।
ब्योहार—पु०=व्यवहार।
ब्यौहर—पु०=ब्योहर।
ब्यौहरिया—पु०=व्यवहरिया।
ब्यौहार—पु०=व्यवहार।
ब्रंद*—पु०=वृंद (समूह)।
ब्रज†—पु०=व्रज।
ब्रजना—अ०[स० व्रजन] गमन करना। चलना।
ब्रजवादिनी—स्त्री०[स० व्रजवादिनी?] एक प्रकार का आम जिसका पेड़ लता के रूप मे होता है।
पु० उक्त पेड़ का फल।
ब्रध्न—पु०[स०√बन्ध (बाँधना)+नक्, ब्रधादेश] १ सूर्य। २. आक। मदार। ३ शिव। ४ दिन। दिवस। ५ घोडा। ६ वृक्ष की जड। ७ एक प्रकार का रोग।
ब्रनंन†—पु० दे० 'वर्णन'।
ब्रन—पु० १ =वर्ण। २. =व्रण।
ब्रश—पु०[अ०] बुरुश।
ब्रह्मड*—पु०=ब्रह्माड।
ब्रह्म(न्)—पु०[स० √बृह्+मनिन्, नकारस्य अकार, रत्वम्] १ वेदात दर्शन के अनुसार वह एक मात्र चेतन, नित्य और मूल सत्ता जो अखड, अनंत, अनादि, निर्गुण और सत्, चित् तथा आनद से युक्त कही गई है।
विशेष—साधारणत यही सत्ता सारे विश्व या सृष्टि का मूल कारण मानी जाती है। परन्तु अधिक गम्भीर दार्शनिक दृष्टि मे यह माना जाता है कि यही जगत् का निमित्त भी है और उपादान भी। इसी आधार पर यह जगत् उस ब्रह्म का विवर्त (देखें) मात्र माना जाता है, और कहा जाता है कि ब्रह्म ही सत्य है, और बाकी सब मिथ्या या उसका आभास मात्र है। प्रत्येक तत्त्व और प्रत्येक वस्तु के कण कण मे ब्रह्म की व्याप्ति मानी जाती है, और कहा जाता है कि अंत या नाश होने पर सबका इसी ब्रह्म मे लय होता है।
२ ईश्वर। परमात्मा। ३ उक्त के आधार पर एक की सख्या का सूचक पद। ४. अन्तरात्मा। विवेक। जैसे—हमारा ब्रह्म वहाँ

जाने को नही कहता। ५ ब्राह्मण। (विशेषत समस्त पदो के आरभ मे) जैसे—ब्रह्मद्रोही, ब्रह्महत्या। ६. ब्रह्मा का वह रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—ब्रह्म-कन्यका। ७. ऐसा ब्राह्मण जो मर कर प्रेत हो गया हो। ब्रह्म-राक्षस।

मुहा०—(किसी को) ब्रह्म लगना=किसी पर ब्राह्मण प्रेत का आविर्भाव होना। ब्राह्मण प्रेत से अभिभूत होना। ८ वेद। ९ फलित ज्योतिष मे २७ योगो मे से २५वाँ योग जो सब कार्यों के लिए शुभ कहा गया है। १० सगीत मे ताल के चार मुख्य भेदो मे से एक।

ब्रह्म-कन्यका—स्त्री० [स०] १. ब्रह्मा की कन्या, सरस्वती। २ ब्राह्मी नाम की बूटी।

ब्रह्मकर्म (न्)—पु० [स० मध्य० स] १. वेद विहित कर्म। २. ब्राह्मणो के लिए विहित कर्म।

ब्रह्म-कल्प—वि० [सं० ब्रह्मन्+कल्पप्] जो ब्रह्म के समान हो। ब्रह्म तुल्य।

पु० [प० त०] उतना काल या समय जितने मे एक ब्रह्म का अस्तित्व रहता और कार्य होता है।

ब्रह्म-काष्ठ—पु० [स० मध्य० स०] तूत का पेड़। शहतूत।

ब्रह्मक्षत्र—पु० [स०] ब्राह्मण और क्षत्रिय से उत्पन्न एक जाति। (विष्णु-पुराण)

ब्रह्म-गति—स्त्री० [स० स०त०] १. मरने पर ब्रह्म मे विलीन होने की अवस्था, अर्थात् मुक्ति। मोक्ष। २ प्राय. साधु-संन्यासियो के सबंध मे उनके देहावसान या मृत्यु का वाचक पद।

ब्रह्मगाँठ—स्त्री०=ब्रह्म-ग्रंथि।

ब्रह्म-ग्रंथि—स्त्री० [सं० प० त०] यज्ञोपवीत या जनेऊ के डोरे मे लगाई जानेवाली मुख्य गाँठ। ब्रह्मगाँठ।

ब्रह्म-घातक—वि० [स० प० त०] ब्राह्मण की हत्या करनेवाला।

ब्रह्म-घातिनी—स्त्री० [स० ब्रह्मन्√+णिनि+ङीप्, उप० स०] रजस्वला स्त्री की वह सज्ञा जो उसे रजस्राव के दूसरे दिन प्राप्त होती है।

ब्रह्मघाती (तिन्)—वि० [सं० ब्रह्मन्√हन्+णिनि] [स्त्री० ब्रह्म-घातिनी] जिसने ब्राह्मण की हत्या की हो।

ब्रह्म-घोष—पु० [स० प० त०] १. वेद-ध्वनि। २. वेद-पाठ।

ब्रह्म-चक्र—पु० [सं० मध्य० स०] १ ससार चक्र। (उपनिषद्) २ एक तरह का मायावी चक्र।

ब्रह्मचर्य—पु० [सं० च० त०] १. भारतीय आर्यों की वह अवस्था तथा व्रत जिसमे विद्यार्थी विशेषत ब्राह्मण विद्यार्थी को वेदो का अध्ययन करना पड़ता, सब प्रकार के ससारिक बंधनो से दूर रहकर सात्विक जीवन बिताना पड़ता और अपने वीर्य को अक्षुण्ण रखना पडता है। २ अष्ट-विध मैथुनों से बचने का व्रत। ३. योग मे एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। मैथुन से बचने की साधना।

ब्रह्मचारिणी—स्त्री० [स० ब्रह्मन्√चर्+णिनि, वृद्धि, ङीप्] १ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करनेवाली स्त्री। २ सरस्वती। ३ दुर्गा। ४. ब्राह्मी बूटी।

ब्रह्मचारी (रिन्)—पु० [सं० ब्रह्मन्√चर् (करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] वह व्यक्ति जो ब्रह्मचर्य आश्रम मे हो।

ब्रह्मछिद्र—पु०=ब्रह्म-रंध्र।

ब्रह्मज—वि० [स० ब्रह्मन्√जन् (पैदा करना)+ड] जो ब्रह्मा से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १. यह जगत जो ब्रह्म से उत्पन्न माना गया है। २. कार्तिकेय। ३. हिरण्य-गर्भ।

ब्रह्म-जन्म (न्)—पु० [स० मध्य० स०] उपनयन संस्कार।

ब्रह्मजीवी (विन्)—वि० [स० ब्रह्मन्√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] शुद्ध ज्ञान का व्यापारिक लाभ उठानेवाला।

ब्रह्मज्ञ—वि० [स० ब्रह्मन् √ज्ञा (जानना)+क] ब्रह्म का ज्ञाता। ब्रह्म-ज्ञानी।

ब्रह्मज्ञान—पु० [स० प० त०] १. ब्रह्म को जानना। २. परमतत्व का ज्ञान।

ब्रह्मज्ञानी (निन्)—वि० [स० ब्रह्म ज्ञान+इनि, दीर्घ, नलोप] परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला। ब्रह्म-ज्ञान से युक्त या सम्पन्न।

ब्रह्मण्य—वि० [स० ब्रह्मन्+यत्] १. ब्राह्मणो मे सबध रखनेवाला। २ ब्रह्म-सबधी। ३. सभ्य तथा शिष्ट समाज के उपयुक्त।

पु० १. ब्राह्मण होने की अवस्था या भाव। २ वह जो ब्राह्मणो के प्रति निष्ठा रखता हो। ३. शहतूत।

ब्रह्मताल—पुं० [स०] संगीत मे १४ मात्राओ का एक ताल जिसमे १० आघात और ४ खाली रहते है।

ब्रह्मतीर्थ—पु० [स० प० त०] नर्मदा के तट का एक प्राचीन तीर्थ। (महा-भारत)

ब्रह्मतेज—पु० [सं० प० त०] वह तेज जो उच्च कोटि के कर्मशील ब्राह्मणो के मस्तक पर झलकता है।

ब्रह्मत्व—पु० [सं० ब्रह्मन्+त्व, नलोप] १. ब्रह्म होने की अवस्था या भाव। २ ब्रह्मा नामक ऋत्विज होने की अवस्था या भाव। ३ ३ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदड—पु० [स० प० त०] १ वह दड जो ब्राह्मण ब्रह्मचारी धारण करता है। २. ब्राह्मण के द्वारा मिला हुआ शाप। ३ ऐसा केतु जिसकी तीन शिखाएँ हों।

ब्रह्म-दंडी—स्त्री० [स० च० त०] एक प्रकार की जगली जडी जिसकी पत्तियो और फलों पर काँटे होते है। अजदती।

ब्रह्म-दर्भा—स्त्री० [सं० ब० स०] अजवायन।

ब्रह्म-दाता (तृ)—पु० [स० प० त०] वेद पढानेवाला आचार्य।

ब्रह्म-दान—पु० [स० प० त०] वेद पढाना।

ब्रह्म-दाय—पु० [सं० प० त०] वेद का वह भाग जिसमे ब्रह्म का निरूपण है।

ब्रह्म-दारु—पु० [स० प० त०] तूत का पेड। शहतूत।

ब्रह्म-दिन—पु० [स० प० त०] ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियो का माना जाता है।

ब्रह्म-देया—स्त्री० [स० च० त०] ब्रह्म विवाह मे दी जानेवाली कन्या।

ब्रह्म-दैत्य—पु०=ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्म-दोष—पु० [सं०मध्य०स०] ब्राह्मण को मारने का दोष। ब्रह्म-हत्या का पाप।

ब्रह्म-दोषी (षिन्)—वि० [सं० ब्रह्मदोष+इनि] जिसे ब्रह्म हत्या लगी हो।

ब्रह्म-द्रव—पु०[स० ष० त०] गगाजल।
ब्रह्म-द्रुम—पु०[सं० ष० त०] पलास। टेसू।
ब्रह्म-द्रोही (हिन्)—वि०[स० ष० त०] ब्राह्मणो से वैर रखनेवाला।
ब्रह्म-द्वार—पु०[स० ष० त०] ब्रह्म-रध्र।
ब्रह्म-नाड़ी—स्त्री०[स० ष० त०] हठ योग मे, सुषुम्ना के अन्तर्गत वह नाडी जिससे होकर कुडलिनी ब्रह्म-रध्र तक पहुँचती है।
ब्रह्म-नाभ—पु०[स० ब० स०] विष्णु।
ब्रह्म-निष्ठ—वि०[सं० ब० स०] १ ब्राह्मणो के प्रति निष्ठा या भक्ति रखनेवाला। २ ब्रह्म-ज्ञान से युक्त या संपन्न।
पु० पीपल।
ब्रह्म-पत्र—पु०[स० ष० त०] पलास का पत्ता।
ब्रह्म-पद—पु० [सं० ष० त०] १. ब्रह्मत्व। २ ब्राह्मण का पद या स्थिति। ब्राह्मणत्व। ३ मुक्ति। मोक्ष।
ब्रह्म-पर्णी—स्त्री०[स० ब० स०,+ङीष्] पिठवन नाम की लता।
ब्रह्मपवित्र—पु०[सं० स० त० उपमि० स० वा] कुश।
ब्रह्म-पादप—पुं०[स० मध्य० स०] पलास का पेड।
ब्रह्म-पाश—पु०[स० मध्य० स०] एक तरह का पाश या अस्त्र जो ब्रह्म-शक्ति से परिचालित होता था।
ब्रह्मपिता(तृ)—पुं०[स० ष० त०] विष्णु।
ब्रह्मपुत्र—पु०[स० ष० त०]१ ब्रह्मा का पुत्र। २ नारद। ३. मनु। ४. वशिष्ठ। ५. मरीचि। ६ सनकादिक। ७ एक प्रकार का विषाक्त कन्द। ८ असम तथा बगाल मे बहनेवाला एक प्रसिद्ध नद जिसका उदगम मानसरोवर है।
ब्रह्म-पुत्री—स्त्री० [स० ष० त०] १ सरस्वती देवी। २ सरस्वती नदी। ३. वाराही कद।
ब्रह्म-पुर—पु०[स० ष० त०] १ ब्रह्मलोक। २ हृदय, जिसमे ब्रह्म की अनुभूति होती है। ३ पुराणानुसार ईशान कोण का एक देश।
ब्रह्म-पुराण—पु०[स० मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक।
ब्रह्म-प्राप्ति—स्त्री०[स० ष० त०] मृत्यु।
ब्रह्म-फाँस—स्त्री०=ब्रह्मपाश।
ब्रह्म-बधु—पु०[स० ष० त० या ब० स०] कर्महीन ब्राह्मण। पतित या नाम-मात्र का ब्राह्मण।
ब्रह्म-बल—पु० [स० ष० त०] वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण को तप आदि के द्वारा प्राप्त हो।
ब्रह्म-भाव—पु०[सं० ष० त०] १ ब्रह्म मे समाना या लीन होना। २ मृत्यु।
ब्रह्म-भूत—भू० कृ०[स० स० त०] ब्रह्म मे लीन या समाया हुआ।
ब्रह्म-भूय—पु०[स० ष० त०] १ ब्रह्मत्व। २ मुक्ति। मोक्ष।
ब्रह्म-भोज—पु० [स० ष० त०] बहुत से ब्राह्मणो को एक साथ पगत मे बैठाकर भोजन कराना। ब्राह्मण-भोजन।
ब्रह्म-मय—वि० [स० ब्रह्मन्+मयट्] १ ब्रह्म से युक्त। २. वेदो से सबध रखनेवाला।
ब्रह्म-मुहूर्त—पु०=ब्राह्म मुहूर्त।
ब्रह्म-मेखला—पु०[स० ष० त०] मुंज नामक तृण। मूंज।
ब्रह्म-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] विधिपूर्वक किया जानेवाला वेदो का *अध्ययन और अध्यापन।*
ब्रह्म-यष्ठि—स्त्री०[सं० ष० त०] भारगी। ब्रह्मनेटी।
ब्रह्म-योग—पु०[सं० ष० त०] १. सगीत मे १८ मात्राओं का एक ताल जिसमे १२ आपात और ६ खाली होते हैं।
ब्रह्म-योनि—स्त्री० [स० ष० त०] १ ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला उसका ध्यान। २ [ब० स०] गया का एक तीर्थ। ३. सरस्वती।
वि० ब्रह्म से उत्पन्न।
ब्रह्म-रध्र—पु० [स० ष० त०] हठयोग मे, मस्तिष्क के ऊपरी मध्य भाग मे माना जानेवाला वह छिद्र या रध्र जहाँ सुषुम्ना, इंगला और पिंगला ये तीनो नाडियाँ मिलती हैं। कहते हैं कि पुण्यात्मा लोगों और योगियो के प्राण इसी रध्र को भेदकर निकलते हैं।
विशेष—ब्रह्म-रध्र को शरीर का दसवाँ द्वार कहा जाता है। अन्य द्वार इन्द्रियाँ है जो खुली रहती हैं। किन्तु यह दसवाँ द्वार सदा बंद रहता है। तपस्या द्वारा इसे खोला जाता है। इसके खुलने पर सहस्रार चक्र से अमृत रस निकलते लगता है जिससे योगी को अमर काया प्राप्त हो जाती है।
ब्रह्म-राक्षस—पु० [स० कर्म० स०] १ प्रेत-योनि मे गया हुआ ब्राह्मण। वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत या भूत हुआ हो। कहते हैं कि जिस ब्राह्मण की अकाल-मृत्यु या हत्या होती है, वह प्राय इसी योनि मे जाता है। २ शिव का एक गण।
ब्रह्म-रात—पुं०[स० ब० स०] १. शुकदेव। २ याज्ञवल्क्य मुनि।
ब्रह्म-रात्र—पु०[स० रात्रि+अण्, ब्रह्म-रात्र, ष० त०] रात के अन्तिम चार दड। ब्राह्म मुहूर्त।
ब्रह्म-रात्रि—स्त्री० [स० ष० त०] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की मानी जाती है।
ब्रह्म-राशि—पु० [स० ष० त०]१ परशुराम का एक नाम। २ बृहस्पति से आक्रात श्रवण नक्षत्र।
ब्रह्म-रीति—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का पीतल।
ब्रह्म-रूपक—पुं० [सं० ब० स०,+कप् अथवा ष० त०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे गुरु लघु के क्रम से १६ अक्षर होते हैं। इसे 'चचला' और 'चित्र' भी कहते हैं।
ब्रह्म-रूपिणी—स्त्री० [स० ष० त०] बाँदा।
ब्रह्म-रेखा—स्त्री० [स० मध्य० स०] पुराणानुसार ललाट पर ब्रह्म द्वारा लिखी हुई भाग्य-रेखा या भाग्य-लिपि।
ब्रह्मर्षि—पु० [सं० ब्रह्मन्-ऋषि, कर्म० स०] वशिष्ठ आदि मंत्रद्रष्टा ऋषि।
ब्रह्मर्षि-देश—पु० [स० ष० त०] वह प्राचीन भू-भाग जिसके अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाचाल और शूरसेन देश थे। (मनु०)
ब्रह्म-लेख—पु० [स० ष० त०] १. ब्रह्मा द्वारा मनुष्य के ललाट पर लिखी हुई वे पक्तियाँ जो उसके भाग्य की सूचक होती हैं। २. ऐसा लेख जो कभी अन्यथा या मिथ्या न हो सकता हो।
ब्रह्म-लोक—पु० [स० ष० त०] १ वह लोक जिसमे ब्रह्म का निवास माना गया है। २ एक प्रकार का मोक्ष।
ब्रह्म-वध—पु० [स० ष० त०] ब्रह्म हत्या।

ब्रह्मारण्य—पु० [स० ब्रह्मन्-अरण्य, प० त०] १ एक प्राचीन वन। २. वेदपाठ-भूमि।

ब्रह्मार्पण—पु० [स० ब्रह्मन्-अर्पण, च० त०] अपने किये हुए सभी कर्मों के फल परमात्मा को अर्पित करने की क्रिया।

ब्रह्मावर्त्त—पुं० [स० ब्रह्मन्-आवर्त्त, प० त०] सरस्वती और दृपद्वती नदियो के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

ब्रह्मासन—पु० [स० ब्रह्मन्-आसन, प० त०] १ वह आसन जिस पर बैठकर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है। २ तान्त्रिक पूजा का एक आसन।

ब्रह्मास्त्र—पु० [स० ब्रह्मन्-अस्त्र, मध्य० स०] १. ब्रह्म-शक्ति से परिचालित होनेवाला अमोघ अस्त्र। २. एक प्रकार का अस्त्र, जो मत्र से पवित्र करके चलाया जाता था। ३ वैद्यक मे, एक रसौषध जो सन्निपात मे दिया जाता है।

ब्रह्मिष्ठ—वि० [स० ब्रह्मन्-इष्ठन्] वेदो का पूर्ण ज्ञाता।

ब्रह्मिनष्ठा—स्त्री० [स० ब्रह्मिष्ठ+टाप्] दुर्गा।

ब्रह्मोपदेश—पु० [स० ब्रह्मन्-उपदेश, प० त०] ब्रह्मज्ञान की शिक्षा।

ब्रांडी—पु० [अ०] एक प्रकार की विलायती शराव।

ब्रात—पु०=व्रात्य।

ब्राह्म—वि०[स०ब्रह्मन्+अण्]ब्रह्म-सबधी। ब्रह्मा का। जैसे—ब्राह्मदिन। पु० १ हिंदू धर्म-शास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक। २ ब्रह्म पुराण। ३ नारद। ४ नक्षत्र। ५ प्राचीन राजाओ का एक धर्म जिसमे उन्हे गुरुकुल से लौटे हुए ब्राह्मणो की पूजा करनी पडती थी।

ब्राह्मण—पु० [स० ब्रह्मन्+अण्] [स्त्री० ब्राह्मणी] १ हिंदुओ के चार वर्णों मे से पहला और सर्वश्रेष्ठ वर्ण जिसके मुख्य कर्म वेदो का पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि है। २ उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। द्विज। विप्र। ३. वेदो का वह भाग जो उनके मत्र भाग से भिन्न है। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ अग्नि।

ब्राह्मणक—पु० [स० ब्राह्मण+कन्] निंदनीय या बुरा ब्राह्मण।

ब्राह्मणत्व—पु० [स० ब्राह्मण+त्व] ब्राह्मण होने की अवस्था, धर्म या भाव। ब्राह्मण-पन।

ब्राह्मण ब्रुव—पु० [स० ब्राह्मण√ब्रू (बोलना)+क] कर्म और सस्कार से हीन तथा नाममात्र का ब्राह्मण।

ब्राह्मण भोजन—पु०[स० प० त०] बहुत से ब्राह्मणो को बुलाकर कराया जानेवाला भोजन।

ब्राह्मणायन—पु० [स० ब्राह्मण+फक्—आयन] विद्वान् और विशुद्ध ब्राह्मणकुल मे उत्पन्न ब्राह्मण।

ब्राह्मणी—स्त्री० [स० ब्राह्मण+ङीप्] १ ब्राह्मण जाति की स्त्री। २. बुद्धि। ३ एक प्राचीन तीर्थ।

ब्राह्मण्य—पु० [स० ब्राह्मण+यत्] १ ब्राह्मण का धर्म या गुण। ब्राह्मणत्व। २ ब्राह्मणो का वर्ग या समाज। ३ शनि ग्रह।

ब्राह्मधर्म—पु०=ब्रह्म-समाज।

ब्राह्मप्रलय—पु०=नैमित्तिक प्रलय। (देखें)

ब्राह्म मुहूर्त—पु० [स० कर्म० स०] सूर्योदय से पहले दो घटी तक का समय (जो बहुत ही पवित्र तथा शुभ माना गया है)।

ब्राह्म-विवाह—पु० [स० कर्म० स०] दे० 'ब्राह्म' के अन्तर्गत।

ब्राह्म समाज—पु० [स० कर्म० स०] बग देश मे प्रवर्तित एक आधुनिक सप्रदाय। ब्रह्म-समाज।

ब्राह्म समाजी (जिन्)—पु० [स० ब्राह्म समाज+इनि,] ब्राह्म समाज का अनुयायी।

वि० १. ब्रह्म समाज-सबधी। २. ब्रह्म समाजियो का।

ब्राह्मी—स्त्री० [स० ब्राह्म+ङीप्] १. दुर्गा। २ शिव की आठ मातृकाओ मे से एक। ३ रोहिणी नक्षत्र। ४ भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ विकसित हुई हैं। हिंदुस्तान की एक प्रकार की पुरानी लिखावट। ५. औषध के काम मे आनेवाली एक बूटी जो छत्ते की तरह जमीन मे फैलती है। यह बहुत ठढी होती है और मस्तिष्क के लिए बहुत गुणकारी कही गई है।

ब्रिगेड—पु० [अ०] १ सेना का एक वर्ग। २ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्यकर्ताओ का दल। जैसे—फायर ब्रिगेड।

ब्रिज—पु० [अ०] १. पुल। सेतु। २ ताश का एक प्रकार का खेल।

ब्रिटिश—वि० [अ०] १ ब्रिटेन-सबधी। २ अँगरेजो का।

ब्रिटेन—पु० [अ०] इग्लैंड, वेल्स और स्काटलैंड नामक प्रदेशो का सम्मिलित नाम।

ब्रीड—पु०=व्रीडा।

ब्रीड़ना—अ० [स० व्रीडन] लज्जित होना। लजाना।

ब्रीड़ा—स्त्री०=व्रीडा।

ब्रीविया—पु० [अ०] छापेखाने मे, एक प्रकार का छोटा टाइप जो आठ प्वाइट का अर्थात् पाइका का २।३ होता है।

ब्रीहि—पु०=व्रीहि।

ब्रुश—पु० [अ०] बुरुश।

ब्रूहम—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की घोडागाडी जिसे ब्रूहम नामक डाक्टर ने डाक्टरो के लिए प्रचलित किया था।

ब्रूहि—अव्य० [स०] उच्चारण करो। कहो।

ब्रेक—पु० [अ०] गाडियो मे पहिये या गति-चक्र की गति रोकनेवाला उपकरण।

ब्लाउज—पु० [अ०] विलायती ढग की जनाना कुरती।

ब्लाक—पु० [अ०] १ वह ठप्पा जिस पर से कोई चित्र छापा जाय। २. भूमि का कोई चौकोर खंड या टुकड़ा। ३ किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियत किया हुआ भू-भाग।

ब्वै—वि०=बिय (दो)।

ब्वौना—स०=बोना।

पु० भाँग का खेत।

भजक—वि० [स०√भज्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० भजिका] भग करने या तोडने-फोडनेवाला।

भंजन—पु० [स०√भज्+ल्युट्—अन] १ भग करना। २ तोड़ना-फोडना। ३ ध्वस। नाश। ४. आक। मदार। ५. भाँग। ६ व्रण की वह पीडा जो वायु के प्रकोप के कारण होती है।

वि०=भजक। (समस्त पदो के अत मे, जैसे—भव-भय-भजन)।

भजनक—पु० [स०√भज्+ल्युट्—अन+कन्] एक तरह का रोग जिसमे दाँत टूट जाते है और मुँह कुछ टेढा हो जाता है।

भँजना—अ० [स० भजन] १ भग्न होना। टुकडे-टुकडे होना। २ भाँजा या मोडा जाना। ३ तहो या परतो के रूप मे मोडा जाना। जैसे—कागज भँजना। ४ इधर-उधर घुमाना या चलाया जाना। जैसे—तलवार, पाटा या लाठी भँजना। ५ वडे सिक्के का छोटे सिक्को मे परिवर्तित होना। भुनना। जैसे—रुपया भँजना।

स०=भाँजना।

भजना—अ० [स० भजन] पात्र आदि का टूट-फूट जाना।

स० तोड़ना-फोडना।

स०=भाँजना।

अ०=भागना।

स०=भगाना।

भँजनी—पु० [हि० भाँजना] करघे की वह लकडी जो ताने को विस्तृत करने के लिए उसके किनारो पर लगाई जाती है। भँसरा।

भंजा—स्त्री० [स० भञ्ज्+अच्—टाप्] अन्नपूर्णा।

भँजाई—स्त्री० [हि० भाँजना] १. भाँजने की अवस्था, क्रिया, ढग या भाव। २ कोरे या छपे हुए कागज को परतो मे मोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री० दे० 'भुनाई'।

भँजाना—स० [हि० भँजना का स०] १ किसी को कुछ भाँजने मे प्रवृत्त करना। २ भाँजने का काम किसी से कराना। भँजवाना। (दे० 'भाँजना' और 'भँजना')।

† अ०=भँजना।

भँटकटैया—स्त्री०=भटकटैया।

भंटा—पु०=वैंगन।

भंटाकी—स्त्री० [स०√भण् (शब्द)+टाकन्+ङीष्] भटा। वैंगन।

भंठी†—स्त्री० [?] १. वाधा। विघ्न। २ अडचन। (राज०)

भड—पु० [स०√भड् (प्रतारण)+अच्]=भाँड।

वि० १ अश्लील या गदी वाते वकनेवाला। २ किसी वात को स्थान-स्थान पर कहते फिरनेवाला। ३. धूर्त। ४ पाखडी। जैसे—भड तपस्वी।

†पु०=भाँड।

भंडक—पु० [स० भड+कन्] खिँडरिच पक्षी।

भँड-ताल—पु० [हि० भाँड+ताल] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमे गानेवाला गाता है और शेष समाजी उसके पीछे तालियाँ वजाते हैं। भँड़-तिल्ला।

४—२४

भँड-तिल्ला—पु० [हि० भाँड+तिल्ला] १ भँड-ताल। २ आडवर-पूर्ण काम।

भंडन—पु० [स०√भड् (विगाडना)+ल्युट्—अन] १. हानि। क्षति। २. कवच।

भंडना—स० [स० भडन] १ क्षति या हानि पहुँचाना। २ खराव करना। विगाडना। ३ तोडना-फोडना। ४ किसी को चारो ओर वदनाम करते फिरते रहना।

भँड-फोड़—पु० [हि० भाँडा+फोडना] १ मिट्टी के वर्तन तोडना-फोडना। २ दे० 'भडा-फोड'।

वि० १. मिट्टी के वरतन तोड-फोडकर नष्ट करना। २. किमी का भडा-फोड या रहस्योद्घाटन करना।

भँड़भाँड़—पु० [सं० भाडीर] एक प्रकार का कटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ नुकीली, लम्वी और कँटीली होती है। इसके पौधे से पीले रग का दूध निकलता है जो घाव और चोट पर लगाया जाता है।

भँडरिया—स्त्री० [हि० भडारा+इया (प्रत्य०)] दीवारो मे वनी हुई खानेदार तथा पल्लोवाली छोटी अलमारी।

वि० [हि० भड्डरि] १ ढोंगी। पाखडी। २ चालाक। धूर्त।

पु०=भड्डर।

भँडसाल—स्त्री० [हि० भाड+स० शाला] अन्न इकट्ठा करके रखने का स्थान। खत्ती। खत्ता।

भंडा—पु० [स० भाड] १ पात्र। वरतन। २ भडार। ३. भेद। रहस्य।

मुहा०—(किसी का) भडा फूटना=रहस्य विशेषत कुचक्र का पता लोगो को लगना। भेद प्रकट होना। भडा फोडना=गुप्त रहस्य खोलना। सव पर भेद प्रकट करना।

४ वह लकडी या वल्ला जिसका सहारा लगाकर मोटे और भारी वल्लो को उठाते या खिसकाते है।

भँडाना—स० [हि० भाँड] १ उछल-कूद मचाना। उपद्रव करना। २ तोडना-फोडना।

स० [हि० भडना का प्रे०] भडने का काम किसी से कराना।

भडा-फोड—वि० [हि० भाँडा+फोडना] दूसरो का रहस्य, विशेषत. कुचक्र लोगो पर प्रकट करनेवाला।

पु० किसी के गुप्त रहस्यो या कुचक्रो का सव पर किया जानेवाला उद्घाटन।

भडार—पु० [स० भाडार] १ कोष। खजाना। २ किसी चीज या वात का वहुत वडा आधान या आश्रय स्थान। जैसे—विद्या का भडार। ३ अनाज रखने का कोठा। खत्ता। खत्ती। ४ वह कमरा या कोठरी जिसमे भोजन वनाने के लिए अन्न, वरतन आदि रखे जाते हैं। ५ उदर। पेट। ६. खोपडी। ७ नदी का तल। तलहटी। ८ किसी राजा या जमीदार की वह भूमि या गाँव जिसमे वह स्वय खेती करता है। ९ दे० 'भडारा'।

भंडारा—पु० [हि० भडार] १ साधु-सन्यासियों आदि का भोज। वह भोज जिसमे सन्यासियो और साधुओ को खिलाया जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

२ उदर। पेट। ३ खोपडी। ४ जीव-जन्तुओ का झुड या समूह।

क्रि० प्र०—जुड़ना।
५. दे० 'भडार'।

भडारी—पु० [हिं० भडार+ई (प्रत्य०)] १. भंडार का प्रधान अध्यक्ष और व्यवस्थापक। भडार का प्रबंधक। २ रसोइया। ३ खजांची। ४. तोपखाने का दारोगा।
स्त्री० [हिं० भडार+ई (प्रत्य०)] १. कोश। खजाना। २ छोटी कोठरी।
स्त्री०-१ भँडरिया। २. भंडार।

भडिमा (मन्)—स्त्री०[सं० भड+इमनिच्] छल। धोखा।

भंडिर—पु० [स०√भड्+इरच्, र—ल] सिरस का वृक्ष। शिरीष।

भंडिल—पु० [स०√भड्+इलच्] १. सिरस का पेड़। २ दूत। ३ कारीगर। शिल्पी।
वि० १ अच्छा। उत्तम। २ मागलिक। शुभ।

भँड़िहा—पु० [स० भाड+हर] चोर।

भँड़िहाई—स्त्री० [हिं० भांड़] भांडो या विदूषकों का-सा आचरण या व्यवहार।
अव्य० [हिं० भँड़िहा] चोरी से। छिपे छिपे।

भंडी—स्त्री०[स० भड+इनि] १ मजीठ। २. सिरिस का पेड़।

भंडीर—पु० [स० भंड्+ईरन्] १. चौलाई का साग। २ बरगद का पेड़। वट। ३ भड-भाँड़। ४ सिरस।

भंडूक—पु० [स०√भड्+ऊक] १. भाकुर नामक मछली। श्योनाक। सोना-पाठा।

भँडेर—पु० [देश०] एक वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा रँगने के काम मे आती है।
स्त्री०=भँडेहर।

भँडेरिया—पु०=भड्डर।
स्त्री०=भंडरिया।

भँडेरियापन—पु० [हिं० भँडेरिया+पन (प्रत्य०)] १. ढोंग। मक्कारी। २ चालाकी। धूर्तता।

भँडेहर—स्त्री० [हिं० भांडा] १ मिट्टी के छोटे-छोटे बरतन। २ घड़े के आकार-प्रकार के मिट्टी के छोटे-छोटे पात्रों का एक पर एक रखा हुआ थाक। ३ लाक्षणिक अर्थ में, बहुत अलकृत तथा सजाई हुई ऐसी वस्तु जो देखने में भद्दी लगती हो।

भँडेहरी—स्त्री० [हिं० भांड+हरी (प्रत्य०)] १ भाँडो का काम। २ भाँडपन।
वि० भाँडों का-सा।

भँड़ैती—स्त्री० [हिं० भांड] १. भाँडो का काम या पेशा। २. भांडो की-सी ओछी बातें या हास-परिहास।

भँडौआ—पुं० [हिं० भांड] १ भाँडो के गाने का गीत। २. व्यग्य और हास्य से युक्त ऐसी कविता या गीत जो कहे या गाये जाने के योग्य न हो।

भँति†—स्त्री०=भ्राति।
अव्य०=भाँति (प्रकार)।

भँबूरी—स्त्री० [हिं० बबूर] =कुलाई (वृक्ष)।

भंभ—पु० [सं० भ√मा (शोभित होना) +क] १ चूल्हे का मुंह। २. धूआँ। ३ मक्खी।

भंभर*—पु० [स० भ्रमर] १. भौंरा। मधु-मक्खी। [illegible]। २. भौंरा। [illegible]।

भँभरना—अ० [हिं० भय+ना (प्रत्य०)?] [illegible]। [illegible]। [illegible]।
अ० भभरना।

भंभा—पुं० [सं० भंभ] १ छिद्र। छेद। २ [illegible]। सुराख।
स्त्री० [सं०] दुर्गा।

भभाका—पु० [हिं० भभा] १. [illegible]। २. [illegible] या छिद्र।
वि० मोटा और स्थूलकाय।

भँभाना—अ० [सं० भम्भारव] गौओं आदि पशुओं का चिल्लाना। रँभाना।

भँभीरा—पु०[अनु०] एक प्रकार का [illegible]।

भँभीरी—स्त्री० [अनु०] १ [illegible] के समान पारदर्शी पंखों वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा। २ लड़कों आदि का एक प्रकार का खिलौना जो हवा में घूमने पर लट्टू की तरह घूमता है। फिरकी।

भँभूरा—पु० [हिं० भभूका का रूप] १. [illegible]। [illegible]। उदा०—[illegible]।—सूर। २ [illegible]।

भँभेरि*†—स्त्री० =भय।

भंभो—स्त्री० [अनु०] १ [illegible]। मोटी औरत।

भँभोड़ना—पु० [?] [illegible]। जैसे—[illegible] भँभोड़ना।

भँवना†—अ० भँवना (घूमना)।

भँवन*—स्त्री० [सं० भ्रमण] १. घूमने या चक्कर खाने की क्रिया, ढंग या भाव। २ भ्रमण।

भँवना—अ० [स० भ्रमण] १ चक्कर लगाना। २. घूमना-फिरना।

भँवर—पु० [स० भ्रमर] १. भ्रमर (भौंरा)। २. नदी में [illegible] पर जाने पानी का बहाव [illegible] चक्कर की स्थिति। ३. गड्ढा। गर्त। ४ भौरे की तरह काले रंग का घोड़ा। भौंरा। मुश्की। उदा०—[illegible]।
वि० काला।

भँवरकली—स्त्री० [हिं० भँवर+कली] लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारों ओर सहज में घुमाई जा सकती है।

भँवर-गीत—पु०=भ्रमर-गीत।

भँवर-जाल—पु० [हिं० भँवर+जाल] संसार और उसके झगड़े-बखेड़े। भ्रमजाल।

भँवर-भीख—स्त्री०=[हिं० भँवर+भीख] चारो ओर घूम-घूमकर प्राप्त की हुई भिक्षा।

भँवरा—पु०=भौंरा।

भँवरी—स्त्री० १.=भौंरी। २.=भाँवर।
†स्त्री०=भँवर (नदी का)।
स्त्री० [हिं० भँवना] घूम-घूमकर सौदा बेचना।

भँवाना—स० [हिं० भँवना] १ घुमाना। २. चक्कर देना। ३.धोखे या भ्रम मे डालना।

भँवारा—वि० [हिं० भँवना+आरा (प्रत्य०)] जो प्राय घूमता-फिरता रहता हो। जिसे भ्रमण करने की लत पडी हो।

भँवैया†—वि० [हिं० भँवना] १ घुमाने या चक्कर दिलानेवाला। २. तरह तरह के नाच नचाने या खेल खेलानेवाला।

भँसरा—पु०=भँजनी (करघे की)।

भंसा†—पु० [स० भाड-शाला] १. रसोई-घर। चौका। २ दे० 'भसार'।

भसार†—पु० १ =भाड़। २ =भट्ठा। ३ ='भसा'।

भइया—पु० [हिं० भाई+इया (प्रत्य०)] १ भाई। २. भाई अथवा वरावर वालो के लिए सम्बोघन-सूचक शब्द।

भई—अव्य० [हिं० भाई] सबोधन रूप मे प्रयुक्त होनेवाला एक अव्यय। जैसे—भई वाह ? क्या वात है।

भउ*—पु०=भव (ससार)।

भउजाई†—स्त्री०=भौजाई।

भक—स्त्री० [हिं० भभकना] आग के एकाएक भभकने से होनेवाला शब्द। पद—भक से=एकाएक। सहसा।

भकटना—अ०=भकसना।

भकटाना—अ०, स०=भकसाना।

भकड़ना—अ०=भगरना।

भकभकाना—अ० [अनु०] १ 'भक-भक' शब्द करके जलना या रह-रहकर चमकना। २ चमकाना।
स० १ उक्त प्रकार से जलाना। सुलगाना। २. चमकाना।

भक-भूर(रि)—वि० [सं० भेक] १ मूर्ख। २ उजड्ड। उदा०—चाह की चटक ते भयो न हिये खोय जा के, प्रेमपरि कया कहै कहा भकमूर सो।—घनानद।

भकरॉध—स्त्री० [हिं० भगरना अथवा भक+गंघ] सडे हुए अनाज की गघ। भुकरायँघ।

भकरॉधा—वि० [हिं० भकरॉंघ+आ (प्रत्य०)] दुर्गन्ध से युक्त या सडा हुआ (अन्न)।

भकरँड—पु० [स० भग्न-रुण्ड] छिन्न-भिन्न या कटा हुआ धड।

भकवा†—वि०=भकुआ।

भकसना—अ० [अनु०] इस प्रकार सडना कि दुर्गन्ध निकलने लगे। †स०=भकोसना।

भकसा—वि० [हिं० भकसाना या भकटाव] खाद्य पदार्थ।

भकसाना—स० [हिं० भकसना का स०] इस प्रकार सड़ाना कि दुर्गन्ध निकलने लगे।
†अ०=भकसना।

भकसी—स्त्री० [?] काल-कोठरी। (पूरब)

भकाऊँ—पु० [अनु०] वच्चो को डराने के लिए एक कल्पित जन्तु। हौआ।

भकुआ—वि० [स० भेक] १. मूर्ख। मूढ। २ वहुत घवराया हुआ।

भकुआना—अ० [हिं० भकुआ] १. मूर्ख वनना। २ घवरा जाना। स० १. किसी को भकुआ वनाना। वेवकूफ वनाना। २ वहुत ही घवराहट मे डालना।

भकुड़ा—पु० [हिं० भाँकुट] वह मोटा गज जिससे तोप मे वत्ती आदि ठूँसी जाती है।

भकुड़ाना—स० [हिं० भकुड़ा+आना (प्रत्य०)] १. लोहे के गज से तोप के मुँह मे वत्ती भरना। २ उक्त प्रकार से तोप का नल साफ करना।

भकुरना†—अ० [?] नाराज या रुष्ट होना। मुँह फुलाना। उदा०—भकुर गई है तो भकुरी रहे।—वृदावनलाल वर्मा।

भकुवा—वि०=भकुआ।

भकूट—पु० [स० प० त०] एक प्रकार का राशियोग जो विवाह की गणना मे शुभ माना जाता है। (फलित ज्यो०)

भकोसना—स० [सं० भक्षण] १ वहुत वड़े वडे तथा एक पर एक कौर मुँह मे ठूसते चलना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, वहुत वडी सपत्ति हजम कर या खा-पी जाना।

भकोसू—वि० [हिं० भकोसना] १. भकोसनेवाला। २ वहुत अधिक खानेवाला। भुक्खड़। ३ वहुत वडी सपत्ति हजम करने या खा-पी जानेवाला।

भक्त—वि० [स०√भज् (सेवा करना)+क्त, कुत्व] [भाव० भक्ति] १ वॉटा हुआ। भागो मे वाँटा हुआ। जिसका या जिसके विभाग हुए हो। २. सव को वाँटकर हिस्से के मुताविक दिया हुआ। ३ अलग या पृथक् किया हुआ। ४ किसी का पक्ष लेनेवाला। पक्षपाती। ५. अनुगामी। अनुयायी। ५ किसी पर भक्ति और श्रद्धा रखनेवाला।
पु० १ पका हुआ चावल। भात। २ धन। ३ वह जो श्रद्धापूर्वक किसी की उपासना या पूजा करता या किसी पर पूरी निष्ठा रखता हो। ४. वह जो धार्मिक दृष्टि से मास-मछली खाना पाप समझता हो।

भक्त-गृह—पु० [स० प० त०] वौद्ध भिक्षुओ की भोजनशाला।

भक्तजा—स्त्री० [स० भक्त√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] अमृत।

भक्तता—स्त्री० [स० भक्त+तल्+टाप्] भक्ति।

भक्त-तूर्य्य—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का वाजा जो भोजन के समय वजाया जाता था।

भक्तत्व—पु० [स० भक्त+त्व] किसी के खड या विभाग होने का भाव।

भक्त-दाता (तृ)—पु० [स० प० त०] भरण-पोषण करनेवाला।

भक्त-दास—पु० [स० सुप्सुपा स०] वह भक्त जिसे अपने सेव्य या स्वामी से केवल भोजन-कपडा मिलता हो।

भक्त-पुलाक—पु० [स० प० त०] १. भात का कौर। २ माँड। पीच।

भक्त-प्रिय—पु० [स० प० त०]सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भक्त-मड—पु० [स० प० त०] माँड। पीच।

भक्त-मडक—पुं० [सं० ष० त०]=भक्तमंड।

भक्त-वच्छल—वि० दे० 'भक्तवत्सल'।

भक्त-वत्सल—वि० [स० स० त०] [भाव० भक्त-वत्सलता] जो भक्तों पर कृपा करता और स्नेह रखता हो।
पु०=विष्णु।

भक्त-शरण—पु० [स० प० त०] भोजनशाला। रसोई-घर।

भगई—स्त्री० [हिं० भगवा] कपड़े का वह लंबा टुकड़ा जिसे पहले कमर में लपेटकर फिर लँगोटी की तरह लाँग लगाई जाती है।

भग-काम—वि० [सं० भग√कम्+णिङ्+अण्, उप० स०] संयोग-सुख का इच्छुक।

भगण—पुं० [सं० ष० त०] १ खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है। २. छंदशास्त्र में तीन वर्णों का एक गण जिसका आदि का वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं। जैसे—कारण, पोषण।

भगत—वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १ भक्ति करनेवाला। भक्त। २ विचारवान्।
पुं० १ साधु या संन्यासी। २. वह जो धार्मिक विचार से मांस-मछली आदि न खाता हो। ३ वैष्णव, जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। ४ राजपूताने की एक जाति। इस जाति की कन्याएँ वेश्या-वृत्ति और नाचने-गाने का काम करती हैं। दे० 'भगतिया'। ५ होली में वह स्वाँग जो भक्तों आदि का रचा जाता है। इसमें भक्तों का उपहास होता है। ६ शृंगाररस प्रधान तथा लोक-कथा पर आश्रित एक प्रकार का संगीत रूपक जो प्रायः नौटंकी (देखें) की तरह होता और प्रायः पुरसा भर ऊँचे मंच पर अभिनीत होता है। इसमें प्रायः व्यंग्य और हास्य का भी अच्छा मिश्रण रहता है। ७ वेश्या के साथ बाजा बजानेवाला सगतिया। (राज०) ८ मंत्र-तन्त्र से भूत-प्रेत झाड़नेवाला पुरुष। ओझा। सयाना।

भगत-बछल*—वि० दे० 'भक्त-वत्सल'।

भगत-बाज—पुं० [हिं० भगत+फा० बाज] १ स्वाँग भरकर लौंडों को अनेक रूप का बनानेवाला पुरुष। २ लौंडों को नाच-गाना सिखानेवाला व्यक्ति।

भगतावना—स०=भुगताना।

भगति—स्त्री०=भक्ति।

भगतिन—स्त्री० [हिं० भगत] भक्त स्त्री।
स्त्री० [हिं० भगतिया का स्त्री०] रंडी। वेश्या।

भगतिया—पुं० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति। कहते हैं कि ये लोग वैष्णव साधुओं की संतान हैं जो अब गाने-बजाने का काम करते है और जिनकी कन्याएं वेश्या-वृत्ति करती और भगतिन कहलाती हैं।

भगती—स्त्री०=भक्ति।

भगदड़—स्त्री० [हिं० भागना+दौड़ना] संकट की स्थिति में भीड़ का संत्रस्त होकर इधर-उधर भागना।
क्रि० प्र०—मचना।

भगन—वि०=भग्न।

भगनहा—पुं० [सं० भग्नहा] करेरुआ नामक कँटीली बेल।

भगना—अ०=भागना
पुं० =भागिनेय (भानजा)।

भगनी—स्त्री०=भगिनी (बहन)।

भग-भक्षक—पुं० [सं० ष० त०] स्त्रियों का दलाल। कुटना।

भगर—पुं० [हिं० भगरना] १ सड़ा हुआ अन्न। २ दे० 'भगल'।
†पुं० [देश०] [स्त्री० भगरी] १ छल। कपट। २ ढोंग।
मुहा०—भगर भरना=ढोंग करना।

भगरना—अ० [सं० विकरण; हिं० बिगड़ना] खत्ते में गर्मी पाकर अनाज का सड़ने लगना।
संयो० क्रि०—जाना।

भगल—पुं० [देश०] १ छल। कपट। धोखा। २. आडम्बर। ढोंग। ३ इन्द्रजाल। जादू। ४ किसी नकली चीज को असली बताकर अथवा साधारण चीज को बहुमूल्य बना देने का ढोंग रचकर दूसरों को ठगने की कला या क्रिया। जैसे—तांबे या पीतल को सोना बनाने का प्रलोभन देकर दूसरों को ठगना। (स्विंडलिंग)

भगलिया—पुं० [हिं० भगल] १ ढोंगी। पाखंडी। २. कपटी। छलिया। ३ ऐन्द्रजालिक। जादूगर। ४ वह जो लोगों का विश्वास-भाजन बनकर उन्हें ठगता हो। (स्विन्डलर)

भगली—पुं०=भगलिया।
स्त्री०=भगल।

भगवंत—पुं० [सं० भगवत का बहु० भगवन्त] भगवान।

भगवत्—वि० [सं० भग+मतुप्, वत्व] [स्त्री० भगवती] १. ऐश्वर्य-शाली। २ पूज्य। मान्य।
पुं० १ भगवान। २ विष्णु। ३ शिव। ४ गौतम बुद्ध। ५. कार्तिकेय। ६ सूर्य। ७ जैनों के जिनदेव।

भगवती—स्त्री० [सं० भगवत्+ङीप्] १ देवी। २ गौरी। ३. सरस्वती। ४ गंगा। ५ दुर्गा।

भगवदीय—वि० [सं० भगवत्+छ—ईय] १ भगवद्भक्त २ भगवत्-संबंधी।

भगवद्भक्त—पुं० [सं० भगवत्-भक्त, ष० त०] १ भगवान का भक्त। ईश्वर-भक्त। २ विष्णु का भक्त। ३ दक्षिण भारत के वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

भगवद्भक्ति—स्त्री० [सं० भगवत्-भक्ति, ष० त०] भगवान की भक्ति।

भगवद्विग्रह—पुं० [सं० भगवत्-विग्रह, ष० त०] भगवान का विग्रह या मूर्ति।

भगवद्लीला—स्त्री० [सं० भगवत्-लीला, ष० त०] ईश्वरीय लीला।

भगवा—पुं० [हिं० भक्त] एक प्रकार का रंग जो गेरू के रंग की तरह का लाल होता है।
वि० उक्त प्रकार के रंग से रँगा हुआ। जैसे—भगवे कपड़े, भगवा झंडा।

भगवान (वत्)—वि० [सं० दे० भगवत्] १ ऐश्वर्यशाली। २ पूज्य। मान्य। ३. कुछ क्षेत्रों में पारिभाषिक रूप में, ऐश्वर्य, बल, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न।
पुं० १ ईश्वर। परमेश्वर। २ शिव। ३ विष्णु। ४. गौतम बुद्ध। ५ जिनदेव। ६ कार्तिकेय। ७ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति। जैसे—भगवान वेदव्यास।

भगहर—स्त्री०=भगदड़।

भगहा (हन्)—पुं० [सं० भग√हन् (मारना)+क्विप्] १ शिव। २. विष्णु।

भगांकुर—पुं० [सं० भग-अंकुर, ष० त०] अर्श रोग। बवासीर।

भगाई—स्त्री० [हिं० भागना] १ भागने की क्रिया या भाव। २. भगदड़।

भगाड़—पुं० [?] पोली जमीन के धँसने या बैठ जाने के फलस्वरूप होनेवाला गड्ढा।

भगाना—स०[स० व्रज] १. किसी को भागने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई भागे। २. बच्चे, स्त्री आदि को उसके अभिभावकों से चोरी, उठाकर या फुसलाकर कही ले जाना। (ऐब्डक्शन) ३. दूर करना। हटाना।

†अ०=भागना।

भगाल—पु०[स०√भज् (सेवा करना)+कालन्, ज–ग] (मनुष्य की) खोपड़ी।

भगाली—वि०[स०भगाल+इनि] १ भगाल-सबधी। २. खोपड़ी धारण करनेवाला।

पु० शिव।

भगास्त्र—पु०[स० भग-अस्त्र, मध्य० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

भगिना†—पु०=भागिनेय (भानजा)।

भगिनिका—स्त्री०[स० भगिनी+कन्,+टाप्, ह्रस्व] छोटी बहन।

भगिनी—स्त्री० [स० भग+इनि+ङीप्] १ बहन। २. भाग्यवती स्त्री।

भगिनी-पति—पु०[स० ष० त०] बहनोई।

भगिनीय—पु०[स० भगिनी+छ–ईय] बहन का लड़का। भगिनेय। भाजा।

भगीरथ—पु० [स० भ-गीर्, द्व० स०, भगीर्-रथ, ब० स०] अयोध्या के एक सूर्यवशी राजा जो राजा सगर के पर-पोते थे तथा जिन्होंने तपस्या करके स्वर्ग से गगा नदी की अवतारना कराई थी।

वि० [स०] भगीरथ की तपस्या के समान बहुत बडा, भारी या विशाल। जैसे—भगीरथ प्रयत्न।

भगीरथ-सुता—स्त्री०[स० ष० त०] गंगा।

भगेड—वि०=भगेलू।

भगेलू—वि०[हिं० भागना+एलू (प्रत्य०)] १. जो कही से छिपकर भागा हो। भागा हुआ। २. जो काम पडने पर भाग जाता हो। कायर।

भगोडा—पु०[हिं० भागना+ओडा (प्रत्य०)] १ वह जो कही से छिप या डरकर भाग गया हो। २ वह जो दण्ड भोगने के भय से कही भाग गया हो। (ऐब्सकाडर) ३ कायर या डरपोक व्यक्ति।

भगोल—पु०[स० ष० त०] नक्षत्र-चक्र। खगोल।

भगौती—स्त्री०=भगवती।

भगौहाँ—वि० [हिं० भागना+औहाँ (प्रत्य०)] १. जिसमे भागने की प्रवृत्ति हो। २ कायर। डरपोक।

†वि०=भगवा।

भग्गा—वि०[हिं० भागना] (पशु या पक्षी) जो प्रतिद्वंद्वी से डरकर या पराजित होकर भाग गया हो।

भग्गी—स्त्री०=भगदड़।

भग्गुल—पु०=भगोडा।

भग्गू—वि०[हिं० भागना+ऊ (प्रत्य०)] १ जो विपत्ति देखकर भागता हो। भागनेवाला। २. कायर। डरपोक।

भग्न—वि०[स०√भज्(टूटना)+क्त] १ टूटा हुआ। खडित। २ हारा हुआ। पराजित।

पु० दे० 'विभंग'।

भग्न-दूत—पु०[स० कर्म०स०] प्राचीन भारत मे, रणक्षेत्र से हारकर भागी हुई वह सेना जो राजा के पराजय का समाचार देने आती थी।

भग्न-पाद—पुं० [सं० ब० स०] फलित ज्योतिष मे पुनर्वसु, उत्तराषाढ़, कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद और विशाखा ये छ नक्षत्र जिनमें से किसी एक में मनुष्य के मरने से त्रिपाद दोष लगता है और धर्मशास्त्र के अनुसार जिसकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

भग्न-मना (नस्)—वि० [स० ब० स०] जिसका मन टूट गया हो। हतोत्साह।

भग्न-मान—वि० [स० ब० स०] जिसका मान नष्ट हो चुका हो। तिरस्कृत।

भग्नाश—पुं० [स० भग्न-अश, कर्म०स०] मूल द्रव्य का कोई अलग किया हुआ भाग या अंश।

भग्नात्मा (त्मन्)—पु०[सं० भग्न-आत्मन्, ब० स०] चन्द्रमा।

भग्नावशेष—पु०[स० भग्न-अवशेष, ष० त०] १. किसी टूटी-फूटी चीज के बचे हुए टुकड़े। २ किसी टूटे-फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अश। खंडहर।

भचक—स्त्री० [हिं० भचकना] भचकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भचकना—अ० [हिं० भौंचक] आश्चर्य मे निमग्न होकर रह जाना।

अ०[अनु० भच] चलने के समय पैर का कुछ रुककर उठना या टेढा पडना कि देखने मे लगड़ाता हुआ सा जान पडे।

भ-चक्र—पुं० [स० ष० त०] १. राशियों या ग्रहो के चलने का मार्ग। कक्षा। २ नक्षत्रो का वर्ग या समूह।

भच्छ†—पु०=भक्ष्य।

भच्छक†—वि०=भक्षक।

भच्छन*—पु०=भक्षण।

भच्छना—स०[स० भक्षण] भक्षण करना। खाना।

भजन—पु० [सं०√भज् (सेवा करना)+ल्युट्–अन] १ खण्ड, टुकडे या भाग करना। २ श्रद्धापूर्वक ईश्वर और उनकी लीलाओं का गुण-गान और स्मरण करना। ३ वह गेय पद जिनमे ईश्वर और उनकी लीलाओं का गुण-कथन हो।

भजना—स०[स० भजन] १. किसी की सेवा-शुश्रूषा करना। २ किसी का आश्रय लेना या आश्रित होना। ३ कहीं जाकर पहुँचना। ४ ईश्वर और उसकी लीलाओं का श्रद्धापूर्वक कथन और स्मरण करना। ५ बार बार किसी का नाम लेते हुए जप करना। जैसे—राम भजो, सुख पाओगे। ६ भोगना। ७ धारण या वहन करना। उदा०—भजत भार भयभीत है घुन चन्दन बन माल।—विहारी।

अ० [स० व्रजन, पा० वजन] १ भागना। उदा०—नर की भज्यौ नाम सुनि मेरो, पीठ दई जमराज।—सूर। २ प्राप्त होना। पहुँचना।

भजनानंद—पु०[स० भजन-आनद, मध्य० स०] वह आनन्द जो परमेश्वर या देवता के नाम का भजन करने पर मिलता हो।

भजनानंदी (दिन्)—पु० [स० भजनानद+दीर्घ] १ वह जिसे ईश्वर भजन मे ही आनद मिलता हो। २ वह जिसकी जीविका भजन आदि करने से चलती हो।

भजनी—पुं० [हिं० भजन] १ वह जो प्राय. ईश्वर-भजन करता हो। २ दे० 'भजनीक'।

भजनीक—पु० [हिं० भजनी] १ भजन गाने और उनके द्वारा लोगो का मनोरजन करनेवाला। २. जिसका पेशा भजन गाकर लोगो को उपदेश देना तथा मनोविनोद करना हो।

भजनीय—वि० [सं०√भज्+अनीयर] १ जिसे भजना उचित हो अथवा जिसे भजना चाहिए। २. जिसका आश्रय लिया जा सकता हो या लिया जाना उचित हो।

भजनोपदेशक—पु० [स० भजन-उपदेशक, मुसुपा स०] भजन के द्वारा या माध्यम से उपदेश देनेवाला व्यक्ति।

भजाना—स० [हिं० भजना का प्रे० रूप] भजने या भजन करने मे प्रवृत्त करना।

अ०=भजना (मागना)।

स० १. भगाना। २. परे करना या हटाना। उदा०—कीर पिंजरै गहत अगुरी ललन लेत भजाई।—सूर।

भजार†—वि० [हिं० भजना ?] मित्र। दोस्त।

भजियाउर—पु० [हिं० भाजी+चावर (चावल)] १. चावल, दही, घी आदि एक साथ पकाकर बनाया हुआ नमकीन खाद्य-पदार्थ। २ दही, साग-भाजी आदि मिलाकर पकाये जानेवाले चावल।

भट—पु० [स० √भट् (बोलना)+अच्] १ युद्ध करने या लड़नेवाला योद्धा। २ पहलवान। मल्ल। ३. सिपाही। सैनिक। ४. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति। ५ दास।

†पु० १. भटनास। २ =भट्ट।

भटई—स्त्री० [हिं० भाट] १. भाट होने की अवस्था या भाव। २ भाट का काम या पेशा। भाटो की-सी खुशामद या चापलूसी अथवा झूठी तारीफ।

भटक—स्त्री० [हिं० भटकना] भटकने की क्रिया, दशा या भाव।

भट-कटैया—स्त्री० [सं० कटकारी, हिं० कटेरी या कटाई] एक प्रकार का कँटीला छोटा क्षुप जो बहुधा औषध के काम मे आता है।

भटकन—स्त्री० [हिं० भटकना] भटकने की क्रिया या भाव। भटक।

भटकना—अ० [स० भ्रम] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते-फिरते रहना। २ ठीक रास्ता भूल जाने पर इधर-उधर घूम-फिरकर उसे ढूँढते फिरना। ३ धोखे या भ्रम मे पडकर निश्चित तत्त्व तक न पहुँचना। ४. मन या विचार का शान्त न रहकर इधर-उधर जाते फिरना।

भटका—पु० [हिं० भटकना] १ व्यर्थ घूमने की क्रिया। २. चक्कर।

भटकाई†—स्त्री०=भट-कटैया।

भटकान—स्त्री०=भटकन।

भटकाना—स० [हिं० भटकना का स० रूप] किसी को भटकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम या बात करना जिससे कोई भटके।

भटकैया—पु० [हिं० भटकना+ऐया (प्रत्य०)] १ भटकनेवाला। २ भटकानेवाला।

†स्त्री०=भट-कटैया।

भटकौहाँ—वि० [हिं० भटकना+औहाँ (प्रत्य०)] १. भटकता रहनेवाला। २ भटकानेवाला। भुलावे मे डालनेवाला।

भट-तीतर—पुं० [हिं० भट=बड़ा+तीतर] प्राय एक फुट लंबा एक प्रकार का पक्षी जो जाड़े मे उत्तर-पश्चिमी भारत मे आता है। प्राय इसके मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है।

भटना†—अ० [?] गड्ढे आदि का पाटा या भरा जाना। पटना। उदा०—वहु कुडशोनित सो भटे, पितु तर्पणादि क्रिया सची।—केशव।

भटनास—स्त्री० [देश०] १ एक लता और उसकी फलियाँ। २ उक्त फलियो के बीज जो दाल की तरह राँध कर खाये जाते हैं। भटवाँस।

भटनेर—पु० [स० भट-नगर] सिंधु नद पर स्थित एक प्राचीन राज्य।

भटनेरा—पु० [स० भट+नगरा] १ भटनेर नगर का निवासी। २ वैश्यो की एक जाति।

वि० भटनेर नगर का या उससे सबध रखनेवाला।

भटभटी—स्त्री० [अनु०] ऐसी अवस्था जिसमे आँखो मे चकाचौंध होने के कारण कुछ दिखाई न पडे। उदा०—बात अटपटी बढी, चाह चटपटी रहे, भटभटी लागै जो पै बीच बहनी बसै।—घनानद।

भटभेरा*—पु० [हिं० भट+भिड़ना] १. दो वीरो का सामना। मुकाबला। भिडत। २ टक्कर, ठोकर या धक्का। ३. अनायास हो जानेवाली भेंट या सामना। उदा०—गली अँधेरी साँकरी भौ भटभेरा आनि। —बिहारी

भटवाँस†—पु०=भटनास।

भटा†—पु०=भटा (बैंगन)।

भटियार—पु० [?] सगीत मे एक प्रकार का राग।

भटियारा—पु०=भठियारा।

भटियारी—स्त्री० [?] सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी जिसमे ऋषभ कोमल लगता है।

भटियाल†—पु०=भठियाल।

भटुआ—पु० [?] वह सूखी हल्की भूमि जिसमे केवल जाडे की फसल होती है।

भटू—स्त्री० [स० भट का स्थानिक स्त्री०] १. स्त्रियो के सबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द। २ सखी। सहेली।

भटेरा—पु० [देश०] वैश्यो की एक जाति।

भटेस—पु० [?] एक प्रकार का पौधा।

भटै—स्त्री०=भटई।

भटोट—पु० [देश०] मध्य-युग मे यात्रियो के गले मे फाँसी लगानेवाला ठग। (ठगो की परिभाषा)

भटैया—स्त्री०=भटकटैया।

भटोला—वि० [हिं० भाट+ओला (प्रत्य०)] १. भाट का। भाट-सबधी। २. भाटो के लिए उपयुक्त।

पुं० वह भूमि जो भाटो को निर्वाह के लिए पुरस्कार रूप मे मिली हो।

भट्ट—पु० [स०√भट्+तल्] १ ब्राह्मणो की एक उपाधि जिसके धारण करनेवाले दक्षिण भारत, मालव आदि कई प्रांतो मे पाये जाते हैं। २. विशिष्ट रूप से महाराष्ट्र ब्राह्मणो की उपाधि। ३ दे० 'भट'। ४ दे० 'भाट'।

भट्टाचार्य—पु० [सं० भट्ट-आचार्य, द्व०स०,+अच्] १ दर्शनशास्त्र का पडित २. सम्मानित अध्यापक (पदवी रूप मे प्रयुक्त)। ३ बंगाली ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

भट्टार—पु०[सं० भट्ट√ऋ+अण्, वृद्धि] पूज्य। माननीय। (पदवी रूप में प्रयुक्त)

भट्टारक—वि० [सं० भट्टार+कन्] [स्त्री० भट्टारिका] पूज्य। माननीय। पु० १ राजा। २ मुनि। ३ पंडित। ४. सूर्य। ५. देवता।

भट्टिनी—स्त्री०[सं० भट्ट+इनि, ङीप्] नाटक की भाषा में राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो।
स्त्री० हिं० भट्ट का स्त्री०।

भट्टी—स्त्री०=भट्ठी।

भट्ठा—पु०[सं० भ्रष्ट; प्रा० भट्ठ] [स्त्री० अल्पा० भट्ठी] वह स्थान जहाँ कूड़ा, कोयला आदि जलाकर ईंटें पकाई जाती है। आँवाँ।

भट्ठी—स्त्री०[सं० भ्रष्ट, प्रा० भट्ठ] १ वह घिरा हुआ आधान या स्थान जिसमें धातु आदि गलाने अथवा कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजें सेंकने के लिए आग जलाई जाती अथवा ताप उत्पन्न किया जाता है।
मुहा०—भट्ठी दहकना=(क) किसी का कारोबार जोरों पर होना। बहुत आय होना। (व्यंग्य) (ख) किसी काम या बात की बहुत अधिकता या जोर होना।
२. वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती हो।

भठा—पु०=भट्ठा।

भठियाना—अ०[हिं० भाठा+इयाना (प्रत्य०)] समुद्र में भाटा आना। समुद्र के पानी का नीचे उतरना।

भठियार—पु०=भटियार (राग)।

भठियारखाना—पु०[हिं० भठियारा+फा० खाना] १ भठियारों के रहने का स्थान। २ वह जगह जहाँ बहुत शोरगुल होता हो। ३. कमीने तथा असभ्य लोगों की बैठक।

भटियारपन—पु०[हिं० भठियारा+पन(प्रत्य०)] १ भठियारे का काम। २ भठियारों की तरह की लड़ाई या अश्लील आचरण, या व्यवहार।

भठियारा—पु०[हिं० भट्ठा+इयार (प्रत्य०)] [स्त्री० भठियारन, भठियारिन भठियारी,] सराय का मालिक या प्रबंधक जो यात्रियों के टिकने तथा खाने-पीने आदि की व्यवस्था करता था।

भठियारी†—स्त्री० १ भठियारा का स्त्री०। २. भठियारपन।

भठियाल—पु०[हिं० भाटा] समुद्र के पानी का नीचे उतरना। भाटा।

भठिहारा†—पु०[स्त्री० भठिहारिन] =भठियारा।

भठुली=स्त्री०[हिं० भट्ठी+उली (प्रत्य०)] ठठेरों की मिट्टी की बनी हुई वह छोटी भट्ठी जिसमें गढ़ने से पहले चीजें तपाते या लाल करते हैं।

भडंग—पु०[अनु०][भाव०भडंगी] १ दिखावे की झूठी बात। आडंबर। उदा०—बरि गयो ज्ञान गुन गौरव गुमान गोड़ गोपिनि को आवतन भावत भडंग है।—रत्नाकर। २ भाँडपन।

भडंगी—स्त्री०=भडंक।
वि० दिखावा करनेवाला। आडंबर रचनेवाला।

भडवा—पु०[सं० विडंबा] १ दिखावटी ठाठ-बाट। आडंबर। २ व्यर्थ का बहुत बड़ा जंजाल या बखेड़ा।

भड़—पु०[अनु०] 'भड' शब्द' जो प्राय. किसी चीज के गिरने से होता है।
†पु०=भट (योद्धा)।

भडक—स्त्री०[अनु०] भड़कने की अवस्था या भाव।
स्त्री०[?] तीव्र चमक-दमक।

भडकदार—वि०[हिं० भड़क+फा० दार] भड़कीला।

भडकना—अ० [अनु० भड़क+ना (प्रत्य०)] १. कोयले, गोहरे आदि का आग से स्पर्श होने पर सहसा जोरों से जल उठना। २. किसी प्रकार के मनोभाव का सहसा तीव्र या प्रबल होना। जैसे—क्रोध भड़कना। ३ पशुओं का भयभीत होकर या सहमकर अपनी सामान्य गति या स्थान छोड़कर उछलने-कूदने या इधर-उधर भागने लगना। ४. व्यक्ति का प्राय. दूसरों की बातों में आकर आवेश या क्रोध से युक्त होना और कुछ का कुछ करने लगना। ५ किसी के पास या समीप जाने में हिचकना और सशंकित रहकर उससे दूर या परे रहना। जैसे—मुझे देखकर वह भड़कता है।

भड़काना—स०[हिं० भड़कना का स० रूप] १ अग्नि प्रज्वलित करना। ज्वाला बढ़ाना। २ उत्तेजित या क्रुद्ध करना। ३ तीव्र या प्रबल करना। ४. ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ भड़के। ५ किसी को इस प्रकार भ्रम में डालना या भयभीत करना कि वह कोई काम करने के लिए तैयार न हो। जैसे—किसी का ग्राहक भड़काना।
संयो० क्रि०—देना।

भडकीला—वि०[हिं० भड़क+ईला (प्रत्य०)] [भाव० भड़कीलापन] जिसमें खूब चमक-दमक हो। भड़कदार।
वि०[हिं० भड़कना] जल्दी भड़कनेवाला।

भड़कीलापन—पु०[हिं० भड़कीला+पन (प्रत्य०)] १ भड़कीले होने की अवस्था या भाव। २ चमक-दमक।

भडकैल—वि० [हिं० भड़कना] जल्दी चौंकने, बिदकने या भड़कनेवाला।

भड़भड़—स्त्री०[अनु०] १ भड़भड़ शब्द जो प्राय एक चीज पर दूसरी चीज जोर जोर से पटकने अथवा बड़े बड़े ढोल आदि बजाने से उत्पन्न होता है। आघातों का शब्द। २. व्यर्थ की बातें और हो-हल्ला। ३ दे० 'भीड़-भाड़'।

भडभड़ाना—स०[अनु०] भड-भड शब्द उत्पन्न करना।
अ० किसी चीज में से भड-भड शब्द उत्पन्न होना।

भड़भडिया—वि०[हिं० भड भड+इया (प्रत्य०)] १ भड भड अर्थात् व्यर्थ बहुत अधिक बातें करनेवाला। २. मन में छिपाकर बात न रख सकनेवाला। भेद की बातें दूसरों पर प्रकट कर देनेवाला। ३ जो डींग तो बहुत हाँकता हो, पर काम कुछ भी न करता हो।

भड़भाँड़—पु०[सं० भाडीर] एक कँटीला पौधा जिसके बीजों का तेल जहरीला होता है। सत्यानासी। भोय।

भड़भूँजा—पु०[हिं० भाड+भूँजना] हिन्दुओं में एक जाति जो भाड में अन्न भूनने का काम करती है। भुजवा। भुरजी।

भड़री—स्त्री०[देश०] १ अनाज की मँड़ाई हो जाने पर भी पौधों में बचा हुआ अन्न। गँठा।

भड़वा—पु०=भड़ुआ।

भडवाई—स्त्री०=भड़ुआई।

भडसाईं—स्त्री०[हिं० भाड] भड़भूँजे का भाड़ या भट्ठी जिसमें वह अनाज के दाने भूनता है।

मुहा०—भड़साईं दहकना या धिकना=किसी काम या बात की बहुत उन्नति या प्रबलता होना। (व्यंग्य)
भड़सार—स्त्री०[हिं० माँड़+शाला] वह भँडरिया जिसमे पकाया हुआ भोजन रखा जाता है।
भड़हर—स्त्री०=भँडेहर।
भड़ार—पु०=भडार।
भड़ाल—पु०[स० भट] योद्धा। वीर।
भड़ास—स्त्री०[हिं० भड से अनु०] १ वह गरमी जो तपी हुई जमीन पर पानी गिरने या छिडकने से उत्पन्न होती है। २ आवेग मे आकर तथा कडे शब्दो मे किसी पर प्रकट किया जानेवाला मानसिक असतोष। क्रि० प्र०—निकालना।
भड़िक—अव्य० [अनु०] १. अचानक। सहसा। २ चट-पट। तुरन्त। ३. बिना सोचे-समझे और एकदम से।
भड़िहा—पु० [स० भाडहर] [भाव० भडिहाई] चोर। तस्कर। (बुन्देल०)
भड़िहाई—क्रि० वि० [हिं० भडिहा] चोरो की तरह। लुक-छिप या दबकर।
स्त्री०=चोरी।
भड़ी—स्त्री० [हिं० भडकाना] भडकाने की क्रिया या भाव। विशे-षत किसी को मूर्ख बनाने अथवा किसी का अहित चाहने के उद्देश्य से उसे कोई गलत काम करने के लिए दिया जानेवाला बढावा।
क्रि० प्र०—देना।—मे आना।
भड़ुआ—पु० [हिं० भाँड] १ वेश्याओ के साथ तबला या सारगी बजाने-वाला। सपरदाई। २ वेश्याओ का दलाल।
भडुआई—=स्त्री०=भडुआपन।
भडुआपन—पु० [हिं० भडुआ+पन (प्रत्य०)]भडुआ होने की अवस्था, काम या भाव।
भड़ेरिया—पु०=भड्डर।
भड़ैत—पु० [हिं० भाडा] [भाव० भडैती] १ वह जिसने किसी की दूकान या मकान भाड़े या किराये पर लिया हो। किरायेदार। २ भाडे पर दूसरो का काम करनेवाला व्यक्ति।
भड़ोलना—स० [देश०] रहस्य प्रकट कर देना। गुप्त बात खोल देना। भेद बताना। जैसे—तेरी सब बातें भडोलकर रख दूँगी। (स्त्रियाँ)
भड्डर—पुं० [स० भद्र] ब्राह्मणो मे निम्न श्रेणी की एक जाति। इस जाति के लोग फलित ज्योतिष या सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगो का भविष्य बताकर अपनी जीविका चलाते है।
भण—पु० [?] ताड का वृक्ष। (डिं०)
भणन—पु० [स०√भण् (बोलना)+ल्युट्—अन] १. कथन। २. वार्तालाप।
भणना*—अ० [स० भणन] कहना।
भणित—भू० कृ० [स०√भण् (करना)+क्त] जो कहा गया हो। कहा हुआ।
स्त्री० कही हुई बात। उक्ति।
भणिता (तृ)—पु० [स०√भण् (कहना)+तृच्] बोलनेवाला। वक्ता।
भणिता—स्त्री० [स० भणित] कविता मे होनेवाला कवि का उप-नाम। छाप।
भणिति—स्त्री० [स०√भण् (कहना)+(क्तिन्)] १. किसी की कही हुई बात। २. उक्ति। कथन। ३ कहावत। लोकोक्ति। ४. वाणी। उदा०—ललित भणिति का किया प्रतिबिंब चपल अनुकरण।—पन्त।
भतरौंड़—पु० [हिं० भात+रौंड?] १ मथुरा और वृन्दावन के बीच का एक स्थान जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि यहाँ श्रीकृष्ण ने चौबा-इनो से भात मँगाकर खाया था। २. आस-पास की भूमि से कुछ ऊँची भूमि या स्थान। ३ मदिर का शिखर। ४. ऊँची जगह। टीला।
भतवान—पु० [हिं० भात+वान] पूरब में, वर और उसके साथ कुछ और कुँआरे लडको को विवाह मे पहले कन्यापक्ष द्वारा कच्ची रसोई खिलाने की एक रस्म।
भतहाँ—पु० [हिं० भात] १ वह जो भात खाता हो, अथवा भात खाना अधिक पसन्द करता हो। २. वह व्यक्ति जिसके हाथ की कच्ची रसोई खाई जा सके। ३ वह जो रूखे-सूखे भोजन पर ही सन्तुष्ट रह-कर नौकरी करता हो।
भतार—पु० [स० भर्तार] विवाहिता स्त्री का पति। खाविंद। खसम।
भतिं—स्त्री०=भाँति।
भतीजा—पु० [स० भ्रातृज] [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लडका।
भतुआ—पु० [देश०] सफेद कुम्हडा। पेठा।
भतुला—पु० [देश०] आग पर पकाया या भूना हुआ आटे का पेडा। बाटी
भत्ता—पु० [स० भरण] वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके वेतन के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट अवसरो (जैसे—महँगी, यात्रा आदि) पर अतिरिक्त व्यय के विचार से दिया जाता है। (एलावेन्स)
भदंत—वि० [स०√भन्द् (कल्याण)+झच्—अन्त, न—लोप] १ पूजित। सम्मानित। २. सन्यस्त।
पु० बौद्ध भिक्षु।
भद—स्त्री० [अनु०] किसी चीज के गिरने का शब्द। जैसे—भद से गिर पड़ना।
भदई—वि० [हिं० भादो] १ भादो सबधी। भादो का। २ भादो मे होनेवाला।
स्त्री० भादो मे तैयार होनेवाली फसल।
भदभद—वि० [अनु०] १ बहुत मोटा। २ भद्दा।
भदरगा—वि० [हिं० बदरग] जिसका रग फीका पड गया हो। उदा०—न तो कभी उसका रक्त घुलेगा, न कभी वह भदरगा होगा।—वृन्दा-वनलाल वर्मा।
भदवरिया—वि० [हिं० भदावर+इया (प्रत्य०)] भदावर प्रात का।
भदाक—पु० [स० √भन्द्+आकन्, न—लोप] १. सौभाग्य। २ अभ्युदय।
भदावर—पु० [सं० भद्रवर] आधुनिक ग्वालियर प्रदेश का पुराना नाम।
भदेस—पु० [हिं० भद्दा+देश?] ऐसा देश जो आहार-विहार, जल-वायु आदि के विचार से बहुत खराब हो। खराब या बुरा देश।

वि० कुरूप। भद्दा।

भदेसल (सिल)—वि० [हिं० भदेस] १. भदेस-संबंधी। २ भदेस मे रहने या होनेवाला।

भदेसिया—वि० [हिं० भदेस] १ भदेस मे रहने या होनेवाला। २ गँवार। ३ भद्दा। भोंड़ा।

भदैल—पु० [हिं० भादो ?] मेढक।

भदैला—वि० [हिं० भादो] भादो मास मे उत्पन्न होनेवाला। भादो का।

भदौह (हा)—वि० [हिं०भादो] [स्त्री० भदौही] भादो मे होनेवाला। जैसे—भदौहा अमरूद।

भदौरिया—वि० [हिं० भदावर] भदावर प्रात का।

पु० १ भदावर प्रात का निवासी। २ क्षत्रियों की एक जाति।

भद्द—स्त्री० [हिं० भद्दा] १. वह स्थिति जिसमे किसी को अपमानित और लज्जित होना पड़े। अपमान। २ किसी को तुच्छ ठहरानेवाला काम या बात।

भद्दव—पु०=भादो (महीना)।

भद्दा—वि० [अनु० भद्द] [स्त्री० भद्दी] १ (पदार्थ) जिसकी बनावट मे अग-प्रत्यग की सापेक्षिक छोटाई-बड़ाई का ध्यान न रखा गया हो, और इसी लिए जो देखने मे कुरूप या बेढगा हो। २. (बात) जो शिष्टों और सभ्यो के लिए उपयुक्त न हो। अश्लील। फूहड़। जैसे—भद्दी गालियाँ। ३ जिसमे कला, सुरुचि आदि का अभाव हो। (आक्वर्ड)

भद्दापन—पु० [हिं० भद्दा+पन (प्रत्य०)] भद्दे होने का भाव।

भद्रंकर—वि० [स० भद्र√कृ (करना)+खच्, मुम्] मंगलकारक। शुभ।

भद्रंकरण—पु० [स० भद्र√कृ+ल्युन्—अन, मुम्] मगल-साधन।

भद्र—वि० [स०√भन्द्+रन्, न—लोप] १ शिष्ट, सभ्य और सुशिक्षित। २ कल्याण या मगल करनेवाला। शुभ। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४ भला। साधु।

पु० १ क्षेम-कुशल। २ कल्याण। मगल। ३ चन्दन। ४ शिव। ५. खजन पक्षी। ६ बैल। ७ सुमेरु पर्वत। ८ कदब। ९. सोना। स्वर्ण। १० मोथा। ११. एक प्राचीन देश। १२. विष्णु का एक द्वारपाल। १३. उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। १४ रामचन्द्र की सभा का वह सभासद जिसके मुँह से सीता की निंदा सुनकर उन्होने सीता को बनवास दिया था। १५ बलदेव का एक सहोदर भाई। १६. पुराणानुसार स्वायभुव मन्वतर के विष्णु से उत्पन्न एक प्रकार के देवता जो तुषित भी कहलाते है। १७ हाथियो की एक जाति जो पहले विन्ध्याचल मे होती थी। १८. सगीत मे स्वर-साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार है—सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसानि, सारेसा। सा नि सा, नि ध नि, ध प ध, प म प, म ग म, ग रे ग, रे सा रे, सा नि सा।

पु० [स० भद्रकरण] सिर, दाढी, मूँछो आदि के वालो का मुडन। उदा०—सो जोगी सिर भद्र कराइ।—गोरखनाथ।

भद्रकंट—पु० [स० ब० स०] गोक्षुर। गोखरू।

भद्रक—पु० [स० भद्र+कन्] १. एक प्राचीन देश का नाम। २ चना, मूँग आदि अनाज। ३. नागरमोथा। ४. देवदार। ५. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ऽ।। ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।।। ऽ (भ र न र न र न ग) और ८, ६, ६, ६, पर यति होती है। ६. कोई अच्छी बात। उत्तम गुण। उदा०—क्या कहूँ मिर्च है न अद्रक है, इस मछन्दर मे कुछ भी भद्रक है।—मीर। ७. दृढ़ता। मजबूती। जैसे—तुम्हारी बात मे कुछ भी भद्रक नही है। उदा०—मुतलक तेरी बात मे नही है भद्रक।—रगीन।

भद्रकाय—पु० [स० ब० स०] हरिवश के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्रकार—वि० [स० भद्र√कृ (करना)+अण्, उप० स०] मंगल या कल्याण करनेवाला।

पु० महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

भद्रकारक—वि० [स० ष० त०] मगलकारक।

पु० एक प्राचीन देश। (महाभारत)

भद्रकाली—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ दुर्गा देवी की एक १६ भुजाओं-वाली मूर्ति। २. कात्यायिनी ३ कार्तिकेय की एक मातृका। ४. गध-प्रसारिणी लता। ५. नागरमोथा।

भद्रकाशी—स्त्री० [स० भद्र√काश् (प्रकाशित होना)+अच्,+ङीष्] भद्र-मुस्ता। नागरमोथा।

भद्र-काष्ठ—पु० [स० ब० स०] देवदारु वृक्ष।

भद्र-कुंभ—पु० [स० कर्म० स०]=मगल-घट।

भद्र-गणित—पु० [स० कर्म० स०] बीज गणित की वह शाखा जिसमे चक्रविन्यास की सहायता से गणना की जाती है।

भद्र-घट—पु० [स० कर्म० स०] मगल-घट।

भद्रचारु—पु० [स०] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भद्रज—पु० [स० भद्र√जन् (उत्पन्न करना)+ड] इन्द्रजौ।

भद्र-तरुणी—स्त्री० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का गुलाब।

भद्रता—स्त्री० [स० भद्र+तल्,+टाप्] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

भद्र-दंत—पु० [सं० ब० स०] हाथी।

भद्र-दारु—पु० [स० कर्म० स०] देवदारु।

भद्रदेह—पु० [स०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्र-द्वीप—पु० [स० कर्म० स०] पुराणानुसार कुरु वर्ष के अन्तर्गत एक द्वीप का नाम।

भद्र-निधि—पु० [स० ब० स०] पुराणानुसार एक प्रकार का महादान।

भद्र-पदा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्]=भाद्रपद।

भद्र-पर्णा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] गधप्रसारिणी लता।

भद्र-पीठ—पु० [स० कर्म० स०] १ अच्छा और बढिया आसन। २. वह सिंहासन जिस पर राजाओ या देवताओ का अभिषेक होता है।

भद्र-बला—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ गन्ध प्रसारिणी लता। २. माधवी लता।

भद्र-बाहु—पु० [स० ब० स०] रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव के एक पुत्र।

भद्र-मद—पु० [स० कर्म० स०] हाथियो की एक जाति।

भद्रमंद्र—पु०=भद्रमद।

भद्रमनसी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीप्] ऐरावत की माता का नाम।

भद्र-मुख—वि० [सं० ब० स०] १ जो देखने मे भला आदमी जान पडे। भला-मानस। २. सुन्दर।
पु० पुराणानुसार एक नाग का नाम।

भद्रमुखी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्]=चंद्रमुखी। (सुन्दरी स्त्रियों के लिए सबोधन)।

भद्रमुस्तक—पुं० [स० कर्म० स०] नागरमोथा।

भद्रमुस्ता—पु० [स० कर्म० स०] नागरमोथा।

भद्र-यव—पु० [म० कर्म० स०] इन्द्रजौ।

भद्र-रेणु—पु० [स० ब० स०] ऐरावत।

भद्रवती—स्त्री० [स० भद्र+मतुप्, वत्व,+ङीप्] १. कटहल। २. नग्नजिति के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।

भद्र-वल्लिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] अनतमूल।

भद्रवल्ली—स्त्री० [स० कर्म० स०] माधवी लता।

भद्रवान (वत्)—वि० [म० भद्र+मतुप्, वत्व] मगलमय।
पु० देवदारु वृक्ष।

भद्र-विराट्—पु० [मं० कर्म० स०] एक वर्णार्द्धसम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १० और दूसरे तथा चौथे चरण मे ११ अक्षर होते हैं।

भद्र-शाख—पु० [सं० ब० स०] कार्तिकेय।

भद्रश्रय—पु० [स० भद्र√श्रि (शोभा)+अच्] चदन।

भद्र-श्रवा (वस्)—पु० [स० ब० स०] पुराणानुसार धर्म के एक पुत्र का नाम।

भद्र-श्री—पु० [स० ब० स०] चदन का वृक्ष।

भद्रसेन—पु० [सं० ब० स०] १ देवकी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव का एक पुत्र। २. भागवत के अनुसार कुंतिराज के पुत्र का नाम। ३ बौद्धो के अनुसार मारपापीय आदि कुमति के दलपति का नाम।

भद्रांग—पु० [स० भद्र-अग, ब० स०] बलराम।

भद्रा—स्त्री० [स० भद्र+टाप्] १ कल्याणकारिणी शक्ति। २ कैकेय-राज की कन्या जो श्रीकृष्ण को ब्याही गई थी। ३. आकाश-गंगा। ४ गौ। ५ दुर्गा। ६ पृथ्वी। ७ सुभद्रा का एक नाम। ८ रास्ना। ९ गन्ध-प्रसारिणी लता। १०. जीवती। ११. शमी। १२ वच। वचा। १३ दती। १४. हलदी। १५ दूब। दूर्वा। १६ चसुर। १७. कटहल। १८ वरियारी। १९ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या। २० गौतम बुद्ध की एक शक्ति। २१ कामरूप देश की एक नदी। २२ पिंगल मे उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। २३. पुराणानुसार भद्राश्ववर्ष की एक नदी जो गगा की शाखा कही गई है। २४ ज्योतिष मे द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियो की सज्ञा। २५ फलित ज्योतिष मे, एक अशुभ योग जो कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी के शेषार्द्ध मे तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध मे रहता है। विशेष—कहते हैं कि जब यह योग कर्क, सिंह, कुंभ या मीन राशि मे होता है, तब पृथ्वी पर, जब मेष, वृष मिथुन या वृश्चिक राशि मे होता है, तब पाताल मे, और जब कन्या, धन, तुला या मकर राशि मे होता है तब यह योग स्वर्ग मे होता है। इस योग के स्वर्ग मे रहने पर कार्य सिद्धि, पाताल मे रहने पर धन प्राप्ति और पृथ्वी पर रहने पर बहुत अनिष्ट होता है। इसे विशिष्ट भद्रा भी कहते हैं।
२६ कोई बहुत अनिष्टकारक बात या बाधा।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
स्त्री० [सं० भद्राकरण; हि० भद्र] कोई ऐसा काम या बात जिससे किसी की बहुत बडी आर्थिक हानि या अपमान आदि हो। जैसे—आज वहाँ उनकी अच्छी भद्रा हुई।
मुहा०—किसी के सिर की भद्रा उतरना=(क) किसी प्रकार की हानि विशेषत. आर्थिक हानि होना। (ख) बहुत अधिक अपमान या दुर्दशा होना।

भद्राकरण—पु० [सं० भद्र+डाच्√कृ (करना)+ल्युट्—अन] सिर मुँडाना। मुडन।

भद्राकृति—वि० [स० भद्रा-आकृति, ब० स०] सुन्दर या भव्य आकृति-वाला।

भद्रात्मज—पुं० [सं० भद्र-आत्मज, उपमि० स०] खड्ग।

भद्रानंद—पुं० [सं० भद्र-आनंद, कर्म० स० ?] संगीत मे, एक प्रकार की स्वर-साधना प्रणाली जो इस प्रकार है—आरोही—सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा।

भद्राभद्र—वि० [सं० भद्र-अभद्र, द्व० स०] भद्र और अभद्र। भला-बुरा।

भद्रावती—स्त्री० [सं० भद्र+मतुप्, वत्व, दीर्घ,+ङीप्] १. कटहल का पेड। २ एक प्राचीन नदी।

भद्राश्व—पु० [सं० भद्र-अश्व, ब० स०] जंबू द्वीप के नौ खंडो या वर्षों मे से एक खंड या वर्ष।

भद्रासन—पुं० [सं० भद्र-आसन, कर्म० स०] १. मणियो से जड़ा हुआ राजसिंहासन जिस पर राज्याभिषेक होता है। भद्रपीठ। २. योग-साधन का एक प्रकार का आसन।

भद्रिका—स्त्री० [स० भद्रा+कन्,+टाप्, इत्व] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और रगण होते हैं। २. भद्रा तिथियाँ। (दे० 'भद्रा') ३ फलित ज्योतिष के अनुसार योगिनी दशा के अन्तर्गत पाँचवी दशा।

भद्री (द्रिन्)—वि० [स० भद्र+इनि, दीर्घ, न—लोप] भाग्यवान्।

भनक—स्त्री० [सं० भणन] १ धीमा शब्द। मन्द ध्वनि। २. यों ही उडती-सी खबर जिसकी प्रामाणिकता निश्चित न हो। जैसे—मेरे कान मे यो ही इसकी भनक पड़ी थी।

भनकना*—स० [स० भणन] १. भनभन शब्द करना। २. बोलना। कहना।
अ० भनभन शब्द होना।

भनना*—स० [सं० भणन] कहना।

भनपैरा—वि० [हि० भन+पैर] [स्त्री० भनपैरी] जिसके कहीं पहुँचते ही अनेक प्रकार के दोष या हानियाँ होने लगती हो। खराब और बुरे पैर या पौरेवाला। जैसे—क्या मुझे भी आप उसी की तरह भनपैरा समझते हैं।

भनभनाना—स० [अनु०] भनभन शब्द करना। गुंजारना।

अ० भनभन शब्द होना।

भनभनाहट—स्त्री० [हिं० भनभनाना+आहट (प्रत्य०)] भनभनाने की क्रिया, भाव या शब्द। गुजार।

भनित—भू० कृ०, स्त्री०=भणित।

भपाडा—पुं० [हिं० भँपाना=दिखाना] छल। जैसे—उसके भपाडे मे मन आना।

क्रि० प्र०—मे आना।—मे पडना।

भबकना†—अ०=भभकना।

भबका†—पुं०=भभका।

भबकी†—स्त्री०=भभकी।

भबूका—वि०, पु०=भभूका।

भब्भड—पु० [हिं० भीड+भाड] १ भीड-भाड। २ झगडे-बखेडे का या व्यर्थ का काम।

भभक—स्त्री० [हिं० भक से अनु०] भभकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भभकना—अ० [हिं० भभक] १ किसी चीज का सहसा जोर से जल उठना। भडकना। २ ताप आदि के योग मे किसी चीज का जोर से उबल या फूट पडना। ३ जोर से बाहर निकलना। जैसे—पनाले मे से दुर्गन्ध भभकना।

भभका—पु० [हिं० भभकना या भाप] हडे के आकार का बद मुँहवाला वह उपकरण जिसमे से अर्क चुआया जाता है।

भभकी—स्त्री० [हिं० भभक] ऐसी आवेशपूर्ण धमकी जो दुर्बल होने पर भी अपने आप को प्रबल सिद्ध करने के लिए दी जाय। जैसे—बदर भभकी।

भभरना—अ० [हिं० भय] १. भयभीत होना। २ घबरा जाना। ३ धोखे या भ्रम मे पडना। ४. कान्तिहीन या विवर्ण होना। रग-हीन होना। ५ हरहराकर गिर पडना।

भभीरी—स्त्री० [अनु०] १ फिरकी नाम का खिलौना। (पश्चिम) २ झीगुर।

भभू —स्त्री० [हिं० भाई+बहू] छोटे भाई की स्त्री। छोटी भौजाई। (बिहार)

भभूका—पु० [हिं० भभक] आग की लपट। ज्वाला।

वि० १. खूब तपा हुआ लाल। २ आवेश, क्रोध आदि के कारण जिसका वर्ण लाल हो गया हो। ३ उज्ज्वल। स्वच्छ। उदा०—वह हँसता सा मुखडा, भभूका सा रंग।—कोई कवि। ४ चमकीला।

भभूत—स्त्री० [स० विभूति] १ शिवलिंग के समक्ष जलनेवाली आग की भस्म जिसे शैव भुजाओ, मस्तक आदि पर पोतते है।

क्रि० प्र०—मलना।—रमाना।—लगाना।

२ दे० 'विभूति'।

भभूदर—स्त्री०=भूभल।

भम्भड—पु० =भब्भड़।

भमना—अ०=भ्रमना।

भमरा†—पु०=भ्रमर।

स्त्री०=भँवर।

भयंकर—वि० [सं० भय√कृ (करना)+खच्, मुम्] [भाव० भयंकरता] १ जिसे देखकर लोग भयभीत होते हो। भयभीत करनेवाला। २. आकार-प्रकार की दृष्टि से उग्र तथा डरावना। ३ बहुत अधिक तीव्र या प्रबल। अत्यधिक भीषण। जसे—भयकर गरमी पडना।

भयंकरता—स्त्री० [सं० भयकर+तल्+टाप्] भयकर होने की अवस्था या भाव।

भय—पु० [सं०√भी (भय)+अच्] १. वह मानसिक स्थिति जो किसी अनिष्ट या संकट सूचक सभावना से उत्पन्न होती है और जिससे प्राणी चिन्तित और विकल होने लगता है।

मुहा०—(किसी से) भय खाना=डरना।

२. बालको का वह रोग जो उनके डर जाने के कारण होता है।

३. निर्ऋति के एक पुत्र का नाम। ४. अभिमति नामक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न द्रोण का एक पुत्र।

भय-कर—वि० [सं० ष० त०] [भाव० भयककारी] भय उत्पन्न करने या डरानेवाला। भयभीत करनेवाला।

भयचक—वि०=भौचक।

भयडिंडम—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का बाजा जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

भयत—पु० [?] चंद्रमा। (डिंगल)

भयद—वि० [स० भय√दा (देना)+क] [स्त्री० भयदा] भय उत्पन्न करनेवाला। भयप्रद।

भय-दर्शी (र्शिन्)—वि० [स० भय√दृश् (देखना)+णिनि] भयकर। भयानक।

भय-दान—पु० [स० ष० त०] १. किसी प्रकार के भय से दान करना। २ वह दान जो भयभीत होकर दिया गया हो।

भय-दोष—पु० [सं० मध्य० स०] ऐसा दोष जो अपनी इच्छा के विरुद्ध परन्तु जातीय प्रथा के अनुसार कोई काम करने पर माना जाता है। (जैन)

भय-नाशन—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० भयनाशिनी] भय को दूर करनेवाला।

पु० विष्णु।

भय-प्रद—वि० [स० भय+प्र√दा (देना)+क] भय उत्पन्न करनेवाला।

भय-भीत—भू० कृ० [स० ष० त०] भय से आतकित। डरा हुआ।

भय-भ्रष्ट—वि० [सं० तृ० त०] [भाव० भयभ्रष्टता] डर कर भागा हुआ।

भय-मोचन—वि० [स० ष० त०] भय दूर करने या हटानेवाला।

भय-वर्जिता—स्त्री० [स० तृ० त०] प्राचीन भारत मे, व्यवहार मे दो गाँवों के बीच की वह सीमा जिसे वादी और प्रतिवादी आपस मे मिलकर स्थिर कर लें।

भयवाद—पुं० [हिं० भाई+आद (प्रत्य०)] १ एक ही गोत्र या वश के लोग। भाई-बद। २. आपसदारी के लोग। आत्मीय जन।

भय-व्यूह—पु० [स० मध्य० स०] प्राचीन भारत मे सकट की स्थिति मे सैनिको की होनेवाली एक प्रकार की व्यूहरचना।

भय-हरण—वि० [सं० ष० त०] भय दूर करनेवाला।

भय-हारी (रिन्)—वि० [स० भय√हृ (हरण)+णिनि] भय दूर करने-वाला।

भय-हेतु—पुं० [सं० ष० त०] भय का विषय। वह जिसके कारण भय उत्पन्न होता हो।

भया—स्त्री० [स० भय+अच्+टाप्] १ एक राक्षसी जो काल की बहन तथा विद्युत्केश की माता थी। २. प्राचीन भारत मे ६२ हाथ लबी, ५६ हाथ चौडी तथा ३३ हाथ लबी एक प्रकार की नाव।

पु० [हिं० भइया] भाई के लिए सबोधन। भइया। जैसे—सँभार हे भइया तू वार आपन।

भयाकुल—वि० [स० भय-आकुल, तृ० त०] जो भय से व्याकुल या विकल हो रहा हो। भय से घबराया हुआ।

भयादोहन—पु० [स० भय+आदोहन] किसी को भय दिखलाकर या डरा-धमका कर उससे कुछ प्राप्त करने या लाभ उठाने की क्रिया या भाव। (ब्लैकमेल)

भयान†—वि०=भयानक।

भयानक—वि० [स०√भी (डरना)+आनक] जिसकी असाधारण शारीरिक विकृति या उग्रतापूर्ण आचरण से भय लगता हो।

पु० १. बाघ। २. राहु। ३. साहित्य मे नौ रसो मे एक रस जिसका स्थायी भाव भय है। हिंसक पशु, अपराधी व्यक्ति, बीभत्स आचरण आदि इसके आलबन हैं। आलम्बन की चेष्टाएँ और अपनी असहाय अवस्था इसके उद्दीपन हैं। अश्रु, कंप आदि अनुभाव है और त्रास, मोह, चिंता, आवेग आदि व्यभिचारी हैं।

भयाना—अ० [स० भय+हिं० आना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

स० भयभीत करना। डराना।

भयापह—वि० [स० भय+अप√हन् (मारना)+ड] भय दूर करनेवाला।

भयारा—वि०=भयानक।

भयार्त—भू० कृ० [सं० भय-आर्त, तृ० त०] भय से आर्त या भय से त्रस्त।

भयावन—वि०=भयावना।

भयावना—अ०, स०=भयाना।

वि० [स० भय+हिं० आवना (प्रत्य०)] [स्त्री० भयावनी] भयानक।

भयावह—वि० [स० भय+आ√वह् (पहुँचाना)+अच्] जिसे देखने से डर लगे। भयजनक। भयकर। डरावना।

भय्या—पु०=भैया।

भरत*—स्त्री० [स० भ्राति] १ धोखा। भय। २ सदेह। शक।

स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया या भाव। विशेष दे० 'भरत'।

भर—अव्य० [हिं० भरना] १ अवकाश, परिमाण, वय आदि की सपूर्णता (या समस्तता) किसी इकाई के रूप मे सूचित करते हुए। जैसे—कटोरा भर, गज भर, उमर भर आदि। २ तक। पर्यंत। ३. अच्छी तरह से। पूरी तरह से। जैसे—लडके को एक बार आँख भर देखने की उसकी कामना थी।

अव्य० [सं० भार] १ के द्वारा या सहायता से। उदा०— सिर भर जाऊँ उचित अस मोरा।—तुलसी।

पु० भरे हुए होने की अवस्था या भाव। पूर्णता। यथेष्टता। उदा० —भर लाग्यो परन उरोजनि मैं रघुनाथ राजी रोम राजी भाँति कल अलि सैनी की।—रघुनाथ।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

वि० कुल। पूरा। समस्त।

मुहा०—भर पाना=(क) कुल प्राप्य धन या सामग्री प्राप्त करना। (ख) पूरा बदला चुक जाना। जैसे—जैसा तुमने किया वैसा भर पाया।

पुं० [स० भरत या भरद्वाज?] हिंदुओ मे एक जाति जो किसी समय अस्पृश्य मानी जाती थी।

†पु०=भट (वीर)।

पु० [स०] भार। बोझ। उदा०—भर खचै भजियो भिड। —प्रिथीराज।

वि० [स०√भृ (भरण करना)+अप्] (वह) जो भरण-पोषण करता हो।

पु० युद्ध। लड़ाई।

पु० [?] उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों मे रहनेवाली एक निम्न जाति।

भरई—पु०=भरदूल या भरत (पक्षी)।

भरक—पु० [देश०] पंजाब और बंगाल की दलदलो मे रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जो प्राय अकेला रहता है, मास के लिए इसका शिकार किया जाता है।

†स्त्री०=भडक।

भरकना—अ०=भडकना।

भरका—पुं० [देश०] १. वह जमीन जिसकी मिट्टी काली और चिकनी हो, परन्तु सूख जाने पर सफेद और भुरभुरी हो जाय। वह प्राय जोती नही जाती। २ जगलो, पहाडो आदि का वह गड्ढा जिसमे चोर छिपते हैं। ३ छोटा नाला। नाली। ३ जमीन का छोटा टुकडा। उदा०—बडा रकबा काटकर छोटे छोटे भरको मे पलट दिया गया था।—वृन्दावन लाल।

†पु०=भरक (पक्षी)।

भरकाना—स०=भडकाना।

भरकी—स्त्री०=भरका।

भरकूट—पु० [डि०] मस्तक। माथा।

भरट—पु० [स०√भृ (भरण करना)+अटच्] १. कुम्हार। २ सेवक। नौकर।

भरटक—पु० [स० भरट+कन्] सन्यासियो का एक वर्ग या सप्रदाय।

भरण—पुं० [स०√भृ (भरण करना)+ल्युट्—अन] १ भरना। २ खिलापिला कर जीवित रखना। पालन-पोषण आदि के लिए दी जानेवाली वृत्ति या वेतन। ४ किसी चीज के न रहने या नष्ट होने पर की जानेवाली उसकी पूर्ति। भरती। ५ भरणी नक्षत्र।

वि० [स्त्री० भरणी] भरण अर्थात् पालन-पोषण करनेवाला। (यौ० के अन्त मे) उदा०—तोही कर्णि हरणी तो हीं विश्व भरणी।—विश्राम सागर।

भरण-पोषण—पु० [स० द्व० स०] किसी का इस प्रकार पालन करना कि वह जीविका निर्वाह की चिंता से दूर रहे। (मेन्टेनेन्स)

भरणी—स्त्री० [सं० भरण+ङीप्] १ घोषक लता। कडवी तरोई। २ सत्ताइस नक्षत्रो मे दूसरा नक्षत्र जिसमे त्रिकोण के रूप मे तीन तारे हैं। ३ भूमि खोदने की एक शुभ लग्न। (ज्यो०)

भरणी-भू—पु० [सं० ब० स०] राहु।

भरणीय—वि० [स०√भृ+अनीयर्] जिसका भरण किया जाने को हो या करना उचित हो। पाले-पोसे जाने के योग्य।

भरण्य—पु० [स० भरण+यत्] १ मूल्य। दाम। २ वेतन। तनखाह। ३ नौकर। सेवक। ४. मजदूर।

भरण्या—स्त्री० [स० भरण्य+टाप्] १ वेतन। मजदूरी। २. पत्नी। जोरू।

भरण्यु—पु० [स० भरण्य+उन्] १ ईश्वर। २. चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४ अग्नि। ५ मित्र।

भरत—पु० [स०√भृ+अतच्] १ दुष्यत का शकुतला के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, जिसके नाम के आधार पर इस देश का नाम भारत पडा था। २ राम के सौतेले भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३. नाट्य-शास्त्र के एक प्रधान आचार्य। ४ अभिनेता। ५ दे० 'जड भरत'। ६ जैनो के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

पु० [स० भरद्वाज] एक प्रकार का लवा लवा पक्षी जो झुड मे रहता है। इसका शब्द बहुत मधुर होता है और यह बहुत ऊँचाई तक उड सकता है।

स्त्री० [हिं० भरना] १ भरने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जो किसी दूसरी चीज मे भरी जाय। ३ किसी आधान के अन्दर का वह अवकाश जिसमे चीजें भरी जाती है। ४. कसीदे आदि के कामो मे वह रचना जो बीच का खाली स्थान भरने के लिए की जाती है। ५. मालगुजारी या लगान। (पश्चिम)

पु० [देश०] १ कांस नामक धातु। कसकुट। २. उक्त धातु के बरतन बनानेवाला ठठेरा। ३ भरी हुई चीज। भराव।

भरत-खड—पु० [स० ष० त०] राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खडो मे से एक खड। भारतवर्ष। हिन्दुस्तान। भारतवर्ष के दक्षिण का कुमारिका खड।

भरतज्ञ—वि० [सं० भरत√ज्ञा (जानना)+क] नाट्यशास्त्र का ज्ञाता।

भरत-पुत्रक—पु० [स० ष० त०] अभिनेता। नट।

भरत-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] भारतवर्ष।

भरतरी—स्त्री० [स० भर्तृ] पृथ्वी। (डिं०)

पु०=भर्तृहरि।

भरतवर्ष—पु०=भारतवर्ष।

भरत-वाक्य—पु० [स० ष० त०] सस्कृत नाटकों के अत मे वह पद्य जिसमे नाट्यशास्त्र के जन्मदाता भरत मुनि की स्तुति की जाती है।

भरत-शास्त्र—पु० [स० मध्य० स०] नाट्यशास्त्र।

भरता—पु० [देश०] १ कुछ विशिष्ट तरकारियो को आग पर भूनकर तदुपरांत उनके गूदे को छौक कर बनाया जानेवाला सालन। चोखा। जैसे—बैंगन का भरता, आलू का भरता। २ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी चीज का मसला हुआ रूप।

†पुं०=भर्ता।

भरतार—पु० [स० भर्ता] १. स्त्री का पति। खसम। २ मालिक। स्वामी।

भरतिया—वि० [हिं० भरत (कौसा)+इया (प्रत्य०)] भरत अर्थात् कॉसे का बना हुआ।

पु० भरत के बरतन आदि बनानेवाला कसेरा। ठठेरा। भरत।

भरती—स्त्री० [हिं० भरना] १ किसी चीज मे कोई दूसरी चीज भरने की क्रिया या भाव। भराई।

पद—भरती का=जो अनावश्यक रूप से यों ही स्थान-पूर्ति मात्र के विचार से रखा या सम्मिलित किया गया हो। जैसे—इस पुस्तकालय मे बहुत सी पुस्तकें तो यों ही भरती की जान पडती है।

२. नक्काशी, चित्रकारी, कसीदे आदि के बीच का स्थान इस प्रकार भरना जिसमे उसका सौन्दर्य बढ जाय। जैसे—कसीदे के बूटो मे की भरती, नैचे मे की भरती। ३. किसी दल, वर्ग, समाज आदि मे कार्यकर्ता, सदस्य आदि के रूप मे प्रविष्ट या सम्मिलित किये जाने की क्रिया या भाव। जैसे—विद्यालय मे विद्यार्थी की या सेना मे रगरूट की होनेवाली भरती। ४ वह जहाज या नाव जिसमे माल लादा जाता हो। (लश०) ५ जहाज या नाव मे उक्त प्रकार से भरा हुआ माल। (लश०)। ६ जहाज या नाव पर माल लादने की क्रिया। (लश०)। ७. समुद्र मे पानी का चढाव। ज्वार। (लश०)। ८ नदी की बाढ। (लश०)

स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की घास जो पशुओ के चारे के काम मे आती है। २ सांवाँ नामक कदन।

भरतोद्धता—स्त्री० [स० त० त०] केशव के अनुसार एक प्रकार का छद।

भरत्य—पु०=भरत।

भरथ—पु०=भरत।

भरथरी—पु० दे० 'भर्तृहरि'।

भरदूल—पु० दे० 'भरत' (पक्षी)।

भरद्वाज—पु० [स०√भृ+अप्=भर, द्वि√जन्+ड, पृषो०=द्वाज; भर द्वाज, कर्म०स०] १. अगिरस गोत्र के उतथ्य ऋषि की स्त्री ममता के गर्भ से और उतथ्य के भाई बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न एक वैदिक ऋषि जो गोत्र प्रवर्त्तक और मत्रकार थे। वनवास काल मे रामचन्द्र इनके आश्रम मे भी गए थे। २ उक्त ऋषि के गोत्र का व्यक्ति। ३ बौद्धो के अनुसार एक अर्हत् का नाम। ४. एक अग्नि का नाम। ५ एक प्राचीन जनपद। ६ भरत पक्षी।

भरन—स्त्री० [हिं० भरना] १ भरने या भरे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ ऐसी भरपूर वर्षा जिससे खेत आदि अच्छी तरह भर जायँ। उदा०—(क) आने से उसके दिल का मेरे खिल गया चमन, ऐंसो तरब के अब्र की पडने लगी भरन।—नजीर। (ख) सावन की झडी, भादो की भरन। (कहा०)

भरना—स० [स० भरण] [भाव० भराई, भराव] १ किसी आधार या पात्र के अन्दर की खाली जगह मे कोई चीज उँडेलना, गिराना, डालना या रखना। बीच के अवकाश मे इस प्रकार कोई चीज रखना कि वह खाली न रह जाय। जैसे—गाडी मे माल, घडे मे पानी या गुब्बारे मे हवा भरना।

पद—भरापूरा।

२ बीच के अवकाश मे कोई अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त चीज रखना या लगाना। स्थापित करना। जैसे—गड्ढे मे मिट्टी भरना, चित्र मे रंग भरना, तोप मे गोला भरना, मुँह मे पान भरना, लिफाफो मे चिट्ठियाँ भरना आदि। ३ खाली आसन, पद आदि पर किसी को बैठाना या नियुक्त करके स्थान की पूर्ति करना। जैसे—उन्होंने मत्री होते ही

सारा विभाग भाई-बन्धुओ से भर दिया। ४ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लादना। ५ भावी लाभ के विचार से अधिक मात्रा मे कोई चीज या माल खरीद कर इकट्ठा करना और रख छोडना। जैसे—फसल के दिनो मे गेहूँ भरना, मदी के समय कपड़ा या सोना भरना। ६ सिचाई के लिए खेत मे पानी पहुँचाना। सीचना। ७ छेद, मुँह, विवर, सन्धि आदि बद करने के लिए उनमे कोई चीज जडना, ठूँसना, बैठाना या लगाना। जैसे—खिडकी या झरोखे मे ईटे, छड या जाली भरना। ८ लेख आदि के द्वारा आवश्यक अपेक्षाओ की पूर्ति करना या सूचनाएँ अकित करना। जैसे—आवेदन-पत्र, पजी या प्रपत्र (फार्म) भरना। ९. किसी के मन मे तुष्टि, पूर्णता, यथेष्टता आदि की धारणा या भावना उत्पन्न करना। किसी का मनस्तोष करना। जैसे—बातचीत या व्यवहार से किसी का मन भरना। १० अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करना। जैसे—किसी के कथन की सही या साखी भरना, किसी बात की हामी भरना। ११ किसी को किसी का विद्रोही या विरोधी बनाने अथवा अपने अनुकूल करने के लिए उसके मन मे कोई बात अच्छी तरह जमाना या बैठाना। जैसे—आपने तो उन्हे पहले ही भर रखा था, फिर वे मेरी बात क्यो सुनते? १२ जीव-जतुओ का किसी को काटना या डसना। उदा०—जहाँ सो नागिन भर गई, काला करै सो अग।—जायसी। १३ आर्थिक देन, क्षति-पूर्ति, भार आदि के परिशोध के रूप मे धन देना। चुकाना। जैसे—ऋण या दड भरना। १४ यत्रो आदि मे कुजी घुमाकर या और किसी प्रकार ऐसी क्रिया करना जिसमे वे अपना काम करने लगें। जैसे—घडी भरना, ताला भरना। १५ जैसे-तैसे या कुछ कष्ट सहकर दिन काटना या समय बिताना। जैसे—नैहर जनमु भरब बरु जाई।—तुलसी। १६ (कष्ट या विपत्ति) भोगना। सहना। जैसे—करे कोई, भरे कोई। उदा०—राम बन बपु धरि बिपति भरे।—सूर।

विशेष—भिन्न भिन्न सज्ञाओ के साथ इस क्रिया के योग से बहुत से मुहावरे भी बनते है। जैसे—किसी की गोद भरना, देवी या देवता की चौकी भरना, महावर आदि से किसी के पैर भरना, (किसी बात या व्यक्ति का) दम भरना, रिश्वत देकर किसी का घर भरना, मनो-विनोद के लिए किसी का स्वाग भरना आदि। ऐसे मुहावरो के लिए सबद्ध सज्ञाएँ देखे।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—रखना।

अ० १ खाली जगह या आधार का किसी बाहरी या नये पदार्थ के योग से पूर्ण या युक्त होना। जैसे—बरसाती पानी से तालाब भरना, दवा से घाव भरना, पाल से हवा भरना, कीचड से पैर भरना, फलो या फूलो से पेड भरना, माता (चेचक) के दागो से शरीर भरना, आदमियो से बाजार, मेला या सभा भरना आदि।

विशेष—ऊपर स० 'भरना' मे जो अर्थ आये हैं, उनमे से अधिकतर अर्थो के प्रसग मे इसका अ० प्रयोग भी होता है। जैसे—(क) खेत, देन या रग भर गया। (ख) भोजन से पेट भर गया।

२ दुर्बल या रुग्ण शरीर का यौवन, स्वस्थता आदि के योग से धीरे-धीरे हृष्ट-पुष्ट होना। जैसे—पहले तो वह बहुत दुबला-पतला था, पर अब धीरे धीरे भरने लगा है। ३ पशुओ पर बोझ लदना अथवा सवा-रियो पर यात्रियो का बैठना। ४. मन का असतोष, क्रोध, सताप आदि से मुक्त होना। जैसे—जब देखो, तब तुम भरे बैठे रहते हो। उदा०—वह भरी ही थी, उमड़ बहने लगी यो।—मैथिलीशरण गुप्त। ५. आवेश करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने के योग्य न रह जाना। किसी भाव की प्रबलता के कारण कुछ कहने मे असमर्थ होना। उदा०—गया भरा-सा भमरा कनिष्ठ।—मैथिलीशरण।

विशेष—(क) ऐसे अवसरो पर इसके साथ प्राय सयो० क्रि० 'आना' का प्रयोग होता है। जैसे—उसे रोते देख कर मेरा जी भर आया, अर्थात् उसमे करुणा का आविर्भाव हुआ। कुछ अवसरो पर इसका प्रयोग बिना पूरक सज्ञा के भी होता है। जैसे—उसे देखते ही मेरी आँखे भर आईं, अर्थात् आँखो मे आँसू भर गये। (ख) कुछ अवस्थाओ मे अ० 'भरना' और 'भर जाना' के अर्थो मे बहुत अधिक अन्तर भी होता है। जैसे—(क) तुम्हारी तरफ से हमारा मन भरा है, अर्थात् हम पूर्ण रूप से सतुष्ट है और (ख) यहाँ रहते रहते हमारा जी भर गया है, अर्थात् हम ऊब गये है अथवा विरक्त हो गये है।

६ किसी चीज या बात से ओत-प्रोत या पूर्ण रूप से युक्त होना। जैसे—(क) इसी तरह की फालतू बातो से सारी पुस्तक भरी है। (ख) कीचड भरे पैर तो पहले धो लो। ७ ऋण, देन आदि का चुकाया जाना। परिशोधन होना। ८ अपेक्षा, आवश्यकता, आशा आदि की किसी रूप मे पूर्ति होना। जैसे—खाने-पीने की चीजो से पेट भरना, किसी के आचरण या व्यवहार से मन भरना। ९ अवकाश, छिद्र, विवर आदि का बद होना। १० (अक, गोद आदि के पूर्ण या किसी से युक्त होने के विचार से) आलिंगन होना। गले लगना। भेटना। उदा०—भरी सखी सब भेटन फेरा।—जायसी। ११. रिक्त आसन, पद आदि की पूर्ति होना। १२ कही जाकर रहना। निवास करना। बसना। उदा०—हरी चद सो करे जगदाता सो घर नीच भरै।—सूर। १३. किसी अग से अधिक और कुछ समय तक निरतर कोई काम लेते रहने पर उस अग का कुछ पीडा-युक्त और भारी होना तथा काम करने मे कष्ट बोध करना। जैसे—चलते-चलते पाँव भरना, लिखते-लिखते हाथ भरना (या भर जाना)। १४ गौ, घोडी, भैस आदि मादा पशुओ का गर्भवती होना।

सयो० क्रि०—आना।

पु० १ भरने या भरे जाने की क्रिया या भाव। २ भरने के लिए दी जानेवाली कोई चीज या किया जानेवाला परिश्रम, व्यय आदि। जैसे—इसी तरह बैठकर जनम भर दूसरो का भरना भरते रहो। ३ घूस। रिश्वत। (क्व०)

स० [हि० भार] भार उठाना या ढोना। उदा०—भरि भरि भार कहारन आना।—तुलसी।

भरनि—स्त्री० [स० भरण] १ कपडे-लत्ते। पोशाक। २ दे० 'भरनी'।

भरनी—स्त्री० [हि० भरना] १ भरने या भरे जाने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जो भरी जाय। ३ किसी काम या बात के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाली दशा या स्थिति। जैसे—जैसी करनी वैसी भरनी। ४. खेतो मे बीज आदि बोने की क्रिया। ५. खेतो की सिचाई। ६ करघे मे की ढरकी। नार। ७. बुनाई मे बाने का सूत।

स्त्री० [?] १ छछूँदर। २ मोरनी। ३ गारुडी मत्र। ४. एक प्रकार की जडी या बूटी।

†स्त्री०=भरणी (नक्षत्र)।

भर-पाई—स्त्री० [हिं० भरना+पाना] १. वह स्थिति जिसमे से किसी से कुल प्राप्य धन वसूल हो जाय। २. उक्त का सूचक लेख, जो इस बात का सूचक होता है कि अब हमे अमुक व्यक्ति से कुछ लेना शेष नही रह गया है।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। पूरी तरह से। उदा०—माला दुखित भई भर-पाई।—सूर।

भरपूर—वि० [हिं० भरना+पूरा] १. जो पूरी तरह से भरा हुआ हो। परिपूर्ण। २ जिसमे किसी प्रकार की कमी या त्रुटि न हो।

क्रि० वि० १. बहुत अधिक मात्रा या परिमाण मे। जितना चाहिए, उतना या उससे भी कुछ अधिक। २. पूर्ण रूप से। ३ अच्छी तरह। भली भाँति।

†पु०=ज्वार (समुद्र का)।

भरभराना—अ० [अनु०] [भाव० भरभराहट] १. रोएँ खड़ा होना। २ (आँखो मे) जल भर आना। २ (हृदय का) आवेगपूर्ण या विह्वल होना। ४ विफल होना। घबराना। ५. (ज्वर आदि मे शरीर मे) हलकी सूजन या दानो का उभार होना।

भर-भराहट—स्त्री० [अनु०] भरभराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भरभूँजा—पु०=भडभूँजा।

भरभेंटा—पु० [हिं० भर+भेटना] १ अच्छी तरह गले मिलने की क्रिया या भाव। २ मुकाबला। मुठभेड।

भरम‡—पु० [स० भ्रम] १ भ्राति। सशय। सदेह। २ भेद। रहस्य। ३ अपने महत्त्व, साख आदि का रहस्य या विश्वसनीयता।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।

भरमना¹—अ० [स० भ्रमण] १ चलना-फिरना। घूमना या टहलना। २. इधर-उधर मारे मारे फिरना। ३ धोखे मे पडकर इधर-उधर होना। भटकना।

स्त्री० [स० भ्रम] १ भूल। गलती। २ धोखा। भ्राति। ३ मन मे होनेवाला अनिश्चय।

भरमाना—स० [हिं० भरमना का स० रूप] १. ऐसा काम करना अथवा ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे किसी को भ्रम हो जाय। भ्रम मे डालना। २ व्यर्थ इधर-उधर घूमना। भटकना। ३. आसक्त या मोहित करना। बिलमाना।

†अ० अचभे मे आना। चकित होना।

भर-मार—स्त्री० [हिं० भरना+मार=अधिकता] अनावश्यक या व्यर्थ चीजो की अधिकता।

भरमौहाँ—वि० [हिं० भरम+औहाँ (प्रत्य०)] भ्रम उत्पन्न करनेवाला। भरमानेवाला।

वि० [हिं० भरमना (घूमना)+औहाँ (प्रत्य०)] १ घूमने या घुमानेवाला। २. चक्कर खाने या खिलानेवाला।

भरराना—अ० [अनु०] १. भरर शब्द करते हुए गिरना। अरराना। २. किसी पर टूट या पिल पड़ना।

स० १ भरर शब्द के साथ गिराना। २. किसी को किसी पर टूट या पिल पडने मे प्रवृत्त करना।

भरल—स्त्री० [देश०] नीले रग की एक प्रकार की जगली भेड़ जो बहुत कुछ बकरी की तरह होती और हिमालय मे भूटान से लद्दाख तक होती है।

भरवाई—स्त्री० [हिं० भरवाना] १. भरवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ वह टोकरी जिसमें बोझ रखकर ढोया जाता है।

भरवाना—स० [हिं० भरना का प्रे० रूप] भरने का काम दूसरो से कराना। किसी को कुछ भरने मे प्रवृत्त करना।

भर-सक—अव्य० [हिं० भर+सकना] जितनी समर्थता या शक्ति हो सकती है उतनी का उपयोग करते हुए। यथासाध्य।

भरसन†—स्त्री०=भर्त्सना।

भरसाईं—स्त्री०=भडसाई (भाड)।

भरहरना—अ० [देश०] अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

†अ०=भरभराना।

भरहराना—अ०=भहराना।

भराचिटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

भरांति—स्त्री०=भ्राति।

भरा—वि० [हिं० भरना] [स्त्री० भरी] १. जिसमे कोई चीज पूरी तरह से डाली गई हो या पडी हो। जैसे—भरा घडा, भरा बोरा। २. जिसमे अपेक्षित, आवश्यक, उपयुक्त या सगत तत्त्व अथवा पदार्थ यथेष्ट मात्रा मे हो। जैसे—भरी गोद, भरा घर, भरी बदूक, भरा बाजार, भरी सभा। ३ जो यथेष्ट उत्कर्ष, उन्नति, अर्थात् पूर्णता तक पहुँच चुका हो। जैसे—भरी जवानी, भरी बरसात, भरा शरीर। ४ जो किसी विशिष्ट तत्त्व या बात से इस प्रकार बहुत कुछ युक्त हो कि जरा सा सकेत या सहारा पाकर उबल या फूट पडे। जैसे—वह तो पहले ही (क्रोध या दुःख से) भरा बैठा था, तुम्हे देखते ही बिगड खड़ा हुआ।

पद—भरी सभा में=सब के सामने।

भराई—स्त्री० [हिं० भरना] १ भरने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. मध्य-युग मे एक प्रकार का स्थानीय कर।

भरापूरा—वि० [हिं०] १ जिसमे किसी बात की कमी या न्यूनता न हो। सब प्रकार से या सभी अपेक्षित बातों से युक्त। २. हर तरह से सम्पन्न और सुखी। जैसे—भरा-पूरा घर या परिवार।

भरा महीना—पु० [हिं० पद] बरसात के दिन जिनमे खेतो मे बीज बोये जाते है।

भराव—पु० [हिं० भरना+आव (प्रत्य०)] १. भरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ भरने की क्रिया या भाव। ३. वह पदार्थ या रचना जिससे कोई अवकाश या खाली जगह भरी गई हो या भरी जाती हो। जैसे—कसीदे की बूटियो मे तागो का भराव।

भरावदार—वि० [हिं०+फा०] जिसमे भराव हो। जैसे—भरावदार कगन।

भरित—भू० कृ० [स० भर+इतच्] १. जो भरा गया हो। भरा हुआ। २ जिसका भरण-पोषण किया गया हो।

भरिया—वि० [हिं० भरना] १. भरनेवाला। २. ऋण भरने या चुकानेवाला।

पु० वह जो बरतन आदि ढालने का काम करता हो। ढलाई करनेवाला। ढालिया।

पु० [हिं० भार] १. भार ढोनेवाला मजदूर। २. कहार।

री—स्त्री०[हिं० भर] दस माशे की तौल जिससे सोना, चाँदी आदि धातुएँ तौली जाती थी।
स्त्री०[?] एक प्रकार की घास जिससे छप्पर छाये जाते हैं।

भरी गोद—स्त्री० [हिं०] (स्त्री की) ऐसी गोद जिसमे सतान हो।
मुहा०—भरी गोद खाली होना=पुत्र या सतान का मर जाना।

भरी जवानी—स्त्री० [हिं०] पूर्णता तक पहुँची हुई ऐसी युवावस्था जिसका उतार अभी दूर हो। पूर्ण यौवन प्राप्त स्थिति।
पद—भरी जवानी माँझा ढीला=यौवनावस्था मे भी फुरती और शक्ति न होना।

भरी थाली—स्त्री० [हिं०] ऐसी स्थिति जिसमे जीविका का निर्वाह या इच्छाओ की पूर्ति सहज मे होती हो। जैसे—तुमने तो उसके आगे से भरी थाली खीच (या छीन) ली।
मुहा०—भरी थाली पर लात मारना=मिलती रोजी या लगी नौकरी जान-बूझकर छोड देना।

भरु—पु०[सं०√ भृ (भरण करना) +उन्]१. विष्णु। २. शिव। ३. समुद्र। ४. सोना। स्वर्ण। ५ मालिक। स्वामी।
पु० १. =भर। २ =भार। उदा०—भावक उभरौहौं भयो कछू पर्‌यो भरु आय।—विहारी।

भरुआ—पु०[देश०] टसर।
†पु०=मडुआ।

भरुआना—अ०[हिं० भारी+आना (प्रत्य०)] भारी होना।
†स० भारी करना।

भरुका—पु० [हिं० भरना] पुरवे के आकार का मिट्टी का बना हुआ कोई छोटा पात्र। चुक्कड।

भरुज—पु०[स० भ√रुज् (भग करना)+क][स्त्री० भरुजा]१. शृगाल। २ भून। हुआ जौ।

भरुटक—पु०[स० भृ (भरण करना)+उट+कन्] भूना हुआ मास।

भरुहाना—अ०[हिं० भार या भारी+आना या हाना (प्रत्य०)] अभिमान या घमड करना।
स० [हिं० भ्रम]१ भ्रम मे डालना। २. बहकाना। ३ उत्तेजित करना। उकसाना। भडकाना।

भरुही—स्त्री०[देश०] कलम बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक।
†स्त्री०=भरत (पक्षी)।

भरेड—पु०=रेंड।

भरेठ—पु०[हिं० भार+काठ] दरवाजे के ऊपर लगी हुई वह लकडी जिसके ऊपर दीवार उठाई जाती है। इसे 'पटाव' भी कहते है।

भरैया—वि०[हिं० भरना+ऐया (प्रत्य०)] भरनेवाला।
वि०[स० भरण] भरण-पोषण करनेवाला। पालक। पोषक।

भरोट—पु०[देश०] एक प्रकार की जगली घास।

भरोटा†—पु०[हिं० भार+ओटा (प्रत्य०)] घास या लकडी आदि का गट्ठा। बोझ।

भरोस†—पु०=भरोसा।

भरोसा—पु०[?]१. मन की ऐसी स्थिति जिसमे यह आशा या विश्वास हो कि अमुक व्यक्ति समय पडने पर हमारी सहायता करेगा। आश्रय या सहारे के सम्बन्ध मे मन मे होनेवाली प्रतीति। अवलब। आसरा। जैसे—हमे तो आप (या ईश्वर) का ही भरोसा है। २. ऐसी आशा जिसकी पूर्ति की बहुत सभावना हो। जैसे—मन मे भरोसा रखो, वे तुम्हे निराश नही करेंगे।
पद—भरोसे का=जिस पर बहुत कुछ भरोसा किया जा सकता हो। विश्वसनीय।

भरोसी—वि०[हिं० भरोसा+ई (प्रत्य०)]१ भरोसा या आसरा रखनेवाला। जो किसी (काम, बात या व्यक्ति) का भरोसा रखता हो। २ जिसका भरोसा रखा जा सके। विश्वसनीय। ३ जो किसी के भरोसे रहता है। आश्रित।

भरौती—स्त्री०[हिं० भरना+औती (प्रत्य०)] १. भरने या भराने की क्रिया या भाव। २ वह रसीद जिसमे भरपाई लिखी गई हो। भरपाई का कागज। ३ दे० 'भरती'।

भरौना—वि०[हिं० भार+औना (प्रत्य०)] बोझिल। भारी। वजनी।

भर्ग—पु०[स० √भृज् (भूनना)+घञ्] १ शिव। महादेव। २. सूर्य का तेज। ३. चमक। दीप्ति। ४ एक प्राचीन जनपद।

भर्जन—पु०[स०√भृज्+ल्युट्—अन] भाड मे भूना हुआ अन्न।

भर्तव्य—वि०[स० भृ+तव्य] १. (भार) जो वहन किया जा सके। २. (व्यक्ति) जिसका भरण-पोषण किया जा सके या किया जाने को हो। पालनीय।

भर्ता (र्तृ)—वि०[स० √भृ+तृच्] भरण-पोषण करनेवाला।
पु० १ विष्णु। २ स्त्री का पति। ३. मालिक। स्वामी।
†पु०=भरता।

भर्तार†—पु०[सं० भर्त्तृ] स्त्री का पति। स्वामी।

भर्ती—स्त्री०=भरती।

भर्तृमती—स्त्री०[स० भर्तृ+मतुप्, ङीप्] सधवा स्त्री।

भर्तृस्थान—पु० [स०] ग्रहों के स्वामी सूर्य का मूलस्थान, अर्थात् मुल्तान नगर।

भर्तृहरि—पु०[स०]१. उज्जैन के राजा इन्द्रसेन के पोते जो अपनी स्त्री सामदेई (सिघल की राजकुमारी) की दुश्चरित्रता के कारण दु खी होकर ससार से विरक्त हो गये थे। सस्कृत मे इनके बनाए हुए शृगार शतक, नीति शतक, वैराग्य शतक, वाक्य पदीय आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। २ सगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो ललित और पुरज के मेल से बनता है।

भर्त्सन—पु०[स० √भर्त्स्+ल्युट्—अन] किसी के अनुचित तथा दूषित आचरण या व्यवहार से क्रुद्ध और दुःखी होकर उसे कटु शब्दो मे कुछ कहना और फलत उसे लज्जित करना।

भर्त्सना—स्त्री० [स०√भर्त्स+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १=भर्त्सन। २. भर्त्सित होने की अवस्था या भाव।

भर्त्सित—भू० कृ० [स० √भर्त्स्+णिच्+क्त] जिसकी भर्त्सना हुई या की गई हो।

भर्म—पु० [स०√भृ (भरण करना)+मनिन्] १. सोना। स्वर्ण। २ नाभि।
पु०=भ्रम।

भर्मन*—पु०=भ्रमण।

भर्मना—अ०=भरमना।

भर्माना†—स०=भरमाना।

भर्य—पुं० [स०√भृ (भरण करना)+यत्] किसी को भरण-पोषण के निमित्त दिये जाने या मिलनेवाला धन। खरचा। गुजारा।

भर्रा—पुं० [भर शब्द से अनु०] १. झाँसा। दमबुत्ता।
क्रि० प्र०—देना।
२. पक्षियों की उड़ान। ३. एक प्रकार की चिड़िया।

भर्राटा—पु० [अनु०] १. भरभर शब्द होने की अवस्था या भाव। २. कुछ समय तक बराबर होनेवाला भरभर शब्द।
क्रि० वि० १. भरभर शब्द करते हुए। २. बहुत जल्दी या तेजी से।

भर्राना—अ० [भर्र से अनु०] भर्र भर्र शब्द होना। जैसे—आवाज भर्राना।
स० भर्र भर्र शब्द उत्पन्न करना।
†अ०=भरमाना।

भर्सन†—पु०=भर्त्सन।

भर्सना†—स्त्री०=भर्त्सना।

भल—पु० [स०√भल् (मारना)+अच्] १. मार डालने की क्रिया। वध। हत्या। २. दान। ३. निरूपण।
क्रि० वि० [हिं० भला] भली भाँति।
†वि०=भला।

भलका—पु० [देश०] १. नथ मे शोभा के लिए जड़ा जानेवाला सोने या चाँदी का छोटा टुकड़ा। २. एक प्रकार का बाँस।

भलटी—स्त्री० [?] हँसिया।

भलपति—पु० [हिं० भाला+स० पति] भाला धारण करनेवाला। भाला-बरदार।

भलभल—स्त्री० [अनु०] पानी या किसी तरल पदार्थ के बहने का शब्द।
स्त्री० [अनु०] नदी-नाले के जल के बहने का शब्द।

भलभलाहट—स्त्री० [अनु० भलभल+हिं० आहट (प्रत्य०)] भलभल शब्द होने की अवस्था या भाव।

भलमनसत—स्त्री० [हिं० भला+स० मनुष्य] १. भले मानस होने की अवस्था या भाव। २. भले आदमियो का सा भद्रतापूर्ण व्यवहार। ३. वह स्थिति जिसमे कोई किसी के प्रति भद्रतापूर्ण व्यवहार करता है।

भल-मनसाहत†—स्त्री०=भलमनसत।

भलमनसी†—स्त्री०=भलमनसत।

भला—वि० [स० भद्र; प्रा० भल्ल] [स्त्री० भली] १. (व्यक्ति) जो सदाचारी हो और दूसरो की भलाई या हित करता या चाहता हो। शुद्ध हृदय और सात्विक प्रवृत्तियोंवाला। २. (आचरण या व्यवहार) जिसमे कोई नैतिक दोष न हो और जिससे भलाई या हित होता अथवा हो सकता हो। ३. (वस्तु या विषय) जो (क) मन को भाता हो, (ख) सतोषजनक और लाभप्रद हो।
पद—भला-चगा=(क) हर तरह से ठीक और सतोषजनक। जैसे—भला-चगा मकान छोड़कर वे कही और चले गये। (ख) शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ।
४. मगलकारी। शुभ।
पु० भलाई। मंगल। हित।
मुहा०—(किसी का) भला मनाना=किसी के कुशल-मंगल की कामना करना। किसी का भला मानना= उपकार मानकर अनुगृहीत करना।
उदा०—राजा का भला मानहु भाई।—जायसी।
२. नफा। लाभ।
पद—भला-बुरा=(क) लाभ और हानि। जैसे—पहले अपना भला-बुरा सोच लो। (ख) ऐसी बातें जिनमें कुछ डाँट-फटकार भी हो। जैसे—वह दिन भर मुझे भला-बुरा कहते रहते है।
अव्य० १. मगलजनक या बहुत अच्छा! शुभ है कि! जैसे—भला आप आये तो! २. जोर देने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—भला ऐसा भी कही होता है!

भलाई—स्त्री० [हिं० भला+ई (प्रत्य०)] १. भले होने की अवस्था या भाव। भलापन। अच्छापन। २. किसी के साथ किया जानेवाला उपकार। नेकी। ३. किसी प्रकार का लाभ या हित।

भलापन—पुं०=भलाई।

भलामानस—पु० [हिं०] भला व्यक्ति। नेक आदमी।

भले—अव्य० [हिं० भला] १. भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।
उदा०—एहि विधि भलेहि सो रोग नसाही।—तुलसी।
पद—भले को=उद्दिष्ट लाभ या हित के विचार से, अच्छा ही हुआ। जैसे—भले को मैं कुछ बोला ही नही, नही तो झगडा हो जाता। भले ही=ऐसा हुआ करे। इसकी चिंता नही। इससे कोई हानि नही। जैसे—भले ही वह वहीं रहे।
अव्य० खूब। वाह। 'काकु' से नहीं का सूचक। जैसे—तुम कल शाम को आनेवाले थे, भले आये।

भलेरा†—वि०, पुं०=भला।

भल्ल—पु० [सं०√ मल्ल् (वध करना)+अच्] १ वध। हत्या। २. दान। ३. भाला। ४ एक प्रकार का बाण। ५. शिव का एक नाम। ६. एक प्राचीन जनपद और तीर्थ। ७. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जिससे शरीर मे धंसा हुआ तीर निकाला जाता था। (वैद्यक) ८. भालू।

भल्लक—पु० [स० भल्ल+कन्] १. भालू। २ भिलावाँ। ३ इगुदी का पेड़। ४. एक प्रकार की चिड़िया। ५ सन्निपात का 'भल्लु', नामक भेद। ६. एक प्राचीन जनपद।

भल्ल-नाथ—पु० [सं० प० त०] जांबवान्।

भल्ल-पति—पु० [स० प० त०] जाबवान्।

भल्ल-पुच्छी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] गोरखमुडी।

भल्लाक्ष—वि० [सं० भल्ल-अक्षि ब०, स०,+पच्] जिसे कम दिखाई देता हो। मददृष्टि।

भल्लाट—पु० [सं० भल्ल√अट् (जाना)+अच्] १ भालू। २. एक पर्वत का प्राचीन नाम।

भल्लात, भल्लातक—पु० [स० भल्ल√अत् (गमन)+अच्, भल्लात+कन्] भिलावाँ।

भल्लातकी—स्त्री० [स० भल्लातक+ङीप्] भिलावाँ।

भल्लु—पु० [स० √मल्ल् +उ] एक तरह का सन्निपात ज्वर।

भल्लुक—पु० [स० भल्लूक, पृषो० ह्रस्व] भालू।

भल्लुक—पु० [स० √मल्ल्+ऊक] १ भालू। २ एक प्रकार का श्योनाक। ३. कुत्ता।

भवँ—स्त्री०=भौंह।

भवंग, भवंगा*—पु० [स० भुजंग] साँप। सर्प। उदा०—विरह भवग मेरो डंस्यो है कलेजो।—मीराँ।

भवँर—स्त्री०=भँवर।

पुं०=भौंरा।

भवँरी—स्त्री०=भौरी।

भव—पु०[सं०√भू (होना)+अप्] १. होने की अवस्था, क्रिया या भाव। सत्ता। २ उत्पत्ति। ३ जन्म। ४. जगत। संसार। ५ संसार मे वार वार जन्म लेने और मरने का कष्ट। ६ प्राप्ति। ७. कारण। हेतु। ८. शिव। ९ कामदेव। १०. मास। ११. वादल। मेघ। वि० १. समस्त पदो के अन्त मे, किसी से उत्पन्न। जन्मा हुआ। उत्पन्न। २. कुशल। होशियार। ३. मगलकारक। शुभ।

†पु०=भय (डर)।

भवक—वि०[सं०√भू +वुन्—अक] १. उत्पन्न । जीता हुआ।

भव-कूप—पु०[स० कर्म० स०] ससार रूपी कूआँ, जिसमे लोग अँधेरे मे रहकर कष्ट भोगते हैं।

भव-केतु—पु०[स० प० त०] वृहत्सहिता के अनुसार पूर्व मे कभी कभी दिखाई देनेवाला एक पुच्छल तारा जिसकी पूँछ शेर की पूँछ की भाँति दक्षिणावर्त्त होती है। कहते हैं कि जितने मुहूर्त्त तक यह दिखाई देता है, उतने महीने तक भीषण अकाल या महामारी होती है।

भवचक्र—पु०[स० प० त०] १ धनुष। २ वौद्धो मे वह कल्पित चक्र जिससे यह जाना जाता है कि कौन कौन कर्म करने से जीवात्मा को किन किन योनियो में जन्म लेना पडता है।

भव-चाप—पु०[स० प० त०] शिव जी का धनुष। पिनाक।

भवच्छेद—पुं०[स० प० त०] ससार मे होनेवाले आवागमन से मुक्ति।

भव-जाल—पु०[स०] सासारिक प्रपंच।

भवत्—पु०[स०√भा (प्रकाश)+डवतु] १. भूमि। जमीन। २ विष्णु। वि० पूज्य। मान्य।

भवतव्यता—स्त्री०=भवितव्यता।

भवती—स्त्री०[स० भवत्+ङीप्] एक प्रकार का जहरीला वाण।

भव-दारु—पु०[म० मध्य० स०] देवदारु।

भवदीय—सर्व० [स० भवत्+छस्—ईय, स-लोप] [स्त्री० भवदीया] आपका। (प्राय पत्रो के अन्त मे; लेखक के नाम से पहले आत्मीयता और नम्रता सूचित करने के लिए प्रयुक्त।

भवन—पु०[म०√भू (होना)+ल्युट्—अन] १ अस्तित्व मे आना। उत्पत्ति या जन्म। २. कोई वास्तु-रचना विशेपत वास-स्थान। ३. प्रासाद। महल। ४ जगत। ससार। ५ आधार या आश्रय का स्थान। जैसे—करुणाभवन। ६ छप्पय का एक भेद।

पुं०[सं० भ्रमण] १. चारो ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। भ्रमण। २ कोल्हू के चारो ओर का वह चक्कर जिसमे वैल घूमते हैं।

भवन-कक्ष्या—स्त्री०[स०] महल या राजप्रासाद का आगन या चौक।

भवन-दीर्घिका—स्त्री० दे० 'गृह-दीर्घिका'।

भवन-पति—पु०[स० प० त०] १. घर का मालिक। गृहपति। २. राशि चक्र मे किमी ग्रह का स्वामी। ३. जैनियो के दस देवताओं का एक वर्ग जिनके नाम ये हैं—असुरकुमार, नागकुमार, तडित्कुमार, सुपर्णकुमार, वह्निकुमार, अनिलकुमार, स्तनित्कुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

भवनवासी (सिन्)—पु० [सं० भवन√वस् (निवास करना)+णिनि] जैनो के अनुसार आत्माओ के चार भेदो मे से एक।

भवना—अ०[स० भ्रमण] घूमना। फिरना। चक्कर खाना।

भव-नाशिनी—स्त्री०[सं० प० त०]सरयू नदी।

भवनी—स्त्री० [स० भवन]=गृहिणी।

भवनीय—वि०[सं० √ भू (होना)+अनीयर्,] १. भविष्य मे होने-वाला। २. आसन्न। सन्निकट।

भवन्नाथ—पु०[सं० प० त०] विष्णु।

भवपाली—स्त्री०[म० प० त०, +ङीप्] तान्त्रिको के अनुसार भुवनेश्वरी देवी जो संसार की रक्षा करनेवाली मानी गई हैं।

भव-प्रत्यय—पु०[स० प० त०] योग मे, समाधि की एक अवस्था।

भव-बंधन—पु०[स० प० त०] १. जन्म-मरण का चक्र। २. सांसारिक कष्ट और दुख।

भव-भग—पु०[स० प० त०] आवागमन से होनेवाली छुट्टी।

भव-भंजन—पु०[सं० प० त०] १. परमेश्वर। २. ससार का नाश करनेवाला, काल।

भव-भय—पुं०[सं० प० त०] वारवार संसार मे जन्म लेने और मरने का भय।

भव-भामिनी—स्त्री० [स० प० त०] शिव की पत्नी-पार्वती।

भव-भाव—पु० [सं० प० त०] भौतिक वातो के प्रति होनेवाला प्रेम।

भव-भीत—वि०[स० प० त०] [भाव० भव-भीति] जिसे यह भय हो कि मुझे वार वार संसार मे जन्म लेना और मरना पड़ेगा।

भव-भीति—स्त्री०[सं० प० त०] दे० 'भव-भय'।

भव-भूति—स्त्री०[सं० प० त०] ऐश्वर्य।

पु० 'उत्तर रामचरित' नाटक के रचयिता सस्कृत के एक प्रसिद्ध महाकवि।

भव-भूषण—वि०[ष० त०] जो जगत् के भूषण के रूप मे हो।

पु० शिव का भूषण, राख आदि।

भव-भोग—पु०[स० प० त०] सासारिक सुखो का किया जानेवाला भोग।

भव-मन्यु—पु० [स० तृ० त०] सासारिक सुखो से होनेवाली विरक्ति।

भव-मोचन—वि०[म० प० त०] भव-वंधन काटनेवाला।

पु० श्रीकृष्ण।

भवरया†—स्त्री०=भाँवरी।

भव-रस—पु०[स० प० त०] सासारिक वातो के प्रति होनेवाला अनुराग और उनसे मिलनेवाला सुख।

भव-वामा—स्त्री०[प० त०] शिव की पत्नी, पार्वती।

भव-विलास—पु०[स० प० त०] १. माया। २ सासारिक सुखों के भोग के निमित्त की जानेवाली क्रीडाएँ।

भव-शूल—पु०[सं० प० त०] लोक मे जन्मने, जीवित रहने और मरने पर होनेवाला कष्ट।

भव-शेखर—पु०[स० प० त०] चद्रमा।

भव-सागर—पु०[स० कर्म० स०] ससार रूपी समुद्र।

भव-सिंधु—पु०[स० कर्म० स०] ससार रूपी समुद्र।

भवाँ—स्त्री० [हिं० भवना] चक्कर। फेरी। उदा०—राते कँवल करहि अलि भवाँ, घूमहिं मानि चहहि अपसवाँ।—जायसी।

भवांतर—पु०[स० मयू० स०] पहले का अथवा आगे चलकर होनेवाला जन्म।

भवाँना—स०[स० भ्रमण] घुमाना। फिराना। चक्कर देना।

भवाबुधि—पु० [स० भव-अबुधि, कर्म० स०] संसार रूपी सागर।

भवा—स्त्री०[स० भव+टाप्]१ भवानी। पार्वती। २. दुर्गा।

भवाचल—पु० [स० प० त०] कैलास पर्वत।

भवाना*—स०=भवाँना।

भवानी—स्त्री०[स० भव+ङीप्, आनुक्] १. भव की भार्या। दुर्गा। २. छत्रपति शिवाजी की तलवार की सज्ञा। ३ सगीत मे विलावल ठाठ की एक रागिनी।

भवानी-कात—पु०[स० प० त०] शिव।

भवानी-गुरु—पु०[स० प० त०] हिमवान्।

भवानी-नदन—पु०[स० प० त०]१. गणेश। २. कार्तिकेय।

भवानी-पति—पु०[स० प० त०] शिव।

भवायना—स्त्री०[स०भव-अयन, ब० स०,+टाप्] गंगा जो शिव की जटा से निकली हैं। भवायनी।

भवार्णव—पु०[स० भव-अर्णव, कर्म० स०] भव-सागर।

भवि*—वि०=भव्य।

भविक—वि०[स० भव+ठन्—इक] १. मगलकारी। २ धार्मिक। ३ उपयोगी। उपयुक्त। ४. प्रसन्न। ५. समृद्ध।
पु० कल्याण। मगल।

भवित—भू० कृ० [स०] १. अस्तित्व मे आया हुआ। २ गत। भूत।

भवितव्य—वि० [स०√भू+तव्यत्] [भाव० भवितव्यता]१.जो भविष्य मे विशेषत' आसन्न भविष्य मे निश्चित रूप से होने को हो। २.जो भाग्य मे बदा हो।

भवितव्यता—स्त्री०[सं० भवितव्य+तल्+टाप्] १ ऐसा काम या बात जो भविष्य मे ईश्वरीय विधान के अनुसार अवश्य होने को हो। २ भाग्य।

भविता (तृ)—वि० [सं० √भू+तृच्] [स्त्री० भवित्री] १. आगे चलकर आने या होनेवाला। २ जो आगे चलकर अच्छा या उत्तम होने को हो। होनहार।

भविषय*—पुं०=भविष्य।

भविष्य—पु०[स०√भू (होना)+लृट्—शतृ, स्य, पृषो०, त–लोप] १ आनेवाला समय। वर्तमान के बाद आनेवाला काल। २ व्याकरण मे, भविष्यत् काल। (दे०)

भविष्य-गुप्ता—स्त्री०[स० ब० स०,+टाप्] वह गुप्ता नायिका जो रति मे प्रवृत्त होनेवाली हो और पहले से उसे छिपाने का प्रयत्न करे। भविष्य सुरति गुप्ता।

भविष्य-ज्ञान—पुं० [स० कर्म० स०] होनेवाली बातो की जानकारी।

भविष्यत्—पु०[स०√भू (होना)+लृट्—शतृ, स्य] वर्तमान काल के उपरान्त आनेवाला काल। आनेवाला समय। आगामी काल। भविष्य।

भविष्यत्-काल—पु०[सं०कर्म० स०]व्याकरण मे, क्रियापद का वह रूप जो भविष्य मे क्रिया के घटित होने की सूचना देता है। क्रियापद के इस रूप मे गा, गी, गे आदि जुड़े होते है।

भविष्यदाक्षेप—पु०[स० भविष्यत्-आक्षेप, कर्म० स०] साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार।

भविष्यद्वक्ता (क्तृ)—पुं० [सं० भविष्यत्-वक्तृ, प० त०]१ भविष्य में होनेवाली घटनाओं का कथन करनेवाला। २. ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी—स्त्री० [सं० भविष्यत्-वाणी, प० त०] ऐसा कथन या वक्तव्य जो भविष्य मे होनेवाली किसी घटना कि अग्रिम सूचना देता हो। आने या होनेवाली घटना का पहले से कथन।

भविष्य-निधि—स्त्री० [स० प० त०]१. भविष्य में होनेवाली आवश्यकताओं या स्थितियों के निमित्त सचित किया जानेवाला कोश या धन-राशि। २. आज-कल नियोक्ता द्वारा कर्मचारी के लिए सचित किया जानेवाला धन जो कर्मचारी की सेवा छोड़ने के समय दिया जाता है। निर्वाह-निधि।(प्राविडेंट फड) ३ वह धन जो उक्त निधि मे समय-समय पर कर्मचारी या नियोक्ता जमा करते है।

भविष्य-पुराण—पु०[स० मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक।

भविष्य सुरति गोपना—स्त्री०=भविष्य गुप्ता (नायिका)।

भवीला†—वि०[हिं० भाव+ईला (प्रत्य०)] १. भावपूर्ण। २. बाँका। तिरछा।

भवेश—पु०[स० भव-ईश, प० त०]१ ससार का स्वामी परमेश्वर। २. शिव।

भव्य—वि०[स०√भू (होना)+यत्] [भाव० भव्यता]१ जो देखने मे बडा और सुन्दर जान पड़े। शानदार। २ मंगलदायक। शुभ। ३. सच्चा। सत्य। ४. योग्य। लायक। ५ भविष्य मे आने या होनेवाला। ६ जिसे जन्म धारण करना पड़ता हो।
पुं०१ भलता नामक वृक्ष। २. कमरख। ३. नीम। ४. करेला। ५. मनु चाक्षुष के अन्तर्गत देवताओं का एक वर्ग। ६ ध्रुव का एक पुत्र। ७ वह जिने लिंगपद की प्राप्ति हो। भवसिद्धक। (जैन)

भव्यता—स्त्री०[सं० भव्य+तल्,+टाप्] भव्य होने की अवस्था या भाव।

भव्या—स्त्री०[सं० भव्य+टाप्]१. उमा। पार्वती। २. गजपीपल।

भष—पु०[स० √भष् (भूँकना)+अच्] कुत्ता।
†पु०=भक्ष्य (आहार या भोजन)।

भषण—पु०[स०√भष्+ल्युट्—अन]१ भूँकना। २. कुत्ता।
†पु०=भक्षण (खाना)।

भषना*—स०[सं० भक्षण] भोजन करना। खाना।

भसंधि—स्त्री० [सं० प० त०] ज्योतिष मे, अश्लेषा, ज्येष्ठा, और रेवती नक्षत्रो के चौथे चरण के बाद के नक्षत्रो से सधि।

भसकाना—स०=भकोसना। उदा०—आफू पाय भाँगि भसकावै।—गोरखनाथ।

भसन—पु०[स०√भस् (प्रकाश करना)+ल्यु–अन] भ्रमर। भौंरा।

भसना—अ० [बँ०] १. पानी के ऊपर तैरना। २ पानी मे डाला या डुबाया जाना।

भसमत*—वि० [स० भस्म] जो भस्म हो चुका हो। जला हुआ।

भसम—वि०, पु०=भस्म।

भसम पत्ती—स्त्री० [सं० भस्म] गाँजा। (गँजेडी)

भसमा—पु० [स० भस्म] पीसा हुआ आटा। (साधुओ की परिभाषा)
पु०[अ० वस्म'] १ नील की पत्तियो का चूरा या बुकनी जिसके घोल

से सफेद वाल काले किये जाते थे। २ किसी प्रकार का खिजाव।

भसाकू—पु० [हिं० तमाकू का अनु०] घटिया तमाकू जिसका धूआँ पीने पर कडआ न लगता हो।

भसान—पु० [वँ० भसाना] १ जल मे भसाने या डुवाने की क्रिया या भाव। २. पूजा के उपरात देवी-देवता आदि की मूर्ति को किसी नदी मे प्रवाहित करना। जैसे—काली भसान, सरस्वती भसान।

भसाना—स० [वँ०] १ किसी चीज को पानी मे तैरने के लिए छोडना। जैसे—जहाज भसाना (लश०), मूर्ति भसाना। २ पानी मे डालना या डुवाना।

भसिंड, भसींड—स्त्री० [देश०] कमल की नाल जिसकी तरकारी वनती है। मुरार। कमलनाल।

भसुड—पु० [सं० मुशुण्ड] हाथी। गज।

वि० वहुत मोटा-ताजा या भारी-भरकम परन्तु वेडौल या भद्दा।

भसुर—पु० [हिं० ससुर का अनु०] विवाहिता स्त्री के विचार से उसके पति का वडा भाई। जेठ।

भसूँड़—पु० [स० भुशुंड] हाथी का सूँड। (महावत)

भस्त्रा—स्त्री० [स०√भस् (प्रकाश करना)+त्रम्+टाप्] आग सुलगाने की भाथी।

भस्म—वि० [स० भस+मनिन्, न-लोप] जो पूरी तरह से जलकर राख हो गया हो।

पु० १ कोयले, लकडी आदि के जल जाने पर वची हुई राख। २ चिता की राख जो पुराणानुसार शिव जी अपने शरीर मे लगाते हैं।

क्रि० प्र०—रमाना।—लगाना।

३ विशेष प्रकार से तैयार की हुई अथवा अग्निहोत्र मे की राख जो पवित्र मानी जाती है और जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा अगो मे लगाते अथवा साधु लोग सारे शरीर मे लगाते हैं। ४ वैद्यक मे, किसी धातु को फूँककर तैयार की हुई राख जो चिकित्सा के काम आती है। जैसे—लौह भस्म, स्वर्ण भस्म। ५ एक प्रकार का पथरी रोग।

भस्मक—पु० [स० भस्मन्+कन् वा भस्मन्√कृ+ड] १ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे सब कुछ खाया हुआ तुरन्त पच जाता है, और फिर खाने की इच्छा होती है। इसे 'भस्मकीट' भी कहते है। २ आधुनिक रसायन मे वह भस्म या राख जो किसी धातु के पूरी तरह से जल जाने पर वच रहती है। ३ सोना। स्वर्ण। ४. विडग।

वि० भस्म करनेवाला।

भस्मकारी (रिन्)—वि० [स० भस्मन्√कृ (करना)+णिनि] जलाकर भस्म करनेवाला।

भस्म-गंधा—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] रेणुका (गधद्रव्य)।

भस्म-गर्भ—पु० [स० व० स०] तिनिश वृक्ष।

भस्म-गर्भा—स्त्री० [व० स०,+टाप्] १ रेणुका नामक गध-द्रव्य। २ शीशम।

भस्म-जावाल—पु० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

भस्मता—स्त्री० [स० भस्मन्+तल्+टाप्] भस्म होने की अवस्था या भाव।

भस्म-तूल—पु० [स० भस्मन्√तूल्+क] तुषार। पाला।

भस्म-प्रिय—पु० [स० व० स०] शिव। महादेव।

भस्म-वेधक—पुं० [उप० मि० स०] कपूर।

भस्म-शयन—पु० [स० व० स०] शिव।

भस्मशायी (यिन्)—पु० [स० भस्मन्√शी (शयन करना)+णिनि] शिव।

भस्मसात्—वि० [स० भस्मन्+साति] जो जलकर भस्म या राख हो गया हो। भस्मीभूत।

भस्म-स्नान—पु० [स० तृ० त०] सारे शरीर मे राख मलना। (साधु)

भस्माग्नि—स्त्री० [स० भस्मन्-अग्नि, मध्य० स०] भस्मक रोग।

भस्मावशेष—पु० [स० भस्म-अवशेष, कर्म० स० या व० स०] किसी चीज के पूरी तरह से जल जाने पर वचनेवाली उसकी राख या और किसी प्रकार का पूर्ण विनष्ट अंश।

भस्मासुर—पु० [स० भस्मन्-असुर, मध्य० स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने शिव जी से यह वर प्राप्त किया था कि जिसके सिर पर मैं हाथ रखूँ वह भस्म हो जाय। पर जव वह शिव को ही भस्म करने चला, तव कृष्ण ने उसे मार डाला था।

भस्मित—भू० कृ० [स० भस्मन+इतच्] १ भस्म किया या जलाया हुआ। २ जो जलकर भस्म हो चुका हो।

भस्मीभूत—भू० कृ० [स० भस्मन्+च्वि, इत्व, दीर्घ, भस्मी√भू+क्त] जो पूरी तरह से जलकर राख हो चुका हो।

भस्सड—वि० [अनु० भस्म] वहुत मोटा और भद्दा (विशेषत आदमी)।

भस्सी—स्त्री० [?] कोयले, चूने आदि का महीन चूर्ण।

भहराना—अ० [अनु०] १ झोके से गिर या फिसल पडना। एकाएक गिर पडना। २ किसी पर अचानक वेगपूर्वक टूट पडना। ३ किसी काम मे सारी शक्ति लगाकर और जोरो से लगना। (व्यग्य)

भहूँ†—स्त्री०=भौह।

भाँई—पु० [हिं० भाना=घुमाना] खरादनेवाला। खरादी। कूनी।

भाँउर†—स्त्री०=भाँवर।

भाँऊँ*—पु० [स० भाव] अभिप्राय। आशय।

भाँकडी—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली झाड जो गोखरू से मिलता-जुलता होता है।

भाँग—स्त्री० [स० भृँग या भृगी] एक प्रसिद्ध क्षुप जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं, और नशे के लिए पीसकर पी जाती है।

मुहा०—भाँग छानना=भाँग की पत्तियो को पीसकर और छानकर नशे के लिए पीना। भाँग खा जाना या पी जाना=नशे की सी वाते करना। नासमझी की या पागलपन की वातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना=वहुत ही कगाल या दरिद्र होना।

पु० [?] वैश्यो की जाति।

भाँगड़ा†—पु०=भँगडा।

भाँगर—स्त्री० [हिं० भाँगना=तोडना] धातु आदि की गर्द या छोटे छोटे कण।

भाँज—स्त्री० [हिं० भाँजना] १ भाँजने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के भाँजे जाने के कारण पड़नेवाला चिह्न या रेखा। ३ वह धन

जो रुपया, नोट आदि भँजाने अर्थात् भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई। ४. ताने का सूत। (जुलाहे)

स्त्री० [सं० भंज] बारी।

भाँजना—स० [हिं० भँजना] १. किसी लम्बी चौड़ी चीज की परत या परतें लगाना। तह करना। मोड़ना। जैसे—कपड़ा या कागज भाँजना। २. तलवार, पटा, मुगदर, लाठी आदि के सम्बन्ध में, हाथ में लेकर अभ्यास, प्रदर्शन, वार, व्यवहार आदि के लिए इधर-उधर घुमाना। ३. दो या कई लड़ों को एक में मिलाकर बटना या सरेटना।

भाँजा†—पुं०=भानजा।

भाँजी—स्त्री० [हिं० भाँजना=मोड़ना] ऐसी बात जो जान-बूझकर किसी का काम बिगाड़ने के लिए किसी दूसरे से कही जाय।

मुहा०—भाँजी मारना=किसी से किसी के विरुद्ध उक्त प्रकार की बात कहना।

भाँट—पुं० =भाट।

†पुं०=भंटा (बैंगन)।

भाँटा†—पुं०=भंटा (बैंगन)।

भाँड़—पुं० [सं० भाँड, प्रा० भांडा] १. बरतन। भाँड़ा। २. घी, तेल आदि रखने का कुप्पा। ३. कोई उपकरण या औजार। ४. वाद्य-यंत्र। बाजा। ५. खरीदा या बेचा जानेवाला माल। ६. नदी का पेट। ७. गर्दभांड वृक्ष।

पुं० [सं० भट] १. एक जाति जिसके पुरुषों का पेशा नाटक आदि खेलना, गाना-बजाना, हास्यपूर्ण स्वांग भरना, नकलें उतारना आदि है। २. वह व्यक्ति जो बहुत अधिक तथा प्रायः निम्न कोटि के परिहास से लोगों को हँसाता रहता हो। मसखरा। विदूषक। ३. बोल-चाल में ऐसा व्यक्ति जिसके पेट में बात न पचती हो और जो कोई बात सुन लेने पर सब जगह कहता-फिरता हो। ४. भाँड़ों का-सा गुल-गपाड़ा या हो-हल्ला।

भांड—पुं० [सं०√भण् (शब्द)+ड+अण्] १. पात्र। बरतन। २. मूलधन। पूँजी। ३. भूषण। ४. गर्दभांड वृक्ष।

भांड-कला—स्त्री० [सं०] मिट्टी के बरतन आदि बनाने की कला।

भांड-गोरक—पुं० [सं० ष० त०] वह जो प्राचीन काल में बौद्ध विहारों में बरतन आदि सुरक्षापूर्वक रखने का काम करता था।

भाँड़ना*—अ० [सं० भट] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारे मारे फिरना। २. किसी पर अनुरक्त होना। ३. किसी ओर प्रवृत्त होना। ४ किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव करना। उदा०—सो बौरै जा को जिउ भाँड़ै।—जायसी।

स० १. किसी के अपराधों, कुकृत्यों, दोषों आदि की जगह जगह चर्चा करके उसे बदनाम करना। २ किसी का भंडा फोड़ना या उसे नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाड़ना।

भांड-पति—पुं० [सं० ष० त०] व्यापारी।

भाँड़पन—पुं० [हिं० भाँड़+पन (प्रत्य०)] १. भाँड होने की अवस्था या भाव। २. भाँड़ों का सा आचरण।

भांड-शाला—स्त्री० [सं० ष० त०] भंडार।

भाँड़ा—पुं० [सं० भाण्ड] खाने-पीने की चीजें आदि रखने का बरतन। बासन। पात्र। (पश्चिम)

मुहा०—भाँड़े भरना=पश्चात्ताप करना। पछताना। उदा०—रिसनि आगे कहि जो आवति अब लै भाँड़े भरति।—सूर।

†पुं०=भाँड़पन।

भांडागार—पुं० [सं० भांड-आगार] १. वह आगार या कोठरी जिसमें वस्तुएँ विशेषतः घरेलू उपयोग की वस्तुएँ रखी जाती हैं। २ भंडार।

भांडागारिक—पुं० [सं० भांडागार+ठन्—इक] भांडागार या भंडार का प्रधान अधिकारी।

भांडार—पुं० [सं० भांड√ऋ (गति)+अण्] १. वह कमरा या कोठरी जिसमें घरेलू उपयोग में आनेवाली तरह तरह की बहुत सी वस्तुएँ रखी जाती हैं। २. वह स्थान जहाँ बेची जानेवाली बहुत सी चीजें जमा की तथा सुरक्षित रखी जाती हैं। (स्टाक) ३. आधार स्थान। ४ कोश। खजाना।

भांडार-पंजी—स्त्री० [सं० ष० त०] वह पंजी या बही जिसमें भांडार में रखी जानेवाली चीजों की संख्या और विवरण लिखा रहता है। (स्टाक-बुक)

भांडार-पाल—पुं० [सं० भांडार√पाल्+णिच्+अच्] १. भांडार का मुख्य अधिकारी। २. वह जिसका भांडार हो। भंडार का स्वामी। (स्टाकिस्ट)

भांडारी(रिन्)—पुं० [सं० भांडार+इनि] भांडारपाल। (दे०)

भाँड़पा†—पुं०=भाँड़पन।

भाँण—पुं० =भानु (सूर्य)। उदा०—जाँगे उदयाचल उगइ छइ भाँण। नरपति नाल्ह।

†पुं०=भाण।

भाँत*—स्त्री० [सं० भक्ति] १ तरह। प्रकार। २ किसी चीज की बनावट या रचना का विशिष्ट ढंग या प्रकार। तर्ज। परिरूप। (डिजाइन)

भाँत-भतीला†—वि० [हिं० भाँत+अनु० भतीला] [स्त्री० भाँत-भतीली] (वस्त्र) जिस पर अनेक प्रकार की आकृतियाँ, बेल-बूटे आदि बने हों।

भाँति—स्त्री० [सं० भक्ति] १ तरह। प्रकार। जैसे—वहाँ भाँति भाँति की चीजें रखी हुई थीं। २. चाल-ढाल। रंग-ढंग। ३. आचार, व्यवहार आदि की मर्यादा। ४. प्रथा। रीति। रंग-ढंग।

भाँपना—स० [?] १. क्रियाओं चेष्टाओं, परिस्थितियों, लक्षणों आदि से यह अनुमान करना कि वस्तु-स्थिति क्या है, किसी के मन में क्या है अथवा कोई छिपकर क्या करना चाहता है अथवा क्या कर रहा है। २. देखना। (बाजारू)

भाँपू—वि० [हिं० भाँपना] भाँपनेवाला।

भाँभी†—पुं० [?] मोची। (डि०)

भाँयँ भाँयँ—पुं० [अनु०] १. नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में हवा के चलने से होनेवाला शब्द। २. ऐसी परिस्थिति या वातावरण जिसमें बहुत अधिक उदासीनता या सूनापन जान पड़े।

मुहा०—(किसी स्थान का) भाँयँ भाँयँ करना=बहुत ही उदास, डरावना और सूना जान पड़ना।

भाँरी†—स्त्री०=भाँवर।

भाँवता†—पुं०=भावता।

भाँवना—स०[सं० भ्रमण] १ किसी चीज़ को खराद आदि पर रख कर घुमाना। २. खरादना। कुनना ३ अच्छी तरह गढकर सुन्दर और सुडौल बनाना। ४ दही या मट्ठा मथना। उदा०—मट्ठा माँवने के समय हँसुली नाचती होगी। –वृंदावनलाल वर्मा।
अ० १. चक्कर या फेरा लगाना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भाँवर—स्त्री०[सं० भ्रमण] १. चारो ओर घूमना या चक्कर काटना। घुमरी लेना। २. परिक्रमा। फेरी।
मुहा०—भाँवर भरना=परिक्रमा करना।
३. विवाह हो चुकने पर वर और वधू के द्वारा की जानेवाली अग्नि की परिक्रमा।
क्रि० प्र०—पड़ना।—पारना।—फिरना।—भरना।—लेना।
४ हल जोतने के समय एक बार खेत के चारों ओर घूम आना।
†पु०=भौंरा।

भाँवरी *—स्त्री०=भाँवर।

भाँस—स्त्री०[?] आवाज। शब्द।

भा—स्त्री० [स०√भा (प्रकाश करना)+अङ्+टाप्] १. दीप्ति। चमक। २. प्रकाश। रोशनी। ३. छटा। छवि। शोभा। ४. किरण। रश्मि। ५ बिजली। विद्युत्।
अव्य० [हिं० भाना] यदि इच्छा हो।

भाइ*—पुं०[स० भाव] १ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. प्रकृति। स्वभाव। ३ मन मे उठनेवाला भाव या विचार।
स्त्री० [हिं० भाँति] १. भाँति। प्रकार। तरह। २. चाल-ढाल। रंग-ढग।
†स्त्री०=मट्ठी। (राज०)
पु०[स० भाव] १. भाव। विचार। २. प्रीति। प्रेम। ३. स्वभाव।
स्त्री० आभा। चमक।

भाइप*—पु० [हिं० भाई+प(पन) (प्रत्य०)] १. भाईचारा। २. गहरी दोस्ती। घनिष्ठ मित्रता।

भाई—पु० [सं० भ्रातृ] १ किसी प्राणी के संबंध के विचार से वह नर प्राणी जो उसी के माता-पिता अथवा माता या पिता से उत्पन्न हुआ हो। भ्राता। सहोदर। २. एक ही वंश या परिवार की किसी एक पीढी के व्यक्ति की दृष्टि से उसी पीढी का कोई दूसरा पुरुष। जैसे—चाचा का लडका=चचेरा भाई, फूफी का लडका=फुफेरा भाई, मौसी का लडका=मौसेरा भाई, मामा का लडका =ममेरा भाई। ३ अपनी जाति या समाज का कोई ऐसा व्यक्ति जिसके साथ समानता का व्यवहार होता है। जैसे—जाति भाई, मुँह बोला भाई।
†अव्य०=भई। (सम्बोधन)

भाईचारा—पु०[हिं० भाई+स० आचार] दो व्यक्तियो या पक्षो मे होनेवाला ऐसा आत्मीयतापूर्ण संबंध जिसमे सामाजिक अवसरो पर भाइयो की तरह आपस मे लेन-देन होता है।

भाई-दूज—स्त्री० [हिं० भाई+दूज] कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भयादूज। (इस दिन बहन अपने भाई को टीका लगाती, भोजन कराती तथा फल, मिठाई आदि देती है।)

भाईपन—पु०[हिं० भाई+पन(प्रत्य०)] १. भाई होने की अवस्था या भाव। भ्रातृत्व। २. घनिष्ठ आत्मीयता या बंधुता। भाई-चारा।

भाई-बंद—पु०[हिं० भाई+बंधु] १. भाई और मित्र-बंधु आदि। २. अपनी जाति बिरादरी या नाते के ऐसे लोग जिनके साथ भाइयों का-सा व्यवहार होता हो।

भाई-बंधु—पु०= भाई-बंद।

भाई-बिरादरी—स्त्री०[हिं० भाई+बिरादरी] एक ही जाति या समाज के वे लोग जिनके साथ आत्मीयता का और भाइयों का-सा व्यवहार होता हो।

भाउ*—पुं० [स० भाव] १. मन में उत्पन्न होनेवाला भाव या विचार २ प्रीति। प्रेम। ३ दे० 'भाव'।
पु०[सं० भव] १ उत्पत्ति। २ जन्म।

भाऊ*—पु० [स० भाव] १. मन मे उठनेवाला भाव, भावना या विचार। २. प्रीति। प्रेम। स्नेह। ३. प्रकृति। स्वभाव। ४. अवस्था। दशा। हालत। ५. महत्व। महिमा। ६ आकृति। रूप। ७ प्रभाव। ८. मनोवृत्ति।

भाएँ*—क्रि० वि० [सं० भाव] समझ मे। बुद्धि के अनुसार।

भाकर—पु०[सं०] १ पुराणानुसार नैर्ऋत्य कोण मे का एक देश। २. भास्कर। सूर्य।
वि० १ भा अर्थात् प्रकाश करनेवाला। २ दमकानेवाला।

भाकसी—स्त्री०[स० भस्मी] १. भट्ठी। २. भाड़। भड़साईं।

भाकुर—स्त्री० [स०?] १ एक प्रकार की मछली जिसका सिर बहुत बड़ा होता है। २. दे० 'भकाऊँ'।
वि० बहुत बड़ा और विकराल।

भाकूर—स्त्री०[स०] एक तरह की मछली।

भा-कोश—पु०[स० ष० त०] सूर्य।

भाक्त—वि०[स० भक्ति या भक्त+अण्] १. जिसका पालन-पोषण दूसरे लोग करते हों। दूसरो की कृपा से जीवित रहनेवाला। पराश्रित। २ जो खाये जाने के योग्य हो। खाद्य। ३. कम महत्त्व का या घट कर। गौण। जैसे—कुछ साहित्यकार ध्वनि को भाक्त (गौण और लक्षण-गम्य) मानते हैं।
पु० चावल।

भाख†—पु०=भाषण।

भाखना*—स० [स० भाषण] कहना। बोलना।

भाखर—पु०[?] पर्वत। पहाड़। (डिं०)

भाखा—स्त्री०[स० भाषा] १ मुँह से कही हुई बात। कथन। २ मध्ययुग मे हिंदी भाषा के लिए प्रयुक्त होनेवाली उपेक्षासूचक संज्ञा। ३ बोली। भाषा।

भाग—पु० [सं०√भज् (विभाग करना)+घञ्] १ किसी चीज के कई खंडो, टुकड़ों या विभागो मे से हर एक। हिस्सा। (पार्ट) जैसे—पुस्तक का पहला और दूसरा भाग छप गया है, तीसरा और चौथा अभी छपना बाकी है। २ किसी चीज की किसी ओर या दिशा का अंश या पार्श्व। जैसे—(क) मकान का अगला भाग। ३. किसी समूची और पूरी चीज का कोई अंश। (पोर्शन) जैसे—पेट के बीच का भाग। ४. किसी चीज का एक चौथाई अंश। ५. वृत्त की परिधि का ३६० वाँ अंश। ६ गणित की वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई बराबर खंडो या टुकडों मे बाँटी जाती है। तकसीम। (डिवीजन) जैसे—

भागिनेय—पु०[सं० भगिनी+ढक्—एय] [स्त्री० भागिनेयी] बहन का लड़का। भानजा।

भागी (गिन्)—पुं० [स० √भज्+घिनुण] १ वह जो किसी प्रकार का भाग पाने का अधिकारी हो। हिस्सेदार। २ वह जिसने किसी के कार्य मे सहायता दी हो और फलत अपने उतने कार्य के फल का पात्र या भाजन हो। जैसे—पाप का भागी।
पु० शिव।

भागीरथ—पु०=भगीरथ।
वि०[स० भगीरथ+अण्] भगीरथ-सबधी।

भागीरथी—स्त्री० [स० भागीरथ+ङीप्] १ गंगा नदी । जाह्नवी। २ बगाल की एक नदी जो गगा मे मिलती है। ३ हिमालय की एक चोटी जो गढवाल के पास है।

भागुरि—पु०[स०] साख्य के भाष्यकर्ता एक ऋषि का नाम।

भागू—वि०[हिं० भागना+ऊ (प्रत्य०)] भागनेवाला।
पु० भगोड़ा।

भागौत—पु०=भागवत।

भाग्य—वि०[स०√भज्+ण्यत्, कुत्व] जिसके भाग अर्थात् हिस्से हो सकते हो या होने को हो। भागार्ह।
पु० १. वह ईश्वरीय या दैवी विधान जिसके सबध मे यह माना जाता है कि प्राणियो, विशेषत मनुष्यो के जीवन मे जो घटनाएँ घटती हैं, वे पूर्व-निश्चित और अवश्यभावी होती है और उन्ही के फलस्वरूप मनुष्यो को सब प्रकार के सुख-दु ख प्राप्त होते है और उनके जीवन का क्रम चलता है। किस्मत। तकदीर। नसीब।
विशेष—साधारणत लोक मे इसका निवास मनुष्य के ललाट मे माना जाता है।
क्रि० प्र०—खुलना।—चमकना।—फूटना।
पद—भाग्य का साँढ=बहुत बड़ा भाग्यवान्। (परिहास और व्यग्य)
मुहा० के लिए देखें 'किस्मत' के मुहा०।
२ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का एक नाम।

भाग्यदा—स्त्री०[स० भाग्य√दा (देना)+क+टाप्] चिट्ठी निकालकर टिकट खरीदनेवालो मे इनाम बाँटने की पद्धति जिसमे केवल भाग्य से ही लोगो को धन मिलता है। (लॉटरी)

भाग्य-पत्रक—पु०[स०मध्य० स०] आकस्मिक रूप से उठाई या चुनी हुई दो या अधिक परचियो मे से कोई एक जिस पर कुछ लिखा रहता और जिसके अनुसार धन-सपत्ति आदि का बँटवारा, कोई नियुक्ति या निश्चय किया जाता है। (लाट)

भाग्य-भाव—पु०[प० त०] जन्म-कुडली मे जन्म-लग्न से नवाँ स्थान जहाँ से मनुष्य के भाग्य के शुभाशुभ का विचार किया जाता है। (फलित-ज्योतिष)

भाग्य-योग—पु०[स० प० त०] ऐसा अवसर या समय जिसमे किसी का भाग्य खुलता या चमकता हो।

भाग्य-लिपि—स्त्री०[स० ष० त०] भाग्य मे लिखी हुई बातें।

भाग्य-वश—अव्य०[स० प० त०] भाग्य या किस्मत से ही (बुद्धि बल या प्रयत्न से नही)।

भाग्य-वशात्—अव्य०[स० प० त०]=भाग्य-वश।

भाग्य-वाद—पु०[स० प० त०] यह विचार-धारा या सिद्धान्त कि भाग्य मे जो कुछ बदा या लिखा है वह अवश्य होगा और जितना बदा या लिखा है उतना नियत समय पर अवश्य प्राप्त होगा।

भाग्यवादी (दिन्)—वि०[स० भाग्यवाद+इनि] भाग्यवाद-सबधी।
पु० वह जो भाग्य पर भरोसा रखता हो।

भाग्यवान् (वत्)—वि०[स०=भाग्य+मतुप्] जो भाग्य का धनी हो। अच्छे भाग्यवाला। भाग्यशाली।

भाग्य-विधाता (तृ)—पु० [स० प० त०] किसी के भाग्य का विधान अर्थात् भला-बुरा निश्चित करनेवाला।

भाग्य-विप्लव—पु०[स० प० त०] अच्छे भाग्य का बिगड़कर बुरा होना। दुर्भाग्य।

भाग्यशाली (लिन्)—वि०[स०भाग्य√शाल्+णिनि] भाग्यवान्। (दे०)

भाग्य-सपद्—स्त्री०[प० त०] अच्छा भाग्य। सौभाग्य।

भाग्य-हीन—वि०[स० तृ० त०] अभागा। बद-किस्मत।

भाग्योदय—पु० [स० भाग्य-उदय, प० त०] भाग्य का खुलना। सौभाग्य का समय आना।

भाजक—वि० [सं० √भज्+ण्वुल्—अक] १. विभाग करनेवाला। २ बाँटनेवाला।
पु० गणित मे वह राशि या सख्या जिससे भाज्य को भाग दिया जाता जाता है। (डिवाइज़र)

भाजकांश—पु०[स०भाजक-अश, कर्म० स०] गणित मे, वह सख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर शेष कुछ भी न बचे। गुणनीयक।

भाजन—पु०[स०√भाज् (पृथक् करना)+ल्युट्—अन] १ बरतन। २. आधार। ३ किसी काम या बात का अधिकारी या पात्र। जैसे—कृपा-भाजन, कोप-भाजन, विश्वास-भाजन आदि। ४. आढक नामक तौल। ५. भाग करना। (गणित)

भाजनता—स्त्री०[स० भाजन+तल्+टाप्] १ भाजन होने की अवस्था या भाव। २ पात्रता। योग्यता।

भाजना*—अ० भागना।

भाजित—भू० कृ०[स० √भाज्+क्त, इत्व] १. बाँटकर अलग किया हुआ। विभक्त। २ (सख्या) जिसको दूसरी सख्या से भाग दिया जाय।

भाजी—स्त्री०[स०√भाज्+घञ्+ङीप्] १ माँड। पीच। २ तरकारी, साग आदि चीजे। ३ मेथी। ४. मागलिक अवसरो पर सम्बन्धियो आदि के यहाँ भेजे जानेवाले फल और मिठाइयाँ।
क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।
५ भाग। हिस्सा।

भाज्य—पु०[स०√भाज्+ण्यत्] जिसका विभाजन हो सके। जिसके हिस्से किये जा सकें।
पु० गणित मे वह सख्या जिसका भाजक से भाग किया जाता है।

भाट—पु०[स० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १ राजाओ के यश का वर्णन करनेवाला कवि। चरण। बदी। २. एक जाति जिसके लोग राजाओं का यश-गान करते थे, और अब कुलो, परिवारो आदि की वशावलियाँ याद रखते और उनकी कीर्ति का वर्णन करते हैं। ३ राजदूत। ४.

रोशनी। २ चमक। दीप्ति। ३ ज्ञान। बोध। ४ किसी चीज या बात के लक्षणो से होनेवाला ज्ञान। आभास। उदा०—हो गया भस्म वह प्रथम भान।—निराला।
†पु०=भानु (सूर्य)।
†पु० दे० 'तुग' (वृक्ष)।

भानजा—पु० [हिं० बहन+जा] [स्त्री० भानजी] बहिन का लडका। भागनेय।

भानना*—स० [स० भजन, मि० प० भन्नना] १. भग्न करना। काटना या तोडना। २. नष्ट या बरबाद करना। ३. दूर करना। हटाना।
†स० [हिं० भान] १ आभास देखकर भान या ज्ञान प्राप्त करना। २ अनुमान से समझना।

भानमती—स्त्री० [स० भानुमती] जादू के खेल दिखलानेवाली स्त्री। जादूगरनी।
पद—भानमती का कुनबा—जहाँ-तहाँ से लिए हुए बेमेल उपादानो से बनी वस्तु। भानमती का पिटारा=वह आधान जिसमे तरह-तरह की चीजे मौजूद हो। (व्यग्य)

भानवीय—वि० [स० भानु+छ—ईय, गुण] भानु-संबधी। भानु का।
पुं० दाहिनी आँख।

भाना*—अ० [स० भान=ज्ञान] १ भान या आभास होना। जान पडना। मालूम होना। २. रुचिकर प्रतीत होना। अच्छा लगना। पसन्द आना। ३ शोभित जान पडना। फबना। सोहना।
स० [स० भा] १ उज्ज्वल करना। चमकाना। २ दीप्त या प्रकाशमान करना। ३ चारो ओर चक्कर देना। घुमाना। उदा०—चले पिता का चक्र नियम से, बैठ शिला पर तू शम-दम से, उठे एक आकृति क्रम क्रम से, भली भाँति मैं भाऊँ।—मैथिलीशरण गुप्त।

भानु—पु० [स० भा+नु] १. सूर्य। २ आक। मदार। ३ प्रकाश। ४ किरण। ५ विष्णु। ६ कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७ उत्तम मन्वतर के एक देवता। ८ राजा। ९ वर्तमान अवसर्पिणी के पद्रहवे अर्हत् के पिता का नाम। (जैन)
स्त्री० [स०] १ सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। २ दक्ष की एक कन्या।

भानु-कंप—पु० [स० प० त०] भारतीय ज्योतिष मे, कुछ अवसरो पर सूर्य-ग्रहण के समय सूर्य के बिंब मे होनेवाला कपन जो अमगल-सूचक माना गया है।

भानु-किरणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-केशर—पु० [स० व० स०] सूर्य।

भानुज—वि० [स० भानु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] [स्त्री० भानुजा] भानु से उत्पन्न।
पु० १ यम। २ शनैश्चर। ३ कर्ण।

भानुजा—स्त्री० [स० भानुज+टाप्] १ यमुना (नदी)। २ राधिका।

भानु-तनया—स्त्री० [स० प० त०] यमुना (नदी)।

भानु-दिन—पु० [स० ष० त०] रविवार।

भानु-दीपक—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भानु-देव—पु० [स० कर्म० स०] सूर्य्य।

भानु-पाक—पु० [स० तृ० त०] १. सूर्य के ताप मे कोई चीज पकाने की क्रिया। २ वह चीज विशेषत. ओषधि जो धूप मे रखकर पकाई गई हो।

भानु-प्रताप—पु० [स० व० स०] १ रामचरित मानस मे वर्णित एक राजा जो कैकय देश के राजा सत्यकेतु का पुत्र था तथा जो दूसरे जन्म मे रावण के रूप मे जन्मा था। २. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भानु-फला—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] केला।

भानु-मंजरी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-मत्—वि० [सं० भानु+मतुप्] १ प्रकाशमान्। चमकीला। २. सुन्दर।
पु० १ सूर्य। २ श्री कृष्ण का एक पुत्र।

भानुमती—स्त्री० [सं० भानुमत्+ङीप्] १ विक्रमादित्य की रानी जो राजा भोज की कन्या थी। २. अगिरस की एक कन्या। ३ दुर्योधन की स्त्री। ४. राजा सगर की एक स्त्री। ५ गगा। ६ जादूगरनी। ७ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-मुखी—पु० [स० व० स०,+ङीष्] सूर्यमुखी। (पौधा और फूल)

भानु-वार—पु० [स० ष० त०] रविवार।

भानु-सुत—पु० [स० प० त०] १ यम। २. मनु। ३ शनैश्चर। ४. कर्ण।

भानु-सुता—स्त्री० [स० प० त०] यमुना (नदी)।

भाप—स्त्री० [स० वाष्प; पा० वप्प] १ किसी तरल पदार्थ विशेषत. जल का वह अदृश्य वाष्पीय रूप जो उसे खौलाने पर प्राप्त होता है तथा जिसका आज-कल शक्ति के प्रमुख साधन के रूप मे उपयोग होता है। (स्टीम)
क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।
२ मुँह से निकलनेवाली हवा।
मुहा०—भाप भरना=पक्षियो का अपने छोटे बच्चो के मुँह मे मुँह मिलाकर उनमे अपने साँस की हवा फूँकना जिससे वे सशक्त होते हैं। भाप लेना=भाप के द्वारा शरीर अथवा उसके किसी अग को सेकना।
३ भौतिक शास्त्र मे, घन या द्रव पदार्थ की वह अवस्था जो उनके बहुत तपकर वायु मे विलीन होते समय अथवा कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओ के द्वारा होता है। (वेपर)

भापना—स० [हिं० भाप] भाप भरना (भाप के अन्तर्गत मुहा०)।
†अ०=भाँपना।

भाफ†—स्त्री०=भाप।

भाबर—पु० [स० वप्र] १. तलहटी और तराई के मध्य के जगलो की संज्ञा। २. एक तरह की घास जिसे बटकर रस्सी का रूप दिया जाता है। बनकस। बबरी। बबई।

भाभर—पु०=भाबर।

भाभरा*—वि० [हिं० भा+भरना] १ प्रकाशयुक्त। २ लाल। रक्ताभ।

भाभरी—स्त्री० [अनु०] १ गरम राख। भूभल। २. रास्ते की धूल। (पालकी ढोनेवाले कहार)

कुमारी तक और सिन्धु नदी से ब्रह्मपुत्र तक विस्तृत है। आर्यावर्त। हिन्दुस्तान।

भारतवर्षीय—वि० [स० भारतवर्ष+छ—ईय] भारतवर्ष-सबधी। भारतवर्ष का।

भारतवासी(सिन्)—पु० [स० भारत√वस् (निवास करना)+णिनि] भारतवर्ष का निवासी। हिन्दुस्तान का रहनेवाला।

भारत-विद्या—स्त्री० [स०] पुरातत्त्व की वह शाखा जिसमे भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास, दर्शन, धर्म, भाषातत्त्व, साहित्य आदि का अनुसधानात्मक अध्ययन और विवेचन होता है। (इण्डोलॉजी)

भारति—स्त्री०=भारती।

भारती—स्त्री० [स०√भृ (भरण करना)+अतच्,+अण्+डीप्] १ वचन। वाणी। २ सरस्वती। ३. साहित्य मे एक प्रकार की वृत्ति (पुरुषार्थभावक व्यापार) जिसका प्रयोग मुख्यत रौद्र तथा वीभत्स रस में होता था परन्तु आज-कल इसका सबध पाठ्य अभिनय और रसाभिनय से जोडा गया है। ४ एक प्राचीन नदी का नाम। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६ दश-नामी संन्यासियो का एक भेद या वर्ग। जैसे—स्वामी परमानन्द भारती। ७ ब्राह्मी नाम की बूटी। ८ एक प्रकार का पक्षी।

भारतीय—वि० [सं० भारत+छ—ईय] १. भारत देश मे उत्पन्न होनेवाला अथवा उससे सबध रखनेवाला। जैसे—भारतीय पूँजी, भारतीय विचारधारा, भारतीय व्यापार। २. (व्यक्ति) जो भारत मे बसी हुई अथवा रहनेवाली किसी जाति का हो। जैसे—भारतीय मुसलमान या भारतीय मसीही।

भारतीयकरण—पु० [स०] किसी विदेशी ज्ञान, पदार्थ, विद्या आदि को ग्रहण करके उसे आत्मसात् करते हुए भारतीय रूप देने की क्रिया या भाव। (इन्डियनाइजेशन)

भारतीय वृत्त—पु० [स० कर्म० स०] =भारत-विद्या।

भार-तुला—स्त्री० [स०] वास्तुविद्या के अनुसार स्तभ के नौ भागो मे से पाँचवाँ भाग जो बीच मे होता है।

भारथ*—पुं० [हिं० भारत] १. भारतवर्ष। २. महाभारत। ३. युद्ध। लडाई।

पु० [सं०] भारद्वाज नामक पक्षी। भरदूल।

भारथी—पु० [सं० भारत] योद्धा। सैनिक।

स्त्री०=भारती।

भारथ्य—पु० [स० भारत] घमासान या घोर युद्ध।

भारदंड—पु० [स० ष० त०] १ एक प्रकार का साम। २ बँहगी।

पु० [हिं० भार+दड] एक प्रकार का दड जिसमे दड करनेवाला साधारण दड करते समय अपनी पीठ पर एक दूसरे आदमी को बैठा लेता है। (कसरत)

भारद्वाज—पु० [सं० भरद्वाज+अञ्] १ भरद्वाज के कुल मे उत्पन्न व्यक्ति। २ एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र है। ३ द्रोणाचार्य। ४ बृहस्पति का एक पुत्र। ५ मगल ग्रह। ६ एक प्राचीन देश। ७ अस्थि। हड्डी। ८. भरदूल पक्षी।

भारद्वाजी—स्त्री० [स०] जगली कपास का पौधा और उसकी रूई।

भार-धारक—पु० [स० ष० त०] वह जो भार विशेषत कार्यभार धारण कर रहा हो। (चार्ज-होल्डर)

भारना*—स० [हिं० भार] १. भार या बोझ लादना। २. किसी पर अपने शरीर का भार या बोझ देना या रखना। ३. दबाना।

भार-प्रमाणक—पु० [सं० भारण-प्रमाणक] वह प्रमाणक (प्रमाण-पत्र) जो इस बात का सूचक हो कि अमुक व्यक्ति ने दूसरे को अमुक कार्य, पद, कर्तव्य आदि का भार सौंप दिया है। (चार्ज सर्टिफिकेट)

भारभृत—वि० [स० भार√भृ+क्विप्, तुक्-आगम] बोझ ढोनेवाला।

भारमापी (पिन्)—पुं० [स० भार√मा+णिच्, पुक्,+णिनि] एक प्रकार का यत्र जिसमे पदार्थों का विशिष्ट गुरुत्व या तुलनात्मक भार जाना जाता है। (ग्रैवीमीटर)

भारमिति—स्त्री० [सं० ष० त०] [वि० भारमितीय] तरल और घन पदार्थों का विशिष्ट गुरुत्व या भार जानने की कला या विद्या।

भारय—पु० [सं० भा√रय् (गति)+अच्] एक तरह का पक्षी। भरदूल।

भार-यष्टि—स्त्री० [स० ष० त०] बहँगी।

भारव—पु० [स० भार√वा (प्राप्त होना)+क] धनुष की रस्सी। ज्या।

भारवाह—वि० [सं० भार√वह् (ढोना)+अण्] १ भार ढोनेवाला। २. कार्य-भार का वहन करनेवाला।

पु० बहँगी ढोनेवाला व्यक्ति।

भारवाह-अधिकारी—पु० [सं० कर्म० स०] वह अधिकारी जिस पर किसी पद और उनसे सबंध रखनेवाले कार्यों का भार हो। अधिकारी। (आफिसर इनचार्ज)

भारवाहक—वि०, पु० [स० ष० त०] =भारवाह।

भार-वाहन—पु० [स० ष० त०] बोझ ढोने की क्रिया या भाव।

भार-वाही(हिन्)—वि०, पु० [स० भार√वह्+णिनि]=भारवाह।

भारवि—पु० [स०] 'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध कवि।

भार-हानि—स्त्री० [स० ष० त०] भार या वजन मे होनेवाली कमी।

भारहारी (रिन्)—पु० [स० भार√हृ+णिनि] पृथ्वी का भार उतारनेवाले, विष्णु।

भारा—वि०=भारी।

पु० [हिं० भार] १ बोझ। २ भार या बँहगी जिस पर बोझ ढोते हैं। उदा०—लिअ फल मूल भेंट भरि भारा।—तुलसी।

†पु० भाला।

भाराक्रांत—वि० [स० भार-आक्रांत, तृ० त०] [भाव० भाराक्रांति] १ जिसके ऊपर किसी प्रकार का बडा भार हो। २ भार से पीडित तथा व्यथित। ३ (सपत्ति) जिस पर देन आदि का भार उसे रेहन रखकर डाला गया हो। (हाइपार्थेकेटेड)

भाराक्रांता—स्त्री० [स० भाराक्रांत+टाप्] एक प्रकार का वार्णिक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे न भ न र स और एक लघु और एक गुरु होते हैं और चौथे, छठे तथा सातवें वर्ण पर यति होती है।

भाराक्रांति—स्त्री० [स० भार-आक्रांति, तृ० त०] १ भाराक्रांत होने

की अवस्था या भाव। २. मेहनत करके संपत्ति पर देन का भार लगाना। (हाइपॉथिकेशन)

भारि—पुं० [सं० ष० त०, पृषो० उ—लोप] सिंह।

भारिक—वि० [सं० भार+ठन्—इक] १. बोझ ढोनेवाला। २. जिसमें भार हो या जिसके कारण भार पड़े। दे० 'निर्णायक'। जैसे—भारिक मत।

भारिक मत—पुं० [सं० कर्म० स०] दे० 'निर्णायक मत'।

भारित—भू० कृ० [सं० भार+इतच्] १. जिस पर कोई भार या बोझ हो। २. जिस पर किसी प्रकार का ऋण या देन हो। (एनकम्बर्ड)

भारी—वि० [हिं० भार] १. अधिक भारवाला। जो आसानी से न उठाया या वहन किया जा सके अथवा जिसे उठाने या वहन करने में अधिक सामर्थ्य या शक्ति व्यय होती हो। जैसे—भारी पत्थर। २. अपेक्षित या सामान्य मात्रा आदि से बहुत अधिक। जैसे—भारी वर्षा, भारी भूकंप, भारी फसल तथा भारी बहुमत। ३. (शरीर अथवा उसका अंग) जिसमें कुछ विकार या दर्द हो और फलतः इसी लिए जो सुस्त और निकम्मा-सा हो गया हो। जैसे—उनका शरीर या सिर आज कुछ भारी है।

मुहा०—आवाज भारी होना=गले से ठीक तरह से आवाज या स्वर न निकलना। पेट भारी होना=खाये हुए पदार्थों का ठीक से न पचने के कारण पेट में अपच जान पड़ना। सिर भारी होना=सिर में दर्द या भारीपन जान पड़ना और हलकी पीड़ा होना। कान भारी होना=अच्छी तरह सुनाई न पड़ना। (स्त्री का) पैर भारी होना=गर्भवती होना। पेट में बच्चा होना।

३. व्यक्ति के संबंध में, जिसके मन में अभिमान, रोष या इसी प्रकार का और कोई विकार हो; और इसी लिए जो ठीक तरह से बातचीत न करता या सरल तथा स्वाभाविक व्यवहार न करता हो। जैसे—(क) आज-कल वे हमसे कुछ भारी रहते हैं। (ख) आज उनका मुँह कुछ भारी जान पड़ता है।

मुहा०—(किसी अवसर पर) भारी रहना=(क) कुछ न बोलना। चुप रहना। (दलाल) जैसे—अभी तुम भारी रहो, पहले देख लो कि वे क्या कहते हैं। (ख) धीमी या मन्द गति से चलना। (कहार)

४. कार्यों, प्रयत्नों आदि के संबंध में, जिसमें कोई कठिनता या विकटता हो। जैसे—तुम्हें तो हर काम भारी मालूम होता है। ५. समय के संबंध में, जिसमें अधिक कष्ट होता हो या जिसे बिताना सहज न हो। जैसे—(क) गरमी के दिनों में यहाँ की दोपहर भारी होती है। (ख) आज की रात उस रोगी के लिए भारी है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

६. वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के सम्बन्ध में, जिसका किसी पर कोई अनिष्ट परिणाम या प्रभाव पड़ता हो या पड़ सकता हो। जैसे—यह लड़का अपने पिता (या भाई) पर भारी है, अर्थात् हो सकता है कि इसके ग्रहों के फलस्वरूप इसके पिता (या भाई) का कोई बहुत बड़ा अनिष्ट हो।

क्रि० प्र०—पड़ना।

७. बहुत बड़े या विशाल आकार-प्रकार या रूप-रंग वाला। बहुत बड़ा। वृहत्। जैसे—(क) उनके यहाँ भारी भारी पुस्तकें देखने में आईं। (ख) उनके यहाँ भारी भारी अफसर आए थे। (ग) सावन में यहाँ भारी मेला लगता है। ८. जो औरों की तुलना में बहुत अधिक बड़ा, महत्त्वपूर्ण या मान्य हो। बहुत बड़ा। जैसे—वे दर्शनशास्त्र के भारी विद्वान् हैं।

पद—भारी भरकम या भरकम=बहुत बड़ा और भारी। जैसे—भारी भरकम गठरी। बहुत भारी, बहुत बड़ा।

९. बहुत अधिक। ज्यादा। जैसे—यह गुलामी भारी मुसीबत है। १०. जो किसी प्रकार से असह्य या दुःसह हो। जैसे—(क) क्या मैं ही इस गृह को भारी हूँ? (ख) मुझे अपना सिर भारी नहीं लगा है, जो मैं इसे कटा डालूँ।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

११. किसी की तुलना में अधिक प्रबल या बलवान। जैसे—यह अकेला दो आदमियों पर भारी है।

क्रि० वि० बहुत अधिक। उदा०—[illegible] भारी। —[illegible]

भारीपन—पुं० [हिं० भारी+पन (प्रत्य०)] भारी होने की अवस्था या भाव। गुरुत्व।

भारी पानी—पुं० [हिं०] १. ऐसा पानी, जिसमें खनिज पदार्थों की मात्रा अपेक्षया अधिक हो। २. आधुनिक रसायनशास्त्र में पानी की तरह का एक विशेष पदार्थ जो आक्सीजन और भारी हाइड्रोजन के योग से बनता है और जिसका उपयोग परमाणुओं के विस्फोट में होता है। (हेवी वाटर)

भारुड—पुं० [सं०] १. रामायण के अनुसार एक प्रकार के पक्षी जो उत्तर कुरु में होते थे। २. एक ऋषि। ३. एक पक्षी।

भारू—पुं० [हिं० भारी] धीरे चलने के लिए एक संकेत जिसका व्यवहार कहार करते हैं।

वि० [हिं० भार] १. भारी। २. जो बोझ या भार के रूप में हो या जान पड़े। भार स्वरूप। जैसे—अभी हमें भारू नहीं पड़ी है।

भारूप—पुं० [सं० ब० स०] १. आत्मा। २. ब्रह्म।

भारोद्वह—वि० [सं० भार-उद्√वह् (ढोना)+अच्] भार ढोनेवाला। भारवाहक।

पुं० मजदूर।

भारोपीय—पुं० भारत-यूरोपीय।

भार्गव—वि० [सं० भृगु+अण्] १. भृगु के वंश में उत्पन्न। २. भृगु सम्बन्धी। भृगु का। जैसे—भार्गव अस्त्र।

पुं० १. भृगु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २. परशुराम। ३. शुक्राचार्य। ४. मार्कण्डेय। ५. जमदग्नि। ६. च्यवन ऋषि। ७. एक उप-पुराण का नाम। ८. पुराणानुसार भारतवर्ष के अन्तर्गत एक पूर्वीय देश। ९. हीरा। १०. हाथी। ११. म्योनाक। १२. नीला भँगरा। १३. कुम्हार। १४. उत्तर प्रदेश के उत्तरी भागों में बसी हुई एक हिन्दू जाति।

भार्गव-क्षेत्र—पुं० [सं०] दक्षिण भारत के आधुनिक मलयालम प्रदेश का पुराना नाम।

विशेष—प्रवाद है कि परशुराम के परशु फेंकने से यह प्रदेश बना था, इसी से इसका यह नाम पड़ा।

भार्गवी—स्त्री० [स० भार्गव+ङीप्] १. पार्वती। २ लक्ष्मी। ३ दूब। ४ उडीसा की एक नदी।

भार्गवीय—वि० [स० भर्गव+छ—ईय] भृगु-सबधी। भार्गव।

भार्गवेश—पु० [स० भार्गव-ईश, ष० त०] परशुराम।

भार्गायन—पु० [स० भर्ग+फञ्-वृद्धि-आयन] भर्ग के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

भार्गी—स्त्री० [स० भर्ग+अण्+ङीप्] भारगी।

भार्य—वि० -स० [√भृ (भरण करना)+ण्यत्, वृद्धि] जिसका भरण किया जाने का हो या किया जाय।

पु० १. नौकर। सेवक। २ आश्रित व्यक्ति। ३ आयुधजीवी। योद्धा।

भार्य्या—स्त्री० [स०] जोरू। पत्नी।

भार्याजित—वि० [स० तृ० त०] भार्या या जोरू के वश मे रहनेवाला।
पु० एक तरह का हिरन।

भार्याट—पु० [स० भार्या√अट् (जाना)+अण्, उप० स०] वह जो किसी दूसरे पुरुष को भोग के लिए अपनी भार्या या पत्नी दे। अपनी स्त्री का दूसरे पुरुष के साथ सम्बन्ध करानेवाला व्यक्ति।

भार्याटिक—वि० [स० भार्याट+ठन्—इक] जोरू का गुलाम। स्त्रैण।
प० १ एक प्राचीन मुनि। २ एक प्रकार का हिरन।

भार्यात्व—पु० [स० भार्या+त्व] भार्या होने का भाव। पत्नीत्व।

भार्यारु—पु० [स० भार्या√ऋ (जाना)+उण्] १ एक प्रकार का हिरन। २ एक प्राचीन पर्वत। २ वह व्यक्ति जिसके वीर्य से परस्त्री को पुत्र हुआ हो।

भार्या-वृक्ष—पु० [स० मध्य० स०] पतग नामक वृक्ष।

भाल—पु० [स०√भा (प्रकाश करना)+लच्] १ भौहो के ऊपर का भाग जो भाग्य का स्थान माना गया है। कपाल। ललाट। मस्तक। माथा। २ तेज।
†पु० १ =भाला। २ =भालू (रीछ)।

भाल-चद्र—पु० [स० व० स०] १ महादेव। २ गणेश।

भाल-चंद्री—स्त्री० [स० व० स०,+ङीप्] दुर्गा।

भाल-दर्शन—पु० [स० व० स०] सिंदूर। सेंदुर।

भालना—स० [स० निभालन] १ ध्यानपूर्वक देखना। अच्छी तरह देखना। जैसे—देखना-भालना। २ तलाश करना। ढूँढ़ना।

भाल-नेत्र, भाल-लोचन—पु० [स० व०स०] शिव, जिनके मस्तक मे एक नेत्र है।

भालबी†—पु० [स० भल्लुक] रीछ। भालू। (डि०)

भालाक—पु० [स०भाल-अक, व० स०] १ करपत्र नामक अस्त्र। २ एक प्रकार का साग। ३ रोहू मछली। ४ कछुआ। ५. महादेव। ६ ऐसा मनुष्य जिसके शरीर मे बहुत अच्छे लक्षण हो। (सामुद्रिक)

भाला—पु० [स० भल्ल] एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमे बडे और मोटे डडे के सिरे पर नुकीला बडा फल लगा रहता है। बरछा। नेजा।

भालाबरदार—पु० [हिं० भाला+फा० बरदार] भाला या बरछा उठाने अर्थात् धारण करनेवाला। योद्धा। बरछैत।

भालि*—स्त्री० [हिं० भाला का स्त्री० अल्पा०] १ बरछी। साँग। २ काँटा। शूल।

भालिम—पु० [हिं० भला] भलापन। भलाई। उदा०—भालिम दिन दिन चढि भरण।—प्रिथीराज।

भालिया—पु० [देश०] वह अन्न जो हलवाहे को वेतन मे दिया जाता है। भाता।
†पु०=भाला-बरदार।

भाली—स्त्री० [हिं० भाला] १ छोटा भाला। २ भाले की गाँसी या नोक। ३ काँटा। शूल।

भालुक—पु० [स०√भल् (हिंसा)+उक्+अण्] भालू। रीछ।

भालुनाथ—पु० [हिं० भालू+स० नाथ] भालुओ का राजा। जाववान्। जामवत।

भालू—पु० [स० भल्लुक] मोटे तथा लबे काले (या भूरे) बालोवाला एक हिंसक जगली तथा स्तनपायी चौपाया जिसे पकडकर मदारी लोग नचाते भी है।

भालूक—पु० [स०√भल्+ऊक्+अण्] भालू।

भालुसुडा—पु० [हिं० भालू+सूँड] भूरे रग का एक तरह का रोएँदार छोटा कीडा जो खरीफ की फसल को हानि पहुँचाता है।

भालूसूअर—पु० दे० 'बालू सूअर'।

भावता—वि०=भावता।

भाव—पु० [स०√भू (होना)+णिच्+अच्] [वि० भाविक, भावुक] १. किसी वस्तु के अस्तित्व मे आने, रहने या होने की अवस्था। प्रस्तुत या वर्तमान होने का तत्त्व या दशा। अस्तित्व। सत्ता। 'अभाव' इसी का विपर्याय है। (एग्जिस्टेन्स)। २ प्रत्येक ऐसा पदार्थ जो अस्तित्व मे आता या जन्म लेता, बढता या विकसित होता तथा अत मे नष्ट हो जाता हो। ३ मन मे उत्पन्न होनेवाले विचार का वह अपरिपक्व आरभिक और मूल रूप जिसमे उसका आशय या उद्देश्य भी निहित होता है। मानस उद्भावना का वह रूप जो परिवर्धित तथा विकसित होकर विचार मे परिणत होता है। जैसे—उस समय मेरे मन मे अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न हो रहे थे। ४ मन मे उत्पन्न होनेवाली कोई भावना। खयाल। विचार। ५ कथन, लेख्य आदि का वह उद्दिष्ट और मुख्य अभिप्राय या आशय जो कुछ अस्पष्ट तथा गूढ होता है, और जो सहसा दूसरो की समझ मे नही आता। आशय। तात्पर्य। मतलब। (सेन्स) जैसे—यहाँ कवि का भाव कुछ और ही है। ६. मन मे उत्पन्न होनेवाली भावनाओ, विचारो आदि का वह आभास या छाया जो कुछ अवसरो पर आकृति आदि पर पडती और उन भावनाओ, विचारो आदि की साकेतिक रूप मे सूचक होती है। जैसे—उसके चेहरे पर एक भाव आता और एक जाता था।
मुहा०—भाव देना=मन का कोई भाव शारीरिक चेष्टा या अग-सचालन से प्रकट करना। उदा०—श्याम को भाव दै गई राधा।—सूर।
७ किसी चीज के प्रति होनेवाली हार्दिक भक्ति, विश्वास या श्रद्धा। उदा०—का भाखा, का सस्कृत, भाव चाहियतु साँच।—तुलसी। ८ किसी काम, चीज या बात का वह गुणात्मक अथवा धर्मात्मक तत्त्व जो उसकी मूल प्रकृति या विशेषता का आधार या सूचक होता है, और जिसकी सत्ता से पृथक् तथा स्वतत्र मानी जाती है। (सब्स्टेन्स) जैसे—शीतल होने का भाव ही शीतलता है, इसी लिए 'शीतलता' भाव-वाचक सज्ञा है। ९ साख्य मे, बुद्धि-तत्त्व का कार्य, धर्म या विकार जो वेदात के अनुसार 'कर्म' है। १०. वैशेषिक मे द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छ पदार्थ जिनका अस्तित्व

निश्चित तथा वास्तविक माना गया है। ११ व्याकरण में, धातु का अर्थ। १२ साहित्य में आश्रय की मानसिक स्थितियों का व्यंजक प्रदर्शन जिससे रस की उत्पत्ति होती है, और अनेक प्रकार के शारीरिक व्यापारों से व्यक्त होती है। साहित्यकारों ने उसके स्थायी, व्यभिचारी और सात्त्विक ये तीन प्रकार या भेद कहे हैं। (देखें उक्त शब्द) १३ संगीत के सात अंगों में से पाँचवाँ अंग जिसमें गाये जानेवाले गीत में वर्णित मनोभाव, शारीरिक अंग-संचालनों और चेष्टाओं के द्वारा मूर्त रूप में प्रदर्शित किये जाते हैं।

मुहा०—भाव बताना=संगीत में गेय पद में वर्णित मनोभाव आंगिक चेष्टाओं के द्वारा प्रदर्शित करना। १४. नोचला। नखरा।

मुहा०—भाव बताना=कोई काम करने का समय आने पर केवल हाथ-पैर हिला कर या बातें बना कर उसे टालने का प्रयत्न करना। (बाजारू)

१५ फलित ज्योतिष में, ग्रहों की शयन, उपवेशन, प्रकाशन, गमन आदि बारह चेष्टाओं में से प्रत्येक चेष्टा या स्थिति जिसका ध्यान जन्म-कुंडली का विचार करने के समय रखा जाता है। और जिसके आधार पर फलाफल कहे जाते हैं। १६. ज्योतिष में साठ संवत्सरों में से आठवें संवत्सर की संज्ञा। १७ ज्योतिष में जन्म-समय का नक्षत्र। १८ चीजों आदि की वह दर या मूल्य जो प्रायः बाजारों में चलता और समय समय पर घटता-बढ़ता रहता है। निर्ख। जैसे—पहले भाव पूछ कर तब चीज खरीदनी चाहिए।

पद—भाव-ताव। (देखें)

क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।—घटना।—चढ़ना।—बढ़ना।

१९ आत्मा। २०. जगत्। संसार। २१. जन्म। पैदाइश। २२. चित्त। मन। २३ कार्य, कृत्य या क्रिया। २४ कल्पना। २५. उपदेश। २६ विभूति। २७ पंडित। विद्वान्। २८ पशु। जानवर। २९. भग। योनि। ३०. रति-क्रीड़ा। संभोग। ३१ अच्छी तरह देखना। पर्यालोचन। ३२. प्रेम। मुहब्बत। स्नेह। ३३. ढंग। तरीका। ३४. तरह। प्रकार। भाँति। ३५ उपदेश। ३६. उद्देश्य। हेतु। ३७. प्रकृति। स्वभाव। ३८ कामना। वासना। ३९ अवस्था। दशा। हालत। ४०. विश्वास। ४१ आदर-सम्मान। ४२ दे० 'भाव अलंकार'।

भाव-अलंकार—पु० [सं० कर्म० स०] नाट्य शास्त्र में अंगज अलंकारों का एक भेद जिसमें नायिका के वे आंगिक विकार या क्रिया-व्यवहार आते हैं जो उसके निर्विकार चित्तावस्था में यौवनोद्गम के साथ साथ काम-विकार का वपन करते हैं।

भावइ—अव्य० [हि० भावना या भाना=अच्छा लगना, मि० प० भाँवें] अगर इच्छा हो तो। अगर मन चाहे तो।

भावक—वि० [सं०√भू+णिच्+ण्वुल्—अक] १ भावना करनेवाला। २ भाव से युक्त। भाव-पूर्ण। ३ उत्पन्न करनेवाला। उत्पादक। ४ किसी का अनुयायी, प्रेमी या भक्त।

पु० १. भाव। २. साहित्य-शास्त्र में, काव्य का अधिकारी पाठक।

अव्य० [सं० भाव+क (प्रत्य०)] थोड़ा सा। जरा सा। किंचित्।

भाव-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. इरादा। इच्छा। २. विचार। ३ मराठी साहित्य में वह गीत जिसमें मुख्यतः मनोभावों की प्रधानता हो।

भावगम्य—वि० [सं० तृ० त०] सद्भाव से जाने के योग्य। जो अच्छे भाव की सहायता से जाना जा सके।

भाव-ग्रंथि—स्त्री० [सं०] दे० 'मनोग्रंथि'।

भाव-ग्राह्य—वि० [सं० तृ० त०] जिसे ग्रहण करने से पूर्व मन में सद्भाव लाने की आवश्यकता हो।

भावग्राही (हिन्)—वि० [सं० भाव√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] भाव या आशय समझनेवाला।

भाव-चित्र—पु० [सं० मध्य० स०] वह चित्र जो विशेषतः कोई मानसिक भाव प्रकट करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।

भावज—वि० [सं० भाव√जन् (उत्पत्ति)+ड] भाव से उत्पन्न।

स्त्री० [सं० भ्रातृजाया, हि० भौजाई] भाई, विशेषतः बड़े भाई की पत्नी। भाभी।

भावज्ञ—वि० [सं० भाव√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।

भावत.—अव्य० [सं० भाव+तस्] भाव की दृष्टि से। भाव के विचार से।

भावता—वि० [हि० भावना=अच्छा लगना+ता (प्रत्य०)] [स्त्री० भावती] जो भला लगे। प्यारा। सुहावना।

पु० प्रियतम।

भाव-ताव—पु० [सं० भाव+हि० ताव] १. किसी चीज का भाव अर्थात् दर, मूल्य आदि। निर्ख। २. किसी चीज या बात का रंग-ढंग।

क्रि० प्र०—आँकना।—देखना।

भाव-दत्त—पु० [सं० तृ० त०] चोरी न कर के मन में केवल चोरी की भावना करना जो जैनियों के अनुसार एक प्रकार का पाप है।

भाव-दया—वि० [सं० मध्य० स०] किसी जीव की दुर्गति देखकर उसकी रक्षा के लिए अंतःकरण में दया आना। (जैन)

भावन—पु० [सं०√भू (होना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. भावना। २. ध्यान। ३. विष्णु।

वि० [हि० भाना=अच्छा लगना] भाने या अच्छा लगनेवाला। प्रियदर्शी।

भावना—स्त्री० [सं०√भू+णिच्+युच्—अन, +टाप्] १. मन में किसी बात का होनेवाला चिंतन। ध्यान। २. मन में उत्पन्न होनेवाली कोई कल्पना, भाव या विचार। खयाल।

विशेष—दार्शनिक दृष्टि से यह चित्त का एक संस्कार है जो अनुभव, स्मृति आदि के योग से उत्पन्न होता है।

३. कामना। चाह। वासना। ४. वैद्यक में, औषध आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ में बार बार मिला कर घोटना और सुखाना जिससे उस औषध में रस या तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। पुट।

५. चिन्ता। फिक्र।

क्रि० प्र०—देना।

अ०=भाना (अच्छा लगना)।

वि०=भावता या भावन (अच्छा लगनेवाला)।

भाव-नाट्य—पु० [सं० मध्य० स०] वह भाव-प्रधान नाटक जिसमें कुछ संगीत भी हो।

भावनामय-शरीर—पु० [सं० भावना+मयट्, भावनामय-शरीर, कर्म० स०] सांख्य के अनुसार एक प्रकार का शरीर जो मनुष्य मृत्यु से कुछ ही

पहले धारण करता है और जो उसके जन्म भर के किए हुए सभी कर्मों के अनुरूप होता है। कहते हैं कि जब आत्मा इस शरीर मे पहुँच जाती है, तभी मृत्यु होती है।

भावना-मार्ग—पु० [सं० प० त०] ईश्वर आदि का आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण मार्ग या साधन।

भावनि[1]—स्त्री० [हिं० भाना या भावना=अच्छा लगना] मन मे सोचा हुआ काम या बात। वह जो जी मे आया हो।

भाव-निक्षेप—पु० [स० प० त०] जैनो के अनुसार, किसी पदार्थ का वह नाम जो उसका केवल प्रस्तुत स्वरूप देखकर रखा गया हो।

भावनीय—वि० [स०√भू+णिच्+अनीयर्] चित्त या विचार मे लाये जाने के योग्य। जिसकी भावना की जा सके या हो सके।

भाव-पक्ष—पु० [स० प० त०] साहित्यिक रचना का वह पक्ष जिसमे उसकी निष्पत्ति रस का सागोपाग वर्णन या विवेचन होता है। इसमे विशेप रूप से काव्यगत भावनाओ, कल्पनाओ तथा विचारो की प्रधानता होती है।

भाव-परिग्रह—पु० [स० ष० त०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य धन का सग्रह करता तो नही है अथवा नही कर पाता परन्तु उसमे धन-सग्रह की भावना प्रबल होती है।

भाव-प्रधान—पु०=भाववाच्य।
वि० [स०] जिसमे भाव या भावो की तीव्रता या प्रधानता हो।

भाव-बंध—पु० [स० तृ० त०] जैनो के अनुसार भावनाएँ या विचार जिनके द्वारा कर्म-तत्त्व से आत्मा बधन मे पडती है।

भाव-भंगी—स्त्री० [स० प० त०] मन का भाव प्रकट करनेवाला अग-विक्षेप। वह शारीरिक क्रिया जो मन का भाव प्रकट करनेवाली हो।

भाव-भक्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ भक्ति-भाव। २ आदर-सत्कार। सम्मान।

भाव-मृषावाद—पु० [स० तृ० त०] १ वह स्थिति जिसमे मनुष्य झूठ नही बोलता पर उसके मन मे झूठ बोलने की प्रवृत्ति जागरूक होती है। २ शास्त्र के वास्तविक अर्थ को दबाकर अपना हेतु सिद्ध करने के लिए झूठ-मूठ नया अर्थ करना। (जैन)

भाव-मैथुन—पु० [स० तृ० त०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से तो मैथुन नही करता या नही करना चाहता परन्तु उसका मन विशेपत सुप्त मन मैथुनिक विचारो मे रत रहता है।

भावय—पु० [देश०] वह व्यक्ति जो धातु की चद्दर पीटने के समय पासे को सँडसे से पकडे रहता और उलटता रहता है।

भावर (रि)—स्त्री० [हिं० भाना] १. भाने की अवस्था या भाव। २. अभिरुचि। उदा०—भावरि अनभावरि भरे करौ कोरि बकवाद।—विहारी।
†स्त्री०=भाँवर।

भाव-लय—स्त्री० [स० प० त०] वह स्थिति जिसमे शुद्ध भावात्मक धरातल पर लय की प्रतीति होती है।

भावलिपि—स्त्री० [स० प० त०] लिपि का वह आरभिक और मूल प्रकार जिसमे मन के भाव या विचार अक्षरो या वर्णों के द्वारा नही, बल्कि उन भावो या विचारो के प्रतीको के द्वारा अकित और सूचित किये जाते थे। (आइडिओग्राफी) उत्तरी अमेरिका और मिस्र के आदिम निवासियो की लिपियो की गणना भाव-लिपि में होती है।

भावली—स्त्री० [देश०] जमीदार और असामी के बीच उपज की होनेवाली बँटाई।

भाव-वाचक—स्त्री० [स० प० त०] व्याकरण मे वह सज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, धर्म या गुण आदि सूचित हो। जैसे—कुरूपता, सुशीलता, कट्टरपन, बुरापन आदि।

भाव-वाच्य—पु० [स० तृ० त०] व्याकरण मे वह तत्त्व जो अकर्मक क्रिया पद की उस स्थिति का सूचक होता है जब वह कर्ता का व्यापार सूचित न कर के क्रिया के व्यापार का ही बोध कराता है। उक्त अवस्था मे क्रिया पद के साथ कर्ता प्रथमा विभक्ति से युक्त न हो कर तृतीया विभक्ति से युक्त होता है। जैसे—अब हाथ से कलम उठने लगी है।

भाव-विकार—पु० [स० ष० त०] जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश ये छ विकार। (यास्क)

भाव-व्यंजक—वि० [स० प० त०] अच्छी तरह या स्पष्ट रूप मे भाव प्रकट या व्यक्त करनेवाला।

भाव-व्यंजन—पु० [स० ष० त०] मन का भाव प्रकट करने की क्रिया या दशा।

भाव-शबलता—स्त्री० [स० प० त०] वह स्थिति जिसमे एक एक करके अनेक भाव शृखलाबद्ध रूप मे प्रकट होते है अथवा अनेक भावो का मिश्रण दिखाई पडता हो।

भाव-शाति—स्त्री० [स० प० त०] साहित्य मे वह अवस्था जब मन मे किसी नये विरोधी भाव के उत्पन्न होने पर पहले का कोई भाव शान्त या समाप्त हो जाता है।

भाव-संधि—स्त्री० [स० प० त०] वह स्थिति या स्थल जहाँ दो अविरोधी भावो की सधि होती है।

भाव-संवर—पु० [स० प० त०] जैनो के अनुसार वह क्रिया या शक्ति जिससे मन मे नये भावो का ग्रहण रुक जाता है।

भाव-सत्य—पु० [स० तृ० त०] ऐसा सत्य जो ध्रुव न होने पर भी भाव की दृष्टि से सत्य हो।

भाव-सर्ग—पु० [स० प० त०] तन्मात्राओ की उत्पत्ति। (साख्य)

भाव-हरण—पु० [स० प० त०] १ किसी की कविता, लेख आदि के भाव चुरा कर उन्हे अपनी मौलिक कृति के रूप मे लोगो के सामने उपस्थित करना। २. साहित्यिक चोरी। (प्लेजिअरिज्म)

भाव-हारी (रिन्)—पु० [स० भाव√हृ+णिनि, उप० स०] दूसरो की कविताओ, लेखो आदि के भाव चुरा कर उन्हे अपनी मौलिक कृति बतलानेवाला व्यक्ति। (प्लेजिअरिस्ट)

भाव-हिंसा—स्त्री० [स० स० त०] केवल मन मे किसी के प्रति हिंसापूर्ण भाव होना। ऐसी स्थिति मे मनुष्य हिंसा की भावना कार्य रूप मे परिणित नही करता।

भावांकन—पु० [स० भाव-अकन, प० त०] भावो को चित्रो या विशेप प्रकार के चिह्नो मे अकित करने की क्रिया या भाव। (आइडिओग्राफी) विशेप दे० 'चित्रलिपि'।

भावांतर—पु० [स० भाव-अतर, प० त०] १. मन की अवस्था का बदल कर कुछ और हो जाना। २ अर्थान्तर।

भावात्मक—वि० [स० भाव-आत्मन्, ब० स०,+कप्] १ जिसमे किसी

प्रकार का मानसिक भाव भी मिला हो। २ भावों से परिपूर्ण या युक्त (रचना)। ३ जो भाव से युक्त हो अर्थात् जिसमें अभाव न हो। वि० दे० 'सहृदय'।

भावानुग—वि० [स० भाव-अनुग, प० त०] [स्त्री० भावानुगा] भाव का अनुसरण करनेवाला।

भावानुगा—स्त्री० [स० भावानुग+टाप्] छाया।

भावापहरण—पु०=भावहरण।

भावाभाव—पु० [स०भाव-अभाव, द्व० स०] १. भाव और अभाव। होना और न होना। २. उत्पत्ति और नाश या लय। ३ जैनों के अनुसार भाव का अभाव में अथवा वर्तमान का भूत मे होनेवाला परिवर्तन।

भावाभास—पु० [स० भाव+आभास, प० त०] साहित्य मे काव्यदोषों के अन्तर्गत वह स्थिति जिसमे कोई व्यभिचारी भाव किसी रस का पोषक न होकर स्वतत्र रूप से भाव-अवस्था को प्राप्त होता हुआ-सा दिखाई देता है।

भावार्थ—पु० [स०भाव-अर्थ] १ ऐसा विवरण या विवेचन जिसमे मूल का केवल भाव या आशय आ जाय, अक्षरश अनुवाद न हो। (शब्दार्थ से भिन्न) २ अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। मतलब।

भावालंकार—पु० दे० 'भाव अलंकार'।

भावालीना—स्त्री० [स० भाव-आलीना, स० त०] छाया।

भावाश्रित—वि० [स० भाव-आश्रित, प०त०] (काव्य, गीत, नृत्य आदि) जो मानसिक भावों के आधार पर स्थित हो।

पु० सगीत मे हस्तक का एक भेद। गेय पद के भाव के अनुसार हाथ उठाना, घुमाना और चलाना।

भाविक—वि० [स० भाव+ठक्—इक] १. भाव-संबंधी। भाव का। २ भाव या आशय जाननेवाला। ३. मर्मज्ञ। ४ नैसर्गिक। प्राकृतिक। ५ असली। वास्तविक। ६ भविष्य मे होनेवाला। भावी।

पु० १ ऐसा अनुमान जो अभी हुआ न हो, पर आगे चल कर होनेवाला हो। भावी अनुमान। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे भूत और भविष्यत् भावों या पदार्थों का एक साथ तथा प्रत्यक्षवत् प्रदर्शन किया जाता है।

भावित—भू० कृ० [स०√भू (होना)+णिच्+क्त] १ जिसकी भावना की गई हो। सोचा या विचारा हुआ। २. मिलाया हुआ। मिश्रित। ३ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ४. जिसमें किसी रग आदि की भावना की गई हो। जिसमें पुट दिया गया हो। ५ किसी गध से युक्त किया हुआ। बासा या बसाया हुआ। ६. अधिकार मे आया हुआ। प्राप्त। ७ भेट किया हुआ। अर्पित। ८. उत्पन्न। जात।

भाविता—स्त्री० [सं० भाविन्+तल्+टाप्] भावी का भाव। होनहार। होनी।

भावितात्मा (त्मन्)—वि० [सं० भावित-आत्मन्, ब० स०] जिसने ईश्वर का मनन तथा चिंतन करके अपनी आत्मा शुद्ध कर ली हो।

भावित्र—पु० [स०√भू (होना)+णित्रन्, वृद्धि] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनो का समाहार। त्रैलोक्य।

भावी (विन्)—वि० [स०√भू+इनि, णित्व] १ भविष्य मे होने या घटित होनेवाला। २. जो भाग्य के विधान के अनुसार अवश्य होने को हो। किस्मत में बदा हुआ।

स्त्री० १. भविष्यत् काल। २. भविष्य में अनिवार्य तथा निश्चित रूप से घटित होनेवाली बात या व्यापार। अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता।

भावुक—वि० [स०√भू (होना)+उकञ्, वृद्धि] १. भावना करने या सोचने-समझनेवाला। २. जिसके मन में भावों का उद्वेग या सचार बहुत जल्दी होता हो। ३. (व्यक्ति) जो मन में उठे हुए भाव के वशीभूत हो जाय और कर्तव्य-अकर्तव्य भूल जाय। ४ उत्तम भावना करनेवाला। अच्छी बातें सोचनेवाला।

पु० १ भला आदमी। सज्जन। २. कल्याण। मगल। ३. बहनोई।

भावैं†—अव्य०- भावै।

भावे प्रयोग—पु० [स० व्यस्त पद] व्याकरण मे क्रिया का ऐसे रूप में होनेवाला प्रयोग जिसमे कर्ता या कर्म के पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार उसके रूप नहीं बदलते, और क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एक वचन में रहती है। (इम्पर्सनल यूज) जैसे—उन्हें कहाँ बुलाया जायगा। (विशेष दे० 'प्रयोग' के अन्तर्गत)

भावै*—अव्य० [हि० भाना=अच्छा लगना] १. चाहे जो हो। २. भी चाहे हो। अच्छा लगे तो। ३. अथवा। चाहे। या।

भावोत्सर्ग—पु० [सं० भाव-उत्सर्ग, प०त०] क्रोध आदि बुरे भावों का त्याग। (जैन)

भावोदय—पु० [स० भाव+उदय, प०त०] साहित्य मे एक अलकार जिसमें किसी नवीन भाव के उदय होने का उल्लेख या वर्णन होता है।

भावोन्मेष—पु० [स० भाव+उन्मेष, प०त०] मन में होनेवाला किसी भाव का उदय।

भाव्य—वि० [स०√भू (होना)+यत्] १. जिसका होना बिलकुल निश्चित हो। अवश्य होनेवाला। अवश्यम्भावी। २ जिसकी भावना की जा सके। ३ जो प्रमाणित या सिद्ध किया जाने को हो।

भाषक—वि० [स०√भाष् (बोलना)+ण्वुल्—अक] १. भाषण करनेवाला। कहनेवाला। २ किसी रूप मे कुछ बोलनेवाला। जैसे—उच्च भाषक।

भाषण—पु० [स०√भाष्+ल्युट्—अन] १. मुँह से कह या बोलकर कोई बात कहना। २ कही हुई बात। कथन। ३ आपस में होनेवाली बातचीत या वार्तालाप। ४ सभा, संस्था आदि में किसी उपस्थित या प्रासगिक विषय पर धाराप्रवाह रूप से किसी द्वारा व्यक्त किये जानेवाले विचार या प्रस्तुत किया जानेवाला विवरण। वक्तृता (स्पीच)

भाषण-स्वातंत्र्य—पु० [स० प० त०] अपने मन के विचार विशेषत धार्मिक राजनैतिक या सामाजिक विषयों पर मन के विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता, जो शासन की ओर से प्राप्त होनेवाले अधिकारों के अन्तर्गत है।

भाषना—अ० [सं० भाषण] १. कहना। बोलना। २ बात-चीत करना।

†स० [स० भक्षण] भोजन करना। खाना।

भाषांतर—पु० [स० भाषा-अतर, मयू० स०] १. एक भाषा मे लिखे हुए लेख का दूसरी भाषा मे अनुवाद करना। २ इस प्रकार किया हुआ अनुवाद।

भाषांतरकार—पु० [स० भाषातर√कृ (करना)+अण्] भाषांतर अर्थात् अनुवाद या उलथा करनेवाला। अनुवादक।

भाषांतर-सम—पु० [स० तृ० त०] एक प्रकार का शब्दालंकार (शब्दों की ऐसी योजना जिसमें वाक्य कई भाषाओं का माना जा सके)।

भाषा—स्त्री० [स०√भाष्+अ+टाप्] १. किसी विशिष्ट जनसमूह द्वारा अपने भाव, विचार आदि प्रकट करने के लिए प्रयोग में लाए जाने-वाले शब्द तथा उनके संयोजन का एक व्यवस्थित क्रम। बोली। जबान। २ दे० 'बोली'।

विशेष—साहित्यकारों के अनुसार भाषा का क्षेत्र 'बोली' की तुलना में बड़ा और विस्तृत होता है, और एक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोलियाँ होती है।

३ वह अव्यक्त नाद जिसमें पशु-पक्षी आदि अपने मनोविकार या भाव प्रकट करते हैं। जैसे—बंदरों की भाषा। ४ वह बोली जो वर्तमान समय में किसी देश में प्रचलित हो। ५. आधुनिक हिंदी का पुराना नाम। ६ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ७ संगीत में एक प्रकार का ताल। ८. वाग्देवी। सरस्वती। ९ अभियोग-पत्र। अरजी-दावा।

भाषाई—वि० [हि० भाषा+ई (प्रत्य०)] भाषा-सम्बन्धी। भाषा का। भाषिक। जैसे—भाषाई आंदोलन।

भाषा-तत्त्व—पु० [स० ष० त०] भाषा विज्ञान।

भाषा-पत्र—पु० [स० ष० त०] १ वह पत्र जिसमें अपने कष्टों का निवेदन किया गया हो। २ अभियोग पत्र। अरजी-दावा।

भाषा-वाद—पु० [ष० त०] भाषा-पत्र।

भाषाबद्ध—भू० कृ० [स० तृ० त०] १ (भाव या विचार) जो शब्दों में (बोल या लिखकर) व्यक्त किया गया हो। २ देश भाषा में लिखा हुआ।

भाषा-विज्ञान—पु० [सं० ष० त०] एक आधुनिक विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास, उसके शब्दों तथा उन शब्दों के अर्थों, ध्वनियों आदि का वैज्ञानिक ढंग से प्रतिपादन तथा विवेचन किया जाता है। (फिलो-लोजी)

भाषाविद्—पु० [स० भाषा√विद् (जानना)+क्विप्] १ वह जो अपनी भाषा का ज्ञाता हो। २. वह जो अनेक भाषाओं का ज्ञाता हो।

भाषा-शास्त्र—पु० [स० ष० त०] व्याकरण।

भाषा-सम—पु० [स० स० त०] एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें शब्दों की योजना की जाती है जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों।

भाषा-समिति—स्त्री० [स० ष० त०] जैनियों के अनुसार एक प्रकार का आचार जिसके अन्तर्गत ऐसी बातचीत आती है जिससे सब लोग प्रसन्न और संतुष्ट हों।

भाषिक—वि० [स० भाषा+ठक्—इक] १ भाषा-संबंधी। २. भाषा के गुणों के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—भाषिक वैभव।

भाषिका—स्त्री० [स० भाषा+कन्+टाप्, इत्व] १ भाषा। २ वाणी।

भाषिणी—स्त्री० [स० भाषिन्+ङीप्] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वि० स्त्री० सं० 'भाषी' का स्त्री०। जैसे—मधुर-भाषिणी।

भाषित—भू० कृ० [स०√ भाष् (कहना)+क्त] कहा हुआ। कथित।

पु० १ उक्ति। कथन। २ बात-चीत। वार्तालाप।

भाषी (षिन्)—वि० [स०√भाष्+णिनि] बोलनेवाला। (समस्त पदों के अन्त में) जैसे—मिष्ठ-भाषी, संस्कृत-भाषी।

भाष्य—पु० [स०√भाष् (कहना)+ण्यत्] १. उक्ति। कथन। २ सूत्र-ग्रंथों का विस्तृत विवरण या व्याख्या। ३. वह ग्रन्थ जिसमें किसी के सूत्रों की व्याख्या तथा स्पष्टीकरण किया गया हो। ४. बोलचाल में किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या। जैसे—आपके इस लेख पर तो एक भाष्य की आवश्यकता है।

भाष्यकार—पु० [स० भाष्य√कृ (करना)+अण्] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला लेखक।

भासंत—वि० [स०√भास् (चमकना)+झच्—अन्त] प्रकाशमान। सुंदर।

पु० १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ नक्षत्र। ४. शकुन्त पक्षी।

भासंती—स्त्री० [स० भासन्त+ङीप्] तारा।

भास—पु० [स०√भास्+घञ्] १ चमक। दीप्ति। २ प्रकाश। रोशनी। ३ किरण। मयूख। ४ इच्छा। कामना। ५ मिथ्या ज्ञान। ६ गोशाला। ७ कुक्कुट। मुरगा। ८ गिद्ध। ९ शकुंत पक्षी। १०. स्वाद। लज्जत। ११ एक प्राचीन पर्वत।

भासक—पु० [स० √भास् +ण्वुल्—अक] चमकानेवाला। प्रकाशक।

भासना—अ० [स० भास] १. प्रकाशित होना। चमकना। २ लक्षणों से कुछ कुछ जान पड़ना। आभास होना। ३. दिखाई देना।

अ० [हि० भासन=डूबना] १. पानी में डूबना। २. लिप्त या लीन होना। ३ फँसना।

स०=भाषना (कहना)।

भासमंत—वि० [स० भासमान] १ ज्योति या प्रकाश से युक्त। २. चमक-दार। चमकीला।

भासमान—वि० [स० भास+शानच्, मुम्] जान पड़ता या दिखाई देता हुआ। भासता हुआ।

पु०=सूर्य।

भासिक—वि० [स० भास+ठक्—इक] १ दिखाई पड़नेवाला। दृश्य। २ लक्षणों से जान पड़ने या मालूम होनेवाला।

भासित—वि० [स० √ भास्+क्त] १ तेजोमय। प्रकाशमान। २ चमक-दार। चमकीला।

भासु—पु० [स०√ भास्+उण्] सूर्य्य।

भासुर—पु० [स०√भास्+घुरच्] १ कुष्ठ रोग की ओषधि। कोढ़ की दवा। २. बिल्लौर। स्फटिक। ३ बहादुर। वीर।

वि० चमकदार। चमकीला।

भास्कर—पु० [स०√भास्+कृ (करना)] १ सूर्य। २. सोना। स्वर्ण। ३ बहादुर। वीर। ४ अग्नि। आग। ५ आक। मदार। ६ शिव। ७ पत्थरों आदि पर नक्काशी करने की कला या विद्या।

भास्करि—पु० [स० भास्कर+इञ्] शनि ग्रह।

भास्मन—वि० [स० भस्मन्+अण्] १ भस्म से बना हुआ। २ भस्म संबंधी।

भास्वत—पु० [स० भास+मतुप्—व] १ सूर्य्य। २. आक। मदार। ३ चमक। दीप्ति। ४ बहादुर। वीर।

वि० चमकदार। चमकीला।

भास्वती—स्त्री० [स० भास्वत्+ङीप्] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

भास्वर—पु० [स० √ भास्+वरच्] १ सूर्य। २ सूर्य का एक अनुचर। ३ दिन। ४ कुष्ठ रोग की औषधि। कोढ़ की दवा।

वि० चमकदार। चमकीला।

२. वह बहुत हलकी घृणा जो किसी अप्रिय वस्तु या व्यक्ति का सामना होने पर उत्पन्न होती और उससे दूर हट जाने के लिए प्रवृत्त करती है।

भिटकना—अ० [स० भिद् (=हटाना)] कोई अप्रिय तथा घृणित वस्तु या व्यक्ति सामने आने पर मन का उससे दूर हट जाने मे प्रवृत्त होना।

भिटका—पु० [हि० भीटा] दीमको की बाँबी। बमीठा।

भिटना—पु० [देश०] छोटा गोल फल। जैसे—कपास का भिटना।

अ० [हि० भेंट] १ भेंट या मुलाकात होना। २ सपर्क या सबध होना। ३. अपवित्र वस्तु या व्यक्ति से छू जाने पर अपवित्र होना। (पश्चिम)

भिटनी†—स्त्री० =[हि० भिटना] स्तन के आगे का भाग। चूँची।

भिटाना†—स०=भेटाना।

अ० [हि० भिटना] किसी वस्तु या व्यक्ति का किसी अपवित्र वस्तु या व्यक्ति से छू जाना और फलत अपवित्र या अशुद्ध हो जाना।

भिट्ठा†—पु०=भीटा।

भिडंत—स्त्री० [हि० भिडना] १ भिडने की क्रिया या भाव। २ मुठ-भेड़।

भिड़—स्त्री० [स० वरटा] बर्रे। ततैया।

मुहा०—भिड के छत्ते में हाथ डालना=जान-बूझकर बहुत बडा सकट अपने पीछे लगाना।

भिड़ज्जाँ—पु० [हि० भिड़ना] घोडा। (डि०)

भिड़ना—अ० [स० भिद्?] १ परस्पर विरुद्ध दिशा मे चलनेवाली चीजो का एक दूसरे से टकराना। जैसे—गाडियो, मोटरो या साइकिलो का भिडना। २. प्राणियो के सबध मे एक दूसरे से पूरी शक्ति से लडना। जैसे—साँडो का भिडना। ३ व्यक्ति का किसी से लडने या विवाद करने के लिए दृढतापूर्वक उससे जूझना या सवाल-जवाब करना। ४ मैथुन या सयोग करना। (बाजारू)

अ०† [हि० भीड़ना] १ सलग्न होना। सटना। २ दरवाजे के सम्बन्ध मे, दोनो पल्लो का इस प्रकार एक दूसरे पर सटना कि मार्ग बद हो जाय। भीडा जाना।

भिडाना—स० [हि० भिडना का स०] १ किसी को भिडने मे प्रवृत्त करना। २. एक को दूसरे के साथ लगाना या सटाना। ३ एक को दूसरे से लडाना। आपस मे लडाई-झगडा कराना। ४. किसी को किसी के साथ रति या संभोग करने मे प्रवृत्त करना। (बाजारू) ५ कोई चीज या कुछ चीजे कही से एक स्थान पर लगाना। एकत्र करना।

भिड़ाव†—पु० [हि० भिडना] १ भिडने की क्रिया या भाव। २ आपस मे होनेवाला सामना। ३. दे० 'भिडत'।

भितरिया—वि०, पु०=भीतरिया।

भितल्ला—प० [हि० भीतर+तल] दोहरे कपडे मे भीतरी ओर का पल्ला। दोहरे कपडे के भीतर की परत। अस्तर।

क्रि० प्र०—लगाना।

वि० [स्त्री० भितल्ली] अन्दर या भीतर का।

भितल्ली—स्त्री० [हि० भीतर+तल] चक्की के नीचे का पाट।

भिताना*—स० [स० भीति] भयभीत होना। डरना।

भित्ति—स्त्री० [स०√भिद् (फाडना)+क्तिन्] १. दीवार। २ वह पदार्थ या स्तर जिस पर चित्र बनाया जाय। ३. भीति। डर। ४. खड। टुकडा। (डि०)

भित्तिका—स्त्री० [स० √भिद्+ङिकन्,+टाप्] १ दीवार। २ छिप-कली।

भित्ति-चित्र—पु० [मध्य० स०] १ दीवार पर बना हुआ चित्र। २. विशे-षत ऐसा चित्र जो दीवार बनाने के समय गीले पलस्तर से बनाया गया हो। (फ्रेस्को, म्यूरल)

भित्ति-चौर—पु० [सुप्सुपा स०] दीवार में सेंध लगानेवाला चोर।

भिद्†—वि० [स०√भिद् (विदारण करना)+क्विप्] तोडने-फोडने या नष्ट करनेवाला। (समस्त पदो के अन्त मे)

भिद†—पु०=भेद।

भिदक—पु० [स० भिद्+क्वुन्—अक] १. तलवार। २ वज्र। ३. हीरा।

भिदना—अ० [स० भिद्] १ भेदा या छेदा जाना। २. किसी के अन्दर घुसना, धँसना या पैवस्त होना। ३ घायल होना।

भिदिर—पु० [स०√भिद्+किरच्] वज्र।

भिदुर—पु० [स०√भिद्+कुरच्] वज्र।

भिन—वि०=भिन्न।

भिनकना—अ० [अनु०] १ (मक्खियो का) भिन भिन शब्द करना।

मुहा०—किसी पर मक्खियाँ भिनकना= (क) किसी का इतना अशक्त हो जाना कि उस पर मक्खियाँ भिनभिनाया करे और वह उन्हे उडा न सके। नितात असमर्थ हो जाना। (ख) किसी चीज का इतना गन्दा या मलिन होना कि उस पर मक्खियाँ आ-आकर बैठा करे।

२ गन्दगी आदि के कारण मन मे घृणा उत्पन्न होना।

भिनना†—अ०=भीनना ।

भिन-भिन—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो मक्खियाँ हवा मे उडते समय करती है ।

भिनभिनाना—स्त्री० [अनु०] भिन भिन शब्द होना।

भिनभिनाहट—स्त्री० [अनु० भिनभिनाना+आहट (प्रत्य०)] १. भिनभिनाने की क्रिया या भाव । २ भिन भिन शब्द ।

भिनसार†—पु० [स० विनिशा] प्रात काल। सवेरा।

भिनहीं† —अव्य० [स० विनिशा] प्रात काल। सवेरे।

भिन्न—वि० [स०√भिद् (विदारण करना)+क्त, नत्व] १. काट या तोडकर अलग किया हुआ। जैसे—छिन्न-भिन्न। २ जिसके विभाग किये गये हो। विभक्त। विभाजित। ३ अलग। जुदा। पृथक् । (अदर) ४. जो प्रस्तुत है, उससे अलग या किसी दूसरे प्रकार का। अलग तरह का। (डिफरेंट) ५ अपने मेल या वर्ग के औरो से कुछ अलग और विशेप प्रकार का (डिस्टिक्ट) ६ कोई और। अन्य। अपर। दूसरा।

पु० १ किसी चीज का खड या टुकडा। २ गणित मे, किसी पूरी इकाई का छोटा अश, खड या टुकडा जो या तो बटे वाले रूप मे व्यक्त किया जाता है (जैसे—१/२, १/३) या दशमलव प्रणाली से (जैसे—३.७ अर्थात् ३/७)। (फ्रैक्शन) ३ वैद्यक मे, शरीर का वह अग या अवयव जो किसी तेज धारवाले शस्त्र से कटकर अलग हो गया हो। ४ क्षत। घाव। नीलम का एक दोप जिसके कारण पहननेवाले को पति, पिता, पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है। ६ फूल की कली।

पद—भिखमगा, भिखारी।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।—मिलना।
भीखन—वि०=भीषण।
भीखम*—वि०, पु०=भीष्म।
भीखमक†—पु०=भीष्मक।
भीगना—अ० [स० अभ्यज] १ पानी या और किसी तरल पदार्थ के सयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना। २ तरल पदार्थ के सयोग से अन्नकणो का नरम पडना तथा फूलना। ३. दयार्द्र होना।
पद—भीगी बिल्ली=बहुत ही दीन-हीन बना हुआ तथा हत-प्रभ व्यक्ति।
भीचना—अ० १=भीचना। २=भीगना।
भीचर—पु० [?] सुभट। वीर। (डि०)
भीजना†—अ० [हिं० भीगना] १ किसी के साथ परचना तथा हिलना-मिलना। २ दे० 'भीगना'।
भीट—पु० [देश०] १ उभरी हुई या ऊँची जमीन। २ दे० 'भीटा'। ३. मन भर के बराबर एक पुरानी तौल।
भीटना†—पु०=भीटा।
भीटा—पु० [देश०] १ मिट्टी, कंकडो आदि का कोई प्राकृतिक ऊँचा ढेर जो प्राय कही कही समतल भूमि पर दिखाई देता है। २ पान की खेती के लिए बनाया या तैयार किया हुआ अधिक ऊँचा और चारो ओर ढालुआँ खेत जो ऊपर तथा चारो ओर से छाजन तथा लताओं से घिरा रहता है।
भीड़—स्त्री० [हिं० भिडना] १ किसी स्थान पर एक साथ तथा बिना किसी क्रम से जुटे हुए लोगो की सज्ञा।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
मुहा०—भीड़ छँटना=भीड मे आये हुए लोगो का धीरे-धीरे इधर-उधर होना जिससे भीड कम हो।
२. किसी चीज या बात की अधिकता। जैसे—काम की भीड। उदा०—परी रस भीड दृग धीर नाहिन धरे।—अलबेला अली। आपत्ति। मुसीबत। सकट। उदा०—(क) जुग जुग भीर (भीड) हरी सतन की।—मीराँ। (ख) तुम हरो जन की भीर (भीड)। –मीराँ।
क्रि० प्र०—कटना।—काटना।—पडना।
३. आगा-पीछा। असमजस। उदा०—पर घर घालक लाज न भीरा। —तुलसी।
भीड़न—स्त्री० [हिं० भीड़ना] १ भीडने की क्रिया या भाव। २ मलने, लगाने या भरने की क्रिया।
भीडना*—स० [हिं० भिडाना] १ मिलाना। २ लगाना। ३. मलना। ४ (दरवाजा) बन्द करना। ५ दे० 'भिडाना'।
भीड़-भड़क्का—पु०=भीड-भाड।
भीड़-भाड—स्त्री० [हिं० भीड+भाड अनु०] एक स्थान पर होनेवाला बहुत से मनुष्यो का जमाव। जन-समूह। भीड।
भीड़ा—वि० [हिं० भिडना] [स्त्री० भीडी] सँकरा। तग। जैसे—भीड़ी गली।
†स्त्री०=भीड।
भीड़ी—स्त्री०=भिंडी।
स्त्री० =भीड।

वि० भीडा की स्त्री० रूप।
भीत—भू० कृ० [स० √भी+क्त] [स्त्री० भीता] १ डरा हुआ। जिसे भय लगा हो। २ विपद् या सकट मे पडा हुआ।
स्त्री०=भीति (डर)।
†स्त्री० [स० भित्ति] दीवार।
मुहा०—(किसी को) भीत मे चुनना=प्राण-दड देने के लिए किसी को कही खडा करके उसके चारो ओर दीवार खडी करना। भीत में दौडना=अपने सामर्थ्य से बाहर कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना=बिना किसी आधार के कोई काम करना या बात कहना।
२ विभाग करनेवाला परदा। ३ चटाई। ४ कमरे का फरश। गच। ५ खड। टुकडा। ६ जगह। स्थान। ७ दरार। ८ कसर। त्रुटि। ९ अवसर। मौका।
भीतचारी (रिन्)—वि० [स० भीत√चर् (प्राप्त होना)+णिनि, उप० स०] डर-डर कर काम करनेवाला।
भीतमना (नस्)—वि० [स० ब० स०] मन मे डरा हुआ।
भीतर—अव्य० [स० अभ्यतर] १ घेरे, भवन आदि की सीमाओ के अन्तर्गत। जैसे—घर के भीतर जो चाहे सो करो। २ मन मे।
पु० १. अन्दरवाला भाग। २ मन। ३ अतपुर।
पद—भीतर का कूआँ=वह उपयोगी पदार्थ जिससे कोई लाभ न उठा सके। अच्छी, पर किसी के काम न आ सकने योग्य चीज।
भीतरा†—वि० [हिं० भीतर] भीतर या जनानखाने मे जानेवाला। स्त्रियो मे आने जानेवाला।
भीतरि*—अव्य०=भीतर।
भीतरिया—पु० [हिं० भीतर] १ वल्लभ सप्रदाय के मदिरो मे वह पुजारी जो गर्भ-गृह अर्थात् मन्दिर के भीतरी भाग मे रहकर देवता की सेवा-पूजा करता हो। २ वह जो किसी का भीतरी भेद या रहस्य जानता हो।
वि०=भीतरी।
भीतरी—वि० [हिं० भीतर+ई (प्रत्य०)] १ भीतरवाला। अदर का। जैसे—भीतरी कमरा, भीतरी दरवाजा। २ छिपा हुआ। गुप्त। जैसे—भीतरी बात या भेद। ३ घनिष्ठ। जैसे—भीतरी दोस्त।
भीतरी-टाँग—स्त्री० [हिं० भीतरी+टाँग] कुश्ती का एक पेच। जब विपक्षी पीठ पर रहता है, तब मौका पाकर खिलाडी भीतर ही से टाँग मार कर विपक्षी को गिराता है। इसी को भीतरी टाँग कहते है।
भीति—स्त्री० [स०√भी+क्तिन्] १ डर। भय। २ किसी काम, चीज, बात या स्थिति को भीषण या विकट समझने की दशा मे मन मे उत्पन्न होनेवाला वह तीव्र भय जो प्राय अयुक्त होने पर भी निरतर बना रहता और उस काम, चीज या बात से मनुष्य को बहुत दूर रखता है। (फोबिया) जैसे—जल-भीति, पाप-भीति, भोजन-भीति, रोग-भीति, स्त्री-भीति आदि।
†स्त्री०=भीत (दीवार)।
भीतिकर—वि० [स० भीति√कृ (करना)+अच्] भयकर। भयावना।
भीतिकारी—वि०=भीतिकर।
भीती—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक अनुचरी या मातृका का नाम।
†स्त्री० १=भित्ति (दीवार)। २=भीति (डर)।

भीन*—पुं० [हिं० विहान] सवेरा। प्रातःकाल।

भीनना—अ० [हिं० भीगना] १. किसी चीज के छोटे छोटे अशों या कणों का किसी दूसरी चीज के सभी भीतरी भागों में पहुँचकर अच्छी तरह एक-रस और सम्मिलित होना। जैसे—कपड़े में रंग भीनना। २. लाक्षणिक रूप में किसी तत्त्व का किसी के अन्दर पहुँचकर अच्छी तरह व्याप्त तथा सम्मिलित होना। जैसे—मन में किसी का अनुराग या हवा में कोई सुगंध भीनना। ३ चारों ओर से आच्छादित होना। ४. अटकना। फँसना। उदा०—मीन ज्यों बंसी भीने।—सूर।

भीना—वि० [हिं० भीनना या भीजना] [स्त्री० भीनी] बहुत ही मन्द, सूक्ष्म या हलका। जैसे—भीनी भीनी गन्ध।

भीभल†—वि० =विह्वल।

भीम—वि० [सं०√भी (भय करना)+मक्] १ भयंकर। भीषण। २. बहुत बड़ा। ३ बहुत बड़ा उत्साही तथा बहादुर।

पुं० १ साहित्य का भयानक रस। २. शिव। ३. विष्णु। ४. अम्लबेंत। ५ कुंती के एक पुत्र जो युधिष्ठिर से छोटे तथा अन्य पांडवों से बड़े थे और जो गदा धारण करते थे। भीमसेन। वृकोदर। पद—भीम का हाथी—भीमसेन का फेंका हुआ हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी आकाश में फेंक दिए थे जो आज तक वायुमंडल में घूम रहे हैं, लौटकर पृथ्वी पर नहीं आए। इसका प्रयोग ऐसे पदार्थ या व्यक्ति के लिए होता है जो एक-बार जाकर फिर न लौटे।) ६ विदर्भ के एक राजा जिन्हें दमन नामक ऋषि के वर से दम, दांत और दमन नामक तीन पुत्र तथा दमयंती नाम की कन्या हुई थी। ७ महर्षि विश्वामित्र के पूर्व-पुरुष जो पुरुरवा के पौत्र थे। ८. संगीत में काफी ठाठ का एक राग।

भीमक—पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे।

भीमकर्मा(र्मन्)—वि० [ब० स०] बहुत बड़ा पराक्रमी।

भीमता—स्त्री० [सं०भीम+तल्+टाप्] भीम या भयानक होने की अवस्था या भाव। भयंकरता। डरावनापन।

भीम-तिथि—स्त्री० [मध्य० स०]=भीमसेनी एकादशी।

भीम-दर्शन—वि० [ब० स०] [स्त्री० भीम-दर्शना] जो देखने में भयानक हो। डरावनी आकृतिवाला।

भीम-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ शुक्ला द्वादशी।

भीम-नाद—वि० [ब० स०] डरावनी आवाज करनेवाला।

पुं० शेर। सिंह।

भीम-पलाशी—स्त्री० [सं०] संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

भीम-बल—पुं० [ब० स०] १ एक प्रकार की अग्नि। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीम-मुख—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का बाण। (रामायण)

भीम-रथ—पुं० [ब० स०] १. पुराणानुसार एक असुर जिसे विष्णु ने अपने कूर्म अवतार में मारा था। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीमरथी—स्त्री० [सं०] १ सह्य पर्वत से निकली हुई एक नदी। (पुराण)

स्त्री० ७७वें वर्ष के सातवें मास की सातवीं रात की समाप्ति पर होने-वाली मनुष्य की शारीरिक अवस्था जो असह्य तथा बहुत कठिन होती है। (वैद्यक)

वि० ऐसा बुड्ढा जो ७०-८० वर्षों का हो चुका हो। बहुत बुड्ढा (व्यक्ति)।

भीमरा†—स्त्री० =भीमा (नदी)।

भीमराज—पुं० [सं० भृंगराज] काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी टाँगें छोटी और पंजे बड़े होते हैं और इसकी दुम में केवल १० पर होते हैं। यह अनेक पशुओं तथा मनुष्यों की बोली अच्छी तरह बोल सकती है।

भीमरिका—स्त्री० [सं०] सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण की एक कन्या।

भीमसेन—पुं० [सं०] युधिष्ठिर के छोटे भाई भीम। वृकोदर (दे० 'भीम')।

भीमसेनी—वि० [हिं० भीमसेन] भीमसेन संबंधी। भीमसेन का। जैसे—भीमसेनी एकादशी।

पुं० कपूर का बरास नामक प्रकार या भेद।

भीमसेनी एकादशी—स्त्री० [हिं० भीमसेनी+एकादशी] १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। निर्जला एकादशी। २. कार्तिक शुक्ला एकादशी। ३. माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर—पुं० [हिं०] एक विशेष प्रकार का कपूर जो बोर्नियो, सुमात्रा आदि द्वीपों में होनेवाले एक प्रकार के वृक्षों के निर्यास से तैयार किया जाता है। बरास।

भीमा—स्त्री० [सं० भीम+टाप्] १. रोचन नाम का गंध-द्रव्य। २. कोड़ा या चाबुक। ३. दुर्गा। ४ दक्षिणी भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है। ५. ४० हाथ लंबी, २० हाथ चौड़ी और २९ हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु)

वि० सं० 'भीम' का स्त्री०।

भीमान् (मत्)—वि० [सं० भी+मतुप्] भयावह। भयंकर।

भीमोदरी—स्त्री० [सं० भीम-उदर, ब० स०, ङीप्] दुर्गा।

भीर†—स्त्री० =भीड़।

वि०=भीरु।

भीरना*—अ० [सं० भी या हिं० भीरु] भयभीत होना। डरना।

भीरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो मध्य-भारत तथा दक्षिण-भारत में होता है। इसकी लकड़ियों से शहतीर बनते हैं और इसमें से गोंद, रंग और तेल निकलता है।

वि०=भीरु (कायर)।

स्त्री०=भीड़।

†वि०=भीड़ा।

भीरी†—स्त्री० [देश०] अरहर का डाल या राशि।

भीरु—वि० [सं० भी+क्रु] १ जिसे भय हुआ हो। डरा हुआ। २. कायर। डरपोक।

पुं० [सं०] १ शृगाल। गीदड़। २. बाघ। ३. एक प्रकार की ईख।

स्त्री० [सं०] १. शतावरी। २ कटकारी। भटकटैया। ३. बकरी। ४. छाया।

भीरुक—पु० [स० भीरु+कन्] १ वन। जगल। २ चांदी। ३ एक प्रकार की ईख। ४. उल्लू।
वि० भीरु। कायर। डरपोक।

भीरुता—स्त्री० [स० भीरु+तल्+टाप्] १. भीरु होने की अवस्था या भाव। कायरता। बुजदिली। २. डर। भय।

भीरुताई*—स्त्री ०=भीरुता।

भीरु-पत्री—स्त्री० [स० व० स०,+ङीष्] शतमूली।

भीरु-हृदय—पु० [स० व० स०] हिरन।

भीरू—स्त्री० [स० भीरु] स्त्री। (डिं०)
वि०=भीरु।

भीरे—अव्य० [हिं० भिडना] पास। समीप।

भील—पु० [स० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] १ विंध्य की पहाड़ियो तथा खानदेश, मेवाड़, मालवा और दक्षिण के जगलो मे रहनेवाली एक वन्य जाति। २. उक्त जाति का पुरुष।
स्त्री० [?] वह मिट्टी जो ताल के सूखने पर निकलती है तथा जिस पर पपडी जमी होती है।

भील-भूषण—स्त्री० [स० भिल्लभूपण] गुजा या घुंघची जिसकी मालाएँ भील लोग पहनते है।

भीली—वि० [हिं० भील] १. भील-सबधी। २. भीलो मे होनेवाला।
स्त्री० भीलो की बोली।

भीलुक—वि० [स० भी+क्लुकन्] भीरु। डरपोक।

भीवँ†—वि०=भीम।
पु०=भीम (पाडव)।

भीवँ सेन†—पुं०=भीमसेन।

भीव*—पु० भीमसेन।
वि०=भीभ।

भीष†—स्त्री०=भीख।

भीषक—वि०[स०√भी (भय करना)+णिच्, पुक्,+ण्वुल्–अक]भीपण।

भीषज—पु०=भेषज।

भीषण—वि० [सं०√भी +णिच्, पुक्,+ ल्यु–अन] [भाव० भीपणता] १ जो देखने मे बहुत भयानक हो। डरावना। २ बहुत ही उग्र तथा दुष्ट स्वभाववाला। ३ दुष्परिणाम के रूप मे होनेवाला। विकट। बहुत ही बुरा। जैसे—भीषण काड।
पु० १. साहित्य का भयानक रस। २ कुदरु। ३. कबूतर। ४ एक प्रकार का ताल या ताड। ५ शल्लकी। सलई। ६. ब्रह्मा। शिव।

भीषणता—स्त्री० [स० भीपण्+तल्+टाप्] भीषण होने की अवस्था या भाव।

भीषन†—वि०=भीषण।

भीषम†—पु०=भीष्म।

भीषा—स्त्री० [स०√भी+णिच्, पुक्,+अङ्+टाप्] १. भयभीत स्त्री। २ डर। भय।

भीषिका—स्त्री० [स० विभीपका] १ ऐसी स्थिति जिसमे बहुत से लोग भयभीत हो। २. बहुत बडे अनिष्ट की आशका जिसके फलस्वरूप लोग विचलित होते तथा इधर-उधर भागने लगते है। आतंक। (पैनिक)

भीष्म—वि० [स०√भी+मक्, पुक्-आगम] डरावना। भयकर। भीपण।
पु० १. शिव। २ गगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु का आठवाँ और सबसे छोटा पुत्र जो 'गागेय' और 'देवव्रत' भी कहा जाता है। ३ साहित्य का भयानक रस। ४. राक्षस। ५. दे० 'भीष्मक'।

भीष्मक—पु० [स० भीष्म+कन्] विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्म-पचक—स्त्री० [स० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन।

भीष्म-पितामह—पु० [स० कर्म० स०] राजा शान्तनु के पुत्र। भीष्म।

भीष्म-मणि—पु०[स० कर्म० स०] एक तरह का सफेद पत्थर।

भीष्म-रत्न—पु०=भीष्म मणि।

भीष्म-सू—स्त्री० [स० प० त०] भीष्म की माता, गगा।

भीष्माष्टमी—स्त्री० [स०भीष्म-अष्टमी, मध्य०स०]माघ शुक्ला अष्टमी। इस तिथि को भीष्म ने प्राण त्यागे थे।

भीसम—वि०, पु०=भीष्म।

भुंइ*—स्त्री० [स० भूमि] पृथ्वी। भूमि।
मुहा०—भुंइ लाना=झुकाना। उदा०—कुडल गहैं सीस भुइ लावा। —जायसी।

भुंइ आँवला—पु० [स० भूम्यामलक] एक प्रकार की घास जो वरसात मे ठढे स्थानो मे होती और ओपधि के काम मे आती है। भद्रआँवला।

भुंइकाँड़ा—पु० [हिं० भुंइ+कद] समुद्र या जलाशय के तट पर होनेवाली एक तरह की घास।

भुंइचाल†—पु०=भूचाल (भूकप)।

भुंइडोल—पु० [हिं० भुंइ+डोलना] भूकप। भूचाल।

भुंइ-तरवर—पु० [हिं० भुंइ+स० तरुवर] सनाय की जाति का एक पेड।

भुंइदग्धा—पु० [हिं० भुंइ+दग्ध] १. वह कर जो भूमि पर चिता जलाने के वदले मे मृतक के सबधियो से लिया जाता है। मसान कर। २. वह कर जो भूमि का मालिक किसी व्यवसायी से व्यवसाय करने के वदले मे लेता है।

भुंइधर†—पु०=भूमिहार।

भुंइधरा—पु० [हिं० भुंइ+धरना] १ आँवाँ लगाने की वह रीति या ढग जिसमे विना गड्ढा खोदे ही भूमि पर वरतन आदि रखकर आग सुलगा देते है। २. दे० भुंइहरा।

भुंइनास—पु० [स० भून्यास] १. किसी वस्तु के एक छोर को भूमि मे इस प्रकार दवाकर जमाना कि उसका कुछ अश पृथ्वी के भीतर गड जाय। २ किसी चीज का वह अश जो इस प्रकार से जमीन मे गड़ या धँस जाय। ३ किवाडो की वह सिटकनी जो नीचे की ओर पत्थर के गड्ढे मे वैठती है। ४. प्राय खेतो मे होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जडे नही होती। ५ अनार। ६ दे० 'भुन्नास'।

भुंइनासी—पु०=भुन्नासी।

भुंइफोड—पु० [हिं० भुंइ+फोडना] वरसात के दिनो मे प्राय दीमको की वाँवी के पास निकलनेवाला एक तरह का कुकुरमुत्ता। गरजुआ।

भुंइहरा—पु० [हिं० भुंइ+घर] १ वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर वनाया गया हो। २ मकान की कुर्सी के नीचे वना हुआ कमरा। तहखाना। ३ दे० 'भुंइधरा'।

भुंइहार—पु० [स० भूमि+हार] १. मिरजापुर जिले के दक्षिण भाग मे रहनेवाली एक अनार्य जाति। २. दे० 'भूमिहार।'

भुंकान—स्त्री० [हिं० भूंकना] भूंकने या भौंकने की अवस्था, भाव या शब्द।

भुंकाना—स० [हिं० भूंकना] किसी को भूंकने मे प्रवृत्त करना।

भुंगाल—पु० [अनु०] तुरही या भोंपा जिसके द्वारा नौ-सेना का अध्यक्ष घोषणा करता है। (लश०)

भुंजन—पु० [स०] भोजन करने की क्रिया। खाना।

भुंजना†—अ०=भुनना।

भुंजवा—पु० [हिं० भुजना] दे० 'भड़भूंजा'।
वि०=भुजिया।

भुंजा†—पु०=भड़-भूंजा।

भुंजौना—पु० [हिं० भूंजना+औना (प्रत्य०)] १ भूंजा या भूंजा हुआ अन्न। २ वह अन्न या पारिश्रमिक जो भूंजा अन्न भूंजने के बदले मे लेता है।
†स०=भुनना।
†पु०=भुनाई (दे०)।

भुंटा†—पुं०=भुट्टा।

भुंडली—स्त्री० [हिं० भूरा या भुंडा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर कँटीले और जहरीले वाल होते हैं। पिल्ला।

भुंडा—वि० [सं० रुंड का अनु०] [स्त्री० भुडी] १. विना सींग का। जिसके सींग न हो। (पशु) २. दुष्ट। पाजी। बदमाश।
वि० [स्त्री० भुडी] भद्दा। भोंडा। उदा०—पासि बैठि सोभै नही, साथि रमाई भुंडि।—गोरखनाथ।

भुंडी—स्त्री० [हिं० भुडा] एक प्रकार की छोटी मछली जिसे मूँछ नही होती। देहातियो की धारणा है कि इसके खाने से खानेवालो को मूँछें नही निकलती।

भुअंग*—पु० [स० भुजग] [स्त्री० भुअगिन] साँप। सर्प।

भुअगम*—पु०=भुअंग (साँप)।

भुअ†—वि०, पु०=भुव।
†स्त्री०=भूमि।

भुअन†—पु०=भुवन।

भुअना†—अ०=भूलना।

भुआ†—पुं०=घूआ।
†स्त्री०=बूआ।

भुआर†—पु०=भुआल (भूपाल)।

भुआल†—पु०=भूपाल (राजा)।

भुइं*—स्त्री०=भूमि।

भुइयां—अव्य० [हिं० भुइँ=भूमि] जमीन या भूमि पर।

भुई†—स्त्री०=भूमि।

भुई*—स्त्री०=बूआ। उदा०—हूँ पुनि मरब होब जरि भुई।—जायसी।
†स्त्री० [हिं० भूआ] एक प्रकार का कीडा जिसके शरीर पर लवे-लवे बाल होते है, तथा जिसका स्पर्श खुजली उत्पन्न करता है।

भुक*—पु० [सं० भुज्] १. भोजन। आहार। २. अग्नि। आग।
†स्त्री०=भूख।

भुकड़ी—स्त्री० [?] वरसात के दिनों मे प्राय. सडी हुई चीजों पर जमनेवाली एक प्रकार की सफेद रग की काई। फफूँदी।
क्रि० प्र०—लगना।

भुकराँद—स्त्री०=भुकरायँध।

भुकरायँध—स्त्री० [हिं० भुँकडी+गध] किसी चीज पर भुकडी जमने से निकलनेवाली गंध।

भुकाना—स०=भुकाना।

भुक्खड़—वि० [हिं० भूख+अड (प्रत्य०)] १. जिसे विशेष तेज भूख लगी हो। २ जिसकी भूख मिटती न हो। जो प्राय. कुछ न कुछ खाता रहता या खाना चाहता हो। ३. लालची। लोलुप। ४. कगाल। दरिद्र।

भुक्त—भू० कृ० [स०√भुज् (खाना)+क्त, कुत्व] १. जो खाया गया हो। भक्षित। २. जिसका भोग किया गया हो। ३. (अविकार-पत्र) जिसे भुना लिया गया हो। (कैश्ड)

भुक्त-भोग—वि० [व० स०] जिसने भोग किया हो।

भुक्त-भोगी—वि० [सं० भुक्त-भोग] जिसे किसी बुरे काम या बात का दूपित परिणाम या फल भोगना पडा हो।

भुक्त-मान—पु० [स० कर्म० स०] कर्म का वह फल या भोग जो भोगा जाता हो या भोगा जाने को हो।

भुक्त-वृद्धि—स्त्री० [प० त०] खाये हुए पदार्थों का पेट मे फूलना।

भुक्त-शेष—वि० [प० त०] खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। जूठा।

भुक्ति—स्त्री० [स०√भुज् (खाना)+क्तिन्, कुत्व] १ भोजन। आहार। २. किसी पदार्थ का किया जानेवाला भोग। ३ लौकिक सुख। ४. ज्योतिष मे ग्रहो का किसी राशि मे अवस्थित होना। ५ वह स्थिति जिसमे कोई किसी पदार्थ पर अपना अधिकार रखकर उसका भोग करता है। कब्जा। दखल। (पजेशन)

भुक्ति-पात्र—पु० [प० त०] ऐसे बरतन जिनमे रखकर चीजें खाई जाती हैं।

भुक्ति-प्रद—वि० [सं० भुक्ति+प्र√दा (देना)+क] [स्त्री० भुक्ति-प्रदा] भोग देनेवाला। भोगदाता।
पु० मूंग।

भुक्तोच्छिष्ट—वि० [भुक्त-उच्छिष्ट, कर्म० स०] किसी के खाने-पीने के बाद बचा हुआ। जूठन के रूप मे होनेवाला।
पु० उच्छिष्ट। जूठन।

भुक्तोज्झित—वि०, पु० [भुक्त-उज्झित, कर्म० स०]=भुक्तोच्छिष्ट।

भुखमरा—वि० [हिं० भूख+मरना] १ जो भूखो मरता हो। २. जो खाने पीने के लिए मरा जाता हो।

भुखमरी—स्त्री० [हिं० भूख+मरना] भूखो विशेपत अन्नाभाव के कारण भूखो मरने की अवस्था या भाव। (स्टारवेशन)

भुखमुआ—वि०=भुखमरा।

भुखाना—अ० [हिं० भूख+आना (प्रत्य०)] भूखा होना। क्षुधित होना।
स० किसी को कुछ समय तक भूखा रखना।

भुखालू†—वि० [हिं० भूख+आलू (प्रत्य०)] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

भुगत†*—स्त्री०, [हिं० भुगतना] १. भुगतने की अवस्था या भाव। २. दे० 'भुक्ति'।

भुगतना—स० [सं० भुक्ति] १. भोग करना। भोगना। जैसे—दंड भुगतना, सजा भुगतना। २. कार्य, व्यय आदि का भार अपने ऊपर लेना। जैसे—व्याह का खरच हम भुगतेंगे।
अ० १. समाप्त होना। पूरा होना।
सयो० क्रि०—लेना।
२. व्यतीत होना। ३ ऋण, देन आदि का पटना।

भुगतान—पु० [हिं० भुगतना] १ भुगतने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. भुगताने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३ देन, मूल्य आदि चुकाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भुगतान-तुला—स्त्री० [हिं०+स०] व्यापारिक वस्तुएँ, पूंजी, सूद, वीमा-शुल्क, जहाज का किराया जिनके सबंध मे एक देश को दूसरे देशो से कुछ पावना हो या दूसरे देशों को देना हो। (वैलेन्स आफ पेमेट)

भुगताना—स० [हिं० भुगतना का स०] १. कोई काम पूरा या सपादन करना। २. किसी को सुख-दु ख आदि का भोग करने मे प्रवृत्त करना। ३. देन आदि चुकाना। भुगतान करना । ३. समय विताना या लगाना। व्यतीत करना। जैसे—जरा-से काम मे तुमने सारा दिन भुगता दिया।

भुगति†—स्त्री०=भुक्ति।

भुगाना—स० [हिं० भोगना का प्रे० रूप] भोग कराना। भोगवाना।

भुगुति†—स्त्री० [स० भुक्ति] १ भोजन। उदा०—भुगुति न मिटै जौ लहिं विधि राखा।—जायसी। २ भिक्षा। उदा०—तव लगि भुगुति न लै सका, रावन सिय, एक साथ।—जायसी। ३. दे० 'भुक्ति'।

भुग्गा†—पु० [?] कूटकर और खाँड या चीनी मिलाकर तैयार किया हुआ चूर्ण।
वि० वेवकूफ। मूर्ख।

भुग्न—वि० [स०√भुज् (टेढा होना)+क्त, कुत्व, नत्व] [स्त्री० भुग्ना] १. टेढ़ा। वक्र। २ बीमार। रोगी।

भुग्ननेत्र—पु० [सं० व०स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे आँखे टेढी हो जाती है।

भुच्च—वि० [हिं० भूत+चढना] बहुत वडा गँवार और मूर्ख। भुच्चड।
स्त्री० गँवार और मूर्ख होने की अवस्था या भाव। उदा०—लाख जाट पिंगल पढै, एक भुच्च लागी रहै। (कहा०)

भुच्चड—वि० [हिं० भूत+चढना] वहुत वडा वेवकूफ। निरा मूर्ख।

भुजंग—पु० [स० भुज√गम् (जाना)+खच्, मुम्] १ साँप। २ हठ-योग मे, कुडलिनी रूपी नागिन का पति या स्वामी। ३. स्त्री का उपपति। यार। ४. प्राचीन भारत मे राजा का एक प्रकार का अनुचर। ५ सीसा नामक धातु।
†वि० लपट।

भुजंग-घातिनी—स्त्री० [स० ष० त०] काकोली।

भुजंग-दमनी—स्त्री० [स० ष० त०] नाकुली कद।

भुजंग-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीष्] नागदमन।

भुजंग-प्रयात—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे चार चार यगण होते है।

भुजंगभुज्—पु० [स० भुजग√भुज् (खाना)+क्विप्] १. गरुड। २. मयूर। मोर।

भुजंग-भोजी (जिन्)—पु० [स० भुजग√भुज् (खाना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० भुजग-भोजिनी] २. गरुड। २. मयूर। मोर।
वि० साँप को खा जानेवाला।

भुजंगम—पु० [स० भुज्√गम् (जाना)+खच्, मुम्] १. साँप। २. सीसा नामक धातु।

भुजंग-लता—स्त्री० [मध्य० स०] पान की वेल।

भुजंग-शत्रु—पुं० [ष० त०] गरुड।

भुजंगा—पु० [स० भुजग] १. कीडे-मकोडे खानेवाला काले रग का एक प्रकार का पक्षी। भुजैटा। कोतवाल। २ दे० 'भुजग'।

भुजंगाख्य—पु० [सं० भुजग-आख्या, ब० स०] नागकेसर।

भुजंगी—स्त्री० [स० भुजग+ङीप्] १. साँपिन। नागिन। २. एक प्रकार का वर्णिक वृत्ति का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः तीन यगण एक लघु और एक गुरु होता है।

भुजगेंद्र—पु० [स० भुजंग-इद्र, ष० त०] शेषनाग।

भुजंगेश—पुं० [स० भुजग-ईश, ष० त०] १. वासुकि। २. शेषनाग। ३. पिंगल मुनि का एक नाम। ४. पतजलि ऋषि का एक नाम।

भुज—पु० [स०√भुज् (खाना)+क] १ वाहु। वाँह। भुजा।
मुहा०—भुज भर भेंटना या मिलना=आलिगन करना। गले लगाना। उदा०—उन्मुक्त उर अस्तित्व खो क्यो तू उसे भुज भर मिली।—महादेवी। भुज में भरना=आलिगन करना। गले लगाना।
२ हाथ। ३. दोनों हाथो के कारण, दो की सख्या का सूचक शब्द। ४. हाथी का सूँड। ५. वृक्ष की डाली। शाखा। ६ किनारा। सिरा। ७. फेरा। लपेट। ८. ज्यामिति या रेखागणित मे किसी क्षेत्र का कोई किनारा या सिरा अथवा उस पर खिची हुई रेखा। (साइड) जैसे—चतुर्भुज, त्रिभुज आदि। ९. त्रिभुज का नीचेवाला किनारा या सिरा। आधार। १०. छाया का मूल आधार। ११ रेखा गणित मे, सम-कोणो का पूरक कोण। १२. ज्योतिष मे तीन राशियो के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति या खगोल का वह अश जो तीन राशि से कम हो।

भुजइल†—पु० [सं० भुजग] भुजगा नामक पक्षी।

भुज-कोटर—पु० [स० ष० त०] बगल। काँख।

भुजग—पु० [स० भुज√गम्+ड] १. साँप। २. अश्लेपा नक्षत्र। ३. सीसा नामक धातु।

भुजग-पति—पु० [स० ष० त०] वासुकि।

भुजगातक—पु० [स० भुजग-अतक, ष० त०] १. गरुड़। २ मोर। ३. नेवला।

भुजगाशन—पु० [स० भुजग√अश् (भोजन करना)+ल्युट्—अन] भुजगातक। (दे०)

भुजगेंद्र—पु० [स० भुजग-इद्र, ष० त०] शेषनाग। वासुकि।

भुजगेश, भुजगेश्वर—पु० [स० भुजग-ईश, भुजग-ईश्वर, ष० त०] भुजगेन्द्र। वासुकि।

भुज-ज्या—स्त्री० [सं० ष० त०] त्रिकोणमिति मे भुज की ज्या।

भुज-दंड—पु० [सं० मध्य० स०] बाहुदंड।
भुजपात†—पु० दे० 'भूर्जपत्र'।
भुज-पाश—पु० [सं० मध्य० स०] किसी के गले मे हाथ डालना। गलबाँही।
भुज-प्रतिभुज—पु० [सं० द्व० स०] रेखा-गणित मे, सरल क्षेत्र की समानांतर या आमने-सामने की भुजाएँ।
भुज-बंद—पु०=भुजबंध।
भुजबंध—पु० [सं० तृ० त०] १. भुजाओ से किसी को बाँधने की क्रिया या भाव। २ अंगद या बाजूबंद नाम का (बाँह पर पहनने का) गहना।
भुज-बल—पु० [ष० त०] १. बाँहो अर्थात् शरीर मे होनेवाला बल। शारीरिक शक्ति। २. शालिहोत्र के अनुसार एक प्रकार की भौरी जो घोडे के अगले पैर मे ऊपर की ओर होती है।
भुजबाथ*—पु० [हिं० भुज+बाँधना] गले मे हाथ डालकर किया जानेवाला आलिंगन। गलबाँही।
भुजमान—पु० [सं० ष० त०] रेखा-गणित मे उन दो रेखाओं मे से प्रत्येक रेखा, जो किसी क्षेत्र पर कोई बिन्दु निश्चित करने के लिए खीची जाती है। (आर्डिनेन्ट)
भुज-मूल—पु० [सं० ष० त०] १. कन्धा, जहाँ से भुजा का आरंभ होता है। २ काँख।
भुजरी—स्त्री० [?] १. गेहूँ की वे बालें जो स्त्रियाँ धार्मिक अवसरों (जैसे—नागपचमी, हरतालिका तीज) पर टोकरियो मे रखकर उगाती और नियत समय पर किसी जलाशय या नदी मे प्रवाहित करती हैं। जरई। २. उक्त को प्रवाह के लिए ले जाने के समय गाये जानेवाले विशिष्ट प्रकार के गीत।
भुजवा—पु० [हिं० भूनना] भड़भूँजा।
वि० भूँजा हुआ।
भुजवाई—स्त्री० [हिं० भुजवाना] भुनवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। भुनाई।
भुज-शिखर—पु० [सं० ष० त०] कंधा।
भुजांतर—पुं० [सं० भुज-अंतर, ष० त०] १. दोनो बाँहों के बीच का स्थान, अर्थात् क्रोड। गोद। २ छाती। वक्ष। ३. दो भुजाओ के बीच का अन्तर या दूरी।
भुजा—स्त्री० [सं० भुज+टाप्] बाँह। बाहु।
मुहा०—भुजा उठा या टेककर (कहना)=प्रण अथवा प्रतिज्ञा करते हुए (कहना)।
भुजा-कंट—पु० [ष० त०] हाथ की उँगली का नाखून।
भुजाग्र—पुं० [सं० भुजा-अग्र, ष० त०] हाथ।
भुजा-दल—पु० [ष० त०] कर रूपी पल्लव।
भुजाना†—स०=भुनाना।
भुजा-मध्य—पुं० [ष० त०] कोहनी।
भुजा-मूल—पु० [ष० त०] कंधे का वह अगला भाग जहाँ से हाथ आरंभ होता है। बाहु-मूल।
भुजायन—पु० [सं०] १ भुजाओ के रूप मे अपने कुछ अंग शरीर के बाहर निकालना। २. दे० 'विकिरण'।
भुजाली—स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की बड़ी टेढी छुरी। २. छोटी बरछी।
भुजिया—वि० [हिं० भूँजना=भूनना] जो भूनकर तैयार किया या बनाया गया हो। जैसे—भुजिया चावल, भुजिया तरकारी।
पु० १. वह चावल जो धान को उबालकर तैयार किया गया हो। २. वह तरकारी जो सूखी ही भूनकर बनाई जाती है और जिसमें रसा या शोरबा नही होता। सूखी तरकारी।
भुजिष्य—पु० [सं०√भुज् (भोगना)+किष्यन्] [स्त्री० भुजिष्या] दास। सेवक।
भुजिष्या—स्त्री० [सं० भुजिष्य+टाप्] १. दासी। २. गणिका। रंडी। वेश्या।
भुजेना—पु० [हिं० भूजना] भूना हुआ दाना। चबेना।
भुजेल—पु० [सं० भुजग] भुजंगा (पक्षी)।
भुजौना*—पुं० [हिं० भूजना] १. भूना हुआ अन्न। भूना। भूजा। २. वह अन्न या पारिश्रमिक जो भूँजा अन्न भूनने के बदले मे लेता है। ३. बडे सिक्के भुनाने के लिए बदले मे दिया जानेवाला धन। भुनाई।
भुटिया—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की धारी जो डोरिये और चारखाने के बुनने मे डाली जाती है। (जुलाहे)
†पुं०=भोट या भोटिया।
भुट्टा—पु० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्टो] १ मक्के की हरी बाल जिसे भूनकर खाते है। २ ज्वार-बाजरे आदि की हरी बाल।
मुहा०—भुट्टा सा उडना या उड़ जाना=एक साधारण झटके से ही कटकर अलग हो जाना या कटकर दूर जा पडना। जैसे—तलवार के एक ही वार से उसका सिर भुट्टा-सा उड़ गया।
३. गुच्छा।
भुठार—पु० [हिं० भूड+ठौर] वह छोटा या ऐसा ही और कोई पशु जो ऐसे प्रदेश मे उत्पन्न हुआ हो जहाँ की भूमि बलुई या रेतीली हो।
भुठौरा†—पु० [हिं० भूड+ठौर] घोडो की एक जाति।
भुडली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फूल और उसका पौधा।
भुड़िला†—पुं० दे० 'भुडा'।
भुतलाना†—अ० [हिं० भुलाना=भूलना] १. रास्ता भूलकर इधर-उधर हो जाना। २. कोई चीज भूलने के कारण गुम हो जाना।
भुन—पु० [अनु०] मक्खी आदि के बोलने का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।
मुहा०—भुनभुन करना=कुढ़कर अस्पष्ट स्वर मे कई तरह की बातें कहना।
भुनगा—पु० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १. एक प्रकार का छोटा उडनेवाला कीडा जो प्राय फूलो और फलों मे रहता है और शिशिर ऋतु मे प्राय. उड़ता रहता है। २ पतंगा। फतिंगा। ३ बहुत ही तुच्छ पदार्थ या व्यक्ति।
भुनगी—स्त्री० [हिं० भुनगा] एक प्रकार का छोटा कीडा जो ईख के पौधों को हानि पहुँचाता है।
भुनचट्टी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।
भुनना—अ० [हिं० भुनाना का अ०] १. आग की गरमी से भूना जाना।

२. तोप, बन्दूक आदि की मार से मारा जाना। ३. नोट, रुपए आदि का छोटे छोटे सिक्कों मे परिवर्तित होना।

भुनभुनाना—अ०[अनु०]१. भुनभुन शब्द होना।

स० १. भुनभुन शब्द करना। २. कुढकर बहुत धीरे धीरे या अस्पष्ट रूप मे कई तरह की बाते कहना।

भुनवाई—स्त्री०[हिं० भुनवाना]१ भुनवाने की क्रिया या भाव। २. भुनाने के बदले में दी जानेवाली रकम। भाँज।

भुनाई†—स्त्री०=भुनवाई।

भुनाना—स०[हिं० भूनना का प्रे०]१. भूनने का काम किसी दूसरे से कराना। २ किसी को कुछ भूनने मे प्रवृत्त करना। ३. नोट रुपए आदि को छोटे सिक्को मे बदलवाना।

†अ०=भूनना (भूना जाना)।

भुनुगा—पुं०=भुनगा।

भुन्नास—पु०–[हिं० भुंइनास]१. दे० 'भुंइनास'। २ पुरुष की इद्रिय। लिग। (बाजारू)

भुन्नासी—पु०[हिं० भुंइनास] एक प्रकार का बडा देशी ताला जो प्राय दूकानों आदि मे बन्द किया जाता है। इसमे लोहे का एक छोटा छड होता है जो ताला बन्द करने पर जमीन मे किये हुए छेद मे बैठ जाता है।

भुवि*—स्त्री०=भूमि।

भुमिया†—पुं०=भूमिया (१. जमीदार, २. देवता)।

भुयंग—पु०=भुजग (साँप)।

भुरकना—अ०[स० भुरण]१. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २ विस्मृत होना। भूलना।

†स०=बुरकना (छिडकना)।

भुरकस—पु०[हिं० भुरकना]१. किसी चीज का बहुत बुरी तरह कुचला या मसला हुआ रूप।

मुहा०—(किसी का)भुरकस निकलना=(क) चूर-चूर होकर विनष्ट होना। (ख) परिश्रम, भार आदि के कारण बहुत अधिक दुर्दशाग्रस्त होना।

२. बुकनी।

वि० चूर्ण या टुकड़े किया हुआ।

भुरका—पु०[हिं० भुरकना]१. भुरकने की अवस्था क्रिया, या भाव। २. चूर्ण। बुकनी। ३ अभ्रक का चूर्ण। अबीर। ४. मिट्टी का कसोरा या प्याला। ५. कुल्हड। कूजा। ६ मिट्टी की दवात।

भुरकाना—स०[हिं० भुरकना] १ किसी चीज को इतना सुखाना कि वह भुरभुरी हो जाय। २ छिडकना। भुरभुराना। ३. भुलावा देना। बहकाना। भुलाना।

भुरकी—स्त्री० [हिं० भुरका] १ अन्न रखने की छोटी कोठिला। घुनकी। २. पानी का छोटा गड्ढा। ३ हौज। ४ छोटा भुरका या कुल्हड। ५ छिद्र। छेद। (पूरब)

भुरकुटा—पु० [अनु० भुर] छोटा कीड़ा-मकोडा।

भुरकुन†—पु०[सं० भुरण; हिं० भुरकना] १. चूर्ण। चूरा। २. दे० 'भुरकस'।

भुरकुस†—वि०,पु०=भुरकस।

भुरजाल†—पु०[?] गढ। उदा०—भला चीत भुरजालरा, आम लगाव सीग।—बाँकीदास।

भुरजी†—पु०=भूँजा।

†स्त्री०=बुर्जी (छोटा बुर्ज)।

भुरत—पुं०[देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

भुरता—पु०[हिं० भुरकाना या भुरभुरा]१ वह पदार्थ जो कुचले जा पर दबकर ऐसा बिगड़ गया हो कि उसके अवयवो और आकृति क पहचान न हो सके। २. चोखा या भरता नाम का सालन।

भुरभुर—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो ऊपर या रेतीली भूमि मे होती है। भुरभुरोई। भुलनी।

भुरभुरा—वि०[अनु०] [स्त्री० भुरभुरी]साधारण स्पर्श या हलके दबाव से जिसके कण या रवे अलग-अलग हो जायँ। जैसे—भुरभुरी मिट्टी

पु०[देश०] एक बरसाती घास।

भुरभुराना —स०[हिं० भुरभुरा] १. इस प्रकार किसी चीज को स्पर्श करना कि उसके कण या रवे अलग अलग हो जायँ। २. चुटकी य उँगली मे कोई चूर्ण रखकर किसी चीज पर छिड़कना। बुरकना।

भुरभुराहट—स्त्री० [हिं० भुरभुरा+आहट (प्रत्य०)] भुरभुरे होने की अवस्था, गुण या भाव। भुरभुरापन।

भुरली†—स्त्री०[हिं० भुडली]१. कमला या सूँडी नाम का कीडा। भु डली। २. फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा।

भुरवना†—स०[सं० भ्रमण, हिं० भरमना का प्रे०]१. किसी को भ्रम में डालना। भुलावा देना। २ प्रलोभन देना। फुसलाना। उदा०—बातनि भुरइ राधिका भोरी।—सूर।

भुरहरा*—पुं०=भोर (तड़का या सवेरा)।

वि०=भुरभुरा।

भुरहरे—अव्य०=भोरहरे।

भुराई—स्त्री० [हिं० भोला+आई (प्रत्य०)] भोलापन। सीधापन।

*स्त्री०[हिं० भूरा+आई (प्रत्य०)]भूरापन।

भुराना —अ०[हिं० भुलाना या भूलना]१. किसी के भुलावे या धोखे में आना। २ विस्मृत होना। भूलना।

स० भुलावे या धोखे मे डालना। बहकाना। भुरवना।

भुरावना*—अ०, स०=भुराना।

भुरुकी—स्त्री०=भुरका।

भुर्रा—वि०[हिं० भूरा या भौंरा] अत्यधिक काला या कुरूप।

पु० एक तरह की चीनी।

भुलक्कड़—वि० [हिं० भूलना+अक्कड (प्रत्य०)] [भाव० भुलक्कडी-पन](व्यक्ति) जो प्राय कुछ न कुछ भूल जाता हो। फलत क्षीण स्मरण शक्तिवाला।

भुलना—वि० [हिं० भूलना] अक्सर भूलता रहनेवाला। विस्मरणशील-भुलक्कड। जैसे—भुलना स्वभाव।

†अ०=भूलना।

पु०एक प्रकार की घास जिसके विषय मे लोगो मे यह प्रवाद है कि इसके खाने से लोग सब बातें भूल जाते हैं।

भुलभुला—पु० [अनु०] गरम राख। भूभल।

भुलवाना—स० [हिं० भूलना का प्रे०]१ किसी को कुछ भूलने मे प्रवृत्त

करना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई भूलकर भ्रम में पड़े। धोखे में डालना।

भुलसना†—अ०, स०=झुलसना।

भुलाना—स०[हिं० भूलना]१. स्मरण की हुई या रटी हुई बात स्मृति पथ से उतरना। २. ऐसा प्रयत्न करना कि पुरानी विशेषत दुःखद घटनाएँ या बातें स्मरण-शक्ति में न आवें। ३. भ्रम में डालना। धोखा देना।

अ०१. विस्मृत होना। भूलना। २. धोखे या भ्रम में पड़ना। भुलावे में आना। ३ इधर-उधर भटकना।

भुलावा—पु० [हिं०भूलना] ऐसी बात जो किसी को धोखे या भ्रम में डालने के लिए कही जाय। छलपूर्ण बात।

क्रि० प्र०—देना।

भुलेखा—पु०[हिं० भूल+धोखा] भूल से होनेवाला धोखा या भ्रम।

भुवंग—पु०=भुजग (साँप)।

भुवंगम†—पुं०=भुजगम (साँप)।

भुव(वस्)—पु०[सं० भू+असुन्]१. वह आकाश या अवकाश जो भूमि और सूर्य के बीच में है। अतंरिक्ष।

विशेष—यह सात लोकों के अंतर्गत दूसरा लोक कहा गया है।

२ सात महाव्याहृतियों के अंतर्गत दूसरी महाव्याहृति।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार यह महाव्याहृति ओंकार की उकार मात्रा के संग यजुर्वेद से निकाली गई है।

भुव—पु०[सं० भू+क]अग्नि। आग।

स्त्री०१.=भू (पृथ्वी)। ३. भौंह (भ्रू)।

भुवण†—पुं०=भवन।

भुवन—पु० [सं०√भू (होना)+क्युन्—अन] १. जगत। संसार। २. पुराणानुसार चौदह लोकों में से प्रत्येक लोक की संज्ञा। सातों स्वर्गों और सातों पातालों में से प्रत्येक। (दे० 'लोक') ३. उक्त के आधार पर चौदह की संख्या का सूचक शब्द। ४. जल। पानी। ५. आकाश। ६. जन। लोग। ७. एक प्राचीन मुनि।

भुवनकोश—पु०[ष० त०] १. भूमडल। पृथिवी। २. चौदहों भुवनों की समष्टि। ३. समस्त ब्रह्माण्ड।

भुवन-त्रय—पुं० [सं०ष० त०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

भुवनपति—पु०[सं ष० त०] एक देवता जो महीधर के अनुसार अग्नि का भाई है।

भुवन-पावनी—स्त्री०[ष० त०]गंगा।

भुवन-भावन—पु० [ष० त०] सब लोकों की सृष्टि करनेवाला; परमेश्वर।

भुवन-माता (तृ)—स्त्री०[ष० त०] दुर्गा।

भुवन-मोहिनी—स्त्री०[ष० त०] देवी का एक रूप।

भुवनाधीश—पु०[भुवन-अधीश, ष० त०] एक रुद्र का नाम।

भुवनेश—पुं०[भुवन-ईश, ष० त०]१. शिव की एक मूर्ति। २. ईश्वर।

भुवनेश्वर—पु० [भुवन-ईश्वर, ष० त०] १ शिव की एक मूर्ति या रूप। २ एक प्रसिद्ध तीर्थ जो उड़ीसा में पुरी के पास है और जहाँ उक्त शिव की मूर्ति है।

भुवनेश्वरी—स्त्री०[भुवन-ईश्वरी, ष० त०] दस महाविद्याओं में से एक। (तंत्र)

भुवन्यु—पु०[भू+कन्युच्] १. सूर्य। २. अग्नि। आग। ३. चन्द्रमा। ४. प्रभु। स्वामी।

भुवपाल†—पु०=भूपाल (राजा)।

भुवर्लोक—पुं० [सं० कर्म० स०] सात लोकों में से दूसरा लोक। पृथ्वी और सूर्य का मध्यवर्ती भाग। अंतरिक्ष।

भुवा—पु०[हिं० घूआ] घूआ। रुई।

भुवार —पु०=भुवाल (भूपाल)।

भुवाल†—पु०[सं० भूपाल; प्रा० भुआल] राजा।

भुशुंडी—पु० [सं०]१. काक भुशुंडी। २. महाभारत काल का चमड़े का एक प्रकार का अस्त्र। इसके बीच में एक गोल चदोआ होता था जिसके साथ डोरी या तस्मे से दो कड़े बंधे रहते थे; जिनसे आघात या वार होता था।

भुसा†—पु०=भूसा

भुसी*—स्त्री०=भूसी।

भुसुंड—पुं०[सं० भुशुंड] सूँड़।

वि० बहुत मोटा और भद्दा। जैसे—काला-भुसुंड।

भुसुंडी—पु०=भुशुंडी।

भुसौला—पु०[हिं० भूसा+औला (प्रत्य०)] [स्त्री० भुसौली] वह कोठरी जिसमें भूसा भरा रहता है।

भुहराना†—स०=भुरभुराना।

भूँई—स्त्री० [सं० भूमि] भूमि। पृथ्वी।

भूँकना—अ०[अनु०]१. कुत्तों का भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना। २. झूठ-मूठ या व्यर्थ में (किसी के पीछे पड़कर उसके संबंध में) बुरा-भला बकते फिरना।

भूँख†—स्त्री०=भूख।

भूँजा†—वि०=भूखा।

भूँगड़ा†—पुं०[हिं० भूनना] भूना हुआ चना।

भूँचाल—पु०=भूकंप। (पश्चिम)

भूँजा†—पु०=भड़भूँजा। उदा०—करम विहून ए दूनौ, कोड रे धोवि भूकोक भूँजा—जायसी।

भूँजना—स० १.=भूनना। २.=भोगना।

भूँजा—पुं० [हिं० भूनना]१. भूना हुआ अन्न। चबेना। २. अन्न भूँजनेवाला व्यक्ति। भड़भूँजा। ३. अन्न भूँजनेवालों की जाति।

भूँड़—स्त्री०=भूड़ (बलुई भूमि या मिट्टी)।

भूँडरी—स्त्री०[सं० भू] मध्य युग में, नाऊ, बारी आदि को जोतने-बोने के लिए जमींदार से मिलनेवाली ऐसी भूमि जिसपर उन्हें लगान नहीं देना पड़ता था।

भूँटा†—वि०=भोंटा।

भूँड़िया —पु०[हिं० भूँडरी=माफी जमीन] ऐसा कृषक जो दूसरों से हल-बैल माँगकर खेती करता हो।

भूँडोल†—पु०=भूकप।

भूँरो—पु० [सं० भ्रमर] भ्रमर। भौंरा। (डिं०)

भूँसना —अ०=भूकना।

भू—स्त्री० [सं०√भू+क्विप्] १. पृथ्वी। २. जमीन। भूमि। ३ जगह। स्थान। ४. अस्तित्व। सत्ता। ५ प्राप्ति। ६ यज्ञ की अग्नि। ७ रसातल। ८ सीता की एक सखी।
†स्त्री०=भू (भौंह)।

भू-आँवला—पु०[सं० भूम्यामलक]एक तरह की घास।

भूआ—पु०[हिं० घूआ] [स्त्री० अल्पा० भूई]रुई के समान हलकी और मुलायम वस्तु का बहुत छोटा टुकडा। घूआ। जैसे—सेमर का भूआ।
†स्त्री०=बूआ (पिता की बहन)।

भू-आगम—पु० [सं० सुप्सुपा स०] १. भूमि से होनेवाली आय। २ सरकार को लगान के रूप मे होनेवाली आय। (लैंड रेवेन्यू)

भूई—स्त्री०[हिं० भूआ का स्त्री० अल्पा०] पूनी।

भूकंद—पु०[ष० त०] जमीकंद। सूरन।

भू-कंप—पु०[ष० त०] कुछ क्षणों के लिए धरातल पर होनेवाला वह प्राकृतिक कपन जिस के फलस्वरूप मकान आदि हिलने लगते या गिर पडते जमीन फट या दब जाती और कुछ अवस्थाओ मे थल के स्थान पर जल या जल के स्थान पर थल हो जाता है। भूचाल। (अर्थक्वेक)

भूकंपमापी—पु०=भूकप लेखी।

भूकंपलेख—पु० [सं०] वह अकन या लेख जो भूकप लेखी यत्र से भूकपो की गतिविधि, वेग, व्यापकता आदि के सबध मे प्रस्तुत होता है। (सीस्मोग्राम)

भूकंपलेखी—पु० [सं० भूकप-लेखिन्] एक प्रकार का यत्र जो जमीन के नीचे रहता है, और जिससे यह जाना जाता है कि भूकंप कहाँ और किस ओर से आया और कितने समय तक रहा और उसकी तीव्रता या वेग कितना है। (सीस्मोग्राफ)

भूकप-विज्ञान—पुं० [ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे भूकपो के कारणो तथा गतिविधि, वेग, स्वरूप आदि का विवेचन होता है। (सीस्मोलाजी)

भूकां—स्त्री०=भूख।

भू-कदंब—पु०[सं० त०] एक तरह का कदब।

भूकना—अ० दे० 'भूँकना'।

भू-कर्ण—पुं०[ष० त०] पृथ्वी का व्यास।

भू-कश्यप—पु०[सं० त०] कृष्ण के पिता वसुदेव का एक नाम।

भूका—वि०=भूखा।

भू-काक—पु०[सं० स० त०]१. एक तरह का बाज पक्षी। २. क्रौंच पक्षी। ३. नीला कबूतर।

भू-कुष्मांडी—स्त्री०[सं० स० त०] भुंइकुम्हडा। विदारी।

भूकेश—पु० [ष० त०]१. बरगद का पेड। वट। वृक्ष। २ सेवार।

भूकेशा—स्त्री०[सं० ब० स०,+डीष्] राक्षसी।

भूखड—पु० [सं० ष० त०] १ भूमि का कोई टुकडा। २. पृथ्वी का कोई खड या विभाग। (ट्रैक्ट)

भूख—स्त्री०[सं० बुभुक्षा] पेट खाली होने पर अन्न आदि भक्षण करने की तीव्र इच्छा।
मुहा०—भूख मरना=(क) ऐसी शारीरिक स्थिति उत्पन्न होना जिसमे पूरी भूख न लगती हो और फलत उचित मात्रा मे भोजन न किया जा सकता हो। (ख) इच्छा न रहना। भूख लगना=भोजन करने की आवश्यकता प्रतीत होना। कुछ खाने को जी चाहना। भूखों मरना=(क) भोजन के अभाव मे भूख से व्याकुल होकर मरना। (ख) भोजन के लिए मारे मारे फिरना।
२. कोई चीज पाने या लेने की आवश्यकता और इच्छा। (व्यापारी) जैसे—जितनी भूख होगी, उतना माल खरीद लेंगे। ३. अवकाश। गुजाइश। समाई। ४ कोई चीज प्राप्त करने की उत्कट इच्छा। उदा०—मेरे मन मे स्त्री की भूख जाग उठती थी।—अमृतलाल नागर।

भूखण, भूखन†—पु०=भूषण।

भूखना*—स०[सं० भूषण] भूषित करना। सुसज्जित करना। सजाना।
अ० भूषित होना। सजना।

भूखर—स्त्री०[हिं० भूख] १. भूख। क्षुधा। २. इच्छा। कामना।

भूखरी—स्त्री०[मध्य० स०] छोटी खजूर।

भूखा—वि०[हिं० भूख]१. जिसे भूख लगी हो। २. उत्कट इच्छुक या याचक। जैसे—प्यार का भूखा। ३. दरिद्र।

भूखा-नगा—वि० [हिं०] अन्न-वस्त्र के कष्ट मे पीड़ित और दरिद्र।

भूखा-प्यासा—वि० [हिं०] जिसे भूख तथा प्यास लगी हो। क्षुधित-तृषित।

भू-गंधा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] मुरा नामक गन्ध द्रव्य।

भू-गर्भ—पु० [सं० ष० त०] १ पृथ्वी का नीचेवाला या भीतरी भाग। २. विष्णु। ३ सस्कृत के भवभूति कवि का एक नाम।

भू-गर्भगृह—पु० [सं० मध्य० स०] तल-घर। तहखाना।

भू-गर्भविद्या—स्त्री० [ष० त०] दे० 'भूगास्त्र'।

भू-गर्भशास्त्र—पु० [ष० त०] भू-शास्त्र। (दे०)

भूगोल—पु० [सं० ष० त०] १ पृथ्वी। २ वह शास्त्र जिसमे पृथ्वी तल के ऊपरी स्वरूप, प्राकृतिक या विभागो जगलो, नदियो, पहाडो आदि कृत्रिम या मानवी राजनीतिक विभागो (देश, नगर, गाँव आदि) वातावरणिक विभागो (उष्ण कटिबध, शीत कटिबध) तथा उद्योग-धधों, ऋतुओ, निवासियों तथा इसी प्रकार की और बातों का विचार होता है। (जियॉग्रैफी)

भूगोलक—पु० [सं० भूगोल+कन्] भूमडल।

भूचक्र—पु० [सं० ष० त०] १. पृथ्वी की परिधि। २ क्रान्ति वृत्त। ३. विषुवत् रेखा।

भूचर—वि० [सं० भू√चर् (जाना)+ट] स्थलचर।
पु० १ स्थलचर प्राणी। शिव। ३ दीमक। ४ वह सिद्धि जिससे मनुष्य के लिए सब कुछ गम्य, प्रत्यक्ष तथा प्राप्य होता है। (तंत्र)

भूचरी—स्त्री० [सं० भूचर+ङीष्] योग साधन मे समाधि की एक मुद्रा जिसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनो एकत्र हो जाती हैं।

भूचाल—पु० [सं० भू+हिं० चाल=चलना] भूकप। (देखें)

भू-चित्रावली—स्त्री० [सं० ष० त०] दे० 'मान-चित्रावली'।

भू-छाया—स्त्री० दे० 'प्रच्छाया'।

भूजतु—पु० [सं० ष० त०] १. हाथी। २. एक तरह का घोघा। ३. सीसा नामक धातु।

भूजबु—पु० [सं० ष० त०] १. गेहूँ। २. वन जामुन।

भूजा—स्त्री० [स० भू√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] सीता। उदा०—आर्द्र नयन भूजा ने तत्क्षण आर्तों का दुख किया निवारण।—पत। †पु०=भूँजा।

भूजात—पु० [सं० प० त०] वृक्ष। पेड़।

भूजी†—स्त्री =भुजिया।

भूटान—पु० [स० भोटँग] नेपाल के पूर्व तथा आसाम के उत्तर मे स्थित एक स्वतत्र देश।

भूटानी—वि० [हिं० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान-सबधी। पु० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोडा। स्त्री० भूटान देश की बोली।

भूटिया बादाम—पु० [हिं० भूटान+फा० बादाम] एक प्रकार का मँझोला पहाडी वृक्ष जिसे कपासी भी कहते हैं। इसका फल खाया जाता है।

भूड़—स्त्री० [देश०] १. वह भूमि जिसमे बालू मिला हुआ हो। बलुई भूमि। २ कुएँ का भीतरी स्रोत। झिर। सोत।

भूडोल—पु० [स० भू+हिं० डोलना] भूकप। (देखे)

भूण—पु० [स० भ्रमण] १. नदी, समुद्र आदि की यात्रा। जल-यात्रा। २. जल-विहार। (डिं०)

भूत—वि० [स० √भू (होना)+क्त] १. जो अस्तित्व मे आ चुका या बन चुका हो। बना हुआ। २. जो घटना आदि के रूप मे घटित हो चुका हो। ३. जो किसी विशिष्ट रूप को प्राप्त हो चुका हो। जैसे—अन्तर्भूत, भस्मीभूत। ४ जो समय के विचार से बीत चुका हो। पहले का। पुराना। जैसे—भूत-काल, भूत-पूर्व मत्री। ५. जो किसी के सदृश या समान हो चुका हो। जैसे—ब्रह्मीभूत।

पु० [स० भूत] १. शिव का एक रूप। २. चद्रमास का कृष्णपक्ष। ३. चद्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी। ४. देवताओं के एक पुरोहित। ५ पुत्र। बेट।

पु० [स० भूत] १ वह जिसकी कोई सत्ता हो। कोई चेतन या जड पदार्थ। २ जीव। प्राणी। ३. दार्शनिक क्षेत्र मे वे विशिष्ट मूल तत्त्व जिनसे सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। (इनकी सख्या पाँच कही गई है, यथा—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश)। ४. बीता हुआ काल या समय। गुजरा हुआ जमाना। ५. व्याकरण में, क्रिया के तीन कालो मे से एक जो किसी घटना के पूर्व समय मे समाप्त या सम्पन्न हो चुकने का सूचक होता है। जैसे—वह चला गया। यहाँ 'चला गया' क्रिया भूतकाल की सूचक है। ६ पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर है और जिनका मुँह नीचे की ओर लटका हुआ या ऊपर की ओर उठा हुआ माना जाता है। ७. लोक-व्यवहार मे किसी मृत प्राणी की आत्मा जिसके सबध मे यह माना जाता है कि छाया के रूप मे और बहुत ही सूक्ष्म शरीर वाली होती है। जिन। शैतान।

विशेष—इनके विषय मे यह भी माना जाता है, कि इनका यह रूप तब तक बना रहता है, जब तक इनकी मुक्ति या मोक्ष नही हो जाता; अथवा इन्हे दूसरा जन्म नही प्राप्त होता। यह भी समझा जाता है कि ये कभी कभी लोगो को दिखाई भी पडती है और अनेक प्रकार के उपद्रव भी करती है। यह भी कहा जाता है कि कभी कभी ये किसी व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क पर अधिकार करके उसके होश-हवास बिगाड देती हैं, जिससे वह बकने-झकने और पागलो के से काम करने लगाता है। इसी दृष्टि से इस शब्द के साथ आना, उतरना, चढना, लगना आदि क्रियाओं का भी प्रयोग होता है।

पद—भूतों का पकवान या मिठाई =(क) ऐसा पदार्थ जो भ्रम-वश दिखाई तो दे पर वास्तव मे जिसका कोई अस्तित्व न हो। (कहते हैं कि भूत प्रेत आकर ऐसी मिठाई रख जाते है, जो खाने या छूने पर मिठाई नही रह जाती, राख, मिट्टी, विष्ठा आदि हो जाती है। (ग) बिना किसी परिश्रम के या बहुत सहज मे मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।

मुहा०—(किसी पर) भूत चढ़ना या सवार होना=(क) किसी पर भूत का आवेश होना। (ख) किसी का बहुत अधिक क्रुद्ध होकर पागलों का-सा आचरण या व्यवहार करने लगना। (किसी बात का) भूत चढना या सवार होना=(किसी बात के लिए) बहुत अधिक आग्रह, तन्मयता या हठ होना। जैसे—तुम्हे तो हर बात का भूत चढ जाता है। (किसी काम या बात के लिए) भूत बनना=बहुत ही तन्मयता या दृढतापूर्वक और पागलो की तरह किसी काम के पीछे पडना या उसमे बुरी तरह से लगना। (किसी को) भूत लगना=किसी पर भूत चढना या सवार होना। (दे० ऊपर)

८. वह औषध जिसके सेवन से प्रेतों और पिशाचो का उपद्रव शात होता हो। ९. मृत शरीर। शव। लाश। १० सत्य। ११ कार्तिकेय। १२. योगी। १३. वृत्त। १४. लोध्र। लोध।

भूतक—पु० [सं० भूत+कन्] पुराणानुसार सुमेरु पर के २१ लोकों मे से एक लोक।

भूतकर्ता (तृ)—पु० [प० त०] ब्रह्मा। स्रष्टा।

भूतकला—स्त्री० [प० त०] एक प्रकार की शक्ति जो पंच भूतों को उत्पन्न करनेवाली मानी गई है।

भूतकाल—पु० [कर्म० स०] बीता हुआ समय।

भूतकालिक—वि० [स० भूतकाल+ठन्—इक] भूतकाल-सबधी। जो बीते हुए समय मे हुआ हो या उनसे सम्बन्ध रखता हो। जैसे—भूत-कालिक कृदत।

भूतकालिक कृदन्त—पु० [कर्म०स०] क्रिया से बना हुआ भूत काल का सूचक विशेषण रूप। जैसे—कृत, गत, परिष्कृत आदि।

भूत-कृत—पु० [स० भूत√कृ (करना)+क्विप्, तुक्-आगम] १. देवता। २. विष्णु।

भूतकृदंत—पु० [स०] व्याकरण मे क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया भूत काल मे पूरी या समाप्त हो चुकी थी। जैसे—'चलना' क्रिया का भूतकृदत 'चला' और 'बैठना' क्रिया का भूतकृदत 'बैठा' है।

भूत-केश—पु० [प० त०] १. सफेद दूब। २. इद्र-वारुणी। ३. सफेद तुलसी। ४. जटामासी।

भूतक्राति—स्त्री० [प० त०] किसी व्यक्ति पर होनेवाला भूतो का आवेश।

भूतखाना—पु० [हिं० भूत+फा० खाना=घर] बहुत मैला कुचैला या ऐसा अँधेरा जो भूतो के रहने का स्थान जान पडे।

भूतगधा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] मुरा नामक गध द्रव्य।

भूतगण—पु० [प० त०] शिव के अनुचरों का वर्ग।

भूतग्राम—पु० [ष० त०] देह। शरीर ।
भूतघ्न—पु० [स० भूत√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १. लहसुन । २ भोजपत्र। ३ ऊँट ।
वि० भूतो का नाश करनेवाला ।
भूतघ्नी—स्त्री० [स० भूतघ्न+ङीप्] तुलसी।
भूत-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी । नरक चौदस ।
भूत-चारी(रिन्)—पु० [स० भूत√चर् (गति)+णिनि] महादेव । शिव।
भूत-चिंता—स्त्री० [ष० त०] भूत नामक तत्त्वों की छानवीन ।
भूत-जटा—स्त्री० [ष० त०] जटामासी।
भू-तत्त्व-विज्ञान—पु० [ष० त०] भूशास्त्र।
भू-तत्त्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०]=भू-शास्त्र।
भूत-दया—स्त्री० [ष० त०] चेतन और जड सभी के प्रति मन मे रखा जानेवाला दया-भाव।
भूत-द्रुम—पु० [मध्य० स०] श्लेष्मातक वृक्ष।
भूत-धात्री—स्त्री० [ष० त०] पृथ्वी।
भूत-धारिणी—स्त्री० [स० भूत√धृ (धारण करना)+णिनि,+ङीप्, उप० स०] धरती। पृथ्वी।
भूत-धाम (न्)—पु० [ष० त०] पुराणानुसार इद्र का एक पुत्र।
भूत-नाथ—पु० [ष० त०] शिव। महादेव।
भूत-नायिका—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।
भूत-नाशन—पु० [ष० त०] १ रुद्राक्ष। २ सरसो। ३ भिलावाँ। ४ हीग ।
भूत-निचय—पु० [ष० त०] देह। शरीर।
भूतनी—स्त्री० [हिं० भूत+नी] १ भूत योनि की स्त्री। २. डाकिनी। ३ लाक्षणिक अर्थ मे काले रग और प्राय क्रोधी तथा लडाके स्वभाव-वाली स्त्री ।
भूत-पक्ष—पु० [मध्य० स०] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।
भूत-पति—पु० [ष० त०] १ शिव। २ अग्नि। ३ काली तुलसी।
भूत-पत्री—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] काली तुलसी ।
भूत-पाल—पु० [स० भूत√पाल् (पालना)+णिच्+अच्] विष्णु।
भूत-पूर्णिमा—स्त्री० [ष० त०] आश्विन की पूर्णिमा। शरद् पूर्णिमा।
भूत-पूर्व—वि० [सुप्सुपा स०] १ पहलेवाला । प्राचीन। २ गत। ३ (पदाधिकारी के सबध मे) जो किसी पद पर पहले कभी रह चुका हो। जैसे—भूतपूर्व सभापति।
भूत-प्रकृति—स्त्री० [ष० त०] १. भूतो अर्थात् जीवो की उत्पत्ति। २ दे० 'मूल-प्रकृति'।
भूत-प्रेत—पु० [द्व० स०] भूत, पिशाच, प्रेत आदि की योनियाँ, अथवा इन योनियो मे प्राप्त होनेवाले सूक्ष्म शरीरो का वर्ग ।
भूत-बलि—स्त्री० [च० त० या मध्य० स०] भूतयज्ञ। (दे०)
भूत-भर्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] १. भूतो का भरण-पोषण करनेवाले, शिव। २ भैरव का एक रूप ।
भूत-भावन—पु० [स० भूत√भू (होना)+णिच्+ल्यु—अन] १. १ ब्रह्मा। २ शिव। विष्णु ।
४—३०
भूत-भाषा—स्त्री० [स० ष० त०] १ भूत-प्रेतो की भाषा। २ पैशाची भाषा।
भूत-भैरव—पु० [स० कर्म० स०] १ भैरव का एक रूप । २. उक्त रूप की मूर्ति। ३. हरताल, गधक आदि के योग से बनाया जानेवाला रस जो ज्वर तथा वात नाशक होता है। (वैद्यक)
भूत-माता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] गौरी।
भूत-मात्रा—स्त्री० [ष० त०] (पाँचो मे से हर एक) भूत का मूल सूक्ष्म रूप । तन्मात्र। तन्मात्रा ।
भूत-यज्ञ—पु० [मध्य० स०] गृहस्थ के लिए विहित पाँच यज्ञो मे से एक जिसमे वह समस्त जीवो को आहुति देता है । भूतबलि ।
भूत-योनि—स्त्री० [ष० त०] प्रेतयोनि ।
पु० परमेश्वर।
भूत-राज—पु० [ष० त०] शिव।
भूतल—पु० [ष० त०] १ पृथ्वी का ऊपरी तल। धरातल। भू-पृष्ठ। २ जगत। ससार। ३. पाताल।
भूत-लक्षी—वि०=पूर्व-व्यापित।
भूत-वाद—पु० [ष० त०] १ प्राचीन भारत मे, एक नास्तिक दार्शनिक सप्रदाय जो पच-भूतो को ही सृष्टि का कर्ता मानता था, ईश्वर या ब्रह्मा को नही। २. दे० 'भौतिकवाद'। (मेटीरियलिज्म)
भूत-वादी (दिन्)—वि० [स० भूतवाद+इनि] भूत-वाद सम्बन्धी । पु० भूत-वाद का अनुयायी।
भूत-वास—पु० [ब० स०] १ महादेव। शिव। २. विष्णु। ३. बहेडे का पेट।
भूत-वाहन—वि० [ब० स०] भूतो पर सवारी करनेवाला।
पु० महादेव। शिव।
भूत-विक्रिया—स्त्री० [ष० त०] १. भूत-प्रेतो के कारण होनेवाली बाधा। प्रेत-बाधा। २ [ब० स०] अपस्मार रोग।
भूत-विद्या—स्त्री० [मध्य० स०] आयुर्वेद का वह अग जिसमे देवता, असुर, गधर्व, यक्ष, पिशाच, नाग, ग्रह, उपग्रह आदि के प्रभाव से उत्पन्न होनेवाले मानसिक रोगो का निदान और विवेचन होता है। इन्हे दूर करने के लिए बहुधा ग्रह-शाति, पूजा, जप, होम, दान, रत्न पहनने और औषध आदि के सेवन का विधान होता है।
भूत-विनायक—पु० [ष० त०] भूतो अर्थात् जीवो के नायक, शिव।
भूत-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] पूजन आदि से पहले मत्रो द्वारा की जानेवाली शरीर की शुद्धि। (तात्रिक)
भूत-संचार—पु० [ष० त०] भूतोन्माद नामक रोग।
भूत-संचारी(रिन्)—पु० [स० भूत√चर् (चलना)+णिनि] दावानल।
भूत-सम्प्लव—पु० [ष० त०] प्रलय।
भूत-सिद्ध—पु० [ब० स०] वह जिसने किसी भूत-प्रेत को सिद्ध किया हो। (तत्र)
भूत-हन्त्री—स्त्री० [स० ष० त०] १ नीली दूब। २ बाँझ ककोडी।
भूत-हत्या—स्त्री० [ष० त०] जीवो या प्राणियो का वध या हत्या।
भूत-हन—पु० [स० भूत√हन् (मारना)+क्विप्] भोजपत्र का वृक्ष।
भूत-हर—पु० [ष० त०] गुग्गुल।
भूतहा—पु० [स० भूत√हन् (मारना)+क्विप्,] भोजपत्र का वृक्ष।

भूतहारी (रिन्)—पु० [स० भूत√ह (हरण करना)+णिनि] १. लाल कनेर। २. देवदारु।

भूतांकुश—पु० [भूत-अकुश, ष० त०] १. कश्यप ऋषि। २. गावजुवाँ नामक वनस्पति। २. वैद्यक मे, एक प्रकार का रसौषध जो भूतोन्माद के लिए उपयोगी कहा गया है।

भूतातक—पु० [भूत-अतक, ष० त०] १. यम। २. रुद्र।

भूता—स्त्री० [स० भूत+टाप्] कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

भूतागति—स्त्री० [हिं० भूत+गति] भूत-प्रेत की लीला की तरह का कोई अद्भुत व्यापार। विलक्षण कार्य या वात।

भूतात्मा (त्मन्)—पु० [भूत-आत्मन्, ष० त०] १. शरीर। २. परमेश्वर। ३. शिव। ४. विष्णु। ५. जीवात्मा।

भूतादि—पु० [भूत-आदि, ष० त०] १. परमेश्वर। २. साख्य मे, अहंकार, तत्त्व, जिससे पचभूतो की उत्पत्ति मानी गई है।

भूताधिपति—पु० [भूत-अधिपति, ष० त०] शिव।

भूतायन—पु० [भूत-अयन, ष० त०] नारायण। परमेश्वर।

भूतारि—पु० [भूत-अरि, ष० त०] हीग।

भूतार्त—वि० [भूत-आर्त, तृ० त०] भूतो या प्रेतो की वाधा से पीडित।

भूतार्थ—वि० [भूत-अर्थ, व० स०] जो वस्तुत. घटित हुआ हो। यथार्थ मे होनेवाला।

भूतावास—पु० [भूत-आवास, ष० त०] १. पचभूतो से बना हुआ शरीर। २. जीवों का वासस्थान। जगत। दुनिया। ससार। ३. विष्णु। ४. वहेड़ा।

भूताविष्ट—वि० [तृ० त०] भूत-प्रेत से ग्रस्त।

भूतावेश—पु० [भूत-आवेश, ष० त०] किसी को भूत लगना। प्रेतबाधा।

भूति—स्त्री० [स०√भू (होना)+क्तिन् या क्तिच्] १. अस्तित्व मे आने या घटित होने की क्रिया, दशा या भाव। प्रस्तुत या वर्तमान होना। २. उत्पत्ति। जन्म। ३. कल्याण या वैभव से युक्त वैभव और सुख। ४. सौभाग्य। ५. धन-सम्पत्ति। ६. गौरव। महिमा। ७. अधिकता। वहुलता। ८. वढती। वृद्धि। ९. अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ। १०. रंगों आदि से हाथी के मस्तक पर वनाये जानेवाले वेल-बूटे। ११. लक्ष्मी। १२. मुक्ति। मोक्ष। १३ वृद्धि नाम की ओषधि। १४. भूतृण। १५ सत्ता। १६. पकाया हुआ मास। १७. रुसा नामक घास।

पु० १. शिव का एक रूप। २ विष्णु। ३. वृहस्पति। ४. पितरो का एक गण या वर्ग। राजा का मत्री।

वि० मागलिक और शुभ।

भूतिकाम—पु० [स० भूति√कम् (इच्छा)+अण्] १. राजा का मत्री। २ वृहस्पति।

भूतिकृत—पु० [सं० भूति√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] शिव।

भूतिद—पु० [स० भूति√दा (देना)+क] शिव।

भूतिदा—स्त्री० [सं० भूतिद+टाप्] गगा।

भूतिनि—स्त्री०=भूतनी।

भूतिनिधान—पु० [ष० त०] धनिष्ठा नक्षत्र।

भूतिनी—स्त्री०=भूतनी।

भूति-भूषण—पु० [व० स०] शिव।

भूती—पु० [हिं० भूत+ई (प्रत्य०)] भूत-प्रेतों को पूजनेवाला अथवा उन्हे सिद्ध करनेवाला व्यक्ति।

भूतीवानी—स्त्री० [स० विभूति] भस्म। राख। (डिं०)

भूतृण—पु० [ष० त०] १. रुसा नाम की घास। रोहिष। २. कपूर।

भूतेज्य—पु० [स० मध्य० स०] भूती। (दे०)

भूतेज्या—स्त्री० [स० भूत-इज्या, ष० त०] भूत-प्रेतो की पूजा।

भूतेश—पु० [सं० भूत-ईश, ष० त०] १. परमेश्वर। २. शिव। ३. कार्तिकेय।

भूतेश्वर—पु० [स० भूत-ईश्वर, ष० त०] १. महादेव। २. एक प्राचीन तीर्थ।

भूतेल—पु० [स०] पृथ्वी के कुछ विशिष्ट भू-भागों की चट्टानो के नीचे से निकलनेवाला एक प्रकार का प्राकृतिक तैलीय और ज्वलनशील द्रव पदार्थ जो हरे रग या काले रग का होता है और जिसे साफ करने पर मिट्टी का तेल और कई प्रकार की चीजें निकलती हैं। (पेट्रोलियम)

भूतोन्माद—पु० [स० भूत-उन्माद, मध्य० स०] भूत, वाधा के परिणाम स्वरूप होनेवाला उन्माद।

भूत्तम—पुं० [स० भू-उत्तम, स० त०] सोना।

भू-दान—पु० [स० ष० त०] दान रूप मे भूमि देना।

भूदान-यज्ञ—पु० [स० ष० त०] महात्मा गाधी के सर्वोदय आन्दोलन के आधार पर आचार्य विनोवा भावे का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध आन्दोलन जिसमे भू-स्वामियो से दान रूप मे भूमि प्राप्त करके ऐसे लोगो को विना मूल्य दी जाती है जिनके पास न तो जोतने-बोने के लिए जमीन होती है और न जिनकी जीविका का कोई निश्चित तथा विशिष्ट साधन होता है।

भूदार—पु० [सं० भू√दृ (फाड़ना)+अण्,] सूअर।

भू-दारक—पु० [स० ष० त०] शूर। वीर।

भू-दृश्य—पु० [स० ष० त०] १. किसी स्थान से दिखाई पडनेवाला कोई भूखड। २ पृथ्वी का कोई दर्शनीय खड या भाग। ३. उक्त का अकित चित्र। (लैंड स्केप; उक्त सभी अर्थों मे)

भू-देव—पु० [स० ष० त०] ब्राह्मण।

भूधन—पु० [व० स०] राजा।

भूधर—पु० [स० ष० त०] १. पर्वत। पहाड। २. पृथ्वी को धारण करनेवाले शेषनाग। ३ विष्णु। ४. राजा। ५. वाराह अवतार। ६. रस आदि बनाने का एक उपकरण। (वैद्यक)

भूधरेश्वर—पु० [स० भूधर-ईश्वर, ष० त०] पर्वतो का राजा, हिमालय।

भूधात्री—स्त्री० [स० मध्य० स०] भुई आँवला।

भू-धृति—स्त्री० [ष० त०] १. लोक-व्यवहार मे वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति कुछ धन देकर किसी दूसरे की भूमि कुछ समय के लिए अपने अधिकार मे कर लेता और उसका उपभोग करके लाभ उठाता है। (लैंड टेन्योर)

भूध्र—पु० [स० भू√धृ (धारण करना)+क] पर्वत। पहाड़।

भूनां—पु०=भ्रूण।

भूनना—स० [स० भर्जन] १. किसी खाद्य पदार्थ को जलते हुए अगारो पर सेंककर पकाना। जैसे—पापड भूनना, भुट्टा भूनना। २ गरम वालू मे (या से) अन्न-कणो को पकाना। जैसे—दाने भूनना। ३. घी, तेल आदि मे कोई तरकारी अच्छी तरह लाल करना। जैसे—

मुरता या प्याज मूनना। ४. लाक्षणिक अर्थ मे, वहुत अधिक सताना। क्रि० प्र०—डालना।—देना।

५. रासायनिक क्षेत्र मे, कोई चीज इस प्रकार तपाना कि उसमे के अवाछित तत्त्व या जल-कण निकल जायें। (रोस्टिंग)

भू-नाग—पु० [स० स० त०] केंचुआ।

भू-नेता (तृ)—पु० [स० ष० त०] राजा।

भूप—पु० [स० भू√पा (रक्षा करना)+क] १ राजा। २ रात के पहले पहर मे गाया जानेवाला ओडव जाति का एक राग।

भूपग—पु० [सं० भूप√गम् (जाना)+ड] राजा। (डिं०)

भूपती—स्त्री०=भूपता।
 पुं०=भूपति।

भूपता—स्त्री० [स० भूप+तल्,+टाप्] १. राजा होने की अवस्था या भाव। २. राजा का पद।

भू-पति—पु० [स० ष० त०] १ राजा। २. शिव। २ इन्द्र। ३. ४. वटुक भैरव। ५. संगीत मे एक प्रकार का राग जो मेघ राग का पुत्र कहा गया है।

भू-पतित—भू० कृ० [स० स० त०] (घायल होकर या टूट-फूट कर) पृथ्वी पर गिरा या पडा हुआ।

भू-पद—पुं० [सं० व० स०] वृक्ष। पेड।

भूपदी—स्त्री० [स० भूपद+डीष्] एक तरह की चमेली।

भूपरा—पु० [स० भूप से] सूर्य्य। (डिं०)

भू-परिमाप—स्त्री० [ष० त०] भूमि अथवा उसके किसी खण्ड आदि की होनेवाली नाप-जोख। (लैंड सर्वे)

भूपाल—पु० [सं० भू√पाल् (रक्षा करना)+अण्] राजा।
 स्त्री० झडवेरी।

भूपाली—स्त्री० [सं० भूपाल+डीप्] वर्षा ऋतु मे रात के पहले पहर मे गाई जानेवाली एक रागिनी जिसे कुछ लोग हिंडोल राग की रागिनी और कुछ मालकोश की पुत्रवधू मानते हैं।

भूपुत्र—पुं० [स० ष० त०] १. मगल ग्रह। २ नरकासुर नामक राक्षस।

भूपुत्री—स्त्री० [सं० भूपुत्र+डीष्] जानकी। सीता।

भू-पृष्ठ—वि० [स० व० स०] जिसका नीचेवाला भाग या पीठ समतल भूमि पर हो। 'मेरु पृष्ठ' का विपर्याय। जैसे—भू-पृष्ठ यत्र। (तांत्रिको का)

भूपेंद्र—पु० [स० भूप-इन्द्र, ष० त०] राजाओ मे श्रेष्ठ, सम्राट्।

भू-प्रकंप—पु० [सं० ष० त०] भूकप।

भूवंधी—स्त्री० [हिं० भू+वधना] युद्ध का वह ढग या प्रकार जिसमे दोनो पक्ष खुले मैदान मे आमने-सामने होकर लडते है। उदा०—घाटियाँ और नदियाँ वारगी और भूवधी दोनो प्रकार की लडाइयो के लिए वहुत उपयोगी हैं।—वृन्दावनलाल वर्मा।

भू-वदरी—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का छोटा वेर।

भूवल—स्त्री०=भूभल।

भू-भर्ता (र्तृ)—पु० [स० ष० त०] राजा।

भूभल—स्त्री० [सं० भू-भुर्ज या अनु० ?] १. ऐसी राख जो कुछ गरम हो तथा जिसमे अभी कुछ चिनगारियाँ भी दवी हो। २. गरम रेत।

भूभा—स्त्री० [सं० ष० त०] चंद्र ग्रहण के समय चंद्रमा पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया।

भूभाग—पु० [सं० ष० त०] १ भूखंड। प्रदेश। २. विशेषत' ऐसा प्रदेश जो किसी नगर या राज्य के किसी ओर हो और उसके अधिक्षेत्र मे हो। (टेरिटरी)

भूभागीसमुद्र—पु० [स०] प्रादेशिक-समुद्र।

भू-भार—पुं० [सं० स० त०] धरती पर होनेवाले पाप का भार।

भूभुज—पु० [सं० भू√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्] राजा।

भूभरि—स्त्री०=भूभल।

भूभत—पुं० [सं० भू√भृ (धारण-पोषण)+क्विप्, तुक्] १. राजा। २. पर्वत। पहाड़।

भूभौतिकी—स्त्री० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस वात का विवेचन होता है कि आँधी, वर्षा के जल, नदियों और समुद्रो की लहरो आदि का पृथ्वी के भू-तल पर कैसा और क्या प्रभाव पड़ता है। (जिओफिजिक्स)

भू-मंडल—पु० [सं० ष० त०] धरती। पृथ्वी।

भूम—पु० [सं०√भू+मन्] पृथ्वी।
 स्त्री०=भूमि।

भू-मध्य—पुं० [सं० ष० त०] चारो ओर से पृथ्वी से घिरा हुआ।

भू-मध्यरेखा—स्त्री० [सं०] भूगोल मे, वह कल्पित रेखा जो दोनो ध्रुवों से वरावर दूरी पर है और पृथ्वी को दो भागो में विभाजित करती है। (ईक्वेटर)

भूमध्य-सागर—पु० [मध्य० स०] यूरोप और एशिया के वीच अवस्थित समुद्र।

भूमय—स्त्री० [स० भू+मयट्] सूर्य की पत्नी; छाया।

भूमा (मन्)—स्त्री० [सं० वहु+इमनिच्, भू-आदेश] १ आधिक्य। वहुलता। २ जमीन। भूमि। ३ पृथ्वी। ४ निसर्ग। प्रकृति। ५ ऐश्वर्य। ६ पर-ब्रह्म की वह उत्तरोत्तर वढती हुई अनुभूति जो मन का द्वैत भाव मिटाती है। उदा०—यही भूमा का मधुमय दान।—प्रसाद।
 पु० सर्व-व्यापी पर-ब्रह्म। विराट् पुरुष।
 वि० वहुत अधिक। प्रचुर।

भूमानंद—पुं०=परमानद।

भू-मापन—पुं० [सं० ष० त०] किसी देश, राजा, प्रदेश, खेत आदि की नाप-जोख करना। (सर्वे)

भूमि—स्त्री० [स०√भू+मि] १ यह सारी पृथ्वी जो सौर जगत् के एक ग्रह के रूप मे है। (दे० 'पृथ्वी') २ पृथ्वी-तल के ऊपर का वह ठोस भाग जिस पर देश, नदियाँ, पर्वत आदि हैं और जिस पर हम सव लोग रहते और वनस्पतियाँ उगती है। जमीन। (लैंड)
 मुहा०—भूमि होना*=पृथ्वी पर गिर पड़ना।
 ३. उक्त का कोई ऐसा छोटा टुकड़ा जिस पर किसी का अधिकार हो और जिसमे कुछ उपज आदि होती हो। (एस्टेट)
 पद—भूमिधर। (दे०)
 ४. जगह। स्थान। जैसे—जन्म-भूमि, मातृ-भूमि। ५. ऐसी जमीन जिस पर खेतीवारी होती हो। जैसे—भूमिधर। ६. कोई वड़ा देश

या प्रान्त। जैसे—आर्यभूमि। ७ कोई ऐसा आधार जिसपर कोई दूसरी चीज बनी अथवा आश्रित या स्थित हो। क्षेत्र। जैसे—पृष्ठ-भूमि। ८. धन सम्पत्ति या वैभव। ९. मकान के ऐसे खड जो ऊपर-नीचे के विचार से अलग-अलग होते है। मजिल। १० कोई विशिष्ट प्रकार का ऐसा विषय जो किसी स्थिति के रूप मे हो। जैसे—विश्वास भूमि, स्नेह-भूमि। ११ किसी प्रकार का विस्तार या उसकी सीमा। १२ योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएं जो क्रम-क्रम से योगी को प्राप्त होती है और जिनको पार करके वह पूर्ण योगी होता है। १३. जिह्वा। जीभ। १४ दे० 'भूमिका'।

भूमि कंदक—पु० [मध्य० स०] कुकुरमुत्ता।

भूमि-कंप—पु० [स० प० त०] भूकप। भूडोल।

भूमिका—स्त्री० [स० भूमि√कै+क,+टाप् अथवा भूमि+कन्,+टाप्] १. जमीन। भूमि। २. जगह। स्थान। ३ मकान के वे खड जो एक दूसरे के ऊपर नीचे होते हैं। मजिल। ४. योग मे क्रम क्रम से प्राप्त होनेवाली उन्नत स्थितियों मे से प्रत्येक। भूमि। ५ किसी प्रकार की रचना। ६. कोई ऐसा आधार जिस पर कोई चीज आश्रित या स्थित हो। पृष्ठभूमि। (बैंक ग्राउड) ७. आज-कल किसी ग्रथ के आरभ मे लेखक का वह वक्तव्य जिसमे उस ग्रंथ से सम्बन्ध रखनेवाली आवश्यक तथा ज्ञातव्य बातो का उल्लेख होता है। आमुख। मुख-बध। (प्रिफेस) ८ कोई महत्त्वपूर्ण बात कहने से पहले कही जानेवाली वे बाते जिनके फल-स्वरूप उस महत्त्वपूर्ण बात का उपयुक्त परिणाम या फल होता या हो सकता हो।

मुहा०—(किसी काम या बात की) भूमिका बाँधना=कुछ कहने से पहले उसे प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ और बाते कहना। जैसे—जरा सी बात के लिए इतनी भूमिका मत बाँधा करो।

९. वेदान्त के अनुसार चित्त की पाँच अवस्थाएँ, जिनके नाम ये है—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और विरुद्ध। १०. नाटको आदि मे किसी पात्र का अभिनय तथा कार्य। (पार्ट) जैसे—शिवा जी की भूमिका मे मोहनवल्लभ ने बहुत प्रशसनीय काम किया था। १२. मूर्तियो आदि का किया जानेवाला शृगार या सजावट।

भूमिका-गत—पु० [स० द्वि० त०, उप० स०] वह जिसने नाटक मे अभिनय करने के लिए कोई विशिष्ट वेश-भूषा धारण की हो।

भूमि-कुष्माड—पु० [स० मध्य० स०] गरमी के दिनो मे होनेवाला कुम्हडा जो जमीन पर होता है। भुँई-कुम्हडा।

भूमि-खर्जूरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] एक प्रकार की छोटी खजूर।

भूमि-गत—वि० [द्वि० त०] १ जमीन पर गिरा या पडा हुआ। २ जो भूमि की सतह के नीचे हो। ३. जो जन-साधारण के सामने से हटकर कही छिपा हो। (अडर-ग्राउड)

भूमि-गृह—पु० [स० मध्य० स०] तहखाना।

भूमि-चंपक—पुं० [स०मध्य०स०] १. एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल, पत्ते तथा जडें औषधि के रूप मे प्रयुक्त होती है। भुइँचपा। २. उक्त पौधे का फूल।

भूमि-चल—पु० [स० ष० त०] भूकंप।

भूमिजबु—पुं० [स० मध्य० स०] छोटा जामुन।

भूमिज—वि० [स० भूमि√जन्+ड] भूमि से उत्पन्न। पु० १. मंगल ग्रह। २. सोना। स्वर्ण। ३. सीसा। ४. नरकासुर राक्षस। ५. भू-कदंब।

भूमि-जल—पु० [मध्य० स०] जमीन के नीचे रहने या होनेवाला पानी।

भूमिजा—स्त्री० [स० भूमि√जन्+ड,+टाप्] जानकी। सीता।

भूमि-जात—वि० [स० प० त०] जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो। भूमिज। पु० पेड। वृक्ष।

भूमि-जीवी (विन्)—पु० [स०भूमि√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] १. वह जिसकी जीविका का आधार भूमि हो। कृषक। २. वैश्य।

भूमि-तल—पु० [प० त०] पृथ्वी का ऊपरी भाग या सतह।

भू-मिति—स्त्री० [स०] १. जमीन नापने की क्रिया। २ किसी देश, प्रदेश या भूखंड के रूप, सीमा, स्थिति आदि का चित्र या लेखा तैयार करने के लिए ज्यामिति के सिद्धातो के अनुसार कोणो, रेखाओ आदि का विचार करते हुए नाप-जोख करना। (सर्वे) जैसे—भारत सरकार का भू-मिति विभाग।

भूमित्व—पुं० [स० भूमि+त्व] 'भूमि' का धर्म या भाव।

भूमिदेव—पु० [स० प० त०] १. ब्राह्मण। २. राजा।

भूमि-धर—पु० [स० प० त०] १ पर्वत। पहाड। २. शेष-नाग। ३. आज-कल वह किसान जिसने उचित धन देकर जमीन पर खेती-बारी करने का स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

भूमि-पति—पु० [स० प० त०] राजा।

भूमिपाल—पु० [स० भूमि√पाल् (पालन करना)+णिच्+अच्] राजा।

भूमिपिशाच—पु० [सं० स० त०] ताड का पेड।

भूमि-पुत्र—पु० [प० त०] १ मगल ग्रह। २ नरकासुर का एक नाम। ३ श्योनाक। सोना-पाढ।

भूमि-पुत्री—स्त्री० [प० त०] सीता।

भूमि-पुरदर—पु० [प० त०] राजा दिलीप का एक नाम।

भूमि-भुक् (ज्)—पु० [स० भूमि√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्] राजा।

भूमिभृत्—पु० [सं० भूमि√भृ (भरण करना)+क्विप्, तुक्] राजा।

भूमि-भोग—पु० [व० स०] वह राष्ट्र या राजा जिसके पास बहुत अधिक भूमि हो।

भूमिया—पु० [हिं० भूमि+इया (प्रत्य०)] १. भूमि का मूल अधिकारी और स्वामी। २. जमीदार। ३ किसी देश का प्राचीन और मूल निवासी। ४ ग्राम-देवता।

भूमिरुह—पुं० [स० भूमि√रुह् (ऊपर चढना)+क] वृक्ष।

भूमिरुहा—स्त्री० [स० भूमि√रुह्+टाप्] दूब।

भूमि-लग्ना—स्त्री० [स० त०] सफेद फूलोवाली अपराजिता।

भूमि-लता—स्त्री० [मध्य० स०] शख पुष्पी।

भूमि-लवण—पु० [प० त०] शोरा।

भूमि-लाभ—पु० [व० स०] मृत्यु।

भूमि-लेप—पु० [प० त०] गोबर।

भूमि-वर्द्धन—पु० [ष० त०] मृत शरीर। शव। लाश।

भूमि-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] भुँई आँवला।

भूमि-संधि—स्त्री० [मध्य० स०] १ वह सधि जो परस्पर मिलकर कोई

भूमि प्राप्त करने के लिए की जाय। २ शत्रु को कुछ भूमि देकर उससे की जानेवाली सन्धि।
भूमि-संभवा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] जानकी। सीता।
भूमि-सात्—वि० [सं० भूमि+सात् (प्रत्य०)] जो गिर कर जमीन के साथ मिल गया हो। जैसे—भूकप मे मकानो का भूमिसात होना।
भूमि-सुत—पु० [प० त०] १ मगल ग्रह। २. नरकासुर। ३ केवाँच। कौंछ। ४. पेड। वृक्ष।
भूमि-सुता—स्त्री० [प० त०] जानकी जी।
भूमि-सुर—पु० [प० त०] ब्राह्मण। भूसुर।
भूमि-स्खलन—पु० =भू-स्खलन।
भूमि-स्पर्श—पु० [ब० स०] उपासना के लिए बौद्धो का एक प्रकार का आसन। वज्रासन।
भूमि-हार—पु० [सं० भूमि+हिं० हार (प्रत्य०)] एक ब्राह्मण जाति जो प्राय उत्तर-प्रदेश और बिहार मे बसती और प्रायः खेती-बारी से जीविका-निर्वाह करती है।
भूमींद्र—पु० [भूमि-इद्र, ष० त०] राजा।
भूमी—स्त्री० [सं० भूमि+ङीप्] भूमि।
भूमीरुह—पुं० [सं० भूमी√रुह्+क] वृक्ष। पेड।
भूमीश्वर—पु० [सं० भूमि-ईश्वर, ष० त०] राजा।
भूम्यामलकी—स्त्री० [भूमि-आमलकी, मध्य० स०] भुँई आँवला।
भूम्युच्च—पु० [सं० भूमि+उच्च] ज्योतिष मे, किसी ग्रह की वह स्थिति जब वह अपनी कक्षा पर चलते समय पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर होता है। (एपोजी)
भूय(स्)—अव्य० [सं० भू√यस् (प्रयत्न)+क्विप्] पुन। फिर।
स्त्री०=भू(पृथ्वी)।
भूयण—स्त्री०[हिं० भूय] पृथ्वी। (डिं०)
भूयश.(शस्)—अव्य०[सं०भूयस्+शस् (वीप्सार्थ) स-लोप] बहुत अधिक रूप मे।
भूयस्—वि० [सं० बहु+ईयसुन्, ई-लोप, भू-आदेश] बहुत। अधिक।
भूयसी—वि०[सं० भूयस्+ङीप्] बहुत अधिक।
क्रि० वि० बार बार।
भूयसी दक्षिणा—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] १ कोई धार्मिक या मगल कृत्य सपन्न होने पर अन्त मे ब्राह्मणो को बाँटी जानेवाली दक्षिणा। २. लाक्षणिक अर्थ मे किसी बडे खरच के बाद होनेवाला कोई छोटा खरच।
भूयिष्ठ—वि० [सं० बहु+इष्ठन्, यिट्-आगम, भू-आदेश] बहुत अधिक। अत्यधिक।
भू-युक्ता—स्त्री०[सं० तृ० त०] भूमि खर्जुरी। भुई खजूर।
भूयोभूय.—अ०[सं० भूयस्, वीप्सा मे द्वित्व] पुन पुन। बार बार।
भूयोविद्य—पु०[सं० ब० स०] प्राचीन भारत मे ऐसा विद्वान् जो छन्द, ब्राह्मण, कल्प, धर्म व्याकरण, काव्य आदि अनेक विद्याओ का अच्छा ज्ञाता या पारगत होता था।
भूर्—पुं०[सं०√भू (होना)+रुक्]अन्तरिक्षलोक से नीचे पैर रखने योग्य स्थान। लोक।
भूर—वि०[सं० भूरि] अधिक बहुत।
पु०[हिं० भुरभुरा] बालू। रेत।
पुं०[?] गौओ की एक जाति।
भूरज (जस्)—पु०[सं० प० त०] पृथ्वी की धूलि। गर्द। मिट्टी।
†पु०[सं० भूर्य] भोजपत्र।
भूरजपत्र—पु०=भोज पत्र।
भूरपुर*—वि०=भूर-पूर।
अव्य०, वि०=भर-पूर।
भूरला—पु०[देश०] वैश्यो की एक जाति।
भूर-लोखरिया—स्त्री० [हिं० भूर=बालू+लोखरी=लोमडी] वह बलुई मिट्टी जिसमे लोमडी माँद बनाती है।
भूरसी दक्षिणा—स्त्री०=भूयसी दक्षिणा।
भूरा—वि०[सं० बभ्रु] मिट्टी के रग का। मटमैले रग का। खाकी।
पु० १. मिट्टी का सा या मटमैला रंग। २ एक प्रकार का कबूतर जिसकी पीठ काली और पेट पर सफेद छीटें होती है। ३. कच्ची चीनी को पकाकर साफ करके बनाई हुई चीनी। बूरा। ४ कच्ची चीनी। खाँड। ५ चीनी। ६ यूरोप का निवासी। यूरोपियन। (राज०)
भूरा कुम्हडा—पु०[हिं० भूरा+कुम्हडा] पेठा।
भू-राजस्व—पु०[प० त०]राज्य या शासन को भूमि से होनेवाली आय। (लैंड रेविन्यू)
भूरि—वि०[सं०√भू (होना)+क्रिन्] बहुत अधिक। प्रचुर। जैसे—भूरि-भूरि प्रशसा करना।
पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ इन्द्र। ५ सोना। स्वर्ण।
अव्य० बहुत अच्छी तरह। उदा०—पैर छोडो और मुझको भूरि भेंटो। —मैथिलीशरण।
भूरि गंधा—स्त्री०[ब० स०] मुरा नामक गध द्रव्य।
भूरिगम—पु०[सं० भूरि√गम् (जाना)+अप्] गधा।
भूरिता—स्त्री०[सं० भूरि+तल्+टाप्]भूरि अथवा अधिक होने का भाव। अधिकता। बहुलता।
भूरि-तेजस्—पु०[ब०स०] १ अग्नि। २ सोना। स्वर्ण।
भूरि-दक्षिण—पु०[ब० स०] विष्णु।
भूरिदा—वि०[सं० भूरि√दा (देना)+क+टाप्] यथेष्ट दान देनेवाला।
भूरि-धाम (न्)—पु०[सं० ब० स०] नवे मनु के एक पुत्र का नाम।
भूरि-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०] शत पुष्पा।
भूरि-प्रेमा (मन्)—पु०[ब० स०] चकवा।
भूरि-फेना—स्त्री०[ब० स०] सातला।
भूरि-बल—पु०[सं० ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
भूरि-बला—स्त्री०[सं० ब० स०,+टाप्] अतिबला। कँगही। ककही।
भूरि-भाग्य—वि०[ब० स०] भाग्यवान्।
भूरि-मजरी—स्त्री० [ब० म०] सफेद तुलसी।
भूरि-मल्ली—स्त्री० [म० भूरि√मल्ल्+अच्+ङीप्] ब्राह्मणी या पाडा नाम की लता।
भूरि-माय—वि० [ब०म०] बहुत बडा मायावी।
पु० १ सियार। २. लोमडी।
भूरि-मूलिका—स्त्री०[ब० स०, कप्—टाप्] ब्राह्मणी लता। पाड़ा।
भूरि-रस—पु०[ब० स०] ईख। ऊख।
भूरि-लग्ना—स्त्री०[ब० स०] सफेद अपराजिता।

भूरि-विक्रम—वि० [ब० स०] बहुत बड़ा शूरवीर।

भूरि-श्रवा (वस्)—पु० [स० ब० स०] एक प्रसिद्ध योद्धा जो महाभारत के युद्ध मे कौरवो की तरफ से लड़ा था तथा जिसका वध सात्यकि ने किया था।

भूरिषेण—पु० [स० ब० स०] भागवत के अनुसार एक मनु का नाम।

भूरिसेन—पु० [स० ब० स०] राजा शर्याति के तीन पुत्रों में से एक।

भूरुह—पु० [सं० भू√रुह् (उगना)+क] १. वृक्ष। पेड़। २. अर्जुन। वृक्ष। ३. शाल वृक्ष।

भूरुहा—स्त्री० [सं० भूरुह+टाप्] दूब।

भूर्ज—पुं० [सं० भू√ऊर्ज्+अच्] भोजपत्र का वृक्ष।

भूर्ज-पत्र—पु० [स० ष० त० वा ब० स०] भोजपत्र।

भूर्णि—स्त्री० [सं० √भृ (भरण करना)+नि,] १. पृथ्वी। २ मरुभूमि। रेगिस्तान।

भूर्भुव—पु० [स० ब्रह्मा] के एक मानस-पुत्र का नाम।

भूर्लोक—पु० [स० मध्य० स०] १. मर्त्य लोक। ससार। जगत। २. विषुवत् रेखा के दक्षिण का देश।

भूल—स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने की क्रिया या भाव। २. अज्ञान, असावधानता, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने और उसके फल-स्वरूप कोई अनुचित या गलत काम करने की अवस्था, या भाव। गलती। (एरर) जैसे—मैंने उन्हे झूठा समझ लिया, यह मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। ३ अर्थ, तथ्य, प्रक्रिया आदि ठीक तरह से न जानने या समझने के कारण गलत तरह से कुछ कर डालने की अवस्था, क्रिया या भाव। अशुद्धि। गलती। (मिस्टेक) जैसे—उनके साथ साझा करके तुमने बहुत बड़ी भूल की। ४. कोई ऐसी चूक या त्रुटि जो जल्दी मे रहने या पूरा ध्यान न देने के कारण हो जाय। (स्लिप) जैसे—इस हिसाब मे कई भूले रह गयी हैं। ५. अनजान मे या असावधानता के कारण होनेवाला कोई अपराध या दोष। कसूर। जैसे—(क) मैं अपनी इस भूल के लिये बहुत दुखी हूँ। (ख) भगवान सबकी भूलें क्षमा करता है।

भूलक—पु० [हिं० भूल+क (प्रत्य०)] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।

भूल-चूक—स्त्री० [हिं० भूलना+चूकना] लेख या हिसाब में ब्योरे आदि की ऐसी गलती जो दृष्टि-दोष आदि के कारण हो और बाद मे जिसका सुधार हो सकता हो। (एरर्स एण्ड ऑमिशन्स)

पद—भूल-चूक, लेना देना=एक पद जिसका प्रयोग लेन-देन के पुरजो, प्राप्यकों आदि के अन्त मे यह सूचित करने के लिए होता है कि कोई भूल रह गई हो तो उसका हिसाब या लेन-देन बाद मे हो सकेगा।

भू-लग्ना—स्त्री० [स० स० त०] शसपुष्पी।

भूलना—अ० [प्रा० भुल्ल] १. उचित अवधान या ध्यान न रहने के कारण किसी काम या बात का स्मृति-क्षेत्र मे न रह जाना। याद न रहना। विस्मृत होना। जैसे—मैं तो बिलकुल भूल ही गया था, अच्छा किया जो तुमने याद दिला दिया। २. दृष्टि-दोष, प्रमाद आदि के कारण किसी प्रकार की गलती, त्रुटि या भूल करना। जैसे—भूल गया था।

पद—भूलकर भी=दृढ़ता-पूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए। कदापि। कभी-भी अथवा किसी भी दशा मे। (केवल नहिक प्रसगो मे) जैसे—(क) अब कभी भूलकर भी उनका साथ न करना। (ख) वहाँ मैं भूलकर भी नहीं जाऊँगा।

३. किसी प्रकार के धोखे या भ्रम में पड़कर कर्तव्य न करना या उचित मार्ग से हटकर इधर-उधर हो जाना। जैसे—तुम तो दूसरों की बातों में भूलकर अपनी हानि कर बैठते हो। ४. उक्त प्रकार की बातों के फलस्वरूप किसी पर अनुरक्त होना। जैसे—तुम भी किसकी बातों मे भूले हो, वह तुम्हें बहुत धोखा देगा। उदा०—मैं तो गोरी लाल पगिया पै भूली रे साजनी।—लोक-गीत। ५. किसी प्रकार के घमण्ड के वश में होकर इतराना। गर्व-पूर्वक प्रसन्न रहना। जैसे—(क) उन्हें एक मकान मिल गया है, इसी पर वह भूले हुए हैं। (ख) सांसारिक वैभव पर भूलना नहीं चाहिए। ६ किसी चीज का खो जाना। गुम होना। जैसे—हमारी कलम यहीं कहीं भूल गई है।

स० १ कोई बात इस प्रकार मन से हटा देना कि फिर उसका ध्यान न आवे। याद न रखना। विस्मृत करना। जैसे—अब तो वह अपनी पुरानी हालत भूल गये है। २. असावधानता, उदासीनता, उपेक्षा, दृष्टि-दोष, प्रमाद आदि के कारण, परन्तु अनजान में वह न करना जो करना चाहिए। जैसे—उस पत्र में मैं एक बात लिखना भूल गया था। ३. अनजान मे उस ओर ध्यान न देना जिधर ध्यान देना आवश्यक और उचित हो। जैसे—मुझे आपने जो वचन दिया था वह तो आप भूल ही गये। ४. गलती या चूक के कारण कर्तव्य, ठीक मार्ग आदि से विचलित होकर इधर-उधर हो जाना। जैसे—वह रास्ता भूलकर कही का कहीं चला गया। ५ कोई चीज खो या गवाँ देना। जैसे—मैं अपनी घड़ी बाजार मे भूल आया हूँ।

नि०=भुलना।

भूलभुलैया—स्त्री० [हिं० भूलना+ऐया (प्रत्य०)] १. ऐसी इमारत जिसमे अत्यधिक गलियाँ तथा दरवाजे होते है और जिसमें जाकर आदमी रास्ता भूल जाता है और जल्दी बाहर नहीं निकल पाता। २. खेल-तमाशे के लिए रेखाओं, दीवारों आदि से बनाई हुई उक्त प्रकार की रचना। चक्रव्यूह। (लैबिरिन्थ) ३. बहुत घुमाव-फिराववाली बात। पेचीली बात।

भूलिंग—पु० [स०?] अरावली के उत्तर-पश्चिम मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

भू-लोक—पु० [स० मध्य० स०] मर्त्य-लोक। भूतल। ससार। जगत।

भू-लोटन—वि० [हिं० भू+लोटना] पृथ्वी पर लोटनेवाला।

भू-वल्लभ—पु० [स० ष० त०] राजा।

भूवा—वि०, पु०=भूआ।

स्त्री०=बुआ।

भूवारि—पु० [डिं०] वह स्थान जहाँ हाथी पकडकर रखे या बाँधे जाते है।

भू-विज्ञान—पु० [म० ष० त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी की मिट्टी और पत्थर की तहें किस प्रकार और कब कब बनती रही हैं, और आरंभ से कब तक किस प्रकार विकसित हुई है; तथा किस प्रकार की मिट्टी तथा चट्टानो के नीचे किस प्रकार के खनिज पदार्थ दबे रहते हैं। भूगर्भ-शास्त्र। भौमिकी (जियालोजी)

भू-विद्या—स्त्री०=भू-विज्ञान।

भूशक्र—पु० [सं० स० त०] राजा।

भूशय—पुं० [स० भू√शी (शयन करना)+अच्,] बिल बनाकर रहनेवाले जानवर। जैसे—गोह, चूहा, नेवला, लोमडी आदि।

भू-शय्या—स्त्री०[स० कर्म० स०] १. जमीन पर सोना। २ शयन करने की भूमि।

भू-शर्करा—स्त्री०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का कद।

भूशायी (यिन्)—वि० [सं० भू√शी (शयन करना)+णिनि,]१ पृथ्वी पर सोनेवाला। २. जो टूट-फूट कर जमीन पर गिर पड़ा हो। ३. मरा हुआ। मृत।

भू-शास्त्र—पु०=भू-विज्ञान।

भू-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] लीप-पोत या धोकर की जानेवाली भूमि की शुद्धि या सफाई।

भू-शुल्क—पु०[स०] भू-सपत्ति पर लगनेवाला कर। (एस्टेट ड्यूटी)

भूषण—पु०[स०√भूष् (भूषित करना)+ल्युट्—अन] १. अलकार। गहना। जेवर। २. शोभा बढानेवाली कोई वस्तु या गुण। ३ विष्णु।

भूषणीय—वि० [स०√भूष् (भूषित करना)+अनीयर] अलकृत किये जाने के योग्य

भूषन*—पु०=भूषण।

भूषना*—स० [स० भूषण] भूषित करना। अलकृत करना। सजाना। अ० अलकृत होना। सजना।

भूषा—स्त्री०[स०√भूष्+णिच्+अ+टाप्] १ गहना+जेवर। २. अलकृत करने की क्रिया या भाव।

पद—वेष-भूषा।

भूषाचार—पु०[भूषा-आचार, ष० त०] १. कपडे आदि पहनने का विशिष्ट ढग। २. समाज के उच्च वर्गों मे या आहृत ढग या रीति। (फैशन)

भूषित—भू० कृ० [स०√भूष्+णिच्+क्त] १ भूषणो से युक्त किया हुआ। अलकृत। २. सजा हुआ।

भूष्णु—वि०[स०√भू (होना)+ग्स्नु] १. होनेवाला। २. ऐश्वर्य का इच्छुक।

भूष्य—वि०[स०√भूष्+णिच+यत्] भूषित किये जाने योग्य। सजाये जाने के योग्य।

भू-सपत्ति—स्त्री०[स० कर्म० स०] जमीन के रूप मे होनेवाली संपत्ति (खेत, जमीदारी आदि)।

भू-सस्कार—पु०[सं० ष० त०] यज्ञ करने से पहले भूमि को परिष्कृत करने, नापने, रेखाएँ खीचने आदि के कार्य।

भूस—पु०=भूसा।

भूसठ—पु०[स० भू+शठ?] कुत्ता। श्वान।

भूसन—पु०[हिं० भूंकना] कुत्तो का बोलना। भूंकना। पु०=भूषण।

भूसना—अ०[हिं० भूंकना] कुत्तो का शब्द करना। भूंकना।

भूसा—पु०[सं० तुष]गेहूँ, जौ आदि के पौधो के डठलो के सूखे छोटे महीन टुकडे जो गाय-भैंसो आदि को खिलाये जाते हैं।

भूसी—स्त्री०[हिं० भूसा] १ किसी चीज के पतले या महीन छिलको के छोटे छोटे टुकड़े। जैसे—ईसबगोल की भूसी। २. भूसा। ३. चोकर।

भूसीकर—पु० [हिं० भूसी+कर] अगहन मे होनेवाला एक तरह का धान और उसका चावल।

भू-सुत—वि०[स० ष० त०] जो पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हो। पु० १. मंगल ग्रह। २. पेड-पौधे, वृक्ष और वनस्पतियाँ। ३. नरकासुर का एक नाम।

भू-सुता—स्त्री०[स० ष० त०] सीता।

भू-सुर—पु०[स० स० त०] पृथ्वी के देवता ब्राह्मण।

भू-स्खलन—पु०[स०] चट्टानो, पहाडो आदि के ढालुएँ पार्श्व पर से मिट्टी और पत्थर के बडे-बड़े ढेरो का खिसककर नीचे आना या गिरना। (लैंड-स्लिप)

भूस्तृण—पु०[स० ष० त०, सुट्-आगम] एक प्रकार की घास। घटिपारी।

भूस्या—पु०[स० भू√स्था (ठहरना)+क, आ-लोप] मनुष्य।

भू-स्फोट—पु०[प० त०] कुकुरमुत्ता।

भू-स्वर्ग—पु०[स० स० त०] सुमेरु पर्वत।

भू-स्वामी (मिन्)—पु०[ष० त०] जमीन का मालिक। जमीदार।

भुहरा*—पु०=मुइँहरा।

भृंग—पु०[स०√भृ (भरण करना)+गन्, नुट-आगम] १ भौरा। २. एक प्रकार का कीडा जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि यह किसी कीडे के ढोले को पकडकर ले आता है और उसे मिट्टी से ढक देता है और उस पर बैठकर और डक मार-मार कर इतनी देर तक और इतनी जोर से "भिन्न भिन्न" करता है कि कीडा भी उसी की तरह हो जाता है। २. भृंग-राज पक्षी।

भृंगक—पु०[स० भृग+कन्] भृगराज पक्षी।

भृगज—पु०[सं० भृग√जन् (उत्पन्न करना)+ड] अगरु।

भृंगजा—स्त्री०[स० भृगज+टाप्] भारगी।

भृंग-प्रिया—स्त्री०[प० त०] माधवी लता।

भृंग-बंधु—पु०[ष० त०] १. कुद का पेड। २ कदम का पेड।

भृगमोही—पु० [स० भृग√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+णिनि] १ चपा। २. कनक चपा।

भृंगरज—पु०=भृगराज।

भृंगराज—पु०[स० भृग√राज्(शोभित होना)+अच्], १ भँगरा नामक वनस्पति। भङ्गरैया। घमरा। २. दे० 'भृग' कीडा।

भृगरीट—पु० [स० भृग√रट् (शब्द)+अच्, पृषो० सिद्धि] १. शिव के द्वारपाल। २ लोहा।

भृग-वल्लभ—पु०[प० त०] भूमि कदब।

भृंग-सोदर—पु०[प० त०] मँगरैया।

भृंगाभीष्ट—पु०[भृंग-अभीष्ट, ष० त०] आम का वृक्ष।

भृंगार—पु०[स० भृग√ऋ (गति)+अण्] १ लौंग। २. सोना। स्वर्ण। ३. पानी पीने के लिए बना हुआ सोने का एक प्राचीन पात्र। ४. जल का अभिषेक करने की झारी।

भृगारि—स्त्री०[स० भृग√ऋ (प्राप्त होना)+इनि] केवड़ा।

भृंगारिका—स्त्री० [स० भृगार+कन्+टाप्, इत्व] झिल्ली नामक कीडा।

भृगावली—स्त्री०[स० भृग-आवली, ष० त०] भौरो की पाँत।

भृंगी(गिन्)—पु० [स० भृग+इनि] १ शिव जी का एक परिषद् का

गण। २. वट वृक्ष। वट का पेड़। ३. भाँग। ४ तितली। ५ अतिविषा। अतीस।

स्त्री० [सं० भृंग+ङीष्] भृंग नामक कीट की मादा। बिलनी।

भृंगी-फल—पुं० [सं० ब० स०] अमड़ा।

भृंगीश—पुं० [सं० भृंगिन्-ईश, ष० त०] शिव। महादेव।

भृंगेष्टा—स्त्री० [सं० भृंग-इष्टा, ष० त०] १ घीकुआर। २ भारंगी। ३ युवती स्त्री। जवान औरत।

भृकुटी—स्त्री० [सं० भ्रूकुटी] भौंह।

भृगु—पुं० [सं०√भ्रस्ज्+कु, सम्प्रसारण, कुत्व] १ एक प्रसिद्ध मुनि जो शिव के पुत्र और सप्तर्षियों में से एक माने जाते हैं। कहते हैं कि इन्होंने भगवान विष्णु की छाती में लात मारी थी। २. परशुराम जो उक्त मुनि के वंशज थे। ३ शुक्राचार्य। ४ शुक्रवार। ५ शिव। ६ जमदग्नि। ७ पहाड़ का ऐसा किनारा जहाँ से गिरने पर मनुष्य बिलकुल नीचे आ जाय, बीच में कहीं रुक न सके।

भृगुक—पुं० [सं० भृगु+कन्] पुराणानुसार कूर्म चक्र के एक देश का नाम।

भृगुकच्छ—पुं० [सं०] आधुनिक भड़ौंच नगर।

भृगुज—पुं० [सं० भृगु√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ भृगु के वंशज। २. शुक्राचार्य।

भृगु-तुंग—पुं० [सं०] हिमालय की एक चोटी जो एक पवित्र तीर्थ के रूप में मानी जाती है।

भृगुनंद—पुं० [सं० भृगु√नद् (प्रसन्न करना)+णिच्+अच्] परशुराम।

भृगुनाथ—पुं० [ष० त०] परशुराम।

भृगु-नायक—पुं० [ष० त०] परशुराम।

भृगु-पति—पुं० [ष० त०] परशुराम।

भृगु-पात—पुं० [पं० त०] पहाड़ की चोटी पर से गिरकर आत्म-हत्या करना।

भृगु-पुत्र—पुं० [ष० त०] शुक्र।

भृगु-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] भृगु-लता।

भृगु-लता—स्त्री० [मध्य० स०] भृगु मुनि के चरण का चिह्न जो विष्णु की छाती पर अंकित है।

भृगु-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] १. तैत्तिरीय उपनिषद की तीसरी वल्ली जिसका अध्ययन भृगु मुनि ने किया था। २. भृगु लता।

भृगुसुत—पुं० [ष० त०] १ शुक्राचार्य। २ शुक्र ग्रह।

भृत—पुं० [सं०√भृ (भरण करना)+क्त] [स्त्री० भृता] १. भृत्य। दास। २. सेवक। नौकर। ३ बोझ ढोनेवाला दास जो मिताक्षरा में अधम कहा गया है।

भू० कृ० १ भरा हुआ। पूरित। २. पाला-पोसा हुआ। ३ (वेतन, धन आदि) चुकाया हुआ। (पेड)

भृतक—पुं० [सं० भृत+कन्] वेतन पर काम करनेवाला नौकर।

भृतक-बल—पुं० [सं० कर्म० स०] वेतन पर रखी हुई सेना। (कौ०)

भृतकाध्यापक—पुं० [सं० भृतक-अध्यापक, कर्म० स०] वह जो वेतन पर अध्यापन-कार्य करता हो।

भृति—स्त्री० [सं०√भृ+क्तिन्] १ भरने की क्रिया या भाव। २. पालन-पोषण। ३. नौकरी। ४ तनख्वाह। वेतन। ५ मजदूरी। ६. दाम। मूल्य।

भृतिभुक् (ज्)—पुं० [सं० भृति√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्, कुत्व] वेतन पर काम करनेवाला नौकर।

भृति-भोगी (गिन्)—वि० [सं० भृति√भुज्+घिनुण्, उप० स०] वेतन लेकर या भाड़े पर किसी का काम करनेवाला। वेतन-भोगी। (मर्सीनरी)

भृति-रूप—पुं० [सं० ब० स०] १ पारिश्रमिक। २. पुरस्कार। इनाम।

भृत्य—पुं० [सं०√भृ+क्यप्, तुक्] [स्त्री० भृत्या] सेवक। नौकर।

भृत्यता—स्त्री० [सं० भृत्य+तल्+टाप्] भृत्य होने की अवस्था, धर्म या भाव।

भृत्य-भर्ता (र्तृ)—पुं० [ष० त०] गृहस्वामी।

भृत्या—स्त्री० [सं० भृत्य+टाप्] १ दासी। २ तनखाह। वेतन।

भृमि—पुं० [सं०√भ्रम्+इन्, कित्व, सम्प्रसारण] १. घूमनेवाली वायु। बवंडर। २ बहते हुए पानी का चक्कर। भँवर। ३. वैदिक काल की एक प्रकार की वीणा।

वि० घूमने या चक्कर लगानेवाला।

भृश—क्रि० वि० [सं० √भृश् (नीचे गिरना)+क] अत्यधिक। बहुत अधिक।

भृश-कोपन—वि० [सं० कर्म० स०] बहुत अधिक क्रोधी।

भृष्ट—वि० [सं०√भ्रस्ज् (पकाना)+क्त, सम्प्रसारण] भूना हुआ।

भृष्टकार—पुं० [सं० भृष्ट√कृ+अण्] भड़भूँजा।

भृष्टान्न—पुं० [सं० भृष्ट-अन्न, कर्म० स०] लाई।

भृष्टि—स्त्री० [सं० √भ्रस्ज्+क्तिन्] १. भूनने की क्रिया या भाव। २. सूनी वाटिका।

भेंडनी—स्त्री०=भाँनी।

भेंगा—वि० [देश०] (व्यक्ति) जिसकी आँखों की पुतलियाँ कुछ टेढ़ी-तिरछी रहती हों, अथवा एक पुतली कुछ तानने से तिरछी होती हो।

भेंट—स्त्री० [हिं० भेंटना] १. परिचितों में प्रायः कुछ समय के उपरान्त होनेवाला मिलन। मुलाकात। जैसे—आज तो कई महीनों पर आपसे भेंट हुई है। २. पत्रों आदि में प्रकाशित करने के लिए किसी बड़े आदमी से मिलकर उसके विचार जानने का काम। ३ वह वस्तु जो बड़ों को आदर तथा नम्रतापूर्वक उपहार या सौगात के रूप में दी जाय। जैसे—सभा ने इन्हें बहुत सी पुस्तकें भेंट की थीं।

विशेष—'उपहार' और 'भेंट' में अंतर यह है कि उपहार तो प्रसन्नता, शुभाशंसा और सद्भाव सूचित करने के लिए दिया जाता है, पर 'भेंट' में आदर और पूजनीयता का भाव प्रधान होता है।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

४. देवता, पूज्य व्यक्ति आदि की सेवा में भक्ति और श्रद्धा-पूर्वक उपस्थित की जानेवाली वस्तु या धन। जैसे—महंत जी को भक्तों से हर साल हजारों रुपयों की भेंट मिलती है। ५. उपहार।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।

६ चंडिका देवी की स्तुति के रूप में गाये जानेवाले एक प्रकार के भजन। (पंजाब)

भेंटना—स० [सं० भिद्=आमने-सामने आकर भिड़ना] १ मुलाकात करना। मिलना। २. गले लगकर आलिंगन करते हुए मिलना। ३. किसी को कोई चीज भेंट रूप में देना। (पश्चिम)

भेंटाना—अ०=भेटना।
भेंड—स्त्री०=भेड।
भेंवना—स०=भिगोना।
भेउ*—पु०[स० भेद] भेद। मर्म। रहस्य।
भेक—पु०[√भी (भय करना)+कन्, गुण] मेढक।
भेकासन—पु०[स० भेक-आसन, उपमि० स०] तत्र-साधन का एक प्रकार का आसन।
भेकी—स्त्री०[स० भेक+ङीप्] १. मेढकी। २ मड्कपर्णी।
भेख†—पु०=भेस (वेष)।
भेखज†—पुं०=भेषज।
भेज—स्त्री०[हिं० भेजना] १ वह जो कुछ भेजा जाय। भेजी हुई चीज। २ भूमि-कर। लगान। ३. अनेक प्रकार के कर जो जमीन और उसकी उपज पर लगाये जाते है।
भेजना—स०[स० व्रजन्] १ आग्रह करके या आदेश देकर किसी व्यक्ति को कही जाने मे प्रवृत्त करना। प्रस्थान कराना। रवाना करना। जैसे—नौकर (या लडके) को सामान लाने के लिए बाजार भेजना। २. किसी के द्वारा किसी साधन से ऐसी क्रिया करना कि कोई चीज किसी दूसरी जगह चली और पहुँच जाय। जैसे—डाक से पत्र या रेल से माल भेजना।
भेजवाना—स० [हिं० भेजना का प्रे०] भेजने का काम किसी दूसरे के द्वारा कराना। जैसे—नौकर के हाथ पत्र भेजवाना।
सयो० क्रि०—देना।
भेजा—पु०[स० मज्जा ?] खोपडी के अन्दर का गूदा। मगज।
मुहा०—भेजा खाना=दे० 'मगज' के अन्तर्गत 'मगज खाना'।
पु०[हिं० भेजना] १ वह चीज जो भेजी जाय। किसी के यहाँ भेजा जानेवाला पदार्थ। २ चदा।
भेजाबरार—पु० [हिं० भेजा=चदा+बरार?] १ किसी के सहायतार्थ विशेषत किसी का देय धन चुकाने के उद्देश्य से चदे के रूप मे इकट्ठा किया हुआ धन। २. इस प्रकार धन इकट्ठा करने की एक मध्ययुगीन प्रथा।
भेट†—स्त्री०=भेंट।
भेटना†—पु०[देश०] कपास के पौधे का फल। कपास का डोडा।
†स०=भेटना।
भेड़—स्त्री०[स० मेष] [पु० भेड़ा] १ बकरी के आकार-प्रकार का एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया जिसका ऊन तथा खाल विविध कामो मे आती है और मास खाया जाता है।
पद—भेडिया धंसान
२ उक्त पशु की तरह सीधा-सादा और मूर्ख व्यक्ति। उदा०—भेड जाओगे, मारेगी जो दो मूग तुम्हे।—कोई शायर।
स्त्री० [?] भेडने की क्रिया या भाव। २.थप्पड या धौल। ३ ताँबे की बनी हुई एक प्रकार की तुरही या भोंपा।
भेड़ना—स०[हिं० भिड़ना] १.कोई चीज किसी के साथ सटाकर लगाना। भिडाना। २ (दरवाजा) बन्द करना। ३ (घूस या रिश्वत) देना। (बाजारू)
भेड़ा—पु०[हिं० भेड़] भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।

भेड़िया—पु०[हिं० भेड या स० भेरुड?] कुत्ते से कुछ बडा एक जंगली हिंसक पशु जो झुड बनाकर रहता है और बस्तियो से मुर्गियाँ, बत्तखे, छोटी छोटी भेड-बकरियाँ, नन्हे बच्चे आदि उठाकर ले जाता है।
वि०[हिं० भेड़+इया (प्रत्य०)] भेड या भेडो का सा। जैसे—भेड़िया धँसान।
भेडिया-धंसान— स्त्री० [हिं० भेड+धँसान] भेडो का सा अंध अनुकरण। विशेष—जब भेडे झुड मे चलती हैं तब प्राय. ऐसा होता है कि एक भेड जिस ओर चलने लगती है बाकी सब भेडे भी बिना कुछ सोचे-समझे चुपचाप उसीके पीछे चलने लगती है। इसी आधार पर यह पद बना है।
भेड़िहर—पु०[हिं० भेड] गडेरिया। भेडे चरानेवाला।
भेतव्य—वि०[सं०√भी (भय करना)+तव्य] १. जिससे डर या भय लगता हो। २. जिससे डरना या भयभीत होना उचित हो।
भेता(तृ)—वि०[स०√भिद् (विदारण)+तृच्] १. भेदन करने अर्थात् छेदनेवाला। २. विभेद या खड करनेवाला। ३ हिस्से लगानेवाला। ४. भेद रहस्य खोलनेवाला ५ दो पक्षो मे मत-भेद उत्पन्न करनेवाला। ६ षड्यत्र करनेवाला।
भेद—पु०[स०√भिद्+घञ्]१ भेदने या छेदने की क्रिया या भाव। २ काट-कर, तोडकर या और किसी प्रकार अलग करने की क्रिया। ३. किसी तल के बीच मे से होकर या एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक जाना। जैसे—शकट भेद। ४ प्राचीन भारतीय राजनीति मे शत्रु को वश मे करने के चार उपायो मे से तीसरा उपाय जिसके अनुसार शत्रु पक्ष के लोगो को धन देकर या बहकाकर अपनी ओर मिला लिया जाता था अथवा उनमे परस्पर द्वेष उत्पन्न कर दिया जाता था। ५ कोई ऐसी भीतरी छिपी हुई तथा रहस्यपूर्ण बात जो दूसरे लोग न जानते हो। रहस्य।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—बताना।—मिलना।—लेना।
६ छिपा हुआ तात्पर्य। मर्म। उदा०—बैंद-बधू हँसि भेद सो रही नाह मुख चाहि।—बिहारी। ७ वह गुण, तत्त्व या विशेषता जो प्राय समान प्रतीत होनेवाली चीजो मे से किसी एक मे होती है और जिससे दोनो का अन्तर जाना जाता है। ८ अन्तर। फरक। ९ किस्म। तरह। प्रकार।
भेदक—वि० [स०√भिद्+ण्वुल्—अक] भेदन करनेवाला। भेदने या छेदने वाला। २ लोगो मे भेदभाव या लडाई-झगडा करानेवाला। ३ आँतो को भेदकर उनमे का मल निकालनेवाला। दस्तावर। रेचक। ४ छपाई, लिखाई आदि मे वह साकेतिक चिह्न जो किसी अक्षर या वर्ण का विशिष्ट उच्चारण बताने के लिए उसके ऊपर या नीचे लगाया जाता है। जैसे—अरबी के गैन वर्ण का उच्चारण बताने के लिए ग मे की बिन्दी। पु०=भेदज्ञ।
भेदकर—वि०=भेदक।
भेदकातिशयोक्ति—स्त्री० [स० भेदक-अतिशयोक्ति] साहित्य मे अति-शयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय और उसके किये हुए वर्णन मे भेद दिखाई देने पर उसे 'और ही कुछ' कहकर अभेद सूचित किया जाता है।
भेद-कारक—वि०[स० प० त०]=भेदक।
भेदकारी (रिन्)—वि० [स०भेद√कृ+णिनि, उप० स०]=भेदक।
भेदज्ञ—वि०[स० भेद√ज्ञा (जानना)+क] भेद या रहस्य जाननेवाला।

भेद-ज्ञान—पु०[ष० त०] द्वैतभाव का ज्ञान।
भेदडी—स्त्री०[देश०] बसौंधी। रबड़ी।
भेदता—स्त्री०[स० भेद] १. वह स्थिति जिसमें भेद दिखाई देता हो। उदा०—सीत घाम भेद खेद सहित लखाते सबै भूले भाव भेदत निषेधन विधान के।—रत्नाकर। २. भेद।
भेददर्शी(र्शिन्)—वि० [स० भेद√दृश्(देखना)+णिनि, उप०स०] वि० दे० 'द्वैतवादी'।
भेदन—पु०[स० √भिद+ल्युट्–अन] [वि० भेदनीय, भेद्य] १. भेदने की क्रिया। छेदना। वेधना। विदीर्ण करना। २. भेद लेने की क्रिया या भाव।
वि० [√भिद्+ल्यु–अन] १. भेदने या छेदनेवाला। २ दस्त लानेवाला। रेचक।
पु०१. अमलवेत। २ हीग। ३ सूअर।
भेदना—स०[स० भेदन] १. भेदन करना। छेदना। वेधना। २. किसी के मन का आशय जानने के लिए उसकी ओर गम्भीर दृष्टि से देखना। उदा०—ता पाछे दुर्जोधन भेदी सिर दिगीतै मन गर्व धरी।—सूर।
भेद-नीति—स्त्री०[ष० त०] दूसरो मे आपस मे फूट डालने या भेद-भाव उत्पन्न करने की नीति।
भेद-बुद्धि—स्त्री० [ष० त०] १. यह समझना कि अमुक और अमुक मे भेद है। २ फूट। बिलगाव।
भेद-भाव—पु०[स०] १ मन मे होनेवाला यह ज्ञान या भाव कि अमुक और अमुक मे भेद है। २. एकता या एकात्मता का भाव या विचार। ३. मतैक्य का अभाव। ४ अन्तर। फरक। ५ आज-कल सबके प्रति समान व्यवहार न करके किसी के प्रति पक्षपातपूर्ण और दूसरे के प्रति अनुचित व्यवहार करना। (डिस्क्रिमिनेशन)
भेद-मति—स्त्री०=भेद-बुद्धि। (दे०)
भेद-वाद—पु०=द्वैतवाद।
भेद-वादी (दिन्)—वि०=द्वैतवादी।
भेद-विधि—स्त्री० [ष० त०] दो वस्तुओ मे अन्तर करने की प्रणाली या शक्ति।
भेद-साक्षी (क्षिन्)—पु०[ष० त०] सारा भेद या रहस्य जाननेवाला वह अभियुक्त जो शासन की ओर से साक्षी बन गया हो। इकबाली गवाह। (एप्रूवर)
भेदित—पु०[स०√भिद्+णिच्+क्त] तत्र के अनुसार एक प्रकार का मत्र जो निंदित समझा जाता है।
भू० कृ० भेदा हुआ। छेदा हुआ।
भेदिनी—पु०[स० भेदिन्+ङीप्] षट-चक्र को भेदन करने की शक्ति या सिद्धि। (तत्र)
भेदिया—पु०[स० भेद+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो कोई भेद या रहस्य जानता हो। २. जिसने किसी का कोई भेद जान लिया हो। ३. दूत। गुप्तचर।
भेदिर—पु० [स० भिदुर+पृषो०] वज्र।
भेदी (दिन्)—वि० [स०√भिद्+णिनि] भेदन करनेवाला। फोडनेवाला। भेदक।
पु० अमलवेत।
पु० भेदिया। जैसे—घर का भेदी लका दाहे। (कहा०)
भेदीकरण—पु०[स० भेद+च्वि, ईत्व√कृ+ल्युट्–अन] १. भेदने की क्रिया या भाव। २. भेद-भाव या विभाग करने की क्रिया या भाव।
भेदुर—पु०[स० भिदुर, पृषो० सिद्धि] वज्र।
भेद्य—वि० [स० भिद् (भेदन करना)+ण्यत्, गुण] जो भेदा या छेदा जा सके। भेदे जाने के योग्य। (परमिएबुल)
पु० वैद्यक मे शस्त्रों आदि की सहायता से किसी पीडित अंग या फोडे आदि का भेदन करने की क्रिया। चीर-फाड।
भेन—स्त्री०=बैन (बहन)।
भेना—स०[हिं० भिगोना] भिगोना। तर करना।
भेभभ—पु०[देश०] एक तरह का पतला पहाड़ी बाँस जिससे हुक्कों की निगालियाँ बनाई जाती है।
भेर—स्त्री०=भेरी
भेरवा—पु०[देश०] एक प्रकार की खजूर (वृक्ष और फल)।
भेरा—पु० [देश०] मध्य तथा दक्षिणी भारत में होनेवाला मझोले आकार का एक प्रकार का पेड। भीरा।
†पु०=बेडा।
भेरि—स्त्री०=भेरी।
भेरिकार—पु० [स०√भी+क्रिन्, भेरि√कृ+अण्] भेरी बजानेवाला।
भेरी—स्त्री०[स० भेरि+ङीष्] प्राचीन काल में रण-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल।
भेरीकार—पु० [स० भेरी√कृ+अण्] [स्त्री० भेरिकारी] भेरी बजानेवाला।
भेरुंड—वि०[स०] भयानक।
पु० १. गर्भ-धारण। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. हिंस्र जतु (भेड़िया, सियार आदि)।
भेल—वि०[सं०] १. कायर। डरपोक। भीरु। २ चचल। ३ मूर्ख।
पु० एक प्राचीन ऋषि।
भेलना—स०[स० भेलन] १. तोड़ना-फोडना। २. अस्त-व्यस्त करना। ३. लूटना। (राज०)
भेला*—पु०[हिं०भेंट या स० भेलन?] १. भेंट। मुलाकात। उदा०—पुरि भेला मिलि किओ प्रवेस।—प्रिथीराज। २. मुठभेड। भिडत। ३. एकत्र होने की क्रिया या भाव। उदा०—कर चुका हूँ हँस रहा यह देख कोई नहीं भेला।—निराला।
पु० [?] [स्त्री० अल्पा० भेली] बडा गोला या पिंड। जैसे—गुड का भेला।
पु०=भिलावाँ।
भेली—स्त्री०[?] १. गुड का छोटा टुकडा या पिंड। २. गुड। (क्व०) ३. किसी चीज का डला या पिंड।
भेव*—पु०[स० भेद] १. मर्म की बात। भेद। रहस्य। २ तरह। प्रकार। ३. पारी। बारी।
भेवना*—स०=भिगोना।
भेश—पु०=वेश।
भेष—पु०=भेस।
भेषज—पु०[सं० भिषज्+अण्] १. रोगी को निरोग तथा स्वस्थ करना या

बनाना। २. ओषधि। औषध। दवा। ३. जल। पानी। ४. सुख। ५. विष्णु का एक नाम।
भेषज-करण—पु०[ष० त०] दवा तैयार करना। औषध बनाना।
भेषज-संग्रह—पु० [सं०] किसी देश या राज्य के द्वारा प्रकाशित वह आधिकारिक ग्रंथ जिसमे प्रामाणिक और मान्य औषधों की तालिका और उनके गुणो, धर्मों, मात्राओ आदि का विवेचन हो। (फारमाकोपिआ)
भेषजांग—पु०[स० भेषज-अग, प०त०] वह पदार्थ जो दवा के साथ अथवा जिसमे दवा मिलाकर खाया जाता है और इसी लिए जो दवा का अग माना जाता है।
भेषजागार—पु० [स० भेषज-आगार, प० त०] औषधालय।
भेषना*—स० [हिं० भेष] १. भेस बनाना। स्वाग बनाना। २ कपडे आदि धारण करना। पहनना।
भेस—पु०[स० वेष] १. किसी व्यक्ति का वह रूप-रग जो उसके साधारण पहनावे आदि से प्रकट होता है।
क्रि० प्र०—बदलना।—बनाना।
२ वह बनावटी रूप-रग और नकली पहनावा आदि जो अपना वास्तविक रूप या परिचय छिपाने के लिए धारण किया जाय। कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।
क्रि० प्र०—धरना।
मुहा०—भेस बदलना या बनाना=किसी दूसरे का ऐसा रूप रग धारण करना और पहनावा पहनना जिसे देखकर लोग सहसा उस व्यक्ति को पहचान न सके, और वही व्यक्ति समझे जिसका भेस उसने बना रखा हो।
३ योगियो, साधु-सन्यासियो आदि का वह रूप-रग और पहनावा जो उसके विशिष्ट सम्प्रदाय का सूचक होता है। उदा०—कौन से भेस मे, कौन गुरु के चेला।—कबीर।
भेसज*—पु०=भेषज।
भेसना—स०[स० हिं० भेष] १ वस्त्रादि पहनना। २. किसी का भेस धारण करना।
भैंस—स्त्री०[स० महिष] १ गाय की तरह का एक प्रसिद्ध पालतू मादा चौपाया जिसका दूध दूहा जाता है।
मुहा०—भैंस काटना=गरमी या आतशक नाम का रोग होना। उपदश होना। (बाजारू)
२. एक प्रकार की बडी मछली जो पंजाब, बगाल तथा दक्षिण भारत की नदियो मे पाई जाती है। इसका मांस खाने मे स्वादिष्ट होता है, परन्तु इसमे हड्डियाँ अधिक होती है। ३. एक प्रकार की घास।
भैंसवाली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बेल जिसकी पत्तियाँ पाँच से आठ इच तक लम्बी होती है।
भैंसा—पु०[हिं० भैंस] १ भैंस का नर। २ लाक्षणिक अर्थ मे, हट्टा-कट्टा व्यक्ति।
भैंसाव—पु०[हिं० भैंस+आव (प्रत्य०)] भैंस और भैंसे का जोड़ा खाना। भैंसे से भैंस का गर्भ धारण करना।
भैंसासुर—पु०=महिषासुर।
भैंसिया गूगल—पु०[हिं० भैंसिया+गूगल] एक प्रकार का गूगल जिसका व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है।
भैंसिया लहसुन—पु०[हिं० भैंसिया+लहसुन] सामुद्रिक मे एक प्रकार का लाल दाग या निशान जो प्राय गाल, गरदन आदि पर होता है। लच्छन।
भैंसौरी—स्त्री०[हिं० भैंसा+औरी (प्रत्य०)] भैंस का चमडा।
भै—पु०=भय।
भैकर—वि०[स्त्री० भैकरी]=भयकर (भयकर)।
भैक्ष—पु०[स० भिक्षा+अण्,वृद्धि] १ भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। भिखमगी। २. वह चीज जो भिक्षा माँगने पर मिले। भीख।
भैक्ष-चर्या—स्त्री०[स० प० त०] चारो ओर घूम-घूमकर भिक्षा माँगने की क्रिया।
भैक्षव—वि०[स० भिक्षु+अञ्,] भिक्षु-सबधी।
पु० भिक्षुओ का समूह।
भैक्ष-वृत्ति—स्त्री०[तृ० त०]=भैक्ष-चर्या।
भैक्षाकुल—पु०[स० भैक्ष-आकुल, तृ० त०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोगो को भिक्षा मिलती हो। दानशाला।
भैक्षान्न—पु०[सं० भैक्ष-अन्न, कर्म० स०] भीख मे मिला हुआ अन्न।
भैक्षाशी (शिन्)—वि०[स० भैक्ष√अश् (खाना)+णिनि] भिक्षान्न खानेवाला।
पु० भिक्षुक। भिखमगा।
भैक्षाहार—पु०[स० भैक्ष-आहार, ब० स०] भिक्षुक।
भैक्षुक—पु०[स० भिक्षुक+अण्] १. भिक्षुको का दल। २ संन्यास।
भैक्ष्य—पु०[स० भिक्षा+ष्यञ्] भिक्षा। भीख।
भैक्ष्य-चरण—पु०=भिक्षु-चर्या।
भैक्ष्यचर्या—स्त्री०=भिक्षु-चर्या।
भैक्ष्य-जीविका—स्त्री०[तृ० त०] भिक्षा पर जीवन बिताना।
भैक्ष्य-वृत्ति—स्त्री०[तृ० त०] भिक्षा-वृत्ति।
भैक्ष्य-शुद्धि—स्त्री०[स० मध्य० स०] भिक्षा माँगने और ग्रहण करने के दोष से मुक्त होने के लिए की जानेवाली शुद्धि। (जैन)
भैचक, भैचक्क—वि०=भौचक।
भैजन*—वि० [हिं० भै=भय+जनक] भय उत्पन्न करनेवाला। भयप्रद।
भैडक—वि०[स०] भेड-सबंधी। भेड़ो का।
भैदा*—वि० [सं० भय+दा (प्रत्य०)] भयप्रद। डरावना।
भैन—स्त्री०[हिं० बहिन] बहन। भगिनी।
भैना†—स्त्री० [हिं० बहन] बहन के लिए सम्बोधन।
†स्त्री०[?] गगई नामक पक्षी।
†अ० १.=भीनना। २ भीगना।
भैनी—स्त्री०[हिं० बहन] बहन। भगिनी।
भैने—पुं०[स० भागिनेय] बहन का पुत्र। भानजा।
भैम—वि०[स० भीम+अण्] भीम-सम्बन्धी। भीम का।
भैमी—स्त्री० [स० भैम+ङीप्] १ माघ शुक्ल एकादशी। भीमसेनी एकादशी। २ दमयती जो राजा भीम की कन्या थी।
भैयंस—पु०[हिं० भाई+अश] सपत्ति मे भाइयो का हिस्सा। भाइयो का अश।
भैया—पु०[हिं० भाई] १ भाई। भ्राता। २. बराबरवालो का छोटो के लिए सम्बोधन का शब्द। ३. उत्तरी भारत विशेषत उत्तर प्रदेश का वह

निवासी जो पश्चिमी भारत में रईसों के यहाँ दरबान का काम करता हो। (बम्बई)

पुं०[?] नाव की पट्टी या तख्ती।

भैयाचारा†—पुं०=भाईचारा।

भैयाचारी†—स्त्री०=भाईचारा।

भैयादूज—स्त्री०=भाई-दूज।

भैरव—वि० [सं० भीरु+अण्] १. जिसका रव अर्थात् शब्द भीषण हो। ३. जो देखने में भयंकर हो। भयानक। ३. घोर विनाश करनेवाला। ४ बहुत अधिक उग्र, तीव्र या विकट। उदा०—पंचभूत का भैरव मिश्रण।—पंत।

पुं०[सं०] १ महादेव। शिव। २ शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं। ३. साहित्य में भयानक नामक रस। ४ संगीत में संपूर्ण जाति का एक राग जो शरद् ऋतु में प्रातःकाल गाया जाता है। ५ ताल के सात मुख्य भेदों में से एक। ६. कपाली। ७. ऐसी तीव्र मदिरा जिसे पीते ही आदमी वमन करने लगे। (तांत्रिक) ८. एक प्राचीन नद।

भैरव-झोली—स्त्री०[सं० भैरव+हिं० झोली] एक प्रकार की लंबी झोली जो प्रायः साधु-सन्यासी अपने पास रखते हैं।

भैरव-तर्जक—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

भैरव-बहार—पुं०[सं० भैरव+हिं०बहार] वसंत-ऋतु में प्रातः गाया जानेवाला एक संकर राग जो भैरव और बहार के मेल से बनता है।

भैरव-मस्तक—पुं०[सं०] ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

भैरवांजन—पुं० [सं० भैरव-अंजन, मध्य० स०] आँखों में लगाने का एक प्रकार का अंजन। (वैद्यक)

भैरवी—स्त्री० [सं० भैरव+ङीप्] १. तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है। २ पार्वती। ३. पुराणानुसार एक नदी। ४ संगीत में एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या कही गई है और जो शरद् ऋतु में प्रातःकाल के समय गाई जाती है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार है'— म, प, ध, नि, सा, ऋ, ग।

वि० भैरव-संबंधी। जैसे—भैरवी यातना।

भैरवी-चक्र—पुं० [सं० मध्य० स०] तांत्रिकों का वह मंडल जो देवी के पूजन के लिए एकत्र होता है। मद्यपों और अनाचारियों आदि का वर्ग या समूह।

भैरवी-याचना—स्त्री० दे० 'भैरवी यातना'।

भैरवी यातना—स्त्री० [सं० भैरवी+यातना व्यस्त पद] वह कष्ट जो प्राणियों को मरते समय भैरव देते है।

भैरवेश—पुं०[सं० भैरव-ईश, ष० त०] शिव।

भैरा—पुं०=बहेड़ा।

भैरी—पुं०=बहरी (पक्षी)।

भैरू—पुं०=भैरव।

भैरो—पुं०=भैरव।

भैया—पुं० [हिं० भैया] भाई अथवा बराबरवालों के लिए संबोधन।

भैवाद—पुं० [हिं० भाई+आद (प्रत्य०)] १. कुल या परिवार के लोग जिनसे भाइयों का सा संबंध हो। २. एक ही वंश या परिवार के लोग। ३. भाई-चारा।

भैषज—पुं०[सं० भेषज+अण्] १. औषध। दवा। २. वैद्य के शिष्य और अनुचर। ३. लवा पक्षी।

भैषजिकी—स्त्री०[सं० भैषज से] औषध आदि बनाने की कला, विद्या या शास्त्र। (फार्मेसी)

भैषज्य—पुं० [सं० भेषज+ष्यञ्] दवा। औषध।

भैषज्यज्ञ—पुं० [सं०] वह जो भैषज-शास्त्र का ज्ञाता हो। ओषधियों आदि की सहायता से अच्छी चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। काय-चिकित्सक।

भैष्मकी—स्त्री० [सं० भीष्मक+इञ्—ङीप्] भीष्मक की कन्या रुक्मिणी।

भैहा*—पुं०[हिं० भय+हा (प्रत्य०)] १. भयभीत। डरा हुआ। २. जो भूत-प्रेत आदि से डरकर उनके आवेश में आ गया हो।

भों—स्त्री०[अनु०] १. भों भों का शब्द। कुत्तों के भौंकने का शब्द।

भोंकना†—स० [भों भों] १. किसी नरम पदार्थ में कोई कड़ी तथा नुकीली चीज एकबारगी धँसाना। २. नुकीला अस्त्र किसी में धँसाना।

†अ०=भूकना।

भोंगरा—पुं०[देश०] एक प्रकार की बेल या लता।

भोंगाल—पुं० [अ० बिगुल] एक प्रकार का बड़ा भोंपा।

भोंचाल—पुं०=भूकंप।

भोंडर†—पुं०=भोडर।

भोंडा—वि०[हिं० भद्दा या भों से अनु०] [स्त्री०भोंडी] बहुत ही भद्दी और विकृत आकृतिवाला। (क्लम्ज़ी) २. जिसमें शालीनता, शिष्टता आदि का नितान्त अभाव हो। ३. जो दोषी और लज्जित होने के कारण सिर न उठा सके। उदा०—साँवते भोंडी करी मानिनि तें भोरी करी।—देव।

पुं०[देश०] एक प्रकार की घास और उसके दाने जिसे पशु खाते हैं।

भोंडापन—पुं०[हिं० भोंडा+पन (प्रत्य०)] १ 'भोंडा' होने की अवस्था या भाव। २ भद्दापन।

भोंडी—स्त्री० [हिं०भोंडा] काले रंग की भेड़ जिसके छाती पर के बाल सफेद हों।

भोंतला—वि०=भुथरा।

भोंतण—वि०=भुथरा (कुछ धारवाला)।

भोंदू—वि०[हिं० बुद्धू] बहुत ही सीधा-सादा और बेवकूफ।

भोंपू—पुं० [अनु० भों+पू (प्रत्य०)] १. फूंककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुरानी चाल का बाजा। २ वह ऊँची तथा लंबी सीटी जो समय सूचित करने के लिए कल-कारखाने बजाते हैं। ३. मोटरों आदि में शब्द करने के लिए दबाकर बजाया जानेवाला बाजा।

भों भों—पुं०[अनु०] भूँकने की आवाज।

भोंसला—पुं०[देश०] महाराष्ट्र के एक राजकुल की उपाधि। महाराज शिवाजी और रघुनाथ राव आदि इसी राजकुल के थे। नागपुर के महाराष्ट्र राजा लोग भोंसले ही थे।

भो*—वि० [हिं० भया] भया। हुआ।

अव्य०[सं० भोस्] हे। हो। (सम्बोधन)

भोकस*—पुं०[सं० पुल्कस] दानव। राक्षस।

वि०=भुक्खड़।

भोकार—स्त्री०[भो से अनु०+कार (प्रत्य०)] जोर जोर से रोना।
क्रि० प्र०—फाडना।

भोक्तव्य—वि०[स०√भुज् (खाना, उपभोग करना)+तव्य] १. जो भोगा जाने को हो। २ जो भोगा जा सके।

भोक्ता(क्तृ)—वि०[स०√भुज् (खाना)+तृच्] १. भोजन करनेवाला। २ भोग अर्थात् उपभोग या उपयोग करनेवाला। ३ सुखो का भोग करनेवाला।
पु० १. विष्णु। २. स्त्री का पति। स्वामी। ३ एक प्रकार के प्रेत।

भोक्तृत्व—पु०[स० भोक्तृ+त्व] भोक्ता होने की अवस्था, धर्म या भाव।

भोक्तृ-शक्ति—स्त्री०[स० ष० त०] बुद्धि।

भोग—पु० [सं०+भुज् (उपभोग करना)+घञ्] १ भोगने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ सुख-दुख आदि का अनुभव करते हुए उन्हे अपने मन और शरीर पर प्राप्त या सहन करना। ३. इच्छाओ की तृप्ति, प्रसन्नता, मनस्तोष आदि के विचार से अभीष्ट, लाभदायक या सुखद वस्तु मनमाने ढग से अपने उपयोग मे लाने की क्रिया या भाव। जैसे—सम्पत्ति का भोग, सासारिक सुखो का भोग। ४ किसी पदार्थ का किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। किसी चीज का काम मे लाया जाना। ५. भोजन करना। खाना। ६ देवी-देवताओ की मूर्ति के सामने उनके काल्पनिक उपभोग के उद्देश्य से रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य।
मुहा०—भोग लगाना=(क) देवताओ की मूर्तियो के सामने खाद्य पदार्थ यह समझकर रखना कि वे उसका आस्वादन और उपभोग करेगे। (ख)स्वस्थ भोजन करना। खाना।
७ व्यावहारिक क्षेत्र मे वह स्थिति जिसमे कोई भूमि या संपत्ति अपने अधिकार मे रखकर उससे पूरा लाभ उठाया जाता है। भुक्ति। कब्जा। (पजेशन) ८ पुरुष और स्त्री मे होनेवाला मैथुन। संभोग। ९ पाप, पुण्य आदि का वह फल जो भोगा अर्थात् प्राप्त या सहन किया जाता है। प्रारब्ध। १० किसी काम या बात से प्राप्त होनेवाला फल। ११ किसी की दुर्दशाओ, दुष्कर्मों आदि का वह उल्लेख जो लड़ाई-झगडे के समय गाली-गलौज के साथ किया जाता है। जैसे—अब अगर किसी ने मेरा नाम लिया तो मैं सैंकडो भोग सुनाऊँगी। (स्त्रियाँ) १२. ज्योतिष मे, सूर्य आदि ग्रहो का मीन, मेष आदि राशियो मे अवस्थित रहने का काल या समय। जैसे—अभी इस राशि मे बुध का भोग एक महीने और रहेगा। १३. सुख। १४. दुख। १५ ऐसी वस्तु जिससे किसी प्रकार का सुख प्राप्त हो। १६ दावत। भोज। १७ फायदा। लाभ। १८. आमदनी। आय। १९ धन-सम्पत्ति। २० वह धन जो वेश्या को उसके साथ समोग करने के बदले मे दिया जाता है। २१ साँप का फन। २२ साँप। २३. देह। शरीर। २४ पक्तिबद्ध सेना। २५ किराया। भाडा। २६. घर। मकान। २७ पालन-पोषण २८ परिमाण। मान। २९. पुर। नगर। ३०. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

भोग-काल—पु० [स० ष० त०] १ उतना समय जितने मे कोई घटना या बात आदि से अन्त तक घटित हो। (ड्यूरेशन) २ कष्ट, रोग, सुख आदि भोगे जाने का पूरा समय।

भोग-गृह—पु०[स० ष० त०] अन्त पुर। जनानखाना।

भोग-चिन्तामणि—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोग-देह—पु० [सं० मध्य० स०] पुराणानुसार वह सूक्ष्म शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत स्वर्ग या नरक मे जाकर सुख या दु ख भोगने के लिए धारण करना पडता है।

भोग-धर—पु०[स० ष० त०] सर्प। साँप।

भोगना—स०[सं० भोग+हिं० ना (प्रत्य०)] १ किसी चीज़ का भोग करना। उपभोग या प्रयोग करना। २ किसी चीज या बात के अच्छे-बुरे फल वहन या सहन करना। ३ कष्ट सहना।
विशेष—भोगना, झेलना और सहना का अन्तर जानने के लिए दे० 'सहना' का विशेष।
४. स्त्री के साथ प्रसग या संभोग करना।

भोग-नाथ—पु०[स० ष० त०] वह जो पालन-पोषण करता हो। पालक।

भोग-पति—पु० [स० ष० त०] प्राचीन भारत मे किसी क्षेत्र विशेषतः किसी जनपद या प्रदेश का शासक।

भोग-पत्र—पु० [स० मध्य० स०] १. प्राचीन भारत मे वह पत्र जो राजा को उपहार भेजने के सबध मे लिखा जाता था। (शुक्र नीति) २ वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई चीज या सपत्ति भोगने का अधिकार दिया जाय।

भोग-पाल—पु० [सं० भोग√पाल् (पालन करना)+अण्, उप० स०] १. भोगपति। २ साईस।

भोग-पिशाचिका—स्त्री०[स० स० त०] भूख।

भोग-बंधक—पु० [स० भोग्य+हिं०बंधक] बधक या रेहन का वह प्रकार जिसमे रेहन रखी जानेवाली चीज के भोग का अधिकार भी महाजन को रहता है। (मार्टगेज विद पोजेशन)

भोग-भूमि—स्त्री०[स० मध्य० स०] जैनो के अनुसार वह लोक जिसमे किसी प्रकार का कर्म नही करना पडता है और सुख भोग की सब आवश्यकताएँ कल्पवृक्ष के द्वारा पूरी होती है।

भोग-भृतक—पु०[स० मध्य० स०] केवल भोजन, वस्त्र लेकर काम करनेवाला नौकर।

भोग-लदाई—स्त्री० [हिं० भोग+लदाई?] खेत मे कपास का सबसे बडा पौधा जिसके आसपास बैठकर देहाती लोग उसकी पूजा करते हैं।

भोग-लाभ—पु० [स० ष० त०] पहले दिये हुए अन्न के बदले मे फसल तैयार होने पर व्याज के रूप मे मिलनेवाला कुछ अधिक अन्न।

भोग लियाल—स्त्री०[?] कटारी नाम का शस्त्र। (डिं०)

भोगली—स्त्री०[देश०] १. छोटी नली। पुपली। २ नाक मे पहनने का लौग। ३. कान मे पहनने की तरकी। ४ नाक (या कान) मे पहनने के लौग (या फूल) मे पीछे की ओर से बद करने के लिए डाली जानेवाली लम्बी पतली और पोली कील।

भोगवती—स्त्री० [स० भोग+मतुप्, म—व,+ङीन्] १ पाताल गगा। २ गगा। ३ पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ। ४ एक प्राचीन नदी। ५ नागो के रहने की नाग नाम की पुरी। ६ कार्तिकेय की एक मातृका।

भोगवना*—स०=भोगना।

भोगवसा—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगवान् (वत्)—पु०[स० भोग+मतुप्, म—व] १ साँप। २ अभिनय। नाट्य। ३ गीत। गाना।

भोगवाना—स०[हिं० भोगना का प्रे०रूप] भोगने मे दूसरे को प्रवृत्त करना। भोग कराना।

भोग-विलास—पुं० [स० द्व० स०] सब प्रकार के सुख भोगते हुए किया जानेवाला आमोद-प्रमोद। सुख-चैन की वह स्थिति जिसमे मनुष्य वासनाओ की तृप्ति मे लिप्त रहता हो।

भोग-वेतन—पु० [स० मध्य० स०] वह धन जो किसी धरोहर रखी हुई वस्तु के व्यवहार के बदले मे उसके स्वामी को दिया जाय।

भोग-व्यूह—पु० [स० मध्य० स०] वह व्यूह जिसमे सैनिक एक दूसरे के पीछे खडे किये गये हों। (कौ०)

भोग-शरीर—पु०=भोगा-देह।

भोग-सामत—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगांतराय—पु०[स० भोग-अतराय, सुप्सुपा स०] वह अतराय जिसका उदय होने से मनुष्य के भोगो की प्राप्ति मे विघ्न पड़ता है। (जैन)

भोगांश—पु०[स०]=देशातर (भूगोल का)।

भोगाधिकार—पु०[सं० भोग-अधिकार, मध्य० स०] वह अधिकार जो किसी दूसरे की वस्तु का कुछ समय तक भोग करते रहने के उपरान्त प्राप्त होता है। (ऑकुपैन्सी राइट)

भोगाना—स०[हिं० भोगना का प्रे०] भोगने मे दूसरे को प्रवृत्त करना। भोग कराना।

भोगावती—स्त्री०=भोगवती।

भोगिआर—वि०[हिं० भोगना] जो भोगे जाने के योग्य हो। फलतः आकर्षक या सुन्दर। (पूरब)

भोगिक—पु० [स०भोग+ठन्—इक] १. गाँव का मुखिया। २ साईस।

भोगिन—स्त्री०=भोगिनी।

भोगिनी—स्त्री० [स० भोग+इनि,+ङीप्] १. राजा की उपपत्नी। २. रखेली स्त्री। ३. नागिन।

भोगींद्र—पु० [स० भोगिन्-इन्द्र, स० त०] पतजलि का एक नाम।

भोगी (गिन्)—वि०[सं० भोग-इनि] १. भोगनेवाला। जो भोगता हो। २ सुखी। ३. इन्द्रियो के सुख-भोग की इच्छा रखनेवाला। विषयासक्त। ४ विषयी। व्यसनी। ५ खानेवाला।

पु० १ वह जो गृहस्थाश्रम मे रहकर सब प्रकार का सुख-दु ख भोगता हो। गृहस्थ। २. राजा। ३. जमीदार। ४. नाई। हज्जाम। ५. साँप। ६. शेषनाग। (डिं०) ७. संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगीन—पुं०[स० भोग+ख—ईन]=भोगी।

भोगीभुक्—पु०[सं० भोगिभुक्] नेवला।

भोगीश्वरी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भोगेंद्र—पुं०[स० भोग-इन्द्र, स० त०] १. अधिक मात्रा मे अच्छी चीजें खानेवाला। २ अच्छी तरह सुखो का भोग करनेवाला।

भोग्य—वि० [सं० भुज् (उपभोग करना)+ण्यत्,] १. (पदार्थ या सपत्ति) जिसका भोग करना उचित हो, किया जाने को हो अथवा किया जा रहा हो। २ जो भोगे अर्थात् झेले या सहे जाने को हो।

पु० १ धन। २. धान्य। ३ रेहन या भोगबधक का प्रकार।

भोग्य भूमि—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. वह स्थान जहाँ आनन्द केलि की जाती हो। २ मर्त्य-लोक, जिसमे जीव को अपने किये हुए कर्मो का फल भोगना पडता है।

भोग्या—वि०[सं० भोग्य+टाप्] भोग्य का स्त्रीलिंग रूप।

स्त्री० वेश्या।

भोज—पु० [स० भोज+अण् अण्-लुक्] १. भोजकट नामक देश जिसे आज-कल भोजपुर कहते हैं। २. चन्द्रवशी क्षत्रियो का एक कुल या शाखा। ३. महाभारत के अनुसार राजा द्रुह्यु के एक पुत्र का नाम। ४. पुराणानुसार वसुदेव का एक पुत्र। ५. श्रीकृष्ण का सखा, एक ग्वाल। ६ विदर्भ के एक प्राचीन राजा। ७ मालवे के एक प्रसिद्ध राजा जिन्होने सस्कृत भाषा मे कई ग्रंथ लिखे थे। इनका जन्म-काल १०वी शताब्दी है।

पु०[स० भोजन] १. किसी विशिष्ट अवसर पर या उपलक्ष मे निमंत्रित व्यक्तियो को एक साथ बैठाकर कराया जानेवाला भोजन। २. खाने-पीने की चीजे। खाद्य पदार्थ।

भोजक—वि० [स०√भुज् (खाना भोग करना)+ण्वुल्—अक] १ भोग करनेवाला। भोगी। २. भोजन करने या खानेवाला।

पु० ऐयाश।। विलासी।

भोजकट—पु०[सं०] भोजपुर।

भोजन—पुं०[स० √भुज्+ल्युट्—अन्] १ भक्षण करना। खाना। २. भूख मिटाने के उद्देश्य से प्राय भर पेट खाये जानेवाले खाद्य पदार्थ। खाने की सामग्री। ३ विशेष परिस्थिति या अवस्था मे खाई जाने वाली कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुएँ। (डायट)

भोजनखानी*—स्त्री० [स० भोजन+हिं० खानी] १. पाकशाला। रसोईघर। २ भोजनालय।

भोजन-गृह—पु० [स० प० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर भोजन किया जाता है।

भोजनग्राही (हिन्)—वि० [स० भोजन√ग्रह+णिनि, उप० स०] भोजन ग्रहण करनेवाला। २. जो किसी विशेष अवस्था मे कही से मिलने वाला भोजन ग्रहण करता हो। (डायटेड) जैसे—इस अस्पताल मे २० भोजनग्राही रोगी है।

भोजन-नलिका—स्त्री० [सं० प० त०] गले और छाती के अन्दर की वह नली जिसमे से होकर खाई हुई चीजें नीचे उतरती और पक्वाशय मे पहुँचती है। (फूड पाइप)

भोजन नली—स्त्री०=भोजन नलिका।

भोजन-भट्ट—वि०[सं० स० त०] बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।

भोजन शाला—स्त्री० [स० प० त०] १. रसोई-घर। पाकशाला २ भोजनालय।

भोजनाच्छादन—पु०[सं० भोजन-आच्छादन, द्व० स०] खाने और पहनने की सामग्री। अन्न-वस्त्र। खाना-कपडा।

भोजनालय—पु० [सं० प० त०] १. पाकशाला। रसोई-घर। २ वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर पका हुआ भोजन परोसकर खिलाया जाता है। (रेस्टोरेण्ट)

भोजनीय—वि०[स०√भुज् (खाना)+अनीयर] जो खाया जा सके। खाये जाने के योग्य। खाद्य।

भोजनोत्तर—वि०[स० भोजन-उत्तर, प० त०] जो भोजन के बाद खाया जाता हो (औषध आदि)।

क्रि० वि० भोजन करने के उपरान्त। खाने के वाद।
ोजपति—पु०[स० प० त०] १ कंसराज । २ राजा भोज।
ोज-पत्र—पु० [स० भूर्जपत्र] १. ऊँचे पर्वतो पर होनेवाला मझोले आकार का एक वृक्ष। २. उक्त वृक्ष की छाल जो प्राचीन काल मे ग्रथ और लेख आदि लिखने के काम आती थी। छाल।
ोज-परीक्षक—पु० [स० प० त०] वह जो इस वात की परीक्षा करता हो कि भोजन मे विष आदि तो नही मिला है।
ोजपुर—पु० [वि० भोजपुरिया, भोजपुरी] विहार के शाहावाद जिले मे स्थित एक गाँव।
ोजपुरिया—पु० [हिं० भोजपुर+इया (प्रत्य०)] भोजपुर का रहनेवाला।
वि० भोजपुर मे रहने या होनेवाला।
भोजपुरी—वि०[हिं० भोजपुर] भोजपुर-सवधी। जैसे—भोजपुरी भाषा।
पु० भोजपुर का निवासी।
स्त्री० पूर्वी उत्तर प्रदेश और विहार के अधिकतर भागो मे वोली जानेवाली वोली, जिसकी उत्पत्ति मागधी अपभ्रश से हुई है।
भोज-भात—पु० [हिं०] विरादरी आदि के लोगो का एक साथ वैठकर भोजन करना। भोज।
भोजयिता (तृ०)—वि० [स०√भुज्+णिच्+तृच्] खिलानेवाला।
भोजराज—पु०=भोज (राजा)।
भोज-विद्या—स्त्री०[स० मध्य० स०] इद्रजाल। वाजीगरी।
भोजी—पु० [स० भोजिन्] भोजन करने या खानेवाला। जैसे—माँस-भोजी।
भोजू*—पु०=भोजन।
वि० [स० भोज्य] काम मे आने योग्य।
पद—काजू भोजू=काम चलाऊ।
वि० १. भोजन करनेवाला। २ भोगनेवाला। ३. भोगा जानेवाला।
भोजेश—पु०[स० भोज-ईश, प० त०] १ भोजराज। २ कस।
भोज्य—वि० [स०√भुज्+ण्यत्] खाये जाने के योग्य। जो खाया जा सके। खाद्य।
पु० वे पदार्थ जो खाये जाते है। खाद्य पदार्थ।
भोट—पु०[स० भोटग] १. भूटान देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक प्रकार का वड़ा और मोटा पत्थर जो प्राय. २॥ इच मोटा, ५ फुट लम्वा और १॥ फुट चौडा होता है।
भोटिया—वि० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भूटान देश का।
पु० भोट या भूटान देश का निवासी।
स्त्री० भूटान देश की भाषा।
भोटिया वादाम—पु० [हिं० भोटिया+फा० वादाम] १. आलूवुखारा। २. मूँगफली।
भोटी—वि०[हिं० भोट+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का।
पु० भोट।
भोडर—पु०[देश०] १. अभ्रक। अवरक। २. अवरक का चूरा। वुक्का। ३. एक प्रकार का मुश्क विलाव।
भोडल—पु० दे०'अवरक'।
भोडलय—पु०[स० भू-मडल] नक्षत्र-समूह। (डिं०)
भोडागार—पु०[स० भाडागार] भडार। (डिं०)
भोण—पु०=भवन। (डिं०)
भोत—वि०=वहुत।
भोथार (रा)—वि०—भुथरा।
भोयार—पु०[?] एक प्रकार का घोडा।
भोना—अ० [हिं० भीनना] १. किसी तेल का किसी पदार्थ मे पूरी तरह से व्याप्त या सचारित होना। भीनना। २. किसी काम या वात मे लिप्त या लीन होना। ३. किसी पर अनुरक्त या आसक्त होना। उदा०—नारी चितवत नर रहै भीना—सूर।
सयो० क्रि०—आना। पडना।
४. युक्त होना। मिलना। ५ घोखे मे आना।
स० १ भिगोना। २. लिप्त करना। ३. अनुरक्त करना। ४. मिलाना। ५ धोखे मे डालना।
भोपा—वि०,पु०=भोपा।
भोवरा—पु०[देश०] एक तरह की घास। झेरन।
भोम—स्त्री०[स० भूमि] पृथ्वी। (डिं०)
भोमि—स्त्री०=भूमि
भोमी—स्त्री०[स० भूमि] पृथ्वी। (डिं०)
भोयन—पु०=भोजन।
भोर—पु०[स० विभावरी] प्रात काल। सवेरा। तडका।
पु० [स० भ्रम] घोखा। भ्रम।
†वि०=भोला (सीधा-सादा)।
पु०[देश०] १ एक प्रकार का वडा पक्षी जिसके पर वहुत सुन्दर होते हैं। यह जल तथा हरियाली वहुत पसन्द करता है और खेतो को वहुत अधिक हानि पहुँचाता है। २. एक प्रकार का सदावहार वृक्ष जिसे 'खमो' भी कहते हैं।
भोरा—पु०[देश०] एक तरह की मछली।
†पु०=भोर।
†वि०=भोला (सीधा-सादा)।
पु०[हिं० भूल] धोखा। भुलावा। उदा०—दीन दुखी जो तुमको जाँचत सो दाननि के भोरे।—सत्यनारायण।
वि०१. धोखे या भुलावे मे आया हुआ। २. मोह या भ्रम मे पड़ा हुआ। ३. भूला या खोया हुआ। उदा०—रची विरचि विपय सुख भोरी।—तुलसी।
भोराई—स्त्री०[हिं० भोरा+आई (प्रत्य०)]भोलापन।
स्त्री० [हिं० भोराना+आई (प्रत्य०)] १ धोखा। भुलावा। २ भ्रम।
भोराना*—स० [हिं० भँवर या भ्रम] किसी को धोखे या भ्रम मे डालना। चकमा देना।
†अ० धोखे या भ्रम मे आना या पड़ना।
भोरानाथ*—पु०=भोलानाथ (शिव)।
भोरी—स्त्री०[देश०] पोस्ते के पौधे का एक रोग।
वि० स्त्री०=भोली (भोला का स्त्री०)।
भोरु—पु०=भोर।
भोरे—अव्य० [स० भ्रम या हिं० भूल] भूलकर भी। उदा०—चहत न भरत भूपपद भोरे।—तुलसी।

भौल—पु०[सं० भा+उल्]वैश्य पिता और नटी माता से उत्पन्न संतान।
भौलना—स०[हिं० भुलाना] धोखे में डालना। भुलावा देना। बहकाना।
उदा०—अग्यानी पुरुष को भौलि भौलि खाई।—कबीर।
भौलपन†—पु०=भोलापन।
भोला—वि०[सं० भ्रम; प्रा० भोल]१. (व्यक्ति) जो (क) छल-कपट न जानता हो, (ख) लोक-व्यवहार न जानता हो। सीधा-सादा। सरल। २. (कथन या बात) जो ऊपर से देखने में बहुत ही सरल तथा ठीक प्रतीत होती हो परन्तु प्रस्तुत प्रसग मे अनुपयुक्त या अव्यवहार्य हो। उदा०—आहा! यह परमार्थ कथन है कैसा भोला भाला। —मैथिली-शरण। ३ (व्यक्ति) जो किसी की बात पर सहसा विश्वास कर लेता हो।
भोलानाथ—पु०[हिं० भोला+सं० नाथ] महादेव। शिव।
भोलापन—पु०[हिं० भोला+पन (प्रत्य०)] भोले होने की अवस्था, गुण या भाव। सिधाई।
भोला-भाला—वि० [हिं० भोला+अनु० भाला] निश्छल और निरीह। सरल-हृदय।
भोस—पु०[?] एक प्रकार का केला।
भोसर—वि०[देश०] मूर्ख।
भौं†—स्त्री०=भौंह।
भौंकना—अ०=भूँकना।
भौंगर—पु०[देश०] क्षत्रियों की एक जाति।
वि० मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।
भौंचाल—पु०=भूकप।
भौंडा—वि०=भोंडा (भद्दा)।
स्त्री०=भौंडी।
भौंडी†—स्त्री० [देश०]१. छोटा पहाड। पहाडी। २. टीला।
भौंतुआ—पु०[हिं० भ्रमना=घूमना] काले रग का एक तरह का छोटा कीडा जो जल के ऊपरी तल पर तेजी से दौडता और चक्कर काटता रहता है। २ एक प्रकार का रोग जिसमे बाहुदंड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। ३ तेली का बैल जिसे दिन भर घूमते या चक्कर लगाते रहना पडता है।
वि० बराबर घूमता रहनेवाला या चक्कर लगानेवाला।
भौंना*—अ० [सं० भ्रमण] घूमना।
भौंर—पु० [हिं० भौंर, सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. मुश्की घोडा।
†स्त्री०=भौंरी।
भौंरकली—स्त्री० =भँवरकली।
भौंरा—पु० [सं० भ्रमर, पा० भमर, प्रा० भवर] [स्त्री० भँवरी] १. काले रग का उडनेवाला एक पतगा जो फूलो पर मँडराता और उनका रस चूसता है। इसके छ पैर, दो पर और दो मूँछें होती है। २. बड़ी मधुमक्खी। सारग। डगर। ३ बर्रे। भिड। ४ ज्वार आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा। ५. लट्टू के आकार का एक प्रकार का खिलौना जिसमे कील या छोटी डंडी लगी रहती है। इसी कील मे रस्सी लपेटकर लडके इसे जमीन पर नचाते हैं। ६. हिंडोले की वह लकडी जो मयारीमे लगी रहती है और जिसमे डोरी डंडी बंधी रहती है। ७. गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसके बीच के छेद मे धुरे का सिरा रहता है और जिसमें आगे लगाकर पहिये की पट्टियाँ जड़ी जाती है। नाभि। कूढ़ा। मूँडी। ८. रहट की वह चरखी जो भँवरों को फिराती है। चकरी। (बुंदेल०) ९. पशुओं का एक रोग जिसे 'पेचक' भी कहते है। (बुंदेल०) १० पशुओं की आँतवाली गिल्टी। ११. गड़रियों की भेड़ों की रखवाली करनेवाला कुत्ता। १२ तहखाना। १३. अनाज रखने का गड्ढा। खात। १४ रहस्य सम्प्रदाय में, मन।
†पु०=भाँवर।
भौंराना—स०[सं० भ्रमण]१. परिक्रमा कराना। घुमाना। २. चक्कर या फेरा देना। ३. विवाह के समय भाँवर की क्रिया सम्पन्न कराना। ४. विवाह कराना।
†अ०=भौंरना (घूमना या चक्कर खाना)।
भौंराला*—वि०[हिं० भौंरा] [स्त्री० भौंराली] भौंरे की तरह काले रग का।
वि०[हिं० भँवर] छल्लेदार। घुँघराला। (बाल)
भौंराही—स्त्री०[हिं० भौंराना+आही (प्रत्य०)]१. भौंरे के मँडराने की क्रिया या भाव। २. वह शब्द जो भौंरा मँडराते समय करता है।
भौंरी—स्त्री०[सं० भ्रमर]१. प्राय. पशुओं के शरीर पर होनेवाला रोओं का मण्डलाकार छोटा घेरा जो अनेक आकृतियों आदि के विचार से शुभ या अशुभ माना जाता है। २ दे० 'भाँवर'। ३. दे० 'भँवर'।
स्त्री० =भौंह।
†स्त्री०[देश०] लिट्टी। बाटी।
भौंह—स्त्री० [सं० भ्रू] आँखों के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।
मुहा०—(किसी के सामने) भौंह उठाना=आँख उठाकर देखना। भौंह चढाना या तानना=आँखें तानकर क्रोध या क्षोभ प्रकट करना। त्योरी चढाना। बिगड़ना। (किसी की) भौंह जोहना या ताकना=यह देखते रहना कि कोई अप्रसन्न न होने पावे। भौंह नचाना=बराबर भौंहें हिलाना जो स्त्रियों के हाव-भाव और विशेष चचलता का सूचक है। भौंह मरोड़ना=(क) असंतोष, उपेक्षा, रोष आदि प्रकट करने के लिए अपनी आकृति विकृत करना। नाक-भौंह चढ़ाना। उदा०—सुनि सौतिनि के गुनि की चरचा द्विज जू तिय भौंह मरोरन लागी।—द्विजदेव। (ख) दे० ऊपर 'भौंह चढाना या तानना'।
स्त्री०[अनु०] कुत्तों के भूँकने का शब्द।
भौंहरा—पु०=भुइँहरा।
†पु०=भौंरा।
भौ*—[पु० सं० भव]१. संसार। जगत। दुनियाँ। २. जन्म।
†पु०=भय (डर)।
अ०[हिं० भयना] हुआ। (अवधी)
भौकन—स्त्री० [हिं० भभक] १. आग की लपट। ज्वाला। २. जलन। ताप।
भौका—पु०[देश०] [स्त्री० भौकी] बडी दौरी। टोकरी।
भौगर्भिक—वि० [सं० भूगर्भ+ठक्—इक] भूपटल के अन्दर जन्म लेने-वाला। पृथ्वी के भीतरी भाग मे होनेवाला।
भौगिया—वि० =भोगी।

भौगोलिक—वि०[स० भूगोल+ठक्—इक] भूगोल-सबधी। भूगोल का। (जियाग्रैफिकल)

भौगोलिकी—स्त्री० [स० भौगोलिक+ङीप्] वह पुस्तक जिसमे किसी देश, महादेश अथवा सारी पृथ्वी के भौगोलिक नामो और नगरो, नदियो पहाड़ो आदि के सबध की सब बाते रहती है। (गजेटियर)

भौंचक—वि०[सं० भय+चकित] १ सहसा भयपूर्ण स्थिति उत्पन्न होने पर जो घबरा गया हो और फलत कुछ करने-धरने में असमर्थ-सा हो गया हो। २ चकित। हैरान।

भौचक्का—वि०=भौचक।

भौचाल—पु०=भूकप।

भौजा†—स्त्री०=भावज (भौजाई)।

भौ-जल*—पु०=भवजाल।

भौजाई—स्त्री० [स० भ्रातृजाया] भाई के विचार से विशेषत बडे भाई की स्त्री। भाभी।

भौजी†—स्त्री०=भौजाई।

भौट—पु०[स० भोट+अण्] भोट या भूटान देश का निवासी।

भौठा—पु०=भीठा।

भौण†—पु०=भवन (घर)।

भौत—वि० [स० भूत+अण्]१ भूत-सबधी। २ भूत-निर्मित। भौतिक। ३ भूत-प्रेत सबधी। पैशाचिक। ४ भूताविष्ट।

पु० १. मन्दिर। २ पुजारी। ३ वह जो भूत-प्रेतो की पूजा करता हो। ४ भूतो का दल या वर्ग। ५ भूत-यज्ञ।

†वि०=बहुत।

भौतारन—वि०=भव-तारण (परमेश्वर)।

भौतिक—वि०[स० भूत+ठक्—इक]१ पचभूतो से सबध रखनेवाला। २. पचभूतो से बना हुआ। ३ इस जगत से सबध रखनेवाला। लौकिक। सासारिक। ४ पार्थिव। शरीर सबधी। शारीरिक। (मैटीरियल) ५ भूत योनि से सबध रखनेवाला। ६ प्राकृतिक नियमो, सिद्धान्तो, रूपो आदि से सबध रखनेवाला। (फिजिकल) जैसे—भौतिक विज्ञान।

पु०१ महादेव। शिव। २ उपद्रव। ३. आधि, व्याधि, कष्ट और रोग। ४. आँख, कान आदि शरीर की इद्रियाँ।

भौतिक चिकित्सा—स्त्री०[स०] आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि शरीर की उखडी या टूटी हुई हड्डियाँ बैठाने या जोडने के उपरात किस प्रकार मालिश, व्यायाम सेक आदि के द्वारा उन्हे ठीक तरह से काम करने के योग्य बनाया जाता है। (फिजियोथैरेपी)

भौतिक भूगोल—पु०[स० कर्म० स०] भूगोल की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी के किस अश की प्राकृतिक बनावट कैसी है और उसमे कैसे कैसे उत्पादन होते है। (फिजिकल जियाग्रैफी, फिजियोग्रैफी)

भौतिकवाद—पु०[स० ष० त० ?]१ वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार पचभूतो से बना हुआ यह ससार ही वास्तविक और सत्य माना जाता है। (मिटीरियलिज्म) २. दे० 'यथार्थवाद'।

भौतिकवादी—वि०[स०] भौतिकवाद का।

पु० जो भौतिकवाद का अनुयायी या पोषक हो।

भौतिक विज्ञान—पु०[स० कर्म० स०] वह शास्त्र जिसमे भूतो तथा तत्त्वों का विवेचन हो। २ वह विज्ञान जिसमे अजैव सृष्टि विशेषत. ताप, प्रकाश, ध्वनि आदि पदार्थों का वैज्ञानिक विवेचन करते हैं। (फीजिक्स)

भौतिक विद्या—स्त्री०[स० कर्म० स०]१. भूत-प्रेत से सबध स्थापित करने, उन्हे बुलाने और दूर करने की विद्या। २ दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौतिक सृष्टि—स्त्री०[स० कर्म० स०] पुराणानुसार दैव, मनुष्य और तिर्यक् योनियो का समाहार।

भौतिकी—स्त्री० दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौती—स्त्री०[स० भूत+अण्, वृद्धि,+ङीप्] रात। रात्रि। रजनी।

स्त्री०[हिं० भँवना=घूमना] एक बालिश्त लम्बी और पतली लकडी जिसकी सहायता से ताने का चरखा घुमाते हैं। भेडती। (जुलाहा)

भौत्य—पु०[स० भूति+ष्यञ्] चौदहवे मनु जो भूतिमुनि के पुत्र थे। (पुराण)

भौन*—पु०=भवन।

भौना*—अ० [स० भ्रमण]१. चक्कर लगाना। घूमना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भौपाल—पु०[स० भूपाल+अण्, वृद्धि] राजकुमार।

भौम—वि० [स० भूमि+अण्] १. भूमि-सबधी। भूमि का। २ भूमि से उत्पन्न होनेवाला। भूमिज। ३ भूमि पर रहने या होनेवाला।

पु० १ मगल ग्रह। २ अबर नामक गध द्रव्य। ३ लाल पुनर्नवा। ४ योग मे एक प्रकार का आसन। ५ वह केतु या पुच्छल तारा जो दिव्य और अतरिक्ष के परे हो।

भौमदेव—पु०[स०] एक प्राचीन लिपि।

भौम-रत्न—पु०[स० कर्म० स०] मूँगा।

भौमवती—स्त्री० [स० भौम+मतुप्+ङीप्] भौमासुर की स्त्री का नाम।

भौम-वार—पु०[स० ष० त०] मगलवार।

भौमासुर—पु०[स० कर्म० स०] नरकासुर का एक नाम।

भौमिक—पु० [स० भूमि+ठक्—इक] भूमि का अधिकारी या स्वामी। जमीदार।

वि०=भौम।

भौमिकी—स्त्री०[स० भौमिक से] १=भूगोल। २=भू-विज्ञान।

भौमिकीय—वि०[स०] १ भूमिका-सबधी। भूमिका का। २ भूमिका के रूप मे होनेवाला।

वि०=भौमिक।

भौमी—स्त्री०[स० भौम+ङीप्] पृथ्वी की कन्या, सीता।

भौम्य—वि०[सं० भूमि+ष्यञ्] १ भूमि-सबधी। २ पृथ्वी पर होनेवाला।

भौर*—पु०[स० भ्रमर]१ घोडे का एक भेद। २ भँवर। ३ भौरा।

भौरिक—पु० [स० भूरि+ठक्—इक] १ राजकीय कोष का प्रधान अधिकारी। २. कोषाध्यक्ष।

भौरिकी—स्त्री०[स० भौरिक+ङीप्]१ कोषागार। २ टकसाल।

भौलिया—स्त्री०[स० बहुला]एक प्रकार की छोटी नाव जो ऊपर से ढकी रहती है।

भौसा—पु०[देश०]१. भीड़-भाड़। जन-समूह। २.हो-हुल्लड़। शोर-गुल। बहुत अधिक कुव्यवस्था।
भौसागर—पु०=भव-सागर।
भ्रंगारी—पु०[स० भृगार] झींगुर। (डि०)
भ्रंगी—पु०[स० भृंगी] गुंजार करनेवाला एक प्रकार का फतिंगा।
स्त्री०=भृग का स्त्री०।
भ्रंश—पु०[स० √भ्रश् (नीचे गिरना)+घञ्] अध पतन। १ नीचे गिरना। २. ध्वस। नाश। ३ तोड़ना-फोड़ना।
वि०=भ्रष्ट।
भ्रंश(स)न—पु०[स० √भ्रश्+ल्युट्—अन] १. नीचे गिरना। पतन। २. भ्रष्ट होना।
वि० नीचे गिरानेवाला।
भ्रंशी(शिन्)— वि०[स० भ्रश+इनि] १ भ्रष्ट होनेवाला। २ नष्ट करनेवाला। ३ छीजनेवाला।
भ्रशोद्धार—पु०[स० भ्रश-उद्धार, प० त०]समुद्र मे डूबी हुई या आग मे जलती हुई चीज को बचाने के लिए बाहर निकालना या उसका उद्धार करना। (सैल्वेज)
भ्रकुश—पु० [स० भ्रू-कुश, ब० स०, पृषो० सिद्धि] स्त्री का वेश धारण करके नाचनेवाला व्यक्ति।
भ्रकुटि—स्त्री० [स० भ्रू-कुटि, ष० त०, अत्व] १.क्रोध के मारे भौंह का सिकुड़ना। २ भौह।
भ्रत्†—पु० [स० भृत्य] दास। सेवक।
भ्रत्त†—पु०=भृत्य।
भ्रद्र—पु०[स० भद्र] हाथी। (डि०)
भ्रम—पु०[स० √भ्रम्(भ्रांत होना)+घञ्]१. भ्रमण करने की अवस्था या भाव। २. चारों ओर घूमना। ३ वह अवस्था जिसमे दृष्टिकोण अथवा पुरानी या बंधी हुई धारणा के कारण किसी चीज को कुछ का कुछ समझ लिया जाता है। ४ सदेह। सशय। ५ एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी का शरीर चलने के समय चक्कर खाता है और प्राय. जमीन पर पड़ा रहता है। यह रोग मुर्च्छा के अन्तर्गत माना जाता है। ६. बेहोशी। मूर्छा। ७ नाबदान। पनाला। ८ कुम्हार का चाक।
वि०१ चक्कर काटने या घूमनेवाला। २. चलने या भ्रमण करनेवाला।
पु०[स० सम्भ्रम] प्रतिष्ठा। मान।
भ्रमकारी(रिन्)—वि०[स० भ्रम√कृ (करना)+णिनि, उप० स०] जिससे भ्रम उत्पन्न होता है अथवा जो भ्रम उत्पन्न करता हो।
भ्रमजाल—पु०[स० ष० त०] सासारिक मोह का पाश।
भ्रमण—पु० [स०√भ्रम् (घूमना)+ल्युट्—अन] १ घूमना-फिरना। विचरण। २. आना-जाना। ३. देश-विदेश मे जाना। देशाटन। ३ यात्रा। सफर।
भ्रमणकारी(रिन्)—वि०[स० भ्रमण√कृ (करना)+णिनि] भ्रमण करनेवाला।
भ्रमणी—स्त्री०[स० भ्रमण+टीप्] सैर या मनोविनोद के लिए चलना। घूमना-फिरना। २. जोंक नाम का कीड़ा।
भ्रमणीय—वि० [स०√भ्रम्+अनीयर्] १ घूमनेवाला। २. चलने-फिरनेवाला।
भ्रमरकुटी—स्त्री०[सं० कर्म० स०] मक्खियों आदि का बना हुआ बड़ा छाता।
भ्रमद—वि०[स० भ्रम√दा (देना)+क] [स्त्री० भ्रमदा] भ्रम उत्पन्न करनेवाला। उदा०—हलगामिनी कवित भ्रमदा वस्तुनि को भावै।—रत्नाकर।
भ्रमन—पु०=भ्रमण।
भ्रमना—अ०[स० भ्रमण] १. घूमना-फिरना। २. चक्कर खाना।
अ०[स० भ्रम] १. भ्रम या धोखे मे पड़ना। २. भूलकर इधर-उधर भटकना।
भ्रमनि*—स्त्री०=भ्रमण।
भ्रम-मूलक—वि०[स० ब० स०, कप्] जिसके मूल मे भ्रम हो। भ्रम के कारण उत्पन्न।
भ्रमर—पु०[स०√भ्रम् (घूमना)+अरन्] १. भौंरा नाम का फतिंगा। २. उद्धव का एक नाम। ३ दोहे का पहला भेद जिसमे २२ गुरु और ४ लघु वर्ण होते हैं। ४. छप्पय का तिरनठवाँ भेद जिसमे ८ गुरु, १३६ लघु, १४४ वर्ण या कुल और १५२ मात्राएँ होती है। ५ साहित्य मे चचल मन वाला वह नायक जो अनेक नायिकाओं से अनुराग अथवा सबध रखता हो। ६ सत समाज मे चचल मन जो अनेक प्रकार की विषय-वासनाओं का रस लेता रहता है।
वि० कामुक। लम्पट।
भ्रमरक—पु०[स० भ्रमर+कन्] १. माथे पर लटकनेवाले बाल। जुल्फ। २. भ्रमर। भँवर। ३. खेलने का गेंद।
भ्रमर-करंडक—पु०[ष० त०] प्राचीन भारत मे मधुमक्खियों की वह पिटारी जिसे चोर साथ रखते थे और कहीं की रोशनी बुझाने के लिए खोल देते हैं।
भ्रमर-कीट—पु०[उपमि० स०] एक प्रकार की बर्रे।
भ्रमर-गीत—पु० [मध्य० स०] वह गीत जिसमे उद्धव और गोपियों का सवाद हो।
भ्रमर-गुफा—स्त्री० [स०] हठ योग मे ब्रह्मरंध्र।
भ्रमरछली—स्त्री०[स० भ्रमर√छद् (धोखा देना)+अच्+ङीप्] एक प्रकार का बहुत बड़ा जगली वृक्ष जिसके पत्ते बादाम के पत्तों के समान होते है और जिसमे बहुत पतली-पतली फलियाँ लगती हैं।
भ्रमर-ध्वनि—पु० [स० ष० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
भ्रमरपद—पु०[ष० त०] एक प्रकार का वृत्त।
भ्रमरप्रिय—पु० [ष० त०] एक प्रकार का कदंब।
भ्रमरमुखी—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
भ्रमर सारग—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
भ्रमर-हसी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
भ्रमर-हस्त—पु०[स० मध्य० स०] नाटक के चौदह प्रकार के हस्त-विन्यासों मे से एक प्रकार का हस्त-विन्यास।
भ्रमर-हासिनी—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
भ्रमरा—स्त्री०[स० भ्रमर+टाप्] भ्रमरछली नामक पौधा।
भ्रमरातिथि—पु०[सं० भ्रमर-अतिथि, ब० स०] चपा का वृक्ष।
भ्रमरानद—वि०[स० भ्रमर-आनंद, ब० स०] बकुल वृक्ष।

भ्रमरावली—स्त्री०[सं० भ्रमर-आवली, ष० त०] १. भौंरो की पंक्ति या श्रेणी। २. छद शास्त्र मे नलिनी या मनहरण नाम का वृत्त।

भ्रमरी—स्त्री०[स०भ्रमर+ङीप्] १ भ्रमर की स्त्री। भौंरे की मादा। २. पार्वती। ३. मिरगी नामक रोग। ४. जतुका नाम की लता। पटपदी।

भ्रमरेष्ट—पु०[स० भ्रमर-इष्ट, ष० त०] एक प्रकार का श्योनाक।

भ्रमरेष्टा—स्त्री०[स०भ्रमर-इष्टा, ष०त०] १ भुंई जामुन। २ नारगी।

भ्रमवात—पु०[स० मध्य स०] आकाश का वह वायु-मंडल जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक—वि०[स०भ्रम-आत्मन्, ब०स०,+कप्] जिससे अथवा जिसके सबध मे भ्रम उत्पन्न होता हो। भ्रम से युक्त। सदिग्ध।

भ्रमाना—स०[हिं० भ्रमना का स०] १. घुमाना-फिराना। २. चक्कर देना। ३ भ्रम या धोखे मे डालना।

भ्रमासक्त—पुं०[स० भ्रम-आसक्त, स० त०] वह जो अस्त्र-शस्त्र आदि साफ करने का काम करता हो।

भ्रमि—स्त्री०[स० भ्रम+इ]=भ्रमी।

भ्रमित—भू० कृ०[स० भ्रम+इतच्] १. जिसे भ्रम हुआ हो। शंकित। २. जिसे भ्रम मे डाला गया हो। ३ घूमता या चक्कर खाता हुआ। ४ जो घुमाया या चक्कर मे डाला गया हो।

भ्रमित-नेत्र—वि०[स० ब० स०] ऐंचा-ताना।

भ्रमी—स्त्री०[स० भ्रमि+ङीप्] १. घूमना-फिरना। भ्रमण। २ चक्कर खाना या लगाना। ३. तेज बहते हुए पानी का भँवर। ४. कुम्हार का चाक। ५. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिक मंडल बाँधकर खड़े होते हैं।

वि० १. भ्रम मे पडा हुआ। २ भौचक।

भ्रमीन*—वि०=भ्रमी।

भ्रष्ट—भू० कृ०[स०√भ्रश्+क्त] १ ऊँचाई या ऊपर से नीचे गिरा हुआ। २. गिरने के कारण जो टूट-फूट गया हो। ३. ध्वस्त। ४. जो अपने मार्ग से इधर-उधर हो गया हो। ५ कुछ भी काम न दे सकनेवाला। ६ आचार, धर्म, नीति आदि की दृष्टि से दूषित और निंदनीय। बुरे आचार-विचार वाला। (कोरप्ट) ७ किसी चीज या बात से वचित।

भ्रष्ट-क्रिय—वि०[ब० स०] जो विहित कर्म न करता हो।

भ्रष्ट-निद्र—वि०[ब०स०] जिसे निद्रा न आती हो।

भ्रष्ट-श्री—वि०[ब० स०] श्री से रहित।

भ्रष्टा—स्त्री० [स० भ्रष्ट+टाप्] भ्रष्ट चरित्र वाली स्त्री। कुलटा। पुश्चली।

भ्रष्टाचरण—पु०[भ्रष्ट-आचरण, कर्म० स०] भ्रष्टाचार करना।

भ्रष्टाचार—वि०[सं० भ्रष्ट-आचार, कर्म० स०] जिसका आचार विगड गया हो।

पु० १. दूषित और निन्दनीय आचार-विचार। २ आज-कल वह बहुत विगडी हुई स्थिति जिसमे अधिकारी तथा कर्मचारी विहित कर्तव्यो का पालन निष्ठापूर्वक, भली-भाँति और समय पर नही करते वल्कि मनमाने ढग से, विलब से, तथा अनुचित रूप से करते हैं। (कोरप्शन)

भ्रसुंड—पु०=भुशुड।

भ्रांत—वि० [स०√भ्रम्(घूमना)+क्त] १. जिसे भ्रान्ति या भ्रम हुआ हो। धोखे मे डाला या पडा हुआ। २. घबराया हुआ। विकल। ३ उन्मत्त। ४ घुमाया या चक्कर मे लाया हुआ।

पुं० १. घूमना-फिरना। भ्रमण। २ तलवार चलाने का एक ढंग या हाथ जिसमे उसे चारों ओर घुमाते हुए शत्रु के वार विफल किये जाते हैं। ३ मस्त हाथी। ४. राज-धतूरा।

भ्रांतापह्नुति—स्त्री० [सं० भ्रात-अपह्नुति, कर्म० स०] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमे किसी एक बात या वस्तु मे दूसरी बात या वस्तु की भ्राति होने पर वास्तविक बात बतलाकर वह भ्रम दूर करने का उल्लेख होता है।

भ्राति—स्त्री०[सं०√भ्रम्+क्तिन्] १ चारो ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। २ चक्कर। फेरा। ३. वह मानसिक स्थिति जिसमे किसी चीज को ठीक तरह से पहचान या समझ न सकने के कारण कुछ और ही मान लिया जाता है। धोखा। ४. सन्देह। शक। ५ उन्माद। पागलपन। ६ सिर मे चक्कर आने का रोग। घुमेर। ७ भूल-चूक। ८. प्रमाद। ९ मोह। १० साहित्य मे एक प्रकार का काव्यालकार जिसमे किसी चीज या बात को धोखे से कुछ और मान या समझ लेने का उल्लेख होता है। जैसे—चद्रमुखी नायिका को देख कर यह कहना—अरे यह चन्द्रमा कहाँ से निकल आया।

भ्रातिमान(मत्)—वि० [स० भ्राति+मतुप्] १. जिसे भ्राति या धोखा हुआ हो। २. चक्कर खाता हुआ।

पु० साहित्य मे एक प्रकार का काव्यालकार जिसमे भ्रम से उपमेय को उपमान समझ लेने का उल्लेख होता है।

भ्रात्यापह्नुति—स्त्री०=भ्रातापह्नुति।

भ्राजक—पु० [स० √भ्राज् (चमकना)+ण्वुल्—अक] त्वचा मे रहनेवाला पित्त। (वैद्यक)

वि० चमकानेवाला।

भ्राजना—अ० [स० भ्राजन=दीपन] १ चमकना। २ सुशोभित होना।

स० १ चमकाना। २ सुशोभित करना।

भ्राजमान—वि० [स०√भ्राज्+शानच्, मक्-आगम] शोभायमान।

भ्राजिर—पु० [स०] भौत्य मन्वतर के देवता। (पुराण)

भ्राजिष्णु—वि० [स० भ्राज्+इष्णुच्] चमकनेवाला।

पु०१ विष्णु। २ शिव।

भ्राजी (जिन्)—वि० [स० भ्राज्+इनि,] चमकनेवाला। दीप्तियुक्त।

भ्रात *—पु०=भ्राता।

भ्राता (तृ)—पु०[स०√भ्राज्+तृन्, नि० सिद्धि] सगा भाई। सहोदर।

भ्रातृक—पु० [स०भ्रातृ+ठञ्—क] धन सम्पत्ति जो भाई से मिली हो।

भ्रातृज—पु०[सं० भ्रातृ√जन् (उत्पत्ति)+ज] [स्त्री० भ्रातृजा] भाई का लड़का। भतीजा।

भ्रातृ-जाया—स्त्री० [स० ष० त०] भाई की स्त्री। भौजाई। भाभी।

भ्रातृत्व—पु० [सं० भ्रातृ+त्व] भाई होने की अवस्था, धर्म या भाव। भाईपन।

भ्रातृ-द्वितीया—स्त्री० [स० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ल द्वितीया। इसी दिन बहन अपने भाइयो को राखी बाँधती है।

भ्रातृ-पुत्र—पु० [स० ष० त०] भतीजा।

भ्रातृ-भांड—पु० [सं० ष० त०] यमज भाई। जुड़वां बच्चे।

भ्रातृ-भाव—पुं० [सं० ष० त०] भाई या भाइयों का सा व्यवहार और संबंध। २ भाइयों में होनेवाला परस्पर प्रेम।

भ्रातृ-वधू—स्त्री० [सं० ष० त०] भौजाई। भाभी। भावज।

भ्रातृव्य—पुं० [सं० भ्रातृ+व्यत्] भाई का लड़का। भतीजा।

भ्रातृश्वसुर—पुं० [सं० उपमि० स०] पति का बड़ा भाई। जेठ। ससुर।

भ्रात्र—पुं० [सं० भ्रातृ+अण्] भाई।

भ्रात्रीय—वि० [सं० भ्रातृ+छ—ईय] भ्राता-संबंधी। भाई का।
 पुं० भाई का लड़का। भतीजा।

भ्राम—वि० [सं०√भ्रम् (संदेह)+ण] १ भ्रम-युक्त। २ घूमनेवाला।
 पुं० १. धोखा। भ्रम। २ भूल-चूक।

भ्रामक—वि० [सं०√भ्रम् (संदेह)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. भ्रम या धोखे में डालनेवाला। मन में भ्रम उत्पन्न करनेवाला। २ सन्देह उत्पन्न करनेवाला। ३ घुमाने या चक्कर देनेवाला। ४. चालबाज। धूर्त। मक्कार।
 पुं० १ कानिसार लोहा। २ चुम्बक पत्थर। ३. गीदड। सियार।

भ्रामर—वि० [सं० भ्रमर+अञ्] १. भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का। २. भ्रमर से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।
 पुं० १ भ्रमर से उत्पन्न होनेवाला मधु या शहद। २ चुम्बक पत्थर। ३ अपस्मार या मिरगी नामक रोग। ४ दोहे का दूसरा भेद जिसमें २१ गुरु और ६ लघु मात्राएँ होती हैं। उदा०—माधो मेरे ही बसो राखो मेरी लाज। कामी क्रोधी लंपटी जानि न छाँड़ो काज। ५ ऐसा नाच जिसमें बहुत से लोग फेरा या मंडल बाँधकर गोलाकार नाचते हों।

भ्रामरी(रिन्)—वि० [सं० भ्रामर+इनि] जिसे भ्रामर या अपस्मार रोग हुआ हो।
 स्त्री० [भ्रामर+ङीप्] १. पार्वती। २. पुत्रदात्री नाम की लता।

भ्रामित—भू० कृ० [सं० √भ्रम्+णिच्+क्त, इट्] घुमाया या इधर-उधर चक्कर खिलाया हुआ।

भ्राष्ट्र—पुं० [सं०√भ्रस्ज्+ष्ट्रन्] १. आकाश। २ वह बरतन जिसमें अनाज रखकर भड़भूँजे भूनते हैं।

भ्रिंग†—पुं०=भृंग।

भ्रिंगी—स्त्री०, पुं०=भृंगी।

भ्रू-कुंस—पुं० [सं० भ्रू-कुंस, ब० स०, हवस्ता] स्त्रियों के वेष में नाचनेवाला नट।

भ्रुकुटि—स्त्री०=भृकुटी।

भ्रू—स्त्री० [सं०√भ्रम्+डू] आँखों के ऊपर के बाल। भौं। भौंह।

भ्रू-क्षेप—पुं० [सं० ष० त०] भौंहें टेढ़ी करना।

भ्रूण—पुं० [सं०√भ्रूण् (आशा करना)+घञ्] १. स्त्री का गर्भ। २. प्राणी के माता के गर्भ मे पहले चार महीने तक रहने की अवस्था। (एम्ब्रीयो) ३. जीव का गर्भ या अंडे मे स्थित होने की अवस्था मे प्राप्त होनेवाला रूप। (फीटस)

भ्रूणघ्न—पुं० [सं० भ्रूण√हन् (मारना)+क] भ्रूण-हत्या करनेवाला। वह जो गर्भ में स्थित बालक को मार डालता हो।

भ्रूण विज्ञान—पुं० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भ्रूण किस प्रकार बनता और विकसित होता है। (ऐंब्रीयोलोजी)

भ्रूण-हत्या—स्त्री० [सं० ष० त०] गर्भ मे आये हुए बालक की की जानेवाली हत्या जो बहुत बड़ा अपराध हो।

भ्रूणहा (हन्)—पुं० [सं० भ्रूण√हन्+क्विप्] वह जिसमे भ्रूण हत्या की हो।

भ्रूणाग्र—पुं० [सं० भ्रूण-अग्र, ष० त०] भ्रूण का अगला भाग।

भ्रू-प्रकाश—पुं० [ष० त०] एक प्रकार का काला रंग जिससे शृंगार आदि के लिए भौंहे बनाते हैं।

भ्रू-भंग—पुं० [ष० त०] क्रोध आदि प्रकट करने के लिए भौंहे चढ़ाना। त्योरी चढ़ाना।

भ्रू-भेद—पुं० [ष० त०] क्रोध आदि से होकर भौंहें टेढ़ी करना।

भ्रू-मध्य—पुं० [ष० त०] दोनो भौंहों के बीच का स्थान।

भ्रू-लता—स्त्री० [कर्म० स०] मेहराबदार भौंह।

भ्रू-विक्षेप—पुं० [ष० त०] त्योरी बदलना। नाराजगी दिखाना। भ्रू-भंग।

भ्रू-विलास—पुं० [ष० त०] १. भौंहो की कोई विशेष भावभंगी। २ भौंहो का संचालन करके प्रकट किया जानेवाला कोई मोहक भाव।

भ्रूह—स्त्री०=भ्रू।

भ्रेष—पुं० [सं०√भ्रेष् (गिरना)+घञ्] १. नाश। २ गमन। चलना।

भ्रौण-हत्या—स्त्री० [कर्म० स०] =भ्रूण-हत्या।

भ्रौणिकी—स्त्री०=भ्रूण विज्ञान।

भ्वहरना*—अ० [हिं० भय+हरना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

भ्वासर†—वि० [?] बेवकूफ। मूर्ख।

म

म—नागरी वर्णमाला का पचीसवाँ और पवर्ग का पचम वर्ण जो भाषा-विज्ञान तथा उच्चारण की दृष्टि से ओष्ठ्य, अल्पप्राण, घोष, स्पर्श तथा अनुनासिक व्यंजन हैं।
 पुं० १. शिव। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ चंद्रमा। ५. यम। ६ समय। ७ विष। ८ संगीत में 'मध्यम स्वर' का संक्षिप्त रूप। ९ पिंगल-शास्त्र में 'मगण' का संक्षिप्त रूप।
 अव्य० [सं० मा] नहीं। उदा०—(क) मूल म हारो म्हारा भाई। —गोरखनाथ। (ख) हर म करो प्रति रायहर। —प्रिथीराज।

मं*—सर्व०=मैं। उदा०—मैं ही सकल अनरथ कर मूला। —तुलसी।

मंकलक—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक दक्ष का नाम। (महाभारत)

मंकुर—पुं० [सं०√मक् (भूषित करना)+उरच्] दर्पण।

मंक्षण—पुं० [सं० √मस्क् (गति)+ल्युट्—अन, पृषो० स—क्ष्] प्राचीन काल में युद्ध के समय जाँघ पर बाँधा जानेवाला एक तरह का कवच। उरुत्राण।

मंक्षु—अव्य० [स०√मस्+उन्, पृषो० स्—क्ष्] १ चट-पट। तुरंत। शीघ्रता से। २. यथार्थ मे। वस्तुत ।

मख—पु० [म०√मख्+अच्] १ चारण। भाट। ३ सस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध कोशकार।

मंखी—स्त्री० [देश०] बच्चो के गले का एक गहना।

मंग—पु० [स० √मग्+अच्] नाव का अगला भाग। गलही।
†स्त्री०=माँग (सीमन्त)।
†पु०[देश०] आठ की सख्या। (दलाल)
वि० आठ। (दलाल)

मंगता—पु० [हिं० माँगना+ता (प्रत्य०)] भिखमगा। भिक्षुक।
वि० जो प्राय किसी न किसी से कुछ माँगता रहता हो।

मंगन|—पुं०=मंगता।

मंगना|—पु०=मगता।
|स०=माँगना।

मँगनी—स्त्री० [हिं० माँगना+ई (प्रत्य०)] १ माँगने की क्रिया या भाव।
पद—मंगनी का=(पदार्थ) जो किसी अवसर पर काम चलाने के लिए माँग कर किसी से लिया गया हो और फिर लौटाया जाने को हो।
२ उक्त के आधार पर मँगनी की चीज। ३ वह रस्म जिसमे वर और कन्या का विवाह निश्चित या पक्का किया जाय। (पश्चिम)

मगल—वि० [स०√मग् (गति)+अलच्] १ सुख-सौभाग्य आदि देनेवाला। २. हर तरह से भला। शुभ।
पु० १. कोई ऐसा काम या बात जो हर तरह से अभीष्ट और शुभ हो तथा सुख-सौभाग्य देनेवाली हो। २. कल्याण। भलाई। हित। जैसे—इससे सबका मगल होगा। ३ हमारे सौर जगत का एक ग्रह जिसका व्यास ४२०० मील, सूर्य से दूरी १४१०००००० मील और जमीन से दूरी ३५००००००। यह सूर्य की परिक्रमा ६८७ दिनो मे करता है। (मार्स) ४ उक्त ग्रह के नाम पर सात वारो मे से एक वार जो सोमवार और बुधवार के बीच मे पडता है। ५ विष्णु। ६ कोई शुभ अवसर, पदार्थ या लक्षण। ७ विवाह। जैसे—पार्वती-मगल।
मुहा०—मंगल गाना=(क) विवाह अथवा ऐसे ही दूसरे शुभ अवसरो पर मागलिक गीत गाना। आनद के गीत गाना। (ख) विफल होकर चुपचाप बैठना। (व्यग्य) जैसे—अगर हमारी बात नही मानते हो तो बैठकर मगल गाओ।
८ अग्नि का एक नाम। ९ आज-कल सफेद रग की एक कठोर धातु जिसका उपयोग शीशे के समान बनाने मे होता है। (मैंगनीज़)

मंगलकरी—स्त्री० [स० मगल√कृ (करना)+ट+ङीप्] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मंकल-कलश—पु०=मगल-घट।

मंगल-काम—वि० [स० मगल√काम्+णिङ्+अच्] मगल चाहनेवाला। शुभ-चिंतक।

मंगलकारक—वि० [स० प० त०] मगल अर्थात् भलाई या हित करनेवाला।

मंगलकारी(रिन्)—वि० [स० मगल√कृ+णिनि, उप० स०]=मगलकारक।

मंगल-क्षौम—पु० [मध्य० स०] किसी मागलिक अवसर पर पहन वाला वस्त्र विशेषत. रेशमी वस्त्र।

मंगल-गान—पुं० [प० त०] विवाह आदि मगल अवसरो पर गा वाले गीत।

मगल-गीत—पु० [प० त०]=मगल-गान।

मंगल-गौरी—स्त्री० [कर्म० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति रागिनी।

मगल-घट—पु० [मध्य० स०] मगल अवसरो पर पूजा के लिए अ ही रखा जानेवाला जल से भरा हुआ घडा।

मगल-चडिका—स्त्री० [कर्म० स०] दुर्गा का एक नाम।

मंगल-चंडी—स्त्री० [कर्म० स०] एक देवी।

मंगलच्छाय—पु० [ब० स०] वड का पेड।

मगल-तूर्य—पु० [मध्य०स०] शुभ अवसर पर बजाया जानेवाला

मंगलना—स० [स० मगल=शुभ] किसी शुभ अवसर पर अग्नि जलाना। प्रज्वलित करना। (मगल-भाषित) जैसे—दीया म होली मगलना। उदा० दे० 'मँगारना' मे।
अ० प्रज्वलित होना। जलना।

मंगल-पाठ—पु० [प० त०] मगलाचरण।

मंगल-पाठक—पु० [प० त०] वह जो राजाओ की स्तुति आदि कर बदीजन। भाट।

मंगल-प्रद—वि० [स० मगल+प्र√दा (देना) +क] मगलकारक

मंगल-प्रदा—स्त्री० [स० मगलप्रद+टाप्] १ हलदी। २ शर्मी

मंगल-भाषण—पु० [प० त०] किसी अप्रिय अथवा अशुभ बात तथा शुभ रूप मे कहने का प्रकार।

मंगल-भेरी—स्त्री० [मध्य० स०] मागलिक अवसरो, उत्सवो अ समय पर बजाया जानेवाला ढोल।

मंगलमय—वि० [स० मगल+मयट्] जिससे सब प्रकार का मग होता हो।
पु० परमेश्वर।

मंगल-यात्रा—स्त्री० [च० त०] १. मागलिक कार्य के लिए हो यात्रा। २ आनद-मगल या मन-बहलाव के लिए कही जा

मगल-वाद—पु० [प० त०] आशीर्वाद। आशीष।

मंगल-वाद्य—पु० [मध्य० स०] मागलिक अवसरों पर बजाये जा बाजे।

मगल-वार—पु० [प० त०] सप्ताह का तीसरा दिन। सोमवार औ बार के बीच का दिन। भौमवार।

मंगल-सूत्र—पु० [मध्य० स०] कलाई पर बाँधा जानेवाला डो तागा।

मगल-स्नान—पु० [मध्य० स०] किसी मागलिक अवसर पर जानेवाला स्नान।

मंगला—स्त्री० [स० मंगल+अच्+टाप्] १ पार्वती। २ प स्त्री। ३. तुलसी। ४. दूब। ५ एक प्रकार का करंज।

मंगलागुरु—पु० [स० मंगल-अगुरु, कर्म० स०] एक तरह का (गन्ध द्रव्य)।

मगलाचरण—पु० [स० मगल-आचरण, प० त०] १. किसी मा

श्रीगणेश करने से पहले पढा जानेवाला कोई मागलिक मत्र, श्लोक या पद्यमय रचना। २. ग्रथ के आरंभ मे मंगल की कामना तथा उसकी सफल समाप्ति के निमित्त लिखा जानेवाला पद्य।

मंगलाचार—पु०[मंगल-आचार, प० त०] १. मगल कृत्य के पहले होनेवाला मंगल-गान या ऐसा ही और कोई कार्य। २. मंगलाचरण।

मंगला-मुखी—स्त्री० [हिं०] वेश्या। रडी। (परिहास)

मंगलाय—पु० [दलाली मंग=आठ+आय (प्राप्त०)] अठारह की संख्या। (दलाल)

मंगलारंभ—पु०[स० मगल-आरभ, प०त०] मागलिक कार्य का आरंभ। श्रीगणेश।

मंगलालय—पु० [सं० मगल-आलय, प० त०] परमेश्वर।

मंगला-व्रत—पु० [स० प० त०] १ शिव। २ पार्वती को प्रसन्न करने के उद्देश्य से रखा जानेवाला व्रत।

मंगलाष्टक—पु० [सं०मगल-अष्टक, प० त०] वे मत्र जिनका पाठ विवाह के समय वर-वधू के कल्याण की कामना से किया जाता है।

मंगलाह्निक—पु० [स० मगल-आह्निक, मध्य० स०] कल्याण के लिए प्रति दिन किया जानेवाला कोई मंगल कृत्य।

मंगली(लिन्)—वि० [सं० मगल+इनि] १ (व्यक्ति) जिसकी जन्म कुडली के पहले, चौथे, आठवे या बारहवें घर मे मगल ग्रह पड़ा हो। विशेष—कहते हैं कि ऐसा वर जल्दी ही विधुर हो जाता है, और ऐसी कन्या जल्दी ही विधवा हो जाती है।

२. (कुडली) जिसके चौथे आठवे या बारहवे घर मे मगल बैठा हो।

मगलीय—वि० [स० मगल+छ-ईय] १ मगलकारक। २. भाग्यवान्।

मंगलोत्सव—पु० [स० मगल-उत्सव, मध्य० स०] मागलिक अवसरो पर होनेवाला उत्सव।

मंगल्य—वि० [सं० मगल+यत्] १ मगल या कल्याण करनेवाला। मगल कारक। २ मनोहर। ३ सुन्दर। ४. सीधा-सादा। साधु। पु० १ त्रायमाणा लता। २. अश्वत्थ। पीपल। ३. बिल्व। बेल। ४. मसूर। ५ जीवक वृक्ष। ६. नारियल। ७ कपित्थ। कैथ। ८ रीठ। करज। ९ दही। १० चंदन। ११ सोना। स्वर्ण। १२. सिंदूर।

मंगल्य-कुसुमा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] शंखपुष्पी।

मंगल्या—स्त्री० [सं० मगल्य+टाप्] १. दुर्गा का एक नाम। २ एक प्रकार का अगरु जिसमे चमेली की सी गध होती है। ३ शमी वृक्ष। ४. सफेद वच। ५ रोचना। ६ शंखपुष्पी। ७. जीवती। ८. ऋद्धिनामक लता। ९ हलदी। १०. दूब।

मँगवाना—स० [हिं० माँगना का प्रे०] १ माँगने का काम दूसरे से कराना। किसी को माँगने मे प्रवृत्त करना। जैसे—तुम्हारे ये लक्षण तुमसे भीख मँगवा कर छोडेंगे। २ किसी से यह कहना कि अमुक स्थान से अमुक वस्तु खरीद या माग लाओ। जैसे—बाजार से कपड़ा या मित्र के यहाँ से पुस्तक मँगवाना।

संयो० क्रि०—देना।—रखना।—लेना।

मँगाना—स०[हिं० माँगना का प्रे०] १. लड़के या लड़की की मँगनी का संबंध स्थिर कराना। विवाह की बातचीत पक्की कराना। २. दे० 'मँगवाना'।

मँगारना*—स०=मगलना। उदा०—विरह अगारिनि मँगारि हिय होरी सी।—घनानद।

मँगियाना—स० [हिं० माँग=सीमन्त] १. सिर के बालो मे इस प्रकार कघी करना कि जिसमे माग निकल आवे। २. अलग या विभक्त करना।

मँगुरी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की छोटी मछली।

मँगेतर—वि० [हिं० मँगनी+एतर (प्रत्य०)] १ (युवक या युवती) जिसकी मँगनी हो चुकी हो। २. (वह) जिसके साथ किसी की मँगनी हुई हो, अथवा विवाह होना निश्चित हुआ हो।

मंगोल—पु० [मगोलिया प्रदेश से] मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान मे) बसने वाली एक जाति जिसका रग पीला, नाक चिपटी और चेहरा चौडा होता है।

मंच—पु० [स०√मंच् (उच्च होना)+घञ्] १. खाट। खटिया। २ खाट की तरह बुनी हुई बैठने की छोटी पीढी। मँचिया। ३. सभा-समितियो आदि में ऊँचा बना हुआ मडल जिस पर बैठकर सर्व साधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय। (स्टेज) ४. रगमच। (स्टेज) ५. लाक्षणिक अर्थ मे, कुछ विशिष्ट प्रकार के क्रिया-कलापो के लिए उपयुक्त क्षेत्र। जैसे—राजनीतिक मच।

मंचक—पु० [सं० मच+कन्] =मच।

मंचकाश्रय—पु० [सं० मचक-आश्रय ब० स०] खटमल।

मंचन—पु० [स० मच से] [भू० कृ० मचित] किसी नाटक या रूपक का रगमच पर अभिनय करना या होना। जैसे—कई स्थानों पर इस नाटक का मचन भी हो चुका है।

मंच-मडप—पु० [स० उपमि० स०] मचान। (दे०)

मचिका—स्त्री० [स० मचक+टाप्, इत्व] मचिया।

मंची—स्त्री० [स० मंच] खडे बल मे लगाई हुई लकडियों, खभो आदि की वह रचना जिसके आधार पर कोई भारी चीज ठहराई या रखी जाती है। (पेडेस्टल)

मँछु—पु० [स० मच्छ] मछली। उदा०—चेला मछु, गुरू जस काछू।—जायसी।

मजन—पु० [स०√मज् (चमकना)+ल्युट्—अन] वह बुकनी या चूर्ण जो दाँतो पर उँगली आदि से मला तथा रगड़ा जाता है। दाँत साफ करने का चूर्ण।

*पु०=मज्जन (स्नान करना)।

मँजना—अ० [स० मज्जन] १ (दाँतो का) मजन से साफ किया जाना। २. (बरतनो के सबध मे) राखी आदि से माँजा तथा साफ किया जाना। ३. किसी काम या बात का, अभ्यास के कारण ठीक तरह से सपन्न या पूरा होना। जैसे—(क) लिखने मे हाथ मँजना। (ख) मँजी हुई कविता पढना।

मंजर—पु० [सं०√मंज्+अर] १. फूलो का गुच्छा। २. मोती। ३. तिलक वृक्ष।

मजरि—स्त्री०=मजरी।

मजरिका—स्त्री०=मंजरी।

मंजरित—भू० कृ० [सं० मजर+इतच्] १. मजरियो से युक्त। २. पुष्पित।

मंजरी—स्त्री० [स० मजर+ङीप्] १. नया कल्ला। कोपल। २.

कुछ विशिष्ट पौधो के सीके मे लगे हुए बहुत से दानो का समूह। जैसे— आम या तुलसी की मजरी। ३ तुलसी। ४. तिलक वृक्ष। ५ मोती। ६. वाम नामक छद का दूसरा नाम। ७. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मजरीक—पु० [स० मजरी+कन्] १. एक तरह का सुगंधित तुलसी का पौधा। २. मोती। ३ तिल का पौधा। ४ बेत। ५ अशोक वृक्ष।

मजरी-चामर—पु० [मध्य० स० या उपमि० स०] फलो की मजरी से बना हुआ या उसकी तरह बना हुआ चामर।

मँजाई—स्त्री० [हिं० माँजना] १. माँजे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. माँजने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

मंजाना—स० [हिं० माँजना का प्रे०] १. किसी को माँजने मे प्रवृत्त करना। २ अच्छी तरह साफ कराना। ३ अच्छी तरह अभ्यास कराना। जैसे—लिखने मे लडके का हाथ मँजाना।

मँजार†—स्त्री० [स० मार्जार] बिल्ली।

मंजारी†—स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।

मँजावट—स्त्री० [हिं० मँजना] १. माँजने या मँजने की अवस्था, क्रिया, ढग या भाव। २ कोई काम करने मे हाथ के मँजे हुए या अभ्यस्त होने की अवस्था या भाव।

मजि—स्त्री० [स०√मज्+इन्] १ मजरी। २. लता।

मंजिका—स्त्री० [स०√मज्+ण्वुल्—अक्,–टाप्, इत्व] वेश्या। रडी।

मंजि-फला—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] केला।

मजिमा(मन्)—स्त्री० [स० मजु+इमनिच्] सुदरता। मनोहरता।

मजिल—स्त्री० [अ० मजिल] १. यात्रा के मार्ग मे बीच-बीच मे यात्रियो के ठहरने के लिए बने हुए या नियत स्थान। पडाव।

मुहा०—मजिल काटना=एक पडाव से चलकर दूसरे पडाव तक का रास्ता पार करना। मजिल देना=कोई बडी या भारी चीज उठाकर ले चलने के समय रास्ते मे सुस्ताने के लिए उसे कही उतारना या रखना। मजिल मारना=(क) बहुत दूर से चलकर कही पहुँचना। (ख) कोई बहुत बडा काम या उसका कोई विशिष्ट अश पूरा करना।

२. वह स्थान जहाँ तक पहुँचना हो। अभीष्ट, उद्दिष्ट या नियत स्थान अथवा स्थिति। ३. ऊपर-नीचे बने हुए होने के विचार से मकान का खड। मरातिब। जैसे—(क) दो (या तीन) मजिल का मकान। (ख) तीसरी मजिल की छत।

मंजिष्ठा—स्त्री० [स० मजिमती+इष्ठन्, टि-लोप,+टाप्] मजीठ नामक पेड़ और उसका फल।

मजिष्ठा-मेह—पु० [उपमि० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह जिसमे मजीठ के पानी के समान मूत्र होता है।

मजिष्ठा-राग—पु० [प० त०] १. मजीठ का रग। २ [उपमि० स०] पक्का या स्थायी अनुराग अथवा प्रेम।

मंजी†—स्त्री०=मंजरी।

स्त्री० दे० 'खाट'।

मंजीर—पु० [स०√मज्+ईरन्] १. नूपुर। घुँघरू। २ वह खभा या लकडी जिसमे मथानी का डँडा बधा रहता है। ३ पश्चिमी बगाल की एक पहाडी जाति।

मँजीरा, मंजीरा—पु० [स० मजीर] १ काँसे, पीतल आदि का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो दो छोटी कटोरियो के रूप मे होता है, और जिसमे की एक कटोरी से दूसरी कटोरी पर आघात करके संगीत के समय ताल देते है। जोडी।

मजु—वि० [स०√मंज्+कु] सुदर। मनोहर।

मंजु-गर्त्त—पु० [स० ब० स०] नेपाल।

मजु-घोष—पु० [स० ब० स०] १ तान्त्रिको के एक देवता का नाम। २. एक बौद्ध आचार्य।

वि० मधुर ध्वनि मे बोलनेवाला।

मंजु-घोषा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] एक अप्सरा का नाम।

मजु-तिलका—स्त्री० [स०] हस-गति नामक मात्रिक छद का दूसरा नाम।

मजुदेव—पु०=मजुघोष (आचार्य)।

मंजुनाशी—स्त्री० [स०] १. दुर्गा का एक नाम। ३. इद्राणी का एक नाम। ३. सुदर स्त्री।

मंजु-पाठक—पु० [स० कर्म० स०] तोता।

मंजु-प्राण—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा।

मंजु-भद्र—पु० =मजुघोष (आचार्य)।

मजुभाषी—वि० [सं० मजु√भाष् (बोलना)+णिनि] [स्त्री० मजुभाषिणी] मधुर और प्रिय बाते करनेवाला।

मंजु-मालिनी—स्त्री० [स० कर्म० स०] मालिनी छद का दूसरा नाम।

मंजुल—वि० [स० मजु+लच्] सुन्दर। मनोहर।

पु० १. जलाशय या नदी का किनारा। २. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मजुला—स्त्री० [स० मजुल+टाप्] एक नदी का नाम।

मंजुश्री—पु०=मजुघोष (आचार्य)।

मजूर—वि० [अ० मंजूर] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत। जैसे— अरजी या छुट्टी मजूर होना।

†पु०=मयूर (मोर)।

मजूरी—स्त्री० [अ० मजूरी] मजूर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। स्वीकृति।

मजूषा—स्त्री० [स०√ मस्ज्+ऊषन्, नुम्] १ छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २ पत्थर। ३ मजीठ। ४ पक्षियो का पिंजरा। ५ हाथी का हौदा।

मजुसा†—स्त्री०=मजूषा।

मझ—अव्य०, पु०=मध्य (बीच मे)।

मँझधार—स्त्री० [हिं० मझली+धार] नदी के बीच की धारा।

अव्य० नदी, समुद्र आदि की धारा के बीच मे।

मँझना—अ०=मँजना।

मँझरिया*—अव्य० [सं० मध्य, हिं० माँझ] बीच मे। मध्य मे।

मँझला—वि० [स० मध्य, पु० हिं० मँझ+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० मंझली] वय, स्थिति आदि के विचार से बीच या मध्य का। जैसे—मँझला मकान (दो मकानो के बीच का मकान), मँझला लडका।

मंझा—वि० [स० मध्य, पा० मज्झ] १ जो दो के बीच मे हो। बीचवाला। २. दे० 'मँझला'।

पुं०[सं० मध्य०; पा० मज्झ] १ सूत कातने के चरखे मे वह मध्य का अवयव जिसके ऊपर माल रहती है। मुँडला। २. अटेरन के वीच की लकडी।

स्त्री०[सं० मध्य ; पा० मज्झ] वह भूमि जो गोयड और पालों के वीच में पड़ती हो।

पुं०[सं० मंच] १. पलंग। खाट। (पजाव) २ चौकी। ३. मचिया।

मुहा०—मझा वैठना=एक ही आसन से या स्थिति मे अच्छी तरह जम कर वैठना।

पुं० [हिं० माँजना] वह पदार्थ जिससे रस्सी या पलग की डोर माँजते हैं। माँझा।

मुहा०—माँझा देना=डोरी, रस्सी आदि पर मझा या माँझा लगाना।

मंझाना†—स० [हिं० माँझ=वीच] वीच मे डालना, रखना या लाना। अ० वीच मे पडना या होना।

मँझार†—स्त्री०, अव्य०=मँझवार।

मँझिग्रार†—वि०[स० मध्य, प्रा० मज्झ] मध्य का। वीच का।

मँझोला—वि०[स० मध्य, पु० हिं० मँझ+ओला (प्रत्य०)] आकार, मान आदि के विचार से वीच या मध्य का। जो न वहुत वडा ही हो और न वहुत छोटा ही हो। जैसे—मँझोला।

मँझोली—स्त्री०=मझोली।

मठ—पु०[स०√मट्+अच्] शीरे मे पकाया हुआ एक तरह का पकवान।

मंड—पु०[स० √मड् (भूपित करना)+अच्] १. मडन करने की क्रिया या भाव। सजावट। २ उवले हुए चावलो का गाढा पानी। भात का पानी। मांड। ३ रेड का पेड। ४. मेढ़क। ५ सारभाग। ६ दूव या दही की मलाई। ७. मदिरा। शराव। ८ आभूपण। गहना। ९. एक प्रकार का साग। १० कुएँ की जगत। ११. श्वेतसार।

मँड़ई†—स्त्री०[सं० मडप] १ झोपड़ी। २. कुटिया।

मंउई†—स्त्री०=मडी।

मंडक—पु०[स० मड+कन्] १ मैदे की एक प्रकार की रोटी। २. माघवी लता। ३ सगीत मे गीत का एक अग।

वि० मंडन या सजावट करनेवाला।

मडन—पु०[स०√मड्+ल्युट्—अन] १. शृगार करना। सजाना। २ तर्क या विवाद के प्रसग मे युक्ति आदि देकर किसी कथन या सिद्धान्त का पुष्टिकरण। जैसे—अपने पक्ष का मडन। 'खडन' का विपर्याय।

वि० मंडित करनेवाला या सजानेवाला।

मंडना—स० [स० मडन] १. मडित या सुसज्जित करना। शृगार करना। अच्छी तरह सजाना। २. तर्क, विवाद आदि के समय युक्तिपूर्वक अपना पक्ष या समर्थन ठीक सिद्ध करते हुए लोगो के सामने उपस्थित करना। कोई वात अच्छी तरह प्रतिपादित और सिद्ध करना। ३. किसी रचना की रूपरेखा आदि तैयार करना या वनाना। ४ पूरी तरह से आच्छादित करना। छाना। ५ कोई वडा काम करना या ठानना।

स० [स० मर्दन] दलित या मर्दित करना। नष्ट करना।

अ०[हिं० मांडना का अ०]१. माँड़ा या लिखा जाना। जैसे— खाते मे रकम मडेना। २ किसी काम या वात मे लीन होना। जैसे—सव लोग नाच-रग मे मंडे थे।

स०[?]मनाना। (डिं०) उदा०—आगमि सिसुपाल मडिजै उद्धव। —प्रिथीराज।

मँडनी—स्त्री०[हिं० माँडना] अनाज के डठलों को वैलों से रौंदवाने का काम। दँवरी।

मडप—पु०[स०मंड√पा+क]१. वह छाया हुआ स्थान जहाँ वहुत से लोग धूप, वर्षा आदि से वचते हुए वैठ सकें। विश्राम-स्थान। २ किसी विशिष्ट काम के लिए छाया हुआ स्थान। जैसे—यज्ञ-मडप, विवाह-मंडप। ३. आदमियो के वैठने योग्य चारो ओर से खुला, पर ऊपर से छाया हुआ स्थान। वारहदरी। ४. देवमदिर का ऊपर का छाया हुआ गोलाकार अश या भाग। ५. चंदोआ। शामियाना।

मंडपक—पु०[सं० मडप+कन्] [स्त्री० मडपिका] छोटा मडप।

मंडपी—स्त्री०[स० मडप+ङीप्] छोटा मडप।

मंडर—पुं०=मडल।

मँडरना—अ०[सं० मडल] चारो ओर से घिरना।

स० चारो ओर से घेरना।

मँडराई*—स्त्री०[स० मडल] पक्षियो आदि का घेरा वाँध या मंडल वनाकर आकाश मे उडने की क्रिया या भाव।

मँडराना—अ०[स० मडल]१. मंडल या घेरा वाँवकर छा जाना। २ पक्षियों, फतिगो आदि का किसी चीज के ऊपर तथा चारो ओर चक्कर लगाते हुए उडना। ३. लाक्षणिक अर्थ मे लोभ या स्वार्थ वश किसी के पास रह-रह कर या घूम-घूम कर पहुँचना। किसी व्यक्ति या स्थान के आसपास घूमते या चक्कर लगाते रहना।

मंडरी—स्त्री०[देश०] पयाल की वनी हुई गोदरी या चटाई।

मंडल—पु०[स०√मड्+कलच्] १. चक्र के आकार का घेरा। गोलाई। वृत्त। जैसे—रास मडल।

मुहा०—मंडल वाँधना=गोलाकार घेरा वनाना। जैसे—(क) मडल वाँधकर नाचना। (ख) वादलो का मडल वाँवकर वरसना।

२. किसी प्रकार की गोलाकार आकृति, रचना या वस्तु। जैसे— भू-मडल। ३ चद्रमा, सूर्य आदि के चारो ओर छाया का पडनेवाला घेरा जो कभी कभी आकाश मे वादलो की वहुत हल्की तह रहने पर दिखाई देता है। ४. किसी वस्तु का वह गोलाकार अश जो दृष्टि के सम्मुख हो। जैसे—चंद्र-मण्डल, सूर्य-मडल, मुख-मडल। ५. चारो दिशाओ का घेरा जो गोल दिखाई देता है। क्षितिज। ६. प्राचीन भारत मे १२ राज्यो का क्षेत्र, वर्ग या समूह। ७. प्राचीन भारत मे चालिस योजन लवा और वीस योजन चौड़ा क्षेत्र या भूखड। ८ किसी विशिष्ट दृष्टि से एक माना जानेवाला क्षेत्र या भू-भाग। (जोन) ९ कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों का वर्ग या समाज। (सर्किल) जैसे—मित्र-मंडल, राजकीय मडल। १०. एक प्रकार की गोलाकार सैनिक व्यूह-रचना। ११ एक प्रकार का साँप। १२. वघनखी नामक गंध-द्रव्य। १३. वह कक्ष या गोलाकार मार्ग जिस पर चलते हुए ग्रह चक्कर लगाते है। १४ शरीर की आठ सधियो मे से एक। (सुश्रुत) १५. कदुक। गेद। १६ किसी प्रकार का गोल चिह्न या दाग। १७ चक्र। १८. पहिया। १९. ऋग्वेद का कोई विशिष्ट खड या भाग।

मंडलक—पु० [स० मंडल+कन्] १ किसी प्रकार की मंडलाकार आकृति, छाया या रचना। (डिस्क)। २ दर्पण। शीशा। ३ दे० 'मडल'।

मंडल-नृत्य—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] घेरा बाँधकर या मडल के रूप मे होनेवाला नृत्य।

मंडल-पत्रिका—स्त्री० [स० व० स०,+कप्' टाप्, इत्व] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

मडल-पुच्छक—पु० [स० व०स०,+कप्] एक जहरीला कीडा। (सुश्रुत)

मडलवर्ती(तिन्)—पु० [स० मडल√वृत् (वरतना)+णिनि] प्राचीन भारत मे, किसी मडल या भू-भाग का शासक।

मंडल-वर्ष—पु० [स० मध्य० स०] सारे देश मे एक साथ होनेवाली वर्षा।

मंडलाकार—वि० [स० मडल-आकार, व० स०] जो विलकुल गोल न होकर वहुत कुछ गोल या गोले के समान हो। गोलाकार। (ऑर्विक्यूलर)

मंडलाधिप—पु० [स० मंडल-अधिप, प० त०] दे० 'मंडलेश्वर'।

मडलाधीश—पु० [सं० मंडल-अधीश, प० त०] दे० 'मडलेश्वर'।

मंडलाना—अ०=मँडराना।

मडलायित—वि० [स० मंडल+क्यड्+क्त] गोलाकार। वर्त्तुल।

मडली—स्त्री० [स० मडल+अच्+डीप्] १. मनुष्यो की गोष्ठी या समाज। २. जीव-जतुओं का झुड या दल। ३. एक ही प्रकार का उद्देश्य या विचार रखनेवाले अथवा एक ही तरह का काम करनेवाले लोगो का दल या समूह। जैसे—भजन-मडली, रास-मडली। ४. दूव। ५ गुरुच। गिलोय।

पु० [स० मडल+इनि] १. सुश्रुत के अनुसार साँपो के आठ भेदो मे से एक भेद या वर्ग। २. वट वृक्ष। वड़ का पेड। ३ विडाल। विल्ली। ४. नेवले की जाति का विल्ली की तरह का एक जतु जिसे वगाल मे खटाश और उत्तर प्रदेश मे सेंधुआर कहते हैं। ५. सूर्य।

मंडलीक—पु० [स० माडलिक] एक मडल या १२ राजाओ का अधिपति।

मंडलीकरण—पु० [स० मडल+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. मडल या घेरा बनाना। २ कुडली वनाना, वाँधना या मारना।

मंडलेश्वर—पु० [स० मडल-ईश्वर, प०त०] १. एक मडल का अधिपति। २ प्राचीन भारत मे १२ राजाओ का अधिपति। ३. साधु समाज में वह वहुत वडा साधु जो किसी क्षेत्र मे सर्वप्रधान माना जाता हो।

मंडव†—पु०=मडप।

मँड़वा—पु० [स० मडप, प्रा० मडव] १. किसी विशिष्ट कार्य के लिए छाकर वनाया हुआ स्थान। मडप। २. वह खेल तमाशा जो किसी मडप के अन्दर दिखलाया जाता हो। (पश्चिमी)

मंड-हारक—पु० [स० प० त०] मद्य का व्यवसायी। कलवार।

मंडा—स्त्री० [सं० मड+अच्+टाप्] सुरा।

पु० [सं०मडल] १ भूमि का एक मान जो दो विस्वे के वरावर होता है। २ एक प्रकार की वँगला मिठाई।

†पु० [हिं० मडी] वडी मडी।

मंडान—स्त्री० [हिं० मडना] १ मडित करने की क्रिया या भाव। २. किसी वडे कृत्य के आरम्भ मे की जानेवाली व्यवस्था। ३. आयोजन। प्रवंध। इन्तजाम। जैसे—राज-तिलक या विवाह का मडान।

क्रि० प्र०—वाँधना।

मँडार—पु० [स०मडल] १. गड्ढा। २. झावा, टोकरा या डलिया।

मंडित—भू० कृ० [सं०√मड् (सजाना)+क्त] १. सजाया हुआ। विभूषित। २. ऊपर से छाया हुआ। आच्छादित। ३. भरा या पूरी तरह से युक्त किया हुआ। पूरित।

मँडियार—पु० [देश०] झरवेरी नाम की कँकरीली झाडी।

मंडी—स्त्री० [स०मडप] वह वहुत वडा विक्रय-स्थल जहाँ थोक माल वेचने की वहुत-सी दुकाने हो। जैसे—अनाज की मडी, कपडे की मडी।

स्त्री० [सं० मंडल] दो विस्से के वरावर जमीन की एक पुरानी नाप।

मँडुआ—पु० [देश०] एक प्रकार का कदन्न।

†पु० मँडवा।

मंडूक—पु० [स०√मड्+ऊकण्] १. मेढक। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का वाजा। ४. एक प्रकार का नृत्य। ५. सगीत मे रुद्रताल के ग्यारह भेदो मे से एक। ६. एक प्रकार का फोडा। ७ दोहा, छद का पाँचवा भेद जिसमे १८ गुरु और १२ लघु अक्षर होते हैं।

मंडूक-पर्णी—स्त्री० [सं० व० स०, ङीप्] १. ब्राह्मी वूटी। २. मजीठ।

मडूक-प्लुति—स्त्री० [स० प० त०] १. मेढक का छलाँगे लगाना। २ मेढक की तरह छलाँगे लगाना।

मंडूका—स्त्री० [स० मडूक+टाप्] मजिष्ठा। मजीठ।

मडूकी—स्त्री० [स० मडूक+ङीप्] १ ब्राह्मी। २. आदित्य-भक्ता।

मडूर—पु० [स०√मड्+ऊरच्] १ गलाये हुए लोहे की मैल। २. लौह-किट्ट। ३ वैद्यक मे उक्त से वनाया हुआ एक प्रकार का रसौषध।

मँढा, मढा—पु० [हिं० मढना] १ कमख्वाव वुननेवालो का एक औजार। २ किसी विशिष्ट कार्य के लिए छाकर वनाया हुआ स्थान। मडप। ३ लकडियो आदि का वह ढाँचा जो किसी तरह की वेल चढाने के लिए खडा किया या वनाया जाता है।

मुहा०—वेल मँढे (मढे) चढना=किसी काम का ठीक तरह से चलने लगना या पूरा होना। जैसे—तुमने इतना वडा काम तो हाथ मे ले लिया है, पर यह वेल मंढे नही चढेगी।

मत—पु० [स० मत्र] १ परामर्श। सलाह। २ मत्र।

मतक—पु० [अ० मतिक] तर्कशास्त्र।

मंतव्य—वि० [सं०√मन् (मानना)+तव्यत्] मानने योग्य। माननीय। मान्य।

पु० १. किसी काम या वात के सवंध मे वह विचार जो मन मे स्थिर किया गया हो। मत। (इन्टेन्ट) २ उद्देश्य, सभा-समिति आदि मे उपस्थित और स्वीकृत होनेवाला प्रस्ताव या निश्चय। (रिजोल्यूशन) ३ सभा, समिति आदि द्वारा किया हुआ कोई निश्चय या निर्णय। ४ सकल्प।

मत्र—पु० [स०√मत्र्+घञ् वा अच्] १ भारतीय वैदिक साहित्य मे देवता से की जानेवाली वह प्रार्थना जिसमे उसकी स्तुति भी हो।

विशेष—वैदिक काल मे मत्र तीन प्रकार के होते थे। जो छदोवद्ध या पद्य के रूप मे होते थे और जिनका उच्चारण उच्च स्वर से किया जाता था, उन्हे 'ऋचा' कहते थे। गद्य रूप मे होनेवाले और मद स्वर से कहे जानेवाले मंत्रो को 'यजु' कहते थे, और पद्य रूप मे गाये जानेवाले मत्रो

को 'साम' कहते थे। इसके सिवा निरुक्त में मंत्रों के तीन और भेद बतलाये गये हैं। जिन मंत्रों में देवता को परोक्ष में मान कर प्रथम पुरुष में उनकी स्तुति की जाती है, वे 'परोक्ष-कृत' कहलाते हैं। जिनमें देवताओं को प्रत्यक्ष मान कर मध्यम पुरुष में उनकी स्तुति की जाती है, उन्हें 'प्रत्यक्षकृत' कहते हैं। और जिन मंत्रों में स्वयं अपने आप में आरोप करके और उत्तम पुरुष में स्तुति की जाती है, वे 'आध्यात्मिक' कहलाते हैं। वैदिक मंत्रों में प्रायः प्रार्थना और स्तुति के सिवा अभिशाप, आशीर्वाद, निंदा, शपथ आदि की भी बहुत सी बातें पाई जाती हैं। वैदिक काल में इसी प्रकार के मंत्रों के द्वारा यज्ञ-संबंधी सब कृत्य किये जाते थे। २. वेदों का वह संहिता नामक भाग जिसमें उक्त प्रकार के मंत्र संगृहीत हैं और जो उनके ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न हैं। ३. कोई ऐसा शब्द, पद या वाक्य जो दैवी शक्ति से युक्त माना जाता हो और जिसका उच्चारण किसी देवता को प्रसन्न करके उससे अपनी कामना पूरी कराने के लिए किया जाता हो।

विशेष—उक्त प्रकार के मंत्रों में जो एकाक्षरी और बिना स्पष्ट अर्थवाले होते हैं, उन्हें तंत्र शास्त्र में बीज-मंत्र कहते हैं।

पद—मंत्र-तंत्र, यंत्र-मंत्र।

४. राय या सलाह। मंत्रणा। ५. कोई ऐसी बात जो किसी प्रकार का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को गुप्त रूप में बतलाई, समझाई या सिखाई जाय। कार्य-सिद्धि का गुर, ढंग या नीति। जैसे—न जाने तुमने उसे कौन सा मंत्र बता (या सिखा) दिया है कि वह लोगों से अपना काम तुरंत करा लेता है।

मंत्रकार—पुं० [सं० मंत्र√कृ+अण्, उप०स०] मंत्र रचनेवाला। जैसे—मंत्रकार ऋषि।

मंत्र-गूढ़—पुं० [सं० स० त०] गुप्तचर। जासूस। भेदिया।

मंत्र-गृह—पुं० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर मंत्रणा या सलाह करते हैं।

मंत्र-जल—पुं० [सं० मध्य० स०] मंत्र से प्रभावित किया हुआ जल।

मंत्र-जिह्व—पुं० [सं० ब० स०] अग्नि।

मंत्रज्ञ—वि० [सं० मंत्र√ज्ञा (जानना)+क] १ मंत्र जाननेवाला। २ परामर्श या सलाह देने की योग्यता रखनेवाला। ३. भेद या रहस्य जाननेवाला।

मंत्रण—पुं० [सं०√मंत्र् (गुप्त भाषण)+ल्युट्—अन] १. मंत्रणा या सलाह करना। २. परामर्श।

मंत्रणा—स्त्री० [√मंत्र्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. किसी महत्त्वपूर्ण विषय के संबंध में आपस में होनेवाली बात-चीत या विचार-विमर्श। सलाह। २. उक्त बात-चीत या विचार-विमर्श के द्वारा स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य। ३. किसी काम के संबंध में किसी को दिया जानेवाला परामर्श या सलाह। (एडवाईज)

मंत्रणाकार—पुं० [सं० मंत्रणा√कृ (करना)+अण्] वह जो किसी को उसके कार्यों के संबंध में मंत्रणा देता रहता हो। (एडवाइजर)

मंत्रणा-परिषद्—स्त्री० [सं० ष० त०] मंत्रणाकारों की ऐसी परिषद् जो किसी बड़े अधिकारी या शासन को मंत्रणा देती रहती हो। (ऐडवाइज़री कौंसिल)

मंत्र-तंत्र—पुं० [सं० द्व० स०] वे मंत्र जो कुछ विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं के साथ जादू-टोने के रूप में किसी अभीष्ट की सिद्धि के लिए पढ़े जाते हैं।

विशेष—ऐसे मंत्र या तो तंत्रशास्त्र के क्षेत्र के होते हैं; या उनके अनुकरण पर मन-माने ढंग से बनाये हुए होते हैं।

मंत्रद—वि० [सं०मंत्र√दा (देना)+क, उप० स०] परामर्श देनेवाला। पुं० वह गुरु जिसने गुरु-मंत्र दिया हो।

मंत्रदर्शी (र्शिन्)—वि०[सं० मंत्र√दृश् (देखना)+णिनि, उप० स०] वेदवित्। वेदज्ञ।

मंत्र-दीधिति—पुं० [ब० स०] अग्नि। आग।

मंत्र-द्रष्टा—वि० [ष० त०] जो मंत्रों का अर्थ जानता हो। पुं० मंत्रों के अर्थ जानने और बतानेवाला ऋषि।

मंत्र-धर—पुं० [ष० त०] मंत्री।

मंत्र-पति—पुं० [ष० त०] मंत्र का अधिष्ठाता देवता।

मंत्र-पूत—भू० कृ० [तृ० त०] १. मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ। २. मंत्र पढ़कर फूँका हुआ।

मंत्र-बीज—पुं० [ष० त०] मूल मंत्र।

मंत्र-भेदक—पुं० [ष० त०] वह जो शासन के निश्चय, भेद या रहस्य दूसरों पर प्रकट कर देता हो। (ऐसा व्यक्ति, राज्य या राष्ट्र का शत्रु माना जाता है।)

मंत्र-मूल—पुं० [ब० स०] राज्य।

मंत्र-यान—पुं० [ब० स० या सुप्सुपा स० ?] बौद्धों की एक शाखा जिसके प्रवर्तक सिद्ध नागार्जुन माने जाते हैं। इसे वज्रयान (देखें) भी कहते हैं। इस शाखा में बुद्ध के उपदेशों का सारांश मंत्रों के रूप में जपा जाता है।

विशेष—बौद्ध धर्म का तीसरा यान या मार्ग जो महायान के बाद चला था; और जिसमें कुछ मंत्रों के उच्चारण से ही निर्वाण प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता था।

मंत्र-युद्ध—पुं०[सुप्सुपा स०] केवल बातचीत या बहस के द्वारा शत्रु को वश में करने की क्रिया या प्रयत्न।

मंत्र-योग—पुं० [ष० त०] १. मंत्रों का प्रयोग। मंत्र पढ़ना। २. हठयोग में प्राणायाम करते हुए मंत्र या नाम जपना। शब्द योग। ३. इन्द्रजाल। जादू।

मंत्रवादी (दिन्)—वि० [सं० मंत्र√वद् (कहना)+णिनि लोप] १. मंत्रज्ञ। २. मंत्र उच्चारण करनेवाला।

मंत्र-विद्—वि० [सं० मंत्र√विद् (जानना)+क्विप्] १. मंत्र जाननेवाला। मंत्रज्ञ। २. वेदज्ञ। ३. राज्य या शासन के रहस्य और सिद्धांत जाननेवाला।

मंत्र-विद्या—स्त्री० [ष० त०] =मंत्र-शास्त्र।

मंत्र-शास्त्र—पुं० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमें भिन्न प्रकार के मंत्रों के द्वारा उनके कार्य सिद्ध करने की क्रियाएँ और विवेचन हो। तंत्र-शास्त्र।

मंत्र-संस्कार—पुं० [सं० ष० त०] १ मंत्रों की विधि से किया जानेवाला संस्कार। २. मंत्र-ग्रहण करने से पूर्व उसका किया जानेवाला संस्कार। (तंत्र) ३. विवाह।

मंत्र-संहिता—स्त्री० [ष० त०] वेदों का वह अंग जिसमें मंत्रों का संग्रह है।

मंत्र-सिद्ध—वि० [तृ० स०] १. जो मंत्रों के द्वारा सिद्ध किया गया हो। २. [ब० स०] जिसे मंत्र सिद्ध हो।

मंत्र-सिद्धि—स्त्री० [ष० त०] मंत्र-तंत्र का इस प्रकार सिद्ध होना कि उनसे उपयुक्त काम लिया जा सके।

मंत्र-सूत्र—पु० [मध्य० स०] रेशम या सूत का वह तागा जो शरीर के किसी अंग मे बाँधने के लिए मंत्र पढ़कर तैयार किया गया हो। गंडा।

मंत्रालय—पु० [मंत्र-आलय, ष० त०] १. मंत्री का कार्यालय। २. आज-कल शासन मे, कर्मचारियो का वह विभाग जो किसी मंत्री के निर्देशन मे काम करता हो। (मिनिस्टरी) जैसे—शिक्षा मंत्रालय।

मंत्रित—भू० कृ० [सं०√मंत्र्+क्त या मंत्र+इतच्] १. मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित। २. जिसे मंत्र दिया गया हो।

मंत्रिता—स्त्री० [सं० मंत्रिन्+तल्+टाप्] १. मंत्री होने की अवस्था, पद या भाव। मंत्रित्व। २. मंत्री का कार्य।

मंत्रित्व—पु० [सं० मंत्रिन्+त्व] मंत्री का कार्य या पद। मंत्री-पद।

मंत्रि-पति—पु० [सं० ष० त०] प्रधान मंत्री।

मंत्रि-परिषद्—स्त्री० [ष०त०] किसी राज्य, संस्था आदि के मंत्रियो का समूह या समाहार। (कैबिनेट, काउन्सिल)

मंत्रि-मंडल—पु० [ष० त०] किसी राज्य के मंत्रियो का मंडल, वर्ग या समूह (मिनिस्टरी)

मंत्री (त्रिन्)—पु० [सं० मंत्र+इनि,] १. वह जो मंत्रणा अर्थात् परामर्श या सलाह देता हो। २. राजा का वह प्रधान अधिकारी जो उसे राजकार्यों के संबंध मे परामर्श देता और राज-कार्यों का संचालन करता हो। अमात्य। ३. वह व्यक्ति जिसके आदेश और परामर्श से राज्य के किसी विभाग के सब काम-काज होते हो। (मिनिस्टर) जैसे—अर्थ-मंत्री, शिक्षा-मंत्री।

विशेष—मंत्री और सचिव के अन्तर के लिए दे० 'सचिव' का विशेष। ४ किसी संस्था का वह प्रधान अधिकारी जिसके आदेश तथा परामर्श से उसके सब काम होते हो। (सेक्रेटरी) जैसे—सभा का मंत्री। ५. वह जो किसी उच्च अधिकारी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार तथा महत्त्व के कार्यों की व्यवस्था करता हो। सचिव। (सेक्रेटरी) ६. शतरंज मे वजीर नाम की गोटी या मोहरा।

मंथ—पु० [सं०√मंथ् (मथना)+घञ्] १ मथना। बिलोना। २. २. हिलाना। ३. मलना। रगड़ना। ४. मारना-पीटना। ५. काँपना। कंपन। ६. मथानी। ७. सूर्य की किरण। ८ एक प्रकार का मृग। ९. एक प्रकार का पेय पदार्थ जो कई प्रकार के तरल पदार्थों को मथकर बनाया जाता था। १०. दूध या जल मे मिलाकर मथा हुआ सत्तू। ११. आँख का एक रोग जिसमे आँखो से पानी या कीचड़ बहता है। १२. एक प्रकार का ज्वर जो बाल-रोग के अंतर्गत माना जाता है। मंथर।

मंथक—पु० [सं०√मंथ्+ण्वुल्—अक] १. एक गोत्रकार मुनि का नाम। २ उक्त ऋषि के वंशज या अनुयायी। ३. चँवर डुलाने पर निकलनेवाली वायु।

वि० मंथन करनेवाला।

मंथज—वि० [सं० मंथ्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मथने से उत्पन्न होनेवाला। मथकर निकाला जानेवाला।

पु० नवनीत।

मंथन—पु० [सं०√मंथ्+ल्युट्—अन] १. वह प्रक्रिया जिससे दही को मथानी द्वारा चलाकर मक्खन निकाला जाता है। २. किसी गूढ़ या नवीन तत्त्व को खोज निकालने के लिए परिश्रमपूर्वक की जानेवाली छान-बीन। जैसे—शास्त्रो का मन्थन।

मंथन-घट—पुं० [ष० त०] [स्त्री० अल्पा० मंथन-घटी] वह मटका जिसमे दही मथा जाता है।

मंथनी—स्त्री० [सं० मंथन+ङीप्] मिट्टी का वह पात्र जिसमे दही मथा जाता है। मटकी।

मंथ-पर्वत—पु० [सं० ष० त०] मंदर पर्वत।

मंथर—वि० [सं०√मंथ्+अरन्] १ धीमा। मन्द। २. मट्ठर। सुस्त। ३. मन्द-बुद्धि। कम-समझ। ४. बड़ा और भारी। स्थूल। ५ टेढ़ा। वक्र। ६. अधम। नीच।

पु० १ बालो का गुच्छा। २. कोष। खजाना। ३. फल। ४. बाधा। रुकावट। ५ मथानी। ६. क्रोध। गुस्सा। ७ दूब। ८. वैशाख का महीना। ९. भँवर। १०. किला। दुर्ग। ११. मृग। हिरन। १२. नवनीत। मक्खन। १३. मंथ (देखें) नामक ज्वर।

मंथरा—स्त्री० [सं० मंथर+टाप्] रानी कैकेयी की एक प्रसिद्ध कुबड़ी दासी जिसके बहकावे मे आकर उसने राजा दशरथ से दो वर माँगे थे और राम को वन-वास दिलाया था। २. १२० हाथ लंबी, ६० हाथ चौड़ी और ३० हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु)

मंथ-शैल—पु० [ष० त०] मंदर पर्वत।

मंथान—पु० [सं०√मंथ्+आनच्] १ बड़ी मथानी। २. महादेव। शिव। ३. मंदर पर्वत। ४. एक भैरव का नाम। ५. मथानी। ६ अमलतास। ७. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण होते हैं।

मंथानक—पु० [सं० मंथान+कन्] एक तरह की घास।

मंथिता(तृ)—वि० [सं०√मंथ्+तृच्] [स्त्री० मंथिनी] जो मथानी से दही मथता हो। मथनेवाला।

मंथिनी—स्त्री० [सं० मंथ+इनि+ङीप्] दही मथने की मटकी।

मंथिप—वि० [सं० मंथिन्√पा (पीना)+क] मथा हुआ सोम पीनेवाला।

मंथी(थिन्)—वि० [सं० मंथ+इनि,] १. मंथन करने या मथनेवाला। २ कष्ट देनेवाला। पीड़क।

पु० मथा हुआ सोमरस।

मंद—वि० [सं० √मंद् (सुस्त पड़ना)+अच्] १ जिसकी गति, चाल, प्रवाह, वेग अपेक्षाकृत अपने वर्गवालो से कम या घटकर हो। धीमा। २ जिसमे अधिक उग्रता या तीव्रता न हो। जैसे—मंद ज्वर। ३. जो जल्दी या सहसा नही; बल्कि धीरे-धीरे अपना प्रभाव दिखाता हो। जैसे—मंद विष। ४. जिसमे जल्दी-जल्दी तथा अच्छी तरह काम करने की शक्ति या सामर्थ्य न हो। जैसे—मंद-बुद्धि। ५ बेवकूफ। मूर्ख। ६. खल। दुष्ट।

पु० १ वह हाथी जिसकी छाती और मध्य-भाग की बलि ढीली हो, पेट लंबा, चमड़ा मोटा, गला, कोख और पूछ की चँवरी मोटी हो।

२. शनि नामक ग्रह। ३ यम। ४. अभाग्य या दुर्भाग्य। ५. प्रलय।
†पु०=मद्य (शराब)।
प्रत्य० [स० मान् या मन् से फा०] किसी गुण या वस्तु से प्राप्त अथवा सपन्न। वाला। जैसे—दौलतमद, गरजमद, जरूरतमंद।

मंदऊ—पु० [देश०] घोडे की गले की हड्डी सूजने का एक रोग।

मंदक—वि० [स० मद+कन्] मूर्ख। ना-समझ।

मंदग—वि० [स० मद√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० मदगा] मद गतिवाला। धीमी चालवाला।
पु० महाभारत के अनुसार शाकद्वीप के अन्तर्गत चार जन-पदो मे से एक।

मंद-गति—स्त्री० [स० कर्म० स०] ग्रहो की गति की वह अवस्था जब वे अपनी कक्षा मे घूमते हुए सूर्य से दूर निकल जाते है।
वि० [ब० स०] धीमे चलनेवाला।

मद-ज्वर—पु० [स० कर्म० स०] प्राय. आता रहनेवाला ऐसा ज्वर जिसमे शरीर का तापमान बहुत अधिक न बढे। धीमा या हल्का ज्वर। (स्लो फीवर)

मदट—पु० [स० मन्द√अट्+अच्] देवदारु।

मंदता—स्त्री० [स० मद+तल्+टाप्] १ मद होने की अवस्था, कर्म या भाव। धीमापन। २ आलस्य। सुस्ती। ३ क्षीणता।

मद-धूप—पु० [स० कर्म० स०] काला धूप। काला डामर।

मंदना†—अ० [स० मन्द] १ मद होना। धीमा पडना। २. सुस्त होना। ३ फीका या हलका पडना।

मद-फल—पु० [स० ब० स०] गणित ज्योतिष मे ग्रहो की गति का एक प्रकार या भेद।

मदभागी—वि० [स० मदभाग्य] अभागा। बदकिस्मत।

मदर—पु० [स०√मद+अर्] १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे समुद्र मथा गया था। मन्दराचल। २ मदार नामक वृक्ष। ३ स्वर्ग। ४ दर्पण। शीशा। ५. पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत। ६ पुराणानुसार प्रासाद के बीस भेदो मे से दूसरा भेद या प्रकार। ७ एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे प्रत्येक चरण मे एक भगण (ऽ।।) होता है। ८ मोतियो का वह हार जिसमे आठ या सोलह लडियाँ हो।
वि०=मद।

मदर-गिरि—पु० [स० मध्य० स०] १. मदराचल पर्वत। २. मुगेर के पास का एक पहाड जहाँ सीता-कुड नाम का गरम पानी का कुड और जैनों, बौद्धो तथा हिन्दुओ के मदिर हैं।

मँदरा—वि० [स० मदर मि० प० मँदरा=नाटा] [स्त्री० मँदरी] छोटे आकार का। नाटा।
पु० [स० मडल] एक प्रकार का बाजा जिसे मडिल भी कहते है।

मँदरी—स्त्री० [देश०] खाजे की जाति का एक पेड।

मंदला—पु०=मदिल (बाजा)।

मंदसान—पु० [स०√मद् (प्राप्त होना)+सानच्)] १ अग्नि। २. प्राण। ३. निद्रा। नीद।

मंदा—स्त्री० [स० मन्द+टाप्] १ सूर्य की वह संक्राति जो उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र मे पडे। २. बल्ली करज।
वि० [म० मद] [स्त्री० भाव० मदी] १. मंद। धीमा। २. ढीला। शिथिल। ३. (शारीरिक अवस्था) जो ठीक न हो। ४. बिगड़ा हुआ। विकृत। ५ (बाजार या व्यापार) जिसमे तेजी न हो। जिसमे लेन-देन या क्रय-विक्रय बहुत कम हो रहा हो।

मंदाकिनी—स्त्री० [स०√मद्+आक, मदाक+इनि या मद√अक् (गति)+णिनि+ङीप्] १. पुराणानुसार गगा की वह धारा जो स्वर्ग मे है। २ आकाश-गगा। ३. सात प्रकार की सक्रातियो मे से एक। ४. चित्रकूट के पास बहनेवाली एक नदी। (महाभारत) ५. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. दो दो नगण और दो दो रगण होते है।

मंदाक्रांता—स्त्री० [स० मद-आक्रान्ता, कर्म० स०] सत्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. मगण, भगण, नगण और तगण और अत में दो गुरु होते है।

मंदाक्ष—वि० [स० मद-अक्षि,+षच्] सकुचित आँखोंवाला।
पु० लज्जा। शरम।

मंदाग्नि—स्त्री० [स० मद-अग्नि, कर्म० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी की पाचन शक्ति मद पड जाती है, भूख कम लगती है और खाई हुई चीज जल्दी हजम नही होती।

मदात्मा(त्मन्)—वि० [स० मद-आत्मन्, ब० स०] १ मूर्ख। २ नीच।

मदान—पु० [?] जहाज का अगला भाग। (लश०)

मंदानल—पु० [स० मंद-अनल, कर्म० स०] मदाग्नि (रोग)।

मंदाना*—अ० [हि० मंद] मद पडना या होना।
स० मन्द या धीमा करना।

मंदानिल—पु० [स० मद-अनिल, कर्म० स०] धीमे चलनेवाली हलकी और सुखद वायु।

मंदार—पु० [स०√मद्+आरन्] १ स्वर्ग के पांच वृक्षो मे से एक देव वृक्ष। २. आक। मदार। ३ स्वर्ग। ४ हाथ। ५ धतूरा। ६. हाथी। ७ विन्ध्य पर्वत के पास का एक तीर्थ। ८ हिरण्य-कश्यप का एक पुत्र।

मदारक—पु० [स० मदार+कन्]=मदार।

मदार-माला—स्त्री० [स० प० त०] बाइस अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात तगण और अत मे एक गुरु होता है।

मंदालसा—स्त्री०=मदालसा।

मंदिमा (मन्)—स्त्री० [स० मद+इमनिच्,] १. मंदता। धीमापन। २. शिथिलता। सुस्ती। ३. अल्पता। कमी।

मंदिर—पु० [स०√मद्+किरच्] १ रहने का घर। मकान। २. वह घर या मकान जिसमे पूजन आदि के लिए कोई मूर्ति स्थापित हो। देवालय। ३. किसी विशिष्ट शुभ कार्य के लिए बना हुआ भवन या मकान। जैसे—विद्या-मदिर। ४. नगर। शहर। ५ छावनी। ६. समुद्र। ७ घोडे की जाघ का पिछला भाग।

मंदिर-पशु—पु० [स० मध्य० स०] बिल्ली।

मंदिरा—स्त्री० [स० मन्दिर+टाप्] १ घुडसाल। अश्वशाला। २ मँजीरा नाम का बाजा।

मंदिल—पु० [स० मदिर] १ घर। मकान। ३ देव-मदिर। देवालय। ३. वह धन जो व्यापारी लोग किसी चीज का दाम चुकाने के समय किसी बड़े मन्दिर मे भेजने के लिए काट लेते है।

क्रि० प्र०—काटना ।
पु०=मदल (बाजा) ।

मंदी—स्त्री० [हि० मद] १. मद होने की अवस्था या भाव। २. बाजार की वह स्थिति जिसमे चीजो की दर या भाव उतर रहा हो। ३. बाजार की वह स्थिति जिसमे चीजें कम बिकती हो या रोजगार कम चलता हो।'तेजी' का विपर्याय । ४. अर्थ-शास्त्र मे, बाजार की वह स्थिति जिसमे लोगो की क्रयशक्ति कम होने के कारण चीजो की बिक्री घटने लगती है ।

मंदील—पु० [हि० मुड] एक प्रकार का सिरबंद जिस पर जरदोजी का काम बना रहता है।
†पु०=मदिल ।

मंदुरा—स्त्री० [सं०√मंद्+उरच्+टाप्] १. अश्व-शाला। घुडसाल। २. चटाई ।

मंदोच्च—पु०[सं० मद-उच्च, कर्म० स०] ग्रहो की एक प्रकार की गति जिससे राशि आदि का सशोधन करते है ।

मंदोदर—वि० [स० मद-उदर, ब० स०] [स्त्री० मदोदरी] छोटे या पतले पेटवाला ।

मंदोदरी—स्त्री० [स० मदोदर+ङीप्]रावण की पटरानी जो मय दानव की कन्या थी।

मँदोवै*—स्त्री०=मदोदरी ।

मंदोष्ण—वि० [स० मद-उष्ण, कर्म० स०] कम या थोड़ा गरम । कुनकुना ।

मंद्र—पु० [स०√मंद्+रक्] १. गभीर ध्वनि । जोर का शब्द । २ सगीत मे तीन प्रकार के स्वरो मे से एक जो अपेक्षया धीमा या मद होता है। ३ मृदग । ४ हाथियो की एक जाति ।
वि० १ मनोहर । सुन्दर। २. प्रसन्न । ३ गभीर । गहरा । ४ धीमा । मन्द । (शब्द या स्वर)

मंद्राज—पु० [सं०][स्त्री० मद्राजिन] १. दक्षिण का एक प्रधान नगर जो पूर्वी घाट के किनारे है। २ उक्त नगर के आसपास का प्रदेश जो अब कई राज्यो मे बँट गया है । मदरास ।

मंद्राजी—वि०, पु० =मदरासी ।

मंशा—स्त्री० [अ० मि० स० मनस्] १. इच्छा। इरादा । २ अभिप्राय । उद्देश्य ।

मंसना—स०=मनसना ।

मंसब—पु० [अ०] १ बडे अधिकारी या कार्य-कर्ता का पद। ओहदा। २. किसी पद या स्थान पर रहकर किया जानेवाला कर्तव्य या काम ।

मंसा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो बहुत शीघ्रता से बढती और पशुओ के लिए बहुत पुष्टिकारक समझी जाती है । मकड़ा।
†स्त्री०=मशा (अभिप्राय या उद्देश्य) ।

मंसूख—वि० [अ०] [भाव० मसूखी] (आज्ञा या निश्चय) जो रदकर दिया गया हो।

मंसूखी—स्त्री० [अ०] मसूख अर्थात् रद किये जाने की क्रिया, दशा या भाव ।

मंसूबा—पु०=मनसूबा ।

मंसूर—वि० [अ०] १ जिसे ईश्वरीय सहायता मिली हो। २. विजयी।

मअन†—पु०=मदन (कामदेव) ।

मइँ, मइ—सर्व०=मैं ।

मइका†—पु०=मायका ।

मइत्री *—स्त्री०=मैत्री ।

मइमंत†—वि०=मैमत (मतवाला) ।

मइया†—स्त्री० =मैया (माँ) ।

मइल†—वि० मैला ।
स्त्री० =मैल ।

मई—स्त्री० [स० मयी] १ मय जाति की स्त्री। २ ऊँटनी।
†वि० स्त्री० स० 'मयी' का विकृत रूप।
स्त्री० अगरेजी मे मसीही वर्ष का पाँचवां महीना जो अप्रैल के उपरात और जून से पहिले आता है ।

मई दिवस—पु० [हि० +स०] मई मास की पहली तारीख को श्रमिको द्वारा मनाया जानेवाला एक अतर्राष्ट्रीय समारोह जिसमे वे खुशियाँ मनाते, जलूस निकालते तथा सुभीतो की रक्षा तथा वृद्धि के लिए अपना सघटन दृढ करते है।

मउगा—पु० [?] [स्त्री० मउगी] १ पुरुष। मरद । २ नपुसक । हिजडा ।

मउर†—पु०=मौर ।

मउरना—अ०=मौरना ।

मउरी†—स्त्री०=मौरी ।

मउलसिरी—स्त्री०=मौलसिरी ।

मउलना†—स०=मसलना ।

मउसी—स्त्री०=मौसी (माता की बहिन) ।

मकई—स्त्री० [हि० मक्का] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी बालो (भुट्टो) मे से दाने निकलते है, जिनकी गिनती अन्नो मे होती है। मक्का । २ उक्त पौधे के दाने ।

मकड़-जाल—पु० [हि० मकडी+जाल] १ मकडी का बुना हुआ जाला। २ ऐसी बात या रचना जो विशेष रूप से दूसरो को फँसाने के लिए की या बनाई गई हो।

मकड़ा—पु० [देश०] एक प्रकार की घास। मचाना। खमकरा। मनसा।
पु०=नर मकडी ।

मकड़ाना—अ० [हिं० मकडी] १ मकडी की तरह चलना । २ अकड-कर चलना।

मकडी—स्त्री० [स० मर्कटक] १. एक प्रसिद्ध कीडा जो अपने मुँह मे से निकाले हुए एक तरह के लसीले पदार्थ से चक्राकार जाल बुनता है और उसमे फँसी हुई मक्खियो आदि को खाता है। २ सतो की परिभाषा मे माया ।

मकतब—पु० [अ० मक्तब] १ वह स्थान जहाँ बैठकर कोई कुछ लिखता-पढता हो। २ छोटे बालको के पढने का स्थान । पाठशाला । मदरसा । चटसाल। ३ छोटे बच्चो को कराया जानेवाला शिक्षा का आरम्भ । विद्यारम्भ।

मकतबखाना—पु० [अ० मक्तब+फा० खान] १ मकतब। पाठशाला। २ जुआडियो के अड्डे । (जुआरी)

मकतबा—पु० [अ० मक्तब] १ पुस्तकालय। २ पुस्तक विक्रय-स्थान।
मकतल—पु० [अ० मक्तल] वध-स्थान। वध-भूमि।
मकता—पु० [सं० मगध] मगध देश। (आईन अकबरी में मगध देश का यही नाम दिया गया है।)
पु० [अ० मक्तः] गजल के पहले शेर का पहला चरण।
मकतूल—वि० [अ० मक्तूल] वधित। हत।
मकदूनिया—पु० [अ० मक्दूनिय] बालकन का एक प्रदेश। सिकंदर यहीं राज्य करता था। (मेसिडोनिया)
मकदूर—पु० [अ० मकदूर] १. ताकत। शक्ति। सामर्थ्य। २ काबू। वश। ३. गुंजाइश। समाई। ४ धन-संपत्ति।
मकना—पु० [अ० मिक्नः] वह रंगीन ओढ़नी जिसे विवाह के समय दुल्हिन को पहनाया जाता है। (मुसलमान)
†पु०=मकुना। (दे०)
मकनातीस—पु० [अ०] [वि० मिकनातीसी] चुंबक पत्थर।
२. चुंबक।
मकफूल—वि० [अ० मक्फूल] १ ताले में बन्द किया हुआ। २. रेहन किया हुआ। गिरो रखा हुआ।
मकबरा—पु० [अ० मक्बर] १. वह कब्र जिस पर इमारत या गुंबद बना हो। २. कब्र पर बनी हुई इमारत या गुंबद।
मकबूजा—वि० [अ० मक़्बूज.] जिस पर कब्जा या अधिकार किया गया हो। अधिकृत।
मकबूल—वि० [अ० मक़्बूल] [भाव० मकबूलियत] १ जो कबूल कर लिया या मान लिया गया हो। स्वीकृत। २. जिसे सब लोग कबूल करते या मानते हो। मान्य और सर्वप्रिय। ३. पसंद किया हुआ। ४ रुचिकर।
मकबूलियत—स्त्री० [अ०] १ कबूल या स्वीकृत किये जाने की अवस्था या भाव। २ लोकप्रियता या सर्वप्रियता। ३ पसंद। रुचि।
मकरंद—पु० [सं० मकर√अन्द् (बाँधना)+अण्, शक० पररूप] १. फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। २ फूल का केसर। ३. किंजल्की। कुन्द का पौधा या फूल। ४. संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ५ वाम नामक सवैया-छंद का दूसरा नाम।
मकरंदवती—स्त्री० [सं० मकरन्द+मतुप्, वत्व,+ङीप्] पाटला लता।
मकर—पु० [सं० मुख√कृ (फेंकना)+ट, पृषो० सिद्धि] [स्त्री० मकरी] १ मगर या घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जल-जंतु जो कामदेव की ध्वजा का चिह्न और गंगा जी तथा वरुण का वाहन माना गया है। २ बारह राशियों में से दसवीं राशि जिसमें उत्तराषाढ नक्षत्र के अन्तिम तीन पाद, पूरा श्रवण नक्षत्र और धनिष्ठा के आरम्भ के दो पाद हैं। उसकी आकृति मकर (जंतु) के समान मानी गई है। ३ पौष माघ मास जो मकर संक्रांति से आरंभ होता है। उदा०—दासन मकर चैन होत है नदी न कौं।—सेनापति। ४ कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ मछली। ७ सुश्रुत के अनुसार कीड़ों और छोटे जीवों का एक वर्ग। ९ अस्त्र-शस्त्र आदि के वार निष्फल बनाने के लिए उन पर पढ़ा जानेवाला एक प्रकार का मंत्र। ९ प्राचीन भारत में, सैनिक व्यूह-रचना का एक प्रकार। १०. छप्पय के उनतालिसवें भेद का नाम जिसमें ३२ गुरु, ८८ लघु, १२० वर्ण की १५२ मात्राएं अथवा ३२ गुरु, ८४ लघु, ११६ वर्ण, कुल १४८ मात्राएँ होती हैं।
पु० [फा० मक्र] १ छल। कपट। २. दूसरों को धोखे में रखने के लिए बनाई जानेवाली कोई स्थिति।
क्रि० प्र०—रचना।—फैलाना।
मुहा०—मकर साधना=छलपूर्वक दूसरों पर यह प्रकट करना कि हम बहुत ही हीन दशा में हैं।
मकर-कुंडल—पु० [मध्य० स०] मकर के आकृति का कानों में पहनने का कुंडल।
मकर-केतन—पु० दे० 'मकर-केतु'।
मकर-केतु—पु० [ब० स०] कामदेव।
मकर-ध्वज—पु० [ब० स०] १. कामदेव। २. वैद्यक में चंद्रोदय नामक रसौषध। ३. लौंग। ४. पुराणानुसार अहिरावण का द्वारपाल जो हनुमान का पुत्र माना जाता है। मत्स्योदर।
मकर-पति—पु० [स०प०त०] १. कामदेव। २ ग्राह नामक जल-जन्तु।
मकर-व्यूह—पु० [मध्यम० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमें सैनिक मकर के आकार में खड़े किये जाते हैं।
मकर-संक्रांति—स्त्री० [स० म० त०] वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। यह पुण्य काल माना जाता है।
मकर-सप्तमी—स्त्री० [प० त०] माघ शुक्ला सप्तमी।
मकरांक—पु० [सं० मकर-अंक, ब० स०] १. कामदेव। २ समुद्र। ३. एक मनु का नाम।
मकरा—पु० [सं० वरक] महुआ नामक अन्न।
पु० [हिं० मकड़ा] १. भूरे रंग का एक कीड़ा जो दीवारों और पेड़ों पर जाला बनाकर रहता है। २ हलवाइयों की एक प्रकार की चौघड़िया जिससे सेव बनाया जाता है। यह एक चौकी होती है। ३ दे० 'मकड़ा'।
मकराकर—स्त्री० [मकर-आकर, प० त०] समुद्र।
मकराकार—वि० [मकर-आकार, ब० स०] मकर की आकृति जैसा।
मकराकृत—वि० [मकर-आकृत, सुप्सुपा स०] मकर की आकृति जैसा बनाया हुआ। जैसे—मकराकृत कुंडल।
मकराक्ष—पु० [मकर-अक्षि, ब०स०,+षच्] खर नामक राक्षस का पुत्र जो रावण का भतीजा था।
मकराज—स्त्री० =कैंची।
मकरानन—पु० [मकर-आनन, ब० स०] शिव का एक अनुचर।
मकराना—पु० [देश०] राजस्थान का एक प्रसिद्ध क्षेत्र जो संगमरमर की खान के लिए ख्यात है।
मकराराई—स्त्री० [मकरा?+राई] काली राई।
मकरालय—पु० [मकर-आलय, ष० त०] समुद्र।
मकराश्व—पु० [मकर-अश्व, ब० स०] १. वरुण। २ तान्त्रिकों का एक प्रकार का आसन जिसमें हाथ और पैर पीठ की ओर कर लिए जाते हैं।
मकरिका-पत्र—पु० [सं० उपमि० स०] मछली के आकार का बना हुआ चंदन का चिह्न जो प्राचीन काल में स्त्रियाँ कनपटियों पर बनाती थी।

मकरी—स्त्री० [स० मकर+ङीप्] १. मकर या मगर नामक जल-जन्तु की मादा। २ एक प्रकार का वैदिक गीत। ३. चक्की मे लगी हुई एक लकडी जो करीब आठ अगुल की होती है। ४. जहाज मे फर्श या खमो आदि मे लगा हुआ लकडी या लोहे का वह चौकोर टुकड़ा जिसके अगले दोनो भाग अँकुसे के आकार के होते हैं।
†स्त्री०=मकडी।

मकरूक—भू० कृ० [अ०] कुर्क किया हुआ (माल)। आसजित।

मकरूज—वि० [अ० मक्रूज] कर्जदार। ऋणी।

मकरूह—वि० [अ० मक्रूह] १ घृणित। २ अपवित्र। ३ खराब या गन्दा, बुरा। ४ (काम) जो इस्लाम के अनुसार निषिद्ध या वर्वजित हो।

मकरेड़ा†—पु० [हिं० मक्का+एडा (प्रत्य०)] मक्के के पौवे का डंठल।

मकरौरा†—पु०=मकोडा।

मकलई—स्त्री० [मकालिया बदरगाह से] एक प्रकार का गोद जो अदन से आता है।

मकलूम—वि० [अ० मक्लूब] उलटा हुआ। औंवा।
पु० वह शब्द या पद जो सीधा और उलटा दोनो ओर से पढने पर समान हो। जैसे—दरद, सरस आदि।

मकसद—पु० [अ० मक्सिद] १ उद्देश्य। २ मनोरथ। ३ अभिप्राय।

मकसूद—वि० [अ० मक्सूद] १. अभिप्रेत। २ उद्दिष्ट।
पु०=मकसद।

मकसूम—वि० [अ०] बाटा हुआ। विभक्त।
पु० १ भाग्य। किस्मत। तकदीर। २. गणित मे भाज्य। ३ भाग। हिस्सा।

मकाँ—पु०=मकान।

मकाई—स्त्री०=मकई (ज्वार)।

मकान—पु० [अ०] [बहु० मकानात] १ गृह। घर। २ निवास-स्थान। रहने की जगह। ३ मूल निवास-स्थान। जैसे—वह रहते तो हैं बम्बई मे पर उनका मकान मथुरा मे है।

मकानदार—पु० [अ०+फा०] मकान मालिक।

मकाम—पु०=मुकाम (स्थान)।

मकुंद†—पु०=मुकुंद।

मकु—अव्य० [स० √मक्+ड बा० ?] १ विकल्प-वाचक शब्द। चाहे। २ बल्कि। वरन्। ३ हो सकता है कि। कदाचित्। शायद। ४ यदि ऐसा हो जाता तो अच्छा होता। उदा०—मकु तेहि मारग होइ परौं, कत धरँ जहँ पाउँ।—जायसी।

मकुआ†—पु० [हिं० मक्का] बाजरे के पत्तो का एक रोग।

मकुट†—पु०=मुकुट।

मकुना—पु० [स० मनाक=हाथी] [स्त्री० मकुनी] १ वह नर हाथी जिसके दाँत न हो अथवा छोटे छोटे दाँत हो। २ ऐसा वयस्क पुरुष जिसे मूँछें न निकली हो या बहुत कम निकली हो। (परिहास और व्यग्य)
वि० अपेक्षाकृत कम ऊँचाईवाला।

मकुनी—स्त्री० [देश०] १ आटे की लोई के अन्दर बेसन या चने की पीठी भर कर बनाई हुई कचौरी। बेसन की रोटी। २ चने का बेसन और गेहूँ का आटा एक मे मिलाकर उसमे नमक, मेथी, मँगरैल आदि मिलाकर तथा मूसल पर सेककर पकाई हुई बाटी। ३ मटर के आटे की रोटी।

मकुर—पु० [स० √मक्+उरच्, पृषो० सिद्धि] १ कुम्हार का वह डडा जिससे वह चाक चलाता है। २ बकुल। मौलिसिरी। ३ दर्पण। मुकुर। शीशा। ४ फूल की कली।

मकुष्ठ—पु० [स० मकु√स्था+क] १ एक प्रकार का धान। २ मोठ नामक अन्न। वन मूँग।

मकुष्ठक—पु० [स० मकुष्ठ+कन्] मोठ नामक अन्न।

मकूनी—स्त्री० =मकुनी।

मकूलक—पु० [सं० √मक्+ऊलच्+कन्] १. कली। २ दनी का पेड़।

मकूला—पु० [अ० मकूल] १ उक्ति। कथन। वचन। २. कहावत। लोकोक्ति।

मकेरा—पु० [हिं० मक्का] वह खेत जिसमे ज्वार या बाजरा बोया जाता है।

मको—स्त्री०=मकोय।

मकोइ—पु०=मकोई।

मकोइया—वि० [हिं० मकोय+इया (प्रत्य०)] मकोय के रग के समान। ललाई लिए हुए पीला रग।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

मकोई—स्त्री०=मकोय।

मकोडा—पु० [देश०] १ हिन्दी 'कीडा' का अनुकरण वाचक शब्द। जैसे—कीडा-मकोडा। २. काले रग का बडा च्यूँटा। (पश्चिम)

मकोय—स्त्री० [स० काकमाता या काकमाची] १ डेढ-दो हाथ ऊँचा एक तरह का पौधा जिसमे छोटे-छोटे खट-मीठे फल लगते है। २ उक्त फल। रसभरी।

मकोरना†—स० =मरोडना।

मकोसल—पु० [देश०] एक प्रकार का सदाबहार ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी से नावे बनाई जाती है।

मकोह†—स्त्री०=मकोय।

मकोहा*—पु० [स० मतुठा या हिं०मकोय ?] प्राय फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का लाल रग का कीडा।

मक्कड†—पु० [हिं० मकडी] १ बडी मकडा। २ नर मकड़ी।

मक्कर†—पु०=मकर (छल या धोखा)।
पु०=मकडा।

मक्का—पु० [अ०मक्क] सऊदी अरब की राजधानी जहाँ धार्मिक विचारो वाले मुसलमान हज्ज करने जाते हैं। यही मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था।
†पु०=मकई (ज्वार)।

मक्कार—वि० [अ०] [भाव० मक्कारी] १ कपटी। छली। २. दूसरो को धोखा देने के लिए अपनी हीन स्थिति बनानेवाला।

मक्कारी—स्त्री० [अ०] १ मक्कार होने की अवस्था या भाव। २. कोई छल या धूर्ततापूर्ण कार्य।

मक्की†—स्त्री० दे० 'मकई'।

मक्कुल—पु० [सं० √मक्क् (गति) +उलच्] शिलाजीत।

मक्कोल—पु० [स० √मक्क्+ओल] खडिया।

मक्खन—पु० [स० म्रक्षण] १ दूध, दही आदि को मथकर उसमे से

निकाला जानेवाला एक प्रसिद्ध स्निग्ध सार पदार्थ जिसे तपाकर घी बनाया जाता है। नवनीत। (बटर)

मुहा०—(किसी को) मक्खन लगाना=बहुत अधिक खुशामद या चापलूसी करना। कलेजे पर मक्खन मला जाना=शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता और संतोष होना। कलेजा ठंडा होना।

२. एक प्रकार का सेम (फली)।

मक्खी—स्त्री०[सं० मक्षिका]१ एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो प्रायः सारे संसार मे पाया जाता है। यह प्रायः खाने-पीने की चीजों पर बैठकर उनमे संक्रामक रोगों के कीटाणु फैलाता है। मक्षिका।

पद—मक्खीचूस, मक्खी-मार।

मुहा०—जीती मक्खी निगलना=(क) जान-बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य या पाप करना जिसके कारण आगे चलकर बहुत बड़ी हानि हो। (ख) जान-बूझकर किसी के दोष आदि की ओर ध्यान न देना। नाक पर मक्खी न बैठने देना=(क) किसी को अपने ऊपर एहसान करने का तनिक भी अवसर न देना। (ख) अपने संबंध मे कोई, ऐसा काम या बात न होने देना जिसमें किसी प्रकार की दीनता सूचित होती हो। मक्खी की तरह निकाल देना या निकाल फेंकना=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग या दूर कर देना। मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना=छोटे-छोटे पापों से बचना, पर बहुत बड़े-बड़े पाप करने मे संकोच न करना। मक्खी मारना=बिलकुल खाली और निकम्मे बैठे रहना, अथवा तुच्छ और व्यर्थ के काम करना।

२ मधु-मक्खी। ३ बंदूक के अगले भाग मे वह उभरा हुआ अंश जिसकी सहायता से निशाना साधा जाता है।

मक्खीचूस—पु०[हिं० मक्खी+चूसना]१ घी आदि मे पड़ी हुई मक्खी तक को चूस लेनेवाला व्यक्ति। २ लाक्षणिक अर्थ मे बहुत बड़ा कंजूस।

मक्खीदानी—स्त्री० [हिं० मक्खी+फा० दानी] एक तरह का जालीदार कपड़े का बना हुआ संदूक जिसमे मक्खियाँ फँसाई जाती है।

मक्खीमार—पु० [हिं० मक्खी+मारना]१ एक प्रकार का बहुत छोटा जानवर जो प्रायः मक्खियाँ मार मारकर खाया करता है। २. एक प्रकार की छड़ी जिसके सिरे पर चमड़ा लगा होता है। जिसकी सहायता से लोग प्रायः मक्खियाँ उड़ाते है। ३. बहुत ही घृणित व्यक्ति।

वि० (चीज) जिसकी सहायता से मक्खियाँ मारी जाती हो। जैसे—मक्खीमार कागज।

मक्खीलेट—स्त्री०[हिं०मक्खी+लेट ?] एक प्रकार की जाली जिसमे मक्खी के आकार की बहुत छोटी छोटी बूटियाँ होती है।

मक्र—पु० दे० 'मकर' (छल या धोखा)।

मक्ष—पुं०[सं०√मक्ष्+घञ्]१ अपना दोष छिपाना। २. क्रोध। ३. समूह।

मक्षदृग—पु०[सं० मत्स्यदृग्] एक प्रकार का मोती जिसके विषय मे लोगो की धारणा है कि इसके पहनने से पुत्र मर जाता है।

मक्षिका—स्त्री०[सं०√मश् (शब्द करना)+सिकन्, पृषो० सिद्धि] १ मक्खी। २ शहद की मक्खी।

मक्षिका-मल—पु०[ष० त०] मोम।

मक्षिकासन—पु० [मक्षिका-आसन, ष० त०] शहद की मक्खी का छत्ता।

मखसी—पु०[देश०]१. वह मश्की घोड़ा जिसपर काले फूल या दाग हों। २. बिलकुल काले रंग का घोड़ा।

मख—पु०[सं०] यज्ञ।

मखजन—पु०[अ० मख्ज़न]१. कोष। खजाना। २. भंडार।

मखतूल—पु०[सं० महर्घ तूल] काला रेशम।

मखत्राता—वि०[सं० मखत्रातृ] जो यज्ञ की रक्षा करता हो।

पु० रामचन्द्र जिन्होंने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की थी।

मखदूम—वि०[अ०]१. जिसकी खिदमत की जाय। २. जिसकी खिदमत या सेवा करना उचित हो। सेव्य। ३. पूज्य। मान्य।

पु० मालिक। स्वामी।

मखदूमी—पुं०[अ०] पूज्य। सेव्य। (संबोधन)

मखदूश—वि०[अ० मख्दूश]१. जिससे खटका या खतरा अथवा भय हो। २ धूर्त्त।

मखद्वेषी(षिन्)—पुं०[सं० मख√द्विष् (द्वेष करना)+णिनि, उप० स०] राक्षस।

मखधारी(रिन्)—पु० [सं० मख√धृ (धारण करना)+णिनि, उप० स०] यज्ञ करनेवाला।

मखन*—पु०=मक्खन।

मखना—पुं०=मकुना।

मख-नाथ—पु०[सं० ष० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।

मखनिया—वि०[हिं० मक्खन+इया (प्रत्य०)] १. मक्खन-संबंधी। मक्खन का। (क्व०) २ (दूध) जिसे मथकर उसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो। सप्रेटा। ३. (दही) जो मक्खन निकाले हुए दूध को जमाकर बनाया गया हो।

पु०१ मक्खन बेचनेवाला व्यक्ति। २. उक्त दूध का जमाकर तैयार किया जानेवाला दही।

मखनी—स्त्री० [हिं० मक्खन] प्रायः एक बित्ता लम्बी एक प्रकार की मछली।

मख-पाल—पु०[सं० मख√पा (रक्षा करना)+णिच्+अण्] यज्ञ की रक्षा करनेवाला। यज्ञ-रक्षक।

मखफी—वि०[अ० मख्फी] छिपा हुआ। गुप्त।

मखमय—पु०[सं० मख+मयट्] विष्णु।

मखमल—स्त्री०[अ० मख्मल] [वि० मखमली] १. एक तरह का बढ़िया, महीन, चिकना तथा रोएँदार कपड़ा। २. एक प्रकार की रंगीन दरी जिसके बीचोबीच एक गोल चँदोआ बना रहता है।

मखमली—वि० [अ० मखमल+ई (प्रत्य०)] १ मखमल का बना हुआ। जैसे—मखमली टोपी। २. मखमल का-सा कोमल और चमकीला। जैसे—मखमली किनारे की धोती।

मखमसा—पु०[अ० मख्मस.] १ झगड़ा। २ झमेला। बखेड़ा। ३. डर। भय।

मखरज—पु० [अ० मख्रज] १. उद्गम। स्रोत। २ मूल। ३ कंठ (अक्षर के उच्चारण का स्थान)।

मखराज—पु०[सं० ष० त०] यज्ञो में श्रेष्ठ राजसूय यज्ञ।

मखलूक—पु०[अ० मख्लूक]१ ईश्वर की सृष्टि। संसार। जगत। २ मनुष्य। लोग।

मखलूकात—स्त्री०[अ० मख्लूकात] चराचर जगत और प्राणी वर्ग। सृष्टि के सब जीव और वनस्पतियाँ।

मखलूत—वि० [अ० मख्लूत] १ मिला-जुला। मिश्रित। २ गड्ड-मड्ड।

मखवाल्क्य—पु०=याज्ञवल्क्य।

मख-शाला—स्त्री०[स० ष० त०] यज्ञ करने का स्थान। यज्ञ-शाला।

मखसूस—वि०[अ०मख्सूस]१. जो खास तौर पर या किसी विशेष कार्य के लिए अलग कर दिया गया हो। विशिष्ट। खास। २ प्रधान। प्रमुख।

मख-स्वामी—पु० [स० प० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।

मखाग्नि—स्त्री०[स० मख-अग्नि, ष० त०] यज्ञ की सस्कृत अग्नि।

मखाना—पु०[स० मखान्न] तालमखाना । (देखें)

मखान्न—पु०[स० मख-अन्न, सुप्सुपा स०] तालमखाना।

मखालय—पु०[म० मख-आलय, ष० त०] यज्ञ-शाला।

मखी†—स्त्री०=मक्खी।

मखीर†—पु०[हिं० मक्खी]शहद। मधु।

मखेश—पु०[स० मख-ईश, ष० त०] राजसूय यज्ञ।

मखोना†—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपडा।

मखौल—पु०[देश०] ऐसी मजेदार तथा व्यग्यपूर्ण वात जो, प्राय किसी को हास्यास्पद वनाने के लिए कही जाती है।

क्रि० प्र०—उडाना।

मखौलिया—वि० [हिं० मखौल+इया (प्रत्य०)] १ मखौल-सवधी। २ मखौल के रूप मे होनेवाला।

पु० व्यक्ति जो मखौल करते रहने का अभ्यस्त हो।

मग—पु०[√मग् (गति)+अच्, पृपो० सिद्धि?]१ मगह देश। मगध। २ मगध का निवासी। ३ एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। ४. पिप्पलीमूल। पीपल।

पु०=मार्ग (रास्ता)।

(मुहा० के लिए दे० 'वाट' और 'रास्ता')।

मगज—पु०[अ० मग्ज]१ दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—(किसी का) **मगज खाना**=वहुत वक-वक करके तग करना। **मगज खाली करना**= वहुत वक-वक कर या परिश्रम करके मस्तिष्क थकाना। **मगज खौलना**=क्रोध के कारण दिमाग या मस्तिष्क खराव होना। **मगज चलना या चल जाना**=(क) उन्माद या पागलपन का रोग होना। (ख) अभिमान आदि से मत्त होना।

२ फलो आदि के अन्दर की गिरी। जैसे—वादाम का मगज।

मगज-चट—पु०[हिं० मगज+चाटना] वकवादी। वकनेवाला।

मगज-चट्टी—स्त्री०[हिं० मगज+चाटज] वकवाद। वकवक।

मगज-पच्ची—स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] सिर खपाना। सिर-पच्ची।

मगजी—स्त्री०[देश०] कपडे के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

मगण—पु० [स० ष० त०] कविता के आठ गणो मे से एक जिसमे ३ गुरु वर्ण होते है। लिखने मे इसका स्वरूप यह है, —SSS।

मगद—पु०=मगदल (मिठाई)।

मगदर—पु०=मगदल।

मगदल—पु० [स० मुग्द] उड़द (या मूँग) के रवो को भूनकर, फेंटकर तया चीनी मिलाकर वनाया जानेवाला लड्डू।

४—३४

मगदा—वि०[स० मग+दा (प्रत्य०)] मार्ग-प्रदर्शक।

मगदूर†—पु०=मकदूर (शक्ति)।

मगध—पु०[स० मग√धा (धारण)+क] [वि० मागध] १. दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम। २ उक्त देश का निवासी। ३ दे० 'मागध'।

मगधा—स्त्री०[स० मगध+अच्+टाप्] पिप्पली।

मगधाधिप—पु०[स० मगध-अधिप, ष० त०]१ मगध का राजा। २. जरासध।

मगधेश—पु०[स० मगध+ईश,ष०त०] मगध देश का राजा। जरासध।

मगधेश्वर—पु०[स० मगध-ईश्वर, ष० त०] मगधेश।

मगन—वि० [स० मग्न]१. डूबा हुआ। २ बहुत अधिक आनन्द या प्रसन्नता मे लीन। ३ किसी काम या बात मे पूरी तरह से लीन। जैसे—इस समय वह अपने काम मे मगन है। ४. रीझा हुआ। लट्टू। ५. वेहोश। मूर्च्छित। (क्व०)

मगनना—स०[स० मग्न]१. मग्न या प्रसन्न करना। २. किसी को मग्न करके अपने मे लीन या आत्मसात् करना। उदा०—अगनि न दहै पवनु नहिं मगनै तसकरु नेरि न आवै।—कवीर।

अ० मग्न होना।

मगना—अ०[स० मग्न] १ मगन या लीन होना। तन्मय होना। २. डूबना।

मगमा—पु०[देश०] देशी कागज वनाने मे उसके लिए तैयार किए हुए गूदे को धोने की क्रिया।

मगर—पु० [स० मकर] १. घड़ियाल। २ मछली। ३ मगर या मछली के आकार का कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. नेपाल मे वसी हुई एक जाति।

†पु० [स० मग] अराकान देश जहाँ मग नामक जाति के लोग रहते थे। उदा०—खसिया मगर जहाँ लगि मले।—जायसी।

अव्य०[फा०]१ लेकिन। परन्तु। पर। जैसे—आप कहते तो है, मगर यहाँ सुनता कौन है। २ किसी प्रकार भी। (क्व०) उदा०—चैन तुझ विन मुझे नही आता। नही आता, मगर नही आता।—कोई शायर।

मुहा०—**अगर-मगर करना**=(क) आना-कानी करना।(ख) तर्क-वितर्क करना।

मगरधर—पु०[स० मकर-धर] समुद्र। (डिं०)

मगरव—पु० [अ०] पश्चिम दिशा।

पद—**मगरव की नमाज**=वह नमाज जो सूर्य अस्त होने के समय पढी जाती है।

मगर-वॉस—पु०[हिं० मगर?+वाँस] एक प्रकार का काँटेदार वाँस जो पश्चिमी घाट मे होता है।

मगर-मच्छ—पु० [हिं० मगर+मछली]१ मगर या घडियाल नामक प्रसिद्ध जल-जन्तु। ३ वहुत वडी मछली।

मगरा†—वि० [अ० मगरूर] १. अभिमानी। घमडी। २ ढीठ। धृष्ट। ३ ढीला। मट्ठर। सुस्त। ४. अकर्मण्य। ५. जिद्दी। हठी। ६ उद्दड। उद्धत। ७ चुप्पा। घुन्ना।

मगरापन—पु०[हिं० मगरा+पन (प्रत्य०)] 'मगरा' होने की अवस्था या भाव।

मगरिबी—वि०[अ०] पश्चिम दिशा का। पश्चिमी।

मगरी|—स्त्री० [देश०] १ ढालुएँ छप्पर के बीच का या सबसे ऊँचा भाग। २ छप्पर के उक्त अंश या भाग पर रखी जानेवाली मोटी लकड़ी या शहतीर। ३ कोई मोटी और बहुत लंबी लकड़ी। लाठ। ५ आसपास की भूमि से ऊँचा स्थान। ६ मृग की आकृति का एक प्रकार का कद।

मगरूर—वि०[अ०] [भाव० मगरूरी] जिसे गरूर हो। घमंडी। अभिमानी।

मगरूरी—स्त्री०[अ० मगरूर+ई (प्रत्य०)] १ मगरूर होने की अवस्था या भाव। २ घमंड। अभिमान।

मगरो|—पु०[देश०] नदी का ऐसा किनारा जिसमें बालू के साथ कुछ मिट्टी मिली हो और जो जोतने-बोने के योग्य हो।

मगरोसन—स्त्री०[अ० मग्ज+रौशन] सुंघनी। नसवार।

मगली एरड—पु० [देश० मगली+हि० एरड] रतनजोत। बागबेरडा।

मगलूब—वि० [अ० मगलूब] १ पराजित। पराभूत। २ अधीन। ३. दुर्बल। कमजोर।

पु० फारसी संगीत के आधार पर चौबीस शोभाओं में से एक।

मगस—पु० [स० मग] शाकद्वीप की एक प्राचीन योद्धा जाति का नाम।

†पु०[देश०] पेरे हुए ऊख की सीठी। खोई।

मगसिर—पु०[स० मार्गशीर्ष] अगहन मास।

मगह—पु०[स० मगध] मगध देश।

मगहपति—पु० [स० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासंध।

मगहय—पु० [स० मगध] मगध देश।

मगहर—पु०[स० मगध] मगध देश।

मगही—वि०[स० मगह+ई (प्रत्य०)] १. मगध-संबंधी। मगध देश का।

पु०मगध या बिहार के कुछ भागों में होनेवाला एक प्रकार का बढ़िया पान।

मगु—पु०[स० मार्ग] मग। मार्ग। पथ।

मगोर—स्त्री० [देश०] सींगी की तरह की एक प्रकार की मछली जो बिना छिलके की और कुछ लाली लिए हुए काले रंग की होती है। मगुर।

मग्ग—पु०[स० मार्ग] राह। रास्ता।

मग्ज—पु० [अ०]१ मस्तिष्क। दिमाग। २ अक्ल। बुद्धि। ३ कुछ विशिष्ट फलों के अन्दर का कड़ा गूदा। गिरी। (मुहा० के लिए दे० 'मगज')।

मग्ज-रोगन—पु० [फा०] सुंघनी। नास। दे० 'सुंघनी'।

मग्न—वि०[स० √मस्ज् (शुद्धि)+क्त]१ डूबा हुआ। २ किसी काम या बात में तन्मय। लीन। ३ खूब प्रसन्न। ४ नशे में चूर। मदमस्त। ५ नीचे की ओर झुका या दबा हुआ। जैसे—मग्न नासिका, मग्न स्तन।

पु० एक प्राचीन पर्वत।

मग्नांशुक—पु०[स० मग्न-अंशुक,कर्म० स०]१ ऐसा महीन कपड़ा जो गीला होने पर शरीर से चिपक जाता हो तथा जिसमें से शरीर के विभिन्न अंग साफ-साफ दिखाई पड़ते हों। २ चित्रकला में, वह अवस्था या चित्रण जिसमें गीला वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाये जाते हैं। (वेट ड्रैपरी)

मघ—पु०[सं०√मंह् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि]१. एक प्राचीन द्वीप का नाम। २. एक प्राचीन देश। ३. आनंद। ४ दे० 'मघा'। ५. धन। ६. पुष्पभेद। ७. एक पौधा और उसका फूल।

मघई|—वि०,पु० मगही (पान)।

मघवा(वन्)—पु० [सं० मघ (पूज्य) +मतुप्, म—व] १. इंद्र। २. सातवें द्वापर के व्यास। ३ उल्लू।

मघवाजित्—पु०[सं० मघवजित्] इन्द्र। (डिं०)

मघवाप्रस्थ—पु०[सं० मघवत्प्रस्थ] इन्द्रप्रस्थ (नगर)।

मघवारिपु—पु०[सं० मघवद्रिपु] इन्द्र का शत्रु। मेघनाद।

मघा—स्त्री०[सं० √मह्+घ,+टाप्] १ २७ नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जो पाँच तारों का है। (हि० में कभी-कभी पुंलिंग में भी प्रयुक्त होता है) २ छोटी पीपल।

मघा-त्रयोदशी—स्त्री०[मध्य० स०] भाद्र कृष्ण त्रयोदशी।

मघाना—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास। मकड़ा। (देखें)

मघाभव—पु०[सं० मघा√भू (होना)+अच्] शुक्र (ग्रह)।

मघारना—स०[हि० माघ+आरना (प्रत्य०)] आगामी वर्षा ऋतु में धान बोने के लिए माघ के महीने में हल चलाना।

मघोना|—पु०=[स्त्री० मघोनी] मघवा (इन्द्र)।

*पु० =मेघौना।

मघोनी—स्त्री० [सं० मघवन्+ङीप्,] मघवा अर्थात् इन्द्र की पत्नी। इन्द्राणी। शची।

मचक—स्त्री०[हि० मचकना] मचकने की क्रिया या भाव।

मचकना—अ०[मच मच से अनु०] मच-मच शब्द उत्पन्न होना।

स० १. मच मच शब्द उत्पन्न करना। मचकाना। २. इस प्रकार दबाना कि मच-मच शब्द हो।

मचका—पु०[हि० मचकना] [स्त्री० अल्पा० मचकी]१. झोंका। २ धक्का। ३. झूले की पेंग।

मचकाना—स०[हि० मचकना का स०]१ मच मच शब्द उत्पन्न करना। २. किसी को दबाते हुए मच मच शब्द करने में प्रवृत्त करना।

मचकी|—स्त्री०[हि० मचकाना] छोटा झूला।

मचक्रुक—पु० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक यक्ष का नाम। २. कुरुक्षेत्र के समीप स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

मचना—अ०[अनु०]१. जोरों से या धूमधाम से आरम्भ होना। जैसे—फाग या होली मचना। २. चारों ओर फैलना। छा जाना। जैसे—किसी बात की धूम मचना।

†स० मचाना।

मचमचाना—अ०[अनु०] काम-वासना के प्रबल आवेग में होना। बहुत अधिक कामातुर होना।

स० इस प्रकार दबाना कि मच मच शब्द होने लगे। जैसे—कुरसी या पलंग मचमचाना।

मचमचाहट—स्त्री० [हि० मचमचाना+आहट (प्रत्य०)] १ मचमचाने की क्रिया या भाव। २. काम-वासना का बहुत अधिक आवेग।

मचमची—स्त्री०=मचमचाहट।

मचल—स्त्री०[हि० मचलना]१ मचलने की क्रिया या भाव। २ मचलापन।

मचलन—स्त्री०=मचल।

मचलना—अ०[अनु०] १ किसी चीज की प्राप्ति के लिए मन का आतुर या उद्विग्न होना। २ प्राय बच्चो का कोई चीज पाने या लेने के लिए आतुरता प्रदर्शित करते हुए हठ करना।
सयो० क्रि०—जाना। —पडना।
†अ०=मिचलाना।

मचला—वि० [हिं० मचलना, प० मचला] १ मचलनेवाला। २ जो काम करने या बोलने के अवसर पर भी जान-बूझकर चुप रहे। जान-बूझकर अनजान बननेवाला।

मचलापन—पु० [हिं० मचला+पन (प्रत्य०)] १ किसी को चिढाने या स्वय दोषी बनने से बचने के लिए चुप रहने की अवस्था या भाव। २. दे० 'मचल'।

मचली—स्त्री०=मितली (वमन का प्रवृत्ति)।

मचवा—पु०[स० मच]१ खटिया या चौकी का पावा। २ नाव। दे० 'मचिया'।

मचँग†—स्त्री०=मचान।

मचान—स्त्री०[स० मच+हिं० आन (प्रत्य०)]१ बाँसो, लट्ठों आदि के सहारे बनाया हुआ वह ऊँचा आसन जिसपर बैठकर शिकारी शिकार खेलते या कृपक खेतो की रखवाली करते है। २ ऊँची बैठक। मच। ३ दीयट।

मचाना—स०[हिं० मचना का स०]१ आरम करना। जारी करना। २ चारो ओर फैलाना।
स०[?] गदा करना।

मचामच—स्त्री०[अनु०] किसी पदार्थ को दबाने से होनेवाला मचमच शब्द। हुमचने का शब्द।

मचिया—स्त्री०[स० मच +इया (प्रत्य०)]१ छोटी खाट। २ बैठने की पीढी।

मचिलई—स्त्री०=मचलापन।

मचुला†—पु० [देश०] गिरगिट्टी नामक वृक्ष जो प्राय बागो मे शोभा के लिए लगाया जाता है।

मचेरी†—स्त्री०[देश०] बैलो के जुए के नीचे की लकडी।

मचोर†—स्त्री० [?] हिलने-डुलने के कारण लगनेवाला धक्का। हिचकोला। (बुन्देल) उदा०—बैलगाडी पर जब मचोरें बदन को सहलाती हुई जावेंगी तब बैकुण्ठ नजर आवेगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

मचोला—पु०[देश०] बंगाल की दलदलो मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिससे सुहागा बनता है।

मच्छ—पु०[स० मत्स्य; प्रा० मच्छ]१ बहुत बडी मछली। मत्स्य। २ दोहे का एक भेद जिसमे ७ गुरु और ३४ लघु मात्राएँ होती है। ३ रहस्य सप्रदाय मे मन, जो सद्वृत्तियो को खा जाता है।

मच्छ-असवारी—पु०[हिं० मच्छ+सवारी] कामदेव। मदन। (डि०)

मच्छ-घातिनी—स्त्री० [हिं० मच्छ+स० घातिनी] मछली फँसाने की लग्घी। बसी।

मच्छड़—पु०[स० मशक] हवा मे उडनेवाला एक प्रसिद्ध छोटा कीडा जो भन भन करता रहता है। इसकी मादा काटती और खून चूसती है।
पद—मच्छड़ की ईल=बहुत ही तुच्छ और हास्यास्पद वस्तु।
वि० कृपण या। कजूस।

मच्छर—पु०[स० मत्सर]१ डाह या द्वेष। मत्सर। २ क्रोध। गुस्सा। (डि०)
पु०=मच्छड।

मच्छरता—स्त्री०[सं० मत्सर+ता (प्रत्य०)] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।

मच्छरदानी—स्त्री०[हिं० मच्छर+फा० दानी] मसहरी। (दे०)

मच्छा†—पु०=मच्छ।

मच्छी—स्त्री० १ दे० मछली। २ दे० 'मक्खी'।

मच्छी-काँटा—पु०[हिं० मच्छी+काँटा]१. ऐसी सिलाई जिसमे जोडे जानेवाले कपडे के टुकड़ो के बीच मे जाली सी बन जाती है। २. कालीन मे होनेवाली एक विशेष प्रकार की बुनावट।

मच्छीमार—पु०[हिं० मच्छी+मार (प्रत्य०)] मच्छुआ।

मच्छोदरी—स्त्री०[स० मत्स्योदरी] व्यास जी की माता और शातनु की भार्या, सत्यवती।

मछदर—पु०[स० मत्स्येन्द्र] १ सुप्रसिद्ध योगी मत्स्येंद्रनाथ। २. बहुत बडा मूर्ख और दुष्ट व्यक्ति।
†पु०=मुछदर।

मछ†—पु०=मच्छ।

मछरंगा—पु०[हिं० मच्छ=मछली] मछली पकडकर खानेवाला एक जल-पक्षी। राम-चिडिया।

मछरंक्षा—पु०=मछरगा।

मछरिया—स्त्री० [स० मत्स्य]१ एक प्रकार की बुलबुल। २ मछली।

मछली—स्त्री०[स० मत्स्य; प्रा० मच्छ] १ सदा जल मे रहने और अडो से उत्पन्न होनेवाले जीवो का एक प्रसिद्ध और बहुत बडा वर्ग जिनमे फेफडो के स्थान पर गलफड़े होते है और जो पानी से बाहर निकालने पर प्राय बहुत जल्दी मर जाते है।
विशेष—अधिकतर मछलियो के शरीर मे दोनो ओर पख के समान अग होते है, जिनमे वे जल मे खूब तैर सकती है। इनकी अधिकतर जातियो का मास सारे संसार मे खाया जाता है। कुछ मछलियो की चरबी या तेल भी बहुत से कामो मे आता है।
पद—मछली का मोती=एक प्रकार का कल्पित मोती जिसके विषय मे कहा जाता है कि यह मछली के पेट से निकलता है।
२ मछली के आकार का बना हुआ सोने, चाँदी आदि का लटकन जो प्राय कुछ गहनो मे लगाया जाता है। ३ उक्त आकार-प्रकार की कोई रचना। ४ पुष्ट बाहो मे दिखाई पडनेवाला मासल पेशियों का उभार। जैसे—उनकी बाँहो मे मछलियाँ पडती थी।
क्रि० प्र०—पड़ना।

मछली का दाँत—पु० [हिं०] गैंडे के आकार के एक पशु का दाँत जो प्राय हाथी दात के समान होता है और उसी नाम से बिकता है।

मछली की स्याही—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का काला रोगन जो नकशे आदि बनाने के काम मे आता है।

मछली-गोता—पु० [हिं० मछली+गोता] कुश्ती का एक पेच।

मछली-डड—पु० [हिं० मछली+डड] एक प्रकार का डड। (कसरत)

मछलीदार—पु०[हिं० मछली+दार (प्रत्य०)] दरी की एक प्रकार की बुनावट।

मजहबी—वि० [अ० मज्हबी] १ किसी मजहब या धार्मिक संप्रदाय से संबंध रखनेवाला अथवा उसमे होनेवाला। २. धार्मिक।
पु०सिक्खों का एक वर्ग या सम्प्रदाय जिसमे अधिकतर चमार, मेहतर आदि है।

मजहूल—वि० [अ० मज्हूल] १ अज्ञात। नामालूम। २ सुस्त। निकम्मा। ३ थका हुआ। शिथिल।

मजा—पु० [फा० मज़] १ किसी काम विशेषत किसी चीज के भोग करने पर होनेवाली वह तृप्ति जिसमे मन और शरीर दोनो आनद से भर उठते है। जैसे—(क) आज खेल मे मजा था। (ख) हमने देहात का मजा पा लिया है।
क्रि० प्र०—आना।—देखना।—मिलना।—लेना।
पद—मजे में=(क) अच्छी तरह और सन्तोषजनक रूप मे। जैसे—कलकत्ते मे वह मजे मे है। (ख) अच्छे और ठीक ढग या प्रकार से। जैसे—अब तो लडका मजे मे अगरेजी बोलने लगा है।
मुहा०—मजा आ जाना या आना=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे लोगो का यथेष्ट मनोरजन हो अथवा वे विशिष्ट रूप से प्रसन्न हों। जैसे—आज तो इन लोगो की बातचीत (या नाच-गाने) मे मजा आ गया। **मजा (या मजे) उडाना**=मनमाने ढग से यथेष्ट आनद और सुख भोग करना। **मजा किरकिरा होना**=सुखप्रद स्थिति मे किसी प्रकार की बाधा या विघ्न होना। **(किसी को मजा) चखाना या दिखाना**=किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह अपने किये हुए किसी काम का अच्छी तरह फल भोगे और दु खी होकर पछताने लगे। **मजा लूटना**=दे० ऊपर 'मजा उडाना'।
२ खाने पीने की चीजो से मिलनेवाला प्रिय स्वाद। जायका। रस।
मुहा०—किसी चीज या बात का मजा पड़ना=रस या सुख मिलने पर किसी चीज या बात का चसका लगना।
३ किसी चीज या बात की ऐसी स्थिति जिसमे वह परिपक्व होकर यथेष्ट आनद या सुख देने के योग्य हो जाय।
मुहा०—(किसी चीज का) मजे पर आना=अच्छी तरह परिपक्व होकर पूर्ण रूप से सुखद होना। **(किसी व्यक्ति का) मजे पर आना**=ऐसी स्थिति मे आना या होना कि मनमाना आचरण या व्यवहार करके आनद या सुख प्राप्त कर सके।
४ बातचीत आदि की ऐसी स्थिति जिससे लोगो का विशेष मनोरजन होता या उन्हे सुख मिलता हो। जैसे—मजा तो तब हो जब आप भी उन लोगो के साथ पकडे जायँ।

मजाक—पु० [अ० मजाक] १ हँसी-ठट्ठा। परिहास।
मुहा०—(किसी का) मजाक उड़ाना=किसी को तुच्छ सिद्ध करने के लिए हँसी की बातें कहकर उपहासास्पद बनाना। उपहास करना। **(किसी काम को) मजाक समझना**=हँसी-खेल या खेलवाड समझना।
पद—मजाक में=किसी विशिष्ट विचार से नही, बल्कि परिहास मे या यो ही।
२ किसी बात या विषय मे होनेवाली स्वाभाविक प्रवृत्ति या रुचि।

मजाकन—अ० [अव्य० मजाकन] मजाक या परिहास के रूप मे। हँसी के तौर पर।

मजाकिया—वि० [अ० मजाकिय] १. मजाक या परिहास से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मजाकिया मजमून, मजाकिया शायरी। २ (व्यक्ति) जो बहुत अधिक या प्राय मजाक करता रहता हो। मजाकपसद।
क्रि० वि०=मजाकन।

मजाज—वि० [अ० मजाज़] १. अवास्तविक। कल्पित या मिथ्या। २ अधिकार-प्राप्त।
†पु०=मिजाज।

मजाजन—अव्य० [अ० मजाजन] १. अधिकारिक रूप से। २. नियम, विधि आदि के अनुसार। ३ काल्पनिक रूप मे। ४ लाक्षणिक रूप मे।

मजाजी—वि० [अ० मजाज़ी] १ अवास्तविक। कल्पित या मिथ्या। २. कृत्रिम। बनावटी। ३. सासारिक। लौकिक।

मजार—पु० [अ० मज़ार] १. कोई दर्शनीय स्थल। २ विशेषत किसी पीर, फकीर या महापुरुष की कब्र।

मजारी*—स्त्री० [स० मार्जार] बिल्ली। बिड़ाल।

मजाल—स्त्री० [अ० मजाल] शक्तिमत्ता। सामर्थ्य। जैसे—उसकी क्या मजाल है जो मेरे सामने बोले। (प्राय नहिक प्रसगो मे प्रयुक्त)

मज़िल*—स्त्री०=मंजिल।

मजिस्टर—पु०=मजिस्ट्रेट।

मजिस्ट्रेट—पु० [अ०] फौज्दारी अदालत का अफसर।

मजिस्ट्रेटी—स्त्री० [अ० मजिस्ट्रेट +ई (प्रत्य०)] १ मजिस्ट्रेट होने की अवस्था या भाव। २ मजिस्ट्रेट का कार्य या पद। ३ मजिस्ट्रेट की अदालत।

मजीठ—स्त्री० [स० मजिष्ठा] एक लता जिसके छोटे गोल फलो से लाल या गुलनार रग तैयार किया जाता है।

मजीठी—वि० [हिं० मजीठ] मजीठ के रग का। लाल। सुर्ख।
पु० उक्त प्रकार का रग।
†स्त्री० दे० 'मजेठी'।

मजीद—वि० [अ० मज़ीद] १ जितना आवश्यक या उचित हो, उससे अधिक। ज्यादा। २ और भी।

मजीर—स्त्री० [स० मजरी] मजरी।

मजीरा—पु० [सं० मजीर] जोडी या ताल नाम का बाजा।

मजूर*—पु०=मयूर (मोर)।
†पु०=मजदूर।

मजूरा†—पु० = मजदूर।

मजूसा†—स्त्री०=मजूषा।

मजेज—वि० [फा० मिज़ाज] दर्प। अहकार।

मजेजवंत—वि० [हिं० मजेज+वत (प्रत्य०)] दिमागवाला। अभिमानी।

मजेठी—स्त्री० [स० मध्य] १ सूत कातने के चरखे मे वह लकड़ी जो नीचे से उन दोनो डडो को जोड़े रहती है। २ सूत कातने के चरखे की डोरी या रस्सी । जोत। माल।

मजेदार—वि० [फा०मज़.दार] जिसमे विशेष मजा (आनद, सुख या स्वाद) हो। जैसे—मजेदार बात, मजेदार मिठाई।

मजेदारी—स्त्री० [फा० मज़.दार+ई (प्रत्य०)] मजेदार होने की अवस्था या भाव।

†वि०=मजेदार।

मज्ज*—स्त्री०=मज्जा।

मज्जका—स्त्री०[सं० मज्जा से] १ शरीर की हड्डी के अदर का गूदा। (मेंड्यला)

मज्जन—पु०[स०√मस्ज् (शुद्ध होना)+ल्युट्-अन्, स्—ज्]१. स्नान। २ किसी बात या विषय की गहराई मे डूबना या लीन होना।

मज्जना*—अ०[स० मज्जन]१ स्नान करना। नहाना। २ निमग्न या लीन होना।

मज्जा—स्त्री० [स०√मस्ज्+अच्+टाप्]१ शरीर के अन्तर्गत नली की हड्डी के अन्दर का गूदा जो कोमल और चिकना होता है। २. पेड़-पौधो, फलो आदि के अन्दर का सार-भाग।
†स्त्री०[स० मजरी] बौर। मजरी।

मज्जा-रस—पु०[स० ष० त०] पुरुष का वीर्य। शुक्र।

मज्झ—पु०[स० मध्य, प्रा० मज्झ] मध्य।
वि० मध्य का। बीच का।
क्रि० वि० बीच या मध्य मे।
†स्त्री०[स० महिषी] भैंस। (पश्चिम)

मझ—वि०, पु०, क्रि० वि०=मध्य।

मझक्का†—पु०[हिं० माथा+झाँकना] वर पक्षवालो का विवाह के उपरान्त दुल्हिन के घर जाकर की जानेवाली मुँह-देखनी की रसम।

मझधार—स्त्री०[हिं० मझ-मध्य+धार] १. नदी आदि के बीच की धारा। २ किसी काम या बात के मध्य की स्थिति।
मुहा०—(किसी को) मझधार में छोडना=(क) किसी को संकट की स्थिति मे डालना। (ख) उक्त प्रकार की स्थिति मे किसी का साथ छोडना। (कोई काम) मझधार में छोड़ना=अपूर्ण अवस्था मे छोडना। अधूरा रहने देना।

मझरासिगही—पु०[हिं० मझरा?+सीग]बैलो की एक जाति।

मझला—वि०[स० मध्य, प्रा० मज्झ+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० मझली] १. मध्य का। २ अवस्था, आकार आदि के विचार से दो के बीच का। एक छोटे और एक बड़े के बीच का। जैसे—(क) मझला भाई। (ख) मझली पुस्तक।

मझाना—अ० [स० मध्य] १ मध्य या बीच मे आना या पहुँचाना। २. प्रविष्ट होना।
स०१ मध्य या बीच मे करना या लाना। २ प्रवेश कराना।

मझार†—क्रि० वि०[स० मध्य, प्रा० मज्झ+आर (प्रत्य०)] मध्य मे।
पु० बीच या मध्य का अश या भाग।

मझावना—अ०, स०=मझाना।
†अ०=मझियाना।

मझिया—स्त्री०[स० मध्य, प्रा० मज्झ+इया (प्रत्य०)] उन पट्टियो मे से हर एक जो गाडी, सग्गड़ आदि के पेंदे मे लगी रहती है।

मझियाना—स०[हिं० माझ=मध्य+इयाना(प्रत्य०)]किसी चीज को मध्य मे ले जाना।
अ० नाव खेना।
†अ०, स०=मझाना।

मझियारा—वि० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ+इयारा (प्रत्य०)] १. मध्य संबंधी। २. जो मध्य में स्थित हो। बीच का। ३. मझला।

मझु—सर्व० १.=मैं। २.=मेरा।

मझुआ—पुं०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+उआ (प्रत्य०)] हाथ में पहनने की मठिया नामक चूड़ियों मे कोहनी की ओर से पहननेवाली दूसरी चूड़ी जो पछेला के बाद होती है।

मझेरु—पु०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+एरू (प्रत्य०)] जुलाहों के कड़ी नामक औजार के बीच की लकड़ी।

मझेला—पु०[देश०] एक तरह का सूजा जिससे मोची जूतो के तले सीते हैं।
†पु० =झमेला।

मझोला—वि० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ+ओला (प्रत्य०)] १. मध्यम आकार का। न बहुत छोटा और न बहुत बड़ा। २. मध्य या बीच का। मझला।

मझोली—स्त्री०[हिं० मझोला]१ एक प्रकार की बैलगाड़ी जिसमे प्राय जनानी सवारी बैठती है। २. टेकुरी की तरह का एक औजार जिससे जूते की नोक सी जाती है।

मट—पु०=मटका।
उप० 'मिट्टी' का वह संक्षिप्त रूप जो समस्त पदों के आरंभ मे लगता है। जैसे—मट-मैला।

मटक—स्त्री०[सं० मट=चलना+क(प्रत्य०)] मटकने की क्रिया, ढंग, मुद्रा या भाव।
पद—चटक-मटक।
२ गति। चाल। (पच०)

मटकना—अ०[सं० मट=चलना]१ चलने या बातें करते समय कुछ नाज-नखरे तथा गर्वपूर्वक अपने को बार-बार हिलाते तथा लचकाते रहना। २ संकोचवश या और किसी कारण चल-विचल या इधर-उधर होना। उदा०—देखत रूप मदन मोहन को, पियत पियूख न मटके।—मीरां।
†पु०[हिं० मटका]१ छोटा मटका। २ पुरवा।

मटकनि—स्त्री०[हिं० मटकना]१ मटकने की क्रिया या भाव। मटक। २. मटककर चली जानेवाली चाल। ३ गति। चाल। ४ नखरा। ५ नाच। नृत्य।

मटका—पु०[हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० मटकी] मिट्टी का घडा। मट। माट।

मटकाना—स०[हिं० मटकना का स०]१ किसी को मटकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी अग मे मटक लाना। ऐसी स्थिति मे किसी को लाना कि वह हिलने-डुलने तथा लचकने लगे। नाज-नखरे से किसी अग का सचालन करना। जैसे—कमर मटकाना, आँखे मटकाना।

मटकी—स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका।
स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकने या मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।
मुहा०—मटकी देना या मारना=स्त्रियो की तरह नखरे से आँखे, उँगलियाँ या हाथ हिलाकर इशारा या सकेत करना।

मटकीला—वि० [हिं० मटकना+ईला (प्रत्य०)] १ मटक दिखाने या मटकनेवाला। २ जिसमे किसी प्रकार की मटक हो। मटक से युक्त।

मटकौअल, मटकौवल—स्त्री०[हिं० मटकाना+औवल (प्रत्य०)]मटकने या मटकाने की क्रिया या भाव। जैसे—सूत न कपास जुलाहो से मटकौअल। (कहा०)

मटक्का—पु० [हिं० मटकना या मटकाना] आँखें, उँगलियाँ, हाथ आदि मटकाने की क्रिया या भाव।

मटखौरा†—पु० [हिं० मट+खौर ?] एक प्रकार का हाथी जो दूपित माना जाता है।

मटना—पु० [देश०] एक प्रकार की ईख।

मट-पीला—वि० [हिं० मट (उप०)+पीला] मटमैले या खाकी मिले पीले रग का। कुछ पीलापन लिए हुए मिट्टी के रग का।

मट-मंगरा—पु० [हिं० मट (उप०)+मगल] विवाह के पहले की एक रीति जिसमें स्त्रियाँ गाती-वजाती हैं।

मटमैला—वि० [हिं० मिट्टी+मैला] मिट्टी के रंग का। खाकी।

मटर—पु० [स० मवुर या वर्तुल] १ एक प्रसिद्ध पौवा जिसकी फलियो मे गोल दाने रहते हैं और जिनकी तरकारी आदि वनाई जाती है। २ उक्त पौवे की फली या दाना। (पी)

मटर-गश्त—स्त्री०, [हिं० मट्ठर=मद+फा० गश्त] १. धीरे धीरे घूमना। २ निश्चिन्त होकर प्रसन्नतापूर्वक व्यर्थ इवर-उवर घूमना।

मटरगश्ती—स्त्री०=मटरगश्त।

मटर-वोर—पु० [हिं० मटर+वोर=घुंघरू] मटर के वरावर घुंघरू जो पाजेव आदि मे लगते है।

मटराला—पु० [हिं० मटर+आला (प्रत्य०)] एक मे मिले हुए मटर और जौ के दाने अयवा उनका पीसा हुआ चूर्ण।
†वि०=मटमैला।

मटलनी—स्त्री० [हिं० मिट्टी] कच्ची मिट्टी का वरतन।

मटा—पु० [हिं० माटा] पेड़ों पर झुंडों मे रहनेवाला एक तरह का लाल रग का च्यूंटा।

मटिआ†—वि०, पु०, स्त्री०=मटिया।

मटिआना—अ०, स०=मटियाना।

मटिया—वि० [हिं० मिट्टी] १ मिट्टी का सा। २. मिट्टी का वना हुआ। जैसे—मटिया साँप। ३. खाकी। मटमैला।
पु० मिट्टी का वरतन।
†स्त्री०=मिट्टी।
पु० [?] कजला या लटोरा नाम का पक्षी।

मटियाना—स० [हिं० मिट्टी] १ किसी चीज पर मिट्टी लगाना, अयवा मिट्टी से युक्त करना। २ (कपड़े) मिट्टी मे लयेड़ना। ३. वरतन, हाथ आदि मिट्टी मलकर घोना और साफ करना।
† अ०=महटियाना।

मटिया-फूस—वि० [हिं० मिट्टी+फूस] इतना अविक जर्जर, वृद्ध और दुर्वल कि मानो मिट्टी और फूस के योग से वना हो।

मटिया-मसान—वि० [हिं० मटिया+मसान] १ वहुत ही तुच्छ या हीन। गया-वीता। २ टूटा-फूटा। नष्ट-प्राय।
पु० उजड़ा हुआ स्थान या खँडहर।

मटिया-मेट—पु० दे० 'मलिया-मेट'।

मटियार—पु० [हिं० मिट्टी+आर (प्रत्य०)] चिकनी मिट्टीवाला प्रदेश जो वहुत अविक उपजाऊ होता है।

मटियार दुम्मट—स्त्री० [हिं०] ऐसी भूमि जिसमे मटियार और दुम्मट दोनो के तत्त्व हों। (क्ले लोम)

मटियाला—वि० =मटमैला।

मटीला—वि० [हिं० मट (उप०)+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमे मिट्टी पडी या मिली हुई हो। जैसे—मटीला पानी। २ मटमैला।

मटुक†—पु०=मुकुट।

मटुका†—पु० [स्त्री० अल्पा० मटुकिया, मटुकी] =मटका।

मट्टी†—स्त्री०=मिट्टी।

मट्ठर—वि० [स० अठर=जो नशे मे हो] चलने-फिरने और काम-वन्वा करने मे सुस्त। काहिल।

मट्ठा—वि० [सं० मन्द] १ धीमा। मन्द। २. सुस्त।
पु०=मठा।

मट्ठी—स्त्री० [देश०] पूरी की तरह तला हुआ मैदे का वना हुआ एक मीठा पकवान।

मठ—पुं० [स०√मठ् (निवास करना)+क] १. वह मकान जिसमे सावु-संन्यासी रहते हों। २ देवालय। मन्दिर। उदा०—मठ-पूतली पाखाण-मय।—प्रिथीराज।

मठधारी(रिन्)—पु० [स० मठ√घृ (रखना)+णिनि, उप० स०] वह सावु या महत जो मठ का प्रवान अविकारी हो। मठाधीश।

मठ-पति—पु० [प० त०]=मठधारी।

मठर—वि० [स० मन् (जानना)+अरन्, न्=ठ्] जो नशे मे हो। मद-मत्त।
पु० एक प्राचीन ऋपि।

मठरना—पु० [?] कसेरो, सुनारो आदि का एक औजार जिससे वे घातु के पत्तरों या चद्दरों को पीटते हैं।
अ० पत्तर, चद्दर आदि का उक्त उपकरण से पीटा जाना।
स० दे० 'मठारना'।

मठरी (ली)†—स्त्री० [स० मेठ]=मट्ठी।

मठा—पु० [स० मथन] दही का वह घोल जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो। तक्र। मही। लस्सी।
मुहा०—मठे मूसल की हाँकना=वढ़-वढकर इवर-उवर की वातें कहना। उदा०—... गया था, अब लगा है मठा मूसल की हाँकने।—वृन्दावन लाल वर्मा।

मठाधीश—पु० [स० मठ-अवीश, प० त०] मठ मे रहनेवाले सावुओ का प्रवान। महन्त।

मठान—पुं०=मठरना (औजार)।

मठारना—स० [हिं० मठरना] १ कसेरो, सुनारो आदि का मठरना नामक औजार से पत्तरो या चद्दरो को पीटना। २ पत्तरो, चद्दरो आदि को पीट कर गोलाई मे लाना।
स० [?] १ गूँधे हुए आटे को इस प्रकार हाथो से मसलना तथा सँवारना कि उसमे लस उत्पन्न हो जाय। २ धीरे धीरे तथा वना-सँवार कर कोई वात कहना।

मठारा—पु० [हिं० मठारना] १. मठारने की क्रिया या भाव। २ किसी

बात को सुधारते-सँवारते हुए उसकी पुष्टि करने की क्रिया या भाव। जैसे—उन्हें जो वक्तृता देनी थी, उसी पर मठारा दे रहे थे।
क्रि० प्र०—देना।
मठिया—स्त्री० [हिं० मठ+इया (प्रत्य०)] छोटा मठ।
स्त्री० [?] काँसे या फूल की बनी हुई चूड़ी।
मठी(ठिन्)—पु० [सं० मठ+इनि] मठ का अधिकारी। मठाधीश।
स्त्री० (हिं० मठ) छोटा मठ। मठिया।
मठुलिया, मठुली—स्त्री०=मट्ठी।
मठोठा†—पु० [?] कूएँ की जगत।
मठोर—स्त्री० [हिं० मट्ठा] १ वह बड़ी मटकी जिसमे दही मथा जाता है। २ नील पकाने का माठ।
मठोरना—स० [हिं० मठारना] १. किसी लकड़ी को खरादने के लिए रदा लगा कर ठीक करना। २ दे० 'मठारना'।
मठोलना—स० [हिं० मठोला+ना (प्रत्य०)] हस्त-मैथुन करना।
मठोला—पु० [हिं० मुट्ठी+ओला (प्रत्य०)] मुट्ठी मे लिंग पकड़कर उसे सहलाते हुए वीर्य-पात करना। हस्त-मैथुन। उदा०—लड्डू मे न पेड़े मे, न बर्फी मे मजा है, जो मर्दे-मुजर्रद के मठोलो मे मजा है। —नजीर।
मठोरा†—पु० [हिं० मठोरना] एक प्रकार का रंदा जिससे लकड़ी रद कर खरादने आदि के योग्य बनाते हैं।
मड़ई—स्त्री० [सं० मडपी] १ छोटा मडप। २ कुटिया। झोपड़ी।
†स्त्री०=मडी।
मडउआ†—पु०=मडुआ (मडप)।
मड़क—स्त्री० [अनु०] किसी बात के अन्दर छिपा हुआ हेतु। भीतरी सूक्ष्म आशय।
मड़मड़ाना—अ०, स०=मरमराना।
मड़राना—अ०=मँडराना।
मड़ला†—पु० [सं० मडल] अनाज रखने की छोटी कोठरी।
मडलाना—अ०=मँडराना। उदा०—अनुपम शोभा पर उसकी कितने न भँवर मडलाते।—निराला।
मडवा—पु० [सं० मडप] १ मचान। २ मडप।
पद—मड़वे तर की गाँठ=विवाह के समय वर और वधू के दुपट्टों मे बाँधी जानेवाली गाँठ।
मड़वाना†—पु० [हिं० मँडवा=मडप] एक प्रकार का कर जो मध्य युग मे जमीदार लोग अपने असामियो से उनके यहाँ विवाह होने पर लिया करते थे।
मड़वारी†—पु०=मारवाडी।
मड़हट†—पु०=मरघट।
मड़हा†—पु० [सं० मडप] मिट्टी या घास आदि का बना हुआ छोटा घर।
†पु० [?] भूना हुआ चना।
मड़ा†—पु० [हिं० मढ़ी] बडी कोठरी। कमरा।
पु०=माँडा (नेत्ररोग)।
मड़ाड†—पु०=मडार।
मड़ार—पु० [देश०] १ तालाब। २ पोखरा।
मड़ियार—पुं० [हिं० मारवाड़ ?] मारवाड़ में बसी हुई क्षत्रियों की एक जाति।
मड़ुआ—पुं० [देश०] १. बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न जो बहुत प्राचीनकाल से भारत में बोया जाता है। वैद्यक में इसे कसैला, कड़ुआ,हलका, बलवर्द्धक और रक्त-दोष को दूर करनेवाला माना गया है। २. एक प्रकार का पक्षी।
†पु०=मडुआ (मडप)।
मड़ैया—स्त्री०=मड़ई।
मड़ोड़—स्त्री०=मरोड़।
मड़ोदी—स्त्री० [हिं० मरोड़ना+ई (प्रत्य०)] लोहे की छोटी पेंचदार कटिया।
मढ़—वि० [हिं० मढ़ना] १ अड़कर बैठनेवाला। २ जल्दी अपनी जगह से न हिलनेवाला। ३. मूढ़।
†पु०=मठ। उदा०—ताकर घर, ताकर मढ़ माया।—जायसी।
मढ़ना—स० [सं० मंडन] [भाव० मढ़ाई] १. कोई चीज किसी दूसरी चीज पर चिपकाना, जड़ना, लगाना या सटाना। जैसे—किताब पर जिल्द या दीवार पर कागज मढ़ना। २. बहुत से गहनों से किसी को लादना। जैसे—आभूषणों से सुंदरी मढ़ी हुई थी। ३. कोई काम या बात बलपूर्वक किसी के जिम्मे लगाना। जैसे—किसी के सिर कोई काम मढ़ना। ४. व्यर्थ किसी के सिर कोई अपराध या दोष आरोपित करना। जैसे—काम तो तुमने बिगाड़ा, और कलंक मेरे सिर मढ़ रहे हो।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।
अ० (काम या बात) आरम्भ होना।
अ०=मडलाना। जैसे—आकाश मे बादल मढ़ आये हैं।
मढ़वाई—स्त्री० [हिं० मढवाना] मढ़वाने का कार्य तथा पारिश्रमिक।
मढ़वाना—स० [हिं० मढना का प्रे०] [भाव० मढवाई] मढने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ा—पु० [हिं० मढी] १. मिट्टी का बना हुआ छोटा घर। बड़ी मढी। २. दे० 'मढ़ा'।
मढ़ाई—स्त्री० [हिं० मढना] मढने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
मढ़ाना—स०=मढ़वाना।
मढ़ी—स्त्री० [सं० मठ] १ छोटा मठ। २. छोटा देवालय या मन्दिर। ३. कुटिया। झोपड़ी। ४ छोटा मडप। ५ किसी सन्यासी के समाधि-स्थल के समीप बनी हुई कुटिया।
मढ़ैया—वि० [हिं० मढना+ऐया (प्रत्य०)] मढनेवाला।
स्त्री०=मढ़ी।
मणि—स्त्री० [सं०√मण् (अव्यक्त शब्द)+इन्] १ बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. किसी वर्ग का कोई सर्व-श्रेष्ठ पदार्थ या व्यक्ति। जैसे—रघुकुल मणि। ३. बकरी के गले मे लटकनेवाली थैली। ४ पुरुष की इन्द्रिय का अगला भाग। ५ योनि का अगला भाग। ७ घड़ा।
मणिक—पु० [सं० मणि+कन्] १. मिट्टी का घड़ा। २ योनि का अग्रभाग। ३ स्फटिक निर्मित प्रासाद।

मणि-कर्णिका—स्त्री० [मध्य० स०] १. मणियो से जडा हुआ कान मे पहनने का गहना । २. काशी का एक प्रसिद्ध घाट।
विशेष—पौराणिक कथा है कि शिव जी का मणि-जटित कुडल उक्त स्थल पर उस समय गिरा था जब वे विष्णु की तपस्या से प्रसन्न होकर झूम उठे थे ।
मणि-कानन—पु० [प० त०] गला । कठ।
मणिकार—पु० [स० मणि√कृ (करना)+अण्] जौहरी ।
मणि-कूट—पु० [ब० स०] कामरूप के पास का एक पर्वत। (पुराण)
मणि-केतु—पु० [उपमि० स०] एक बहुत छोटा पुच्छल तारा जिसकी पूँछ दूध-सी सफेद मानी गई है।
मणि-गुण—पु० [ब० स०] एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है। शशिकला । शरभ ।
मणिगुण-निकर—पु० [स० प० त०] मणि-गुण नामक छद का एक भेद जो उसके ८वे वर्ण पर विराम करने से बनता है ।
मणि-ग्रीव—पु० [ब० स०] कुवेर का एक पुत्र ।
मणिच्छिद्रा—स्त्री० [ब० स०] १ मेधा नाम की ओषधि। २. ऋषभा नाम की ओषधि।
मणि-जला—स्त्री० [ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी।
मणि-तारक—पु० [ब० स०] सारस ।
मणि-दीप—पु० [स० मणिदीप] १. मणिजटित दीपक। २. दीपक की तरह प्रकाश करनेवाला रत्न ।
मणि-द्वीप—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार रत्नो का बना हुआ एक द्वीप जो क्षीरसागर मे है। इसी मे त्रिपुर सुदरी का निवास माना गया है।
मणि-धनु(स्)—पु० [मध्य० स० या उपमि० स०] इद्र का धनुष ।
मणि-धर—पु० [प० त०] सर्प । साँप ।
मणिपुर—पु० [प० त०] १. भारत तथा बर्मा की सीमा पर स्थित केन्द्र-शासित भारतीय प्रदेश । २ उक्त प्रदेश की राजधानी।
मणिपूर—पु० [स० मणिपुर] सुषुम्ना नाडी के अदर माने जानेवाले छ चक्रों मे से तीसरा चक्र जो नाभिक्षेत्र मे स्थित है ।
मणि-बंध—पु० [सुप्सुपा स०] १ एक नवाक्षरी वृत्त जिसके प्रति चरण मे भगण, मगण और सगण होते है। २. कलाई । पहुँचा ।
मणि-बीज—पु० [ब० स०] अनार का पेड।
मणिभ—पु० [स०] किसी तरल घोल को सुखाकर उसके बनाये हुए छोटे नुकीले कण। रवा (क्रिस्टल)
मणि-भद्र—पु० [ब० स०] एक यक्ष।
मणि-भित्ति—स्त्री० [ब० स०] शेषनाग का प्रासाद ।
मणिभीकरण—पु०[स०] ऐसी क्रिया करना जिससे कोई तरल घोल स्फटिक का रूप ग्रहण कर ले। निश्चित और ठोस आकार धारण करना । (क्रिस्टेलाइजेशन)
मणिभू—स्त्री० [प० त०] वह क्षेत्र विशेषत खान जिसमे रत्न हों।
मणि-मंडप—पु० [मध्य० स०] १ मणियो से सजाया हुआ मडप । २ शेषनाग का प्रासाद ।
मणिमध्य—पु० [ब० स०] मणिबध नामक छद ।
मणिमय—पु० [स० मणि+मयट्] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वि० मणि या मणियों से युक्त।
मणिमान् (मत्)—वि० [स०मणि+मतुप्] मणि-युक्त।
पु० १ सूर्य। २ एक प्राचीन पर्वत ।
मणि-माला—स्त्री० [प० त०] १ मणियाँ अर्थात् रत्नो की माला । २ लक्ष्मी। ३ चमक। ४ बारह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण, तगण, यगण होते हैं। ५. आभा । चमक ।
मणिमेघ—पु० [सं०] दक्षिण भारत का एक पर्वत । (पुराण)
मणि-राग—पु० [ब० स०] १ हिंगुल। शिगरफ। २ रत्न का रग ।
मणि-राजी—स्त्री० [प० त०] मणियो का समूह । उदा०—देख बिखरती है मणिराजी, अरी उठा बेसुध चंचल।—प्रसाद।
मणि-रोग—पु० [प० त०] पुरुषेंद्रिय सबधी एक रोग।
मणि-शैल—पु० [प० त०] मदराचल के पूर्व मे स्थित एक पर्वत। (पुराण)
मणि-श्याम—पु० [स० त०] नीलम ।
मणि-सर—पु० [सुप्सुपा स०] मोतियो की माला ।
मणि-सोपानक—पु० [मध्य० स०] सोने के तार में पिरोए हुए मोतियों की ऐसी माला जिसके बीच मे रत्न हो। (कौ०)
मणी—स्त्री० [स० मणि+ङीष्]=मणि ।
मणीचक—पु० [स० मणी√चक् (प्रतिघात करना)+अच्] १. चन्द्रकात मणि। २ पुराणानुसार शाक-द्वीप के एक वर्ष का नाम। ३. एक प्रकार की चिडिया ।
मतग—पु० [स०] १ हाथी। २. बादल । मेघ। ३ एक प्राचीन तीर्थ । ४ एक प्राचीन ऋषि जो शबरी के गुरु थे । ५ कामरूप के अग्नि-कोण का एक प्राचीन देश ।
मतंगज—पु० [स०√मद् (मस्त होना)+अगच्, द्—त्,+ √जन्ड] हाथी।
मतंगा—पु०[स० मतग] एक प्रकार का बाँस जो बगाल और बरमा मे होता है ।
मतगी (गिन्)—पु० [स० मतग+इनि, दीर्घ,] हाथी का सवार।
मत—पु० [स०√मज्+क्त] १ सोच-समझकर निश्चित की हुई बात। २ अपने निजी विचारो के रूप मे किसी विषय के सबध मे कही या प्रकट की जानेवाली बात। सम्मति। जैसे—दूसरो को सब कोई मत देता है । ३ धर्म-ग्रथो अथवा ऋषि-मुनियो द्वारा प्रतिपादित अथवा समर्थित कोई कथन या सिद्धात । (डाक्ट्रिन) ४ किसी विशिष्ट धर्म-ग्रथ या महापुरुष के सिद्धात का अनुयायी सप्रदाय । पथ। ५ लोक-तत्र के क्षेत्र मे, अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समाज को प्राप्त वह अधिकार जिससे वह अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुकूल दो या अधिक व्यक्तियो, पक्षो आदि मे से किसी एक या कुछ का अधिकारिक रूप से समर्थन कर सकता है । वोट । (वोट)
विशेष—मत दो प्रकार से दिया जाता है। एक तो सभाओं आदि मे खुले-आम हाथ उठाकर और दूसरे गुप्त रूप से परचियाँ डालकर ।
६ उक्त के द्वारा किसी का किया जानेवाला समर्थन । जैसे—इस चुनाव मे समाजवादी उम्मीदवारो को १५००० मत मिले थे ।
स्त्री०=मति।
अव्य० [सं० मा] निषेध-वाचक शब्द । न । नही। जैसे—वहाँ मत जाया करो।

मत-क्षेत्र—पु० दे० 'निर्वाचन-क्षेत्र'।

मत-गणना—स्त्री० [प० त०] दे० 'जनमत-संग्रह'।

मत-दाता (तृ)—पु० [प० त०] वह व्यक्ति जिसे लोकतंत्र के क्षेत्र मे मत देने, विशेपत निर्वाचन आदि मे मत देने का अधिकार हो।

मतदान—पु० [प० त०] किसी विचारणीय विपय के सबध मे अथवा किसी प्रकार के चुनाव के समय किसी के पक्ष मे अपना मत देने की क्रिया। (वोटिंग)

मतदान-केंद्र—पु० [प० त०] वह केन्द्र या स्थान जहाँ निर्वाचन के समय किसी विशिष्ट क्षेत्र मे मतदाता आकर मत देते है। (पोलिंग स्टेशन)

मतदान-कोष्ठ—पु० [प० त०] जिसमे रखी हुई पेटी मे मत-पत्र छोडा जाता है। (पोलिंग-बूथ)

मतदान-पेटिका—स्त्री० [प० त०] वह पेटी जिसमे मतदाताओ द्वारा मत-पत्र छोडे या डाले जाते है। (बैलट-बॉक्स)

मतना—अ० [स० मति+हिं० ना (प्रत्य०)] किसी विपय मे अपना मत सम्मति निश्चित या प्रकट करना।

†अ०=मातना (उन्मत्त होना)।

मत-पत्र—पु० [प० त०] वह परची जिस पर किसी विशेप उम्मीदवार या पक्ष के समर्थन मे चिह्न आदि बनाकर उसे मतदान पेटिका मे डाला जाता है। (वोटिंग-पेपर)

मत-परिवर्तन—पु० [स०प० त०] अपना मत या विचार अथवा धर्म, सप्रदाय आदि छोडकर दूसरा मत या विचार अथवा धर्म, सप्रदाय आदि ग्रहण करना। (कन्वर्सन)।

मत-प्रबंध—पु० [प० त०] १ किसी विवादास्पद विपय से सबध रखनेवाले सभी प्रकार के मतो या विचारो की गवेपणा करके उस पर अपना आविष्कारिक मत प्रकट करना। (डिस्सर्टेशन) २ दे० 'शोध-निबंध'।

मत-भेद—पु० [प० त०] वह अवस्था जिसमे किसी दल, वर्ग या समूह के सदस्यो मे किसी विपय मे एक मत नही, बल्कि दो या कई मत होते है।

मतरिया†—स्त्री० [हिं० माता] माता। माँ।

मुहा०—मतरिया बहिनिया करना=किसी को माँ-बहन की गालियाँ देना और उससे ऐसी ही गालियाँ सुनना।

वि० [स० मत्र] १ मत्र देनेवाला। मत्री। २ मत्र से प्रभावित किया हुआ। मत्रित।

मतरूक—वि० [अ०] त्याग किया या छोडा हुआ। त्यक्त। परित्यक्त।

मतलब—पु० [अ० मतलबी] १ मन मे रहनेवाला आशय या उद्देश्य। अभिप्राय। २ पद, वाक्य या शब्द का अर्थ। माने। ३. अपने भला या हित का विचार। स्वार्थ।

पद—मतलब का यार=सदा अपने स्वार्थ का ध्यान रखनेवाला व्यक्ति। स्वार्थी।

मुहा०—मतलब गाँठना=स्वार्थ साधन करना। (अपना) मतलब निकालना=स्वार्थ सिद्ध करना। मतलब हो जाना=(क) स्वार्थ सिद्ध हो जाना। (ख) पूरी दुर्गति या दुर्दशा हो जाना। (व्यग्य) ४ सम्पर्क। सबध। वास्ता। जैसे—हमारा उनसे कोई मतलब नही है।

मतलबिया—वि०=मतलबी।

मतलबी—वि० [अ० मतलबी+ई (प्रत्य०)] अपना ही मतलब निकालनेवाला। स्वार्थ-परायण। स्वार्थी। खुदगरज।

मतला—पु० [अ० मत्ल] गज़ल का पहला शेर जिसके मिस्रे सानुप्रास होते है।

मतली—स्त्री०=मिचली।

मतलूब—वि० [अ० मत्लूब] १. चाहा हुआ। जिसकी इच्छा हो। अभिप्रेत। २ प्रिय।

मतवा†—स्त्री०=माता।

मतवार†—वि०=मतवाला।

मतवाल—स्त्री० [हिं० मतवाला] १. मतवालापन। मत्तता। २ मतवालों या पागलो की तरह का कोई काम। उदा०—करत मतवाल जहँ सन्त जन सूरमा.....।—कबीर।

मतवाला—वि०,पु० [स० मत्त+हिं० वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १ नशे आदि के कारण मस्त। नशे मे चूर। २. किसी प्रकार के अभिमान या मद के कारण मस्त और ला-परवाह। ३ उन्मत्त। पागल। पु० १. वह भारी पत्थर जो किले या पहाड पर से नीचे के शत्रुओं को मारने के लिए लुढकाया जाता है। २. कागज का बना हुआ एक प्रकार का खिलौना जो जमीन पर फेकने से सीधा खडा रहकर इधर-उधर हिलता रहता है।

मत-संग्रह—पु० [प० त०] किसी प्रश्न पर मत-दान की परिपाटी के द्वारा लोगो के मत एकत्र करना।

मत-सुन्न—वि० [स० मत-शून्य] मूर्ख।

मत-स्वातंत्र्य—पु० [प० त०] प्रत्येक व्यक्ति को अपना मत या विचार प्रकट करने की स्वतत्रता।

मता†—पु०=मत (विचार)।

†स्त्री०=मति।

मताधिकार—पु० [मत-अधिकार; प० त०] किसी चुनाव या विपय मे मत (या वोट) देने का अधिकार जो शासन से प्राप्त हो। प्रतिनिधिक सस्थाओ के सदस्य या प्रतिनिधि निर्वाचित करने मे वोट या मत देने का अधिकार। (फ्रैंचाइज़)

मताधिकारी (रिन्)—पु० [स० मताधिकार+इनि,] मत देने का अधिकारी। वोटर।

मताना*—अ० [स० मत+हिं० ना (प्रत्य०)] मत्त या मस्त होना। उदा०—पाइ वहै कज मे सुगध राधिका को, मजु ध्याए कदलीवन मतग लौ मताए है।—रत्ना०।

स० मत्त या मस्त करना।

मतानुज्ञा—स्त्री० [मत-अनुज्ञा, प० त०] २१ प्रकार के निग्रह स्थानो मे से एक। (न्याय-दर्शन)

मतानुयायी (यिन्)—पु० [स० मत-अनुयायिन्, प० त०] किसी मत का अनुयायी। मतावलबी।

मतारी†—स्त्री०=महतारी (माता)।

मतार्थना—स्त्री० [स० मत+अर्थना] चुनाव आदि के अवसरो पर लोगो के पास जाकर उनसे अपने पक्ष मे मत माँगने या उन्हे अपने अनुकूल करने की क्रिया या भाव। (कैन्वेसिंग ऑफ वोट्स)

मतावलंबी (बिन्)—पु० [मत-अवलबिन्, ष० त०] किसी मत, सिद्धान्त आदि का अनुयायी। जैसे—जैन मतावलबी।

मताही†—स्त्री० [हिं० माता=चेचक] चेचक या माता का रोग जो कहीं कुछ दूर तक फैला हो। (पूरब)
क्रि० प्र०—फैलना।

मति—स्त्री० [स०√मन्+क्तिन्] १ बुद्धि। अक्ल। २. राय। सम्मति। ३. इच्छा। कामना। ४ याद। स्मृति। ५ साहित्य मे एक सचारी भाव। यह उस समय माना जाता है जब कोई अनुचित बात हो जाती है तब उसके बाद नीति की कोई बात सूझती है।
वि० १ बुद्धिमान। २ चतुर। चालाक।
†अव्य०=मत।

मति-दर्शन—पु० [स० ष० त०] वह शक्ति जिसके अनुसार दूसरे की योग्यता का पता लगाया जाता है।

मतिदा—स्त्री० [स० मति√दा (देना)+क,+टाप्] १ ज्योतिष्मती नाम की लता। २. सेमल। शाल्मलि।

मतिन†—अव्य० [स० मत् या वत् ?] सदृश। समान। (पूरब)
†अव्य०=मत (निषेवार्थक)।

मतिभंगी (गिन्)—वि० [स० मति√भञ्ज् (नष्ट करना)+णिनि] मति या बुद्धि नष्ट करनेवाला।

मति-भ्रंश—पु० [स० ष० त०] वह अवस्था जिसमे बुद्धि कुछ भी सोच-समझ सकने मे असमर्थ होती है। बुद्धि-भ्रश।

मति-भ्रम—पु० [स० ष० त०] अस्वस्थ अथवा विकृत बुद्धि या समझ के कारण होनेवाला वह भ्रम जिसके फलस्वरूप मनुष्य कुछ का कुछ समझने लगता है, अथवा उसे किसी अवास्तविक घटना या दृश्य का भान होने लगता है। (हैल्यूसिनेशन)

मतिमंत—वि० [स० मतिमत्] बुद्धिमान्। चतुर।

मति-मद—वि० [स० मदमति] मूर्ख।

मति-मांद्य—पु० [ष० त०] मति-मद होने की अवस्था या भाव।

मतिमान् (मत्)—वि० [स० मति+मतुप्] बुद्धिमान। समझदार।

मतिमाह*—वि०=मतिमान्।

मतिवंत—वि०=मतिमत।

मती—वि० [स० मतिमान्] १. किसी प्रकार का मत या राय रखनेवाला। २. किसी मत या सम्प्रदाय का अनुयायी।
†स्त्री० [स० मति] =मत (विचार या सप्रदाय)।
अव्य०=मत (निषेधात्मक)।

मतीरा—पु० [स० मेंट] तरबूज।

मतीस—पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

मतेई—स्त्री० [स० विमातृ मि० प० मतरई=विमाता] माता की सौत। विमाता।

मतैक्य—पु० [स० मत+ऐक्य] किसी विषय मे दो या अधिक व्यक्तियो का एक ही मत या राय होना। मत या विचार मे होनेवाली एकता या समानता।

मत्कुण—पु० [स० कर्म० स०] खटमल।

मत्त—वि० [स०√मद् (मतवाला होना)+क्त] १ नशे आदि मे चूर। मस्त। २ किसी बात की अधिकता के कारण जिसमे विवेक न रह गया हो। जैसे—धन-मत्त। ३ किसी प्रकार के मनोवेग के पूर्ण आवेश से युक्त। ४ किसी काम या बात के पीछे मनवाला। जैसे—रण-मत्त। ५ उन्मत्त। पागल। ६ बहुत अधिक प्रसन्न।
पु० १ मतवाला हाथी। २ धतूरा। ३ कोयल।
†स्त्री०=माया।

मत्तक—वि० [स० मत्त+कन्] जो कुछ-कुछ मत्त हो।

मत्तकाशी—वि० [स०] [स्त्री० मत्तकाशिनी] अत्यन्त रूपवान। परम सुन्दर।

मत्तकोकिल—पु० [सं० कर्म० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मत्त-गयंद—पु० [स० मत्त+हिं० गजेन्द्र] सवैया छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ७ भगण और २ गुरु होते हैं।

मत्तता—स्त्री० [स० मत्त+तल्+टाप्] मत्त होने की अवस्था या भाव। मस्ती।

मत्तताई†—स्त्री०=मत्तता।

मत्त-मयूर—पु० [स० मध्य० स०] पद्रह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश यगण, मगण, यगण, सगण, और फिर मगण होता है।

मत्त-वारण—पु० [स० कर्म० स०] १ बरामदा। २. आँगन के पास या सामने की छत। ३ मस्त हाथी। ४ सुपारी का चूर्ण।

मत्ता—स्त्री० [स० मत्त+टाप्] १ बारह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, भगण, सगण और एक गुरु होता है और ४, ६ पर यति होती है। २ मदिरा। शराब।
स्त्री० [स० मत् का भाव] स० मत का वह रूप जो भाव वाचक शब्द बनाने के लिए प्रत्यय के रूप मे अन्त मे लगता है। जैसे—नीतिमत्ता, बुद्धिमत्ता आदि।
†स्त्री०=मात्रा।

मत्ता-क्रीड़ा—स्त्री० [स० ब० स०] तेईस अक्षरो का एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश दो मगण, एक तगण, चार नगण एक लघु और एक गुरु अक्षर होता है।

मत्था—पु० [स० मस्तक] १ ललाट। मस्तक। माथा। २ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मत्थे—क्रि० वि० [हिं० माथा] १ मस्तक या सिर पर। २. किसी पर उत्तरदायित्व, भार आदि के रूप मे।
मुहा०—(किसी के) मत्थे मढना=जबरदस्ती देना। जैसे—यह काम तुम्हारे मत्थे पड़ेगा। (कोई बात किसी के) मत्थे मढ़ना=बलात् किसी पर कोई दोष मढना।

मत्य—पु० [स० मत+यत्] १ पटेला। हेगा। २ ज्ञान-प्राप्ति का साधन।

मत्सर—पु० [स०√मद्+सरन्] १ द्वेष। विद्वेष। २ द्वेष-जन्य और ईर्ष्यापूर्ण मानसिक स्थिति। ३ क्रोध। गुस्सा।

मत्सरी (रिन्)—पु० [स० मत्सर-इनि, दीर्घ] मत्सर करनेवाला व्यक्ति। जिसके मन मे मत्सर हो।

मत्स्य—पु० [स०√मद्+स्यन्] १ मछली। २. विष्णु के दस अवतारो मे से पहला अवतार जो मछली के रूप मे हुआ था। ३ ज्योतिष मे मीन नामक राशि। ४ नारायण। ५ प्राचीन विराट देश का दूसरा नाम।

६ पुराणानुसार सुनहले रग की एक प्रकार की शिला जिसका पूजन करने से मुक्ति होना माना जाता है। ७ छप्पय छद के २३वें भेद का नाम। ७ दे० 'मत्स्य-पुराण'।

मत्स्य-गधा—स्त्री० [म०ब०स०,+टाप्] १ सत्यवती (व्यास की माता)। २ जल-पीपल।

मत्स्यजीवी (विन्)—पु० [सं० मत्स्य√जीव् (जीना) +णिनि, उप० स०] मछुआ। धीवर।

मत्स्य-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन सुदी द्वादसी।

मत्स्य-द्वीप—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक द्वीप।

मत्स्य-नारी—स्त्री० [कर्म०स०] १. वह जो आकृति मे आधी मछली हो और आधी नारी। विशेषत. जिसका धड मे ऊपरी भाग नारी का हो और शेष भाग मछली का। (एक प्रकार का काल्पनिक प्राणी) २. सत्यवती।

मत्स्यनाशक—पु० [ष० त०] कुरर पक्षी।

मत्स्यनाशन—पु० =मत्स्यनाशक।

मत्स्यनी—स्त्री०[स०] देशो की पाँच प्रकार की सीमाओ मे से वह सीमा जो नदी या जलाशय आदि के द्वारा निर्धारित हो।

मत्स्य-न्याय—पु० [ष० त०] १ यह मान्यता कि छोटों को बडे अथवा दुर्बलो को सबल उसी प्रकार खा जाते या नष्ट कर देते हैं जिस प्रकार बडी मछलियाँ छोटी मछलियो को खा जाती हैं। २. अराजकों या आततायियों का राज्य।

मत्स्य-पालन—पुं० [ष०त०] मछलियाँ पालकर उनकी पैदावार बढाने का काम। (पिसीकल्चर)

मत्स्य-पुराण—पु० [मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो महापुराण माना जाता है।

मत्स्य-बध—पु० [ष० त०] मछलियाँ पकड़नेवाला। मछुआ। धीवर।

मत्स्य-बधन—पु० [ष० त०] मछली पकड़ने की बंशी। कँटिया।

मत्स्य-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तान्त्रिको की एक मुद्रा।

मत्स्य-राज—पु० [ष० त०] १ रोहू मछली। रोहित। २. विराट-नरेश।

मत्स्य-वेधनी—स्त्री० [ष० त०] मछली फँसाने की वंसी। कँटिया।

मत्स्य-संवर्धन—पु० [ष० त०] मत्स्य-पालन।

मत्स्याक्षी—स्त्री०[मत्स्य-अक्षि, ब० स०,+षच्,+ङीप्] १ सोम लता। ब्राह्मी बूटी। ३ गाँडर। दूब।

मत्स्यादिनी—स्त्री० [मत्स्य-अदिनी, सुप्सुपा स०] १ जल पीपल। ३. दे० 'मत्स्याक्षी'।

मत्स्यावतार—पु० [मत्स्य-अवतार, ष० त०] भगवान विष्णु का पहला अवतार जिसमे उन्होंने मत्स्य का रूप धारण किया था।

मत्स्याशन—वि० [स० मत्स्य√अश् (खाना)+ल्यु—अन] मछली खानेवाला।

पु० मछरग नामक पक्षी।

मत्स्यासन—पु० [मत्स्य-आसन, मध्य०स०, ष० त०]तांत्रिको के अनुसार योग का एक आसन।

मत्स्येंद्रनाथ—पु० [स०] एक प्रसिद्ध हठयोगी महात्मा जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्योदरी—स्त्री०[मत्स्य-उदरी, ब० स०,+ङीप्] सत्यवती। मत्स्यगंधा।

मत्स्योपजीवी (विन्)—पु० [सं० मत्स्य,+उप√जीव्(जीना)+णिनि] मछुआ। धीवर।

मथन—पु० [सं०√मथ् (मथना) +ल्युट्—अन] १. मथने की क्रिया या भाव। बिलोना। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३ गनियारी नामक वृक्ष।

वि० १ नष्ट करनेवाला। २. मार डालने या वध करनेवाला। (यौ० के अन्त में) जैसे—मदन-मथन।

मथना—स० [स० मथन या मंथन] १. मथानी आदि के द्वारा दूध या दही को इस प्रकार चलाना या हिलाना कि उसमे से मक्खन निकल आये। सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२ कई चीजों को हिला-डुलाकर एक मे मिलाना। ३ अस्त-व्यस्त या नष्ट-भ्रष्ट करना। ४ कुछ जानने या पता लगाने के लिए जगह-जगह ढूँढना या देखना। जैसे—(क) बड़े-बड़े शास्त्र मथना। (ख) किसी को ढूँढने के लिए सारा शहर मथना। ५ कोई क्रिया बहुत अधिक या बार बार करना। जैसे—तुम तो एक ही बात लेकर मथने लगते हो। ६ अच्छी तरह पीटना या मारना।

पु० मथानी। रई।

मथनियाँ†—स्त्री०=मथनी।

मथनी—स्त्री० [हिं० मथना] १. मथने की क्रिया या भाव। २. वह मटका जिसमे दही मथा जाता है। ३. मथानी। रई।

मथवाहा†—पु० [हिं० माथा+वाह (प्रत्य०)] सिर मे होनेवाला दर्द। पु०=महावत।

मथाई—स्त्री० [हिं० मथना+आई (प्रत्य०)] १. मथने की क्रिया या भाव। २. मथने की मजदूरी।

मथाना—स० [हिं० मथना] मथने का काम किसी दूसरे से कराना। अ० (दही आदि का) मथा जाना।

पु० बडी मथानी।

मथानी—स्त्री० [हिं० मथना] काठ का बना हुआ एक प्रकार का उपकरण जिसकी सहायता से दही मथकर मक्खन निकाला जाता है।

मुहा०—मथानी पड़ना या बहना=खलबली मचना।

मथाव—पुं० [हिं० मथना+आव (प्रत्य०)] मथने की क्रिया या भाव।

मथित—भू० कृ० [स०√मथ् (मथना)+क्त] १. जिसका मथन या मंथन किया गया हो। मथा हुआ। २ घोलकर अच्छी तरह मिलाया हुआ।

मथितार्थ—पुं० [स० मथित-अर्थ, कर्म० स०] १ वह अर्थ या आशय जो किसी विषय का मथन या मथन करने पर निकलता है। २ साराश।

मथुरा—स्त्री० [स०√मथ् (मथना)+उरच्+टाप्] पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी, जिसकी गिनती सात मोक्षदायिका पुरियो मे होती है।

मथुरिया—वि० [हिं० मथुरा+इया (प्रत्य०)] मथुरा का। जैसे—मथुरिया चौबे।

मथूल†—पु०=मस्तूल। उदा०—जानी के सोक जल जान की मथूल किधौ।—रत्नाकर।

मथौरा†—पु० [हिं० मथना] बढइयो का एक उपकरण या औजार।

मयौरी—स्त्री० [हिं० माथा+औरी (प्रत्य०)] एक गहना जो स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

मय्या†—पु०=माथा।

मदंग—पु० [सं० मृदग] एक प्रकार का बाँस।

मदंती—स्त्री० [स०] विकृत धैवत की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति।

मदंघ—वि०=मदाध।

मद—पु० [स०√मद्+अप्] १ मादक द्रव्य खाने या पीने से होनेवाली वह उद्वेगपूर्ण अवस्था जिसमे मस्तिष्क ठीक तरह से काम नही करता। नशा। २ अपनी किसी विशिष्टता या श्रेष्ठता के कारण उत्पन्न होनेवाली वह मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य औरो को इस प्रकार तुच्छ या हीन समझने लगता है, मानो उसने किसी मादक द्रव्य का सेवन किया हो। निदनीय अहकार या गर्व। यह अभिमान का एक निकृष्ट प्रकार माना जाता है। ३ उन्मत्तता। पागलपन। ४. अज्ञान या प्रमाद के कारण होनेवाला मतिभ्रम। ५ वह मानसिक अवस्था जिसमे यौवन अथवा किसी प्रकार की वासना के कारण उचित-अनुचित या भले-बुरे का विशेष ध्यान नही रह जाता। मस्ती।

मुहा०—मद पर आना=(क) युवा होना। (ख) तीव्र या प्रवल उमग मे होना। (ग) काम-वासना से उन्मत्त होना।

६ वह गंधयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियो की कनपटियो से बहता है। दान। ७ मद्य। शराव। ८. कस्तूरी। ९ शहद। १०. वीर्य। ११ कामदेव। मदन।

वि० १. मतवाला। मत्त। २. बहुत अधिक प्रसन्न या मत्त।

स्त्री० [अ०] १. वह लवी लकीर जिसके नीचे लेखा या हिसाव लिखा जाता है। शीर्षक। २ लेखे या हिसाव का वह विदिष्ट भाग जो किसी कार्य या व्यक्ति के नाम से अलग रखा जाता है। खाता। जैसे—ये १०) भी इसी मद मे लिखे जायँगे। ३ कार्य या कार्यालय का विभाग। सरिश्ता। ४. समुद्र की ऊँची लहर। ज्वार।

मदक—स्त्री० [हिं० मद+क (प्रत्य०)] तंवाकू की तरह पीने का एक मादक पदार्थ जो अफीम के योग से बनाया जाता है।

मदकची—पु० [हिं० मदक+ची (प्रत्य०)] वह जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।

मदकट—पु० [स० मद√कट् (प्रकट करना)+अच्] १. साँड। २. २. नपुसक।

मद-कर—वि० [प० त०] जिससे मद उत्पन्न हो। मद-कारक।

पु० धतूरा।

मद-कल—वि० [व० स०] [स्त्री० मद-कला] १ मत्त। मतवाला। २ उन्मत्ता। पागल। ३. जो किसी प्रकार के मद से विह्वल हो रहा हो।

मदकी—पु०=मदकची।

मदकृत्—वि० [सं० मद√कृ (करना)+क्विप्+तुक्] १. उन्माद-कारक। २ मादक।

मदखूला—स्त्री० [अ० मद्खूल] वह स्त्री जिसे कोई विना विवाह किये ही पत्नी बनाकर अपने घर मे रख ले। गृहीता। रखनी।

मद-गंध—पु० [व० स०] १ छतिवन। २ मद्य। शराव।

मदगंधा—स्त्री० [सं० मदगध+टाप्] १. मदिरा। शराव। २ अतसी। अलसी।

मद-गमन—पु० [व० स०] भैंसा। महिष।

मदगल—वि० [स० मदकल] मत्त। मस्त।

पु०=मगदल (मिठाई)।

मदगलित—वि० [सं० मदकल] मदमत्त। उदा०—गमे गमे मदगलित गुडंता। —प्रिथीराज।

मदघ्नी—स्त्री० [सं० मद√हन् (मारना)+ट+ङीप्] पोई नाम का साग। पूतिका।

मद-जल—पु० [स० कर्म० स०] हाथी का मद। दान।

मदत†—स्त्री०=मदद।

मदद—स्त्री० [अ०] १ वह कार्य या सेवा जो किसी कार्यकर्ता के काम के सपादन मे की जाय। सहायता। २ वह धन जो किसी की उद्देश्य-सिद्धि, जीविका, निर्वाह आदि के लिए उसे दिया जाय। ३ वे पदार्थ या व्यक्ति जो किसी काम को पूरा करने के लिए भेजे जायँ। ४ नौकरो, मजदूरों आदि को दिया या बाँटा जानेवाला पारिश्रमिक अथवा वेतन का कुछ अश।

क्रि० प्र०—बाँटना।

मदद-खर्च—स्त्री० [अ० मदद+फा० खर्च] १ वह धन जो किसी को सहायता के लिए दिया जाय। २ किसी काम के लिए अग्रिम दिया जानेवाला धन। पेशगी।

मददगार—वि० [अ० मदद+फा० गार (प्रत्य०)] मदद या सहायता करनेवाला। सहायक।

मदन—पु० [स०√मद्+णिच्+ल्यु—अन] १ काम-देव। २ रति-क्रीडा। सभोग। ३ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन जिसमे नायक अपना एक हाथ नायिका के गले मे डालकर और दूसरा हाथ मध्यदेश मे लगाकर उसका आलिगन करता है। ४ महादेव के चार प्रधान अवतारो मे से तीसरे अवतार का नाम। ५ ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार जन्म से सप्तम गृह का नाम। ६ एक प्रकार के गीत। ७ मैना नामक पक्षी। ८ मैनफल। ९ धतूरा। १०. खदिर। खैर। ११ मौलसिरी। १२. भौंरा। १३ मोम। १४ अखरोट। १५ प्रेम। स्नेह। १६ रूपमाल नामक छंद का दूसरा नाम। १७ खजन पक्षी।

मदन-कटक—पु० [स० मध्य० स०] साहित्य मे सात्विक रोमाच।

मदनक—पु० [स० मदन+कन्] १ मदन वृक्ष। मैन फल। २ दमनक या दौना नाम का पौधा। ३ मोम। ४ खदिर। खैर। ५ मौलसिरी। ६ धतूरा।

मदन-कदन—पु० [प० त०] शिव। महादेव।

मदन-गृह—पु० [प० त०] १. योनि। भग। २ फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म कुडली मे सातवाँ स्थान। ३ मदनहर नामक छन्द।

मदन-गोपाल—पु० [उपमि० स०] श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम।

मदन-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] चैत्र शुक्ल चतुर्दशी।

मदन-ताल—पु० [प० त०] सगीत मे, एक प्रकार का ताल जिसमे पहले दो द्रुत और अत मे दीर्घ मात्रा होती है।

मदन-त्रयोदशी—स्त्री० [मध्य० स०] चैत्र शुक्ल त्रयोदशी।

मदन-दमन—पु० [प० त०] शिव का एक नाम।
मदन-दिवस—पु० [प० त०] मदनोत्सव का दिन। वसत।
मदन-दोला—स्त्री० [प० त०] संगीत मे, इन्द्र ताल के छ. भेदो मे से एक।
मदन-द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चैत्र द्वादशी जो मदन महोत्सव के अन्तर्गत है।
मदन-नालिका—स्त्री० [प० त०] वह स्त्री जिसका विश्वास न हो। दुश्चरित्रा या भ्रष्टा स्त्री।
मदन-पति—पु० [प० त०] १ इन्द्र। २ विष्णु।
मदन-पाठक—पु० [प० त०] कोकिल।
मदन-फल—पु० [म० मध्य० स०] मैनफल।
मदनबान—पुं० [स० मदनवाण] एक प्रकार का वेला और उसका फूल।
मदन-भवन—पु० [स० प० त०] योनि। भग।
मदन-मनोरमा—स्त्री० [उपमि० स०] केशव के मतानुसार सवैया का एक भेद जिसे दुर्मिल भी कहते हैं।
मदन-मनोहर—पु० [उपमि० स०] दंडकवृत्त का एक भेद जिसे मनहर भी कहते हैं।
मदन-मस्त—पु० [हिं० मदन+मस्त] १ जगली सूरन का सुखाया हुआ टुकडा जिसका प्रयोग औषध मे होता है। २ चंपा के फूल का एक भेद जिसकी गन्ध बहुत उग्र होती है।
मदन-महोत्सव—पु० [प० त०] प्राचीन भारत का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था।
मदन-मोदक—पु० [प० त०] केशव के मतानुसार सवैया छद का एक भेद जिसे मुदरी भी कहते है।
मदन-मोहन—पु० [प० त०] कृष्णचन्द्र का एक नाम।
मदन-ललिता—स्त्री० [सुप्सुपा स०] एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सोलह वर्ण होते हैं।
मदन-लेख—पु० [स० मध्य० स०] प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेम-पत्र।
मदन-शलाका—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ मैना। ३. कोयल।
मदन-सदन—पु० [प० त०] १. भग। योनि। २. फलित ज्योतिष के अनुसार, जन्म-कुडली का सातवां स्थान।
मदन-सारिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] मैना।
मदन-हर—पु० [प० त०]=मदनहरा।
मदन-हरा—स्त्री० [सं० मदनहर+टाप्] चालीस मात्राओं के एक छ० का नाम।
मदनांकुश—पु० [मदन-अकुश, प० त०] १. लिंग। २. नख-क्षत।
मदनांतक—पु० [मदन-अतक, प० त०] शिव।
मदनाध—वि० [मदन-अध, तृ० त०] कामाध।
मदना—स्त्री० [स० मदन+टाप्] मैना।
मदनाग्रक—पु० [म० मदन-अग्रक, ब० स०,+कप्] कोदो।
मदनायुध—पु० [म० मदन-आयुध, प० त०] १ कामदेव का अस्त्र। २. भग। योनि।
मदनारि—पु० [मदन-अरि, प० त०] शिव।
मदनालय—पु० [मदन-आलय, प० त०] १. भग। योनि। २ फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म-कुडली मे का सातवां स्थान।
मदनावस्था—स्त्री० [मदन अवस्था, प०त०] वह अवस्था जिसमे काम-वासना बहुत प्रबल हो।
मदनास्त्र—पु० [मदन-अस्त्र, ष० त०] =मदनायुध।
मदनी—स्त्री० [सं० मदन+ङीप्] १. मद्य। शराब। २. कस्तूरी। ३. मेथी। ४. धौ।
मदनीय—वि० [स०√मद्+अनीयर्] नशा उत्पन्न करने या लानेवाला। मादक।
मदनोत्सव—पु० [मदन–उत्सव, च० त० या ष०त०] मदन महोत्सव।
मदनोत्सवा—स्त्री० [मदन–उत्सव, ब० स०,+टाप्] अप्सरा।
मदनोद्यान—पु० [मदन-उद्यान, च० त० या प० त०] प्रमोद-वन।
मदपी—वि०=मद्यप (शराबी)।
मद-प्रयोग—पु० [प० त०] हाथियो का मद बहना।
मद-प्रस्रवण—पु० [प० त०] दे० 'मदप्रयोग'।
मदफन—पु० [अ० मद्‌फन] वह स्थान जहाँ मुरदे गाडे जाते है। कब्रिस्तान।
वि० १. जमीन मे गाडा हुआ। २. गुह्य।
मदभंजिनी—स्त्री० [स० मद√भञ्ज् (भग करना)+णिनि+ङीप्] शतमूली।
मद-मत्त—वि० [स० तृ० त०] १. (हाथी) जो मद बहने के कारण मस्त हो। २ मतवाला। मत्त।
मदयंतिका—स्त्री० [स०√मद् (मतवाला होना)+णिच्+झच्-अन्त, +ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] मल्लिका।
मदयित्नु—पु० [स० √मद्+णिच्+इत्नुच्] १ कामदेव। २ मद्य। शराब। ३ कलवार।
मदर—पु० [स० मंडल] मँडराने की क्रिया या भाव। उदा०—ब्रज पर मदर करत है काम।—सुर।
मदरज—पु०=मकरद।
मदरसा—पु० [अ० मदरिस] पाठशाला। विद्यालय।
मदरास—पु० १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो अब कई राज्यो मे विभक्त हो गया है। २. उक्त प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी।
मदरासी—वि० [हिं० मदरास] मदरास का।
पु० मदरास का रहनेवाला।
मद-लेखा—स्त्री० [प० त०] एक प्रकार की वर्णिक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे सात सात वर्ण होते है।
मद-विक्षिप्त—वि० [तृ० त०] मद से पागल। मदमस्त।
पु० मतवाला हाथी।
मद-शाक—पु० [व० स०] पोई का साग।
मदसार—पु० [स० मद्√सृ (गति)+णिच्+अण्] शहतूत का पेड।
मदह—स्त्री० [अ०] प्रशसा। तारीफ।
मद-हेतु—पु० [प० त०] धौ का पेड।
मदहेसहाबा—स्त्री० [अ० मदह-ई-सहाब] मुहर्रम के दिनो मे सुन्नी संप्रदाय वालो द्वारा पढी जानेवाली वे कविताएँ जिनमे मुहम्मद साहब और उनके साथियो की प्रशसा होती है।
मदहोश—वि० [फा०] नशे के कारण जिसके होश ठिकाने न हों।
मदहोशी—स्त्री० [फा०] मदहोश होने की अवस्था या भाव।

मदांतक—पु० [मद-अतक, ष० त०] मदात्यय नामक रोग ।

मदांध—वि० [मद-अध, तृ० त०] [भाव० मदाधता] मद अर्थात् किसी गुण आदि की अधिकता के फलस्वरूप जो अधा या विवेकहीन हो रहा हो।

मदांधता—स्त्री० [स० मदाध+तल्+टाप्] मदाध होने की अवस्था या भाव।

मदाखिल—स्त्री० [अ०] लगान ।

मदाखिलत—स्त्री० [अ०] १ दाखिल होने की क्रिया या भाव। प्रवेश। २ बीच मे दखल देने की क्रिया या भाव। ३ वँध।

मदाखिलत बेजा—स्त्री० [अ० मदाखिलत+फा० बेजा] १ अनुचित रूप से किया जानेवाला प्रवेश। २ अनुचित रूप से दखल देने की क्रिया या भाव। अनुचित हस्तक्षेप ।

मदाढ्य—पु० [मद-आढच, तृ० त०] ताड।

मदात्यय—पु० [स० मद-अत्यय, ब० स०] बहुत अधिक मदिरा या शराब पीने के फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाले कई प्रकार के शारीरिक विकार। (एल्कोहलिज्म)

मदानि*—वि० [?] कल्याण करनेवाला। मंगलकारक।

मदार—पु० [स०√मद्+आरन्] १ हाथी । २ सूअर । ३ एक प्रकार का गध द्रव्य। ४ आक नाम का पौधा।
वि० चालाक । धूर्त्त ।
पु० [अ०] १ दौरा करने का रास्ता। भ्रमण-मार्ग। २ ग्रहों के भ्रमण का मार्ग। कक्षा। ३ आधार। आश्रय।
पद—दार मदार।
४ मुसलमानो के एक पीर।
†पु०=मदारी ।

मदार गदा—पु० [हिं० मदार+गदा] धूप मे सुखाया हुआ मदार का दूध जो प्राय औषध के रूप मे काम आता है ।

मदारिया—पु० [देश०] एक प्रकार का मिट्टी का हुक्का। (अवध)
पु०=मदारी ।

मदारी—पु० [अ० मदार] १ वह जो वन्दर, भालू आदि नचाकर जीविका चलाता हो। कलदर। २ जादू आदि के खेल दिखानेवाला बाजीगर।

मदालसा—स्त्री० [स०] पुराणानुसार विश्वावसु गधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल मे रखा था।

मदालापी (पिन्)—पु० [स० मद+आ√लप् (बोलना)+णिनि] [स्त्री० मदालापिनी] कोकिला । कोयल ।

मदालु—वि० [स० मद+आलुच्] १ जिससे मद झरता हो। २ मस्त।

मदाह्व—पु० [मद-आह्व, ब० स०] कस्तूरी।

मदि—स्त्री० [स०√मृद्(चूर्ण करना)+इनि,पृषो० सिद्धि] हेगा। पटेला।

मदिया—स्त्री० [फा० मादा] पशुओ मे स्त्री जाति। स्त्री जाति का जानवर। मादा। जैसे—कबूतर की मदिया=कबूतरी।

मदिर—स्त्री० [स०√मद्+किरच्] लाल खैर।
वि० मद से भरा हुआ। उदा०—गूँजते जब मदिर घुन मे वासना के गीत।—प्रसाद ।

मदिरा—स्त्री० [स० मदिर+टाप्] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के अन्नो, फलो, रसो आदि को सडाकर उनका भभके से खीचकर निकाला जानेवाला नशीला रस। २ शराब। ३ कामदेव की पत्नी। रति। ३ बाइस अक्षरो का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अत मे एक गुरु होता है। इसे मालिनी, उमा और दिवा भी कहते हैं।

मदिराक्ष—वि० [मदिर-अक्ष, ब० स०+षच्] [स्त्री० मदिराक्षी] मस्त आँखोवाला। मत्तलोचन ।

मदिराभा—स्त्री० [मदिरा-आभा, ष०त०] मदिरा की आभा या आभास। जैसे—स्वर्णोदय सी अतर्मन मे मदिराभा भरती तुम क्षण मे।—पत।

मदिरायत—वि० [स० मदिरायतन] मद से भरा हुआ। मदिर। जैसे—मदिरायत नयन ।

मदिरालय—पु० [मदिरा-आलय, ष० त०] शराबखाना। कलवरिया।

मदिरालस—वि० [स० मदिरा-अलस, तृ० त०] [स्त्री० मदिरालसा] अधिक शराब पीने के बाद जिसे बहुत आलस्य आ रहा हो ।

मदी—स्त्री०=मदि।

मदीना—पु० [अ० मदीन] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की समाधि है।

मदीय—वि० [स० अस्मद्+छ—ईय, मदादेश] [स्त्री० मदीया] मेरा।

मदीला—वि० [स० मद+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० मदीली] १ मद से युक्त। मदिर। २ नशा लानेवाला। नशीला।

मदुकल—पु०[?] ऐसा दोहा जिसके प्रत्येक चरण मे १३ गुरु और २२ लघु मात्राएँ हो। गयद।

मदुरा—पु० [?] काठ का बना हुआ एक प्रकार का कडा जो योगी हाथ मे पहनते है।

मदोत्कट—वि० [स० मद-उत्कट, तृ० त०] मद से उन्मत्त।
पु० मस्त हाथी।

मदोदग्र—वि० [स० मद-उदग्र, तृ० त०] मत्त। मतवाला।

मदोद्धत—वि० [स० मद-उद्धत, तृ० त०] १ मदोन्मत्त। मत्त। २ बहुत बडा अभिमानी या घमडी ।

मदोन्मत्त—वि० [स० मद-उन्मत्त, तृ० त०] १ जो मद या नशे के कारण उन्मत्त हो रहा हो। मदाध। २ जो धन, बल आदि की अधिकता के फलस्वरूप बहुत घमडी हो, इसलिए जिसे भले-बुरे का ज्ञान न रह गया हो।

मदोवै*—स्त्री ०=मदोदरी।

मद्गु—पु०[स० √मस्ज् (डूबना)+ड] १ एक प्रकार का जल-पक्षी। २ पेडो पर रहनेवाला एक प्रकार का जतु। ३ मगुर या मद्गुरी नाम की मछली। ४ एक प्रकार का साँप। ५ एक प्रकार का जहाज जो जल-युद्ध मे काम आता था। ६ एक पुरानी वर्ण-सकर जाति।

मद्गुर—पु०[स०√मद्+उरच्, नि० सिद्धि] १ मगुर या मगुरी नामक मछली। २ मद्गु नामक सकर जाति।

मद्द—स्त्री०= मद (विभाग)।

मद्दत†—स्त्री०=मदद।

मद्दा†—वि०=मदा।

मद्दाह—वि०[अ०] [भाव० मद्दाही] मदह अर्थात् प्रशसा या स्तुति करनेवाला।

मद्दी†—स्त्री०=मदी।

मद्दू—पु०[स० ककुद] साँड का डिल्ला।

मद्दूसाही—पु०[हिं० मधुसाह] तांबे का एक प्रकार का पुराना सिक्का जो प्राय एक पैसे के बराबर होता था।

मद्धम—वि०१ =मद्धिम। २ =मध्यम।

मद्धिक—पु०[स०] द्राक्षा से बनाई हुई शराब। द्राक्ष।

मद्धिम—वि०[स० मध्यम] १. गति गुण आदि के विचार से जिसमे तेजी या प्रखरता न हो। सामान्य अवस्था की अपेक्षा कम तेज या कम प्रखर। हलका। जैसे—मद्धिम चाल, मद्धिम रोशनी।

मद्धे—अव्य [स० मध्ये]१. मध्य या बीच मे। २. मे। ३. किसी विभाग या विषय के क्षेत्र या मद मे। जैसे—सौ रुपए मकान की मरम्मत मद्धे खरच हुए।

मद्य—पु०[स०√मद्+यत्] मदिरा। शराब। सुरा। (वाइन)

मद्यप—वि० [स० मद्य√पा (पीना)+क] जो मद्यपान करता हो। मद्य पीने का अभ्यस्त। शराबी।

मद्य-पान—पु०[ष० त०] मद्य पीने की क्रिया या भाव। शराब पीना।

मद्यपाशन—पु०[स० मद्यप-अशन, ष०त०] मद्य के साथ खाई जानेवाली चटपटी चीज। चाट। गजक।

मद्य-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०,+टाप्] धातकी। धौ।

मद्य-बीज—पु०[ष० त०]१ शराब के लिए उठाया हुआ खमीर। पांस। २ वह पदार्थ जिसके द्वारा खमीर या पांसा उठाया जाता है।

मद्य-मंड—पु०[ष०त०]=मद्यपाशन।

मद्यवासिनी—स्त्री०[स० मद्य-वास, ष० त०, +इनि+ङीप्] धातकी। धौ।

मद्यसधान—पु०[ष० त०] भभके से शराब खीचने की प्रक्रिया।

मद्रकर—वि०[स० मद्र√कृ+खच्, मुमागम] मंगलकारक। शुभ।

मद्र—पु०[स०√मद्र+रक्]१. पचनद मे स्थित एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का शासक। ३ मद्र जनपद का निवासी।

मद्रक—वि०[सं० मद्र+कन्]१ मद्र जनपद-सबंधी। २ मद्र देश मे उत्पन्न।
पु०१. मद्र जनपद का शासक। २ मद्र देश का निवासी।

मद्रकार—वि० [स०मद्र√कृ (करना)+अण्] मंगलकारक। शुभ।

मद्र-सुता—स्त्री०[स० ष० त०] माद्री।

मद्रास—पु०=मदरास।

मद्रासी—वि०, पु०=मदरासी।

मधा—पु०१ =मध्य। २ =मद्य। ३. मधु।
अव्य० [सं० मध्य] मे।

मधई—वि०[स० मद्य+हिं० ई (प्रत्य०)] शराब पीनेवाला। शराबी।

मधथ—पु०=मध्यस्थ। उदा०—दुहु दिश मधथ दिवाकर भले।—विद्यापति।

मधव्य—पु०[स० मधु+यत्] वैशाख मास।

मधाना—पु०[देश०] एक प्रकार की घास। मकड़ा।

मधि—स्त्री० [स० मध्य०]१. मध्य मे होने की अवस्था या भाव। २. सुख-दुःख, स्वर्ग-नरक आदि को समान भाव से देखने की अवस्था, क्रिया या भाव।
*अव्य० मध्य।

मधिम—वि०१.=मद्धिम। २. =मध्यम।

मधियानी—वि०[सं० मध्यवर्ती] बीच में रहने या होनेवाला। बीच का। उदा०—जेते मधियानी मत्र तिन सौं मिलाय छूटयौ।—सेनापति।

मधु—पु०[सं०√मन् (जानना)+उ, ध—आदेश] १. शहद। २ जल। पानी। ३. मदिरा। शराब। ४. फूलों का रस। मकरंद। ५. वसंत ऋतु। ६. चैत का महीना। ७. दूध। ८ मिसरी। ९ मक्खन। १०. घी। ११. अशोक वृक्ष। १२. महुआ। १३. मुलेठी। १४ अमृत। १५ शिव का एक नाम। १६. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो लघु अक्षर होते है। १७ संगीत मे एक राग जो भैरव राग का पुत्र माना जाता है। १८. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था और जिसके कारण उनका नाम 'मधुसूदन' पड़ा था।
वि० १ मीठा। २. मधुर। ३ स्वादिष्ट।
स्त्री० जीवंती का पेड़।

मधुआ—पु०[?] आम के बौर में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

मधु-ऋतु—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वसंत ऋतु।

मधु-कंठ—वि०[सं० ब० स०] जिसके गले मे मिठास हो।
पु० कोकिल। कोयल।

मधुक—पु०[सं० मधु+कन् या मधु√कै+क]१. महुए का पेड़। २. महुए का फल। ३. मुलेठी।

मधु-कर—पु०[ष० त०] १. भौंरा। २ कामुक व्यक्ति। ३. बैंगन।

मधुकरी—स्त्री० [सं० मधुकर+ङीप्] १. मधुकर की मादा। भौंरी। २ साधु-सन्यासियों की वह भिक्षा जो केवल पके हुए अन्न (चावल, दाल, रोटी आदि) के रूप मे होती है।
क्रि० प्र०—मांगना।
३ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४. आटे के पेड़े को पकाई हुई रोटी। बाटी। भौरिया। लिट्टी।

मधु-कर्कटिका—स्त्री०[उपमि० स०] बिजौरा नीबू।

मधु-कर्कटी—स्त्री०[उपमि० स०] १ बिजौरा नीबू। २ खजूर का फल।

मधुका—स्त्री० [सं० मधु+कन्+टाप्] १ मुलेठी। २ मधु। शहद। ३. कृष्णपर्णी लता।

मधुकार—पु०[सं० मधु√कृ (करना)+अण्] १ मधुमक्खी। २ मधु-पर्णी।

मधुकारी (रिन्)—पु०[स० मधु√कृ+णिनि, उप० स०] मधुमक्खी।
पु०[हिं० मधुकरी] वह संन्यासी जो मधुकरी मांगता या ग्रहण करता हो।

मधु-कुल्या—स्त्री०[ष० त०] कुश द्वीप की एक नदी। पुराण।

मधु-कृत—पु० [सं० मधु√कृ+क्विप्, तुक्] १. भौंरा। २. मधु-मक्खी।

मधु-कैटभ—पु०[द्व० स०] मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जो विष्णु के कान की मैल से उत्पन्न हुए माने गये हैं। (पुराण)

मधु-कोष—पु०[ष० त०] शहद की मक्खी का छत्ता। मधु-चक्र।

मधु-क्षीर—पु०[ब० स०] खजूर का पेड़।

मधु-गंध—पु०[ब० स०]१ अर्जुन (वृक्ष)। २. मौलसिरी।

मधु-गायन—पु०[ब० स०] कोयल।

मधु-गुंजन—पु०[ब० स०] सहिजन का वृक्ष।

मधु-घोष—पु०[ब० स०] कोकिल। कोयल।

मधु-चंद्र—पु० [स० मधु-चन्द्र] नव-विवाहित वर और वधू का वह समय जो वे सब काम-धन्धो से छुट्टी लेकर और किसी रमणीक स्थान मे प्राय घर के लोगो से अलग रहकर आनन्द-भोग मे बिताते है। (हनीमून)

विशेष—यह शब्द अगरेजी के 'हनीमून' का तदर्थीय है, जिसका मूल अर्थ था—विवाह के बाद का पहला महीना, परन्तु जो आजकल इसी अर्थ मे प्रयुक्त होता है जो ऊपर 'मधु-चद्र' का बतलाया गया है।

मधु-चक्र—पु०[ष० त०] शहद की मक्खियो का छत्ता।

मधुज—वि०[स० मधु√जन् (उत्पत्ति)+ड] मधु से उत्पन्न।

पु० मोम।

मधुजा—स्त्री०[स० मधुज+टाप्]१. मिश्री। २ पृथ्वी।

मधुजित्—पु० [स० मधु√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] विष्णु।

मधु-जीवन—पु०[ब० स०] बहेडा (वृक्ष)।

मधु-तृण—पु०[कर्म० स०] ईख।

मधु-त्रय—पु०[ष० त०] शहद, घी और चीनी का समाहार।

मधुत्व—पु०[स० मधु+त्व] मधु का भाव। शहद की मिठास।

मधु-दीप—पु०[स० मधु√दीप् (चमकना)+क] कामदेव।

मधु-दूत—पु०[ष० त०] आम का पेड।

मधु-दूती—स्त्री०[ष० त०] पाटला।

मधुद्र—पु०[स० मधु√द्रा (जाना)+क] भौरा।

मधु-द्रव—पु०[ब० स०] लाल सहिजन का वृक्ष।

मधु-द्रुम—पु०[मध्य० स०] १ महुए का पेड। २ आम का पेड।

मधु-धूलि—स्त्री०[ष० त०] खाँड। शक्कर।

मधु-धेनु—स्त्री०[मध्य० स०] दान के लिए कल्पित शहद की गाय।

मधुप—पु०[स० मधु√पा (पीना)+क]१ भौरा। २ शहद की मक्खी। ३ उद्धव का एक नाम।

वि० मधु पीनेवाला।

मधु-पटल—पु०[ष० त०] शहद की मक्खियो का छत्ता।

मधु-पति—पु०[ष० त०] श्रीकृष्ण।

मधु-पर्क—पु०[ब० स०]१ दही, घी, जल, शहद और चीनी का समाहार जिसका भोग देवता को लगाया जाता है। २ तत्र के अनुसार घी, दही और मधु का समूह जिसका उपयोग तान्त्रिक पूजन मे होता है।

मधु-पर्क्य—वि०[स० मधुपर्क+य]जिसके सामने मधुपर्क रखा जा सके। मधुपर्क का अधिकारी या पात्र।

मधु-पर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्]१ गुरुच। २ गमारी नाम का पेड। ३ नीली नाम का पौधा।

मधुपायी (यिन्)—पु०[स० मधु√पा (पीना)+णिनि, युक्] भौरा।

वि० मधु पीनेवाला।

मधु-पीलु—पु०[कर्म० स०] अखरोट (वृक्ष)।

मधु-पुर—पु०[ष० त०] मथुरा (नगरी)।

मधु-पुष्प—पु० [ब० स०] १ महुआ। २ अशोकवृक्ष। ३ सिरिस नामक वृक्ष। ४ मौलसिरी।

मधु-पुष्पा—स्त्री०[स० मधुपुष्प+टाप्]१ नागदती। २ धौ का पेड।

मधु-प्रमेह—पु०=मधु-मेह।

४—३६

मधु-प्रिय—पु०[ब० स०]१ बलराम। २. भुंइ जामुन।

मधु-फल—पु०[ब० स०] मीठा नारियल।

मधुफलिका—स्त्री०[स० मधुफल+कन्,+टाप्, इत्व] मीठी खजूर।

मधुवन—पु०[स० मधुवन]१ व्रजभूमि का एक वन। २ सुग्रीव के उपवन का नाम।

मधु-बहुल—पु०[ब० स०]१ वासती लता। २ सफेद जूही।

मधु-बीज—पु० [ब० स०] अनार।

मधुभाजन—पु० [ष० त०] मद्य या शराब पीने का प्याला। चषक।

मधुभार—पु०[स०] एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ मात्राएँ होती है और अत मे जगण होता है।

मधु-मक्खी—स्त्री०[स० मधुमक्षिका] मक्खी की तरह का एक छोटा पतिगा जो फूलो पर मँडराता और उनका रस चूसता है। यह समूहो मे तथा छत्ता बनाकर रहता है और उसमे शहद एकत्र करता है। यह प्राणियो को डक भी मारता है।

मधु-मक्षिका—स्त्री०[मध्य० स०] मधुमक्खी।

मधु-मज्जन—पु०[ब० स०] अखरोट (वृक्ष)।

मधुमती—स्त्री०[स० मधु+मतुप्+ङीप्]१ योग साधन मे, समाधि की वह अवस्था जो रज और तम के नष्ट होने तथा सत् का पूर्ण प्रकाश होने पर प्राप्त होती है। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसका प्रत्येक चरण दो नगण और एक गुरु का होता है। ३ मधु दैत्य की कन्या और इक्ष्वाकु के पुत्र हर्यश्व की पत्नी का नाम। ४ तान्त्रिको के अनुसार एक प्रकार की नायिका जिसकी उपासना और सिद्धि से मनुष्य जहाँ चाहे आ-जा सकता है।५ एक प्राचीन नदी जो नर्मदा की शाखा थी। ६ गगा नदी।

मधुमथन—पु० [स० मधु√मथ्+ल्यु—अन]मधु नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु।

मधु-मल्ली—स्त्री० [स० मध्य० स०] मालती।

मधु-मस्तक—पु०[ब० स०] प्राचीन काल का एक तरह का मैदे का पकवान जो मधु मे डुबोकर खाया जाता था।

मधुमाखी—स्त्री०=मधु-मक्खी।

मधुमात—पु०[स०] सगीत मे एक राग जो भैरव राग का सहचर माना जाता है।

मधुमात सारग—पु० [स०] सगीत मे मधुमात और सारग के योग से बना हुआ एक सकर राग जिसके गाने का समय दिन मे १७ दड से २० दड तक माना जाता है।

मधु-माधव—पु०[द्व० स०]१ मालश्री, कल्याण और मल्लार के मेल से बना हुआ एक सकर राग। २ वसत के दो मास—चैत्र और वैशाख।

मधुमाधव सारग—पु०[स० मध्यम० स०] १ मधुमाधव और सारग के योग से बना हुआ ओड़व जाति का एक सकर राग जिसमे धैवत और गाधार वर्जित है।

मधु-माधवी—स्त्री० [मध्य० स०] १ सगीत मे, एक रागिनी जो भैरव राग की सहचरी मानी जाती है। २ वासती लता। ३ एक प्रकार की पुरानी शराब।

मधु-माध्वीक—पु०[मध्य० स०] शराब।

मधुमान (मत्)—वि०[स० मधुमत्][स्त्री० मधुमती]१ जिसमे मधु

या शहद वर्तमान हो अथवा मिलाया हुआ हो। २. मधुर। मीठा। ३ मन को प्रसन्न, सतुष्ट या सुखी करनेवाला। प्रिय और सुखद।

मधु-मारक—पु०[ष० त०] भौंरा।

मधुमालती—स्त्री० [मध्य० स०] मालती (लता)।

मधुमासी†—स्त्री०=मधुमक्खी। उदा०—कुल कुटुबी आन बैठे मनहु मधुमासी।—मीराँ।

मधुमूल—पु०[कर्म० स०] रतालू नामक कद।

मधुमेह—पु०[ब० स०]एक प्रसिद्ध रोग जो अग्न्याशय में मधुसूदनी (देखें) के कम बनने के कारण होता है और जिसमे मूत्र अधिक शर्करा युक्त होकर प्राय धीरे धीरे और अधिक मात्रा मे या अधिक देर तक होता है। (डायबिटीज)

मधुमेही (हिन्)—पु०[स० मधुमेह+इनि] वह जिसे मधुमेह रोग हो।

मधु-यष्टि—स्त्री०[कर्म० स०]१ जेठी मधु। मुलेठी। २. ईख। ऊख।

मधु-यष्टिका—स्त्री०[स० मधुयष्टि+कन्+टाप्] मुलेठी।

मधु-यष्टी—स्त्री०[स० मधुयष्टि+ङीष्] मुलेठी।

मधुर—वि० [स० मधु√रा (देना)+क] [स्त्री० मधुरा] १ जिसका स्वाद मधु के समान हो।मीठा। २. जो सब प्रकार की कटुताओ से रहित, और मधु के समान मीठा जान पडे। जैसे—मधुर वचन। ३. जो कठोरता, कर्कशता आदि से रहित होने के कारण बहुत भला जान पडता हो। जैसे—वीणा का मधुर स्वर। उदा०—मधुर मधुर गरजत घन घोरा।—तुलसी। ४ जो अपनी मनोहरता, सुन्दरता आदि के कारण। प्रिय और भला लगता हो। जैसे—मधुर मूर्ति। ५ जो गति या चाल के विचार से धीमा या मद हो। जैसे—मधुर गति। ६ धीर और शात। ७ जो काम करने मे बहुत मट्ठर या सुस्त हो। जैसे—मधुर पशु।
पु०१ किसी मीठी चीज का या किसी प्रकार का मीठा रस। २ लाल रग की ईख। लाल ऊख। ३ गुड। ४ बादाम। ५. जीवक वृक्ष। ६ जगली बेर। ७ महुआ। ८ मटर। ९ धान। १० काकोली। ११ लोहा। १२ जहर। विष।

मधुरई*—स्त्री०=मधुरता (माधुर्य)।

मधुर-कटक—पु०[ब० स०] एक प्रकार की मछली जिसे कजली कहते है।

मधुरक—पु०[स० मधुर+कन्] जीवक वृक्ष।

मधुर-कर्कटी—स्त्री०[कर्म० स०] मीठा नीबू।

मधुर-जंबीर—पु०[कर्म० स०] मीठा जबीरी नीबू।

मधुर ज्वर—पु०[कर्म० स०] मद-ज्वर।

मधुरता—स्त्री० [स० मधुर+तल्+टाप्] मधुर होने की अवस्था, गुण या भाव। माधुर्य।

मधुर-त्रय—पु० [ष० त०] शहद, घी और चीनी, तीनो का समाहार।

मधुर त्रिफला—स्त्री०[कर्म० स०] दाख (या किशमिश), गमारी और खजूर इन तीनो का समाहार।

मधुरत्व—पु०[स० मधुर+त्व] मधुरता।

मधुर-त्वच—पु०[ब० स०] धौ का पेड।

मधुर-फल—पु०[ब० स०]१ बैर का वृक्ष। बेर। २ तरबूज।

मधुर-फला—स्त्री०[स० मधुरफल+टाप्] मीठा नीबू।

मधु-रस—पु०[ब० स०] ईख।

मधुरसा—स्त्री० [स० मधुरस+टाप्] १ मूर्वालता। २. दाख। ३. गमारी। ४ दूबिया घास। ५ शतपुष्पी। ६ गंधप्रसारिणी लता।

मधु-रसिक—पु०[ष० त०] भौंरा।

मधुर-श्रवा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] पिंडखजूर।

मधुर स्वर—पु०[ब० स०] गंधर्व।

मधुरा—स्त्री० [स० मधुर+टाप्] १. मथुरा नगरी। २ मदरास प्रात का एक प्राचीन नगर जो अब मदुरा या मदुरा कहलाता है। २ मीठा नीबू। ३. मुलेठी। ४ मीठी खजूर। ५ शतावर। ६. महामेदा। ७. मेदा। ८. शतपुष्पी। ९ पालक का साग। १० सेम। ११ काकोली। १२ केले का पेड। १३. सौंफ। १४ मसूर।

मधुरा—वि० [स० मधुर] [स्त्री० मधुरी] मधुर। उदा०—कवा टीका मधुरी बानी। दगाबाज की यही निशानी। (कहा०)
स्त्री० साहित्य मे वह शब्द-योजना जिससे रचना मे माधुर्य या मिठास आती है।
†स्त्री०१.=मदुरा। २ =मधुरा।

मधुराई*—स्त्री०=मधुरता।

मधुराकर—पु०[मधुर-आकर, ष० त०] ईख। ऊख।

मधुराज—पु०[स० ष० त०] भौंरा।

मधुराना—अ० [स० मधुर+हि० आना (प्रत्य०)] १ मधुर होना। २ फलो तथा खाद्य वस्तुओ के सबंध मे, मिठास से युक्त होना। मीठा होना।
स० मधुर बनाना।

मधुरान्न—पु०[मधुर-अन्न, कर्म० स०]१ मीठा अन्न। २ मिठाई। मिष्टान्न।

मधुराम्लक—पु० [मधुर-अम्लक, कर्म० स०] अमडा।

मधुरालापा—स्त्री०[मधुर-आलाप, ब० स०+टाप्] मैना पक्षी।

मधुरिका—स्त्री०[स० मधुर+कन्+टाप्, इत्व] सौंफ।

मधुरित—भू० कृ०[स० मधुर+इतच्]१ मिठास से युक्त किया हुआ। २ मधुर रूप मे लाया हुआ।

मधुरिन—पु०[स० मधुर से] ग्लिसरीन (तरल पदार्थ)।

मधु-रिपु—पु०[ष० त०] मधुराक्षस के शत्रु, विष्णु।

मधुरिमा—स्त्री०[स० मधुर+इमनिच्] मधुर होने की अवस्था या भाव। मधुरता।
वि०=मधुर।

मधुरी—स्त्री०[स० मधुर] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुराना बाजा।
†स्त्री०[स० माधुरी]१ मधुरता। २. शराब।

मधु-रीछ—पु०[हि० मधु+रीछ] दक्षिणी अमेरिका का रीछ की तरह का एक जंगली जतु जो ऊँचाई मे कुत्ते के बराबर होता है। यह प्राय वृक्षो पर चढकर मधुमक्खियो के छत्ते का रस चूसता है, इसी से इसका यह नाम पडा है।

मधुरोदक—पु० [मधुर-उदक, कर्म० स०] १ मधु मिश्रित जल। २ [ब० स०] पुराणानुसार सात समुद्रो मे से अतिम समुद्र जो मीठे जल का और पुष्कर द्वीप के निकट चारो ओर स्थित कहा गया है।

मधुल—पु० [स० मधु√ला (लेना)+क] मदिरा।

वि०=मधुर।

मधुलिका—स्त्री० [स० मधुल+कन्+टाप्, इत्व] १ प्राचीन काल मे मधुली नामक गेहूँ के पाँस से तैयार की जानेवाली मदिरा। २ राई। ३ फूलो का पराग। ४ कार्तिकेय की एक मातृका।

मधुली—पु० [स० मधुलिका] भाव प्रकाश के अनुसार एक प्रकार का गेहूँ।

मधु-लोलुप—पु० [स० स० त०] भौरा।

मधुवंती—स्त्री० [स० मधुवती] सगीत मे टोडी ठाठ की एक रागिनी।

मधुवटी—स्त्री० [म० व० स०, डीप्?] एक प्राचीन स्थान। (महा०)

मधु-वन—पु० [मध्य० स०] १ मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन जहाँ शत्रुघ्न ने लवण नामक दैत्य को मारकर मधुपुरी स्थापित की थी। २ व्रज मे यमुना तट पर स्थित एक वन। २ किष्किन्धा मे स्थित एक वन। ४ वह वन जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हो। ५ कोयल।

मधु-वल्ली—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ मुलेठी। २ करेला।

मधु-वार—पु० [प० त०] १ मद्य या शराब पीने का दिन। २ बार बार शराब पीने का क्रम। शराब का दौर। ३ मद्य। शराब।

मधु-वाही (हिन्)—पु० [म० मधु√वह् (ढोना)+णिनि, उप० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नद।

मधु-व्रत—पु० [व० स०] भौंरा।

मधु-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] १ शहद से बनाई हुई शक्कर। २ सेम। लोबिया।

मधु-शाक—पु० [व० स०] महुए का वृक्ष।

मधु-शिग्नु—पु० [मध्य० स०] शोभाजन। सहिजन।

मधु-शिष्ट—पु० [प० त०] मोम।

मधु-शेष—पु० [व० स०] मोम।

मधु-श्रावणी—स्त्री० [स०] १ मिथिला का एक पर्व जो सावन शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। इसमे नव विवाहिता वधू को जलती बत्ती मे दागते हैं। यदि फफोले अच्छे पडें तो समझा जाता है कि इसका सुहाग बहुत दिनो तक बना रहेगा।

मधुष्ठील—पु० [स० मधु√ष्ठीव् (फेंकना)+क, पृषो० लत्व] महुए का वृक्ष।

मधु-संभव—पु० [व० स०] १ मोम। २ दाख।

मधु-सख—पु० [व० स०] कामदेव।

मधु-सहाय—पु० [व० स०] कामदेव।

मधु-सारथि—पु० [व० स०] कामदेव।

मधु-सिक्थक—पु० [व० स०,+कप्] १ एक प्रकार का विष। २ मोम।

मधु-सुहृद—पु० [प० त०] कामदेव।

मधुसूदन—पु० [म० मधु√सूद्+णिच्+ल्यु—अन] १ मधु नामक दैत्य को मारनेवाले, विष्णु। २ भौरा।

मधुसूदनी—स्त्री० [स० मधुसूदन+डीप्] १ पालक का साग। २ आज-कल शरीर के अन्दर अग्न्याशय मे बननेवाला वह तत्त्व जिसके अभाव या कमी के कारण शरीर मे शर्करा का ठीक समवर्त्तन नहीं होने पाता, रक्त विषाक्त होने लगता है और मूत्र सम्बन्धी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते है। २ उक्त तत्त्व से बनाई जानेवाली एक प्रसिद्ध दवा। (इन्स्यूलिन)

मधु-स्थान—पु० [ष० त०] मधुमक्खियो का छत्ता।

मधु-स्रव—पु० [व० स०] १ महुए का वृक्ष। २ पिंडखजूर का पेड।

मधु-स्रवा—स्त्री० [म० मधुस्रव+टाप्] १ सजीवनी बूटी। २ मुलेठी। ३ मूर्वा लता। ४ हसपदी लता।

मधु-स्राव—पु० [व० स०] महुए का वृक्ष।

मधु-स्वर—पु० [व० स०] कोयल।

मधु-हता (तृ)—पु० [ष० त०] मधुसूदन। (दे०)

मधूक—पु० [स०√मद्+ऊक, नि०सिद्धि] १ महुए का पेड, फूल और फल। २ मुलेठी। ३ भ्रमर।

मधूक-पर्णा—स्त्री० [स० व० स०,+टाप्] अमडा।

मधूकरी—स्त्री०=मधुकरी।

मधूक-शर्करा—स्त्री० [प० त०] वह शक्कर जो महुए के रस से बनाई गई हो।

मधूख—पु०=मधूक।

मधूच्छिष्ट—पु० [मधु-उच्छिष्ट, ष० त०] मोम।

मधूत्थ—पु० [स० मधु+उत्√स्था (ठहरना)+क] मोम।

मधूत्थित—पु० [मधुत्थित, प० त०] मोम।

मधूत्पन्ना—स्त्री० [मधु-उत्पन्ना, प० त०] शहद से बनाई हुई चीनी।

मधूत्सव—पु० [मधु-उत्सव, ब० स०] १ चैत्र की पूर्णिमा। २ [प० त०] वसतोत्सव।

मधूल—पु० [स० मधु√उर् (प्राप्त होना)+क, र—ल] जल-महुआ।

मधूलक—पु० [स० मधूल+कन्] १ जल-महुआ। २ मद्य। शराब।

मधूलिका—स्त्री० [म० मधूल+कन्+टाप्, इत्व] १ मूर्वा (लता)। २. मुलेठी। ३ एक प्रकार की घास। ४ मधुली नामक गेहूँ। ५. उक्त गेहूँ से बनाई जानेवाली मदिरा।

मधूली—पु० [स० मधूल+ङीप्] १ आम का पेड। २ जल मे उत्पन्न होनेवाली मुलेठी। ३ मध्यदेश मे होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ। मधुली।

मध्य—पु० [स०√मन्+यक्, नि० सिद्धि] १. किसी चीज के बीच का भाग। २ शरीर का मध्यभाग। कटि। कमर। ३ वह जो किसी विशिष्ट दल या पक्ष मे न हो। तटस्थ। निष्पक्ष। उदा०—बूझि मित्र और मध्य गति तस तब करहिउँ आइ।—तुलसी। ४ सगीत मे, तीन सप्तको मे से बीचवाला सप्तक जिसके स्वरो का उच्चारण स्थान वक्षस्थल और कठ का भीतरी भाग कहा गया है।

विशेष—साधारणत गाना-बजाना इसी सप्तक से आरभ होता है। जब स्वर ऊँचे होकर और आगे बढते हैं, तब वे 'तार' नामक सप्तक में पहुँचते हैं। और जब स्वर इस सप्तक से नीचे होकर उतरने लगते हैं, तब 'मद्र' नामक सप्तक मे पहुँच जाते है।

५ नृत्य मे वह गति जो न बहुत तेज हो और न बहुत धीमी। ६ सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ७ आपस मे होनेवाला अन्तर। दूरी या फरक। ८ पश्चिम दिशा। ९ विश्राम। १० दस अरब की सख्या की सज्ञा।

वि० १ बीच मे रहने या होनेवाला। बीच का। २ जो बहुत अच्छा भी न हो और बहुत बुरा भी न हो, फलत काम चलाने लायक। ३. अधम। नीच।

मध्यक—वि० [सं० मध्य से] १ मध्य या बीच में रहने या होनेवाला। २ जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मझोले आकार का।

मध्यका—स्त्री० [सं० मध्य से] दे० 'माध्यिक'।

मध्य-कुरु—पु० [मध्य से] उत्तर कुरु और दक्षिण कुरु के मध्य में स्थित एक प्राचीन देश।

मध्य-खंड—पु० [मध्य० स०] ज्योतिष में, पृथ्वी का वह भाग जो उत्तरी क्रांतिवृत्त और दक्षिणी क्रांतिवृत्त के बीच में पड़ता है।

मध्य-गंध—पु० [ब० स०] आम का वृक्ष।

मध्यग—वि० [मध्य√गम् (जाना)+ड] बीच में पड़ने या स्थित होनेवाला।

पु० दलाल।

मध्यगत—भू० कृ० [द्वि० त०] मध्य में आया या लाया हुआ।

मध्यगति—स्त्री० [मध्य० स०] तटस्थता की वह नीति या स्थिति जिसमें किसी से न तो विशेष मित्रता ही होती है और न लड़ाई या झगड़ा-बखेड़ा ही।

मध्य-जीवकल्प—पु० [कर्म० स०] भू-विज्ञान के अनुसार इस पृथ्वी की रचना के इतिहास में, पाँच कल्पों में से चौथा कल्प जो पुरा कल्प के बाद और आज से प्रायः बारह से बीस करोड़ वर्ष पहले था और जिसमें अनेक प्रकार के विशाल काय जन्तुओं तथा पक्षियों की सृष्टि हुई थी (मेसोजोइक एरा)

विशेष—शेष चार कल्प ये हैं—आदि कल्प, उत्तर कल्प, पुरा कल्प और नव कल्प।

मध्यता—स्त्री० [सं० मध्य+तल्+टाप्] मध्य होने की अवस्था, धर्म या भाव।

मध्य-तापिनी—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

मध्यदेश—पु० [मध्य० स०] १. किसी चीज का बीचवाला भाग। २ शरीर का मध्य भाग। कटि। ३ प्राचीन भारत का वह विस्तृत मध्य भाग जिसके उत्तर में हिमालय, पूर्व में बंगाल, दक्षिण में महाराष्ट्र, पश्चिम में पंजाब और सिंध, तथा पश्चिम-दक्षिण में गुजरात था।

मध्य-देह—पु० [सं० कर्म० स०] उदर। पेट।

मध्य पद-लोपी—पु०=मध्यम पद-लोपी। (समास)

मध्य-पात—पु० [सं०] १ ज्योतिष में एक प्रकार का पात। २ परिचय करानेवाली बात या लक्षण। पहचान।

मध्य-पूर्व—पु० [सं० कर्म० स०] १. युरोप वालों की दृष्टि में एशिया या दक्षिण पश्चिमी तथा अफ्रीका का उत्तर-पूर्वी भाग। (मिडिल ईस्ट) २. उक्त भाग में स्थित राज्यों का समाहार।

मध्य-प्रत्यय—वि० [सं० ब० स०] किसी के बीच या मध्य में बैठाया या लगाया हुआ।

पु० व्याकरण में कोई ऐसा अक्षर या शब्द जो प्रत्यय के रूप में किसी दूसरे शब्द के बीच में लगकर उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करता हो। मर्सग। (इन्फिक्स)

मध्यम—वि० [सं० मध्य+म] १ जो विपरीत कोणों, दिशाओं या सीमाओं के बीच में हो। मध्य का। बीच का। २ न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा।

†वि०=मद्धिम।

पु० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर जिसका मूल स्थान नासिका, अतः स्थान कंठ और शरीर में उत्पत्ति स्थान वक्षस्थल माना गया है। २. वह उपपति जो नायिका की चेष्टाओं से ही उसके मन का भाव जान ले और उसके क्रोध दिखलाने पर अनुराग न प्रकट करे। यह साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक है। ३. एक प्रकार का हिरन। ४. संगीत में एक प्रकार का राग। ५. दे० 'मध्य देश'।

मध्यमता—स्त्री० [सं० मध्यम+तल्+टाप्] मध्यम होने की अवस्था या भाव।

मध्यम पद-लोपी (पिन्)—[सं० मध्यम-पद, कर्म०स०, मध्यमपद] व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें पहले पद से दूसरे पद का संबंध बतलानेवाला शब्द अव्याहृत या लुप्त रहता है। लुप्त पद-समास।

मध्यम-पुरुष—पु० [सं० कर्म० स०] व्याकरण में वक्ता की दृष्टि से उस व्यक्ति का वाचक सर्वनाम जिससे वह कुछ कह रहा हो। (सेकेंड पर्सन) जैसे—तू, तुम, आप।

मध्यम-मार्ग—पु० [सं० कर्म० स०] १ दो चरम सीमाओं या परस्पर विरोधी मार्गों अथवा साधनों के बीच का ऐसा मार्ग या साधन जिसमें दोनों पक्षों या विचार-धाराओं का उचित समाधान या सामंजस्य होता हो। बीच का रास्ता। (वाया-मीडिया) २. महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित एक प्रसिद्ध मत या सिद्धांत।

मध्यम-राजा (जन्)—पु० [सं०कर्म० स०] वह राजा जो कई परस्पर विरोधी राजाओं के मध्य में हो।

मध्यम-लोक—पु० [सं० कर्म० स०] पृथ्वी।

मध्यम-वर्ग—पु० [सं० कर्म० स०] मनुष्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च, मध्यम और निम्न) में से बुद्धि-प्रधान एक वर्ग जो सामान्य आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक स्थितिवाला समझा जाता है और उच्च वर्ग (धनी वर्ग) और निम्नवर्ग (श्रमिक वर्ग) के बीच में माना जाता है। (मिडिल क्लास)

मध्यम-संग्रह—पु० [सं० कर्म० स०] पर-स्त्री को फुसलाने तथा अपने वश में करने के विचार से उसे गहने-कपड़े आदि भेजना। (मिताक्षरा)

मध्यम-साहस—पु० [सं० कर्म० स०] मनु के अनुसार पाँच सौ पणों तक का अर्थ-दंड या जुरमाना।

मध्यमा—स्त्री० [सं० मध्यम+टाप्] १ हाथ की बीचवाली उँगली। २. साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रिय के द्वारा हित अथवा अहित का व्यवहार देखकर उसके प्रति वैसा ही हित अथवा अहित का व्यवहार करती हो। ३. २४ हाथ लंबी, १२ हाथ चौड़ी और ८ हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु) ४ रजस्वला स्त्री। ५ कनियारी। ६. छोटा जामुन। ७ काकोली।

मध्यमागम—पु० [सं० मध्यम-आगम, कर्म० स०] बौद्धों के चार प्रकार के आगमों में से एक।

मध्यमान—पु० [सं०] [वि० मध्य-मानिक] १. लेखे या हिसाब में बराबर का। औसत। पड़ता। मध्यक। २. परस्पर विपरीत दिशाओं में स्थित दो बिंदुओं या संख्याओं के ठीक बीचोंबीच में स्थित बिंदु या संख्या। (मीन) जैसे—यदि कहीं का तापमान घटकर ९५ अंश तक और बढ़कर १०५ अंश तक पहुँच जाता हो तो वहाँ के ताप-मान का मध्य-मान १०० अंश होगा।

वि० १. दे० 'मध्यक'। २ दे० 'मध्या'।
३. सगीत मे, एक प्रकार का ताल जिसमे ८ ह्रस्व अथवा ४ दीर्घ मात्राएँ होती हे और ३ आघात और १ खाली होता है।

मध्यमाहरण—पु० [स०]वीज गणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई आयत्त-मान जाना जाता है।

माध्यमिक—वि०=माध्यमिक।

मध्यमिका—स्त्री० [स० मध्यम+कन्+टाप्, इत्व] रजस्वला स्त्री।

मध्यमीय—वि० [स० मध्यम+छ—ईय] मध्यम।

मध्य-यव—पु० [स० कर्म० स०] प्राचीन काल का एक परिमाण जो पीली सरसो के छ दानो की तौल के वरावर होता था।

मध्य-युग—पु० [स० कर्म० स०] [वि० मध्ययुगीन] १ प्राचीन युग और आधुनिक युग के वीच का युग या समय। २ एशिया युरोप आदि के इतिहास मे, ईसवी छठी से पन्द्रहवी शताब्दी तक का काल या समय। (मिडिल एजेज़) ३ आधुनिक भारतीय इतिहास मे, मुसलमानी शासन काल का समय।

मध्ययुगीन—वि० [स० मध्ययुग+ख—ईन] मध्ययुग-सम्वन्धी। मध्ययुग का। (मेडीवल)

मध्य-रेखा—स्त्री० [स० कर्म० स०] ज्योतिष और भूगोल मे वह रेखा जिसकी कल्पना देशातर निकालने के लिए की जाती है।

मध्य-लोक—पु० [स० कर्म० स०] १ पृथ्वी। २ जैनो के अनुसार वह मध्यवर्ती लोक जो मेरु पर्वत पर १००० ४० योजन की ऊँचाई पर है।

मध्यवर्ती (र्त्तिन्)—वि० [स० मध्य√वृत् (वरतना)+णिनि] १ जो मध्य मे वर्तमान या स्थित हो। वीच का। २ जो दो पक्षो के वीच मे रहकर उनमे से सम्बन्ध स्थापित करता हो। (इन्टरमिडिअरी)

मध्यविवरण—पु० [स० ष० त०] वृहत्सहिता के अनुसार सूर्य या चन्द्रग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार जिसमे सूर्य या चन्द्रमा का मध्य भाग पहले प्रकाशित होता है।

मध्यसर्ग—पु०=मध्य-प्रत्यय।

मध्यसूत्र—पु० =मध्यरेखा।

मध्यस्थ—वि० [स० मध्य√स्था (ठहरना)+क] [भाव० मध्यस्थता] जो वीच या मध्य मे स्थित हो। वीच का।
पु० १ वह जो दो विरोधी पक्षो या व्यक्तियो के वीच मे पडकर उनका झगडा या विवाद निपटाता हो। आपस मे मेल या समझौता करानेवाला व्यक्ति। (मीडिएटर) २ वह जो दो दलो या पक्षो के वीच मे रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन मे कुछ सुभीते उत्पन्न करके स्वय भी कुछ लाभ उठाता हो। (मिडिलमैन) जैसे—उत्पादको और उपभोक्ताओ के वीच मे व्यापारी, अथवा राज्य और कृपको के वीच मे जमीदार आदि। ३ वह जो दोनो विरोधी पक्षो मे से किसी पक्ष मे न हो। उदासीन। ४ वह जो अपनी हानि न करता हुआ दूसरो का उपकार करता हो।

मध्यस्थता—स्त्री० [स० मध्यस्थ+तल्—टाप्] मध्यस्थ होने की अवस्था या भाव। (मीडिएशन) २ मध्यस्थ का काम और पद।

मध्य-स्थल—पु० [स० कर्म स०] १. मध्यप्रदेश। कमर।

मध्यातर—पु० [स०मध्य+अतर] १ दो घटनाओ वस्तुओं आदि के मध्य या वीच का अतर। २ उक्त प्रकार के अतर के कारण वीतनेवाला समय। ३. किसी काम या वात के वीच मे सुस्ताने आदि के लिए निकाला या नियत किया हुआ थोडा-सा समय। (इन्टर्वल)

मध्या—स्त्री० [स० मध्य+टाप्] १ साहित्य मे स्वकीया नायिका के तीन भेदो मे से एक जिसमें काम और लज्जा की समान स्थिति मानी गई है। स्वकीया के अन्य दो भेद है—मुग्धा और प्रगल्भा। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन अक्षर होते है। इसके आठ भेद है। ३ वीच की उँगली। मध्यमा।

मध्यान†—पु०=मध्याह्न।

मध्यावकाश—पु० [स० मध्य+अवकाश] =मध्यातर।

मध्याह्न—पु० [स० मध्य-अहन्, एकदेशि त०स०] १ दिन के ठीक वीच का वह समय जव सूर्य सबसे ऊपर आ जाता है। २ उक्त समय के वाद का थोडी देर तक का समय।

मध्याह्नोत्तर—पु० [स० मध्य अहन-उत्तर, प० त०] मध्याह्न के ठीक वादवाला समय। तीसरा पहर।

मध्ये—अव्य०=मद्धे। (देखे)

मध्व—पु० दे० 'मध्वाचार्य'।
†पु०=मधु।

मध्वक—पु० [स० मध्व+कन्] मधुमक्खी।

मध्वल—पु० [स० मधु√अल् (पर्याप्त)+अण्] वार वार और वहुत शराव पीना।

मध्वाचार्य्य—पु० [स० मध्व-आचार्य, कर्म० स०] दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिन्होने माध्व या मध्वाचारि नामक सप्रदाय का प्रावर्तन किया था। इनका समय ईसवी वारहवी शताब्दी के लगभग माना जाता है।

मध्वाधार—पु० [स० मधु-आधार, ष० त०] मधुमक्खियो का छत्ता।

मध्वालु—पु० [स० मधु-आलु, कर्म० स०] एक प्रकार के पौधे की जड जो खाई जाती है।

मध्वावास—पु० [स० मधु-आवास, प० त०] आम का पेड।

मध्वासव—पु०[स० मधु-आसव, तृ० त०] महुए के रस के पाँस से वनाई जानेवाली मदिरा।

मध्वासवनिक—पु० [स० मध्वासवन+ठन्—इक] शराव वनाने तथा वेचनेवाला। कलवार।

मध्विजा—स्त्री० [स० मधु√ईज् (प्राप्त होना)+क, पृषो० ह्रस्व, +टाप्] मद्य।

मन. (नस्)—पु० [स०√मन् (मानना)+असुन्] मन।

मनः कल्पित—वि० [स० तृ० त०] मनगढत। फरजी।

मनःक्षेप—पु० [स० ष० त०] मन मे होनेवाला उद्वेग।

मन.पति—पु० [स० प० त०] विष्णु।

मन पर्याप्ति—स्त्री० [स० प० त०] मन से सकल्प विकल्प या वोव प्राप्ति करने की शक्ति।

मन.पर्याय—पु० [स० प० त०] सत्य का वोव होने से ठीक पहलेवाली स्थिति। (जैन)

मन.पूत—वि० [म० तृ० त०] १ पवित्र मन या शुद्ध आत्मावाला।

२ मन की दृष्टि मे जो पवित्र तथा शुद्ध हो। ३ जितना मन चाहता हो उतना।

मनःप्रसूत—वि० [स०म०त०] १ मन मे उत्पन्न होनेवाला। ३ कल्पित।

मनःप्रीति—स्त्री० [स० ष० त०] मन की प्रसन्नता।

मनःभव—वि० [स० मनोभव] १ मन से उत्पन्न। २. कल्पित।

मन.विश्लेषण—पु०=मनोविश्लेषण।

मन शक्ति—स्त्री० [स० ष० त०] मानसिक शक्ति। मनोबल।

मन.शास्त्र—पु० [स० ष० त०] =मानस शास्त्र। मनोविज्ञान।

मन.शिल—पु० [स० मनस्√शिल् (आकर्षित करना)+क] मैनसिल (खनिज द्रव्य)।

मनःशिला—स्त्री० [स० मन शिल+टाप्] मैनसिल।

मन.सस्कार—पु० [स० ष० त०] मन का परिष्कार।

मन—पु० [स० दे० 'मन'] १ प्राणियों के अत करण का वह अग जिससे वे अनुभव, इच्छा, बोध, विचार और सकल्प-विकल्प करते हैं।

विशेष—(क) शास्त्रीय दृष्टि से यह उन सभी शक्तियों का उद्गम या मूल है जिनके द्वारा हम सब काम करते, सब बातें जानते और याद रखते तथा सब कुछ सोचते-समझते हैं। इसी लिए वैशेषिक ने इसे उभयात्मक अर्थात् कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेंद्रिय दोनो के गुणो से युक्त माना है। यह आत्मा, शरीर तथा हृदय तीनो से भिन्न एक स्वतत्र तत्त्व है, और अत करण की चार वृत्तियो मे से एक वृत्ति के रूप मे माना गया है। (शेष तीन वृत्तियाँ चित्त, बुद्धि और अहकार है।) परन्तु योग-शास्त्र मे इसी को चित्त कहा गया है। शरीर के अत के साथ इसका भी अत हो जाता है। (ख) भाषिक क्षेत्र मे यह अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से बहुत व्यापक शब्द है। अनुभूति, अनुराग, उत्साह, प्रकृति, प्रवृत्ति, विचार, सकल्प आदि अनेक प्रसगो मे इसका प्रयोग होता है, और इसके बहुत से मुहावरे उक्त बातो से सम्बद्ध हैं। कुछ अवस्थाओ मे यह चित्त और हृदय के पर्याय के रूप मे भी प्रयुक्त होता है।

पद—**मन का मारा**=बहुत ही उदास, खिन्न और हतोत्साह। **मन का मैला**=जिसके मन मे कपट, द्वेष, वैर आदि दूषित भाव प्रबल होते हो। **मन ही मन**=अपने हृदय मे और चुपचाप। बिना किसी से कुछ कहे-सुने।

मुहा०—**(किसी से) मन अटकना**=शृगारिक क्षेत्र मे, किसी से अनुराग या प्रेम का सम्बन्ध होना। **मन अपनाना**=अपने मन को अपने वश मे करना या धैर्य धारण करते हुए शात करना। उदा०—सूर श्याम देखे बिनु सजनी कैसे मन अपनाऊँ।—सूर। **(किसी पर) मन आना**=किसी के प्रति काम-पूर्ण अनुराग या वासना उत्पन्न होना। **(किसी से) मन उलझना**=दे० ऊपर 'किसी से मन अटकना'। **मन कचोटना**=कष्ट, पश्चात्ताप, वियोग आदि के कारण मन मे क्लेश या दुख होना। **(किसी काम, चीज या बात के लिए) मन करना**=इच्छा या प्रवृत्ति होना। जी चाहना। जैसे—आज तो खीर खाने को हमारा मन करता है। **मन की मन में रहना**=(क) मन की बात दूसरो पर प्रकट करने का अवसर न मिलना। (ख) इच्छा, कामना आदि की तृप्ति या पूर्ति न होना। जैसे—मैंने कई बार उनसे मिलना चाहा, पर मन की मन मे ही रह गई, अर्थात् उनसे किसी प्रकार भेट न हो सकी। **मन के लड्डू खाना**=ऐसी बात सोचकर प्रसन्न होना जिसका पूरा होना असभव हो। व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। **मन खराब होना**=(क) मन मे कोई कुरुचि या विरक्त करनेवाली बात या भावना उत्पन्न होना। जैसे—तुम्हारी दुष्टताओ से सबका मन खराब होता है। (ख) शरीर अस्वस्थ या रोगयुक्त होना। (ग) कै या मिचली मालूम होना। **(किसी से) मन खोलना**=दुराव छोड़कर किसी पर अपना उद्देश्य या विचार प्रकट करना। **(किसी काम, चीज या बात पर) मन चलना**=इच्छा या प्रवृत्ति होना। जैसे—बीमारी मे तरह तरह की चीजो पर मन चलता है (अर्थात् तरह तरह की चीजे खाने को जी चाहता है)। **(किसी का) मन टटोलना**=बातो ही बातो मे किसी के भावो, विचारो आदि से परिचित होने का प्रयत्न करना। **मन टूटना**=उत्साह, उमग, साहस आदि का नाश या ह्रास होना। **(किसी काम, चीज या बात पर) मन डालना**=कुछ करने, पाने आदि के लिए मन चचल होना। चित्त चलायमान होना। **(किसी का) मन तोड़ना**=उत्साह या उमग मे बाधक होकर उसका अत करना। हतोत्साह करना। **(किसी काम या बात में) मन देना**=अच्छी तरह चित्त या मन लगाना। जैसे—हर काम मन देकर किया करो। **(किसी को) अपना मन देना**=(क) किसी के प्रति अपने मन के भाव प्रकट करना। (ख) किसी पर पूर्ण रूप से अनुरक्त होना। प्रेम के कारण किसी के वश मे होना। आसक्त होना। **मन धरना**=ध्यान देना। मन लगाना। **(किसी से) मन फट जाना या फिर जाना**=किसी के अनुचित कृत्य या व्यवहार के कारण उससे विरक्त होना। **मन फेरना**=किसी काम या बात से मन हटाना। किसी ओर प्रवृत्ति न होने देना। **मन बढ़ना**=उत्साह या साहस बढ़ना। **(अपना) मन बढ़ाना**=मन को अधिक प्रवृत्त करना। **(किसी का) मन बढ़ाना**=उत्तेजित या उत्साहित करना। बढ़ावा देना। **मन बहलाना**=खिन्न या दुखी चित्त को किसी काम मे लगाकर खेद और दुख दूर करके आनदित या प्रसन्न करना। **मन बिगड़ना**=दे० ऊपर 'मन खराब होना'। **(अपना) मन बूझना**=मन मे ढारस, तृप्ति, धैर्य, शाति या सतोष होना। **(किसी का) मन बूझना**=किसी के मन की थाह लेना। **मन भर जाना**=अघा जाना। तृप्ति होना। विशेष अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाना। **(किसी काम या बात से) मन भरना**=(क) प्रतीति न होना। (ख) तृप्ति या सतोष होना। (ग) अधिक तृप्ति होने के कारण अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाना। **मन भाना**=मन को अच्छा या भला जान पड़ना। **मन भारी होना**=मन मे किसी प्रकार की अस्वस्थता का अनुभव या बोध होना। **(किसी की ओर से) मन भारी होना**=दुख, द्वेष आदि के कारण किसी के प्रति पहले का-सा अनुराग न रह जाना। **मन मानना**=किसी काम या बात के सबध मे, मन मे तृप्ति निश्चय या सतोष होना अथवा निश्चिततापूर्वक उसकी ओर प्रवृत्ति होना। जैसे—मन माने तो सौदा पक्का कर लो। **(किसी से) मन मानना**=किसी के साथ अनुराग या प्रेम होना। उदा०—(क) सखी री श्याम सो मन मान्यो।—सूर। (ख) राम नाम जाका मन माना।—तुलसी। **(अपना) मन मारना**=(क) प्रवृत्तियो को दबाकर मन को वश मे करना या रखना। इच्छा या मन का भाव दबाना या रोकना। (ख) मन की उमग पूरी न होने के कारण उदास या खिन्न होना। उदा०—मौन गहौ, मन मारे रहौ, निज प्रीतम की कहौ कौन कहानी।—प्रताप। **(किसी से) मन मिलाना**=(क) प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि, विचार आदि

की समानता के कारण किसी से आत्मीयता का सबध होना। जैसे—मन मिले का मेला। (कहा०) (ख) शृगारिक दृष्टि से अनुराग या प्रेम होना। **मन मे आना**=(क) किसी काम या बात के लिए मनमे कोई भाव या विचार उत्पन्न होना। जैसे—आज मन मे आया कि चलकर तुमसे मिल आऊँ। (ख) कोई बात ध्यान या समझ मे न आना। अच्छा या ठीक मालूम होना। उदा०—और देत कछु मन नहिं आवै।—सूर। (ग) मन पर किसी बात का प्रभाव पडना।उदा०—ता सो उन कटु वचन सुनाये, पै ताके मन कछू न आये।—सूर। **मन मे जमना या बैठना**=उचित या ठीक जान पडना। **मन में ठानना**=निश्चय करना। दृढ सकल्प करना। **मन मे धरना**=दे० ऊपर 'मन मे ठानना'। **मन मे बसना**=बहुत अच्छा लगने या पसन्द आने के कारण मन मे बराबर ध्यान बना रहना। **(कोई बात) मन मे भरना**=हृदयगम करना। मन मे जमाकर रखना। **(कोई बात) मन में रखना**=(क) अच्छी तरह छिपाकर रखना। किसी पर प्रकट न होने देना। (ख) अच्छी तरह ध्यान मे या स्मरण मे रखना। **मन मे लाना**=(क) विचार करना। सोचना। (ख) कोई काम करने का विचार या सकल्प करना। जैसे—अगर मन मे लाओ तो तुम जरूर यह काम कर सकते हो। **(किसी से) मन मैला करना**=किसी की ओर से अपने मन मे दुर्भाव द्वेष या वैर-विरोध रखना। **(किसी से) मन मोटा होना**=दे० ऊपर '(किसी की ओर से) मन भारी होना'। **मन मोडना**= प्रवृत्ति या विचार को एक ओर हटाकर दूसरी ओर लगाना। **(किसी का) मन रखना**= किसी को प्रसन्न रखने के लिए उसकी इच्छा पूरी करना। **मन रहना या रह जाना**=इच्छा या कार्य की ऐसी आशिक पूर्ति होना कि निराश या हताश न होना पडे। **(किसी काम या बात मे) मन लगाना**=पूरा अवधान या ध्यान होना। चित्त का प्रवृत्त और सलग्न होना। जैसे—सगीत मे उनका मन लगता है। **(किसी स्थान पर) मन लगाना**=भला जान पडने के कारण रहने की इच्छा होना या जी न ऊबना। **(किसी काम या बात मे) मन लगाना**=अच्छी तरह ध्यान देते हुए या मनोयोगपूर्वक सलग्न होना। **(किसी व्यक्ति से) मन लगाना**=किसी से अनुराग या प्रेम करना। **मन लाना**=(क) मन लगाना। जी लगाना। (ख) मन मे निश्चय या सकल्प करना। **(किसी का) मन लेना**=(क) किसी के मन की भीतरी बातो की थाह या पता लेना। जैसे—आज वह भी मेरा मन लेने आये थे, पर मैने उन्हे इधर-उधर की बातो मे टाल दिया। (ख) किसी को अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त करना। (ग) किसी को किसी रूप मे अपने अधिकार या वश मे करना। **मन से उतरना**=(क) मन मे आदर भाव न रह जाना। तिरस्कृत होना। (ख) ध्यान या स्मृति मे न रह जाना। भूल जाना। विस्मृत होना। **(किसी का) मन हरना**= किसी को अपने प्रति मुग्ध या मोहित करना। **मन हरा होना**=खिन्न या दु खी मन का प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। **(किसी का मन) हाथ मे लेना या करना**= किसी का मन अपने अधिकार या वश मे करना। अपना अनुगामी, प्रेमी या भक्त बनाना। **मन होना**=इच्छा होना।

पु०[सामीमिन वैदिक म० मना]१ चालीस सेर की तौल या परिमाण। २ उक्त तौल या परिमाण का बाट।

†पु०=मणि।

मनई—पु० [स० मानव] मनुष्य।

मनउती†—स्त्री०=मनौती।

मनकना—अ० [अनु०] १ हिलना-डोलना। चेष्टा करना। हाथ-पैर चलाना।

अ०=मिनकना।

मनकरा—वि०[हिं० मणि+कर (प्रत्य०)] चमकदार। चमकीला।

मनका—पु०[स० मणिक]१ धातु, लकडी, आदि का वह गोल या अडाकार छोटा टुकडा जिसके बीचोबीच छेद होता है तथा जो माला के रूप मे पिरोया जाता है। एक साथ पिरोये जानेवाले बहुत से मनके माला का रूप धारण कर लेते है। २ माला। सुमिरनी। उदा०—करका मन का छोडकर मनका मनका फेर।

पु० [स०मन्यका=गले की नस] गरदन के पीछे की वह हड्डी जो रीढ के ठीक ऊपरी भाग मे होती है।

मुहा०—**मनका ढलना या ढलकना**=आसन्न मृत्यु के समय रोगी की गरदन टेढी हो जाना।

मनकामना—स्त्री०=मन कामना (मनोरथ)।

मनकुमार—पु०[स० मन कुमार] कामदेव। उदा०—कुवलय-दल सुकुमार तन, मन-कुमार जय भार।—मतिराम।

मनकूल—वि०[अ० मन्कूल]१ जिसकी प्रतिलिपि तैयार कर ली गई हो। नकल किया हुआ। प्रतिलिपित। २ (सम्पत्ति) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाई जा सके। चल।

पद—**मनकूला जायदाद**=चल-सपत्ति।

मनकूहा—वि० स्त्री०[अ० मन्कूह] (स्त्री) जिसका विवाह हो चुका हो। जो व्याही हुई हो। परिणीता। विवाहिता।

मनगढत—वि० [हिं० मन=गढना] मन द्वारा गढा हुआ। फलत कल्पित अथवा मिथ्या। कपोल-कल्पित। जैसे—मनगढत किस्सा।

स्त्री०=कल्पित या मिथ्या बात।

मनचला—वि० [स० मन+हिं० चलना][स्त्री० मनचली]१ (व्यक्ति) जिसका मन आकर्षक तथा सुन्दर वस्तुओ की प्राप्ति के लिए ललचा उठता हो। २ (व्यक्ति) जो प्राय किसी आकर्षक तथा सुन्दर वस्तु की प्राप्ति के लिए किसी प्रकार की जोखिम का काम करने के लिए प्रस्तुत हो जाय। ३. कामुक तथा रसिक स्वभाववाला।

मन-चाहता—वि० [हिं० मन+चाहना] [स्त्री० मनचाहती] १ जो मन के अनुकूल हो। २ जिसे मन चाहे। प्रिय।

मन-चाहा—वि०[हिं० मन+चाहना] [स्त्री० मनचाही] १. जिसे मन चाहता हो। जैसे—मन-चाहा काम, मनचाही नौकरी। २ इच्छानुसार किया हुआ।

मनचाहे—अव्य०[हिं० मन-चाहा] इच्छानुसार।

मन-चीतना—वि०=मन-चीता।

मन-चीता—वि०[हिं० मन+चेतना] [स्त्री० मनचीती] मन मे चाहा और सोचा हुआ।

मनजात—पु०[स० मनोजात] कामदेव।

मनतोरवा—पु०[देश०] एक प्रकार का पक्षी।

मनन—पु०[स०√मन् (मानना)+ल्युट्—अन]१ मन लगाकर कोई काम सोचना या समझना। २ किसी विषय मे सब अगो पर अच्छी

तरह विचार करते हुए उसे समझने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न या प्रयास। चिंतन। (कन्टेम्प्लेशन)। जैसे—आध्यात्मिक ग्रंथों या राजनीतिक समस्याओं का मनन। ३. वेदांत शास्त्रानुसार सुने हुए वाक्यों पर बार बार विचार करना और प्रश्नोत्तर या शंका-समाधान द्वारा उसका निश्चय करना।

मनन-शील—वि० [स० ब० स०] जो स्वाभावतः मनन करने में प्रवृत्त रहता हो।

मननाना—अ० [मन मन से अनु०] गुंजारना। गूँजना।

मन-भंग—पु०[स० मनोभग]बदरिका आश्रम के पास का एक पर्वत।

मन-भरौती—स्त्री०[हिं० मन भरना] १ मन भरने की क्रिया या भाव। मनस्तोष। खुशामद। चापलूसी। उदा०—अफसरों के बंगले पर जाना और सलाम बोलकर मनभरौती कर आना।—वृन्दावनलाल वर्मा।

मन-भाया—वि०[स० मन+हिं० भाना] [स्त्री० मन-भाई] १ जो मन को भाता या रुचिकर प्रतीत होता हो। मन को भाने या अच्छा लगनेवाला। २ प्रिय। प्यारा।

मन-भावता—वि०=मन-भाया।

मन-भावन—वि०=मनभाया। उदा०—सावन की मन भावन की, घिरि आइ बदरिया।—गीत।

मन-मति—वि०[मन+मति] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मन-मत्त—वि०=मैंमत (मदमत्त)।

मन-मथ—पु०=मन्मथ (कामदेव)।

मन-मानता—वि०[हिं० मन+मानना]१. मनमाना। २ मनचाहा।

मनमाना—वि० [स०मन+हिं० मानना]१ (व्यक्ति) जो अपनी इच्छा को सर्वोपरि महत्त्व देता हो; और किसी की इच्छा बात या राय को कुछ भी महत्त्व न देता हो। २ (आचार या व्यवहार) जो अपनी इच्छा से तथा बिना किसी के सुख-सुभीते का ध्यान रखे किया गया हो।

मनमानी—स्त्री० [हिं० मन-माना] १ मनमाना कार्य। २. वह स्थिति जिसमे बिना औचित्य आदि का विचार किये मन-माने ढंग से काम किया जाय।

मन-मुखी (खिन्)—वि० [स० मन+मुखी] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मन-मुटाव—पु०=मनमोटाव।

मन-मोटाव—पु०[स० मन+हिं० मोटाव] द्वेष आदि के फलस्वरूप होनेवाली वह स्थिति जिसमे किसी का मन किसी दूसरे से कुछ खिंचा रहता है।

मन-मोदक—पु०[हिं०मन+मोदक] केवल अपना मन प्रसन्न करने के लिए बनाई हुई ऐसी कल्पना जिसका कोई वास्तविक आधार न हो।

मन-मोहन—वि० [स०] [स्त्री० मनमोहनी] १ मन को मोहनेवाला। २. प्रिय। प्यारा।

पु० श्रीकृष्ण।

मन-मौज—पु०[स० मन+मौज] १ मन की तरंग। १. हार्दिक प्रसन्नता। ३ अपनी प्रसन्नता या सुख के लिए किया जानेवाला काम या खेल।

मन-मौजी—वि०[हिं० मनमौज]१ अपने मन में उठी तरंग के अनुसार काम करनेवाला। २. अपनी प्रसन्नता के उद्देश्य से कोई विशेष आचरण या व्यवहार करनेवाला।

मनरंज*—वि०=मनरंजन।

मनरंजन—वि० [हिं० मन+रंजना] मनोरंजन करनेवाला। मन को प्रसन्न करनेवाला।

पु०=मनोरंजन।

मन-रोचन—वि०[स० मनरोचन]मन को मुग्ध करनेवाला। सुन्दर।

मनलाडू—पु०=मनमोदक।

मनवाँ—पु०[देश०] देव-कपास। रामकपास। नरमा।

पु०=मन।

मनवांछित—वि० =मनोवांछित।

मनवाना—स०[हिं० मनाना का प्रे०]१ किसी को कुछ मान लेने में प्रवृत्त या विवश करना। २. मनाने का काम किसी दूसरे से कराना।

मनशा—स्त्री० [अ० मन्शा] १ आशय। मतलब। २. उद्देश्य। प्रयोजन। ३ इच्छा। इरादा। संकल्प।

मनसना—स० [स० मनस्यन] १. मन में इच्छा विचार या संकल्प करना। उदा०—मनसई नारि किया तन छारा।—गोरखनाथ। २ मन में दृढ़ निश्चय या संकल्प करना। ३ कोई चीज दान करने के उद्देश्य से सामने रखकर या हाथ में लेकर विधि से संकल्प या मंत्र पढ़ना।

मनसब—पु०[अ० मंसब]१ राज्य, शासन आदि में ऐसा ऊँचा पद जिसके साथ कुछ विशिष्ट अधिकार भी प्राप्त हो। २ कर्तव्य। कर्म। कृत्य। ३ अधिकार। इख्तियार।

मनसबदार—पु०[अ० मंसब+फा० दार] वह जो किसी मनसब अर्थात् ऊँचे पद पर आसीन हो।

मनसा—स्त्री०[स० मनस्+अच्+टाप्]एक देवी जो पुराणानुसार जरत्कारु मुनि की पत्नी और आस्तीक की माता थी तथा कश्यप की पुत्री और वासुकी की बहन थी। वह साँपों के कुल की अधिष्ठात्री मानी गई है।

वि० १ मन से उत्पन्न। २ मन-सम्बन्धी। मन का।

क्रि वि० मन के द्वारा। मन से।

स्त्री०[अ० मंशा]१. इरादा। विचार। २ अभिलाष। कामना। ३. मन। ४ बुद्धि। ५ अभिप्राय। ६ उद्देश्य।

स्त्री०[देश०]एक प्रकार की घास जो बहुत तेजी से बढ़ती और पशुओं के लिए बहुत पुष्टिकारक समझी जाती है। मकड़ा। मधाना। खमकरा।

मनसाकर—वि० [हिं० मनसा+स० कर (प्रत्य०)] मनोवांछित फल देनेवाला। मनोकामना पूर्ण करनेवाला।

मनसाना—अ० [हिं० मनसा] उमंग में आना। तरंग में आना।

स० [हिं० मनसना का प्रे०] किसी को कुछ मनसने में प्रवृत्त करना। मनसवाना।

मनसा-पंचमी—स्त्री० [स० मध्य० स०] आषाढ़ की कृष्णपंचमी। इस दिन मनसा देवी का उत्सव होता है।

मनसायन—वि०[हिं० मानुस=मनुष्य+आयन(प्रत्य०)]१ ऐसी स्थिति जिसमे कुछ लोगों के रहने के कारण अच्छी चहल-पहल हो।

क्रि० प्र०—रखना।
२ चहल-पहल की और मन लगने की जगह। गुलजार।
मनसाराम—पु०[स० मनस्-राम] बोल-चाल मे, अपने मन और फलत व्यक्तित्व की सज्ञा। जैसे—चलो मनसाराम कोई जगह ढूँढे।
मनसि—अव्य०[हि० मन]१ मन मे। २ हृदय से।
मनसिज—पु०[स० मनसि√ जन् (उत्पन्न करना) +ड]१ कामदेव। २ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
मनसूख—वि०[अ० मसूख][भाव० मसूखी] १ रद्द किया हुआ। २ टाला हुआ। ३ परित्यक्त।
मनसूखी—स्त्री०[अ० मन्सूखी] मनसूख होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
मनसूबा—पु० [अ० मन्सूब] १ कोई काम करने से पहले मन मे सोची जानेवाली युक्ति।
क्रि० प्र०—ठानना।—बाँधना।
२ इरादा। विचार।
मनसूर—वि०[अ० मन्सूर] विजेता।
पु० ९वीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध सूफी सत जो अपने को अनहलक (अह ब्रह्मास्मि) कहता था और इसी लिए जो सूली पर चढा दिया गया था।
मनसेधू—पु०[स० मनुष्य] पुरुष। आदमी। (पूरब)
मनस्क—वि०[स०] [भाव० मनस्कता]१ जिसका मन किसी विशिष्ट समय मे किसी ओर प्रवृत्त हुआ या लगा हो। जैसे—अन्य-मनस्क। २ जिसका मन किसी कार्य या विषय की ओर अनुरक्त या प्रवृत्त हो। कुछ करने, जानने आदि की इच्छा से युक्त। (माइन्डेड) जैसे—अब वे भी सगीत मनस्क होने लगे है।
मनस्कता—स्त्री० [स० मनस्क+तल्+टाप्] मनस्क होने की अवस्था या भाव।
मनस्कांत—वि०[स० ष० त०] १ जो मन के अनुकूल हो। मनोनुकूल। २ प्रिय। प्यारा।
पु० मन की अभिलाषा या इच्छा। मनोरथ।
मनस्काम—पु०[स० ष० त०] मन की अभिलाषा। मनोरथ।
मनस्ताप—पु०[स० ष० त०] १ मनपीडा। आतरिक दुख। २ अनुताप। पश्चात्ताप। पछतावा।
मनस्ताल—पु०[स० ब० स०] १ हरताल। २ दुर्गा की सवारी के सिंह का नाम।
मनस्तोष—पु०[स० ष० त०] १ मन मे होनेवाला तोष या तृप्ति। २ आवश्यकता, इच्छा, शका, सशय आदि की पूर्ति या निवारण के फलस्वरूप मन मे होनेवाली शान्ति। तुष्टि। (सैटिस्फैक्शन)
मनस्विता—स्त्री० [स० मनस्विन्+तल्+टाप्] मनस्वी होने की अवस्था या भाव।
मनस्विनी—स्त्री० [स० मनस्+विनि+ङीप्]१ मृकडु ऋषि की पत्नी का नाम। २ प्रजापति की एक पत्नी।
मनस्वी (स्विन्)—वि० [स० मनस्+विनि] [स्त्री० मनस्विनी] १ श्रेष्ठ मन से सम्पन्न। बुद्धिमान्। उच्च विचारवाला। २ मनमाना आचरण करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
पु० शरभ।
मनहस—पु०[हि० मन+हस] पद्रह अक्षरो का एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक सगण, दो जगण, भगण और अत मे रगण होता है।
मनहर—वि०[हि० मन+हरना या स० मनोहर] मन हरनेवाला। मनोहर। उदा०—गिरने से नयनो से उज्ज्वल आँसू के कन मनहर।—प्रसाद।
पु० घनाक्षरी छद का एक नाम।
मनहरण—पु०[हि० मन+हरण] १ मन हरने की क्रिया या भाव। २ पन्द्रह अक्षरो का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच सगण होते है। इसे नलिनी और भ्रमरावली भी कहते हैं।
वि०=मनोहर।
मनहरन—वि० पु०=मनहरण।
मनहार—वि०=मनोहारी।
मनहारी—वि०=मनोहारी।
मनहुँ*—अव्य०[हि० मानना या मानो] मानो। जैसे। यथा।
मनहूस—वि०[अ०मन्हूस]१. अशुभ। बुरा। २. अभागा। बदकिस्मत। ३ जिसमे चमक-दमक, रौनक या सरस जीवन का कोई लक्षण न हो। जैसे—मनहूस आदमी, मनहूस मकान।
मना—वि० [अ०] १ जिसके सबध में निषेध हो। निषिद्ध। जैसे—यहाँ तमाकू या बीडी पीना मना है। २ जो कोई काम करने से रोका गया हो। वारण किया हुआ। जैसे—लडको को मना कर दो, यहाँ शोर न करे।
मनाइन—स्त्री०[?] वह स्त्री जो शुभ-अशुभ सभी प्रकार के कर्मो के विधि-विधान जानती हो और इसी लिए स्त्री-समाज मे मान्य हो। (पूरब)
मनाई†—स्त्री०=मनाही।
मनाक्—वि०[सं०√मन् (ज्ञान करना)+आक्]१ बहुत जरा सा। अल्प। थोडा। २ धीमा। मन्द।
मनाकु—वि०=मनाक (थोडा)। उदा०—जेंहि बखान मति सक्ति मनाकू।—नूरमोहम्मद।
मनादी†—स्त्री०=मुनादी।
मनाना—स०[हि० मानना का प्रे०]१ किसी को कुछ मानने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा कुछ मान ले। २ किसी को किसी काम या बात के लिए उद्यत, तत्पर या राजी करना। ३ जो किसी कारण से अप्रसन्न हो गया या रूठ गया हो उसे मीठी मीठी बातें करके अपने अनुकूल बनाना और प्रसन्न करना। ४ अपनी त्रुटि या दोष मानकर उसके लिए क्षमा माँगना। उदा०—या भूल-चूक अपनी पहले मनाऊँ।—मैथिलीशरण। ५ किसी प्रकार की कामना आदि की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए ईश्वर या देवी देवता से प्रार्थना करना। जैसे—मैं तो ईश्वर से यही मनाता हूँ कि वह आपको सद्बुद्धि दे। ६ प्रार्थना या स्तुति करना। उदा०—ताके युग पद कमल मनाऊँ, जासु कृपा निरमल मति पाऊँ।—तुलसी।
मनायी—स्त्री० दे० 'मनावी'।
मनार—पु०=मीनार।
मनाल—पु०[स० मृणाल] शिमले की पहाडियो पर रहनेवाला एक तरह का चकोर पक्षी।
मनावन—पु०[हि० मनाना]१. असतुष्ट या रूठे हुए को मनाने की क्रिया

या भाव। २. किसी पर कोई बात मान लेने के लिए डाला जानेवाला जोर।

मनावी—स्त्री०[स० मनु+ङीप्, औ—आव्] मनु की स्त्री का नाम।

मनाही—स्त्री०[अ०]१ मना करने या होने की क्रिया या भाव। २. कोई काम न करने की आज्ञा। निषेध। रोक।

मनि†—स्त्री०=मणि।

मनिकरा—वि०[स० मणि+कर]१. सुन्दर। २. देदीप्यमान। चमकीला। उदा०—दुइज लिलाट अधिक मनिकरा।—जायसी।

मनिका—पु०=मनका (माला का)।

मनित—भू० कृ० [स०√मन् (जानना)+क्त, इत्व] ज्ञात। उत्पन्न।

मनिधर—पु०=मणिधर।

मनिया—स्त्री० [स० माणिक्य, हि० मनिका] १. माला का दाना। गुरिया। मनका। २ गले में पहनने की कंठी या माला।

मनियार*—वि०[हि० मणि+आर (प्रत्य०)] १. उज्ज्वल। चमकीला। २. शोभनीय। ३ दर्शनीय। सुन्दर।

पु०=मनिहार।

मनिहार—पु०[हि० मणिकार; प्रा० मनियार] [स्त्री० मनिहारिन, मनिहारी] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।

मनिहारी—स्त्री०[हि० मनिहार] सूई, तागा, शीशा, कंघे चूड़ियाँ आदि फुटकर सामान बेचने का काम।

स्त्री० मनिहार का स्त्री०।

मनी—स्त्री०[स० मणि]१. मणि। २ वीर्य। ३ अहं। उदा०—तजे मकुच के मानु मानु तजि मान मनी के।—सेनापति।

स्त्री०[हि० मन=४० सेर] खेत की उपज की बटाई का यह प्रकार जिसमें जमीन का मालिक प्रति बीघे कुछ मन पैदावार में से ले लेता है।

मनीआर्डर—पु०[अ०] १ डाकखाने के द्वारा कहीं कुछ रुपये भेजने की एक प्रकार की व्यवस्था जिसमें पानेवाले को घर बैठे रुपए मिल जाते है। २ वह पत्रक जिसे भरकर उक्त उद्देश्य से डाकखाने में दिया जाता है।

मनीक—पु०[स०√मन्+कीकन्] अंजन (आँखों का)।

मनीजर†—पु०=मनेजर।

मनीबैग—पु० [अ०] रुपए-पैसे रखने का छोटा डिब्बा, थैली या बटुआ।

मनीर—स्त्री०[देश०] मोरनी।

मनीषा—स्त्री०[स० मनस्-ईषा, ष० त०, पररूप] १ मन या मस्तिष्क की वह विशिष्ट शक्ति जिससे वह इच्छा,कामना,सोच-विचार आदि करता है। मानसिक शक्ति। (फैकल्टी)२ फलत. (क) अभिलाषा या इच्छा। (ख) अकल या बुद्धि।

मनीषिका—स्त्री०[सं० मनीषा+कन्,+टाप, इत्व] मनीषा।

मनीषित—भू० कृ०[स० मनीषा+इतच्] मनोभिलषित। वाछित।

मनीषिता—स्त्री० [स० मनीषिन्+तल्+टाप्] १ मनीषी होने की अवस्था या भाव। २. बुद्धिमत्ता।

मनीषी (षिन्)—वि०[स० मनीषा+इनि] १. ज्ञानी। २ बुद्धिमान्। ३ पंडित। विद्वान्। ४ यथेष्ट मनन और विचार करनेवाला। विचारशील।

मनु—पु०[स०√मन्+उ]१. ब्रह्मा के पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते है।

विशेष—(क) वेदों में मनु को ही यज्ञों का आदि प्रवर्तक भी माना गया है। पुराणों मे यह भी कहा गया है कि जब एक बार महाप्रलय के समय सारी पृथ्वी जलमग्न हो गई थी तब मनु ही एक नाव पर चढ़कर डूबने से बचे थे, और उन्हीं से सारी मानव जाति उत्पन्न हुई थी। पुराणों मे यह भी कहा गया है कि प्रत्येक महाप्रलय के उपरान्त मनु ही मानव जाति की उत्पत्ति करते है। इसी लिए प्रत्येक मन्वन्तर के अलग-अलग मनुओं के नाम भी पुराणों में मिलते है। चौदह मन्वन्तरों के १४ मनुओं के नाम ये है, स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि। (ग) इस्लामी, मसीही आदि धर्मों की पौराणिक कथाओं में मनु के समकक्ष नूह और नोहा हैं। २ विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. अन्तःकरण। ५. अग्नि। ६ मंत्र। ७. एक रुद्र का नाम। ८. जैनों के एक जिन देव। ९. चौदह मन्वन्तरों के मनुओं के आधार पर १४ की संख्या का सूचक शब्द।

स्त्री० १. मनु की स्त्री। मनावी। २ वन-मेथी।

†अव्य०=मनहुँ (मानों)।

मनुआ—पु०=मानव (मनुष्य)।

पु०[?] देव कपास। नरमा।

मनुख—पु०=मनुष्य।

मनुग—पु०[स० मनु√गम् (प्राप्त होना)+ड] प्रियव्रत के पौत्र और द्युतिमान के पुत्र का नाम।

मनुज—पु० [स० मनु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] [स्त्री० मनुजा, मनुजी] मनुष्य।

मनु-जात—वि०[स० प० त०] मनु से उत्पन्न।

पु० मनुष्य।

मनुजाद—वि०[स० मनुज√अद् (खाना)+अण्] नर-भक्षक। मनुष्यों को खानेवाला।

पु०=राक्षस।

मनुजाधिप—पु० [सं० मनुज-अधिप, ष० त०] राजा।

मनु-युग—पु० [स० ष० त०] मन्वन्तर।

मनु-श्रेष्ठ—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

मनुष—पु० [स० मनुष्य] १. मनुष्य। २. स्त्री का पति। स्वामी।

मनुषी—स्त्री० [स० मनुष्य+ङीप्, य-लोप] स्त्री।

मनुष्य—पु० [स० मनु+यत्, षुक्-आगम] जरायुज जाति का एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धि बल की अधिकता के कारण सब प्राणियों मे श्रेष्ठ है। आदमी। नर।

मनुष्यकार—पु० [स० मनुष्य+कार] उद्योग। प्रयत्न।

मनुष्य-गणना—स्त्री० [स० ष० त०] जन-गणना।

मनुष्य-गति—स्त्री० [स० ष० त०] जैन शास्त्रानुसार वह कर्म जिसे करने से मनुष्य बार-बार मरकर मनुष्य का ही जन्म पाता है। ऐसे कर्म पर-स्त्री-गमन, मास-भक्षण चोरी आदि बतलाये गये है।

मनुष्यता—स्त्री० [स० मनुष्य+तल्+टाप्] १ मनुष्य होने की अवस्था या भाव। आदमीपन। २. सज्जन मनुष्य के लिए सभी आवश्यक और

उपयोगी गुणो का समूह। ३ वे बाते जो किसी मनुष्य को शिक्षित और सभ्य समाज मे उठने-बैठने के लिए आवश्यक होती है।

मनुष्यत्व—पु०[स० मनुष्य+त्व] १. मनुष्य होने की अवस्था या भाव। मनुष्यता। २. मनुष्यों के लिए आवश्यक और उपयुक्त गुणो (दया, प्रेम, सहृदयता आदि) से युक्त होने की अवस्था या भाव।

मनुष्य-धर्मा (र्मन्)—पु० [स० ब० स०] कुबेर।

मनुष्य-यज्ञ—पु० [स० ष० त०] मनुष्य, विशेषत अभ्यागत व्यक्ति का किया जानेवाला आदर-सत्कार। अतिथियज्ञ। नृयज्ञ।

मनुष्य-रथ—पु०[स० मध्य० स०] प्राचीन काल मे वह रथ जिसे मनुष्य (पशु नही) खीचते थे। नर-रथ।

मनुष्य-लोक—पु० [स० ष० त०] यह जगत जिसमे मनुष्य (देवता नही) रहते है। मर्त्य-लोक। मृलोक।

मनुष्य-शीर्ष—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार की जहरीली मछली जिसका सिर आदमी के सिर की तरह होता है। (टेटाओडन)

मनुस(ा)—पु० [स० मनुष्य][भाव० मनुसाई] १ आदमी। मनुष्य। २ नौ-जवान। युवक। ३ स्त्री का पति। स्वामी। ४ पौरुष से युक्त व्यक्ति। मर्द।

मनुसाई—स्त्री० [हिं० मनुस+आई (प्रत्य०)] १ मनुष्यत्व। २ मनुष्यो का फलत शिष्टतापूर्ण व्यवहार। ३ पौरुष।

मनुसाना†—अ० [हिं० मनुस] १. पौरुष का भाव जगना। २. क्रोधान्वित होना।

स० १ किसी मे पौरुष का भाव जगाना। २ क्रुद्ध या क्रोधित करना।

मनु-स्मृति—स्त्री० [स० मध्य० स०] मनु द्वारा प्रणीत एक प्रसिद्ध ग्रथ जिसकी गिनती धर्म-शास्त्र मे होती है। मानव-धर्मशास्त्र।

मनुहर†—स्त्री०=मनुहार।

मनुहार—स्त्री० [हिं० मान+हरना] १. किसी रूठे हुए व्यक्ति को मनाने तथा उसका मान छुडाने के लिए की जानेवाली विनती या मीठी-मीठी बाते। २. इस प्रकार की विनती करने की क्रिया, प्रयत्न या भाव। ३ खुशामद। ४ तुष्टि। तृप्ति। ५ आदर-सत्कार।

मनुहारना—स० [हिं० मनुहार] १. रूठे हुए व्यक्ति से मीठी-मीठी बाते करके उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न करना। मनाना। २ निवेदन, प्रार्थना या विनती करना। ३ आदर-सत्कार करना। ४ खुशामद करना।

मनुहारी†—वि० [हिं० मन+ हरना] [स्त्री० मनुहारिन] जो बात-बात पर रूठता हो तथा जिसे प्रसन्न करने के लिए बार बार मनुहार करनी पडती हो। उदा०—पासा सार खेलि कित कौन मनुहारिन मो, जीनि मनुहारि मनुहारि हारि आयो हौ।—पद्माकर।

मनूरी—स्त्री० [अ० मुनौवर] एक प्रकार की बुकनी जो मुरादाबादी कलई के बरतनो को उजला करने मे काम आती है। यह धातु गलाने की पुरानी घरियो को कूटकर बनाई जाती है।

मने*—अव्य० हिं० मानो का पुराना रूप।

† वि०=मुझे। (गुज० और राज०)

मनेजर—पु० दे० 'व्यवस्थापक'।

मनो—अव्य० [हिं० मानना] १ मान लेना पडता है कि। २ ऐसा भासित होता है कि। मानो।

मनोनुकूल—वि० [स० मनस्-अनुकूल, ष० त०] मन चाहता हो वैसा। इच्छा या मन के अनुसार।

मनोकामना—स्त्री० [स० मन कामना] मन में रहनेवाली कामना। अभिलाषा।

मनोगत—भू० कृ० [स० द्वि० त०] मन मे आया या उठा हुआ। (विचार) पु० १ कामदेव। मदन। २. काम वासना। ३ विचार।

मनोगति—स्त्री० [स० मनस्-गति, ष० त०] १. मन की गति। चित्त-वृत्ति। २. अभिलाषा। इच्छा।

मनोगुप्ता—स्त्री० [स० मनस्-गुप्ता, तृ० त०] मैनसिल।

मनोग्रथि—स्त्री० [स०] आधुनिक मनोविश्लेषण के अनुसार इच्छाओं और स्मृतियों का एक तत्र जिससे मन मे पुजीभूत धारणाओं की ऐसी गाँठ सी बँध जाती है जो दमित होने पर भी अनजान मे ही और प्रच्छन्न रूप से मनुष्य के वैयक्तिक आचरणों और व्यवहारों को प्रभावित करती रहती है। (काम्पलेक्स)

विशेष—कहा गया है कि यह ऐसे विचारों और सवेगो का पुज है जिन्हे मनुष्य को समय-समय पर आशिक या पूर्ण रूप से दमन करना पडता है। ऐसे विचार अनजान मे ही अचेतन मन मे घर कर लेते हैं; और इन्ही के वशवर्ती होकर वह धार्मिक नैतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों मे अनेक प्रकार के असाधारण तथा विलक्षण कार्य करने लगता है। मनोग्रथियाँ मनुष्य के मन की उन वृत्तियो के अग बन जाती हैं, और मनुष्य अपने आप को औरो से छोटा या बडा समझने लगता है, भूत-प्रेत, स्वर्ग-नरक आदि पर विश्वास करने लगता है, नये ढग और नई बातें निकालने का प्रयत्न करता है, अपने सामने अनोखे आदर्श रखने और विचित्र सिद्धात बनाने लगता है, आदि आदि। यह भी कहा गया है कि इनका बहुत ही सूक्ष्म रूप मनुष्य मे जन्मजात होता है, और आगे चलकर बढता या विकसित होता रहता है। किसी मनोग्रथि की तीव्रता या प्रबलता के फलस्वरूप मनुष्य को अनेक प्रकार के विकट मानसिक विकार तथा शारीरिक रोग भी हो जाते हैं।

मनोग्राही (हिन्)—वि० [स० मनस्√ग्रह्+णिनि, उप० स०] [स्त्री० मनोग्राहिणी] मन को अपनी ओर खीचनेवाला।

मनोज—पु० [स० मनस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] कामदेव। मदन।

मनोजव—वि० [स० मनस्-जव, ब० स०] १ मन के समान वेगवान्। अत्यन्त वेगवान्। २ पितृतुल्य। बडो के समान।

पु० १ विशद। २ रुद्र के एक पुत्र का नाम। ३ एक प्राचीन तीर्थ। ४ छठे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ५ अनिल या वायु के एक पुत्र जो उसकी शिवा नाम की पत्नी से उत्पन्न हुआ था।

मनोजवा—स्त्री० [स० मनोजव+टाप्] १. कलिहारी। करियारी। २ स्कद की माता का नाम। ३. क्रौंच द्वीप की एक नदी। ४ अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

मनोज-वृद्धि—स्त्री० [स० ब० स०] कामवृद्धि नामक क्षुप। कामज।

मनोज्ञ—वि० [स० मनस्√ज्ञा (जानना)+क] [स्त्री० मनोज्ञा] मनोहर। सुदर।

पु० कुन्द का पौधा और फूल।

मनोज्ञता—स्त्री० [स० मनोज्ञ+तल्+टाप्] सुदरता। मनोहरता। खूबसूरती।

मनोज्ञा—स्त्री० [स० मनोज्ञ+टाप्] १. कलौंजी । २ मँगरैला । ३. जावित्री। ४ मदिरा । शराब । ५ आवर्तकी । बाँझ ककोडा । ६ कोई सुन्दरी स्त्री, विशेपत राजकुमारी ।

मनोदड—पु० [स० मनस्-दड, प० त०] मन की वृत्तियो का विरोध। मनोनिग्रह ।

मनोदत्त—वि० [स० मनस–दत्त, तृ० त०] १ जो अभी प्रत्यक्ष रूप मे तो नही पर मन से दिया जा चुका हो। जिसे देने का मन मे सकल्प कर लिया गया हो। २ जिसका मन किसी काम मे पूरी तरह लग रहा हो। दत्त-चित्त।

मनोदशा—स्त्री० [स० मनोदश+टाप्] किसी कार्य या विषय के प्रति होनेवाले राग-विराग या प्रवृत्ति -विरति आदि के विचार से समय-विशेप पर होनेवाली मनकी अवस्था या दशा । (मूड)

मनोदाह—पु० [स० मनस्-दाह, प०त०] मन मे होनेवाला दु ख मनस्ताप।

मनोदाही (हिन्)—वि० [स० मनस्√दह् (जलना)+णिनि] मन मे सन्ताप उत्पन्न करनेवाला ।

मनोदुष्ट—वि० [स० मनस्-दुप्ट, तृ० त०] दुप्ट प्रकृति ।

मनोदेवता—पु० [स० मनस्-देवता, प० त०] अन्त करण। विवेक ।

मनोदौर्बल्य—पु० [स० मनस्-दौर्वल्य, प० त०] १. मन मे होनेवाली किसी प्रकार की दुर्वलता । (मेन्टल वीकनेस) २ उक्त दुर्वलता का सूचक कोई कार्य।

मनोघ्यान—पु० [स० ष० त०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

मनोनयन—पु० [स० मनस्-नयन, स० त० या तृ० त०] [भू० कृ० मनोनीत] १ कोई बात या विचार मन मे लाना या उस पर कुछ सोचना । २ अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुसार किसी को चुनना अथवा नामाकित, नियुक्त या प्रतिप्ठित करना ।

मनोनिग्रह—पु० [स० मनस्-निग्रह, प० त०] विपय-वासनाओ मे प्रवृत्त होने से मन को रोकना । मन को वश मे रखना ।

मनोनीत—भू० कृ० [स० मनस्-नीत, तृ० त०] १ मन मे आया हुआ (विचार आदि) । २ जिसका मनोनयन हुआ या किया गया हो।

मनोन्मनी—स्त्री० [स० ?] योग-साघन मे वह अवस्था जिसमे मन सारी चचलता छोडकर पूर्ण रूप से शान्त और स्थिर हो जाता है।

विशेष—कवीर साहित्य मे 'उन्मनी' का प्रयोग इसी अर्थ मे हुआ है।

मनोवल—पु० [स० मनस्-वल, प० त०] १ मानसिक वल। २. आत्मिक शक्ति।

मनोभग—पु० [स० मनस्-भग, प० त०] मन की शान्ति मे पडनेवाला विघ्न। जैसे—खिन्नता, निराशा, विपाद आदि।

मनोभव—पु० [स० मनस्√भू (होना)+अच्] कामदेव ।

मनोभाव—पु० [स०मनस्-भाव, प०त०] मन मे उत्पन्न होने या रहनेवाला भाव या विचार । (सेन्टीमेन्ट)

मनोभिराम—वि० [स० मनस्-अभिराम, प० त०] मनोज्ञ। सुन्दर ।

मनोभू—पु० [स० मनस्√भू (होना) क्वप्] कामदेव । मदन ।

मनो-भ्रंश—पु० [स०] एक तरह का रोग जिसमे वुद्धि ठीक तरह से और पूरा काम नही करती। (डिमोन्शिया)

मनोमय—वि० [स० मनस्+मयट्] १. मन से युक्त । २. मानसिक ।

मनोमय-कोश—पु० [स० कर्म० स०] वेदान्त मे आत्मा को आवृत रखनेवाला पाँच कोशो मे से तीसरा कोश जिसमे मन, अहकार और कर्मेन्द्रियाँ अतर्भूत मानी जाती है। उसी को बौद्ध दर्शन मे संज्ञा स्कध कहते है।

मनोमल—पु० [स० मनस्-मल प० त०] मन मे होनेवाला कोई दूपित भाव या विचार ।

मनोमालिन्य—पु० [स० मनस्-मालिन्य, प० त०] मन मे रहनेवाला दुर्भाव या वैर-विरोध जो जल्दी ऊपर प्रकट न होता हो। मनमुटाव। रजिश ।

मनोमोही (हिन्)—वि० [स० मनस्√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० मनोमोहिनी] मन को मोहनेवाला। उदा०—मनो मोहिनी है वह मनोरमा है।—निराला ।

मनोयोग—पु० [स० मनस्-योग, प० त०] किसी काम या बात मे मन को एकाग्र करके लगाना । चित्त की वृत्ति का निरोध करके एकाग्र करना और उसे किसी एक काम या बात मे लगाना ।

मनोयोनि—पु० [स० मनस्-योनि, ब० स०] कामदेव ।

मनोरंजक—वि० [स० मनस्-रजक, प० त०] मनोरजन करनेवाला । मन को बहलाकर प्रसन्न करनेवाला। मन का रजन करनेवाला, फलत जिससे समय वहुत आनदपूर्वक व्यतीत होता है।

मनोरजन—पु० [स० मनस्-रजन, प० त०] [वि० मनोरजक, मनोरजनीय] १. मन का रजन। दिल-वहलाव। २ कोई ऐसा कार्य या वात जिससे समय वहुत ही आनदपूर्वक व्यतीत होता है। (इन्टरटेनमेन्ट, उक्त दोनो अर्थो मे) । ३. एक प्रकार की वँगला मिठाई ।

मनोरंजन-कर—पु० [प० त०] एक प्रकार का कर जो मनोरजन चाहनेवाले व्यक्तियो को किसी व्यावसायिक मनोरजक कार्यक्रम मे सम्मिलित होने के समय देना पडता है । (इन्टरटेनमेट टैक्स)

मनोरथ—पु० [स० मनस्-रथ, व० स०] [वि० मनोरथिक] अभिलापा। वाछा। इच्छा ।

मनोरथ तृतीया—स्त्री० [स० मध्य० स०] चैत्र शुक्ल तृतीया जो व्रत का दिन कहा गया है ।

मनोरथ द्वादशी—स्त्री० [स० मध्य० स०] चैत्र शुक्ल पक्ष की द्वादशी जो व्रत का दिन कहा गया है ।

मनोरथिक—वि० [स० मानोरथिक] १ मनोरथ से सम्बन्ध रखनेवाला। मनोरथ का । २ मनोरथ के रूप मे होनेवाला ।

मनोरन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास ।

मनोरम—वि० [स० मनस्√रम् (रमण करना)+णिच्+अण्, उप०स०] [स्त्री० मनोरमा] जिसमे मन रमने लगे । सुदर ।

पु० सखी छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे,५, ४ और ५ के अतर पर विराम कुल चौदह मात्राएँ होती है।

मनोरमा—स्त्री० [स० मनोरम+टाप्] १ सात सरस्वतियो मे से चौथी सरस्वती । २ गौतम वुद्ध की एक शक्ति । ३ दस दस वर्णो के चरणो वाला एक छद जिसके प्रत्येक चरण का पहला, दूसरा, तीसरा, सातवाँ और नवाँ वर्ण लघु होता है । तथा अन्य वर्ण गुरु होते है। (छदोमजरी) ४ महाकवि चन्द्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७ भेदो मे से एक जिसमे १२ गुरु और २२ लघु वर्ण होते है। ५ दस अक्षरो

का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण और अत मे गुरु होता है। ६ केशव के मतानुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे ४ सगण और अत मे दो लघु होते हैं। ७ केशव के अनुसार दोधक छद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ४ भगण और दो गुरु होते है। ८. सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण और एक गुरु होता है। ९ गोरोचन।

मनोरा—पु० [स० मनोहर] पूजा आदि के उद्देश्य से बनाई जानेवाली गोबर की मूर्ति।

मनोराज†—पु० मनोराज्य।

मनोराज्य—पु० [स० मनस्-राज्य, मध्य० स०] १ मन रूपी राज्य। २ मनमाने सुखो की मन मे की जानेवाली कल्पना। ३ कल्पना से खडा किया हुआ कोई सुन्दर तथा सुखद आयोजन।

मनोरा-झूमक—पु० [?] स्त्रियो का एक प्रकार का देहाती लोक गीत।

मनोरिया—स्त्री० [हिं० मनोहर] एक प्रकार की सिकडी या जजीर जिसकी कडियो पर चिकनी चपटी दाल या घुडी जडी रहती है और जिसमे घुघरुओ के गुच्छे लगातार वदनवार की तरह टाँगते या लटकाते है।

मनोलीला—स्त्री० [स० मनस्-लीला, प० त०] ऐसी कल्पित अद्भुत बात जिसका कोई आधार न हो। (फैन्टन)

मनोवती—स्त्री० [स० मनस्+मतुप्, म—व+ङीप्] १ पुराणानुसार मेरु पर्वत पर की एक नगरी। २ चित्रागद विद्याधर की एक कन्या।

मनोवांछा—स्त्री० [स० मनस्-वाछा, प० त०]=मनोकामना।

मनोवाछित—भू० कृ० [स० मनस्-वाछित, तृ० त०] जो मन मे चाहा गया हो। अभिलषित। इच्छित।

मनोविकार—पु० [स० मनस्-विकार, प० त०] १ मन मे उठनेवाला कोई भाव या विचार। मन मे होनेवाला कोई आवेग।

मनोविज्ञान—पु० [स० मनस्-विज्ञान, प० त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे मनुष्य के मन उसकी विभिन्न अवस्थाओ तथा क्रियाओ, उस पर पडनेवाले प्रभावो आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है। (साइकॉलोजी)

मनोविश्लेषण—पु० [स० मनस्-विश्लेषण, प०त०] आधुनिक मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमे कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगो और विकारो का उपचार या चिकित्सा यह मानकर की जाती है कि वे रोग कुछ मनोवेगों का दमन करने से उत्पन्न होते है। (साइको-एनैलैसिस)

विशेष—इसका आविष्कार फ्रायड तथा उसके परवर्ती मनोवैज्ञानिको ने किया था। इसमे रोगी के पूर्व-इतिहास का परिचय प्राप्त करके रोग का निदान किया जाता है और तब मनोवैज्ञानिक ढग से उसका उपचार या चिकित्सा की जाती है।

मनोवृत्ति—स्त्री० [स० मनस्-वृत्ति, प० त०] वह मानसिक शक्ति या स्थिति जिसके कारण मनुष्य किसी ओर प्रवृत्त होता अथवा उससे हटता है। (मैन्टैलिटी)

मनोवेग—पु० [स० मनस्-वेग, प० त०] मन मे उत्पन्न होनेवाला तीव्र विकार।

मनोवैकल्य—पु० [स० मनस्-वैकल्य, प० त०] मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमे ठीक तरह से मानसिक विकास न होने के कारण वुद्धि परिष्कृत नही होने पाती, और इसी लिए ठीक तरह से अपना कार्य करने के योग्य नही होती। (मेन्टल डिफीशिएन्सी)

मनोवैज्ञानिक—वि० [स० मनोविज्ञान+ठक्—इक] मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला। (साइकॉलाजिकल)

पु० वह जो मनोविज्ञान का ज्ञाता है। (साइकॉलोजिस्ट)

मनोव्यथा—स्त्री० [स० मनस्-व्यथा, प० त०] मन मे होनेवाली व्यथा। मानसिक कष्ट।

मनोव्याधि—स्त्री० [स० मनस्-व्याधि, प०त०] मन या मानस मे होनेवाले रोग।

मनोव्यापार—पु० [स० मनस्-व्यापार, प० त०] मन की क्रिया। सकल्प-विकल्प। विचार।

मनोसर*—पु० [स० मन] मन की वृत्ति। मनोविकार।

मनोहंस—पु० [स०] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो नगण, एक भगण और एक रगण होता है। (कलहस नामक छन्द से भिन्न)

मनोहत—वि० [स० मनस्-हत, तृ० त०] जिसका मन टूट गया हो। निराश।

मनोहर—वि० [स० मनस्-हर, ष०त०] [स्त्री० मनोहरता] १. मन हरनेवाला। २ मनोज्ञ। सुन्दर।

पु० १ छप्पय छद का एक भेद। २ एक सकर राग। ३ कुद का पौधा और उसका फूल। ४ सोना। स्वर्ण।

मनोहरता—स्त्री० [स० मनोहर+तल्+टाप्] मनोहर होने की अवस्था या भाव। सुंदरता।

मनोहरताई†—स्त्री०=मनोहरता।

मनोहरा—स्त्री० [स० मनोहर+टाप्] १ जाती पुष्प। २ सोनजुही। ३ त्रिशिर की माता का नाम। ४ स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।

मनोहरी—स्त्री० [हिं० मनोहर] कान मे पहनने की एक प्रकार की छोटी वाली।

मनोहारी (रिन्)—वि० [स० मनस्√हृ (हरण)+णिनि] [स्त्री० मनोहारिणी] मनोहर। चित्ताकर्षक। सुदर।

मनोह्लादी (दिन्)—वि० [स० मनस्√ह्लाद् (प्रसन्न होना)+णिनि] [स्त्री० मनोह्लादिनी] १ मन को आह्लादित या प्रसन्न करनेवाला। २ मनोहर। सुदर।

मनोह्वा—स्त्री० [स० मनस्√ह्वा (बुलाना)+क+टाप्] मन शिला। मैनसिल।

मनौं†—अव्य०=मानो।

मनौअल—स्त्री० [हिं० मानना] मन मे कोई बात मानने या धारण करने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [हिं० मनाना] क्रुद्ध अथवा रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव। जैसे—मान-मनौअल।

मनौती+—स्त्री० [हिं० मानना+औती (प्रत्य०)] १ रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव। मनुहार। २ देवी-देवता के प्रति की जानेवाली यह प्रतिज्ञा या सकल्प कि अमुक मनोरथ सिद्ध हो जाने पर हम आपकी अमुक प्रकार से पूजा करके आपको प्रसन्न करेंगे। दे० 'मन्नत'।

क्रि० प्र०—चढाना ।—मानना ।

मन्नत—स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवी-देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा या संकल्प जो किसी विशिष्ट कामना की पूर्ति के लिए किया जाता है। मानता। मनौती।

मुहा०—**मन्नत उतारना या बढ़ाना**=उक्त प्रकार की पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। **मन्नत मानना**=यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

मन्ना—पु० [देश०] बाँस आदि में से रसनेवाला एक तरह का मीठा निर्यास।

मन्नाना—अ० [हिं० मान या मन] १. (साँप का) फन उठाना। २. मन में बहुत अप्रसन्न या नाराज होना।

मन्मथी—पु० [स०√मथ्+अन्, पृषो० सिद्धि] १ कामदेव। २. कामवासना ३ कपित्थ। कैथ। ४ साठ संवत्सरों में से उन्नीसवाँ संवत्सर।

मन्मथ-लेख—पु० [स० मध्य० स०] प्रेमी या प्रेमिका को विरह सम्बन्धी लिखा जानेवाला प्रेम-पत्र ।

मन्मथानंद—पु० [स० मन्मथ+आ√नंद् (प्रसन्न होना)+णिच्+अन्] एक प्रकार का आम जिसे महाराज चूत भी कहते है।

मन्मथारि—पु० [स० मन्मथ-अरि, ष० त०] कामदेव के शत्रु; शिव।

मन्मथालय—पु० [स० मन्मथ-आलय, ष० त०] १ आम का पेड़। २. कामुकों का विहार-स्थल।

मन्मथी (थिन्)—वि०[स०मन्मथ+इनि,] कामी। कामुक।

मन्य—वि०[स०√समास के अन्त में प्रयुक्त होनेवाला पद]समस्त पदों के अन्त में अपने आपको मानने या समझनेवाला। जैसे—अहमन्य, पंडित-मन्य।

मन्या—स्त्री० [स०√मन्+क्यप्+टाप्] गरदन की एक नस।

मन्या-स्तंभ—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार का रोग जिसमें गले पर की मन्या नामक शिरा कड़ी हो जाती है और गरदन इधर-उधर नहीं, घूम सकती और भीषण ज्वर होता है। गरदन तोड़ बुखार।(मेनेजाइटिस)

मन्यु—पु० [स०√मन् (ज्ञान करना)+युच्] १ स्तोत्र। २ कर्म। ३. दुख या शोक। ४ यज्ञ। ५ क्रोध। गुस्सा। ६. अभिमान। अहंकार। ७ दीनता। ८ अग्नि। ९ शिव।

मन्यु-देव—पु० [स० ष० त०] १ क्रोध का अभिमानी देवता। २. एक प्राचीन ऋषि।

मन्युमान् (मत्)—वि [स० मन्यु+मतुप्,] क्रोध, अहंकार या दैन्य से युक्त (व्यक्ति)।

मन्वंतर—पु० [स० मनु-अंतर, ष० त०] १. इकहत्तर चतुर्युगियों का काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग। २ अकाल। दुर्भिक्ष। ३ दे० 'मनु'।

मन्वंतरा—स्त्री०[स० मन्वन्तर+अच्+टाप्] प्राचीन काल का एक प्रकार का उत्सव जो आषाढ शुक्ल दशमी, श्रावण-कृष्ण अष्टमी और भाद्र शुक्ल तृतीया को होता था।

मन्हियार—पु०=मनिहार।

मन्होला†—पु० [देश०] तमाल।

मफरूर—वि० [अ० मफ़रूर] पलायित। भागा हुआ।

मम—सर्व० [स० मद्, उस या अहं का षष्ठी एक वचन रूप] मेरा।

ममता—स्त्री० [स० मम+तल्+टाप्] १. यह भाव या विचार कि अमुक (पदार्थ या व्यक्ति) मेरा है, 'मम' का भाव, ममत्व। २. परम आत्मीयता के कारण मन में होनेवाला प्रेम या स्नेह। जैसे—पिता या माता को सन्तान के प्रति होनेवाली ममता। ३. मन में होनेवाला किसी प्रकार का मोह या लोभ। ४. अभिमान। गर्व।

ममता-युक्त—वि० [सं० तृ० त०] १. जिसके मन में किसी के प्रति ममता हो। २ अभिमानी। ३ कंजूस। कृपण।

ममत्व—पु० [सं० मम+त्व] १. 'मम' का भाव। ममता। अपनापन। २. स्नेह। ३. अभिमान। घमंड।

ममनून—वि० [अ०] कृतकृत्य। अनुगृहीत।

ममरखी—स्त्री० [फा० मुबारकी] १. मुबारकबादी। बधाई। २. बधावा।

ममरी—स्त्री० [स० बर्बरी] बनतुलसी। बबई।

ममाखी*—स्त्री०=मधु-मक्खी।

ममाना—पु० [हिं० मामा] मामा का घर। ननिऔरा।

ममिया—वि० [हिं० मामा+इया (प्रत्य०)] जो संबंध में मामा या मामी के स्थान पर पड़ता हो। ममेरा। जैसे—ममिया ससुर, ममिया सासु।

ममियाउरा†—पु०=ममियौरा।

ममियौरा†—पु० [हिं० मामा+औरा (प्रत्य०)] मामा का घर। ममाना।

ममिला†—पु०=मामला।

ममीरा—पु० [अ० मामीरान] हल्दी की जाति के एक पौधे की जड़ जिसकी कई जातियाँ होती है। यह आँख के रोगों की बहुत अच्छी औषधि मानी जाती है।

ममोला—पु० [देश०] १ पोलिन नामक छोटा पक्षी जिसके पेट पर काली धारियाँ होती है। २. छोटा, प्यारा बच्चा।

मम्मा—पु० [अनु०] १ स्त्रियों का स्तन। छाती। २ जल। पानी। (छोटे बच्चे)

†पु०=मामा।

मयंक—पु० [स० मृगांक] चन्द्रमा।

मयंक-मुख—वि० [हिं० मयंक+मुख] [स्त्री० मयंकमुखी] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

मयंद—पु० [सं० मृगेंद्र] १. शेर। सिंह। २. रामकी सेना का एक बन्दर।

मयदी—स्त्री० [देश०] लोहे की वह छोटी सामी जो गाड़ी में चक्के की नाभि के दोनों ओर उस छेद के मुँह पर ठोंककर बैठाई जाती है जिसमें धुरे का सिरा रहता है।

मय—पु० [स०√मय् (शीघ्र जाना)+अच्] [स्त्री० मयी] १ ऊँट। २ खच्चर। ३. घोड़ा। ४ आराम। सुख। ५. एक प्राचीन देश का नाम। ६. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो बहुत बड़ा शिल्पी था। इसे असुरों और दैत्यों का शिल्पी मानते है। कहते हैं कि मन्दोदरी इसी की कन्या थी। ७ अमेरिका के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन मूल अधिवासी जो प्राचीन काल में उन्नत और सभ्य समझे जाते थे।

प्रत्य० [स०] तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप विकार और प्राचुर्य अर्थ मे शब्दो के साथ लगाया जाता है। और जो नीचे लिखे अर्थ देता है—

१ किसी चीज या बात से अच्छी तरह पूर्ण। भरा हुआ या युक्त। जैसे—आनन्दमय। २. आधार या आश्रय के रूप मे होनेवाला। जैसे—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश।

स्त्री० दे० 'मै' (शराव)।

मयगल—पु० [स० मदकल, प्रा० मयगल] मत्त हाथी। मदमस्त हाथी।

मयत्री†—स्त्री०=मैत्री (मित्रता)।

मयन—पु० [स० मदन] कामदेव।

मयनी†—स्त्री०=मैना।

मयमत, मयमत्त—वि० [स० मदमत्त] मस्त। मदमत्त।

मय-सुता—स्त्री० [स० प० त०] मय दानव की कन्या, मन्दोदरी।

मयस्सर—वि० [अ०] १ हाथ मे आया हुआ। प्राप्त। लब्ध।

मया—स्त्री० [स० √मय्+क+टाप्] चिकित्सा। इलाज।

स्त्री० [स० माया] १ माया। भ्रमजाल। २. ममता के कारण होनेवाला स्नेह। प्रेम का पाश या बन्धन। ३. अनुग्रहपूर्ण मनोभाव। प्रेम-भाव। उदा०—जा कहँ मया करहु भलि सोई।—जायसी। ४. जगत्। ससार। ५ जीवनी-शक्ति। प्राण। ६ सासारिक धन-सम्पत्ति।

मयाजिय—वि० [स० मायाजीव] १ जिसके मन मे माया या मोह हो। २. अनुग्रह या कृपा का भाव रखनेवाला।

मयार—वि० [स० माया, हिं० माया] [स्त्री० मयारी] दयार्द्र। दयालु।

मयारी—स्त्री० [देश०] १ वह शाखा या धरन जिसपर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है। २ धरन।

मयारू†—वि०=मयार (दयार्द्र)।

मयी—स्त्री० [स० मय +ङीप्] ऊँटनी।

अव्य० स० 'मय' का स्त्री०। जैसे—दयामयी माता।

मयु—पु०[स०√मय् (गमन करना)+कु वा√मि (मान करना)+उ] १ किन्नर। २. मृग। हिरन।

मयु-राज—पु० [स० प० त०] कुबेर।

मयूख—पु० [स० √मा (मान)+ऊख, मय्-आदेश] १. किरण। रश्मि। २ चमक। दीप्ति। ३ प्रकाश। रोशनी। ४ ज्वाला। लपट। ५ शोभा। ६ काँटा या कील। ७ पर्वत। पहाड।

मयूर—पु० [स० मयू√रु (शब्द)+क, पृषो० सिद्धि] [स्त्री० मयूरी] १ मोर। २. मयूर-शिखा नामक क्षुप। ३ पुराणानुसार सुमेरु पर्वत के अदर का एक पर्वत।

मयूरक—पु० [स०] १ अपामार्ग। चिचडा। २ तूतिया। ३. मयूर। मोर। ४ मयूर। शिखा नामक क्षुप।

मयूर-केतु—पु० [स० ब० स०] स्कद का एक नाम।

मयूर-गति—स्त्री० [स० ब० स०] चौबीस अक्षरो की एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे आदि मे पाँच यगण, फिर मगण, यगण और अन्त मे भगण होता है। (य य य य य म य भ)।

मयूरगामी (मिन्)—पु० [स० मयूर√गम् (जाना)+णिनि,] मयूर पर सवारी करनेवाले कार्तिकेय।

मयूर-ग्रीवक—पु० [स० ब० स० +कन्, ह्रस्व] तूतिया।

मयूरचूड़—पु० [स० ब० स०] मयूर शिखा।

मयूरचूडा—स्त्री० [स० मयूरचूड+टाप्] मयूर शिखा नामक क्षुप।

मयूरजंघ—पु० [स० ब० स०] सोनापाढा। श्योनाक।

मयूर-नृत्य—पु० [स० प० त०] एक प्रकार का नाच जिसमे थिरकन अधिक होती है।

मयूर-पदक—पु० [स० प० त०] नखाघात। नखक्षत।

मयूर-रथ—पु० [स० ब० स०] कार्तिकेय। स्कद।

मयूर-शिखा—स्त्री० [स० ब० स०] मोर शिखा नामक क्षुप।

मयूरिका—स्त्री० [स० मयूर+ठन्—इक,+टाप्] १. अवष्ठा। मोइया। २. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

मयूरेश—पु० [स० मयूर-ईश, प० त०] कार्तिकेय।

मयेश्वर—पु० [स० मय-ईश्वर, प० त०] मय दानव।

मरद—पु०=मकरंद।

मर—पु०[स०√मृ (मरण)+अप्] १. मृत्यु। २ मृत्यु-लोक। ससार। ३ पृथ्वी।

स्त्री०=मुरा।

*वि० १ जो मरता या मर सकता हो। मरणशील। २ मृतक।

मरक—पु० [स०√मृ (मरण)+अप्+कन्] लोक मे फैलनेवाला कोई ऐसा घातक या सक्रामक रोग जिसके कारण बहुत से लोग जल्दी मर जाते हैं। मरी। महामारी। (ऐपिडेमिक)

†स्त्री० [हिं० मरक] १ भेद। रहस्य। २ आकर्षण। खिचाव। ३. मन मे दबा रहनेवाला द्वेष या वैर।

मुहा०—मरक काढ़ना=बदला लेना। वैर चुकाना।

४ मन की उमग या हौसला। ५ दे० 'मडक'।

मरकज—पु० [अ० मर्कज़] १ वृत्त का केंद्र। २ कोई केन्द्र स्थल; विशेषत व्यापारिक केंद्रस्थल। ३ राजधानी।

मरकजी—वि० [अ० मर्कज़ी] केन्द्र-सबधी। केन्द्रीय।

मरकट†—पु०=मर्कट।

मरकत†—पु० [स० मरक√तॄ (तरना)+ड] पन्ना नामक रत्न।

मरकताल—पु० [देश०] समुद्र की तरगो के उतार की सबसे अन्तिम अवस्था। भाटा की चरम अवस्था जो प्राय अमावस्या और पूर्णिमा से दो-चार दिन पहले होती है।

मरकना†—वि०=मर-खाना।

†अ०=मडकना।

†स०=मुड़काना।

मरक-विज्ञान—पु० [स० प० त०] =महामारी विज्ञान।

मरकहा—वि० [हिं० मारना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० मरकही] मारनेवाला (पशु)।

मरकाना—स० [हिं० मरकना] १ दबाकर चूर करना। इतना दबाना कि मरमराहट का शब्द उत्पन्न हो। २ दे० 'मुडकाना'।

मरकी—स्त्री० [हिं० मरना] १ मरी। महमारी। २ मृत्यु।

मरकूम—वि० [अ० मर्कूम] लिखित। लिखा हुआ।

मरकोटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

मरखंडा—वि०=मरकना (मरकहा)।

मरखना—वि० [हिं० मारना+खना (प्रत्य०)] जल्दी गुस्से मे आकर

मार बैठनेवाला। मरकहा। जैसे—मरखना बैल या साँड़। २ (व्यक्ति) जिसे मारने-पीटने की आदत पड़ गई हो।

मरखम—पु० [हिं० मल्लखम] १ वह खूँटा जो कातर मे गाड़ा जाता है। २. दे० 'माल खम'।

मरखौका—वि० [हिं० मरा+खाना] [स्त्री० मरखौकी] मरे हुए जीवो का मास खानेवाला।

वि० [हिं० मार+खाना] [स्त्री० मरखौकी] जो प्रायः मार खाते रहने का अभ्यस्त हो। बहुत मार खानेवाला।

मरगजा—वि० [हिं० मलना+मीजना] [स्त्री० मरगजी] मला-दला। मसला हुआ। मलित-दलित।

†पु०=मलगजा।

मरगी—स्त्री० [हिं० मरना+मि० फा० मर्ग] महामारी। मरी।

मरगोल(ला)—पु० [अ०] गाने मे ली जानेवाली गिटकरी। स्वर-कपन। (सगीत)

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

मरघट—पु० [स०] वह स्थान जहाँ चिताएँ जलती हो।

वि० १ मरकट। ३. दे० 'मनहूस'।

मरचा—पु०=मिर्च।

मर-चिरैया†—स्त्री०=उल्लू (पक्षी)।

मरचोआ—पु० [देश०] एक प्रकार की तरकारी जिसका व्यवहार यूरोप मे अधिकता से होता है।

मरज—पु० [अ० मर्ज] १. रोग। बीमारी। २ खराब आदत। बुरी टेव। लत।

मरजाद*—स्त्री० [स० मर्य्यादा] १. मर्यादा। २. सीमा। हद। ३. प्रतिष्ठा। सम्मान। ४ सामाजिक परिपाटी, रीति या विधान। ५ परिमाण। माप।

मरजादा—स्त्री०=मरजाद (मर्यादा)।

मरजिया—वि० [हिं० मरना+जीना] १ एक बार मरकर फिर से जीनेवाला। २. मृत-प्राय। ३ जो मरने-जीने की परवाह न करता हो। पु० समुद्र तल पर पड़ी हुई वस्तुएँ निकालनेवाला गोताखोर।

मरजी—स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा। कामना। २ किसी काम, बात या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुकूल मनोभाव या वृत्ति। जैसे—हम तो आपकी मरजी से ही यह काम करेंगे। ३ अनुज्ञा। अनुमति।

मुहा०—मरजी मिलना या पटना=(क) एक राय होना। सहमत होना। (ख) स्वभाव या प्रवृत्ति का एक-सा होना।

मरजीवा†—वि०, पु०=मर-जिया।

मरण—पु० [स०√मृ (मरना)+ल्युट्—अन] १ मरने की क्रिया या भाव। मौत। २ साहित्य मे एक सचारी भाव जो विरही की उस अवस्था का सूचक होता है जब वह विरह मे मरणासन्न-सा रहता है।

मरण-गति—स्त्री० [ष० त०] आबादी या जन-सख्या के विचार मे उसके अनुपात मे होनेवाली मृत्युओ की दर या हिसाब। (डेथ रेट) जैसे—अमुक देश की मरण-गति धीरे धीरे घट (या बढ) रही है।

मरणधर्मा—वि०=मरणशील।

मरण-प्रमाणक—पु० [स० ष० त०] व्यक्ति का मरण सूचित करनेवाला प्रमाण-पत्र।

मरण-शील—वि० [स० ब० स०] मर जाना जिसका धर्म या स्वभाव हो। जो अन्त में अवश्य मरता हो। मरण-धर्मा।

मरण-शुल्क—पु० [स० ष० त०] दे० 'मृत्युकर'।

मरणाशंसा—स्त्री० [स० मरण-आशंसा, ष० त०] शीघ्र मरने की इच्छा। जल्दी मरने की कामना। (जैन)

मरणाशौच—पु० [स० मरण-अशौच, ष० त०] घर में किसी की मृत्यु होने के कारण सम्बन्धियों आदि को लगनेवाला सूतक। अशौच।

मरणीय—वि० [सं० मरण, छ—ईय] १ जो मरने को हो या मरने के समीप हो। मर्त्य। २. जिसका मरना अवश्यम्भावी हो।

मरणोन्मुख—वि० [स० मरण-उन्मुख, ष० त०] जो मर रहा हो या जल्दी मरने को हो। मृत्युवाला।

मरत—पु० [सं०√मृ (मारना) +अतच्, गुण] मृत्यु। मौत।

मरतबा—पु० [अ० मर्तब] १. पद। दर्जा। २. दफा। बारी। बार। जैसे—दूसरी मरतबा।

मरतबान—पु० [सं० अमृतबान] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रसिद्ध पात्र।

मरता—वि० [हिं० मरना] जो मरने के सन्निकट हो। जैसे—मरता क्या नहीं करता। (कहा०)

पद—मरते जीते=बहुत ही कठिनता से और जैसे-तैसे। मरते दम तक=प्राण निकलने के समय तक। जीवन के अन्तिम क्षणों तक। मरते मरते=(क) ठीक मृत्यु के समय। जैसे—(ख) वह मरते-मरते यह बात कह गया था। (ग) ठीक मृत्यु के समय तक। जैसे—वह मरते मरते मर गया, पर कभी किसी से दबा नहीं।

मरद*—पु० [फा० मर्द] १ पुरुष। २. वीर पुरुष।

मरदई†—स्त्री० [हिं० मर्द+ई (प्रत्य०)] १. मनुष्यत्व। आदमीयत। २ बहादुरी। वीरता।

मरदन—पु०=मर्दन।

मरदना—स० [स० मर्दन] १. मसलना। २. ध्वस्त या नष्ट करना। ३. गूँधना। माँड़ना। सानना।

मरदनिया—पु० [हिं० मर्दना] वह सेवक जो बड़े आदमियो के अगो मे तेल आदि मला करता है। मालिश करनेवाला आदमी।

मरदानगी—स्त्री० [फा० मर्दानगी] १ मरद अर्थात् पुरुष होने की अवस्था या भाव। पुरुषत्व। २ वीरता। शूरता।

मरदाना—वि० [फा० मर्दान] [स्त्री० मरदानी] १. मरद या पुरुष-सम्बन्धी। पुरुष या पुरुषो का। जैसे—मरदाना लिबास, मरदानी पोशाक। २ मरदो जैसा। वीरो जैसा। जैसे—मरदाना वार। पु० शूर-वीर।

मरदी—स्त्री० [फा० मर्दी] १. मनुष्यता। २ पौरुष ३ काम शक्ति। जैसे—ना-मरदी।

मरदुआ†—पु० [फा० मर्द] मरद या पुरुष के लिए अपेक्षा-सूचक सज्ञा। (स्त्रियाँ)

मरदुम—पु०=मर्दुम (आदमी)।

मरदूद—वि० [अ० मर्दूद] १. निकाला हुआ। बहिष्कृत। २ तिरस्कृत। ३ पाजी। लुच्चा। ४ नीच।

पु० बहुत ही तुच्छ या हीन व्यक्ति।

मरन—स्त्री०=मरण।

मरना—अ० [स० मरण] १. जीव-जतुओ या प्राणियो के शरीर मे से जीवनी शक्ति या प्राण का सदा के लिए निकल जाना जिसके फलस्वरूप उनकी सभी शारीरिक क्रियाएँ या व्यापार बन्द हो जाते है। आयु या जीवन का अत या समाप्त होना। मृत्यु को प्राप्त होना। जान निकलना। जैसे—महामारी से (या युद्ध मे) लोगो का मरना।

पद—मरना-जीना। (देखें स्वतंत्र पद)

मुहा०—**मरने तक की छुट्टी (या फुरसत) न होना**=काय की अधिकता के कारण तनिक भी अवकाश न होना। नाम को भी साँस लेने या सुस्ताने का समय न मिलना।

२ वनस्पतियो, वृक्षो आदि का कुम्हला या मुरझाकर इस प्रकार सूख जाना कि फिर वे खिलने-पनपने, फूलने-फलने या हरे-भरे रहने के योग्य न हो सकें। जैसे—अधिक गरमी पडने या वर्षा न होने से बाग के बहुत से पौधे मर गये।

विशेष—प्राणियो और वनस्पतियो की उक्त प्रकार की अवस्था प्राकृतिक कारणो से भी होती है और भौतिक कारणो से भी।

३ इतना अधिक कष्ट या दु ख भोगना कि मानो शरीर का अत हो जाने की नौबत या बारी आ रही हो। जैसे—उन्होने जन्म भर मर मर कर लाखो रुपये कमाये पर वे धन का सुख न भोग सके। उदा०—देव पूजि पूजि हिंदू मुए (मरे) तुरुक मुए (मरे) हज जाइ।—कबीर। ४ किसी काम या बात के लिए बहुत अधिक चिन्तित या प्रयत्नशील रहना और परेशान या हैरान होना। जैसे—हम तो लडके के सुधार के लिए मरे जाते है और वह ऐरे-गैरे लोगो के साथ घूमता-फिरता रहता है।

मुहा०—**(किसी के लिए) मरना-पचना**=बहुत अधिक कष्ट सहना। उदा०—बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम की डड सह्यो।—कबीर। **मर मिटना**=(क) प्रयत्न करते-करते बहुत बुरी दशा मे पहुँचना या दुर्दशा भोगना। जैसे—हम तो इस काम के लिए मर मिटे, और आपके लेखे अभी कुछ हुआ ही नही। (ख) पूर्ण रूप से अपना अन्त या विनाश करना। जैसे—हमने तो ठान लिया है कि देश-सेवा के लिए मर मिटेंगे। **मर रहना**=थक या हारकर हताश हो जाना और कुछ करने-धरने के योग्य न रह जाना। **मर लेना**=प्रयत्न करते-करते असह्य कष्ट भोगना। **(किसी काम या बात के लिए) मरे जाना**=(क) इतना अधिक चिन्तित या व्याकुल होना कि मानो उसके बिना जीवन या शरीर चल ही न सकता हो। जैसे—तुम तो मकान बनवाने के पीछे मरे जाते हो। (ख) बहुत अधिक कष्ट या दु ख भोगना। जैसे—हम तो सूद चुकाते चुकाते मरे जाते हैं। उदा०—अब तो हम साँस के लेने मे मरे जाते है।—कोई शायर। (ग) ऐसी स्थिति मे आना या होना कि मानो शरीर मे प्राण ही न हो। मृतक के समान असमर्थ या निष्क्रिय हो जाना। जैसे—वह तो लज्जा (या सकोच) के मारे मरा जाता है और तुम उसके सिर पर चढे जा रहे हो।

५ व्यावहारिक क्षेत्र मे, किसी काम या बात को सबसे अधिक आवश्यक या महत्वपूर्ण समझते हुए उसके लिए सब प्रकार के कष्ट भोगने या त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहना या होना। जैसे—आदमी तो अपनी इज्जत (या बात) पर मरते है। ६ शृगारिक क्षेत्र मे किसी के प्रेम मे इतना अधिक अधीर होना कि उसके विरह मे मानों प्राण निकल रहे हो या जीना दूभर हो रहा हो। किसी के प्रेम मे बहुत ही विकल या विह्वल रहना (प्राय 'पर' विभक्ति के साथ प्रयुक्त)। जैसे—वे जन्म भर सुन्दर स्त्रियो पर मरते रहे। ७. भारतीय खेलो मे, खेलाडियो का किसी निश्चित क्रिया, नियम या विधान के अनुसार या फलस्वरूप खेल मे सम्मिलित रहने के योग्य न रह जाना। जैसे—कबड्डी के खेल मे खेलाडियो का मरना। ८ कुछ विशिष्ट खेलो मे गोटी, मोहरे आदि का उक्त प्रकार से खेले जाने योग्य न रह जाना और बिसात आदि पर से हटा दिया जाना। जैसे—चौसर के खेल मे गोटी या शतरज के खेल मे ऊँट, घोडा या वजीर मरना। ९ किसी प्रकार नष्ट होना। न रह जाना। जैसे—आँखो का पानी मरना, अर्थात् लज्जा, शील, सकोच आदि न रह जाना। १० किसी चीज का किसी दूसरी चीज मे या किसी स्थान मे इस प्रकार विलीन होना या समाना कि ऊपर या बाहर से जल्दी उसका पता न चले। जैसे—छत या दीवार मे पानी मरना। ११ किसी पदार्थ का अपनी क्रिया, शक्ति आदि से रहित या हीन होना। जैसे—आग मरना (बुझना या मन्द होना), पानी छिडकने पर धूल मरना, (उडने योग्य न रह जाना या बैठ जाना), १२. मन या शरीर के किसी वेग का दबकर नही के समान होना। बहुत ही धीमा होना या मन्द पडना। जैसे—भूख मरना, प्यास मरना, उत्साह या मन मरना। १३ किसी से पराजित या परास्त होकर उसके अधीन या वश मे होना। (क्व०)

वि० [स्त्री० मरनी] १ मरनेवाला। २ मरण या मृत्यु की ओर अग्रसर होनेवाला। जो जल्दी ही मरने को हो। मरणासन्न या मरणोन्मुख। उदा०—जाहि ऊब क्यो न, मति भई मरनी।—सुर।

मरना-जीना—पु० [हिं०] गृहस्थी मे प्राय होती रहनेवाली किसी की मृत्यु, सन्तान की उत्पत्ति, जनेऊ, ब्याह आदि कृत्य जिनमे आपसदारी के लोगो के यहाँ आना-जाना पडता है। जैसे—मरना-जीना तो सभी के यहाँ लगा रहता है।

मरनि*—स्त्री०=मरनी।

मरनी—स्त्री० [हिं० मरना] १ मृत्यु। मौत। २ वह स्थिति जिसमे घर का मनुष्य मरा हो और उसके अन्त्येष्टि आदि सस्कार हो रहे हों। जैसे—मरनी-करनी तो सबके घर होती है। ३. किसी के मरने पर मनाया जानेवाला शोक। ४ बहुत अधिक कष्ट, दु.ख या परेशानी।

पद—**मरनी-करनी**=मृत्यु और मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया।

मर-पुरी*—स्त्री० [हिं० मरना+पुरी]=यमपुरी। उदा०—तू मरपुरी न कबहूँ देखी।—जायसी।

मरबुली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पहाडी कन्द जिसके टुकडे गज गज भर गहरे गड्ढे खोद कर बोये जाते है।

मरभुक्खा—वि० [हिं० मरना+भूखा] १ भूख का मारा हुआ। २ भुक्खड। ३ कगाल।

मरम—पु०=मर्म।

मरमर—पु० [फा० मर्मर] एक तरह का सफेद पत्थर।

मरमरा—वि० [अनु०] जो सहज मे टूट जाय। जरा सा दबाने पर मरमर का शब्द कर के टूट जानेवाला।

पु० एक प्रकार का पक्षी ।
पु० [हिं० मल या अनु०] वह पानी जो थोड़ा खारा हो ।
मरमली—स्त्री० [देश०] छोटे आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी कड़ी और बहुत टिकाऊ होती है ।
मरमराना—अ० [अनु०] टूटने के समय दाव पाकर मरमर शब्द करना । स० इस प्रकार तोड़ना या दबाना कि मरमर शब्द हो।
मरमी*—वि० [सं० मर्म] किसी का मर्म जाननेवाला। मर्मज्ञ ।
मरम्म*—पु०=मर्म ।
मरम्मत—स्त्री० [अ०] १ क्षत, टूटी-फूटी अथवा बिगड़ी हुई वस्तु को फिर से ठीक करके अच्छी स्थिति मे लाने का काम । (रिपेयर्स) २ लाक्षणिक अर्थ मे, वह मार-पीट जो किसी को सीधे रास्ते पर लाने के लिए की जाय ।
मरम्मत-तलब—वि० [अ०] जिसमे मरम्मत की आवश्यकता हो । मरम्मत किये जाने के योग्य ।
मरम्मती—वि० [हि० मरम्मत] १ (पदार्थ) जिस की मरम्मत करने की आवश्यकता हो । मरम्मत-तलब । २. (पदार्थ) जिसकी मरम्मत की जा चुकी हो ।
मरल—पु० [देश०] दो हाथ लम्बी एक प्रकार की मछली।
मरवट—स्त्री० [हिं० मरना] वह माफी जमीन जो किसी के मारे जाने पर उसके उत्तराधिकारियो को भरण-पोषण के लिए दी गई हो।
स्त्री० [देश०] पटुए की कच्ची छाल जो निकालकर सुखाई गई हो । सन का उलटा ।
मरवा—पु०=मरुआ (पौधा) ।
मरवाना—स० [हिं० मारना का प्रे०] १. किसी को मारने-पीटने का काम किसी दूसरे से कराना। २ वध या हत्या कराना । (बाजारू) सयो क्रि०—डालना ।
मरसा—पु० [स० मारिश] एक प्रकार का साग जिसकी पत्तियाँ गोल, झुर्रीदार और कोमल होती है ।
मरसिया—पु० [अ० मर्सिय] १. कर्बला के मैदान मे शहीद होनेवाले इमाम हुसेन और उनके साथियो की स्मृति मे लिखा हुआ शोक-गीत। २. किसी मृत व्यक्ति की स्मृति मे लिखा हुआ शोक-गीत। ३ रोना-पीटना ।
क्रि० प्र०—पढना ।
मरहट*—पु०=मरघट ।
पु० दे० 'मोठ' (कदन्न) ।
मरहटा—पु० [स० महाराष्ट्र] १ उन्तीस मात्राओं के एक मात्रिक छद का नाम जिसमे १०, ८ और ११ पर विश्राम होता है तथा अत मे एक गुरु और लघु होता है। २ दे० 'मराठा'।
मरहठा—पु० दे० 'मराठा' ।
मरहठी— वि०, स्त्री०=मराठी।
मरहबा—अव्य० [अ० मर्हबा] १ शाबाश । धन्य ।
मरहम—पु० [अ० मर्हम] ओषधियों का वह गाढा और चिकना लेप जो घाव या फोडे पर उसे भरने या ठीक करने के लिए लगाया जाता है।
क्रि० प्र०—लगना ।—लगाना ।
पद—मरहम-पट्टी=(क) 'आघात की चिकित्सार्थ घाव पर मरहम और पट्टी लगाना ।
२ जीर्ण-शीर्ण या टूटी-फूटी चीज की साधारण मरम्मत ।
मरहमत—स्त्री० [अ० मर्हमत] १. कृपा । अनुग्रह। २ कृपापूर्वक किया जानेवाला प्रदान।
मरहला—पु० [अ० मर्हल] १ वह स्थान जहाँ यात्री रात के समय ठहरते है। पड़ाव। टिकान। २ कुटिया। झोपडी। ३ दरजा। मरातिब। ४. कोई बहुत कठिन या विकट काम ।
क्रि० प्र०—टालना । —तै करना ।—निपटाना ।—पडना ।
मरहून—वि० [अ० मर्हून] बन्धक या रेहन रखा हुआ ।
मरहूम—वि० [अ० मर्हूम][स्त्री० मर्हूमा] जो मर गया हो। दिवगत। स्वर्गवासी।
मराठा—पुं० [म० महाराष्ट्र] १ महाराष्ट्र देश का निवासी। २ महाराष्ट्र देश का अब्राह्मण निवासी।
मराठी—स्त्री० [म० महाराष्ट्री] महाराष्ट्र देश की भाषा।
वि० मराठो का ।
पद—मराठी घिस-घिस=ऐसी भद्दी अवस्था जिसमे हर काम में व्यर्थ बहुत देर लगती हो।
मरातिब—पु० [अ०] १. उत्तरोत्तर या क्रमात् आनेवाली अवस्थाएँ। २ अधिकार युक्त पद। दरजा । ३ तह। पृष्ठ। ४ मकान। मजिल । जैसे—तीन मरातिब का मकान। ५ झडा । ध्वजा । पताका। (किसी के उच्च पद की सूचक) ६ दे० 'माही मरातिब'।
मराना—स० [हिं० मारना का प्रे०] १ मारने का काम किसी दूसरे से कराना । मरवाना । २ सभोग कराना । (बाजारू)
मराय—पु० [स०] १ एकाह यज्ञ। २ एक प्रकार का साम ।
मरायल—वि० [हिं० मारना+आयल (प्रत्य०)] १ जिसने मार खाई हो। पीटा हुआ। २. जिसमे कुछ भी तत्त्व या जीवनी-शक्ति न हो। निस्सार। मरियल।
पु० घाटा । टोटा । (क्व०)
क्रि० प्र०—आना। —पडना।—लगना ।
मराल—पु० [स० मृ+आलच्] १ एक प्रकार की बतख जो हलकी ललाई लिये सफेद रंग की होती है। २ हस । ३ कारडव पक्षी। ४ घोडा। ५ हाथी। ६ अनार का बाग। ७ काजल । ८ ८ बादल। मेघ। ९ दुष्ट या पाजी व्यक्ति।
मरासी—पु०=मिरासी।
मरिंद—पु० १. दे० 'मलिद'। २ दे० 'मरद'।
मरिखम—पु०=माल खभ ।
मरिच—पु० [स०√मृ(मरण)+इच, बा०] मिरिच।
मरिचा—पु० [म० मरिच] १ बड़ी लाल मिर्च। २ मिर्च ।
मरियम—स्त्री० [अ० मर्यम] १ वह बालिका जिसका विवाह न हुआ हो। कुमारी कन्या। ३. पतिव्रता और साध्वी स्त्री। ३ ईसा मसीह की माता का नाम ।
पद—मरियम का पंजा=एक प्रकार की सुगधित वनस्पति जिसका आकार हाथ के पजे का-सा होता है ।
विशेष—प्राय. इसका सूखा हुआ पत्ता प्रसव के समय प्रसूता के सामने पानी मे रख दिया जाता है जो धीरे धीरे फैलने लगता है। कहते हैं कि

इसे देखते रहने से प्रसव जल्दी होता है। पर वास्तव मे प्रसूता का ध्यान बँटाने के लिए ऐसा किया जाता है।

मरियल--वि० [हिं० मरना+इयल (प्रत्य०)] १ इतना अधिक दुर्बल कि मरा हुआ-सा जान पड़े। बे-दम।

पद--**मरियल-टट्टू** =कमजोर तथा सुस्त आदमी।

मरी--स्त्री० [स० मारी] एक ऐसा घातक और सक्रामक रोग जिसमे एक साथ बहुत से लोग मरते है। मरक। महामारी।

स्त्री० [हिं० मारना] एक प्रकार का भूत।

स्त्री० [देश०] साबूदाने का पेड़।

मरीचि--पु०[स०√मृ +ईचि] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे। २. एक मरुत् का नाम।

विशेष--मरीचि, अगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ ये सात सप्तर्षि कहलाते है।

३ एक प्राचीन मान जो ६ त्रसरेणु के बराबर होता है। ४ किरण। मयूख। ५ कान्ति। चमक। ६ दे० 'मरीचिका'।

मरीचिका--स्त्री० [स० मरीचि+कन्+टाप्] १ गरमी के दिनो मे बहुत तेज धूप के समय वातावरण की विशिष्ट स्थितियो के कारण दिखाई देनेवाले कुछ भ्रामक दृश्य। मृग-तृष्णा। जैसे--रेगिस्तान मे दूरी पर जलाशय दिखाई देना या आकाश मे नगर अथवा वन दिखाई देना।

विशेष--प्राय ऐसे भ्रामक दृश्य जिन्हे देखकर यात्री या पशु उन तक पहुँचने के लिए बहुत दूर तक चले जाते हैं पर अन्त मे उन्हे थककर निराश ही होना पडता है।

२ वह स्थिति जिसमे मनुष्य व्यर्थ की आशा या कल्पना के कारण किसी क्षेत्र मे बहुत आगे बढता जाता और अत मे विफल-मनोरथ तथा हताश होता है। मृगतृष्णा। मृगमरीचिका। (मिराज) ३ किरण। मयूख।

मरीचि-गर्भ--पु० [स० ब० स०] १ सूर्य। २ दक्ष सावर्णि मन्वन्तर मे होनेवाले एक प्रकार के देवताओ का गण।

मरीचि-जल--पु० [स० कर्म० स०] मृग-तृष्णा।

मरीचि-तोय--पु० [स० कर्म० स०] मृगतृष्णा।

मरीचिमाली (लिन्)--पुं० [स० मरीचिमाला+इनि] सूर्य।

मरीची (चिन्)--वि० [स० मरीचि+इनि] [स्त्री० मरीचिनी] जिसमे किरणे हो। किरण युक्त।

पु० १ सूर्य। २ चन्द्रमा।

मरीज--वि० [अ० मरीज़] [स्त्री० मरीजा] रोगी। बीमार।

मरीना--पु० [स्पेनी० मेरिनो] एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी पतला कपडा जो मेरीना नामक भेड के ऊन से बनता है।

मरु--पु० [स०√मृ+उ] १ ऐसी भूमि जहाँ जल न हो और केवल बलुआ मैदान हो। मरुस्थल। रेगिस्तान। २ ऐसा पर्वत जिसमे जल न होता हो। ३ मारवाड प्रदेश। ४ मरुआ नामक पौधा। ५ नरकासुर का साथी एक असुर।

मरुआ--पु० [स० मरुव] वन-तुलसी की जाति का एक पौधा जो बागो मे लगाया जाता है।

†पु० [?] १ बँडेर। २ लकडी या घरन जिसमे हिंडोला लटकाया जाता है। ३ माँड। पीच।

मरुक--पु० [स० मरु+कन्] १ मोर। मयूर। २ एक प्रकार का हिरन।

†स्त्री०[हिं० मुड़काना] १ मुड़कने की क्रिया या भाव। २ उत्तेजना।

मरुकांतार--पु० [स० प० त०] रेगिस्तान।

मरु-कूप--पु० [स० प० त०] मरुस्थल या रेगिस्तान का कुआँ जिसमे जल नही होता।

मरुज--पुं० [स० मरु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. नख नामक सुगधित द्रव्य। २ बाँस का कल्ला।

मरु-जात--स्त्री० [सं० मरुज+टाप्] मरुस्थल मे होनेवाली इंद्रायण की जाति की एक लता।

मरु-जाता--स्त्री० [स० प० त०] कौंछ।

मरुत्--पु० [स०√मृ+उत्] १ एक देवगण का नाम। वेदो मे इन्हें रुद्र और वृश्नि का पुत्र लिखा है। २ राजा बृहद्रथ का एक नाम। ३ वायु। हवा। ४ प्राण। ५ सोना। स्वर्ण। ६. सौंदर्य। ७ मरुआ नाम का पौधा। ८ ऋत्विक्। ९ गठिवन। १०. अस-वर्ग। ११. दे० 'मरुत्त'।

मरुतवान*--पु०=मरुत्वान्।

मरुत्कर--पु० [स० प० त०] राजमाष। उड़द।

मरुद्गण--पु० [स० प० त०] एक प्रकार के देव-गण जिनकी सख्या पुराणो मे ४९ कही गई है।

मरुत्त--पु० [स० मरुत्+तप्] पुराणानुसार एक चन्द्रवशी राजा जो महाराज करधर का पौत्र और अवीक्षित का पुत्र था।

मरुत्तक--पु० [स० मरुत√तक् (हँसना)+अच्] मरुआ। (पौधा)

मरुत्पत्ति--पु० [स० प० त०] इन्द्र।

मरुत्पथ--पु० [स० प० त०,+अच् (प्रत्य०)] आकाश।

मरुत्प्लव--पु० [स० मरुत् √प्लु (कूदना)+अच्] सिंह। शेर।

मरुत्फल--पुं० [स० प० त०] ओला।

मरुत्वती--स्त्री० [स० मरुत्वत्+ङीप्] धर्म की पत्नी जो प्रजापति की कन्या थी।

मरुत्वान् (त्वत्)--पु० [स० मरुत् वत्व] १ इन्द्र। २ हनुमान्।

मरुत्सरव--पु० [स० प० त०,+टच् प्रत्य०] १ इन्द्र। २ अग्नि।

मरुत्सहाय--पु० [स० ब० स०] अग्नि।

मरुत्सुत--पु० [स० प० त०] १ हनुमान्। २ भीम।

मरुथल--पु०=मरुस्थल।

मरुदादोल--पु० [स० मरुत्-आदो, प० त०] धौंकनी।

मरुदिष्ट--पु० [स० मरुत्-इष्ट, ष० त०] गूगुल।

मरुद्रथ--पु० [स० मरुत्-रथ, ब० स०] घोडा।

मरुद्रुम--पु०[स० प० त०]१ विट्खदिर। २ बबूल।

मरुद्वर्त्म (न्)--पु०[स० मरुत-वर्त्मन्, प० त०] आकाश।

मरुद्वाह--पु०[स० मरुत-वाह, ब० स०] १ धूआँ। २ आग।

मरुद्विप--पु०[स० प० त० या स० त०] ऊँट।

मरुद्वीप--पु०[सं० प०त०] मरुस्थल के बीच मे कोई हरा-भरा क्षेत्र। ऐसा छोटा उपजाऊ प्रदेश जो मरुस्थल मे हो।

मरुधन्वा (न्वन्)--पु० [सं० ब० स०, अनङ्--आदेश] मरुभूमि। मरुस्थल।

मरु-धर--पु०[सं० ष० त०] मारवाड़।

मरुभूमि--स्त्री०[सं० ष० त०] रेतीला तथा जल-विहीन प्रदेश। रेगिस्तान।

मरु-भूरुह--पु०[सं० ष० त०] करील।

मरु-मक्षिका--स्त्री०[सं० ष० त०] मक्खी की तरह का एक पतिंगा जो प्रायः अंधेरे और ठंडे स्थानों में रहता है। यह फुदकता ही है, उड़ नहीं सकता। कालज्वर का संक्रमण प्रायः इसी के द्वारा है। (सैंडफ्लाई)

मरुरना*--अ०=मरुड़ना (मरोड़ा जाना)।

स०=मरोड़ना।

मरुव--पु०[सं० मरु√वा (प्राप्त होना)+क] मरुआ।

मरुवक--पु०[सं० मरुव+कन्]१ दौना या मरुआ नाम का पौधा। २ मैनी नाम का कँटीला पेड़। ३. तिल का पौधा। ४. बाघ नामक जन्तु। ५ राहु ग्रह।

मरुवा--पु०=मरुआ।

मरुसंभव--पु०[सं० ब० स०] एक तरह की मूली।

मरुसंभवा--स्त्री०[सं० मरुसंभव+टाप्] १ महेंद्र वारुणी। २. एक प्रकार का खैर। ३. एक प्रकार का कनेर। ४ छोटा जवासा।

मरुस्थल--पु०[सं० ष० त०] वह बहुत बड़ा प्राकृतिक मैदान जिसमें मिट्टी की जगह बालू या रेत ही हो। रेगिस्तान। (डिज़र्ट)

मरुस्था--स्त्री०[सं० मरु√स्था (ठहरना)+क+टाप्] छोटा जवासा।

मरू--वि०[सं० मेरु या हिं० मरना] मुश्किल। कठिन।

पद--मरूकर(करि)*=अनेक प्रकार के उपाय करके और बहुत कठिनता से। उदा०--ता कहँ तो अब लौं वहराई कै राखी स्वगइ मरू करि मैं हूँ।--केशव।

स्त्री०[सं० मूर्च्छना] संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह करना। दे० 'मूर्च्छना'।

मरूक--पु०[सं०√मृ (मरना)+ऊक्]१ एक प्रकार का मृग। २ मयूर। मोर।

मरूद्भवा--स्त्री०[सं० मरु-उद्भव, ब० स०,+टाप्] १ जवासा। २. कपास। ३ एक प्रकार का खैर का वृक्ष।

मरूरा*--पु०=मरोड़ा।

मरूल--पु०[सं० मुर्व] गोरचकरा। मरूर।

मरेठी--स्त्री०[?] वह मोटी तथा मजबूत रस्सी जिससे खेतों में हेंगा खींचा जाता है।

†स्त्री०=मराठी।

मरोड़--पु०[हिं० मरोड़ना]१ मरोड़ने की क्रिया या भाव। २. मरोड़ने के कारण पड़नेवाला बल। ३ किसी प्रकार का घुमाव-फिराव या चक्कर।

पद--मरोड़ की बात=घुमाव-फिराव या चक्कर की कोई बात।

मुहा०--मरोड़ खाना=(क) चक्कर खाना। (ख) उलझन में पड़ना।

४. दुख, व्यथा, दुर्भाव आदि के फलस्वरूप मन में होनेवाला क्षोभ या कपट।

मुहा०--मरोड़ खाना या गहना=अभिमान, क्रोध आदि के कारण क्षुब्ध रहना।

५. अनपच के कारण पेट में रह-रहकर होनेवाली ऐंठन जिसमें पीड़ा भी होती है। पेचिश।

मुहा०--मरोड़ खाना=पेट में ऐंठन और पीड़ा होना।

मरोड़ना--स०[हिं० मोड़ना]१ किसी चीज में घुमाव, बल आदि डालने के उद्देश्य से उसे कुछ जोर से घुमाना। जैसे--किसी का कान मरोड़ना।

२. किसी चीज को ऐसी स्थिति में लाना कि उसमें कुछ तनाव या ऐंठन आ जाय। जैसे--अंग मरोड़ना (अंगड़ाई लेना)। उदा०--सब अंग मरोरि मुरी मन मैं झरि पूरि रही रस मैं न भई।--गुमान। ३ गरदन मरोड़कर मार डालना। ४ पीड़ा देना। दुःख पहुँचाना।

मरोड़फली--स्त्री०[हिं० मरोड़+फली]मुर्री। अवर्तनी।

मरोड़ा--पु०=मरोड़।

मरोड़ी--स्त्री०[हिं० मरोड़ना]१. ऐंठन। घुमाव। बल। मरोड़।

२. खींचातानी। ३ उबटन, मैल आदि का वह पतला तथा बल खाया हुआ छोटा टुकड़ा जो शरीर को मलने तथा रगड़ने पर छूटता है। ४. हाथ से मलकर बनाई हुई गीले आटे की बत्ती।

मर्क--पु०[सं० √मर्क् (गति)+अच्] १ शरीर। देह। २ प्राण। ३ बन्दर।

मर्कक--पु० [सं० मर्क+कन्] १ मकड़ा। २ हड़गीला पक्षी।

मर्कट--पुं०[सं०√मर्क्+अटच्]१. बंदर। २. मकड़ा। ३. हड़गीला। ४. एक प्रकार का विष। ५ दोहे का वह भेद जिसमें १७ गुरु और १४ लघु मात्राएँ होती हैं। ६ छप्पय का एक भेद।

मर्कटक--पु० [सं० मर्कट+कन्] १ बंदर। २. मकड़ी। ३ एक प्रकार की मछली। ४ मड़आ नामक कदन्न। ५ मकरा नामक घास।

मर्कट-तिंदुक--पु०[सं० मध्य० स०] कुपीलु।

मर्कटपाल--पु०[सं० मर्कट√पाल् (बचाना)+णिच्+अच्] सुग्रीव।

मर्कट-पिप्पली--स्त्री०[सं० ष० त०] अपामार्ग। चिचड़ा।

मर्कट-प्रिय--पु०[सं० ष० त०] खिरनी का पेड़ और उसका फल।

मर्कट-वास--पुं०[सं० ष० त०] मकड़ी का जाला।

मर्कट-शीर्ष--पु०[सं० ष० त०] हिंगुल।

मर्कटी--स्त्री०[सं० मर्कट+ङीप्]१. बंदरी। मादा बन्दर। बँदरिया। २ मकड़ी। ३ केवाँच। कौंछ। ४. अपामार्ग। चिचड़ा। ५ अजमोदा। ६. एक प्रकार का करंज। ७ छंदशास्त्र में ९ प्रत्ययों में से अन्तिम प्रत्यय जिसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का परिज्ञान होता है।

मर्कटेंदु--पु०[सं० मर्कट-इंदु, स० त०] कुचला।

मर्कत--पु०=मरकत।

मर्कर--पु०[सं०√मर्क्+अर्] भृंगराज। भँगरा।

मर्करा--स्त्री०[सं० मर्कर+टाप्]१. सुरंग। २. तहखाना। ३. बरतन। ४ बाँझ स्त्री।

मर्चा--स्त्री०=मिर्च।

मर्ज--पु०=मरज।

मर्जी--स्त्री०=मरजी।

मर्त--पु० [स०√मृ (मरण)+तन्] १. मनुष्य। २ दे० 'मर्त्यलोक'।
मर्तबा--पुं०=मरतवा।
मर्तबान--पु०[दक्षिणी बरमा के मर्तबान नगर के नाम पर] १ चीनी मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोलाकार आवान। २ धातु आदि का बना हुआ कोई ऐसा लम्बा पात्र जिसमे दवाएँ, रासायनिक पदार्थ आदि रखे जाते हैं। ३. एक प्रकार का बढिया केला।
मर्त्य--पु०[सं० मर्त+यत्]१ मनुष्य। २ शरीर। ३ 'दे० मर्त्यलोक'।
मर्त्य-धर्मा (र्मन्)--वि०[ब० स०] मरणशील।
मर्त्यमुख--पु०[ब० स०] [स्त्री० मर्त्यमुखी, मर्त्य-मुख ङीप्] किन्नर।
मर्त्यलोक--पु०[प० त०] यह ससार जिसमे सबको अत मे मरना पडता है।
मर्द--पु०[फा० मि० स० मर्त्त और मर्त्य] १. मनुष्य। प्राणी। २ पौरुष से युक्त और वीर व्यक्ति। ३ पति। स्वामी।
वि० वीर तथा साहसी।
पद--**मर्द आदमी**=वीर पुरुष।
मर्दक--वि०[सं०√मृद् (चूर्ण)+णिच्+ण्वुल्--अक] मर्दन करनेवाला। मर्दनकारक।
मर्दन--पु०[सं०√ मृद्+णिच्+ल्युट्--अन]१ शरीर पर कोई स्निग्ध पदार्थ या ओषधि रगडकर मलने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार किसी चीज को मलना या रगडना कि वह क्षत-विक्षत हो जाय। ३ कुचलना। रौदना। ४ नष्ट-भ्रष्ट करना। ५. कुश्ती के समय एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथो से घस्सा लगाना। ६ रसेश्वर दर्शन के अनुसार अठारह प्रकार के रससस्कारो मे से दूसरा संस्कार। इसमे पारे आदि को ओषधियो के साथ खरल करते या घोटते है। घोटना। ७. पीसना या रगडना।
वि० [स्त्री० मर्दिनी] मर्दन करनेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे--महिष-मर्दिनी।
वि० [स्त्री० मर्दिनी] १ मर्दन करनेवाला। २ नष्टभ्रष्ट करनेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे--मधु मर्दन।
मर्दना*--स०[सं० मर्दन] १ मालिश करना। मलना। २ तोड-मरोडकर नष्ट करना। ३. चूर-चूर करना। ४ अंग-भग करना। खंडित करना।
मर्द-बच्चा--पु०[फा०] बहादुर। वीर।
मर्दबाज--वि०[फा०] पुश्चली (स्त्री)।
मर्दल--पु०[स०√मृद्+घ, मर्द√ला लेना)+क] मृदग की तरह का पुरानी चाल का एक बाजा। आज-कल बँगला मे 'मादल' कहलाता है।
मर्दाना--वि०, पु०=मरदाना।
मर्दानगी--स्त्री०=मरदानगी।
मर्दित--भू० कृ०[सं०√मृद्+णिच्+क्त]१ जिसका मर्दन किया गया हो या हुआ हो। २ तोड़ा-फोडा हुआ। ३ ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।
मर्दी--स्त्री०=मरदी।
मर्दुम--पु०[फा०] मनुष्य।
मर्दुमशुमारी--स्त्री०[फा०] मनुष्य-गणना।
मर्दुमी--स्त्री० [फा०] १ मनुष्यता। २ पौरुष। वीरता। ३ पुसत्व।
मर्दूद--वि० दे० 'मरदूद'।
मर्म--पु० [स०√मृ+मणिन्] १ स्वरूप। २. भेद। रहस्य। ३ सधि-स्थान। ४ किसी बात के अन्दर छिपा हुआ तत्त्व। ५ प्राणियो के शरीर मे वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है और मृत्यु तक की सम्भावना होती है। ६ हृदय।
मर्मग--वि०[स० मर्म√गम्(प्राप्त होना)+ड]नुकीला तथा तीव्र।
मर्मघाती (तिन्)--वि० [सं० मर्म√हन् (मारना)+णिनि न्--त्] मर्म पर आघात करनेवाला।
मर्मघ्न--वि०[मर्म√हन् (मारना)+टक्, ह--घ] अत्यन्त कष्टप्रद।
मर्मचर--पु०[स० मर्म√चर् (प्राप्त होना)+ट] हृदय।
मर्मच्छिद--वि०[स० मर्म√छिद् (छेदना)+क्विप्]दे० 'मर्मच्छेदी'।
मर्मच्छेदक--वि०[स० प० त०] मर्मभेदक। मर्म भेदनेवाला।
मर्मच्छेदन--पु०[सं० प० त०]१ प्राणघातन। जान लेना। २ मर्म-स्थल पर ऐसा आघात करना जिसमे बहुत अधिक कष्ट हो।
मर्मच्छेदी (दिन्)--वि० [स० मर्म√छिद् (छेदना)+णिनि]मर्मभेदी।
मर्मज्ञ--वि० [स० मर्म√ज्ञा+क] किसी बात का मर्म या गूढ रहस्य जाननेवाला।
मर्म-प्रहार--पु०[सं०स० त०] ऐसा आघात या प्रहार जो मर्म स्थान पर हो।
मर्म-भेद--पु० [प० त०]१ मर्मस्थल पर किया जानेवाला आघात। २ दूसरो के भेद या रहस्य का किया जानेवाला उद्घाटन।
मर्म-भेदक--वि०[प० त०]१ मर्म छेदनेवाला। २ हृदय विदारक।
मर्म-भेदन--पु०[प०त०]१ मर्मस्थल पर आघात करना। २ बाण। तीर।
मर्म-भेदी (दिन्)--वि० [स० मर्म√ भिद् (फाडना)+णिनि] १ मर्मस्थल अर्थात् हृदय पर आघात करनेवाला (शब्द या बात)। २. दु खी तथा सतप्त करनेवाला।
मर्मर--पु०[स०√मृ+अरन्,मुट्-आगम] १ पत्तो के हिलने से होनेवाली खडखडाहट। २ ऐसा कलफदार कपडा जिससे मर्मर शब्द निकलता हो।
पुं० दे० 'मर्मर'।
मर्मरित--भू० कृ०[सं० मर्मर+इतच्] मर्मर ध्वनि करता हुआ।
मर्मरी--स्त्री०[सं० मर्मर+ङीप]१ एक तरह का देवदारु। २ हल्दी।
मर्मरीक--पु०[स० मर्मर+ईकन]१ निर्धन व्यक्ति। २ दुष्ट व्यक्ति।
मर्म-वचन--पु०[प०त०] ऐसा कथन, बात या वचन जो मर्म या हृदय पर आघात करनेवाला हो।
मर्म-वाक्य--पु०[प० त०]१ रहस्य की बात। २ दे० 'मर्मवचन'।
मर्मविद्--वि०[स० मर्म√विद् (जानना)+क्विप्]मर्म या तत्त्व जाननेवाला। मर्मज्ञ।
मर्मविदारण--पु०[प० त०] मर्मच्छेदक।
मर्मवेदी (दिन्)--वि० [स०√मर्म√विद् (जानना)+णिनि] मर्मज्ञ।
मर्मवेधी (धिन्)--वि० [स० मर्म√विध् (छेदना)+णिनि] मर्म भेदी।

मर्म-स्थल--पुं०[ष० त०]१. शरीर का कोई ऐसा अंग जिसपर आघात लगने से बहुत अधिक पीडा होती है और जिससे मनुष्य मर भी सकता है। जैसे--अण्डकोश, कंठ, कपाल आदि। २ हृदय, जिसपर किसी की बात का आघात लगता है।

मर्म-स्थान--पुं०[स० त०] मर्म का स्थान अर्थात् मर्म। (देखें)

मर्मस्पर्शी (शिन्)--वि०[स० मर्म√स्पृश्+णिनि] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, भाव० मर्मस्पर्शिता] मर्म को स्पर्श करने अर्थात् उस पर प्रभाव डालनेवाला।

मर्मान्तक--वि०[स० मर्म-अंतक, ष० त०] मर्म तक पहुँचकर उस पर अनिष्ट प्रभाव डालनेवाला। मर्मभेदक।

मर्माघात--पुं०[स० मर्म-,आघात, स० त०] मर्मस्थल पर होनेवाला आघात। हृदय पर लगनेवाली गहरी चोट।

मर्मातिग--वि०[स० मर्म√अति-गम् (जाना) ड] मर्म को छेदनेवाला। मर्म-भेदी।

मर्मान्वेषण--पुं०[स० मर्म-अन्वेषण, ष० त०] भेद या रहस्य जानने के लिए की जानेवाली खोज।

मर्माहत--वि०[स० मर्म-आहत, स० त०] जिसके मर्म अर्थात् हृदय को कडी चोट पहुँची हो।

मर्मिक--वि०[स० मर्म+ठन्--इक] मर्मविद्। मर्मज्ञ।

मर्मी--वि० [स० मर्म] मर्म या रहस्य जाननेवाला।

मर्मोद्घाटन--पुं०[स०मर्म+उद्घाटन,ष०त०] मर्म या रहस्य प्रकट करना।

मर्य--पुं०[स० √मृ (मरण)+यत्]मनुष्य।

मर्या--स्त्री०[स० मर्य+टाप्] सीमा।

मर्याद--स्त्री०[स० मर्या√दा (देना)+क] १ दे० 'मर्य्यादा'। २. रीत-रिवाज। रसम। ३ चाल-ढाल। ४ रग-ढंग। ५ विवाह के उपरान्त होनेवाला 'बढार' नामक भोज।

सुहा०--मर्याद रहना=बरात का विवाह के तीसरे दिन ठहर कर 'बढार' नामक भोज मे सम्मिलित होना।

मर्यादा--स्त्री० [स० मर्याद+टाप्] १ सीमा। हद। २ नदी का किनारा। तट। ३. लोक मे प्रचलित व्यवहार और उसके नियम आदि। ४ सदाचार। ५ गौरव। प्रतिष्ठा। मान। ६ धर्म। ७ दो या अधिक आदमियों मे होनेवाला निश्चय या प्रतिज्ञा। समझौता।

मर्यादाचल--पुं०[स० मर्यादा-अचल, मध्य०स०] सीमा पर स्थित पर्वत। सीमा सूचक पर्वत। सीमान्त पर्वत।

मर्यादाबंध--पुं० [स०ष०त०] १ अधिकारो की रक्षा। २. नजरबन्दी (अपराधियो आदि की)।

वि० जो मर्यादाओ से बँधा हुआ हो।

मर्यादा-मार्ग--पुं०[ष० त०] वेद-विहित कर्मों का आचरण करते हुए ज्ञान-प्राप्ति का प्रयत्न करना।

मर्यादा-वचन--पुं०[स० ष० त०] ऐसा कथन जिसमे अधिकार, कर्तव्य प्रवेश, स्थान आदि की सीमाओ का निर्देश हो।

मर्यादी (दिन्)--वि० [स० मर्य्यादा+इनि,] १ मर्यादा से युक्त। मर्यादावाला। २ सीमित।

मर्री--स्त्री०[हिं० मरना] वह भूमि जो कर्ज लेनेवालो ने सूद के बदले मे महाजन को दी हो।

मर्श--पुं०[स०√मृश् (छूना)+घञ्]१ मनन। २ मत। सम्मति। राय।

मर्शन--पुं० [स०√मृश्+ल्युट्--अन,] १ विचार करना। २ सलाह देना। ३ रगडना।

मर्ष--पुं०[सं०√मृष् (सहन करना)+घञ्] १ क्षमा। शान्ति। २ धैर्य। ३. सहनशीलता।

मर्षण--पुं० [स०√मृष्+ल्युट्--अन] १. क्षमा करना। माफी। २ रगडना। मर्षण।

वि० १ ध्वस या नाश करनेवाला। २. दूर करने, रोकने या हटानेवाला। (यौ० के अन्त मे)

मर्षणीय--वि० [स०√मृष+अनीयर्] जिसका मर्षण हो सके; या मर्षण करना उचित हो। मर्षण के योग्य।

मर्षित--भू० कृ० [स०√मृष् (क्षमा करना)+क्त] १ सहा हुआ। २ क्षमा किया हुआ।

मर्हूम--वि०[अ०] जो मर गया हो। दिवगत। स्वर्गीय।

मलग--पुं०[फा०]१ निश्चिंत तथा मस्त रहनेवाले एक तरह के मुसलमान फकीरो की सज्ञा। २ निश्चिंत तथा मस्त रहनेवाला व्यक्ति।

वि०१. मन-मौजी। २ निश्चिंत। ३ ला-परवाह।

पुं०[देश०] पीले रग की चोचवाला बगला।

मलंगा--पुं० १ दे० 'मलग'। २ दे० 'तूतमलंगा'।

वि०=मलग।

मलंगी--पुं० [फा० मलग] नमक बनाने का काम करनेवाला मजदूर।

मल--पुं०[स०√मल्+अच्]१ मैल। कीट। जैसे--धातुओ का मल। २ शरीर से निकलनेवाली मैल या विकार। जैसे--कफ, पसीना, विष्ठा आदि। ३ गुह। विष्ठा। ४ दोष। विकार। ५ पाप।

वि०१ गदा। मलीन। २. दुष्ट।

अव्य० हाथियों को उठाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। (महावत)

मलकना--अ०[अनु०]१ हिलना-डोलना। २ मटकना। ३ इतराना। ४ चमकना।

†स०=मलकाना।

मलकरन--पुं०[देश०] बरतनो पर रेखाएँ खीचने का एक उपकरण।

मलका--स्त्री०[अ० मल्कि]१ महारानी। २. रानी। ३ बहुत ही सुन्दर स्त्री।

मलकाछ--पुं०[हिं०मल्ल+काछ] देवताओ के श्रृंगार के लिए एक प्रकार की कछनी जिसमे तीन झब्बे लगे होते हैं।

मलकाना--स०[अनु०]१ हिलाना-डुलाना। जैसे--आँख मलकाना। २ बहुत ठमक ठमककर या रुक रुककर बातें करना।

†अ०=इतराना।

पुं० [अ० मलिक] मुसलमानो की एक जाति। (पहले ये लोग राजपूत थे)।

मलकीट--पुं०[स० ष० त०]१ बहुत ही गन्दी चीजो या जगहो मे रहनेवाला कीडा। ३ बहुत ही घृणित और नीच आदमी।

मलकुल मौत--पुं०=मल्कुल मौत।

मलकूत--पुं०[अ०] [वि० मलकूती]१ इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार

ऊपर के नौ लोकों मे से दूसरा लोक। २ फरिश्तों के रहने का लोक। देवलोक।

मलखभ--पु०=माल-खभ।

मलखम--पु०[स० मल्ल+हिं० खभा]१ पुरानी चाल के कोल्हू मे लकडी का एक खूँटा जो कातर या पाट मे कोल्हू से दूसरी छोर पर गाडा जाता है। २ दे० 'माल-खभ'।

मलखाना--पु०[स० मल्ल+सेन] आल्हा-ऊदल का चचेरा भाई।
पु० दे० 'मलकाना'।
वि०[स० मल+हिं० खाना]१ मल अर्थात् विष्ठा खानेवाला। २ बहुत ही गन्दा और मलिन (व्यक्ति)।

मलखानी--स्त्री०[हिं०मलखम] वह ऊँचा और सीधा पतला खभा जिस पर बेत से मालखम की कसरत की जाती है।

मलगजा --वि०[हिं० मलना+मीजना]१ मला-दला हुआ। मरगजा। २ मैला-कुचैला। ३ किसी की तुलना मे मद और हीन। उदा०--सबैं मरगजे मुँह करी, इहीं मरगजे चीर।--विहारी।
पु०बेसन मे लपेटकर तेल या घी मे तला हुआ बैंगन का पतला टुकडा या फाँक।

मलगिरी--पु०[हिं० मलयागिरि] एक प्रकार का हल्का कत्थई रग। चन्दन की तरह का रग।
वि० उक्त प्रकार के रग का।

मलगोवा--पु०[नु० मलगोवा]१ गीली चीजे। २ एक प्रकार की पकी हुई दाल जिसमे दही भी मिला होता है। ३ पीव। मवाद। ४ कूडा-करकट। ५ गदगीपन।

मलघन--पु० [स० मलघ्न] एक प्रकार का कचनार, जो लता के रूप मे होता है।

मलघ्ना--वि०[स० मल√हन्(मारना)+टक्, कुत्व][स्त्री० मलघ्नी] मलनाशक।
पु०१ एक प्रकार का कचनार। २ सेमल का मुसला।

मलघ्नी--स्त्री०[स० मलघ्न+ङीप्] नागदौना।

मलज--पु०[स० मल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] पीव। मवाद।

मल-ज्वर-पु० [स० मध्य० स०] मल के रुकने के कारण होनेवाला ज्वर।

मलझन--पु० [देश०] एक प्रकार की बेल जो बागो मे लगाई जाती है।

मलट--पु०[अ० मैलेट] लकडी का हथौडा।

मलता --वि० [हिं० मलना] [स्त्री० मलती]१ मला या घिसा हुआ (सिक्का)। जैसे--मलता पैसा या रुपया। २ जो मले-दले जाने के कारण खराब हो गया हो। उदा०--मैला मलता इह ससारा।--कबीर।

मलद--पु०[स०]वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक प्रदेश जहाँ ताडका रहती थी।

मल-दूषित--वि०[स० तृ० त०] मलिन। मैला।

मलद्रावी (विन्)--वि० [मल√द्रु (सचालन करना)+णिच्+णिनि, वृद्धि, दीर्घ, नलोप] मल को द्रवित करने या गलानेवाला।
पु० जमालगोटा।

मल-द्वार--पु०[म०प०त०]१ शरीर की वे इन्द्रियाँ जिनमे मल निकलते है। २ गुदा। गाँड।

मल-धात्री--स्त्री०[स० प० त०]बच्चों का मल-मूत्र धोनेवाली धाय।

मलधारी (रिन्)--पु० [स० मल√धृ (धारण करना)+णिनि] एक प्रकार के जैन साधु जो शौच के उपरान्त जल से गुदा नही धोते।

मलना--स०[म० मर्दन] १ कोई पदार्थ किसी अन्य पदार्थ पर पोतने या लगाने के उद्देश्य से उस पर बार बार कुछ जोर से रगडना। जैसे--(क) कपडे पर साबुन मलना। (ख) शरीर पर तेल मलना। २ लेप करना। ३ इस प्रकार रगडते हुए दबाना कि चूर चूर हो जाय। जैसे--मुरती मलना। ४ खुजलाने आदि के उद्देश्य से हाथ फेरना। जैसे--आँखें मलना। ५. एक चीज को दूसरी चीज पर बार बार आगे पीछे या इधर-उधर रगडते हुए ले जाना। जैसे--हाथ मलना (पश्चात्ताप आदि के समय)। ६ उमेठना। मरोडना। जैसे--किसी का कान मलना।

मलनी--स्त्री०[हिं० मलना] आठ दस अगुल लबा, दो अगुल चौडा सुडौल और चिकना बाँस का वह टुकडा जिससे कुम्हार बरतनो की फालतू मिट्टी काटकर निकालते है।

मलपकी (किन्)--वि० [स० मलपक, ष० त०+इनि] १ मलिन। मैला। २ कीचड आदि से सना हुआ।

मलपट--पु०[स० मल+हिं० पट=चित्र] १ चित्र-कला मे, ऐसा चित्र जिसमे केवल चेहरा दिखाया गया हो, शरीर के और अग न दिखाये गये हों। २ दे० 'मल-पट्ट'।

मलपट्ट--पु० [स० ष० त०]१ किसी चीज को धूल से बचाने के लिए उस पर चढाया जानेवाल कपडा, कागज या ऐसी ही और कोई चीज। २ दे० 'मल-पट्ट'।

मल-पतग--पु०[ष० त०] एक प्रकार का छोटा कीडा जो वर्षा ऋतु के आरंभ मे उत्पन्न होता और प्राय मल के छोटे छोटे टुकडे इधर-उधर लुढकाता फिरता है।

मल-परीक्षा--स्त्री०[स० ष० त०] रोगी के मल (गुह) की वह वैज्ञानिक परीक्षा या विश्लेषण जिससे यह पता चलता है कि उसके शरीर मे किस किस रोग के कीटाणु है। (स्टूल एग्जामिनेशन)

मलपू--पु०[स० मल√पू (पवित्र करना)+क्विप्] जंगली गूलर। कठूमर।

मल-पृष्ठ--पु०[मध्य० स०] प्राचीन भारत मे, पुस्तक का ऊपरी तथा पहला पृष्ठ, जो जल्दी मैला हो जाता था।

मलबा--पु०[हिं० मल?]१ गिरे हुए मकान की टूटी-फूटी ईंटें, मिट्टी, मसाला आदि जो फेंकवाया जाता है। २ भूगोल विज्ञान मे, चट्टानों की सतह पर से टूट-फूटकर गिरे हुए ककडो का समूह। विखड राशि। (डेट्रिटस) ३ कूडा करकट।
पु० एक तरह का वृक्ष।

मलभुज्--पु० [स० मल√भुज् (खाना) +क्विप्, कुत्व] कौआ।
वि० मलखानेवाला।

मलभेदिनी--स्त्री० [स० मल√भिद् (पृथक् करना)+णिनि,+ङीप्] कुटकी।

मलमल—स्त्री० [स० मलमल्लक] एक तरह का बढ़िया महीन सूती कपड़ा।

मलमला—पु०[देश०] कुल्फे का साग।

वि०१ बहुत ही कोमल। २. उदास या खिन्न।

†पु० दे० 'मलोला'।

मलमलाना—स०[हिं० मलना] [भाव० मलमलाहट] १ बार बार हलका स्पर्श करना। धीरे धीरे मलना। २. (आँख या पलक) बार बार खोलना और बन्द करना। ३. बार बार गले लगाना या आलिंगन करना। ४ (मन में) पश्चात्ताप करना। पछताना।

मलमलाहट—स्त्री० [हिं० मलमला] १ मलमले होने की अवस्था या भाव। २ उदासी। खिन्नता। ३ पश्चात्ताप। पछतावा।

मलमा—पु० १.=मलबा। २ =मुलम्मा।

मल-मास—पु०[स० कर्म० स०]१ वह अमान मास जिसमें संक्रान्ति न पड़ती हो। दो संक्रान्तियों के बीच में पड़नेवाला चान्द्रमास।

विशेष—चान्द्रगणना के अनुसार प्राय तीसरे या चौथे वर्ष बारह की जगह तेरह महीने भी होते है। यही तेरहवाँ महीना (जो वर्ष के बीच मे पड़ता है) अधिमास, अधिक मास, मलमास या पुरुषोत्तम कहलाता है। इस मास मे कोई शुभ काम करने का विधान नहीं है।

२ क्षयमास।

मलय--पु० [स०√मल्+कयन्]१ दक्षिणी भारत का एक प्रसिद्ध पर्वत जो पुराणों में सात कुलपर्वतों में गिनाया गया है। २ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश जो आज-कल मलाबार कहलाता है। ३ उक्त देश का निवासी। ४ उक्त प्रदेश मे होनेवाला सफेद चन्दन। ५ नन्दन कानन। ६. पुराणानुसार एक उपद्वीप। ७. गरुड का एक पुत्र। पहाड़ का कोई पार्श्व या प्रदेश। शैलाग्र। ९ छप्पय छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में २५ गुरु, १०२ लघु, कुल १२७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा २५ गुरु, ९८ लघु, कुल १२३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती है।

मलय-गिरि--पु०[स० मध्य० स०]१. मलय नामक पर्वत जो दक्षिण मे है। २. उक्त पर्वत पर होनेवाला चन्दन। ३ असम मे कामरूप के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। ४. दारचीनी की तरह का एक वृक्ष। ५ भूरापन लिये लाल रग।

वि० भूरापन लिए हुए लाल रग का।

मलयज—पु०[स० मलय√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. चदन। २ राहु नामक ग्रह।

वि० मलय पर्वत मे उत्पन्न होनेवाला।

मलय-द्रुम—पु०[मध्य० स०] १ चन्दन। २. मदन या मैनी नाम का पेड़।

मलय-मारुत--पु० [स० मध्य० स०] १ संगीत मे कर्नाट की पद्धति का एक राग। २. मलय समीर।

मलय-वासिनी—स्त्री०[स०मलय√वस् (निवास करना)+णिनि,+ङीप्] दुर्गा।

मलय-समीर--पुं० [मध्य स०] १ मलय पर्वत की ओर से आनेवाली हवा जिसमे चन्दन की सुगंध मिली होती है। २ अच्छी और बढ़िया हवा।

मलया—स्त्री०[स० मलय+टाप्] १ त्रिवृता। निसोथ। २. सोमराजी। बकुची।

मलयागिरि--पु०=मलयगिरि।

मलयाचल--पु०[मलय-अचल, कर्म० स०] मलय पर्वत।

मलयानिल—पु० [मलय-अनिल, कर्म० स०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। दक्षिण की वायु। ३. शीतल और सुगंधित वायु। ३ वसंत ऋतु की वायु।

मलयालम--पु० [ता० मलय=पर्वत+अलम=उपत्यका] आधुनिक केरल राज्य का एक प्रदेश।

स्त्री० उक्त प्रदेश की भाषा।

मलयालि—पु०[ता० मलयालम] मलयालम में बसनेवाली एक पहाड़ी जाति का नाम।

मलयाली—वि०[ता० मलयालम] १. मलाबार देश का। मलाबार देश सम्बन्धी। २. मलाबार में उत्पन्न।

पु० मलाबार का निवासी।

स्त्री० मलाबार की भाषा।

मलयुग—दे० [कर्म० स० या ष० त०] कलियुग।

मलयेशिया—पु०[मलया+एशिया] दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक नवीन संघ राज्य जिसके अन्तर्गत मलाया, सारवाक, बोर्नियो और सिंगापुर है। इसकी स्थापना १६ दिसंबर १९६३ को हुई थी।

मलयोद्भव—पु०[सं० मलय-उद्भव, ब० स०] चदन।

मलराना*—स०[हिं० मल्हारना] चुमकारना। पुचकारना। मल्हराना। उदा०—कोऊ दुलरावै, मलरावै, हलरावै कोउ चुटकी बजावै, कोऊ देति करतारै हैं।—पद्माकर।

मल-रुचि—वि०[स० ब० स०]१. दूषित रुचिवाला। २. पापी।

मल-रोधक—वि०[स०ष० त०] जो पेट के अन्दर के मल को रोके। कब्जियत करनेवाला। काबिज।

मल-रोधन—पु०[स०ष० त०] पेट या आँतों में मल रुकना। कोष्ठबद्धता। कब्जियत।

मलवा—वि० [?] स्वाद रहित और अरुचि उत्पन्न करनेवाला।

मलवाना—स०[हिं० मलना का प्रे०] [भाव० मलवाई] मलने का काम दूसरे से कराना। मलने मे किसी को प्रवृत्त करना।

मल-वासा—स्त्री०[ब० स०] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

मल-विनाशिनी—स्त्री०[सं० ष० त०]१ शंखपुष्पी। २ क्षार।

मल-विसर्जन—पु०[ष० त०] पाखाना फिरना। हगना।

मल-वेग—स्त्री०[स० ष० त०] अतीसार।

मल-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] पेट या आँतो मे रुके हुए मल का गुदा के रास्ते बाहर निकल आना।

मलसा—पु०[सं० मल्लक] घी रखने का एक तरह का बड़ा कुप्पा।

मलहंता (हंतृ)—पुं० [ष० त०] सेमल का मूसल।

मलहम—पुं०[अ० मर्हम] घाव पर लगाने के लिए औषध का लेप। मरहम।

मलहर—पुं०[स० ष० त०] जमालगोटा।

मलहारक—पु०[स० ष० त०] भंगी। मेहतर।

मला—स्त्री०[सं० मल+अच्+टाप्]१ चमड़ा। २. चमड़े से बना हुआ पदार्थ। ३. कासा नामक धातु। ४ भू-आँवला। ५ बिच्छू का डक। ६ आँवा हल्दी।

मलाई—स्त्री०[हिं० मलना]१ मलने की क्रिया या भाव। २ मलने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
स्त्री०[देश०]१ वह गाढा चिकना अश जो दूध उबालने पर उसके ऊपर जमने और तैरने लगता है। दूध की साढी।
क्रि० प्र०—आना।—जमना।—पडना।
२. किसी चीज का उत्तम सार भाग।
पु० दूध की मलाई या साढी की तरह का सफेद रग जिसमे कुछ हलकी वादामीयत भी रहती है।

मलाकर्षी (र्षिन्)—पु० [स० मल+आ√कृष् (घसीटना) +णिनि दीर्घ, नलोप] [स्त्री० मलाकर्षिणी] भगी। मेहतर।

मलाका—स्त्री०[स० अमल√अक् (जाना)+अच्+टाप्] १. कामिनी। स्त्री। २ रडी। वेश्या। ३ दूती। ४ मादा हाथी। हथिनी।

मलाट—पु०[स०मलपट्ट]एक प्रकार का मोटा तथा मजवूत कागज जिसमे छापे, लिखाई आदि के काम आनेवाले कागजो के दस्ते या रीम लपेटे जाते है।

मलान*—वि०=म्लान।

मलानि*—स्त्री० =म्लानि।

मलापह—वि०[स० मल+अप√हन् (मारना)+ड] [स्त्री०मलापहा] १ मलनाशक। २ पापनाशक।

मलापोह—पु०[स०]मल या पाखाना कही से हटाकर दूर फेकने का काम।

मलाबार—पु० [स० मलय+वार=किनारा] आधुनिक केरल राज्य का एक प्रदेश।

मलावारी—वि०[हिं० मलावार] मलावार-सम्वन्धी।
पु० मलावार का निवासी।

मलामत—स्त्री०[अ०]१ किसी के कोई वुरा कार्य करने पर की जानेवाली उसकी निन्दा या भर्त्सना।
पद—लानत-मलामत।
२ झिडकी। डाँट। ३ मल। गदगी।
क्रि० प्र०—निकलना।

मलामती—वि०[फा०]१. जिसकी मलामत की गई हो। २. जो मलामत किये जाने के योग्य हो। दुतकारे या फटकारे जाने का पात्र।

मलायतन—वि०=मलिन।

मलायन—वि०=मलिन।

मलाया—पु०[स० मलय] वर्मा के दक्षिण मे स्थित एक द्वीप।

मलार—पु० [स०मल्लार] सगीत शास्त्रानुसार एक प्रसिद्ध राग जो वर्षा ऋतु मे सायकाल अथवा रात के समय गाया जाता है।
मुहा०—मलार गाना=बहुत निश्चिन्त और प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेपत गाना। जैसे—आप दिन भर वैठे मलार गाया करते है।

मलारि—पु०[स० मलअरि, प० त०] क्षार।

मलारी—स्त्री०[स०मल्लारी] वसत राग की एक रागिनी। (सगीत)

मलाल—पु०[अ०] १ मन मे होनेवाला दु ख। रज।
मुहा०—(दिल का) मलाल निकालना=कुछ कह-सुनकर अथवा वक-झक कर मन मे दवा हुआ दु ख कम करना।
२ पश्चात्ताप। ३ उदासीनता।

मलावरोध—पु०[स० मल-अवरोध,ष०त०]१ मल का रुकना। २ पेट से मल का ठीक तरह से नही,वल्कि वहुत रुक-रुककर निकलने का रोग। कब्जियत।

मलावह—पु०[स० मल-आ√वह (ढोना)+अच्] कुछ विशिष्ट प्रकार के पापो का समाहार। (मनु०)

मलाशय—पु०[स०मल-आशय, प०त०] शरीर मे अतडियो के नीचे का वह भाग जिसमे शौच के समय वाहर निकलने से पहले मल या गुह एकत्र होता है। (रेक्टम्)

मलाह*—पु०=मल्लाह।

मलाहत—स्त्री०[अ०] २ सलोनापन। लावण्य। सौदर्य। २ कोमलता।

मलिंग—पु०[स० मलिंद] भौंरा।

मलिक—पु०[अ०] [स्त्री० मलिका]१ राजा। अधीश्वर। ३ मुसलमानो की एक जाति। ४ पंजाव मे रहनेवाली हिन्दुओ की एक जाति।

मलिका—स्त्री०[अ० मलिक']१ मलका। महारानी। २ अधीश्वरी।
†स्त्री०=मल्लिका।

मलिकान†—पु०[हिं० मालिक]१ नौकर की दृष्टि से उसके मालिक का घर। २ मालिक के घर के लोग।

मलिक्ष*—पु० =म्लेच्छ।

मलिच्छ*—पु०=म्लेच्छ।

मलित—पु०[देश०] सोनारो की एक छोटी कूँची।

मलिन—वि०[स० √मल्+इनच्] [स्त्री० मलिना, मलिनी] [भाव० मलिनता] १ मल से युक्त। २ मैला-कुचैला। गदा। ३ खराव। वुरा। ४ धूएँ या मिट्टी के रग का। मट-मैला। ५ दुष्कर्म या पाप करनेवाला। पापी। ६ (ज्योति या प्रकाश) जिसमे उज्ज्वलता कम हो। धीमा। मद। मद्धिम। ७ उदास। म्लान।
पु० १ एक प्रकार के साधु जो मैले-कुचैले कपडे पहनते है। पाशुपत। २ तक्र। मठा। ३ सोहागा। ४ अगर। चन्दन। ५ गौ का ताजा दूध। ६ हंस। ७ उपकरणो आदि का दस्ता। मूठ। हत्था। ८ दोप। ९ पाप। १० रत्नो की चमक और रग का फीका और धुँधला होना जो उनका दोप माना जाता है।

मलिनता—स्त्री०[स० मलिन+तल्+टाप्] मलिन होने की अवस्था या भाव।

मलिनत्व—पु०[स० मलिन+त्व] मलिनता।

मलिन-मुख—पु०[स० व० स०] १ अग्नि। २ वैल की दुम या पूछ। प्रेत।
वि० १ जिसका मुख अर्थात् चेहरा मलिन या उदास हो। २ क्रूर। निर्दय। ३ खल। दुष्ट।

मलिनांवु—पु०[स० मलिन-अवु, कर्म० स०] स्याही।

मलिना—स्त्री० [स० मलिन+टाप्] १ रजस्वला स्त्री। २ लाल शक्कर। ३ छोटी भटकटैया।

मलिनाई†—स्त्री०=मलिनता।

मलिनाना*—अ०[हिं० मलिन] १ मलिन या मैला होना। २ म्लान या उदास होना।
स० १ मैला या मलिन करना। २ म्लान या उदास करना।

मलिनावास--पु०[सं० मलिन-आवास, ष० त०] मजदूरों या गरीबों की गंदी बस्तियाँ। (स्लम)

मलिनिया--स्त्री०=मालिन (माली की स्त्री)।

मलिनी--स्त्री०[सं० मल+इनि+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

मलिनीकरण--पु० [सं० मलिन+च्वि, ईत्व, दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट्--अन]१. मलिन करने की क्रिया या भाव। २. पापों की एक कोटि का नाम। मलावह।

मलिम्लुच--पु०[सं० मलिन्√म्लुच् (प्राप्त होना)+क] १ मलमास। २ अग्नि। आग। ३ चोर। ४ वायु। हवा। ५ वह जो पंचयज्ञ न करता हो।

मलिया--स्त्री०[सं० मल्लक या मल्लिका; हि० मरिया] १. तंग मुँह का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन जिसमें घी, दूध, दही आदि पदार्थ रखे जाते हैं। २. गोटी के खेल में वह चौकोर या तिकोना चक्र जो गोटियाँ रखने के लिए बनाया जाता है।

पद—मलिया मेट। (देखें)

३ घेरा। चक्कर।

मुहा०—मलिया बाँधना=रस्सी को मोड़कर बाँधना। (लश०)

मलिया-मेट--पु०[हि० मलिया+मिटाना] उसी तरह का किया जाने-वाला लोप या विनाश जैसा कि लड़के मलिया बनाने के बाद उसे मिटाकर करते हैं। पूरी तरह से किया जानेवाला नाश। सर्वनाश।

मलिष्ठ--वि०[सं० मल+इष्ठन्] अत्यन्त मलिन।

मलिष्ठा--स्त्री०[सं० मलिष्ठ+टाप्] रजस्वला स्त्री।

मलीदा--वि०[फा० मालीद] मला हुआ। मर्दित।

पु० १ रोटी या पकवान का चूर चूर करके और अच्छी तरह मलकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो चूरमे की तरह होता है। २ गुड़ में मला हुआ आटा जो प्राय हाथियों को खिलाया जाता है। ३ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो बहुत मुलायम और गरम होता है।

मलीन--वि०[सं० मलिन]१. मैला। २. खिन्न या दुःखी होने के कारण उदास।

मलीनता--स्त्री ०=मलिनता।

मलीह--वि०[अ०]१ नमकीन। २ सलोना।

मलू--स्त्री०[सं० मालु]१ मलयन नामक कचनार। २ उक्त की छाल जो बहुत कड़ी होती है और ऊन रंगने के काम आती है।

मलूक--पु०[?]१ एक प्रकार का कीड़ा। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ बौद्ध शास्त्रों में एक बहुत बड़ी संख्या की संज्ञा। ४ दे० 'अमलूक'।

वि०[?] मनोहर। सुन्दर।

मलूल--वि०[अ०]१ खिन्न। दुःखी। २ उदास।

मलूहा--पु०[?] संगीत में, एक प्रकार का राग।

मलूहा केदार--पु०[मलूहा+सं० केदार]संगीत में बिलावल ठाठ का एक राग।

मलेक्ष†--पु०=म्लेच्छ।

मलेच्छ†--पु०=म्लेच्छ।

मलेपंज--पु०[देश०] बूढ़ा घोड़ा।

मलेरिया--पु०[अ०] एक तरह का ज्वर जो मच्छरों के काटने से उत्पन्न होता है। जूड़ी बुखार।

मलेशिया--पु०[अ० मिलिशिया] १. एक प्रकार का कपड़ा जो विगत महायुद्ध में प्रचलित हुआ था। २ दे० 'मलयेशिया'।

मलै†--पु०=मलय।

मलोत्सर्ग--पु०[सं० मल-उत्सर्ग, ष० त०] मलत्याग। हगना।

मलोलना--अ०[हि० मलोला] मन में किसी काम या बात के लिए दुःखी होना या पछताना। उदा०—जानि पैंगी टेक टरैं कौन धौं मलोलि है।--घनानंद।

मलोला--पु०[अ० मलाल या मकूल]१. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।

मुहा०—मलोला या मलोले आना=रह रहकर दुःख या पश्चात्ताप होना। मलोले खाना=मन ही मन कष्ट सहना। (मन) के मलोले निकालना=कुछ कह-सुनकर मन का कष्ट या व्यथा कम या दूर करना।

२ मन में दबी हुई ऐसी कामना जो रह रहकर विकल करती हो। अरमान।

क्रि० प्र०—आना।--उठना।—निकलना।--निकालना।

मल्कुल-मौत--पु०[अ०] वह देवदूत जो जीवों के प्राण लेता है।

मल्ल--पु०[सं० मल्ल+अच्] १ एक प्राचीन प्रसिद्ध जाति।

विशेष—इस जाति के लोग द्वन्द्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे, इसी लिए द्वन्द्व युद्ध का नाम मल्लयुद्ध और कुश्ती लड़नेवालों का नाम मल्ल पड़ा है।

२. पहलवान। ३ एक संकर जाति। ४ एक प्राचीन जनपद।

मल्लक--पु०[सं० मल्ल+कन्] १ दान। २ दीवट। ३ दीया। दीआ। ४ पात्र। बरतन। ५ नारियल की खोपड़ी का बना हुआ प्याला।

मल्ल-क्रीड़ा--स्त्री०[सं० ष० त०] मल्लयुद्ध। कुश्ती।

मल्लगर्भ†--पु०=मालखंभ।

मल्लज--पु० [सं० मल्ल√जन्+ड] काली मिर्च।

मल्ल-तरु--पु०[सं० मध्य० स०] चिरौंजी।

मल्ल-ताल--पु०[सं० मध्य० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें पहले चार लघु और तब दो द्रुत मात्राएँ होती हैं।

मल्ल-नाग--पु०[सं० उपमि० स०]१. ऐरावत। २ कामसूत्र के रच-यिता वात्स्यायन का एक नाम।

मल्ल-भूमि--स्त्री० [सं० ष० त०]१ मल्ल नामक देश। २ कुश्ती लड़ने का स्थान। अखाड़ा।

मल्ल-युद्ध--पु० [सं० ष० त०] मल्लों का युद्ध। कुश्ती।

मल्ल-विद्या--स्त्री० [सं० ष० त०] कुश्ती के दाँव-पेंच।

मल्ल-शाला--स्त्री०[सं० ष० त०] मल्लभूमि। अखाड़ा।

मल्ला--स्त्री० [सं० मल्ल+टाप्] १ स्त्री। २ मल्लिका। चमेली। ३ पत्र-वल्ली नाम की लता।

पु०[देश०]१ करघे में के हत्थे का ऊपरी भाग जिसे पकड़कर हत्था चलाया जाता है। २ एक प्रकार का लाल रंग जो कपड़े को लाल या गुलाबी रंग के माठ में बचे हुए रंग में डुबाने से आता है।

मल्लार--पु० [सं० मल्ल√ऋ (प्राप्त होना)+अण्]वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रसिद्ध राग। मलार।

मल्लारि--पु०[सं० मल्ल-अरि, ष० त०]१ कृष्ण। २ शिव।

स्त्री०=मल्लारी।

मल्लारी--स्त्री० [सं० मल्लार+ङीप्] वर्षाऋतु में सवेरे के समय गाई जानेवाली एक रागिनी।

मल्लाह—पु०[अ०] [स्त्री० मल्लाहिन, भाव० मल्लाही] वह जो नदी मे नाव खेकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। केवट। माँझी।

मल्लाही—वि०[फा०] मल्लाह-सम्बन्धी। मल्लाह का।
स्त्री० १ मल्लाह होने की अवस्था या भाव। २ मल्लाह का कार्य, पेशा और पद। ३ तैरने के समय दोनों हाथ चलाने का एक विशेष ढग। ४ उक्त ढंग से की जानेवाली तैराई। ५ मल्लाहों की तरह की गदी और भद्दी गालियाँ। उदा०—उन्होंने घूर घर कर लडकियों को मल्लाही सुनाना शुरू किया।—अजीम बेग चगताई।
क्रि० प्र०—सुनाना।

मल्लि—पु०[स०√मल्ल+इन] जैनों के एक जिन।
स्त्री०=मल्लिका।

मल्लिक—पु०[स० मल्लि+कन्] १. एक प्रकार का हस जिसकी चोच तथा टाँगें भूरे रग की होती हैं। २ जुलाहों की ढरकी। ३. माघ मास।
†पु०=मलिक।

मल्लिका—स्त्री०[स० मल्लिक+टाप्] १ चमेली। २ एक प्रकार का बेला। ३ आठ अक्षरों का एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक एक रगण, जगण, गुरु और लघु होता है। ४ सुमुखी वृत्ति का एक नाम।

मल्लिकाक्ष—पु०[सं० मल्लिका-अक्षि, ब० स०, षच्]१ एक प्रकार का घोडा जिसकी आँख पर सफेद धब्बे होते हैं। २. उक्त प्रकार का सफेद धब्बा। ३. एक प्रकार का हस। मल्लिक।

मल्लिकार्जुन—पु० [स०] एक शिवलिंग जो श्रीशैल पर प्रतिष्ठित है।

मल्लि-गधि—पु० [स० ब० स०, इत्व] अगर।

मल्लि-नाथ—पु० [स०] १ जैनियों के उन्नीसवे तीर्थंकर का नाम। २ ई० १४वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध टीकाकार। रघुवश, कुमार-समव मेघदूत, नैषधचरित् आदि अनेक ग्रंथों पर इन्होंने टीकाएँ लिखी थीं।

मल्ली—स्त्री० [स० मल्लि+ङीप्] २ मल्लिका। २ सुन्दरी नामक वृत्त का दूसरा नाम।

मल्लु—पु० [स०√मल्ल् (धारण करना)+उ, बा०] १ भालू। २ बन्दर।

मल्हनी—स्त्री० [हिं० देश०] एक तरह की नाव।

मल्हपत†—स्त्री० [हिं० मल्हपना] इठलाते हुए और नखरे से धीमे-धीमे चलने की क्रिया या भाव।

मल्हपना—अ० [?] कुछ कहते हुए और इठलाते हुए चलना।

मल्हरना—अ०=मल्हाना।

मल्हा—स्त्री० [देश०]वृक्षों पर चढनेवाली एक बेल जो उन्हें बहुत अधिक हानि पहुँचाती है। मौला।

मल्हाना—स०=मल्हारना।

मल्हार—पु० [हिं० मल्हारना] १ मल्हारने की क्रिया या भाव। २ लाड-प्यार। दुलार।
†पु०=मलार।

मल्हारना—स० [स० मल्ह=गोस्तन] [भाव० मल्हार] १. दुलार करते हुए किसी को विशेषत. बच्चों को कुछ समझाना या प्रेरित करना। २. चुमकारना।

मल्हूं†—वि०=मल्लू।

मवक्किल—पु० [अ० मुवक्किल] १ वह व्यक्ति जो वकील को अपना मुकदमा लड़ने के लिए सौंपता है। वकील का आसामी। २ वह जो अपना कार्य किसी को सौंपता हो।

मवन†—पु०=मौन। उदा०—मेटिये भगवत व्यथा, हँसि भेंटिये तजि मवन।—भगवत रसिक।

मवरिख़—वि० [अ० मवरिख़] लिखित।

मवस्सर†—वि०=मयस्सर।

मवाजिब—पु० [अ० मुवज्जब का बहु रूप] १. उचित रूप से प्राप्य धन। २ वेतन।

मवाजी—वि०[अ० मुवाजी] १ बराबर। २. बराबरी का।

मवाद—पु०[अ०] १. सामग्री। सामान। मसाला। २ प्रमाण। ३ घाव मे से निकलनेवाली पीव।

मवारि—स्त्री०[स० मुकुल] मौर।

मवाली—पु० [?] १. दक्षिण भारत की एक अर्ध सभ्य जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

मवासी—पु०=मवेशी।

मशकूक—वि०[अ०] जिस पर शक किया गया या किया जा रहा हो। सदिग्ध।

मवास—पु० [?] १. आश्रय। शरण। २ कुछ समय के लिए कहीं ठहरना। टिकाना। बसेरा। उदा०—कुच पतग गिरिवर गह्यो मीना मैन मवास।—विहारी। ३ किला। दुर्ग। ४. किले के परकोटे आदि पर लगे हुए बाँस, पेड आदि।

मवासी—स्त्री० [हिं० मवास का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा गढ।
मुहा०—मवासी तोड़ना=(क) किला तोडना तथा उस पर अधिकार करना। (ख) विजय प्राप्त करना।
पु० [हिं० मवास+ई (प्रत्य०)] गढपति।
वि० मवास-सबधी। किले का।

मवेशी—पु० [अ० मवाशी] चौपाये, विशेषत गाय, बैल, आदि चौपाये जिन्हें मनुष्य पालता है।
पद—मवेशी-खाना=वह स्थान विशेषत घेरा जहाँ पालतू चौपाये रखे जाते हैं।

मश—पु० [स०√मश् (गुन-गुन शब्द करना)+अच्] १ वह जो मश् मश् करता हो। मच्छड। २ क्रोध।

मशक—पु० [स० मश+कन्] १ मच्छर। २ शरीर पर निकलनेवाला मसा। ३ शकद्वीप का एक प्रदेश।
स्त्री० बकरी आदि की खाल का बना हुआ पानी भरने का थैला।
स्त्री०=मश्क।

मशक-कुटी—स्त्री० [स० ष० त०] वह छोटा चौरा जिससे मच्छड़ हाँके जाते है।

मशकहरी—स्त्री० [स० मशक√हृ (हरण करना)+अच्, गुण,+ङीप्] मसहरी।

मशकी (किन्)—पु० [स० मशक+इनि] गूलर का पेड़।

मसान का। २ मसानो मे अथवा उनकी सहायता से सिद्ध किया हुआ।
पु० १. वह व्यक्ति विशेषत डोम जो मसानों मे रहता हो। २. मसान मे रहकर भूत-प्रेत सिद्ध करनेवाला तांत्रिक। ३ अर्थ-पिशाची। कंजूस।

मसानी—स्त्री० [स० श्मशानी] डाकिनी। पिशाचिनी।

मसार—पु० [स०] नीलम। इद्रनीलमणि।

मसाल—स्त्री० १=मशाल। २=मिसाल।

मसालची—पु० [हिं० मसाला+ची (प्रत्य०)] वह जो बावर्चीखानो आदि मे मिर्च-मसाले पीसने तथा इसी तरह के छोटे मोटे काम करता हो।
पुं०=मशालची।

मसाल-दुम्मा—पु० [हिं० मशाल+दुम] एक प्रकार का पक्षी जिसकी दुम काली होती है।

मसालहत—स्त्री० [अ०] १ मेल-मिलाप। २ सुलह। ३. समझौता।

मसाला—पु० [फा० ममालह] १ चीजे जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो। सामग्री। जैसे—वे किताब लिखने या मुकदमा चलाने के लिए ढूँढ-ढूँढकर मसाला इकट्ठा करना। २ ओषधियो, रासायनिक द्रव्यों आदि का तैयार किया हुआ वह मिश्रण जिसका उपयोग किसी विशिष्ट कार्य के लिए होता हो। जैसे—पान का मसाला, मकान बनाने का मसाला (गारा, चूना आदि)। ३ धनियाँ, मिर्च, लौग, हीग, आदि वे पदार्थ जिनका उपयोग दाल, तरकारी आदि को सुगधित और स्वादिष्ट करने मे होता है। ४ सलमा-सितारे, बाकडी, गोखरू आदि चीजें जो कपडो पर शोभा के लिए बेल-बूटा आदि के रूप मे टाँकी जाती है। जैसे—अँगिया, ओढनी, साडी आदि मे लगाया जानेवाला मसाला। ५ किसी काम या बात का आधार-भूत साधन। जैसे—लोगों को दिल्लगी उड़ाने का अच्छा मसाला मिल गया। ६ आतिश-बाजी जो कई तरह के मसालो से बनती है। ७ युवती और सुन्दरी परन्तु दुश्चरित्रा स्त्री। (बाजारू) ८ मगल-भाषित रूप मे, तेल। जैसे—लालटेन का मसाला खतम हो गया है, लेते आना।
विशेष—प्राय किसी के चलते समय तेल का नाम लेना अशुभ समझा जाता है इसी लिए प्राय स्त्रियाँ इसे मसाला कहती है।

मसाली—स्त्री० [?] रस्सी। डोरी। (लश०)

मसाले का तेल—पु० [हिं० मसाला+तेल] एक प्रकार का सुगधित तेल जो साधारण तिल के तेल मे कपूर, कचरी, बाल-छड आदि मिलाकर बनाया जाता है।

मसालेदार—वि०[हिं० मसाला+फा० दार]१. जिसमे मसाला पडा हुआ हो। जैसे—मसालेदार चना, मसालेदार तरकारी। २ झगडा आदि लगाने अथवा किसी को प्रसन्न करने के लिए बना-सँवार कर अथवा बढा-चढाकर किया जानेवाला (कथन या बात)।

मसाहत—स्त्री०[अ०]१ नापना। पैमाइश। २ क्षेत्रमिति।

मसाहती—स्त्री०=मसाहत।

मसिंदर—पु०[अ० मेसेंजर] जहाज मे, लगर उठाने का रस्सा। (लश०)

मसि—स्त्री०[स० √मस्+इन]१. रोशनाई। २ काजल। ३. कालिख। ४. निर्गुंडी का फल।

मसिऔरा—पु० [हिं० मास+औरा (प्रत्य०)] मास के योग से बना हुआ कोई खाद्य पदार्थ।

मसिकर—पु०[स० ष० त०] मसि अर्थात् स्याही बनानेवाला व्यक्ति।

मसि-कूपी—स्त्री०[स० ष० त०] दावात।

मसि-जल—पु०[स० ष० त०] रोशनाई।

मसित—भू० कृ०[स०√मस् (परिवर्तन)+क्त, इत्व]चूर किया हुआ।

मसिदानी—स्त्री०[स० मसि+फा० दानी] दावात।

मसि-धान—पु०[स० ष० त०] दावात।

मसि-पण्य—पु०[स० ब० स०] लेखक।

मसि-पथ—पु०[स० ब० स०] कलम।

मसि-बिंदु—पु०[स० ष० त०] दावात।

मसि-बुंदा—पु०[स० मसिबिंदु] मसिबिंदु।

मसि-मणि—स्त्री० [स० मध्य० स०] दावात।

मसि-मुख—वि०[स० ब० स०]१ जिसके मुँह पर कालिख पुती या लगी हो अर्थात् कलमुँहा। २ कुकर्म करनेवाला।

मसियर|—स्त्री०=मशाल।

मसियाना—अ०[हिं० मास] शरीर का भली भाँति मास से भर जाना। शरीर का मासल होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिसमे किसी का शरीर मासल अर्थात् हृष्ट-पुष्ट हो जाय।

मसियार—स्त्री०=मशाल।

मसियारा—पु०=मशालची।

मसिल्ला—पु०=मैनसिल।

मसि-बिंदु—पु०[स० ष० त०] काजल, कालिख आदि की वह बिन्दी जो स्त्रियाँ बच्चों के गाल, माथे आदि पर उन्हें नजर से बचाने के लिए लगाती है। डिठौना।

मसी—स्त्री०=मसि।

मसीका—पु० [हिं० मासा]१ आठ रत्ती का मान। मासा। २. चवन्नी। (दलाल)

मसीत|—स्त्री०=मसजिद।

मसीद|—स्त्री०=मसजिद।

मसीना—स्त्री० [स०√मस् (परिवर्तन)+इनन्—दीर्घ, पृषो०+टाप्] अलसी।
|पु०[?] मोटा अनाज। कदन्न।

मसीला—वि०[हिं० मस+ईला (प्रत्य०)] जिसको मसें निकल अर्थात् भीज रही हों। नवयुवक।
वि०[स्त्री० मसीली] दे० 'मासल'।

मसीह—पु०[अ०] हजरत ईसा। मसीहा।

मसीहा—पु० [अ० मसीह]१ वह जिसमे रोगियो को नीरोग करने और मृतको को जीवित करने की शक्ति हो। २ ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा-मसीह। ३. उर्दू फारसी कविताओ मे प्रेम-पात्र की सज्ञा या उसके लिए सम्बोधन।

मसीहाई—स्त्री०[अ०]१. मसीहा का काम या भाव। मसीहापन। २ मुर्दों को जिन्दा करना। ३ मसीहा की सी वह अलौकिक शक्ति जिसमे रोगी चगे होते और मृतक जी उठते है।

मसीही—वि० [अ० मसीह+फा० ई (प्रत्य०)] ईसा मसीह-सबधी। ख्रिष्टीय।

पु० ईसा मसीह का अनुयायी। ईसाई।
मसुरा†—पु०=मसूर।
मसुरिया†—स्त्री०=मसूरिका।
मसुरी—स्त्री०=मसूर।
मसू*—अव्य०[हि० मरू, प० मसाँ-मसाँ=कठिनता से] कठिनाई से। मुश्किल से।
मसूडा—पु०[स० श्मश्रु] मुँह का वह मासल अग जिसमे दात जमे होते है।
मसूढी—स्त्री०[देश०] धातु गलाने की भट्ठी।
मसूर—पु०[स०√मस्+ऊरन]एक प्रकार का अन्न जो द्विदल और चिपटा होता है और जिसका रग मटमैला होता है। इसकी प्राय दाल बनती है।
मसूरक—पु०[स० मसूर+कन्] गोल तकिया।
मसूरति —पु० =मुहूर्त। उदा०—मेच्छ मसूरति मत्ति कै वच कुररनी वार।—चदवरदायी।
मसूरा—स्त्री० [स०√मस् (परिणाम)+ऊरन,+टाप्] १. वेश्या। रंडी। २ मसूर नामक अन्न। ३ उक्त अन्न की दाल। ४ उक्त दाल की बनी हुई बड़ी।
†पु०=मसूडा।
मसूरिका—स्त्री०[स० मसूरा+कन्+टाप्, इत्व]१ चेचक का एक भेद जिसमे शरीर पर मसूर के बराबर दाने निकलते हैं। खसरा। २ कुटनी। दूती।
मसूरी—स्त्री०[स० मसूर+ङीप्] मसूरिका नामक रोग।
पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जो कद मे छोटा होता है और शिशिर ऋतु मे जिसके पत्ते झड जाते हैं।
†स्त्री०=मसूर।
मसूल†—पु०=महसूल।
मसूला—पु०[देश०] एक प्रकार की पतली लम्बी नाव।
मसूस—स्त्री०[हि० मसूसना]१ मन मसूसने की क्रिया या भाव। २. मन मे दबा रहनेवाला कष्ट या दु ख।
मसूसन—स्त्री०[हि० मसूसना] मन मसूसने की क्रिया या भाव। आतरिक व्यथा।
मसूसना—अ०[हि० मरोडना या फा० अफसोस, प्र० मसोस]१ मरोडना। ऐंठना। २. निचोडना। ३ मनोवेग को दबाना या रोकना। ४ अच्छी तरह भरा होना। उदा०—रस मे मसूसी रही आलस निवारि कै।—भारतेंदु।
†अ०=मसोसना।
मसृण—वि०[स० मस्√ऋण (दीप्त होना)+क, पृषो० सिद्धि] १ चिकना। २ मुलायम। ३ चमकीला।
मसृणा—स्त्री०[स० मसृण+टाप्] अलसी।
मसेरा†—वि०[स० मसि] [स्त्री० मसेरी] काले रग का। काला। उदा०—वा कटाच्छ ते लिखै मसेरी।—नूर मुहम्मद।
मसेवरा†—पु०=मसिऔरा।
मसोढा—पु०[देश०] सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया। (कुमाऊँ)
†पु०=मसूडा।
मसोसना—अ०[फा० अफसोस]१ मन ही मन कुढना। २ मनोवेग को दबाना या रोकना।
†अ०=मसूसना।
मसोसा—पु०[फा० अफसोस, हि० मसोसना]१ मन मे होनेवाला दु ख या रज। मानसिक दु ख। २. पश्चात्ताप। पछतावा।
मसौदा—पु०[अ० मसव्विद]१. लेख, लेख्य आदि का वह आरम्भिक रूप जिसमे आगे चलकर कुछ काट-छाँट या परिवर्तन किया जाने को हो या किया जा सकता हो। पाडुलिपि। मसविदा। २ किसी काम या बात के सबंध मे पहले से सोचा जानेवाला उपाय या युक्ति।
क्रि० प्र०—निकालना।
मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना=अच्छी तरह सोचकर तरकीब या युक्ति निकालना और योजना बनाना।
मसौदेबाज—पु०[अ० मसौदा+फा० बाज (प्रत्य०)]१. अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २ चालाक। धूर्त।
मसौरा†—पु०=मसिऔरा।
मस्कर—पु०[सं० √मस्क्+अरच्]१ वश। खानदान। २ गति। चाल। ३ ज्ञान। जानकारी।
मस्करा —पु०=मसखरा।
मस्करी (रिन्)—पु० [स० मस्कर+इनि] १ संन्यासी। २ भिक्षु। ३. चन्द्रमा।
†स्त्री०=मसखरी।
मस्का—पु०=मसका।
मस्कूरा†—पु०=मसूडा।
मस्खरा—पु०=मसखरा।
मस्जिद—स्त्री०=मसजिद।
मस्त—वि०[फा०] [भाव० मस्ती]१ जो नशे मे चूर हो। मदोन्मत्त। २ जो मद या नशे से युक्त या प्रभावित हो। जैसे—मस्त आँखे। ३ किसी प्रकार के मद से युक्त। जैसे—अपनी जवानी मे मस्त। ४ जो किसी पर रीझा हो। किसी के गुण सौंदर्य आदि पर अनुरक्त। ५ किसी बात या विषय मे पूरी तरह से लीन। ६ निश्चित और लापरवाह।
मस्तक—पु०[स०√मस्+तकन्] मनुष्य के शरीर का सबसे ऊपरी और पशु-पक्षियो के शरीर का सबसे आगेवाला भाग जिसमे आँखें, मुँह, कान आदि होते हैं। भाल।
मुहा०—मस्तक ऊँचा रखना= (क) बहुत अच्छा और सम्मानपूर्ण कार्य करना। (ख) प्रतिष्ठा और सम्मानपूर्वक रहना।
मस्तकी†—स्त्री०=मस्तगी।
मस्तगी—स्त्री० [अ० मस्तकी] एक प्रकार का बढिया पीला गोद जो कुछ सदाबहार पेडो के तनो को पोछकर निकाला जाता है। रूमी मस्तगी।
मस्त-मौला—पु०=मस्तराम।
मस्तराम—पु०[फा०+हि०] वह व्यक्ति जो अपने विचारो, कार्यों आदि मे मस्त रहता हो और सासारिक झगडो-प्रपचो मे न पडता हो।
मस्तरी—स्त्री०[स० भस्त्रा] धातु गलाने की भट्ठी। (पश्चिम)
मस्तान†—वि०=मस्ताना।

मस्ताना—वि०[फा० मस्तान] [स्त्री० मस्तानी]१ मस्तों का सा। जैसे—मस्ताना रग-ढग; मस्तानी चाल। २ मस्त। मस्त।
अ० मस्ती मे आना। मस्ती मे भरना।
स० मस्ती मे लाना। मस्त करना।

मस्तिक†—पु०=मस्तिष्क।

मस्तिकी†—स्त्री०=मस्तगी।

मस्तिष्क—पु०[स० मस्त√इप्+क, पृपो० सिद्धि] १ मस्तक के अदर का गूदा। २. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य सोचने-समझने आदि का काम करता है। दिमाग। (ब्रेन)
वि० [स०] १. मस्तिष्क-सबधी। मस्तिष्क का। २. मस्तिष्क मे रहने या होनेवाला।

मस्ती—स्त्री०[फा०]१ मस्त होने की अवस्था या भाव। मतवालापन।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—उतरना।—चढना।—मे आना।
मुहा०—मस्ती झड़ना=कष्ट आदि मे पडने के कारण मस्ती दूर होना। मस्ती झाडना=इतना कष्ट देना कि मस्ती दूर हो जाय।
२ संभोग की ऐसी प्रवल इच्छा या काम-वासना कि भले-बुरे का विचार न रह जाय।
मुहा०—मस्ती झाड़ना या निकालना=किसी के साथ प्रसग करके काम-वासना शान्त करना।
३ मद। जैसे—हाथी की मस्ती; ऊँट की मस्ती।
क्रि० प्र०—टपकना।—बहना।
४ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों, पत्थरो आदि मे कुछ विशेष अवसरो पर होता है। जैसे—नीम की मस्ती, पहाड की मस्ती।
क्रि० प्र०—टपकना।—बहना।

मस्तु—पु०[स०√मस् (परिणाम)+तुन्]१ दही का पानी। २ फटे हुए दूध का पानी।

मस्तूरी†—स्त्री०[स० भस्त्रा] धातु गलाने की भट्ठी।

मस्तूल—पु०[पुर्त०] वडी नावो आदि के बीच का वह वडा खंभा जिसमे झडा या पाल बाँधा जाता है।

मस्सा—पु०=मसा।

महँ —अव्य०[स० मध्य]में।

महँई—वि०[स० महान्] बडा। महान्।
अव्य=महँ (मे)।

महँक—स्त्री०=महक।

महँकना—अ०=महकना।

महँगा—वि०[सं० महार्घ] [स्त्री०, भाव० महँगी]१. जिसका मूल्य उचित या साधारण से अधिक हो। बहुमूल्य। २. जिसका मूल्य पहले की अपेक्षा अधिक हो। अपेक्षाकृत अधिक दामवाला। ३ जिसे प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक व्यय करना, कष्ट उठाना या बदनामी या हानि सहनी पडी हो। जैसे—यह मंत्रित्व आप को बहुत महँगा पडा है।

महँगाई—स्त्री०[हिं० महँगा]१ महँगी के कारण नौकरो को वेतन के अतिरिक्त दिया जानेवाला मासिक धन या भत्ता। (डियरनेस एलाउन्स) २. दे० 'महँगी'।

महँगी—स्त्री०[हिं० महँगा] १. महँगे होने की अवस्था या भाव। २. ऐसा समय जिसमें चीजों का भाव अधिक बढ गया हो। पहले की अपेक्षा अधिक मूल्य पर वस्तुएँ बिकने की स्थिति। ३. अकाल। दुर्भिक्ष।
क्रि० प्र०—पड़ना।

महँदा†—पुं०[देश०] भुना हुआ चना।

महंत—पु०[सं० महत्=बड़ा] [भाव० महंती] वह सन्यासी (या साधु) जो अपने समाज अथवा किसी मठ का प्रधान हो।
वि०=महत् (बहुत बड़ा)।

महंताई†—स्त्री०=महंती।

महंति—वि०=महत् (बहुत बडा)। उदा०—मनसि विचारि एक ही महंति। —प्रिथीराज।

महंती—स्त्री०[हिं० महंत+ई (प्रत्य०)] महंत का काम पद या भाव।
उदा०—भारी विपति महंती आई, लगन राम सों छूटी।

महंदी—स्त्री०=मेंहदी।

मह—वि० [सं०] १. महा। अति। बहुत। २. बहुत बड़ा। महत्।
†अव्य०=महँ।

महक—स्त्री० [स० महक्क]१. दूर तक फैलनेवाली सुगंध। जैसे—कमरा इत्र से या उद्यान फूलों से महक रहा था। २. (प्रिय या अप्रिय) गंध या वास। जैसे—जलते हुए कपड़े की महक।

महकदार—वि०[हिं० महक+फा० दार (प्रत्य०)]जिसमे महक या सुगंध हो।

महकना—अ०[हिं० महक+ना (प्रत्य०)] महक या गंध देना।

महकमा—पु०[अ० महकम]१. कचहरी। न्यायालय। २. शासनिक दृष्टि से उसका कोई विशिष्ट विभाग।

महकान —स्त्री०=महक।

महकाना—स०[हिं० महक]१. महक या सुगंध मे युक्त करना। २ महक या सुगन्ध चारो ओर फैलाना।

महकाली—स्त्री०[सं० महाकाली] पार्वती। (डिं०)

महकीला—वि०[हिं० महक+ईला (प्रत्य०)] जो महक रहा हो। जिसमें से महक निकलती हो।

महकूम—वि०[अ० मह्कूम]१ जिसे हुक्म दिया गया हो। २. शासित।
पु० प्रजा। रिआया।
†पु०[?] सूर्य। (डिं०)

महज—अव्य०[अ० महज]१. केवल। निरा। जैसे—यह तो महज पानी है। २. केवल। मात्र। सिर्फ। जैसे—यह तो महज पागलपन है।

महजर—पु०[अ० मह्ज़र] लोगों के हाजिर होने का स्थान।

महजरनामा—पु०[अ० महज़र+फा० नाम]१ वह प्रार्थनापत्र जो बहुत से आदमियों की ओर से दिया जाय। २. वह साक्ष्य पत्र जिसमे बहुत से गवाहो की गवाही हो।

महजित*—स्त्री०=मसजिद।

महज्जन—पु०=महाजन।

महटिआना—स० [हिं० मिट्टी + आना (प्रत्य०)] सुनी अनसुनी करना।

महण—पु० [स० महार्णव] समुद्र। सागर। उदा०—महण मथे मूँ लीध महमहण।—प्रिथीराज।

महत्—वि०[स०√मह्+अति]१ बहुत बडा। महान्। २. सर्वश्रेष्ठ।

पु०१ दार्शनिक क्षेत्रो मे, प्रकृति का आरभिक या मूल विकार। महत्तत्व। २ ब्रह्म। ३ राज्य। ४ जल। पानी।

*पु०=महत्त्व।

महतम—पु०[स० महत्तम] मालिक। स्वामी।

महतमाइन—स्त्री०[हिं० महतम]मालकिन। स्वामिनी।

महतवान—पु०[देश०] करघे मे पीछे की ओर लगी हुई वह खूँटी जिसमे ताने को पीछे की ओर खीचे रखनेवाली डोरी लपेटकर बाँधी जाती है। हथेला। पिंडा।

महता[1]—पु०[स० महत्] गाँव का मुखिया। महतो।

*स्त्री० [म०महत्ता]१ महत्ता। २ अभिमान। ३ एक प्राचीन नदी।

महताव—पु०[फा० माहताव]१ चद्रमा। २ एक तरह का जगली कौआ। मतूरी।

स्त्री० १ चन्द्रिका। चाँदनी। २ महतावी नाम की आतिशवाजी। ३ जहाज पर रात मे सकेत के लिए जलाई जानेवाली एक प्रकार की नीली रोशनी।

महतावी—स्त्री०[फा०]१ मोमवत्ती के आकार की एक तरह की आतिश-वाजी जिसके जलने से तेज सफेद प्रकाश होता है। २ प्रासादो आदि के आगे का वाग के वीच का गोल चवूतरा जिस पर वैठकर चाँदनी का आनन्द लिया जाता है। ३ चकोतरा। (पूरव)

महताम—वि० [स० महत्तम] श्रेष्ठ। वडा। उदा०—आय रह्यो महताम।—जटमल।

महतारा—पु०[हिं० महतारी (माता) का पु०] पिता। वाप। (क्व०) उदा०—अवतारी सव अवतारन को महतारी महतारो।

महतारी†—स्त्री० [स० माता] माता। माँ।

महती—स्त्री०[स० महत्+ङीप्] १ नारद की वीणा का नाम। २ वृहती। वन-भटा। ३ महत्त्व। महिमा। ४ कुश द्वीप की एक नदी। ५ एक प्रकार का रोग जिसमे हिचकी आती है और उसके फल-स्वरूप छाती मे पीडा होती है। ६ योनि के फैलने का रोग। (वैद्यक)

महती-द्वादशी—स्त्री० [स० मध्य० स० अथवा व्यस्त पद] श्रवण नक्षत्र मे पडनेवाली भाद्र शुक्ल द्वादशी।

महतु†—पु०=महत्त्व।

महतो—पु० [हिं० महता] १ मालिक। स्वामी। २ सरकार। ३ कुछ गयावाल पडो की एक उपाधि। ४ कहार। (विहार) ५ गाँव का मुखिया। ६ किसी मडली या समाज का मुखिया।

महत्कथ—पु० [स० महती-कथा, व० स०] खुशामदी।

महत्तत्व—पु०[स० महत्-तत्त्व, कर्म० स०]१ दार्शनिक क्षेत्र मे प्रकृति का पहला विकार या कार्य।

विशेष—साख्यकार ने कहा है कि पहले-पहल जव जगत सुषुप्तावस्था से उठा या जागा था, तव सवसे पहले इसी महत्तत्त्व का आविर्भाव हुआ था। इसी को दार्शनिक परिभाषा मे बुद्धि-तत्त्व भी कहते है।

२ कुछ तान्त्रिको के अनुसार ससार के सात तत्त्वो मे से सवसे अधिक सूक्ष्म तत्त्व। ३ जीवात्मा।

महत्तनु†—पु०=महत्तत्व।

महत्तम—वि०[स० महत्+तमप्]१ जिसका महत्त्व सवसे अधिक आँका, माना या समझा जाता हो। २ सवसे वडा। (ग्रेटेस्ट)

महत्तम-समापवर्त्तक—पु० [कर्म० स०] गणित मे, वह वडी से वड़ी सख्या जिसका भाग दो या अन्य सख्याओ मे पूरा पूरा हो सके।

महत्तर—वि० [सं० महत्+तरप्] किसी की अपेक्षा अधिक महत्त्ववाला। पु० शूद्र।

महत्तरक—पु०[स० महत्तर+कन्] दरवारी। मुसाहव।

महत्ता—स्त्री०[म० महत्+तल्+टाप्] महत्त्व।

महत्पुरुष—पु०[सं० कर्म० स०] पुरुषोत्तम।

महत्त्व—पु०[स० महत्+त्व]१ महत् या महा अर्थात् सवसे वडे होने की अवस्था या भाव। २ वडप्पन। वडाई। श्रेष्ठता। ३ किसी काम, चीज या वात की वह अवस्था जिसमे वह अर्थ, उपयोग, परिणाम, प्रभाव, मूल्य आदि के विचार से औरो से वहुत वढकर मानी या समझी जाती है। (इम्पार्टेन्स) जैसे—महत्त्व का विचार, महत्त्व का समाचार आदि।

महत्त्वपूर्ण—वि०[स० तृ० त०] जिसका कुछ या अधिक महत्त्व हो।

महत्त्वाकाक्षा—स्त्री० [स०महत्त्व-आकांक्षा,प० त०] दे० 'उच्चाकाक्षा'।

महदी—वि० [अ० महदी] १. जिसे दीक्षा मिली हो। दीक्षित। २. धर्मनेता।

पु० वारहवे इमाम। (मुसलमान)

महदूद—वि०[अ० महदूद]१ जिसकी हद वँधी हो। सीमावद्ध। सीमित। २ घिरा हुआ। ३ कुछ। चद।

महदूम—वि०[अ० मह्दूम]२ नष्ट। २. ध्वस्त।

महदेश्वर—पु०[हिं०] मैसूर मे होनेवाली वैलो की एक जाति।

महद्वारुणी—स्त्री०=महेद्रवारुणी (लता)।

महन†—पु०=मथन।

महना*—स०=मथना।

पु०[हिं० मथना] वडी मथानी।

पु०=मेहना।

महना-मत्थन—पु०[हिं० महना=मथना]१. वार वार किसी वात पर तर्क करते चलना। २ व्यर्थ की वहुत अधिक तकरार या हुज्जत।

महनिया—पु०[हिं० महना=मथना+इया (प्रत्य०)]मथनेवाला।

महनीय—वि०[स० √मह्+अनीयर्] [भाव० महनीयता] १ महान्। २. पूज्यनीय। मान्य।

महनु—पु०[हि० महना]१ मथन करनेवाला। २ विनाशक।

महफा—पु०[?] एक प्रकार की पालकी।

महफिल—स्त्री० [अ० महफिल] १ मजलिस। सभा। समाज। २. वह समाज या स्थान जिसमे नाच-रग हो रहा हो।

क्रि० प्र०—जमना।—लगना।

३ इस्लामी धार्मिक क्षेत्र मे, उपासना या साधना का स्थान। ४. सूफियो की परिभाषा मे ससार।

महफूज—वि०[अ० महफूज]१ जिसकी हिफाजत की गई हो। २. आवश्यकता के लिए वचाकर रखा हुआ।

महबूब—पु०[अ०मह्बूब][स्त्री०महबूबा] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रेमपात्र। प्रिय।

महबूबा—स्त्री०[अ० मह्बूबा] प्रेमपात्री। प्रेयसी।

महमत—वि०[स० महा+मत्त]१ मस्त। २. उन्मत्त।

महमद*—पु०=मुहम्मद।

महमदी—वि०[अ० मुहम्मदी] मुसलमान-सम्बन्धी।

महमह—क्रि० वि०[हिं० महकना] महमह करते हुए। सुगंधि के साथ।

महमहण—पु०[स० महीमथन] विष्णु। (डिं०) उदा०—महण मथे मूँ लीध महमथण।—प्रिथीराज।

महमहा—वि०[हिं० महमह] महकदार। सुगंधित।

महमहाना—अ०[हिं० महमह अथवा महकना] गमकना। सुगंधि देना। स० महक या सुगंधि से युक्त करना।

महमा†—स्त्री०=महिमा।

महमान—पु०=मेहमान।

महमानी—स्त्री०=मेहमानी।

महमाय—स्त्री०[स० महामाया] पार्वती। (डिं०)

महमिल—पु०[अ० महमिल] वह कजावा जिसमे स्त्रियाँ बैठती हों।

महमूद—वि०[अ० महमूद] जिसकी हमद् अर्थात् प्रशंसा की गई हो। प्रशंसित।

महमूदी—स्त्री०[फा० महमूदी] एक तरह की मलमल।
वि० महमूद-सम्बन्धी।

महमेज—स्त्री०[फा० मेहमेज़] जूते की एडी मे लगाई जानेवाली नाल। (घुडसवारी के समय इसी से घोडे के पेट मे आघात करके उसे एड लगाई जाती है।)

महम्मद—पु०=मुहम्मद।

महम्मदी—वि०, पु०=मुहम्मदी।

महर—पु०[स० महत्] [स्त्री० महरि] १ व्रज मे बोला जानेवाला एक आदरसूचक शब्द जिसका प्रयोग विशेषत जमींदारों और वैश्यों आदि के संबंध मे होता है। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ दे० 'महरा'।
वि०=महमहा (सुगंधित)।
पु०[फा०] वह रकम जो निकाह के समय दुल्हिन को देनी निश्चित की जाती है। (मुसलमान)
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

महरबान—पु०=मेहरबान।

महरम—पु०[अ० महरम] १ कन्या की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति जिससे उसका विवाह न हो सकता हो। २ वह जो भीतरी रहस्य से परिचित हो। हार्दिक मित्र।
स्त्री० [?] १ अंगिया। २ अंगिया की कटोरी।

महरा—पु०[हिं० महता] [स्त्री० महरी] १ कहार। २. मुखिया। सरदार। ३ पूज्य या श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि०१ प्रधान। मुख्य। २ पूज्य और श्रेष्ठ।

महराई*—स्त्री०[हिं० महर+आई (प्रत्य०)] १. महर होने की अवस्था या भाव। २ प्रधानता।

महराज†—पु०=महाराज।

महराजा†—पु०=महाराज।

महराण—पु० [स० महार्णव] समुद्र। (डिं०)

महराना—पु०[हि० महर+आना (प्रत्य०)] महरों के रहने की जगह, महल्ला या गाँव।
पु०=महाराणा।
अ०=मेहराना।

महराव—स्त्री०=मेहराव।

महरि—स्त्री०[हिं० महर] १ एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार व्रज मे किसी प्रतिष्ठित स्त्री विशेषत. नारी के लिए होता है। २ घर की मालकिन। गृह-स्वामिनी। ३ ग्वालिन (चिड़िया)।
†स्त्री०=मेहर।

महरी—स्त्री०[देश०] ग्वालिन (चिड़िया)।
स्त्री० हिं० 'महरा' का स्त्री०।

महरुआ†—पु० [देश०] जरना। (सुनार)

महरू—पु०[देश०] १ चंडू पीने की नली। २ एक प्रकार का वृक्ष।

महरूम—वि०[अ० महरूम] १ जिसे कोई चीज न मिल सकी हो। जो कुछ पाने से रह गया हो। वंचित। २. अभागा।

महरूमी—स्त्री०[अ० महरूमी] १. महरूम होने की अवस्था या भाव। २ बदकिस्मती।

महरेटा—पु०[हिं० महर+एटा (प्रत्य०)] [स्त्री० महरेटी] १ महर अर्थात् मुखिया या सरदार का बेटा। २. श्रीकृष्ण।

महरेटी—स्त्री०[हिं० महरेटा] वृषभानु महर की लड़की, राधिका।

महर्घ—वि०=महार्घ।

महर्घता—स्त्री०=महार्घता।

महर्लोक—पु०[स० कर्म० स०] पुराणानुसार भू, भुव' आदि चौदह लोकों मे से एक।
विशेष—अरविन्द दर्शन मे यह लोक ऊपर के तीन लोकों—सत्, चित् और आनन्द तथा नीचे के तीन लोकों भू भुव. स्व के मध्य मे माना गया है, और इसी मे प्रति-मानस (देखे) का निवास माना गया है।

महर्षभी—स्त्री०[स० महती-ऋषभी, कर्म० स०] कौंछ। केवाँच।

महर्षि—पु०[स० महत्-ऋषि, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा ऋषि। ऋषीश्वर। जैसे—वेदव्यास। २ संगीत मे एक प्रकार का राग जो भैरव के आठ पुत्रों मे से एक कहा गया है।

महर्षिका—स्त्री०[स० महर्षि+कन्+टाप्] भटकटैया।

महल—पु०[अ०] १ राजाओं, रईसों आदि के रहने का बहुत बड़ा मकान। भवन। प्रासाद। २ अतःपुर। रनिवास। ३ बहुत बड़ा और सजा हुआ कमरा। ४ अवसर। मौका। ५ बड़ी मधुमक्खी। सारंग। ६ पत्नी। बीबी।

महलम—पु०[अ० महलम] वह जिसके पास ईश्वर कोई विशेष सन्देश भेजे। उदा०—विद्यापति छवि भान महलम जुगपति चिरे जीवें जीवयु।—विद्यापति।

महल-सरा—स्त्री०[अ० महल+फा० सरा] अतःपुर। जनानखाना। रनिवास।

महलाठ—पु०[देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी दुम लम्बी, ठोर काली, छाती खैरी, पीठ खाकी रंग की और पैर काले होते है। इसे कोकैया और मुटरी भी कहते है।

महली—पु०[हिं० महल] १ वह जनखा, जो महलों मे पहरा देता तथा बेगमों की सेवा करता हो। २ कंचुकी।

महली-पटैला—पु०[हिं० महल+पटैला] एक प्रकार की बड़ी नाव जिस पर केवल लकड़ी, पत्थर आदि लादे जाते है।

महल्ला—पु०[अ० महल्ल] शहर का कोई विभाग जिसमे बहुत से मकान तथा कई गलियाँ होती है। टोला। पाड़ा।

महल्लेदार—पु०[अ० महल्ल+फा० दार (प्रत्य०)] १. महल्ले का चौधरी या प्रधान। २ चमार, भगी, मेहतर आदि जो अलग अलग महल्लो मे सफाई करते हैं।

महल्लेदारी—स्त्री० [हिं० महल्लेदार] एक ही महल्ले मे रहनेवालो मे होनेवाला बरताव या लेन-देन।

महशर—पु० [अ० मह्शर] १ कयामत। प्रलय। २ कयामत का दिन।

महसार† —स्त्री० =महासीर (मछली)।

महसिल—पु० [अ० मुहस्सिल] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहने वाला।

महसीर—स्त्री०=महासीर (मछली)।

महसूद—वि० [अ० मह्सूद] १ जिससे हसद या ईर्ष्या की गई हो। २ ईर्ष्या किये जाने के योग्य।

महसूर—वि० [अ० मह्सूर] घेरे मे पडा हुआ। घिरा हुआ।

महसूल—पु० [अ० मह्सूल] १ किसी चीज पर लगनेवाला किसी प्रकार का कर या शुल्क। २ कोई चीज कही भेजने का किराया या भाडा। ३ जमीन की मालगुजारी या लगान।

महसूली—वि० [अ० मह्सूली] जिस पर किसी प्रकार का महसूल लगा हो या लग सकता हो। महसूल के योग्य।
† स्त्री० भूमि जिस पर लगान न देना पडता हो।

महसूस—वि० [अ० महसूस] जिसका एहसास (अर्थात् किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा ज्ञान) हुआ हो। जैसे—किसी चीज या बात की कमी महसूस होना।

महाँ—अव्य०=महँ।
वि०=महा।

महा—वि० [स०] १ बहुत अधिक। अत्यन्त। २ बडा। महान्। ३ सबसे बढकर। सर्वश्रेष्ठ।
†पु० [हिं० महना=मथना] मठा। छाछ।

महाई—स्त्री० [स० मथन, हिं० महना+आई (प्रत्य०)] १ महने अर्थात् मथने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ नील की मथाई।

महाउत†—पु०=महावत।

महाउर† —पु०=महावर।

महाकद—पु० [स० महत्-कद, कर्म० स०] १ लहसुन। २ प्याज।

महाकंबु—पु० [स० महत्-कबु, ब० स०] शिव।

महाकच्छ—पु० [स० महत्-कच्छ, ब० स०] १ समुद्र। सागर। २ वरुण देवता। ३ पर्वत। पहाड। ४ एक प्राचीन देश।

महाकपि—पु० [स० महत्-कपि, कर्म० स०] १. शिव का एक अनुचर। २ एक बोधिसत्व का नाम।

महाकपित्थ—पु० [स० महत्-कपित्थ, कर्म० स०] १ बेल का वृक्ष। २ लाल लहसुन।

महाकपोत—पु० [स० महत्-कपोत, कर्म० स०] एक तरह का जहरीला साँप।

महाकरज—पु०[स० महत्-करज, कर्म० स०]एक प्रकार का बडा करज।

महाकर—पु० [स० महत्-कर, ब० स०] एक बोधिसत्व का नाम।
वि० १ लबे हाथोवाला। २ अधिक आय करनेवाला।

महाकर्ण—पु० [स० महत्-कर्ण, ब० स०] १ शिव। २ नाग।

महाकर्णा—स्त्री० [स० महाकर्ण+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

महाकर्णिकार—पु० [स० महत्-कर्णिकार, कर्म० स०] अमलतास

महाकल्प—पु० [स० महत्-कल्प, कर्म० स०] ब्रह्मा कल्प। (पुराण)

महाकांत—पु० [स० महत्-कात, कर्म० स०] शिव।

महाकांता—स्त्री० [स० महती-काता, कर्म० स०] पृथ्वी।

महाकाय—पु० [स० महत्-काय, ब० स०] १ शिवजी का नंदी नामक गण और द्वारपाल। २ विष्णु। ३ हाथी।
वि० बहुत बडी काया या शरीरवाला।

महाकार्तिकी—स्त्री० [स० महती-कार्तिकी, कर्म० स०] कार्तिक की वह पूर्णिमा जो रोहिणी नक्षत्र मे हो।

महाकाल—पु० [स० महत्-काल, कर्म० स०] १ सृष्टि और प्राणियो का अत करनेवाले, महादेव या शिव का एक रूप। २ सारा समय जो विष्णु के समान अनत और अखड है। ३ शिव का एक गण जो कुछ पुराणो मे शिव का पुत्र कहा गया है। ४ प्राचीन भारत मे सूर्योदय का प्रामाणिक और मानक काल जो उज्जयिनी के सूर्योदय काल के अनुरूप और उसके आधार पर माना जाता था। ५ उक्त के आधार पर उज्जयिनी मे स्थित शिव का एक प्रसिद्ध मदिर।

महाकाली—स्त्री० [स० महाकाल+ङीप्] १ महाकाल स्वरूप शिव की पत्नी जिसके पाँच मुख और आठ भुजाएँ मानी जाती है। २ दुर्गा की एक प्रसिद्ध मूर्ति या रूप। ३ शक्ति की एक अनुचरी। ४ जैनो के अनुसार सोलह विद्या-देवियो मे से एक जो अवसर्पिणी के पाँचवे अर्हत् की देवी है।

महाकाव्य—पु० [स० महत्-काव्य, कर्म० स०] बहुत बडा और विस्तृत काव्य-ग्रथ।
विशेष—भारतीय साहित्य मे पहले महाकाव्य वह कहलाता था जिसमे किसी व्यक्ति के आदि से अन्त तक के पूरे जीवन का विस्तृत विवरण होता था। पर बाद के साहित्यकारो ने इसके सम्बन्ध मे कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये थे। यथा—यह श्रृंखला-बद्ध होने के सिवा सर्ग-बद्ध भी होना चाहिए, इसका नायक देवता, राजा या धीरोदात्त क्षत्रिय होना चाहिए, इसमे वीर, शान्त या श्रृगार रसो मे से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए, बीच बीच मे प्रसग-वश और रस भी होने चाहिए, अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्यो और शोभाओ, मानव या लौकिक जीवन के भिन्न भिन्न अगो, कार्यो, घटनाओ आदि का भी वर्णन होना चाहिए आदि आदि। इस दृष्टि से महाभारत और रामायण तो महाकाव्य है ही, कालिदास कृत रघुवश, माघ कृत शिशुपाल-वध, भारविकृत किराता-र्जुनीय और श्री हर्ष-कृत नैषध-चरित भी महाकाव्य की श्रेणी मे आ जाते है। पर आज-कल वह बहुत बडा काव्य भी महाकाव्य मान लिया जाता है जो कवित्व की दृष्टि से बहुत उच्च कोटि का हो और जिसमे बहुत से विषयो का सुदर रूप मे वर्णन हो।

महाकाश—पु० [स० महत्-आकाश, कर्म० स०] १ पूरा आकाश। २ [ब० स०] एक पर्वत का नाम।

महाकुमार—पु० [स० महत्-कुमार, कर्म० स०] युवराज।

महाकुमुदा—स्त्री० [स० महती-कुमुदी, कर्म० स०] गभारी।

महाकुल—पु० [स० महत्-कुल, कर्म० स०] उच्च कुल।

वि० [ब० स०] महाकुलीन
महाकुलीन—वि० [स०+महाकुल+ख—ईन] ऊँचे कुल मे जन्मा हुआ।
महाकुष्ठ—पु०[स० महत्-कुष्ठ,कर्म० स०] कुष्ठ का वह भेद जिसमे हाथ पैर की उँगलियाँ गलने तथा गलकर गिरने लगती हैं। गलित कुष्ट।
महाकृच्छ्र—पु० [स० महत्-कृच्छ्र, कर्म० स०] १ विष्णु का एक नाम। २. घोर तपस्या।
महाकृष्ण—पु० [स० महत्-कृष्ण, कर्म०स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप।
पु० शिव।
महाकोश—पु० [स० महत्-कोश, ब० स०] शिव।
महाकोशातकी—स्त्री० [स० महती-कोशातकी, कर्म० स०] निनुआँ या घीआ नामकी तरकारी।
महाक्रतु—पु० [स० महत्-क्रतु, कर्म० स०] बहुत बडा यज्ञ। राजसूय यज्ञ।
महाक्रोध—पु० [स० महत्-क्रोध, ब० स०] शिव।
महाक्ष—पु० [स० महत्-अक्षि, ब० स०, षच्] १. शिव। २ विष्णु।
महाक्षीर—पु० [स० महत्-क्षीर, ब० स०] ईख।
महाखर्व—पु० [स० महत्-खर्व, कर्म० स०] सौ खर्व की सख्या।
महागगा—स्त्री० [स० कर्म० स०] एक प्राचीन नदी। (महा०)
महागध—पु० [स० महत्-गध, ब० स०] १ चन्दन। २. कुटज। ३ जलबेत।
महागंधा—स्त्री० [स० महागध+टाप्] १ केवडा। २ नागबला। ३ चामुडा देवी।
महागज—पु० [स० महत्-गज, कर्म० स०] दिग्गज।
महागणनाध्यक्ष—पु०=महालेखापाल।
महागणपति—पु० [स० महत्-गणपति, कर्म० स०] १ शिव का एक अनुचर। २ गणेश।
महागद—पु० [स० महत्-गद, कर्म० स०] १. ज्वर। बुखार। २ कठिन रोग। ३ एक औषध ।
महागर्त्त—पु० [स० महत्-गर्त्त, ब० स०] विष्णु।
महागर्भ—पु० [स० महत्-गर्भ, ब० स०] १ विष्णु। २ शिव।
महागिरि—पु० [स० महत्-गिरि, कर्म० स०] बहुत बडा पहाड।
महागीत—पु० [स० महत्-गीत, ब० स०] शिव।
महागुण—वि० [स० महत्-गुण, ब० स०] अति गुणकारी।
महागुनी—पु०=महोगनी।
महागुरु—पु० [स० महत्-गुरु, कर्म०स०]माता, पिता और गुरु इन तीनो का समाहार।
महागुल्मा—स्त्री० [स० महत्-गुल्म, ब० स०,+टाप्] सोमलता।
महागोधूम—पु० [स० महत्-गोधूम, कर्म० स०] बडे दाने का गेहूँ।
महाग्रंथिक—पु० [स० महत्-ग्रथिक, कर्म०स०] वह औषध जिसके सेवन से रोग निश्चित रूप से रुक जाय।
महाग्रह—पु० [स० महत्-ग्रह, कर्म० स०] राहु।
महाग्रीव—पु० [स० महती-ग्रीवा, ब० स०] १ शिव। २ शिव का एक अनुचर। ३. पुराणानुसार एक देश का नाम। ४. ऊँट।
महाघूर्णा—स्त्री० [स० महती-घूर्ण, ब० स०,+टाप्] शराब। मदिरा।
महाघृत—पु० [स० महत्-घृत+कर्म० स०] बहुत पुराना घी।
महाघोष—पु० [स० महत्-घोष, कर्म० स०] १ भारी शब्द। २. [ब० स०] बाजार। हाट।
महाघोषा—स्त्री० [स० महाघोष+टाप्] काकडा सिंगी।
महाचंचु—पु० [स० महती-चञ्चु, ब० स०] चेंच।
महाचंड—पु० [स० महत्-चड, कर्म० स०] १ यम के दूत। २. शिव का एक गण।
वि०=प्रचड।
महाचंडा—स्त्री० [स० महाचड+टाप्] चामुडा।
महाचक्रवर्ती (र्तिन्)—पु० [स० महत्-चक्रवर्तिन्, कर्म० स०] बहुत बडा चक्रवर्ती राजा। सम्राट्।
महाचपला—स्त्री० [सं० महती-चपला, कर्म० स०] ऐसा आर्या छद जिसके दोनो दलो मे चपला छंद के लक्षण हो।
महाचमू—पु० [स० महती-चमू, कर्म० स०] बहुत बडी सेना।
महाचार्य—पु० [सं० महत्-आचार्य, कर्म० स०] १ बहुत बडा आचार्य। २ शिव।
महाचिति—स्त्री० दे० 'महा-शक्ति'।
महाचेतन—पु० [स० महत्-चेतन, कर्म० स०] वह सर्वप्रमुख चेतना-शक्ति जो सारे विश्व और उसमे के प्राणियो तथा पदार्थों मे व्याप्त है।
महाच्छाय—पु० [स० महती-छाया, ब० स०] बड़ का पेड। वट वृक्ष।
महाजंबीर—पु० [स० महत्-जबीर, कर्म० स०] कमला नीबू।
महाजबु—पु० [सं० महती-जबु, कर्म० स०] जामुन का बड़ा तथा पुराना पेड़।
महाजन—पु० [सं० महत्-जन, कर्म० स०] १ मनुष्यो का समूह। जनता। २ बहुत बडा आदमी। श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. मुखिया। ४. धनवान् व्यक्ति। ५ वह व्यक्ति (क) जो सूद पर रुपये उधार देने का व्यवसाय करता हो। (ख) जिससे सहायता रूप मे अधिक धन प्राप्त किया जा सकता हो।
महाजनी—वि० [स० महाजन+हिं० ई (प्रत्य०)] महाजन-सबधी। महाजनो मे होनेवाला।
स्त्री० १ महाजनो का पेशा या व्यवसाय। सूद पर रुपये उधार देने के कारबार। २ एक विशेष लिपि जिसमे महाजन लेन-देन का हिसाब रखते है। बही-खाते मे प्रयुक्त होनेवाली लिपि।
महाजल—पु० [स० महत्-जल, ब० स०] समुद्र।
महाजाल—पु० [स० महत्-जाल, कर्म० स०] १ मछलियाँ पकडने का बहुत बडा जाल। २ किसी को धोखे मे फँसाने के लिए फैलाया हुआ बहुत बडा जाल या सोची हुई युक्ति। ३ मध्य युग मे, एक प्रकार का बढिया कागज जो मछलियाँ पकडने के पुराने जालों को सडाकर बनाया जाता था।
महाजिह्व—पु० [स० महती-जिह्वा, ब० स०] शिव।
महाज्ञानी (निन्)—पु० [स० महत्-ज्ञानिन्, कर्म० स०] १. बहुत बडा ज्ञानी पुरुष। २. शिव।
महाज्यैष्ठी—स्त्री० [स० महती-ज्यैष्ठी, कर्म० स०] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा।

महाज्योतिष्मती—स्त्री० [स० महती-ज्योतिष्मती, कर्म०स०] बड़ी मालकँगनी।

महाज्वाल—पु० [स० महती-ज्वाला, ब० स०] १ हवन की अग्नि। २. महादेव। ३ एक नरक का नाम।
वि० बहुत अधिक चमकता हुआ।

महा डाकपाल—पु० [हिं०] वह डाकपाल जिसके निरीक्षण मे किसी राज्य या प्रदेश के अन्य सब डाकपाल काम करते हो। (पोस्टमास्टर जनरल)

महाडोल—पु० [स० महा+हिं० डोला] वह बहुत बडी पालकी जिसमे कई स्त्रियाँ एक साथ बैठ सकती थी। शिविका। उदा०—महाडोल दुलहिन के चारी। देहु बताय होउ उपकारी।—रघुराज।

महातत्त्व—पु०=महत्तत्त्व।

महातपा (तस्)—पु० [महत-तपस्, ब० स०] बहुत बडा तपस्वी।

महातम—पु०=माहात्म्य।

महातल—पु० [स० महत्-तल, कर्म० स०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे माने जानेवाले सात तलो (लोको) मे से छठा तल। (ये सात तल इस प्रकार है—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।

महातारा—स्त्री० [सं० महती-तारा, कर्म० स०] एक देवी। (तत्र)

महातिक्त—पु० [स० महत्-तिक्त, ब० स०] १ महानिब। बकायन। २ चिरायता।

महातीक्ष्ण—वि० [सं० महत्-तीक्ष्ण, कर्म० स०] १ बहुत तेज। २ बहुत कड़ुआ या झारदार।
पु० भिलावाँ।

महातीक्ष्णा—स्त्री० [स० महती-तीक्ष्णा, कर्म० स०] भिलावाँ।

महातेज (जस्)—पु० [सं० महत्-तेजस्, ब० स०] १ शिव। २ पारा। ३. योद्धा।
वि० १. जिसमे बहुत अधिक तेज हो। परम तेजवान्। २ पराक्रमी तथा शक्तिशाली।

महात्मा (त्मन्)—पुं० [सं० महत्-आत्मन्, ब० स०] १ पवित्र आत्मा। शुद्ध हृदय तथा उच्च विचारोंवाला व्यक्ति। जैसे—महात्मा ईसा, महात्मा बुद्ध, महात्मा गाँधी, आदि। २ बहुत बडा तपस्वी, विरक्त और सन्यासी या साधू। ३ परमात्मा। ४ पितरो का एक गण या वर्ग। ५ शिव। ६ दे० 'महत्तत्त्व'।

महात्रिफला—स्त्री० [स० महती-त्रिफला, कर्म० स०] बहेड़ा, आँवला और हड इन तीनो का समाहार। (वैद्यक)

महात्याग—पुं० [स० महत्-त्याग, कर्म० स०] १. बहुत बडा त्याग। २ महादान। (दे०)

महात्यागी (गिन्)—पु० [स० महात्याग+इनि] १ बहुत बडा त्यागी या दानी। २ शिव।

महादंड—पु० [स० महत्-दड, कर्म० स०] १ यम के हाथ का दड। २ यम के दूत। ३ बहुत बडा या कठोर दड।

महादडधारी (रिन्)—पु० [स०महादड√धृ (रखना)+णिनि] यमराज।

महादंत—पु० [स० महत्-दंत, ब० स०] १ महादेव। २ हाथी। ३ [कर्म० स०] हाथी-दाँत।
वि० बहुत बडे बडे दाँतोवाला।

महादष्ट्र—पु० [स० महती-द्रष्टा, ब० स०] १ शिव। २. विद्याधर।

महादशा—स्त्री० [स० महती-दशा, कर्म० स०] फलित ज्योतिष मे वह सारा समय जिसमे मोटे हिसाब से किसी एक ग्रह की पूरी अवस्थिति रहती और फल-भोग चलता रहता है। जैसे—आज-कल इस कुडली में शनि की महादशा के अन्तर्गत बुध की दशा चल रही है।

महादान—पु० [स० महत्-दान, कर्म० स०] १. पुराणानुसार सोने की गौ या घोडा आदि तथा पृथ्वी आदि पदार्थों का दान जिससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। बहुत बड़ा दान। ३ ग्रहण आदि के समय किया जाने-वाला दान।

महादारु—पु० [स० महत्-दारु, ब० स०] देवदारु।

महादूत—पु० [स० महत्-दूत, कर्म० स०] यमदूत।

महादेव—पु० [स० महत्-देव, कर्म० स०] सबसे बड़े देव, शिव।

महादेवी—स्त्री० [स० महती-देवी, कर्म० स०] १ पार्वती। २ दुर्गा। ३ प्राचीन भारत में पटरानी की उपाधि या संज्ञा।

महादेश—पु० [स० महत्-देश, कर्म० स०] १ बहुत बडा देश। २ पृथ्वी के पाँच बडे स्थल-विभागो मे से हर एक। महाद्वीप। जैसे—एशिया युरोप, अफरीका आदि। (कान्टिनेन्ट)

महादैत्य—पु० [स० महत्-दैत्य, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा दैत्य। २ एक दैत्य। (पुराण)

महाद्रावक—पु० [स० महत्-द्रावक, कर्म० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का औषध जो सोना-मक्खी, रसाजन, समुद्रफेन, सज्जी आदि से बनाया जाता है।

महाद्रुम—पु० [स० महत्-द्रुम, कर्म० स०] १ पीपल। २ ताड। ३ महुआ। ४. पुराणानुसार एक देश या वर्ष।

महाद्वार—पु० [स० महत्-द्वार, कर्म० स०] प्रासाद या मदिर का बाहरी और सबसे बडा द्वार। सदर फाटक।

महाद्वीप—पु० [स० महत्-द्वीप, कर्म० स०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के निम्न सप्त विभागो मे से हर एक—जबु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौच, शाक और पुष्कर। २ बहुत बडा द्वीप।
वि० दे० 'महादेश'।

महाद्वीपीय—वि० [स० महाद्वीप+छ—ईय] महाद्वीप-सम्बन्धी। महाद्वीप का।

महाधन—वि० [स० महत्-धन, ब० स०] १. बहुमूल्य। २ बहुत बडा धनी।
पु० १ सोना। स्वर्ण। २ धूप नामक गन्ध-द्रव्य। ३ खेती-बारी। कृषि।

महाधमनी—स्त्री० [स० महती-धमनी, कर्म०स०] शरीर के अन्दर की वह सबसे बडी धमनी जो हृदय के बाँए निलय से (ऊपर और नीचे की ओर) निकलकर शरीर की अन्य सभी धमनियो मे रक्त का सचार करती है। (आओर्टा)

महाधनु (ष्)—पु० [स० महत्-धनुष्, ब० स०] शिव।

महाधातु—पु० [सं० महत्-धातु, कर्म० स०] १. शिव। २. सोना। स्वर्ण। ३ मेरु (पर्वत)।

महाधिकार-पत्र—पु० [सं० महत्-अधिकार, कर्म० स०, महाधिकार-पत्र,

ष० स०] वैधानिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करनेवाला वह प्रसिद्ध अधिकारपत्र जो ब्रिटेन के राजा जॉन ने सन् १२१५ ई० में निकाला था। (मैग्ना कार्टा)

महाधिवक्ता(क्तृ)—पु०[महत्-अधिवक्तृ, कर्म० स०] आधुनिक विधिक क्षेत्र में किसी राज्य का वह प्रमुखतम अधिकारी जो उस राज्य के शासकीय विवादों में उच्च न्यायालय के सामने राजकीय पक्ष उपस्थित करने के लिए नियत होता है। (एडवोकेट जनरल)

महाध्वनिक—पु०[सं० अध्वन्-ठक्—इक, आध्वनिक, महत्-आध्वनिक, कर्म० स०] वह जो पुण्य कार्य के लिए हिमालय गया हो, और वहीं मर गया हो।
वि० मृत।

महान् (हत्)—वि० [सं० √मह् अति,] १ बहुत बड़ा। विशाल। २ बहुत अधिक बढ़कर या श्रेष्ठ। उच्चकोटि का।

महानंद—पु० [सं० महत्-आनंद, कर्म० स०] १ अत्यन्त आनंद। २ [ब० स०] मगध के नंद वंश का एक प्रसिद्ध राजा। २ मोक्ष।

महानंदा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] १ शराब। मदिरा। २ माघ-शुक्ला नवमी। ३. बंगाल की एक नदी जो दार्जिलिंग के पास से निकली है।

महानक—पु० [सं० महत्-आनक, कर्म० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

महानगर—पु० [सं० महत्-नगर, कर्म० स०] बहुत बड़ा नगर।

महानगर-पालिका—स्त्री० [ष० त०] महापालिका।

महानट—पु० [सं० महत्-नट, कर्म० स०] सर्वश्रेष्ठ नट, शिव।

महानद—पु० [सं० महत्-नद, कर्म० स०] १ पुराणानुसार एक नद का नाम। २ एक प्राचीन तीर्थ।

महानदी—स्त्री० [सं० महती-नदी, कर्म० स०] १ बहुत बड़ी और विशेष पवित्र नदी। जैसे—गंगा, यमुना, कृष्णा आदि। २ बंगाल की एक नदी जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

महानरक—पु० [महत्-नरक, कर्म० स०] पुराणानुसार २१ नरकों में से पाँचवाँ नरक।

महानवमी—स्त्री० [सं० महती-नवमी, कर्म० स०] आश्विन शुक्ल नवमी जिस दिन दुर्गा की पूजा बहुत धूमधाम से होती है।

महानस—पु० [सं० महत्-अनस्, कर्म० स०, टच्] पाकशाला। रसोई-घर।

महानस[illegible]—पु० [सं० ष० त०] वह जिसके छूने से चौका या रसोई अपवित्र हो जाती हो।

महानाटक—पु० [सं० महत्-नाटक, कर्म० स०] वह बहुत बड़ा नाटक जिसमें दस अंक हों।

महानाद—पु०[सं० महत्-नाद, कर्म० स०] १. घोर शब्द। २ [ब० स०] हाथी। ३ ऊँट। ४ शेर। सिंह। ५ बादल। मेघ। ६. शंख। ७ [illegible]। ८. शिव।
वि० [illegible] घोर शब्द करनेवाला।

महानाभ—पु० [सं० महत्-नाभि, ब० स०,+अच्] १. एक मंत्र जिसके [illegible] द्वारा [illegible] अस्त्र व्यर्थ किये जाते है। २ हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

महानारायण—पु० [सं० महत्-नारायण, कर्म० स०] विष्णु।

महानास—पु० [सं० महती-नासिका, ब० स०] महादेव।

महानिंब—स्त्री० [सं० महत्-निंब, कर्म० स०] नीम की जाति का एक पेड़। बकायन।

महानिद्रा—पु० [सं० महती-निद्रा, कर्म० स०] मृत्यु।

महानिधान—पु० [सं०महत्-निधान, कर्म० स०] बुभुक्षित धातुभेदी पारा।

महानियम—पु० [सं० महत्-नियम, ब० स०] विष्णु।

महानियुत—पु० [सं० महत्-नियुत, कर्म० स०] एक बहुत बड़ी संख्या। (बौद्ध)

महानिर्वाण—पु०[सं० महत्-निर्वाण, कर्म० स०] वह स्थिति जिसमें जीव की सत्ता का पूर्ण नाश हो जाता है। बौद्धों में इसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्धगण माने गये है।

महानिशा—स्त्री०[सं० महती-निशा, कर्म० स०] १. रात्रि का मध्य भाग। २ प्रलय की रात। ३. दुर्गा।

महानीच—पु० [सं० महत्-नीच, कर्म० स०] धोबी। रजक।

महानींबू—पु० [सं० महा+हिं० नींबू] बिजौरा नींबू।

महानीम—स्त्री०=महानिंब (बकायन)।

महानील—पु०[सं० महत्-नील, कर्म० स०] १. भृंगराज पक्षी। २ एक प्रकार का बढ़िया नीलम। ३ एक प्रकार का गुग्गुल। ४ एक प्रकार का साँप। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ सौ नील की संख्या।

महानीली—स्त्री०[सं० महती-नील, कर्म० स०] नीली अपराजिता।

महानुभाव—पु०[सं० महत्-अनुभाव, ब० स०] [भाव० महानुभावता] १ बहुत बड़ा व्यक्ति। २ उच्च विचारवाला तथा सत्यनिष्ठ व्यक्ति।

महानुभावता—स्त्री० [सं० महानुभाव+तल्+टाप्] महानुभाव होने की अवस्था या भाव।

महानृत्य—पु० [सं० महत्-नृत्य, कर्म० स०] १ तांडव नृत्य। २. शिव।

महानेत्र—पु०[सं० महत्-नेत्र, ब० स०] शिव।

महान्यायवादी—पु०[सं०]आज-कल विधिक क्षेत्र में, किसी राज्य या राष्ट्र का वह प्रधान अधिकारी जिसे लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाइयाँ करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। (एटर्नी जनरल)

महापंक—पु०[सं० महत्-पंक, कर्म० स०] बहुत बड़ा पाप। महापाप। (बौद्ध)

महापंचमूल—पु०[सं० पंचमूल द्विगु स०, महत्-पंचमूल, कर्म० स०]वैद्यक में, बेल, अरनी, सोनापाढ़ा, काश्मरी और पाटला इन पाँचों वृक्षों की जड़ों का समाहार।

महापंचविष—पु० [सं० पंच-विष, द्विगु स०, महत् पंचविष, कर्म० स०] वैद्यक में, शृंगी, कालकूट, मुस्तक, बछनाग और शंखकर्णी इन पाँचों विषों का समाहार।

महापंचांगुल—पु०[सं० पंच-अंगुल, द्विगु स०, महत्-पंचांगुल, कर्म० स०] लाल जड़ी या रेंड का वृक्ष।

महापक्ष—पु०[सं० महत्-पक्ष, ब० स०] १. गरुड़। २ एक प्रकार का राजहंस।
वि० १. बड़े बड़े परोंवाला। २. जिसके पक्ष या दल की संख्या बहुत अधिक हो।

महापक्षी (क्षिन्)—पु०[सं० महापक्ष+इनि] उल्लू।

महापथ—पुं०[महन्-पथिन्, कर्म० स०, समासान्त अच्]१ बहुत बडा लंबा, चौडा मार्ग। २ महाप्रस्थान का पथ।
विशेष—प्राचीनकाल मे मनुष्य स्वर्ग-प्राप्ति के उद्देश्य से हिमालय की किसी ऊँची चोटी पर जाते थे और उस पर से कूदकर प्राण त्यागते थे। ऐसी चोटी के पथ या मार्ग को महापथ कहते थे।
३ स्वर्गारोहण का साधन अर्थात् मृत्यु। ४ केदारनाथ और उसकी यात्रा। ५ एक नरक।

महापथ-गमन—पुं० [स० ष० त०] मरण। मृत्यु।

महापथिक—पुं०[स० कर्म० स०] प्राचीन काल मे वह व्यक्ति जो स्वर्गारोहण की दृष्टि से हिमालय पर्वत पर जाता था।

महापद्म—पुं०[स० ब० स०]१ कुबेर की नौ निधियों मे से एक निधि। २ कुबेर का अनुचर एक किन्नर। ३ आठ दिग्गजो मे से एक दिग्गज जो दक्षिण दिशा मे स्थित है। ४ हाथियो की एक जाति। ५ एक प्रकार का फनदार साँप। ६ एक प्रकार के दैत्य। ७ सफेद कमल। ८ महाभारत काल का एक नगर जो गगा के किनारे था। ९ जैनो के अनुसार महाहिमवान् पर का एक जलाशय। १० सौ पद्म की सख्या। ११ मगध के नदवश का अतिम सम्राट्।

महापवित्र—पुं०[स० महत्-पवित्र, कर्म० स०] विष्णु।

महापातक—पुं०[स० महत्-पातक, कर्म० स०] वह बहुत बडा तथा घोर पाप जिसके फल-भोग के लिए मनुष्य को नरक मे जाना पडता है।

महापातकी (किन्)—पुं०[स० महापातक+इनि] वह जिसने महापातक किया हो।

महापातर†—पुं०=महापात्र।

महापात्र—पुं० [स० महत्-पात्र, कर्म० स०] १. वह ब्राह्मण जो मृत व्यक्ति का दाह कर्म करता है तथा उसके सबधियो से श्राद्ध का दान लेता है। महाब्राह्मण। २. महामत्री। महामात्य।
पुं०[स० महत्-पाद, ब० स०] शिव।

महापाप—पुं०[स० महत्-पाप, कर्म० स०] बहुत बडा। पाप। महापातक।

महापालिका—स्त्री० [महा नगरपालिका का सक्षिप्त रूप] १ प्रमुख तथा अधिक जनजनसख्यावाले नगर की स्वायत्त शासनिक इकाई, जिसे नगरपालिका की अपेक्षा अधिक अधिकार प्राप्त होते है। (सिटी कारपोरेशन) २ नगर-महापालिका द्वारा शासित भू-भाग।

महापाली—स्त्री०=महापालिका।

महापाश—पुं०[स०महत्-पाश,ब०स०]पुराणानुसार एक प्रकार के यमदूत।

महापाशुपत—पुं०[स० महत्-पाशुपत, कर्म० स०] १ शैवो का एक प्राचीन सप्रदाय जिसमे पशुपति की उपासना होती थी। २ बकुल। मौलसिरी।

महापीठ—पुं०[स० महत्-पीठ, कर्म० स०]१ बहुत बडा पीठ या पुण्य-स्थान। जैसे—कामरूप किसी समय तान्त्रिको का महापीठ माना जाता था। २ वह पवित्र आधार या स्थान जहाँ किसी देवी, देवता की प्रतिमा प्रतिष्ठित हो। मूर्ति का आधार। ३ उन प्रसिद्ध स्थानो मे से हर एक जहाँ सती के शव के अग कटकर गिरे थे। ४ शकर मठ। ५ कोई बहुत बडा स्थान।

महापीलु—पुं०[स० महत्-पीलु, कर्म० स०] एक प्रकार का पीलु वृक्ष।

महापुट—पुं० [स०] वैद्यक मे, भस्म, रस आदि तैयार करने की एक विधि।

महापुण्य—पुं०[स० महत्-पुण्य, कर्म० स०] १. बहुत बडा पुण्य। ३ एक बोधिसत्त्व का नाम।

महापुण्या—स्त्री०[स० महापुण्य+टाप्] एक नदी। (पुराण०)

महापुत्र—पुं०[स० महत्-पुत्र, कर्म० स०] पुत्र का पुत्र। पोता।

महापुर—पुं०[स० महत्-पुर, कर्म० स०] १ प्राचीन काल मे वह पुर या नगर जो प्राचीर से रक्षित होता था। २ एक प्राचीन तीर्थ।

महापुराण—पुं० [स० महत्-पुराण, कर्म० स०] अठारह पुराणो मे से एक जिसके रचयिता व्यास थे।

महापुरी—स्त्री०[स० महती-पुरी, कर्म० स०] राजधानी।

महापुरुष—पुं०[स० महत्-पुरुष, कर्म० स०]१ बहुत बडा तथा उच्च विचारोवाला पुरुष। २ नारायण। ३ व्यग्यार्थ मे दुष्ट व्यक्ति।

महापुष्प—पुं०[स० महत्-पुष्प, ब० स०]१ कुद का वृक्ष। २ काला मूँग। ३ लाल कनेर। ४ एक प्रकार का कीडा। (सुश्रुत)

महापुष्पा—स्त्री०[स० महापुष्प+टाप्] अपराजिता (लता)।

महापूजा—स्त्री०[स०महती-पूजा, कर्म०स०] आश्विन के नवरात्र मे की जानेवाली दुर्गा की पूजा।

महापृष्ठ—पुं०[स० महत्-पृष्ठ, ब० स०] ऊँट।

महाप्रजापति—पुं०[स० महत्-प्रजापति, कर्म० स०] विष्णु।

महाप्रतिहार—पुं०[स० महत्-प्रतिहार, कर्म० स०] १ प्राचीन काल का एक उच्च राज कर्मचारी, जो आज-कल के कोतवाल के समान होता था। २ मुख्य-द्वारपाल।

महा-प्रभाव—वि०[स०] [स्त्री० महा-प्रभावा] दूसरो को अपना झूठा प्रभाव दिखलाकर उनपर आतक जमाने या रोब गाँठनेवाला।

महाप्रभु—पुं०[स० महत्-प्रभु, कर्म० स०] १. ईश्वर। २. शिव। ३ विष्णु। ४ इन्द्र। ५ राजा। ६ सन्यासी। ७ स्वामी वल्लभाचार्य। ८ चैतन्य।

महाप्रलय—पुं०[स० महत्-प्रलय, कर्म० स०] वह प्रलय जिसमे सब लोको, उनके निवासियो, देवताओ तथा ब्रह्मा का भी नाश हो जाता है।

महाप्रशासक—पुं०[स० महत्-प्रशासक, कर्म० स०] वह प्रशासक जिसके निरीक्षण तथा अधीनता मे अन्य प्रशासक काम करते हो। (ऐडमिनिस्ट्रेटर जनरल)

महाप्रसाद—पुं०[स० महत्-प्रसाद, कर्म० स०]१ देवी देवता को चढाया हुआ प्रसाद। २ जगन्नाथ जी को चढाया हुआ भात। ३ मास आदि ऐसे खाद्य पदार्थ जिन्हे वैष्णव अखाद्य पदार्थ समझते हैं। (परिहास और व्यग्य)। ४ सिक्खो मे पकाया हुआ मास। महाप्रसाद।

महाप्रस्थान—पुं०[स० महत्-प्रस्थान, कर्म० स०] १ प्राचीन काल मे स्वर्गारोहण के उद्देश्य से महापथ के द्वारा की जानेवाली दुर्गम पर्वतो की यात्रा। २ मृत्यु। मौत।

महाप्राण—पुं०[स० महत्-प्राण, ब० स०] व्याकरण के अनुसार ऐसा वर्ण जिसके उच्चारण मे प्राण-वायु का विशेष व्यवहार करना पडता है। जैसे—ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, और ह्।

महाफल—वि०[स० महत्-फल, ब० स०]१ (वृक्ष) जिसमे बहुत अधिक फल लगते हो। २ (कार्य) जिसका बहुत अच्छा और अधिक फल मिलना हो।

महाफला—स्त्री०[स० महाफल+टाप्] कडआ कद्दू।

महामंत्री (त्रिन्)—पु०[स० महत्-मंत्रिन्, कर्म० स०]१ सबसे बडा मत्री। २. प्राचीन काल मे राज्य या साम्राज्य का प्रधान मंत्री।

महामणि—पु०[स० महत्-मणि, कर्म० स०] अत्यन्त बहुमूल्य रत्न।

महामति—वि०[स० महती-मति, व० स०] बहुत बडा बुद्धिमान्।
पु०१ गणेश। २ एक बोधिसत्व।

महामत्स्य—पु०[स० महत्-मत्स्य, कर्म० स०] बहुत बडी मछली।

महामद—पु०[स० महत्-मद, व० स०] मस्त हाथी।

महामना (नस्)—वि०[सं० महत्-मनस् व० स०] जिसका मन या अन्त करण बहुत उच्च स्तर पर या और सब प्रकार से शुद्ध हो। उदारचित। जैसे—महामना मालवीय जी।

महामह—पु०[स० महत्-मह, कर्म० स०] महोत्सव।

महामहिम (न्)—वि०[स० महत्-महिमन्, व० स०] जिसकी महिमा बहुत अधिक हो।
विशेष—इसका प्रयोग आज-कल अ० के 'हिज एक्सलेन्सी' की तरह या उसके स्थान पर होने लगा है।

महामहोपाध्याय—पु०[स०महत्-महोपाध्याय, कर्म० स०] १. बहुत बडा गुरु, पडित या विद्वान्। २.एक उपाधि जो अंगरेजी शासन मे सस्कृत के प्रकाड पडितो को दी जाती थी।

महामांस—पु०[स० महत्-मास, कर्म० स०]१ गौ का गोश्त। गोमास। २. मनुष्य का मास।

महामाई—स्त्री०[स० महा+हि० माई]१. दुर्गा। २. काली।

महामात्य—पु०[स० महत्-अमात्य, कर्म० स०] महामत्री।

महामात्र—पु०[स० महती-मात्रा, व० स०] [स्त्री०महामात्री]१.प्राचीन भारत मे, एक प्रकार का उच्चपदस्थ राजकीय अधिकारी। २ महामत्री। ३ महावत।
वि०१ बडा। २ उच्च कोटि का। ३ धनवान्।

महामान्य—वि०[स० महत्-मान्य, कर्म० स०] बहुत अधिक माननीय।

महामाय—वि०[स० महती-माया, व० स०] अत्यन्त मायावी।
पु०१ शिव। २ विष्णु।

महामाया—स्त्री०[स० महती-माया, कर्म० स०] १ वह सासारिक भ्रम जिसके फलस्वरूप यह मिथ्या जगत वास्तविक सा प्रतीत होता है। २ प्रकृति। ३ दुर्गा। ४. गगा। ५ गौतम बुद्ध की माता। ६. एक छद।
पु० विष्णु।
वि० मायावी।

महामारी—स्त्री०[स० महत्√मृ (मरना)+णिच्+अण्+ङीप्] १. ऐसा सक्रामक रोग जिससे बहुत अधिक लोग मरे। मरक। मरी। (एपिडेमिक) जैसे—हैजा, चेचक आदि। २. महाकाली का एक नाम।

महामारी विज्ञान—पु०[स०] वह आधुनिक विज्ञान जिसमे इस बात का विचार होता है कि मरक या महामारियाँ किन कारणो से और कैसे फैलती है और उन्हे कैसे रोका या कम किया जा सकता है। (एपिडेमियालोजी)

महामार्ग—पु०[स० महत्-मार्ग, कर्म० स०]१. बहुत बडा मार्ग या रास्ता। वह बहुत बडा या लबा रास्ता जिसपर से होकर कोई चीज आती-जाती हो। जैसे—गगा या यमुना का महामार्ग। ३. परलोक या स्वर्ग का रास्ता। महापथ। (दे०)

महामाल—पु०[सं० महती-माला, व० स०] शिव।

महामालिनी—स्त्री०[स० महती-मालिनी, कर्म० स०] नाराच (छद)।

महामाष—पु०[स० महत्-माष, कर्म० स०] बडा उडद।

महामुख—पु०[स० महत्-मुख, व० स०] १ घड़ियाल। २ नदी का मुहाना। ३ शिव।

महामुद्रा—स्त्री०[स० महती-मुद्रा, कर्म० स०]१. योग साधन मे एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा या अगो की स्थिति। २. तात्रिक उपासना मे वह सिद्ध योगिनी जिसे साधक अपनी सहचरी बनाकर साधना करता है। कहते है कि महामुद्रा की साधना कर लेने पर साधक सब प्रकार के वाह्य अनुष्ठानो से मुक्त हो जाता है। ३ बौद्ध तात्रिको के अनुसार भगवती नैरात्मा जिसकी उपासना परम सुखद कही गई है और जिसकी साधना मे पूरे उतरने पर ही साधक की गिनती सिद्धाचार्यों मे होती है। ४. एक बहुत बडी सख्या की सज्ञा।

महामुनि—पु० [स० महत्-मुनि, कर्म० स०] १. बहुत बडा और मुनियो मे श्रेष्ठ मुनि। जैसे—अगस्त्य, व्यास आदि। गौतम बुद्ध। ३ कृपाचार्य। ४ काल। ५ एक जिन देव। ६ तुंबुरु नामक वृक्ष।

महामूर्ति—स्त्री०[स० महती-मूर्ति, व० स०] १. विष्णु। २ न्यायमूर्ति।

महामूल—पु०[स० महत्-मूल, कर्म० स०] प्याज।

महामूल्य—पु०[स० महत्-मूल्य, व० स०] माणिक।
वि० १ बहुमूल्य। कीमती। २ महँगा।

महामृग—पु०[स० महत्-मृग, कर्म० स०]१ सबसे बडा पशु, हाथी। २ बहुत बडा पशु। ३ शरभ।

महामृत्युंजय—पु०[स० महत्-मृत्युजय, कर्म० स०]१ शिव। २. शिव का अकाल मृत्यु निवारक एक मत्र। ३ एक औषध।

महामेद—पु०[स० महत्-मेद, कर्म० स०] महामेदा।

महामेदा—स्त्री०[स० महामेद+टाप्] एक प्रकार का कद जो देखने मे अदरक के समान होता है।

महामेध—पु०[स० महती-मेधा, व० स०] शिव।

महामेधा—स्त्री०[सं० महामेध+टाप्] दुर्गा।

महामोह—पु०[स० महत्-मोह, कर्म० स०] अत्यन्त या घोर मोह।

महामोहा—स्त्री०[स० महामोह+अच्+टाप्] दुर्गा।

महाय*—वि०[स० महा]१ बहुत बड़ा। महान्। २ बहुत अधिक। महा।

महायक्ष—पु०[स० महत्-यक्ष, कर्म० स०]१ यक्षो का राजा। २. एक प्रकार के बौद्ध देवता।

महायज्ञ—पु०[स० महत्-यज्ञ, कर्म० स०]१ बहुत बड़ा यज्ञ। २ हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किये जानेवाले पाँच प्रमुख धार्मिक कर्म। पचयज्ञ।

महायम—पु०[स० महत्-यम, कर्म० स०] यमराज।

महायात्रा—स्त्री० [स० महती-यात्रा कर्म० स०] मृत्यु।

महायान—पु०[स० महत्-यान, कर्म० स०]१. उत्तम, प्रशस्त और श्रेष्ठ मार्ग। २ बौद्ध धर्म की वह भक्ति प्रधान शाखा या सम्प्रदाय जो हीन यान की तुलना मे बहुत श्रेष्ठ माना जाता था और जिसका आरम्भ सम्राट् कनिष्क के समय हुआ था। इसमे उदारता, परोपकार, सदाचार आदि तत्त्वो की प्रधानता थी। बोधिसत्व की भावना और बुद्ध भगवान् की

प्रतिमाएँ बनाकर उनकी पूजा करने की प्रणाली इसी मत से निकली थी। यह नामकरण बौद्धों की पूर्वी शाखा ने किया था।

महायानी (निन्)—वि० [सं० महायान+इनि] महायान-सम्बन्धी। महायान का।
पुं० महायान मत या सम्प्रदाय का अनुयायी।

महायुग—पुं० [सं० महत्-युग, कर्म० स०] चारों युगों का समूह। चौकड़ी।

महायुत—पुं० [सं० महत्-अयुत, कर्म० स०] सौ अयुत की संख्या की संज्ञा।

महायुद्ध—पुं० [सं० महत्-युद्ध, कर्म० स०] बहुत बड़े तथा व्यापक भू-भाग में लड़ा जानेवाला ऐसा युद्ध जिसमें अनेक राष्ट्र सम्मिलित हों और जिसमें बहुत अधिक नर-संहार तथा विनाश हो। (ग्रेट वार) जैसे—प्रथम या द्वितीय महायुद्ध।

महायुध—पुं० [सं० महत्-आयुध, ब० स०] शिव।

महायोगी (गिन्)—पुं० [महत्-योगिन्, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा योगी। २ शिव। ३ विष्णु। ४ मुर्गा।

महायोगेश्वर—पुं० [सं० महत्-योगेश्वर, कर्म० स०] पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु और कश्यप जो बहुत बड़े ऋषि और योगी माने गये हैं।

महायोगेश्वरी—स्त्री० [सं० महती-योगेश्वरी, कर्म० स०] १ दुर्गा। २ नाग दौन।

महायोजन—पुं० [सं० महत्-आयोजन, कर्म० स०] बहुत बड़ा भारी आयोजन। महत् आयोजन।

महायोनि—स्त्री० [सं० महती-योनि, कर्म० स० या ब० स०] योनि के अधिक फैलने का एक रोग। (वैद्यक)

महारंभ—वि० [सं० महत्-आरंभ, ब० स०] १ बहुत बड़े काम का श्रीगणेश करनेवाला। २. बड़ा काम।

महार—स्त्री०=मुहार (ऊँट की नकेल)।

महारक्त—पुं० [सं० महत्-रक्त, कर्म० स०] मूँगा।

महारजत—पुं० [सं० महत्-रजत, कर्म० स०] १. सोना। २ धतूरा।

महारजन—पुं० [सं० महत्-रजन, कर्म० स०] १ कुसुम का फूल। २ सोना। स्वर्ण।

महारण्य—पुं० [सं० महत्-अरण्य, कर्म०स०] बहुत बड़ा या भारी जंगल।

महारत—स्त्री० [फा०] १. हस्तकौशल। २. निपुणता। ३ अभ्यास।

महारत्न—पुं० [सं० महत्-रत्न, कर्म० स०] मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, गोमेद, पुष्पराग, पन्ना, मूंगा और नीलम इन नौ रत्नों में से हर एक।

महारथ—पुं० [सं० महत्-रथ, ब० स०] महारथी।

महारथी (थिन्)—पुं० [महत्-रथिन्, कर्म० स०] प्राचीन भारत में, वह बहुत बड़ा योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सकने में समर्थ माना जाता था।

महारथ्या—स्त्री० [सं० महती-रथ्या, कर्म० स०] चौड़ी और बड़ी सड़क।

महारनी—स्त्री०=मुहारनी।

महारस—पुं० [सं० महत्-रस, ब० स०] १ काँजी। २ ऊख। ३ खजूर। ४ कसेरु। ५ जामुन। ६ पारा। ७ अभ्रक। ८. ईंगुर। ९ कांतिसार लोहा। ११. सोना-मक्खी। १२ रूपा-मक्खी।

महाराग—पुं० [सं० महा-राग, कर्म० स०] मध्ययुगीन धार्मिक साधना में, वह राग या परम अनुराग जो साधक के मन में परमात्मा के प्रति होता है। कहते हैं, कि बिना इस प्रकार का राग उत्पन्न हुए इस जन्म में ईश्वर की प्राप्ति असंभव होती है।

महाराज—पुं० [सं० महत्-राजन्, कर्म०स०] [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। राजाओं का प्रधान राजा। २. गुरु, धर्माचार्य, पूज्य ब्राह्मण आदि के लिए संबोधन सूचक पद। ३. भोजन बनानेवाला ब्राह्मण रसोइया। ४. अंगरेजी शासनकाल में बड़े राजाओं को दी जानेवाली उपाधि।

महाराजाधिराज—पुं० [सं० महत्-राजाधिराज, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा राजा। २ अंगरेजी शासन में एक प्रकार की उपाधि जो प्रायः बड़े राजाओं को मिलती थी।

महाराजिक—पुं० [सं० महाराजि-राजि, ब० स०, +कन्] एक प्रकार के देवता जिनकी संख्या कहीं २२६ और कहीं ४००० कही गई है।

महाराज्ञी—स्त्री० [सं० महती-राज्ञी, कर्म० स०] १ दुर्गा। २. महारानी।

महाराज्य—पुं० [सं० महत्-राज्य, कर्म० स०] बहुत बड़ा राज्य। साम्राज्य।

महाराज्यपाल—पुं० [सं० महत्-राज्यपाल, कर्म० स०] किसी बहुत बड़े देश या राज्य के द्वारा नियुक्त वह सबसे बड़ा अधिकारी जिसके अधीन कई प्रांतों या प्रादेशिक राज्यपाल हों। (गवर्नर जनरल)

महाराणा—पुं० [सं० महा+हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि—स्त्री० [सं० महती-रात्रि, कर्म० स०] १ वह प्रलयवाली रात, जब ब्रह्मा का लय हो जाता है। २ तांत्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्तों का समय जो बहुत ही पवित्र समझा जाता है। ३ दुर्गा।

महारावण—पुं० [सं० महत्-रावण, कर्म० स०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

महारावल—पुं० [सं० महा+हिं० रावल] जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—पुं० [सं० महत्-राष्ट्र, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा राष्ट्र। २. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश जो अब भारत का एक राज्य है तथा जिसकी राजधानी बम्बई है। ३ उक्त राज्य का निवासी। मराठा।

महाराष्ट्री—स्त्री० [सं० महाराष्ट्र+अण्+ङीप्] १. मध्ययुग में एक प्रकार की प्राकृत भाषा जो महाराष्ट्र देश में बोली जाती थी। २. दे० 'मराठी'। ३ जल-पीपल।

महाराष्ट्रीय—वि० [सं० महाराष्ट्र+छ—ईय] महाराष्ट्र-सम्बन्धी। महाराष्ट्र का।

महारुख—पुं० [सं० महावृक्ष] १. सेहुँड़। थूहर। २. एक प्रकार का सुन्दर जंगली वृक्ष।

महारुद्र—पुं० [सं० महत्-रुद्र, कर्म० स०] शिव।

महारुरु—पुं० [सं० महत्-रुरु, कर्म० स०] मृगों की एक जाति।

महारूप—पुं० [सं० महत्-रूप, ब० स०] शिव।

महारूपक—पुं० [सं० महत्-रूपक, कर्म० स०] साहित्य में रूपक या नाटक का एक प्रकार या भेद।

महारोग—पु०[स० महत्-रोग, कर्म० स०] वहुत वडा और प्राय. असाध्य रोग।

महारोगी (गिन्)—वि०[स० महत्-रोगिन्] किसी महारोग से पीडित।

महारौद्र—पु०[स० महत्-रौद्र, कर्म० स०]१ शिव। २ वाइस मात्राओ वाले छन्दो की सामूहिक संज्ञा।

महारौरव—पु० [स०महत्-रौरव, कर्म० स०] १ पुराणनुसार एक नरक का नाम। २ एक प्रकार का साम।

महार्घ—वि० [सं० महत्-अर्घ, व० स०] [भाव० महार्घता] १ वहुमूल्य। २ मँहगा।

महार्घता—स्त्री० [स० महार्घ+तल्+टाप्] महार्घ होने की अवस्था या भाव।

महार्घ्य—वि०=महार्घ।

महार्णव—पु० [सं० महत्-अर्णव, कर्म० स०] १ महासागर। २. शिव। ३ पुराणानुसार एक दैत्य जिसे भगवान् ने कूर्म अवतार मे अपने दाहिने पैर से उत्पन्न किया था।

महार्द्रक—पु० [स० महत्-आर्द्रक, कर्म० स०] १. जगली अदरक। २. सोठ।

महार्वुद—पु० [स० महत्-अर्वुद, कर्म० स०] सौ करोड की सख्या।

महार्ह—पु० [स० महत्-अर्ह, व० स०] सफेद चदन।
वि०=महार्घ।

महाल—पु० [अ० महल का वहु० रूप] १. महल्ला। टोला। २ कोई ऐसी चीज या जगह जिसमे एक ही तरह के वहुत से जीव एक साथ रहते हो। जैसे—शहद की मक्खियों का महाल अर्थात् छत्ता। ३ जमीन के वदोवस्त के काम के लिए किया हुआ जमीन का ऐसा विभाग, जिसमे कई गाँव होते है। ४ मध्य युग मे, ऐसी जमीदारी जिसमे वहुत-सी पट्टियाँ या हिस्सेदार होते थे।
वि०=मुहाल (वहुत कठिन या दुष्कर)।

महालक्ष्मी—स्त्री० [स० महती-लक्ष्मी, कर्म० स०] १ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति। २. वह कन्या जो दुर्गापूजा के उत्सव मे दुर्गा का रूप धारण करती है। ३. नारायण की एक शक्ति। ४ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण होते हैं।

महालय—पु० [सं० महत्-आलय, कर्म० स०] १. महाप्रलय। २ पितृपक्ष। ३ तीर्थ। ४. नारायण।

महालया—स्त्री० [स० महालय+टाप्] आश्विन कृष्ण अमावस्या, यह पितृ विसर्जन का दिन है।

महालिंग—पु० [सं० महत्-लिंग, व० स०] महादेव।

महालेखापाल—पु०[स० महत्-लेखापाल, कर्म०स०] वह लेखपाल जिसकी अधीनता तथा निरीक्षण मे अन्य लेखापाल विशेपत किसी सार्वजनिक विभाग के सव लेखपाल काम करते हो। (अकाउटेंट जनरल)

महालोक—पु० [स० महत्-लोक, कर्म० स०] ऊपर के सात लोको मे से चौथा लोक। महालोक।

महालोध्र—पु० [स० महत्-लोध्र, कर्म० स०] पठानी लोव।

महालोल—पु० [स० महत्-लोल, कर्म० स०] कौआ।

महालौह—वि० [स० महत्-लौह, कर्म० स०] चुवक।

महावक्ष (क्षम्)—पु० [सं० महत्-वक्षस्, व० स०] महादेव।

महावट—पु० [स० महत्-वट, कर्म० स०] १. वहुत वडा वट वृक्ष। २ पुराणानुसार एक वट वृक्ष जिसके साथ मनु ने प्रलयकाल में नौका वाँवी थी।
स्त्री० [हिं० माघ+वट (प्रत्य०)] माघ के महीने मे होनेवाली वर्षा।

महावत—पु० [स० महामात्र] हाथीवान। फीलवान।

महावन—पु० [स० महत्-वन, कर्म० स०] १. वहुत वडा वन या जंगल। २ वृन्दावन के अंतर्गत एक वन।

महावर—पु० [स० महावर्ण] लाख से तैयार किया जानेवाला एक तरह का गहरा चटकीला लाल रंग जिससे स्त्रियाँ, अपने पैर चित्रित करती तथा तलुए रगती हैं।

महावराह—पु० [स० महत्-वराह, कर्म० स०] विष्णु का तीसरा अवतार जिसमे उन्होने वाराह का रूप धारण किया था।

महावरी—वि० [हिं० महावर] १ महावर-संवंधी। २. महावर के रग का।
स्त्री० वह छोटा फाहा जिससे पैरो मे महावर लगाया जाता है।

महावरेदार†—वि०=मुहावरेदार।

महावल्ली—स्त्री० [स० महती-वल्ली, कर्म० स०] माधवी (लता)।

महावस—पु० [स० महती-वसा, व० स०] १ मगर। २ सूंस।

महावस्त्र—पु० [स०] १ सव कपडो के ऊपर अवा, कवा आदि की तरह पहना जानेवाला वह कपडा जो साधारण कपडो से अधिक चौडा तथा लवा होता है और किसी वहुत वडे अधिकार, पद आदि का सूचक होता है। (रोव) २ दे० 'खिलअत'।

महावाक्य—पु० [स० महत्-वाक्य, कर्म० स०] १. वहुत वडा वाक्य। कोई महत्त्व पूर्ण वाक्य या मत्र। जैसे—सोऽह, तत्त्वमसि आदि। ३ दान देते समय पढा जानेवाला मत्र या सकल्प।

महावाणिज्यदूत—पु० [स० महत्-वाणिज्यदूत, कर्म० स०] किसी देश का वह वाणिज्य दूत जो किसी अन्य देश की राजधानी में रहता हो और जो उस देश मे स्थित अपने यहाँ के अन्य वाणिज्य दूतो का प्रधान हो। (कॉन्सल जनरल)

महावात—पु० [स० महत्-वात, कर्म० स०] वहुत जोरो से या तेज चलनेवाली हवा। जैसे—झझा, तूफान, प्रवात आदि।

महावाद—पु० [स० महत्वाद, कर्म० स०] महत्त्वपूर्ण वाद-विवाद। शास्त्रार्थ।

महावादी (दिन्)—वि० [स० महावाद+इनि] महावाद-सवधी।
पु० वह जो शास्त्रार्थ करता हो।

महावारुणी—स्त्री० [स० महती-वारुणी, कर्म० स०] गगा-स्नान का एक पर्व या योग जो शनिवार के दिन चैत्र कृष्ण त्रयोदशी पडने पर होता है।

महावाहन—पु० [स० कर्म० स०] एक वहुत वडी सख्या की सज्ञा।

महाविक्रम—पु० [स० महत्-विक्रम, व० स०] सिंह। शेर।
वि० वहुत वडा वलवान् या विक्रमी।

महाविद्या—स्त्री० [स० महती-विद्या, कर्म० स०] १ इन दस देवियों मे से हर एक—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, वँगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। (तत्र) २ दुर्गा। ३. गगा।

महाविद्यालय—पु०[स० महत्-विद्यालय, कर्म० स०] वह बड़ा विद्यालय जिसमे ऊँची कक्षाओ की पढाई होती है।(कालेज)

महाविद्येश्वरी—स्त्री० [स० महती-विद्येश्वरी, कर्म० स०] दुर्गा की एक मूर्ति या रूप।

महाविभूति—पुं० [स० महती-विभूति, ब० स०] विष्णु।

महाबिल—पु० [म० महत्-बिल, कर्म० स०] १. आकाश। २. अत.करण।

महाविष—पु० [स० महत्-विष, ब०स०] वह बहुत अधिक जहरीला सॉप जिसके काटते ही मृत्यु हो जाय।

महाविषुव—पु० [सं० महत्-विषुव, कर्म० स०] सूर्य के मीन से मेष राशि मे प्रवेश करने का समय।

महावीचि—पु० [स० महत्-वीचि, ब० स०] मनु के अनुसार एक नरक का नाम।

महावीर—वि० [स० महत्-वीर कर्म० स०] बहुत बडा वीर।
पु० १ हनुमान जी। २. शेर। सिंह। ३ गरुड। ४ देवता। ५. वज्र। ६ घोडा। ७ बाज नामक पक्षी। ८. मनु के पुत्र मरवानल का एक नाम। ९ गौतम बुद्ध। २ रानी त्रिशला के गर्भ से उत्पन्न राजा सिद्धार्थ के पुत्र जो जैनियों के चौबीसवें और अतिम जिन या तीर्थंकर माने जाते हैं।

महावीर-चक्र—पु०[मध्य० स०] स्वतत्र भारत मे सेना के किसी वीर को रणभूमि मे असामान्य वीरता दिखाने पर केन्द्रीय पदक या राष्ट्रपति की ओर से दिया जानेवाला एक विशेष पदक जो परमवीर चक्र से कुछ घटकर माना जाता है।

महावीर्य—पु० [सं० महत्-वीर्य, ब० स०] १ ब्रह्मा। २ एक बुद्ध का नाम। ३ जैनो के एक अर्हत्। ४ तामस शौच्य मन्वतर के एक इद्र। ५ वाराही कन्द।

महावीर्या—स्त्री० [स० महावीर्य+टाप्] १ सूर्य की पत्नी सज्ञा का एक नाम। २ महा-शतावरी। ३. वन-कपास।

महावृक्ष—पु० [स० महत्-वृक्ष, कर्म० स०] १ सेंहुड। २. करज। ३ ताड। ४ महापीलु।

महावेग—पु० [स० महत्-वेग, ब० स०] १ शिव। २ गरुड।

महावेगा—स्त्री० [स० महावेग+टाप्] स्कद की अनुचरी एक मातृका।

महाव्याधि—स्त्री० [सं० महत्-व्याधि, कर्म० स०] बहुत कठिन और प्राय अचिकित्स्य रोग।

महाव्याहृति—स्त्री० [सं० महती-व्याहृति, कर्म० स०] ऊपर स्थित भू. भुव. और स्व इन तीनो लोको का समाहार।

महाव्योम—पु० [सं० महत्-व्योमन, कर्म० स०] वह सारा अनन्त व्योम जिसमे सारा ब्रह्मांड स्थित है। (फर्मामिन्ट)

महाव्रण—पु० [स० महत्-व्रण, कर्म० स०] १. कभी अच्छा न होनेवाला व्रण २ नासूर।

महाव्रत—पु० [सं० महत्-व्रत, कर्म० स०] १. ऐसा व्रत जो लगातार १२ वर्षो तक चलता रहे। २. आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र।

महाव्रती (तिन्)—पुं० [स० महाव्रत+इनि] १. वह जिसने महाव्रत धारण किया हो। २ शिव।

महाशंख—पुं० [स० महत्-शख, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा शंख। २. ललाट। ४. कनपटी की हड्डी। ३. मनुष्य की ठठरी। ५ कुबेर की नौ निधियों मे से एक निधि। ६ एक प्रकार का सॉप। ७. सौ शख की सख्या की संज्ञा।

महाशक्ति—स्त्री०[स० महती-शक्ति, कर्म० स०]१ विश्व की रचना या सृष्टि करनेवाली मूल शक्ति। २ दुर्गा का एक नाम। ३. प्रकृति। ४. आज-कल कोई बहुत बडा या परम प्रबल राष्ट्र जिसकी सैनिक शक्ति बहुत बडी हो। (ग्रेट पावर)
पु० १ कार्तिकेय। २. शिव।

महाशठ—पु० [सं० महत्-शठ, कर्म० स०] पीला धतूरा।

महाशतावरी—स्त्री० [स० महती-शतावरी, कर्म० स०] बड़ी शतावरी। सतावर।

महाशय—पु० [सं० महत्-आशय, ब० स०] १. उच्च और उदार आशयो या विचारोवाला व्यक्ति। सज्जन। (प्राय भले आदमियों के नामों के साथ आदरार्थक प्रयुक्त) २. समुद्र। सागर।

महाशय्या—स्त्री० [सं० महती शय्या, कर्म० स०] १. राजाओ के सोने की शय्या। २ सिंहासन।

महाशल्क—पु० [स० महत्-शल्क, ब० स०] झीगा मछली।

महाशाखा—स्त्री० [स० महती-शाखा, ब० स०] नागबला।

महाशासन—पु०[स० महत्-शासन, कर्म० स०] १ ऐसी आज्ञा जिसका पालन अनिवार्य हो। २. राजा का वह मत्री जो उसकी आज्ञाओं या दानपत्रो आदि का प्रचार करता हो।

महाशिव—पु० [स० महत्-शिव, कर्म० स०] महादेव।

महाशीता—स्त्री० [सं० महती-शीता, कर्म० स०] शतमूली।

महाशुक्ति—स्त्री० [सं० महती-शुक्ति, कर्म० स०] सीपी।

महाशुक्ला—स्त्री० [स० महती-शुक्ला, कर्म० स०] सरस्वती। (देवी)

महाशुभ्र—पु० [सं०महत्-शुभ्र, कर्म० स०] चाँदी।

महाशून्य—पु० [सं० महत्-शून्य, कर्म० स०] आकाश।

महाशोण—पु० [स० महत्-शोण, कर्म० स०] सोन (नद)।

महाश्मशान—पुं० [सं० महत्-श्मशान, कर्म० स०] काशी नगरी।
विशेष—ऐसा कहा जाता है कि काशी के मणिकर्णिका घाट पर चौबीसो घंटे एक न एक शव जलता रहता है।

महाश्रावणिका—स्त्री० [स० महती-श्रावणिका, कर्म० स०] गोरखमुडी।

महाश्वास—पु० [स० महत्-श्वास, कर्म० स०] १ एक प्रकार का श्वास रोग। २ मरने के समय का अन्तिम श्वास।

महाश्वेता—स्त्री०[स० महती-श्वेता,कर्म० स०] १. सरस्वती। (देवी) २. दुर्गा। ३. सफेद शक्कर। ४. सफेद अपराजिता।

महाषष्ठी—स्त्री० [सं० महती-षष्ठी, कर्म० स०] १ दुर्गा। २ सरस्वती (देवी)।

महाष्टमी—स्त्री० [सं० महती-अष्टमी, कर्म० स०] आश्विन शुक्ला अष्टमी।

महा-संक्रांति—स्त्री० [सं० महती-सक्राति, कर्म० स०] मकर सक्राति।

महासंस्कार—पु० [स० महत्-सस्कार, कर्म० स०] मृतक की अत्येष्टि-क्रिया।

महासंस्कारी (रिन्)—पु० [स० कर्म० स०] सत्रह मात्राओं के छदो की सज्ञा।

महासत्ता—स्त्री० [स० महती-सत्ता, कर्म० स०] एक विश्व-व्यापिनी सत्ता। (जैन)

महासत्त्व—पु० [स० महत्-सत्त्व, ब० स०] १ कुबेर। २ शाक्य मुनि। ३ एक बोधिसत्व।

महासन--पु० [स० महत्-आसन, कर्म० स०] सिंहासन।

महासभा—स्त्री० [स० महती-सभा, कर्म० स०] १ कोई बहुत बडी सभा। २ हिन्दू महासभा नामक एक भारतीय दल। ३. राष्ट्र-सघ के तत्त्वावधान मे होनेवाली वह सभा जिसमे सबद्ध समस्त राष्ट्रो के प्रतिनिधि सम्मिलित होते है।

महासभाई—पु० [स० महासभा+हिं० आई (प्रत्य०)] (हिन्दू) महासभा (दल) का सदस्य या कार्यकर्ता।

महासमुद्र—पुं० [स०] प्रादेशिक समुद्र को छोड़कर शेष समुद्र का वह सारा विस्तार जिसमे सभी देशो के जहाज बिना रोक-टोक आ-जा सकते हैं। (हाई सी)

महासर्ग—पु० [स० महत्-सर्ग, कर्म० स०] प्रलय के उपरान्त होनेवाली सृष्टि।

महासर्ज—पु० [स० महत्-सर्ज, कर्म० स०] कटहल का वृक्ष।

महासांतपन—पु० [स० महत्-सातपन, कर्म० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे पाँच दिनो तक क्रम से पचगव्य, छठे दिन कुश का जल पीकर और सातवें दिन उपवास करते हैं।

महासांधिविग्रहिक—पु० [स० महत्-साधिविग्रहिक, कर्म० स०] गुप्त-कालीन भारत का वह उच्च अधिकारी जिसे दूसरे राज्यो से सधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

महासागर—पु० [स० महत्-सागर, कर्म० स०] १. वह समस्त जल राशि जो इस लोक के स्थल भाग को चारो ओर से घेरे हुए है। २ उक्त के पाँच प्रमुख विभागो (अतलातक, प्रशात भारतीय, उत्तर ध्रुवीय और दक्षिण ध्रुवीय) मे से हर एक।

महासामंत—पुं० [स० महत्-सामंत, कर्म० स०] सामंतो का सरदार।

महासारथि—पु० [सं० महत्-सारथि, ब० स०] अर्जुन।

महासाहसिक—पु० [स० महत्-साहसिक, कर्म० स०] चोर। वि० अत्यधिक साहसी।

महासिंह—पु० [स० महत्-सिंह, कर्म० स०] वह सिंह जिस पर दुर्गा देवी सवारी करती हैं।

महासिद्धि—स्त्री० [स० महती-सिद्धि, कर्म० स०] योग मे, विशिष्ठ साधना के उपरान्त प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व।

महासिरा—पु०=मुहासिरा (घेरा)।

महासिल—पु० [अ०] १. वह धन जो हासिल या प्राप्त किया गया हो। २ आय। आमदनी। ३. मालगुजारी। लगान।

महासीर—पु० [देश०] एक प्रकार की मछली।

महासुख—पु० [स० महत्-सुख, कर्म० स०] १ साधको को सिद्धि प्राप्त हो जाने पर मिलनेवाला परमानन्द। २ मैथुन। रति। ३. शृंगार। ४ गौतम बुद्ध का एक नाम।

महासूक्ष्मा—स्त्री० [स० महती-सूक्ष्मा, कर्म० स०] रेत।

महासेन—पु० [सं० महती-सेना, ब० स०] १. शिव। २. कार्तिकेय। ३ बहुत बडी सेना का सेनानायक।

महास्कंध—पु० [स० महत्-स्कंध, ब० स०] ऊँट।

महास्कंधा—स्त्री० [सं० महास्कंध+टाप्] जामुन का वृक्ष।

महास्थली—स्त्री० [सं० महती-स्थली, कर्म० स०] पृथ्वी।

महास्नायु—पु० [सं० महती-स्नायु, कर्म० स०] शरीर की प्रधान रक्त-वाहिनी नाडी।

महास्पद—वि० [स० महत्-आस्पद, ब० स०] १. उच्चपदस्थ। २. शक्तिशाली।

महाहंस—पु० [स० महत्-हंस, कर्म० स०] १ एक प्रकार का हंस। २ विष्णु।

महाहनु—पु० [स० महती-हनु, ब० स०] १. शिव। २ तक्षक जाति का एक प्रकार का साँप।

महाहस्त—पु० [स० महत्-हस्त, ब० स०] शिव।

महाहास—पु० [स० महत्-हास, कर्म० स०] अट्टहास।

महाहि—पु० [स० महत्-अहि, कर्म० स०] वासुकि (नाग)।

महाहिक्का—स्त्री० [स० महती-हिक्का, कर्म० स०] अत्यधिक अर्थात्-कुछ समय तक निरन्तर हिचकी होते रहने का रोग।

महिं—अव्य०=महँ (मे)।

महि—स्त्री० [स०√मह (पूजा) +इन्] १ पृथ्वी। २ महिमा। ३ महत्ता।

महिकांशु—पु० [स० महिका-अंशु, ब० स०] चंद्रमा।

महिका—स्त्री० [स०√मह् (पूजा)+कुन्, वु—अक,+-टाप्] १. पृथ्वी। २ कुहरा। पाला। हिम।

महिखा—पु० =महिप।

महिशरी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे अट्ठाइस मात्राएँ और चौदह मात्राओ पर यति होती है।

महिदास—पु०=महीदास।

महिधर—पु०=महीधर।

महिनंदिनी—स्त्री० दे० 'महीपुत्री'।

महिपाल—पु०=महीपाल।

महिपुत्र—पु०=महीपुत्र (मगल)।

महिफल—पु० [स० मधुफल] मधु। शहद।

महिमा (मन्)—स्त्री० [स० महत्-+इमनिच्,] १. महत्त्वपूर्ण होने की अवस्था या भाव। गौरव। २ महत्ता की होनेवाली प्रसिद्धि। ३ वह स्थिति जिसमे किसी की क्रियाशीलता, प्रभावोत्पादकता आदि की प्रसिद्धि तथा मान्यता लोक मे होती है। ४ उक्त क्रियाशीलता तथा प्रभावोत्पादकता। जैसे—यह तीर्थ या गीता की महिमा थी। ५. आठ सिद्धियो मे से एक जिसकी प्राप्ति होने पर मनुष्य इच्छानुसार अपना विस्तार कर लेता है।

महिमाधर—वि० [सं० महिमधर]=महिमावान्।

महिमावान्—वि० [सं० महिमवान्] महिमा से युक्त। महिमावाला। पु० पितरो का एक गण या वर्ग।

महिम्न—पु० [स० महि√म्ना (अभ्यास)+क] शिव का एक प्रसिद्ध स्तोत्र जिसे पुष्पदताचार्य ने रचा था।

महिय—स्त्री० =मही।

महियाँ†—अव्य० [स० मध्य; प्रा० मज्झ=मँह] =महि (मे)।

महिया—पु० [हि० महना] [स्त्री० महिमारी] ग्वाला।
स्त्री० ऊख के रस का फेन।

महियाउर—पु० [हि० मही=मठा+चाउर=चावल] दही के मठे मे पकाया हुआ चावल। महेरा।

महिर—पु० [पु० मह+इलच्, ल=र] सूर्य।

महिराँण†—पु० [स० महार्णव] समुद्र।

महिरावण—पु० [स०] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।

महिला—स्त्री० [स०√मह्+इलच्+टाप्] १ स्त्री। औरत। २ स्त्री के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक शब्द। ३. प्रियगु (लता)। ४ रेणुका। नामक गन्ध-द्रव्य।

महिष—पु० [स० √मह्+टिषच्] [स्त्री० महिषी] १ भैसा। २ वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार हुआ हो। ३. एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ४ एक साम का नाम। ५ कुश द्वीप का एक पर्वत।

महिष-कद—पु० [स० मध्य० स०] भैसा कद।

महिषघ्नी—स्त्री० [स० महिष√उहन् (मारना) +टक्+ङीप्] दुर्गा।

महिष-ध्वज—पु० [स० ब० स०] १ यमराज। २. जैनो के एक अर्हत्।

महिष-मंडल—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, आधुनिक हैदराबाद के दक्षिण भाग का एक नाम।

महिषमर्दिनी—स्त्री० [स० महिष√मृद् (मर्दन करना) +णिनि+ङीप्] दुर्गा का एक नाम और रूप।

महिष-वल्ली—स्त्री० [स० मध्य० स०] छिरेटा (लता)।

महिष-वाहन—पु० [स० ब० स०] यमराज।

महिषाकार—वि० [स० महिष-आकार, ब० स०] १ भैसे के आकार का। २ बहुत बडे डील-डौलवाला।

महिषाक्ष—पु० [स०महिष-अक्षि, ब०स०,+ षच्] १ भैसा। २. गुग्गुल।

महिषार्दन—पु० [स० महिष√अर्द (मर्दन करना)+ल्युट्—अन] कार्तिकेय।

महिषासुर—पु० [स० महिष-असुर, मध्य० स०] भैसे के-से मुँहवाला एक प्रसिद्ध दैत्य जो रभ नामक दैत्य का पुत्र था। इसका वध दुर्गा ने किया था। (पुराण)

महिषी—स्त्री० [स० महिष+ङीप्] १ भैंस। २ राजा की वह पटरानी जिसका उसके साथ अभिषेक हुआ हो। ३. सैरिंध्री। ४. एक प्रकार की ओषधि।

महिषी-कद—पु० [स० मध्य० स०] भैसा कद। शुभ्रालु।

महिषी-प्रिया—पु० [स० ष० त०] शूकी (घास)।

महिषेश—पु० [स० महिष-ईश, ष० त०] १ यमराज। २ महिषासुर। (दे०)

महिषोत्सर्ग—पु० [स० महिष-उत्सर्ग, ष० त०] एक प्रकार का यज्ञ।

महिष्ठ—वि० [स०√मह् (पूजा)+इष्ठन्] १. बहुत बडा। २ महिमा-पूर्ण।

महिसुर—पु० =महीसुर।

मही—स्त्री० [स० √मह+अच्+ङीप्] १ पृथ्वी। २ पृथ्वी के आधार पर एक की सख्या। ३ मिट्टी। ४. खाली स्थान। अवकाश। ५. नदी। ६. सेना। फौज। ७. समूह। ८. गाय। गौ। ९. एक प्रकार का छद जिसमे एक लघु और एक गुरु मात्रा होती है। जैसे—मही, लगी इत्यादि।
पु० [हि० मथित] मट्ठा।

महिक्षित—पु० [स० मही√क्षि (निवास या हिंसा)+क्विप्, तुक्-आगम] राजा।

महीखड़ी—स्त्री० [देश०] सिकलीगरो का एक औजार।

महीज—पु० [स० मही√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १ मगल ग्रह। २. अदरक।

मही-तल—पु० [स० ष० त०] पृथ्वी। ससार।

महीदास—पु० [स० ष० त०] ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

महीदेव—पु० [स० ष० त०] भू-देव। ब्राह्मण।

महीधर—पु० [सं० ष० त०] १ पर्वत। पहाड। २. शेषनाग। ३. बौद्धो के अनुसार एक देवपुत्र। ४. एक प्रकार का वार्णिक वृत्त जिसमे चौदह बार क्रम से लघु और गुरु आते है।

महीध्र—पु० [स० मही√धृ (धारण)+क] महीधर।

महीध्रक—पु० [स० महीध्र+कन्] =महीध्र।

महीन—वि० [स० महत्+क्षीन] (स० क्षीण) १ जिसका घेरा, तल या विस्तार इतना कम या थोडा हो कि सहसा दिखाई न दे। सूक्ष्म। 'मोटा' का विपर्याय। जैसे—महीन काम, महीन निशान। २ बहुत ही पतला या बारीक। झीना। जैसे—कपडे का महीन पोत।
पद—महीन काम=ऐसा काम जिसे करने मे बहुत आँख गडाने और सावधानी रखने की आवश्यकता होती हो। जैसे—सीना-पिरोना, चित्र-कारी, नक्काशी आदि।
३ (स्वर) जो बहुत कम ऊँचा या तेज हो। कोमल। धीमा। मद। जैसे—महीन आवाज।
पु० [सं०] राजा।

महीना—पु० [स० मास वा मा मि० फा० माह] १. काल का एक प्रसिद्ध परिमाण जो वर्ष के बारहवे अंश के बराबर और प्राय तीस दिनो का होता है। मास। माह। २ हर महीने अर्थात् महीना भर काम करने के बदले मिलनेवाला वेतन या वृत्ति। ३ स्त्रियो का रजोधर्म या मासिक धर्म जो प्राय महीने-महीने भर पर होता है।
मुहा०—(स्त्री का) महीने से होना=रजोधर्म मे होना। रजस्वला होना।

महीप—पु० [स० मही√पा (रक्षा)+क] राजा।

महीपति—पु० [स० ष० त०] राजा।

महीपाल—पु० [स० मही√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] राजा।

मही-पुत्र—पु० [ष० त०] मगल ग्रह।

मही-पुत्री—स्त्री० [ष० त०] सीता जी।

मही-प्राचीर—पु० [ष० त०] समुद्र।

मही-भर्ता (भर्तृ)—पु० [ष० त०] [स्त्री० महीभर्त्री] पृथ्वी (के निवासियो) का भरण-पोषण करनेवाला, राजा।

महीभुक् (भुज्)—पु० [स० मही√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्, कुत्व] राजा।

महीभृत्—पु० [स० मही√भृ (पालन करना)+क्विप्, तुक्] १ राजा। २ पर्वत। पहाड।

ही-मडल—पु०[स० प० त०] पृथ्वी। भूमडल।
हीम—पु०[देश०] एक प्रकार का गन्ना।
हीयान (यस्)—वि०[स० महत्+ईयसुन्] [स्त्री० महीयसी] १. किसी की तुलना मे अधिक बडा। २ महान्। ३ शक्तिशाली।
हीर—स्त्री०[हिं० मही] १. मक्खन को तपाने पर निकलनेवाली तलछट। २ महेरा। (दे०)
हीरावण—पु०[स०] १ अद्‌भुत् रामायण के अनुसार रावण के एक पुत्र का नाम। २ महिरावण।
महीरुह—पु०[स० मही√रुह् (उत्पन्न होना) +क] वृक्ष।
महीलता—स्त्री०[स० स० त०] केंचुआ।
महीश—पु०[मही-ईश, प० त०] राजा।
मही-सुत—पु०[प० त०] मंगल ग्रह।
मही-सुता—स्त्री०[प० त०] सीता जी।
मही-सुर—पु०[स० त०] ब्राह्मण।
मही-सूनु—पु०[प० त०] मगल ग्रह।
महुँ—अव्य०=महँ।
महु†—पु०=मधु।
महुअर—पु० [स० मधुकर, प्रा० महुअर] १. सँपेरों का एक प्रकार का बाजा जिसे तुमड़ी या तूँबी भी कहते हैं। २. एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो उक्त बाजा बजाकर किया जाता है और जिसमे खिलाडी अपने प्रतिद्वन्द्वी को अपनी इच्छा के वश मे करके अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट देने का प्रयत्न करता है।
स्त्री० [हिं० महुआ] १ वह भेड जिसका ऊन कालापन लिए लाल रग का होता हैं। २ महुए को पीसकर उसके चूर्ण मे बनाई जानेवाली रोटी।
महुअरि—स्त्री०=महुअर।
महुअरी†—स्त्री०[हिं० महुआ] महुए के रस से साने हुए आटे की पकाई हुई रोटी।
महुआ—पु० [सं० मधूक, प्रा० महुअ] १ बलुई भूमि मे होनेवाला एक वृक्ष जिसका काड चिकना तथा धूसरित होता है और फूल सफेद तथा पीले रग के होते हैं तथा पत्ते रोएँदार होते हैं। २ इस वृक्ष के छोटे, मीठे, सफेद फल जो खाये जाते है, और उनके पास से शराब बनाई जाती है। ३. धूमरित रग का बैल। ४ हलका पीला रग।
†पु०=सुमरा (मछली)।
वि०[हिं० महना=मथना] मथा हुआ। जैसे—महुआ दही।
महुआ-दही—पु०[हिं० महना=मथना+दही] वह मथा हुआ दही जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो।
महुआरी—स्त्री०[हिं० महुआ+बारी] वह स्थान जहाँ महुए के बहुत से वृक्ष हो।
महुकम—वि०=मुहकम (पक्का)।
महुम्म—वि० [हिं० महुआ] महुए के रग का। हलके पीले रग का।
महुर†—वि०=मधुर।
महुरेठी†—स्त्री०=मुलेठी।
महुर्छा†—पु०=महोछा।
महुला—वि०[हिं० महुआ] [स्त्री० महुली] महुए के रग का। हलका पीला।
पु० १. हलका पीला रंग। २. हलके पीले रग का बैल।
महुवर—पु०=महुअर।
महुवा—पु०=महुआ।
महूख*—पु०[स० मधूक] १ महुए का पेड और उसका फल। २ मुलेठी।
महूरत†—पु०=मुहूर्त।
महूम—स्त्री०=मुहिम। उदा०—दिग विजय काज महूम की।—पद्‌माकर।
महूष—पु०=मधूख (महुआ)।
महेंद्र—पु०[स० महन्-इंद्र, कर्म० स०] १ विष्णु। २ इन्द्र।
महेंद्राल—स्त्री०=महेंद्री (नदी)।
महेंद्री—स्त्री०[स०] गुजरात प्रदेश की एक नदी।
महे†—अव्य०[स० मध्य] मे। अन्दर।
महेर—पु० [देश०] १ झगडा। बखेडा। २ व्यर्थ की देर या विलम्ब।
क्रि० प्र०—करना।—डालना।
†पु०=महेरा।
†स्त्री०=महेरी।
महेरा—पु० [हिं० मही+एरा (प्रत्य०)] १ दही। मठा। २ दही मे पकाया हुआ चावल, खेसारी का आटा या ऐसी ही और कोई चीज।
†पु० १ =महेर। २ =महेला।
महेरी—स्त्री०[हिं० महेरा] १ उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक मिर्च से खाते है। २. दही के साथ पकाया हुआ चावल। महेरा।
वि०[हिं० महेर] १ झगडा-बखेडा खडा करनेवाला। २ व्यर्थ देर लगानेवाला।
महेल*—पु०=महल।
महेला—पु०[हिं० माष] चने, उडद, मोठ आदि को उबालकर और घी, गुड आदि डालकर बनाया हुआ वह मिश्रण जो पशुओं को खिलाया जाता है।
*वि०[?] सुन्दर।
महेलिया—स्त्री०[स० महल्लिका] माल ढोनेवाली एक प्रकार की बडी नाव।
महेश—पु०[स० महन्-ईश, कर्म० स०] १ ईश्वर। २ शिव।
महेश-बधु—पु०[स० प० त०] बैल।
महेशान—पु० [स० महत्-ईशान, कर्म० स०] [स्त्री० महेशानी] शिव।
महेशानी—स्त्री०[स० महेशान+ङीप्] १ पार्वती। २ दुर्गा।
महेशी—स्त्री०=महेश्वरी (पार्वती)।
महेश्वर—पु०[स० महत्-ईश्वर, कर्म० स०] [स्त्री० महेश्वरी] १ ईश्वर। २ शिव। ३ सफेद मदार। ४. सोना। स्वर्ण।
महेश्वरी—स्त्री०[स० महत्-ईश्वरी, कर्म० स०] दुर्गा।
महेषुधि—वि०[स० महत्-इषुधि, ब० स०] बहुत बडा धनुर्धारी।
महेष्वास—पु०[स० महत्-इष्वास, कर्म० स०] बहुत बडा धनुर्धारी योद्धा।
महेस—पु०=महेश।
महेसिया—पु०[हिं० महेश] एक प्रकार का बढिया अगहनी धान।

मांखी*—स्त्री०=मक्खी।

माँग—स्त्री०[हिं० माँगना] १ माँगने की क्रिया या भाव। याचना। २. अर्थशास्त्र मे वह स्थिति जिसमे लोग (क्रेता) कोई चीज किसी निश्चित मूल्य पर खरीदना चाहते हो। ३ किसी निश्चित मूल्य पर तथा किसी निश्चित अवधि मे क्रेताओ द्वारा किसी चीज की खरीदी या चाही जानेवाली मात्रा। ४ विक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिए लोगो को होनेवाली आवश्यकता या चाह। जैसे—बाजार मे देशी कपड़ों की माँग बढ रही है। ५ किसी से आधिकारिक रूप मे या दृढतापूर्वक यह कहना कि हमे अमुक अमुक सुभीते मिलने चाहिएँ। (डिमान्ड) जैसे—दुकानदारो की माँग, मजदूरो की माँग, राजनीतिक अधिकारो की माँग।

स्त्री०[स० मार्ग ?]१. सिर के बालो को विभक्त करके बनाई जानेवाली रेखा। सीमात।

पद—माँग-चोटी, माँग-जली, माँग-पट्टी।

मुहा०—माँग उजड़ना=विवाहिता स्त्री का विधवा होना। **माँग कोख से सुखी रहना या जुडाना**=स्त्रियो का सौभाग्यवती और सतानवती रहना (आशीर्वाद)। **माँग पारना या फारना**=केशो को दो ओर करके बीच मे माँग निकालना। **माँग बाँधना**=कघी-चोटी या केश-विन्यास करना। **माँग सँवारना**=कंघी करके बाल सँवारना।

२ किसी पदार्थ का ऊपरी भाग। सिरा। (क्व०) ३ सिल का वह ऊपरी भाग जिस पर पिसी हुई चीज रखी जाती है। ४. नाव का अगला भाग। दुम सिरा। ५ दे० 'माँगी'।

माँग-चोटी—स्त्री०[हिं०] स्त्रियो का केश-विन्यास।

माँग-जली—स्त्री०[हिं०] विधवा। राँड।

माँग-टीका—पु०[हिं०] एक प्रकार का माँग-फूल जिसमे मोतियो की लडी लगी रहती है।

माँगन*—पु० [हिं० माँगना]१. माँगने की क्रिया या भाव। २ मँगता। भिखमगा। भिक्षुक।

माँगनहार†—पु० [हिं० माँगना] माँगनेवाला।

पु०=मगता (भिखमगा)।

माँगना—स० [स० मार्गण=याचना]१. किसी से यह कहना कि आप हमे अमुक वस्तु या कुछ धन दे। याचना करना। जैसे—मैंने उनसे एक पुस्तक माँगी थी। २ खरीदने के उद्देश्य से किसी से कुछ लाकर प्रस्तुत करने या दिखाने के लिए कहना। जैसे—दुकानदार से पुस्तक माँगना। ३. किसी से कोई आकाक्षा पूरी करने के लिए कहना। याचना या प्रार्थना करना। ४ अपनी कन्या या पुत्र के साथ विवाह करने के लिए किसी से उसके पुत्र या कन्या के सबध मे प्रस्ताव करना। ५ किसी से अधिकारपूर्वक यह कहना कि तुम हमे इतना धन या अमुक वस्तु उधार दो। ६. भिक्षा माँगना। हाथ पसारना।

†पु० दी हुई वस्तु वापस देने के लिए किसी से कहना।

माँग-पट्टी—स्त्री०=माँग चोटी।

माँग-पत्र—पुं०[हिं०+सं०]वह पत्र जिस पर कोई किसी व्यापारी को यह लिखता है कि आप हमे अमुक अमुक वस्तुएँ भेज दे। (आर्डर फार्म) २. वह पत्र जिसमे किसी से अधिकारपूर्वक यह कहा जाय कि अमुक चीज मुझे दे दो।

माँग-फूल—पु०[हिं०] माँग मे लगाया जानेवाला एक प्रकार का टीका।

माँग-भरी—वि०स्त्री० [हिं० माँग+भरना] सधवा। सुहागिन।

मांगल-गीत—पु०[स० मागल्य-गीत]वह शुभ गीत जो विवाह आदि मगल अवसरो पर गाये जाते है।

मांगलिक—वि०[स० मगल+ठक्—इक, वृद्धि] १. मगल-करनेवाला। शुभ। २. मगल कार्यो से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मागलिक कृत्य। पु० वह जो नाटक आदि विशिष्ट अवसरो पर मगल पाठ करता हो।

मागल्य—वि०[स० मगल+ष्यञ् वृद्धि] शुभ। मगलकारक।

पु० 'मगल' की अवस्था या भाव। मंगलता।

मांगल्य-काया—स्त्री० [स० ब० स,०+टाप्] १ दूब। २. हलदी। ३ ऋद्धि नामक ओषधि। ४ गोरोचन। ५ हरीतकी। हर्रे।

मांगल्य-कुसुमा—स्त्री०[स० ब० स,०+टाप्]शखपुष्पी।

मांगल्य-प्रवरा—स्त्री०[स० स० त०] वच।

मांगल्या—स्त्री०[स० मागल्य+टाप्]१. गोरोचन। २. जीवनी। ३. शमी।

माँगा—पु०[हिं० माँगना] माँगने विशेषत मँगनी माँगने की क्रिया या भाव।

वि०[स्त्री० माँगी] मँगनी माँगा हुआ। मँगनी का।

माँगी—स्त्री०[स० मार्ग ? हिं० माँग] धुनियो की धुनकी मे वह लकडी जो उसकी उस डाँड़ी के ऊपर लगी रहती है जिस पर ताँत चढाते हैं।

माँगुर—स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।

माँच—पु०[देश०]१ पाल मे हवा लगने के लिए चलते हुए जहाज का रुख कुछ तिरछा करना। (लश०) २ पाल के नीचेवाले कोने मे बँधा हुआ वह रस्सा जिसकी सहायता से पाल को आगे बढाकर या पीछे हटाकर हवा के रुख पर करते हैं। (लश०)

†स्त्री०=माच।

माँचना—अ०[हिं० मचना] १ प्रसिद्ध होना। २. लीन होना। उदा०-स्याम प्रेम रस माँची।—सूर।

अ०=मचना।

†स०=मचाना।

माँचा—पु० [स० मच, मञ्च] [स्त्री० अल्पा० माँची] १ पलग। खाट। २ बैठने की पीढी। ३. मचान।

माँछ—स्त्री० [सं० मत्स्य] मछली।

†पु०=माँच।

माँछना—अ०[स० मध्य ?] घुसना। पैठना। (लग०)

माँछर†—स्त्री० =मछली।

†पु०=मच्छड।

माँछली†—स्त्री०=मछली।

माँछी—स्त्री०=मक्खी।

माँज—स्त्री०[देश०]१. दलदली भूमि। २ कछार। तराई। ३ नदी के खिसकने के कारण निकली हुई भूमि। गग-बरार।

माँजना—स०[स० मञ्जन]१. कोई चीज अच्छी तरह साफ करने के लिए किसी दूसरी चीज से उसे अच्छी तरह मलना या रगडना। जैसे—बरतन माँजना। २ जुलाहो का सूत चिकना करने के लिए उस पर सरेस का पानी रगडना। ३. डोर या नख पर माझा लगाना। ४. कुम्हारों का

थपुए के तवे पर पानी देकर उसे ठीक करने के लिए उसके किनारे झुकाना। ५ किसी काम या चीज का अभ्यास करना। जैसे—(क) लिखने के लिए हाथ मांजना। (ख) गाने के लिए गीत या राग मांजना।

मांजर†—पु०=पजर (ठठरी)।

मांजा—पु०[देश०]पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक कहा गया है।

†पु०=मांझा।

मां-जाया—पु०[हि० मां+जाया=जात] [स्त्री० माँजाई] माँ से उत्पन्न, अर्थात् सगा भाई। सहोदर।

मांजिष्ठ—वि० [स० मजिष्ठा+अण्] १ मजीठ से बना हुआ। २ मजीठ के रग का। ३ मजीठ-सम्बन्धी। मजीठ का।

पु० एक प्रकार का मूत्र रोग या प्रमेह जिसमे मजीठ के रग का पेशाब होता है।

मांझ—अव्य०[स० मध्य] मे। भीतर। बीच।

पु०१ अन्तर। फरक। २ नदी के बीच मे निकली हुई रेतीली भूमि।

मांझा—पु०[स० मध्य] १ नदी के बीच की सूखी जमीन या टापू। २. वृक्ष का तना। ३ वे कपडे जो वर और कन्या को विवाह से पहले पहनाये जाते है। ४ पगडी पर लगाया जानेवाला एक तरह का आभूषण। ५ एक प्रकार का ढांचा जो गोडाई के बीच मे रहता है और जो पाई को जमीन पर गिरने से रोकता है। (जुलाहे)

पु० [हि० मांजना] लेई, शीशे की बुकनी आदि का वह रूप जो डोर या नख पर उसे तेज तथा धारदार करने के लिए चढाया जाता है।

क्रि० प्र०—चढाना।—देना।

†पु० १=मझा (बडी खाट)। २.=मांजा (फेन)।

मांझिल—वि०[स० मध्य] मध्य का। बीच का।

क्रि० वि० बीच या मध्य में।

मांझी—पु०[स० मध्य, हि० मांझ?] केवट। मल्लाह।

†पु०=मध्यस्थ।

पु०[?] बलवान। (डि०)

मांट—पु०[स० मट्टक]१. मिट्टी का बडा बरतन। मटका। कुडा। २ घर के ऊपर की कोठरी। अटारी। कोठा।

मांठ—पु०[स० मट्टक]१. मटका। २ कुडा। २ नील घोलने का बडा मटका।

मांठी—स्त्री०[देश०] फूल नामक धातु की ढली हुई एक प्रकार की चूडियां जो देहाती स्त्रियां पहनती है।

†स्त्री०=मठरी या मठ्ठी (पकवान)।

मांड़—पु०[स०मण्ड] उबाले या पकाये हुए चावलो मे से बाकी बचा हुआ पानी जो गिरा या निकाल दिया जाता है। पसाव। पीच।

स्त्री०[हि० मांडना] १ मांडने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार का राग जिसका प्रचलन राजस्थान मे अधिक है। ३ एक प्रकार की रोटी। उदा०—झालर मांड आए घिउ पोए।—जायसी।

मांड़ना—स०[स० मडन] १ मर्दन करना। मसलना। २ गूँधना। सानना। जैसे—आटा मांडना। ३. लेप करना। पोतना। ४ सजाना या सँवारना। ५. अन्न की बालो मे से दाने झाडना। ६ ठानना। किसी प्रकार की क्रिया सपन्न करना अथवा उसका आरम्भ करना। जैसे—खाते या बही मे कोई रकम मॉडना, अर्थात् चढ़ाना या लिखना।

मुहा०—पग मॉड़ना=पैर रोकना। ठहरना। रुकना। उदा०—आयी हूँ पग मॉडि अहीर।—प्रिथीराज। **वाद मॉड़ना**=(क) हठ करना। (ख) विवाद या बहस करना। उदा०—जाणे वाद मॉडियो जीपण।—प्रिथीराज।

७. दे० 'मलाना'।

मॉडनी†—स्त्री० [स० मडन, हि० मॉडना]१. मॉडने की क्रिया या भाव। २ किनारा। हाशिया। ३ मगजी। गोट।

माडलिक—पु०[स० मडल+ठक्, ठ=इक्, वृद्धि] १. मडल का प्रधान प्रशासक। २ वह छोटा राजा जो किसी चक्रवर्ती या बडे राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो।

३ शासन का कार्य।

वि० मडल सबधी।

मॉडव†—पु०=मडप।

मांडवी—स्त्री० [स०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जिसका विवाह राजा दशरथ के पुत्र भरत से हुआ था।

मांडव्य—पु०[स०]१ एक प्राचीन ऋषि जिनको बाल्यावस्था के किये हुए अपराध के कारण यमराज ने सूली पर चढवा दिया था। २ एक प्राचीन जाति। ३. एक प्राचीन नगर।

मॉड़ा—पु०[स० मड]१ आँख मे झिल्ली पडने का एक रोग। २ इस प्रकार आँख मे पडनेवाली झिल्ली।

पु०[हि० मॉड़ना=गूँधना]१ एक प्रकार की बहुत पतली पूरी जो मैदे की होती और घी मे पकती है। लुच्ची। २. पराठा या परांठा नामक पकवान। ३ उलटा या चीला नामक पकवान।

†पु०=मँडवा (मडप)।

मॉड़ी—स्त्री०[स० मड]१ भात का पसाव या मॉड जो प्राय कपडे या सूत पर कलफ करने के लिए लगाते है। २. उक्त काम के लिए बनाया जानेवाला जुलाहो का एक प्रकार का घोल या मिश्रण।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—देना।—लगाना।

मांडूक—पु० [स० मडूक+अण्,] प्राचीन काल के एक प्रकार के ब्राह्मण जो वैदिक मडूक शाखा के अतर्गत होते थे।

माडूकायनि—पु० [स० मडूक+फिञ्, फ—आयन] एक वैदिक आचार्य।

मांडूक्य—पु०[स० मडूक+यञ्, वृद्धि] एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

वि० मडूक सबधी।

मांढ†—पु०[स० मडप]स्त्रियो का पीहर। मायका। उदा०—नयरी नडँ माढे वीचई।—नरपतिनाल्ह।

मॉढ़ा—पु०=मॉडव।

मांत—वि०[स० मत्त] १ मत्त। मस्त। २ मस्ती आदि के कारण बेसुध। ३ उन्मत्त। पागल।

वि०[स० मन्द] जिसका रग या शोभा बहुत कम हो गई हो। फीका पडा हुआ।

वि० [फा० माद]१ थका हुआ। २ हारा हुआ।

मांतना—अ०=मातना (मत्त होना)।

मांता—वि०=माता (मत्त)।
मात्र—वि०[सं० मंत्र+अण्, वृद्धि] मंत्र-संबंधी। मंत्र का।
मांत्रिक—पु० [सं० मंत्र+ठक्, ठ—इक,] १ वह जो मंत्रों का पाठ करने में पारंगत हो। २ वह जो मंत्र-तंत्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।
मांथर्य—पु० [सं० मंथर+ष्यञ्] १. मंथर होने की अवस्था या भाव। मंथरता। धीमापन। २ सुस्ती।
मांथा—पु०[सं० मस्तक] माथा। सिर।
मांद—वि०[सं० मंद] १ जो उदास या फीका पड गया हो। जिसका रंग उतर गया या हलका पड गया हो। मलिन। २ फीका। श्री-हीन। ३ किसी की तुलना मे घटकर या हलका।
क्रि० प्र०—पडना।
४ दबा या हारा हुआ। पराजित। मात।
स्त्री०[देश०]१ गोवर का ढेर जो सूख गया हो और जलाने के काम मे आता हो। २ जंगलो, पहाडो, आदि मे सुरंग की तरह का कोई ऐसा प्राकृतिक स्थान जिसमे कोई हिंसक पशु रहता हो।
मांदगी—स्त्री०[फा०]१ 'मांदा' होने की अवस्था या भाव। २ बीमारी। रोग। ३ थकावट।
मांदर†—पु०=मर्दल (बाजा)।
मांदा—वि०[फा० माद]१ बीमार। रोग आदि से ग्रस्त।
पद—थका-मांदा।
२. छोड़ा हुआ। बचा हुआ।
मांदार—वि०[सं० मदार+अण्] मदार (मदार) संबंधी।
मांद्य—पु० [सं० मंद+ष्यञ्] १ मंद होने की अवस्था या भाव। मँदता। जैसे—अग्नि-मांद्य। २ दुर्बलता। ३ कमी। न्यूनता। ४ बीमारी। रोग। ५. मूर्खता।
मांधाता (तृ)—पु० [सं० माम्√धे (पाना)+तृच्] अयोध्या का एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पूर्वजों मे से था।
मांपना—अ०[हिं० मातना] नशे मे चूर होना। मत्त होना। मातना। स०=मापना (नापना)।
मांस*—अव्य०=मे।
मांस—पु० [सं०√मन् (ज्ञान)+स] [वि० मांसल] १. मनुष्यों तथा जीव-जंतुओं के शरीर का हड्डी, नस, चमडी, रक्त आदि से भिन्न अंश जो रक्त वर्ण का तथा लचीला होता है। आमिष। गोश्त।
पद—मांस का घी=चरबी।
२ कुछ विशिष्ट पशु-पक्षियों का मांस जिसे मनुष्य खाद्य समझता है। जैसे—बकरे या मुर्गे का मांस।
†पु०=मास (महीना)।
मांसकारी (रिन्)—पु०[सं० मांस√कृ+णिनि]रक्त। लहू।
मांस-कीलक—पु०[ष० त०] बवासीर का मसा।
मांसखोर—वि०[सं० मांस+फा० खोर] [भाव० मांसखोरी] मांसाहारी। मांस-खानेवाला।
मांस-ग्रंथि—स्त्री०[ष० त०] शरीर के विभिन्न अंगों मे निकलनेवाली मांस की गाँठ।
मांसज—वि०[सं० मांस√जन् (उत्पन्न होना)+ड] मांस से उत्पन्न होनेवाला।
पुं० चरबी, जो मांस मे उत्पन्न होती है।
मांस-तेज (स्)—पु०[ब० स०] चरबी।
मांस-धरा—स्त्री०[ष० त०]सुश्रुत के अनुसार शरीर की त्वचा की सातवी तह। स्थूलापर।
मांस-पिंड—पु०[ष० त०]१ शरीर। देह। २. मांस का टुकडा या लोथडा।
मांस-पिंडी—स्त्री०[ष० त०]शरीर के अन्दर रहनेवाली मांस की गाँठ।
मांस-पेशी—स्त्री०[ष० त०]शरीर के अंदर होनेवाली झिल्ली तथा रेशों के आकार का मांस पिंड जिसका मुख्य कृत्य गति उत्पन्न करना होता है।
विशेष—पक्षाघात रोग मे किसी अंग की मांसपेशियाँ गति उत्पन्न करना बंद कर देती है जिसके फलस्वरूप वह अंग हिलाया-डुलाया नही जा सकता।
मांस-फल—पु० [सं० उपमि० स०] तरबूज।
मांस-भक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० मांस√भक्ष् (खाना)+णिनि,] मांस खानेवाला। मांसाहारी।
मांसभोजी (जिन्)—वि० [सं० मांस√भुज् (खाना) +णिनि,] मांसाहारी।
मांस-मंड—पु०[सं० ष० त०] उबाले या पकाये हुए मांस का रसा। यखनी। शोरबा।
मांस-योनि—पु०[ब० स०] रक्त और मांस से उत्पन्न जीव।
मांस-रज्जु—स्त्री०[मं० ष० त०]१ सुश्रुत के अनुसार शरीर के अंदर होनेवाले स्नायु जिनसे मांस बँधा रहता है। २ मांस का रसा। शोरबा।
मांस-रस—पु०[ष० त०] मांस का रसा। शोरबा।
मांसरोहिणी—स्त्री०[सं० मांस√रुह् (उत्पन्न होना)+णिच्, +णिनि, +ङीप्] एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
मांसल—वि०[सं० मांस+लच्] [भाव० मांसलता] १ (शरीर का कोई अंग) जो मांस से अच्छी तरह भरा हो। २ जिसमे मांस या उसकी तरह के गूदे की अधिकता हो। गुदगुदा। (पलेशी) ३ मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। ४ दृढ। पक्का। मजबूत।
पु० १ गौडी रीति का एक गुण। २ उडद।
मांसलता—स्त्री० [सं० मांसल+तल्+टाप्] १. मांस से भरे होने की अवस्था या भाव। २. बहुत अधिक मोटे-ताजे तथा हृष्ट-पुष्ट होने की अवस्था या भाव।
मांस-लिप्त—पु०[तृ० त०] हड्डी।
मांस-विक्रयी (यिन्)—पु०[सं० मांस+वि√क्री+इनि, उपपद स०]१. वह जो मांस बेचता हो। कसाव। २ वह जो धन के लोभ मे अपनी सन्तान किसी के हाथ बेचता हो।
मांस-वृद्धि—स्त्री०[ष० त०]शरीर के किसी अंग के मांस का बढ जाना। जैसे,—घेघा, फील पाँव आदि।
मांस-समुद्भवा—स्त्री० [मं० ब० स०,+टाप्] चरबी।
मांस-सार—पु०[ष० त०] शरीर के अन्तर्गत मेद नामक धातु। वि० हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।
मांस-स्नेह—पु०[ष० त०] चरबी। वसा।
मांस-हासा—पु०[ब० स०,+टाप्] चमड़ा।

मांसाद्—वि०[स० मास√अद् (खाना)+क्विप्)] जो मास खाता हो। मास भक्षक।
पु० राक्षस।
मांसादन—पु० [मास-अदन, ष० त०] मास खाने की क्रिया या भाव।
मांसादी (दिन्)—वि० [स० मास√अद्+णिनि,] मास खानेवाला। मासाहारी।
मांसारि—पु०[मास-अरि, ष० त०]अम्लवेत।
मांसार्गल—पु०[मास-अर्गल, ष० त०] गले मे लटकनेवाला मास।
मांसार्बुद—पु०[मास-अर्बुद, ष० त०]१. एक प्रकार का रोग जिसमे लिंग पर फुसियाँ निकल आती हैं। २. शरीर के किसी अग मे आघात लगने से होनेवाली वह सूजन जो पत्थर की तरह कडी हो जाती है और जिसमे प्राय पीडा नही होती।
मांसाशन—पु०=मासादन।
वि०=मासाशी।
मांसाशी (शिन्)—वि०[सं० मास√अश् (खाना)+णिनि] जो मास खाता हो। मासाहारी।
पु० राक्षस।
मांसाष्टका—स्त्री० [मास-अष्टका, मध्य० स०] माघ कृष्णाष्टमी। इस दिन मांस से पिंडदान करने का विधान था।
मांसाहारी (रिन्)—वि०[सं० मास+आ√हृ+णिनि] [स्त्री० मासाहारिणी] मास का भोजन करनेवाला। मासभक्षी।
मांसी—वि०[स० माष] माष अर्थात् उडद के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग जो उडद के दाने के रंग की तरह होता है।
मांसी—स्त्री० [स० मास+अच्+ङीप्] १. जटामासी। २ काकोली। ३ चन्दन का तेल। ४ इलायची।
मांसु—पु०=मास।
मांसोदन—पु०[स० मध्य० स०] एक तरह का पुलाव जिसमे मास के टुकडे भी डाले जाते हैं।
मांसोपजीवी (विन्)—वि० [स० मास+उप√जीव्(जीना)+णिनि] १. जिसकी जीविका मास से चलती हो। २. जो मास बेचकर जीवन निर्वाह करता हो।
माँह*—अव्य०[स० मध्य] मे।
माँहरा†—सर्व०=हमारा। (राज०)
माँहा*—अव्य०=माँह (मे)।
माँहिं, माहीं*—अव्य०=माँह।
माँहुटि†—पु०[हिं० माघ (महीना)] माघ के महीने में होनेवाली वर्षा। उदा०—नैन चुवहिं जस माँहुटि नीरू।—जायसी।
माँहूँ—पु०[?]सरसों, गोभी, मूली, शलजम, आदि मे लगनेवाला एक प्रकार का हल्के हरे पीले रग का कीडा जिसके शरीर के पिछले भाग पर ऊपर की ओर दो छोटी छोटी नलियाँ रहती हैं। लाही।
माँहे*—अव्य०=माँह।
मा—स्त्री० [स०√ मा+क्विप्] १. माता। माँ। २. लक्ष्मी। ३. ज्ञान। ४. प्रकाश। रोशनी। ५ चमक। दीप्ति।
अव्य० नही। मत। (निषेधार्थक)
पुं०[अ० मा] १. पानी। २. अरक। जैसे—माउल्लहम।

माइ*—स्त्री० =माई (माता)।
*स्त्री०=माया।
माइक—पु०[अं०]=ध्वनिवर्वक।
माइका†—पु० =मायका।
माइक्रोफोन—पु०[अं०]=ध्वनिवर्धक।
माइट—पु०[?]ईख की पत्तियाँ खानेवाला एक तरह का कीडा।
माईं—स्त्री०[स० मातृ]१. माता। २. देवी। ३. वैवाहिक अवसरो पर मातृपूजन के काम आनेवाला एक तरह का छोटा पूआ।
†स्त्री०=मामी।
*स्त्री०[?] बेटी। पुत्री।
माई—स्त्री०[स० मातृ] १. माता। जननी। माँ। २. मातातुल्य विशेषत कोई बूढी स्त्री। ३ औरत। स्त्री।
पद—माई का लाल=ऐसा व्यक्ति जो जोखिम, त्याग या वीरता-प्रदर्शन के लिए प्रस्तुत हो।
स्त्री०[देश०]एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो माजू से मिलता-जुलता होता है।
माउल्लहम—पु०[अ० माउल्लह्म] हकीमी चिकित्सा मे, दवाओ मे गोश्त मिलाकर खीचा हुआ अरक।
माकंद—पु०[स०√मा+क्विप्=मा=परिमित-कन्द, ब० स०] आम का वृक्ष।
†पु०=मानकद।
माकंदी—स्त्री०[स० माकन्द+ङीष्]१ आँवला। २. पीला चन्दन। ३. एक प्राचीन नगरी।
माकर—वि०[स०मकर+अण्,] १. मकर-सबंधी। २. मकर से उत्पन्न।
माकरा—स्त्री०[सं० माकर+टाप्] मरुआ।
माकरी—स्त्री०[स० माकर+ङीप्]माघ शुक्ला सप्तमी।
माकल—स्त्री०[देश०] इद्रायन नामक लता।
माकूल—वि० [अ० माकूल] १ उचित। ठीक। वाजिब। २. यथेष्ट। ३ योग्य। लायक। ४ उत्तम। अच्छा। बढिया।
पद—ना-माकूल। (देखें)
५ जिसने वाद-विवाद मे प्रतिपक्षी की बात मान ली हो। जो निरुत्तर हो गया हो। कायल।
माकूलियत—स्त्री०[अ० माकूलीयत] माकूल होने की अवस्था या भाव।
माक्षिक—पु०[स० मक्षिका+अण्]१ शहद। मधु। २. सोना-मक्खी। ३. रूपा मक्खी। ४ लोहे या ताबे का एक प्रकार का रासायनिक विकार। (पाइराइट)
वि०[सं०]१. मक्षिका-सबधी। २ मक्खियो द्वारा बनाया हुआ।
माक्षिकज—पु०[स० माक्षिक√जन् (उत्पन्न करना) +ड] मोम।
माक्षिकाश्रय—पु०[सं० माक्षिक-आश्रय, ष० त०] मोम।
माक्षीक—पु०[स० मक्षिका+अण्, नि० दीर्घ]=माक्षिक।
माख*—पु०[सं० मक्ष]१. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. अभिमान। घमंड। ३. पश्चात्ताप। पछतावा। ४. अपना अपराध या दोष छिपाने का प्रयत्न।
माखता†—पु०=माख। (दे०)
माखन†—पु०=मक्खन।

पद—माखन चोर=श्री कृष्ण।
माखना—अ०[हिं० माख]१ मन में अप्रसन्न या दुःखी होना। २. क्षुब्ध होना। ३. पश्चात्ताप करना।
माखा†—पु०[हिं० मक्खी]नरमक्खी।
माखी*—स्त्री०[सं० माक्षिक] सोनामक्खी।
†स्त्री०=मक्खी।
माखौ —स्त्री० [हिं० मुख]१. लोगों मे फैलनेवाली चर्चा। जनरव।
†स्त्री०=मधु मक्खी।
मागध—वि०[सं० मगध+अण्,] मगध-संबंधी।
पु० १ एक प्राचीन जाति जो मनु के अनुसार वैश्य के वीर्य से क्षत्रिय कन्या के गर्भ से उत्पन्न है। २ मगध के राजा जरासन्ध का एक नाम। ३ जीरा। ४. पिप्पलीमूल।
मागधक—पु०[सं० मगध+वुन्—अक]१ मगध देश का निवासी। २ मागध। भाट।
मागध-पुर—पु०[सं० ष० त०] मगध की पुरानी राजधानी, राजगृह।
मागधा—स्त्री०[सं० मागध+टाप्] १. मगध की राजकुमारी। २. पिप्पली।
मागधिक—वि० [सं० मगध+ठक्—इक,] मगध-संबंधी। मगध का।
पु० १. मगध का राजा। २. मगध का निवासी।
मागधी—स्त्री० [सं० मगध+अण्+ङीप्]१ मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा। २ जूही। यूथिका। ३ चीनी। शक्कर। ४ छोटी इलायची। ५. पिप्पली।
मागरमाटी—स्त्री०=मट-मँगरा (विवाह की रस्म)।
मागि†—पु०=मार्ग।
मागी†—स्त्री०[?] औरत। स्त्री। (पूरब)
माघ—पु०[सं० माघी+अण्]१ १०वाँ सौर मास और ११वाँ चान्द्रमास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पडता है। २ संस्कृत के एक प्रसिद्ध महाकवि जो ईसवी १०वी शती मे हुए थे, और जिनका बनाया 'शिशुपाल वध' संस्कृत का एक प्रसिद्ध महाकाव्य है। ३ कुंद का फूल।
माघी—वि०[सं० मघा+अण्+ङीप्] माघ-संबंधी।
स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा। कलियुग का आरम्भ इसी तिथि से माना जाता है।
माघ्य—पु०[सं० माघ+यत्] कुंद का फूल।
माच—पु०[सं० मा√अच्+क] मार्ग। रास्ता।
पु०[सं० मंच या हिं० मचना?] मालवे मे प्रचलित एक प्रकार का ग्राम्य अभिनय या लोक-नाटक जो खुले मैदान मे खेला जाता है। इसमे प्रायः भाव संगीत के द्वारा ग्राम्य जीवन की घटनाएँ दिखाई जाती है।
†पु०=मचान।
माचना*—अ०=मचना।
स०=मचाना।
माचल—पु०[सं० मा√चल् (चलना)+अच्]१ ग्रह। २ बीमारी। रोग। ३ कैदी। बंदी। ४. चोर।
वि० [हिं० मचलना] बहुत अधिक मचलनेवाला फलत हठी।
†वि०=मचला।
माचा—पु०[सं० मंच]बैठने की पीढी या बड़ी मचिया जो खाट की तरह बुनी होती है। माँचा।
माचिका—स्त्री०[सं० मा√अच् (जाना)+क+कन्+टाप्, इत्व] १ मक्खी। २. अमड़ा या आमडा नामक वृक्ष और उसका फल।
माचिस†—स्त्री०[अं० मैचेस] दीया-सलाई।
माची—स्त्री०[सं० मंच]१ हल मे का जूआ। २ बैलगाडी मे वह स्थान जहाँ गाडीवान बैठता और अपना सामान रखता है। ३ खाट की तरह बुनी हुई बैठने की पीढी। मचिया।
माछ—पु०[सं० मत्स्य] मछली विशेषत बडी मछली।
†पु०=मच्छर।
माछर—पु०[सं० मत्स्य] मछली।
†पु०=मच्छर।
माछरी†—स्त्री०=मछली।
माछी—स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।
†स्त्री०=मछली।
†स्त्री०=मछिया (बंदूक की)।
माजा†—पु०=माँजा।
माजन—पु०=मज्जन।
माजरा—पु० [अ०] १ हाल। घटना। २ घटना का विवरण। ३ बोलचाल मे, कोई विशिष्ट किंतु अज्ञात बात (किसी की दृष्टि से)।
माजी—वि०[अ०माज़ी]१ गुजरा या बीता हुआ। गत। ३ समय के विचार से भूतकाल से संबद्ध।
पु० व्याकरण मे, भूतकाल।
माजू—पु०[फा०]१ एक प्रकार की झाडी जो यूनान और फारस आदि देशो मे बहुतायत से होती है। २ उक्त झाडी का फल जो औषध के काम आता है। (हकीमी)
†पु०[?]ऐसा वर या व्यक्ति जिसकी पहली विवाहिता स्त्री मर चुकी हो।
माजून—स्त्री०[अ०]१ हकीमी मे, शहद, शक्कर, आदि के योग से बना हुआ दवाओ का अवलेह। २ उक्त प्रकार का वह अवलेह जिसमे भाँग पीसकर मिलाई गई हो।
माजूफल—पु०[फा० माजू+सं० फल] माजू नामक झाडी का गोटा या गोद जो औषधि तथा रँगाई के काम आता है। मादा-फल।
माजूल—वि०[मअजूल]१ अपदस्थ। २ पदच्युत।
माझ—अव्य०, पु०=माँझ (मध्य)।
सर्व०[स्त्री० माझी] मेरा।
माट—पु० [हिं० मटका] १ रंगरेजो के रंग घोलने का मिट्टी का बडा बरतन।
मुहा०—माट बिगड़ जाना या बिगड़ना=(क) किसी का स्वभाव ऐसा बिगड जाना कि उसका सुधार असंभव हो। (ख) किसी काम या बात का पूरी तरह से बिगडकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।
२ दही रखने की मटकी।
पु०[देश०] एक प्रकार की वनस्पति जिसका व्यवहार तरकारी के रूप मे होता है।
माटा—पु०[हिं० मटा]लाल रंग का च्यूँटा जिसके झुंड आम के पेड़ो पर रहते है।

†पु०=मटका।

माटी—स्त्री०[हिं० मिट्टी] १. मिट्टी। २. बैलों के सबध मे, साल भर की जोताई या उसकी मेहनत। जैसे—यह बैल चार माटी का चला है। ३ पाँच तत्त्वों मे से पृथ्वी नामक तत्त्व। ४ शरीर, जो मिट्टी का बना हुआ माना जाता है। ५ मृत शरीर। लाश। शव।

माठ—पु०[हिं० मटकी] मटकी।

†पु०[?] एक प्रकार की मिठाई।

माठर—पु०[स०√मठ् +अरन्+अण्] १ सूर्य के एक पारिपार्श्वक जो यम माने जाते है। २ वेद-व्यास। ३. ब्राह्मण। ४ कलाल। कलवार।

†वि०=मट्ठर।

माठा†—वि०[हिं० मीठा]१ मधुर। २ गभीर। ३ कजूस। (डिं०)

पु०=मठा या मट्ठा।

माठाधूपा—पु०[स० मधुर+ध्रुपद] ध्रुपद का एक भेद।

माठी—स्त्री०[देश०] एक तरह की कपास।

माठू†—पु०[हिं० मिठ्ठू]१ बदर। वानर। २ तोता।

वि० निर्बुद्धि। मूर्ख।

माड—पु०[स०] ताड की जाति का एक पेड।

†पु०=माँड।

माड़ना—स०[स० मडन]१ मडित करना। भूषित करना। २ धारण करना। पहनना। ३ आदर-सम्मान करना। ४ मचाना। ५ माँडना। ६. मलना। मसलना। ७. रौदना।

अ० घूमना-फिरना। टहलना।

†अ०, स०=माँडना।

माडव†—पु०=मडप।

माडा—वि०[स० मद]१ खराब। निकम्मा। २ दुर्बल शरीर का। दुबला-पतला। ३ बीमार। रोगी। ४ बहुत थोडा।

माडी†—स्त्री०१ =मडप। २ =माँडी।

माढा†—पु०[स० मडप]घर के ऊपर का चौबारा जिसकी छत मडप जैसी होती है।

†पु०=मठा या मट्ठा।

माढी†—स्त्री०[हिं० मँढी] मचिया।

स्त्री=मढी।

माण†—पु०=मान।

माणक—पु०[स०√मान् (पूजा)+घञ्,+कन्, नि० णत्व]मानकद।

माणना—अ०, स०१ =माँडना। २ =माडना।

माणव—पु०[स० मनु+अण्, न=ण, वृद्धि]१ मनुष्य। २ बालक। लडका। ३ ऐसा हार जिसमे १६ लड हो।

माणवक—पु०[स० माणव+कन्] १ सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २ तुच्छ या हीन व्यक्ति। ३ नाटा या बौना आदमी। ४ बालक। लडका। ५ विद्यार्थी। ६ सोलह लडोवाली मोतियो की माला।

माणवक-क्रीडा—पु०[स० ष० त०] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश नगण, मगण और दो लघु होते हैं।

माणव-विद्या—स्त्री०[स० ष० त०] जादू-टोना। तत्र-मत्र। (कौ०)

माणस†—पु०=मानुस (मनुष्य)।

†पु०=मानस।

माणिक—पु०=माणिक्य।

माणिक्य—पु०[स० मणि+कन्+ष्यञ्]१ लाल नामक रत्न। २. एक प्रकार का केला।

वि० सब मे श्रेष्ठ।

माणिक्या—स्त्री०[स० माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबंध—पु०[स० मणिबन्ध+अण्] सेधा नमक।

माणिमंथ—पु०[स० मणिमथ+अण्] सेधा नमक।

मातंग—पु० [स० मतग+अण्] १ हाथी। २ चाडाल। ३ किरात आदि किसी असभ्य जाति का व्यक्ति। ४ एक ऋषि। ५ अश्वत्थ। पीपल। ६ सवर्त्तक मेघ।

मातंगी—स्त्री०[स० मातग+ङीप्] १ पार्वती। २ वसिष्ठ की पत्नी। ३ चाडाल जाति की स्त्री। ४ दस महाविद्याओ मे से एक। (तत्र)

मात—वि०[अ०] १ जो मर गया हो। मरा हुआ। २ हारा हुआ। पराजित।

स्त्री०१ शतरज के खेल मे वह स्थिति जब कोई पक्ष बादशाह को मिलने-वाली शह को न बचा सकता हो और इस प्रकार उसकी हार हो जाती हो।

मुहा०—मात करना=(क) शतरज के खेल मे विपक्षी को हराना। (ख) किसी गुण, कार्य या बात मे किसी से बढ-चढकर होना। **मात खाना**=(क) शतरज के खेल मे हार होना। (ख) पराजित होना।

२ पराजय।

वि० [सं० मत्त] मतवाला। उदा०—मात निमत सब गरजहिं बाँधे।—जायसी।

†स्त्री०=माता।

मातदिल—वि०[अ० मोअतदिल]१ (पदार्थ) जिसका गुण या तासीर न तो अधिक गरम हो और न अधिक ठढी। समशीतोष्ण। २ जिसमे कोई बात आवश्यकता से अधिक या कम न हो। मध्यम प्रकृति का। सतुलित।

मातना*—अ०[स० मत्त]१ मस्त या मत्त होना। २ नशे मे चूर होना।

मातबर—वि०[अ० मोतबर] [भाव० मातबरी] जिसका एतबार किया जा सके। विश्वसनीय। विश्वस्त।

मातबरी—स्त्री० [अ० मोतबरी] मातबर अर्थात् विश्वसनीय होने की अवस्था या भाव। विश्वसनीयता।

मातम—पु०[स०]१ मृतक का शोक। मृत्युशोक। २ मृत्यु शोक के कारण होनेवाला रोना-पीटना। ३ किसी बहुत बडी या अशुभ घटना का दुख या शोक।

क्रि० प्र०—मनाना।

मातम-पुर्सी—स्त्री०[फा०] मृतक के सबधियों के यहाँ जाकर प्रकट की जानेवाली सहानुभूति।

मातमी—वि०[फा०]१ मातम-सबधी। २ शोकसूचक। जैसे—मातमी पोशाक। ३ मातम के रूप मे होनेवाला। ४ मातम करनेवाला।

मातमुख—वि०[डिं०] मूर्ख।

मातरि-पुरुष—पु०[स० स० त०, विभक्ति का अलुक्] वह जो अपनी माँ के सामने अपनी वीरता का बखान करे, पर बाहर कुछ भी न कर सके।

मातरिश्वा—पु०[स०] १ पवन। वायु। २ एक प्रकार की अग्नि।

मातलि—पु०[स०मतल+इञ्] इद्र का सारथी।

मातलि-सूत—पु०[स० ब० स०] इद्र।

मातहत—वि०[अ०] [भाव० मातहती]जो किसी के अधीन हो।
पु० अधीनस्थ कर्मचारी।

मातहतदार—पु०[अ०+फा०] जमीन का वह मालिक जो दूसरे बडे मालिक के अधीन हो।

मातहती—स्त्री०[अ०] मातहत होने की अवस्था या भाव।

माता (तृ)—स्त्री०[स०√मान् (पूजा)+तृच्, नि० न-लोप]१. जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। माँ। २ आदरणीय, पूज्य या बडी स्त्री। ३ प्राचीन भारत मे वेश्याओं की दृष्टि से वह वृद्धा स्त्री जो उनका पालन पोषण करती थी और उन्हे नाच-गाना आदि सिखाकर उनसे पेशा कराती थी। खाला। ४ चेचक या शीतला नामक रोग। ५ गौ। ६ जमीन। भूमि। ७ विभूति। ८ लक्ष्मी। ९ इन्द्रवारुणी। १०. जटामासी।
वि०[स० मत्त] [स्त्री० माती] मदमस्त। मतवाला।

मातामह—पु०[स० मातृ+डामहच्] [स्त्री० मातामही] किसी की माता का पिता। नाना।

मातु*—स्त्री०=माता।

मातुल—पु०[स० मातृ+डुलच्] [स्त्री० मातुला, मातुलानी] १ माता का भाई। मामा। २ धतूरा। ३. एक प्रकार का धान। ४ एक प्रकार का साँप। ५ मदन नामक वृक्ष।

मातुला—स्त्री०=मातुलानी।

मातुलानी—स्त्री० [स० मातुल+ङीप्+आनुक्]१. मामा की स्त्री। मामी। २ भाँग।

मातुली—स्त्री०[स० मातुल+ङीष्]१. मामा की पत्नी। मामी। २ भाँग।

मातुलुंग—पु० [स० मातुल√गम्+खच्, मुम्, पृषो० सिद्धि] बिजौरा नीबू।

मातुलेय—पु० [सं० मातुली+ढक्—एय?] [स्त्री० मातुलेयी] मामा का लडका। ममेरा भाई।

मातृ—स्त्री०[स० दे० 'माता'] जननी। माता।

मातृक—वि०[स० समास मे]१. माता-सबंधी। माता का। २ माता के पक्ष से प्राप्त होनेवाला (अधिकार, व्यवहार आदि)। 'पितृक' का विरुद्धार्थक। (मैट्रिआर्कल)
पु०१. मामा। २. ननिहाल।
† वि० स० 'मान्त्रिक' का अशुद्ध रूप।

मातृक-च्छिद—पु० [स०मातृ-क=शिर, ष०त०, मातृक√छिद् (काटना)+क, तुक्] परशुराम।

मातृक-प्रणाली—स्त्री० दे० 'मातृ-तत्र'।

मातृका—स्त्री०[स० मातृ+कन्+टाप्] १ जननी। माता। २ गौ। ३ दूध पिलानेवाली दाई। धाय। ४ सौतेली माँ। उपमाता। ५ तात्रिकों की एक प्रकार की देवियाँ जिनकी सख्या सात कही गई है। ६ वर्णमाला की बारहखडी। ७. ठोढी पर की आठ विशिष्ट नसें। ८ वह स्त्री जो लडकियों, दाइयों आदि के कामों की देख-रेख करती हो। (मेट्रन)

मातृका-क्रम—पु० दे० 'अक्षर'-क्रम'।

मातृ-गण—पु०[ष० त०] सात अथवा आठ मातृकाओं का गण या वर्ग।

मातृ-चक्र—पु०[ष० त०] मातृकाओं का समूह।

मातृ-तत्र—पु०[ष० त०]कुछ प्राचीन जातियों मे वह सामाजिक व्यवस्था जिसमे गृह की स्वामिनी माता मानी जाती थी और वही घरेलू व्यवस्था भी करती थी। (मैट्रिआर्की)

मातृ-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] हथेली मे छोटी उँगली के मूल का उभरा हुआ स्थान। (ज्योतिष)

मातृत्व—पु०[स० मातृ+त्व] मातृ या माता अर्थात् सतानवती होने की अवस्था पद या भाव। (मैटर्निटी)

मातृ-देश—पु० [स० ष० त०] १ मातृभूमि। २ विशेषत विदेशों मे जाकर बने हुए लोगों की दृष्टि से उनके पूर्वजों की मातृभूमि।

मातृ-नदन—पु०[स० ष० त०] १ कार्तिकेय। २ महाकरज।

मातृ-पक्ष—पु० [स०ष०त०] किसी की माता के पूर्वजों का कुल या पक्ष। ननिहाल।

मातृ-पूजा—स्त्री०[ष० त०] विवाह के दिन से पहले छोटे-छोटे मीठे पूए बनाकर पितरों का किया जानेवाला पूजन।

मातृ-प्रणाली—स्त्री०=मातृ-तत्र।

मातृ-बंधु—पु०[ष० त०] माता के सबध का अथवा मातृ-पक्ष का कोई आत्मीय।

मातृ-भाषा—स्त्री०[ष० त०]१ किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसकी माँ द्वारा बोली जानेवाली भाषा जिसे वह माँ की गोद मे ही सीखने लगता है। २ किसी व्यक्ति की दृष्टि से वह भाषा जो उसकी राष्ट्रीयता के अन्य लोग बोलते हो।

मातृ-भूमि—स्त्री०[ष०न०] वह स्थान या देश जिसमे किसी का जन्म हुआ हो, और इसी लिए जो उसे माता के समान प्रिय समझता हो।

मातृ-मंडल—पु०[ष० त०] दोनों आँखों के बीच का स्थान।

मातृ-माता (तृ)—स्त्री०[स० ष० त०]१ माता की माता। नानी। २. दुर्गा।

मातृ-मुख—वि०[ब० स०] हर काम या बात मे माता का मुँह ताकनेवाला अर्थात् जडमति। मूर्ख।

मातृ-यज्ञ—पु०[स० ष० त०] एक प्रकार का यज्ञ जो मातृकाओं के उद्देश्य से किया जाता है।

मातृ-रिष्ट—पु०[स० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक दोष जिसके कारण प्रसव के उपरान्त माता पर सकट आता या उसके प्राण जाने का भय होता है।

मातृ-वत्सल—पु०[स० स० त०] कार्तिकेय।

मातृ-शासित—वि०[स० तृ० त०] माता के शासन मे ही ठीक तरह से रहनेवाला, अर्थात् मूर्ख।

मातृ-ष्वसा (सृ)—स्त्री०[स० ष० त०] मौसी। माँ की बहन।

मातृष्वसेय—पु० [सं० मातृष्वसृ+ढक्—एय] [स्त्री० मातृष्वसेयी] मौसेरा भाई।

मातृसत्रा—स्त्री०[सं०]=मातृतत्र।

मातृ-सपत्नी—स्त्री०[स० ष० त०] सौतेली माता। विमाता।

मातृ-स्तन्य—पु०[सं० ष० त०] माँ का दूध।

मातृ-हत्या—स्त्री०[स० ष० त०]१ माँ को मार डालना। (मैट्रिसाइड) २. माँ को मार डालने से लगनेवाला पाप।

मात्र—अव्य०[स०√मा (मान)+त्रण्]इस, इन या इतने से अधिक या दूसरा नही। जैसे—(क) मात्र एक रुपया मुझे मिला है। (ख) मात्र १५ आदमी वहाँ पहुँचे। (ग) सब चुप रहे, मात्र वोलनेवाले अधिकारी-गण थे।

मात्रक—पु०[स० मात्र+कन्]१ वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाव से या मेल से अन्य चीजो की सख्या निर्धारित की जाय। इकाई। (युनिट) २. किसी समूह की कोई एक वस्तु या अग। ३. वह जिसकी भिन्न या स्वतन्त्र सत्ता हो। (यूनिट)

मात्रा—स्त्री०[स० मात्र+टाप्]१ लवाई, चौडाई, ऊँचाई, गहराई, दूरी, विस्तार, सख्या आदि जानने या निश्चित करने का परिमाण या साधन। २. कोई ऐसा मानक उपकरण या साधन जिससे कोई चीज तौली या नापी-जोखी जाती हो। परिमाण या माप जानने का साधन। ३ किसी वस्तु का ठीक आयतन, तौल या नाप। परिमाण। ४. किसी पूरी या समूची इकाई का उतना अश या भाग जितना अपेक्षित, आवश्यक या प्रस्तुत हो। जैसे—(क) वहाँ सभी पदार्थ वहुत अधिक मात्रा मे रखे थे। (ख) दाल मे नमक कुछ अधिक मात्रा मे पड गया है। ५ औषध आदि का उतना अश या परिमाण जितना एक वार मे खाया जाता हो या खाया जाना अपेक्ष्य हो या उचित हो। ६ किसी चीज का नियत या निश्चित छोटा भाग। ७ उतना काल या समय जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने मे लगता है। ८. उच्चारण, सगीत आदि मे काल का उतना अश जितना किसी विशिष्ट ध्वनि के उच्चारण मे लगता है। ९ वारह-खड़ी लिखने में वह स्तर सूचक चिह्न जो किसी अक्षर के ऊपर, नीचे या आगे-पीछे लगता है। जैसे—ह्रस्व इ की मात्रा और दीर्घ ऊ की मात्रा। १०. सगीत मे उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण मे लगता है। ११. सगीत मे ताल का नियत या निश्चित विभाग। जैसे—तीन मात्राओ का ताल, चार मात्राओ का ताल। १२. इद्रिय, जिसके द्वारा विषयो का ज्ञान होता है। १३. अग। अवयव। १४ किसी वस्तु का वहुत छोटा कण या अणु। १५. आवृत्ति रूप। १६ वल। शक्ति। १७. राजाओ के वैभव के सूचक घोड़े, हाथी आदि परिच्छद। १८. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

मात्रा-वृत्त—पु०[मध्य० स०] मात्रिक छन्द।

मात्रासम—पु०[स० त०,+कन्] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ और अत मे गुरु होता है।

मात्रा-स्पर्श—पु०[प० त०] विषयो के साथ इन्द्रियो का सयोग।

मात्रिक—वि० [स० मात्रा+ठक्—इक] १. मात्रा-सवधी। २ किसी एक इकाई से सम्वन्ध रखनेवाला। एकात्मक। (युनिटरी) ३. जिसमे मात्राओ की गणना या विचार होता हो। जैसे—मात्रिक छन्द।

मात्रिक-छंद—पु०[स० कर्म० स०] वह छद जिसके चरणों की गठन मात्राओ का ध्यान रख कर की गई हो।

मात्सर—वि०[स० मत्सर+अण्]मत्सर युक्त।

मात्सर्य—पु० [स० मत्सर+ष्यञ्] मत्सर का भाव। ईर्ष्या। डाह।

मात्स्य—वि०[स० मत्स्य+अण्] मछली-सम्वन्धी। मछली का।
पु० एक प्राचीन ऋषि।

मात्स्य-न्याय—पु०[सं० कर्म० स०] ऐसी स्थिति जिसमे वडा या शक्तिशाली छोटे या दुर्वल को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार वड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।

मात्स्यिक—पु०[स० मत्स्य+ठक्—इक] मछली मारनेवाला। मछुआ। वि० मत्स्य या मछली से सम्वन्ध रखनेवाला।

माथ†—पु०=माथा।

माथना*†—स०=मथना।

माथ-वधन—पु०[हिं० माथा+सं० ववन] १. सिर पर लपेटने या वाँधने का कपडा। जैसे—पगडी, माफा आदि। २. स्त्रियो की चोटी वाँधने की डोरी। चोटी। परांदा।

माथा—पु०[स० मस्तक]१. सिर का अगला भाग। मस्तक।
पद—माथा-पच्ची, माथा-पिट्टन।
मुहा०—(किसी के आगे या सामने) माथा घिसना=वहुत दीनता या नम्रतापूर्वक मिन्नत या खुशामद करना। **माथा टेकना**=सिर झुकाकर प्रणाम करना। **माथा ठनकना**=(क) सिर मे हलकी धमक या पीडा होना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, पहले से ही किसी दुर्घटना या वाधा होने की आशका होना। **माथा रगड़ना**=दे० ऊपर 'माथा घिसना'। **माथे चढ़ाना**=शिरोवार्य करना। **(किसी के) माथे टीका होना**=कोई ऐसी विशेषता होना जिसके कारण महत्त्व या श्रेष्ठता प्राप्त हो। **माथे पर बल पड़ना**= आकृति से अप्रसन्नता, रोप आदि प्रकट होना। **माथे भाग होना** =भाग्यवान् होना। **(कोई चीज किसी के) माथे मारना** =वहुत उपेक्षापूर्वक या तुच्छ भाव से देना। जैसे—वह रोज तगादा करता है, उसकी किताव उसके माथे मारो।
२. ऐसा अकन या चित्र जिसमे केवल मुख और मस्तक वना हो, धड आदि शेष अग न दिखाये गये हो।
विशेष—शेष मुहावरों के लिए देखे 'सिर' के मुहा०।
३. किसी पदार्थ का अगला और ऊपरी भाग। जैसे—नाव का माथा।
मुहा०—माथा मारना= जहाज का वायु के विपरीत जोर मारकर चलना। (लश०)
पु०[देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

माथा-पच्ची—स्त्री०[हिं० माथा+पचाना] किसी काम या वात के लिए वहुत अधिक वोलने या समझने-समझाने के लिए होनेवाला ऐसा परिश्रम जिससे जी ऊव जाय या शरीर थक जाय। सिर-पच्ची।

माथा-पिट्टन—स्त्री०[स्त्री० माथा+पीटना]१ दुख आदि के समय अपना सिर पीटने की क्रिया या भाव। २ दे० 'माथा-पच्ची'।

माथुर—पु०[स० मथुरा+अण्] [स्त्री० मथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. मथुरा मे रहनेवाले चतुर्वेदी ब्राह्मण। चौबे। ३ कायस्थो मे एक जाति या वर्ग। ४. वैश्यों मे एक जाति या वर्ग। ४ मथुरा और उसके आस-पास का प्रदेश। व्रज-मडल।
वि० मथुरा-संवधी। मथुरा का।

माथे—क्रि० वि०[हिं० माथा] मस्तक पर।
अव्य०=मत्थे।

मार्यै† —अव्य०=मत्थे ।

माद—पु० [स०√मद् (मत्त होना)+घञ्] १ अभिमान । २ प्रसन्नता । हर्ष । ३ मद । मत्तता ।
†पु० [?] छोटा रस्सा । (लश०)

मादक—वि० [स०√मद् +ण्वुल्-अक] मद के रूप मे होनेवाला । फलत नशा लानेवाला । नशीला ।
पु० १. नशा उत्पन्न करनेवाला पदार्थ । जैसे–अफीम, भाँग, शराब आदि । २. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र । कहते है कि इसके प्रयोग से शत्रु मे प्रमाद उत्पन्न होता था । ३. एक प्रकार का हिरन ।

मादकता—स्त्री० [स० मादक+तल्+टाप्] मादक होने की अवस्था या भाव ।

मादन—पु० [स०√मद्+णिच्+ल्युट्–अन वृद्धि] १. मदन नामक वृक्ष । २. कामदेव । मदन । ३ लौग । ४. धतूरा ।
वि०=मादक । उदा०—जैसे असख्य मुकुलो का मादन विकास कर आया ।—प्रसाद ।

मादनी—स्त्री० [सं० मादन+ङीप्]१ भाँग । २ मदिरा । शराब । ३. नशा लानेवाली कोई चीज । उदा०—विना मादनी का जग जीवन विना चाँदनी का अवर ।

मादनीय—वि० [स०√मद्+णिच्+अनीयर्] मादक । नशीला ।

मादर—स्त्री० [स० मातृ से फा०] माँ । माता ।
†पु०=मादल या मर्दल नामक बाजा । उदा०—मदिर वेगि सँवारा मादर तर उछाह ।—जायसी ।

मादरजाद—वि० [फा०] १ जन्म का । जैसे—मादरजाद अधा । २. जैसा जन्म के समय रहा हो, ठीक वैसा । जैसे—मादर-जाद नंगा । ३ एक ही माता से उत्पन्न (दो या अधिक) । सगा । सहोदर ।

मादरिया*—स्त्री०=मादर ।

मादरी—वि० [फा०] माता-सबधी । माता का ।

मादल—पु० [स० मर्दल] पखावज की तरह का एक बाजा ।

मादा—स्त्री० [फा० माद] स्त्री जाति का जीव या प्राणी । जैसे—साँड़ की मादा गाय कहलाती है ।
†पु०=माद्दा ।

मादिक†—वि०=मादक ।

मादिकता†—स्त्री०=मादकता ।

मादिन†—स्त्री० =मादा ।

मादी—स्त्री०=मादा ।

मादीन—स्त्री०=मादा ।

माद्दा—पु० [अ० माद्द] १ वह मूल तत्त्व या द्रव्य जिससे सारे संसार की सृष्टि हुई है । २ वह मूल पदार्थ जिससे कोई दूसरा पदार्थ बना हो । ३. व्याकरण मे शब्द का मूल या व्युत्पत्ति । ४ वह गुण, तत्त्व, योग्यता अथवा पात्रता जिससे मनुष्य कुछ करने-धरने या समझने-बूझने के योग्य होता है । ५ फोडे मे से निकलनेवाली पीव । मवाद । ५ किसी चीज के अन्दर भरा हुआ कोई दोष या विकार ।

माद्दी—वि० [अ०] १ मादा-सम्बन्धी । मादा का । २ भौतिक जड़ । ३. पैदाइशी ।

४—४३

माद्रवती—स्त्री० [स०] १ राजा परीक्षित् की स्त्री का नाम । २. पाडु की दूसरी पत्नी का नाम । माद्री ।

माद्री—स्त्री० [सं० मद्र+अण्+ङीप्] मद्र देश के राजा की कन्या जो राजा पाडु से ब्याही गई थी । नकुल और सहदेव इसी के पुत्र थे ।

माद्रेय—पु० [स० माद्री+ढक्, ढ—एय] माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव ।

माधव—वि० [सं० मधु+अण्] १. मधु-सबधी । २ मधु ऋतु सबधी । ३. मधु राक्षस का (वशज) ।
पु०[स० प० त०] १ कृष्ण । २ वैशाख । मास । ३ वसत ऋतु । ४. महुआ । ५. काला उड़द । ६. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ८ जगण होते हैं । ७ एक प्रकार का राग जो भैरव राग के आठ पुत्रो मे मे एक माना गया है । ८. एक प्रकार का संकर राग जो मल्लार विलावल और नट-नारायण के योग से बना है ।

माधवक—पु० [स० माधव+वुन्–अक] महुए की शराब ।

माधविका—स्त्री० [स० माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्व] माधवी लता ।

माधवी—स्त्री० [सं० माधव+ङीप्] १ एक तरह का प्राचीन पेय पदार्थ जो मधु से बनाया जाता था । २ एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगधित फूल लगते हैं । ३. उक्त लता के फूल । ४ सगीत मे, ओडव जाति की एक रागिनी जिसमे गाधार और धैवत वर्जित है । ५. वाम नामक सवैया छन्द का एक भेद । ६ तुलसी । ७ दुर्गा । ८ कुटनी । दूती । ९. शहद की चीनी ।

माधवी-लता—स्त्री० [स० मध्य० स०] माधवी नामक सुगधित फूलो की लता ।

माधवोद्भव—पु० [स० माधव-उद्भव, ब० स०] खिरनी का पेड़ ।

माधी—पु० [देश०] एक प्रकार का राग ।

माधुक—पु० [सं० मधुक+अण्] १ मैत्रेयक नाम की वर्ण सकर जाति । २. महुए की शराब ।

माधुकर—वि० स्त्री० [स० मधुकर+अण्] [स्त्री० माधुकरी] मधुकर या भौंरे की तरह का ।

माधुपर्किक—पु० [स० मधुपर्क+ठक्–इक] वह पदार्थ जो मधुपर्क देने के समय दिया जाता है ।
वि० १ मधुपर्क-सबधी । मधुपर्क का । २ अतिथि को आदरपूर्वक दिया जानेवाला ।

माधुर—पु० [सं० मधुर+अण्] मल्लिका । चमेली ।

माधुरई†—स्त्री०=मधुरता ।

माधुरता† —स्त्री०=मधुरता ।

माधुरी—स्त्री० [स० माधुर्य+ङीप्, य लोप] १ मधुर होने की अवस्था या भाव । मधुरता । २ मिठास । ३ मिठाई । ४ शराब ।

माधुर्य—पु० [स० मधुर+ष्यञ्] १ मधुर होने की अवस्था या भाव । मधुरता । २ शोभा से युक्त सुन्दरता । ३ मिठास । ४ पाचाली रीति के अन्तर्गत काव्य का एक गुण । ५ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग ।

माधैया* —पु०=माधव ।

माधो†—पु०=माधव ।

माधौ†—पु०=माधव ।

माध्यंदिन—पु० [स० मध्य+दिनण् पृषो० नुम्] मध्याह्न । दोपहर ।

माध्यंदिनी—स्त्री० [स० माध्यदिन+ङीष्] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यंदिनीय—पु० [स० माध्यदिन+छ–ईय] नारायण। परमेश्वर।

माध्य—वि० [स० मध्य+अण्] मध्य का। विचला।

पु० १. कई सख्याओं आदि के जोड को गिनती की उन सख्याओ से भाग देने पर निकलनेवाला भाग-फल जो उन सब सख्याओं का मध्यम मध्यमान सूचित करता है। बरावर का पडता। औसत। (एवरेज) उदाहरणार्थ यदि किसी विद्यालय की पहली कक्षा मे ३०, दूसरी कक्षा मे २५, तीसरी कक्षा मे २०, चौथी कक्षा मे १५ और पाँचवी कक्षा मे १० विद्यार्थी हों तो सब मिलाकर १०० विद्यार्थी हुए। कक्षाएँ कुल ५ है, अत. १०० को ५ से भाग देने पर भाग-फल २० होगा। इस आधार पर कहा जायगा कि विद्यालय की प्रत्येक कक्षा मे विद्यार्थियो का माध्य २० है। २ दे० 'मध्यमान'।

माध्यम—वि० [स० मध्यम+अण् या मध्य+मण्,] मध्यम का। वीचवाला।

पु० १ वह तत्त्व जिसके द्वारा कोई क्रिया सपन्न होती हो, कोई परिणाम या फल निकलता हो अथवा किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता हो। किसी क्रिया का मध्यवर्ती उपाय या साधन। २ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय। ३. कला के क्षेत्र मे, वह पदार्थ जिसके आधार या सहायता से कोई कृति प्रस्तुत की जाय। ४ वह व्यक्ति जिसमे किसी अन्य व्यक्ति की आत्मा आकर कुछ समय के लिए ठहरती और अपनी बाते, उत्तर आदि उसी व्यक्ति के द्वारा प्रकट करती या कहती हो।

माध्यमिक—पु० [स० मध्यम+ठक्–इक,] १. बौद्धो के महायान की दो शाखाओ मे से एक शाखा (दूसरी शाखा योगाचार है) जिसका मत है कि सब पदार्थ शून्य से उत्पन्न होते है और अत मे शून्य हो जाते है। २ मध्य देश। ३. मध्य देश का निवासी।

वि०=माध्य।

माध्यमिक-शिक्षा—स्त्री० [कर्म० स०] प्रारभिक शिक्षा के उपरात और उच्च शिक्षा के पहले दी जानेवाली शिक्षा। (सेकेंडरी एजुकेशन)

विशेष—मुख्यत पाँचवी कक्षा से १०वी या ११वीं कक्षाओं तक दी जानेवाली शिक्षा।

माध्यस्थ—पु० [स० मध्य√स्था (ठहरना)+क+अण्] १ मध्यस्थ। विचवई। २ मध्यस्थता। ३ दलाल। ४ प्रेमी और प्रेमिका का दूतत्व करनेवाला व्यक्ति। कुटना। ५ विवाह करानेवाला ब्राह्मण। बरेखी।

माध्याकर्पण—पु० [स० माध्य-आकर्पण, कर्म० स०] भौतिक विज्ञान मे यह तत्त्व या सिद्धान्त कि पृथ्वी और उसके चारो ओर के आकाश या वातावरण मे जितने पदार्थ है, वे सब पृथ्वी के केंद्र की ओर आकृष्ट होते है—पृथ्वी का मध्यभाग या केन्द्र उन्हे अपनी ओर आकृष्ट करता है। प्रत्येक पदार्थ गिरने पर पृथ्वी की ओर आकृष्ट होता है, वह इसी माध्याकर्पण का परिणाम है। (ग्रैविटी)

माध्याह्निक—पु० [स० मध्याह्न+ठञ्—इक,] ठीक माध्याह्न के समय किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

माध्यिक—वि० [स०] १ मध्य-सबधी। मध्य का। २ वीच मे रहने या होनेवाला।

पु० किसी क्रम या शृखला के ठीक वीच का वह बिंदु जिसके उपर और नीचे दोनों ओर गिनती के विचार से बराबर इकाइयाँ हो। (मीडियन) जैसे—१, २, ३, ४ और ५ मे ३ माध्यिक है।

माध्व—वि० [स० मध्व+अण्] १. मधुनिर्मित। २ वसत-सबधी।

पु० १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. वसत। ४. वैशाख। ५ मध्वाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय। ६. महुए का पेड। ६ काला मूंग।

माध्वक—पु० [सं० माध्वीक, पृषो० ई—अ] महुए की शराब।

माध्विक—पुं० [स० मधु+ठक्–इक, वृद्धि] वह जो मधु-मक्खियों के छत्तों मे से शहद इकट्ठा करने का काम करता हो।

माध्वी—स्त्री० [स० मधु+अण्+ङीप्] १. एक तरह की लता जिसमे सुगधित फूल लगते है। माधवी लता। २. महुए की शराब। ३ मदिरा। शराब। ४. पुराणानुसार एक नदी का नाम। ५ मधुर कटक नामक मछली। ६. वाम नामक छद।

माध्वीक—पु० [स० माध्वी+कन्] १. महुए की शराब। २ दाख की शराब। ३. मकरद। ४. सेम।

माध्वीका—स्त्री० [स० माध्वीक+टाप्] सेम।

मान.शिल—वि० [सं० मन शिल+अण्] १ मन शिला या मैनशिल सम्बन्धी। २. मैनसिल के रग मे रगा हुआ।

मान—पुं० [स० √मान् (पूजा)+घञ्] १. प्रतिष्ठा। सम्मान। इज्जत।

पद—मान-महत, मान-हानि।

मुहा०—(किसी का) मान रखना—ऐसा काम करना जिससे किसी की प्रतिष्ठा वनी रहे।

२. अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान अथवा गौरव का उचित अभिमान या ध्यान। आत्म-गौरव या आत्मप्रतिष्ठा का मन मे रहनेवाला भाव या विचार। ३. अनुचित और निंदनीय रूप मे होनेवाला अभिमान। घमड। शेखी।

मुहा०—(किसी का) मान मथना=अच्छी तरह दबाकर या पीडित करके अभिमान और प्रतिष्ठा नष्ट करना।

४ मन मे होनेवाला विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को अनुचित तथा उपेक्षासूचक आचरण करते हुए देखकर होता है, और जिसके फलस्वरूप उस व्यक्ति के प्रति उदासीनता होने लगती है। रुठने की क्रिया या भाव।

विशेष—स्त्रियाँ प्राय ईर्ष्यावश अपने पति या प्रेमी के प्रति रूठे हुए होने का जो भाव व्यक्त करती है, साहित्य मे विशिष्ट रूप से वही मान कहलाता है।

पद—मान-मोचन।

मुहा०—मान मनाना=रूठे हुए व्यक्ति का मान दूर करके उसको मनाना। मान मोडना=मान का त्याग करना। रूठा न रहना।

पु० [स०√मा (मापना)+ल्युट्—अन] १. मापने या नापने की क्रिया या भाव। २. मापने या नापने पर ज्ञात होनेवाला परिमाण। माप-फल। ३. वह मानक दड या पात्र जिसके द्वारा कोई चीज तौली या नापी जाती है। तौल, नाप आदि जानने का साधन। जैसे—गज, सेर आदि। ४. ऐसा काम या बात जिससे कोई चीज या बात प्रमाणित अथवा सिद्ध हो जाती हो। ५ तुल्यता। समानता। ६ किसी काम

या बात के संबंध मे ऐसी योग्यता या शक्ति जिससे वह काम या बात पूरी उतर सके या उस पर ठीक तरह से वश चल सके। जैसे—यह काम उनके मान का नही है, अर्थात् इस काम के लिए जिस योग्यता या शक्ति की अपेक्षा है, उसका उनमे अभाव है।

मुहा०—(किसी के) मान रहना=किसी के आश्रय मे या भरोसे पर रहना। किसी के बल या सहारे पर अच्छी तरह जीवन-निर्वाह करना या समय बिताना। जैसे—यदि आज उन्हे कुछ हो जाता तो मैं किसके मान दिन बिताती ? (स्त्रियाँ)

७ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत। ८ उत्तर दिशा का एक देश। ९. ग्रह। १० मत्र। ११ सगीत शास्त्र के अनुसार ताल मे का विराम जो सम, विषम, अतीत और अनागत चार प्रकार का होता है।

मानकंद—पु०[स० मध्य० स० ?]१. एक तरह का कद। मान कच्चू। २ सालिब मिश्री नामक कद।

मानक—पु० [सं० मान+कप्] मान कच्चू। मान कद।

पु० [स० मान से] विशिष्ट वस्तुओ के आकार, प्रकार महत्त्व आदि जाँचने का कोई आधिकारिक आदर्श, मानदड या रूप। (स्टैन्डर्ड)

मानक काल—पु०[स०]दे० 'मानक समय'।

मान कच्चू—पु०=मानकद।

मानकित—भू० कृ० [हिं० मानक से] मानक के रूप मे किया या लाया हुआ। (स्टैंडर्डाइजड)

मानक समय—पु०[सं०] दिन-रात आदि के समय का वह विभाजन जो किसी क्षेत्र या देश मे आधिकारिक रूप से मानक माना जाता हो। (स्टैंडर्ड टाइम)

मानकीकरण—पु०[स० ?] एक ही प्रकार या वर्ग की बहुत सी वस्तुओ के गुण, महत्त्व आदि का एक मानक रूप स्थिर करने की क्रिया या भाव। (स्टैण्डर्डाइजेशन) जैसे—बटखरो का मानकीकरण, जजो का मानकीकरण।

मानगृह—पुं०[सं० ष० त०] १ प्राचीन राजमहलो मे वह कमरा जिसमे राजा से रूठी हुई रानी मान करके बैठती थी। २ साहित्य मे वह स्थान, जहाँ पर नायिका मान करके बैठी हुई हो।

मान-चित्र—पु०[स० ष० त०] किसी चिपटे तल पर किया हुआ रेखाओ का ऐसा अकन जिसमे किसी भू-भाग की नदियो, पहाडो, नगरो आदि के स्थान, विस्तार आदि दिखाये गये हो। किसी स्थान का बना हुआ नकशा। (मैप) जैसे—एशिया का मानचित्र।

मान-चित्रक—पु० [स०] वह जो मानचित्र बनाता या मान-चित्रण करता हो।

मान-चित्रण—पु० [स०] मानचित्र अर्थात् नक्शे बनाने की कला या विद्या। (मैपिंग)

मानचित्रांकन—पु०[स० मानचित्र-अकन, ष० त०] मानचित्र बनाने और रेखाचित्र अकित करने की कला या विद्या।

मानचित्रावली—स्त्री०[स० मानचित्र-आवली, ष० त०] पृथ्वी, भूखडो, देशों, प्रांतो आदि के भौगोलिक चित्रो का पुस्तकाकार समूह। मानचित्रों का सकलन या सग्रह। (एटलस)

मानज—पु०[स० मान√ जन् (उत्पत्ति)+ड] क्रोध।

वि० मान से उत्पन्न।

मानतरु—पु० [सं० मध्यम० स०] खेतपापडा।

मानता†—स्त्री०=मनौती।

क्रि० प्र०—उतारना।—चढाना।—मानना।

मान-दंड—पु०[स० ष० त०]१. मान नापने का कोई उपकरण। २. लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसा कल्पित परिमाण जिससे दूसरी बातो का महत्त्व या मूल्य आँका जाता हो।

मानद—पु०[स० मान√दा (देना)+क] विष्णु।

वि० मान या प्रतिष्ठा देने या बढानेवाला।

मान-देय—पु० [सुप्सुपा स०] किसी काम या सेवा के बदले मे आदरपूर्वक दिया जानेवाला धन। (आनरेरियम)

मान-धन—पु०[ब० स०]१ वह जो अपने मान या प्रतिष्ठा को सबसे अधिक मूल्यवान् समझता हो। आत्म-सम्मान का ध्यान रखनेवाला। २. अभिमानी। घमडी।

मानधाता—पु०=मांधाता (एक सूर्यवंशी राजा)।

मानन—पु०[स० √ मान्+ल्युट्—अन]१ मान करने की क्रिया या भाव। २ आदर या सम्मान करना।

मानना—अ०[स० मानन]१ मन से यह समझ लेना कि जो कुछ कहा या किया गया है, अथवा जो कुछ प्रस्तुत है वह उचित है। ठीक समझकर अगीकृत या गृहीत करना। जैसे—मैं मानता हूँ कि इसमे आपका कोई दोष नही है। २ मन में किसी प्रकार की धारणा या विचार स्थिर करना। जैसे—आप तो जरा सी बात मे बुरा मान गये। ४ किसी प्रकार की आज्ञा, आदेश, विधान आदि को ठीक समझकर उसके अनुकूल आचरण या व्यवहार करना। जैसे—वह सीधी तरह से नही मानेगा।

स० १ किसी बात को अगीकृत, ग्रहण या स्वीकार करना। जैसे—किसी की बात मानना। २. किसी काम, बात या विषय के सम्बन्ध में तर्क के निर्वाह के लिए कुछ समय के लिए वस्तु-स्थिति के विपरीत कामना करना। जैसे—मान लीजिए कि उसने आकर आपसे क्षमा माँग ली, तो फिर क्या होगा ? ३ किसी को पूज्य या श्रेष्ठ समझकर उसके प्रति मन मे आदर, श्रद्धा या विश्वास रखना। जैसे—आर्य-समाजी हो जाने पर भी वे सनातन धर्म की बहुत सी बाते मानते थे। ४ किसी को विशिष्ट रूप से गुणी, योग्य या समर्थ समझना। जैसे—(क) मैं तो उसे बहादुर मानूँगा जो यह काम पूरा कर दिखलावे। (पूरब) (ख) ऐरे गैरे लोगो को मैं कुछ नही मानता। ५ किसी प्रकार के आचरण, विधान आदि को निर्वाह या पालन के योग्य समझना और उसका अनुसरण करना। जैसे—(क) किसी का अनुरोध या आग्रह मानना। (ख) जन्माष्टमी या शिवरात्रि मानना। ६ मनौती या मन्नत के रूप मे प्रतिज्ञा या सकल्प करना। जैसे—(क) काली जी को बकरा मानो तो लडका जल्दी अच्छा हो जायगा अर्थात् काली जी के सामने बकरे के बलिदान की प्रतिज्ञा या सकल्प करो तो लडका जल्दी अच्छा हो जायगा। (ख) मैंने हनुमान् जी को सवा सेर लड्डू माना है, अर्थात् यह सकल्प किया है कि अमुक काम हो जाने पर सवा सेर लड्डू चढाऊँगा। ७ शृगारिक क्षेत्र मे, किसी के प्रति यथेष्ट अनुराग या प्रेम रखना। किसी पर आसक्त होना। जैसे—दुश्चरित्रा स्त्रियाँ कभी एक को मानती है तो कभी दूसरे को मानने लगती हैं। (बाजारू) ८ सहन करना। सहना। उदा०—उपजत दोष नैन नहिं सूझत, रवि की किरन उलूक

[illegible]—[illegible] १. किसी बात या स्थिति को अपने लिए अनुकूल, [illegible] और [illegible] रहना। जैसे—कुत्ते का [illegible] मानना। पद०—[illegible] मन बिलाम न मानो —[illegible]।

माननीय—वि०[सं० √मान्+अनीयर्] जिसका मान-सम्मान करना [illegible] हो। आदरणीय।
पुं० बड़े लोगों के नाम या पद के पहले उपाधि के रूप में प्रयुक्त पद। (आनरेबुल) जैसे—माननीय मंत्री महोदय।

मानपत्र—पुं०[ष० त०] वह पत्र जो किसी का आदर या सम्मान करने के लिए उसे भेंट किया जाता है और जिसमें उसके सत्कार्यों, सद्गुणों आदि की स्तुति रहती है। अभिनन्दन-पत्र।

मान-मरोड़*—पुं० [हि०] १. मन में होनेवाला मान-अपमान आदि का विचार और [illegible] के कारण होनेवाला क्षोभ। २. आशा। भरोसा।

[illegible]—पुं० [illegible]।

मान-भाव—पुं०[ष० त०] १. वह अवस्था जिसमें कोई मान करके या रूठकर बैठा हो। २. नखरा। नाज।

मान-मंदिर—पुं०[ष० त०] १. दे० 'मानगृह'। २. वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।
विशेष—जयपुर के महाराज मानसिंह ने काशी, दिल्ली, उज्जैन आदि में अपने नाम पर कुछ वेधशालाएँ बनवाई थीं, उन्हीं के आधार पर अब वेधशाला मात्र को (मान-मंदिर) कहने लगे हैं।

मान-मनौअल—स्त्री०[हि० मान+अभिमान+मनाना] रूठकर बैठनेवाले [illegible] को मनाने की क्रिया या भाव।

मान-मनौती—स्त्री०[हि० मान+मनौती] १. मानता। मनौती। २. पारस्परिक प्रेमपूर्ण सम्बन्ध। ३. दे० 'मान-मनौअल'।

मान-मरोर—स्त्री० दे० 'मन-मुटाव'।

मान-मान्—वि०[सं० सं० ?] बहुत बड़ा अभिमानी या घमंडी।

मान-महत्व—पुं०[सं० मान-महत्त्व] प्रतिष्ठा और बड़प्पन।

मान-मोचन—पुं०[ष० त०] साहित्य में, मान करनेवाले प्रिय को मनाकर या समझा बुझाकर उसका मान छुड़ाना और उसे अपने प्रति प्रसन्न करना।

[illegible]—स्त्री०[सं० ष० त०,+टाप्] प्राचीन काल की जल-घड़ी [illegible] समय जानने के लिए होता था।

मानव—वि०[सं० मनु+अण्] मनु से संबंधित अथवा उससे उत्पन्न।
पुं० १. मनुष्य। २. मनुष्य जाति। ३. १४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा। [illegible] ६१० भेद हैं।

मानवक—पुं० [illegible]।

मानवत्—पुं० [सं० मान+मतुप्, म—व] [स्त्री० मानवती] रूठा हुआ।

मानवता—स्त्री० [सं० मानव+तल्+टाप्] १. मनुष्य जाति। २. मानव होने की अवस्था या भाव। ३. मनुष्य के आदर्श तथा स्वाभाविक गुणों, भावनाओं आदि का समष्टि या समूह।

मानवता-वाद—पुं०[ष० त०] [वि० मानवतावादी] वह लौकिक सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि समाज के सभी मनुष्यों का समान रूप से [illegible] और सबको उन्नत करके सन्तुष्ट तथा सुखी बनाने का प्रयत्न होना चाहिए। (ह्यूमैनिज्म)

मानवतावादी (दिन्)—वि०[सं० मानवतावाद+इनि] मानवतावाद-सम्बन्धी। (ह्यूमैनिस्ट)
पुं० वह जो मानवतावाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और पोषक या समर्थक हो। (ह्यूमैनिटेरियन)

मानवती—स्त्री० [मानवत्+ङीप्] साहित्य में वह नायिका जो नायक से रुष्ट या असंतुष्ट होने पर मान करती हो या मान करके बैठी हो।

मानव-देव—पुं०[सं० ष० त०] राजा।

मानव-पति—पुं०[सं० ष० त०] राजा।

मानव-भूगोल—पुं०[सं०] भूगोल शास्त्र का वह अंग जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि प्राकृतिक और भौगोलिक परिस्थितियों का मानव जाति पर क्या प्रभाव पड़ता है। (एन्थ्रोपोजिअग्रैफी)

मानव-वर्जित—वि० [सं० तृ० त०] जिसका कुछ भी मान या प्रतिष्ठा न हो अर्थात् तुच्छ या नीच।

मानव-विज्ञान—पुं०=मानव-शास्त्र।

मानव-व्यापार—पुं०[ष० त०] मनुष्यों को बेचने-खरीदने का काम।

मानव-शास्त्र—पुं०[ष० त०] १ मनुष्यों की उत्पत्ति, उनकी जातियों, उनके स्वभावों आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र। (एन्थ्रोपालोजी) २. अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शन, पुरातत्त्व, मनोविज्ञान, राजनीति, संगीत, संस्कृति, साहित्य आदि से संबंध रखनेवाले वे सभी शास्त्र जो मुख्यतः मानव जाति की उन्नति, विकास आदि में सहायक होते हैं। (ह्यूमैनिटिक्स)

मानव-शास्त्री (स्त्रिन्)—पुं० [सं० मानवशास्त्र+इनि] मानव-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित। (एन्थ्रोपालोजिस्ट)

मानव-शास्त्रीय—वि०[सं० मानवशास्त्र+छ—ईय] मानव-शास्त्र-संबंधी। (एन्थ्रोपालोजिकल)

मानवाचल—पुं०[सं० मानव-अचल, मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत।

मानवी—स्त्री०[सं० मानव+ङीप्] १. मानव जाति की स्त्री। नारी। २. पुराणानुसार स्वयंभुव मनु की कन्या का नाम।
वि० =मानवीय।

मानवीकरण—पुं०[सं० मानव+च्वि, इत्व, दीर्घ, √कृ+ल्युट्—अन] १. किसी वस्तु को मानव अर्थात् मनुष्य का रूप देने की क्रिया या भाव। मानुषीकरण। (ह्यूमैनिजेशन) जैसे—कथा कहानियों में पशु-पक्षियों आदि का होनेवाला मानवीकरण। २. कला, धर्म आदि के क्षेत्र में, यह मानकर कि पदार्थों में राग-द्वेष आदि मानव गुण होते हैं, उन्हें मानव के रूप में कल्पित और प्रस्थापित करना।

मानवीय—वि० [सं० मानव+छ—ईय] १. मानव-संबंधी। मानव या मनुष्य का। २. मनुष्योचित। (ह्यूमैन)

मानवेंद्र, मानवेश—पुं०[सं० मानव-इंद्र, मानव-ईश, ष० त०] राजा।

मानस—वि०[सं० मनस्+अण्] १ मन से उत्पन्न। मनोमय। २ मन में सोचा या विचारा हुआ। जैसे—मानस चित्र।
क्रि० वि० मन के द्वारा। मन से।
पुं० १. आधुनिक मनोविज्ञान में, मनुष्य की वह आन्तरिक सत्ता जिसमें अनुभूतियाँ, विचार और संवेदनाएँ होती हैं। उसी का सजग और चेतन, परिचित तथा प्रत्यक्ष 'रूप' चेतना कहलाता है। मन। (माइंड)

विशेष—इसके अचेतन, अवचेतन, अर्ध-चेतन आदि कुछ और अंग या पक्ष भी माने गये हैं।

२. मन मे होनेवाला सकल्प-विकल्प। ३ मानसरोवर। ४. कामदेव। ५. सगीत मे एक प्रकार का राग। ६. आदमी। मनुष्य। ७ चर। दूत। शाल्मली द्वीप का एक वर्ष। ९ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत।

मानसचारी (रिन्)—पु० [स० मानस√चर् (गति)+णिनि] मानसरोवर के आसपास रहनेवाला हस।

मानसता—स्त्री०[स०]१ मन का भाव या स्थिति। २ वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वशवर्ती होकर मनुष्य किसी कार्य या विचार मे प्रवृत्त होता है। मनोवृत्ति। (मेन्टैलिटी)

मानस-तीर्थ—पु०[कर्म०स०]ऐसा मन जो राग, द्वेष आदि से बिलकुल रहित हो गया हो।

मानस-पुत्र—पु० [स०कर्म० स०] वह सन्तान जिसकी उत्पत्ति मात्र इच्छा से हुई हो शारीरिक सभोग से न हुई हो। जैसे—सनक आदि ब्रह्मा के मानस-पुत्र कहे जाते हैं।

मानस-पूजा—स्त्री०[स० कर्म० स०] पूजा के दो प्रकारो मे से वह जिसमे मन से ही सब कृत्य किये जाते हैं लौकिक उपचारो या साधनो का सहारा नही लिया जाता।

मानसर—पु०=मानसरोवर।

मानसरोवर—पु०[स० मानस-सरोवर] १. तिब्बत के क्षेत्र मे एक प्रसिद्ध झील जो कैलास पर्वत के नीचे है और जो बहुत पवित्र तथा बडे तीर्थों मे मानी जाती है। २. हठयोग मे, सहस्रार चक्र जिसे कैलास भी कहते है और इसी दृष्टि से जिसमे उस भाव-सरोवर की भी कल्पना की गई जिसमे निर्लिप्त चित्त-रूपी हस विहार करता है।

मानस-विज्ञान—पु०[स० कर्म० स०]वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य का मन किस प्रकार अपने काम करता है। (मेन्टल साइन्स)

मानस-व्रत—पु०[स० मध्य० स०]अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रत जिनका पालन मन से ही होता है।

मानस-शास्त्र—पु०[स० मध्य० स०] मनोविज्ञान।

मानस-सन्यासी (सिन्)—पु०[स० कर्म० स०] दशनामी सन्यासियो का एक उपभेद।

मानस-सर (स)—पु०[स० कर्म० स०] मानसरोवर।

मानस-हंस—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे 'स ज ज भ र' होता है। इसे 'मानहस' तथा 'रणहस' भी कहते हैं।

मानसालय—पु०[सं० मानस-आलय, ब० स०] हस।

मानसिक—वि०[स० मानस्+ठक्—इक]१ मन की कल्पना मे उत्पन्न। २ मन मे होने या मन से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मानसिक रोगी, मानसिक कष्ट। ३ जिसमे सोच-विचार तथा मनन की अधिक अपेक्षा हो। (शारीरिक से भिन्न) जैसे—मानसिक कार्य।

पु० विष्णु का एक नाम।

मानसिक चिकित्सालय—पु०[स० कर्म० स०] वह चिकित्सालय जहाँ पर मानसिक रोगियो का उपचार किया जाता है। (मेन्टल हॉस्पिटल)

मानसिकी—स्त्री०=मानस-विज्ञान। (मनोविज्ञान)

मानसी—स्त्री०[सं० मानस+ङीप्]१. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। मानसपूजा। २. एक विद्या देवी का नाम।

वि०=मानसिक।

मानसी-गंगा—स्त्री०[सं०] व्रज मे गोवर्धन पर्वत के पास का एक सरोवर।

मानसूत्र—पु०[स० ष० त०] करधनी।

मानसून—पु० दे० 'मानमून'।

मान-हंस—पु०[सं० ष० त०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 'स ज ज भ र' होते हैं।

मान-हानि—स्त्री०[स० ष० त०]१ कोई ऐसा काम या बात जिसमे किसी का अपमान या अप्रतिष्ठा होती हो और जो सामाजिक आदि दृष्टियो से अनुचित और निन्दनीय हो। २ इस प्रकार होनेवाली मानहानि। (डिफेमेशन)

मानहुँ*—अव्य०=मानो।

मानाकन—पु० दे० 'मूल्याकन'।

माना—पु०[इब०]कुछ विशिष्ट प्रकार के वृक्षो, बाँसों आदि का गोद या निर्यास जो चिकित्सा के काम आता है। मन्ना।

*स० [सं० मान]१. नापना, मापना या तौलना। २ जाँचना।

पुं० अन्न आदि नापने का पात्र।

†अ०=अमाना।

मानाय—पुं०[स० ष० त०] लक्ष्मी के पति। विष्णु।

मानाभिषेक—पु०[स०] किसी बडे अधिकारी या प्रधान व्यक्ति के अधिकारारूढ होने की क्रिया अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला समारोह। (इन्वेस्टिचर)

माना-मथ— पु०=महना-मथन।

मानिंद—वि०[फा०] सदृश।

†वि०=माननीय या मान्य।

मानिक—पु०[सं०माणिक्य]१ लाल रग के एक मणि का नाम। कुरुबिंद। पद्मराग। २. आठ पल की एक पुरानी तौल।

मानिक-खंभ—पु० [हिं० मानिक+खमा]१ वह खूँटा जो कातर के किनारे गडा रहता है। मरखम। २ विवाह के समय मडप के बीच मे गाडा जानेवाला खंभा। ३ दे० 'मालखम'।

मानिकचंदी—स्त्री०[हिं० मानिकचद]एक तरह की छोटी सुपारी।

मानिक-जोड—पु०[हिं० मानिक+जोड]एक प्रकार का बगला जिसकी चोच और टाँगें अधिक लबी होती हैं।

मानिक रेत—स्त्री०[हिं० मानिक+रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ किये जाते हैं।

मानिका—स्त्री० [स०√मन् (गर्व करना)+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व]१ मद्य। शराब। २ आठ पल या साठ तोले की एक पुरानी तौल।

मानित—भू० कृ०[सं० मान+इतच्]जिसका मान होता हो। प्रतिष्ठित। सम्मानित।

मानिता—स्त्री०[स० मानित+टाप्]१ मानित्व। सम्मान। २ गौरव। ३. अहंकार। घमड।

मानिनी—वि० स्त्री० [स० मान+इनि+ङीप्] स० 'मानी' का स्त्री०। मान (अभिमान या गर्व) करनेवाली।

मापना—स०[स० मापन]१ किसी पदार्थ के विस्तार, आयत, या वर्गत्व और घनत्व का किसी नियत मान के आवार पर परिमाण जानना या जानने के लिए कोई क्रिया करना। नापना। २ किसी मान या पैमाने मे भरकर द्रव, चूर्ण या अन्नादि पदार्थों को नापना। जैसे—दूव मापना, चूना मापना।
†अ० मातना (मत्त होना)।

मापनी—स्त्री०[स० मापन से] मापने अर्थात् नापने-जोखने, तौलने आदि की क्रिया या भाव। (मेज़रमेन्ट)

मापांक—पु०[स०] आज-कल भौतिक विज्ञान मे, वह परिमाण या मान जो किसी अमूर्त परिणाम, प्रभाव या शक्ति (लचीलापन, तन्यता) की किसी निश्चित इकाई या माप के आधार पर जाना या स्थिर किया जाता है। (मॉड्यूलस)

माफ—वि० [अ० मुआफ] जिसे क्षमा किया गया हो या माफी दी गई हो।

माफकत—स्त्री०[अ० मुवाफिकत] १ अनुकूलता। २ मेल। मैत्री।
पद—मेल-माफकत।

माफिल—पु०[?] एक प्रकार का खट्टा नीवू।

माफिक—वि०[अ० मुआफिक] १ अनुकूल। अनुसार। २ उपयुक्त।
क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।—होना।

माफिकत—स्त्री०=माफकत।

माफी—स्त्री० [अ० माफी] १ माफ करने की क्रिया या भाव। क्षमा।
क्रि० प्र०—चाहना।—माँगना।—मिलना।
२. ऐसी भूमि जिसका कर लेना जमीदार, राजा या सरकार ने छोड दिया या माफ कर दिया हो।
पद—माफीदार। (देखे)

माफीदार—पु०[अ०+फा०] वह जिसे ऐसी जमीन मिली हो जिसका कर शासन ने माफ कर दिया हो।

माम*—पु०[स० माम्]१ ममता। ममत्त्व। २ अहकार। ३ अधिकार। ४ वल। शक्ति।

मामता—स्त्री०[स० ममता]१ आत्मीयता। अपनापन। २ आत्मीयता के कारण होनेवाला प्रेम या स्नेह। ममता। ममत्व। जैसे—माँ की मामता बच्चे पर होती है।

मामरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पेड जो हिमालय की तराई मे रावी नदी से पूर्व की ओर मद्रास ओर तथा मध्यभारत मे होता है। रूही।

मामलत, मामिलत*—स्त्री०[अ० मुआमिलत] १ वात। मामला। २ विवादास्पद वात या विषय जो विचार के लिए उपस्थित हो।

मामला—पु०[अ० मुआमिल]१ आपस मे मिलकर तै या निश्चित की हुई कोई ऐसी वात जिसपर अमल करना पडे या जिसे कार्य रूप मे परिणत करना हो। २ आपस मे होनेवाले काम, व्यवहार या व्यापार। जैसे—क्रय-विक्रय, देन-लेन आदि।
मुहा०—मामला बनाना=ऐसी स्थिति लाना जिसमे कोई काम पूरी तरह हो जाय। कार्य-सिद्ध की व्यवस्था करना।
३ उलझन या झगडे का कोई ऐसा काम या वात जिसके सबध मे किसी प्रकार का आचरण, विचार या व्यवहार होने को हो या होना आवश्यक हो। प्रधान अथवा मुख्य वात या विषय। जैसे—आज-कल उनके सामने एक वहुत वड़ा मामला आ गया है।
मुहा०—मामला तै करना=उक्त प्रकार के काम के सम्बन्ध मे वातचीत करके निपटारा या निश्चय करना। **मामला बनाना या साधना**=विकट और विचारणीय विषय का सतोषजनक रूप मे निराकरण करना।
४ आपस मे पक्की या तै की हुई वात। निर्णीत और निश्चय किया हुआ तथ्य। ५ ऐसी विवादास्पद वात जिसके सबध मे न्यायालय मे विचार हो रहा हो या होने को हो। मुकदमा। व्यवहार। जैसे—इधर वकील साहब ने कई वडे-वडे मामले जीते है। (मुहा० के लिए दे० 'मुकदमा' के 'मुहा०') ६ युवती और सुन्दरी स्त्री। (वाजारू) ७. स्त्री-प्रसग। मैथुन। सभोग।
मुहा०—मामला बनाना=पर-स्त्री के साथ मैथुन या सभोग करना।

मामा—पु०[स० माम, मामका, पा० मामको, प्रा० मामअ] [स्त्री० मामी] सबध के विचार से माँ का भाई।
स्त्री०[फा०] घर की नौकरानी। परिचारिका। दासी।

मामागीरी—स्त्री०[फा०]१. मामा अर्थात् दूसरो की रोटी पकानेवाली स्त्री का काम या पद। २ वुढिया स्त्री। वूढी।

मामिला—पु०=मामला।

मामी—स्त्री०[स० मा, निषेधार्थक]अपने ऊपर लगाया हुआ आरोप या दोष न मानने की अवस्था, क्रिया या भाव।
मुहा०—मामी पीना=अपने ऊपर लगाये हुए आरोप या दोष पर ध्यान न देकर चुप रह जाना अथवा मुकर जाना।
स्त्री० हि० 'मामा' का स्त्री० रूप। सवध के विचार से मामा की पत्नी।

मामूं†—पु०=मामा।

मामूर—वि०[अ०]१ जिसे आदेश दिया गया हो। २ नियुक्त किया हुआ। ३. पूरी तरह से भरा हुआ। ४ आवाद। ५ समृद्ध।

मामूल—पु०[अ०]१ नित्य-नियम। २ ऐसा काम या वात जो साधारणत सभी अवसरो पर अमल अर्थात् व्यवहार मे लाई जाती है। सभी अवसरो पर साधारण रूप मे होती रहनेवाली वात या व्यवहार। दस्तूर।
पद—मामूल के दिन=स्त्रियो के रजोधर्म के या रजस्वला होने के दिन। (मुसल० स्त्रियाँ) उदा०—हर महीने मे कुढाते थे, मुझे फूल के दिन वारे अवकी तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रगीन।
३ रीति-रिवाज। परिपाटी। प्रथा। ४ वह धन जो किसी को परिपाटी, प्रथा, रिवाज आदि के अनुसार मिलता हो। ४ अभिचार आदि द्वारा वेसुध किया हुआ व्यक्ति।

'मामूली—वि०[अ०]१ नित्य-नियम-सम्बन्धी। २ प्राय होता रहनेवाला। ३ जिसमे कोई महत्त्व की विशेषता न हो। औसत दरजे का। साधारण।

मामोला—पु०[?] वीर ववूटी। (राज०) उदा०—मामोली विदुली कुँकूँमे।—प्रिथीराज।

मायँ*—अ०=माँहि (वीच)।

माय†—पु०[स० माया+अच्]१ पीतावर। २. असुर।
†स्त्री०[स० माता] १ माता। माँ। २ वडी या आदरणीय स्त्री के लिए सवोधन का शब्द।
†स्त्री०=मादा।
†अव्य०=माँहि (वीच मे)।

मायक—पु०[स० माय+कन्] मायावी।
पु०=मायका।

मायका—पु०[स० मातृ+क (प्रत्य०)] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर और परिवार। नैहर। पीहर।

मायण—पु०[स० माया+युच् —अन] वेद का भाष्य करनेवाले सायण के पिता का नाम।

मायन*—पु०[स० मातृका]१ मातृका-पूजन और पितृ-निमत्रण सबधी एक कृत्य जो विवाह से पहले किया जाता है। २. उक्त दिन होनेवाला कृत्य।

मायनी—स्त्री० दे० 'मायाविनी'।

†पु०=माने (अर्थ)।

मायल—वि० [अ० माइल] १ जो किसी ओर प्रवृत्त हुआ हो। जैसे—किसी पर दिल मायल होना; अर्थात् किसी की ओर अनुरक्त होना। २. आसक्त। ३ किसी प्रकार के झुकाव या प्रवृत्ति से युक्त। जैसे—सुरखी मायल काला रग, अर्थात् ऐसा काला जिसमे लाल रग की भी कुछ झलक हो।

माया—स्त्री० [स०√मा+य+टाप्] १. कोई काम करने या कोई चीज बनाने की अलौकिक अथवा असाधारण कला या शक्ति। जैसे—इन्द्र अपनी माया से अनेक रूप धारण करता है। २ बहुत ही उत्कृष्ट या प्रखर बुद्धि। प्रज्ञा। ३ कोई ऐसी कृति, रचना या रूप जिससे लोग धोखे या भ्रम मे पडते हो। छलपूर्ण तथ्य या बात। जैसे—इद्र-जाल या जादूगरी। ४ वेदात मे वह ईश्वरीय शक्ति जिससे इस नाम-रूपात्मक सारे दृश्य जगत् की सृष्टि हुई है।

विशेष—वेदात दर्शन का सिद्धात है कि यह सारी सृष्टि अमूर्त और नित्य ब्रह्म से उत्पन्न हुई है, फिर भी यह वास्तविक नही है। उस ब्रह्म की अलौकिक शक्ति से ही यह हमे दृश्य जगत् के रूप मे दिखाई देती है। पुराणो मे इसी माया पर चेतन धर्म का आरोप करके इसे स्त्री के रूप मे माना और ब्रह्म की सहधर्मचारिणी कहा है। इसी कारण लोग मोह-वश अवस्तु को वस्तु और अवास्तविक को वास्तविक और मिथ्या को सत्य समझने लगते हे। हमे इस जगत और उसके सब पदार्थो का जो ज्ञान या भास होता हे, वह वस्तुत भ्रम मात्र है। साख्यकार ने इसी को प्रकृति या प्रधान कहा है। शैव दर्शन मे इसे आत्मा को बधन मे रखनेवाले चार पाशो (जालो या फदो) मे से एक पाश माना है, और वैष्णवो ने इसे विष्णु की नौ शक्तियो के अन्तर्गत एक शक्ति कहा है। परवर्ती काल मे कुछ लोग इसे अनृत की और कुछ लोग अधर्म की कन्या कहने लगे थे और मृत्यु की जननी या माता मानने लगे थे। बौद्ध इसे २४ दुष्ट मनोविकारो मे से एक मनोविकार या वासना मानते है। पर सब मतो का साराश यही है कि यह मूर्तिमान भ्रम है और लोगो को धोखे मे रखकर ईश्वर या मुक्ति से विमुख रखनेवाली है। इसी लिए जितने काम चीजे या बातें वास्तव मे कुछ और होती है पर देखने मे कुछ और, उन सबका अन्तर्भाव माया मे ही होता है। हिंदू धर्म मे देवी-देवताओ की इच्छा प्रेरणा या शक्ति से जो अद्भुत, अलौकिक या विलक्षण लीला-पूर्ण कृत्य होते है, उन सबकी गिनती उन देवी-देवताओ की माया मे ही होती हे।

५ उक्त के आधार पर अज्ञान या अविद्या। ६ उक्त के फलस्वरूप और भ्रम या मोह-वश किसी के प्रति होनेवाला अनुराग, प्रेम या स्नेह। ममता। ममत्व। ७ किसी प्रकार की अवास्तविक और मिथ्या धारणा या विचार। (इल्यूज़न) ८ उक्त के कारण किसी के प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाला अनुग्रह या दया का भाव। उदा०—मलेहि आई अब माया की जै।—जायसी। ९ कपट। छल। फरेब। जैसे—माया-मृग। १०. धोखा। भ्रम। ११ ऐसी गूढ और विलक्षण बात जो जल्दी समझ मे न आवे अथवा जिसे समझने के लिए बहुत मानसिक परिश्रम करना पडे। जैसे—माया-वर्ग। १२. इंद्रजाल। जादूगरी।

पद—मायाकार, मायाजीवी।

१३. राजनीतिक चाल या दाँव-पेच। १४. अनुग्रह। कृपा। १५ दया। मेहरबानी। १६. लक्ष्मी देवी। १७ धन-सम्पत्ति। दौलत। जैसे—उनके पास लाखो रुपयों की माया है। १८ कोई आदरणीय और पूज्य स्त्री। १९. मय दानव की कन्या जो विश्रवा को ब्याही थी। २०. गौतम बुद्ध की माता मायादेवी। २१ गया नामक नगरी। २२. इद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद जो इद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बनता है। इसके दूसरे तथा तीसरे चरण का प्रथम वर्ण लघु होता है। २३ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः भगण, तगण, मगण, भगण और एक गुरु वर्ण होता है।

स्त्री०[हिं० माता] माता। माँ। जननी। उदा०—बिनवै रतनसेन की माया।—जायसी।

मायाकार—पु०[सं० माया√ कृ+अण्]=मायाजीवी।

माया-क्षेत्र—पु०[स० प० त०] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।

मायाचार—पु०[सं० माया√चर् (गति)+अण्] मायावी।

मायाजीवी(विन्)—पु०[स० माया√जीव्(जीना)+णिनि] ऐद्रजालिक। जादूगर।

मायाति—स्त्री०[सं० मया√अत् (निरन्तर गमन) +इण्] तात्रिको की वह नर-बलि जो अष्टमी या नवमी के दिन दुर्गा को प्रसन्न तथा सतुष्ट करने के उद्देश्य से दी जाती थी। (तात्रिक)

मायादेवी—स्त्री०[सं०] गौतम बुद्ध की माता का नाम।

माया-धर—पु०[प० त०] मायावी।

माया-पति—पु०[प० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

माया-पात्र—पु०[हिं० माया=धन+स० पात्र] धनवान्। अमीर।

माया-फल—पु०[ष० त०] माजूफल।

माया-मोह—पु०[सं० माया√मुह्+णिच्+अच्] शरीर से निकला हुआ एक कल्पित पुरुष जिसने असुरो का दमन किया था। (पुराण०)

माया-मंत्र—पु०[ष० त०] सम्मोहन क्रिया।

मायावत्—पु०[स० माया+मतुप्। वत्व] १ मायावी। २ राक्षस। ३. कंस का एक नाम।

मायावती—स्त्री०[स० मायावत्+ङीप्] कामदेव की स्त्री, रति।

मायावर—वि० [प० त०] माया करनेवाला। उदा०—अभिनय करते विश्वमंच पर तुम मायावर।—पत।

पु०१ ईश्वर। २ ऐद्रजालिक। जादूगर।

माया-वर्ग—पु०[सं० प० त०] गणित मे वह बडा वर्ग जिसमे कई छोटे-छोटे वर्ग होते हैं और उन छोटे-छोटे वर्गो मे से हर एक मे कुछ अक या सख्याएँ किसी ऐसे विशिष्ट क्रम से रखी होती है कि हर ओर से अर्थात् खड़े, वेड़े तथा तिरछे बलो की सख्याओ का जोड़ एक ही आता हे। (मैजिक स्क्वेयर)

माया-वाद—पु०[स० ष० त०]ब्रह्म को सत्य और जगत् को मिथ्या मानने का सिद्धान्त।

माया-वादी (दिन्)—पु०[स० माया-वाद+इनि] मायावाद का सिद्धान्त माननेवाला व्यक्ति।
वि० मायावाद-सम्बन्धी।

मायावान् (वत्)—वि०=मायावी।

मायाविनी—स्त्री०[स० माया+विनि+ङीप्] छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।

मायावी (विन्)—वि०[स० माया+विनि] [स्त्री० मायाविनी] १. माया-सबधी। २ माया के रूप मे होनेवाला। ३ जादू आदि से सबध रखने-वाला।
पु०१ वह जो अनेक प्रकार की मायाएँ रचने अर्थात् तरह-तरह के रहस्य-मय कृत्य करके लोगो को चकित करने तथा धोखे मे रखने मे कुशल या दक्ष हो। २ बहुत बडा कपटी या धोखेबाज। ३ बिडाल। बिल्ला। ४ ईश्वर या परमात्मा का एक नाम। ५ मय दानव के पुत्र का नाम।

माया-बीज—पु० [स० ष० त०] 'ह्रीं' नामक तान्त्रिक मत्र।

मायाशय—वि०[स०माया+आशय, ष०त०] माया से अभिभूत। उदा०—सुरभित दिशि-दिशि कवि हुआ धन्य मायाशय।—निराला।

माया-सीता—स्त्री०[स० मध्य०स०] सीता-हरण से पूर्व सीता द्वारा राम की आज्ञा से धारण किया गया मायावी रूप।

माया-सुत—पु०[स० ष० त०] माया देवी के पुत्र गौतम बुद्ध।

मायिक—वि० [स० माया+ठन्—इक]१ माया-सबधी। २. मायावी। अवास्तविक पर वास्तविक-सा दिखाई पडनेवाला। ३. माया करने या दिखानेवाला। मायावी।
पु० माजूफल।

मायी (यिन्)—पु०[स० माया+इनि]१ माया का अधिष्ठाता। परब्रह्म। ईश्वर। २ माया दिखानेवाला। मायावी। ३ जादूगर।
†स्त्री०=माई (माता)।

मायु—पु०[स० √मि (फेंकना)+उण्, आत्व, युक्] १ पित्त। २ आवाज। शब्द। ३ वाक्य।

मायुक—वि०[स० मायु+कन्] शब्द करनेवाला।

मायूर—पु०[स० मयूर+अञ्, वृद्धि]१ मयूर। मोर। २ वह रथ जिसे मयूर खीचकर ले चलते हो।
वि० मयूर-सम्बन्धी। मोर का।

मायूरक—पु०[स० मायूर+कन्] मोर पकडनेवाला बहेलिया।

मायूरा—स्त्री०[स० मायूर+टाप्] कटूमर।

मायूरी—स्त्री०[स० मायूर+ङीप्] अजमोदा।

मायूस—वि०[अ०] [भाव० मायूसी] निराश। हताश।

मायूसी—स्त्री०[अ०] मायूस होने की अवस्था या भाव। निराशा।

मार—पु०[स०√मृ (मरना)+घञ्]१ कामदेव। २ जहर। विष। ३ धतूरा। ४ बाधा। विघ्न।
स्त्री०[हिं० मारना]१ मारने अर्थात् चोट पहुँचाने या पीटने की क्रिया या भाव। जैसे—मार के आगे भूत भागता है।
पद—मार-काट, मार-धाड़, मार-पीट, मार-मार।(दे० स्वतन्त्र पद)
क्रि० प्र०—खाना।—पडना।—पिटना।
२ किसी प्रकार का अथवा किसी रूप मे होनेवाला आघात या प्रहार। कोई ऐसा काम या बात जो कष्ट पहुँचानेवाला अथवा नाश या हानि करनेवाला हो। जैसे—गरीबी की मार, रोटी की मार। उदा०—बडी मार कबीर की चित से दिया उतार।—कबीर।
विशेष—ऐसे अवसरो पर मार का आशय यही होता है कि उसके फलस्वरूप मनुष्य की दशा बहुत ही दीन-हीन तथा शोचनीय हो जाती है। अक्ल की मार, शामत की मार सरीखे प्रयोगो मे 'मार' का आशय यही होता है कि चाहे किसी चीज या बात के अभाव से हो, चाहे आधिक्य से, मनुष्य की दशा बहुत बुरी हो जाती है। गरीबी की मार मे गरीबी के आधिक्य का भाव है, और रोटी की मार मे रोटी के अभाव का, ईश्वर या खुदा की मार मे कोप या प्रकोप का भाव प्रधान है।
३. उतनी दूरी जहाँ तक कोई चलाया या फेका हुआ अस्त्र जाकर पहुँचता और अपना काम करता या प्रभाव दिखलाता है। (रेंज) जैसे—इस बदूक की मार एक हजार गज है। ४. निशान। लक्ष्य। ५. दे० 'मार-पीट'। जैसे—गाँववालो मे अक्सर मार होती रहती है। ६. किसी प्रकार का प्रभाव या फल नष्ट करनेवाली चीज या बात। मारक तत्त्व। जैसे—खुजली की मार घी है अर्थात् घी से खुजली दब या मिट जाती है।
अव्य०१. बहुत अधिकता से। अत्यन्त। जैसे—तुमने तो सवेरे से मार आफत मचा रखी है।
स्त्री०[देश०] काली मिट्टी की जमीन।
†स्त्री०=माला।

मारकंडेय—पु०=मार्कंडेय।

मारक—वि०[स०√मृ+णिच्+ण्वुल्—अक]१ जान से मार डालने-वाला। २ पीडक। ३ प्रभाव, वेग, विष आदि को दबाने या नष्ट करनेवाला। (एन्टीडोट)

मारका—पु०[अ० मार्क]१ चिह्न। निशान। २. किसी प्रकार की पहचान के लिए लगाया जानेवाला चिह्न या निशान। ३. वह विशिष्ट चिह्न या निशान जो बडे व्यापारी अपने बनवाये हुए पदार्थों पर उसकी विशिष्टता की पहचान के लिए लगाते है। छाप।
पु०[अ० मारिक]१ युद्ध। लडाई। २ कोई बहुत बडी और महत्त्व-पूर्ण घटना। ३. कोई बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम।
पद—मारके का=बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण।

मार-काट—स्त्री०[हिं० मारना+काटना]१ एक दूसरे को मारने और काटने की क्रिया या भाव। २ युद्ध या लडाई जिसमे आदमी मारे और काटे जाते है।

मारकीन—स्त्री०[अं० नैन्किन्] एक तरह का साधारण कपडा।

मारकुवा—वि०=मरकहा (मारनेवाला)।

मारकेश—पु०[स० मारक-ईश, कर्म० स०] किसी की जन्म-कुडली मे पडने-वाला ग्रहो का एक योग जो व्यक्ति के लिए घातक होता है। (ज्यो०)

मारखोर—पु०[फा०] बहुत बडे सीगोवाली एक प्रकार की बहुत सुन्दर जगली बकरी जो काश्मीर और अफगानिस्तान मे होती है। इसके नर के शरीर से बहुत तेज गन्ध निकलती है।

मारग*—पु०[स० मार्ग] मार्ग। रास्ता।
मुहा०—मारग मारना=किसी राह चलते आदमी को लूटना। मारग

लगना या लेना=(क) रास्ते पर चलना। (ख) चले जाना। दूर हो जाना।

मारगन*—पु०[सं० मार्गण]१. बाण। तीर। २. भिक्षुक। याचक।

मारगी†—स्त्री०[सं० मार्ग] राह चलनों को लूटने की क्रिया। बटमारी। उदा०—चोरी करौं न मारगी।—मीराँ।

मारजन—पु० =मार्जन।

मारजनी—स्त्री०=मार्जनी।

मारजार†—पु०=मार्जार।

मारजित्—पु०[सं० मार√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्]१ वह जिसने कामदेव को जीत लिया हो। २ शिव। ३ बुद्ध।

मारण—पु०[सं० √मृ (मारना)+णिच्+ल्युन—अन्]१ मार डालने अर्थात् प्राण लेने की क्रिया या भाव। २ वह तांत्रिक प्रयोग जो किसी के प्राण लेने या मार डालने के उद्देश्य से किया जाता है।

मारतंड—पु०=मार्तंड।

मारते खाँ—पु०[हिं० मारना+फा० खान] वह जो अपने बल के गर्व मे दूसरो को जरा सी बात पर मार बैठता हो।

मारतौल—पु० [पु० मार्टेली] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मार-धाड़—स्त्री०[हिं०]१ बहुत से लोगो का तेजी से आगे बढकर किसी पर आक्रमण करना। जैसे—मुगल सेना मार-धाड करती हुई बढती चली जा रही थी। २ गडबड़ी की वह स्थिति जिसमे लोग बहुत जल्दी अपने काम मे या इधर-उधर दौड़ने-घूमने मे लगे हो।

मारना—स०[सं० मारण]१ ऐसा आघात या क्रिया करना जिसमे किसी के प्राण निकल जायँ। आयु या जीवन का अंत करना। जैसे—(क) यह दवा कई तरह के जहरीले कीडे मारती है। (ख) इसने कल एक साँप मारा था।

मुहा०—(किसी को) मार गिराना=आघात या प्रहार करके प्राण लेकर अथवा मृतप्राय करके जमीन पर गिराना। जैसे—सिपाहियों ने चार डाकू मार गिराये।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

२. क्रोध मे आकर दंड देने या बदला चुकाने के लिए किसी के शरीर पर थप्पड मुक्का, लात आदि से या छडी, डंडे, बेंत आदि से बार-बार आघात या प्रहार करना। जैसे—उसने नौकर को मारते-मारते बेहोश कर दिया।

पद—मारना-पीटना।

३. कोई चीज किसी दूसरी चीज पर इस प्रकार जोर से गिराना या फेंकना कि वह जाकर टकरा जाय और स्वयं क्षतिग्रस्त हो अथवा दूसरी चीज को क्षतिग्रस्त करे। जैसे—चिडियों को ढेले पत्थर मारना।

मुहा०—(किसी को) दे मारना=उठाकर जोर से गिराना, पटकना या फेंकना। उदा०—मेरा दिल लेके शीशे की तरह पत्थर पे दे मारा।—कोई शायर।

४ साधारण रूप से कोई चीज किसी दूसरी चीज पर पटकना। जैसे—यही बात पक्की रही, लाओ मारो हाथ। (अर्थात् पक्का वचन दो)

५. आखेट मे किसी जीव-जंतु के प्राण लेना। शिकार करना। जैसे—कबूतर, मछली, शेर या हिरन मारना। ६ जीव-जंतुओं के अपने किसी अंग से किसी पर आघात या प्रहार करना अथवा घाव या जखम करना। जैसे—बर्रे या बिच्छू डंक मारता है, घोडा लात मारता है, बैल सींग मारता है, कुत्ता दाँत मारता है आदि। ७. किसी क्रिया से किसी चीज का आगे बढा हुआ अंग या अंश काटना, निकालना या मोडना। जैसे—(क) बढ़ई ने रंदे से इसका किनारा मार दिया है। (ख) तुमने कागज काटते-काटते कैंची (या चाकू) की धार मार दी है। ८ किसी प्रकार का परिणाम या फल उत्पन्न करने के लिए कोई अंग इधर उधर या ऊपर-नीचे हिलाना। जैसे—(क) चिडियों का उडने के लिए पर मारना। (ख) बंधन से छूटने के लिए हाथ-पैर मारना अर्थात् यथा-साध्य प्रयत्न करना। ९ किसी पदार्थ का तत्त्व या सार-भाग कम या नष्ट करके उसे निरर्थक या निर्बल करना। जैसे—यह दवा कई तरह के जहर मारती है। १०. वैद्यक मे रासायनिक प्रक्रियाओं से धातु आदि का भस्म तैयार करना। जैसे—पारा मारना, सोना मारना। ११. किसी को किसी प्रकार से या किसी रूप मे अक्रिय, अयोग्य या निकम्मा करके किसी काम या बात के योग्य न रहने देना। बुरी तरह से नष्ट या बरबाद करना। जैसे—(क) हमें तो दिन-रात की चिंता ने मारा है। (ख) उन्हें तो ऐयाशी (या शराब-खोरी) ने मारा है। १२ बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर तंग, दुखी या परेशान करना। (प्रायः किसी दूसरी क्रिया के साथ संयोज्य क्रिया के रूप में) जैसे—(क) इस लड़के की नालायकी ने तो हमें जला मारा (या सता मारा) है। (ख) आज तो तुमने नौकर को दिन भर दौडा मारा।

पद—(किसी चीज या बात) का मारा=किसी चीज या बात के कारण बहुत अधिक ग्रस्त या दुखी। जैसे—आफत का मारा, भूख का मारा, रोटियों का मारा आदि।

१३ द्वेष या वैरमूलक लडाई-झगडा, विवाद आदि के प्रसंग मे विपक्षी या विरोधी को परास्त करते हुए नीचा दिखाना या वश मे करना। जैसे—इस चुनाव मे इन्होंने उसे ऐसा मारा है कि अब वह कभी इनके मुकाबले मे खडे होने का नाम न लेगा।

पद—वह मारा=बस अब परास्त करके वश मे कर लिया। पूरी तरह से जीत लिया और हरा दिया। उदा०—वह मा ा! अब कहाँ जाती है। आज का शिकार तो बहुत नफीस है।—रावाकृष्णदास।

१४ खेल, प्रतियोगिता आदि के प्रसंग मे विपक्षी को हराकर विजय प्राप्त करना। (स्वयं खेल के संबंध मे भी और खेलाडी के सम्बन्ध मे भी) जैसे—(क) कुश्ती या बाजी मारना=जीतना। (ख) एक पहलवान को दूसरे पहलवान का मारना=पछाडना। १५ गंजीफे, ताश, शतरंज आदि खेलों मे विपक्षी के पत्ते, गोट आदि जीतना। जैसे—(क) प्यादे से हाथी मारना। (ख) दहले से नहला मारना।

१६. किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक आवेग दबाना या रोकना। जैसे—(क) मन मारना=मन मे होनेवाली इच्छाएँ दबाना। (ख) प्यास या भूख मारना=प्यास या भूख लगने पर भी पानी न पीना या भोजन न करना। उदा०—रिस उर मारि रंक जिमि राजा।—तुलसी। १७ अनुचित रूप से चालबाजी से या बलपूर्वक किसी का धन, संपत्ति या कोई चीज प्राप्त करके अपने अधिकार मे करना। जैसे—(क) किसी की गठरी मारना। (ख) किसी का माल या रुपया मारना।

मुहा०—मार खाना=उक्त प्रकार से प्राप्त करके अधिकार मे कर लेना। जैसे—इस सौदे मे उसने सौ रुपये मार खाये। **मार रखना**=अनुचित

रूप से दवाकर अपने पास रख लेना। जैसे—अभी तो यह किताव मार रखो, फिर देखा जायगा। **मार लेना**=अनुचित रूप से प्राप्त करके अपने अधिकार मे कर लेना। जैसे—इस सौदे मे उसने भी सौ रुपये मार लिए।
१८. कुछ विशिष्ट क्रियाओ के सम्बन्ध मे, पूरा या सम्पन्न करना। जैसे—पानी मे गोता मारना, किसी के चारो ओर चक्कर मारना, सिलाई करने के लिए टाँका मारना। १९. किवाडे या ताले के सम्बन्ध मे ऐसी क्रिया करना कि वह वद हो जाय,खुला न रहे। जैसे-(क) कोठरी का दरवाजा मारना। (ख) दरवाजे मे ताला मारना। (पश्चिम) २०. मैथुन या समोग करना। (वाजारू)
विशेष—अनेक क्रियाओ के साथ सयो० क्रिया के रूप मे भी और अनेक सज्ञाओ के साथ क्रि० प्र० के रूप में भी 'मारना' का प्रयोग अनेक प्रकार के भाव प्रकट करने के लिए होता है। उनमे मुख्य भाव तीन हैं—(क) किसी प्रकार के आघात या क्रिया से उपेक्षापूर्वक अत या समाप्त करना। जैसे—किसी के लिखे हुए पर लकीर मारना, किसी चीज को लात मारना, किसी काम या वात को गोली मारना आदि। (ख) किसी प्रकार का प्रभाव विशेषत दूषित प्रभाव उत्पन्न करना। जैसे—जादू या मतर मारना, किसी आदमी को पीस मारना। (ग) कोई क्रिया कष्टपूर्ण रूप से या बुरी तरह से पूरी या सम्पन्न करना। जैसे—गाल मारना, डीग मारना, दम मारना, कोई चीज किसी के सिर मारना (अर्थात् उपेक्षापूर्वक देना या फेकना)। किसी काम या वात के लिए मगज या सिर मारना अर्थात् वहुत अधिक मानसिक परिश्रम करना आदि। कुछ अवस्थाओ मे इसका प्रयोग (मुहावरे के प्रसग मे) अकर्मक क्रिया के रूप मे भी होता है। जैसे—(क) यह सुनते ही उसे काठ मार गया, अर्थात् वह काष्ठ के समान स्तब्ध हो गया। (ख) सारी फसल को पाला मार गया (अर्थात् लग गया) है। (ग) उसके भाई को लकवा मार गया (अर्थात् हो गया) है। ऐसे प्रयोगो के ठीक अर्थों के लिए सवद्ध क्रियाएँ या सज्ञाएँ देखनी चाहिएँ।

मार-पीट—स्त्री० [हिं० मारना+पीटना] वह लडाई जिसमे लड़नेवाले एक दूसरे को मारते-पीटते है।

मार-पेंच—पु०[हिं० मारना+पेच] धूर्तता। चाल-वाजी।

मारफत—अव्य०[अ० मारफत]१. किसी व्यक्ति के माध्यम से। जैसे—में कुछ रुपये श्री कृष्णचद की मारफत तुम्हे भेजूंगा। २ पत्रो पर पता लिखते समय, किसी अमुक के द्वारा।
स्त्री०१ [अ०] १ अध्यात्म। २ इस्लाम विशेषत सूफी सप्रदाय मे साधना की चार स्थितियो मे से तीसरी स्थिति जिसमे साधक अपने गुरु या पीर के उपदेश और शिक्षा से ज्ञानी हो जाता है।
विशेष—शेष तीन स्थितियाँ शरीअत, तरीकत और हकीकत कहलाती है।
३ उर्दू कविता का वह प्रकार जिसमे साधारण रूप मे तो लौकिक प्रेम का उल्लेख होता है परन्तु ध्वनि या श्लेष से वस्तुत ईश्वर के प्रति प्रेम प्रकट होता है। (अन्योक्ति का एक प्रकार) जैसे—अगर कोई मारफत की गजल याद हो तो सुनाओ।

मारसा—पु०[देश०] १ एक प्रकार का सकर राग जो परज, विभास और गौरी के मेल से वनता है। इसके गाने का समय सायकाल है। २ सगीत मे एक प्रकार का खयाल।

मारवाड़—पु०[स० मरुवर्त]१. मेवाड प्रदेश। २ मेवाड और उसके आस-पास के अनेक प्रदेश जो अब राजस्थान के रूप मे परिणत हो गये हैं।

मारवाडी—पु०[हिं० मारवाड] [स्त्री० मारवाडिन]। मारवाड़ देश का निवासी।
स्त्री० मारवाड देश की वोली।
वि० मारवाड देश का। मारवाड-सम्वन्धी।

मारा—वि०[हिं० मारना]१. जो मारा गया हो। २ जिस पर मार पडी हो।
मुहा०—मारा फिरना, या मारा-मारा फिरना=बहुत ही दुर्दशा भोगते हुए इधर-उधर घूमना।
३. जो किसी प्रकार के आघात या प्रकोप से त्रस्त या पीडित हो। जैसे—आफत का मारा, किस्मत का मारा, वीमारी का मारा आदि।
†स्त्री०=माला।

मारात्मक—वि०[स० मार-आत्मन्, व० स०+कप्]१. हिंसक। २ प्राण-नाशक। ३ दुष्ट।

माराभिभू—पु०[स० मार-अभि√भू (होना)+डू] गौतम वुद्ध।

मारामार†—क्रि० वि०[हिं० मारना] वहुत अधिक तेजी से या इतने वेग से कि मानो किसी को मारने जा रहे हों।
†स्त्री०१. मार-पीट। २ वहुत अधिक जल्दी। जैसे—इतनी मारा-मार करना ठीक नही।

मारा-मारी—स्त्री०[हिं० मारना]१ ऐसी लडाई जिसमे मार-काट हो रही हो। २ जवरदस्ती। वल-प्रयोग।
क्रि० वि०=मारामार।

मारि*—स्त्री०१. मार। २ मरी।

मारिच†—पु०१.=मारीच (राक्षस)। २ =मार्च (महीना)।

मारित*—भू० कृ०[सं०√मृ+णिच्+क्त]१ जो मार डाला गया हो। २ भस्म के रूप मे किया या लाया हुआ। (वैद्यक) जैसे—मारित स्वर्ण। ३ नष्ट किया हुआ।

मारिष—पु०[स०√मृष् (सहन करना)+अच्, निपा० सिद्धि, या मा√रिष्+क]१ नाटक का सूत्रधार। २ नाटको मे आदरणीय या मान्य व्यक्ति के लिए सम्वोधन। ३. मरसा नाम का साग।

मारिषा—स्त्री०[स० मारिष+टाप्] दक्ष की माता का नाम।

मारी—स्त्री०[स०√मृ+णिच्+इन्+ङीप्] १ चडी नाम की देवी। २ माहेश्वरी शक्ति। ३ महामारी। मरी।

मारीच—पु०[स०]१ एक राक्षस जिसने रावण के कहने पर सीताहरण कराने के लिए सोने के हिरन का रूप धारण किया था। २. हाथी। ३ मिर्च के पौधो का समूह।
वि०[स० मरीचि+अण्]मरीचि द्वारा रचित।

मारीचा—स्त्री०[स०] वुद्ध की माता का नाम। माया देवी।

मारु†—पु०१ मार (कामदेव)। २ मारवाड (देश)।
स्त्री०=मार।

मारुत—पु०[स० मरुत+अण्]१. वायु। पवन। २ वायु या पवन के अधिपति देवता।

मारुत-सुत—पु०[प० त०]१. हनुमान्। २ भीम।

मारुतात्मज—पु०[स० मारुत-आत्मज, प० त०]हनुमान्।

मारुतापह—पु०[स० मारुत-अप√हन् (मारना)+ड] वरुण वृक्ष।
मारुताशन—पु०[स० मरुत-अशन, ब० स०]१ कार्तिकेय का एक अनुचर। २. साँप।
मारुति—पु०[स०मारुत+इञ्] १ हनुमान्। २ भीम।
मारुव—पु०[स०] एक प्राचीन देश।
मारू—वि०[हिं० मारना]१. मार डालने या जान लेनेवाला। २ हृदय या मर्मस्थल पर आघात करनेवाला। ३ मारने-पीटनेवाला।
पु०१ उन गीतों या रागों का वर्ग जो युद्ध के समय वीरों को उत्तेजित तथा उत्साहित करने के लिए गाये जाते है। २ युद्ध मे बजाया जाने-वाला बहुत बडा डका या नगाडा।
पु०[देश०]१ एक प्रकार का शाहबलूत जो शिमले और नैनीताल मे अधिकता मे पाया जाता है। २ काकरेजी रग।
†पु०=मारवाडी।
मारूज—वि०[अ० मारूज]१ अर्ज किया हुआ। निवेदित। २ उक्त। कथित।
पु०१ निवेदन। प्रार्थना। २ उक्ति। कथन।
मारूत—स्त्री०[हिं० मारना ?] घोड़ो के पिछले पैरो की एक भौंरी जो मनहूस समझी जाती है।
†पु०=मारुति।
मारे—अव्य० [हिं० मारना] वजह से। कारण। (विवशतासूचक) जैसे—जल्दी के मारे वह अपनी पुस्तक यहीं भूल गया।
मार्कड—पु०=मार्कंडेय।
मार्कंडेय—पु०[स० मृकड+ढक्—एय] मृकड ऋषि के पुत्र एक प्राचीन मुनि जिन्होंने अपने तपोबल से अमरत्व प्राप्त किया था, इनके नाम पर एक पुराण भी प्रचलित है।
मार्क—पु०[अ०]१. चिह्न। छाप। २. मारका। ३. लक्षण।
मार्का —पु०=मारका (चिह्न)।
मार्क्विस—पु०[अ०] इगलैण्ड के कुछ सामतो की परपरागत एक उपाधि।
मार्क्स—पु० एक प्रसिद्ध जरमन क्रान्तिकारी समाजवादी नेता जिसने दर्शन, राजनीति आदि के कई प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे है; और जिसके नाम पर मार्क्स-वाद (देखें) नाम का मत या वाद आजकल विशेष प्रचलित है। इसका पूरा नाम हैनरिच कार्ल मार्क्स था। (सन् १८१८–१८८३ ई०)
मार्क्सवाद—पु०[जर्मन मार्क्स (नाम)+स० वाद] जर्मन समाजवादी कार्ल मार्क्स (देखें) का यह सिद्धान्त कि सारी सम्पत्ति श्रम से ही उत्पन्न होती या बनती है, अत. उससे प्राप्त होनेवाला धन श्रमिकों को ही मिलना चाहिए। इसमे पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का तिरस्कार किया गया है।
विशेष—मार्क्स का मत है कि श्रमिको को पूँजीपतियो के साथ सघर्ष करते रहना चाहिए और इस प्रकार पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का पूरी तरह से नाश करना चाहिए।
मार्क्सवादी—वि०[हिं०मार्क्सवाद] मार्क्सवाद-सम्बन्धी। मार्क्सवाद का। जैसे—मार्क्सवादी दृष्टिकोण।
पु० वह जो मार्क्सवाद के सिद्धान्तो का अनुयायी हो।
मार्केट—पु०[अं०] बाजार। हाट।
मार्ग—पु०[स०√मार्ग वा√मृज्+घञ्]१. आने जाने का रास्ता। पथ। राह। २. कोई ऐसा द्वार, माध्यम या साधन जिसका अनुसरण, पालन या व्यवहार करने से कोई अभिप्राय या कार्य सिद्ध होता हो। ३. मलद्वार। गुदा। ४. अभिनय, नृत्य और सगीत की एक उच्च कोटि की शैली। ५ गधर्व सगीत की वह शाखा जो देशी सगीत के सयोग से निकली थी। ६ मृग-शिरा नक्षत्र। ७ मार्गशीर्ष या अगहन नाम का महीना। ८ विष्णु। ९ कस्तूरी। १०. अपामार्ग। चिचडा।
वि० मृग-सबंधी। मृग का।
मार्गक—स्त्री०[सं० मार्ग+कन्]मार्गशीर्ष या अगहन का महीना।
मार्ग-कर—पु०[स० ष० त०] वह कर जो यात्री को किसी विशिष्ट मार्ग से होकर जाने के बदले मे देना पडता है। पथ-कर। (टॉल टैक्स)
मार्गण—पु० [सं०√ मार्ग् (खोजना)+ल्युट्—अन] १ अन्वेषण। खोज। २ प्रेम। ३. याचना। ४ याचक। भिखमंगा। ५. तीर। बाण।
मार्गणा—स्त्री०[√मार्ग+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. अन्वेषण। २. याचना।
मार्गद—पु०[स० मार्ग√दा (देना)+क] केवट। मल्लाह।
मार्ग-दर्शक—पु०[स० ष० त०]१. मार्ग दिखलानेवाला व्यक्ति। २ वह जो यात्रियो, भ्रमण करनेवालों का पथ-प्रदर्शन करता हो।
मार्ग-दर्शन—पु०[स० ष० त०]१ रास्ता दिखलाना। २. पथ-प्रदर्शन।
मार्ग-देशिक—पु०[सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
मार्ग-देशी—पु०[हिं०]सगीत शास्त्र की दृष्टि से आज-कल का वह प्रचलित सगीत जिसमे ध्रुपद, खयाल, टप्पा, ठुमरी आदि सम्मिलित है।
मार्ग-धेनु (क)—पु०[स० ष० त] चार कोस की दूरी। एक योजन।
मार्गप—पु०[स० मार्ग √ पा (रक्षा करना)+क] मार्ग अर्थात् रास्ते का निरीक्षण करनेवाला अधिकारी।
पु०=मार्गण (तीर)।
मार्गपति—पु०=मार्गप।
मार्ग-राग—पु० [स०] सगीत-शास्त्र मे प्राचीन राग, जिन्हे शुद्धराग भी कहते है। जैसे—भैरव, मेघ आदि राग। (देशी रागों से भिन्न)
मार्गव—पु०[स०]१. अयोगवी माता और निषाद पिता से उत्पन्न एक प्राचीन सकर जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
मार्गवती—स्त्री०[स० मार्ग+मतुप्, म—व+ङीप्] एक देवी जो मार्ग चलनेवालो की रक्षा करनेवाली मानी गई है।
मार्गशिर—पु०=मार्गशीर्ष।
मार्गशीर्ष—पु०[स० मृगशीर्ष+अण्+ङीप्, मार्गशीर्षी+अण्]अगहन का महीना।
मार्गाधिकार—पु०[स० मार्ग-अधिकार, ष० त०] वह अधिकार जो किसी मार्ग पर आने-जाने अथवा अपने आदमी या चीजें भेजने-मँगाने आदि के सबध मे किसी विशिष्ट व्यक्ति, देश आदि को प्राप्त होता है। (राइट आफ पैसेज)
मार्गिक—पुं० [स० मृग+ठक्—इक] १ पथिक। यात्री। २. मृगों को मारनेवाला व्याध।
मार्गी (गिन)—पुं०[सं० मार्ग+इनि] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। बटोही। यात्री।
स्त्री० सगीत मे एक मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—नि, स, रे, ग, म, प, ध। म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, स।

मार्च—पु०[अं०]१. अंग्रेजी वर्ष का तीसरा मास जो फरवरी के बाद और अप्रैल से पहले पडता है और सदा ३१ दिनो का होता है। २. सैनिकों आदि का दल बाँधकर किसी उद्देश्य से आगे बढना या चलना। ३ सेना का कूच या प्रस्थान।

मार्ज—पु० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+अच्] १. विष्णु। २ धोबी। ३ [√मृज+घञ्] मार्जन।

मार्जक—वि०[सं० √ मृज्+णिच्+ण्वुल्—अक] मार्जन करनेवाला।

मार्जन—स्त्री० [स०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. दोष, मल आदि दूर करके साफ करने की क्रिया या भाव। सफाई। २. अपने ऊपर जल छिडककर अपने आपको शुद्ध करना। ३ भूल, दोप आदि का परिहार। ४ लोध नामक वृक्ष।

मार्जना—स्त्री०[स०√मृज्+णिच्+युच्—अन,+टाप्]१ मार्जन करने की क्रिया या भाव। सफाई। २. क्षमा। माफी।

मार्जनी—स्त्री० [स० मार्जन+ङीप्] १ झाडू। बुहारी। २ सगीत मे मध्यम स्वर की एक श्रुति।

मार्जनीय—[स०√मृज्+णिच्+अनीयर्] अग्नि।

वि० जिसका मार्जन होना आवश्यक या उचित हो। मार्जन के योग्य।

मार्जार—पु०[स०√मृज्+आरन्,[स्त्री० मार्जारी] १ बिल्ली। २. लाल चीते का पेड। ३ पूति सारिवा।

मार्जारक—पु०[सं० मार्जार+कन्]मोर।

मार्जारकर्णिका—स्त्री०[स० मार्जार-कर्ण, ब०स०, ङीप्+कन्, +टाप्, ह्रस्व] चामुडा (दुर्गा का एक रूप) का एक नाम।

मार्जारगंधा—स्त्री०[स० ब० स० टाप्] मुद्गपर्णी।

मार्जारपाद—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का बुरे लक्षणोंवाला घोडा।

मार्जाराक्षक—पु०[सं० मार्जार-अक्षि, ब०स०, पच्+कन्] एक प्रकार का रत्न। (को०)

मार्जारी—स्त्री०[स० मार्जार+ङीप्]१ बिल्ली। २ कस्तूरी। ३ गन्ध-नाकुली।

मर्जारी टोडी—स्त्री०[स० मार्जारी+हिं० टाडी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब कोमल स्वर लगते है।

मार्जारीय—पु०[स० मार्जार+छ—ईय]१ बिल्ली। २ शूद्र।

वि० मार्जन करनेवाला।

मार्जाल—पुं०=मार्जार।

मार्जालीय—पु०[स०√मृज+अलीयच्,]१ बिल्ली। २ शूद्र। ३ शिव। ४ एक प्राचीन ऋषि।

वि०=मार्जारीय।

मार्जित—भू० कृ० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+क्त] जिसका मार्जन हुआ हो या किया गया हो। साफ या स्वच्छ किया हुआ।

पु० एक प्रकार का श्रीखण्ड जो दही, कपूर, चीनी, शहद और मिर्च आदि मिलाकर बनाया जाता था।

मार्तंड—पु०[सं० मृत-अण्ड, कर्म० स०, पररूप,+अण्, वृद्धि] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३. सूअर। ४ सोनामक्खी।

मार्तंड-वल्लभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १ सूर्य की पत्नी। २ छाया।

मार्तिक—भू० कृ० [सं० मृत्तिका+ठक्—इक] मिट्टी से बना या बनाया हुआ।

पु० १ सकोरा। २. पुरवा।

मार्तिकावत—पु० [स०] १. पुराणानुसार चेदि राज्य का एक प्राचीन नगर। २ उक्त नगर के आसपास का प्रदेश। ३ उक्त देश का निवासी।

मार्त्य—पु०[स० मर्त्य+ष्यञ्]१. मर्त्य होने की अवस्था या भाव। मरण-शीलता। २ शारीरिक मल।

मार्दंग—पु०[स० मृत्-अग, ब० स०, +अण्]१ मृदंग बजानेवाला। २. नगर। शहर।

मार्दंगिक—पु०[स० मृदंग+ठक्—इक] वह जो मृदग बजाता हो। मृद-गिया।

मार्दव—पु०[स० मृदु+अण्] १ मृदु होने की अवस्था या भाव। मृदुता। २ दूसरे को दु खी देखकर दु खी होने की वृत्ति। हृदय की कोमलता और सरसता। ३ अहकार आदि दुर्गुणो से रहित होने की अवस्था या भाव। ३ एक प्राचीन जाति।

मार्द्वीक—वि० [स० मृद्वीका+अण्, वृद्धि] १ अगूर-सबधी। २ अंगूर से बना या बनाया हुआ।

स्त्री०[स०] अगूरी शराब।

मार्फत—अव्य०, स्त्री०=मारफत।

मार्मिक—वि०[स० मर्मन्+ठक्—इक,] [भाव० मार्मिकता] १. मर्म-सम्बन्धी। मर्म का। २ मर्म-स्थान (हृदय) पर प्रभाव डालने अथवा उसे आदोलित करनेवाला। ३ किसी विषय का मर्म अर्थात् निहित तत्त्व के आधार पर या विचार मे होनेवाला। जैसे—मार्मिक विवेचन।

मार्मिकता—स्त्री०[सं० मार्मिक तल्+टाप्] १ मार्मिक होने की अवस्था या भाव। २ किसी विषय, शास्त्र आदि के गूढ रहस्यो की अभिज्ञता या अच्छी जानकारी।

मार्शल—पु०[अं०] सेना का एक उच्च अधिकारी।

मार्शल-ला—पु०[अं०]१ वह आदेश जिसके द्वारा किसी देश की शासन-व्यवस्था सेना को सौंपी जाती है। २ सैनिक व्यवस्था या शासन। फौजी कानून या हुकूमत।

विशेष—जब देश मे विशेप उपद्रव आदि की आशका होती है तब वहाँ से साधारण नागर शासन हटाकर इसी प्रकार का शासन कुछ समय के लिए प्रचलित किया जाता है।

मार्ष—पु०=मारिप।

मार्लचा—पु०[?] एक प्रकार का साग जो पानी मे होता है।

माल—पु०[स० मा+रन्, र—ल, पृषो०] १. क्षेत्र। २. कपट। छल। ३ वन। जगल। ४ हरताल। ५ विष्णु। ६. एक प्राचीन अनार्य या म्लेच्छ जाति। ७ एक प्राचीन देश।

स्त्री०[स० माला] १ गले मे पहनने की माला। २ वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे मे बेलन पर से होकर जाती है और टेकुए को घुमाती है। ३ पक्ति। श्रेणी। ४ झुड। समूह। उदा०—ग्वाल मृगनि का माल सघन वन भूलि परी ज्यौं।—नददास।

†पु०=मल्ल (पहलवान)।

पु०[अ०]१ प्रत्येक ऐसी मूल्यवान वस्तु जिसका कुछ उपयोग होता हो और इसी लिए जिसका क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—खेतो की उपज, वृक्षो के फल, घर का सामान, खनिज पदार्थ, गहने-कपड़े आदि।

पद—मालखाना, मालगाड़ी, मालगोदाम।

मुहा०—माल काटना, चीरना या मारना=अनुचित रूप से कहीं से मूल्यवान पदार्थ या सम्पत्ति लेकर अपने अधिकार में करना।

२. धन-संपत्ति। रुपया-पैसा। दौलत।

पद—माल-टाल, मालदार, माल-मता।

३. वह धन जो राज्य को कर, लगान आदि के रूप में प्राप्त होता है। राजस्व।

पद—मालगुजारी।

४ किसी पदार्थ का वह मूल अंश या तत्त्व जो वस्तुतः उपयोगी तथा मूल्यवान हो। जैसे—इस अंगूठी का माल (अर्थात् चाँदी या सोना) अच्छा है। ५ सुन्दर और सुस्वादु भोजन। ६ युवती और सुन्दरी स्त्री। (बाजारू) ७ गणित में वर्ग का मान। वर्ग अंक।

माल-कंगनी—स्त्री०[हिं० माल+कंगनी]१. एक प्रकार की लता जिसके बीजों का तेल निकलता है। २ उक्त लता के दाने या बीज जो औषध के काम आते हैं और जिनमें से एक प्रकार का तेल निकलता है।

मालक—पुं०[सं०√मल् (धारण)+ण्वुल्—अक] १ स्थल-पद्म। २ नीम।

†पुं०=मालिक।

मालका—स्त्री०[सं० मालक+टाप्] माला।

मालकोस—पुं०[सं०माल-कोश, ष० त०+अण्] संगीत में ओड़व जाति का एक राग जिसे कौशिक राग भी कहते हैं तथा जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

मालखंभ—पुं० [सं० मल्ल+स्तम्भ]१ एक प्रकार की भारतीय कसरत या व्यायाम जो लकड़ी के खंभे या डंडे के सहारे किया जाता है और जिसमें कसरत करनेवाला अनेक प्रकार से बार-बार ऊपर चढ़ता और कला-बाजियाँ करता हुआ नीचे उतरता है। कुछ लोग लकड़ी के खंभे की जगह छत से लटकाये हुए लम्बे बेंत का भी सहारा लेते हैं। २. वह खंभा जिसके सहारे उक्त प्रकार की कसरत या व्यायाम किया जाता है।

मालखाना—पुं०[अ० माल+फा० खाना]१. बहुमूल्य वस्तुएँ सँभालकर रखने का स्थान। २ भंडार। ३ गोदाम।

माल-गाड़ी—पुं०[हिं० माल+गाड़ी] रेल में वह गाड़ी (सवारी-गाड़ी से भिन्न) जिसमें केवल माल-असबाब भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगुजार—पुं०[अ० मालगुज़ार]१. मालगुजारी देनेवाला व्यक्ति। २. जमींदार।

मालगुजारी—स्त्री०[फा०]१. जोती-बोई जानेवाली जमीन का वह कर जो सरकार को दिया जाता है। लगान। २ मालगुजार होने की अवस्था या भाव।

मालगुर्जरी—स्त्री०[सं० मालगुर्जर+ङीप्] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

माल-गोदाम—पुं०[हिं० माल+गोदाम]१. वह स्थान जिसमें व्यापारी वस्तु का भंडार रखते हैं। गोदाम। २. रेलवे स्टेशन का वह स्थान जहाँ से मालगाड़ी में माल चढ़ाया और उतारा जाता है।

मालगोवा—पुं०[?] एक प्रकार का आम (फल)।

मालचक्रक—पुं०[सं०] कूल्हा।

माल्टा—पुं०[माल्टा (टापू से)] मुसम्मी की जाति का एक प्रकार का बढ़िया फल और उसका पेड़। यह फल भूमध्यसागर के माल्टा द्वीप से आता था पर अब भारत में भी होता है।

माल-टाल†—पुं०=माल-मता।

मालति*—स्त्री०=मालती।

मालती—स्त्री०[सं०√मल्+अतिच्, दीर्घ,+ङीष्]१. एक प्रकार की लता। जिसमें वर्षा ऋतु में सफेद रंग के सुगंधित फूल लगते हैं। २ उक्त लता का फूल। ३ छः अक्षरों की एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, दो जगण और एक यगण होता है। ४. मदिरा नामक छंद। ५. सवैया के मत्तगयंद नामक भेद का दूसरा नाम। ६. युवती स्त्री। ७ चंद्रमा की चाँदनी। ज्योत्स्ना। ८ रात्रि। रात। ९. पाढ़ा या पाढ़ नाम की लता। १०. जाती या जाय-फल नामक वृक्ष।

मालती-क्षार—पुं०[सं० ष० त०] सुहागा।

मालती-जात—पुं०[सं० सं० स०] सुहागा।

मालती-तोड़ी—स्त्री०[हिं० मालती+तोड़ी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

मालती-पत्रिका—स्त्री०[सं० ष० त०] जावित्री।

मालती-फल—पुं०[सं० ष० त०] जायफल।

मालद—पुं०[सं०]१ वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक प्रदेश का नाम जिसे ताड़का ने उजाड़ दिया था। २ एक प्राचीन अनार्य जाति।

मालदह—पुं०[देश०]१ पूर्वी बिहार के एक नगर का नाम। २ उक्त नगर और उसके आस-पास के स्थान में होनेवाला एक प्रकार का बढ़िया आम।

मालदही—स्त्री०[हिं० मालदह] एक प्रकार की नाव जिसमें माँझी छप्पर के नीचे बैठकर डाँड़ खेते हैं।

पुं० मध्यकाल में मालदह में बननेवाला एक तरह का कपड़ा।

वि० मालदह-संबंधी।

मालदा—पुं०=मालदह।

मालदार—वि०[फा०] [भाव० मालदारी] धनवान्। धनी।

मालद्वीप—पुं०[सं० मल्लद्वीप] हिंद महासागर का एक द्वीपपुंज।

मालन—स्त्री०=मालिन।

मालपुआ—पुं०[हिं० माल+सं० पूप] घी में तली हुई एक प्रकार की मीठी पूरी या पकवान।

मालबरी—स्त्री०[हिं० मालाबार] एक प्रकार की ईख।

माल-मंजिका—स्त्री०[सं० ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का खेल।

माल-भंडारी—पुं०[हिं० माल+भंडारी]मालगोदाम, भंडार आदि का निरीक्षक।

माल-भूमि—स्त्री०[सं० मल्लभूमि] नैपाल के पूर्व का एक प्रदेश।

माल-मंत्री—पुं० दे० 'राजस्व मंत्री'।

माल-मता—पुं०[अ० माल+मताअ] धन-दौलत। संपत्ति।

मालय—वि० [सं० ष० त०]१ मलय पर्वत का। २ मलय पर्वत पर होनेवाला।

पुं०१. चंदन। २. व्यापारियों का दल। ३ गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

मालव—पु०[स० माल+व]१. आधुनिक मध्य प्रदेश का एक भू-भाग जो मध्य तथा प्राचीन काल मे एक स्वतन्त्र राज्य था। मालव देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. सगीत मे एक राग जो भैरव का पुत्र कहा गया है। ४ सफेद लोध।
वि० मालवा नामक देश का।

मालवक—वि०[स० मालव+वुञ्—अक] मालव-सबधी। मालवे का।
पु० मालव देश का निवासी।

मालवश्री—स्त्री० [स० ष० त०]सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो सायकाल गाई जाती है।

मालवा—पु०[स० मालव] आधुनिक मध्यप्रदेश के अतर्गत एक भू-भाग। मालव।
स्त्री० एक प्राचीन नदी।

मालविका—स्त्री०[स० मालवा+ठक्—इक,+टाप्] निसोथ।

मालवी—स्त्री० [स० मालव+अण्+ङीप्]१ सगीत मे, श्री राग की एक रागिनी। २ पाढा नाम की लता। ३ मालवे की बोली।
वि०=मालवीय।

मालवीय—वि०[स० मालव+छ—ईय] मालव देश-सबधी। मालव का।
पु० मालव देश का निवासी।

मालश्री—स्त्री० =मालवश्री।

मालसी—स्त्री०=मालवश्री।

माला—स्त्री०[स० मा=शोभा√ला (लेना)+क,+टाप्]१ एक ही पक्ति या सीध मे लगी हुई बहुत सी चीजो की स्थिति। अवली। पक्ति। जैसे—पर्वत-माला। २ एक तरह की चीजो का निरन्तर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—पुस्तक माला। ३ फूलो का हार। गजरा। ४ फूलो के हार की तरह बनाया हुआ सोने चाँदी, रत्नो आदि का हार। जैसे—मोतियो या हीरो की माला। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार के दानो या मनको का हार जो धार्मिक दृष्टियो से पहना जाता है। जैसे—तुलसी की माला, रुद्राक्ष की माला अर्थात् जिसके दानो या मनको की गिनती के हिसाब से इष्टदेव के नाम का जप किया जाता है।
मुहा०—**माला जपना या फेरना**= हाथ मे माला लेकर इष्टदेव का नाम जपना। **(किसी के नाम की) माला जपना**=हरदम या प्राय किसी का नाम लेते रहना अथवा चर्चा या ध्यान करते रहना।
६. समूह। झुड। जैसे—मेघमाला। ७ एक प्राचीन नदी। ८ दूब। ९. भुई आँवला। १०. काठ की एक प्रकार की कटोरी जिसमे उबटन या तेल रखकर शरीर पर मला या लगाया जाता है। ११ उपजाति छद का एक भेद जिसके प्रथम और द्वितीय चरण मे जगण, तगण, जगण और अत मे दो गुरु तथा तीसरे और चौथे चरण मे दो तगण फिर जगण और अत मे दो गुरु होते हैं।
पु०[अ० महल, हिं० महला] मकान का खडा। (महाराष्ट्र) जैसे—मकान का चौथा माला।

मालाकठ—पु०[स० ब० स०]१ अपामार्ग। चिचडा। २ एक प्रकार का गुल्म।

माला-कंद—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का कद जो वैद्यक मे तीक्ष्ण दीपन, गुल्म और गडमाला रोग को हरनेवाला तथा वात और कफ का नाशक कहा गया है। कडलता। बल-कद।

मालाकार—पु०[स० माला√कृ+अण्] [स्त्री० मालाकारी]१. पुराणानुसार एक वर्णसकर जाति।
विशेष—ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार यह जाति विश्वकर्मा और शूद्रा से उत्पन्न है। पराशर पद्धति के अनुसार यह तेलिन और कर्मकार से उत्पन्न है।
२. माली।

मालाकृति—वि० [माला-आकृति, ब० स०] माला के आकार का। दे० 'रज्जुवक्र'।

मालागिरी—वि०, पु०=मलयागिरि।

मालातृण—पु०[सं० मध्य० स०] एक तरह की सुगधित घास। भूस्तृण।

माला दीपक—पु० [स० ष० त०] साहित्य मे, दीपक अलकार का एक भेद जिसमे किसी वस्तु के एक ही गुण के आधार पर उत्तरोत्तर अनेक वस्तुओ का सबध बतलाया जाता है। जैसे—रस से काव्य, काव्य से वाणी, वाणी से रसिक और रसिक से सभा की शोभा बढ़ती है।

माला-दूर्वा—स्त्री०[स० उपमि० स०] एक प्रकार की दूब जिसमे बहुत सी गाँठे होती हैं। गडदूर्वा।

मालाधर—पु०[स० ष० त०] सत्रह अक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, जगण फिर सगण और गण मे एक लघु और फिर गुरु होता है।

मालाप्रस्थ—पु०[स०] एक प्राचीन नगर।

मालाफल—पु०[स० ष० त०] रुद्राक्ष।

माला मणि—पु०[ष० त०] रुद्राक्ष।

मालामाल—वि०[फा०] जिसके पास बहुत अधिक माल या धन हो। धन-धान्य से पूर्ण। सपन्न।

माला रानी—स्त्री०[हिं०] सगीत मे कल्याण ठाठ की एक रागिनी।

मालाली—स्त्री०[स० माला√अल्+अच् + ङीप्] पृक्का। असबरग।

मालावती—स्त्री०[स० माला+मतुप्, वत्व, ङीप्] एक प्रकार की सकर रागिनी जो पचम, हम्मीर, नट और कामोद के सयोग से बनती है। कुछ लोग इसे मेघराज की पुत्रवधू मानते है।

मालिक—पु०[स० माला+ठक्,—इक]१ मालाएँ बनानेवाला। माली। २ रजक। धोबी। ३ एक प्रकार का पक्षी।
पु०[अ०] [स्त्री० मालिका]१ वह जो सब का स्वामी हो और सब पर अधिकार रखता हो। २ ईश्वर। जैसे—जो मालिक की मरजी होगी, वही होगा। ३ सपत्ति आदि का स्वामी। अध्यक्ष। ४ विवाहिता स्त्री का पति। शौहर।

मालिका—स्त्री०[स० माला+कन्+टाप् इत्व]१ पक्ति। श्रेणी। २ फूलो आदि की माला। ३ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ पक्के मकान के ऊपर का कोठा। अटारी। ५ अंगूर की शराब। ६ मदिरा। शराब। ७ पुत्री। बेटी। ८ चमेली। ९ अलसी। १० माली जाति की स्त्री। मालिन। ११ मुरा नामक गंध द्रव्य। १२ सातला।
स्त्री० फा०'मालिक' का स्त्री०। स्वामिनी।

मालिकाना—पु० [अ० मालिक+फा० आन] १ स्वामी का अधिकार या स्वत्व। मिलकियत। स्वामित्व। २. वह कर या धन जो मध्ययुग मे जमीन के मालिक या जमीदार को किसानो आदि से आधिकारिक रूप मे प्राप्त होता था।

वि० १ मालिकों का। २ मालिकों जैसा।

अव्य० मालिक के रूप मे। मालिक की तरह।

क्रि० वि० मालिक की भाँति। जैसे—मालिकाना तौर पर।

वि० मालिक या स्वामी का। जैसे—मालिकाना हक़।

मालिकी—स्त्री० [फा० मालिक+ई (प्रत्य०)] मालिक होने की अवस्था या भाव। स्वामित्व। मालियत।

वि० मालिक या स्वामी का। जैसे—मालिकी माल।

मालित—भू० कृ० [स० माला+इतच्] १ जिसे माला पहनाई गई हो। २ जो घेर लिया गया हो।

मालिन—स्त्री० [हिं० माली] १ माली की स्त्री। २ माली का काम करनेवाली स्त्री।

स्त्री० [स० मालिनी] संगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

मालिनी—स्त्री० [स० माला+ इनि+ङीप्] १ माली जाति की स्त्री। मालिन। २. चंदा नगरी का एक नाम। ३ गौरी। ४ गंगा। ५ जवासा। ६ कलियारी। ७ स्कद की सात मातृकाओं मे से एक। ८ साहित्य मे, मदिरा नाम की वृत्ति। ९ एक प्रकार का वार्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे १५ अक्षर होते है। पहले ६ वर्ण, दसवाँ और तेरहवाँ लघु और शेष गुरु होते है (न न म य य)। इसे कोई कोई मात्रिक भी मानते है। १० मार्कंडेय पुराण के अनुसार रौच्य मनु की माता का नाम। ११. हिमालय की एक प्राचीन नदी। कहते हैं कि इसी के तट पर मेनका के गर्भ से शकुतला का जन्म हुआ था।

मालिन्य—पु० [स० मलिन+ष्यञ्', ण वा, वृद्धि] १ मलिन होने की दशा या भाव। मलिनता। मैलापन। २ अधकार। अँधेरा।

मालियत—स्त्री० [अ०] १ माल का वास्तविक मूल्य। कीमत। २ धन। सपत्ति। ३ मूल्यवान् पदार्थ। कीमती चीज।

मालिया—पु० [देश०] पाल आदि बाँधते समय दी जानेवाली रस्सी मे एक विशेष प्रकार की गाँठ। (ल०)

पु० [हिं० माल] मालगुजारी। (पश्चिम)

मालिवान*—पु०=माल्यवान्।

मालिश—स्त्री० [फा०] १ शरीर पर तेल आदि मलने की क्रिया या भाव। मर्दन। २ रक्त-सचार आदि के लिए शरीर के किसी अग पर बार-बार हाथ से मलने की क्रिया।

मुहा०—जी मालिश करना=उबकाई या मिचली-सी आना। जैसे—उसे देखकर मेरा तो जी मालिश करने लगा।

माली (लिन्)—वि० [स० माला+इनि] [स्त्री० मालिनी] जो माला धारण किये हो।

पु० १ वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुकेश राक्षस का पुत्र जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। २ राजीव-गण नामक छन्द का दूसरा नाम।

पु० [स० माला+इनि, दीर्घ, न-लोप, मालिन्, प्रा० मालिय] [स्त्री० मालिन, मालिनि, मालिनी] १ बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला व्यक्ति। बागवान। २ हिन्दुओं मे उक्त काम करनेवाली एक जाति। ३. उक्त जाति का व्यक्ति।

स्त्री० [हिं० माला] छोटी माला। सुमिरनी। उदा०—पतनारी माली पकाई और न कछू उपाय।—बिहारी।

वि० [अ०] माल अर्थात् धन या सपत्ति से सबध रखनेवाला। अर्थ सबधी। आर्थिक।

माली खूलिया—पु० [अ०] एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमे रोगी प्राय खिन्न या दु खी और सशक रहता है। उन्माद।

माली गौड़—पु०=मालव-गौड। (राग)

मालीद—पु० [अ० मालिबडेना] एक प्रकार की उज्ज्वल और चमकदार धातु जो चाँदी से अधिक कडी होती है।

मालीदा--पु० दे० 'मलीदा'।

मालु—पु० [स०√मृ (प्राप्त करना)+उण् वृद्धि, र=ल] एक प्रकार की लता जो पेडों से लिपटती है। पत्रलता।

मालुक—पु० [स० मालु+कन्] १. काली तुलसी। २ मटमैले रग का एक प्रकार का राजहस।

मालुधान—पु० [स० मालु√धा (रखना)+ल्यु—अन] १ एक प्रकार का साँप। २ पुराणानुसार आठ प्रमुख नागो मे से एक। ३ महापथ।

मालुधानी—स्त्री० [स० मालुधान+ङीप्] एक प्रकार की लता।

मालुमात—स्त्री० [अ०] १ जानकारी। ज्ञान। २ किसी बात या विषय की अच्छी और पूरी जानकारी।

मालुर—पु० [स० मा√लू (काटना)+र] १ बेल का पेड। २ कपित्थ। कैथ।

मालूम—वि० [अ०] १ (बात, वस्तु या विषय) जिसका इल्म अर्थात् ज्ञान हो चुका हो। जाना हुआ। ज्ञात। विदित। २ प्रकट। स्पष्ट।

पु० जहाज का प्रधान अधिकारी या अफसर। (लश०)

मालोपमा—स्त्री० [स० माला-उपमा उपमि० स०] साहित्य मे उपमालकार का एक भेद जिसमे एक उपमेय के (क) एक ही धर्मवाले अथवा (ख) विभिन्न धर्मवाले अनेक उपमान बतलाये जाते है।

माल्य—पु० [स० माला+ष्यञ्] १ फूल। २ माला। ३ सिर पर लपेटी जानेवाली माला।

माल्यक—पु० [स० माल्य+कन्] १. दमनक। दौना। २ माला।

माल्य-पुष्प—पु० [स० ब० स०] सन का पौधा।

माल्यवत—पु०=माल्यवान्।

माल्यवत्—वि० [स० माल्य+मतुप्, वत्व] [स्त्री० माल्यवती] जो माला पहने हो।

पुं०=माल्यवान्।

माल्यवती—स्त्री० [स० माल्यवत्+ङीप्] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

वि० हिं० माल्यवत् का स्त्री०।

माल्यवान् (वत्)—पु० [स० दे० माल्यवत्] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो केतुमाल और इलावृत वर्ष के बीच का सीमा-पर्वत कहा गया है। २ सुकेश का पुत्र एक राक्षस जो गधर्व की कन्या देववती से उत्पन्न हुआ था।

वि० [स० माल्यवत्] [स्त्री० माल्यवती] जो माला पहने हो।

माल्ल—पु० [स० मल्ल+अञ्] १. एक वर्ण सकर। २ दे० 'मल्ल'।

माल्लवी—स्त्री० [स०√मल्ल्+वण्,+ङीप्] १ मल्लों की विद्या या कला। २. मल्लों का जोड।

माल्हा—पु०=मल्ल।

स्त्री०=माला।

मावत†—पु०=महावत।

मावना†—अ०=अमाना (किसी के बीच मे समाना)।

मावला—पु० [?] [स्त्री० मावली] १. महाराष्ट्र राज्य के पहाड़ो मे रहनेवाली एक योद्धा जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

मावली—वि० [हिं० मावला] मावलो से सबध रखनेवाला। मावलो का। जैसे—मावली गाँव, मावली दल।
स्त्री० 'मावला' की स्त्री।
†पु०=मावला।

मावस†—स्त्री०=अमावस।

मावा—पुं० [स० मड, हिं० माँड] १ माँड। पीच। २ किसी चीज का सार-भाग। सत्त।
मुहा०—(किसी का) मावा निकालना=खूब मारना-पीटना।
३ वह दूव जो गेहूँ आदि को भिगोकर या कच्चा मलकर निचोडने से निकलता है। ४ दूध का खोआ। ५. प्रकृति। ६ अडे के अदर की जरदी। ६ चदन का तेल या ऐसी ही और कोई चीज जिसमे दूसरी चीजो का सार भाग मिलाकर इत्र तैयार करते हैं। इत्र की जमीन। ७ एक प्रकार का गाढ़ा लसदार सुगधित द्रव्य जिसे तमाकू मे डालकर उसे सुगधित करते है। ८ किसी प्रकार का मसाला या सामग्री। ९ हीरे की बुकनी जिससे मलकर सोने-चाँदी के गहने चमकाते है।

मावासी†—स्त्री०=मवासी।

मावीत्र—पु० [स० मातृ-पितृ] माता-पिता। (राज०) उदा०—मावीत्र म्रजाद मेटि बोलै मुखि।—प्रिथीराज।

माश—पुं० [सं० माष से फा०] उरद।
मुहा०—माश मारना=मत्र पढकर किसी को वश मे करने के लिए उस पर उरद फेंकना। उदा०—भेड वन जाओगे मारेगी जो दो माश तुम्हे।—जान साहव।
पु० [सं० महाशय] १ महाशय। २ बंगाली।

माशा अल्लाह—अव्य० [अ०] एक प्रशसासूचक पद जिसका अर्थ है—वाह क्या कहना है! वहुत अच्छे या क्या कहने!

माशा—पु० [स० माष, जद० मष, माह] आठ रत्ती मान की एक प्रकार की तौल जिसका व्यवहार सोने, चाँदी, रत्नो और ओषधियो के तौलने मे होता है।
†पु० [स० महाशय] १ महाशय। २. बगाली।

माशी—पु० [फा० माश=उडद] १. माष अर्थात् उडद की तरह का कालापन लिये लाल रग। २ जमीन की एक नाप।
वि० उक्त प्रकार के रग का।

माशूक—पु० [अ० माशूक] [स्त्री० माशूका] लौकिक अथवा आध्यात्मिक प्रेम-पात्र। प्रिय।

माशूका—स्त्री० [अ० माशूक] प्रेम-पात्री।

माशूकाना—वि० [अ० माशूक+फा० आन] १ माशूक-सबधी। माशूक का। २ माशूक अर्थात् सुन्दरी स्त्रियाँ या प्रेयसियो की तरह का।

माशूकी—स्त्री० [फा०] माशूक होने की अवस्था या भाव। प्रेम-पात्रता।

माष—पु० [सं०√मष् (मारना)+घञ्] १ उडद। २ माशा नामक तौल। ३ शरीर पर होनेवाला मसा।
वि० मूर्ख।
†स्त्री०=माख।

माषक—पु० [सं० माष+कन्] १ माशा नाम की तौल। २ उडद। माष।

माष-तैल—पु० [सं० ष० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो अर्द्धांग, कंप आदि रोगो मे उपयोगी माना जाता है।

माषना†—अ०=माखना (क्रुद्ध होना)।

माष-पत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कन्+टाप्, इत्व] माषपर्णी।

माष-पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] जगली उडद।

माष-योनि—स्त्री० [स० ब० स०] पापड़।

माष-वटी—स्त्री० [स० ष० त०] उडद की बनी हुई बडी। (दे० 'बड़ी')

माषाद—पु० [स० माष√अद् (भक्षण करना)+अण्] कछुआ।

माषाश—पुं० [स० माष√अश् (खाना)+अच्] घोडा।

माषीण—पु० [स० माष+ख—ईन] माष या उडद का खेत।

माष्य—पु० [स० माष+ष्यञ्] माष या उडद बोने योग्य खेत। मगार।

मास्—पु० [स०√मा (मानना)+असुन्] १ चंद्रमा। २ महीना। मास।

मास—पु० [सं० √मस् (परिणाम)+घञ्] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बरावर होता है। महीना।
विशेष—मास या महीना साधारणत ३० दिनो का माना जाता है, परन्तु चाद्र, सौर आदि गणनाओ के अनुसार कभी-कभी एक दिन अधिक या कम का भी होता है। इसके सिवा नाक्षत्र मास और सावन मास भी होते हैं। जिनका विवेचन उक्त शब्दो के अन्तर्गत मिलेगा।
पद—अधिमास, मल-मास।
†पुं०=मांस (गोश्त)।

मासक—पुं० [सं० मास+कन्] महीना। मास।

मासज्ञ—पु० [स० मास√ज्ञा (जानना)+क] १ दात्यूह नामक पक्षी। वनमुर्गी। २ एक प्रकार का हिरन।

मास-ताला—पु० [स० ब० स०,+टाप्] एक प्रकार का वाजा।

मासना†—अ० [स० मिश्रण हिं० मीसना] मिलना।
†स०=मिलाना।

मास-फल—पु० [स० ष० त०] गणित ज्योतिष मे, किसी की जन्म-कुडली के अनुसार किसी एक महीने का फल। (वर्ष-फल की तरह)

मास-भृत—पु० [स० तृ० त०] वह मजदूर जिसे मासिक वेतन मिलता हो।

मास-मान—पु० [ब० स०] वर्ष।

मासर—पुं० [स०√मस् (परिणाम)+णिच्+अरन्] १ एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ जो चावल के माँड और अगूरो के उठे हुए रस मे बनाया जाता था। २ काँजी।

मास-स्तोम—पु० [स० मध्य० स०] एक यज्ञ।

मासांत—पु० [स० मास-अन्त, ष० त०] १ महीने का अत। २ महीने का अन्तिम दिन। ३ अमावस्या। ४ सौर सक्रान्ति का दिन।

मासा—पु०=माशा।

मासाधिप—पु० [स० मास-अधिप, ष० त०] वह ग्रह जो मास का स्वामी हो। मासेश।

मासानुमासिक—वि० [स० ष० त०] प्रतिमास सबधी। प्रतिमास का।

मासावधिक—वि० [सं० मास-अवधि, ब० स०,+कप्] जिसकी अवधि एक मास पर्यंत हो।

मासिक—वि० [सं० मास+ठञ्—इक] १ मास-संबंधी। २ मास-मास पर नियमित रूप से होनेवाला।

पु० दे० 'मासिक-धर्म'।

मासिक-धर्म—पु० [सं० कर्म० स०] स्त्रियों को प्रति मास होनेवाला रज-स्राव।

मासी—स्त्री०[सं० मातृष्वसा; पा० मातुच्छा; प्रा० मउच्छा] संबंध के विचार से माँ की बहन। मौसी।

मासीन—वि० [सं० मास+खञ्—ईन] एक महीने की अवस्थावाला।

मासुरकर्ण—पु० [सं० मसुरकर्ण+अण्] मसुकर्ण के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

मासुरी—स्त्री० [सं० मसुर+अण्+ङीप्] चीर-फाड़ के काम में आनेवाला एक प्राचीन शस्त्र या औजार।

मासूम—वि० [अ०] १ जिसने कोई अपराध या दोष न किया हो। निरपराध। बेगुनाह। २ कलुष या पाप से रहित। ३ जो हर प्रकार से असमर्थ, निर्दोष तथा दया का पात्र हो। जैसे—मासूम बच्चा।

मासूमियत—स्त्री० [अ०] मासूम होने की अवस्था या भाव।

मासूर—वि० [सं० मसूर+अण्] १. मसूर-संबंधी। मसूर का। २ मसूर की आकृति का।

मासेष्टि—स्त्री० [सं० मास-इष्टि, मध्य० स०] वह इष्टि या यज्ञ जो प्रतिमास किया जाता हो।

मासोपवास—पु० [सं० मास-उपवास, मध्य० स०] १ लगातार महीने भर तक किया जानेवाला उपवास। २ आश्विन शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक किया जानेवाला एक प्रकार का उपवास जिसका विधान गरुड़ पुराण में है।

मासोपवासी (सिन्)—पु० [सं० मास-उपवास, मध्य० स०,+इनि] वह जो मासोपवास अर्थात् लगातार महीने भर तक उपवास करता हो।

मास्टर—पु० [अ०] [भाव० मास्टरी] १ स्वामी। मालिक। २ अध्यापक। शिक्षक। ३ किसी कला, गुण, विद्या या विषय में निष्णात व्यक्ति। ४ छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का प्रेमपूर्ण सम्बोधन।

मास्टरी—स्त्री० [अ० मास्टर+ई (प्रत्य०)] १ मास्टर अर्थात् अध्यापक का काम, पद या पेशा। २ किसी कला, हुनर आदि में निष्णात होने की अवस्था या भाव।

मास्तिष्क्य—वि० [सं० मस्तिष्क+ष्यञ्] मस्तिष्क-संबंधी। मस्तिष्क का। जैसे—मास्तिष्क्य चित्रण।

मास्य—वि० [सं० मास+यत्] महीने भर का। मासीन।

माह*—अव्य०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] में।

पुं० [सं० माष, प्रा० माह] उड़द।

†पु०=मास (महीना)।

†पु०=माघ (नामक महीना)।

माहत—स्त्री० [सं० महत्ता] महत्त्व। बड़ाई।

माहताब—पु० [फा०] १. चंद्रमा। २ चाँदनी।

†स्त्री०=माहताबी।

माहताबी—स्त्री० [फा०] १ एक तरह की आतिशबाजी। २ चाँदनी रात का मजा लेने के लिए बैठने के लिए बनाया हुआ चबूतरा। ३. तरबूज। ४. चकोतरा। ५ एक तरह का कपड़ा।

वि० माहताब अर्थात् चन्द्रमा की चाँदनी में बनाया या तैयार किया हुआ। जैसे—माहताबी गुलकन्द।

माहना†—अ०=उमाहना (उमड़ना)।

माहर—पु० [सं० माहिर=इंद्र] इंद्रयान।

पद—माहर का फल=ऐसा पदार्थ जो देखने में तो सुंदर हो, पर दुर्गुणों से भरा हो।

†वि०=माहिर (जानकर)।

माहरा†—सर्व०=हमारा। (राज०)

माहली—पुं० [हिं० महल] १. महल अर्थात् अन्तःपुर में काम करनेवाला सेवक। २. महली। खोजा। ३ नौकर। सेवक।

माहव†—पु०=माधव।

माहवार—अव्य०[फा०] प्रतिमास। हर महीने।

पु० हर महीने मिलनेवाला वेतन। मासिक वेतन।

वि० हर महीने होनेवाला। मासिक।

माहवारी—वि० [फा०] मासिक।

*स्त्री० स्त्रियों का मासिक-धर्म।

माहाँ—अव्य०=महँ (बीच)।

माहाकुल—वि० [सं० महाकुल+अञ्] ऊँचे घराने में उत्पन्न। महाकुल।

माहाकुलीन—वि० [सं० महाकुल+खञ्—ईन] बहुत बड़ा कुलीन।

माहाजनीन—वि० [सं० महाजन+खञ्—ईन, वृद्धि] १ जो महाजनों के लिए उपयुक्त हो। २ महाजनों की तरह का।

माहात्मिक—वि० [सं० महात्मन्+ठक्—इक] १. महात्मा-सम्बन्धी। महात्मा का। २ जिसकी विशेष महत्ता हो। महात्मा से युक्त।

माहात्म्य—पु० [सं० महात्मन्+ष्यञ्] १ महत् होने की अवस्था या भाव। गौरव। महिमा। २. आदर-सम्मान। ३ धार्मिक क्षेत्र में किसी पवित्र या पुण्य-कार्य से अथवा किसी स्थान के महत्त्व का वर्णन। जैसे—एकादशी माहात्म्य, काशी माहात्म्य।

माहाना—वि० [फा०] माहवार। मासिक।

माहि—अव्य० [सं० मध्य; प्रा० मज्झ] अन्दर। भीतर। में। (अधिकरण कारक का चिह्न)

माहित—पु० [सं० महित+अण्] महित ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

माहित्य—पु० [सं० महित+यञ्] महित ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

माहियत—स्त्री० [अ० माहीयात] १ भीतरी और वास्तविक तत्त्व। २. प्रकृति। ३ विवरण।

माहिया—पु० [पं०] १ प्रियतम। प्रिय। २ एक प्रकार का प्रसिद्ध पंजाबी गेयपद जो तीन चरणों का होता है और जिसमें मुख्यतः करुण और शृंगार रस की प्रधानता होती है और विरह-दशा का मार्मिक वर्णन होता है।

माहियाना—वि० [फा० माहियान] प्रतिमास होनेवाला। मासिक। माहवारी।
पु० मासिक वेतन।
माहिर—पु० [स०√मह्+इरन् वा०] इन्द्र।
वि० [अ०] किसी बात या विषय का पूर्ण ज्ञाता। अच्छा जानकार।
माहिला†—पु० [स० मध्य] अन्तर। फरक।
वि० [स्त्री० माहिली] १ मध्य या बीच का। मँझला। २ अदर का। आन्तरिक।
†पु०=माँझी।
माहिले†—अव्य० [हिं० माहिं] अदर। भीतर।
माहिष—वि० [स० महिषी+अण्] भैस सम्बन्धी या भैस का (दूध आदि)।
माहिष-वल्लरी—स्त्री० [स० उपमि० स०] काला विधारा। कृष्ण वृद्धदारक।
माहिष-वल्ली—स्त्री० [स० उपमि० स०] छिरहटी।
माहिषिक—पु० [स० महिषी+ठक्—इक, वृद्धि] १. व्यभिचारिणी स्त्री का पति। २ भैंस के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति।
माहिष्मती—स्त्री० [स०] वर्तमान मध्य प्रदेश मे स्थित एक बहुत पुरानी नगरी जिसे माधाता के पुत्र मुचकुद ने बसाया था।
माहिष्य—पु० [स० महिषी+ष्यञ्, वृद्धि] स्मृतियो के अनुसार एक सकर जाति।
माहीं—अव्य०=माँहिं।
माही—स्त्री० [स० माहेय] एक नदी जो खभात की खाडी मे गिरती है।
स्त्री० [फा०] मछली।
पद—माही-गीर, माही-पुश्त, माही-मरातिब।
माही-गीर—पु० [फा०] मछली पकडनेवाला। मछुवा।
माही-पुश्त—वि० [फा०] जो मछली की पीठ की तरह उभरा हुआ और किनारे-किनारे ढालुआँ हो।
पु० एक प्रकार का कारचोबी का काम जो बीच मे उभरा हुआ और दोनो ओर से ढालुआँ होता है।
माही-मरातिब—पु० [फा०] मुगल बादशाहो के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झडे जिन पर अलग-अलग मछली, सातो ग्रहों आदि की आकृतियाँ कारचोबी की बनी होती थी।
माहुति†—स्त्री० [स० माघ-घटा] माघ महीने की घटा या बादल।
माहुर—पु० [स० मधुर, प्रा० महुर=विष] विष।
पद—माहुर की गाँठ=(क) बहुत ही जहरीली और खराब चीज। (ख) बहुत ही दुष्ट हृदय का व्यक्ति।
माहुरी—स्त्री० [स० माधुरी ?] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
माहूँ—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का छोटा कीडा जो राई, सरसों, मूली आदि की फसल मे उनके डठलो पर फलने के समय या उसके पहले अडे दे देता है। २ कनसलाई नाम का कीडा।
माहेंद्र—वि० [स० महेन्द्र+अण्] १ महेन्द्र-सबधी। महेन्द्र का। २ जिसका देवता महेन्द्र हो।
पु० १ ज्योतिष मे, वार के अनुसार भिन्न-भिन्न दडो मे पड़नेवाला एक योग जिसमे यात्रा करने का विधान है। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३ सुश्रुत के अनुसार एक देवग्रह जिसके आक्रमण करने से ग्रहग्रस्त पुरुष मे माहात्म्य, शौर्य, शास्त्र-बुद्धिता आदि गुण एकाएक आ जाते हैं। ४ जैनियों के एक देवता जो कल्पभव नामक वैमानिक देवगण मे हैं। ५ जैनों के अनुसार चौथे स्वर्ग का नाम।
माहेंद्री—स्त्री० [स० महेन्द्र+ङीप्] १ महेन्द्र अर्थात् इन्द्र की शक्ति। २ इन्द्र की पत्नी। ३ इन्द्रासन। ४ गाय। गौ। ५. सात मातृकाओ मे से एक।
माहेय—वि० [स० मही+ढक्, ढ्—एय्] मिट्टी का बना हुआ।
पु० १ मूँगा नामक रत्न। विद्रुम। २ मंगल ग्रह। ३. नरकासुर।
माहेयी—स्त्री० [स० माहेय+ङीप्] १ गाय। गौ। २ माही नाम की नदी।
माहेल—पु० [स० महेल+अण्] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।
माहेश—वि० [स० महेश+अण्] महेश का।
माहेशी—स्त्री० [स० माहेश+ङीप्] दुर्गा।
माहेश्वर—वि० [स० महेश्वर+अण् वृद्धि] महेश्वर-सबधी। महेश्वर का।
पु० १ एक प्रसिद्ध शैव सम्प्रदाय। २ एक प्रकार का यज्ञ। ३. एक उप-पुराण का नाम। ४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ५ पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिन्हे प्रत्याहार कहते है और जिन्हे पाणिनि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों का प्रमुख आधार बनाया है।
माहेश्वरी—स्त्री० [स० माहेश्वर+ङीप्] १ दुर्गा। २ एक मातृका का नाम। ३ एक प्राचीन नदी। ४ एक प्रसिद्ध पीठ या तीर्थ-स्थान।
पु० वैश्यो की एक जाति।
माहो—पु०=माहूँ (कीडा)।
मिंगनी†—स्त्री०=मेंगनी।
मिंगी†—स्त्री०=मींगी (गिरी)।
मिंट—पु० [अ०] टकसाल।
†पु०=मिनट।
मिंट-हाउस—पु० [अ०] टकसाल।
मिंडाई—स्त्री० [हिं० मीडना] १ मिंडने या मीडने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मीडने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ देशी छीटो की छपाई मे एक क्रिया जो कपडे को छापने के उपरात और धोने से पहले होती है।
मिंहदी—स्त्री०=मेहदी।
मित*—पु०=मित्र।
मिंबर—पु० [अ०] मसजिद मे वह स्थान जहाँ इमाम बैठकर नमाजियो को नमाज पढवाता है।
†पु०=मेम्बर।
मिआद—स्त्री०=मीआद।
मिआदी†—वि०=मीआदी।
मिआन†—पु०, वि०=मियाना।
†स्त्री०=म्यान।
मिकदार—स्त्री० [अ० मिक्दार] १. मात्रा। २ तौल।
मिकना—पु० [अ० मिक्ना] एक प्रकार की महीन ओढ़नी या चादर।

मिकनातीस—पुं० [अ० मिक्नातीस] [वि० मिकनातीसी=चुंबकीय] चुंबक पत्थर।
मिकराज—स्त्री० [अ० मिक्राज] कतरनी। कैंची।
मिकराजी—पुं० [अ०] वह तीर जिसके फल में दो गाँसियाँ होती हैं।
मिकाडो—पुं० [जा०] जापान के सम्राटों की उपाधि।
मिग†—पुं०=मृग।
मिचकना—अ० [हिं० मिचना] (आँखों या पलकों का) बार-बार खुलना या उठना और बंद होना या गिरना। मिचना।
मिचकाना—स० [हिं० मिचना] बार-बार (आँखें या पलकें) खोलना या उठाना और बंद करना या गिराना।
मिचकी—स्त्री० [हिं० मिचकना] १. आँखें मिचकने या मिचकाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ आँखें मिचकाकर किया जानेवाला संकेत। आँख का इशारा।
स्त्री० [?] १. छलाँग। उछाल। २. झूले की पेंग। उदा०—कर छोड़ शरीर तोल के हम लेंटी मिचकी किलोल के।—मैथिलीशरण।
मिचना—अ० [हिं० मींचना का अक० रूप] (आँखों का) बंद होना। मींचा जाना।
मिचराना—अ० [मिचर, चावने के शब्द से अनु०] बिना भूख के खाना। जबरदस्ती खाना।
मिचलाना—अ० [हिं० मथना, मतलाना] मतली आना। कै आने को होना।
मिचली—स्त्री० [हिं० मिचलाना] जी मिचलाने की क्रिया या भाव। शरीर की ऐसी अवस्था जिसमें कै करने की इच्छा या प्रवृत्ति हो।
मिचवाना—स० [हिं० मीचना का प्रे० रूप] मीचने का काम दूसरे से कराना। किसी को मीचने में प्रवृत्त करना।
मिचौंहाँ—वि० [हिं० मिचना] मिचने या मीचनेवाला। बंद होनेवाला।
मिचौनी (ली)—स्त्री० [हिं० मीचना] १. मीचने या मूँदने की क्रिया या भाव। जैसे—आँख-मिचौनी। २ दे० 'आँख-मिचौली'।
मिचौना—स०=मीचना।
मिछा†—वि०=मिथ्या।
मिजराब—स्त्री० [अ०] सितार बजाने का एक तरह का छल्ला। नाखुना।
मिजवानी†—स्त्री०=मेजबानी।
मिजाज—पुं० [अ० मिज़ाज] १. तासीर। किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। मूल प्रकृति। २ प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव। जैसे—उनका मिजाज बहुत सख्त है। ३ मन या शरीर की स्वाभाविक स्थिति। तबीयत। दिल।
मुहा०—मिजाज खराब होना=(क) मन में किसी प्रकार की अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। (ख) कुछ अस्वस्थ होना। (**किसी का मिजाज पाना**=(क) किसी के स्वभाव से परिचित होना। (ख) किसी को अपने अनुकूल या अनुरक्त स्थिति में देखना। **मिजाज पूछना**=(क) तबीयत का हाल पूछना। (ख) अच्छी तरह दंड देना या बदला चुकाना। (व्यंग्य) **मिजाज बिगड़ना**=(क) शरीर अस्वस्थ-सा जान पड़ना। (ख) मन में क्रोध या रोष उत्पन्न होना। **मिजाज का आना**=ध्यान में आना। समझ में आना। जैसे—अगर आपके मिजाज में आवे तो आप भी वहाँ चलिए। **मिजाज सीधा होना**=अनुकूल या प्रसन्न होना। तबीयत ठिकाने होना।
४. अभिमान। घमंड।
पद—मिजाजदार।
मुहा०—मिजाज करना या दिखाना=(क) क्रोध या गुस्से में आना। (ख) अभिमान या घमंड करना या दिखाना। **मिजाज न मिलना**=घमंड के कारण सीधी तरह से बात न करना। जैसे—आज-कल तो उनका मिजाज ही नहीं मिलता।
मिजाज अली—अव्य० [अ० मिजाजे अली] आप प्रसन्न और स्वस्थ तो हैं? (भेंट होने पर प्रश्नवाचक पद की तरह प्रयुक्त।)
मिजाजदार—वि० [अ० मिजाज+फा० दार (प्रत्य०)] घमंडी। अभिमानी।
मिजाजदारी—स्त्री० [अ०+फा०] मिजाजदार होने की अवस्था या भाव।
मिजाज-पीटा—वि० [अ० मिज़ाज+हिं० पीटना] [स्त्री० मिज़ाज-पीटी] अभिमानी।
मिजाज-पुरसी—स्त्री० [अ० मिजाज+फा० पुर्सी] किसी का कुशल-मंगल या हाल-चाल पूछना।
मिज़ाज-शरीफ—अव्य० [अ० मिजाजे शरीफ]=मिजाज अली।
मिजाजी—वि० [अ० मिज़ाज+ई (प्रत्य०)] बहुत अधिक मिजाज अर्थात् अभिमान करने या रखनेवाला। घमंडी।
मिज़ाजी—वि० स्त्री० [हिं० मिजाज+ई (प्रत्य०)] अभिमानी। घमंडी।
मिजान—स्त्री०=मीजान (जोड़)।
मिजालू†—पुं०=मज्जा।
मिटका†—पुं० [स्त्री० अल्पा० मिटकी] मटका।
मिटना—अ० [सं० मृष्ट; प्रा० मिट्ट] १. अंकित चिह्न, लिखित लेख आदि पर का रंग, स्याही आदि का इस प्रकार पोंछा जाना कि वह चिह्न या लेख ठीक तरह से दिखाई न दे या पढ़ा न जा सके। जैसे—इस पत्र के कई अक्षर मिट गये है। २ नष्ट हो जाना। न रह जाना। ३ बुरी तरह से खराब, चौपट या बरबाद होना। जैसे—इस आपस की लड़ाई में दोनों घर मिट गये।
मुहा०—किसी के लिए मर मिटना=बुरी तरह से चौपट या बरबाद होना। जैसे—वह अपने भाई को बचाने के लिए मर मिटा।
मिटाना—स० [हिं० मिटना का सक० रूप०] ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई मिटे। (देखें 'मिटना')
मिट्टी—स्त्री० [सं० मृत्तिका; प्रा० मिट्टिआ] १ प्रायः सभी जगह जमीन के ऊपरी भाग में पाया जानेवाला वह भुरभुरा और मुलायम तत्त्व जिसमें पेड़-पौधे उगते हैं, जिस पर जीव-जंतु चलते हैं और जिससे बहुत प्राचीन काल से तरह-तरह के बरतन आदि बनाये जाते है। जैसे—जो मिट्टी से बना है, वह अंत में मिट्टी होकर रहेगा।
विशेष—मिट्टी और जल के योग से ही संसार की अधिकतम वस्तुएँ बनती हैं, इसी आधार पर इससे संबद्ध बहुत से पद और मुहावरे बने हैं।
पद—मिट्टी का पुतला=(क) मानव शरीर। (ख) बहुत ही अकर्मण्य और निकम्मा व्यक्ति। **मिट्टी की सूरत**=मनुष्य का शरीर। मानव देह।

मिट्टी के माधव=निरा मूर्ख और अयोग्य। **मिट्टी के मोल**=बहुत सस्ता। जैसे—उन्होंने अपना सब सामान मिट्टी के मोल बेच दिया।

मुहा०—मिट्टी अजीज होना=मिट्टी खराब होना। बरबाद होना। **विशेष**—मूलतः मिट्टी 'अजीज होना' का अर्थ है—मेरी यह मिट्टी या शरीर ईश्वर को प्रिय हो जाय अर्थात् वह मुझे इस संसार से उठा ले। पर आगे चलकर यह 'मिट्टी खराब होना' के अर्थ में चल पड़ा।

मुहा०—(कोई चीज) मिट्टी करना=नष्ट करना। चौपट करना। जैसे—उसने बना-बनाया घर मिट्टी कर दिया। **मिट्टी छूते ही सोना होना**=इतना अधिक भाग्यवान् होना कि सामान्य-सी बातों में ही बहुत अधिक लाभ प्राप्त कर सके। **(किसी बात पर) मिट्टी डालना**=(क) किसी बात को जाने देना। ध्यान न देते हुए छोड़ देना। (ख) परदा डालना। छिपाना या दबाना। **(किसी को) मिट्टी देना**=(क) मुसलमानों में किसी के मरने पर उसके प्रति स्नेह या श्रद्धा प्रकट करने के लिए उसकी कब्र में तीन-तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। (ख) मृत शरीर को कब्र में गाड़ना। **मिट्टी पकड़ना**=पौधे, बीज आदि का जमीन में अच्छी तरह जम जाना। **मिट्टी में मिलना**=(क) नष्ट या बरबाद होना। (ख) मर जाना। **मिट्टी होना**=(क) चौपट या बरबाद होना। (ख) बहुत गंदा या मैला होना। (ग) मर जाना।

२ किसी विशिष्ट प्रकार या रूप-रंग का अथवा किसी विशिष्ट स्थान में पाया जानेवाला उक्त पदार्थ। जैसे—पीली मिट्टी, बलुआ मिट्टी, मुलतानी मिट्टी आदि।

पद—चीनी मिट्टी। (देखें)

३. जीव, जंतु या मनुष्य का शरीर जो मूलतः मिट्टी या पृथ्वी नामक तत्त्व का बना हुआ माना जाता है।

मुहा०—(किसी की) मिट्टी खराब, पलीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना। खराबी करना।

४ स्थायित्व या स्थिरता के विचार से, शरीर की गठन और बनावट। जैसे—(क) उसकी मिट्टी अच्छी है, पचास बरस का हो जाने पर भी वह अभी ४० से अधिक का नहीं जान पड़ता। (ख) जिसकी मिट्टी ठस नहीं होती, वह जवानी में ही बुड्ढा लगने लगता है। ५ मृत शरीर। लाश। शव।

मुहा०—मिट्टी ठिकाने लगना=शव की उचित अंत्येष्टि क्रिया या संस्कार होना।

६ किसी चीज को जलाकर तैयार की हुई राख। भस्म। जैसे—पारे की मिट्टी। ७ चंदन का तेल या ऐसी ही और कोई चीज जो कोई इत्र बनाने के समय आधार रूप में काम आती है। जमीन। जैसे—अगर मिट्टी अच्छी होती तो यह इत्र बहुत बढ़िया होता।

मिट्टी का तेल—पु० [हिं०] एक प्रसिद्ध तरल खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार आग, दीया आदि जलाने के लिए होता है।

मिट्टी का फूल—पु० [हिं० मिट्टी+फूल] रेह।

मिट्टी खराबी—स्त्री० [हिं०] १ बरबादी। विनाश। २ दुर्गति। दुर्दशा।

मिट्टी खरिया—स्त्री०=खड़िया।

मिट्ठा—वि०, पु०=मीठा।

मिट्ठी—स्त्री० [हिं० मीठा] चुंबन। चूमा।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

मिट्ठू—वि० [हिं० मीठा+ऊ (प्रत्य०)] १. मीठी बातें बोलनेवाला। मिष्ट-भाषी। २. प्राय. कम बोलने और चुप रहनेवाला।

पुं० तोता। सुग्गा।

†पु०=मिट्ठी।

मिट्ठो—स्त्री०=मिट्ठी।

मिठ—वि० [हिं० मीठा] 'मीठा' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० के आरम्भ में लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—मिठलोना, मिठबोला।

मिठ-बोलना†—वि०=मिठबोला।

मिठ-बोला—वि० [हिं० मीठा+बोलना] १ मीठी बातें करनेवाला। मधुरभाषी। २ जो ऊपर से मीठी बातें करता हो परन्तु मन में कपट रखता हो।

मिठरी†—स्त्री०=मठरी (मिट्ठी)।

मिठ-लोना—वि० [हिं० मीठा=कम+लोन=लोन] [स्त्री० मिठ-लोनी] (खाद्य पदार्थ) जिसमें नमक बहुत ही कम हो। कम नमकवाला। जैसे—मिठलोनी तरकारी।

मिठाई—स्त्री० [हिं० मीठा+आई (प्रत्य०)] १ मीठे होने की अवस्था या भाव। मिठास। माधुरी। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की बनाई हुई खाने की मीठी चीजें। जैसे—(क) पेड़ा, बरफी, लड्डू आदि। (ख) खोए या छेने की मिठाई। ३ कोई अच्छी और प्रिय चीज या बात। जैसे—वहाँ तुम्हारे लिए क्या मिठाई रखी है जो दौड़-दौड़ कर वहीं जाते हो।

मिठाना—अ० [हिं० मीठा+आना (प्रत्य०)] मीठा होना।

स० मीठा करना।

मिठास—स्त्री० [हिं० मीठा+आस (प्रत्य०)] मीठे होने की अवस्था, धर्म या भाव। मीठापन।

मिठौरी—स्त्री० [हिं० मीठा+बरी] एक तरह की बरी।

मिड़ाई—स्त्री०=मिडाई।

मिडिल—पु० [अं०] १ वह बिंदु, वस्तु या स्थान जो दो विशिष्ट छोरों के बीच में हो। मध्य। २ आधुनिक शिक्षा-क्रम में प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा के बीच के दरजे। साधारणतया ५ से ८ तक के दरजों का समाहार।

मिडिलची—पु० [हिं० मिडिल+ची (प्रत्य०)] वह जिसने मिडिल परीक्षा तो पास की हो परन्तु उसके आगे न पढ़ा हो। (उपेक्षा और व्यंग्य)

मिणधर—पु०=मणिधर (मणिधारी सर्प)।

मितंग—पुं०=मतंग (हाथी)।

मित—वि० [सं०√मा+क्त] १. नपा-तुला। २. सीमित। परिमित। ३ जितना चाहिए उतना ही, उससे अधिक नहीं। ४ कम। थोड़ा। जैसे—मित-भाषी। ५ फेंका हुआ। क्षिप्त।

मितद्रु—पुं० [सं० मित√द्रु (गति)+कु] समुद्र।

मित-भाषिणी—वि० [सं० मित√भाष् (बोलना)+णिनि+ङीप्] संगीत में काफी ठाठ की एक रागिनी।

मितभाषी (षिन्)—वि० [सं० मित√भाष्+णिनि] [स्त्री० मितभा-षिणी] अपेक्षया कम तथा आवश्यकतानुसार बोलनेवाला। 'बकवादी' का विपर्याय।

मित-मति—वि० पु० [सं० ब० स०] अल्प-बुद्धि।

मित-विक्रय—पु० [सं० ष० त०] तौल या नाप कर पदार्थ बेचना। (कौ०)

मित-व्यय—वि० [ब० स०] [भाव० मितव्ययता] कम खरच करनेवाला अथवा आवश्यकता से अधिक खरच न करनेवाला। मितव्ययी।

पुं० १. जितना चाहिए, उतना ही खर्च करना, अधिक न करना। २. थोड़े खरच में काम चलाना।

मितव्ययता—स्त्री० [सं० मितव्यय+तल्+टाप्] मितव्यय होने की अवस्था या भाव। कम-खरची।

मितव्ययी—वि० [सं० मितव्यय] कम या थोड़ा खरच करनेवाला। किफायत करनेवाला।

मिताई†—स्त्री० [हिं० मीत+आई (प्रत्य०)] मित्रता। दोस्ती।

मिताक्षर—वि० [सं० मित-अक्षर, ब० स०] संक्षिप्त। लघु।

मिताक्षरा—स्त्री० [सं० मिताक्षर+टाप्] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।

मितार्थ—पु०=मितार्थक।

मितार्थक—पु० [सं० मित-अर्थ, ब०स०,+कप्] साहित्य में तीन प्रकार के दूतों में से एक प्रकार का दूत। ऐसा दूत जो थोड़ी बातें करके ही अपना काम निकाल लेता हो।

मिताशन—पु० [सं० मित-अशन, कर्म० स०] १ कम या थोड़ा भोजन करना। २ अल्पाहार।

मिताशी (शिन्)—वि० [सं० मित√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० मिताशिनी] अल्प आहार करनेवाला।

मिताहार—पु० [सं० मित-आहार, कर्म० स०] परिमित या थोड़ा भोजन करना। कम खाना।

वि० [ब० स०]=मिताहारी।

मिताहारी (रिन्)—वि० [सं० मिताहार+इनि] थोड़ा और परिमित भोजन करनेवाला। कम खानेवाला।

मिति—स्त्री० [सं०√मा (मान)+क्तिन्] १ नाप-जोख या उससे निकलनेवाला फल। परिणाम। मान। २ नापने-जोखने की क्रिया या प्रणाली। जैसे—अम्ल मिति, क्षार मिति। (ज्यामिति) ३ सीमा। हद। ४. नियम, मर्यादा आदि का बंधन। उदा०—कोउ न रहत मिति मानि।—सूर।

† स्त्री०=मिती।

मिती—स्त्री० [सं० मिति] १. चान्द्र मास के किसी पक्ष अथवा सौर मास की तिथि या तारीख।

मुहा०—मिती चढ़ाना=बही-खाते में किसी दिन का हिसाब लिखने से पहले ऊपर मिती लिखना। (महाजन) **मिती-पूजना**=हुंडी के भुगतान का नियत समय पूरा होना। जैसे—इस हुंडी की मिती पूजे दो दिन हो गए, पर रुपया नहीं आया।

२ दिन। दिवस। जैसे—चार मिती का ब्याज अभी आपकी ओर निकलता है। ३ वह तिथि जब तक का ब्याज देना हो। जैसे—इस हुंडी की मिती में अभी चार दिन बाकी हैं। (महाजन)

मुहा०—मिती काटना=हिसाब में जितने दिनों का सूद देय या प्राप्य न हो, उतने दिनों का ब्याज काटना या बाद करना।

मिती काटा—पु० [हिं० मिती+काटना] १ हुंडी की मिती पूजने से पहले रुपया चुकाने पर अवधि के शेष दिनों का ब्याज काटने की क्रिया। (महाजन) २ ब्याज या सूद लगाने की वह भारतीय महाजनी प्रणाली जिसमें प्रत्येक रकम का सूद उसकी अलग, अलग मिती से एक साथ जोड़ा जाता है।

मित्तर—पु० [सं० मित्र] १ मित्र। दोस्त। २. लड़कों के खेल में वह लड़का जो सब का अगुआ होता है।

मित्र—पु० [सं० √मि+क्त्र] [भाव० मित्रता] १ वह प्राणी जिससे अधिक मेल-जोल हो और जो समय कुसमय पर साथ देता और सहायता करता हो। सखा। सुहृद्। दोस्त। २ भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध वैदिक देवता। ३ बारह आदित्यों में से पहला आदित्य। ४ सूर्य। ५ युद्ध में साथ देनेवाला राष्ट्र।

मित्रकृत्—पु० [सं० मित्र√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] पुराणानुसार बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्र-घात—पु० [सं० ष० त०] १ मित्र की हत्या। २ मित्र के साथ किया जानेवाला धोखा।

मित्रघ्न—वि० [सं० मित्र√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] जिसने अपने मित्र को दगा दिया हो। फलत विश्वासघाती।

मित्रता—स्त्री० [सं० मित्र+तल्+टाप्] मित्र होने की अवस्था, धर्म या भाव। दोस्ती।

मित्रत्व—पु० [सं० मित्र+त्व] मित्रता। दोस्ती।

मित्रदेव—पु० [सं०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ बारह आदित्यों में से एक।

मित्र-पंचक—पु० [सं० ष० त०] घी, शहद, घुंघची, सुहागा और गुगुल, इन पाँचों का समाहार। (वैद्यक)

मित्र-प्रकृति—पु० [सं० ब० स०] विजेता के चारों ओर रहनेवाले मित्र, राष्ट्र या राजा। (कौ०)

मित्र-भाव—पु० [सं० ष० त०] मित्रता का भाव। दोस्ती।

मित्र-भेद—पु० [सं० ष० त०] मित्रता टूटना।

मित्र-रंजनी—स्त्री० [सं० ष० त०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मित्रवन—पुं० [सं०] पंजाब के मुलतान नामक नगर का प्राचीन नाम।

मित्रवान् (वत्)—वि० [सं० मित्र+मतुप्, वत्व] [स्त्री० मित्रवती] जिसका कोई मित्र हो। मित्रवाला।

पु० १ मनु के एक पुत्र का नाम। २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

मित्रविंद—पु० [सं० मित्र√विद् (लाभ करना)+श, नुम्] अग्नि।

मित्रविंदा—स्त्री० [सं० मित्रविंद+टाप्] श्रीकृष्ण की एक पत्नी। (पुराण)

मित्र-विक्षिप्त—वि० [सं० स० त०] मित्र राजा के देश में पड़ी हुई (सेना)। (कौ०)

मित्रविद्—पु० [सं० मित्र√विद् (जानना)+क्विप्] गुप्तचर। जासूस।

मित्र-सप्तमी—स्त्री० [सं० ष० त०] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी।

मित्रसह—पु० [सं० मित्र√सह् (सहना)+अच्] कल्मापपाद राजा का एक नाम।

मित्रसेन—पु० [स०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३ एक बुद्ध का नाम।

मित्रा—स्त्री० [स० मित्र+टाप्] १ मित्र नामक वैदिक देवता की स्त्री का नाम। २ शत्रुघ्न की माता, सुमित्रा।

मित्राई†—स्त्री०=मित्रता।

मित्राक्षर—पु० [स० मित्र-अक्षर, ब०स०] वह छद जिसके दोनो चरणो की तुक मिलती हो।

मित्रावरुण—पु० [स० द्व० स०, आ-आदेश] मित्र और वरुण नामक वैदिक देवता।

मित्रिमा—स्त्री० दे० 'मापाक'।

मित्री—स्त्री० [स० मित्र+ङीप्] सुमित्रा।

मिथि—पु० [स० मिथ्+इन्] राजा जनक।

मिथिल—पु० [स०√मथ्+इलच्, अ—इ नि०] राजा जनक।

मिथिला—स्त्री० [स० मिथिल+टाप्] १ वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम। राजा जनक इसी प्रदेश के थे। २. उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी। जनकपुरी।

मिथु—वि० [स०√मिथ्+उण्] मिथ्या। झूठा।
अव्य० झूठ-मूठ।

मिथुन—पु० [स०√मिथ्+उनन्,] १ स्त्री और पुरुष का युग्म। नर और मादा का जोडा। २ सयोग। समागम। मैथुन। ३ बारह राशियों मे से तीसरी राशि।

मिथुनचर—पु०[स० मिथुन√चर् (चलना)+ट, अलुक् स०] चक्रवाक। चकवा पक्षी।

मिथुनत्व—पु० [स० मिथुन+त्व] मिथुन होने की अवस्था, धर्म या भाव।

मिथुनीकरण—पु० [स० मिथुन+च्वि, इत्व, दीर्घ√कृ (करना)+ल्युट्—अन] नर-मादा को इकट्ठा करना। जोडा खिलाना या मिलाना।

मिथुनीभाव—पु० [स० मिथुन+च्वि, इत्व, दीर्घ,√भू (होना)+अण्] मैथुन। सभोग।

मिथ्या—वि० [स०√मथ् (मथन करना) +क्यप्, नि० सिद्धि] १ जो अस्तित्व मे न हो, पर फिर भी जिसका अज्ञानवश या भ्रमवश बोध होता हो। २ असत्य। झूठा। ३ कृत्रिम। बनावटी। ४ निराधार। जैसे—मिथ्या आग्रह। ५ कपट-पूर्ण। ६ नियम या नीति के विरुद्ध। जैसे—मिथ्या आचरण।

मिथ्याचार—पु० [स० मिथ्या-आचार, ब० स०] १ ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे सत्यता न हो। कपटपूर्ण आचरण। २ उक्त प्रकार का आचरण करनेवाला व्यक्ति।

मिथ्यात्व—पु० [स० मिथ्या+त्व] १ मिथ्या होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. माया।

मिथ्या दृष्टि—स्त्री० [स० कर्म० स०] नास्तिकता।
पु० नास्तिक।

मिथ्याध्यवसिति—स्त्री० [स० मिथ्या-अध्यवसिति, कर्म० स०] साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे किसी कल्पित या मिथ्या बात को आधार बनाकर कोई और मिथ्या बात कही जाती है।

मिथ्या-निरसन—पु० [स० कर्म० स०] शपथपूर्वक सच्ची बात अग्राह्य करना या न मानना।

मिथ्या-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०]=छायापुरुष।

मिथ्या-मति—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ धोखा। २ गलती।

मिथ्या-योग—पु० [स० कर्म० स०] चरक के अनुसार वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। जैसे—मल, मूत्र आदि को रोकना।

मिथ्या-वाद—पु० [स० प० त०] झूठ बोलना।

मिथ्या-वादी (दिन्)—वि० [स० मिथ्या√वद् (बोलना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० मिथ्यावादिनी] असत्यवादी। झूठा।

मिथ्याहार—पु० [स० मिथ्या-आहार, कर्म० स०] ऐसी चीजे साथ-साथ खाना जिनकी प्रकृति परस्पर भिन्न या विरुद्ध हो। जैसे—मछली या मांस के साथ दूध पीना।

मिन—अव्य० [अ०] से।
पद—मिन जानिब=ओर से। तरफ से।

मिनकी*—स्त्री० [हिं० मिनकना] बिल्ली।

मिनजालिक†—पु० [अ० मिजल=कुछ रखने की जगह] हिसाब-किताब मे, खरच का विभाग या मद। उदा०—माविक जमा हुतो जो जोरी, मिनजालिक तल ल्यायौ।—सूर।
विशेष—यह अरबी मिनजुमला से भी व्युत्पन्न हो सकता है, और इस दशा मे इसका अर्थ सख्याओ का जोड या योग होगा।

मिन जुम्ला—अव्य० [अ० मिन जुम्ल] कुल मिलाकर। सब मिलाकर।

मिनट—पु० [अ०] काल-गणना मे एक घटे का साठवाँ भाग। साठ सेकंड का समय।

मिनड़ी†—स्त्री० मिनकी (बिल्ली)।

मिनती—स्त्री० [अनु० मक्खी के शब्द से] मक्खी की बोली के समान कुछ धीमा, नाक से निकला हुआ स्वर।
† स्त्री०=विनती।

मिनना†—स० [स० मान=परिमाण] आयति, विस्तार आदि जानने के लिए नापना या तौलना। (पश्चिम) उदा०—गजाँ न मिनी औ, तोलि न तुलीऔ, पाचु न सेर अढाई।—कबीर।

मिनमिन—अव्य० [अनु०] अस्पष्ट तथा धीमे स्वर मे।

मिनमिना—वि० [हिं० मिन मिन] १ मिनमिनाने अर्थात् अस्पष्ट स्वर मे तथा बहुत धीरे-धीरे बोलनेवाला। २ जरा-सी बात पर कुढने या चिढनेवाला। ३ बहुत धीरे-धीरे काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

मिनमिनाना—अ० [अनु०] १ मिन मिन करना अर्थात् अस्पष्ट तथा धीमे स्वर मे बोलना। २ नाक से स्वर निकालते हुए बोलना। नकियाना। ३ अपेक्षया बहुत धीरे-धीरे काम करना।

मिनहा—वि० [अ०] [भाव० मिनहाई] कम किया, घटाया या निकाला हुआ।

मिनहाई—स्त्री० [अ०] मिनहा करने की क्रिया या भाव। घटाना, कम करना या निकालना।

मिनारा†—पु० =मीनार।

मिनिट†—पु०=मिनट।

मिनिस्टर—पु० [अ०] १. मत्री। सचिव। २ आज-कल राज्य का मत्री। ३ राजदूत। ४ ईसाई धर्मोपदेशक। पादरी।

गोल दाने के रूप मे फल लगते है। २. उक्त फली अथवा उसके बीज जो आकार मे चिपटे तथा स्वाद मे तिक्त होते हैं।

विशेष—इस पौधे और इसकी फलियो के अनेक अवातर भेद हैं, जिनमे लाल मिर्च और काली मिर्च दो प्रसिद्ध भेद है।

मुहा०—**मिर्चें लगना**=किसी की तीखी बातें सुनने पर बहुत बुरा लगना और क्रोध या झुझलाहट होना। जैसे—मेरी सच बात सुनते ही उन्हे मिर्चें लग गई।

३. काली मिर्च या गोल मिर्च जो छोटे दानो के रूप मे होती है और जिसका व्यवहार मसाले के रूप मे होता है। देखे 'काली मिर्च'।

वि० बहुत ही कटु, उग्र या तीक्ष्ण स्वभाववाला (व्यक्ति)।

मिर्री—पु०=मीर (विजयी)।

मिल—स्त्री० [अ०] १ वह बहुत बडी मशीन जिसमे बड़े पैमाने पर चीजें बनाई अथवा तैयार की जाती हैं। जैसे—कपडे की मिल, चीनी की मिल। २ वह स्थान जहाँ पर उक्त प्रकार की मशीन बैठी हो। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो किसी मशीन की तरह लगातार तथा एक-रस काम करता चलता हो।

मिलक—स्त्री० [अ० मिल्क] १. जमीन-जायदाद। भू-सपत्ति। २. जागीर।

मिलकना—अ० [?] प्रज्वलित होना। जलना। उदा०—तब फिरि जरनि भई नख-सिख ते, दिया-बाति जनु मिलकी।—सूर।

†स०=जलाना।

मिलकियत—स्त्री०=मिल्कियत।

मिलकी—स्त्री० [हि० मिलक+ई (प्रत्य०)] १ जमीदार। २ धनवान्। अमीर।

मिलगत—स्त्री० [हि० मिलना+गत (प्रत्य०)] बचत या मुनाफे की रकम। आर्थिक प्राप्ति। जैसे—इस सौदे मे चार पैसे की मिलगत हो जायगी।

मिलन—पु० [स०√मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] १ मिलने की क्रिया या भाव। २ विशेषत दो बिछुडे हुए अथवा लडते-झगडे तथा परस्पर न बोलनेवाले व्यक्तियो का होनेवाला मेल या मिलाप। ३ मिलावट। मिश्रण।

मिलनसार—वि० [हि० मिलन+सार (प्रत्य०)] [भाव० मिलनसारी] जिसकी प्रवृत्ति सबमे मिलते रहने तथा प्यार-मुहब्बत बनाये रखने की हो।

मिलनसारी—स्त्री० [हि० मिलनसार+ई (प्रत्य०)] मिलनसार होने की अवस्था या भाव।

मिलना—अ० [स० मिलन] १ पदार्थों का एक दूसरे मे पडकर इस प्रकार मिश्रित या सम्मिलित होना कि वे बहुत कुछ एकाकार हो जायँ और सहज मे एक दूसरे से अलग न किये जा सकें। जैसे—(क) दाल मे नमक या हल्दी मिलना। (ख) दूध मे चीनी या पानी मिलना। २. पदार्थों का आपस मे साधारण रूप से एक दूसरे मे इस प्रकार आकर पडना कि उनका स्वतत्र अस्तित्व बना रहे। जैसे—(क) गेहूँ के दानो मे चने या जौ के दाने मिलना। (ख) मोतियो मे हीरे मिलना।

पद—**मिला-जुला**=(क) आपस मे एक दूसरे के साथ अच्छी तरह मिश्रित या सम्मिलित। (ख) जिसमे कई पदार्थों का मिश्रण या मेल हो। जैसे—मिला-जुला अन्न। ३ किसी रेखा, बिंदु, सीमा आदि पर दो या कई चीजो का इस प्रकार आकर पहुँचना या स्थित होना कि वे एक दूसरी से लग या सट जायँ। जैसे—(क) गाँवो या देशो की सीमाएँ मिलना। (ख) चौराहे पर चारो ओर की सडकें मिलना। ४. प्राणियो, व्यक्तियो आदि के सम्बन्ध मे, किसी प्रकार या रूप मे भेंट, साक्षात्कार या सामना होना। जैसे—(क) जगल मे घूमने के समय शेर मिलना। (ख) रास्ते मे किसी परिचित या मित्र का मिलना। ५ किसी पदार्थ का किसी रूप मे आगे या सामने आना। जैसे—रास्ते मे झरना, नदी या पहाड मिलना, जानवर मिलना। ६ व्यक्तियो का इस प्रकार आमने-सामने या पास होना कि आपस मे बात-चीत हो सके। जैसे—कल फिर हम लोग यही मिलेगे। ७ किसी प्रकार का अभीष्ट अथवा सुखद लाभ या सिद्धि होना। जैसे—(क) दवा से आराम मिलना। (ख) किसी स्थान पर रहने से सुख मिलना। ८ छान-बीन करने या ढूँढने पर किसी चीज, तत्त्व या बात का ज्ञान अथवा परिचय होना। जैसे—(क) अनुसधान करने पर कोई नई दवा, द्रव्य या धातु मिलना। (ख) सोचने पर नई तरकीब या रास्ता मिलना। ९ किसी चीज या बात का किसी रूप मे प्राप्त या हस्तगत होना। जैसे—(क) कही से अनुमति, आदेश, रुपए या समाचार मिलना। (ख) खोई हुई अँगूठी या कलम मिलना। (ग) अदालत से सजा मिलना। १० व्यक्तियो का किसी अभिप्राय या उद्देश्य की सिद्धि के लिए आपस मे समझौता करके गुट या दल बनाना। जैसे—चोरो, डाकुओ या राजनीतिक दलो का आपस मे मिलना।

पद—**मिली-भगत**। (दे० स्वतन्त्र पद)

११. अपना दल या पक्ष छोडकर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी दूसरे दल या पक्ष की ओर होना। जैसे—(क) सदन के सदस्यो का विरोधी दल मे मिलना। (ख) घर के नौकर-चाकरो का चोरो से मिलना। १२ व्यक्तियो के अगो का एक दूसरे के सामने होना या एक दूसरे से सम्बद्ध अथवा सलग्न होना। जैसे—किसी से आँखे मिलाना। १३ दो या अधिक तत्त्वो या पदार्थों का अवस्था, गुण, रूप आदि के विचार से एक दूसरे के अनुरूप, तुल्य या समान होना। जैसे—एक दूसरे की आकृति, मत, विचार या स्वभाव मिलना।

पद—**मिलता-जुलता**=गुण, प्रकृति, रूप आदि के विचार से बहुत कुछ किसी दूसरे के समान अथवा आपस मे एक तरह का। जैसे—इसी से मिलता-जुलता कोई और कपडा लाओ।

१४ दो या अधिक तत्त्वो, पदार्थों आदि का इस प्रकार एक स्थान या स्थिति मे आना, पहुँचना या होना कि उनका पार्थक्य या भेद-भाव दूर हो जाय। जैसे—(क) सगम पर नदियो का मिलना। (ख) सन्ध्या के समय दिन और रात मिलना। (ग) विरोधी दलो का आपस मे मिलना। १५ कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो के सबध मे, ऐसी स्थिति मे आना या लाया जाना कि उनमे से ठीक तरह से और एक मेल मे स्वर निकल सकें और साथ के दूसरे बाजो के स्वरो के अनुरूप हो सके। बाजो का अधिक उतरा या चढा न रहना, बल्कि समस्थिति मे आना या होना। जैसे—(क) पखावज या सितार मिलना। (ख) तबले से सारगी मिलना।

†स०[?] गौ, भैंस आदि का दूध दूहना।

ऐसी धूर्ततापूर्ण चाल जो ऊपर से देखने पर बहुत-कुछ निर्दोष या साधारण जान पड़े। जैसे—यात्रियों को ठगने के लिए दलालों या पंडों की मिली-भगत।

मिलेठी—स्त्री०=मुलेठी।

मिलोना—स०[हिं० मिलाना] १. गौ का दूध दूहना। २. मिश्रित करना। मिलाना।

पु० एक प्रकार की बढ़िया जमीन जिसमें कुछ बालू भी मिला रहता है।

मिलौनी—स्त्री० [हिं० मिलाना+औनी (प्रत्य०)] १. मिलाने की क्रिया या भाव। मिलाई। २ मिलावट। ३ मिलने-मिलाने आदि के समय दिया जानेवाला धन। ४ आज-कल विशिष्ट रूप से, जेल के कैदियों को उनके सम्बन्धियों, परिचितों आदि से भेंट कराने की क्रिया या भाव।

मिल्क—पु० [अ०] १. जमींदारी। २ माफी। मिली हुई जमीन या जागीर। ३. मध्य युग में जमीन पर होनेवाला एक विशिष्ट प्रकार का स्वामित्व। ४. धन-संपत्ति। ५ अधिकार।

मिल्कियत—स्त्री० [अ०] १ मिल्क की अवस्था या भाव। २. किसी चीज के मालिक होने की अवस्था या भाव। स्वामित्व। जैसे—इस जमीन पर हमारी मिल्कियत है। ३. जमींदारी। ४. जागीर। ५. धन-संपत्ति। ६ कोई ऐसी चीज जिस पर किसी का स्वामित्व-पूर्ण भोग हो।

मिल्की—पु०=मिलकी।

मिल्लत—स्त्री० [हिं० मिलन+त (प्रत्य०)] १ मेल-जोल या मेल-मिलाप होने की अवस्था या भाव। २ मिलन-सारी। ३ कोई धार्मिक वर्ग या संप्रदाय। जैसे—बड़े नगरों में आपको हर मिल्लत के आदमी मिलेंगे।

मिशन—पु० [अ०] १ उद्देश्य। २ कुछ लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि, किसी प्रकार के सेवा-कार्य या विशिष्ट महत्त्वपूर्ण विषय की बात-चीत करके कोई नया सम्बन्ध स्थापित करने के लिए दूसरे देश या स्थान में भेजा जाता हो। ३ वह संस्था, विशेषत ईसाइयों की संस्था जो संघटित रूप से धर्म-प्रचार का प्रयत्न करती हो।

मिशनरी—पु०[अ०] १ वह जो किसी दूसरी जगह या दूसरे देश में केवल लोक-सेवा के भाव से जाता या जाकर रहता हो। २ वे ईसाई पादरी आदि जो किसी मिशन के सदस्य के रूप में अनेक देशों में धर्म का प्रचार करने के लिए जाते हैं। ३ उक्त प्रकार का कोई पादरी।

मिशी—स्त्री०[स० मिश+ङीप्] १. जटामाँसी। २ सोआ नामक साग। ३. सौंफ। ४ मेथी। ५ डाभ।

मिश्र—वि०[स०√मिश्र् (मिलाना)+रक्] १ जो अनेक के योग से मिलकर एक हो गया हो। कइयों को मिलाकर एक किया या बनाया हुआ। जैसे—मिश्र धातु। २ मिला हुआ। संयुक्त। ३ जिसने अनेक अंगों, तत्त्वों, प्रक्रियाओं आदि के योग से एक नया और स्वतन्त्र रूप धारण कर लिया हो। जैसे—मिश्र अनुपात, मिश्र गुणन, मिश्र वाक्य आदि। ४ बड़ा और मान्य। श्रेष्ठ।

पु०१ कुछ विशिष्ट वर्गीय ब्राह्मणों (जैसे—कान्यकुब्ज, सरयूपारी, सारस्वत आदि) की एक विशिष्ट शाखा का अल्ल या जाति-नाम। २ साहित्य में इतिवृत्त के मूल के विचार से नाटकों की कथा-वस्तु के तीन भेदों में से एक। ऐसी कथा-वस्तु जिसमें इतिवृत्त की पीठिका या पृष्ठभूमि तो प्रख्यात या लोक-विदित हो, परन्तु उसके साथ अनेक उत्पाद्य या कल्पित कथाएँ अथवा घटनाएँ भी मिला दी गई हों। (अन्य दो भेद 'उत्पाद्य' और 'प्रख्यात' कहलाते हैं।) ३. ज्योतिष में सात प्रकार के गणों में से अंतिम या सातवाँ गण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के योग में, होता है। ४ व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक, जिसमें मुख्य उपवाक्य तो एक ही होता है, परन्तु आश्रित उपवाक्य एक से अधिक होते हैं। ५ हाथियों की चार जातियों में से एक जाति। ६ सन्निपात रोग। ७ खून। रक्त। ८ मूली।

पु०=मिस्र (देश)।

मिश्रक—वि०[स० मिश्र+कन्] मिश्रण करने या मिलानेवाला।

पुं० १ खारी नमक। २ जस्ता। ३ मूली। ४. नन्दन वन। ५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग।

मिश्रक-स्नेह—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार का औषध जो त्रिफला, दशमूल और दंती की जड़ आदि से बनता है। (वैद्यक)

मिश्रज—वि० [स० मिश्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ जो किसी प्रकार के मिश्रण से उत्पन्न हुआ हो। २ वह जो दो भिन्न-भिन्न जातियों के मिश्रण या मेल से बना या उत्पन्न हो। वर्ण-संकर। दोगला।

पु० खच्चर।

मिश्रण—पु० [स०√मिश्र्+ल्युट्—अन] १ दो या अधिक चीजों को आपस में मिलाना। मिश्रित करना। २ उक्त को मिलाने से तैयार होने या बननेवाला पदार्थ या रूप। ३ मिलावट। ४. गणित में, संख्याओं का जोड़ लगाने की क्रिया। ५ रसायन विज्ञान में, द्रव, ठोस या गैस रूप में होनेवाले किसी पदार्थ को किसी दूसरे द्रव, ठोस या गैस रूप में होनेवाले पदार्थ में मिलाना। ६ उक्त के मिलाये जाने पर तैयार होनेवाला पदार्थ विशेषत तरल पदार्थ। घोल। (सेल्यूशन, उक्त दोनों अर्थों में) ७ वह तरल औषध जो कई ओषधियों के मेल से बना हो। (मिक्सचर)

मिश्रणीय—वि० [स०√मिश्र्+अनीयर्] जो मिश्रण के योग्य हो; अथवा जिसका मिश्रण होने को हो।

मिश्रता—स्त्री० [स० मिश्र+तल+टाप्] मिश्रण या मिश्रित होने की अवस्था या भाव।

मिश्र-धातु—पु० [कर्म० स०] वह धातु जो दो या अधिक धातुओं के मिश्रण से बनी हो। (एलॉय) जैसे—पीतल।

मिश्र-धान्य—पु० [स० कर्म० स०] एक में मिलाए हुए कई प्रकार के अनाज या धान्य।

मिश्र-पुष्पा—स्त्री० [स०ब० स०,+टाप्] मेथी।

मिश्र वर्ण—पु० [स० ब० स०] १ काला अगर। २ गन्ना।

वि० दो या दो से अधिक रंगोंवाला।

मिश्र-वाक्य—पु० [स० कर्म० स०] व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक जिसमें एक मुख्य उपवाक्य होता है और दो या दो से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

मिश्र-शब्द—पु० [स० ब० स०] खच्चर।

मिश्रित—भू० कृ० [स०√मिश्र्+क्त] १ एक में मिला या मिलाया हुआ। २ मिलावटवाला (पदार्थ)।

२. दफ्तरी खाने मे, पुस्तक की सिलाई से पहले फरमों का क्रमानुसार लगाया हुआ रूप ।
क्रि० प्र०—उठाना । —लगाना ।

मिसिली—वि० [हिं० मिसिल+ई (प्रत्य०)] १ जिसके सबंध मे अदालत मे कोई मिसिल बन चुकी हो। २. जिसे न्यायालय से सजा मिल चुकी हो। जैसे—मिसिली चोर या डाकू।

मिसी—स्त्री० [फा०] मिस्सी ।(दे०)

मिस्कला—पुं० [अ० मिस्कल] तलवारें चमकाने का एक तरह का लोहे का यंत्र।

मिस्की—स्त्री० [?] संगीत मे गाने का वह ढग या प्रकार जिसमे गानेवाला अपने पूरे कंठ-स्वर से या खुलकर नही बल्कि बहुत ही कोमल और धीमे कंठ-स्वर मे गाता है। (क्रून)

मिस्कीन—वि०=मिसकीन।

मिस्कीनी—स्त्री०=मिसकीनी।

मिस्कोट—पु० [अ० मेस=भोज] १ भोजन । २ एक साथ बैठकर खाने-पीने वालो का समूह । ३. आपस मे होनेवाला गुप्त परामर्श ।

मिस्टर—पु० [अ०] महाशय। (नाम के पहले प्रयुक्त) जैसे—मिस्टर जिन्ना। इसका संक्षिप्त रूप मि० ही अधिक प्रचलित है।

मिस्तर—पु० [हिं० मिस्तरी ?] १ इमारत मे गच पीटने का पिटना नामक उपकरण। २ दफ्ती का वह टुकडा जिस पर समानांतर पर डोरे लपेट या सी लेते हैं और जिनकी सहायता से कागज पर सीधी लकीरें खीची जाती हैं ।
पु०=मेहतर ।

मिस्तरी—पु० [अ० मास्टर=उस्ताद] वह चतुर कारीगर जो इमारत, धातु या लकडी का काम करता हो अथवा यंत्रो आदि की मरम्मत करता हो।

मिस्तरीखाना—पु० [हिं० मिस्तरी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ बढई, लोहार आदि बैठकर काम करते हैं।

मिस्ता—पु० [देश०] १ अनाज दाँने के लिए तैयार की हुई भूमि। २ बंजर जमीन।

मिस्मिरेजिम—पु०=मेस्मरेजिम।

मिस्र—पु० [अ०] अफ्रीका महादेश के उत्तर का एक प्रसिद्ध देश जो किसी समय बहुत अधिक उन्नत तथा सभ्य था। आजकल यह संयुक्त अरब गणराज्य के अन्तर्गत है।
पु०=मिश्र।

मिस्रा—पु०=मिसरा ।

मिस्री—वि० [फा० मिस्र] मिस्र देश का ।

मिस्ल—वि० [अ०] समान। तुल्य। जैसे—यह घोडा मिस्ल तीर के जाता है ।
स्त्री० दे० 'मिसिल' ।

मिस्सा—पु० [हिं० मिसना=मिलना या मीसना=मलना] १ मूँग, मोठ आदि का भूसा जो भेडो और ऊँटो के लिए अच्छा समझा जाता है। २ कई तरह की दाले एक साथ पीसकर तैयार किया हुआ आटा जिसकी रोटी बनती है।
पद—मिस्सा कुस्सा=मोटा अन्न।

मिस्सी—स्त्री० [फा० मिसी] १ माजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जानेवाला एक तरह का मंजन जिससे स्त्रियाँ अपने दाँत और होठ रँगती हैं ।
क्रि० प्र०—मलना ।—लगाना ।
मुहा०—मिस्सी काजल करना=स्त्रियो का बनाव-सिंगार करना । २. मुसलमान वेश्याओ की एक रस्म जिसमे किसी कुमारी वेश्या को पहले-पहले समागम कराने के लिए उसे मिस्सी लगाते हैं। नथिया उतरने या सिर-ढकाई की रसम। उदा०—हमको आशिक लबो दन्दो का समझकर उसने रुक्का भेजा है कि हमारी मिस्सी।—कोई शायर।

मिह—वि० [फा०] महान् ।

मिहचना—स०=मीचना ।

मिहतर—पुं०=मेहतर ।

मिहदार—पु० [फा० मिह=मिहनत+ दार (प्रत्य०)] वह मजदूर जिसे नकद मजदूरी दी जाती हो। (रुहेल०)

मिहनत†—स्त्री०=मेहनत ।

मिहना—पु०=मेहना ।
स०=महना (मथना) ।

मिहमान†—पु०=मेहमान ।

मिहर—स्त्री०=मेहर ।
पु०=मिहिर ।

मिहरबान—पु०=मेहरबान ।

मिहरा†—पुं० १. =मेहरा । २ =महरा ।

मिहराब—स्त्री०=मेहराब ।

मिहरारू—स्त्री०=मेहरारू (स्त्री) ।

मिहरी†—स्त्री०=मेहरी (स्त्री) ।

मिहाना—अ० [स० हिमायन या हिं० मेह] वर्षा ऋतु मे पकवानो का नमी के कारण मुलायम पड जाना और फलत कुरकुरा न रह जाना।

मिहानी†—स्त्री०=मथानी।

मिहिका—स्त्री० [स०√मिह् (सीचना)+क्वुन्—अक,+टाप्, इत्व] १. पाला। हिम। २ ओस। ३. कपूर।

मिहिचना† —स०='मीचना' ।

मिहिर—पु० [स०√मिह्+किरच्] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३ ताँबा। ४. बादल। मेघ। ५. वायु। हवा। ६ चन्द्रमा । ७. राजा। ८ दे० 'वराह-मिहिर' ।
वि० बुड्ढा । वृद्ध।

मिहीं—वि०=महीन।

मिही—स्त्री० [देश०] मध्य-प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का अरहर।

मिहीन—वि०=महीन ।

मीं†—पु०=मेह (वर्षा) । (पश्चिम)

मींगनी†—स्त्री०=मेंगनी ।

मींगी—स्त्री० [स० मुद्ग=दाल] बीज के अंदर का गूदा ।

मींजना—स० [हिं० मीडना] १ मलना । मसलना । जैसे—छाती मीजना, हाथ मीजना ।
† स०=मूँदना ।

मींजू—वि० [हिं० मीजना] बहुत मीज-मीजकर अर्थात् कठिनता से धन निकालनेवाला । कंजूस। कृपण।

मींट†—स्त्री० [हिं० मीटना=बद करना] नीद की झपकी। (राज०) उदा०—जागिया मीट जनारदन।—प्रिथीराज।

मींड़—स्त्री० [भ० मीड्म्] १ मीडने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ सगीत मे एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अश ऐसी सुन्दरता से कहना कि दोनो स्वरो के बीच का सबध स्पष्ट हो जाय।

मींडक†—पु०=मेढक।

मींडना—स० [हिं० माँटना] १. मलना। मसलना। २. गूँधना। जैसे—आटा मीडना।

मीआद—स्त्री० [अ०] १ किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। अवधि। २ कैद की सजा की अवधि।

क्रि० प्र०—काटना।—भुगतना।

मीआदी—वि० [हिं० मीआद+ई (प्रत्य०)] १ जिसके लिए कोई मीआद या समय नियत हो। नियत समय तक रहनेवाला। जैसे—मीआदी बुखार, मीआदी हुडी। २ जो मीआद अर्थात् कैद की सजा भोग चुका हो।

मीआदी बुखार—पु० [अ० मीआदी+बुखार] सान्निपातिक ज्वर जो प्रायः ७, १४, २१, २८ या ४१ दिनो तक रहता है। (टाइफॉयड)

मीआदी हुडी—स्त्री० [अ०+हिं०] वह हुडी जिसका भुगतान नियत मिती पूजने पर होता है।

मीच*—स्त्री० [स० मीति] मृत्यु। मौत।

मीचना—स० [प्रा० मिचण] बद करना। जैसे—आँखे या मुँह मीचना।

मीचु†—स्त्री०=मृत्यु।

मीजना†—स० =मीजना।

मीजा—स्त्री० [अ० मिज़ाज] १ पारस्परिक व्यवहार मे स्वभाव आदि की अनुकूलता।

मुहा०—(किसी से) मीजा पटना या मिलना=स्वभाव मिलने के कारण मेल-जोल होना।

२. राय। सम्मति। ३ सहमति। स्वीकृति।

मीजान—स्त्री० [अ० मीजान] १ तुला। तराजू। २ तुला राशि। ३ गणित मे कई अको, सख्याओं आदि का जोड। योग।

† स्त्री० =मीजा।

मीटना—अ०=मीचना।

मीटर—पु० [अ०] १ वह यत्र जिसमे प्रयुक्त होनेवाली वस्तु, शक्ति आदि का मान जाना जाता हो। मापक। जैसे—कल के पानी या बिजली का मीटर। २ वह यत्र जिससे किसी कार्य, गति आदि का मान या सख्या जानी जाती हो। मापका। जैसे—मोटर गाडी का मीटर जिससे पता चलता है कि मोटर कितनी दूर चली। ३. दाशमिक प्रणाली मे दूरी या लबाई नापने की एक आधारिक इकाई जो ३९ ३७ इच के बराबर होती है।

मीटिंग—स्त्री० [अ०] १ गोष्ठी, समिति आदि की बैठक। २ सभा, समिति आदि का अधिवेशन।

मीठा—वि० [स० मिष्ट, प्रा० मिट्ठ] [स्त्री० मीठी] १ चीनी, शहद आदि की तरह के स्वादवाला। मधुर। जैसे—मीठा आम, मीठी नारगी, मीठा पुलाव। २ अच्छे स्वादवाला। स्वादिष्ट। ३ अनुकूल और प्रिय। जैसे—मीठी नजर, मीठी नीद। उदा०—मीठा मीठा गप, कडुआ कडुआ थू। (कहा०) ४. धीमा। मद। जैसे—मीठी चाल, मीठा ज्वर, मीठा दरद। ५. अल्प। कम। थोडा। जैसे—दाल मे नमक मीठा ही रहे। ६ मामूली। साधारण। ७ किसी की तुलना मे घटकर या हल्का। ८. (व्यक्ति) जिसका स्वभाव कोमल हो और जो प्रिय व्यवहार करता हो। ९. (व्यक्ति) जिसमें पुसत्व बहुत ही कम हो या बिलकुल न हो। १०. (व्यक्ति) जो गुदा-भजन कराता हो। ११ बहुत अधिक सीधा तथा प्राय सबके साथ सद्व्यवहार करनेवाला। सुशील और सौम्य। जैसे—इतने मीठे न बनो कि लोग चट कर जायँ। १२ (खेत) जिसकी मिट्टी भुर-भुरी हो।

पु० १. मिठाई। २. गुड। ३. हलुआ। ४. किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ की स्थिति।

मुहा०—मीठा होना=अपने पक्ष मे कुछ भलाई होना। जैसे—हमे ऐसा क्या मीठा है, जो हम उनके घर जायँ।

५ एक प्रकार का कपडा, जो प्राय मुसलमान पहनते थे। शीरीबाफ। ६ दे० 'मीठा नीबू'। ७ दे० 'मीठा तेलिया'।

मीठा अमृतफल—पु० [हिं० मीठा+अमृतफल] मीठा चकोतरा।

मीठा आलू—पु० [हिं० मीठा+आलू] शकरकद।

मीठा इंद्रजौ—पु० [हिं० मीठा+इद्रजौ] काला कुटज।

मीठा कद्दू—पु० [हिं० मीठा+कद्दू] कुम्हडा।

मीठा गोखरू—पु० [हिं० मीठा+गोखरु] छोटा गोखरू।

मीठा जहर—पु० [हिं० मीठा+अ० जहर] वत्सनाभ। बछनाग विष।

मीठा जीरा—पु० [हिं० मीठा+जीरा] १. काला जीरा। २ सौंफ।

मीठा ठग—पु० [हिं० मीठा+ठग] ऐसा ठग या धूर्त जो मीठी मीठी बातें करके अपना दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करता हो।

मीठा तेल—पु० [हिं० मीठा+तेल] १ तिल का तेल। २ खसखस का तेल।

मीठा तेलिया—पु० [हिं० मीठा+तेलिया] वत्सनाभ। बछनाग।

मीठा नींबू—पु० [हिं० मीठा+नीबू] चकोतरा।

मीठा नीम—पु० [हिं० मीठा+नीम] नीम की तरह का एक छोटा वृक्ष।

मीठा पानी—पु० [हिं० मीठा+पानी] शरबत।

मीठा पोइया—पु० [हिं० मीठा+पोइया] घोडे की मध्यम चाल।

मीठा प्रमेह—पु० [हिं० मीठा+सं० प्रमेह] मधुमेह।

मीठा बरस—पु० दे० 'मीठा साल'।

मीठा भात—पु०=मीठे चावल।

मीठा विष—पु० [हिं० मीठा+स० विष] वत्सनाभ।

मीठा साल—पु० [हिं०] स्त्रियो के वय का अठारहवाँ और कुछ लोगो के मत से तेरहवाँ साल जो उनके लिए कष्टदायक और सकटात्मक समझा जाता है। मीठा बरस।

मीठी खरखोड़ी—स्त्री० [हिं० मीठी+खरखोडी] पीली जीवती। स्वर्ण जीवती।

मीठी छुरी—स्त्री० [हिं० मीठी+छुरी] ऐसा व्यक्ति जो मीठी बातें करके

या मित्र बनकर अन्दर ही अन्दर हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता हो। कपटी या कुटिल परन्तु ऊपर से बहुत अच्छा व्यवहार करनेवाला आदमी।

मीठी तूँबी—स्त्री० [हिं० मीठी+तूँबी] कद्दू।

मीठी दियार—स्त्री० [हिं० मीठा+दियार] महापीलू वृक्ष।

मीठी मार—स्त्री० [हिं० मीठी+मार] ऐसी मार जिससे अन्दर तो चोट लगे या पीडा हो, पर ऊपर से जिसका कोई चिह्न दिखाई न दे।

मीठी लकड़ी—स्त्री० [हिं० मीठी+लकडी] मुलेठी।

मीठे चावल—पु० [हिं० मीठा+चावल] वह भात जिसे पकाते समय चीनी या गुड भी मिला दिया गया हो।

मीड़ना† —स०=मीजना।

मीडना सींगी—स्त्री०=मेढासीगी।

मीढ़—वि० [स०√मिह् (सीचना)+क्त] १ पेशाब किया हुआ। मूता हुआ। २ पेशाब या मूत्र के समान।

मीत†—पु० [स० मित्र] मित्र। दोस्त।

मीतता* —स्त्री०=मित्रता।

मीता† —पु० [स० मित्र] १ परम प्रिय मित्र। २ मित्र के लिए सम्बोधन। ३. दे० 'नाम-रासी'।

मीन—पु० [स०√मी (हिंसा)+नक्, नि०] १ मछली। २ बारह राशियो मे से एक राशि जिसमे पूर्वा भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र है।

मीन-केतन—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

मीन-केतु—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

मीन-क्षेत्र—पु० [स० ष० त०] वह क्षेत्र जिसमे मुख्य रूप से मछलियाँ रखकर उनका पालन और सवर्धन किया जाता है।

मीन-गंधा—स्त्री० [म० ब० स० टाप्] सत्यवती का एक नाम। सत्यवती।

मीनघाती (तिन्)—पु० [स० मीन√हन् (मारना)+णिनि, ह्—घ्, न्—त्,] बगला।

वि० मछली मारनेवाला।

मीन-ध्वज—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

मीन-नाथ—पु० [स० ब० स० ?] योगी मत्स्येन्द्र नाथ का एक नाम।

मीन-नेत्रा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] गाडर दूब।

मीन-मेख—पु० [स० मीन-मेष] सोच-विचार। आगा-पीछा। असमजस।

मुहा०—मीन-मेख करना या निकालना=(क) बाधक होने के लिए इधर-उधर के तर्क करना। (ख) व्यर्थ की आलोचना करते हुए आपत्ति खडी करना।

मीनरंक—पु० [स० मीनरग, पृषो० सिद्धि] १ जलकौआ। २. मछरग (पक्षी)।

मीनरग—पु०=मीन-रक।

मीनर—पु० [स० मीन+र] सहोरा (वृक्ष)।

मीनाडी—स्त्री० [स०मीन-अड, ष० त०,+ङीप्] एक प्रकार की शक्कर।

मीना—स्त्री० [स० मीन+टाप्] ऊषा की कन्या जिसका विवाह कश्यप से हुआ था।

पु० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

पु० [फा०] १ रग-बिरगा शीशा। २ शीशे का एक विशिष्ट प्रकार का पात्र जो सुराही की तरह का होता था और जिसमे शराब रखी जाती थी। ३. नीले रग का एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। ४. सोने-चाँदी आदि पर किया जानेवाला एक प्रकार का रग-बिरगा काम जो कड़ा तथा चमकीला होता है।

पद—मीनाकार, मीनाकारी।

५ कीमिया।

मीनाकार—पु० [फा०] [भाव० मीनाकारी] सोने-चाँदी पर मीने का रग-बिरगा काम करनेवाला कारीगर।

मीनाकारी—स्त्री० [फा०] १ सोने या चाँदी पर होनेवाला मीने का रगीन काम। २ इस प्रकार किया हुआ काम। मीना। ३ किसी काम मे निकाली या की हुई बहुत बडी बारीकी।

मीनाक्ष—वि० [स०मीन-अक्षि, ब० स०,+षच्] [स्त्री०मीनाक्षी] जिसकी आँखें मछली की तरह लबोतरी तथा सुदर हो।

मीनाक्षी—स्त्री० [स० मीनाक्ष+ङीप्] १ कुबेर की कन्या का नाम। २ गाडर दूब। ३ ब्राह्मी बूटी। ४ चीनी।

वि० स्त्री० जिसकी आँखे मछली के आकार की और बहुत सुदर हो।

मीना बाजार—पु० [फा०] १ वह बाजार जिसमे केवल स्त्रियाँ क्रय-विक्रय करती थी। (अकबर द्वारा प्रचलित) २ सुदर चीजो का बाजार। ३ जौहरी बाजार।

मीनार—स्त्री० [अ० मनार] बहुत ऊँची वास्तु रचना जो स्तभ के रूप मे होती है। लाट।

मीनारा†—पु०=मीनार।

मीनालय—पु० [स० मीन-आलय, ष० त०] समुद्र।

मीनाशय—पु० [स० मीना-आशय, ष० त०] मीन-क्षेत्र।

मीमांसक—वि० [स०√मान् (विचार)+सन्, द्वित्वादि, इत्व, दीर्घ, +ण्वुल्—अक] मीमासा करनेवाला।

पु० [मीमांसा+वुन्—अक] १ पूर्व मीमासा के सूत्रकार जैमिनि ऋषि। २ मीमासा शास्त्र का ज्ञाता या पण्डित। ३ कुमारिल भट्ट। ४ शबर स्वामी। ५ रामानुज। ६ माधवाचार्य।

मीमांसन—पुं० [स०√मीमास्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० मीमासित] मीमासा करने की क्रिया या भाव।

मीमांसा—स्त्री० [स०] १ वह गभीर मनन और विचार जो किसी विषय के मूल तत्त्व या तत्त्वो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। किसी बात या विषय का ऐसा विवेचन जिसके द्वारा कोई निर्णय किया या परिणाम निकाला जाता हो। २ छ प्रसिद्ध भारतीय दर्शनो मे से एक दर्शन जो मूलत पूर्व मीमासा और उत्तर मीमासा नामक दो भागो मे विभक्त था।

विशेष—पूर्व मीमासा के कर्ता जैमिनि और उत्तर मीमासा के कर्ता बादरायण कहे जाते है। दोनो के विवेच्य विषय एक दूसरे से बहुत भिन्न है। पूर्व मीमासा मे मुख्यत वैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन है, इसी लिए इसे कर्ममीमासा भी कहते है। इसमे वेदो के यज्ञपरक सदिग्ध स्थलो का विचार करके उनका स्पष्टीकरण किया गया है। इसमे आत्मा, जगत्, ब्रह्म आदि का विवेचन नही है, और वेदो तथा उसके मत्रों को ही नित्य तथा सर्वस्व माना है, इसी लिए इसकी गणना अनीश्वरवादी

दर्शनों मे होती है। इसी लिए इसे कर्म मीमांसा भी कहते हैं। इसके विपरीत उत्तर मीमांसा मे ब्रह्म अथवा विश्वात्मा का विवेचन है, और इसी लिए यह वेदांत दर्शन कहलाता तथा पूर्व मीमांसा से भिन्न तथा स्वतंत्र दर्शन माना जाता है। आजकल 'मीमांसा' शब्द से 'पूर्व मीमांसा' ही अभिप्रेत होता है।

मीमांसित—भू० कृ० [सं०√ मीमांस्+क्त] जिसकी मीमांसा की गई हो या हुई हो।

मीमांस्य—वि० [सं०√मीमांस्+यत्] जिसकी मीमांसा करना आवश्यक या उचित हो।

मीयाद—स्त्री०=मीआद।

मीयादी—वि०=मीआदी।

मीर—पु० [सं०√मी (फेंकना)+रन्] १ समुद्र। २ पर्वत। पहाड़। ३ सीमा। हद। ४ जल। पानी।
पु० [फा० अमीर का लघु रूप] १ नेता। सरदार। २ किसी वर्ग का प्रधान या मुख्य व्यक्ति। ३ इस्लाम धर्म का आचार्य। ४ सैयदों की उपाधि। ५ विजेता। ६ बादशाह (ताश का)। ७ उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि।

मीर अर्ज—पु० [फा० मीर+अ० अर्ज़] मध्ययुग मे वह कर्मचारी जो लोगों की अर्जियाँ बादशाह तक पहुँचाता था।

मीर आतिश—पु० [फा०] मुगल शासन मे तोपखाने का प्रधान अधिकारी।

मीरजा—पु० [फा०] [स्त्री० मीरजादी] १ किसी मीर (अमीर या सरदार) का लड़का। २ मुगल बादशाहों की एक उपाधि। ३ सैयद मुसलमानों की एक उपाधि। ४ दे० 'मिर्ज़ा'।

मीरजाई—स्त्री० [फा०] १ मीरजा होने की अवस्था या भाव। २ मीरजा की उपाधि या पद। ३ अमीरों या शाहजादों का सा ऊँचा दिमाग, रहन-सहन और स्वभाव। ५ अभिमान। घमंड। ६ दे० 'मिरजई' (कुरती)।

मीर-तुजक—पु० [फा० मीर+तु० तुजुक] सेनापति।।

मीर-दहाँ—पु० [अ०+फा०] पुराने राज-दरबारो का वह चोबदार जो राजाओं, बादशाहों अथवा उनके सम्बन्धियों आदि के आने से पहले दरबारियों को इसलिए पुकार कर सूचना देता था कि वे आदर-सत्कार करने या उठ खड़े होने के लिए तैयार हो जायँ।

मीरदा—पु०[?]१ दक्षिण भारत मे रहनेवाले गड़ेरियों की एक जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

मीर-फर्श—पु०[फा०]१ वे पत्थर जो बड़े-बड़े फर्शों या बिछाई हुई चाँदनियों आदि के चारो कोनो पर इसलिए रखे जाते है कि हवा से वे उड़ने न पावें। २ ऐसा निकम्मा और सुस्त व्यक्ति जो एक जगह चुपचाप बैठा रहे, कुछ काम-धन्धा न करे। (व्यंग्य)

मीर-बख्शी—पु० [फा०] मुस्लिम शासन-काल मे वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी।

मीर-बहर—पु० [अ० मीर बह्र] जलसेना का प्रधान। नौ-सेनापति।

मीर-बार—पु०[फा०] मुसलमानी शासनकाल मे वह अधिकारी जो किसी को बादशाह के सामने उपस्थित होने की आज्ञा देता था।

मीर-भुचड़ी—पु० [फा० मीर+हि० भुचडी] एक कल्पित पीर जिसे हिजड़े पूजते तथा अपना गुरु मानते है। इसे पीर-भुचडी भी कहते है।

मीर-मंजिल—पु०[फा० मीर+अ० मंजिल] वह कर्मचारी जो सेना के पहुँचने से पहले पड़ाव पर पहुँचकर ठहरने आदि की सब प्रकार की व्यवस्था करता था।

मीर-मजलिस—पु०[अ०] मजलिस या सभा का प्रधान। सभापति।

मीर-महल्ला—पु०[फा० मीर+अ० महल्ला] मुहल्ले का मुखिया।

मीर-मुंशी—पु०[फा० मीर+अ० मुंशी] कार्यालय के मुंशियों के वर्ग का प्रधान।

मीर-शिकार—पु०[अ०] वह प्रधान कर्मचारी जो अमीरों या बादशाहों के शिकार की व्यवस्था करता था।

मीर-सामान—पुं० [अ० मीर+फा० सामाँ] खानसामाँ।

मीरास—स्त्री० [अ०] १. बाप-दादा से मिली हुई संपत्ति। बपौती। २ वंश-परम्परा के गुजारे के लिए किसी को दी जानेवाली जमीन।

मीरासी—पु०[अ० मीरास] [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान भाँड जो प्रायः पंजाब मे रहते हैं। इनकी स्त्रियां गाने-नाचने का पेशा करती हैं।

मीरी—स्त्री० [अ०] १. अमीर होने की अवस्था या भाव। २ मीर अर्थात् प्रतियोगिता मे विजेता होने की अवस्था या भाव।
पु० खेल या प्रतियोगिता मे मीर होनेवाला व्यक्ति। मीर।

मील—पु०[अ०] १७६० गज या आठ फरलाँग की दूरी।

मीलन—पु० [सं०√ मील् (बंद करना)+ल्युट्—अन] [वि० मीलनीय, भू० कृ० मीलित] १ बंद करना। मूँदना। जैसे—नेत्रमीलन। २ संकुचित करना। सिकोड़ना।

मील-पत्थर—पु०[हिं०]१ सड़कों के किनारे पर लगे हुए वे पत्थर जो किसी विशिष्ट स्थान से उस स्थान तक की दूरी मीलों मे बतलाते है। २. किसी घटना, जाति, राष्ट्र आदि के इतिहास मे वह बिंदु या स्थिति जहाँ कोई नई और विशिष्ट बात हुई हो। (माइल स्टोन)

मीलित—भू० कृ०[सं०√ मील्+क्त] १. बंद किया हुआ। २ सिकोड़ा हुआ।
पु० साहित्य मे एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब सादृश्य मे भेद नही गोचर होता।

मीवर—वि०[सं०√मी+ष्वरच्]१ पूज्य या मान्य। २ हिंसक। ३. हानिकारक।
पु० सेनापति।

मीवा—पुं०[सं० मी+वन्, मीवान्] १. पेट मे होनेवाला एक प्रकार का कीड़ा। २. वायु। हवा। ३ तत्त्व या सार-भाग।

मीसना—स०[सं० मिश्रण] १ मिश्रण करना। मिलाना। २ धीरे-धीरे दबाना और मसलना। जैसे—हाथ से फूल मीसना। ३ बहुत धीरे-धीरे या सुस्ती से काम करना। ४ क्रोध, दुःख आदि की कोई बात मन ही मन दबाकर रखना और प्रकट न होने देना।
वि०, पु०[स्त्री० मीसनी]१. जो क्रोध, दुःख आदि की बात मन ही मन दबाकर रखे, जल्दी प्रकट न होने दे। २ बहुत धीरे धीरे या मन्द गति से काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

मुँगना†—पु०=मुनगा (सहिजन)।

मुँगरा—पु०[सं० मुद्गर] [स्त्री० अल्पा० मुँगरी] लकड़ी की बनी बड़ी हथौड़ी। जैसे—घंटा बजाने का मुँगरा।

†पु०[?]नमकीन बुँदिया।

मुंगरी—स्त्री० मुंगरा का स्त्री० अल्पा०।

मुंगवन†—पुं०[स० मुद्ग] मोठ (कदन्न)।

मुंगा—स्त्री०[स०] एक देवी। (पुराण)

मुंगिया—वि०, पु०=मूँगिया।

मुंगौछी†—स्त्री० [हिं० मूंग + औछी (प्रत्य०)] मूंग की वरी।

मुंगौरी—स्त्री० [हिं० मूंग + वरी] मूंग की दाल की वनी हुई वरी।

मुंचना†—स०[सं० मुक्त] मुक्त करना। छोडना।

अ० मुक्त होना। छूटना।

मुंज—पु०[स०√ मुज् (साफ करना)+अच्] मुजातक। मूँज।

मुंजकेश—पु०[स० व० स०]१ शिव। २ विष्णु।

मुंजपृष्ठ—पु० [स० व० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन प्रदेश।

मुंज-मणि—स्त्री०[स० उपमि० स०] पुखराज।

मुंज-मेखला—स्त्री०[स० मध्य० स०] यज्ञोपवीत के समय पहनी जानेवाली मूँज की मेखला।

मुंजर—पुं०[स० √मुज्√अरन्] कमल की जड। कमल की नाल। मृणाल।

मुंजवान्(वत्)—पु०[स० मुज+मतुप्] १ एक तरह की सोमलता। (सुश्रुत) २. कैलास के पास का एक पर्वत।

मुंजातक—पु०[स० मुज√अत् (जाना)+अच्+कन्] १ मूंज। २ मुजरा नामक कन्द।

मुंजाद्रि—पु०[स० मुज्-अद्रि, मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत।

मुंजित—भू० कृ०[स० मुज्+इतच्] मूँज से वना, ढका या लपेटा हुआ।

मुंड—पु०[स० √मुड (काटना)+घञ्+अच्] १ सिर। २ कटा हुआ सिर।

पद—मुंड-माला।

३ एक दैत्य जो राजा वलि का मेनापति था। (पुराण) ४ राहु ग्रह। ५ नाई। हज्जाम। ६ वृक्ष का ठूँठ। ७ वोल नामक गन्धद्रव्य। ८ मडूर। ९ एक उपनिपद् का नाम। १०. गौओ का झुड।

वि० १ मूँडा या मुँडा हुआ। २ जिस पर वाल न हो। ३ अवम। नीच।

मुंडक—पु० [स० मुड+कन्] १ सिर। २ नाई। हज्जाम। ३ एक उपनिपद्।

वि० मुडन करने या मूंडनेवाला।

मुंडकरी—स्त्री० [हिं० मूंड+करी (प्रत्य०)] वह स्थिति जिसमे कोई घुटनो मे सिर रखकर वैठता है।

क्रि० प्र०—मारना।

मुंडकारी—स्त्री०=मुंडकरी।

मुंड-चिरा—वि०[हिं० मूंड+चिरना] जिसका सिर या ऊपरी भाग चिरा हुआ हो।

पु०=मुंड-चीरा।

मुंडचिरापन—पु० [हिं० मुडचिरा+पन (प्रत्य०)] मुडचिरा या मुंड-चीरा होने की अवस्था या भाव।

मुंड-चीरा—पु०[हिं० मूँड+चीरना]१ एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो भीख न मिलने पर वारदार या नुकीले हथियार से अपनी आँख, सिर या और कोई अग चीरकर उसमे से खून निकालने लगते है। २ ऐसा व्यक्ति जो वहुत ही घृणित तथा वीभत्स रूप से लड-झगडकर अपना काम निकालता हो। उदा०—लड-भिडकर जो काम चलावे, मुडचीरा है।—मैथिलीशरण। ३ वह जो लेन-देन मे वहुत अधिक हुज्जत करता हो।

मुंडन—पु०[स०√ मुड्(खड करना) +ल्युट्—अन]१ सिर के वाल उस्तरे से मूँडने की क्रिया। २ एक सस्कार जिसमे वालक के वाल पहली वार उस्तरे से मूँडे जाते है। ३ उक्त समय पर होनेवाला उत्सव या समारोह।

मुंडनक—पु०[स० मुडन+कन्] १ वोरो धान। २ वड का पेड।

वि० मुडन करनेवाला।

मुंडना—अ०[स० मुडन]१ सिर या किसी अग का मूँडा जाना। मुडन होना। २ वुरी तरह से ठगा या लूटा जाना। विशेपत आर्थिक हानि सहना।

सयो० क्रि०—जाना।

मुंड-फल—पु०[स० व० स०] नारियल।

मुंड-मंडली—स्त्री० [स० प० त०] १ अशिक्षित सेना। २ अशिक्षितों का दल।

मुंड-माल—पु०=मुडमाला।

मुंड-माला—स्त्री० [स० प० त०] १ काटे हुए सिरो की माला जो शिव या काली देवी के गले मे होती है। २ वगाल की एक नदी।

मुंडमालिनी—स्त्री० [स० मुडमालिन्+ङीप्] काली देवी।

मुंडमाली (लिन्)—पु० [स० मुडमाला+इनि] शिव।

मुंडा—वि० [स० मुडित] [स्त्री० मुडी] १ जिसके सिर पर वाल न हो। २ जिसका सिर मुँडा हुआ हो।

पु० १. वह जो सिर मुँडाकर किसी सावु या सन्यासी का शिष्य हो गया हो। २ ऐसा पशु जिसके सीग होने चाहिएँ, पर न हो। जैसे—मुडा वैल। ३ वह जिसके ऊपर या इधर-उधर फैलनेवाले अग न हो। जैसे—मुडा पेड। ४ वालक। लडका। (पश्चिम) ५ कोठीवाली महाजनी लिपि जिसके अक्षरो पर शीर्ष-रेखा तथा आगे-पीछे मात्राएँ नही होती। ६ एक प्रकार का देशी जूता जिसमे आगे की ओर नोक नही होती। ७ करॉकल से कुछ वडा एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर और गरदन काली तथा विना वालो की होती है। यह धान के खेतो मे मेढको की तलाश मे किसानो के हल के इतने पास पास चलता है कि वे परिहास मे इसे 'हर जोता' भी कहते है।

पु०[?] एक प्राचीन अनार्य जन-जाति जिसके वशज अव तक पलामू, राँची, हजारीवाग आदि स्थानो मे पाये जाते है।

स्त्री० भाषा-विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट अनार्य वोलियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत पजाव के उत्तरी भाग से न्यूजीलैंड और मडागास्कर द्वीप तक वोली जानेवाली कई वोलियाँ आती है। इनमे भारतीय क्षेत्र की उराँव, निपाद, शवर आदि वोलियाँ मुख्य है।

स्त्री० [स० मुड+टाप्] गोरखमुडी।

मुँड़ाई—स्त्री० [हिं० मूँडना+आई (प्रत्य०)] १. मूँडने या मुँडाने की क्रिया या भाव। २. मूँडने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मुँड़ाना—स० [हिं० मूँडना का प्रे०] मूँडने का काम दूसरे से कराना। मुडन कराना।

मुँड़ासा—पु० [हिं० मुड=सिर+आसा (प्रत्य०)] सिर पर बाँधने का साफा।

क्रि० प्र०—कसना।—बाँधना।

† स्त्री०=मुडा (महाजनी लिपि)।

मुँड़ासाबंद—पु० [हिं० मुँडासा+बद (प्रत्य०)] दस्तारबद।

मुँडा-हिरन—पु० [हिं० मुडा+हिरन] पाठी मृग।

मुँड़िआ†—वि० [हिं० मूँडना] जिसका सिर मूँडा हुआ हो।

पु० १ वह जो सिर मुँडाकर विरक्त, संन्यासी या साधु हो गया हो। २ करघे मे का एक हत्था जिससे राछ चलाते है।

मुँडिका—स्त्री० [स० मुडा+कन्, टाप्, ह्रस्व, इत्व] १. छोटा मुड। २ मुडी। सिर। ३ सख्या के विचार से व्यक्ति वाचक शब्द। जैसे—वहाँ चार मुडिकाएँ बैठी थी; अर्थात् चार आदमी बैठे थे।

मुँडित—पु० [स०√मुड्+क्त] लोहा।

भू० कृ० १. जिसका मुडन हुआ हो। २. जो मूँडा गया हो। जैसे—मुडित मस्तक।

मुँडितिका—स्त्री० [स० मुडित+कन्+टाप्, इत्व] गोरखमुडी।

मुँड़िया†—स्त्री०=मूँड (सिर)।

पु०=मुँडिआ।

मुँडी (डिन्)—पु० [स० मुड+इनि] १ वह जिसका मुडन हुआ हो। २ सन्यासी या साधु। ३ [√मुड्+णिच्+णिनि] नाई। नापित। हज्जाम।

स्त्री० [हिं० मुडा का स्त्री० [illegible]] १ वह स्त्री जिसका सिर मुँडा हो। २ विधवा (गाली [illegible] रूप मे)। ३. एक प्रकार की बिना नोकवाली जूती [illegible]

† स्त्री०=मूँडी (सिर)।

मुँडीरिका—स्त्री० [स०√मुड्+ईच्+कन्+टाप्, इत्व] गोरखमुडी।

मुँडेर—स्त्री० [हिं० मुडेरा] १ मुँडेरा। २ खेत की मेड।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

मुँडेरा—पु० [हिं० मूँड=सिर+एरा (प्रत्य०)] १. दीवार का वह ऊपरी भाग जो ऊपर की छत के चारों ओर कुछ उठा हुआ होता है। २. किसी प्रकार का बाँधा हुआ पुश्ता।

मुँडेरी—स्त्री०=मुँडेर।

मुँडो—स्त्री० [हिं० मुँडना=ओ (प्रत्य०)] १ वह स्त्री जिसका सिर मूँडा गया हो। २ विधवा। राँड। ३. स्त्रियो के लिए उपेक्षासूचक सम्बोधन जिसका प्रयोग प्राय: गाली के रूप मे होता है। जैसे—घर मे दिया न बाती, मुडो फिरे इतराती। (कहावत)

मुँढिया—स्त्री० [हिं० मोढा+इया (प्रत्य०)] बैठने का छोटा मोढा।

मुंतक़िल—वि० [अ०] १ जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया या हटाया गया हो। २ जो एक के अधिकार या स्वामित्व से निकलकर दूसरे के अधिकार या स्वामित्व मे चला गया हो। हस्तान्तरित। जैसे—जायदाद मुतकिल करना।

मुंतखिब—वि० [अ०] १ इतखाब किया हुआ। चुना या छाँटा हुआ। २ बढ़िया।

मुंतजिम—पु० [अ०] इन्तजाम या व्यवस्था करनेवाला। प्रबधक। व्यवस्थापक।

मुंतजिर—वि० [अ०] इतजार या प्रतीक्षा करनेवाला।

मुंतशिर—वि० [अ०] १. बिखरा हुआ। २ चिंतित। उद्विग्न। परेशान।

मुंतही—पु० [अ०] १ इतिहा या हद तक पहुँचनेवाला। २. पारगामी। पारगत। विद्वान्।

मुंया—पु० [स०] ज्योतिष मे नक्षत्रो का एक समूह जिसके प्रभाव मे कोई जन्म लेता है।

मुँदना—अ० [स० मुद्रण] १. बद होना। जैसे—आँख मुँदना। २ अन्त तक पहुँचना। समाप्त होना। जैसे—दिन मुँदना। ३ छेद आदि का बन्द होना।

सयो० क्रि०—जाना।

मुंदरज—वि० [अ०] १ दर्ज किया या लिखा हुआ। २. अन्तर्गत। सम्मिलित।

मुँदरा—पु० [हिं० मुँदरी] १ वह कुडल जो जोगी लोग कान मे पहनते है। २. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

मुँदरी—स्त्री० [स० मुद्रा] १ उँगली मे पहनने का सादा छल्ला। २ अँगूठी।

मुँदा†—पु०=मुँदरा।

मुंशियाना—वि० [अ० मुशी+हिं० इयाना (प्रत्य०)] मुशियों की तरह का।

मुंशी—पु० [अ०] १. लेख या निबंध आदि लिखनेवाला लेखक। २ किसी कार्यालय मे लिखने का काम करनेवाला लिपिक। ३ वह जो बहुत सुदर अक्षर विशेषत फारसी आदि के अक्षर लिखता हो।

मुंशीखाना—पु० [अ० मुशी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ मुशी लोग बैठकर काम करते हो। दफ्तर।

मुंशीगिरी—स्त्री० [अ० मुशी+फा० गिरी (प्रत्य०)] मुशी का काम या पद।

मुंसरिम—पु० [अ०] १. इतजाम अर्थात् व्यवस्था या प्रबध करनेवाला। प्रबधक। २ कचहरी का वह कर्मचारी जो किसी दफ्तर का प्रधान होता है।

मुंसरिमी—स्त्री० [अ०] मुसरिम का काम या पद।

मुंसलिक—वि० [अ०] साथ मे बाँधा या नत्थी किया हुआ।

मुंसिफ—वि० [अ०] इन्साफ अर्थात् न्याय करनेवाला।

पु० दीवानी विभाग का एक न्यायाधिकारी जो सब जज से छोटा होता है।

मुंसिफाना—वि० [अ० मुन्सिफाना] न्यायोचित। न्यायसगत।

मुंसिफी—स्त्री० [अ० मुसिफ+ई (प्रत्य०)] १. इन्साफ या न्याय करने का काम। २ मुसिफ का काम या पद। ३ मुसिफ की कचहरी।

मुँह—पु० [स० मुख] १. (क) प्राणियो मे आँखो और नाक के नीचे का वह अंग जो विवर के रूप मे होता है और जिसके अन्दर जीभ, तालू, दाँत, स्वर-यंत्र आदि तथा बाहर होंठ होते है। काटने-चबाने, खाने-पीने और बोलने या चिल्लाने-चीखनेवाला अग। (ख) मनुष्यो का

यही अग जो उनके बोलने-चालने या बातचीत करने और मन के भाव व्यक्त करने मे भी सहायक होता है। मुख।
विशेष—'मुंह' से सबध रखनेवाले अधिकतर पद और मुहावरे प्राय उक्त कार्यों के आधार पर ही बने है और उनमे औपचारिक या लाक्षणिक रूप से ही अर्थापदेश हुआ है।

(क) खान-पान आदि से संबद्ध

मुहा०—**मुंह खराब होना**=जबान या मुंह का स्वाद बिगड़ना। **मुंह चलना (या चलाना)**=खाने-पीने आदि की क्रिया सपन्न करना (या कराना)। जैसे—तुम्हारा मुंह तो हर समय चलता ही रहता है। **मुंह जहर होना**=बहुत कड़ुई चीज खाने के कारण बहुत अधिक कड़आपन मालूम होना। जैसे—मिरचों वाली तरकारी खाने से मुंह जहर हो गया। **मुंह जूठा करना**=बहुत ही अल्प मात्रा मे कुछ खा लेना। **(किसी चीज में) मुंह डालना या देना**=पशुओं आदि का कुछ खाने के लिए उसमे मुंह लगाना। जैसे—इस दूध मे बिल्ली ने मुंह डाला था। **मुंह-पेट चलना**=कै और दस्त की बीमारी होना। जैसे—इतना मत खाओ कि मुंह-पेट चलने लगे। **(किसी चीज पर) मुंह मारना**=पशुओं आदि का किसी चीज पर मुंह लगाना। **(किसी का) मुंह मीठा करना (या कराना)**=शुभ या प्रसन्नता की बात होने पर मिठाई खिलाना अथवा इसी उपलक्ष मे प्रसन्न करने के लिए कुछ धन देना। **मुंह में पड़ना**=खाया जाना। जैसे—सवेरे से एक दाना मुंह मे नही पडा। **(किसी चीज का) मुंह लगना**=(क) रुचिकर या स्वादिष्ट होने के कारण किसी खाद्य पदार्थ का अधिक उपयोग मे आना। जैसे—चीकू या सपाटू (महोगनी का फल) है तो जगली फल, पर अब वह बड़े आदमियों के मुंह लग गया है। (ख) रुचिकर होने के कारण प्रिय जान पड़ना। जैसे—अब तो इस कुएँ का पानी तुम्हारे मुंह लग गया है। **(किसी चीज में) मुंह लगना**=खाद्य पदार्थ के खाये जाने की क्रिया आरभ होना। जैसे—अब इन आमो मे तुम्हारा मुंह लग गया है, तब वह भला क्यों बचने लगे। **(कोई चीज) मुंह लगाना**=नाम मात्र के लिए या बहुत थोड़ा खाना। **(किसी का) मुंह लाल करना**=सत्कार के लिए पान आदि खिलाना। **मुंह सूखना**=गरमी की अधिकता के कारण मुंह मे जलन-सी होना। **(किसी के) मुंह से दूध की गंध (या बू) आना**=बहुत ही छोटी अवस्था का (किशोर या बालक) जान पड़ना या सिद्ध होना।
पद—**मुंह का कौर या निवाला**=किसी को आधिकारिक रूप से या और किसी प्रकार आगे चलकर मिल सकनेवाली चीज। जैसे—तुमने तो उसके मुंह का कौर छीन लिया। **आपके मुंह में घी शक्कर**=(किसी के मुंह से आशाजनक शुभ बात निकलने पर) ईश्वर करे आपकी बात ठीक निकले या पूरी उतरे।

(ख) बोल-चाल आदि से संबद्ध

मुहा०—**(किसी के) मुंह आना**=किसी के सामने होकर उद्दडतापूर्वक बातें करना। **(किसी के) मुंह की बात छीनना**=जो बात कोई कहना चाहता हो, वही बात उससे पहले आप ही कह देना। जैसे—तुमने हमारे मुंह की बात छीन ली। **(किसी का) मुंह कीलना**=दे० नीचे ('अपना या किसी का) मुंह बद करना'। **(अपना) मुंह खराब करना**=मुंह से गदी बात निकालना। **मुंह खुलना (या खोलना)**=बोलने का कार्य आरभ होना (या करना)। **मुंह खोलकर कहना**=दे० नीचे 'मुंह फाड़कर कहना'। **मुंह चलना या चलाना**=मुंह से अविनयपूर्ण या बढ़-बढ़कर बातें निकलना (या निकालना)। जैसे—अब तो बड़े-बूढ़ों के सामने भी तुम्हारा मुंह चलने लगा। **(किसी के) मुंह चढ़ना या मुंह पर आना**=किसी बड़े के सामने होकर उद्दडतापूर्वक बोलना या उसकी बात का उत्तर देना। **(कोई बात) मुंह तक (या मुंह पर) आना**=कोई बात कहने को जी चाहना। **मुंह थुथाना**=अप्रसन्न होने के कारण थूथन की तरह मुंह बनाना। मुंह फुलाना। जैसे—वह भी मुंह थुथाये बैठे रहे। **(किसी का) मुंह पकड़ना**=किसी को बोलने से रोकना। **(किसी के) मुंह पर मोहर लगाना**=किसी को बोलने से पूरी तरह रोकना। **(कोई बात) मुंह पर लाना**=कुछ कहना या बोलना। **(किसी के) मुंह पर हाथ रखना**=बोलने से रोकना। **मुंह फाड़कर कुछ कहना**=बहुत विवशता की दशा मे लज्जा, सकोच आदि छोड़कर आग्रहपूर्वक प्रार्थना या याचना करना। जैसे—जब तुमने वह पुस्तक मुझे नही दी तब मुझे मुंह फाड़कर उसके लिए कहना पड़ा। **(अपना या किसी का) मुंह बन्द करना**=(क) स्वय बिलकुल न बोलना। मौन धारण करना। (ख) दूसरे को बोलने से रोकना। **(किसी का) मुंह बंद कर देना या बांधना**=तर्क आदि मे परास्त करके निरुत्तर कर देना। जैसे—आपने एक ही बात कहकर उनका मुंह बन्द कर दिया। **मुंह बांधकर बैठना**=बिलकुल चुप हो जाना। कुछ भी न बोलना। **मुंह बिगड़ना**=बोल-चाल मे गदी बातें कहने या गाली-गलौज बकने की आदत पड़ना। **(किसी का) मुंह भर या भरकर**=जितना अभीष्ट हो या मन मे आवे उतना। पूरापूरा। यथेष्ट। जैसे—किसी को मुंहभर गालियाँ या जवाब देना, किसी से मुंहभर बातें करना, बोलना या कुछ माँगना। **(किसी का) मुंह भरना**=अभियोग, कलक आदि की चर्चा या किसी तरह की कार्रवाई करने से रोकने के लिए घूस आदि के रूप मे कुछ धन देना। **(कोई बात) मुंह में आना**=कुछ कहने की इच्छा होना। जैसे—जो मुंह मे आया वह कह दिया। **मुंह मे जवान होना**=कुछ कहने या बोलने की योग्यता या सामर्थ्य होना। **मुंह में घुंघनियाँ भर बैठे रहना**=बोलने की आवश्यकता होने पर भी बिलकुल चुप रहना। **(कोई बात किसी के) मुंह मे पड़ना**=मुंह से कहा या बोला जाना। जैसे—जो बात तुम्हारे मुंह मे पड़ेगी, वह चार आदमियों को जरूर मालूम हो जायगी। **मुंह में लगाम न होना**=बोलने के समय उचित-अनुचित का ध्यान न रहना जो अविनय, अशिष्टता, उद्दडता आदि का सूचक है। **(किसी के) मुंह लगना**=(क) किसी को अनुकूल या सहनशील देखकर उसके प्रति या सामने उद्दडतापूर्ण तथा बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। (ख) कहा-सुनी या मुकाबला करने के लिए सामने आना। **(किसी को) मुंह लगाना**=किसी की उद्दंडता, धृष्टता आदि की बातों की उपेक्षा करके उसे बातचीत मे और अधिक उद्दड या धृष्ट बनाना। उदा०—जैसे ही उन मुंह लगाई, तैसे ही ये ढरी।—सूर। **मुंह संभालकर बात करना**=इस प्रकार नियत भाव से बात करना कि कोई अनुचित या अपमानकारक बात मुंह से न निकलने पावे। **मुंह सीना**=दे० ऊपर 'मुंह बद करना'। **मुंह से फूटना**=कुछ कहना। बोलना। (उपेक्षासूचक) **मुंह से फूल झड़ना**=मुंह से बहुत ही कोमल, प्रिय और सुदर बातें निकलना। **(किसी के) मुंह से बात छीनना**=जिस समय कोई महत्त्व की बात कहने को हो, उस समय

स्वयं पहले ही वह बात कह डालना। मुँह से लाल उगलना=बहुत ही बहुमूल्य या मधुर तथा सुदर बातें कहना।

पद—मुँह का कच्चा=(क) व्यक्ति जिसकी बातों का कोई ठिकाना न हो, जिसकी बात का विश्वास न हो। (ख) जो भेद या रहस्य की बात छिपा न सके और बिना समझे-बूझे दूसरों से कह दे। (ग) (घोड़ा) जो लगाम का झटका न सह सके, या अधिक समय तक मुँह मे लगाम न रख सके, या लगाम का संकेत न मानकर मनमाने ढग से चले। मुँह का कड़ा=(क) व्यक्ति जो प्रायः अप्रिय और कठोर बातें कहता हो। (ख) घोड़ा, जो लगाम का सकेत न माने और प्रायः मनमाने ढग से चलना चाहे। मुँह-फट (देखें स्वतत्र पद)।

(ग) मनोभावो से सबद्ध

मुहा०—मुँह कड़आना=(अप्रिय बात होने पर) ऐसी आकृति बनाना मानो मुँह मे कोई बहुत कड़वी चीज डाली गई हो। उदा०—दिम्बभर जगदीस जगत-गुरु, परसत मुख करुनाकर।—सूर। मुँह चिढ़ाना=(उपहास या विडम्बना करने के लिए) किसी के कथन, प्रकार आदि की भद्दे और विकृत रूप मे नकल करना। (बटेर, मुरगे आदि के संबंध में) मुँह डालना=(दूसरे बटेर, मुरगे आदि से) लड़ने को प्रवृत्त होना। (किसी के सामने) मुँह पड़ना=कुछ कहने का साहस या हिम्मत होना। (किसी के सामने) मुँह पसारना, फैलाना या बाना=(क) अपनी दीनता या हीनता प्रकट करना। (ख) दीनभाव से कुछ माँगना। हीनतापूर्वक याचना करना। (ग) अधिक पाने या लेने की इच्छा प्रकट करना। मुँह बनाना=(अप्रिय बात होने पर) अप्रसन्नता, अरुचि आदि प्रकट करनेवाली आकृति या मुख-भंगी बनाना। मुँह में कीड़े पड़ना=बहुत ही घृणित काम करने या बात कहने पर, अभिशाप के रूप मे बहुत दुर्दशा होना। मुँह मे खून (या लहू) लगना=(चीते, भेड़िये आदि हिंसक जतुओ के अनुकरण पर लाक्षणिक रूप मे) अनुचित लाभ या प्राप्ति होने पर उसका चसका लगना। मुँह में तिनका लेना=इस प्रकार दीनता प्रकट करना कि हम अपने सामने गौ के समान कृपापात्र या दयनीय है। मुँह मे धूल (छार, राख आदि) पड़ना=परम दुर्दशा या दुर्गति होना। उदा०—राम नाम तत समुझत नाही, अत परै मुख छारा।—कबीर। मुँह में पानी भर आना या मुँह भर आना=(शारीरिक प्रक्रिया के अनुकरण पर औपचारिक रूप से) कोई अच्छी चीज देखने पर उसे पाने के लिए मन ललचना। जैसे—किताब देखकर तो इनके मुँह मे पानी भर आया। मुँह से पानी छूटना या लार टपकना=दे० ऊपर 'मुँह मे पानी भर आना'।

२. सिर का वह अगला सारा भाग जिसमे उक्त अग के अतिरिक्त आँखें, गाल, नाक और माथा भी सम्मिलित हैं। आकृति। चेहरा। (फेस)

मुहा०—(किसी का) मुँह आना=आतशक या गरमी (रोग) मे मुँह के अन्दर छाले पड़ना और बाहर सूजन होना। मुँह उजला होना=अच्छा काम करने पर प्रतिष्ठा होना, अथवा कीर्ति या यश मिलना। (किसी ओर) मुँह उठना=किसी ओर चलने के लिए प्रवृत्त होना। जैसे—जिधर मुँह उठा, उधर ही चल पड़े। मुँह उतरना=रोग, लज्जा आदि के कारण चेहरे का रग फीका पड़ना। उदासी आना। (अपना) मुँह काला करना=(क) अपने ऊपर बहुत बड़ा कलक लेना। (ख) बहुत ही अपमानित या अप्रतिभ होकर खिसक या हट जाना। (किसी का) मुँह काला करना=बहुत ही अपमानित तथा कलंकित करके तथा उपेक्षापूर्वक दूर हटाना। (किसी के साथ) मुँह काला करना=(पुरुष या स्त्री के साथ) अवैध प्रसग या सभोग करना। मुँह की खाना=(क) अपमानजनक उत्तर या प्रतिफल पाना। (ख) प्रतिद्वंद्वी या प्रतिपक्षी के सामने बुरी तरह से हारना। (ग) साहसपूर्वक आगे बढ़ने पर धोखा खाना। मुँह की मक्खियाँ तक न उड़ा सकना=बहुत ही अशक्त अथवा आलसी होना। मुँह की लाली रहना=प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि मे बहुत ही थोड़ी आशा या सभावना होने पर भी अत मे यशस्वी या सफल होना। जैसे—दूसरे महायुद्ध मे अमेरिका की सहायता से इग्लैड के मुँह की लाली रह गई। मुँह के बल गिरना=(क) ठोकर खाकर औंधे गिरना। (ख) उपहासात्मक रूप मे, ठोकर या धोखा खाकर विफल होना। (ग) बिना सोचे-समझे किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त होना। (किसी का) मुँह चाटना=बहुत अधिक खुशामद, दुलार या प्यार करना। मुँह चुराना या छिपाना=दुर्बल या लज्जित होने के कारण सामने न आना। (किसी का) मुँह चूमना=बहुत उत्कृष्ट या प्रशसनीय समझकर यथेष्ट आदर करना। मुँह चूमकर छोड़ देना=अपने वश या सामर्थ्य के बाहर समझकर आदरपूर्वक उससे अलग या दूर हो जाना। (किसी से) मुँह जोड़कर बातें करना=किसी के मुँह के बहुत पास अथवा मुँह से सटाकर बातें करना। (किसी का) मुँह झुलसना या फूँकना=मृतक के दाह-कर्म के अनुकरण पर, गाली के रूप मे बहुत ही अपमानित करके या परम उपेक्ष्य, तुच्छ और त्याज्य समझकर दूर करना। जैसे—अब आप भी उनका मुँह झुलसें। (किसी का) मुँह तक न देखना=परम घृणित या तुच्छ समझकर बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। (किसी का) मुँह ताकना या देखना=अकर्मण्य, असमर्थ, चकित या विवश होकर अथवा आशा, प्रतीक्षा आदि में चुपचाप किसी ओर देखते रहना। (अपना) मुँह तो देखो=पहले यह तो देख लो कि जो कुछ तुम पाना या लेना चाहते हो, उसके योग्य तुम हो भी या नही। (किसी को) मुँह दिखाना=साहसपूर्वक किसी के सामने आना या होना। (किसी का) मुँह देखकर उठना=शुभाशुभ फल के विचार से, सोकर उठते ही किसी का सामना होना। जैसे—न जाने आज किसका मुँह देखकर उठे थे कि दिन भर खाने तक को न मिला। (किसी का) मुँह देखकर जीना=परम प्रिय होने के कारण किसी की आशा से या भरोसे पर जीना। जैसे—मैं तो इन बच्चों का मुँह देखकर जीता हूँ। (किसी का) मुँह देखते रह जाना=आश्चर्य भाव मे या चकित होकर किसी की ओर देखते रहना। मुँह धो रखो (रखिये या रखें)=(किसी के प्रति व्यग्यपूर्वक, केवल विधि के रूप मे) प्राप्ति की कुछ भी आशा न रखो (रखिये या रखें)। जैसे—आप भी पुरस्कार लेने चले हैं, मुँह धो रखिये। मुँह पर थूकना=बहुत ही घृणित तथा निंदनीय समझकर तिरस्कार करना। मुँह पर नाक न होना=कुछ भी लज्जा या शरम न होना। (कोई भाव) मुँह पर (या से) बरसना=अधिकता से और प्रत्यक्ष दिखाई देना। जैसे—लुच्चापन ही उसके मुँह पर (या से) बरसता है। मुँह पर मक्खियाँ भिनकना=बहुत ही घिनौनी और दीन दशा मे होना। (किसी का) मुँह पाना=किसी को अपने अनुकूल अथवा अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त रहने की दशा मे देखना।—जैसे जब मालिक का मुँह पाओ तब उनके सामने अपना दुखड़ा रोओ। (अपना)

मुंह पीटना या पीट लेना=किसी के आचरण, व्यवहार आदि पर बहुत ही खिन्न, दुखी और लज्जित होना। **(किसी का) मुंह पीटना**=अपमानित करते हुए बुरी तरह से परास्त करना। **मुंह फुलाना**=अप्रसन्न या असतुष्ट होकर रोष की मुद्रा धारण करना। **मुंह फिरना या फिर जाना**=(क) मुंह का टेढा या खराब हो जाना। जैसे--एक थप्पड दूंगा, मुंह फिर जायगा। (ख) सामना करने से हट जाना। सामने न ठहर पाना। **(किसी का) मुंह फेरना**=परास्त करके भगाना। बुरी तरह से हराना। जैसे—वहस मे तो ये वडे-वडो का मुंह फेर देते है। **(किसी से) मुंह फेरना या मोड़ना**=उदास और खिन्न होकर अलग या दूर हो जाना। जैसे--उनकी कृतघ्नता देखकर लोगों ने उनसे मुंह फेर लिया। **(किसी बात पर) मुंह बनना या बन जाना**=चेहरे मे अप्रसन्नता असतोष आदि के लक्षण प्रकट होना। जैसे—रुपए माँगते हुए उनका मुंह बन जाता है। **मुंह बनवा रखो**=तुम इस योग्य कदापि नही हो, अत सारी आशा छोड दो। जैसे—चले हो अपना हिस्सा लेने, मुंह बनवा रखो। **(अपना) मुंह बनाना**=अरुचि, विरक्ति आदि का सूचक भाव या मुद्रा धारण करना। **(किसी का) मुंह बिगाडना**=मार-मार कर आकृति विकृत करना या कुरूप बनाना। **(किसी बात पर) मुंह बिगाडना**=अरुचि या असतोष प्रकट करना। **मुंह बुरा बनाना**=अप्रसन्नता या असतोष प्रकट करना। **मुंह लटकाना**=खिन्नता या दु ख प्रकट करने के लिए बहुत ही उदास और चुप हो जाना। **मुंह (या मुंह-सिर) लपेटकर पड़ रहना**=बहुत ही उदास या दु खी होकर पडे रहना। **(किसी का) मुंह लाल करना**=अच्छी तरह या जोर से थप्पड लगाना। **मुंह लाल होना**=आवेग, क्रोध आदि के कारण चेहरे पर खून की रगत अधिकता से झलकना। मारे क्रोध के चेहरा तमतमाना। **मुंह सुजाना**=दे० 'ऊपर 'मुंह फुलाना'। **मुंह सूखना**= निराशा, भय, लज्जा आदि के कारण चेहरे पर काति या तेज न रह जाना। जैसे—आपकी फटकार सुनते ही उनका मुंह सूख गया। **अपना-सा मुंह लेकर रह जाना (या लौट आना)**=निराश, विफल या हतोत्साहित होने के कारण दीन और लज्जित भाव से चुप रह जाना (या लौट आना)। **इतना सा (या जरा-सा) मुंह निकल आना**=(क) चिंता, रोग आदि के कारण बहुत दुर्बल हो जाना। (ख) लज्जित होने के कारण श्रीहीन हो जाना।

पद—(किसी का) मुंह देखकर=(क) किसी के प्रेम मे लगकर। जैसे— पति मर गया हे, पर बच्चो का मुंह देखकर धीरज धरो। (ख) किसी का ध्यान रखते हुए। (ग) किसी को प्रसन्न या सतुष्ट करने के लिए। **मुंह पर**=उपस्थिति मे सामने। जैसे—मैं तो उनके मुंह पर कहनेवाला हूँ।

३ मनुष्य के शरीर का उक्त अग के विचार से उसकी मनोवृत्ति, शील आदि।

पद—मुंह देखे का=केवल सामना होने पर, सकोचवश किया जानेवाला (आचरण या व्यवहार)। जैसे—मुंह देखे की प्रीति या मुहब्बत। **मुंह मुलाहजे का**=पारस्परिक परिचय और उसके कारण होनेवाला (नियम या व्यवहार)। जैसे—जहाँ मुंह-मुलाहजे की बात हो, वहाँ ऐसा रूखा व्यवहार नही करना चाहिए। **मुंह मुलाहजे का आदमी**=जिसके साथ घनिष्ठ परिचय होने के कारण शीलपूर्ण व्यवहार करना पडता हो।

मुहा०—(किसी का) मुंह करना=शील या सकोचवश किसी का ध्यान रखना। जैसे—सच सच कह दो, किसी का मुंह मत करो। **मुंह-देखी कहना**=किसी के सामने रहने पर उसे प्रसन्न करने के लिए उसके अनुकूल बातें कहना। जैसे—न्याय की बात कहना, मुंह-देखी मत कहना। **(किसी का) मुंह छूना या परसना**=केवल ऊपरी मन से या दिखाने भर को किसी के साथ कोई अच्छा व्यवहार करना। जैसे—मुंह छूने के लिए वे मुझे भी निमत्रण देने आये थे। उदा०—ह्याँ आये मुख (मुंह) परसन मेरी हृदय टरति नहिं प्यारी।—सूर। **(किसी के) मुंह पर जाना**=किसी की प्रतिष्ठा व्यवहार, शील, सकोच आदि का ध्यान रखना या विचार करना। जैसे—तुम उनके मुंह पर मत जाओ, अपना काम करो। **(किसी का) मुंह पाना**=किसी को अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त देखना। जैसे--जब उनका मुंह पाया, तब मैंने भी सब बातें कह सुनाई। उदा०—मुंह पावति, तब ही लौं आवति, औरै, लावति मोर।—सूर। **(किसी का) मुंह रखना**=शील, सकोच आदि के कारण किसी के महत्त्व, व्यवहार आदि का ध्यान रखना। जैसे—हमे तो चार आदमियो का मुंह रखना ही पडता है।

४ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का पक्षपात या तरफदारी। जैसे—सच सच कह दो, किसी का मुंह मत रखो। ५ मनुष्य के शरीर का उक्त अग के विचार से उसकी योग्यता, सामर्थ्य, साहस आदि। जैसे—(क) अपना मुंह तो देखो (अर्थात् अपनी योग्यता या शक्ति तो देखो)। (ख) यहाँ भला किसका मुंह है जो तुम्हारे सामने आवे।

मुहा०—(किसी काम या बात के लिए) मुंह पड़ना=कुछ करने, कहने आदि का साहस या हिम्मत होना। जैसे—उनके सामने बोलने का किसी का मुंह ही नही पडता। **(किसी का) मुंह मारना**=(क) किसी को दबाने, नीचा दिखाने या वशवर्ती करने के लिए कोई उत्कृष्ट कार्य कर दिखाना। (ख) ऐसी उत्कृष्ट स्थिति मे होना कि सहज मे किसी को परास्त या लज्जित करके हीन सिद्ध किया जा सके। जैसे—यह कपडा सूती होने पर भी रेशमी का मुंह मारता है।

६ पारिश्रमिक, प्रतिफल आदि के रूप मे होनेवाली माँग। जैसे— बडे वकीलो का मुंह भी बडा होता है। (अर्थात् वे अधिक पारिश्रमिक या मेहनताना माँगते हैं।)

मुहा०—(किसी का) मुंह भरना=घूस, पारिश्रमिक आदि के रूप मे धन देना।

७. किसी प्राकृतिक या कृत्रिम रचना मे उक्त अग से मिलता-जुलता कोई ऐसा छेद या विवर जिसमे होकर चीजें उसमे जाती या उसमे से निकलती हों। जैसे—गुफा, घडे, थैली, या लोटे का मुंह।

पद—मुंह भर के=(क) जितना अन्दर समा सके, उतना डाल या रखकर। (ख) भर-पूर। यथेष्ट। (ग) अच्छी या पूरी तरह से।

८ उक्त प्रकार के मार्ग का बिल्कुल ऊपरी किनारा या सिरा। जैसे— तालाब मुंह तक भर गया है। ९ किसी चीज के ऊपर का ऐसा छोटा छेद जिसमे से कुछ निकलता हो। जैसे—फुसी, फोडे या नली का मुंह।

मुहा०—(किसी चीज का) मुंह खोलना=ऊपरी मार्ग या विवर इस प्रकार चौडा करना कि अन्दर की चीज बाहर निकल सके। जैसे—थैली का मुंह खोलना, फोडे का मुंह खोलना।

१० किसी चीज का आगेवाला पार्श्व, ऊपर या सामने का भाग अथवा रुख। जैसे—मकान का मुंह उत्तर की ओर है। ११ किसी बद चीज का वह अग या पार्श्व जिधर से वह खुलती हो या खोली जा सकती हो।

१२ किसी चीज का वह अगला और मुख्य भाग जिससे उसका प्रधान कार्य होता हो। जैसे—तीन मुँह वाला तीर या भाला, चार मुँहवाला दीया आदि।

मुँह-अंधेरे—क्रि० वि० [हिं० मुँह+अंधेरा] उतने तड़के या सवेरे जब अँधेरे के कारण किसी का मुँह भी न दिखाई पड़ता हो। जैसे—वह मुँह-अँधेरे ही उठकर घर से निकल पड़ा।

मुँह-अखरी—वि० [हिं० मुँह+अक्षर] जबानी। शाब्दिक।

मुँह-उजाले—क्रि० वि०=मुँह-उट्ठे।

मुँह-उट्ठे—क्रि० वि० [हिं० मुँह+उठना] ठीक उस समय जब कोई आदमी सवेरे के समय सोकर उठा ही हो।

मुँह-काला—पु० [हिं० मुँह+काला] १ कोई परम निन्दनीय काम करने पर होनेवाली बहुत अधिक अप्रतिष्ठा और बदनामी। २ पर-पुरुष या पर-स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग। ३ एक प्रकार की गाली। जैसे—जा, तेरा मुँह-काला।

मुँहचंग—पु०=मुरचंग।

मुँह-चटौअल—स्त्री० [हिं० मुँह+चाटना+औवल (प्रत्य०)] १ चुंबन। चूमाचाटी। २ बक-बक। बकवाद।

मुँह-चुथौवल—स्त्री० [हिं० मुँह+चोथना] १ व्यर्थ की बकवाद। २. लड़ाई-झगड़े में एक दूसरे को (विशेषत मुँह पर) मारने, काटने, नोचने आदि की क्रिया।

मुँह-चोर—पु० [हिं० मुँह+चोर] लोगों के सामने जाने से मुँह चुराने अर्थात् संकोच करनेवाला।

मुँह-छुआई—स्त्री० [हिं० मुँह+छूना+आई (प्रत्य०)] मुँह छूने अर्थात् ऊपरी मन से किसी से कुछ कहने की क्रिया या भाव।

मुँह-छुट—वि० [हिं० मुँह+छूटना] जो कुछ मुँह में आवे, वह सब बक जानेवाला। सबके सामने उद्दंडतापूर्वक बातें करनेवाला।

मुँह-जबानी—अव्य० [हिं०] मुँह और जबान के द्वारा। मौखिक रूप से।
वि० जो जबानी याद हो। कठस्थ।

मुँह-जला—वि० [हिं० मुँह+जलना] [हिं० स्त्री० मुँहजली] १ जिसका मुँह जले हुए के समान हो, अथवा जला दिये जाने के योग्य हो। (गाली) २ अशुभ तथा बुरी बातें कहनेवाला।

मुँह-जोर—वि० [हिं० मुँह+फा० जोर] [भाव० मुँहजोरी] १ धृष्टतापूर्वक तथा बिना समझे-बूझे जो मुँह में आवे, वह कह देनेवाला। किसी के मुँह पर बिना उसका लिहाज किये उलटी-सीधी बातें कहनेवाला। २ बकवादी। ३ मनमानी करनेवाला। उद्दण्ड। जैसे—मुँहजोर घोड़ा।

मुँह-जोरी—स्त्री० [हिं० मुँहजोर+ई (प्रत्य०)] १ मुँहजोर होने की अवस्था या भाव। २ धृष्टता।

मुँह-झौंसा†—वि० [स्त्री० मुँह-झौंसी]=मुँह-जला।

मुँह-तोड़—वि० [हिं०] (उत्तर या प्रत्याघात) जो विरोधी को पूरी तरह से परास्त करते हुए नीचा दिखानेवाला हो। जैसे—किसी को मुँह-तोड़ जवाब देना।

मुँह-दिखरावनी*—स्त्री०=मुँह-दिखाई।

मुँह-दिखलाई—स्त्री०=मुँह-देखनी।

मुँह-दिखाई—स्त्री०=मुँह-देखनी।

मुँह-देखनी—स्त्री० [हिं० मुँह+दिखाना] १ मुँह दिखाने की क्रिया या भाव। २. विवाह के उपरान्त की एक प्रथा जिसमें वर-पक्ष की स्त्रियाँ नव-वधू का घूँघट हटाकर उसका मुँह देखती और उसे कुछ धन देती है। मुँह-दिखाई नामक रसम। ३ वह धन या पदार्थ जो नव-वधू को उक्त अवसर पर मुँह दिखाने के बदले में मिलता है।

मुँह-देखा—वि० [हिं० मुँह+देखना] [स्त्री० मुँह-देखी] १. प्रत्यक्ष रूप से या स्वयं देखा हुआ। २ (ऐसा काम) जो किसी के सामना होने पर केवल औपचारिक रूप से उसका लिहाज करते हुए या संकोच वश तथा ऊपरी मन से किया जाता हो। जैसे—मुँह देखा प्यार, मुँह देखी बातें। ३. आज्ञा की प्रतीक्षा में किसी का मुँह देखता रहनेवाला।

मुँहनाल—स्त्री० [हिं० मुँह+नाल=नली] १. वह नली जिसे मुँह से लगाकर हुक्के का धूआँ खींचते हैं। २ धातु का वह टुकड़ा जो म्यान के सिरे पर लगा होता है।

मुँह-पड़ा—पु० [हिं० मुँह+पड़ना] प्रसिद्ध। मशहूर। (बाज०)

मुँह-पातर*—वि०=मुँह-फट।

मुँह-फट—वि० [हिं० मुँह+फटना] जो उचित-अनुचित का ध्यान रखे बिना भद्दी बातें कहने में भी संकोच न करता हो। बद-जबान।

मुँह-बंद—वि० [हिं०] १. (पदार्थ) जिसका मुँह बंद हो और अभी तक खोला न गया हो। जैसे—मुँह-बंद बोतल। २ (फूल) जो अभी खिला न हो। जैसे—मुँह-बंद कली। ३ (युवती या स्त्री) जिसका पुरुष से समागमन न हुआ हो। अक्षत-योनि। कुमारी। (बाजारू)

मुँहबंदी—स्त्री० [हिं० मुँह बंद+ई (प्रत्य०)] मुँह बंद रखने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

मुँह-बँधा—पु० [हिं० मुँह+बँधना] जैन साधु जो प्राय मुँह पर कपड़ा बाँधे रहते हैं।
वि० जिसका मुँह बँधा हो।

मुँह-बोला—वि० [हिं० मुँह+बोलना] [स्त्री० मुँह-बोली] जिसके साथ केवल कहकर या वचन देकर कोई सम्बन्ध स्थापित किया गया हो। जो जन्मत. या वस्तुत न होने पर भी मुँह से कहकर मान लिया या बना लिया गया हो। जैसे—मुँह बोला भाई, मुँह-बोली बहन।

मुँह-भराई—स्त्री० [हिं० मुँह भरना] १ मुँह भरने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो किसी को कोई आपत्ति-जनक बात कहने अथवा बाधक होने से रोकने के लिए रिश्वत आदि के रूप में दिया जाय।

मुँह-माँगा—वि० [हिं०] [स्त्री० मुँह-माँगी] जो मुँह से कहकर माँगा गया हो। जैसे—मुँह-माँगा दाम लेना, मुँह-माँगी मुराद पाना।

मुँह-माँगे—अव्य० [हिं० मुँह-माँगा] मुँह से माँगने पर। कहकर माँगने पर।

मुँह-मुलाहजा—पु० [हिं० मुँह+अ० मुलाहिज] ऐसी स्थिति जिसमें किसी आत्मीय या परिचित व्यक्ति के साथ होनेवाले पारस्परिक सम्बन्ध का शील-संकोचपूर्वक ध्यान रखा जाता हो।

मुँह-लगा—वि० [हिं० मुँह+लगना] [स्त्री० मुँह-लगी] जो अनधिकारी या अपात्र हो पर प्राय किसी बड़े के पास या साथ रहने के कारण बढ़-चढ़ कर बोलने का अभ्यस्त हो गया हो। सिर-चढ़ा।

मुँह-सुँघाई—स्त्री० [हिं० मुँह+सूँघना] १ किसी से मिल कर इतनी थोड़ी बात-चीत करना कि मानो उसका मुँह सूँघकर छोड़ दिया हो। २ उक्त

प्रकार की क्षणिक बात-चीत के बदले मे दिया या लिया जानेवाला धन। उदा०—फिर जमीदार की हर-हुकूमत, जरिवाना-तलवाना, पटवारी-मुन्सी को घूस-रिसवत थानेदार को मांस-मलीदा, कचहरी के वकील-मुख्तार को मुँह-मुँधाई सैकडो तरह के दूसरे खर्चे किये विना तुम्हारी जान नही बचेगी।—राहुल साकृत्यायन।

ा—वि० [हिं० मुँह] किसी प्रकार के मुँह से युक्त। मुँहवाला। जैसे—दो-मुँहा, शेर-मुँहा आदि।

ाचाही—स्त्री० =मुँह-चीही।

ा-चीही—स्त्री० [हिं० मुँह+चाहना] १. आपस मे एक दूसरे को देखना। देखा-देखी। २ आपस मे होनेवाली कहा-सुनी या तकरार।

ा-मुँह—अव्य० [हिं० मुँह+मुँह] मुँह या ऊपरी भाग तक। जैसे—तालाव मुँहामुँह भरा है।

ासा—पु० [हिं० मुँह+आसा (प्रत्य०)] मुँह पर के वे दाने जो प्राय युवावस्था मे निकलते है।

अज्जन—पु० [अ०] वह जो लोगो को नमाज का समय सूचित करने के लिए मसजिद मे अजान देता है।

अज्जम—वि० [अ०] परम माननीय या प्रतिष्ठित वहुत वडा (व्यक्ति)।

अज्जिज—वि० [अ० मुअज्जज] इज्जतदार। प्रतिष्ठित।

अत्तल—वि० [अ०] [भाव० मुअत्तली] १ खाली। २ जो किसी प्रकार का दोष करने पर विचारार्थ अपने काम या पद से कुछ समय के लिए अलग कर दिया गया हो।

अत्तली—स्त्री० [अ०]=निलवन। (देखें)

अन्नस—पु० [अ०] स्त्रीलिंग। मादा।

अम्मा—पु० [अ० मुअम्म] १ भेद या रहस्य की वात।

क्रि० प्र०—खुलना।

२ पहेली। वुझौअल। ३ घुमाव-फिराव या हेर-फेर की वात।

अल्लक—वि० [अ० मुअल्लक] १ अधर मे लटकता हुआ। २ बीच मे रुका हुआ (काम)।

अल्लिम—पु० [अ०] १. इल्म सिखानेवाला। शिक्षक। २ अध्यापक।

आफ—वि०=माफ।

आफकत—स्त्री० [अ०] १ मुआफिक या अनुकूल होने की अवस्था या भाव। अनुकूलता। २. अनुकूलता के कारण होनेवाला सग या साथ। जैसे—मेल-मुआफकत। ३ अनुरूपता।

मुआफिक—वि० [अ० मुआफिक] १ अनुकूल। २ तुल्य। समान। ३ जितना या जैसा होना चाहिए, उतना या वैसा। ठीक। ४ इच्छानुसार। मनोनुकूल।

मुआफिकत—स्त्री०=मुआफकत।

मुआफी—स्त्री०=माफी।

मुआमला—पु०=मामला।

मुआयना—पु० [अ० मुआयन] निरीक्षण।

मुआलिज—पु० [अ०] इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

मुआवजा—पु० [अ० मुआवज] १ वदला। २ किसी प्रकार की क्षति की पूर्ति करने के लिए उसके वदले मे दिया जानेवाला धन। ३ वह रकम जो जमीन के मालिक को उस जमीन के वदले मे मिलती है, जो कानून की सहायता से सार्वजनिक काम के लिए ले ली जाती है।

मुआहिदा—पु० [अ० मुआहिद] आपस मे होनेवाला दृढ निश्चय। पक्का करार।

मुकट†—पु०=मुकुट।

मुकटा†—पु० [देश०] प्राय पूजन आदि के समय पहनी जानेवाली एक प्रकार की रेशमी धोती। (पूरब)

मुकतई*—स्त्री०=मुक्ति।

मुकता—वि० [हिं० मुकना] [स्त्री० मुकनी] जो जल्दी समाप्त न हो। वहुत अधिक। यथेष्ट।

†पु०=मुक्ता।

मुकतालि—स्त्री० [स० मुक्तावली] मोतियो की लडी। मुक्तावली।

मुकत्तर—वि० [अ०] भभके से खीचा या चुआया हुआ।

मुकत्ता—वि० [अ० मुकत्ता] १. कतरा या काटा हुआ। २ ठीक तरह से काट-छाँटकर वनाया हुआ। जैसे—मुकत्ता दाढी। ३ जिसमे किसी प्रकार की कुरूपता या भद्दापन न हो। जैसे—मुकत्ता सूरत।

मुकति*—स्त्री०=मुक्ति।

मुकदमा—पु० [अ० मुकद्दम] १ कोई बात या विषय अथवा विवरण विस्तारपूर्वक किसी के सामने उपस्थित करना। २ ग्रथ आदि का प्राक्कथन या भूमिका। ३ वह विवादास्पद विषय जो न्यायलाय के सामने विचार और निर्णय के लिए उपस्थित किया जाय। अभियोग। दावा। नालिश।

विशेष—मुकदमे दीवानी, अर्थात् लेन-देन या व्यवहार के सबध मे भी होते है, और फौजदारी अर्थात् दड-विधान के अनुसार किसी को दडित करने के लिए भी। वादी और प्रतिवादी को आरभ से अत तक जितनी अदालती कार्रवाइयाँ करनी पडती हैं, उन सवका अतर्भाव मुकदमे मे ही होता है।

पद—मुकदमेवाज, मुकदमेवाजी।

क्रि० प्र०—खडा करना।—चलना।—दायर करना।

मुहा०—मुकदमा लडना=मुकदमा होने की दशा मे अपने पक्ष के समर्थन के लिए आवश्यक और उचित कार्रवाइयाँ करना।

मुकदमेवाज—पु० [अ० मुकदमा+फा० वाज (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेवाजी] १ वह जिसने वहुत से मुकदमे लडे हो। २ जो मुकदमे लडता रहता हो। जिसे मुकदमे लडने का शौक हो।

मुकदमेवाजी—स्त्री० [अ० मुकदमा+फा० वाजी] मुकदमे लडने की क्रिया या भाव।

मुकद्दम—वि० [अ०] १ प्राचीन। पुराना। २ सवसे अच्छा या वढकर। ३ प्रधान। मुख्य। ४ आवश्यक। जरूरी।

पु० १ गाँव का मुखिया। २ पशु की रान का ऊपरी भाग जो कूल्हे से जुडा होता है। (कसाई)

मुकद्दमा—पु०=मुकदमा।

मुकद्दर—वि० [अ०] १ गँदला। मैला। २ चिन्तित और दुखी। परेशान। ३ अप्रसन्न। नाराज। रुष्ट।

पु० [अ० मुकद्दर] भाग्य। प्रारब्ध।

मुकद्दस—वि० [अ०] परम पवित्र और पूज्य।

पद—मुकद्दस किताव=धर्म-ग्रन्थ।

मुकना—अ० [स० मुक्त] १ मुक्त होना। २ खतम या समाप्त होना।
†पु०=मकुना।

मुक्फल—वि० [अ० मुकफ्फल] जिसमे कुफल या ताला लगा हुआ हो। ताले मे बद किया हुआ।

मुकम्मल—वि० [अ०] १ पूरा किया हुआ (काम)। २ सपूर्ण। ३ सर्वांगपूर्ण।

मुकर†—पु०=मकुर।

मुकरना—अ० [स० मा=नही+करना] कोई काम कर चुकने या बात कह चुकने पर बाद मे यह कहना कि हमने ऐसा नही किया अथवा नही किया था। कहे या किये हुए से इनकार करना। जैसे—कहकर मुकर जाना तो उसके लिए मामूली बात है। उदा०—नियत पडी तब भेंट मनाई। मुकर गये जब देनी आई। (कहा०)
सयो० क्रि०—जाना।—पडना।
†वि० कुछ करके अथवा कहकर मुकर जानेवाला। मुकरा। जैसे—ऐसे मुकरने आदमी से हम बात नही करते।
अ० [स० मुक्त] मुक्त होना। छूटना।

मुकरानी—स्त्री० [हि० मुकरना] मुकरी या कह-मुकरी नामक कविता। दे० 'मुकरी'।

मुकरवा†—वि० दे० 'मुकरा'।

मुकरा—वि० [हि० मुकरना] वह जो कोई बात कहकर उससे मुकर जाता हो। अपनी बात पर दृढ न रहनेवाला। उदा०—लोभी, लीद, मुकरवा (मुकरा) झगरू बडो पढैलो लूटा।—सूर।

मकराना—स०[हि० मुकरना का स० रूप] १ किसी को मुकरने मे प्रवृत्त करना। २ किसी को झूठा बनाना या झूठा सिद्ध करना। (क्व०) स० [?] मुक्त कराना। छुडाना।

मुकरावन—वि० [हि० मुकराना=मुक्त कराना] १ मुक्त कराने या छुडानेवाला। २ मुक्ति या मोक्ष दिलानेवाला।

मुकरी—स्त्री० [हि० मुकरना] १ मुकरने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की लोक-प्रचलित कविता जिसका रूप बहुत कुछ पहेली का-सा होता है, और जिसमे पहले तो कोई वास्तविक बात श्लिष्ट रूप मे कही जाती है, पर बाद मे उस कही हुई बात से मुकरकर उसकी जगह कोई दूसरी उपयुक्त बात बनाकर कह दी जाती है जिससे सुननेवाला कुछ का कुछ समझने लगता है। हिंदी मे अमीर खुसरो की मुकरियाँ प्रसिद्ध हैं। इसी को 'कह-मुकरी' भी कहते हैं। साहित्यिक दृष्टि से मुकरियों का विषय छेकापह्नुति अलकार के अतर्गत आता है। उदा०—सगरि रैन वह मो सग जागा। भोर भई तब बिछुरन लागा। वाके बिछुरत फाटे हिया। क्यों सखि साजन? ना सखि दिया।—खुसरो।

मुकर्रम—वि० [अ०] १. प्रतिष्ठित। २ पूज्य।

मुकर्रर—अव्य० [अ०] दोबारा। फिर से।
वि० [अ० मुकर्रर] [भाव० मुकर्ररी] १ जिसके सबध मे इकरार हो चुका हो। निश्चित। २ किसी पद या स्थान पर जिसे नियुक्त किया गया हो।

मुकर्ररी—स्त्री० [अ०] १. मुकर्रर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। नियुक्ति। २ मालगुजारी या लगान। ३ नियत रूप से या नियत समय पर मिलता रहनेवाला धन। जैसे—वेतन, वृत्ति आदि।

मुकल—पु० [स०] १ अमलताम। २. गुग्गुल।

मुकलाऊ†—वि० [हि० मुकलाना] १ मुकलाने या मुक्त करानेवाला। २ मुकलावा या द्विरागमन करा ले जानेवाला।
पु०=मुकलावा।

मुकलाना—स० [स० मुकुल से अर्थ-विपर्यय] १. बन्धन से मुक्त करना। छोडना। उदा०—खाँसा छोरि केस मुकुलाई।—जायसी। २ बन्धन से मुक्त कराना। छुडाना। ३ वर का वधू को उसके मायके से पहले-पहल अपने घर लाना। मुकलावा या द्विरागमन कराना। उदा०—सुत मुकलाई अपनी माउ।—कबीर।

मुकलावा†—पु० [हि० मुकलाना] पति का पहले-पहल अपनी पत्नी को उसके मायके से अपने घर ले जाने की रसम। गौना। द्विरागमन। (पजाब)

मुक़व्वी—वि० [अ०] [बहु० मुकव्वियात] १. बलवर्द्धक। २ कामवर्द्धक।

मुकाना*—स० [सं० मुक्त] १. मुक्त कराना। छुडाना। २ खतम या समाप्त करना। उदा०—तुलि नहि चढै जाइ न मुकाती, हलकी लगै न भारी।—कबीर।
†अ०=मुकना।

मुकाबला—पु० [अ० मुकाबला] १ आमना-सामना। २ बराबरी। समानता। तुल्यता।
मुहा०—मुकाबले में होना=तुल्य या बराबर होना।
३ प्रतियोगिता, बलपरीक्षा या लडाई मे होनेवाली जाँच या होड। जैसे—(क) बच्चों के स्वास्थ्य का मुकाबला। (ख) दौड मे होनेवाला मुकाबला। ४ तुलनात्मक निरीक्षण या परीक्षा। ५ मिलान। ६ विरोध।

मुकावा—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का सिगारदान जिसमे कघी, मिस्सी, शीशा, सुरमा आदि रखा जाता है।

मुकाबिल—वि० [अ०] १ सामनेवाला। २ तुल्य। समान।
पु० १. प्रतिद्वंदी। २ विरोधी। ३ दुश्मन। शत्रु।
क्रि० वि० सम्मुख। सामने।

मुकाबिला—पु०=मुकाबला।

मुकाम—पु० [अ० मुकाम] [वि० मुकामी] १ ठहरने का स्थान। पडाव।
मुहा०—मुकाम डालना=यात्रा के समय बीच मे विश्राम करने के लिए ठहरना। **मुकाम बोलना**=अधीनस्थ लोगों को पडाव डालने की आज्ञा देना।
२. जगह। स्थान। ३ ठहराव। विराम। ४ रहने की जगह। घर। ५. किसी के यहाँ मृत्यु होने पर उसके यहाँ सहानुभूति प्रकट करने और सान्त्वना देने के लिए जाने और उसके पास कुछ देर तक बैठने की क्रिया या भाव।
मुहा०—मुकाम देना=किसी के मर जाने पर उसके घर मातमपुरसी करने जाना।
६ उपयुक्त अवसर। ठीक मौका। ७ सगीत मे बीन, सरोद, सितार आदि बाजों का कोई परदा। ८. फारसी संगीत मे, एक प्रकार का राग।

मुकामी—वि० [अ०] १. मुकाम-सबधी। ठौर-सबधी। २ स्थानीय।

मुकियाना—स० [हिं० मुक्की+इयाना] १ मुक्को से मारना। २. मुक्कियो से आटा सँवारना। ३ मुक्कियो से हलका आघात करते हुए मालिश करना या कोई अग दवाना।

मुकिर—वि० [अ०] १ इकरार या प्रतिज्ञा करनेवाला। २ अपनी ओर से कोई दस्तावेज या लेखा प्रस्तुत करके उस पर हस्ताक्षर करनेवाला। लेख्य का लेखक।

मुकीम—वि० [अ०] १ मुकाम-सबधी। २ किसी स्थान पर मुकाम करनेवाला। ३ जिसने कही कयाम किया हो। चलते-चलते किसी स्थान पर ठहरने या रुकनेवाला। ४ यात्रा आदि के समय बीच मे कही ठहरने या पड़ाव डालनेवाला।
पु० तरकारियो आदि का थोक व्यापारी।

मुकुंद—पुं० [स० मुकु√दा (देना)+क, पृपो० मुम्] १ विष्णु। २ पुराणानुसार एक प्रकार की निधि। ३ एक प्रकार का रत्न। ४ कुदरू। ५ सफेद कनेर। ६ गभारी वृक्ष। ७ पोई का साग। ८ पारद। पारा।

मुकुंदक—पु० [स० मुकुद+कन्] १ प्याज। २ साठी धान।

मुकुंदा—पु०[स० वाल मुकुन्द] ऐसा व्यक्ति जिसके दाढी-मूँछ के वाल न हो या वहुत कम हो। गुप्तरोमा।

मुकु—पु० [स०√मुच् (छोडना)+कु, पृपो० सिद्धि] १ मुक्ति। मोक्ष। २ छुटकारा।

मुकुट—पु० [स० √मुक् (मजाना)+उटन्, पृपो० सिद्धि] १ श्रेष्ठता का सूचक एक प्रकार का प्रसिद्ध अर्ध गोलाकार शिरोभूषण जो पहले राजा लोग पहनते थे, और जो प्राय देवी-देवताओ की मूर्तियो के सिर पर वाँधा जाता है। अवतंस। मौलि।
स्त्री० एक मातृ-गण।

मुकुटी (टिन्)—वि०[स० मुकुट+इनि, दीर्घ, नलोप] जिसने मुकुट पहना हुआ हो।

मुकुटेकार्षापण—पु० [म० अलुक, स०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार का राज-कर जो राजा का मुकुट वनवाने के लिए लिया जाता था।

मुकुट्ट—पु० [स०] एक प्राचीन जाति का नाम।

मुकुत*—पु०=मुक्ता (मोती)।
वि०=मुक्त।

मुकुताफल*—पु०=मुक्ताफल (मोती)।

मुकुर—पु० [स०√मुक्+उरच्, उत्व] १ दर्पण। आईना। शीशा। २ मौलसिरी। ३ मोतिया। ४ वेर। ५ कली। ६ वह डडा जिससे कुम्हार चाक चलाता है।

मुकुल—पु० [म० मुञ्च्+उलक्] १ कली। २ देह। शरीर। ३ आत्मा। ४ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का राज-कर्मचारी। ५ जमाल गोटा। ६ गुग्गुल। ७ पृथ्वी।

मुकुलक—पु० [स० मुकुल+कन्] दती (वृक्ष)।

मुकुलाग्र—पु०[म० मुकुल-अग्र, व० स०] कली की आकृति का एक प्राचीन अस्त्र।

मुकुलित—भू० कृ० [स० मुकुल+इतच्] १ (पेड या पौधा) जिसमे कलियाँ आई हो। कलियो से युक्त। २. (फूल) खिला हुआ। ३ जो पूरी तरह से खुला न हो। कुछ कुछ मुँदा हुआ। अव-खुला। ४ (नेत्र) जो झपक या मुँद रहा हो।

मुकुली (लिन्)—वि० [स० मुकुल+इनि, दीर्घ, नलोप] कलियो से लदा हुआ (पौधा या वृक्ष)।

मुकुष्ठ—पु०[स० मुकु√स्था (ठहरना)+क] मोठ।

मुकेस*—पु०=मुक्कैश।

मुकैयद—वि० [अ० मुकैयद] कैदी। वदी।

मुक्क†—वि०=मुक्त।
पु०=मुक्का।

मुक्का—पु० [स० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] १ आघात करने के उद्देश्य से वाँधी हुई मुट्ठी। घूँसा।
क्रि० प्र०—चलाना।—मारना।
२ उक्त प्रकार से वँधी हुई मुट्ठी का आघात।
क्रि० प्र०—खाना।
†पु०=मोखा (विवर)।

मुक्की—पु० [हिं० मुक्का+ई (प्रत्य०)] १. मुक्का। २ एक प्रकार की लडाई जिसमे प्रतिद्वद्वी एक दूसरे पर मुक्को का आघात करते हैं। वि० दे० 'मुक्केवाजी'। ३ गूँधे हुए आटे को सँवारने तथा नरम करने के लिए उसे मुक्कियो से दवाने की क्रिया या भाव। ४ टाँगें आदि दवाते समय मुक्कियो से हलका आघात करने की क्रिया या भाव।

मुक्केवाज—पु० [हिं० मुक्का+फा० वाज] वह जो मुक्को का प्रहार करके लडता हो।

मुक्केवाजी—स्त्री० [हिं० मुक्का+वाजी (प्रत्य०)] १ वार वार एक दूसरे को मुक्को से मारने की क्रिया या भाव। घूँसेवाजी। २ एक प्रकार की प्रतियोगिता जिसमे प्रतियोगी एक दूसरे पर मुक्को से आघात करते है। (वाक्सिग)

मुक्कैश—पु० [अ० मुक्कैश] १ वादला। २ तमामी या ताश नामक कपडा।

मुक्कैशी—वि० [अ० मुक्कैश+ई (प्रत्य०)] १ वादले का बना हुआ। जैसे—मुक्कैशी गोखरू। २ जिसमे जरदोजी या जरी का काम बना हो। जैसे—मुक्कैशी रूमाल।

मुक्खि†—वि०=मुख्य।

मुक्खी—पु० [हिं० मुख+ई (प्रत्य०)] ऐसा कबूतर जिसका सारा शरीर काले, हरे, या लाल रग का हो, पर सिर और डैनो पर एक या दो सफेद पर हो।

मुक्त—भू० कृ० [म०√मुच्+क्त] १ जो किसी प्रकार के बधन से छूट गया हो। छूटा हुआ। २ धार्मिक क्षेत्र मे, जो सासारिक बधनो और आवागमन आदि से छूट गया हो। जिसे मुक्ति मिली हो। ३ जो किसी प्रकार के नियम, विधान आदि के पालन से अलग कर दिया गया हो। ४ जिसने किसी प्रकार की मर्यादा आदि का परित्याग कर दिया हो। जैसे—मुक्त लज्ज, मुक्त वमन। ५ खुला या छूटा हुआ। जैसे—मुक्त-वेणी। ६ जो किसी प्रकार के बधन की चिता या परवाह न करता हो। खुला हुआ। जैसे—मुक्त-कठ, मुक्त-हस्त। ७ चलने के लिए छूटा हुआ। जैसे—वाण का मुक्त होना।

पुं० पुराणानुसार एक ऋषि का नाम।

*पुं० मुक्ता (मोती)। उदा०—हेम हीर हार मुक्त चीर चारु साजि कै।—केशव।

मुक्त-कंठ—वि० [सं० ब० स०] १. जोर से बोलनेवाला। २ बेधड़क बोलनेवाला। ३ जो बोलने में बन्धन या सीमा न मानता हो। जैसे—मुक्त-कंठ होकर प्रशंसा करना।

मुक्तक—पुं० [स० मुक्त+कन्] १. प्राचीन काल का एक अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था। २ शस्त्र। हथियार। ३. ऐसा सरल और सीधा गद्य जिसमे छोटे-छोटे वाक्य हों। ४ काव्य का वह प्रकार या भेद (प्रबंध-काव्य से भिन्न) जिसमे वर्णित बातों का कोई पूर्वापर संबंध न हो, अर्थात् एक ही छंद मे कोई पूरी बात या विषय आ गया हो, आगे या पीछे के दूसरे छंदों से उसका कोई संबंध न हो। जैसे—बिहारी सतसई मुक्तक काव्य है। ५ छंद शास्त्र मे कवित्त का वह प्रकार या भेद जिसमे गणों का कोई बंधन नही होता, केवल अक्षरों की संख्या और कहीं-कहीं गुरु-लघु का कुछ ध्यान रखा जाता है।

मुक्तक-ऋण—पुं० [स० कर्म० स०] वह ऋण जिसके संबंध मे कुछ लिखा-पढ़ी न हो। जबानी बातचीत पर दिया या लिया हुआ ऋण।

मुक्त-कच्छ—पुं० [स० ब० स०] एक बौद्ध का नाम।

वि० जिसका कच्छ खुला हो।

मुक्त-चंदन—पुं० [स० मध्य० स०] लाल चंदन।

मुक्त-चक्षु(स्)—पुं० [स० ब० स०] शेर। सिंह।

मुक्त-चेता (तस्)—वि० [स० ब० स०] जिसमें मोक्ष प्राप्त करने की बुद्धि आ गई हो।

मुक्त-छंद (स्)—पुं० [स० ब० स०] आज-कल की ऐसी कविता जिसमे चरणों, मात्राओं, अनुप्रास आदि का बन्धन न माना जाता हो; केवल लय का ध्यान रखा जाता हो। (ब्लैंक वर्स)

मुक्तता—स्त्री० [स० मुक्त+तल्-टाप्] मुक्त होने की अवस्था या भाव। मुक्ति।

मुक्त-निर्मोक—वि० [स० ब० स०] (साँप) जिसने अभी हाल मे केंचुली छोड़ी हो।

मुक्त-पद-ग्राह्य—पुं० [स०] साहित्य मे, यमक अलंकार का सिंहावलोकन नामक प्रकार या भेद। (दे० 'सिंहावलोकन')

मुक्त-पुरुष—पुं० [स० कर्म० स०] वह जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।

मुक्त-बंधना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ एक प्रकार का मोतिया। २. बेला।

मुक्त-वसन—वि० [स० ब० स०] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।

पुं० एक प्रकार के जैन साधु जो सदा नंगे रहते हैं।

मुक्त-वाणिज्य--पुं०=मुक्त-व्यापार।

मुक्त-वेणी—स्त्री० [स० ब० स०] १ द्रौपदी का एक नाम। २ प्रयाग का त्रिवेणी संगम।

मुक्त-व्यापार—वि० [स० ब० स०] जो सांसारिक कार्यों से रहित हो गया हो। संसार-त्यागी।

पुं०[स० कर्म० स०] आधुनिक राजनीति मे, व्यापार की वह व्यवस्था जिसमे विदेशों से होनेवाले आयात-निर्यात आदि पर कोई विशेष बन्धन न लगाया जाता हो। (फ्री ट्रेड)

मुक्त-शृंग—पुं० [स० ब० स०] रोह मछली।

मुक्त-संग—वि० [स० ब० स०] जो विषय-वासना से रहित हो गया हो।

पुं० परिव्राजक।

मुक्त-सार—पुं० [स० ब० स०] केले का पेड़।

मुक्त-हस्त—वि० [स० ब० स०] १. जो उदारतापूर्वक तथा अधिक मात्रा मे दान, व्यय आदि करता हो। २. खुले हाथों देनेवाला।

मुक्तांशुक—पुं०[स० मुक्ता-अंशुक, मध्य० स०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का कपड़ा जिसकी बनावट मे या तो मोतियों का काम होता था या जिसमे मोतियों की झालर अथवा फुंदने टँके होते थे।

मुक्ता—स्त्री० [स० मुक्त+टाप्] [वि० मौक्तिक] १. मोती। २. रास्ना।

मुक्तागार—पुं०[स० मुक्ता-आगार, ष० त०] सीप।

मुक्तात्मा (त्मन्)—वि०[स० मुक्त-आत्मन्, ब० स०]१. जो सांसारिक आसक्तियों या बन्धनों से रहित हो गया हो। २ जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।

मुक्तादाम (न्)--पुं०[स० ष० त०] मोतियों की लड़ी।

मुक्ता पुष्प—पुं०[स० ब० स०] कुंद (पौधा और फूल)।

मुक्ता-प्रसू—पुं०[स० ष० त०] सीप।

मुक्ता-फल--पुं०[स० उपमि० स०]१. मोती। २. कपूर। ३. लवली फल। ४. एक प्रकार का छोटा लिसोड़ा।

मुक्ता-मणि—पुं०[स० मयू० स०] मोती।

मुक्ता-मोदक--पुं०[स०] मोतीचूर का लड्डू।

मुक्ता-लता—स्त्री०[स० मयू० स०] मोतियों की लड़ी या माला।

मुक्तावली—स्त्री०[स० मुक्ता-आवली, ष० त०] मोतियों की लड़ी।

मुक्ता-स्फोट—पुं०[स० ष० त०] सीप।

मुक्ताहल*—पुं० =मुक्ताफल (मोती)।

मुक्ति—स्त्री०[स० √मुच्+क्तिन्]१. मुक्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी प्रकार के जंजाल, झंझट, पाश, बंधन आदि से छुटकारा मिलना। ३ धार्मिक क्षेत्र मे, वह स्थिति जिसमें यह समझा जाता है कि परमात्मा मे मिल जाने के कारण जीव आवागमन या जन्म-मरण के बंधन से छूट जाता है। मोक्ष। (इमैन्सिपेशन) ४. मृत्यु के फलस्वरूप सांसारिक कष्ट-भोगों की होनेवाली समाप्ति अथवा उनसे मिलनेवाला छुटकारा। ५. दायित्व, देन आदि से छूटने की अवस्था या भाव।

†स्त्री०=मोती।

मुक्तिका—स्त्री०[स० मुक्ता+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व] मोती।

मुक्तिक्षेत्र—पुं०[स० ष० त०]१. काशी या वाराणसी जो प्राणियों को मुक्ति देनेवाली कही गई है। २. कावेरी नदी के तट पर का बकुलारण्य नामक तीर्थ।

मुक्ति-तीर्थ—पुं०[स०ष० त०]१ वह तीर्थ जहाँ प्राणी को मुक्ति मिलती हो। २ काशी। ३ विष्णु।

मुक्तिधाम (न्)—पुं० [स० ष० त०] १. तीर्थ-स्थान। २ स्वर्ग। ३ परलोक।

मुक्ति-प्रद--पु०[स० ष० त०] हरा मूंग।
वि० मुक्ति देनेवाला।
मुक्ति-फौज--स्त्री०=मुक्ति-सेना।
मुक्ति-मंडप--पु० [स० ष० त०] काशी क्षेत्र मे विश्वनाथ का मदिर।
मुक्ति-मुक्त--पु०[स० तृ० त०] शिलारस।
मुक्ति-सेना--स्त्री०[स० ष०त०] ईसाई त्यागियो या विरक्तो का एक सघटन जिसका उद्देश्य लोगो मे ईसाई धर्म और नीति का प्रचार करना तथा लोक-सेवा के दूसरे अनेक काम करना है। (सैल्वेशन आर्मी)
मुक्ति-स्नान--पु० [स० स० त०] ग्रहण आदि का मोक्ष हो जाने पर किया जानेवाला स्नान।
मुखंडा--पु०[हि मुख+अडा (प्रत्य०)] १. कुछ विशिष्ट बरतनो मे किया जानेवला वह छेद जिसमे टोटी लगाई जाती है। २ टोटी का छेद।
मुख--पु०[स०√खन् (खोदना)+अच्, डित, मुट् आगम] १ जीव या प्राणी का मुंह। (देखें) २ चेहरा। ३ दरवाजा। ४ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५. आदि। आरभ। शुरू। ६ आगे, पहले या सामने आनेवाला अश या भाग। जैसे--रजनी-मुख=सन्ध्या का समय। ७ साहित्य मे, रूपक की पाँच सन्धियो मे से पहली सधि जिसका आविर्भाव बीज, नाम, अर्थ, कृति और आरम्भ नामक अवस्थाओ का योग होने पर माना जाता है। ८ नाटक का पहला शब्द। ९ शब्द। १० नाटक। ११. वेद। १२. जीरा। १३ बडहर। १४ मुरगाबी।
वि० मुख्य। प्रधान।
मुख-क्षुर--पु०[स० ष० त०] दाँत।
मुख-खुर--पु०=मुखक्षुर।
मुख-गंधक--पु०[स० ब० सं०, कप्] मुंह मे दुर्गंध उपजानेवाला अर्थात् प्याज।
मुख-चपल--वि० [सं० सुप्सुपा स०] १ जो बहुत अधिक या बढ-बढकर बोलता हो। वाचाल। मुँहजोर। २ कटुभाषी।
मुख-चपलता--स्त्री० [सं० मुखचपल+तल्-टाप्] मुख-चपल होने की अवस्था या भाव।
मुखचपला--स्त्री०[स० मुखचपल+टाप्] आर्याछद का एक भेद।
मुख-चूर्ण--पु०[स० ष० त०] मुंह पर मलने का चूर्ण। (पाउडर)
मुखज--वि०[स० मुख√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मुख या मुँह से उत्पन्न।
पु० ब्राह्मण जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से कही गई है।
मुखडा--पु०[स० मुख+हिं० डा (प्रत्य०)] १ मनुष्य का वह अग जिसमे दोनो आँखें, नाक, गाल, माथा, मुंह, ठुड्डी आदि अवयव होते है। चेहरा। २ बहुत ही सुन्दर मुख के लिए प्रशसा और प्रेम का सूचक शब्द।
मुखतार--पु०[अ० मुख़्तार] [भाव० मुख़तारी] १ वह व्यक्ति जिसे किसी से विशिष्ट अवसरो पर कुछ विशेष प्रकार के काम प्रतिनिधि के रूप मे करने का वैध अधिकार मिला होता है। २ एक प्रकार के कानूनी सलाहकार जो पद मे वकील से छोटे होते हैं।
मुखतार आम--पु० [अ० मुख़्तारेआम] वह प्रतिनिधि जिसे किसी तरफ से सब प्रकार के कार्य विशेषत आर्थिक या कानूनी कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।
मुख़तारकार--पु० [अ० मुख़्तारे+फा० कार] [भाव० मुख़तारकारी] कर्मचारी। कारिंदा।
मुखतारकारी--स्त्री०[हिं० मुखतारकार+ई (प्रत्य०)] १ मुखतारकार का काम, पद या भाव। २ दे० 'मुख़तारी'।
मुख़तार-ख़ास--पु० [अ० मुख़्तारे+फा० ख़ास] वह जिसे किसी विशिष्ट कार्य या मुकदमे के लिए मुख़तार या प्रतिनिधि बनाया गया हो।
मुख़तारनामा--पु०[अ० मुख़्तार+फा० नाम.]१. वह पत्र जिसमे कोई आधिकारिक या वैध रूप से किसी को अपना मुख़तार नियुक्त करता हो। २ वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई पेशेवर मुख़तार कोई मुकदमा लड़ने के लिए मुख़तार के रूप मे नियुक्त किया जाता है।
मुख़तारी--स्त्री०[अ० मुख़्तारी]१ मुख़्तार अर्थात् प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। २. मुख़तार का पद या पेशा। ३ प्रतिनिधित्व। ४ एक तरह की कानूनी परीक्षा जिसे पारित करने पर मुख़तार के रूप मे छोटी अदालतो मे मुकदमे लड़ने का अधिकार प्राप्त होता है।
मुखताल--पु०[हिं० मुख+ताल] गीत का पहला पद। टेक।
मुखदूषण--पु० [स० मुख√दूष (दूषित करना)+णिच्+ल्यु--अन] प्याज।
मुखदूषिका--स्त्री०[स० ष० त०] मुँहासा।
मुखदूषी(षिन्)--पु० [सं० मुख√दूष् (दूषित करना)+णिच्, णिनि दीर्घ न लोप]लहसुन।
मुख-देखा†--वि०=मुँह-देखा।
मुख-धावक--पु० [स०] कोई ऐसी चीज जो मुँह के भीतरी भाग (जीभ, तालू, दाँत आदि) साफ करने के काम आती हो। (माउथ वाश)
मुख-धौता--स्त्री०[स० ब० स०]१ भारगी। २ ब्राह्मण-यष्टिका।
मुख-पट--पु०[सं० मध्य० स०]१ घूँघट। २. नकाब।
मुख-पत्र--पु०[स०उपमि०स०] किसी सस्था या दल का वह पत्र जिसमे उसके सिद्धान्तो तथा मतो का प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। (आर्गन)
मुख-पान--पु०[हिं० मुख+पान] ताले के ऊपरी आवरण का पान के अकार का धातु का वह टुकडा जिसमे प्राय ताली लगाने के लिए छेद बना होता है।
मुख-पिंड--पु०[स० ष० त०]१ कौर। ग्रास। २ मृत व्यक्ति की अत्येष्टि क्रिया से पहले दिया जानेवाला एक तरह का पिंड।
मुख-पूरण--पु०[स० मुख√पूर् (पूर्ण करना)+णिच् ल्यु--अन] १. मुँह साफ करने के लिए किया जानेवाला कुल्ला। २ उतना पानी जितना एक बार कुल्ला करने के लिए मुँह मे लिया जाय।
मुख-पृष्ठ--पु०[स० उपमि०स०] किसी ग्रथ या पुस्तक का सबसे ऊपर वाला पृष्ठ जिसमे उस पुस्तक तथा उसके लेखक का नाम छपा होता है। (टाइटिल पेज)
मुख-प्रक्षालन--पु०[स० ष० त०] मुँह धोना या साफ करना।
मुखप्रिय--वि०[स० मुख√प्री (तृप्त करना)+क, उप० स०] स्वादिष्ट।
पु०१ नारगी। २. ककड़ी।

मुखपफफ—पु०[अ० मुखपफफ] किसी चीज का लघु, संक्षिप्त या सूक्ष्म रूप। जैसे—हाथ का मखपफफ हथ (हथकरधा)।
वि० लघु, संक्षिप्त स्वरूप में होनेवाला।

मुख-बंद—पु० [स० मुख+हि० बंद]१ घोड़ों का एक रोग जिसमें उनका मुँह बन्द हो जाता है।

मुख-बंध (न)—पु० [स० ष० त०] किसी ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।

मुखबिर—पु०[अ० मुख्बिर] [भाव० मुखबिरी] गुप्त रूप से समाचार लाने या खबर देनेवाला व्यक्ति। जासूस।

मुखबिरी—स्त्री०[अ० मुख्बिरी] मुखबिर का काम, पद या भाव।

मुख-भूषण—पु०[स० ष० त०] पान।

मुखभेड़†—स्त्री०=मुठभेड़।

मुखमसा†—पुं० [अ० मख्मसः=विकलता या कठिनता] झगड़ा। बखेड़ा।

मुख-मैथुन—पु०[स०] मैथुन या संभोग का एक अप्राकृतिक और अस्वाभाविक प्रकार जिसमें उपभोग्य बालक अथवा स्त्री के मुख में लिंगेंद्रिय रखी जाती है।

मुख-मोद—पु०[स०मुख√मुद् (हर्ष)+णिच्+अण् उप० स०]१. सलई का पेड़। सलकी। २. काला सहिजन।

मुखम्मस—वि०[अ० मुख़म्मस] जिसमें पाँच कोने या अंग हों। पँचकोना।
पु० वह पद्य जिसके पाँच चरण हों। (उर्दू)

मुख-यंत्रण—पु०[स० ष० त०] घोड़े, बैल आदि की लगाम।

मुखर—वि०[स० मुख+रा (देना)√क] १ बहुत बोलनेवाला। बकवादी। वाचाल। २ बहुत बढ़कर या उद्दंडतापूर्वक बातें करनेवाला। ३ व्यर्थ बहुत सी बातें कहनेवाला। बकवादी। ४ कटु-भाषी। ५ प्रधान। मुख्य। ६ बोलता हुआ। मुखरित।
पु०१ कौआ। २ शख।

मुखरित—भू० कृ०[स०मुखर+क्विप्+क्त] अच्छी तरह बोलता या ध्वनि करता हुआ। ध्वनियों या शब्दों से युक्त।

मुख-रोग—पुं०[स० ष० त०] दाँतों, मसूड़ों, होंठों आदि में होनेवाले रोगों की सज्ञा।

मुख-लांगल—पु०[स० ब० स०] सूअर।

मुखलिस—वि०[अ० मुख्लिस] [भाव० मुखलिसी]१ जो स्वतंत्र हो चुका हो। मुक्त। २. निश्छल। ३. निष्ठ। सच्चा। ४ अकेला। ५. अविवाहित।

मुख-लेप—पु० [स० ष० त०] १ शोभा के लिए मुख पर किया जानेवाला लेप। २ एक प्रकार का मुख-रोग।

मुख-लेपन—पु० [स० ष० त०] मुख पर लेप करना या लगाना।

मुख-वल्लभ—वि०[सं० ष० त०] स्वादिष्ट।
पु० अनार का पेड़।

मुख-वाद्य—पुं०[स० ष०त०] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो।

मुख-वास—पु०[सं०मुख√वास(सुगंधित करना)+अण्+णिच्+उप०स०] १ गधतृण। २. तरबूज की लता।

मुख-वासन—पु०[स० मुख√ वास्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०]मुँह की दुर्गंध दूर करने तथा उसे सुगन्धित करने के उद्देश्य से मुँह में रखा जानेवाला चूर्ण या औषध।

मुख-विष्ठा—स्त्री०[स० ब० स०] तिल-चट्टा (कीड़ा)।

मुख-शुद्धि—पु०[स० ष० त०]१. मुख को शुद्ध करने की क्रिया या भाव। २ बोलचाल में, भोजन आदि के उपरान्त इलायची, पान, सुपारी आदि खाना।
विशेष—हमारे यहाँ इलायची, पान, सुपारी आदि का सेवन मुख को शुद्ध करने के लिए किया जाता है।

मुख-शोधन—पु०[स० ष० त०]१ मुख को शुद्ध करना। मुखशुद्धि। २ [मुख√शुध्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] मुख शुद्ध करने के निमित्त खाया जानेवाला पदार्थ। जैसे—पान, सुपारी आदि। ३ दालचीनी।
वि० चरपरा।

मुखशोधी (धिन्)—वि० [सं० मुखशुध् (शुद्ध करना) +णिच्+णिनि दीर्घ, नलोप, षुक्] मुख को शुद्धि करने अथवा उसे शुद्ध करनेवाला।
पु० जबीरी नीबू।

मुख-शोष—पु०[स० ष० त०] १. मुख के सूखे हुए होने की अवस्था या भाव। २ [ब० स०] वह कारण या दशा जिसमें फलस्वरूप मुख सूखा रहता हो। ३. प्यास।

मुख-श्री—स्त्री० [स० ष० त०] चेहरे की रौनक, शोभा या सौंदर्य।

मुख-संधि—स्त्री० दे० 'मुख' के अतर्गत साहित्यिक संधि।

मुख-संभव—पु०[स० ब० स०]१. ब्राह्मण। २ कुकुरमुत्ता।
वि० मुँह से निकला हुआ।

मुख-सुख—पु०[स० ष०त०] वह स्थिति जिसमें व्यक्ति किसी शब्द का उच्चारण अपने मुख की गठन तथा सुविधा के अनुसार ऐसे रूप में करता है जो वर्णोच्चारण से कुछ न कुछ भिन्न होता है।

मुखस्थ—वि०[स० मुख√स्था (ठहरना)+क] १ जो मुँह-जबानी याद हो। कठस्थ। २. मुख में आया या रखा हुआ।

मुख-स्राव—पुं०[स० ष० त०] १. थूक। लार। २. मुँह से निरन्तर लार गिरने का रोग।

मुखाग—पु० [स० मुख-अग, कर्म० स०] वह जो किसी व्यक्ति की ओर से बोल रहा हो जो स्वयं किसी कारण से चुप रहना चाहता हो। (माउथपीस) जैसे—आज तो आप उनके मुखाग होकर बातें कर रहे है।

मुखाग्नि—स्त्री० [स० मुख-अग्नि, मध्य० स०] १. चिता पर रखे हुए शव के मुख में रखी जानेवाली अग्नि। २. इस प्रकार मुँह में अग्नि रखने की प्रथा। ३ [ब० स०] दावानल। ४. ब्राह्मण।

मुखाग्र—पु०[स० मुख-अग्र, ष० त०]१. किसी पदार्थ का अगला भाग। २ होंठ।
वि० जो जबानी याद हो। कठस्थ।

मुखातिब—वि०[अ० मुख़ातिब] १ जिससे कुछ कहा जाय। संबोध्य। २. किसी की ओर (बात कहने या सुनने, देखने आदि को) प्रवृत्त।
वि० [अ० मुख़ातिब] सबोधन कर्ता।

मुखापेक्षक—वि०=मुखापेक्षी।

मुखापेक्षा—स्त्री० [स० मुख-अपेक्षा, ष० त०] विवश होकर दूसरों का मुँह ताकना। (सहायता आदि के लिए)

मुखापेक्षी (क्षिन्)—पु० [स० मुखापेक्ष+इनि] किसी के मुँह की ओर ताकने अर्थात् उसकी कृपा की अपेक्षा रखनेवाला। दूसरों की कृपा पर अवलम्बित रहनेवाला।

मुखामय—पु० [स० मुख-आमय, ष० त०] मुख मे होनेवाले रोग। मुखरोग।

मुखारविंद—पु० [स० मुख-अरविन्द, उपमित स०] ऐसा सुन्दर मुख जो देखने मे कमल के समान हो। मुख-कमल। (प्राय बडो के सबध मे, आदरसूचक)

मुखारी—स्त्री० [स० मुख] १ मुख की गठन या वनावट। २ आकार-प्रकार, रूप आदि का सूचक किसी वस्तु का ऊपरी या सामनेवाला भाग। ३ मुख-शुद्धि के लिए कुल्ला-दतुअन आदि करने की क्रिया या भाव। उदा०—दतवनि लै दुहूँ करी मुखारी।—सूर।

मुखालिफ—वि० [अ० मुखालिफ] १ विरोधी। २ प्रतिद्वद्वी। पु० दुश्मन। शत्रु।

मुखालिफत—स्त्री० [अ० मुखालिफत] १ मुखालिफ होने की अवस्था या भाव। २ डटकर किया जानेवाला विरोध। ३ शत्रुता।

मुखासमत—स्त्री० [अ०] १ कलह। २ विवाद। ३ शत्रुता।

मुखासव—पु० [स० मुख-आसव, ष० त०] १ थूक। २. लार।

मुखास्त्र—पु० [स० मुख-अस्त्र, ब० स०] केकडा।

मुखिया—पु० [स० मुख्य+हिं० इया (प्रत्य०)] १ वह जो अपने वर्ग या समाज मे मुख्य या प्रधान हो। २ ब्रिटिश शासन मे किसी गाँव मे प्रधान बनाया हुआ वह व्यक्ति जिसे कुछ अधिकार प्राप्त होते थे। ३ वल्लभ सप्रदाय का वह कर्मचारी जो मूर्ति का पूजन आदि करता है। ४. स्वतत्र भारत मे किसी गाँव या मडल के चुने हुए प्रतिनिधियों का प्रधान या सभापति।

मुखी (खिन्)—वि० [स० मुख+इनि] १ मुख से युक्त। मुखवाला। (यौ० के अन्त मे) जैसे—नाहरमुखी, सूर्यमुखी आदि। उदा०—जो देखिअ सो हँसता मुखी।—जायसी। २ किसी विशिष्ट ओर या दिशा मे मुख रखनेवाला। जैसे—अन्तर्मुखी, सूर्यमुखी, सर्वतोमुखी।

मुखुली—स्त्री० [स० मुख्+उलच्+ङीप्] एक बौद्ध देवी।

मुखौटा—पु० [हिं० मुख+औटा (प्रत्य०)] १ मुख का अल्पार्थक रूप। छोट मुँह। २ धातु आदि का मुख के आकार का वना हुआ वह खड जो देवी-देवताओं की मूर्तियो मे उनके मुख पर लगाया जाता है। ३ रूप धारण करने के लिए मुँह की वनाई जानेवाली आकृति। उदा०—अत मनुष्य चाहे जो मुखौटा पहने उसके नीचे सव मनुष्य नगे है।

मुख्तलिफ—वि० [अ० मुख्तलिफ] १ पृथक। भिन्न। २ अनेक प्रकार का।

मुख्तसर—वि० [अ० मुख्तसर] १ सक्षिप्त। घटाया या छोटा किया हुआ। २ सक्षेप मे लाया हुआ। ३ अल्प। थोडा।

पद—मुख्तसर में—सक्षेप मे।

मुख्तार—पु० 'मुखतार'। ('मुख्तार' के अन्य यौ० के लिए देखे 'मुखतार' के यौ०)

मुख्य—वि० [स० मुख+यत्] [भाव० मुख्यता] १. जो सब से आगे बढा हुआ या ऊपर और मुख के रूप मे हो। प्रधान। खास। २ (अन्यों की अपेक्षा) अधिक आवश्यक महत्त्वपूर्ण या सारभूत। जैसे—अपने भाषण मे उन्होने मुख्य बात यही कही कि । ३ अपने वर्ग का सबसे बडा। जैसे—मुख्य मत्री, मुख्य न्यायाधीश।

पु० १ यज्ञ का पहला कल्प। २ वेदो का अध्ययन और अध्यापन। ३ अमात मास।

मुख्य-चांद्रमास—पु० [स० कर्म० स०] चाद्र मास के दो भेदो मे से एक जो शुक्ल प्रतिपदा से आरभ होकर अमावस्या को समाप्त होता है। इसी को 'अमात' भी कहते है। (दूसरा) भेद 'गौण चाद्र मास' या 'पूर्णिमात' कहलाता है।

मुख्यतः (तस्)—अव्य० [सं० मुख्य√तस्] मुख्य रूप से।

मुख्यता—स्त्री० [स० मुख्य+तल्+टाप्] मुख्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

मुख्य-मत्री (त्रिन्)—पु० [स० कर्म० स०] भारतीय गणतत्र के किसी राज्य (प्रात) का सबसे बडा मत्री। राज्य के मत्रियो मे सबसे बडा मत्री। (चीफ मिनिस्टर)

मुख्य-सर्ग—पु० [स० कर्म० स०] स्थावर सृष्टि।

मुख्याधिष्ठाता (तृ)—पु० [स० मुख्य-अधिष्ठातृ, कर्म० स०] किसी स्थान विशेषत शिक्षा-सस्था का प्रधान अधिकारी और व्यवस्थापक। जैसे—गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता।

मुख्यालय—पु० [स० मुख्य-आलय, कर्म० स०] १ किसी सस्था का केन्द्रीय और प्रधान स्थान। प्रधान कार्यालय। २ किसी बडे अधिकारी या व्यक्ति का मुख्य निवास स्थान। (हेड क्वार्टर)

मुगट†—पु०=मकुट।

मुगतना†—अ० [स० मुक्त] मुक्त होना।

स० मुक्त करना।

मुगता†—पु०=मुक्ता।

मुगदर—पु० [स० मुद्गर] जोडी। कसरत करने के लिए काठ के बडे टुकडो की वह जोडी जो दोनो हाथो मे लेकर इधर-उधर और ऊपर-नीचे घुमाई जाती है।

क्रि० प्र०—फेरना।—हिलाना।

मुगधारी—वि० [स० मुग्ध] मूढ। मूर्ख।

मुगना†—पु०=मुनगा (सहिजन)।

मुगरा†—पु०=मोगरा।

मुगरेला†—पु० मुगरैला।

मुगल—पु० [तु० मुगुल] [स्त्री० मुगलानी] १ मगोल देश का निवासी। २ उक्त के वे वशज जो तातार देश मे बसकर मुसलमान हो गए थे, और जिनके एक राज-वश ने अगरेजो के भारत आने से पहले ढाई-तीन सौ वर्षों तक भारत मे राज्य किया था। ३ मुसलमानो के चार वर्गों मे से एक वर्ग। ४ उक्त जाति का कोई व्यक्ति। ५ आज-कल भ्रमवश काबुल और उसके आस-पास के पठान।

मुगलई—वि० [तु० मुगुल+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मुगल-सबधी। २ मुगलो मे होनेवाला। ३ मुगलों का-सा। मुगलो की तरह का। जैसे—मुगलई पाजामा।

स्त्री० मुगलों की सी अकड, ऐंठ या घमड ।

मुगल्लक—वि० [अ०] १ बहुत कठिन या मुश्किल । २ छिपा हुआ । अव्यक्त ।

मुगल-पठान—पु० [हिं०] १. एक प्रकार का खेल जो १६ गोटियो से चौकोर खीची हुई रेखाओं पर खेला जाता है। २. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे दो पुतले आपस मे लडते हुए दिखाये जाते है।

मुगलाई—स्त्री० [हिं० मुगल+हिं० आई (प्रत्य०)] १. वह कपडा जिसमे सुनहला या रुपहला गोटा और पट्ठा टंका हो । २. दे० 'मुगलई' ।

वि०=मुगलई।

मुगलानी—स्त्री० [हिं० मुगल+आनी (प्रत्य०)] १ मुगल जाति की स्त्री। २ मुसलमान रईसों के यहाँ कपडे सीनेवाली स्त्री। ३ दासी। मजदूरनी।

मुगलिया—वि० [फा० मुगुलीय] १ मुगलों का। जैसे—मुगलिया खानदान। २ मुगलो की तरह का। मुगलो का-सा। मुगलई।

मुगली—स्त्री० [हिं० मुगल+ई (प्रत्य०)] पसली का रोग।

वि०=मुगलिया (मुगलई) ।

मुगवन—पु० [स० वन-मुद्ग] मोठ।

मुगवा—स्त्री० [स०] अतिसवा। मयूरवल्ली।

मुगालता—पु० [अ० मुगालत] धोखा।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मे डालना।

मुग्ध—वि० [स०√मुह् (मूर्च्छित होना)+क्त] [भाव० मुग्धता] १ जो मूर्च्छित या स्तब्ध हो गया हो। २. मूढ । मूर्ख । ३. जो किसी पर इतना आसक्त या लुब्ध हो गया हो कि सुध-बुध खो बैठा हो। ४ सीधा-सादा। सरल। ५ निरीह। ६ नया। नवीन। ७ मनोहर। सुन्दर।

मुग्धता—स्त्री० [स० मुग्ध+तल्+टाप्] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव। २ सुन्दरता।

मुग्ध-बुद्धि—वि० [स० ब० स०] मूर्ख।

मुग्धम—वि० [स० मुग्ध] १ सकेत रूप मे कहा हुआ। २ जिसका भेद या रहस्य और लोग न जानते हों। छिपा हुआ। गुप्त। ३ चुप। मौन।

पु० जूए मे किसी बाजी की वह स्थिति, जिसमे किसी पक्ष की न जीत होती है न हार।

मुग्धा—स्त्री० [स० मुग्ध+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जिसके नवयौवनांकुर निकल रहे हो परन्तु जिसमे अभी काम चेष्टा का भाव उत्पन्न न हुआ हो। इसके ज्ञात यौवना और अज्ञात यौवना दो उपभेद है।

मुचंगड़—वि० [हिं० मुच्चा+अगड (प्रत्य०)] मोटा और भद्दा। जैसे—मुचगड रोटी।

मुचक—पु० [स०√मुच् (छोडना)+ण्वुल्, वु—अक] लाख। लाह। स्त्री०=मोच।

मुचकुद—पु० [स०] १ मांधाता का पुत्र जिसने असुरों से युद्ध करके देवताओं से बहुत दिनों तक सोने का वर प्राप्त किया था। २ सुगंधित फूलोवाला एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसके पत्ते फालसे के पत्तो की तरह बडे-बडे होते है।

मुचलका—पु० [तु० मुचलका] आज-कल विधिक क्षेत्र में वह प्रतिज्ञा-पत्र जो किसी अभियुक्त या अपराधी से इसलिए लिखाया जाता है कि भविष्य में वह विधि-विरुद्ध काम करने पर कुछ विशिष्ट अर्थदंड से दंडित होगा, और उस पर फिर मुकदमा भी चल सकेगा।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—लिखाना।—लेना।

मुचिर—पु० [स०√मुच् (त्याग करना)+किरच्] १. धर्म। २. वायु। ३. देवता।

वि० उदार।

मुचुकुंद—पु० [स०] १. सूर्यवंशी राजा मांधाता का पुत्र। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और फूल दवा के काम आते हैं। मुचकुद।

मुच्चा†—पु० [देश०] मास विशेषत कच्चे मांस का टुकडा।

मुच्छल—वि० [हिं० मूंछ] १. मूंछोंवाला। २ बड़ी बड़ी मूंछोंवाला।

मुछदर†—वि०[हिं० मूंछ] १ जिसकी मूंछें बडी-बडी हों। २ फलत: देखने मे भद्दा और मोटा।३. मूर्ख। (व्यग्य)

*पु०=मत्स्येंद्रनाथ।

मुछ†—स्त्री०=मूंछ।

उप० मूंछ का वह रूप जो उपसर्ग की भांति समस्त पदो के आरंभ मे लगता है। जैसे—मुछकटा, मुछमुडा।

मुछ-कटा—वि०[हिं० मूंछ+काटना] जिसकी मूंछें कटी या काट दी गई हों।

मुछमुंडा—वि० [हिं० मूंछ+मूंडना] जिसकी मूंछें मूंडी हुई हो। सफाचट।

मुछाकडा—वि०=मुच्छल।

मुछाना†—अ० [स० मूर्च्छा+हिं० ना (प्रत्य०)] मूर्च्छित होना।

स०=मूर्च्छित करना।

मुछियल—वि०=मुच्छल।

मुजक्कर—वि० [अ०मुजक्कर] जिसमे पुरुष या नर के गुण, विशेषताएँ आदि हों। पुरुष-सबधी। पुलिंग।

मुजतर—वि० [अ० मज्तर] बेचैन। विकल।

मुजतहिद—वि० [अ० मुज्तहिद] परिश्रमी।

पु० शिया सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो धार्मिक विषयो पर अपना निर्णय देता है।

मुजदा—पु० [फा० मुज्द] शुभ सवाद। अच्छी खबर।

मुजफ्फर—वि० [अ० मुजफ्फर] विजयी। विजेता।

मुजमिल†—अव्य० [अ०मिन् जुम्ल.] १ सब मिलाकर। कुल मिलाकर। २ सबमे से।

पु० सख्याओं का जोड। योग।

मुजम्मा—पु० [अ० मुजम्म] चमडे या रस्सी का वह फेरा जो घोडे को आगे बढने से रोकने के लिए उसकी सामची या दुमची से पिछाडी की रस्सी के साथ लगा रहता है।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

मुजरई†—पु०=मुजराई।

मुजरा—वि० [अ० मुज्रा] १. जो जारी किया गया हो। २ (धन) जो प्राप्य होने के कारण किसी देय मे से काट लिया जाय। जैसे—हमारे दस रुपए इसमे से मुजरा कर दो।

पु० [अ०] १ किसी बडे के सामने झुकझुककर किया जानेवाला

अभिवादन। २. वह गाना जो महफिल आदि मे वेश्या बैठकर गाती हो।

मुजराई—पु० [फा० मुजरा] १. वह जो राजा, रईसों आदि के सामने झुककर मुजरा अर्थात् अभिवादन करता हो। जैसे—दरबार मे बहुत से मुजराई उपस्थित थे। २. वह जो बडे आदमियो को नित्य आकर सलाम कर जाने के बदले मे ही वेतन पाता हो।

स्त्री० [हिं० मुजरा+ई (प्रत्य०)] १ रकम मुजरा करने अर्थात् काटने की किया या भाव। २ मुजरा की हुई अर्थात् काटकर घटाई हुई रकम ।

मुजराकद—पु० [स० मुजर] एक प्रकार का कद। मुजात ।

मुजरिम—वि० [अ० मुज्रिम] १ जिसने कोई जुर्म या अपराध किया हो। २. जिस पर जुर्म या अपराध का आरोप हुआ या लगाया गया हो। अभियुक्त।

मुजर्रद—वि० [अ०] १. अकेला। एकाकी। २ बिन-व्याहा। कुँआरा। ३. संसार-त्यागी। विरक्त।

मुजर्रब—वि० [अ०] १ जो तजरुबा करने पर ठीक जान पडा हो। २. आजमाया हुआ। परीक्षित। जैसे—मुजर्रब दवा ।

मुजल्लद—वि० [अ०] (पुस्तक) जिस पर जिल्द बँधी या मढी हो। जिल्ददार। जिल्द से युक्त।

मुजव्वज (जा)—वि० [अ० मुजव्वज़] १ तजवीज किया हुआ। प्रस्तावित। २. निर्णीत।

मुजाव्विज—पु० [अ०] तजवीज करनेवाला। प्रस्तावक।

मुजस्सिम—वि० [अ०] १ जो जिस्म या शरीर के रूप मे हो। २. शरीरधारी। साकार।

अव्य० १ प्रत्यक्ष रूप से। स्पष्टत । २ शरीर सहित। स-शरीर। ३ शरीर धारी के रूप मे।

मुजस्सिमा—पु० [अ०] मूर्ति। प्रतिमा।

मुजहिर—वि० [अ० मुज्हिर] जाहिर अर्थात् प्रकट या स्पष्ट करनेवाला। पु० १ गवाह। साक्षी। २. गुप्तचर।

मुजाफर—वि० [अ० जाफरान से] जिसमे जाफरान या केसर मिला हुआ हो। केसरिया।

पु० एक प्रकार का मीठा पुलाव जिसमे केसर यथेष्ट मात्रा मे पडा होता है। केसरिया भात। (मुसल०)

मुजायका—पु० [अ० मुज़ायक] हानि। नुकसान।

मुजारा—वि० [अ० मुज़ारअ] समान। तुल्य ।

पु० कृषक। खेतिहर।

मुजारिया—वि० [अ०] जो जारी किया या कराया गया हो। जैसे—मुजारिया डिगरी।

मुजावर—पु० [अ० मुजाविर] [भाव० मुजावरी] १ पडोसी। प्रतिवेशी। २ वह फकीर जो दरगाह की चढत लेता हो।

मुजावरी—स्त्री० [अ० मुजाविरी] मुजावर का कार्य, पद या पेशा।

मुजाहिद—वि० [अ०] १. पराक्रमी। २ विधर्मियो से युद्ध करनेवाला।

मुजाहिम—वि० [अ०] आपत्ति, रोक-टोक या हस्तक्षेप करनेवाला।

मुजाहिमत—स्त्री० [अ०] १ रोकने या बाधा देने की क्रिया या भाव। रोक-टोक। बाधा। २ आपत्ति।

मुजिर—वि० [अ०] हानिकारक।

मुझ—सर्व० [हिं० मुझे] सर्व० 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्ता और सबध कारक की विभक्तियो के अतिरिक्त अन्य कारको की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—मुझको, मुझसे, मुझपर आदि।

विशेष—जब इस शब्द का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप मे होता है तब इसके साथ लगनेवाली विभक्ति से पहले वक्ता से सबद्ध कोई विशेषण भी आ जाता है। जैसे—(क) मुझ गरीब पर यह बोझ मत रखो। (ख) मुझ दुखिया को इतना मत सताओ। (ग) मुझ रोगी से यह आशा मत रखो। ऐसी अवस्था मे इसका प्रयोग सबधकारक मे भी होता है। जैसे—मुझ अभागे का यहाँ तुम्हारे सिवा और कौन है।

मुझे—सर्व० [स० मध्यम्, प्रा० मज्झम] सर्व० 'मैं' का कर्म और सप्रदान मे होनेवाला रूप जो उक्त कारको की विभक्तियो से युक्त समझा जाता है।

मुटकना—वि० [हिं० मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार मे छोटा या साधारण और सुदर। जैसे—मुटकना बाग।

मुटका—पु० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

वि० [स्त्री० मुटकी] मोटा। (व्यग्य)

मुटकी—स्त्री० [देश०] कुलथी नामक अन्न। खुरथी।

वि० स्त्री० हिं० 'मुटका' का स्त्री०।

मुट-मरदी—स्त्री० [हिं० मोटा+मरद] वह स्थिति जिसमे मनुष्य अच्छी दशा मे पहुँचकर अभिमानी हो जाता और दूसरो को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगता है।

मुटमुरी—पु० [देश०] भादो मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

मुटरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसका सिर, गरदन और छाती काली तथा बाकी शरीर कत्थई होता है। यह कौए से कही बढकर चालाक और चोर होती है।

†स्त्री०=मोटरी (छोटी गठरी)।

मुटाई—स्त्री०=मोटाई।

मुटाना—अ० [हिं० मोटा] १ शारीरिक स्थूलता मे वृद्धि होना। मोटा हो जाना। २ किसी प्रकार की विशेषता के कारण अभिमानी होना।

स० किसी को मोटा करना।

मुटापा—पु० [हिं० मुटाना+आपा (प्रत्य०)] १ शरीर के मोटे और भारी होने की अवस्था या भाव। २ किसी प्रकार की समृद्धि के कारण मन मे होनेवाला अभिमान या शेखी।

क्रि० प्र०—चढना।

मुटार—स्त्री० [?] १ डुबकी। गोता। २ शरीर को गठरी की तरह बनाने की एक मुद्रा जो जल मे कूदने के लिए बनाई जाती है। (बुन्देल०) उदा०—तैरने के लिए मुटार लगायगा।—वृदावनलाल वर्मा।

मुटासा—वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] [स्त्री० मुटासी] (व्यक्ति) जो कुछ या थोडा धनवान् होते ही अभिमानपूर्वक आचरण करने लगा हो।

मुटिया—पु० [हिं० मोटा=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ या गट्ठर ढोनेवाला मजदूर।

मुट्ठा—पु० [हिं० मूठ] [स्त्री० अल्पा० मुट्ठी] १. किसी चीज का उतना बाँधा या लपेटा हुआ अंश जो हाथ की मुट्ठी में पकड़कर ले जाया जा सकता हो। जैसे—घास-फूस का मुट्ठा, कागजों या सूत का मुट्ठा। २ किसी चीज की पूरी और भरपूर भरी मुट्ठी। जैसे—मुट्ठा भर चावल। ३ किसी चीज का बँधा हुआ पुलिंदा। जैसे—धूप-बत्ती का मुट्ठा। ४ औजार आदि पकड़ने का दस्ता। बेंट। मूठ। ५ धुनियों का वह औजार जिससे रूई धुनते समय तांत पर आघात किया जाता है। ६ कपड़े की गद्दी जो प्रायः पहलवान आदि बाँहों पर मोटाई दिखलाने या सुंदरता बढ़ाने के लिए बाँधते हैं।

मुट्ठा-मुहेरा—स्त्री० [देश०] युवा स्त्री। (कहार)

मुट्ठी—स्त्री० [स० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १ हथेली की वह मुद्रा या स्थिति जिसमें उँगलियाँ अन्दर की ओर मोड़कर जोर से बंद कर ली जाती है।

पद—बँधी मुट्ठी=ऐसी स्थिति जिसमें भीतरी रहस्य और लोगों पर प्रकट न हो सकता हो। जैसे—अभी तो घर की बँधी मुट्ठी है, पर जब चारों भाई अलग हो जायँगे, तब सबका परदा खुल जायगा अर्थात् सबको भीतरी स्थिति का पता लग जायगा।

मुहा०—(किसी की) मुट्ठी गरम करना=किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने के लिए चुपचाप उसके हाथ में कुछ रुपये रखना। (किसी की) मुट्ठी में होना=पूरी तरह से अधिकार या कब्जे में होना। जैसे—उसकी चोटी हमारी मुट्ठी में है, वह कहाँ जा सकता है।

२ उतनी वस्तु जितनी उपरोक्त मुद्रा के समय हाथ में आ सके। जैसे—एक मुट्ठी आटा साधू को दे दो। ३ उक्त स्थिति में लाई हुई हथेली के बराबर का विस्तार जिसका प्रयोग ऊँचाई, लंबाई आदि नापने के लिए होता है। जैसे—इसका किनारा मुट्ठी भर और ऊँचा होना चाहिए। ४ किसी के शरीर की थकावट, दरद आदि दूर करने के लिए उसके अंगों को बार-बार मुट्ठी से पकड़कर दबाने की क्रिया। चपी। ५ बच्चों की चुसनी जिसे वे मुट्ठी में पकड़कर प्रायः चूसते रहते हैं। ६ घोड़े का सुम और टखने के बीच का भाग।

मुठ-भेड़—स्त्री० [हिं० मुट्ठी+भिड़ना] १ ऐसी लड़ाई जिसमें दो व्यक्ति या दल परस्पर एक दूसरे पर मुट्ठियों से प्रहार करते हैं। २ दो पक्षों विशेषतः शत्रु पक्षों में थोड़ी देर के लिए परन्तु जमकर होनेवाली लड़ाई। ३ सामना। भेंट।

मुठिका—स्त्री० [स० मुष्टिका] १ मुट्ठी। २ घूँसा। मुक्का।

मुठिया—स्त्री० [स० मुष्टिका] १. उपकरण या औजार का दस्ता। बेंट। २. छड़ी, छाते आदि का वह सिरा जो हाथ में पकड़ा जाता है। मूठ। ३ रूई धुनते समय धुनकी को तांत पर आघात करने का लकड़ी का उपकरण।

मुठियाना—स० [हिं० मुट्ठा+आना (प्रत्य०)] १ मुट्ठी में भरना या लेना। २ बटेरों को लड़ने के लिए उत्तेजित करने के उद्देश्य से बारबार मुट्ठी में भरना। ३ दबाने के उद्देश्य से शरीर के किसी अंग को बार-बार मुट्ठी में भरना और फिर ढीला छोड़ देना। ४ मुट्ठियों से हलका आघात करना।

मुठी†—स्त्री०=मुट्ठी।

मुठुकी†—स्त्री०=मुट्ठी।

मुड़†—हिं० मूँड़ का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—मुड़-चिरा।

मुड़क—स्त्री० [हिं० मुड़कना] मुड़कने की क्रिया या भाव।

मुड़कना—अ० [हिं० मुड़ना] १. लचक कर किसी ओर मुड़ना या घूमना। २. किसी अंग का झटके आदि के कारण किसी ओर नस जाना। जैसे—कलाई या पहुँचा मुड़कना। ३. वापस आना। लौटना। ४ हिचकना। रुकना। ५. चौपट या नष्ट होना। ६ दे० 'मुड़ना'।

मुड़काना—स० [हिं० मुड़कना का स० रूप] १ ऐसा काम करना जिससे कुछ मुड़के। मुड़कने में प्रवृत्त करना। जैसे—किसी का हाथ मुड़काना। २. वापस लाना। लौटाना। ३. चौपट या नष्ट करना। ४ दे० 'मोड़ना'।

मुड़चिरा—वि०=मुँड़-चिरा।

मुड़ना—अ० [स० मुरण=लिपटना, फेरा खाना, हिं० 'मोड़ना' का अ० रूप] १. किसी सीधी, खड़ी या ठोस चीज का किसी ओर झुक जाना। २. गतिशील अथवा स्थित व्यक्ति या पदार्थ का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। ३ किसी धारदार किनारे या नोक का इस प्रकार झुक जाना कि वह आगे की ओर न रह जाय। जैसे—छुरी की धार मुड़ना। ४. वापस आना। लौटना। ५. किसी काम या बात से विरत होना। ६ जमीन पर गिरना। उदा०—विवेक सहाई सहित सो सुभग संजुग महि मुरे।—तुलसी। ७ जमीन पर इधर-उधर लोटना। ८. संकोच करना। हिचकना। उदा०—गयो सभासद नेकु न मुर (मुरा)।—तुलसी।

मुड़-परैना†—पु० [हिं० मूँड़=सिर+पारना=रखना] फेरी करके सौदा बेचनेवालों का टुकना जिसमें वे बिक्री की चीजें रखते हैं।

मुड़ला†—वि०=मुंडा (बिना बालोंवाला)।

मुड़वाना—स०=मुड़वाना (मुँडन कराना)।

मुड़वारी—स्त्री० [हिं० मूँड़+वारी (प्रत्य०)] १ मुँड़ेरा। २ सिरहाना। ३. सिर की ओर का अंश या भाग।

मुड़हा†—वि०=मूढ़ (मूर्ख)।

मुड़हर—पु० [हिं० मूँड़+हर (प्रत्य०)] १ साड़ी का वह अंश जो सिर पर पड़ता है। २ सिर का अगला भाग।

मुड़हा†—वि०=मूढ़।

मुड़ाना—स० १.=मुँड़ाना। २=मुँड़वाना।

मुड़िया—पु० [हिं० मूँड़ना+इया (प्रत्य०)] १. वह जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो। २. वह जो सिर मुँड़ाकर संसार-त्यागी या विरक्त हो गया हो।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

मुडेरा†—पु०=मुँडेरा।

मुड्ढ—पु० [स० मूर्द्धा] १ प्रधान या मुख्य व्यक्ति। २ बहुत बड़ा धूर्त। उदा०—घड़ी मिलने की उतनी खुशी न थी जितनी एक मुड्ढ पर विजय पाने की थी।—प्रेमचंद।

मुणणना†—अ०=मुनमुनाना।

मुतजन—पु० [फा०] एक प्रकार का खट-मीठा पुलाव।

मुतअइयन—वि० [अ०] तैनात या नियुक्त किया हुआ। (व्यक्ति)

मुतअद्दी—वि० [अ०] १ मर्यादा का उल्लंघन या सीमा का अतिक्रमण

मुद्र-धातु—स्त्री० [स० प० त०] सीसे के योग या मिश्रण से बनी हुई वह धातु जिससे मुद्रण या छापे के अक्षर ढाले जाते हैं। (टाइप-मेटल)

मुद्र-लिख—पु० [स०] टाइप करने की मशीन। (टाइपराइटर)

मुद्र-लेखक—पु० [प० त०] टाइप करनेवाला। (टाइपिस्ट)

मुद्रांक—पु० [स० मुद्रा-अक, मध्य० स०] १. सरकारी कागज जिस पर अर्जी-दावा लिखकर अदालत मे दाखिल किया जाना है या जिस पर पक्की लिखा-पढी की जाती है। २. डाक का टिकट। ३. छाप। मोहर।

मुद्रांकन—पुं० [स० मुद्रा-अंकन, तृ० त०] [भू०कृ० मुद्रांकित] १. किसी प्रकार की मुद्रा की सहायता से चिह्न आदि अकित करने का काम। २. छापने का काम या भाव। छपाई।

मुद्रांकित—भू० कृ० [स० मुद्रा-अकित, तृ० त०] १ (पदार्थ) जिस पर मुद्राकन हुआ हो। २ मोहर किया या लगाया हुआ। ३. (व्यक्ति) जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हो। (वैष्णव)

मुद्रा—स्त्री० [स० मुद्र+टाप्] १ किसी चीज पर चिह्न, नाम आदि अकित करने की मोहर। (सील) २ ऐसी अँगूठी जिस पर किसी का नाम या और कोई वैयक्तिक चिह्न अकित हो।

विशेष—प्राचीन भारत मे प्राय राजा, व्यापारी आदि ऐसी ही अँगूठी से लेख्यो आदि को प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए उन पर अपनी मोहर करने या छाप लगाने का काम लेते थे।

३. उक्त के आधार पर प्राचीन भारत मे किसी मार्ग से आने-जाने का राजकीय अधिकार-पत्र जिस पर उक्त प्रकार की छाप अकित रहती थी। राहदारी का परवाना। ४. विष्णु के शख, चक्र आदि आयुधो के वे चिह्न जो वैष्णव भक्त तथा साधु अपनी छाती, बाँह आदि अगो पर अकित कराते या तपे हुए लोहे से दगवाते है। ५. राज्य द्वारा प्रचलित भिन्न-भिन्न मूल्योंवाले वे सभी धातु-खड जिन पर राज्य की छाप होती है और जो किसी देश मे क्रय-विक्रय के माध्यम या साधन के रूप मे प्रचलित होते है। सिक्का। (क्वायन) जैसे—प्राचीन काल की अनाहत मुद्रा, आधुनिक काल की आहत मुद्रा। ६ आज-कल ऐसी सभी चीजें जो क्रय-विक्रय के सुभीते या देना-पावना चुकाने के लिए उक्त साधन के रूप मे राज्य या राष्ट्र के द्वारा मान्य कर ली गई हो और जो जनता मे नि सकोच भाव से देन-लेन के काम मे आती हो। द्रव्य। धन। (मनी) जैसे—सरकारी नोट, सिक्के आदि। ७. किसी विशिष्ट देश या राष्ट्र मे प्रचलित उक्त प्रकार के सभी उपकरण या साधन। चलार्थ। (करेन्सी) जैसे—भारतीय मुद्रा, रूसी मुद्रा, सुलभ मुद्रा आदि। ८. गोरखपथी साधुओ का कान मे पहनने का काठ, स्फटिक आदि का कुडल या वलय। ९. खडे रहने, बैठने आदि के समय शरीर के अगो की कोई विशिष्ट स्थिति। ठवन। (पोस्चर) १०. आँख, नाक, मुँह, हाथ आदि की कोई ऐसी क्रिया जिससे मन की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति या भाव प्रकट होता हो। इगित। (जेस्चर) जैसे—उनके मुख की मुद्रा से ही उनका आशय प्रकट हो जाता था। ११. धार्मिक क्षेत्र मे, आराधन, ध्यान, पूजन आदि के समय के विशिष्ट प्रकार के बैठने के अनेक ढगो मे से कोई ऐसा ढग जो किसी प्रकार की फल-सिद्धि कराने मे सहायक माना जाता हो। जैसे—(क) तात्रिको की धेनु मुद्रा, पद्म मुद्रा। (ख) हठयोग की खेचरी, गोचरी, भूचरी आदि मुद्राएँ। १३. आधुनिक मुद्रण कला मे, ग्रथों, सामयिक पत्रो आदि की छपाई के लिए सीसे के ढले हुए उल्टे अक्षर जो छापने पर सीधे आते हैं। (टाइप) १४. साहित्य मे एक प्रकार का शब्दालंकार जो श्लेष अलकार का एक भेद है और जिसमे किसी साधारण वर्णन के आधार पर प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ तो निकलता ही हो, इसके सिवा शब्दों के कुछ अक्षर अपने आगे-पीछेवाले दूसरे अक्षरो के साथ मिलाने पर कुछ और अर्थ भी निकलता हो। जैसे—की करपा करतार (ईश्वर ने कृपा की) मे कीकर, पाकर और तार या ताड वृक्ष भी आ जाते हैं। और जा मन फल सा आ मिला (वह मन को वाछित फल के रूप में प्राप्त हुआ) मे जा मन या जामुन, फल सा या फालसा आ मिला या आँवला फलो के नाम भी आ जाते है। इसी प्रकार 'कच्चोरी पिय हे सखी, पक्कोरी प्रिय नाहि। बराबरी कैसे करूँ, पूरी परती नाहि।' मे कचौरी, पकौडी, बडा, बड़ी और पूरी नामक पकवानो के नाम भी आ जाते हैं। १५. तात्रिको की बोल-चाल में भूना हुआ अन्न या उसके दाने। १६. अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का सक्षिप्त नाम।

मुद्रा-कर—पु० [स० प० त०] १. वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। २ प्राचीन भारत मे राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके हाथ मे राजा की मोहर रहती थी। ३ वह जो किसी प्रकार का मुद्रण करता हो।

मुद्रा कान्हड़ा—पुं० [स० मुद्रा+हि० कान्हडा] एक प्रकार का राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्राक्षर—पु० [स० मुद्र-अक्षर, मयू० स०] १ वह अक्षर जिसका उपयोग किसी प्रकार के मुद्रण के लिए होता हो। २ आज-कल सीसे के वे अक्षर जिनमें छापेखाने मे पुस्तकें आदि छपती है। टाइप।

मुद्रा-टोडी—स्त्री० [सं० मुद्रा+हि० टोडी] एक प्रकार की रागिनी जिसमें सात कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्रा-तत्त्व—पु० [स० ष० स०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्को आदि की सहायता से उस देश की ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

मुद्रा-बाहुल्य, मुद्रा-विस्तार—पु० दे० 'मुद्रा-स्फीति'।

मुद्रा-यंत्र—पु० [स० प० त०] छापने या मुद्रण करने का यत्र।

मुद्रा-विज्ञान—पु० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-शास्त्र—पु० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-संकोच—पु० [स० प० त०] दे० 'अवस्फीति'।

मुद्रा-स्फीति—स्त्री० [स० प० त०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह स्थिति जिसमे कागजी मुद्रा या नोट देश की व्यापारिक आवश्यकताओं से कहीं अधिक प्रचलित कर दिए जाते हैं, और इसी लिए जिसके फलस्वरूप देश मे सब चीजें बहुत मँहगी बिकने लगती हैं। (इन्फ्लेशन)

मुद्रिका†—स्त्री०=मुद्रिका।

मुद्रिका—स्त्री० [स० मुद्रा+कन्+टाप्] १ अँगूठी। २ कुश की वह अँगूठी जो तर्पण आदि करते समय पहनी जाती है। ३ सिक्का।

मुद्रित—भू० कृ० [स० मुद्रा+इतच्] १ मुद्रण किया हुआ। २ छपा या छापा हुआ। ३. मुँदा हुआ। बद। ४. त्यागा या छोड़ा हुआ।

मुत्तहिद—वि० [अ० मुत्तहद] १ इत्तिहाद रखनेवाला। २. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। ३. मेल-मिलाप करानेवाला।

मुत्ती†—स्त्री० [स० मूत्र] मूत्र। पेशाव। (बालक)
†पु०=मोती।

मुद—पु० [स०] मोद। प्रसन्नता।

मुदगर—पु० दे० 'मुगदर'।

मुदव्विर—वि० [अ०] १ बुद्धिमान्। २. प्रबन्ध-कुशल। ३. राज-नीतिज्ञ।

मुदम्मिग—वि० [अ०] अभिमानी।

मुदरा—पु० [देश०] अफीम, भाँग, शराब और धतूरे के योग से बनाया जानेवाला एक तरह का मादक पेय।

मुदर्रिस—पु० [अ०] [भाव० मुदर्रिसी] लड़कों को पढ़ानेवाला व्यक्ति। अध्यापक।

मुदर्रिसी—स्त्री० [अ०] १. मुदर्रिस का काम, पद या भाव। अध्यापन।

मुदवंत*—वि० [स० मोद+हि० वत (प्रत्य०)] हर्षयुक्त। मुदित।

मुदा—स्त्री० [स०√मुद् (प्रसन्न होना)+क+टाप्] मोद। आनद।
पु० [अ० मद्आ] १. अभिप्राय। तात्पर्य। २. अर्थ। आशय।

मुदाखलत—स्त्री० [अ०] १. दखल देना। हस्तक्षेप। २. रोक-टोक।
पद—मुदाखलत बेजा=दूसरे के घर या जमीन मे उसकी इजाजत के बिना चला जाना। अनधिकार प्रवेश।

मुदाम—वि० [फा०] नित्य। शाश्वत।
अव्य० निरतर। लगातार।
पु० शराब।

मुदामी—वि० [फा०] सदा बना रहनेवाला। सार्वकालिक।
स्त्री० [फा०] नित्यता।
वि०=मुदाम।

मुदित—भू० कृ० [स०√मुद्+क्त] मोद से युक्त। हर्षित। प्रसन्न।
पु० आलिंगन का एक प्रकार।

मुदिता—स्त्री० [स० मुदित+टाप्] १. मोद। हर्ष। २. साहित्य मे परकीया नायिकाओं मे से एक जो मनोवांछित प्रकार की स्थिति तथा प्रिय की प्राप्ति से अत्यधिक प्रसन्न हो। ३. योगशास्त्र में समाधि के योग्य सस्कार उत्पन्न करनेवाला एक परिकर्म जिससे पुण्यात्माओं को देखकर हर्ष उत्पन्न होता है।

मुदिर—पु० [स०√मुद्+किरच्] १. बादल। मेघ। २. कामुक व्यक्ति। ३. मेढक।

मुदौवर—वि० [अ०] गोल। मडलाकार।

मुद्ग—पु० [स०√मुद्+गक्] मूँग नामक अन्न।

मुद्ग-वल्ला—स्त्री० [स० ब० स०+टाप्] वनमूँग।

मुद्ग-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] वनमूँग।

मुद्ग-भोजी (जिन्)—पु० [स० मुद्ग√भुज् (खाना)+णिनि, उप० स०] घोडा।

मुद्ग-मोदक—पु० [स० ष० त०] मूँग का लड्डू।

मुद्गर—पु० [स० मुद्√गृ (लीलना)+अच्] १. पुरानी चाल का एक था। २. कसरत करने का मुगदर नामक उपकरण। ३. एक प्रकार की मछली। ४. मोगरा नामक पौधा और उसका फूल।

मुद्गराक—पु० [स० मुद्गर-अंक, ष० त०] प्राचीन भारत मे मुद्गर का वह चिह्न जो धोबियों के यहाँ वस्त्रों पर पहचान के लिए लगाया जाता था।

मुद्गल—पु० [स० मुद्ग√ला (लेना)+क] १. एक उपनिषद् का नाम। २. एक गोत्रकार मुनि। ३ रोहित नामक तृण। रूसा घास।

मुद्आ—पु० [अ० मुद्आ] १. उद्देश्य। तात्पर्य। २. अर्थ। मतलब।

मुद्दइया—स्त्री० [अ० मुद्दईय, मुद्दई का स्त्री० रूप] दावा करनेवाली स्त्री।

मुद्दई—पु० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. वह जो किसी चीज पर अपना दावा या अधिकार प्रकट करता हो। दावेदार। २. वह जिसने अदालत मे किसी पर दावा किया हो। ३. दुश्मन। शत्रु।

मुद्दत—स्त्री० [अ०] १. किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। अवधि। जैसे—इस हुडी की मुद्दत पूरी हो गई है।
मुहा०—मुद्दत काटना=थोक माल का मूल्य अवधि से पहले देने पर अवधि के बाकी दिनों तक का सूद काटना। (कोठीवाल)
२. बहुत दिनों का समय। दीर्घ काल। जैसे—यह एक मुद्दत की बात है। ३. देर। विलब।

मुद्दती—वि० [अ० मुद्दत+हि० ई (प्रत्य०)] १. जिसमे कोई अवधि हो। जैसे—मुद्दती हुडी। २. बहुत दिनों का। पुराना।

मुद्दा—पु० [अ० मुद्आ] अभिप्राय। आशय।
अव्य० अभिप्राय या आशय यह कि। तात्पर्य यह कि।

मुद्दाअलेह—पु०=मुद्दालेह।

मुद्दालेह—पु० [अ० मुद्आ अलेह] वह व्यक्ति जिस पर दावा हुआ या किया गया हो। प्रतिवादी।

मुद्ध†—वि०=मुग्ध।

मुद्धो—स्त्री० [देश०] रस्सी आदि की एक प्रकार की गाँठ जिसके अन्दर से दूसरी रस्सी इधर-उधर खिसक सकती है।

मुद्र—पु० [स०√मुद्+रक्] छपाई के काम मे आनेवाला सीसे का अक्षर। (टाइप)
वि० [स्त्री० मुद्रा] मोद देनेवाला। हर्षकारक।

मुद्रक—वि० [स०√मुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] मुद्रण करनेवाला।
पु० १ मुद्रण-कला का ज्ञाता। २. छापेखाने का वह अधिकारी जिसकी देख-रेख मे छपाई सबधी सब कार्य होते हों।

मुद्रण—पु० [स०√मुद्+णिच्+ल्युट्—अन] १. मुद्रा से अकित करने की क्रिया या भाव। छाप लगाना। २ ठीक तरह से काम चलाने के लिए नियम आदि बनाना और लगाना। ३. आज-कल ठप्पे, सीसे के अक्षरों आदि से कागज, पुस्तकें, पत्र आदि छापने की क्रिया या भाव।

मुद्रणा—स्त्री० [स०√मुद्+णिच्+युच्—अन+टाप्] अँगूठी।

मुद्रणालय—पु० [स० मुद्रण—आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का मुद्रण होता हो। २. आज-कल पुस्तकें आदि छापने का कारखाना। छापाखाना। प्रेस।

मुद्र-धातु—स्त्री० [स० प० त०] सीसे के योग या मिश्रण से बनी हुई वह धातु जिससे मुद्रण या छापे के अक्षर ढाले जाते हैं। (टाइप-मेटल)

मुद्र-लिख—पु० [स०] टाइप करने की मशीन। (टाइपराइटर)

मुद्र-लेखक—पु० [प० त०] टाइप करनेवाला। (टाइपिस्ट)

मुद्रांक—पु० [स० मुद्रा-अक, मध्य० स०] १ सरकारी कागज जिस पर अर्जी-दावा लिखकर अदालत मे दाखिल किया जाता है या जिस पर पक्की लिखा-पढी की जाती है। २. डाक का टिकट। ३. छाप। मोहर।

मुद्रांकन—पु० [स० मुद्रा-अकन, तृ० त०] [भू०कृ० मुद्राकित] १ किसी प्रकार की मुद्रा की सहायता से चिह्न आदि अकित करने का काम। २ छापने का काम या भाव। छपाई।

मुद्राकित—भू० कृ० [स० मुद्रा-अकित, तृ० त०] १. (पदार्थ) जिस पर मुद्राकन हुआ हो। २. मोहर किया या लगाया हुआ। ३. (व्यक्ति) जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हो। (वैष्णव)

मुद्रा—स्त्री० [सं० मुद्र+टाप्] १. किसी चीज पर चिह्न, नाम आदि अकित करने की मोहर। (सील) २. ऐसी अँगूठी जिस पर किसी का नाम या और कोई वैयक्तिक चिह्न अकित हो।

विशेष—प्राचीन भारत मे प्राय राजा, व्यापारी आदि ऐसी ही अँगूठी से लेख्यो आदि को प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए उन पर अपनी मोहर करने या छाप लगाने का काम लेते थे।

३. उक्त के आधार पर प्राचीन भारत मे किसी मार्ग से आने-जाने का राजकीय अधिकार-पत्र जिस पर उक्त प्रकार की छाप अकित रहती थी। राहदारी का परवाना। ४. विष्णु के शख, चक्र आदि आयुधो के वे चिह्न जो वैष्णव भक्त तथा साधु अपनी छाती, बाँह आदि अगो पर अकित कराते या तपे हुए लोहे से दगवाते है। ५. राज्य द्वारा प्रचलित भिन्न-भिन्न मूल्योंवाले वे सभी धातु-खड जिन पर राज्य की छाप होती है और जो किसी देश मे क्रय-विक्रय के माध्यम या साधन के रूप मे प्रचलित होते है। सिक्का। (क्वायन) जैसे—प्राचीन काल की अनाहत मुद्रा, आधुनिक काल की आहत मुद्रा। ६ आज-कल ऐसी सभी चीजे जो क्रय-विक्रय के सुभीते या देना-पावना चुकाने के लिए उक्त साधन के रूप मे राज्य या राष्ट्र के द्वारा मान्य कर ली गई हो और जो जनता मे नि सकोच भाव से देन-लेन के काम मे आती हो। द्रव्य। धन। (मनी) जैसे—सरकारी नोट, सिक्के आदि। ७ किसी विशिष्ट देश या राष्ट्र मे प्रचलित उक्त प्रकार के सभी उपकरण या साधन। चलार्थ। (करेन्सी) जैसे—भारतीय मुद्रा, रूसी मुद्रा, सुलभ मुद्रा आदि। ८. गोरखपथी साधुओ का कान मे पहनने का काठ, स्फटिक आदि का कुडल या वलय। ९. खडे रहने, बैठने आदि के समय शरीर के अगो की कोई विशिष्ट स्थिति। ठवन। (पोस्चर) १० आँख, नाक, मुँह, हाथ आदि की कोई ऐसी क्रिया जिससे मन की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति या भाव प्रकट होता हो। इगित। (जेस्चर) जैसे—उनके मुख की मुद्रा से ही उनका आशय प्रकट हो गया था। ११. धार्मिक क्षेत्र मे, आराधन, ध्यान, पूजन आदि के समय कुछ विशिष्ट प्रकार के बैठने के अनेक ढगो मे से कोई ऐसा ढग जो किसी प्रकार की फल-सिद्धि कराने मे सहायक माना जाता हो। जैसे—(क) तात्रिको की धेनु मुद्रा, पद्म मुद्रा। (ख) हठयोग की खेचरी, गोचरी, भूचरी आदि मुद्राएँ। १३. आधुनिक मुद्रण कला मे, ग्रंथो, सामयिक पत्रो आदि की छपाई के लिए सीसे के ढले हुए उलटे अक्षर जो छापने पर सीधे आते हैं। (टाइप) १४. साहित्य मे एक प्रकार का शब्दालकार जो श्लेष अलकार का एक भेद है और जिसमे किसी साधारण वर्णन के आधार पर प्रवृत्त या प्रस्तुत अर्थ तो निकलता ही हो, इसके सिवा शब्दो के कुछ अक्षर अपने आगे-पीछेवाले दूसरे अक्षरो के साथ मिलाने पर कुछ और अर्थ भी निकलता हो। जैसे—की करपा करतार (ईश्वर ने कृपा की) मे कीकर, पाकर और तार या ताड वृक्ष भी आ जाते हैं। और जा मन फल सा आ मिला (यह मन को वांछित फल के रूप मे प्राप्त हुआ) मे जा मन या जामुन, फल सा या फालसा आ मिला या आँवला फलो के नाम भी आ जाते है। इसी प्रकार 'कच्चोरी पिय हे सखी, पक्कोरी प्रिय नाहिं। बराबरी कैसे करूँ, पूरी परती नाहिं।' मे कचौरी, पकौडी, बडा, बडी और पूरी नामक पकवानो के नाम भी आ जाते हैं। १५. तात्रिको की बोल-चाल मे भूना हुआ अन्न या उसके दाने। १६. अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का सक्षिप्त नाम।

मुद्रा-कर—पु० [स० प० त०] १. वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। २ प्राचीन भारत मे राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके हाथ मे राजा की मोहर रहती थी। ३ वह जो किसी प्रकार का मुद्रण करता हो।

मुद्रा कान्हड़ा—पु० [स० मुद्रा+हिं० कान्हडा] एक प्रकार का राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्राक्षर—पु० [स० मुद्र-अक्षर, मयू० स०] १ वह अक्षर जिसका उपयोग किसी प्रकार के मुद्रण के लिए होता हो। २ आज-कल सीसे के वे अक्षर जिनमे छापेखाने मे पुस्तकें आदि छपती हैं। टाइप।

मुद्रा-टोड़ी—स्त्री० [स० मुद्रा+हिं० टोडी] एक प्रकार की रागिनी जिसमे मात्र कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्रा-तत्त्व—पु० [स० ब० स०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्को आदि की सहायता से उस देश की ऐतिहासिक बातें जानी जाती है।

मुद्रा-बाहुल्य, मुद्रा-विस्तार—पु० दे० 'मुद्रा-स्फीति'।

मुद्रा-यंत्र—पु० [स० प० त०] छापने या मुद्रण करने का यत्र।

मुद्रा-विज्ञान—पु० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-शास्त्र—पु० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-संकोच—पु० [स० प० त०] दे० 'अवस्फीति'।

मुद्रा-स्फीति—स्त्री० [स० प० त०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह स्थिति जिसमे कागजी मुद्रा या नोट देश की व्यापारिक आवश्यकताओं से कहीं अधिक प्रचलित कर दिए जाते हैं, और इसी लिए जिसके फलस्वरूप देश मे सब चीजें बहुत मँहगी बिकने लगती हैं। (इन्फ्लेशन)

मुद्रिका†—स्त्री०=मुद्रिका।

मुद्रिका—स्त्री० [स० मुद्रा+कन्+टाप्] १ अँगूठी। २. कुश की वह अँगूठी जो तर्पण आदि करते समय पहनी जाती है। ३ सिक्का।

मुद्रित—भू० कृ० [स० मुद्रा+इतच्] १ मुद्रण किया हुआ। २ छपा या छापा हुआ। ३ मुँदा हुआ। बद। ४. त्यागा या छोड़ा हुआ।

परित्यक्त। ५ काम अर्थात् मैथुन या रति की मुद्रा में स्थित। ६ व्याहा हुआ। विवाहित।

मुधा—अव्य० [स०√मुह् (मुग्ध होना)+का, पृषो० ह्–ध्] व्यर्थ।
वि० १ असत्य। मिथ्या। २ व्यर्थ।
पु० १ असत्यता। २ व्यर्थता।

मुनक्का—पु० [अ०] एक प्रकार की बडी किशमिश या सूखा हुआ अगूर।

मुनगा—पु० [स० मधुगुजन या देश०] सहिजन।

मुनफसला—वि० [अ० मुन्फसिल] १. (विवाद या विषय) जिसका फैसला अर्थात् निर्णय हो चुका हो। निर्णीत। २. अलग। पृथक्।

मुनमुना—पुं० [देश०] १. मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान जो रस्सी की तरह बटकर छाना जाता है। २. गेहूँ के खेत मे पैदा होने-वाली मोथा नाम की घास जिसमे काले दाने या बीज भी होते हैं।
वि० बहुत थोड़ा। अल्प।

मुनरा†—पु० [स० मुद्रा] एक तरह का लोहे का बना हुआ कान का आभूषण।

मुनरी†—स्त्री०=मुंदरी।

मुनव्वर--वि० [अ०] १ प्रकाशमान। चमकीला। २. प्रज्वलित।

मुनहसिर—वि० [अ० मुनहसिर] अवलंबित। आश्रित।

मुनाजरा--पुं० [अ० मुनाजर] १. शास्त्रार्थ। २. तर्कशास्त्र।

मुनादा—वि० [अ०] १ आहूत। २. सर्वाधित।

मुनादी—स्त्री० [अ०] १ ढिंढोरा। डुग्गी।
क्रि० प्र०—पिटना।—पीटना।
२ डुग्गी बजाकर की जानेवाली सार्वजनिक घोषणा।
क्रि० प्र०—फिरना।—फेरना।

मुनाफा—पु० [अ०] क्रय-विक्रय मे आर्थिक दृष्टि से होनेवाला लाभ। नफा।

मुनाफाखोर—पु० [अ०+फा०] वह रोजगारी जो बहुत अधिक मुनाफा लेकर माल बेचता हो।

मुनाफाखोरी—स्त्री० [अ०+फा०] मुनाफाखोर होने की प्रवृत्ति या स्थिति।

मुनार—पु०=मीनार।

मुनारा--पु०=मीनार।

मुनाल—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत सुदर पहाडी पक्षी जिसकी हरी गरदन पर सुदर कठा सा होता है और जिसके सिर पर कलँगी होती है।

मुनासिब—वि० [अ०] उचित। वाजिब।

मुनासिबत—स्त्री० [अ०] १. मुनासिब होने की अवस्था या भाव। उपयुक्तता। औचित्य। २. पारस्परिक सबध।

मुनि—पु० [स०√मन् (जानना)+इन्] १ वह जो मनन करे। मननशील महात्मा। २. प्राचीन भारत मे बहुत मननशील तपस्वी या त्यागी महापुरुष। जैसे—अगिरा, पुलस्त्य, भृगु, कर्दम, पचशिख आदि। ३. विशिष्ट सात मुनियो के आधार पर सात की सख्या का वाचक पद। ४. जैनो के जिन देव। ५. पियाल या पयार का वृक्ष। ६ पलाश। ७. दमनक। दौना। ८. पुराणानुसार क्रौंच द्वीप का एक देश।
स्त्री० दक्ष की एक कन्या जो कश्यप की सब से बडी स्त्री थी।

मुनि-कुमार—पु० [ष० त०] १. मुनि का बालक या लडका। २ अल्प-वयस्क मुनि।

मुनिच्छद्र—पुं० [सं० ब० स०] मेथी।

मुनि-तरु—पु० [स० मध्य० स०] पतग। बकवृक्ष।

मुनि-त्रय—पु० [ष० त०] पाणिनि, पतजलि और कात्यायन ये तीनो मुनि।

मुनि-द्रुम—पु० [मध्य० स०] १. श्योनाक (वृक्ष)। २. पतंग या बक नामक वृक्ष।

मुनि-धान्य—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनि-पादप—पु० [मध्य० स०] दे० 'मुनि-द्रुम'।

मुनि-पित्तल—पुं० [ष० त०] ताँबा।

मुनि-पुत्र—पु० [ष० त०] दौना। दमनक।

मुनि-पुत्रक--पु० [स० मुनि-पुत्र+कन्] खजन पक्षी।

मुनि-प्रिय--पु० [ष० त०] १ एक प्रकार का धान्य जिसे पक्षिराज भी कहते हैं। २ पिंड-खजूर। ३ चिरोजे का पेड़। पियार।

मुनि-भक्त—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनि-भेषज—०पु [ष० त०] १. अगस्त का फूल। २ हड़। हर्रे। ३ उपवास। लंघन।

मुनि-भोजन—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनियाँ--पु० [देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक तरह का धान।
स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनि-वर--पु० [ष० त०] १ श्रेष्ठ मुनि। २. पुंडरीक वृक्ष। पुड-रिया। ३ दमनक। दौना।

मुनि-वल्लभ--पुं० [ष० त०] विजयसार। पि [illegible]साल।

मुनि-वृक्ष--पु० [मध्य० स०] १. श्योनक। [illegible] पतग। बकवृक्ष।

मुनि-व्रत—पु० [ष० त०] तपस्या।

मुनि-शस्त्र—पु० [ष० त०] सफेद कुश।

मुनि-सुत--पु० [ष० त०] दौना (पौधा)।

मुनींद्र—पुं० [मुनि-इन्द्र, ष० त०] १. बहुत बडा मुनि। मुनियो मे श्रेष्ठ। २. गौतम बुद्ध। ३. शिव। ४. एक दानव।

मुनी—पु०=मुनि।

मुनीब—पु० [अ०] मुनीम। (दे०)

मुनीम—पुं० [अ० मुनीब] [भाव० मुनीमी] १. प्रतिनिधि। २ अभिकर्ता। ३ आज-कल, वह व्यक्ति जो किसी आढ़त, कोठी, दुकान आदि के बही-खाते लिखता हो।† ४. खजाची।

मुनीमी—स्त्री० [हिं० मुनीम] मुनीम का काम, पद या भाव।
वि० मुनीम-सबधी।

मुनीश—पु० [स० मुनि-ईश, ष० त०] १ मुनियो मे श्रेष्ठ। २. विशद। ३. गौतम बुद्ध का एक नाम।

मुनीश्वर—पु० [सं० मुनि-ईश्वर, ष० त०] मुनीश।

मुनेस*—पुं०=मुनीश।

मुनैया† —स्त्री०=मुनिया (मादा लाल)।

मुन्ना—पु० [स० मानव] [स्त्री० मुन्नी] छोटे बच्चो आदि के लिए प्यार का सम्बोधन। जैसे—देखो मुन्ना, ऐसा काम नही करते।

वि० प्यारा। प्रिय।
पु० [देश०] तारकशी के कारखाने के वे दोनों खूंटे जिनमे जता लगा रहता है।
मुन्नूं--पु०=मुन्ना (प्रेम-पूर्ण सम्बोधन)।
मुन्यन्न--पु० [स० मुनि-अन्न, ष० त०] तिन्नी का चावल।
मुफ़रद--वि० [अ० मुफ़्रद] १ एक। २ अकेला।
मुफ़र्रस--पु० [अ०] फारसी भाषा द्वारा अपनाया हुआ किसी अन्य भाषा का तत्सम या तद्भव शब्द।
वि० फारसवालो का फारसी के रूप मे लाया हुआ।
मुफ़र्रह--वि० [अ० मुफ़र्रह] फरहत देनेवाला। उल्लसित करनेवाला।
मुफ़लिस--वि० [अ० मुफ़्लिस] [भाव० मुफ़लिसी] निर्धन। धन-हीन। गरीब।
मुफ़लिसी--स्त्री० [अ० मुफ़्लिसी] मुफ़लिस होने की अवस्था या भाव। गरीबी। निर्धनता।
मुफ़सिद--वि० [अ० मुफ़्सिद] १ फसादी। २. उपद्रवी।
मुफ़स्सिर--पु० [अ०] टीकाकार। भाष्यकार।
मुफ़स्सिल--वि० [अ०] १ तफसील अर्थात् ब्योरे के रूप मे लाया हुआ। २ स्पष्ट।
पु० किसी बड़े नगर के आस-पास के प्रदेश या स्थान। किसी बड़े शहर के आस-पास की छोटी वस्तियाँ।
मुफ़ीद--वि० [अ०] १ लाभकारी। फायदा देनेवाला। २ उपयोगी।
मुफ़्त--वि० [अ०] १ जिसकी प्राप्ति बिना कुछ दिये अथवा बिना मूल्य चुकाये हुए हो। २ जो यो ही आपसे आप अथवा बिना प्रयास के मिला हो।
मुहा०--मुफ़्त में=(क) योंही। बिना किसी कारण के। जैसे--मुफ्त मे हमारी भी जान हलाल की गई। (ख) निष्प्रयोजन। व्यर्थ।
मुफ़्तख़ोर--वि० [फा०] [भाव० मुफ्तखोरी] (व्यक्ति) जो दूसरो का धन लेना तथा खाना जानता हो पर स्वय कमाकर न खाता हो। मुफ्त मे दूसरो का माल हड़पनेवाला।
मुफ़्तख़ोरी--स्त्री० [फा०] १. मुफ्तखोर होने की अवस्था या भाव। २ मुफ्त मे दूसरो का माल खाते रहने की आदत या लत।
मुफ़्तरी--वि० [अ०] १ झूठा इलजाम लगानेवाला। २ झूठी बातें बनानेवाला। ३ फसादी।
मुफ़्ती--पु० [अ०] फतवा देनेवाला मौलवी।
वि० [अ० मुफ्त] जो बिना दाम दिये मिला हो। मुफ्त का।
स्त्री० वर्दी पहनने वाले अधिकारियो, सैनिको, सिपाहियो आदि के सादे और साधारण कपड़े।
मुफ़्लिस--वि०=मुफ़लिस।
मुबतिला--वि० [अ० मुब्तला] १ कष्ट या विपत्ति मे पड़ा हुआ। दु ख, सकट आदि से ग्रस्त। २ आसक्त। मुग्ध।
मुबर्रा--वि० [अ०] १ बरी या मुक्त किया हुआ। २ पवित्र। ३ निर्दोष। ४ अलग। पृथक्। ५ विरक्त।
मुबलिग़--वि० [अ० मुब्लग] १ जो खरा हो, खोटा न हो। २ रुपए आदि की सख्या का वाचक विशेषण। जैसे--मुबलिग सौ रुपए वसूल पाये।
वि० [अ० मुब्लिग] भेजनेवाला।
मुबस्सिर--वि० [अ०] १. अच्छे-बुरे तथा गुण-अवगुण की परख करने-वाला। पारखी। २ मर्मज्ञ। ३ समीक्षक।
मुबहिम--वि० [अ० मुब्ह्म] १. अस्पष्ट। २ द्व्यर्थक (बात)।
मुबादला--पु० [अ० मुबादिलः] अदला-बदला। आदान-प्रदान।
मुबारक--वि० [अ०] १ जिसके कारण बरकत हुई हो। २. कल्याण या मगल करनेवाला। शुभ।
अव्य० एक पद जिसका प्रयोग किसी को शुभ अवसर पर बधाई देने के लिए होता है।
मुबारकबाद--अव्य० [अ० मुबारक+फा० बाद] मुबारक हो।
पु०=मुबारक।
मुबारकबादी--स्त्री० [अ० मुबारक+फा० बादी] १. यह कहना कि जो अमुक अच्छा कार्य हुआ है वह आपके लिए मुबारक या शुभ हो। मगल-कामना प्रकट करने की क्रिया। २ शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले गीत।
मुबारक सलामत--स्त्री० [अ०] मुबारक देना और सलामती अर्थात् सकुशल चिरजीव होने की कामना करना।
मुबारकी†--स्त्री०=मुबारकबादी।
मुबालगा--पु० [अ० मुबालग़ः] बहुत बढ़ाकर कही हुई बात। अतिश-योक्ति। अत्युक्ति।
मुबाशरत--स्त्री० [अ०] मैथुन। सभोग।
मुबाह--वि० [अ०] १ शरीअत अर्थात् इस्लामी धर्मशास्त्र के अनु-कूल होनेवाला। २. जायज। विहित।
मुबाहिसा--पु० [अ० मुबाहस] १. तर्क-वितर्क। बहस। २ वाद-विवाद।
मुब्तदा--पु० [अ०] १. आरंभ। २ व्याकरण के वाक्य-विन्यास मे 'उद्देश्य' नामक तत्त्व।
वि० आरभ किया हुआ।
मुब्तदी--वि० [अ०] १. आरभिक। २ नौसिखिया।
मुब्तला--वि० [अ०]=मुबतला।
मुमकिन--वि० [अ०] जो कार्य-रूप मे परिणत हो सकता हो। सभव।
मुमतहिन--वि० [अ० मुम्तहिन] इम्तहान या परीक्षा लेनेवाला। परीक्षक।
मुमताज--वि० [अ० मुम्ताज़] १ बहुतो मे से चुनकर अलग किया हुआ। २ विशिष्ट। ३ प्रतिष्ठित।
मुमानियत--स्त्री० [अ० मुमानअत] मना करने या होने की अवस्था या भाव। मनाही।
मुमानी--स्त्री० [हिं० मामा का उर्दू स्त्री०] मामा की स्त्री। मामी। जैसे--मुँह पर मुमानी, पीठ पीछे गँवानी। (कहा०)
मुमुक्षा--स्त्री० [स०√मुच् (छोड़ना)+सन्+अ,+टाप्] मोक्ष की कामना।
मुमुक्षु--वि० [स०√मुच् (छोड़ना)+सन्+उ] [भाव० मुमुक्षता] जिसे मोक्ष की कामना हो।
मुमुक्षुता--स्त्री० [स० मुमुक्षु+तल्+टाप्] मुमुक्षु का धर्म या भाव। मुमुक्षु होने की अवस्था या भाव।

मुमुचान—पुं० [स०√मुच् (छोडना)+आनच्] १. वह जो मुक्त हो गया हो। २ बादल। मेघ।

मुमूर्षा—स्त्री० [स०√मृ (मरना)+सन्, द्वित्व,+अ,+टाप्] मरने की इच्छा। मृत्यु की कामना।

मुमूर्षु—वि० [स०√मृ+सन्, द्वित्व,+उ] जिसकी मृत्यु बहुत पास आ गई हो। जो अभी मर जाने को हो।

मुयस्सर—वि०=मयस्सर।

मुरंडा—पुं० [स० मुण्ड] भूने हुए गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू।

मुहा०—मुरंडा करना या बनाना=(क) भूनना। (ख) गठरी-सा बना देना। (ग) बहुत मारना-पीटना।

वि० १ बहुत सूखा हुआ। २ बहुत दुबला-पतला।

मुरंदा—पुं०=मुरंडा।

मुर—पुं० [स०√मुर् (लपेटना)+क] १ वेष्टन। वेठन। २ एक दैत्य जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

†अव्य० [हिं० मुड़ना=लौटना] दोबारा। फिर।

†पुं०=मुड़।

मुरई†—स्त्री०=मूली।

मुरक—स्त्री० =मुड़क।

मुरकना—अ०, स०=मुड़कना।

मुरका†—पुं० [देश०] १ बड़े डील-डौलवाला वह हाथी जिसके बड़े-बड़े तथा सुन्दर दाँत हों। २ गड़ेरियों की बिरादरी का भोज।

मुरकाना—स०=मुड़काना।

मुरकी—स्त्री० [हिं० मुरकना=घूमना] १ कान में पहनने की छोटी बाली। २ संगीत में, एक विशेष प्रकार से एक स्वर से घूमकर दूसरे स्वर पर आने की क्रिया।

मुरकुल—स्त्री० [देश०] एक तरह की लता।

मुरखाई†—स्त्री०=मूर्खता।

मुरगा—पुं० [फा० मुर्ग] [स्त्री० मुरगी] १ एक प्रसिद्ध नर पक्षी जिसके सिर पर कलगी होती है और जो प्रायः प्रभात के समय कुकड़ूँ-कूँ बोलता है। २ चिड़िया। पक्षी।

†स्त्री०=मूर्वा।

मुरगाबी—स्त्री० [फा० मुर्गाबी] मुरगे की जाति का एक पक्षी जो जल में तैरता और मछलियाँ पकड़ कर खाता है। जल-कुक्कुट। जल-मुरगा।

मुरगी—स्त्री० [हिं० मुरगा का स्त्री०] मादा मुर्ग। मुरगे की मादा।

पद—मुरगी का=एक प्रकार की गाली। जिसका अर्थ होता है—मुरगी की सन्तान। जैसे—आप खाता है गोश्त मुरगी का, मुझको देता है दाल अरहर की।

मुरचंग—पुं० [हिं० मुँहचग] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुरानी चाल का लोहे का बाजा। मुँहचग।

मुहा०—मुरचंग झाड़ना=निश्चित भाव से बैठकर व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना।

मुरचा—पुं०=मोरचा।

मुरची—पुं० [स०] पश्चिम दिशा का एक प्राचीन देश।

मुरछना—अ० [स० मूर्च्छन] १. मूर्च्छित अर्थात् अचेत या बेसुध होना। २. शिथिल होना।

मुरछल†—पुं०=मोरछल।

मुरछा†—स्त्री०=मूर्च्छा।

मुरछाना—अ० [स० मूर्च्छा] मूर्च्छित या अचेत होना। बेहोश होना। स० मूर्च्छित या अचेत करना।

मुरछावंत—वि०=मूर्च्छित।

मुरछित†—वि०=मूर्च्छित।

मुरज—पुं० [स० मुर√जन् (उत्पत्ति)+ड] मृदंग। पखावज।

मुरज-फल—पुं० [ब०स०] कटहल।

मुरजित्—पुं० [स० मुर√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] मुरारि।

मुरझाना—अ० [स० मूर्च्छन] १ रसे डंठलों, पत्तों, फूलों, वृक्षों आदि का जल न मिलने अथवा और किसी कारण से सूखने लगना। कुम्हलाना। २ (चेहरा या मन) उदास या सुस्त होना। कांति, श्री आदि से रहित या हीन होना। ३ शिथिल तथा शक्तिहीन होना।

संयो० क्रि०—जाना।

मुरड—पुं० [हिं०] गर्व। अभिमान। अहंकार।

मुरडकी†—स्त्री०=मरोड़।

मुरतंगा—पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत सख्त होती है।

मुरतकिब—पुं० [अ० मुर्तकिब] अपराध या दोष करनेवाला। अपराधी। दोषी।

मुरतहिन—पुं० [अ० मुर्तहिन] जिसके पास कोई वस्तु रेहन या गिरो रखी गई हो। रेहनदार।

मुरता—पुं० [देश०] एक तरह का झाड़।

मुरतिद—पुं० [अ०] (मुसलमान) जो इस्लामी धर्म छोड़कर काफिर हो गया हो।

मुरत्तब—वि० [अ०] १ तरतीब अर्थात् क्रम से लगाया हुआ। क्रमबद्ध। २ तैयार किया या बनाया हुआ। प्रस्तुत किया हुआ। संपादित। ३ तय किया हुआ।

मुरदनी—स्त्री० [फा० मुर्दनी] १ किसी के मुख पर दिखाई देनेवाले वे चिह्न या विकार जो मृत्यु के सूचक माने जाते हों।

मुहा०—चेहरे पर मुरदनी छाना या फिरना=(क) मुख पर मृत्यु के चिह्न प्रकट होना। (ख) चेहरे का उदास या श्री-हीन हो जाना।

२. शव के साथ उसकी अंत्येष्टि-क्रिया के लिए जाना। मुरदे के साथ उसके गाड़ने या जलाने के स्थान तक जाना। ३ मृतक की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिए जानेवालों का समूह।

क्रि० प्र०—में जाना।

मुरदा—पुं० [फा० मुर्दः] मृत प्राणी। शव।

पद—मुरदे का माल=ऐसा माल जिसका कोई वारिस न हो।

वि० १ मरा हुआ। मृत। २ इतना अधिक दुर्बल या शक्ति-हीन कि मरे हुए के समान जान पड़े। ३ बहुत ही कुम्हलाया, मुरझाया या सूखा हुआ। जैसे—मुरदा पान, मुरदा फल।

मुहा०—(किसी का) मुरदा उठना=मर जाना। (गाली)

जैसे—उसका मुरदा उठे। **मुरदा उठाना**=शव को अन्त्येष्टि-क्रिया के लिए ले जाना। **मुरदों से शर्त बाँधकर सोना**=बहुत अधिक और गहरी नींद मे सोना।

मुरदा-घर—पु० [हिं०] वह स्थान जहाँ मृतक व्यक्तियों के शव तब तक रखे जाते है, जब तक उन्हे गाडने या जलाने की व्यवस्था न हो। (मॉर्चुअरी)

विशेष—ऐसे स्थान प्राय. युद्ध-क्षेत्रों मे अस्थायी रूप से नियत किये जाते हैं।

मुरदा-दिल—वि० [हिं०+फा०] [भाव० मुरदादिली] जिसमे कुछ भी उत्साह या उमग न रह गई हो। बहुत ही खिन्न तथा हतोत्साह।

मुरदार—वि० [फा० मुर्दार] [भाव० मुरदारी] १ जो अपनी मौत से मरा हो। २ मृत। ३ अपवित्र। ४ दुर्बल।

पु० वह पशु जो अपनी मौत से मरा हो। (ऐसे पशु का मास खाना धार्मिक दृष्टि से वर्जित है।)

मुरदारी—स्त्री० [फा०] मुरदार होने की अवस्था या भाव।

मुरदावली—वि० [हिं० मुर्दा] १. मृतक के सबध का। मुरदे का। २ बहुत ही तुच्छ या निम्न कोटि का। रद्दी।

स्त्री०=मुर्दनी।

मुरदासंख—पु० [फा० मुर्द. सग] फूँके हुए सीसे और सिंदूर का मिश्रण जो औषध के रूप मे व्यवहृत होता है।

मुरदासन† —पु०=मुरदासख।

मुरदासिंगी† —स्त्री०=मुरदासख।

मुरधर—पु० [स० मरुधरा] मारवाड देश का प्राचीन नाम।

मुरना† —अ०=मुडना।

मुरबेम† —पु० [स० मुद-वयस्] युवाकाल। जवानी।

मुरब्बा—पु० [अ०] कच्चे फल (जैसे—आँवले, आम, बेल, सेब आदि) को चीनी की चाशनी मे पकाने पर तैयार होनेवाला पाक।

क्रि० प्र०—डालना। —पडना। —बनना। —बनाना।

पु० [अ० मुरब्बअ] १ समकोणीय समचतुर्भुज। वर्गाकार। २ किसी अक को उसी अक से गुणन करने पर प्राप्त होनेवाला फल।

वि० १ चौकोर। २ चारों अथवा सब ओर से एक ही नाप का। जैसे—दस मुरब्बा फुट।

मुरब्बी—पु० [अ०] १ पालन और रक्षण करनेवाला। पालक और रक्षक। अभिभावक। २ मददगार। सहायक। ३ मित्र और स्नेही।

मुरमर्दन—पु० [स० मुर√मृद् (मर्दन करना)+ल्यु—अन] मुर को मारनेवाले विष्णु या श्रीकृष्ण।

मुरमुरा—पु० [अनु०] १. एक प्रकार का भुना हुआ चावल जो अन्दर से पोला होता है। फरवी। लाई। २ मकई के भुने हुए दाने।

वि० मुरमुर शब्द करनेवाला।

मुरमुराना—अ० [मुरमुर से अनु०] १ ऐठन खाकर टूट जाना। चुरमुर हो जाना। २ मुरमुर शब्द करते हुए टूटना।

स० १ चुरमुर करना। २ मुरमुर शब्द करते हुए तोडना।

मुर-रिपु—पु० [स० ष० त०] मुरारि।

मुररिया† —स्त्री०=मुर्री।

मुरल—पु० [स० मुर√ला (लेना)+क] १. चमडे का एक पुरानी चाल का बाजा। २ एक प्रकार की मछली।

मुरला—स्त्री० [स० मुरल+टाप्] १. नर्मदा नदी। २. केरल देश की काली नाम की नदी।

मुरलिका—स्त्री० [स० मुरली+कन्+टाप्, ह्रस्व] मुरली। वशी।

मुरलिया*—स्त्री०=मुरली (वशी)।

मुरली—स्त्री० [स० मुरल+ङीप्] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला बाँस आदि की पोर का बना हुआ बाजा। बाँसुरी।

पु० आसाम मे होनेवाला एक प्रकार का चावल।

मुरली-धर—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण जो बाल्यावस्था मे प्राय मुरली बजाते थे।

मुरली-मनोहर—पु० [स० सुप्सुपा स०] श्रीकृष्ण।

मुरलीवाला—पु० [स० मुरली+हिं० वाला (प्रत्य०)] श्रीकृष्ण।

मुरवा†—पु० [देश०] १ एडी के ऊपर की हड्डी जो कुछ उभरी हुई होती है। २ उक्त हड्डी के चारो ओर का स्थान जो कुछ उभरा हुआ तथा गोलाकार होता है।

*पु०=मोर।

मुरवी* —स्त्री० [स० मौर्वी] १ मूर्वा घास की बनी हुई मेखला जिसे क्षत्री धारण करते थे। २ धनुष की डोरी। चिल्ला।

मुर-वैरी (रिन्)—पु०=मुरारि।

मुरव्वत—स्त्री०=मुरौवत।

मुरशिद—पु० [अ० मुर्शिद] १ गुरु। पथप्रदर्शक। पीर। २ धूर्त आदमी। (व्यग्य)

मुरसिल—पु० [अ० मुर्सिल] भेजनेवाला। प्रेषक।

मुर-सुत—पु० [स० ष० त०] मुर राक्षस का पुत्र, वत्सासुर।

मुरस्सा—वि० [अ० मुरस्सअ] रत्न-जटित। जडाऊ।

मुरस्साकार—पु० [अ० मुरस्सअ+फा० कार] [भाव० मुरस्साकारी] रत्न-जटित आभूषण बनानेवाला। जडिया।

वि० रत्नो से जडा हुआ। जडाऊ।

मुरस्साकारी—स्त्री० [अ० मुरस्सअ+फा० कारी] १ गहनो मे नग आदि जडने का काम। २ उक्त प्रकार के काम का पारिश्रमिक।

मुरहन† —स्त्री० [?] १ एक प्रकार की सुरती (पौधा) जिसकी पत्तियाँ अच्छी समझी जाती है। २ सुरती की पिसी हुई पत्तियाँ।

मुरहा—पु० [स० मुर√हन् (मारना)+क्विप्] वह जिसने मुर का वध किया हो। मुरारि।

वि० [स० मूल+हिं० हा (प्रत्य०)] १ जिसका जन्म मूल नक्षत्र मे हुआ हो।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार ऐसा बालक माता-पिता के लिए घातक होता है।

२ अनाथ। ३ उपद्रवी। नटखट।

पु० [हिं० मुराना] वह जो चलते हुए कोल्हू मे गँडेरियाँ डालता है।

मुरहारी (रिन्)—पु० [स० मुर√हृ (हरण करना)+णिनि] मुरहा। मुरारि।

मुरा—स्त्री० [स०√मुर्+क+टाप्] १. एक गध द्रव्य। मुरामासी।

२ वह नाइन जिसके गर्भ में महानंद के पुत्र चंद्रगुप्त का जन्म हुआ था। (कथासरित सागर)

मुराडा—पु० [देश०] ऐसी लकड़ी जिसका एक सिरा जल रहा हो। लुआठा।

मुराद—स्त्री० [अ०] १ बहुत दिनों से मन में बनी रहनेवाली अभिलाषा।

पद—मुराद के दिन=यौवन काल, जिसमें मन में अनेक प्रकार की इच्छाएँ, उमंगें और कामनाएं रहती हैं।

क्रि० प्र०—पूरी होना।—बर आना।

मुहा०—मुराद पाना=(क) मन की चाही हुई चीज पाना। (ख) मन की चाही हुई बात पूरी होना। (ईश्वर या देवता से) मुराद माँगना=मन की अभिलाषा पूरी होने की प्रार्थना करना। मुराद मिलना=मन की अभिलाषा पूरी होना।

२ मन्नत। मनौती।

मुहा०—मुराद मानना=मनौती या मन्नत मानना।

३ अभिप्राय। आशय। मतलब।

मुरादी—वि० [अ०] मन में मुराद रखनेवाला। अभिलाषी।

मुराना*—स० [अनु० मुरमुर=चबाने का शब्द] मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना।

†स० १=मुड़ाना। २ =मोड़ना।

मुराफा—पु० [अ० मुराफअ] छोटी अदालत में मुकदमा हार जाने पर बड़ी अदालत में पुनर्विचार के लिए दिया जानेवाला प्रार्थना-पत्र।

मुरार—पु० [सं० मृणाल] कमल की जड़। कमलनाल।

†पु०=मुरारी।

मुरारि—पु० [सं० मुर-अरि, ष० त०] १ मुर राक्षस के शत्रु (क) विष्णु, (ख) श्रीकृष्ण। २. जगण के तीसरे भेद (।ऽ।) की संज्ञा। (पिंगल)

मुरारी—पु०=मुरारि।

मुरासा—पु० [अ० मुरस्सा] कान में पहनने का एक तरह का रत्न-जटित फूल। तरकी।

†पु०=मुँडासा।

मुरी†—स्त्री०=मूरि।

मुरीद—पु० [अ०] [भाव० मुरीदी] १. शिष्य। चेला। २ किसी विशेषतः धर्मगुरु के प्रति बहुत अधिक विश्वास और श्रद्धा रखनेवाला तथा उसका अनुयायी।

मुरीदी—स्त्री० [अ०] मुरीद होने की अवस्था या भाव।

मुरुट—पु० [सं०] एक प्राचीन जाति जो अफगानिस्तान में बसती थी।

मुरुडा†—पु० [?] १. किसी चीज का ऐसा बड़ा गोल पिंड जो देखने में लड्डू की तरह हो। २ अच्छी तरह तोड़-मरोड़कर दिया जानेवाला गोलाकार रूप।

मुरु†—पु०=मुर।

मुरुआ†—पु०=मुरवा।

मुरुकुटिया†—वि०=मरकट।

मुरुख*—वि०=मूर्ख।

मुरछाई*—स्त्री०=मूर्छा।

मुरझना†—अ०=मुरछना (मूर्छित होना)।

†स्त्री०=मूर्छना।

मुरझाना†—अ०=मुरछाना।

मुरेठा—पुं० [हिं० मूँड़=सिर+एठा (प्रत्य०)] १ पगड़ी। साफा। २. दे० 'मुरैठा'।

मुरेरी†—स्त्री० १. =मरोड़। २. =मुँडेर।

मुरेरना†—स० =मरोड़ना।

मुरेरा†—पु० १. =मुँडेरा। २. =मरोड़।

मुरैठा†—पु० [हिं० मुरेठा] १. नाव की लंबाई में चारों ओर घूमी हुई गोट जो तीन चार इंच मोटे तख्तों से बनाई जाती है और 'गुढ़ा' के ऊपर रहती है। २. दे० 'मुरेठा'।

मुरौअत—स्त्री० [अ० मुरव्वत] १. ऐसा स्वाभाविक शील जिसके फल-स्वरूप किसी के साथ कोई कठोर अथवा रूखेपन का व्यवहार न किया जा सकता हो। लिहाज।

क्रि० प्र०—तोड़ना।—बरतना।

२. भलमनसत। सज्जनता।

मुरौअती—वि० [हिं० मुरौअत] जिसके स्वभाव में मुरौअत हो।

स्त्री०=मुरौअत।

मुरौवज—वि० [अ० मुरव्वज] प्रचलित। जारी।

मुरौवत—स्त्री०=मुरौअत।

मुर्ग—पु० [सं० मुरग से फा० मुर्ग] मुरगा।

मुर्गकेश—पु० [फा० मुर्ग+सं० केश (चोटी)] १. मरसे की जाति का एक पौधा जिसमें मुरगे की चोटी के से गहरे उन्नाबी रंग के चौड़े और बड़े फूल लगते हैं। जटाधारी। २. कलंगुल नामक पक्षी।

मुर्गखाना—पु० [फा०] मुरगों के रहने के लिए बनाया हुआ स्थान।

मुर्गबाज—पु० [फा० मुर्गबाज़] [भाव० मुर्गबाजी] वह जो मुरगे लड़ाता हो। वह जिसे मुरगे पालने तथा लड़ाने में आनन्द आता हो।

मुर्गबाजी—स्त्री० [फा० मुर्गबाजी] मुरगे लड़ाने का व्यसन या शौक।

मुर्ग मुसल्लम—पुं० [अ०] खाने के लिए समूचा भूना हुआ मुर्गा।

मुर्गाबी†—स्त्री०=मुरगाबी।

मुर्चा†—पु०=मोरचा।

मुर्तकिब—वि०=मुरतकिब।

मुर्तजा—वि० [अ० मुर्तजा] १. मनोवांछित। २. रोचक।

पु० हजरत अली की एक उपाधि।

मुर्तहिन—वि०=मुरतहिन।

मुर्दनी—स्त्री०=मुरदनी।

मुर्दा—वि०, पु०=मुरदा।

मुर्दार—वि०=मुरदार।

मुर्दावली—स्त्री०=मुरदावली।

मुर्दासिंगी—पु०=मुरदासंग।

मुर्मुर—पु० [सं०√मुर्+क, पृषो० सिद्धि] १. कामदेव। २. सूर्य के रथ के घोड़े। ३. भूसी की आग। तुषाग्नि।

मुर्रा—पु० [हिं० मरोड़ या मुड़ना] १. मरोड़-फली (ओषधि)।

पेट मे होनेवाली ऐंठन या मरोड़। ३. सिंघाडे के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी।
स्त्री० कुडलाकार सींगोंवाली भैंस।
मुर्री—स्त्री० [हिं० मुडना या मरोडना] १ बागे, सूत आदि के दो सिरो को जोडने का एक प्रकार जिसमे उनमे गाँठ नही लगाई जाती वल्कि उन्हे मिलाकर मरोड भर दिया जाता है। २ कपडो आदि को मरोडकर उनमे डाला जानेवाला वल। जैसे—धोती कमर पर मुर्री देकर पहनी जाती है।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—मुर्री देना=(क) कपडा फाडते समय उसके फटे हुए अशो को दोनो ओर वरावर घुमाते या मोडते जाना जिसमे कपडा विलकुल सीधा फटे। (वजाज)
३. कपडे आदि को मरोडकर वटी हुई वत्ती। जैसे—मुर्री का नैचा। ४ चिकन या कशीदे की एक प्रकार की उभारदार कढाई जिसमे वटे हुए सूत का व्यवहार होता है।
स्त्री० [?] एक प्रकार की जगली लकडी।
मुर्रीदार—वि० [हिं० मुर्री+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे मुर्री पडी हो। ऐंठनदार।
मुर्शिद—वि०, पु०=मुरशिद।
मुल†—अव्य० [स० मूल] १ मूलत बात यह है कि। मतलव यह कि। २ किन्तु। अगर। लेकिन। ३ अन्तत। अन्त मे। आखिरकार।
मुलक†—स्त्री० [हिं० मुलकना] मुलकने की क्रिया या भाव। पुलक।
† पुं०=मुल्क (देश)।
मुलकना*—अ० [हिं० मुलकित] १ पुलकित होना। उदा०—चद मुलक्कयउ, जल हँस्यउ, जलहर कपी पाल।—ढोला मारू। २ मुस्कराना। उदा०—सकुचि, सरकि पिय निकट तें, मुलकि कछुक तन तोरि।—विहारी।
मुलकित*—वि० [स० पुलकित] मन्द मन्द हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ।
मुलकी—स्त्री०=मुलक।
वि०=मुल्की।
मुलजिम—वि० [अ० मुल्जम] १. जिस पर किसी प्रकार का इलजाम लगाया गया हो। २ अपराधी।
मुलतवी—वि० [अ० मुल्तवी] (कार्य आदि) जिसके सपादन को टाल दिया गया हो। स्थगित। जैसे—आज मुकदमा मुलतवी हो जायगा।
मुलतानी—वि० [हिं० मुलतान (नगर)] १ मुलतान-सबधी। २ मुलतान प्रदेश मे होनेवाला। जैसे—मुलतानी मिट्टी।
पुं० मुलतान का निवासी।
स्त्री० १ मुलतान और उसके आस-पास की बोली जो पश्चिमी पजावी की एक शाखा है। २ दोपहर के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जिसमे गाधार और धैवत कोमल, शुद्ध निपाद और तीव्र मध्यम लगता है। ३. एक प्रकार की वहुत कोमल और चिकनी मिट्टी जो प्राय सिर मलने मे सावुन की तरह काम मे आती है। साधु आदि इससे कपडा भी रँगते हैं। मुलतानी मिट्टी।
मुहा०—मुलतानी करना=छीट छापने के पहले कपड़े को मुलतानी मिट्टी मे रँगना।
वि० उक्त प्रकार की मिट्टी के रंग का। केवड़ई। (क्रीम)
पु० उक्त प्रकार की मिट्टी के रग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रग। केवडई। केवडी। (क्रीम)
मुलतानी-धनाश्री—स्त्री० ओडव सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी जो दिन के तीसरे पहर मे गाई जाती है।
मुलतानी मिट्टी—स्त्री० दे० 'मुलतानी' के अन्तर्गत।
मुलना†—पु०=मुल्ला (मुस्लिम धर्माचार्य)।
मुलमची—पु० [अ० मुलम्म+ची, फा० च (प्रत्य०)] किसी चीज पर सोने, चाँदी आदि का मुलम्मा करनेवाला। गिलट करनेवाला। मुलम्मासाज।
मुलमुलाना—अ० [अनु०] आँखो की पलको का वार वार झपकना या उठते और गिरते रहना जो एक प्रकार का रोग माना गया है। (ब्लिंकिंग)
मुलम्मा—वि० [अ० मुलम्म] चमकता हुआ।
पु० १ सस्ती धातुओ पर रासायनिक प्रक्रियाओं से किया हुआ वहु-मूल्य धातु का ऐसा लेप जिसमे वह देखने मे सुन्दर और वहुमूल्य जान पडती हो। जैसे—गिलट पर चाँदी का मुलम्मा, चाँदी पर सोने का मुलम्मा।
क्रि० प्र०—करना।—चढना।—चढ़ाना।—होना।
२ कलई। ३ किसी साधारण या तुच्छ चीज को आकर्षक रूप देने की क्रिया या भाव। ४ ऊपर या वाहर से वनाया हुआ कोई ऐसा रूप जिसमे अन्दर की त्रुटि या दोप दव जाय, और देखने पर चीज आकर्षक और वहुमूल्य जान पडे। ५ ऊपरी तड़क-भडक।
मुलम्माकार, मुलम्मागर—पु० दे० 'मुलम्मासाज'।
मुलम्मासाज—पु० [अ० मुलम्म+फा० साज] [भाव० मुलम्मा-साजी] १ मुलम्मा करनेवाला कारीगर। मुलमची। २ वह व्यक्ति जो साधारण-सी वात को चिकनाकर वहुत ही आकर्षक रूप मे प्रस्तुत करता हो।
मुलहठी—स्त्री०=मुलेठी।
मुलहा—वि० [स० मूल=नक्षत्र+हा (प्रत्य०)] १ जिसका जन्म मूल नक्षत्र मे हुआ हो। २ दे० 'मुरहा'।
मुलहिक—वि० [अ० मुलिहक] किसी के साथ मिला या लगा हुआ। सलग्न।
मुला†—पु०=मुल्ला।
मुला†—अव्य०=मुल।
मुलाकात—स्त्री० [अ० मुलाकात] १ दो व्यक्तियो मे होनेवाला साक्षात्कार। भेंट। २ जान-पहचान की अवस्था। ३ मैथुन। सभोग। रति-क्रीडा।
मुलाकाती—वि० [अ० मुलाकाती] १ (व्यक्ति) जिससे मुलाकात अर्थात् भेंट प्राय या नित्य होती रहती हो। २ जान-पहचानी। परि-चित।
मुलाजमत—स्त्री० [अ० मुलाजमत] १ मुलाजिम होने अर्थात् किसी की सेवा मे रहने या होने का भाव। २ नौकरी।

मुहा०—(किसी की) मुश्कें कसना या बाँधना=(अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना। (इसमें आदमी बेबस हो जाता है।)

मुश्क-दाना—पु० [फा०] एक प्रकार की लता का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है और जिसके अन्दर से कस्तूरी की-सी सुगंध निकलती है।

मुश्क-नाफा—पु० [फा० मुश्के-नाफ] कस्तूरी मृग का नाफा या थैली जिसके अन्दर कस्तूरी रहती है।

मुश्कनाभ—पु० [फा० मुश्क+स० नाभ]=मुश्कनाफा।

मुश्क-बिलाई—स्त्री० [फा० मुश्क+हि० बिलाई=बिल्ली] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है। गंधबिलाव।

मुश्कबू—वि० [फा०] जिसकी बू कस्तूरी जैसी हो।

मुश्क-मेंहदी—स्त्री० [फा० मुश्क+महदी] एक प्रकार का छोटा पौधा जो उपवन में शोभा के लिए लगाया जाता है।

मुश्किल—वि० [अ०] (काम) जो करने में बहुत कठिन हो। दुष्कर। दुस्साध्य।
स्त्री० १ कठिनता। दिक्कत। २. विपत्ति। संकट। ३ पेचीदगी।

मुश्की—वि० [फा० मुश्की] १ मुश्क अर्थात् कस्तूरी के रंग का। काला। श्याम। २ जिसमें कस्तूरी पड़ी या मिली हो। जैसे—मुश्की तमाकू। ३ मुश्क जैसा सुगंधित।
पु० ऐसा घोड़ा जिसके सारे शरीर का रंग काला हो।

मुश्त—स्त्री० [फा०] १ मुट्ठी। २ मुट्ठी में भरी हुई वस्तु। ३ घूँसा।

मुश्तइल—वि० [अ०] १ इश्तेआल दिलाने अर्थात् उत्तेजित करने या भड़कानेवाला। २ जोरों से जलता हुआ। लपटें फेंकनेवाला।

मुश्तबहा—वि० [अ० मुश्तब्ह] संदिग्ध।

मुश्तम्मिल—वि० [अ०] १ शामिल किया हुआ। सम्मिलित। २ व्यापक।

मुश्तयाक—वि० [अ०] १. जिसके मन में इश्तियाक हो। प्रबल इच्छा रखनेवाला। बहुत चाहनेवाला। २. आशिक। प्रेमी।

मुश्तरक—वि० [अ०] =मुश्तरका।
पु० ऐसा शब्द जिसके कई अर्थ हों।

मुश्तरका—वि० [अ० मुश्तरक] साझे का।

मुश्तरी—पु० [अ०] १ खरीददार। क्रेता। २ बृहस्पति ग्रह।

मुश्तहिर—वि० [अ०] १ जिसका या जिसके सम्बन्ध में इश्तहार दिया गया हो। २ प्रसिद्ध। विख्यात। २ इश्तिहार देनेवाला। विज्ञापक।

मुषल—पु० [स०√मुष्+कलच्] १. मूसल। २ विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

मुषली—स्त्री० [सं० मुषल+ङीप्] १ तालमूलिका। २ छिपकली।
पु० बलराम।

मुषित—भू० कृ० [सं०√मुष्+क्त] १ चुराया हुआ। मूसा हुआ। २ (व्यक्ति) जिसकी चीज चुराई गई हो। ३ जो ठगा गया हो।

मुखुर*—स्त्री० [स० मुखर] गूँजने का शब्द। गुंजार।
वि०=मुखर।

मुष्क—पुं० [स०√मुष्+कक्] १ अंडकोश। २ चोर। ३. ढेर। राशि। ४. मोखा नामक गंध द्रव्य।
वि० मांसल।
स्त्री०=मुश्क।

मुष्कक—पु० [स० मुष्क+कन्] मोखा नाम का वृक्ष।

मुष्कर—पु० [सं० मुष्क+र] १. अंडकोष। २. पुरुष की मूत्रेंद्रिय। लिंग।
वि० जिसके अंडकोष बड़े हों।

मुष्क-शून्य—वि० [स० तृ० त०] जिसके अंडकोश निकाल लिए गए हों। बधिया किया हुआ।
पुं० वह व्यक्ति जो उक्त क्रिया के उपरांत अन्तःपुर में काम करने के लिए नियुक्त होता था। खोजा।

मुष्ट—भू० कृ० [स०√मुष् (चोरी करना)+क्त] चुराया हुआ।
पुं०=मुष्टिका।

मुष्टक—पु० [स० मुष्ट+कन्] सरसों।

मुष्टामुष्टि—स्त्री० [सं० ब० स०] घूँसेबाजी।

मुष्टि—स्त्री० [स०√मुष्+क्तिच्] १ मुट्ठी। २ घूँसा। मुक्का। ३ चोरी। ४ अकाल। दुर्भिक्ष। ५. राज्य। ६ हथियार की बेंट या मूठ। ७ ऋषि नामक ओषधि। ८ मोखा वृक्ष। ९. एक प्राचीन परिमाण जो किसी के मत से ३ तोले का और किसी के मत से ८ तोले का होता था।
पु०=मुष्टिक।

मुष्टिक—पुं० [स० मुष्टि+कन्] १ राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेव जी ने मारा था। २. घूँसा। मुक्का। ३ मुट्ठी। ४ मुट्ठी के बराबर की नाप। ५. स्वर्णकार। सुनार। ६ तांत्रिकों के अनुसार एक उपकरण जो बलिदान के योग्य होता है।

मुष्टिकांतक—पु० [स० मुष्टिक-अंतक, ष० त०] मुष्टिक नामक मल्ल को मारनेवाले, बलदेव।

मुष्टिका—स्त्री० [स० मुष्टिक+टाप्] १ मुक्का। घूँसा। २ मुट्ठी।

मुष्टि-देश—पु० [स० ष० त०] धनुष का मध्य भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है।

मुष्टि-युद्ध—पु० [स० तृ० त०] घूँसेबाजी।

मुष्टि-योग—पु० [स० मध्य० स०] १ हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं। २ किसी बड़े काम या बात का छोटा और सहज उपाय।

मुसक†—पु०=मुश्क।

मुसकनि*—स्त्री०=मुसकान।

मुसकराना—अ०=मुस्कराना।

मुसका—पु० [देश०] पशुओं के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली। जाला।

मुसकान†—स्त्री०=मुस्कान।

मुसकाना—अ०=मुस्कराना।

मुसकानि†—स्त्री०=मुस्कान (मुस्कराहट)।
मुसकिराना—अ०=मुस्कराना।
मुसकुराना†—अ०=मुस्कराना।
मुसक्यान—स्त्री०=मुस्कान (मुस्कराहट)।
मुसक्याना†—अ०=मुस्काना।
मुसखोरी—स्त्री० [हिं० मूस=चूहा+खोरी (प्रत्य०)] खेत में चूहों की होनेवाली अधिकता और उसके कारण फसलों की हानि। मुसहरी।
मुसजर—वि०=मुसज्जर।
मुसटंडा—वि० [?] हट्टा-कट्टा और बदमाश या लुच्चा। (उपेक्षा-सूचक)
मुसटी—स्त्री० [हिं० मूस=चूहा+टी (अल्पा० प्रत्य०)] छोटा चूहा। चुहिया।
* स्त्री०=मुष्टि।
मुसदी—स्त्री० [देश०] मिठाई बनाने का साँचा।
मुसद्दस—वि० [अ०] छ भुजाओंवाला।
पु० १ उर्दू में छ. चरणों की एक प्रकार की कविता। २ वह काव्य ग्रंथ जिसमें छ चरणोंवाले पद हों। जैसे—मुसद्दसे हाली।
मुसद्दिक—वि० [अ० मुसद्दक] जिसकी तसदीक की जा चुकी हो। जिसका ठीक होना प्रमाणित या सिद्ध हो चुका हो।
मुसद्दी—पु० [अ०] मुहर्रिर। लिपिक।
मुसना—अ० [सं० मूषण=चुराना] १. मूसा या लूटा जाना। अपहृत होना। उदा०—एक कबीरा ना मुसै जिनि कीन्ही बारह बाट।—कबीर। २ छिपना। लुकना।
मुसन्ना—पु० [अ०] १ किसी असल कागज की दूसरी नकल जो मिलान आदि के लिए अपने पास रखी जाती है। २. रसीद आदि का वह आधा और दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रहता है।
मुसन्निफ—पु० [अ० मुसन्निफ] [स्त्री० मुसन्निफा] पुस्तक लिखनेवाला लेखक। ग्रन्थकर्ता।
मुसफ्फी—वि० [अ०] १. साफ करनेवाला। २. शोधक।
मुसब्बर—पु० [अ०] कुछ विशिष्ट क्रियाओं से सुखाया और जमाया हुआ घीकुआँर का गूदा या रस।
मुसमर—पु० [हिं० मूस=चूहा+मारना] खेत के चूहे खानेवाली एक चिड़िया।
मुसमरवा—पु० [हिं० मूस+मारना] १. मुसमर (चिड़िया)। २. मुसहर।
मुसमुंद—वि० [देश०] ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।
पु० ध्वस। नाश। बरबादी।
मुसमुंध—वि०, पु०=मुसमुद।
मुसम्मा—वि० [अ०] [स्त्री० मुसम्मात] नामवाला। नामधारी।
मुसम्मात—वि०, स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] नामधारिणी। नामवाली।
स्त्री० १. औरत। स्त्री। २. श्रीमती।
मुसम्माती—वि० [अ० मुसम्मात] मुसम्मात या स्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला। औरत या औरतों का। जैसे—मुसम्माती मामला।
मुसम्मी—वि०=मुसम्मा।
स्त्री० [मोजैम्बिक, अफ्रीका का एक प्रदेश] एक प्रकार का बढ़िया मीठा नीबू।
मुसरहा†—पु० [हिं० मूसल] ऐसा बैल जिसके शरीर का रंग उसकी पूँछ के रंग से भिन्न हो।
मुसरा—पु०=मूसला (जड़)।
मुसरिया—स्त्री० [देश०] शोरे की चुड़ियाँ डालने का साँचा।
†स्त्री० १. =मुसरी २. =मुसली।
मुसरी—स्त्री० [हिं० मूसा=चूहा] चूहे का बच्चा।
स्त्री०=मुसली।
मुसर्रत—स्त्री० [अ०] प्रसन्नता। खुशी।
मुसर्रह—वि० [अ०] १. तशरीह से युक्त। ब्योरेवार। २. स्पष्ट रूप से कहा हुआ।
मुसल—पु० [सं०√मुस्+कलच्]=मूसल।
मुसलधार—क्रि० वि०=मूसलधार।
मुसलमान—पु० [अ० मुसल्मान] [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय का अनुयायी हो। इस्लाम धर्म को माननेवाला। मुहम्मदी।
मुसलमानी—वि० [अ० मुसल्मानी] मुसलमान-संबंधी। मुसलमान का। जैसे—मुसलमानी मजहब।
स्त्री० १. मुसलमान होने की अवस्था, गुण या भाव। उदा०—तीस रोजों से तीन रखे हैं। आप देखें मेरी मुसलमानी।—कोई शायर। २. मुसलमान का कर्तव्य या धर्म। ३. मुसलमानों में होनेवाली खतने की रसम या रीति। खतना। सुन्नत। उदा०—(क) ख्वाजा साहब यह तो सोचें सुन कर लोग कहेंगे क्या। हसन निजामी गांधी जी की करने चले मुसलमानी।—मैथिलीशरण गुप्त। (ख) जाहिदो तौबा तो कर ली और क्या फिर करोगे और मुसलमानी मेरी।—कोई शायर।
क्रि० प्र०—करना।
मुसलाधार—वि०=मूसलाधार।
मुसलायुध—पु० [सं० मुसल–आयुध, ब० स०] बलराम।
मुसलिम—पु० [अ०] मुसलमान।
वि० मुसलमान-सम्बन्धी। मुसलमानों का। जैसे—मुसलिम राज्य।
मुसली—स्त्री० [सं० मुसली] एक पौधा जिसकी जड़ें औषध के काम में आती हैं।
†पु०=मुशली।
†स्त्री०=हिं० 'मूसल' का स्त्री०।
मुसल्य—वि० [सं० मुसल+यत्] मूसल से मारे जाने के योग्य।
मुसल्लम—वि० [फा० मुर्ग मुसल्लम] पूरा। अखंड। जैसे—मुर्ग मुसल्लम।
†पु०=मुस्लिम (मुसलमान)।
मुसल्लसम—वि० [अ०] तिकोना।
पु० त्रिकोण (आकृति या क्षेत्र)।
मुसल्लह—वि० [अ०] सशस्त्र।
मुसल्ला—पु० [अ०] [स्त्री० अल्पा० मुसल्ली] १ वह दरी या चटाई जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। २. बड़े दीये के आकार

का एक प्रकार का बरतन जो बीच मे उभरा हुआ होता है। इनमे मुहर्रम मे चढावा चढाया जाता है।
†पु०=मुसलमान। (उपेक्षासूचक)

मुसलसल--वि० [अ०] १ एक सिलसिले से लगा हुआ। क्रमबद्ध। शृंखलित। २. कैद।
अव्य० निरतर। लगातार।

मुसवाना—स०[हिं० मूसना का प्रे० रूप] १. किसी को मूसने मे प्रवृत्त करना २ किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह मूसा जाय।

मुसव्विर—पु० [अ०] १. तसवीर खीचने या बनानेवाला। चित्रकार। २. किसी चीज पर बेल-बूटे बनानेवाला कारीगर।
वि० सचित्र।

मुसहर—पु० [हिं० मूस=चूहा+हर (प्रत्य०)] [स्त्री० मुसहरिन] एक जगली जाति जिसका व्यवसाय जडी-बूटी आदि बेचना है। इस जाति के लोग प्राय चूहे तक मार कर खाते है, इसी से मुसहर कहलाते है।

मुसहिल—वि० [अ० मुस्हिल] दस्तावर। रेचक।
पु० १ ऐसा हलका जुलाब जिसमे थोडे-से दस्त आते हो। २. हकीमी चिकित्सा मे किसी को जुलाब देने से पहले पिलाई जानेवाली वह दवा जो पेट के अन्दर का मल मुलायम करती है।

मुसाना—स० [हिं० मुसना का स०] १ किसी को मूसने मे प्रवृत्त करना। २. किसी के द्वारा अपनी कोई चीज गँवाना। मूसा जाना। उदा०—मदन चोर सौं जानि मुसायी।—सूर।

मुसाफ--पु० [अ० मुसाफ] १. युद्ध। समर। २.युद्धस्थल। लडाई का मैदान। ३ शत्रु के चारो ओर डाला जानेवाला घेरा।
पु० [अ० मुसहफ] १. लेखो आदि का सकलन या सग्रह। २. कुरान।

मुसाफिर—पु० [अ० मुसाफिर] बटोही। पथिक।

मुसाफिरखाना—पु० [अ० मुसाफिर+फा० खान] १ यात्रियो के विशेषत रेल के यात्रियो के ठहरने के लिए बना हुआ विशिष्ट स्थान। २ धर्मशाला या सराय जिसमे मुसाफिर ठहरते है।

मुसाफिरी—स्त्री० [अ०] १. मुसाफिर होने की अवस्था या भाव। २ प्रवास। यात्रा।

मुसाहव—पु० [अ० मुसाहिब] किसी बडे आदमी के पास उठने-बैठने-वाला व्यक्ति। पारिषद्।

मुसाहबत--स्त्री० [अ०] मुसाहव होने की अवस्था, काम या भाव।

मुसाहबी—स्त्री० [अ० मुसाहब+ई (प्रत्य०)] मुसाहब का काम या पद।

मसाहिब—पु० [अ०]=मुसाहब।

मुसीबत—स्त्री० [अ०] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। सकट। क्रि० प्र०—आना। —उठाना। —झेलना। —पडना। —भोगना। —सहना।

मुसुकाना†—अ०=मुस्कराना।

मुसुकाहट*—स्त्री०=मुस्कराहट।

मुसौवर--पु० [अ० मुसव्विर] चित्रकार।

मुसौवरी—स्त्री० [अ० मुसव्विरी] चित्रकारी।

मुस्कराना—अ० [?] इस प्रकार धीरे से हँसना कि होठ फैल जायँ परन्तु दशन-पक्ति दिखाई न दे।

मुस्कराहट—स्त्री० [हिं० मुस्कराना] मुस्कराने की अवस्था या भाव।

मुस्कान—स्त्री०=मुस्कराहट।

मुस्किल—वि०, स्त्री०=मुश्किल।

मुस्की†—स्त्री०=मुसकराहट।
वि०=मुश्की।

मुस्कयान*—स्त्री०=मुस्कान।

मुस्टंडा—वि०=मुसटडा।

मुस्त—पु० [स०√मुस्त् (इकट्ठा होना)+क, अच् वा] नागरमोथा।

मुस्तअफी—पु० [अ०] १ इस्तीफा देनेवाला। २ माफी माँगने-वाला।

मुस्तअमल—वि० [अ०] १ जो अमल मे लाया गया हो। कार्यरूप मे परिणत किया हुआ। २ उपयोग मे लाया हुआ।

मुस्तक—पुं० [स० मुस्त+कन्] नागरमोथा। मोथा।

मुस्तकबिल—वि० [अ० मुस्तक्बिल] आगे आनेवाला। भावी।
पु० भविष्यत्काल।

मुस्तकिल—वि० [अ०]१ अटल। स्थिर। २ दृढ। मजबूत। पक्का। जैसे—मुस्तकिल इरादा। ३ किसी पद पर स्थायी रूप से नियुक्त। (व्यक्ति)

मुस्तकीम—वि० [अ०] १. जो टेढा न हो। सीधा। ऋजु। २. ठीक। वाजिब।

मुस्तगीस—पु० [अ०] १. वह जो किसी पर या किसी प्रकार का इस्त-गासा या अभियोग उपस्थित करे। फरियादी। २. दावेदार। मुद्दई।

मुस्तदई—पु० [अ०] इस्तदुआ या प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी।

मुस्तनद—वि० [अ०] १. जो सनद के अर्थात् प्रमाण के रूप मे माना जाय। २. विश्वस्त।

मुस्तफा—वि० [अ०] १ स्वच्छ। साफ। २. पवित्र। पुनीत।
पु० मुहम्मद साहब की एक उपाधि।

मुस्तफीद—वि० [अ०] फायदा उठानेवाला। लाभ प्राप्त करनेवाला।

मुस्तसना—वि० [अ० मुस्तस्ना] १ अलग किया हुआ। छाँटा हुआ। भिन्न। २. नियम, विधि आदि के प्रयोग मे जो अपवाद के रूप मे हो। ३. जिस पर मे किसी प्रकार की पाबदी उठा या हटा ली गई हो। ४. जो किसी प्रकार की आज्ञा, नियम आदि के दायरे मे न आता हो।

मुस्तहक--वि० [अ०] १. अधिकारी। हकदार। २. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त या योग्य। पात्र। ३. जरूरतमद।

मुस्ता—स्त्री० [स० मुस्त-टाप्] मोथा नामक घास।

मुस्ताद—पु० [स०] जगली सूअर।

मुस्तैद—वि० [अ० मुस्तइद] [भाव० मुस्तैदी] १. जो किसी कार्य के लिए पूर्ण रूप से उद्यत या तत्पर हो। कटिबद्ध। सनद्ध। २. हर काम मे चालाक, तेज या फुरतीला।

मुस्तैदी—स्त्री० [अ० मुस्तइदी] मुस्तैद होने की अवस्था या भाव। सनद्धता।

मुस्तौजिर—पु० [अ०] ठेकेदार। इजारेदार।

मुस्तौजिरी—स्त्री० [अ०] ठेकेदारी।

मुस्तौफी—पु० [अ०] पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के हिसाब की जाँच-पडताल करे। पडतालक।

मुहकम—वि० [अ० मुह्कम] १. दृढ़। पक्का। मजबूत। २. टिकाऊ। पायदार। ३. अटल।

मुहकमा—पु० [अ० मुहाकम] बड़े कार्य अथवा कार्यालय का विभाग। सीगा।

मुहक्किक—पु० [अ०] १ तहकीक अर्थात् अन्वेषण करनेवाला। अन्वेषक। अनुसंधाता। २. वैज्ञानिक। ३. दार्शनिक।

मुहतमिम—वि० [अ० मुह्तमिम] एहतमाम अर्थात् बंदोबस्त करनेवाला।
पु० प्रबंधक (व्यवस्थापक)।

मुहतरफा—पु० [फा० मुहतरफः] वह कर जो व्यापार, वाणिज्य आदि पर लगाया जाय।

मुहतरम—वि० [अ० मुह्तरम] १. सम्मानित। २ आदरणीय। ३. महोदय। महानुभाव।

मुहतशिम—वि० [अ० मुह्तशिम] १. एहतशाम अर्थात् वैभव से युक्त। २. धनाढ्य। सम्पन्न।

मुहतसिब—पु० [अ० मुह्तसिब] वह जो लोगों के सदाचार आदि पर विशेष ध्यान रखता हो; और उन्हें सदाचारी बनाने के प्रयत्न में रहता हो।

मुहताज—वि०=मोहताज।

मुहताजी—स्त्री०=मोहताजी।

मुहद्दिस—पु० [अ०] हदीस अर्थात इस्लामी धर्म-शास्त्र का ज्ञाता।

मुहनाल—स्त्री०=मुँह-नाल।

मुहवनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फल जो नारंगी की तरह का होता है।

मुहब्बत—स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। प्यार।
मुहा०—मुहब्बत उछलना=प्रेम का आवेश होना। (व्यंग्य)
२. शृंगारिक क्षेत्र में, स्त्री और पुरुष में होनेवाला प्रेम। इश्क।

मुहब्बती—वि० [अ० मुहब्बत] १. जो सहज में सब से प्रेम या स्नेह का व्यवहार स्थापित कर लेता हो। २. मुहब्बत से भरा हुआ। प्रेमपूर्ण।

मुहम्मद—वि० [अ०] सराहा हुआ। प्रशंसित।
पु० इस्लाम के प्रवर्तक (सन् ५७०-६३२ ई०)। अरब के प्रसिद्ध पैगम्बर या धर्माचार्य।

मुहम्मदी—पु० [अ०] हजरत मुहम्मद साहब का अनुयायी। मुसलमान।
वि० मुहम्मद सम्बन्धी। मुहम्मद का।

मुहय्या—वि०=मुहैया।

मुहर†—स्त्री०=मोहर।

मुहरमुह—अव्य० [सं० मुहुर्मुहु] १. बार बार। २. प्रति क्षण।

मुहरा†—पु०=मोहरा।

मुहरिया†—स्त्री० १.=मोहर २. ='मोहरा' का स्त्री० अल्पा०। ३. =मोरी।

मुहरी—स्त्री० १. 'मोहरा' का स्त्री० अल्पा०। २. मोहरी। ३. मोरी।

मुहर्रम—वि० [अ०] जो हराम अर्थात् निषिद्ध हो।
पु० १. इस्लामी वर्ष का पहला महीना, जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। २. इस महीने में इमाम हुसेन का शोक मनाने के दस दिन।
मुहा०—(किसी की) मुहर्रम की पैदाइश होना=सदा दुःखी और चिंतित रहनेवाला होना।

मुहर्रमी—वि० [अ० मुहर्रम+ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम-संबंधी। मुहर्रम का। २. शोक-सूचक। ३. बहुत ही दुःखी और मनहूस।

मुहर्रिक—पु० [अ०] १. हरकत देनेवाला। चालक। २. प्रेरक। ३. प्रस्तावक। ४. गतिशील।
वि० [अ०] १. हरकत अर्थात गति प्रदान करनेवाला। २. गतिशील। ३. भड़कानेवाला। प्रेरक। ४. प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

मुहर्रिर—पु० [अ०] [भाव० मुहर्रिरी] १. किसी कार्यालय में कागज आदि लिखने का काम करनेवाला। लिपिक। २ वकीलों आदि के साथ रहनेवाला उनका मुंशी।

मुहर्रिरी—स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम, पद या पेशा।

मुहलत—स्त्री०=मोहलत।

मुहला†—पु० [स्त्री० अल्पा० मुहली] =मुसल।
†पु०=महल्ला।

मुहलेठी†—स्त्री०=मुलेठी।

मुहल्ला—पु०=महल्ला।

मुहसिन—वि० [अ० मुह्सिन] एहसान अर्थात् उपकार करनेवाला।

मुहसिल—वि० [अ० मुहस्सिल] १. महसूल वसूल करनेवाला। २. तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।
पु० वह नौकर या फेरीदार जो घूम-घूम कर रुपए वसूल करता हो।

मुहाफिज—वि० [अ०] हिफाजत करनेवाला। रक्षक।
पुं० अभिभावक। संरक्षक। सरपरस्त।

मुहाफिजत—स्त्री० [अ०] १ देख-रेख। रखवाली। रक्षा। २ पालन-पोषण।

मुहार—स्त्री० [अ० मिहर] पशुओं के नथने में बाँधी जानेवाली रस्सी। नकेल।

मुहारनी†—स्त्री० [हिं० मुँह+अरनी (प्रत्य०)] भारतीय शिक्षा-प्रणाली में आरंभिक तथा छोटे विद्यार्थियों से कराई जानेवाली वह क्रिया जिसमें गिनती, पहाड़े आदि याद कराने के लिए सामूहिक रूप से उन्हें खड़ा करके रटाया जाता है।

मुहारा†—पु० [हिं०] १. मुँह अर्थात आगे की ओर का भाग। २. प्रवेश करने का द्वार या मार्ग। जैसे—फाटक का मुहारा।

मुहाल—पु० [हिं० मुँह+आल (प्रत्य०)] हाथी के दाँतों पर शोभा के लिए चढ़ाई जानेवाली चूड़ी।
वि० [अ०] १. जिसे करना कठिन हो। दुष्कर। २ जिसका होना नामुमकिन हो। असंभव।
पु० १. महाल। २. मुहल्ला।

मुहावरत—स्त्री० [अ०] परस्पर की बातचीत।

मुहावरा—पु० [अ० मुहावर] १. वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जो अपने अभिधार्थ से भिन्न किसी और अर्थ में रूढ़ हो गया हो। २ अभ्यास।

मुहावरेदार—वि० [अ० मुहावर+फा० दार] १ मुहावरे से युक्त (कथन या भाषा)। २ जिसमें मुहावरों का प्रयोग ठीक तरह से या भली-भाँति से हुआ हो।

मुहावरेदारी—स्त्री० [हिं० मुहावरेदार+ई (प्रत्य०)] १ मुहावरों के ठीक प्रयोग का ज्ञान। २ मुहावरों से अभिन्न होने की अवस्था या भाव।
मुहासबा—पु०=मुहासिवा।
मुहासरा—पु०=मुहासिरा।
मुहासा—पु०=मुँहासा।
मुहासिव—वि०[अ०] हिसाव करनेवाला।
पु०१ गिनतरा। २ अकेक्षक।
मुहासिवा—पु०[अ०]१ हिसाव। लेखा। २ लेखे या हिसाव की जाँच-पडताल। ३ किसी घटना के विषय मे की जानेवाली पूछ-ताछ।
मुहासिरा—पु०[अ० मुहासर]१ चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव। २. हद-वदी।
मुहासिल—पु०[अ०]१ आय। आमदनी। २ नफा। मुनाफा।
मुहिं—सर्व०=मोहि (मुझे)।
मुहिब्व—पु०[अ०]१ दोस्त। मित्र। २ प्रियतम।
मुहिम—स्त्री०[अ०]१ कोई कठिन या वडा काम। भारी, महत्त्वपूर्ण अथवा जानजोखिम का काम। २ सैनिक आक्रमण। चढाई। ३ युद्ध। समर।
मुहिर—पु० [स०√मुह् (मुग्ध होना)+किरच्] कामदेव।
वि० वेवकूफ। मूर्ख।
मुहीम—स्त्री०=मुहिम।
मुहुः(स्)—अव्य०[स० √ मुँह् +उसिक्] फिर-फिर। वार-वार।
मुहुपुची—स्त्री०[देश०] प्राय. रात के समय उडनेवाला काले रग का एक प्रकार का छोटा पतिंगा जो मूँगफली की फसल को हानि पहुँचाता है। ये पत्तियों पर अडे देते है जिससे पत्तियाँ सूख जाती हैं। खुरल।
मुहुर्मुहुः (स्)—अव्य०[स० वीप्सा मे द्वित्व] थोड़ी-थोडी देर पर, वार-वार या रह-रह कर।
मुहूर्त्त—पु०[स० √हुर्च्छ् (टेढा होना)+क्त, मुडागम]१ काल का एक मान जो दिन-रात के तीसवें भाग के वरावर होता है। २ किसी काम के लिए निश्चित या स्थिर किया हुआ विशिष्ट समय। ३ फलित ज्योतिष मे, कोई शुभ काम करने अथवा यात्रा, विवाह आदि के उद्देश्य से काल-गणना के द्वारा स्थिर किया जानेवाला समय।† ४ श्रीगणेश। आरभ।
मुहैया—वि०[अ०] आवश्यकता की पूर्ति के लिए लाकर इकट्ठा किया या रखा हुआ। प्रस्तुत। जैसे—शादी का सामान मुहैया करना।
मुह्यमान—वि०, [स०√मुह्+शानच्, यक्, मुक्-आगम]१ मूर्च्छित। २ मोहयुक्त।
मूं—सर्व०१ =मेरा। २ =मुझे। (डिं०)
मूंकना—स०[स० मुक्त]१. मुक्त करना। छोडना। २ त्यागना।
मूंग—पु०[स० मुद्ग] एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल वनती है।
पद—**मूँग की दाल खानेवाला**=डरपोक, निकम्मा या पुरुपार्थहीन।
मुहा०—**(किसी पर) मूँग पढ़कर मारना**=किसी प्रकार का तात्रिक उपचार विशेषत वशीकरण करने के लिए मत्र पढते हुए किसी पर मूँग के दाने फेंकना। **(किसी की) छाती पर मूँग दलना**= किसी को दिखलाते हुए ऐसा काम करना जिससे उसे ईर्ष्या या जलन हो, अथवा हार्दिक कष्ट हो।
मूँगफली—स्त्री० [हिं० भूम (भूमि)+फली]१ जमीन पर चारो ओर फैलनेवाला एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती उसके फलों के लिए प्रायः सारे भारत मे की जाती है। इसकी जड़ मे मिट्टी के अन्दर फल लगते है, जिसके दाने या वीज रूप-रग और स्वाद मे वादाम से वहुत-कुछ मिलते-जुलते होते है। २. इस क्षुप का फल। चिनिया वादाम। विलायती मूँग। (सस्कृत मे इसे भू-चरणक और भू-शिविका कहते है।)
मूँगर(ा)—पु०[स्त्री० अल्पा० मूँगरी] =मोगरा।
मूँगरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की तोप।
मूँगा—पु०[हिं० मूँग] १. समुद्र मे रहनेवाले एक प्रकार के कीडो के समूह-पिंड की लाल ठठरी जिसकी गुरिया वनाकर पहनते है। इसकी गिनती रत्नो मे की जाती है। (कोरल) २. एक प्रकार का गन्ना।
पु०=मोगा (रेशम)।
मूँगिया—वि०[हिं० मूँग+इया (प्रत्य०)] मूँग के दानों के रग का।
पु०१. उक्त प्रकार का अमौआ या हरा रग जिसमे कुछ नीली आभा भी होती है। मुगी। २. उक्त रग का पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार कपडा।
मूँगी—वि०[हिं० मूँगा] मूँगे के रग की तरह का लाल।
पु० उक्त प्रकार का लाल रग। (कोरल)
मूँछ—स्त्री०[स० श्मश्रु, प्रा० मस्सु मे मच्छु] १. पुरुषों तथा कुछ अन्य जीव-जतुओं के ऊपर वाले होठ और नासिका के वीचवाले अग मे होनेवाले वाल। लोक-व्यवहार मे यह पौरुप के लक्षण के रूप मे माने जाते है।
मुहा०—**मूँछें उखाड़ना**=(क) कठिन दड देना। (ख) घमड चूर करना। **मूँछो पर ताव देना या हाथ फेरना**=विजय या वीरता की अकड दिखाना। अभिमान या वडप्पन प्रकट करना। **मूँछें नीची होना**=(क) अभिमान नष्ट होने के कारण लज्जित होना। (ख) अपमान या अप्रतिष्ठा होना।
२. कुछ विशिष्ट जीव-जतुओं के होठों पर होनेवाले उक्त प्रकार के वाल जिनके द्वारा वे चीजों का स्पर्श करके उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं।
मूँछी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की कढ़ी।
मूँज—स्त्री०[स० मुञ्ज] सरकडो के ऊपरी भाग का छिलका जिसे भिगो और कूटकर चारपाइयाँ वुनने के लिए वाध या वान (एक प्रकार की रस्सी) वनाया जाता है।
मूँड़—पु०[स० मुड] सिर। कपाल।
मुहा०—**मूँड मुँड़ाना**=त्यागी या विरक्त होकर किसी साधु-सन्यासी का चेला वनना। उदा०—मूँड मुँडाये, जटा वढाये, मगन फिरै ज्यो भैंसा।—कवीर।
विशेष—'मूंड' के शेष मुहा० के लिए देखें 'सिर' के मुहा०।
मूँड़-कटा—वि०[हिं० मूँड+काटना] सिर-कटा।
मूँड़न—पु०=मुडन।
मूँडना—स०[स० मुडन]१ उस्तरे से रगडकर शरीर के किसी अग पर निकले हुए वाल निकालना, विशेपत सिर के वाल निकालना। २. चालाकी से किसी से धन-दौलत ले लेना। ३. किसी को चेला वनाना।
मूँड़ी—स्त्री०[हिं० मुंड (सिर) का स्त्री० अल्पा०] १ सिर। मस्तक। मूंड।

पद—मूँड़ी-काटा=स्त्रियों की एक गाली जिसका आशय होता है- तेरा सिर काटा जाय अर्थात् तू मर जाय।

मुहा०—(किसी की) मूँड़ी मरोड़ना=किसी को धोखा देकर उसका माल छीन लेना या दवा बैठना।

२. किसी चीज का अगला और ऊपरी भाग।

मूँड़ीबंध—पु०[हिं० मूँड+बंध] कुश्ती का एक पेच।

मूँदना—स०[सं० मुद्रण] १. ऊपर से कोई वस्तु डाल या फैलाकर किसी वस्तु को छिपाना। आच्छादित करना। २. छेद या सूराख बन्द करना। ३. आँखों के सम्बन्ध में दोनों पलके इस प्रकार मिलाना कि देखने का काम बन्द हो जाय।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

४. किसी चीज को उलट या ढककर रखना।

मूँदरी†—स्त्री०=मुदरी (अँगूठी)।

मूँध†—स्त्री०=मुग्धा। (राज०) उदा०—मूँध मेरसी खीज।—ढो० मा०।

मू—पु०[फा०] १. बाल। २. रोआँ। ३. केश।

मूआ—वि०[मृत] [स्त्री० मुई] १. मरा हुआ। मृत। २. उपेक्षा-सूचक गाली के रूप में प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—मूआ नौकर अभी तक नहीं आया। (स्त्रियाँ)

मूक—वि० [सं०√मव्(बाँधना)+कक्, वकार को ऊठ्] [भाव० मूकता] १ जो कुछ भी बोल न रहा हो। २ गूँगा। ३ दीन-हीन। लाचार।

पु० १ दानव। राक्षस। २ तक्षक का एक पुत्र।

मूकता—स्त्री०[सं० मूक+तल्+टाप] मूक होने की अवस्था या भाव।

मूकना—स०[सं० मुक्त] १ मुक्त करना। २ अलग या पृथक् करना। ३ त्यागना।

मूका†—पु० १ =मुक्का। २ =मोखा।

मूकिमा (मन्)—स्त्री० [सं० मूक+इमनिच्] मूक होने की अवस्था या भाव। मूकता।

मूखना†—स०=मूसना।

मूचना†—स०=मोचना।

पु०=मोचना।

मूछ—स्त्री०=मूँछ।

मूजिद—पु०[अ०] आविष्कारक।

मूजिब—पु०[अ०] कारण। सबब।

मूजी—वि०[अ०] १ ईजा देने अर्थात् कष्ट पहुँचानेवाला। सतानेवाला। अत्याचारी। २ खल। दुर्जन। ३ बहुत बडा कजूस। परम कृपण।

मूझ†—सर्व०=मुझ।

मूझना—अ०[सं० मूर्च्छन] १. मूर्च्छित होना। २. मुरझाना।

मूठ—स्त्री०[सं० मुष्टि] १ मुट्ठी।

मुहा०—**मूठ करना**=तीतर, बटेर आदि को गरमाने तथा उत्तेजित करने के लिए मुट्ठी में रखकर हलके हाथ से बार बार दबाना। **मूठ मारना**=(क) कबूतर को मुट्ठी में पकडना। (ख) हस्त-क्रिया करना।

२ किसी उपकरण, यत्र, अस्त्र आदि का वह भाग जहाँ से उसे पकडा या उठाया जाता है। जैसे—छाता, चक्की या तलवार की मूठ। ३ किसी औजार, हथियार आदि का वह भाग जो व्यवहार करते समय हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। जैसे—छाते या तलवार की मूठ। ४ उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ५ एक प्रकार का जुआ जिसमें मुट्ठी में कौडियाँ बन्द करके उनकी संख्या बुझाते हैं। ६ मत्र-तत्र का प्रयोग। जादू। टोना।

मुहा०—**मूठ मारना**=किसी पर जादू-टोना करने के लिए मुट्ठी में कोई चीज पकडकर और मत्र पढकर किसी पर फेंकना।

मूठना*—अ०[सं० मुष्ट; प्रा० मुट्ठ] नष्ट होना। मर मिटना। न रह जाना।

मूठा—पु०=मुट्ठा।

मूठाली—स्त्री०[हिं० मूठ+आली (प्रत्य०)] तलवार। (डिं०)

मूठि†—स्त्री० १ =मूठ। २.=मुट्ठी।

मूठी*—स्त्री०=मुट्ठी।

मूड़—पु०=मूँड।

वि०=मूढ।

मूड़ी†—स्त्री०[?] ऐसे भुने हुए चावल जो फूलकर अन्दर से पोले हो जाते हैं। फरवी।

†स्त्री०=मूँडी (मुड या मस्तक)।

मूड़ी-काटा—वि० [हिं० मूँड+काटना] जिसका सिर काटे जाने के योग्य हो, अर्थात् परम दुष्ट। (स्त्रियों की गाली)

मूढ—वि०[सं० √ मुह् (अविवेक)+क्त] [भाव० मूढता] १ जिसे कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। बिलकुल नासमझ। २ निश्चेष्ट। स्तब्ध। ३. हक्का-बक्का।

पु० तमोगुण की प्रधानता के कारण चित्त के निन्द्रायुक्त या स्तब्ध होने की अवस्था या भाव।

मूढ-गर्भ—पु०[सं० कर्म० स०] ऐसा गर्भ जिसमे से सन्तान न हो सके। विकृत होकर गिर जानेवाला गर्भ।

मूढता—स्त्री० [सं० मूढ+तल्+टाप्] १ मूढ होने की अवस्था या भाव। २ मूर्खता। ३ अज्ञान।

मूढ-वात—पु०[सं० कर्म० स०] १ किसी कोश में रुकी या बँधी हुई वायु। २ बहुत जोरों का अन्धड। तूफान। जैसे—मूढ-वाताहत जहाज=तूफान का मारा हुआ जहाज।

मूढात्मा (त्मन्)—वि० [सं० मूढ-आत्मन्, ब० स०] बहुत बडा मूर्ख।

मूढी†—स्त्री०=मूड़ी (फरवी)।

मूत—पुं०[सं० मूत्र] १ पेशाब। मूत्र।

मुहा०—**(किसी के आगे) मूत निकल पड़ना**=भय से त्रस्त होना। **मूत से निकल कर गू में पडना**=पहले की अपेक्षा और भी अधिक बुरी दशा मे जाना या पडना।

२ औलाद। सतान। (बाजारू)

मूतना—अ०[हिं० मूत+ना (प्रत्य०)] पेशाब करना।

मुहा०—**(किसी चीज पर) मूतना**=बहुत ही तुच्छ या हेय और फलत अग्राह्य या अस्पृश्य समझना।

मूतरी†—पु०[देश०] एक प्रकार का जगली कौआ। महताब। महालत।

मूत्र—पु० [सं०√ मूत्र् (मूतना)+घञ्] प्राणियों के उपस्थ मार्ग या

जननेंद्रिय से निकलनेवाला वह दुर्गन्धमय तरल पदार्थ जिसमे शरीर के अनेक निकृष्ट विषाक्त अश मिले रहते है। पेशाव। मूत।

मूत्र-कृच्छ्र—पु०[स० मध्य० म०] एक प्रकार का रोग जिसमे मूत्र थोडा-थोडा, कुछ रुक-रुककर और प्राय कुछ कष्ट सा होता है। (स्ट्रैंगुरी)

मूत्र-क्षय—पु०[स० ष० त०] मूत्राघात रोग का एक भेद।

मूत्र-ग्रंथि—पु०[स० ष० त०] मूत्राघात रोग का एक भेद।

मूत्र-दशक—पु०[स० ष० त०] हाथी, भेडे, ऊँट, गाय, वकरे, घोडे, भैंसे, गधे, पुरुष और स्त्री के मूत्रों का समूह।

मूत्र-दोष—पुं०[स० व० म०] मूत्र-सवधी कोई कष्ट या विकार।

मूत्र नाली—स्त्री०[स० ष० त०] उपस्थ के ऊपर या अन्दर की वह नाली जिसके द्वारा शरीर से मूत्र निकलता है।

मूत्र-पतन—पु०[स० व० स०]१. मूत्र गिरने की अवस्था या भाव। २ गन्ध-विलाव, जिसका मूत्र प्राय गिरता रहता है।

मूत्र-पथ—पु०[स० ष० त०] मूत्र-नाली।

मूत्र-परीक्षा—स्त्री० [स० ष० त०] चिकित्साशास्त्र मे, रोगी के मूत्र की वह वैज्ञानिक जाँच जिससे यह पता चलता है कि शरीर मे किस प्रकार के कीटाणु या विकार है। (यूरिन एग्ज़ामिनेशन)

मूत्र-प्रसेक—पु०[स० ष० त०] मूत्र-नाली।

मूत्र-फला—स्त्री०[स० व० स०, +टाप्] ककडी।

मूत्र-मार्ग—पु०[स०] मूत्राशय के साथ लगी हुई वह नली या सुरगिका जिससे होकर मूत्र आगे वढकर निकलने के लिए जननेंद्रिय के ऊपरी भाग तक पहुँचता है। (यूरेथ्रा)

मूत्र-रोध—पु०[स० ष० त०] वह अवस्था जिसमे किसी प्रकार के शारीरिक विकार के फलस्वरूप पेशाव होना वद हो जाता है। पेशाव वन्द होने का रोग।

मूत्रल—वि०[स० मूत्र√ ला (लेना) +क] [स्त्री० मूत्रला]अधिक और अनेक वार मूत्र लानेवाला (औषध या पदार्थ)।

मूत्रला—स्त्री०[स० मूत्रल+टाप्] ककडी।
वि० स० 'मूत्रल' का स्त्री०।

मूत्र-वृद्धि—स्त्री०[स० ष० त०] अधिक वार तथा अपेक्षाकृत अधिक परिमाण मे पेशाव होना।

मूत्र-स्रोत—पु०[स० ष० त०] दे० 'मूत्र-मार्ग'।

मूत्राघात—पु०[स० मूत्र-आघात, व० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर के अन्दर कुछ समय के लिए मूत्र का वनना वन्द हो जाता है।

मूत्राशय—पु०[स०] नाभि के नीचे की वह थैली जिसमे मूत्र सचित होता है। मसाना। (यूरिनरी ब्लैडर)

मूत्रित—भू० कृ० [स० मूत्र+इतच्] १. मूत्र के रूप मे निकला हुआ। २ जो पेशाव के स्पर्श के कारण गदा हो गया हो।

मूना—पु०[देश०]१ पीतल या लोहे की अँकुसी जो टकुए के सिरे पर जडी रहती है और जिसमे रस्सी या डोरा फँसा रहता है। २ एक तरह का झाड या उसका फल।
†अ०=मुअना (मरना)।

मूर*—पु०[स० मूल]१ मूल। जड। २ जडी। बूटी। ३ मूल धन। असल पूँजी। ४. मूल नक्षत्र।

पु० अफ्रीका की एक मुसलमान जाति।

मूरख†—वि०=मूर्ख।

मूरखताई*—स्त्री० =मूर्खता।

मूरचा—पु०=मोरचा (जग)।

मूरछना†—अ०[स० मूर्च्छा] मूर्च्छित होना। वेहोश होना।
स्त्री०१ =मूर्च्छा। २ मूर्च्छना।

मूरछा—स्त्री०=मूर्च्छा।

मूरत†—स्त्री०=मूर्ति।

मूरति†—स्त्री०=मूर्ति।

मूरतिवत*—वि०[स० मूर्ति+वत् (प्रत्य०)] १ मूर्तिमान्। २ देहधारी। सशरीर।

मूरध*—पु०=मूर्धा (सिर)।

मूरा†—पु०[स० मूल] वडी तथा मोटी मूली।

मूरि*—स्त्री० [स० मूल]१ मूल। जड। २. जडी। बूटी।

मूरिस—वि०[अ०] वह जिसका कोई वारिस हुआ हो।
पु० पूर्वज।

मूरी†—स्त्री०१ =मूली। २. मूरि।

मूरुख*—वि० =मूर्ख।

मूर्ख—वि०[स० √ मुह्+ख. मूर् आदेश] [भाव० मूर्खता] १. प्राचीन भारतीय आर्यों मे गायत्री न जानने अथवा अर्थ-सहित गायत्री न जानने-वाला। २ जिसमे ठीक ढग से तथा विचारपूर्वक कोई काम करने अथवा कोई वात समझने-सोचने की योग्यता या शक्ति न हो। वुद्धि के अभाव मे जो ऊट-पटाग काम करता या वातें सोचता हो। ३ लाख समझाने पर भी जिसकी समझ मे कोई वात न आती हो।

मूर्खता—स्त्री०[स० मूर्ख+तल्+टाप्] १. मूर्ख होने की अवस्था या भाव। २ कोई मूर्खतापूर्ण आचरण, कार्य या वात।

मूर्खत्व—पु०[स० मूर्ख+त्व]=मूर्खता।

मूर्खिनी*—स्त्री०[स० मूर्ख] मूर्ख स्त्री।

मूर्खिमा—स्त्री०[स० मूर्ख+इमनिच्] मूर्खता। वेवकूफी।

मूर्च्छन—पु० [स०√मुर्च्छ् (मोह)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० मूर्च्छित] १ किसी की चेतना या सज्ञा का, कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे अस्थायी रूप मे लोप करने की क्रिया या भाव। वेहोश करना या वेहोशी लाना। २ प्राचीन काल का एक विशिष्ट तात्रिक प्रयोग जिससे किसी व्यक्ति की चेतना या सज्ञा नष्ट कर दी जाती थी। ३ आज-कल प्राय इच्छाशक्ति के प्रयोग से किसी को इस प्रकार चेतनाहीन करना कि उसे शारीरिक कष्टो का अनुभव न हो और उसका स्नायविक तत्र प्राय वेकाम हो जाय। (मेस्मेरिज़्म)
विशेष—इस प्रक्रिया का आविष्कार आस्ट्रिया के मेस्मर नामक चिकित्सक ने रोगियो की चिकित्सा के लिए किया था।
४ उक्त के आधार पर वह प्रक्रिया जिसमे आत्मिक वल के द्वारा किसी को कुछ समय के लिए सज्ञाशून्य करके उससे कुछ असाधारण और विलक्षण कार्य कराये जाते है और जिसकी गणना इद्रजाल मे होती है। (मेस्मेरिज़्म) ५ वैद्यक मे वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पारा शुद्ध करने या उसका भस्म तैयार करने के लिए उसकी चचलता नष्ट करके उसे स्थिर कर देते है। ६ कामदेव के पाँच वाणो मे स एक, जिसके प्रभाव

या प्रहार से प्रेमासक्त व्यक्ति कभी-कभी अपनी चेतना या सज्ञा खो देता है।

मूर्च्छना—स्त्री० [स०√मूर्च्छ+युच्-अन, टाप्] १ संगीत मे किसी स्वर से आरभ करके सातवें स्वर तक आरोह कर चुकने के उपरात उन्ही स्वरो से होनेवाला अवरोह। २ उक्त प्रक्रिया के फलस्वरूप होनेवाला शब्द या निकलनेवाला स्वर।

मूर्च्छा—स्त्री० [स०√मूर्च्छ्+अ+टाप्] वह अवस्था जिसमे अस्थायी रूप मे किसी की सज्ञा लुप्त हो चुकी होती है। बेहोशी।

विशेष—मूर्च्छा और सन्यास का अतर जानने के लिए दे० 'सन्यास' का विशेष।

मूर्च्छाल—वि० [स० मूर्च्छा+लच्] मूर्च्छित। सज्ञाहीन।

मूर्च्छित—भू० कृ० [स० मूर्च्छा+इतच्] १. जो अचेत या बेहोश पडा हुआ हो। २ (धातु) जिसकी क्रियाशीलता नष्ट कर दी गई हो। जैसे—मूर्च्छित पारा। ३ (व्यक्ति) जो वय अधिक होने के कारण अयोग्य तथा अशक्त हो गया हो।

मूर्छा†—स्त्री०=मूर्च्छा।

मूर्छित†—भू० कृ०=मूर्च्छित।

मूर्त—वि० [स०√मूर्च्छ् (मूर्च्छित होना)+क्त] १. जिसकी कोई मूर्ति अर्थात् आकार या रूप हो। २ जो किसी प्रकार के ठोस पिड के आकार या रूप मे हो। जिसका कोई भौतिक अर्थात् कडा या ठोस रूप हो, और इसी लिए जो देखा या पकडा जा सके। साकार। (कान्क्रीट) ३ जिसका महत्त्व या स्वरूप समझ मे आ सके। बुद्धि-ग्राह्य। (टैन्जिबल) ४ मूर्च्छित। बेहोश।

मूर्तता—स्त्री० [स० मूर्त+तल्+टाप्] मूर्त होने की अवस्था या भाव।

मूर्तत्व—पु० [स० मूर्त+त्व] मूर्त होने की अवस्था या भाव। मूर्तता।

मूर्त-विधान—पु० [स० प० त०] केवल कल्पना के आधार पर घटनाओ, कार्यों आदि के स्वरूप, चित्र आदि बनाने की क्रिया या भाव। प्रतिभावली। (इमेजरी)

मूर्ति—स्त्री० [स०√मूर्च्छ्+क्तिन्, छ-लोप] १. मूर्त होने की अवस्था या भाव। मूर्तता। ठोसपन। २ आकृति। शकल। सूरत। ३ देह। शरीर। ४ किसी की आकृति के अनुरूप गढी हुई विशेषत उपासना, पूजन आदि के लिए बनाई हुई देवी-देवता की आकृति। प्रतिमा। जैसे—सरस्वती की पत्थर या मिट्टी की मूर्ति। †५ चित्र। तसवीर।

वि० जो किसी विषय का बहुत बडा ज्ञाता या पडित हो। (यौ० के अत मे) जैसे—वेद-मूर्ति।

मूर्ति-कला—स्त्री० [स० प० त०] मूर्तियाँ बनाने की विद्या या हुनर।

मूर्तिकार—पु० [स० मूर्ति√कृ+अण्] १ मूर्ति बनानेवाला कारीगर। २ चित्रकार।

मूर्तिप—पु० [स० मूर्ति√पा] १ पुजारी। २ मूर्तिपूजक।

मूर्ति-पूजक—वि० [स० प० त०] जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो। मूर्ति पूजनेवाला। बुतपरस्त।

मूर्ति-पूजन—पु० [स० प० त०] मूर्तियो की पूजा करने की क्रिया या भाव।

मूर्ति-पूजा—स्त्री० [स० प० त०] १ सगुण भक्ति के अन्तर्गत, मूर्ति की की जानेवाली पूजा। २ मूर्तियो की पूजा करने की पद्धति, प्रथा या विधान।

मूर्तिभंजक—वि० [स० प० त०] १ मूर्तियाँ तोडनेवाला। बुतशिकन। २ फलत जिसका मूर्तियो मे विश्वास न हो।

मूर्तिमान् (मत्)—वि० [स० मूर्ति+मतुप्] [स्त्री० मूर्तिमती, भाव० मूर्तिमत्ता] १ जो मूर्त रूप मे हो। २ फलत सगुण तथा साकार। ३ प्रत्यक्ष। साक्षात्।

मूर्ति-लेख—पु० [स० मध्य० स०] वह लेख जो किसी मूर्ति के नीचे उसके परिचय आदि के रूप मे अकित किया जाता है।

मूर्ति-विद्या—स्त्री० [स० प० त०] १. मूर्ति या प्रतिमा गढने की कला। २ चित्रकारी।

मूर्तीकरण—पु० [स० मूर्त+च्वि, इत्व, दीर्घ√कृ+ल्युट्-अन] [भू० कृ० मूर्तीकृत] किसी अमूर्त तत्त्व को मूर्त रूप देने की क्रिया या भाव।

मूर्द्ध—पु० [स० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धक—पु० [स० मूर्द्धन्+कन्] क्षत्रिय।

वि० मूर्द्ध या सिर से सम्बन्ध रखनेवाला।

मूर्द्ध-कर्णी—स्त्री० [स०] छाता या ऐसी ही और कोई वस्तु जो धूप, पानी आदि से बचने के लिए सिर के ऊपर रखी या लगाई जाती हो।

मूर्द्धकपारी†—स्त्री०=मूर्द्धकर्णी।

मूर्द्धखोल—पु०=मूर्द्धकर्णी।

मूर्द्धज—वि० [स० मूर्द्धन्√जन् (उत्पन्न-होना)] मूर्द्धा या सिर से उत्पन्न होनेवाला, अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

पु० केश। बाल।

मूर्द्ध-ज्योति (स्)—स्त्री० [स० प० त०] ब्रह्मरध्र। (योग)

मूर्द्धन्य—वि० [स० मूर्धन्+यत्] १ मूर्द्धा से सबंध रखनेवाला। मूर्द्धा-सबधी। २ मस्तक या सिर मे रहने या होनेवाला। ३ (वर्ण) जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता हो। (दे० 'मूर्द्धन्य-वर्ण')

मूर्द्धन्य-वर्ण—पु० [स० कर्म० स०] देव-नागरी वर्ण-माला मे वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्ध-पिंड—पु० [स० उपमि० स०] हाथी का मस्तक।

मूर्द्ध-पुष्प—पु० [स० ब० स०] शिरीष पुष्प।

मूर्द्ध-रस—पु० [स० मध्य० स०] भात का फेन।

मूर्द्धा (र्द्धन्)—पु० [स०√मूर्व् (बाँधना)+कनिन्, व–ध] १ मस्तक। सिर। २ व्याकरण मे, मुँह के अन्दर का तालू और अलिजिह्वा के बीच का अश जिसे जीभ का अग्र भाग ट, ठ, ड, ढ, ण आदि का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।

मूर्द्धाभिषिक्त—भू० कृ० [स० मूर्धन्-अभिषिक्त, सुप्सुपा स०] १ जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो। २ (राजा) जिसके राज्यारोहण के समय मूर्द्धाभिषेक नामक धार्मिक कृत्य हुआ हो।

पु० १ राजा। २ क्षत्रिय। ३ एक वर्ण-सकर जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण से ब्याही क्षत्रिय स्त्री के गर्भ से कही गई है।

मूर्द्धाभिषेक—पु० [स० मूर्धन्-अभिषेक, ब० स०] प्राचीन भारत मे, एक प्रकार का धार्मिक और राजकीय कृत्य जिसमे किसी नये राजा के गद्दी

पर बैठने से पहले उसके सिर पर मत्र पढकर पवित्र जल छिडका जाता था।

मूर्वा—स्त्री० [स०√मूर्व् (बाँधना)+अच्+टाप्] मरोडफली लता। मधुरसा।

मूर्विका—स्त्री०[सं० मूर्वा+कन्+टाप् ह्रस्व, इत्व] मूर्वा।

मूर्वी—स्त्री०=मूर्वा।

मूल—पु०[स०√मू+क्ल, ऊड्–आदेश] [वि० मूलक] १ पेड-पौधो का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, और जिनके द्वारा वे जलीय अग आदि खीचकर अपना पोषण करते और बढते है। जड। मोर। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो की जडें जो प्राय खाने के काम आती है। उदा०—सहि दुख कन्द, मूल, फल खाई।––तुलसी।

पद—कंद-मूल।

३ आदि। आरभ। शुरू। ४ नीव। बुनियाद। ५ कोई ऐसा तत्त्व जिसमे कोई दूसरी चीज या बात निकली, वही या बनी हो। उत्पादक तत्त्व या बात। जैसे—इस झगडे का मूल कारण तो बताओ।६ वह धन जो किसी प्रकार के लाभ की आशा मे किसी व्यापार मे लगाया जाय अथवा सूद पर किसी को उधार दिया जाय। असल पूँजी।

मुहा०—मूल पूजना=व्यापार मे लगी हुई पूँजी या मूल धन निकल आना।

७ किसी पदार्थ का वह अग या अश जहाँ से उस पदार्थ का आरम्भ होता है। जैसे—भुज-मूल। ८ कोई ऐसी चीज जिसकी अनुकृति पर वैसी ही और चीज या चीजें बनाई जाती हो। ९ साहित्य मे वह लेख या लेख्य जो पहले-पहल किसी ने अपनी बुद्धि या मन से तैयार किया या बनाया हो, और आगे चलकर जिसकी प्रति लिपि, व्याख्या आदि प्रस्तुत होती हो। जैसे—(क) मूल की चार प्रतिलिपियाँ हुई थी। (ख) गीता के इस सस्करण मे मूल और टीका दोनो हैं। १०. सत्ताईस नक्षत्रो में से उन्नीसवाँ नक्षत्र, जिसमे बालक का जन्म होना दूषित या निषिद्ध माना जाता है। ११ जमीकद। सूरन। १२ पिप्पली मूल। १३ तत्र मे किसी देवता का आदि मत्र या बीज। वि० १ असल और पहला। २ प्रधान। मुख्य। ३ जिसके आधार पर आगे चलकर किसी प्रकार का विकास होने को हो।

अव्य० निकट। पास। समीप।

मूलक—वि०[स० मूल+कन्] १ जो किसी के मूल मे हो। २ जिसके मूल मे कुछ हो। ३. उत्पन्न करनेवाला। जैसे—अनर्थ मूलक।

पु० १ मूल स्वरूप। २. मूली नामक कद। ३ वैद्यक मे ३४ प्रकार के स्थावर विषो में से एक प्रकार का विष। ऐसा विष जो वृक्षो के मूल या जड के रूप मे होता हो।

मूलक-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] सहिजन (पेड)।

मूल-कमल—पु० [स० कर्म० स०] हठयोग के अनुसार नाभि के आसपास का अवयव जो कमल के रूप मे माना गया है। नाभि-कमल।

मूल-कर्म (न्)—पु०[स० कर्म० स०] त्रासन, उच्चाटन, स्तभन, वशीकरण आदि का वह तात्रिक प्रयोग जो ओषधियो के मूल द्वारा किया जाता है। जडी-बूटियो के मूल से होनेवाला टोना-टोटका।

मूलकार—पु०[स० मूल√कृ (करना) +अण्] मूलग्रथ का कर्ता।

मूलकारिका—स्त्री०[सं० मूलकारक+टाप्, इत्व] १ मूल गद्य या पद्य जिसकी टीका की गई हो। २ उधार दिए हुए मूलधन की एक विशेष प्रकार की वृद्धि या सूद। ३ चडीदेवी का एक नाम।

मूल-कृच्छ्र—पु० [स० सुप्सुपा स०] स्मृतियो मे वर्णित ग्यारह प्रकार के पर्णकृच्छ्रव्रतो मे से एक जिसमे मूली आदि कुछ विशेष जडो का क्वाथ या रस पीकर एक मास तक रहना पडता है। (मिताक्षरा)

मूल-खानक—पु०[स० ष० त०] एक प्राचीन वर्णसकर जाति जो पेडो की जडो से जीविका निर्वाह करती थी।

मूलगीन†—पु०[?] नाचने-गानेवाली मडली का वह व्यक्ति जो दूसरे साथियो को गाना और नाचना सिखाता हो। (पूरब)

मूलच्छेद—पु०[स० ष०त०] १ किसी चीज की जड काटना जिसमे फिर वह पनप या बढ न सके। २ पूरी तरह से किया जानेवाला नाश।

मूलज—वि०[स० मूल√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. मूल से उत्पन्न। २ जड़ से उत्पन्न होनेवाला।

पु० अदरक। आदी।

मूलतः (तस्)—अव्य० [स० मूल+तस्] मूल रूप मे। आदि मे। प्रथमत।

मूल-त्रिकोण—पु०[कर्म० स०] फलित ज्योतिष मे, सूर्य आदि ग्रहो की कुछ विशेष राशियो मे स्थिति।

मूल-द्रव्य—पु०[कर्म० स०] १. मूलधन। पूँजी। २. वह भूत या द्रव्य जिससे अन्य भूतो या द्रव्यो की उत्पत्ति हुई है।

मूल-द्वार—पु०[कर्म० स०] सिंह-द्वार। सदर दरवाजा।

मूल-द्वारावती—स्त्री०[कर्म० स०] द्वारावती नगरी का वह प्राचीन अग जो आजकल की द्वारका से कुछ दूर प्राय समुद्र के अन्दर पड़ता है।

मूल-धन—पु०[कर्म० स०] वह धन जो और धन कमाने के उद्देश्य से लगाया जाय। पूँजी।

मूलधनी—पु०[स० मूलधन से] १. वह जो किसी काम मे मूलधन लगाता हो। २. दे० 'पूँजीपति'।

मूल-धातु—स्त्री०[कर्म० स०] शरीर के अन्दर की मज्जा।

मूलन†—वि०[स० मूल] पूरा। समूचा।

अव्य० १ मूल मे ही। मूलत । २. निश्चित रूप मे। अवश्य।

मूल-पर्णी—स्त्री०[ब० स०,+ङीष्] मडूकपर्णी नामक की ओषधि।

मूल-पाठ—पु०[कर्म० स०] किसी लेखक के वाक्यो की वह मूल शब्दावली जिसका प्रयोग उसने स्वय ही अपने लेख्य मे किया हो। (टेक्स्ट)

मूल-पुरुष—पु० [कर्म० स०] किसी वश को चलानेवाला व्यक्ति। किसी वश का आदि पुरुष।

मूल-पोती—स्त्री०[मध्य० स०] छोटी पोई नाम का शाक।

मूल-प्रकृति—स्त्री०[कर्म० स०] ससार की बीज-शक्ति या वह आदिम सत्ता, जिसका परिणाम तथा विकास यह सारी सृष्टि है। आद्या शक्ति। प्रकृति।

मूल-बध—पु०[स०] १ हठयोग की एक क्रिया जिसमे सिद्धासन या वज्रासन द्वारा शिश्न और गुदा के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढाते है, जिससे कुडलिनी जागकर मेरु-दड के सहारे ऊपर की ओर चढने लगती है। २. तात्रिक पूजन मे एक प्रकार का अगुलि-न्यास।

मूलवर्हण—पु०[स० प० त०] १ कोई चीज जड़ से काटना। मूलच्छेद। २ मूल नक्षत्र।

मूल-भूत—पु०[स०] वह भूत जिससे अन्य भूतों की सृष्टि मानी जाती है। वि० १. किसी वस्तु के मूल से संबंध रखनेवाला। २ जो किसी दूसरे के आधार पर या किसी की नकल न हो। (ओरिजिनल) ३ असल। मौलिक। (फंडामेंटल)

मूल-भृत्य—पु० [कर्म० स०] पुश्तैनी नौकर।

मूल-मंत्र—पु०[कर्म० स०] वह उपाय जिससे कोई कार्य या सब कार्य जल्दी और सहज में सिद्ध हो जाते हों।

मूल-रक्षण—पु० [प० त०] राजधानी या शासन के केंद्र-स्थान की रक्षा। (कौ०)

मूल-रस—पु०[ब० स०] मूर्वा (लता)।

मूल-वित्त—पु०[कर्म० स०] मूल-धन। पूँजी।

मूल-विष—वि०[ब० स०] जिसकी जड़ विषैली हो। (कनेर)।

मूल-व्यसन—पु०[कर्म० स०] ऐसा व्यसन जो किसी परिवार या वंश में पुरुषानुक्रम या कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो।

मूल-शाकट—पु०[स० मूल+शाकट] वह खेत जिसमें मूली, गाजर आदि मोटी जड़वाले पौधे बोये जाते हैं।

मूल-स्थली—पु०[कर्म०स०] पेड़ का थाला। आलवाल।

मूल-स्थान—स्त्री०[कर्म० स०] १ रहने का आरंभिक स्थान। २ बाप-दादा की जगह। पूर्वजों का निवास-स्थान। ३ प्रधान स्थान। राजधानी। ४. दीवार। भीत। ५. ईश्वर। ६ आधुनिक मुलतान नगर का पुराना और मूल नाम। (प्राचीन काल में यह तीर्थ था।)

मूल-हर—वि० [प० त०] जिसने अपना संपूर्ण धन नष्ट कर दिया हो। (कौ०)

मूला—स्त्री० [स० मूल+टाप्] १. सतावर। २ मूल नामक नक्षत्र। ३ पृथ्वी। (डिं०)

स्त्री० [हिं० मूली] बहुत बड़ी और मोटी मूली।

† स्त्री०=मूली।

मूलांश—पु०[स० मूल+अंश] १ किसी वस्तु का मूल अंश या तत्त्व। २ वह मूल अंग जो आधार के रूप में हो और जिसके ऊपर किसी प्रकार की विस्तृत रचना या विकास हुआ हो। (बेस)

मूलाधार—पु० [मूल-आधार, प० त०] हठयोग में माने हुए मानव-शरीर के अन्दर के छ चक्रों में से एक चक्र जिसका स्थान अग्नि-चक्र के ऊपर गुदा और शिश्न के मध्य में है।

विशेष—यह चार दलोंवाला और लाल रंग का कहा गया है; और इसके देवता गणेश माने गये हैं। कहते हैं कि इसे सिद्ध कर लेने पर मनुष्य सब विद्याओं का ज्ञाता हो जाता है और सदा प्रसन्न तथा स्वस्थ रहता है।

मूलार्थ—पु०[स० मूल+अर्थ, एक प्रकार का क्वाथ] होमियोपैथी चिकित्सा में किसी औषधि का वह मूल रस या सार जिससे आगे चलकर चिकित्सा के लिए अधिक शक्तिवाले रूप प्रस्तुत किये जाते हैं। (मदर टिंचर)

मूलिक—वि०[सं० मूल+ठन्—इक] १. मूल-संबंधी। मूल का। २ जो मूल में हो। जैसे—मूलिक न्यायालय=वह न्यायालय जिसमें पहले-पहल कोई मुकदमा या वाद उपस्थित किया गया हो। ३ कंद-मूल खाकर जीवन निर्वाह करनेवाला।

मूलिन—वि०[स० मूल+इनि] मूल से उत्पन्न।

पु० पेड़। वृक्ष।

मूलिनी—स्त्री०[स० मूलिन्+ङीप्] जड़ के रूप में होनेवाली औषधि। जड़ी।

मूलिनी-वर्ग—पु०[स० प० त०] नागदंती, श्वेतवचा, श्यामा, त्रिवृत्, वृद्धदारका, सप्तला, श्वेता अपराजिता, मूषकपर्णी, गोडुंबा, ज्योतिष्मती, बिंबी, क्षणपुष्पी, विषाणिका, अश्वगंधा, द्रवंती, और क्षीरिणी जड़ों का समाहार। (सुश्रुत)

मूली—स्त्री० [स० मूलक] १. एक पौधा जो अपनी लंबी मुलायम जड़ के लिए बोया जाता है और जिसकी तरकारी बनती है। यह जड़ खाने में मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती है।

मुहा०—(किसी को) मूली गाजर समझना=बहुत ही तुच्छ समझना। किसी गिनती में न समझना।

२. एक प्रकार का घास।

स्त्री० [सं०] १ ज्येष्ठी। २ एक पौराणिक नदी।

†स्त्री०=मूलिका (जड़ी)।

मूलीय—वि०[स० मूल+छ—ईय] मूल का या मूल से होनेवाला। मूल-सम्बन्धी। जैसे—जिह्वा-मूलीय।

मूलोच्छेद—पु०[स० मूल-उच्छेद, ष० त०] =मूलच्छेद।

मूलोदय—पु०[स० मूल-उदय, ष० त०] ब्याज का बढ़ते-बढ़ते मूल धन के बराबर हो जाना।

मूल्य—पु०[स० मूल+यत्] १. मुद्रा के रूप में उतना धन जो कोई चीज क्रय करने के लिए उसके बदले में किसी को देना पड़ता है। २. वह दर या भाव जिस पर कोई चीज बिकती हो। अर्थशास्त्र के अनुसार यह किसी वस्तु की माँग और होनेवाली पूर्ति की मात्रा के आधार पर स्थिर होता है। ३. वह गुण या तत्त्व जिसके आधार पर किसी का महत्त्व या मान होता है। ४ वह जो कुछ किसी को किसी कारणवशात् झेलना, भुगतना या बलिदान करना पड़ता है। जैसे—अत्यधिक परिश्रम का मूल्य स्वास्थ्य-हानि के रूप में चुकाना पड़ता है।

क्रि० प्र०—चुकाना।

वि० १. प्रतिष्ठा के योग्य। कदर के लायक। २. (पौधा) जो रोपा जा सकता हो। ३ (फसल) जो जड़ से उखाड़ी जाने के योग्य हो। जैसे—उड़द, मूँग आदि।

मूल्यन—पु० [स०√मूल्य्+णिच्+ल्युट्-अन] किसी वस्तु का मूल्य निश्चित या स्थिर करना। दाम आँकना। मूल्यांकन। (वैल्युएशन)

मूल्यवान् (वत्)—वि० [स० मूल्य+मतुप्] १ जिसका मूल्य अत्यधिक हो। बहुमूल्य। २ जिसका महत्त्व या मान किसी की दृष्टि में बहुत अधिक हो।

मूल्य-विज्ञान—पु०[प० त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि बाजारों में वस्तुओं के मूल्य किन आधारों पर या किन कारणों से घटते-बढ़ते रहते हैं।

मूल्य-सूचनांक—पु०[प० त०] दे० 'सूचकांक'।

मूल्य-ह्रास-निधि—पु० [प० त०] वह कोश या निधि जिसका मुख्य

उद्देश्य दैनिक उपयोग मे आनेवाले उपकरणो आदि के घिस जाने, पुराने तथा बेकाम हो जाने के कारण उनके मूल्य मे क्रमश होनेवाली घटी पूरी करना होता है। (डिप्रिशियेशन फड)

मूल्याकन--पु०[स० मूल्य-अकन, प० त०] १ किसी बात या वस्तु का मूल्य निर्धारित या निश्चित करने की क्रिया या भाव। (वैल्युएशन) २ किसी वस्तु की उपयोगिता, गुण, महत्त्व आदि का होनेवाला अकन। कूत।

मूल्यानुसार--अव्य० [स० मूल्य-अनुसार, प० त०] दे० 'यथा-मूल्य'।

मूवना—अ० [स० मरण] मरना।

मूश—पु०[स० मूष से] चूहा।

मूष—पु०[स०√मूष् (चुराना)+क]=मूषक (चूहा)।

मूषक--पु०[स० मूष+कन्] [स्त्री० मूषिका] १ चूहा। २ लाक्षणिक अर्थ मे, वह जो चुरा-छिपा कर या जबरदस्ती दूसरो का धन ले लेता हो। ३ रहस्य सप्रदायो मे, मन जो अज्ञान के अन्धकार मे चूहे की तरह विचरता हे और जिसे अन्त मे काल-रूपी सर्प खा जाता हे।

मूषक-कर्णी--स्त्री० [ब० स०,+ ङीप्] मूसाकानी (लता)।

मूषक-वाहन--पु० [ब० स०] गणेश।

मूषण--पु०[स०√मूष्+ल्यु—अन] चुरा या छीन लेना। मूसना। चुराना।

मूषा—स्त्री०[स० मूष+टाप्] १ सोना आदि गलाने की घरिया। तैज-सावर्त्तिनी। २ देव-ताड नामक वृक्ष। ३ गोखरू का पौधा। ४ गवाक्ष। झरोखा।

मूषा-तुत्थ--पु०[स० मध्य० स०] नीला थोथा। तूतिया।

मूषिक—पु०[स०√मूष्+इकन्] १ चूहा। मूसा। २ दक्षिण भारत का एक प्राचीन जनपद।

मूषिक-पर्णी—स्त्री० [ब० स०+ङीप्] जल मे होनेवाला एक प्रकार का तृण।

मूषिक-साधन—पु० [प० त०] तत्र मे एक प्रकार का प्रयोग या साधन जिसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य चूहे की बोली समझकर उससे शुभ-अशुभ फल कह सकता है।

मूषिकांक—पु०[स० मूषिक-अक, ब० स०] गणेश।

मूषिकाचन—पु०[स० मूषिक√अञ्च् (प्राप्त करना)+ल्यु-अन] गणेश।

मूषिका--स्त्री०[स० मूषिक+टाप्] १ छोटा चूहा। चुहिया। २ मूसाकानी लता।

मूषिकाद—पु० [स० मूषिक√अद् (खाना)+अण्] विडाल। बिल्ला।

मूषिकाराति—पु०[मूषिक-अराति, प० त०] बिल्ली। विडाल।

मूषीक—पु०[स०√मूष्+ईकन्] बडा चूहा।

मूषीकरण—पु०[स०√मूष्+च्वि, इत्व+दीर्घ√कृ (करना)+ ल्युट्] घरिया मे धातु गलाने की क्रिया या भाव।

मूस—पु०[स० मूष] चूहा।

मूसदानी—स्त्री०[हिं० मूस+दानी (स० आधान)] चूहा फँसाने का पिंजरा। चूहेदानी।

मूसना—स०[स० मूषण] १ किसी की चीज चुराकर उठा ले जाना। २. ठगना। ३ लूटना।

मूसर—पु०[हिं० मूसल]=मूसल।

मूसल—पु०[स० मुशल] १ धान कूटने का एक प्रसिद्ध उपकरण जो लबे मोटे डडे के रूप मे होता है और जिसके मध्य भाग मे पकडने के लिए खड्डा सा होता है और छोर पर लोहे की साम जडी रहती है। २ उक्त आकार का प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ३ राम, कृष्ण आदि के चरणो मे माना जानेवाला एक प्रकार का चिह्न। ४ पानी बेल नाम की लता।

मूसलचंद—पु०[हिं० मूसल+चद] १ गँवार। असभ्य। २ अपढ। ३ मूर्ख। ४ हट्टा-कट्टा परन्तु अकर्मण्य या निकम्मा आदमी।

पद—दाल-भात में मूसल चंद=ऐसा बहुत ही अनपेक्षित या अनभीष्ट व्यक्ति जो व्यर्थ हस्तक्षेप करना चाहता हो।

मूसलधार—अव्य०[हिं० मूसल+धार] मूसल के समान मोटी धार मे।

मूसला जड़—पु०[हिं० मूसल] वृक्षो की दो प्रकार की जडो मे से वह जड जो मोटी और सीधी कुछ दूर तक जमीन मे चली गई हो, तथा जिसमे इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हो। 'झकरा' से भिन्न। (टैप रूट)

मूसली—पु० [स० मुशली] हल्दी की जाति का एक पौधा।

मूसा—पु०[स० मूषक] चूहा।

मूसा—पु०[इव० मौश्शा से अ०] यहूदियों के एक प्रसिद्ध धार्मिक और सामाजिक नेता जिन्होंने मिस्र के इसराइलियो को दासता से मुक्त किया था। ये पैगम्बर या ईश्वरी देवदूत माने गये थे, और इन्ही के समय से पैगम्बरी मतो का आरभ हुआ था। इनके उपदेशो का सग्रह 'तौरेत' के नाम से प्रसिद्ध है।

मूसाई—पु०[अ० मूसा+हिं० आई (प्रत्य०)] मूसा के धर्म का अनुयायी, यहूदी।

वि० मूसा सम्बन्धी।

मूसाकानी--स्त्री० [स० मूषाकर्णी] गीली जमीन मे होनेवाली एक प्रकार की लता जिसके प्राय सभी अग ओषधि के रूप मे काम आते हैं। विशेषत चूहे के काटने से उत्पन्न होनेवाला विष दूर करने के लिए इसे पीसकर लगाया और इसका काढा पिया जाता है।

मूसा-हिरन--पु० [हिं०] एक प्रकार का बहुत छोटा हिरन जो प्राय एक बित्ता लंबा और प्राय इतना ही ऊँचा होता है (माउस डीयर)

मूसीकार—पु०[अ०] १ एक प्रकार का कल्पित पक्षी जिसके सम्बन्ध मे कहा जाता हे कि इसकी चोच मे बहुत से छेद होते है जिनमे से अनेक प्रकार के राग निकलते है। सामी जातियो का मत है कि मनुष्यो मे सगीत का प्रचार इसी का गाना सुनने से हुआ है। २ सगीतज्ञ। ३ अरब देश का एक प्रकार का बाजा।

मूसीकी—स्त्री०[अ०] सगीत-कला। गान विद्या।

मृकंडु—पु० [स० मृग-कण्डु, प० त०, पृषो० ग—लोप] मार्कंडेय ऋषि के पिता एक मुनि।

मृग—पु०[स०√मृग् (अन्वेषण)+क] [स्त्री० मृगी] १ जगली जानवर। २ हिरन। ३ कस्तूरी मृग का नाफा। ४ वैष्णवो का एक प्रकार का तिलक। ५ कामशास्त्र मे चार प्रकार के पुरुषो मे से एक जो चित्रिणी स्त्री के लिए उपयुक्त कहा गया है। ६ ज्योतिष मे शुक्र की नौ वीथियो मे से आठवी वीथी जो अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल मे पडती है। ७ हाथियो की एक जाति जिसकी आँखें कुछ बडी होती हैं और गडस्थल पर सफेद चिह्न होता हे। ८ अगहन का महीना। मार्ग-शीर्ष।

९ मृग-शिरा नक्षत्र। १० मकर राशि। ११. एक प्रकार का यज्ञ। १२ अन्वेषण। खोज। तलाश।

मृग-कानन—पु०[प० त०] १ वह जंगल जिसमे शिकार के लिए बहुत से जानवर हों। २ उद्यान। बाग।

मृग-चर्म (चर्मन्)—पु०[प० त०] १ हिरन की खाल। २. ओढ़ी अथवा आसन के रूप मे बिछाई जानेवाली हिरन की खाल।

मृग-चेटक—पु०[स०√चिट् (प्रेरणा)—णिच्+ण्वुल्—अक=चेटक, मृग-चेटक, ष० त०] गंध बिलाव। मुश्क बिलाव।

मृग-छाला—स्त्री०[स० मृग+हिं० छाला] हिरन की छाल। मृगचर्म।

मृग-छौना—पु० [स० मृग+हिं० छौना] हिरन का बच्चा। मृग-शावक।

मृग-जल—पु०[मध्य० स०] =मृग-तृष्णा।

पद—मृगजल स्नान =अनहोनी बात।

मृगजा—स्त्री०[स० मृगज+टाप्] कस्तूरी।

मृग-जालिका—स्त्री०[प० त०] वह जाल जिसमे हिरन फँसाये जाते है।

मृगजीवन—पु० [स० मृग√जीव् (जीना)+ल्यु—अन, उप० स०] शिकारी

मृग-तृषा—स्त्री० =मृग-तृष्णा।

मृग-तृष्णा—स्त्री०[स० ब० स०] १ ऐसी तृष्णा जिसकी पूर्ति प्रायः असभव हो। २ दे० 'मृग-मरीचिका'।

मृग-तृष्णिका—स्त्री०=मृग-तृष्णा।

मृग-दशक—पु० [प० त०] कुत्ता।

मृग-दाव—पु० [स० मध्य० स०] १. वह वन जिसमे बहुत से मृग हों। २ काशी के सारनाथ नामक तीर्थ के पासवाले जगल का पुराना नाम।

मृग-धर—पु० [प० त०] चद्रमा।

मृग-धूर्त—पु० [स० त०] शृंगाल।

मृग-नयन—वि० [ब० स०] [स्त्री० मृग-नयनी] हिरन की आँखों की तरह जिसकी आँखें सुन्दर हों।

मृग-नाथ—पु० [प० त०] सिंह। शेर।

मृग-नाभि—पु० [प० त०] कस्तूरी।

मृग-नाभिजा—स्त्री० [स० मृगनाभि√जन (उत्पन्न होना)+ड,+टाप्] कस्तूरी।

मृग-नेत्रा—स्त्री० [स० ब० स०] मृगशिरा नक्षत्र से युक्त रात्रि।

मृग-नैन—वि० [स्त्री० मृगनैनी]=मृग-नयन।

मृग-पति—पु० [प० त०] सिंह। शेर।

मृगप्रिय—पु० [प० त०] १ भूतृण। २ जल-कदली।

मृग-मद—पु० [स० मृग√मद् (हृष्ट होना)+अप्] कस्तूरी।

मृग-मदा—स्त्री० [स० मृगमद+टाप्] कस्तूरी।

मृग-मरीचिका—स्त्री० [ब० स०] १ मृग को होनेवाली जल की वह भ्राति जो कड़ी धूप मे चमकते हुए बालू के कणो के फलस्वरूप होती है। दे० 'मरीचिका'। (मिरेज) २. लाक्षणिक अर्थ मे अवास्तविक पदार्थ।

मृग-मित्र—पु० [ब० स०] चद्रमा।

मृग-मुख—पु० [ब० स०] मकर राशि।

मृगमेद|—पु०=मृगमद (कस्तूरी)।

मृगम्मद|—पुं०=मृगमद (कस्तूरी)। उदा०—देव मे सीस बसायो सनेह कै, भाल मृगम्मद बिंद कै राख्यौ।—देव।

मृगया—स्त्री० [सं०√मृग्+श, यक्, णि-लोप,+टाप्] १ वन्य पशुओं के शिकार के लिए किया जानेवाला वन-गमन। २ आखेट। शिकार।

मृगयु—पुं० [सं० मृग√या (गति)+कु] १. ब्रह्मा। २. गीदड़। ३. व्याध।

मृग-यूथ—पुं० [ष० त०] हिरणों का दल।

मृग-रसा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] सहदेई नाम का पौधा। सहदेवी। महाबला।

मृग-राज—पुं० [सं० ष० त०] सिंह। शेर।

मृग-रोग—पुं० [ष० स०] पशुओं विशेषतः गौओं के मस्तक सूजने का एक रोग।

मृग-रोम (न्)—पुं० [ष० स०] ऊन।

मृगरोमज—पुं० [सं० मृगरोमन्√जन (उत्पत्ति)+ड] ऊनी कपड़ा।

मृग-लांछन—पुं० [ब० स०] चंद्रमा।

मृग-लेखा—स्त्री० [मध्य० स०] चंद्रमा पर का मृगांक।

मृग-लोचन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० मृग-लोचना, मृगलोचनी] हिरन के समान सुन्दर आँखोंवाला।

मृग-लोचनी—वि० स्त्री०, हिं० मृगलोचन का स्त्री रूप।

मृग-वल्लभ—पुं० [ष० त०] एक तरह की घास।

मृग-वारि—पुं० [मध्य० स०] १. वह जल जिसकी भ्रांति मृग को कड़ी धूप में चमकते हुए बालू के फलस्वरूप होती है। २. लाक्षणिक अर्थ में, कोई भ्रामक पदार्थ या बात।

मृग-वाहन—पुं० [ब० स०] वायु। हवा।

मृगव्य—पु० [सं० मृग√व्यध् (बेधना)+ड] १. वह जन्तु जिसका शिकार मृग या शेर करता हो। २. वह जिसे मार डालने अथवा हानि पहुँचाने से अपना कोई उद्देश्य सिद्ध होता या काम निकलता हो। ३. शिकार।

मृग-व्याध—पु० [मध्य० स०] १. शिकारी। २. नक्षत्र।

मृग-शिरा—पु० [सं० मृगशिर+टाप्] २७ नक्षत्रों मे से पाँचवाँ नक्षत्र जो तीन तारों का है।

मृग-शीर्ष—पु० [ब० स०] १. मृगशिरा नक्षत्र। २. माघ महीना।

मृग-श्रेष्ठ—पु० [स० त०] व्याघ्र।

मृगहा (हन्)—पु० [सं० मृग√हन् (हिंसा)+क्विप्] शिकारी।

मृगांक—पु० [मृग-अंक, ब० स०] १.चद्रमा। २. दे० 'मृगांक रस'।

मृगांक-रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सुवर्ण और रत्नादि से बनता है और क्षयरोग मे अत्यधिक गुणकारक माना जाता है।

मृगांतक—वि० [मृग-अंतक, ष० त०] मृगों या जगली जानवरों का अन्त या नाश करनेवाला।

पु० चीता नामक हिंसक पशु।

मृगा—स्त्री० [सं० मृग+अच्+टाप्] सहदेई नाम का पौधा।

मृगाक्ष—वि० [मृग-अक्षि, ब० स०,+षच्] [स्त्री० मृगाक्षी] मृग की आँखों के समान सुन्दर आँखोंवाला।

मृगाक्षी—वि० स्त्री० [सं० मृगाक्ष+ङीप्] मृगनयनी। मृगलोचनी।
मृगाजिन—पुं० [मृग-अजिन, ष० त०] मृग-छाला। मृग-चर्म।
मृगाजीव—स्त्री० [सं० मृग+आ√जीव् (जीना)+अच्] १. कस्तूरी। २. वारुणी लता।
मृगाद्—पुं० [सं० मृग√अद् (खाना)+क्विप्] सिंह, चीता, बाघ इत्यादि वन्य जन्तु जो मृगों को खाते हैं।
वि० मृगों को खानेवाला।
मृगादन—वि०, पुं० [सं०√अद्+ल्यु—अन=अदन, मृग-अदन, ष० त०] मृगाद्।
मृगादनी—स्त्री० [सं० मृगादन+ङीप्] १. इंद्रवारुणी। इंद्रायन। २. सहदेई। ३. ककड़ी।
मृगाराति—पुं० [सं० मृग-अराति, ष० त०] कुत्ता।
मृगाशन—पुं० [सं० मृग-अशन, ब० स०] सिंह। शेर।
मृगित—भू० कृ० [सं०√मृग् (खोजना)+क्त] जिसके विषय में छान-बीन की गई हो। अन्वेषित।
मृगिनी*—स्त्री० [सं० मृग] मृग की मादा। मादा हिरन। हिरनी।
मृगी—स्त्री० [सं० मृग+ङीप्] १. मादा हिरन। २. पीले रंग की एक प्रकार की कौड़ी। ३ मिरगी नामक रोग। अपस्मार। ४. कस्तूरी। ५. कश्यप ऋषि की क्रोधवशा नाम्नी पत्नी से उत्पन्न दस कन्याओं में से एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई और जो पुलह ऋषि की पत्नी थी। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण (ऽ।ऽ) होता है। प्रियावृत्त।
मृगीवत—पुं० दे० 'मृग-तृष्णा'। उदा०—मृगीवत जल दरसै जैसे। —नंददास।
मृगेंद्र—पुं० [सं० मृग-इन्द्र, ष० त०] सिंह। शेर।
मृगेंद्र-चटक—पुं० [सं० उपमि० स०] बाज (पक्षी)।
मृगेल—स्त्री० [सं० मृग+हिं० एल (प्रत्य०)] सुनहली आँखोंवाली एक प्रकार की मछली।
मृगेश—पुं० [सं० मृग-ईश, ष० त०] सिंह। शेर।
मृगोत्तम—पुं० [सं० मृग-उत्तम] मृगशिरा नक्षत्र।
वि० मृगों में उत्तम या श्रेष्ठ।
मृग्य—वि० [सं०√मृग् (खोजना)+यत्] १. जिसका पीछा किया जाय। २. अन्वेषण किये जाने के योग्य।
मृच्छकटिक—पुं० [सं० मृद्-शकटि, ब० स०,+कप्] संस्कृत का एक प्रसिद्ध नाटक।
मृज—पुं० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+क] पखावज या मृदंग नाम का बाजा।
मृजा—स्त्री० [सं०√मृज्+अङ्+टाप्] मार्जन। (दे०)
मृजाद*—स्त्री०=मर्यादा। उदा०—तजि ऐश्वर्य, मृजाद वेद की तिनके हाथ बिकानो।—भगवत रसिक।
मृज्य—वि० [सं०√मृज्+क्यप्] जिसका मार्जन किया जा सके या किया जाने को हो। मार्जनीय।
मृड—पुं० [सं०√मृड् (सन्तुष्ट करना)+क] [स्त्री० मृडा, मृडानी] शिव। महादेव।
मृडन—पुं० [सं०√मृड्+ल्यु—अन] अनुग्रह। कृपा।
मृडा—स्त्री० [सं० मृड+टाप्] १. पार्वती। २. दुर्गा।
मृडानी—स्त्री० [सं० मृड+ङीप्, आनुक्] पार्वती। मृडा। (दे०)
मृडीक—पुं० [सं०√मृड्+कीकन्] १. हिरन। २ शिव। ३. मछली।
मृणाल—स्त्री० [सं०√मृण्+कालन्] १ कमल के पौधे का डंठल। कमलनाल। २. कमल की जड़। ३. उशीर। खस।
मृणालिका—स्त्री० [सं० मृणाली+कन्+टाप्, ह्रस्व] कमल की डंठी। कमल-नाल।
मृणालिनी—स्त्री० [सं० मृणाल+इनि+ङीप्] १ कमलिनी। २ कमलों का समूह। ३ वह ताल जहाँ कमल अधिकता से होते हैं।
मृणाली—स्त्री० [सं० मृणाल+ङीप्] कमल का डंठल। कमल-नाल।
मृण्पात्र—पुं० [सं० मृत्पात्र] १ मिट्टी, चीनी मिट्टी आदि के बने हुए बरतन। २. विवक्षित तथा व्यापक अर्थ में, मिट्टी, चीनी मिट्टी के बने हुए खिलौने, मूर्तियाँ आदि सभी चीजें। (पाटरी)
मृण्मय—वि० [सं० मृद्+मयट्] [स्त्री० मृण्मयी] मिट्टी का बना हुआ।
मृण्मूर्ति—स्त्री० [सं० मृद्-मूर्ति, ष० त०] १. मिट्टी की बनाई हुई मूर्ति। २ मध्य तथा प्राचीन युग में मिट्टी की बनी हुई मूर्ति का मुँह और सिर। (टर्रा कोटा)
मृत—वि० [सं०√मृ (मरना)+क्त] १. मरा हुआ। मुर्दा। २ माँगा हुआ। याचित। ३ जिसका पूर्ण रूप से अन्त या नाश हो चुका है।
मृतक—वि० [सं० मृत+कन्] १ मरा हुआ। मुरदा। मृत। २ साहित्य में, (पद या वाक्य) जिसका कुछ भी वास्तविक अर्थ न हो। जैसे—(क) बादाम में सोया हुआ आदमी। (ख) च्यूँटी पर हाथी की सवारी।
पुं० १ मर हुआ प्राणी या उसका मृत शरीर। २ घर के किसी प्राणी या सम्बन्धी के मर जाने पर होनेवाला अशौच।
मृतक-कर्म—पुं० [सं० ष० त०] मृतक की शुद्ध गति के निमित्त किया जानेवाला कृत्य। प्रेत कर्म। जैसे—दाह, षोडशी दशगात्र इत्यादि।
मृतक-धूम—पुं० [सं० ष० त०] राख। भस्म।
मृतकल्प—वि० [सं० मृत+कल्पप्] दे० 'मृत-प्राय'।
मृतकांतक—पुं० [सं० मृतक-अंतक, ष० त०] शृगाल। गीदड़।
वि० मृत शरीर का अन्त या नाश करनेवाला।
मृत-जीव—पुं० [सं० कर्म० स०] १ मरा हुआ। प्राणी। २. तिलक (वृक्ष)।
मृत-जीवनी—स्त्री० [सं० मृत्√जीव् (जीना)+णिच्+ल्यु—अन, +ङीप्] १ मृत शरीर को फिर से जीवित करने की कला या विद्या। २ दूबिया घास।
मृत-धर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०, अनिच्] जो अन्त में मर जाता या नष्ट हो जाता हो। नश्वर।
मृत-मत्त—पुं० [तृ० त०] शृगाल। गीदड़।
मृत-मातृक—वि० [ब० स०,+कप्] जिसकी माँ मर चुकी हो।
मृत-वत्स—वि० [ब० स०] [स्त्री० मृत-वत्सा] १ (जीव या प्राणी) जिसके बच्चे हो होकर मर जाते हो। २. (जीव या प्राणी) जिसका बच्चा होकर मर गया हो।

मृत-सजीवन—वि० [स० सम्√जीव्+णिच्+ल्यु—अन, मृत-सजीवन, ष० त०] [स्त्री० मृत-सजीवनी] मृत को जीवित करनेवाला (पदार्थ)।

मृत-सजीवनी—स्त्री० [स० सजीवन+ङीप्, मृत-सजीवनी, ष० त०] १ एक प्रकार की कल्पित बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुरदा भी जी उठता है। २. वैद्यक में एक प्रकार का आसव या सुरा जो बहुत पौष्टिक कही गई है।

मृत-सजीवनी-रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार का रसौषध जिसका व्यवहार ज्वर में होता है।

मृत-सजीवनी सुरा—स्त्री० [स० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार का पौष्टिक आसव।

मृत-स्नात—भू० कृ० [सुप्सुपा स०] १ (मुरदा) जिसे दाह-कर्म से पहले स्नान कराया गया हो। २ (व्यक्ति) जिसने किसी व्यक्ति या वस्तु के मरने पर उसके उद्देश से स्नान किया हो।

मृत-स्नान—पु० [मध्य० स०] १ मृतक को कराया जानेवाला स्नान। २ किसी भाई-बन्धु के मरने पर किया जानेवाला स्नान।

मृतागद—पु० [मृत-आगद, ब० स०] तुत्थ। तूतिया।

मृतालक—पु० [स० मृत√अल् (भूषित करना आदि) +णिच्+ण्वुल्—अक] १ अरहर। २ गोपी-चन्दन।

मृताशौच—पु० [मृत-अशौच, मध्य० स०] सूतक। (दे०)

मृति—स्त्री० [स०√मृ (मरण) क्तिन्] मृत्यु। मौत।

मृति-रेखा—स्त्री० [ष० त०] सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हथेली पर की एक रेखा जिससे व्यक्ति की आयु का अनुमान लगाया जाता है।

मृतोत्थित—वि० [मृत-उत्थित, तृ० त०] जो मरकर फिर जी उठा हो।

मृत्कर—पु० [ष० त०] कुम्हार।

मृत्कास्य—पु० [ष० त०] मिट्टी का बरतन।

मृत्तालक—पु० [मृद्√तल (प्रतिष्ठा) +णिच्+अण्, उप० स०] १ अरहर। २ गोपी चन्दन।

मृत्तिका—स्त्री० [स० मृद्+तिकन्+टाप्] १ मिट्टी। माटी। २ अरहर।

मृत्तिका-लवण—पु० [ष० त०] पुराने घरों की मिट्टी की दीवारों पर सील होने से निकलनेवाली एक प्रकार की नमकीन मिट्टी। नोना। लोना।

मृत्तिकावती—स्त्री० [स० मृत्तिका+मतुप् म—व,+ङीप्] नर्मदा के किनारे की एक प्राचीन नगरी। (महाभारत)

मृत्पात्र—पु० [ष० त०] मिट्टी का बरतन।

मृत्पिड—पु० [ष० त०] मिट्टी का ढेला या लोदा।

मृत्युंजय—वि० [स० मृत्यु√जि (जीतना)+खच्, मुम्] जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। अमर।

पु० १ शिव का एक नाम और रूप। २ शिव का एक मत्र जो अकाल-मृत्यु का निवारक माना जाता है।

मृत्युंजय-रस—पु० [सं० मध्य० स०] ज्वर के लिए उपयोगी एक रसौषध। (वैद्यक)

मृत्यु—स्त्री० [स०√मृ (मरना)+त्युक्] १ जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों का [illegible] की वह अंतिम अवस्था जिसमें उनकी चेतना या [illegible] और सदा के लिए बंद हो जाता है। मरण। मौत। २. किसी चीज का [illegible] का अंत। [illegible] जैसे—[illegible] नीति की मृत्यु, [illegible] की मृत्यु। ३. माया।

पु० [सं०] १ यम। २ ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. [illegible]। ५. कलियुग। ६. एक साम मंत्र। ७. फलित ज्योतिष में जन्म-कुंडली का आठवाँ घर जिससे मरण-संबंधी फलाफल का विचार होता है। ८. बौद्ध दर्शन में कामदेव का एक रूप।

मृत्यु-कर—पु० [ष० त०] [illegible] (डेथ ड्यूटी)

मृत्युदंड—पु० [स०] अपराधी को प्राण से मार डालने का दंड या सजा। प्राणदंड। (कैपिटल पनिशमेंट)

मृत्यु-दर—स्त्री० [सं० [illegible]] [illegible]।

मृत्यु-नाशक—पु० [ष० त०] पारा।

मृत्यु-पाश—पु० [ष० त०] यम का पाश।

मृत्यु-पुष्प—पु० [ब० स०] १ [illegible]। [illegible]। २ [illegible]।

मृत्यु-फल—पु० [ब० स०] १ [illegible]। २ [illegible]।

मृत्यु-बीज—पु० [ब० स०] बाँस।

मृत्यु-लोक—पु० [ष० त०] १ मर्त्यलोक। २. [illegible]।

मृत्यु-शय्या—स्त्री० [ष० त०] वह शय्या या बिस्तर जिस पर कोई मरणासन्न व्यक्ति पड़ा हुआ हो। (डेथ बेड)

मृत्यु-संख्या—स्त्री० [ष० त०] किसी दुर्घटना, महामारी आदि में मरनेवालों की संख्या। (डेथ-रोल)

मृत्यु-सूति—स्त्री० [ब० स०] केकड़े की मादा। (कहते हैं कि यह [illegible] देने के बाद मर जाती है।)

मृत्स—वि० [स०] चिपचिपा।

मृत्सा—स्त्री० [सं० मृद्+स+टाप्] मृत्स्ना।

मृत्स्ना—स्त्री० [स० मृद्+स्न—टाप्] १. बढ़िया चिकनी मिट्टी। २. मिट्टी।

मृथा—अव्य०=मृषा (वृथा)।

मृद्—स्त्री० [सं०√मृद (चूर्ण होना)+क्विप्] मृत्तिका। मिट्टी।

मृदंग—पु० [स०√मृद्+अङ्गच् या मृद्—अंग, ब० स०] १. ढोलक की तरह का एक प्रसिद्ध बाजा। २ ढोल। ३ मृदंग (बाजे) के आकार का शीशे का एक प्रकार का उपकरण जिसमें मोमबत्तियाँ जलाई जाती थी।

मृदंगिया—पु० [स० मृदंग+हि० इया (प्रत्य०)] वह जो मृदंग बजाता हो।

मृदंगी (गिन्)—पु० [सं० मृदंग+इनि] मृदंग बजानेवाला। मृदंगिया।

स्त्री० मृदंग के आकार की आतिशबाजी।

मृदा—स्त्री० [सं० मृद्+टाप्] मृत्तिका। मिट्टी।

मृदित—भू० कृ० [√मृद् (चूर्ण होना)+क्त] कुचला, मसला या चूर किया हुआ।

मृदिनी—स्त्री० [स०√मृद् (चूर्ण करना) +क+ इनि+ङीप्] अच्छी मिट्टी। २. गोपीचन्दन।

मृदु—वि० [स०√मृद् (चूर्ण करना)+कु, सम्प्रसारण] [स्त्री० मृद्वी,

भाव० मृदुता] १ कोमल। नरम। मुलायम। २ प्रिय और सुहावना। मधुर। ३. धीमा। मद। हलका। ४ उग्रता, प्रचडता, तीव्रता आदि से रहित। जैसे—मृदु स्वभाव।

स्त्री० १ घृतकुमारी। घीकुआँर। २ जूही का पौधा और फूल।

मृदु-कंटक—पु०[व० स०] कटसरैया।

मृदु गम—पु०[प० त०] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा और रेवती इन चारो नक्षत्रो का एक गण।

मृदुच्छद—पु० [व० स०]१ भोजपत्र का पेड। २ पीलू वृक्ष। ३ लाल लजालू।

मृदुता—स्त्री०[स० मृदु+तल्+टाप्]१ मृदु होने की अवस्था या भाव। कोमलता। मुलायमियत। मार्दव। २ धीमापन। मन्दता।

मृदु-दर्भ—पु०[कर्म० स०] सफेद कुश।

मृदुपक्षा—स्त्री० [स०] एक प्रकार की समुद्री मछली। सामन। (सैल्मन)

मृदु-पुष्प—पु०[व० स०] शिरीष (वृक्ष)।

मृदु-फल—पु०[व० स०]१ नारियल। २ विककत वृक्ष।

मृदुल—वि०[स० मृदु+लच्][भाव० मृदुलता] १ कोमल। मुलायम। २ दयालु। दयामय। ३ सुकुमार।

पु०१ जल। पानी। २ अजीर।

मृद्य—वि०[स० मृद्+यत्](पदार्थ) जो गीला होने पर मनमाने ढग से और मनमाने रूप से लाया जा सके। जिसे अपने इच्छानुसार सभी प्रकार के स्थायी रूप दिये जा सके। (प्लास्टिक) जैसे—गीली मिट्टी जिसे सैकडो प्रकार के रूप दिये जा सकते हैं।

मृद्वी—स्त्री०[स० मृदु+ङीप्]१ कोमल अगोवाली स्त्री। कोमलागी। २ सफेद अगूर।

मृद्वीका—स्त्री०[स० मृदु+ईकन+टाप्]१ कपिल द्राक्षा। सफेद अगूर। २ अगूरी शराब। द्राक्षासव।

मृद्वीकासव—पु० [स० मृद्वीका-आसव, ष० त०] अगूर की शराब। द्राक्षासव।

मृध—पु०[स० √ मृध् (गीला होना)+क] युद्ध। लडाई।

मृनाल*—पु०=मृणाल।

मृन्मय—वि०[स० मृद्+मयट्] [स्त्री० मृन्मयी]=मृण्मय।

मृषा—अव्य० [स० √ मृष्+का] झूठ-मूठ। व्यर्थ।

वि० असत्य। झूठा।

मृषात्व—पु०[स० मृषा+त्व] असत्यता। झूठपन। मिथ्यात्व।

मृषाभाषी (षिन्)—वि०[स० मृषा√भाष् (बोलना)+णिनि] झूठ बोलनेवाला।

मृषावाद—पु०[स० ष० त०]१ झूठ बोलना। २ झूठ बात।

मृषावादी (दिन्)—वि०[स० मृषा√वद् (बोलना)+णिनि] झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी।

मृष्ट—भू० कृ०[स० √मृज् (शुद्ध करना)+क्त] शुद्ध किया हुआ। शोधित।

पु० मिर्च।

मृष्टि—स्त्री०[स०√मृज्+क्तिन्] परिशुद्धि। शोधन।

मे—विभ०[स० मध्य०, प्रा० मज्झ, पु० हि० मँह] अधिकरण कारक का चिन्ह जो किसी शब्द के आगे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) भीतरी भाग मे या अन्दर। जैसे—(क) गले मे छाले पडना, कमरे मे व्यथित होना। (ख) चारो ओर, जैसे—गले में हार पडना। (ग) किसी अवस्थान या आधार पर। जैसे—पेड मे फल लगना। (घ) नियत अवधि या काल पूरा होने से पहले। जैसे—एक घंटे मे यह काम हो जायगा। (च) किसी वर्ग या समूह के क्षेत्र या परिधि के अन्तर्गत। जैसे—कवियो मे कालिदास सर्वश्रेष्ठ थे। (छ) कार्य, व्यापार आदि सलग्नता। जैसे—वह दिन भर काम मे लगा रहता है।

स्त्री०[अनु०] बकरी के बोलने का शब्द।

मेंगनी—स्त्री० [हिं० मीगी] पशुओं की ऐसी विष्ठा जो छोटी-छोटी गोलियो के आकार मे होती है। लेंडी। जैसे—ऊँट, चूहे या बकरी की मेंगनी।

मेंजा†—पु० मेढक। उदा०—समुँद न जान कुँआ कर मेंजा।—जायसी।

मेंड़—स्त्री०[हिं० डाँड का अनु० या स० मडल]१ ऊँची उठी हुई तग जमीन जो दूर तक लकीर के रूप मे चली गई हो। २ दो खेतो के बीच की कुछ ऊँची उठी हुई सँकरी जमीन जो उनकी सीमा की सूचक होती है और जिस पर से लोग आते-जाते है। डाँड। पगडडी। ३ आड। रोक। उदा०—तुम्ह नल नील मेंडदेनिहारा।—जायसी। ४ मर्यादा। उदा०—अस सम मेडनि की मति खोवहु।—सूर।

मेडक—पु०=मेंढक।

मेंड़-बन्दी—स्त्री०[हिं० मेड+ बाधना] मेंड बनाने का काम।

मेंडरा†—पु०[स० मडल] १ घेरने के लिए बनाया हुआ कोई गोल चक्कर। जैसे—ढोलक या तबले का मेंडरा जो चमडे के चारो ओर लगाया जाता है। २ मेडुरी। ३ किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। ४ किसी वस्तु का मडलाकार ढाँचा। जैसे—चलनी का मेंडरा।

मेंडराना†—स०[हिं० मेंडरा] किसी चीज के चारो ओर मेंडरा या घेरा बनाना या लगाना।

अ०१ चारो ओर घेरे या चक्कर के रूप मे स्थित होना। उदा०—राजपरिख तेहि पर मेंडराहि।—जायसी। २ दे० 'मडलाना।'

मेढ़क—पु०[स० मडूक]१ एक प्रसिद्ध जलस्थलचारी छोटा जतु। २ रहस्य सप्रदाय मे, मन जिसे अन्त मे कालरूपी साँप निगल जाता है।

मेंढ़की—स्त्री०=मेंढक की मादा।

मेंधी—स्त्री०[स० मा=शोभा√इन्ध (दीप्ति)+णिच्+अच्+ङीप्] मेहदी।

मेंवर—पु०[अ०] [भाव० मेंबरी] सदस्य। (दे०)

मेंवरी—स्त्री०[अ० मेंबर से] मेंबर होने की अवस्था या भाव। सदस्यता। (मेंबरशिप)

मेंह—पु०[स० मेघ]१ आकाश मे वर्षा के रूप मे गिरनेवाला जल। २ पानी बरसना। वर्षा।

क्रि० प्र०—पडना।

मेंहदिया—वि०[हिं० मेंहदी] मेंहदी की तरह का हरापन लिए लाल रगवाला।

पु० उक्त प्रकार का रग। (मर्ट्रिल)

मेंहदी—स्त्री० [स० मेंधी] १ एक प्रसिद्ध कँटीली झाडी या पौधा जिसकी पत्तियों से गहरा लाल रग निकलता है और इसी लिए जिन्हे पीसकर स्त्रियाँ अपनी हथेलियो और तलुओ मे, उन्हे रगने के लिए लगाती है। (मर्ट्रिल) २ उक्त पौधे की पत्तियो का पीसा हुआ चूर्ण।
मुहा०—**मेंहदी रचना**=मेहदी का अच्छा और गहरा रग आना। **मेंहदी रचाना या लगाना**=मेहदी की पत्तियाँ पीसकर हथेली या तलुए मे लगाना।

मेअराज—पु० [अ०] १ ऊपर चढने की सीढी। श्रेणी। २ मुहम्मद साहव के जीवन की वह घटना जिसमे उनके आकाश पर चढकर ईश्वर से भेट करना माना जाता है।

मेक—पु० [स० मे√कै (शब्द करना)+क] बकरा।

मेक-अप—पु० [अ०] १ सौन्दर्य-वृद्धि के लिए शरीर के अगो मे प्रसाधन या सजावट की सामग्री लगाने की क्रिया या भाव। रूप-सज्जा। २ छापे-खाने मे, सीसे के वैठाये या कपोज किए हुए अक्षरो को पृष्ठो के रूप मे लाना। पेज बाँधना।

मेकदार†—स्त्री०=मिकदार (मात्रा)।

मेकल—पु० [स०] विध्य पर्वत का एक भाग जो रीवाँ के आस-पास है और जिसमे अमरकटक है। नर्मदा नदी यही से निकली है। यह मेखला के आकार का हे, इसी से इसे मेखल भी कहते है।

मेकल-कन्यका—स्त्री० [स० प० त०] नर्मदा (नदी)।

मेकल-सुता—स्त्री० [स०] नर्मदा (नदी)।

मेख—स्त्री० [फा० मेख] १ लोहे का वह लम्बा उपकरण जो एक ओर नुकीला और दूसरी ओर चिपटा होता है, और जो किसी तल मे गाडने, ठोंकने आदि या चीजे कही जडने के काम मे आता है। काँटा। कील। २ लकडी आदि का खूँटा।
क्रि० प्र०—उखाडना।—गाडना।—ठोंकना।—मारना।
मुहा०—**(किसी के) मेख ठोकना**=पूरी तरह से दवाना या हराना। **(किसी को) मेख ठोकना**=किसी के हाथो-पैरो मे कील ठोककर उसे कही स्थिर कर देना। (प्राचीन काल का एक प्रकार का वहुत कठोर दड)। **मेख मारना**=(क) कील ठोककर किसी आदमी, काम या चीज का चलना या हिलना वन्द कर देना। (ख) ऐसी वात कहना जिससे चलते हुए काम मे वाधा पडे। भाँजी मारना।
३. लकडी की फट्टी जो किसी छेद मे वैठाई हुई वस्तु को ढीली होने से रोकने के लिए ठोंकी जाय। पच्चड। ४. घोडे का वह लँगडापन जो नाल जडते समय किसी कील के ऊपर ठुक जाने से होता है।
†पु०=मेष।

मेखड़ा—स्त्री० [स० मेखला] वाँस की वह फट्टी जिसे डले या झावे के मुँह पर गोल घेरा वनाकर वाँध देते है।

मेखल—स्त्री० [स० मेखला] १. करधनी। किंकिणी। २. वह चीज जो किसी दूसरी को कसने, वाँधने आदि के लिए उसके मध्य भाग मे चारो ओर लगाई या लपेटी जाय। ३. दे० 'मेखला'।

मेखला—स्त्री० [स०√मि (प्रक्षेप)+खल्+टाप्] १ लम्बी पट्टी की तरह की वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के कटि-प्रदेश या मध्य भाग के चारो ओर फैली हुई या स्थित हो। २. कमर मे लपेटकर पहनने का सूत या डोरी। करधनी। जैसे—मुज-मेखला। ३. करधनी या तागड़ी नाम का गहना जो कमर मे पहना जाता है। ४. मडलाकार घेरा। ५. कमरवन्द। पेटी। ६. छडी, डडे आदि की सामी। साम। ७. पर्वत का मध्य भाग। ८ नर्मदा नदी। ९ होम-कुड के ऊपर चारो ओर वना हुआ मिट्टी का घेरा। १० कपडे का टुकडा जो साधु लोग गले मे डाले रहते है। ११ पृश्निपर्णी।

मेखली—स्त्री० [स० मेखला] १ गले मे डालकर पहना जानेवाला एक प्रकार का पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनो हाथ खुले रहते है। २. करधनी। तागडी।

मेखी—वि० [फा०] जिसमे मेख से छेद किया गया हो।
पद—**मेखी रुपया**=ऐसा रुपया जिसमे छेद करके चाँदी निकाल ली गयी और सीसा भर दिया गया हो।

मेगज†—पु० [स० मत्त+गज] हाथी। (राज०)।

मेगज़ीन—पु० [अ०] १ वह स्थान जहाँ सेना के लिए गोले, वारूद रखते है। वारूदखाना। २ वदूक तथा राइफल मे वह स्थान जिसमे चलाने के लिए गोली रखी जाती है। ३ सामयिक-पत्र, विशेपत पाक्षिक या मासिक पत्र।

मेगनी—स्त्री०=मेगनी।

मेगल†—पु०=मेगज (हाथी)।

मेघ—पु० [स०√मिह्+अच्, कुत्व] १ आकाश मे होनेवाला जलकणो का वह दृश्य रूप जो हवा मे वाष्प के जमने के फलस्वरूप वनता हे। (क्लाउड) २ सगीत मे छ रागो मे से एक जो वर्षा ऋतु मे गाया जाता है। ३ मुस्तक। मोथी। ४ तडुलीय शाक। ५ राक्षस।

मेघ-काल—पु० [प० त०] वर्षा ऋतु। वरसात।

मेघ-गर्जन—पु० [प० त०] वादलो की गडगडाहट।

मेघ-गर्जना—स्त्री०=मेघ-गर्जन।

मेघ-चिंतक—पु० [प० त०] चातक।

मेघ-जाल—पु० [प० त०] वादलो का समूह।

मेघ-जीवन—पु० [व० स०] चातक।

मेघ-ज्योति (स्)—स्त्री० [प० त०] विजली।

मेघ-डंवर—पु० [प० त०] १ वादलो की गरज। २ वहुत वडा शामियाना जिसे दल-वादल भी कहते है। ३ राजाओ का एक प्रकार का छत्र।

मेघडंवर रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जो श्वास और हिचकी वन्द करनेवाला कहा गया है।

मेघ-दीप—पु० [प० त०] विजली।

मेघ-द्वार—पु० [प० त०] आकाश।

मेघ-धनु (स्)—पु० [प० त०] इन्द्र-धनुष।

मेघनाथ—पु० [प० त०] इद्र।

मेघ-नाद—पु० [प० त०] १ मेघ का गर्जन। २ [मेघ√नद् (शब्द)+णिच्+अण्] वरुण। ३ मोर। मयूर। ४ विल्ली। ५ पलास। ६ चौलाई। ७ रावण का एक पुत्र, इद्रजित्।

मेघनादजित्—पु० [स० मेघनाद√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्-आगम] लक्ष्मण।

मेघनाद-रस—पु० [स० मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का ज्वर नाशक रसौषध।

मेघ-निर्घोष—पु० [ष० त०] बादलो की गरज।

मेघ-पटल—पुं० [ष० त०] बादलो की घटा।

मेघ-पति—पु०[ष० त०] बादलो का राजा या स्वामी, इद्र।

मेघ-पुष्प—पु० [ष० त०] १ जल। २ ओला। ३ बकरे का सीग। ४ मोया। ५ [मेघ√पुष्प् (खिलना)+अच्] इन्द्र का घोडा। ६ श्रीकृष्ण के रथ का एक घोडा।

मेघ-पुष्पा—स्त्री० [स० मेघ-पुष्प+टाप्] १ जल। २ बेल। ३ ओला।

मेघपुहुप—पु०=मेघ-पुष्प।

मेघ-फल—पु० [स०] मेघो के रगो के आधार पर बतलाया जानेवाला शुभाशुभ फल।

मेघ-भूति—स्त्री० [ष० त०] बिजली।

मेघ-मडल—पु० [ष० त०] आकाश।

मेघ-मल्लार—पु० [स०] ओडव जाति का एक संकर राग जो मेघ, मल्लार और सारग रागो के मेल से बनता और प्राय वर्षा ऋतु मे गाया जाता है।

मेघमाल—पु० [स० मेघमाला+अच्] १. रभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम। (कल्कि पुराण) २ प्लक्ष-द्वीप का एक पर्वत। ३ मेघ-माला।

मेघ-माला—स्त्री० [ष० त०] १. बादलो की पक्ति या श्रेणी। २. स्कद की अनुचरी एक मातृका।

मेघ-माली (लिन्)—पु० [सं० मेघमाला+इनि] स्कद का एक अनुचर।
वि० बादलो से घिरा हुआ।

मेघ-मूर्ति—स्त्री० [ष० त०] बिजली।

मेघ-योनि—पु० [ष० त०] १. धूआँ। २ कोहरा।

मेघ-रंजनी—स्त्री० [स०] सगीत मे भैरव ठाठ की एक रागिनी।

मेघ-रव—पु० [ष० त०] मेघ-गर्जन।

मेघ-राज—पु० [ष० त०] मेघो के राजा, इद्र।

मेघ-वर्णा—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] नील का पौधा।

मेघ-वर्त—पु० [स०] प्रलय काल का एक प्रकार का मेघ।

मेघवाई*—स्त्री० [हिं० मेघ+वाई (प्रत्य०)] १. बादल की घटा। २ दे० 'मेघ-माला'।

मेघवान् (वत्)—पु० [स० मेघ+मतुप्, वत्व] पश्चिम दिशा का एक पर्वत। (बृहत् सहिता)

मेघ-वाहन—पु० [ब० स०] १. इन्द्र। २. एक बौद्ध राजा।

मेघ-विस्फूर्जिता—स्त्री० [सुप्सुपा स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे यगण, मगण, नगण, सगण, टगण, रगण और अन्त मे एक गुरु होता है।

मेघ-विस्फोट—पु० [ष० त०] बहुत थोडे समय मे होनेवाली घोर वर्षा।

मेघ-श्याम—वि० [उपमि० स०] मेघ या बादलो के रग की तरह का। नीला। आसमानी। (क्लाउडी)
पु० उक्त प्रकार का रंग।

मेघ-श्यामल—पु० [उपमित स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मेघ-सार—पु० [ष० त०] चीनिया कपूर।

मेघ-सुहृत्—पु० [ब० स०] मोर।

मेघ-स्फोट—पु० [स०] अचानक होनेवाली ऐसी घोर या भीषण वर्षा जो प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर देती हो। बादलो का फट पडना। (क्लाउड बर्स्ट)

मेघ-स्वन—पु० [ष० त०] बादलो का शब्द। मेघो का गर्जन।
वि० [ब० स०] बादलो की तरह गरजनेवाला।

मेघस्वनांकुर—पु० मेघस्वन-अकुर [स० ब० स०] वैदूर्य मणि। बिल्लौर। (कहते) है कि बादल के गरजने पर इसकी उत्पत्ति होती है।

मेघांत—पु० [मेघ-अन्त, ष० त०] १ वर्षा का अन्त। २ शरत्ऋतु का आरभ-काल।

मेघागम—पु० [मेघ-आगम, ष० त०] वर्षा का आरभ।

मेघाच्छन्न—वि० [मेघ-आच्छन्न, तृ० त०] [भाव० मेघाच्छन्नता] बादलो से ढका हुआ। बादलो से छाया हुआ (आकाश)। (क्लाउडी)

मेघाडंबर—पु० [मेघ-आडबर, ष० त०] १ मेघ-गर्जन। बादल की गरज। २ बादलो का विस्तार।

मेघारि—पु० [मेघ-अरि, ष० त०] वायु जो बादलो को उडा ले जाती है।

मेघावरि*—स्त्री० [स० मेघावलि] बादलो की पक्ति। मेघमाला।

मेघास्थि—पु० [मेघ-अस्थि, ष० त०] ओला।

मेघोदय—पु० [मेघ-उदय, ष० त०] आकाश मे बादल छाना।

मेघौना†—पु० [स० मेघ] नीले रंग का एक प्रकार का कपडा।

मेच—पु० [देश०] आसाम की एक पहाडी जाति।
†पु०=मच।
†स्त्री०=मेज।

मेचक—पु० [स०√मेच् (मिलना)+वुन्—अक] १ अधकार। अँधेरा। २ सुरमा। ३ मोर की चद्रिका। ४ धूआँ। ५ बादल। ६. सहिजन। ७. पियासाल। ८ काला नमक। ९ एक प्रकार का छोटा बिच्छू।
वि० [भाव० मेचकता] काले रग का। काला।

मेचकता—स्त्री० [स० मेचक+तल्+टाप्], १ मेचक होने की अवस्था या भाव। २ कालापन। श्यामता। ३ अधकार। अँधेरा। ४ स्याही।

मेचकताई*—स्त्री०=मेचकता।

मेच्छ*—पु०=म्लेच्छ।

मेछ*—पु०=म्लेच्छ।

मेज—स्त्री० [फा० मेज़] १ भोजन की सामग्री। २ वह चौकी जिस पर रखकर भोजन किया जाता है। ३ आज-कल लिखने-पढ़ने के लिए बनी हुई एक प्रकार की ऊँची चौकी। (टेबुल)
स्त्री० [?] एक प्रकार की पहाडी घास।

मेजपोश—पु० [फा०] चौकी या मेज के ऊपर शोभा के लिए बिछाने का कपडा।

मेजबान—पु० [फा०] १. अतिथि की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसके यहाँ वह परदेस में जाकर ठहरता हो। २. वह जो अतिथि को अपने यहाँ आदरपूर्वक ठहराता हो।

मेजबानी—स्त्री० [फा०] १ मेजबान होने की अवस्था, धर्म या भाव। आतिथ्य। २. अतिथि की की जानेवाली खातिरदारी। अतिथि-सत्कार। ३. वे खाद्य पदार्थ जो बाहर से बरात आने पर पहले-पहल कन्यापक्ष से बरातियों के लिए भेजे जाते हैं।

मेजर—पु० [अ०] १. सेना में कुछ विशिष्ट अधिकारियों का पद। २ उक्त पद पर होनेवाला अधिकारी।

मेजर-जनरल—पु० [अ०] फौज का एक बड़ा अफसर जिसका दरजा लेफ्टेनेंट जनरल के नीचे या बाद होता है।

मेजा—पु० [सं० मण्डूक; हिं० मेढ़क; पूर्वी हिं० मेजुका] मेढक। मेढ़क।

मेट—पु० [अं०] १ मजदूरों का प्रधान या सरदार। टंडैल। जमादार। २. एक प्रकार का जहाजी कर्मचारी।

मेटक*—वि० [हिं० मेटना+क (प्रत्य०)] मिटानेवाला। नाशक। २. नष्ट करनेवाला।

मेटनहार (ा)—वि० [हिं० मेटना+हारा (प्रत्य०)] १. मिटानेवाला। २. नष्ट करनेवाला।

मेटना†—स०=मिटाना।

मेट-माट—स्त्री० [हिं० मेटना=मिटाना] झगड़े, विवाद आदि के निपटने या निपटाये जाने की क्रिया या भाव। जैसे—अब उन लोगों में मेट-माट हो गई है।

मेटा†—पु० [स्त्री० अल्पा० मेटिया, मेटी] मिट्टी का घड़ा। मटका।

मेटिया—स्त्री० हिं० 'मेटा' का स्त्री० अल्पा०।

मेटी—स्त्री०=मेटिया (मटकी)।

मेटुआ—वि० [हिं० मेटना] १ मिटानेवाला। २ कृतघ्न।

मेट्रन—स्त्री० [अं०] वह स्त्री जो लड़कियों, दाइयों आदि के कामों की देख-रेख करती हो। मातृका। (मेट्रन)

मेठ—पु० [सं०] १ हाथीवान। फीलवान। २ मेढ़ा।

मेड़†—स्त्री०=मेंड़।

मेडक—पु०=मेढक।

मेड़रा—पु० [सं० मण्डल; हिं० मड़रा] [स्त्री० अल्पा० मेड़री] १. मिट्टी ढालकर बनाया हुआ घेरा। मेड़। २ उभरा हुआ गोलाकार किनारा। ३. किसी वस्तु का मण्डलाकार ढाँचा।

मेड़राना*—अ०=मँडलाना।

मेड़री—स्त्री० हिं० 'मड़रा' का स्त्री० अल्पा०।

स्त्री० [?] चक्की के चारों ओर का वह स्थान जहाँ आटा पिसकर गिरता है।

मेडल—पु० [अं०] पदक। (दे०)

मेडिकल—वि० [अं०] १. औषधि-संबंधी। भैषजिक। २. चिकित्सा-संबंधी।

मेड़िया—स्त्री० [सं० मण्डप; हिं० मढ़ी] १. मढ़ी। २. मण्डप। ३. छोटा घर। स्त्री०=मेंड़।

मेढ़क†—पु०=मेढ़क।

मेढ़ासिंगी—स्त्री० [सं० मेढ़शृंगी] एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ ओषधि के काम में आती है और गले का विष दूर करनेवाली मानी जाती है।

मेंड़ि—स्त्री०=मेंड़।

मेढ़ी—स्त्री० [सं० वेणी] १ स्त्रियों के सिर के बालों की तीन लड़ों में गुथी हुई चोटी। बेनी। २. चोटी में बाँधने का एक प्रकार का गहना।

मेढ़—पु० [सं०] १ शिश्न। लिंग। २. मेढ़ा।

मेथिका—स्त्री० [सं०√मिथ् (मिलना)+ण्वुल्—अक, +टाप्, इत्व] मेथी।

मेथी—स्त्री० [सं०√मिथ्+इन्+ङीष्] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी भाजी होती है। २. उक्त पौधे के बीज।

मेथौरी—स्त्री० [हिं० मेथी+बरी] उर्द की पीठी में मेथी का साग मिलाकर बनाई जानेवाली बरी। उदा०—भई मेथौरी, सिरिस पका।—जायसी।

मेद (स्)—पुं० [सं०√मिद् (चिकना होना)+अच्; असुन्√मिद्+असुन्] १ शरीर के अन्दर की चर्बी। वसा। २. शरीर में चर्बी बढ़ने और बहुत मोटे होने का रोग। ३. ओषधि की एक प्रकार की छाया। ४. कस्तूरी। ५ कस्तूरी, केसर आदि के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। ६ एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति मनुस्मृति में वैदेहिक पुरुष और निषाद स्त्री से कही गई है।

स्त्री० मेदा।

मेदनी—स्त्री० [सं० मेदिनी] १ यात्रियों का गोल जो झंडा लेकर किसी तीर्थ-स्थान या देव-स्थान को जाता हो। २. मेदिनी।

मेदपाट—पु० [सं०] मेवाड़ देश।

मेदपुच्छ—पु० [सं०] दुंबा नामक जन्तु।

मेदस्वी (स्विन्)—वि० [सं० मेदस्+विन्] जिसके बदन में अधिक मेद या चर्बी हो; अर्थात् मोटा।

मेदा—स्त्री० [सं० मेद+अच्+टाप्] अष्टवर्ग में की एक प्रसिद्ध ओषधि जो ज्वर और राजयक्ष्मा में अत्यन्त उपकारी कही गई है।

पु० [अ० मेद:] पाकाशय। पेट। कोठा। जैसे—मेदे की बीमारी।

मुहा०—मेदा कड़ा होना=आँतों की क्रिया इस प्रकार की होना कि जल्दी दस्त न हो। मेदा साफ होना=मलशुद्धि होना। दस्त होने से कोठा साफ होना।

मेदिनी—स्त्री० [सं० मेद+इनि+ङीप्] १. मेदा। २. पृथ्वी।

मेदुर—वि० [सं०√मिद् (चीकना)+घुरच्] चिकना। स्निग्ध।

मेदू†—पु०=मेद।

मेदोज—पु० [सं० मेदस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] हड्डी। अस्थि।

मेदोर्बुद—पु० [सं० मेदस्+अर्बुद, मध्य० स०] १ मेदयुक्त गाँठ या गिल्टी जिसमें पीड़ा हो। २ होंठ का एक प्रकार का रोग।

मेदोवृद्धि—स्त्री० [सं० मेदस्-वृद्धि, ष० त०] १. चर्बी का बढ़ना जिससे शरीर मोटा होता है। २. अंड-कोश बढ़ने का रोग।

मेध—पुं० [सं०√मेध् (मारना)+घञ्] [वि० मेधक, मेधी, मेध्य] १. यज्ञ। २. हवि। ३ यज्ञ-बलि का पशु।

मेधज—पुं० [सं० मेध√जन् (उत्पन्न करना)+ड] विष्णु।

मेधा—स्त्री० [सं०] १. बातें समझने और स्मरण रखने की शक्ति

२ दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ३ षोडश मातृकाओ मे से एक मातृका। ४ छप्पय छन्द का एक भेद।

मेधाजित्—पु० [सं०] कात्यायन मुनि।

मेधातिथि—पु० [स०] १. काण्ववश मे उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेद के प्रथम मडल के १२-२३ सूक्तो के द्रष्टा थे। २ पुराणानुसार शाकद्वीप के अधिपति जो प्रियव्रत के पुत्र कहे गये है। ३ कर्दम प्रजापति का एक पुत्र।

मेधावती—स्त्री० [स० मेधा+मतुप्, वत्व,+ङीप्] महाज्योतिष्मती लता।

मेधावान् (वत्)—वि० [स० मेधा+मतुप्]=मेधावी।
वि० [स्त्री० मेधावती]=मेधावी।

मेधावी (विन्)—वि० [स० मेधा+विनि] [स्त्री० मेधाविनी] १. असाधारण मेधा शक्तिवाला। जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २. बुद्धिमान्। ३ पडित। विद्वान्।
पु० १ मदिरा। शराब। २ तोता।

मेधिर—वि० [स० मेधा+इरन्] मेधावी।

मेधिष्ठ—वि० [स० मेधा+इष्ठन्] मेधावी।

मेध्य—वि० [स० मेधा+यत्] १ बुद्धि बढानेवाला। मेधाजनक। २ पवित्र।
पु० १ जौ। २ बकरा। ३ कत्था। खैर।

मेध्या—स्त्री० [स० मेध्य+टाप्] १. केतकी, शखपुष्पी, ब्राह्मी, मडूकी आदि बुद्धिवर्द्धक बूटियो का वर्ग।

मेन—पु०=मदन (कामदेव)।

मेनका—स्त्री० [स० √मन् (मानना)+वुन्—अक, एत्व,+टाप्] १. पुराणानुसार एक अप्सरा जिसने विश्वामित्र की समाधि भग की थी। शकुतला इसी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। २. हिमवान् की पत्नी और पार्वती की माता।

मेनकात्मजा—स्त्री० [स० मेनका-आत्मजा, ष० त०] १ शकुतला। २ दुर्गा। पार्वती।

मेना—स्त्री० [स० √ मान् (पूजा करना)+इनच्, निपा० सिद्धि] १ पितरो की मानसी कन्या मेनका। २. हिमवान् की पत्नी और पार्वती की माता। ३ वृषणश्य की मानसी कन्या। (ऋग्वेद) ४ स्त्री। औरत। ५ वाक्‌शक्ति।
पु०=मोयन (पकवानो का)।

मेनाद—पु० [स० मे-नाद, व० स०] १ बिल्ली। २ बकरी। ३ मोर।

मेना धव—पु० [स० ष० त०] हिमालय।

मेम—स्त्री० [अ० मैडम का सक्षिप्त रूप] १ युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। २ ताश की बीबी या बेगम नाम का पत्ता।

मेमन—पु० [फा० मोमिन?] गुजरात और महाराष्ट्र राज्यो मे रहनेवाले एक प्रकार के मुसलमान जो बहुधा व्यापार करते है।

मेमना—पु० [अनु० मे में] १ भेंड का बच्चा। २ एक प्रकार का घोडा।

मेमार—पु० [अ०] इमारत बनाने अर्थात् भवन-निर्माण का काम करनेवाला शिल्पी। इमारत बनानेवाला। थवई। राजगीर।

मेमारी—स्त्री० [हिं० मेमार] मेमार का काम, पद या भाव।

मेमो—पु० [अ०] मेमोरडम का सक्षिप्त रूप।

मेमोरियल—पु० [अ०] स्मारक।

मेय—वि० [स० मा (मापना)+यत्] १ जिसकी नाप-जोख हो सके। जिसका परिणाम या विस्तार जाना जा सके। २ जो नापा-जोखा जाने को हो।

मेयना†—स० [हिं० मेयन] गूँधे हुए आटे, मैदे आदि मे मोयन डालना या देना।

मेयर—पु० [अ०] म्युनिस्पिल कारपोरेशन या महापालिका का निर्वाचित अध्यक्ष जो सर्वश्रेष्ठ नागरिक भी माना जाता है।

मेर*—पु० १ =मेरु। २ =मेल।

मेरवन†—स्त्री० [हिं० मेरवना] १ मिलाने की क्रिया या भाव। २ किसी मे मिलाई हुई दूसरी चीज। मेल।

मेरवना†—स०=मिलाना।

मेरा—वि० [हिं० मैं+एरा (प्रत्य०)] 'मैं' का सबध-सूचक विभक्ति से युक्त सार्वनामिक विशेषण रूप।
मुहा०—**मेरा-तेरा करना**=किसी को अपना और किसी को पराया समझना। आत्म और पर का भेद-भाव रखना।
†पु०=मेला।

मेराउ—पु०=मेराव।

मेराज—स्त्री० [अ० मिअराज] १ ऊपर चढने का साधन। २ सीढी। ३ मुसलमानो के विश्वासानुसार मुहम्मद साहब का आसमान पर जाकर ईश्वर-साक्षात्कार करना।

मेराना†—स०=मिलाना।

मेराव—पु० [हिं० मेर=मेल] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २ मिलन। मिलाप।

मेरी—स्त्री० [हिं० मेरा] अहभाव। अहकार।
सर्व० हिं० 'मेरा' का स्त्री०।

मेरु—पुं० [स० √मि (प्रक्षेप)+रु] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है। सुमेरु। २ एक विशिष्ट आकार-प्रकार का देव-मंदिर। ३ हिंडोले मे ऊपरवाली वह लकडी जिससे झूलनेवाली रस्सियाँ बँधी रहती है। ४ पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवो मे से प्रत्येक ध्रुव। (पोल)
विशेष—उत्तरी ध्रुव सुमेरु और दक्षिणी ध्रुव सुमेरु कहलाता है।
५ जपमाला के बीच का बडा दाना जो और सब दानो के ऊपर होता हे। इसी से जप का आरभ और इसी पर उसकी समाप्ति होती है। ६ वीणा का ऊपरी और उठा हुआ भाग। ७ छदशास्त्र मे प्रत्यय के अतर्गत वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितनी मात्राओ या वर्णों के (प्रस्तार के अनुसार निकाले हुए) किसी भेद या छद मे गुरु और लघु के कितने रूप होते है। ८ हठयोग में सुषुम्ना नाडी का एक नाम।

मेरुआ†—पु० [स० मेरु+हिं० आ (प्रत्य०)] छोर का वह अश जिसमे रस्सियाँ बधी होती है।
वि० [हिं० मेरवना=मिलाना] मिला हुआ। मिश्रित।

मेरुक—पु० [स० मेरु+कन्] १ ईरान मे स्थित एक देश। २ यज्ञ का धूआँ। ३ धूप।

मेरु-ज्योति—स्त्री० [स० ष० त०] उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवो मे रात के समय बीच बीच मे दिखाई पडती रहनेवाली एक प्रकार की ज्योति जिससे बहुत कुछ दिन का सा प्रकाश होता है। (आरोरा बोरिएलिस)

क्रि० प्र०—लगना।

५. दे० 'प्रदर्शिनी'। जैसे—औद्योगिक मेला।

स्त्री० [सं०√मिल्+णिच्+अच्+टाप्] १ बहुत से लोगों का जमावड़ा। २. मिलन। ३. रोशनाई। स्याही। ४ आँखों में लगाने का अंजन। ५ महानीली।

मेला-ठेला—पुं० [हिं० मेला+हिं० ठेलना] मेला अथवा कोई ऐसा सार्वजनिक स्थान जहाँ भीड़-भाड़ और धक्कम-धक्का हो।

मेलान†—पुं० [हिं० मिलना] पड़ाव। मंजिल। उदा०—सौंहि मेलान जस पहुँचिहि कोई।—जायसी।

†पुं०=मिलान।

मेलाना—स० [हिं० मेल] १. मेलना का प्रेरणार्थक रूप। मेलने का काम दूसरे से कराना। २ रेहन रखी हुई वस्तु को छुड़ाना।

†स०=मिलाना।

मेलापक—वि० [सं० मेलक] १. मिलानेवाला। २. इकट्ठा करनेवाला।

पुं० १ भीड़-भाड़। जमावड़ा। २. ग्रहों का योग।

मेलायन—पुं० [सं० मिलन] १ मिलन। २ संयोग। समागम।

मेली—वि० [हिं० मेल] १. जिससे मेल या मेल-जोल हो। २ (वह) जो जल्दी दूसरों से हिल-मिल जाता हो। यार-बाश।

मेल्हना—अ० [?] १ कष्ट या पीड़ा से बार-बार इस करवट से उस करवट होना। छटपटाना। २ कोई काम करने में आनाकानी करके समय बिताना।

†पुं० एक प्रकार की नाव।

†स०=मेलना।

मेव—पुं० [देश०] १ राजपूताने की एक जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

मेवड़ी—स्त्री० [देश०] निर्गुंडी। सँभालू।

मेवा—पुं० [फा० मेव.] १ खाने का फल, विशेषत सूखा फल। २ आज-कल विशिष्ट रूप से किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल। ३ उत्तम और बहुमूल्य पदार्थ। ४ गुजरात में होनेवाला एक प्रकार का गन्ना। खजूरिया।

मेवाटी—स्त्री० [फा० मेवा+हिं० बाटी] एक प्रकार का पकवान जिसमें किशमिश, बादाम आदि भी भरे हुए होते है।

मेवाड़—पुं० [देश०] १. आधुनिक राजस्थान का एक प्रसिद्ध भूभाग जो मध्य काल में एक स्वतंत्र राज्य था। महाराणा प्रताप यहीं का राजा था। २. एक राग जो मालकोस राग का पुत्र माना गया है।

मेवाड़-केसरी—पुं० [हिं०] महाराणा प्रताप।

मेवाड़ी—वि० [हिं० मेवाड़] १ मेवाड़-प्रदेश से संबंध रखनेवाला। मेवाड़ का। २ मेवाड़ में रहने या होनेवाला।

पुं० मेवाड़ का निवासी।

स्त्री० मेवाड़ की बोली।

मेवात—पुं० [सं०] राजस्थान और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—पुं० [हिं० मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला।

वि० मेवात का।

स्त्री० मेवात प्रदेश की बोली।

मेवा-फरोश—पुं० [फा० मेवा फरोश] [illegible] दार।

मेवासा*—पुं० =मवास (दुर्ग)।

मेवासी—वि० [हिं० मवासा] १ दुर्ग में रहनेवाला या [illegible]। २ [illegible] सुरक्षित।

पुं० दुर्ग का अधिकारी या स्वामी।

मेष—पुं० [सं०√मिष् (स्पर्धा)+अच्] १ भेड़। २. ज्योतिष में बारह राशियों में से पहली राशि जिसमें २१ मार्च से सूर्य प्रविष्ट होता है। ३. जीवशाक। सुसना।

मेषपाल—पुं० [सं० मेष√पाल् (पालना)+णिच्+अण्] गड़रिया।

मेष-लोचन—पुं० [सं० ब० स०] चकवँड़।

मेष-वल्ली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मेढ़ासिंगी।

मेष-विषाणिका—स्त्री० [सं० ष० त०,+कन्,+टाप्, इत्व] मेढ़ासिंगी।

मेष-शृंग—पुं० [सं० ब० स०] सिंगिया (विष)।

मेष-शृंगी—स्त्री० [सं० मेषशृंग+ङीष्] मेढ़ासिंगी।

मेष-संक्रांति—स्त्री० [सं० ष० त०] सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने का समय जो पुण्यकाल माना गया है। सौर वर्ष का आरंभ इसी अथवा उसके दूसरे दिन से होता है।

मेषांड—पुं० [सं० मेष-अंड, ब० स०] इंद्र।

मेषा—स्त्री० [सं० मेष+टाप्] १. छोटी इलायची। २. [illegible] भेड़ की खाल से बनाया जानेवाला चमड़ा।

मेषिका—स्त्री० [सं० मेषी+कन्+टाप्, ह्रस्व] भेड़ी।

मेषी—स्त्री० [सं० मेष+ङीष्] १. मादा भेड़। २ जटामासी।

मेस—पुं० [अं०] वह भोजनालय जहाँ सामूहिक रूप से किसी वर्ग के बहुत से लोगों का भोजन बनता हो। जैसे—अफसरों या विद्यार्थियों का मेस।

मेसु†—पुं० [?] बेसन की बनी हुई एक प्रकार की बरफी।

मेसूरण—पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में दशम लग्न जो सर्वोत्तम माना गया है।

मेस्मेरिज्म—पुं० [अं० मेस्मरिज्म] मेस्मर नामक जर्मन डाक्टर का आविष्कृत यह सिद्धांत कि मनुष्य किसी गुप्त शक्ति या [illegible] इच्छा-शक्ति से दूसरे की इच्छाशक्ति को प्रभावित कर या दबाकर उसे अचेत कर सकता है। सम्मोहिनी क्रिया। [illegible]।

मेहँदिया—वि० [हिं० मेहँदी] मेहँदी के रंग का। हरापन लिये लाल रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

मेहँदी—स्त्री०=मेहदी।

मेह—पुं० [सं०√मिह् (सींचना)+घञ्] १ पेशाब। मूत्र। २. प्रमेह नामक रोग। ३ कोई ऐसा रोग जिसमें मूत्र के साथ कोई और विकार या दूषित तत्त्व भी निकलता हो। जैसे—मधुमेह आदि।

पुं० [सं० मेघ] १ मेघ। मेह। २ बादल। मेघ। ३ [illegible]। मेंह।

मेहतर—पुं० [फा० मिहतर] १ बड़ा बुजुर्ग और प्रतिष्ठित या श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २ भंगी जिसे हलालखोर कहते हैं।

मेहतरानी—स्त्री० हिं० 'मेहतर' (भंगी) की स्त्री।

मेहन—पुं० [सं०√मिह्, +ल्युट्—अन] १ [illegible]। मूत्र [illegible]। २ पेशाब। मूत्र। ३ [√मिह्+ल्युट्—अन] [illegible]। लिंग।

मेहनत—स्त्री० [अ०] परिश्रम, विशेषत शारीरिक परिश्रम।
मेहनताना—पु० [अ०+फा०] १. मेहनत करने के बदले मे मिलने-वाला धन। पारिश्रमिक। २ विशेष रूप से वह धन जो वकील को मुकदमा लडने के बदले मे दिया जाता है।
मेहनती—वि० [अ० मेहनत+हिं० ई० (प्रत्य०)] १. अधिक या पूरी मेहनत करनेवाला। परिश्रमी। २ व्यायाम करनेवाला। ३. पुष्ट।
मेहना—स्त्री० [स०√मिह्+णिच्+युच्+अन,+टाप्] महिला। स्त्री।
पु० [अ० मिहन=परीक्षण या हिं० ताना का अनु० ?] किसी के साथ किये हुए उपकार की ऐसी चर्चा जो उपकृत व्यक्ति की कृतघ्नता दिखलाने पर लज्जित करने के लिए की जाय। जैसे—वह दिन-रात ननद को ताने-मेहने देती रहती है। (स्त्रियाँ)
क्रि० प्र०—देना।—मारना।
मेहमान—पु० [फा० मेह्मान] १. अतिथि। अभ्यागत। २ दामाद।
मेहमानदारी—स्त्री० [फा०] अतिथि या मेहमान की की जानेवाली आव-भगत या आदर-सत्कार। आतिथ्य।
मेहमानी—स्त्री० [फा० मेहमान+ई (प्रत्य०)] १ मेहमान होने की अवस्था या भाव। २ मेहमान का किया जानेवाला आतिथ्य-सत्कार। ३ अपने पर मेहमानो की तरह किया जानेवाला सकोच।
मेहर—स्त्री० [फा० मेह्र] मेहरबानी। अनुग्रह। दया।
†स्त्री०=मेहरी।
मेहरना—अ० [हिं० मेहर+ना (प्रत्य०)] मेहर अर्थात् अनुग्रह करना।
मेहरबान—वि० [फा० मेह्रबान] कृपालु। दयालु। अनुग्रह करनेवाला।
मेहरबानगी—स्त्री०=मेहरबानी।
मेहरबानी—स्त्री० [फा० मेह्रबानी] १ मेहरबान होने की अवस्था या भाव। कृपा। अनुग्रह। २ मेहरबान द्वारा किया हुआ कोई उपकार या अनुग्रह।
मेहरा—पु० [हिं० मेहरी] १ स्त्रियो की-सी चेष्टावाला। स्त्री-प्रकृतिवाला। जनखा।
†पु० [?] जुलाहों की चरखी का घेरा।
पु० [स० मिहिर] खत्रियों की एक जाति या वर्ग।
मेहराना†—अ० [?] नमी आदि के कारण कुरकुरे या मुरमुरे पदार्थ का कुछ आर्द्र होना। जैसे—बरसात के कारण भुने हुए दाने या मेवे मेहराना।
मेहराब—स्त्री० [अ० मिहराब] द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग। दरवाजे के ऊपर का गोले, आधे गोले या मडल की तरह का बनाया हुआ हिस्सा।
मेहराबदार—वि० [अ०+फा०] जिसमें मेहराब लगी हो। मेहराब-वाला।
मेहराबी—वि० [अ० मिहराबी] मेहराबदार।
स्त्री० एक प्रकार की तलवार जो मेहराब की तरह बीच मे कुछ झुकी हुई या टेढ़ी होती है।
मेहरारू—स्त्री० [स० मेहना] १. महिला। स्त्री। २ जोरू। पत्नी।
मेहरिया—स्त्री०=मेहरी।
मेहरी—स्त्री० [स० मेहना] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी।
मेहल—पु० [देश०] मॅझोले आकार का एक तरह का वृक्ष जिसके फल खाये जाते है। इसकी लकड़ी की छड़ियाँ और हुक्के की निगालियाँ बनती हैं।
मेह्र—स्त्री०=मेहर (कृपा)।
मेह्रबान—वि०=मेहरबान।
मैं—सर्व० [स० अह] सर्वनाम उत्तम पुरुष मे कर्ता का रूप। स्वय। खुद।
विशेष—गद्य मे तो यह विभक्ति-रहित रूप है, परन्तु पद्य मे यह सार्व-विभक्तिक रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे—यह अपराध बडो उन कीन्हों। तच्छक डसन साप मैं (=मुझे) दीन्हों।—सूर।
स्त्री० अहभाव। अहंमन्यता।
†विभ० हिन्दी की 'में' विभक्ति का ब्रज रूप।
मैंगनीज़—पुं० [अं०] मंगल नामक सफेद धातु।
मैंढल†—पु०=मैनफल।
मैंन†—पु०=मोम।
मै—स्त्री० [स० मद्य से फा०] शराब। मद्य। मदिरा।
अव्य० [अ०] साथ। सहित। जैसे—मै नौकर-चाकर से वे यहाँ आनेवाले है।
†पु०=मय।
पु०=मैखाना।
मैकदा—पु० [फा० मैकद.] मधुशाला।
मैकश—पु० [फा०] [भाव० मैकशी] बहुत शराब पीनेवाला। मद्यप।
मैकशी—स्त्री० [फा०] शराब पीना। मद्य-पान।
मैका—पुं०=मायका।
मै-खाना—पु० [फा० मैखान] मधुशाला। मदिरालय।
मैगना कार्टा—पु० [अ०] वह राजकीय आज्ञापत्र जिसमे राजा की ओर से प्रजाजनो को कोई स्वत्व या अधिकार देने की घोषणा की जाती है। शाही फरमान।
मैगनेट—पु० [अं०] चुबक।
मैगल—पु० [स० मदकल] मत्त हाथी। मस्त हाथी।
वि० मत्त। मस्त।
मैच—पु० [अ०] वह खेल जिसमें दो दल एक दूसरे को पराजित करने और स्वय विजयी होने के लिए सम्मिलित होते हैं। प्रतियोगिता का खेल।
मैजल*—स्त्री० [अ० मजिल] १ उतनी दूरी जितना कोई पुरुष एक दिन मे तै करता हो या कर सकता हो। मजिल। २ यात्रा। सफर।
मैजिक—पु० [अ०] इंद्रजाल। जादू।
मैजिक लालटेन—स्त्री० [अ० मैजिक लैन्टर्न] एक प्रकार का यत्र जिसमे विद्युत् के प्रकाश की सहायता से परदे पर परछाँई डालकर तसवीरें आदि दिखाई जाती हैं।
मैटर—पु० [अ०] १. पदार्थ। भूत। २. कागज पर लिखा हुआ कोई विषय जो कपोज करने के लिए दिया जाय। ३ कपोज किये हुए टाइप या अक्षर जो छपने के लिए तैयार हो।
मैत्र—पु० [स० मित्र+अण्] १ मित्र होने की अवस्था या भाव। मित्रता। २ अनुराधा नक्षत्र। ३ मर्त्य लोक। ४. ब्राह्मण। ५ मल-द्वार। गुदा। ६ वेद की एक शाखा। ७ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ८. एक मुहूर्त। (ज्योतिष)
वि० १. मित्र-सबधी। २. मित्रो मे होनेवाला।

मैत्रक—पु० [सं० मैत्र+कन्] १ मित्रता। दोस्ती। २ बौद्ध मदिर का पुजारी।

मैत्रीभ—पु० [स० मध्य० स०] अनुराधा नक्षत्र।

मैत्रायण—पु० [स० मित्र+फक्-आयन] १ गृह्यसूत्र के प्रणेता एक प्राचीन ऋषि। २ मैत्र नाम की वैदिक शाखा।

मैत्रावरुण, मैत्रावरुणि—पु० [स० मित्र-वरुण, द्व० स०, वृद्धि+अण्, मैत्रावरुण+इञ्] १. अगस्त्य और वसिष्ठ (इन दोनो की उत्पत्ति मित्र और वरुण दोनो के सयुक्त वीर्य से मानी गई है)। २ यज्ञ के १६ ऋत्विजो मे से एक।

मैत्री—स्त्री० [स० मित्र+ष्यञ्+ङीप्, य-लोप] १ दो व्यक्तियो के बीच का मित्र-भाव। मित्रता। दोस्ती। २ अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी के साथ बढाया या स्थापित किया जानेवाला घनिष्ठ मेल-जोल। संश्रय। (एलायन्स) ३ दो या अधिक चीजो के एक ही तरह के होने की अवस्था या भाव। समानता। जैसे—वर्ण-मैत्री। ४ अनुराधा नक्षत्र।

मैत्रेय—पु० [स० मैत्र+ढञ्-एय] १ एक बुद्ध। २ [मित्रयु+ढञ्-एय, यु-लोप] सूर्य। ३. एक ऋषि। ४ एक वर्ण सकर जाति।

मैत्रेयिका—स्त्री० [स० मैत्रेय+कन्+टाप्, इत्व] मित्रो या सहयोगियो मे होनेवाला संघर्ष।

मैत्रेयी—स्त्री० [सं० मैत्रेय+ङीप्] १ याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम जो ब्रह्मवादिनी और बड़ी पडिता थी। २ अहल्या का एक नाम।

मैत्र्य—पु० [स० मित्र+ष्यञ्] मित्रता। दोस्ती।

मैथिल—पु० [स० मिथिला+अण्] १ मिथिला का निवासी। २ राजा जनक।
वि० मिथिला-सम्बन्धी।

मैथिली—स्त्री० [स० मैथिल+ङीप्] १ मिथिला देश के राजा की कन्या, जानकी। सीता। २. मिथिला देश की बोली।
वि० मिथिला देश अथवा मैथिलो का।

मैथुन—पु० [स० मिथुन+अण्] १. स्त्री के साथ पुरुष का समागम। सभोग। रति-क्रीडा। २. मन मे काम-वासना या सभोग का विचार रखकर स्त्री या स्त्रियो के साथ किया जानेवाला कोई व्यवहार। जैसे—केलि-मैथुन। (दे०)

मैथुनिक—वि० [स० मैथुन+ठक्-इक] १ मैथुन-सम्बन्धी। मैथुन का। २ स्त्रीलिंग या पुलिंग अथवा दोनो से सबध रखनेवाला। यौन। लैंगिक। (सेक्सुअल)

मैथुनिकी—स्त्री० [स० मैथुनिक+ङीप्] आधुनिक चिकित्सा-प्रणाली की वह शाखा जिसमे दुष्ट मैथुन के कारण उत्पन्न होनेवाले रोगो का निदान और विवेचन होता है। (वेनीरियोलोजी)

मैथुनी (निन्)—वि० [स० मैथुन+इनि] मैथुन करनेवाला।

मैथुन्य—पु० [स० मिथुन+ष्यञ्] १ मिथुन की अवस्था या भाव। २ [मैथुन+यत्] गाधर्व विवाह।

मैदा—पु० [फा० मैद] बहुत महीन छाना या पीसा हुआ आटा जिससे बढिया पकवान और मिठाइयाँ बनती है।

मैदान—पु० [फा०] १. ऐसा विस्तृत क्षेत्र या भूखड जो प्राय समतल हो और जिस पर किसी प्रकार की वास्तु-रचना आदि न हो। दूर तक फैली हुई सपाट जमीन।
मुहा०—मैदान करना या छोड़ना=किसी काम के लिए बीच मे कुछ जगह खाली छोडना। **मैदान जाना**=शौच आदि के लिए, विशेषत. बस्ती के बाहर उक्त प्रकार के स्थान मे जाना।
पद—खुले मैदान=सब के सामने।
२ पर्वतीय प्रदेश से भिन्न भूभाग जो प्राय. समतल होता है। ३ खेल, तमाशे, प्रतियोगिता आदि के लिए बनाया हुआ उक्त प्रकार का क्षेत्र या भूमि।
मुहा०—मैदान बदना=लड़ने-भिडने के लिए स्थान नियत करना। **मैदान मारना**=प्रतियोगिता आदि मे विजय प्राप्त करना। **मैदान में आना**=प्रतियोगिता या प्रतिद्वद्विता के लिए सामने आना। मुकाबले पर आना। **मैदान साफ होना**=आगे बढने के लिए मार्ग मे कोई बाधा या रुकावट न होना।
४ युद्ध-क्षेत्र। रण-भूमि।
मुहा०—मैदान करना=युद्ध-क्षेत्र मे पहुँचकर युद्ध करना। **मैदान मारना**=युद्ध मे विजय प्राप्त करना। **(किसी के हाथ) मैदान रहना**=किसी पक्ष को पूरी विजय प्राप्त होना।
५ किसी प्रकार की लबाई, चौडाई या विस्तार। ऊपरी तल का फैलाव। जैसे—(क) इस तख्ते मे इतना मैदान ही नही है कि इस पर इतने बेल-बूटे बन सके। (ख) इस हीरे का ऊपरी मैदान कुछ कम है।

मैदानी—वि० [फा०] १ (प्रदेश) जो समतल हो विशेषत जिसमे पहाड आदि न हो। २ मैदान या मैदानो मे काम आने या होनेवाला अथवा उनमे सबध रखनेवाला। जैसे—मैदानी तोप।
स्त्री० आँगन या मैदान मे टाँगी अथवा लटकाई जानेवाली लालटेन।
स्त्री० [हिं० मैदा] मैदे का उठाया हुआ खमीर।

मैदा-लकड़ी—स्त्री० [स० मेदा+हिं० लकड़ी] एक प्रकार की मुलायम सफेद जडी जो औषध के काम आती है।

मैन—पु० [स० मदन] १ कामदेव। मदन। २. मोम। ३ राल मे मिलाया हुआ मोम जिसमे धातुओ की मूर्तियाँ बनाने के पहले उनका नमूना बनाया जाता है, और जिसके आधार पर मूर्तियाँ ढालने का साँचा बनाया जाता है।
पु० [अ०] आदमी। मनुष्य।

मैन-कामिनी—स्त्री० [हिं० मैन=मदन+स० कामिनी] कामदेव की स्त्री। रति।

मैनफरा†—पु०=मैनफल।

मैनफल—पु० [स० मदनफल] १. मझोले आकार का एक प्रकार का झाडदार और कँटीला वृक्ष जिसकी छाल खाकी रग की, लकड़ी हलके भूरे रग की होती है, और फूल पीलापन लिये सफेद रग के होते हैं।
२ इस वृक्ष का फल जिसमे दो दल होते हैं और जिसमे बिहीदाने की तरह चिपटे बीज होते है। इसका गूदा पीलापन लिए लाल रंग का और स्वाद कड़ुआ होता है।

मैनमय—वि० [हिं० मैन+स० मय] जिसे बहुत प्रबल काम-वासना हो रही हो।

मैनरा†—पु०=मैनफल।

मैनशिला†—स्त्री०=मैनसिल।

मैनसिल—स्त्री० [सं० मन शिला] मटमैले रग का एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसे शोधकर दवा के काम मे लाया जाता है।

मैना—स्त्री० [सं० मदना, मदन-शलाका] १ काले रग की तथा पीली चोंचवाली एक प्रसिद्ध बड़ी चिड़िया जो सिखाने मे मनुष्य की-सी बोली बोलने लगती है। सारिका। सारो। २ सतभइया नामक पक्षी। ३ हिमालय की स्त्री।
†स्त्री०=मेनका।
†पु०=मीना (जगली जाति)।

मैनाक—पु० [सं० मेनका+अण, पृषो० सिद्धि] एक पर्वत जो मैना तथा हिमालय का पुत्र माना जाता है। (पुराण०) इसे सुनाभ और हिरण्य-नाभ भी कहते हैं। २ हिमालय की एक चोटी।

मैनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला पेड। मरुवक।

मै-परस्त—पु० [फा०] [भाव० मै-परस्ती] १. मदिरा का प्रेमी और भक्त, अर्थात् मद्यप। २ बहुत अधिक शराब पीनेवाला। मदिरासक्त।

मै-परस्ती—स्त्री० [फा०] बहुत अधिक शराब पीना।

मै-फरोश—पु० [फा०] [भाव० मै-फरोशी] शराब बेचनेवाला। मद्य-व्यवसायी। कलवार।

मै-फरोशी—स्त्री० [फा०] शराब बेचने का धधा।

मैमत†—वि० [सं० मदमत्त] १ मदोन्मत्त। मतवाला। २ अभिमानी। घमडी।
स्त्री०=ममता।

मैमनत—स्त्री० [अ० मैमत] १ सम्पन्नता। २ सुख। ३. कल्याण।

मैमाता†—वि० [स्त्री० मैमाती]=मैमत।

मैयत—स्त्री० [सं० मृत्यु] १ मौत। मृत्यु। २ मृत शरीर। लाश। शव। ३ मृतक का अतिम सस्कार। अन्त्येष्टि। जैसे—उनकी मैयत मे शहर भर के लोग शामिल हुए थे।

मैया—स्त्री० [सं० मातृका, प्रा० मातृआ, माइया] माता। माँ।

मैयार—पु० [हिं० मटियार] एक तरह की बजर भूमि।
पु० [अ०] १ मापने-तौलने आदि का कोई उपकरण। २ कसौटी।

मैर—स्त्री० [सं० मृदर, प्रा० मिअर=क्षणिक] रह-रहकर होनेवाली वह कसक जो शरीर मे साँप का जहर प्रविष्ट होने पर होती है।

मैरा—पु० [सं० मयर, प्रा० मयड] खेत मे स्थित मचान।

मैरीन—पु० [अ०] १ नौ-सेना। २ नौ-सैनिक।
वि० समुद्र-सम्बन्धी। समुद्री।

मैरेय—स्त्री० [सं० मार+ढक्—एय, नि० सिद्धि] १. गुड और धौ के फूल की बनी हुई एक प्रकार की प्राचीन काल की मदिरा। २ एक मे मिला हुआ आसव और मद्य जिसमें ऊपर से शहद भी मिला दिया गया हो। ३ मदिरा। शराब।

मैलंद—पु० [सं० मिलिंद] भौंरा।

मैल—स्त्री० [सं० मल] १ कोई ऐसी चीज जिसके पडने या लगने से दूसरी चीजें खराब, गदी या मैली होती हों अथवा उनकी चमक-दमक, सफाई आदि कम होती या बिगड जाती हो। मलिन या मैला करने-वाला तत्त्व या वस्तु। जैसे—किट्ट, गर्दा, धूल आदि।
पद—हाथ-पैर की मैल=बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ वस्तु। जैसे—वह रुपए-पैसे को तो हाथ-पैर की मैल समझता था।
२ मन मे रहने या होनेवाला किसी प्रकार का दोष या विकार।
मुहा०—मन में मैल रखना=मन मे किसी प्रकार का दुर्भाव या वैमनस्य रखना।
†वि०=मैला (मलिन)।
पु० [देश०] फीलवानों का एक सकेत जिसका व्यवहार हाथी को चलाने के लिए होता है।

मैल-खोरा—वि० [हिं० मैल+फा० खोर] धूल, गर्दा आदि पडने पर भी (क) जो मैला न दिखाई पड़ता हो अथवा (ख) जिसकी रगत खराब न होती हो जैसे—(क) मैल-खोरा कपडा। (ख) मैल-खोरा रग।
पु० १ काठी या जीन के नीचे रखा जानेवाला नमदा। २ साबुन।

मैला—वि० [सं० मलिन; प्रा० मइल] १ जिस पर मैल जमी हो। जिस पर गर्द, धूल या कीट आदि हो। जिसकी चमक-दमक मारी गई हो। मलिन। अस्वच्छ। 'साफ' का उलटा।
पद—मैला-कुचैला।
२ दोष, विकार आदि से युक्त। दूषित और विकृत। गदा।
पु० १ गलीज। गू। विष्ठा। २ कूड़ा-करकट। ३. मैल।
पु० [अ० मैल] १ आकर्षण। २. प्रवृत्ति या रुचि।

मैला-कुचैला—वि० [हिं० मैला+सं० कुचैल=गदा वस्त्र] [स्त्री० मैली-कुचैली] १. बहुत अधिक मैला या गदा। २ जो बहुत मैले कपडे आदि पहने हुए हो।

मैला-घर—पु० [हिं०] वह सार्वजनिक स्थान जहाँ गाँव या शहर का कूडा-कर्कट, गू आदि फेंका जाता हो।

मैलान—पु० [अ०] १ आकर्षण। २ प्रवृत्ति या रुचि।

मैलापन—पु० [हिं० मैला+पन (प्रत्य०)] मैले होने की अवस्था या भाव। मलिनता। गदापन।

मैशिनरी—स्त्री०=मशीनरी।

मैहर—पु० [हिं० मही=मट्ठा] १ मक्खन को तपाने पर उसमे से निकलने-वाला मट्ठा। २ घी की तलछट।
†पु०=नैहर (मायका)।

मो—सर्व० [सं० मम] १ ब्रजभाषा मे 'मैं' का कर्ता से भिन्न अन्य कारकों मे विभक्ति लगने से पहले बना हुआ रूप। जैसे—मोको, मोपै इत्यादि। २. मुझे। मुझको।
अव्य० मे। उदा०—खोलि कपाट महल मो जाही।—कबीर।

मोगरा—पु० १=मोगरा। २ =मुँगरा।

मोगला—पु० [देश०] मध्यम श्रेणी का केसर।
†पु०=मुँगरा।
†पु०=मोगरा।

मोछ†—स्त्री०=मूँछ।

मोड़ा—पु० [प० मुडा] १. बालक। २ पुत्र।

मोंढा—पु० [सं० मूर्द्धा; प्रा० मूड्ढा=आधार] १ बाँस, सरकडे या बेंत का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन जो प्राय तिरपाई से मिलता-जुलता होता है। माँचा। २ बाहु के जोड के पास कधे का घेरा। कधा।
पद—सीना-मोंढा। (देखें)

मो*—सर्व० [सं० मम] १ मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा मे 'मैं'

का वह रूप जो उसे कर्ताकारक से भिन्न अन्य कारकों मे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—मोको, मोसो इत्यादि।

मोई—स्त्री० [हिं० मोना] घी मे सना हुआ आटा।

मोकदमा†—पु०=मुकदमा।

मोकना—स० [स० मुक्त; हिं० मुकना] १ परित्याग करना। छोडना। २ मुक्त करना। छुडाना। ३ फेंकना।

मोकराना†—स०=मोकना (मुक्त करना)। उदा०—हौ होइ बदि पियहि मोकरावौं।—जायसी।

मोकल*—वि० [स० मुक्त, हिं० मुकना] १ जो बँधा न हो। छूटा हुआ। आजाद। स्वच्छद। २ दे० 'मोकला'।

मोकलना—स० [स० मुक्ति] भेजना। उदा०—चिहुँ दिसि नौ ताँ मोकल्या।—नरपति नाल्ह।

मोकला—वि० [हिं० मोकल] १ अधिक चौडा। कुशादा। २ खुला या छूटा हुआ। मुक्त। ३ बहुत। यथेष्ट।

मोका—पु० [देश०] पु० १.=मौका। २ =मोखा।

मोक्ष—पु० [स०√मोक्ष् (छोडना)+घञ्] १ बधन से छूटना। मुक्त होना। छुटकारा। २ धार्मिक क्षेत्र मे वह अवस्था या स्थिति जिसमे मनुष्य दुष्कर्मों, पापो आदि से रहित होने के कारण बार-बार ससार मे आकर जन्म लेने और मरने के कष्टो से छूट जाता है। आवागमन से मिलनेवाली मुक्ति। ३ मृत्यु। मौत। ४ गिरना। पतन। ५ पाढर का वृक्ष।

मोक्षक—वि० [स०√मोक्ष्+ण्वुल्—अक] मोक्ष-दायक।
पु० मोखा नामक वृक्ष।

मोक्षण—पु० [स०√मोक्ष्+ल्युट्—अन] [वि० मोक्षणीय, मोक्षित, मोक्ष्य] मोक्ष देने की क्रिया या भाव।

मोक्षद—वि० [स० मोक्ष√दा (देना)+क] मोक्ष-दायक।

मोक्षदा—स्त्री० [स० मोक्षद+टाप्] अगहन सुदी एकादशी की सज्ञा।

मोक्ष-देव—पु० [स०] चीनी यात्री ह्वेनसाग का एक भारतीय नाम।

मोक्ष-द्वार—पु० [स० ष० त०] १ सूर्य। २ काशी तीर्थ।

मोक्ष-पति—पु० [स० ष० त०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक भेद। इसमे १६ गुरु, ३२ लघु और ६४ द्रुत मात्राएँ होती हैं।

मोक्ष-विद्या—स्त्री० [स० ष० त०] अध्यात्म-विद्या।

मोक्ष-शिला—स्त्री० [स० ष० त०] वह लोक जिसमे जैन धर्मावलबी साधु पुरुष मोक्ष का सुख भोगते है। (जैन)

मोक्ष्य—वि०[स० मोक्ष+यत्] १ जिसका मोक्षण हो सकता हो। जो छूट सकता हो, छुडाया जा सकता हो या छुडाया जाने को हो। २ जो धार्मिक दृष्टि से मोक्ष या मुक्ति पाने का अधिकारी हो चुका हो।

मोख†—पु०=मोक्ष।

मोखा—पु०[स० मुख]१ दीवार, छत आदि मे बना हुआ रोशनदान। २ ताखा। ३. एक तरह का वृक्ष।

मोगरा—पु०[स० मुद्गर]१ बढिया जाति का बेले का पौधा। २ उक्त पौधे का फूल जो साधारण बेले के फूल से अधिक बडा तथा गठा हुआ होता है।

मोगल†—पु०=मुगल।

मोगली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का जगली वृक्ष।

मोघ—वि०[स०√ मुह् (मुग्ध होना)+घञ्, कुत्व]१ (पदार्थ) जो ठीक या पूरा काम न दे सकता हो। २. निष्फल। व्यर्थ।

मोघ-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०,+टाप्] वध्या स्त्री। बाझ।

मोघिया—स्त्री०[देश०] वह मोटी, मजबूत और अधिक चौडी नरिया जो खपरैली छाजन मे बँडेरे पर मँगरा बाँधने मे काम आती है।

मोघ्य—पु०[स० मोघ+ष्यञ्] विफलता। अकृतकार्यता। नाकामयाबी।

मोच—पु०[स०√ मुच् (छोडना)+अच्]१ सेमल का पेड। २ केला। ३ पाढर वृक्ष।
स्त्री०[स०मुच्]१ झटका या धक्का लगने से शरीर के किसी अग के जोड की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना। (इसमे वह स्थान सूज आता है और उसमे बहुत पीडा होती है)। जैसे—पाँव मे मोच आ गई है। २ कोई ऐसा दोष जिसमे कोई चीज भद्दी और लँगडी सी जान पडती हो। जैसे—पहले आप अपनी भाषा की मोच तो निकाले। क्रि० प्र०—आना।—पडना।

मोचक—वि०[स०√मुच् (छोडना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ मोचन करनेवाला। छुडानेवाला। २ ले लेने या हरण करनेवाला।
पु० १ सेमल का पेड। २. केला। ३ ऐसा सन्यासी जो सब प्रकार की विषय-वासनाओ से मुक्त हो चुका हो।

मोचन—पु०[स०√ मुच्+ल्युट्—अन] १. बधन आदि से छुडाना। छुटकारा देना। मुक्त करना। २ दूर करना। हटाना। जैसे—दुख-मोचन। ३ ले लेना या हरण करना। छीनना। जैसे—वस्त्र मोचन।

मोचना—स० [स० मोचन] १. मोचन करना। २. छुडाना या छोडना। ३ गिराना। ४ बाहर निकालना।
पु० १ लोहारो का वह औजार जिससे वे लोहे के छोटे-छोटे टुकडे उठाते है। २. हज्जामो की वह चिमटी जिससे वे बाल उखाडते या नोचते है।

मोचनी—स्त्री० [स०√ मुच्+णिच्+ल्यु—अन,+ङीप्] भटकटैया।
स्त्री० हिं० 'मोचना' का स्त्री० अल्पा०।

मोचयिता (तृ)—वि०[स० √ मुच् +णिच्+तृच्] छुटकारा देने या दिलवानेवाला।

मोच-रस—पु०[स० ष० त०] सेमल वृक्ष का गोद।

मोचा—स्त्री० [स०√ मुच् +अच्+टाप्]१ केला। २ नील का पौधा। ३ रूई का पौधा।
पु० सहिजन (वृक्ष)।

मोचाट—पु०[स० मोच√अट् (प्राप्त होना)+अच्] १ केला। २ केले की पेडी के बीच का कोमल भाग। केले का गाभ।

मोची (चिन्)—वि०[स० √मुच्+णिच्+णिनि] [स्त्री० मोचिनी] १. दूर करनेवाला। २ छुडानेवाला।
पु०[स० मोचन= (चमडा) छुडाना] [स्त्री० मोचिन] वह जो चमडे के जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो। जूते गाँठने या सीनेवाला।

मोच्छ*—पु०=मोक्ष।

मोछ—स्त्री०=मूँछ।
†पु०=मोक्ष।

मोजड़ा—पु०[हिं० मोची ?] [स्त्री० अल्पा० मोजड़ी] जूता। (राज०) उदा०—पग मचकती मोजडी।—नरपति नाल्ह।

मोजरा†—पु०=मुजरा।

मोजा—पु०[फा० मोज] कोशिये, सिलाई अथवा मशीन द्वारा बुना जानेवाला तथा पाँव ढकने का धागे, सूत आदि का आवरण। जुर्राब। २ पैर मे पिंडली के नीचे का वह भाग जो गिट्टे के आस-पास और उससे कुछ ऊपर होता है और जिसपर उक्त आवरण पहना जाता है। ३. कुश्तो का एक पेंच जिसमे विपक्षी को जमीन पर गिराकर और उसके पैर का उक्त अग पकडकर उसे चित्त किया जाता है।

मोजिजा—पु०[अ० मुअजिज़] कोई अलौकिक या देव-कृत चमत्कार।

मोट—स्त्री०[हिं० मोटरी] गठरी। मोटरी।

पु०[देश०] चमडे का एक प्रकार का बडा थैला जिससे सिंचाई के लिए कुएं से पानी निकाला जाता है। चरसा।

मोटक—पु० [स०√ मुट् (टेढा करना)+घञ्+कन्] दुहरे किये हुए कुश के टुकड़ों का समूह जो पितृश्राद्ध करते समय व्यवहृत होते हैं।

मोटकी—स्त्री० [स० मोचक+ङीप्] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

मोटन—पु०[स०√मुट् (मोडना)+ल्युट्—अन]१ वायु। हवा। २ पीसना, मलना या रगड़ना। ३ वायु। हवा।

मोटनक—पु०[स० मोटन+कन्] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, दो जगण और अन्त में लघु-गुरु होते हैं। यथा—सोहैं घन श्यामल घोर घने। मोहैं तिनमें बक-पाँति भने।—केशव।

मोटर—स्त्री०[अं०]१ कोयले, पेट्रोल आदि द्वारा उत्पादित शक्ति से सडकों पर चलनेवाली एक प्रकार की सवारी गाडी। २ एक प्रकार का वैद्युतिक यत्र जिसकी शक्ति से अन्य मशीनें चलाई जाती हैं।

मोटरी—स्त्री०[तैलग० मूटा=गठरी] गठरी।

मोटा—वि०[सं० मुष्ट]१. अपेक्षाकृत अधिक स्थूल-काय फलत जिसमे अधिक मास तथा चरबी हो। 'दुबला' का विरुद्धार्थक।

पद—मोटा-झोटा या मोटा-ताजा=हृष्ट-पुष्ट।

२ जिसमे घनता अधिक हो। 'पतला' का विरुद्धार्थक। ३ जिसकी गोलाई का घेरा प्रसम या साधारण से अधिक हो।

मुहा०—मोटा दिखाई देना=आँखों की ज्योति मे ऐसी कमी होना जिसमे छोटी या बारीक चीजें न दिखाई दें। बहुत कम और केवल मोटी चीजें दिखाई देना।

४ जिसके कण बहुत अधिक छोटे या बारीक न हों। जो बहुत महीन चूर्ण के रूप मे न हो। जैसे—मोटा आटा, मोटा बालू, मोटा बेसन। ५ जो परिमाण, मान आदि मे, साधारण से अधिक, उत्तम या यथेष्ट हो। जैसे—मोटा असामी=धनवान या सम्पन्न व्यक्ति। **मोटा भाग्य**=अच्छा भाग्य या सौभाग्य। मोटा भार=बहुत अधिक भार। मोटी हानि=बहुत अधिक हानि। ६ जिसमे विशेष उत्तमता, कोमलता, प्रशसनीयता, सूक्ष्मता, आदि गुणों का अभाव हो, और इसी लिए जो घटिया, बुरा या महत्त्वहीन माना जाता हो। जैसे—मोटा अनाज, मोटी उपमा, **मोटी बुद्धि, मोटे** वस्त्र।

पद—मोटा-झोटा= बहुत ही घटिया या साधारण।

७ (बात या विषय) जो साधारण बुद्धि का आदमी भी सहज मे समझ सके। जिसे जानने या समझने मे विशेष बुद्धि की आवश्यकता न हो। जैसे—मोटी बात, मोटी भूल।

मुहा०—मोटे तौर पर या मोटे हिसाब से=बिना ब्योरे की बातों का अथवा सूक्ष्म विचार किये हुए। जैसे—मोटे हिसाब से इस काम मे सौ रुपए खर्च होंगे।

पद—मोटी चुनाई=बिना गढे हुए और बेडौल पत्थरों की (दीवार के रूप मे होनेवाली) चुनाई या जोडाई।

८ लाक्षणिक रूप मे धन, बल आदि की अधिकता के कारण अपने आपको बडा समझनेवाला फलत' अभिमानी या घमडी(व्यक्ति)। जैसे—अब तो वह मोटा हो चला है, जल्दी किसी से बात नहीं करता।

†पु०[?] करैली या काली मिट्टीवाली जमीन।

†पु०=मोट (बड़ी गठरी)।

मोटाई —स्त्री०[हिं० मोटा+आई (प्रत्य०)]१. मोटे होने की अवस्था या भाव। २ किसी वर्गाकार वस्तु की लबाई और चौडाई से भिन्न भाग का माप। जैसे—इस लकडी की मोटाई तीन इच है। ३. धन आदि की अधिकता के फलस्वरूप किसी के व्यवहार से प्रकट होनेवाली अह-भावना, आलस्य या ओछापन।

मुहा०—मोटाई चढ़ना=धनवान आदि बनने पर घमडी, ओछा तथा आलसी बनना। **मोटाई झड़ना या निकलना**=अहभाव का जाते रहना।

मोटाना—अ०[हिं० मोटा+आना (प्रत्य०)]१. मोटा होना। स्थूलकाय होना। २ धनवान् या सपन्न होना। ३ फलत अभिमानी या घमंडी और आलसी होना।

स० ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई मोटा हो।

मोटापन— पु० [हिं० मोटा+पन (प्रत्य०)] मोटे होने की अवस्था या भाव। दे० 'मोटाई'।

मोटापा—पु०[हिं० मोटा+पा (प्रत्य०)]मोटे अर्थात् स्थूलकाय होने की अवस्था या भाव। मोटापन। मोटाई।

मोटा-मोटी—क्रि० वि०[हिं० मोटा] स्थूल गणना के विचार से। मोटे हिसाब से।

मोटिया—पु०[हिं० मोटा+इया (प्रत्य०)] मोटा और खुरदरा देशी कपडा। गाढा। गजी। खद्दड़। सल्लम।

पुं०[हिं० मोट] बोझ ढोनेवाला मजदूर।

मोट्टायित—पु०[सं०√मूट्(मोडना)+घञ्, तुट् वा०क्यङ्+क्त]नायिका के वे हाव या व्यापार जो उस समय उसके अतर्मन का अनुराग व्यक्त करते है जब वह अपना अनुराग छिपाने के लिए सचेष्ट होती है।

मोठ—स्त्री०[स० मकुष्ठ; प्रा० मउठ] मूँग की तरह का एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। बनमूँग। मुगानी। मोथी।

मोठस†—वि०[?] मौन। चुप।

मोड़—पु०[हिं० मुड़ना या मोड़ना]१ मुडने या मोडने की अवस्था, क्रिया या भाव । घुमाव । २ किसी चीज मे होनेवाला घुमाव। वलन। (कर्व) ३. रास्ते आदि का वह अग या स्थान जहाँ से वह किसी ओर मुडता है। जैसे—इस गली के मोड़ पर हलवाई की दूकान है। ४ वह स्थिति जिसमे किसी काम या बात की दिशा या प्रवृत्ति कुछ बदलकर

किसी ओर या नई तरफ हुई हो। जैसे—यहाँ से आलोचना (या काव्य-रचना) का नया मोड आरंभ होता है।
†पु०=मौर (सिर पर बाँधने का)। उदा०—(क) पाई ककण सिर वधीयो मोड।—नरपति नाल्ह। (ख) पठा लीधौ जैमल, पते मरसो बाँध मोड।—बाँकीदास।

मोड़-तोड़—पुं० [हिं० मोड+अनु० तोड] १ मोडने-तोडने, मरोडने आदि की क्रिया या भाव। मरोड। २. मार्गों मे पडनेवाला घुमाव-फिराव। चक्कर। ३. घुमाव फिराव की अथवा चालाकी से भरी बातें।

मोड़ना—स० [हिं० मुडना का स०]१ ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई मुडे। सामनेवाले या सीधे मार्ग से न ले जाकर किसी दिशा मे प्रवृत्त करना। जैसे—गाडी या घोडा दाहिने या बाएं मोडना।
मुहा०—**(किसी से) मुँह मोड़ना**=विमुख होना।
२ आघात करके या दवाव डालकर सीधी चीज किसी तरफ घुमाना या टेढी करना। जैसे—छड मोडना, छुरी की धार मोडना। ३ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी सपाट तलवाली वस्तु की परते लग जायँ। जैसे—कपडा या कागज मोडना। ४ किसी को कोई काम करने से रोकना या विरत करना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।
५ कुछ या कोई जिस ओर उन्मुख या प्रवृत्त हो, उधर से हटाकर इधर-उधर करना। जैसे—पीठ मोडना, मुँह मोडना (देखें 'पीठ' और 'मुँह' के मुहा०)।

मोड़-मुड़क—स्त्री० [हिं०] चित्रकला मे, अगो आदि की वह स्थिति जिससे चित्र मजीव-सा जान पडने लगता है।

मोड़ा—पु० [स० मुड; मि० पं० मुडा=लडका] [स्त्री० मोडी] लडका। वालक।

मोड़ी—स्त्री० [देश०]१ वहुत जल्दी मे लिखी हुई ऐसी अस्पष्ट लिपि जो कठिनता से पढी जाय। घसीट लिखाई। २. दक्षिण भारत की एक लिपि।

मोढ़ा—पुं० =मोढा। (देखें)

मोण—पु० [स०√मुण् (प्रतिज्ञान) +अच्]१. सूखा फल। २. कुभीर या मगर नामक जल-जन्तु। ३ मक्खी। ४. झावा। टोकरा। मोना।

मोतदिल—वि०=मातदिल।

मोतबर—वि०=मातवर।

मोतमिद—वि० [अ०] विश्वसनीय।

मोतियदाम—पु० [स० मौक्तिकदाम; प्रा० मोतिअदाम] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार जगण होते हैं।

मोतिया—वि० [हिं० मोती]१ मोती सवधी। २ मोती के रग का। ३ ऐसा सफेद जिसमे नाम-मात्र की पीली झलक हो। खसखसी। (पर्ल) ४ जो आकार मे मोती की तरह छोटे गोल दानो के रूप मे हो।
पु०१. मोती की तरह का ऐसा सफेद रग जिसमे नाम-मात्र की पीली झलक हो। (पर्ल) २ सफेद तथा सुगधित फूलोवाला एक प्रसिद्ध पौधा। ३. उक्त पौधे का फूल। ४. एक प्रकार का सलमा जो छोटे गोल दानो के रूप मे होता है। ५. सफेद रग की एक चिड़िया।

मोतियाबिंद—पु० [हिं० मोतिया+स० विंदु] आँख का एक रोग जिसमे उसके ऊपरी परदे मे अन्दर की ओर मैल जमने के कारण गोल झिल्ली सी पड जाती है और जिससे देखने की शक्ति दिन पर दिन कम होती जाती है। तिमिर। (कैटरैक्ट)

मोती—पु० [स० मौक्तिक, प्रा० मोत्तिअ]१ समुद्री सीपी मे से निकलनेवाला एक बहुमूल्य रत्न। मुक्ता।
मुहा०—**मोती गरजना**=आघात लगने से मोती का चटकना या उसके तल का कुछ फट जाना। **मोती ढलकाना**=आँसू गिराना। रोना। **मोती पिरोना**=(क) बहुत ही सुन्दर और प्रिय भाषण करना। (ख) वहुत ही सुन्दर और स्पष्ट अक्षर लिखना। (ग) वहुत ही वारीक और सुन्दर काम करना। (घ) आँसू ढलकाना। रोना। (व्यग्य और हास्य)। **मोती बींधना**= (क) मोती को पिरोए जाने के योग्य वनाने के लिए उसके वीच मे छेद करना। (ख) अक्षत-योनि या कुमारी के साथ सभोग करना। (वाजारू) **मोती रोलना**=थोड़े परिश्रम मे या यो ही वहुत अधिक धन कमा या जमा कर लेना। **(किसी का) मोतियो से मुँह भरना**=किसी पर प्रसन्न होने पर उसे माला-माल कर देना।
२. कसेरो का एक तरह का उपकरण। ३ रहस्य सम्प्रदाय मे, मन। स्त्री० कान मे पहनने की ऐसी वाली जिसमे मोती पिरोये हुए हो।

मोती-चूर—पु० [हिं० मोती+चूर]१ वेसन की वनी हुई वहुत छोटी-मीठी बुँदिया (पकवान) जो शीरे मे पागकर लड्डू वनाने के काम आती है। जैसे—मोतीचूर का लड्डू। २ अगहन मे होनेवाला एक तरह का धान। ३ कुश्ती का एक दाँव।

मोती-ज्वर—पु० [हिं० मोती+स० ज्वर] १. चेचक निकलने के पहले आनेवाला ज्वर। २. वह ज्वर जिसमे शरीर मे छोटे-छोटे दाने भी निकल आते है।

मोती-झरा†—पु० =मोती-झिरा।

मोती-झिरा—पु० [हिं० मोती+झिरा?] छोटी शीतला या मोतिया। माता का रोग। मथर ज्वर। मोती माता।

मोती-बेल—स्त्री० [हिं० मोतिया+वेल] मोतिया पौधे का एक भेद जो लता के रूप मे होता है।

मोती-भात—पु० [हिं० मोती+भात] एक विशेष प्रकार का मीठा भात।

मोती-महावर—पु० [हिं०] चित्र कला मे, किसी सुदरी का चित्र अकित कर लेने पर उसके हाथ-पैरो मे महावर का-सा लाल रग लगाने और उसके अगो मे अलकार अकित करने की क्रिया।

मोती-माता—स्त्री०=मोती-झिरा (रोग)।

मोती-लड्डू—पु० [हिं० मोती+लड्डू] मीठी वुदिया का वँधा हुआ लड्डू। दे० 'मोती-चूर'।

मोती-सिरी—स्त्री० [हिं० मोती+स० श्री] मोतियो की कठी या माला।

मोतीहर—पुं०=मुक्ताफल (मोती)।

मोथरा—वि०=भोथरा (भुथरा)।

मोथा—पु० [स० मुस्तक; प्रा० मुत्थ] १ जलीय भूमि मे होनेवाला एक क्षुप जिसकी जड कसेरन की तरह होती है। २. उक्त की जड जो औषध के काम आती है।

मोद—पु० [स०√मुद् (हर्ष)+घञ्] १ वात-चीत, हँसी-मजाक, खेल-

तमाशे आदि मे मन के बहलने तथा चित्त-वृत्तियो के प्रफुल्लित होने की अवस्था या भाव। २ महक। सुगध। ३ पाँच भगण, एक मगण, एक सगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णवृत्त।

मोदक—पु० [स०√मुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ भूने या तले हुए किसी खाद्य-पदार्थ के कणो, दानो आदि का बँधा हुआ गोलाकार रूप जिसमे चीनी या शक्कर भी मिलाई गई होती है। जैसे—मोतीचूर या वेसन का लड्डू। २ औषध आदि का बना हुआ लड्डू। जैसे—मदनानद मोदक। ३ गुड। ४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते है। इसे भामिनी और सुदरी भी कहते है। ५ मोहिनी नामक छद। ६ एक वर्णसकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता से मानी जाती है।

वि० मोद या आनन्द देनेवाला।

मोदकर—पु० [स० मोद√कृ (करना)+ट] एक प्राचीन मुनि।

वि० मोद उत्पन्न करने या आनन्द देनेवाला।

मोदकिका—स्त्री० [स० मोदकी+कन्+टाप्, ह्रस्व] मिठाई।

मोदकी—स्त्री० [स० मोदक+ङीप्] १ एक प्रकार की गदा। २ मूर्वा लता।

मोदन—पु० [स०√मुद् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० मोदनीय, भू० कृ० मोदित] १ बात-चीत, हँसी-मजाक, खेल-तमाशे आदि के द्वारा मन का बहलना तथा चित्त-वृत्तियो का प्रफुल्लित होना। २ सुगध फैलाना।

वि० [√मुद्+णिच्+ल्यु—अन] मोद उत्पन्न करनेवाला।

मोदना *—अ० [स० मोदन] १ मुदित होना। २ सुगध फैलाना।

स० १ किसी के मन मे मोद उत्पन्न करना। २ सुगध फैलाना।

मोदयंती—स्त्री० [स०√मुद्+णिच्+शतृ+ङीप्] वन-मल्लिका।

मोदवती—स्त्री० [स० मोदवती] वन-मल्लिका। जगली चमेली।

मोदा—स्त्री० [स० √मुद्+णिच्+अच्+टाप्] १. अजमोदा। वन-अजवाइन २ सेमल का पेड।

मोदाख्य—पु० [स० मोद-आ√ख्या (विस्तार-करना)+क)] आम (पेड)।

मोदाद्रि—पु० [स० मोद-अद्रि, मध्य० स०] मुंगेर के पास के एक पर्वत का पौराणिक नाम।

मोदित†—भू० कृ०=मुदित।

मोदिनी—स्त्री० [स० √मुद्+णिच्+णिनि+ङीप्] १ अजमोदा। २ जूही। ३ चमेली। ४ कस्तूरी ५ मद्य। ६. शराब।

वि० स्त्री० मोद उत्पन्न करनेवाली।

मोदी—पु० [स० मोदक=लड्डू (बनाने वाला); अथवा अ० मद्द्=जिस, रसद] १ आटा, दाल, चावल, आदि बेचनेवाला बनिया। भोजन-सामग्री देनेवाला बनिया। परचूनिया। २. वह जिसका काम बडे आदमियो के यहाँ नौकरो की भरती करना हो।

मोदीखाना—पु० [हि० मोदी+फा० खान:] अन्न आदि रखने का घर। भडार।

मोधुक—पु० [स० मोदक=एक वर्णसकर जाति] मछुआ।

मोधू†—वि० [स० मुग्ध] मूर्ख।

मोन†—पु०=मोयन।

मोनस—पु० [स०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

मोना—स० [हि० मोयन] १. गूँधे हुए आटे आदि मे घी का मोयन देना। २. तर करना। भिगोना।

स० [स० मोहन] १ मोहित करना। २. मोह अर्थात् भ्रम मे डालना। उदा०—कछुक देवमायाँ मति मोई।—तुलसी।

पु० [स० मुडन] १ वह जो मुडन कराता हो अथवा जिसके केश काटे जाते हो। २ हिन्दू। सिक्ख मे भिन्न। (पजाब)

पु० [स० मोग] [स्त्री० अल्पा० मोनिया] ढक्कनदार पिटारा।

मोनाल—पु० [देश०] महोखे की जाति का एक पक्षी। नील-मोर।

मोनिया—स्त्री० [हि० मोना का स्त्री० अल्पा०] छोटी ढक्कनदार पिटारी।

मोनोग्राम—पु० [अ०] किसी नाम के आरम्भिक दो-तीन अक्षरो के सयोग से बना हुआ सक्षिप्त साकेतिक रूप जो प्राय अलकृत अक्षरो मे लिखा रहता है।

मोनो-टाइप-मशीन—स्त्री० [अ०] छापे के अक्षर कपोज करनेवाली वह मशीन जिसमे एक-एक अक्षर नया ढलता और कपोज होता चलता है।

मोपला—पु० [?] मालाबार प्रदेश (केरल) मे रहनेवाली एक मुसलमान जाति।

मोम—पु० [फा०] १. वह चिकना मुलायम द्रव्य जिससे शहद की मक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं। मधुमक्खी के छत्ते का उपकरण।

पद—मोम की नाक=ऐसी प्रकृति या स्वभाव जिसे दूसरे लोग जब जिधर चाहें तब उधर प्रवृत्त कर सकें।

मुहा०—(किसी को) मोम करना या मोम बनाना=द्रवीभूत कर लेना। दयार्द्र कर लेना।

२ रूप, रग आदि मे उक्त से मिलता-जुलता वह पदार्थ जो मधु-मक्खी की जाति के तथा कुछ और प्रकार के कीडे पराग आदि से एकत्र करते हैं अथवा जो वृक्षो पर लाख आदि के रूप मे पाया जाता है। ३ मिट्टी के तेल मे से, एक विशेष रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला हुआ इसी प्रकार का एक पदार्थ। जमा हुआ मिट्टी का तेल। (मोम-बत्ती प्राय इसी से बनती है।)

मोमजामा—पु० [फा०] ऐसा कपडा जिस पर मोम का रोगन चढाया गया हो।

विशेष—ऐसे कपडे पर पानी का असर नही होता।

मोमती†—स्त्री०=ममत्व।

स्त्री० [मो+मति] मेरी मति।

मोम-दिल—वि० [फा०] मोम की तरह कोमल हृदयवाला। दूसरो के दुख से शीघ्र द्रवित होनेवाला।

मोमना—वि० [हि० मोम+ना (प्रत्य०)] मोम का-सा, अर्थात् बहुत ही कोमल।

मोम-बत्ती—स्त्री० [फा० मोम+हि० बत्ती] मोम, जमाये हुए मिट्टी के तेल या ऐसे ही किसी और जलनेवाले पदार्थ की बनी हुई बत्ती।

मोमिन—पु० [अ०] १ मुसलमान पुरुष। २. एक प्रकार के मुसलमान जुलाहे।

मोमिया—स्त्री० [फा०] १ एक विशेष प्रकार की ओषधि जिसके लेप से शव सडने-गलने नही पाता। २ वह शव जिस पर उक्त ओषधि का लेप हुआ हो।

मोमियाई—स्त्री० [फा० मोमियायी] १ काले रग की एक चिकनी दवा जो मोम की तरह मुलायम होती है। यह दवा घाव भरने के लिए प्रसिद्ध है। २ नकली शिलाजीत।

मुहा०—(किसी की) मोमियाई निकालना=(क) किसी से बहुत कठिन परिश्रम कराना। (ख) बहुत मारना-पीटना।

मोमी—वि०[फा०] १ मोम का बना हुआ। जैसे—मोमी मोती, मोमी पुतला। २ मोम की तरह मुलायम । ३ बहुत जल्दी द्रवीभूत होनेवाला।

मोयन—पु० [हिं० मैन=मोम] गूँधे हुए आटे, बेसन, मैदे आदि मे डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उनसे बनाये जानेवाले पकवान कुर-कुरे, खस्ता और मुलायम हो जाते है।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

मोयुम—पु० [देश०] एक प्रकार की लता जो आसाम, सिक्किम और भूटान मे बहुतायत से होती हे। इससे कपडे रँगने के लिए एक प्रकार का बहुत चमकीला रग तैयार किया जाता है।

मोरग—पु०[देश०] नैपाल देश का पूर्वी भाग जो कौशिकी नदी के पूर्व पडता है। सस्कृत ग्रथों मे इसी भाग को 'किरात देश' कहा गया है।

मोरड†—पु०=मुरुडा।

मोर—पु०[स० मयूर, प्रा० मोर] [स्त्री० मोरनी] १ एक बहुत सुदर, प्रसिद्ध, बडा पक्षी जो प्राय चार फुट तक लबा होता है और जिसकी लबी गरदन और छाती का रग बहुत ही गहरा और चमकीला नीला होता है। यह बादलो को देखकर प्रसन्नता से पर फैलाकर नाचने लगता है। उस समय इसके परो की शोभा परम दर्शनीय होती है। केकी। बरही। २ नीलम नामक रत्न की एक प्रकार की बढिया रगत जो मोर के पर के समान होती है।

स्त्री०[डि०] सेना की अगली पक्ति।

†वि०=मेरा (अवधी)।

*सर्व० [स० मम] मेरा। (अवधी)

मुहा०—मोर-तोर करना=दे० 'मेरा' के अतर्गत।

मोरचंग—पु०[हिं० मुरचग] मुँह-चग नामक बाजा।

मोरचंदा—पु० =मोर-चद्रिका।

मोर-चद्रिका—स्त्री०[हिं० मोर+स० चद्रिका] मोर-पख के छोर की वह बूटी जो चद्राकार होती हे।

मोरचा—पु०[फा० मोर्च] १ लोहे की ऊपरी सतह पर जमनेवाली वह लाल या पीले रग की मैल की-सी तह जो वायु और नमी के योग के कारण उसके अन्दर होनेवाले रासायनिक विकार से उत्पन्न होती है और जिसके कारण लोहा कमजोर और खराब हो जाता हे। जग।

क्रि० प्र०—जमना।—लगना।

मुहा०—मोरचा खाना=मोरचा लगने से खराब होना।

२ दर्पण या शीशे के ऊपर जमनेवाली मैल।

पु० [फा० मोरचाल] १ वह गड्ढा जो गढ के चारो ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है। २ गढ के अन्दर रहकर शत्रु से लडनेवाली सेना। ३ वह स्थान जहाँ से सेना, गढ, नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मुहा०—मोरचा जीतना=शत्रु को परास्त करके उसके मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना=शत्रु से लड़ने के लिए उपयुक्त स्थान पर सेनाएँ नियुक्त करना। मोरचा मारना=मोरचा जीतना। (देखे ऊपर) मोरचा लेना=सामने आकर शत्रु से बराबरी का युद्ध करना।

४ लाक्षणिक रूप मे, ऐसी स्थिति जिसमे प्रतिद्वद्वी या विरोधी का अच्छी तरह जमकर सामना किया जाता है और उस पर वार किये जाते तथा उसके वारो के उत्तर दिये जाते है।

मोरचाबंदी—स्त्री० [फा० मोर्च बदी] गढ के चारो ओर गड्ढा खोदकर सेना नियुक्त करना। मोरचा बनाना।

मोरचाल—पु० [स०] वह गड्ढा या खाई जिसमे छिपकर शत्रु पर (युद्ध के समय) गोली चलाई जाती है।

स्त्री० [?] एक प्रकार की कसरत।

मोरछड़†—पु०=मोरछल।

मोरछल—पु० [हिं० मोर+छड] [स्त्री० अल्पा० मोरछली] मोरपखो का बना हुआ चँवर।

मोरछली—पु० [हिं० मोरछल+ई (प्रत्य०)] वह जो (क) मोरछल बनाता अथवा (ख) देवताओ, राजाओ आदि पर डुलाता हो।

स्त्री० मोरछल का स्त्री० अल्पा०।

†स्त्री०=मौलसिरी।

मोरछाँह†—पु०=मोरछल।

मोर-जुटना—पु० [हिं० मोर+जुटना] एक प्रकार का जडाऊ आभूषण जिसके बीच का भाग गोल बेंदे के समान होता है और दोनो ओर मोर बने रहते हैं।

मोरट—पु० [स०√मुर् (लपेटना)+अटन्] १ ऊख की जड । २. अकोल का फूल । ३ कर्णपुष्प नामक लता। ३ ब्याई हुई गाय के सातवे दिन के बाद का दूध।

मोरटक—पु० [स० मोरट+कन्] १ सफेद खैर। २ दे० 'मोरट'।

मोरटा—स्त्री०[स० मोरट+टाप्] मूर्वा।

मोरध्वज—पु०[स० मयूरध्वज] एक प्रसिद्ध पौराणिक राजा।

मोरन*—स्त्री०[स० मोरठ] बिलोया। शिखरन। (दे०)

स्त्री०[हिं० मोडना] मोडने की क्रिया या भाव।

मोरना*—स० [हिं० मोरन] मथे हुए दही मे से मक्खन निकालना।

†स०=मोडना।

मोर-नाच—पु०[हिं०] एक प्रकार का नाच जिसमे पेशवाज के अगल-बगल वाले दोनो सिरे दोनो हाथो से पकडकर कमर तक उठा लिये जाते हे। और तब खडे-खडे या घुटनो के बल कुछ बैठकर इस प्रकार नाचा जाता है कि नाचनेवाले की आकृति मोर की-सी हो जाती है। रक्से-ताऊस ।

मोरनी—स्त्री०[हिं० मोर का स्त्री० रूप] १ मादा मोर। २ मोर के आकार का लटकन जो प्राय गहनो मे लगाया जाता है। जैसे—नथ की मोरनी। ३ मोरनी की-सी चाल चलनेवाली बनी-ठनी और सुन्दरी युवती। ठुमुक-ठुमुक कर चलनेवाली सुन्दरी।

मोर-पख—पु०[हिं० मोर+पख=पर] १ मोर का पर या पख। २. मोर के पर की बनाई हुई कलगी।

मोर-पखी—वि०[हिं० मोरपख] मोर के पख के रग का। गहरा चमकीला नीला।

पु० मोर के पख की तरह का गहरा, चमकीला नीला रग।

स्त्री०१ एक तरह की नाव जिसके अगले भाग मे मोर की सी आकृति बनी रहती है। २ एक तरह का छोटा पखा जो खोलने पर मडलाकार हो जाता है। ३ एक तरह की कसरत।

मोरपंखा*—पु०[हिं० मोरपखा] मोर का पर या पख जो प्राय सिर पर कलगी की तरह खोसा जाता था।

मोर-पांव—पु०[हिं० मोर+पाँव] बावर्चीखाने की मेज पर खडा जडा हुआ लोहे का छड जिस पर खाने के लिए मास के वडे वडे टुकडे लटकाए जाते है। (लश०)

मोरम—पु०[ते० मोरमु; पा० मरुम्व] गेरुए या लाल रग की एक तरह की पहाडी ककडी जो सडको पर बिछाई जाती है और जिससे अव सीमेट भी वनने लगा हे।

मोर-मुकुट—पु०[हिं० मोर+स० मुकुट] मोरपखो से युक्त मुकुट।

मोरवा†—पु० [देश०] वह रस्सी जो नाव की किलवारी मे बाँधी जाती हे और जिससे पतवार का काम लेते हे।
†पु०=मोर (पक्षी)।

मोर-शिखा—स्त्री०[स० मयूर-शिखा] एक प्रकार की जडी जिसकी पत्तियाँ मोर की कलगी के आकार की होती है। यह बहुधा पुरानी दीवारो पर उगती है।

मोरा—पु० [देश०] अकीक नामक रत्न का एक भेद। वावाँ घोडी।
† वि०=मेरा।

मोरना†—स०[हिं० मोरना का प्रे०] १ रस पेरने के समय ऊख को कोल्हू मे दवाना या लगाना। २ दे० 'मोडना'।
अ० मोडा जाना।

मोरिया—स्त्री०[हिं० मोरना?] कोल्हू मे कातर की दूसरी शाखा जो वाँस की होती हे।

मोरी—स्त्री०[हिं० मोर का स्त्री०] १ किसी वस्तु के निकलने का तग द्वार। २ वह छोटी नाली जिसमे से गन्दा या फालतू पानी वहकर निकलता है। पनाली।
मुहा०—मोरी छूटना=दस्त आना। **मोरी पर जाना**=पेशाव करना। **मोरी में डालना**=नष्ट करना।
†स्त्री०=मोहरी (पाजामे आदि की)।

मोर्चा†—पुं०=मोरचा।

मोल—पु० [स० मूल्य; प्रा० मुल्ल] कीमत। दाम। मूल्य। (दे०)
पद—अन-मोल, मोल-चाल।
मुहा०—मोल करना=(क) ग्राहक को किसी चीज का उचित से अधिक दाम वताना। (ख) किसी चीज का दाम अधिक जान पडने या वताये जाने पर उसे घटाने की वात-चीत करना। **मोल लेना**=झूठ-मूठ या जान-वूझकर कोई झझट, काम या भार अपने ऊपर लेना। जैसे— झगडा या लडाई मोल लेना।

मोलना†—स० कुछ खरीदने के लिए उसका मोल या दाम पूछना या वताना।
† पु०=मौलाना (मौलवी)।

मोलवी†—पु०=मौलवी।

मोलाई—स्त्री० [हिं० मोल+आई (प्रत्य०)] १ मूल्य पूछने-ताछने की क्रिया या भाव। २ घटा-वढाकर मूल्य ठीककरने की क्रिया या भाव। ३. उचित से अधिक मूल्य कहना। मोल-चाल करना।

मोवना†—स०=मोना।
अ०, स०=मोहना।
†अ०=मूना (मरना)।

मोशिये—पु०[फ्रा०] [सक्षिप्त रूप मोन्स० या एम०] [हिंदी सक्षिप्त रूप मो०] फ्रास मे नाम के पहले लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द। महोदय।

मोष—पु०[स०√मुष् (चोरी करना)+घञ्] १. चोरी। २ लूट-खसोट। ३. वध। हत्या। ४. दड। सजा।
†पु०=मोक्ष।

मोषक—पु०[सं०√मुष्+ण्वुल्—अक] चोर।

मोषण—पु० [स०√मुष्+ल्युट्-अन] १. लूटना। चुराना। २ मार डालना। ३. छोडना। ४. दे० 'मूसना'।
वि० चोरी करने या डाका डालनेवाला।

मोषयिता(तृ)—पु० [स०√मुष्+णिच्+तृच्] १. चोरी करानेवाला। २. लूट-पाट करानेवाला।

मोसन—पु०[फा० मुसीन] १. वयोवृद्ध। २. अनुभवी व्यक्ति।

मोसना—स०[स० मुष] १. मरोडना। २. सव कुछ चुरा या छीन लेना। मूसना।

मोसर†—अव्य०[स० अवसर] दफा। वार। उदा०—अवके मोसर ज्ञान विचारो।—मीराँ।

मोह—पु०[स०√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्] १ वेहोशी। मुर्च्छा। २ अज्ञान। नासमझी। ३ वेवकूफी। मूर्खता। ४. अज्ञान या भ्रम के कारण होनेवाला दोष या भूल। ५. दार्शनिक क्षेत्रो मे, मन की वह भूल या भ्रम जो उसे आध्यात्मिक या पारमार्थिक सत्य का ठीक-ठीक ज्ञान नही होने देता,और जिसके फल-स्वरूप मनुष्य लौकिक पदार्थो को ही वास्तविक तथा सत्य समझकर इन्द्रियजन्य सुख-भोगो को ही प्रधान या मुख्य मानकर सासारिक जजालो मे फँसा रहता है। ६ उक्त के आधार पर साहित्य मे, तेतीस सचारी भावो मे से एक जिसमे आघात, आपत्ति, चिंता, दु:ख, भय आदि के कारण चित्त बहुत ही विफल हो जाता है। सिर मे चक्कर आना, उचित-अनुचित का ज्ञान न रह जाना, साफ दिखाई न देना और मूर्छित हो जाना इसके अनुभाव वतलाये गये है। यथा— अद्भुत दरसन, वेग, भय, अतिचिंता, अति कोह। जहाँ मूर्च्छा, विसमरन, लम्भरतादि कहु मोह।—देव। उदा०—राम को रूप निहारत जानकी ककन के नग की परछाँही। याते सवै सुधि भूलि गई कर टेक रही, पल टारत नाही।—तुलसी। ७ प्राचीन भारत मे एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया जिसके द्वारा शत्रु का ज्ञान नष्ट करके उसे या तो भ्रम मे डाल देते थे या मूर्च्छित कर देते थे। ८ लोक मे ऐसा प्रेम या मुहब्बत जिसके फलस्वरूप विवेक ठीक तरह से काम करने के योग्य न रह जाय। ९ कष्ट। दु ख।

मोहक—वि० [स०√मुह् +णिच्+ण्वुल्—अक] १ मोह उत्पन्न करनेवाला। जिसके कारण मोह हो। २ मन को आकृष्ट या मोहित करनेवाला। लुभावना। मोहनेवाला।

मोहकार—पु० [हिं० मुँह+कडा या कार (प्रत्य०)] धातु के घड़े का गला समेत मुहँडा। (ठठेरा)

मोहठा—पु०[स०] दस अक्षरो का एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण और एक गुरु होता है। वाला।

मोहड़ा—पु०[हिं० मुँह+डा (प्रत्य०)] १. किसी पात्र का मुँह या ऊपरी खुला हुआ भाग।

मुहा०—मोहड़ा लगना=फुटकर विक्री के उद्देश्य से अन्न के वोरे खोलना और उनकी दुकानें या ढेरियाँ लगाना।
२ अगला या ऊपरी भाग। ३ मुख। ४ दे० 'मोहरा'।

मोहतमिम—पु० [अ० मुह्तमिम] एहतमाम अर्थात् प्रवन्ध करनेवाला। प्रवन्धक। व्यवस्थापक।

मोहतमिल—वि०[अ० मुह्तमिल] सदिग्ध।

मोहतरम—वि०[अ० मुह्तरम] श्रीमान्। महोदय।

मोहताज—वि० [अ०] [भाव० मोहताजी] १. धनहीन। निर्धन। गरीव। २ जिसे किसी चीज या वात की विशेष अपेक्षा हो, और इसीलिए जो औरो पर निर्भर रहता अथवा उनका मुँह ताकता हो। ३ (अपाहिज) जिसे दूसरे की सहायता की आवश्यकता हो।

मोहताजी—स्त्री० [हिं० मोहताज+ई (प्रत्य०)] मोहताज होने की अवस्था या भाव।

मोहदी—पु०[अ० महदी] सैयद मुहीउद्दीन नामक महात्मा जो जायसी के गुरु थे। उदा०—गुरु मोहदी खेवक मैं सेवा।—जायसी।

मोहन—वि०[स०√मुह्+णिच्+ल्यु–अन] १. मोह लेनेवाला। २ मोहित करनेवाला।
पु० १ शिव। २. श्रीकृष्ण। ३ कामदेव के पाँच वाणो मे से एक वाण का नाम जिसका काम मोहित करना है। ४ धतूरा। ५ एक तान्त्रिक प्रयोग जिससे किसी को मूर्च्छित किया जाता है। ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु मोह से युक्त या मूर्च्छित किया जाता था। ७ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण और एक जगण होता है। ८ सगीत मे वारह तालो का एक प्रकार का ताल जिसमे सात आघात और पाँच खाली होते है। ९ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग। १० कोल्हू की कोठी अर्थात् वह स्थान जहाँ दवने के लिए ऊख के गाँडे डाले जाते है। इसे कुडी और गगरा भी कहते है।

मोहनक—पु०[स० मोहन+कन्] १ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे गुरु और तीन सगण होते है। यथा–आये दशरत्थ वरात सजे। दिग्पाल गयद्दनि देखि लजे।—केशव। २ चैत्र मास।

मोहन-भोग—पु०[हिं० मोहन+भोग] १ एक प्रकार का हलुआ। २ एक तरह की वगाली मिठाई। ३ एक प्रकार का केला। ४ एक प्रकार का आम। ५ एक प्रकार का चावल।

मोहन-माला—स्त्री०[हिं०] सोने की गुरियो या दानो की पिरोई हुई माला।

मोहना—अ०[स० मोहन] १ मोहित होना। २ वेहोश या मूर्च्छित होना। ३ मोह के वश मे होना। ४. भ्रम मे पडना।
स० १. मोहित करना। २ मोह या भ्रम मे डालना।
स्त्री०[स० मोहन+टाप्] १ तृण। २ एक प्रकार की चमेली।

मोहनास्त्र—पु०[स० मोहन-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्रकार का प्राचीन काल का अस्त्र जिसके प्रभाव से शत्रु मोह के वश मे या मूर्च्छित हो जाता था।

मोह-निद्रा—स्त्री०[स० मध्य० स०] १ मोह के कारण आनेवाली निद्रा या वेहोशी। २ वह अवस्था जिसमे मनुष्य अज्ञान, अहकार या भ्रमवश वास्तविक स्थिति की अपेक्षा करता है।

मोहनी—स्त्री०[स० मोहन+ङीप्] १ ऐसी क्रिया, रूप या शक्ति जिससे किसी को पूरी तरह से मोहित किया जा सके। जैसे—उसकी आँखो मे कुछ विलक्षण मोहनी थी। २ कोई ऐसा तान्त्रिक प्रयोग अथवा कोई ऐसी क्रिया जिससे किसी को अपने वश मे किया जा सके।
मुहा०—मोहनी डालना=ऐसा प्रभाव डालना कि कोई पूरी तरह से मोहित हो जाय। मोहनी लगना=उक्त प्रकार की शक्ति के प्रभाव मे किसी पर मोहित होना। मोहनी लाना*=मोहनी डालना। (देखें ऊपर)
३ लुभावनी और सुदरी स्त्री। ४ ज्ञान-क्षेत्र मे, माया जो लोगो को मोहित करके अपनी ओर आकृष्ट करती है। ५ एक अप्सरा का नाम। ६. दे० 'मोहिनी' (भगवान् का स्त्री रूप)।
स्त्री०[स० मोहन] १ एक प्रकार का लवा सूत-सा कीडा जो हल्दी के खेतो मे पाया जाता है। इससे तान्त्रिक लोग वशीकरण यत्र वनाते है। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं। ३ एक प्रकार की मिठाई। ४ पोई का साग।
वि० स्त्री० मोहित करनेवाली।

मोहनीय—वि०[स०√मुह्+णिच्+अनीयर्] मोहित किये जाने के योग्य। जिसे मोहित किया जा सके या किया जाने को हो।

मोहफिल†—स्त्री०=महफिल।

मोहब्बत†—स्त्री०—मुहब्बत।

मोहमिल—वि०[अ० मोह्मिल] १ जिसका कोई अर्थ न हो। निरर्थक। २. जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। ३ छोडा हुआ। त्यक्त।

मोहर—स्त्री०[फा० मुह्र] १ कोई ऐसी चीज जिस पर किसी का नाम या और कोई चिह्न अकित हो और जिसका ठप्पा कागजो आदि पर मालिक की ओर से यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि यह प्रामाणिक या असली है। मुद्रा। (सील)
क्रि० प्र०—करना।—देना।—लगना।
२ उपयुक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपडे आदि पर ली गई हो। स्याही लगे हुए ठप्पे को दवाने से वने हुए चिह्न या अक्षर। ३ लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी चीज या वात जो किसी प्रकार का मुख या विवर ऊपर से पूरी तरह से वद कर देती हो। जैसे—सरकार ने हम लोगो के मुँह पर मोहर लगा रखी है। ४. मुगल शासन मे सोने का वह सिक्का जिसकी तौल, धातु आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए टकसाल या शासन का ठप्पा लगा रहता था।

मोहरा—पु० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० मोहरी] १. किसी वरतन का मुँह या ऊपरी खुला भाग। २ किसी पदार्थ का ऐसा अगला या ऊपरी भाग जो प्राय मुँह के आकार या रूप का हो। ३ सेना की अगली पक्ति जिसे सब से पहले शत्रु का सामना करना पडता है।
मुहा०—मोहरा लेना=सामने से जमकर मुकावला करना और लडना।
४ किसी चीज के ऊपर का छेद या मुँह। ५ वह जाली जो पशुओ के मुँह पर इसलिए वाँधी जाती है कि वे आस-पास की चीजो पर मुँह न डाल सकें। ६ घोडे के मुँह पर पहनाया जानेवाला एक प्रकार का साज। ७ अँगिया या चोली की तनी या वद जो स्तनो को अन्दर बन्द रखने के लिए ऊपर से गाँठ दे कर वाँध दिये जाते हैं। ८ शतरज की गोटी। ९ मिट्टी का वह साँचा जिसमे कडा, पिछेली आदि गहने टाल

कर बनाये जाते थे। १० लकडी, शीशे या बिल्लौर का वह बडा टुकडा जिससे रगडकर कई तरह की चीजों में चमक लाई जाती है। ११. सोने चाँदी पर नक्काशी करनेवालों का वह औजार जिसमे रगड कर नक्काशी को चमकाते है। दुआली। १२ सिंगिया विष।
पु० [फा० मुह्र] १ कपर्दिका। कौडी। २ माला आदि की गुरिया या मनका।
†पु० दे० 'जहर मोहरा'।

मोह-रात्रि—स्त्री० [स० ष० त०] १. पुराणानुसार वह प्रलय काल जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। दैनदिनी प्रलय।
पु० जन्माष्टमी की रात्रि। भाद्रपद कृष्णा अष्टमी।

मोहराना—पु० [फा० मुह्र+आना (प्रत्य०)] वह धन जो किसी कर्मचारी को मोहर करने के बदले मे दिया जाय। मोहर करने का पारिश्रमिक।

मोहरी—स्त्री० [हिं० मोहरा का स्त्री० अल्पा०] १ किसी चीज का अगला या वह भाग जो मुँह की तरह हो। जैसे—पाजामे या बरतन की मोहरी। २ ऊपरी खुला हुआ कुछ अश या भाग। ३ ऊँट की नकेल।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी जो खान-देश मे होती है।

मोहरुख*—वि० [स० मुमूर्षु] १ जिसका मरण काल आसन्न हो। २. मूर्च्छित।

मोहर्रिर—पु०=मुहर्रिर।

मोहलत—स्त्री० [अ०] १ फुरसत। अवकाश। २. काम मे मिलनेवाली छुट्टी। ३ किसी काम के लिए नियत की हुई अवधि।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।—लेना।

मोहल्ला†—पु०=मुहल्ला।

मोहसिन—वि० [अ० मुहसिन] एहसान या उपकार करनेवाला। उपकारक।

मोहाड़ा†—पु० [हिं० मुँह] १ तालाब का बाँध। २. दे० 'मोहडा'।

मोहार—पु० [स० मधुकर, प्रा० महुअर] १ मधुमक्खी की एक जाति जो सबसे बडी होती है। सारग। २ मधुमक्खी का छत्ता। ३. भौरा।
†पु० [हिं० मुँह+आर (प्रत्य०)] १ मुँह। २ द्वार।
†पु०=मोहरा।
स्त्री०=मुहार।

मोहारनी—स्त्री०=मुहारनी।

मोहाल—पु० १ =महाल। २ =मोहार।
वि०=मुहाल।

मोहिं*—सर्व० [स० मह्य, पा० मय्ह] मुझे। (अवधी, व्रज)

मोहित—भू० कृ० [स०√मोह+इतच्] १ जिसके मन मे मोह उत्पन्न हुआ हो या किया गया हो। २ पूर्ण रूप से आसक्त या मुग्ध। ३ मोह या भ्रम मे पडा हुआ।

मोहिनी—वि० स्त्री० [स०√मुह्+णिच्+णिनि+ङीप्] मोहित करने या मोहनेवाली।
स्त्री० १. माया। मोह। २ भगवान् का वह सुदरी स्त्रीवाला रूप जो उन्होने समुद्र मथन के उपरात अमृत बाँटने के समय असुरो को मोहित करके उन्हें धोखे मे डालने के लिए धारण किया था। इसी रूप मे उन्होंने देवताओं को अमृत तथा असुरो को विष दिलाया था। ३ पद्रह अक्षरो के एक वर्णिक छद का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते है। ४ एक प्रकार की अर्धसम वृत्ति जिसके पहले और तीसरे चरणो मे सात मात्राएँ होती है; और प्रत्येक चरण के अत मे एक सगण अवश्य होता है। ५ वैशाख शुक्ला एकादशी। ६ त्रिपुर नामक पौधा और उसका फल।

मोहिल—वि० [हिं० मोह] १. मोह से युक्त। २ मोहित करनेवाला। उदा०—नवल मोहिली मोहि तजी जिन, तोहि सोह प्रिय पावन।—सहचरिशरण।

मोही (हिन्)—वि० [स० मोह+इनि] [स्त्री० मोहिनी] १ मोह या भ्रम मे पडा हुआ। अज्ञानी। २ मोह करनेवाला। ३ जिसके मन मे सभी के प्रति मोह या प्रेम हो। ४ लालची। ५ [√मुह्+णिच्+णिनि] मोहित करनेवाला।

मोहेला—पु० [?] एक प्रकार का चलता गाना।

मोहेली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

मोहोपमा—स्त्री० [स० मोह-उपमा, मध्य० स०] अलकार-साहित्य मे उपमा अलकार का एक भेद जिसे कुछ लोग 'भ्राति' अलकार कहते है।

मौंगा—वि०=मौगा।

मौंगी†—वि० [स० मौन] मौन। चुप।
स्त्री०=मौन (चुप्पी)।

मौंज—वि० [स० मुज+अण्] [स्त्री० मौजी] १ मूँज सम्बन्धी। २. मूँज का बना हुआ।

मौंजकायन—पु० [स० मुजक+फक्-आयन] मुजक ऋषि का वशज।

मौंजिबंधन—पु० [स० कर्म० स०] यज्ञोपवीत सस्कार। व्रतवध। जनेऊ।

मौंजी—स्त्री० [स० मुज+अण्+ङीप्] मूँज की बनी हुई मेखला।

मौंड़ा†—पु०=मुडा (बालक)।
पु०=मोहडा।

मौं—स्त्री० [हिं० मौज] १ मन की मौज। तरग। २ युवावस्था। ३ पूर्णता। ४ परिपक्वता।
क्रि० प्र०—पर आना।

मौअत†—स्त्री०=मौत (मृत्यु)।

मौका—पु० [अ० मौका] १ ऐसा समय जब कोई काम ठीक तरह से होने को हो या हो सकता हो। अवसर। सुयोग।
मुहा०—मौका देखना=उपयुक्त अवसर की ताक मे रहना।
२ अवधि। मोहलत। ३ अवकाश। फुरसत। ४ वह स्थल जहाँ कोई घटना हुई हो अथवा जिसके सम्बन्ध मे कोई विचार या विवाद उपस्थित हो। जैसे—आज अधिकारी लोग मौका देखने गये।

मौकुल—पु० [सं०] कौआ।

मौकूफ—वि० [अ० मौकूफ] [भाव० मौकूफी] १. मुल्तवी। स्थगित। २ पदच्युत। बरखास्त। ३ रद्द। ४ अवलबित। आश्रित।

मौकूफी—स्त्री० [अ० मौकूफी] १. मौकूफ किये जाने अथवा होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ प्रतिबध। रुकावट।

मौके-बे-मौके—अव्य० [अ० मौका+फा० बे] समय-कुसमय।

४. ऐसा कठिन या विकट काम या वात जिससे वहुत अधिक कष्ट हो। जैसे—तुम्हे तो वहाँ जाते मौत आती है।

मौताद—स्त्री० [अ०] औपध आदि की मात्रा।

मौदक—वि० [सं० मोदक+अण्] मोदक-सम्बन्धी। मोदक का।

मौदकिक—पुं० [सं० मोदक+ठक्—इक] मोदक अर्थात् मिठाइयाँ वनानेवाला। हलवाई।

मौद्गल—पु० [स० मुद्गल+अण्] मुद्गल ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति। मौद्गल्य।

मौद्गलायन—पु०=मौद्गल्यायन।

मौद्गल्य—पु० [स० मुद्गल+ष्यञ्] १. मुद्गल ऋषि के पुत्र का नाम जो एक गोत्रकार ऋषि थे। २. मुद्गल ऋषि के गोत्र का व्यक्ति।

मौद्गल्यायन—पु० [स० मौद्गल्य+फक्—आयन] गौतम वुद्ध का शिष्य।

मौद्गीन—पुं० [स० मुद्ग+खञ्—ईन] मूँग का खेत।

मौन—पु० [स० मुनि+अण्] १ मुनि का भाव। २ न वोलने की क्रिया या भाव। चुप रहना। चुप्पी।

क्रि० प्र०—गहना।—धारना।—रहना।

मुहा०—**मौन खोलना**=देर तक चुप रहने के उपरान्त वोलना। **मौन तोड़ना**=मौन व्रत तोड देना। **मौन वाँधना**=मौन धारण करना। न वोलने का प्रण करना। **मौन लेना या साधना**=चुप रहने का व्रत करना।

२ मुनियो का व्रत। मुनिव्रत। ३ फाल्गुन मास का पहला पक्ष।

वि० [स० मौनी] जो न बोले। चुप। मौनी।

पु० [स० मौण] १ वरतन। पात्र। २. डव्वा। ३ पिटारा। ४ टोकरा।

मौन-व्रत—पु० [स० प० त०] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।

मौना—पु० [स० मोण] [स्त्री० अल्पा० मौनी] १. घी या तेल आदि रखने का एक प्रकार का वरतन। २ टोकरा। पिटारा।

मौनी (निन्)—वि० [सं० मौन+इनि] १ मौन अर्थात् चुप रहनेवाला। न वोलनेवाला। २ जिसने मौनव्रत धारण किया हो।

पु०=मुनि।

स्त्री० हिं० 'मौना' का स्त्री० अल्पा०।

मौनी अमावस—स्त्री० [हिं०] माघ मास मे पड़नेवाली अमावस। इस दिन मौन रहने का माहात्म्य है।

मौनेय—पु० [स० मुनि+ढक्–एय] गधर्वो, अप्सराओ आदि का एक मातृक गोत्र।

मौर—पु० [स० मुकुट; पा० मउड] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १. विवाह के समय वर को पहनाया जानेवाला ताड़-पत्र या खुखडी का वना हुआ एक प्रकार का शिरोभूपण।

मुहा०—**मौर वाँधना**=विवाह के समय सिर पर मौर पहनना।

वि० सव मे मुख्य या श्रेष्ठ। शिरोमणि।

पु० [स० मुकुल; प्रा० मउल] मजरी। वौर। जैसे—आम का मौर।

पु० [स० मौलि=सिर] १. सिर। २. गरदन का पिछला भाग जो सिर के नीचे पड़ता है।

मौर-छोराई—स्त्री० [हिं० मउर-छुडाई] १ विवाह के उपरात मौर खोलने की रस्म। २. उक्त रसम के समय मिलनेवाला धन या नेग।

मौरजिक—पु० [स० मुरज+ठक्–इक] मुरज नामक वाजा वनानेवाला। मुरज वजानेवाला।

मौरना—स० [हिं० मौर+ना (प्रत्य०)] वृक्षो पर मजरी लगना। आम आदि के पेडो पर वौर लगना। वौरना।

मौरसिरी—स्त्री०=मौलसिरी।

मौरिक—वि० [स० मुकुलित] मौर अर्थात् मजरी से युक्त।

मौरी—स्त्री० [मौर का स्त्री० अल्पा०] कागज आदि का वना हुआ वह छोटा मौर जो विवाह मे वधू के सिर पर वाँधा जाता है।

मौरुसी—वि० [अ०] पैतृक। जैसे—मौरुसी घर या जायदाद।

मौर्ख्य—पु० [स० मूर्ख+ष्यञ्] मूर्खता। वेवकूफी।

मौर्य—पु० [स० मुरा+ण्य] मगध का एक प्रसिद्ध भारतीय राजवश।

मौर्वी—स्त्री० [स० मूर्वा+अण्+ङीप्] धनुप की प्रत्यचा। कमान की डोरी। ज्या।

मौल—वि० [स० मूल+अण्] १. मूल से सवध रखनेवाला। २. मूल पुरुषो से मिला हुआ। पैतृक। मौरूसी।

पु० १. प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राज-मत्री। २. जमीदार। भू-स्वामी।

मौल-वल—पु० [स० कर्म० स०] वडे जमीदारो की अथवा उनके द्वारा एकत्र की हुई सेना। (कौ०)

मौलवी—पु० [अ०] १. अरवी भाषा का पडित। २ इस्लाम धर्म का आचार्य। ३ छोटे वच्चो को पढानेवाला मुसलमान गुरु।

मौलसिरी—स्त्री० [सं० मौलि-श्री] १ एक प्रकार का वडा सदा वहार पेड जिसकी लकडी अदर से लाल और चिकनी होती है और जिससे मेज, कुर्सी आदि वनाई जाती हैं। इसके वीजो से तेल निकलता है, छाल ओषधियो के काम आती है। २ उक्त वृक्ष के छोटे सफेद सुगधित फूल।

मौला—पु० [देश०] उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की वेल जिसकी पत्तियाँ एक वालिश्त तक लवी होती हैं। जाडे के दिनो मे इसमे आध इच लवे फूल लगते हैं। मूला। मल्हा वेल।

पु० [अ०] १ स्वामी। २. ईश्वर। परमात्मा। ३. वह गुलाम जिसे मुक्ति मिली हो।

मौलाई—स्त्री० [अ०] १. मौला होने की अवस्था या भाव। २. स्वामित्व। ३ सरदारी। ४ प्रतिष्ठा।

मौलाना—पु० [अ०] १. वहुत वडा विद्वान्, विशेपत इस्लाम के सिद्धान्तो का पडित। २ अरवी भाषा का पडित।

मौलि—पु० [सं० मूल+इञ्] १. किसी पदार्थ का सव से ऊँचा भाग। चोटी। सिरा। चूडा। २. मस्तक। सिर। ३ किरीट। ४ नेता। सरदार। ५. अशोक वृक्ष। ६ पृथ्वी। ७ जमीन। भूमि।

मौलिक—वि० [स० मूल+ठञ्—इक] [भाव० मौलिकता] १ मूल या जड से सवध रखनेवाला। २. मूल तत्त्व या सिद्धान्त से सवध रखनेवाला। (फन्डामेन्टल) ३ असली। वास्तविक। ४ (कृति, ग्रथ या विचार) जो विलकुल नया हो तथा किसी की उद्भावना से उद्भूत हो। जो किसी की नकल न हो और न ही किसी के आधार पर वना हो। मूलभूत। (ओरिजिनल)

मौलिकता—स्त्री० [स० मौलिक+तल्+टाप्] मौलिक होने की अवस्था या भाव। २ स्वय अपनी उद्भावना से कुछ कहने, बोलने या लिखने की शक्ति अथवा गुण। (ओरिजिनेलिटी)

मौलि-पट्ट—पु० [स० मध्य० स०] पगडी। साफा।

मौलि-मणि—पु० [स० मध्य० स०] शिरोमणि।

मौली (लिन्)—वि० [स० मौलि+इनि] जिसके सिर पर मौलि या मुकुट हो। मुकुटधारी।

†स्त्री० [हि० मौर] लाल रँगा हुआ मागलिक डोरा या सूत। नारा। (पश्चिम)

मौलूद—वि० [अ०] जन्मप्राप्त (शिशु)।

पु० १ जन्मतिथि। २ बेटा। ३ दे० 'मौलूद-शरीफ'।

मौलूद-शरीफ—पु० [अ०] १ मुहम्मद साहब के जन्म से सबध रखनेवाली धार्मिक कथा। २ वह अवसर या समाज जिसमे सब लोगो के सामने वह कथा कही या पढी जाती है।

मौल्य—पु० [स० मूल+ष्यञ्] मूल्य।

मौषल—वि० [स० मूषल+अण्] १ मूषल-सबधी। २ मूसल के आकार का।

पु० महाभारत का एक पर्व।

मौष्टा—स्त्री० [स० मुष्टि+ण्ण+टाप्] घूँसो की मार या लडाई। मुक्कामुक्की।

मौसम—पु०=मौसिम।

मौसर*—वि०=मयस्सर (उपलब्ध)।

मौसल—वि० [स० मुसल+अण्] मूसल-सबधी। मूसल का।

मौसा—पु० [हि० मौसी का पु०] [स्त्री० मौसी, वि० मौसेरा] सबध के विचार से माता की बहन का पति। मौसी का पति।

मौसिम—पु० [अ०] [वि० मौसिमी] १ किसी काम या बात के लिए उपयुक्त समय। अनुकूल काल। २ गरमी, बरसात, सरदी आदि के विचार से समय का विभाग। ऋतु।

मौसिमी—वि० [फा०] १ समयोपयोगी। काल के अनुकूल। २ किसी विशिष्ट मौसिम या ऋतु मे होनेवाला।

†स्त्री०=मुसम्मी (मीठा नीबू)।

मौसिया—वि०=मौसेरा।

†पु०=मौसा।

मौसियाउत†—वि०=मौसेरा।

मौसिला†—स्त्री०=मौलसिरी।

मौसी—स्त्री० [स० मातृष्वसा; प्रा० माउस्सिआ] [वि० मौसेरा, मौसियाउत] माता की बहन। मासी।

मौसूफ—वि० [अ०] [स्त्री० मौसूफा] १ वर्णित। २ प्रशसित।

पु० विशेष्य।

मौसूम—वि० [अ०] [स्त्री० मौसूमा] जिसका कोई नाम हो। नामधारी।

मौसूल—वि० [अ०] १. मिलाया हुआ। २ मिला हुआ। प्राप्त।

मौसेरा—वि० [हि० मौसा+एरा (प्रत्य०)] मौसी के द्वारा सबद्ध। मौसी के सबध का। जैसे—मौसेरा भाई, मौसेरी बहन।

मौहूर्त—पु० [स० मुहूर्त्त+अण्] मुहूर्त्त बतलानेवाला, ज्योतिषी।

मौहूर्त्तिक—वि० [स० मुहूर्त+ठक्—इक] १ मुहूर्त्त-सम्बन्धी। २ मुहूर्त्त से उत्पन्न।

पु० १. दक्ष की मुहूर्त्ता नाम की कन्या से उत्पन्न एक देवगण। २. मुहूर्त्त बतलानेवाला, अर्थात् ज्योतिषी।

म्यत्र†—पु०=मित्र।

म्याँऊँ—स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

मुहा०—**म्याँऊँ का मुँह पकड़ना**=किसी कार्य का कठिनतम अश पूरा करना। **म्याँऊँ-म्याँऊँ करना**=भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना। डर के मारे बहुत धीरे-धीरे बोलना।

म्यान—पु० [फा० मियान] १ कोष जिसमे तलवार, कटार आदि के फल रखे जाते है। तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २ अन्नमय कोश। शरीर।

म्याना*—स० [हि० म्यान] (तलवार) म्यान मे डालना या रखना। उदा०—खड्ग तुरत म्यान महँ म्याना।—रघुराज।

†पु० मियाना (सवारी)।

म्यानी—स्त्री० [फा० मियानी] १ पाजामे की काट मे एक टुकडे का नाम जो दोनो पल्लो को जोडते समय रानो के बीच मे जोडा जाता है। २ दीवार के ऊपरी भाग मे छत के नीचे बनी हुई छोटी कोठरी या बडी भडरिया।

म्युजियम—पु० [अ०] दे० 'सग्रहालय'।

म्युनिसिपल—वि० [अं०] म्युनिसिपैलिटी अर्थात् नगरपालिका से सबध रखनेवाला। नगरपालिका का।

म्युनिसिपैल्टी—स्त्री० दे० 'नगरपालिका'।

म्योंड़ी—स्त्री० [स० निर्गुंडी] एक प्रकार का सदाबहार झाड जिसमे केसरिया रग के छोटे-छोटे फूलो की मजरियाँ लगती है।

म्रक्षण—पु० [स०√म्रक्ष् (छिपाना)+ल्युट्—अन] १. अपने दोष को छिपाना। मक्कारी। २ तेल मलना। मालिश करना। ३ मसलना। मीजना।

म्रज्जाद †—स्त्री० [स० मर्यादा] मर्यादा। उदा०—हसन हयगय दम अति, पति सायर म्रज्जाद।—चदबरदाई।

म्रदिमा (मन्)—स्त्री० [स० मृदु+इमनिच्] १. मृदुता। कोमलता। २ दीनता। ३ नम्रता।

म्रदिष्ठ—वि० [स० मृदु+इष्ठन्] अत्यत कोमल। बहुत मृदु।

म्रात—वि० [स०√म्रा (अभ्यास करना)+क्त] १. पढा या सीखा हुआ। २ अभ्यस्त (विषय)।

म्रियमाण—वि० [स०√मृ (मरण)+शानच्, मुम्] मरा हुआ-सा। मृतप्राय।

म्लान—वि० [स०√म्लै (हर्षक्षय)+क्त, त—न] [भाव० म्लानता] १ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। २ कमजोर। दुर्बल। ३ मलिन। मैला।

स्त्री०=म्लानि।

म्लानता—स्त्री० [स० म्लान+तल्+टाप्] १ म्लान होने का भाव। मलिनता। २ ग्लानि।

म्लानि—स्त्री० [स०√म्ला+नि] १ मलिनता। कातिक्षय। २ ग्लानि।

म्लायी (यिन्)—वि० [स०√म्ला (हर्ष नाश)+णिनि, न-लोप] १. म्लान। ग्लानियुक्त। २ खिन्न। दुःखी।

म्लिष्ट—वि० [स०√म्लेच्छ् (अस्पष्ट)+क्त, निपा० सिद्धि] १ अस्पष्ट। जैसे—म्लिष्ट वाणी। २ अस्पष्ट रूप से बोलनेवाला।

म्लेच्छ—पु० [स०√म्लेच्छ्+अच्] १ प्राचीन आर्यों की दृष्टि मे, ऐसे लोग जो स्पष्ट उच्चारण करना नही जानते थे। २ परवर्ती हिन्दुओ की दृष्टि मे, मनुष्यो की वे जातियाँ जिनमे वर्णाश्रम धर्म न हो। ३ हिंगु। हीग।
वि० १ नीच। २ पापी।

म्लेच्छ-कंद—पु० [स० मध्य० स०] लहसुन।

म्लेच्छ-भोजन—पु० [स० ष० त०] १ बोरो नामक धान। यावक। २ गेहूँ।

म्लेच्छित—पु० [स०√म्लेच्छ्+क्त] १ म्लेच्छों की भाषा। २ अपभाषा। ३ परभाषा।

म्हा*—सर्व०=मुझ।

†**म्हारा**—सर्व०=हमारा।

म्हौं*—पु०=मुँह।

य

य—हिं० वर्णमाला का २६वाँ व्यजन जो भाषा विज्ञान मे स्थिति भेद के अनुसार अन्तस्थ, स्थान भेद के अनुसार तालव्य, यत्न भेद के अनुसार घोष, प्राणभेद के अनुसार अल्पप्राण तथा प्रयत्न भेद के अनुसार ईषत्स्पृष्ट है।
पु० [स०√या (गति)+ड] १ यश। २ योग। ३ यान। सवारी। ४ सयम। ५ यव। जौ। ६ यम। ७ त्याग। ८ प्रकाश। रोशनी। ९ छन्द शास्त्र मे, यगण का सक्षिप्त रूप।

यंत (१)—पु० [स० यंतृ] १ सारथी। (डिं०) २ चालक।
वि०=नियना।

यंति—स्त्री० [स०√यम् (निवृत्ति)+क्तिच्] दमन।

यंत्र—पु० [स०√यन्त्र (सकोच)+अच्] १ वह चीज, बात या शक्ति जो किसी दूसरी चीज या बात को अच्छी तरह बाँध या रोककर नियन्त्रित, सघटित तथा सवद्ध रखती हो। जैसे—डोरी, ताला, फीता, बेडी, हथकडी आदि। २ प्राचीन भारत मे शल्य-चिकित्सा मे काम आनेवाला ऐसा उपकरण जिसमे धार न हो अथवा नाम मात्र की भुथरी धार हो। जैसे—नस पकडने की सँडसी, हड्डी तोडने की हथौडी आदि। (शस्त्र से भिन्न) ३ विशेष प्रकार से बना हुआ कोई ऐसा उपकरण जो किसी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए अथवा कोई चीज बनाने के लिए काम आता हो। औजार। ४ आज-कल लोहे आदि का बना हुआ वह उपकरण जिसमे अनेक प्रकार के कल-पुरजे हों और जो बहुत-सी चीजें एक साथ बनाने के लिए विशेष युक्ति से काम मे लाया जाता हो। कल। (मशीन) जैसे—कपडे बुनने या कूएँ से पानी निकालने का यत्र, छापे का यत्र आदि। ५ किसी प्रकार का बाजा। वाद्य। ६ बाजों के द्वारा होनेवाला सगीत। ७ बीन या वीणा नाम का बाजा। ८ तान्त्रिक क्षेत्रों मे, रेखाओं आदि के द्वारा कोष्ठकों आदि के रूप मे बनी हुई वे विशिष्ट आकृतियाँ जिनमे कुछ विशिष्ट शक्तियो का निवास माना जाता है और जिनका उपयोग जादू-टोने के लिए कुछ विशिष्ट प्रभाव या फल उत्पन्न करने के लिए होता है। ९ उक्त प्रकार के कोष्ठकों का वह रूप जो नाश, अनिष्ट आदि से रक्षा के लिए धारण किया जाता है। जतर। जैसे—(क) तिजारी या चौथिया ज्वर दूर करने का यत्र, किसी को वश मे करने का यंत्र।
पद—यत्र-मंत्र। (देखें)

यंत्रक—पु० [सं०√यन्त्र+कन्] १ घाव पर बाँधी जानेवाली पट्टी। (सुश्रुत) २. दे० 'यत्रकार'।
वि० १ यंत्रण करनेवाला। २ वश मे करनेवाला। ३ वशीकरण करनेवाला।

यत्र-करंडिका—स्त्री० [स० ष० त०] बाजीगरो का पिटारा जिसकी सहायता से वे अनेक प्रकार के खेल करते है।

यंत्रकार—पु० [सं० यंत्र√कृ (करना)+अण्] वह जो यत्रो का परिचालन करता हो तथा यत्र विद्या मे दक्ष हो। (मेकैनिक)

यंत्रकारी—पु० [हिं०] १ यंत्रकार का काम या पद। २ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार किसी यंत्र या कल के पुरजे अपना काम करते और एक दूसरे को चलाते है। (मैकेनिज़्म)

यंत्र-गृह—पु० [स० ष० त०] १ प्राचीन भारत मे वह स्थान जहाँ अपराधियो को बाँधकर रखा जाता था तथा उन्हे यातनाएँ दी जाती थी। २ वेधशाला। ३. यंत्रशाला।

यत्रण—पु० [सं०√यत्र्+ल्युट्—अन] १ बाँधकर तथा रोक मे रखने की क्रिया। २ नियम, विधान आदि के द्वारा नियन्त्रित रखना। ३ यत्र आदि की सहायता से दबाने, पेरने आदि की क्रिया। ४ दे० 'यत्रणा'।

यंत्रणा—स्त्री० [स०√यत्र्+णिच्+युच्—अन्, टाप्] १ दे० 'यत्रण'। २ बहुत अधिक तीव्र कष्ट या पीडा।

यत्र-नाल—पु० [स० कर्म० स०] वह नल जिसकी सहायता से कूएँ से जल निकाला जाता है।

यत्र-पेषणी—स्त्री० [सं० कर्म० स०] चक्की।

यंत्र-मंत्र—पु० [स० द्व० स०] ऐसी क्रिया जिसमे तत्र-शास्त्र और तत्सम्बन्धी मत्रो आदि का प्रयोग होता है। जादू-टोना।

यंत्र-मातृका—स्त्री० [स० ष० त०] चौसठ कलाओं मे से एक जिसके अन्तर्गत अनेक प्रकार के यत्र या कले आदि बनाने और उनसे काम लेने की विद्याएँ आती है।

यंत्र-मानव—पु० [स०] प्राय मनुष्य के आकार का वह यत्र जो कई तरह के काम बहुत कुछ आदमियो की तरह करता है।

यत्र-राज—पु० [स० ष० त०] ज्योतिष मे एक प्रकार का यत्र जिससे ग्रहों और तारो की गति जानी जाती है।

यत्र-विज्ञान—पु० [स० ष० त०]=यत्रशास्त्र।

यंत्रविद्—पु० [स० यत्र√विद् (जानना)+क्विप्] अभियता। (दे०)

यत्र-विद्या—स्त्री० [स० ष० त०]=यत्र-विज्ञान।

यंत्र-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १ वह स्थान जहाँ चीजें बनाने के यत्र

आदि हों। यंत्रों की सहायता से जहाँ उत्पादन होता हो। यंत्रगृह। २ वेधशाला।

यंत्र-शास्त्र—पु० [सं० ष० त०] वह कला या विज्ञान जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र आदि बनाने और चलाने तथा अनेक प्रकार की संरचनाएँ प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (इंजीनियरिंग)

विशेष—इसकी बहुत-सी शाखाएँ है। जैसे—वस्तु-निर्माण, यंत्र-निर्माण, सिंचाई, नदी-नियंत्रण, वास्तविक संरचना आदि।

यंत्र-समुच्चय—पु० [ष० त०] मयंत्र। (दे०)

यंत्र-सूत्र—पु० [सं०ष० त०] वह सूत्र या तागा जिसकी सहायता से कठ-पुतली नचाई जाती है।

यंत्रापीड़—पु० [यंत्र-आपीडा, ब० स०] वैद्यक में एक प्रकार का सन्नि-पात ज्वर जिससे शरीर में बहुत अधिक पीडा होती है और रोगी का लहू पीले रंग का हो जाता है।

यंत्रालय—पु० [यंत्र-आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ यंत्रो अर्थात् उपकरणों, औजारों आदि का निर्माण होता है। २ वह स्थान जहाँ कलें या यंत्रादि हों। ३ छापाखाना। मुद्रणालय। प्रेस।

यंत्रिका—स्त्री० [सं०√यंत्र+ण्वुल्—अक्, टाप्, इत्व] १ छोटा यंत्र। २. ताला। ३ पत्नी की छोटी बहन। छोटी साली। ४ छोटा ताला।

यंत्रित—भू० कृ० [सं०√यंत्र्+णिच्+क्त] १. बाँध तथा रोककर रखा हुआ। २ नियमों आदि से जकडा हुआ। ३ जिस पर ताला लगाया गया हो। ४ जिसे यंत्रणा मिली हो।

यंत्री (त्रिन्)—पु० [सं० यंत्र+इनि] १ यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २ बाजा बजानेवाला। ३ नियंत्रण करनेवाला।

यंदा—पु० [सं० इंद्र] १ इन्द्र। २ स्वामी। मालिक। (डि०) पु० [सं० इंदु] चंद्रमा।

यक—वि० [सं० एक से फा०] एक।

विशेष—'यक' के यौ० के लिए दे० 'एक' के यौ०।

यकअंगी—वि०=एकांगी।

यककलम—अव्य० [फा०] १. एक ही बार कलम चलाकर। एक ही बार लिखकर। २. पूरी तरह से। बिलकुल। ३ अचानक।

यक-जा—अव्य० [फा०] [भाव० यक-जाई] एक ही स्थान में एकत्र। इकट्ठा।

यक-जाई—वि० [फा०] १. एक में मिला हुआ। २. सदा एक ही पक्ष में या एक के साथ रहनेवाला।

यकता—वि० [फा०] [भाव० यकताई] अद्वितीय। अनुपम।

यकताई—स्त्री० [फा०] १ अद्वितीयता। २ अद्वैत।

यक-बयक—अव्य० [फा०]=एकाएक।

यकबारगी—अव्य०=एक-बारगी।

यक-सर—वि०=एक-सर।

यकसाँ—वि० [फा०] १ समान। २ समतल। ३ एक ही तरह का। एक-रस।

यकायक—अव्य=एकाएक।

यकार—पु० [सं० य+कार] 'य' नामक वर्ण।

यकीन—पु० [अ० यकीन] प्रतीति। विश्वास। एतबार।

यकीनन—अव्य० [अ०] १ निश्चित रूप से। निःसंदेह। २. अव-श्य। जरूर।

यकीनी—वि० [अ० यकीनी] असंदिग्ध।

अव्य०=यकीनन।

यकृत—पु० [सं०√यज्+ऋतिन्, कुत्व] १ पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है और जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। तिल्ली। (लीवर) २ एक प्रकार का रोग जिसमें उक्त अंग दूषित होकर बढ जाता है। बर्मजिगर। ३ पक्वाशय।

यकृल्लोम—पु० [सं०] आधुनिक कालपी, कौंच, जालौन आदि के आस-पास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

यक्ष—पु० [सं० यक्ष् (पूजा)+घञ्] १ एक प्रकार की देवयोनि जो कुबेर के गणों में और उनकी निधियों की रक्षक कही गयी है। २ कुबेर।

यक्ष-कर्दम—पु० [सं० मध्य० स०] कपूर, अगर, कस्तूरी, ककोल आदि के योग से बननेवाला एक प्राचीन अंगराग।

यक्ष-ग्रह—पु० [सं० कर्म० स०] पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह। २ प्रेत-बाधा।

यक्षण—पु० [सं० यक्ष्+ल्युट्—अन्] १ पूजन करना। २ भक्षण करना। खाना।

यक्ष-तरु—पु० [मध्य० स०] वट वृक्ष। बड का पेड।

यक्ष-धूप—पु० [मध्य० स०] १ एक प्रकार का धूप। २ देवदारु वृक्ष का गोंद।

यक्ष-नायक—पु० [ष० त०] १ यक्षों के स्वामी, कुबेर। २ जैनों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के अर्हत् के चौथे अनुचर का नाम।

यक्ष-पति—पु० [ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्ष-पुर—पु० [ष० त०] कुबेर की राजधानी, अलकापुरी।

यक्ष-राज—पु० [ष० त०] यक्षों के राजा, कुबेर।

यक्ष-रात्रि—स्त्री० [ष० त०] दीवाली (उत्सव)।

यक्ष-लोक—पु० [ष० त०] वह लोक जिसमें यक्षों का निवास माना जाता है।

यक्ष-वित्त—वि० [ब० स०] जो धनवान् तो हो पर कुछ भी व्यय न करता हो। कंजूस।

यक्ष-स्थल—पु० [ष० त०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति—पु० [यक्ष-अधिप; यक्ष-अधिपति]=यक्षपति।

यक्षावास—पु० [सं० यक्ष-आवास] वट-वृक्ष।

यक्षिणी—स्त्री० [सं० यक्ष+इनि—ङीप्] १ यक्ष जाति की पत्नी। २ कुबेर की पत्नी। ३ दुर्गा की एक अनुचरी।

यक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० यक्ष+इनि] यक्षों की आराधना करनेवाला। स्त्री०=यक्षिणी।

यक्षु—पु० [सं०] १ वह जो यज्ञ करता हो। २ प्राचीन वक्षु (आधु-निक बदख्शां) का पुराना नाम। ३ उक्त जनपद का निवासी।

यक्षेंद्र—पु० [यक्ष-इंद्र, ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्षेश्वर—पु० [यक्ष-ईश्वर, ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्ष्मग्रह—पु० [स० उपमित स०] यक्ष्मा (रोग)।

यक्ष्मघ्नी—स्त्री० [स० यक्ष्मन्√हन् (हिंसा)+टक्—ङीप्] अँगूर। दाख।

यक्ष्मा (क्ष्मन्)—स्त्री० [स०√यक्ष्+मनिन्] क्षयी नामक रोग। दे० 'क्षयी'।

यक्ष्मी (क्ष्मिन्)—वि० [स० यक्ष्मन्+इनि] यक्ष्मा से ग्रस्त।

यख—वि० [फा० यख] बहुत अधिक ठंढा।
पु० बरफ। हिम।

यख़नी—स्त्री० [फा० यख्नी] १ आवश्यकता के लिए एकत्र किया हुआ अन्न। २. उबले हुए मास का रसा जो बहुत अधिक पौष्टिक होता है। ३ तरकारी आदि का रसा। शोरबा।

यगण—पु० [स० ष० त०] छद शास्त्र मे आठ गणो मे से एक। यह एक लघु और दो गुरु (।ऽऽ) मात्राओ का होता है। इसका सक्षिप्त रूप 'य' है।

यगानगी—स्त्री० [फा०] १ यगाना होने की अवस्था या भाव। आत्मीयता। २ समीपता। ३ अपने वर्ग मे अकेले और अनुपम होने की अवस्था या भाव।

यगानत—स्त्री०=यगानगी।

यगाना—वि० [फा० यगान] १ जो बेगाना न हो। आत्मीय। २ अपने ही कुल या वश का दूसरा। ३ अकेला। एकाकी। ४ अनुपम। बेजोड।
पु० १ नातेदार। भाई-बद। २ परम आत्मीय या घनिष्ठ-मित्र।

यगूर—पु० [देश०] १ एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जिसकी लकडी का रग अन्दर से काला निकलता है। सेसी। २. उक्त वृक्ष की लकडी।

यग्ग†—पु०=यज्ञ।

यच्छ†—पु०=यक्ष।

यच्छिनी*—स्त्री०=यक्षिणी।

यजत—पु० [स० यजत्] १ ऋत्विक। २ ऋग्वेद के एक मंत्र के द्रष्टा एक ऋषि।

यजति—पु० [स०√यज् (पूजा)+अति]=यज्ञ।

यजत्र—पु० [स०√यज्+अत्रन्] १ अग्निहोत्री। २. याज्ञिक।

यजन—पु० [स० यज्+ल्युट्—अन] १ वेद-विधि के अनुसार होता और ऋत्विक् आदि के द्वारा काम्य और नैमित्तिक कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान करना। यज्ञ करना। २. यज्ञ-भूमि। यज्ञ-स्थल।

यजन-कर्ता (तृ)—वि० [स० ष० त०] यज्ञ या हवन करनेवाला।

यजमान—पु० [स०√यज्+शानच्, मुक् आगम] १. यज्ञ करनेवाला व्यक्ति। २ वह व्यक्ति जो किसी ब्राह्मण से यज्ञ-कर्म करवाता हो और उसे दक्षिणा या पुरस्कार देता हो। ३ ब्राह्मण की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसके धार्मिक कृत्य वह स्वय करता हो। ४ वह जो किसी ब्राह्मण को भरण-पोषण के लिए अन्न-धन देता हो। ५ शिव की एक मूर्ति।

यजमानता—स्त्री० [स० यजमान+तल्—टाप्] यजमान होने की अवस्था, धर्म या भाव।

यजमान-लोक—पु० [स० ष० त०] वह लोक जिसमे यज्ञ करके मरनेवालो का निवास माना जाता है।

यजमानी—स्त्री० [स० यजमान हि०+ई (प्रत्य०)] १ यजमान होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. यजमानो के यहाँ कर्मकाड आदि कराने तथा उनसे दान-दक्षिणा आदि लेने की ब्राह्मणो की वृत्ति। ३. वह स्थान जहाँ किसी विशेष पुरोहित के यजमान रहते हो।

यजि—पु० [स० यज्+इनि)] वह जो यज्ञ करता हो। यज्ञ करनेवाला।

यजीद—पु० [अ०] उम्मिया खानदान का दूसरा खलीफा जिसने करबला का वह युद्ध कराया था जिसमे इमाम हुसेन शहीद हुए थे।

यजुः (स्)—पु० [स०√यज्+उसि] १ बलिदान आदि के समय की जानेवाली प्रार्थना और तत्सम्बन्धी विशिष्ट कृत्य। २. बलिदान और यज्ञ करने के समय कहे जानेवाले गद्य मत्र जिनका पाठ अध्वर्यु करता था और जिनका संग्रह यजुर्वेद मे है। ३ दे० 'यजुर्वेद'।

यजुर्विद—पु० [स० यजुस्√विद् (जानना)+क्विप्, उप० स०] यजुर्वेद का ज्ञाता और पडित।

यजुर्वेद—पु० [स० ष० त० या कर्म० स०] भारतीय आर्यों के चार प्रसिद्ध वेदो मे से दूसरा वेद जिसमे यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवेचन और यज्ञ सबधी गद्य मत्रो का सग्रह है; और इसी लिए जो वेदत्रयी का आधार माना जाता है।

विशेष—यह वेद दो शाखाओं मे विभक्त है—(क) तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद और (ख) वाजसनेयि या शुक्ल यजुर्वेद। पुराणो मे वेद के अधिपति शुक्र और वक्ता वैशम्पायन कहे गये हैं।

यजुर्वेदी (दिन्)—पु० [स० यजुर्वेद+इनि] १. वह जो यजुर्वेद का ज्ञाता हो। २ यजुर्वेद के विधानो का अनुयायी।
वि० यजुर्वेद-सबधी।

यजुष्पति—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

यजुष्य—वि० [स० यजुस्+यत्] यज्ञ-सबधी। यज्ञ का।

यज्ञ—पु० [स० यज्+नङ्] १. बलिदान और उससे सबध रखनेवाले धार्मिक कृत्य। २. उपासना, पूजा आदि से सबंध रखनेवाला कोई धार्मिक कृत्य। जैसे—पच-महायज्ञ। ३ वैदिक काल मे, प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जो कुछ विशिष्ट उद्देश्यो की सिद्धि के लिए अथवा कुछ विशिष्ट अवसरो पर होता था; और जिसमे मुख्य रूप से हवन होता था; और मागलिक प्रार्थनाएँ करके आचार्य से (जो उन दिनो ब्राह्मण कहलाता था) आशीर्वाद प्राप्त किये जाते थे। क्रतु। मख। याग।

विशेष—आगे चलकर इन यज्ञो के सैकडो भेद और रूप हो गये थे, जिनके साथ अनेक प्रकार के विस्तृत कर्मकाडीय कृत्य भी सबद्ध हो गये थे। इनके लिए बहुत बडे बडे हवनकुड बनने लगे थे, और, कई कई दिनो, बल्कि महीनो तक होने लगे थे। धनवान् या राजा-महाराजा जो बडे-बडे यज्ञ कराते थे, उनमे चार प्रधान ऋत्विज् होते थे। यथा—(क) होता जो प्रार्थनाएँ करके यज्ञ मे भाग लेने के लिए देवताओ को आहूत करता था। (ख) उद्गाता जो यज्ञ-कुड मे सोम की आहुति देने के समय साम-गान करता था। (ग) अध्वर्यु जो वैदिक मत्रो का पाठ करता हुआ यज्ञ सबधी अन्यान्य मुख्य कृत्य करता था और (घ) ब्रह्मा जो सबसे बडा पुरोहित होता था और जो सब प्रकार के विघ्नो से यज्ञ की रक्षा करता था। यज्ञो मे अनेक प्रकार के पशुओ की बलि भी होती थी।

पर आगे चलकर जब लोग बलिदानो की अधिकता से घबरा गये, तब इनका प्रचार धीरे धीरे कम होता गया। आर्यों की ईरानी शाखा मे इसी यज्ञ का कुछ परिवर्तित रूप 'यश्न' के नाम से प्रचलित था जिससे आज-कल का जश्न (या जशन) शब्द बना है।
३. आधुनिक ग्राम्य समाज मे, कोई बडा धार्मिक कृत्य। जैसे—ब्राह्मण भोजन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि। ४. किसी प्रकार का शुभ अनुष्ठान या काम (यौ० के अन्त मे)। जैसे—वेदयज्ञ=वेदपाठ। ५ विष्णु का एक नाम।

यज्ञ-कर्ता—पु० [स० ष० त०] यज्ञ करनेवाला। याजक। यजमान।

यज्ञकर्म (न्)—पु० [स० ष० त०] यज्ञ-सम्बन्धी सब प्रकार के काम या कृत्य।

यज्ञकारी (रिन्)—पु० [स० यज्ञ√कृ (करना)+णिनि, उप० स०] यज्ञ करनेवाला।

यज्ञ-काल—पु० [स० ष० त०] १. यज्ञ करने का समय। २ यज्ञ करने के लिए उपयुक्त या निर्दिष्ट समय। ३ पूर्णमासी।

यज्ञ-कीलक—पु० [स० ष० त०] वह खूंटा जिससे बलि-पशु बाँधा जाता था।

यज्ञ-कुंड—पु० [स० ष० त०] हवन करने की वेदी या कुड।

यज्ञ-कोप—पु० [स० ब० स०] १ वह जो यज्ञ से द्वेष करता हो। २. रावण की सेना का एक राक्षस।

यज्ञ-क्रिया—स्त्री० [स० ष० त०] १ यज्ञ के काम। २ कर्मकाड।

यज्ञ-त्राता (तृ)—वि० [स० ष० त०] यज्ञ की रक्षा करनेवाला।
पु० विष्णु।

यज्ञ-दत्तक—पु० [स० तृ० त०+कन्] यज्ञ के फल के रूप मे प्राप्त होनेवाला पुत्र।

यज्ञद्रुह्—पु० [सं० यज्ञ√द्रुह+क्विप्, उप० स०] राक्षस।

यज्ञ-धर—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-नेमि—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यज्ञ-पति—पु० [ष० त०] १ विष्णु। २ यज्ञ करानेवाला। यजमान।

यज्ञ-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।

यज्ञ-पशु—पु० [च० त०] १ वह पशु जो यज्ञ मे बलि दिया जाने को हो। २ घोडा। ३ बकरा।

यज्ञ-पात्र—पु० [ष० त०] काठ आदि के वे पात्र जिनसे हवन आदि किया जाता है।

यज्ञ-पुरुष—पु० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-फलद—पु० [यज्ञ-फल, ष० त०,√दा (देना)+क] यज्ञ का फल देनेवाला, विष्णु।

यज्ञ-भाग—पु० [ष० त०] १ यज्ञ का अश, जो देवताओ को दिया जाता है। २. इन्द्र आदि वे देवता जिन्हे उक्त अश या भाग मिलता है।

यज्ञ-भाजन—पु० [ष० त०] यज्ञपात्र। (दे०)

यज्ञ-भूमि—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ करने के लिए उद्दिष्ट या नियत स्थान।

यज्ञ-भूषण—पु० [ष० त०] कुश।

यज्ञ-भोक्ता (क्तृ)—पु० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-मंडप—पु० [ष० त०] यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मडप।

यज्ञ-मंडल—पु० [ष० त०] वह स्थान जो यज्ञ करने के लिए घेरा गया हो।

यज्ञ-मंदिर—पु० [ष० त०] यज्ञशाला।

यज्ञमय—पु० [सं० यज्ञ+मयट्] विष्णु।

यज्ञ-यूप—पु० [ष० त०] दे० 'यज्ञ-कीलक'।

यज्ञ-योग्य—पु० [स० त०] गूलर का पेड।

यज्ञ-रस—पु० [ष० त०] सोम।

यज्ञ-राज—पु० [ष० त०] चद्रमा।

यज्ञ-वराह—पु० [मध्य० स०] विष्णु।

यज्ञ-वल्क—पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि जो प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य ऋषि के पिता थे।

यज्ञ-वल्ली—स्त्री० ष० त०] सोमलता।

यज्ञ-वाह—पु० [स० यज्ञ√वह्+अण्, उप० स०] १. यज्ञ करनेवाला। याज्ञिक। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

यज्ञ-वाहन—पु० [ष० त०] १ ब्राह्मण। २ विष्णु। ३ शिव। ४. यज्ञवाही। याज्ञिक।

यज्ञवाही (हिन्)—वि० [स० यज्ञ√वह्+णिनि, उप० स०] यज्ञ का सब काम करनेवाला।
पु० याज्ञिक।

यज्ञ-वीर्य—पुं० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-वृक्ष—पु० [ष० त०] १. वट-वृक्ष। २ विककत।

यज्ञ-शत्रु—पु० [ष० त०] राक्षस।

यज्ञ-शाला—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ करने का स्थान। यज्ञमडप।

यज्ञ-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमे यज्ञो और उनके कृत्यों आदि का विवेचन हो। मीमासा।

यज्ञ-शील—पु० [ब० स०] १ वह जो यज्ञ करता हो। २. ब्राह्मण।

यज्ञ-शूकर—पु०=यज्ञ-वराह (विष्णु)।

यज्ञ-संस्तर—पु० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ यज्ञ-मडप बनाया जाय। यज्ञभूमि। यज्ञस्थान।

यज्ञ-सदन—पु० [ष० त०]=यज्ञशाला।

यज्ञ-साधन—पु० [यज्ञ√साध्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] १. वह जो यज्ञ की रक्षा करता हो। २ विष्णु।

यज्ञ-सार—पु० [स० त०] गूलर का वृक्ष।

यज्ञ-सूत्र—पु० [मध्य० स०] जनेऊ। यज्ञोपवीत।

यज्ञसेन—पु० [ब० स०] १ विष्णु। २. द्रुपद देश के राजा और द्रौपदी के पिता।

यज्ञ-स्तंभ—पु० [ष० त०] वह खभा जिसमे यज्ञ के समय बलि देने के लिए पशु बाँधा जाता था।

यज्ञ-स्थल—पु० [ष० त०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो या हो रहा हो।

यज्ञ-स्थाणु—पु०=यज्ञ-स्तभ।

यज्ञ-होता (तृ)—पु० [ष० त०] १ यज्ञ मे देवताओं का आवाहन करनेवाला, ऋत्विज्। होता। २ मनु के एक पुत्र का नाम।

यज्ञ-हृदय—पु० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञांग—पु० [यज्ञ-अग, प० त०] १. यज्ञ की सामग्री। २. विष्णु। ३ गूलर। ४ खदिर। खैर।
यज्ञांगा—स्त्री० [यज्ञ√अग्+अण्—टाप्] सोमलता।
यज्ञागार—पु० [यज्ञ-आगार, प० त०] यज्ञ-स्थान। यज्ञशाला।
यज्ञाग्नि—स्त्री० [यज्ञ-अग्नि, प० त०] यज्ञ की अग्नि जो परम पवित्र मानी जाती है।
यज्ञात्मा (त्मन्)—पु० [यज्ञ-आत्मन्, प० त०] विष्णु।
यज्ञाधिपति—पु० [यज्ञ-अधिपति, प० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।
यज्ञारि—पु० [यज्ञ-अरि, प० त०] १. शिव। २. राक्षस।
यज्ञिक—पु० [स० यज्ञदत्त+ठच्—इक, दत्त शब्द का लोप] १. यज्ञ के प्रसाद स्वरूप प्राप्त पुत्र। २. पलास का पेड।
यज्ञीय—वि० [स० यज्ञ+छ—ईय] १ यज्ञ-सबधी। यज्ञ का। २ यज्ञ मे होनेवाला।
पु० गूलर का पेड।
यज्ञेश्वर—पु० [यज्ञ-ईश्वर, प० त०] विष्णु।
यज्ञोपवीत—पु० [यज्ञ-उपवीत, मध्य० स०] १. हिन्दुओं विशेपतः ब्राह्मणो, क्षत्रियों और वैश्यो का एक सस्कार जिसमे बालक को पहले-पहल तीन तारोवाला मण्डलाकार सूत पहनाया जाता है। उपनयन। जनेऊ। व्रत-बन्ध। २. तीन तागो या तारोवाला वह सूत्र जो उक्त अवसर पर बालक को पहले-पहल पहनाया जाता है। जनेऊ। यज्ञ-सूत्र। ३ वालक को उक्त सूत्र पहनाने के समय होनेवाला उत्सव तथा कृत्य।
यज्यु—पु० [स०√यज् (पूजा आदि)+युच्] १. यजुर्वेदी ब्राह्मण। २ यजमान।
वि० १ यज्ञ करनेवाला। २. पवित्र। पुनीत।
यज्वा (ज्वन्)—पु० [स० यज्+ड्वनिप्] वैदिक ऋचाओ के अनुसार यज्ञ करनेवाला।
यडर—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
यत्—सर्व० [सं०√यज्+अदि, डित्, डित्वाट्टिलोप] जो।
यत—वि० [स० यम् (नियमन्)+क्त] १ नियत्रित। २ नियमित। ३ जिसका दमन हुआ हो। ४ रोका हुआ।
यतन—पु० [सं० यत् (प्रयत्न)+ल्युट्—अन] [वि० यतनीय] यत्न करने की क्रिया या भाव।
पु०=यत्न।
यतनीय—वि० [स०√यत्+अनीयर] जिसके सम्बन्ध मे यत्न करना आवश्यक हो अथवा यत्न किया जाने को हो।
यतमान—वि० [स०√यत्+शानच्] १. यत्न करता हुआ। कोशिश मे लगा हुआ। २. जो अनुचित विपयो का त्याग करके शुभ कामों की ओर प्रवृत्त होने का प्रयत्न करता हो।
यत-व्रत—वि० [स० व० स०] सयम से रहनेवाला। संयमी।
यतात्मा (त्मन्)—वि० [स० यत-आत्मन्, व० स०] यत-व्रत। सयमी।
यति—पु० [स०√यत्+इन्] १. वह व्यक्ति जिसने अपनी इन्द्रियो तथा मनोविकारों को वश मे कर लिया हो। फलत जो सन्यास धारण-कर सासारिक प्रपचो से दूर रहता हो तथा ईश्वर का भजन करता हो। २. ब्रह्मचारी। ३. विष्णु। ४ भागवत के अनुसार ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ५. नहुप का एक पुत्र। ६ छप्पय छन्द के ६६वें भेद का नाम।
स्त्री० [स० यम्+क्तिन्+टीप्] १. रोक। रुकावट। २. मनोविकार। ३. सन्धि। ४. विधवा। स्त्री। ५. ताल्क राग का एक भेद। ६. मृदग का एक प्रकार का प्रबन्ध या बोल। ७ छन्दःशास्त्र के अनुसार कविता या पद्य के चरणों मे वह स्थान जहाँ पढते समय, उनकी लय ठीक रखने के लिए, थोडा सा विश्राम होता है। विश्राम। विराम।
यति-चांद्रायण—पु० [स० प० त०] यतियों के लिए विहित एक प्रकार का चाद्रायण व्रत।
यतित्व—पु० [स० यति+त्व] यति होने की अवस्था, धर्म या भाव।
यति-धर्म—पु० [स० प० त०] सन्यास।
यतिनी—स्त्री० [स० यत+इनि+ङीप्] १. सन्यासिनी। २. विधवा।
यति-भंग—पु० [स० प० त०] [वि० यति-भ्रष्ट] काव्य का लय सम्बन्धी एक दोप जो उस समय माना जाता है जब पढ़ते समय किसी उद्दिष्ट या नियत स्थान पर विश्राम नही होता, वल्कि उसके कुछ पहले या पीछे होता है।
यति-भ्रष्ट—वि० [स० व० स०] ऐसा (चरण या छन्द) जिसमें यति अपने उपयुक्त स्थान पर न पडकर कुछ आगे या पीछे पडी हो। यति-भग दोप से युक्त (छद)।
यती (तिन्)—पु० [स० यत+इनि] [स्त्री० यतिनी] १. यति। संन्यासी। २. जितेन्द्रिय। ३. श्वेताम्बर जैन साधु।
यतीम—पु० [अ०] १. ऐसा बालक जिसके माता पिता मर गये हों। अनाथ। २ ऐसा वडा मोती जो सीप मे एक ही होता हो। ३ अनुपम और बहुमूल्य रत्न।
यतीम-खाना—पु० [अ० यतीम+फा० खान.] वह स्थान जहाँ यतीम अर्थात् अनाथ बालको का लालन-पालन होता है। अनाथालय।
यतीमी—स्त्री० [अ०] यतीम होने की अवस्था या भाव। अनाथता।
यतुका—पु० [स० यत्+उक+टाप्] चकवँड़ का पौधा। चक्रमर्द।
यतेंद्रिय—वि० [स० यत-इद्रिय, व० स०] जितेंद्रिय।
यत्किचित्—अव्य० [स० द्वन्द्व स०] थोड़ा सा। जरा सा। कुछ।
यत्न—पु० [स० यत्+नङ] १. किसी काम या वात के लिए किया जानेवाला उद्योग। कोशिश। प्रयत्न। २ किसी चीज को अच्छी तरह और सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। ३. उपाय। युक्ति। तदबीर। ४. रोग आदि दूर करने के लिए किया जानेवाला इलाज या उपचार। चिकित्सा। ५. कठिनता। दिक्कत। ६. न्यायशास्त्र मे रूप आदि २४ गुणो के अन्तर्गत एक गुण जो तीन प्रकार का कहा गया है। यथा—प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवन योनि। ७ साहित्य मे रूपक की पाँच अवस्थाओ मे से दूसरी अवस्था, जिसमे फल-प्राप्ति के लिए अच्छी तरह और जल्दी कुछ काम किये जाते है, और विघ्न-बाधाओं की चिंता छोड दी जाती है। ८ व्याकरण मे स्वरों तथा व्यजनो का उच्चारण करते समय किया जानेवाला प्रयत्न जो अघोप और घोप दो प्रकार का होता है।
यत्नवान् (वत्)—वि० [स० यत्न+मतुप्] [स्त्री० यत्नवती] यत्न मे लगा हुआ। यत्न करनेवाला।

यत्र—अव्य० [स० यद्+त्रल्] १ जिस जगह। जहाँ। २ जिस समय। जव। ३. जव यह वात है तो। इस कारण से। यत।
पु०=सत्र (यज्ञ)।

यत्र-तत्र—अव्य० [स० द्वन्द्व० स०] १ जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २ कुछ यहाँ, कुछ वहाँ। ३ यहाँ-वहाँ सभी जगह। अनेक स्थानो पर। जगह-जगह।

यत्रु—स्त्री० [स० जत्रु] छाती के ऊपर और गले के नीचे की मडलाकार हड्डी। हँसली।

यथांश—अव्य० [स० यथा–अश, अव्य० स०] प्रत्येक के अश या भाग के अनुसार। जिसका जितना अश हो, उसे उतना।
पु० किसी के लिए निश्चित किया हुआ अश या हिस्सा जो उसे दिया जाय या उससे लिया जाय। (कोटा)

यथा—अव्य० [स० यद् (प्रकार)+थाल्] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे आशय या भाव प्रकट करने के लिए होता है—(क) जिस प्रकार या जैसे कहा या वतलाया गया हो, उस प्रकार या वैसे। जैसे—यथा-विधि। (ख) जिसका उल्लेख हुआ हो, उसके अनुसार। जैसे—यथा-मति। (ग) उदाहरण के रूप मे। जैसे—यथा विश्वामित्र। (घ) नीचे लिखे अनुसार या निम्न क्रम से। जैसे—यजुर्वेद की दो शाखाएँ है, यथा—कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद।
विशेष—कुछ अवस्थाओ मे इसके साथ इसका नित्य सवधी 'तथा' आता है। जैसे—यथा नाम तथा गुण।

यथाकाम—पु० [स० अव्य० स०] १. मनमाना आचरण। २. यथाकामी।

यथाकामी (मिन्)—पु० [स० यथा√कम् (चाहना)+णिनि] मनमाना आचरण करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

यथाकारी (रिन्)—पु० [स० यथा√कृ (करना)+णिनि] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

यथा-कृत—वि० [स० सुप्सुपा स०] जैसा आरभ मे वना हो, वैसा ही। जैसे—यथाकृत वस्त्र=अर्थात् विना सीया हुआ कपडा।

यथा-क्रम—अव्य० [स० अव्य० स०] ठीक और निश्चित क्रम से। क्रमानुसार।

यथाख्यात चरित्र—पु० [स० यथा-ख्यात अव्य० स०, यथाख्यात-चरित्र कर्म० स०] ऐसे साधुओ का चरित्र जिन्होने सव कषायो (काम, क्रोधादि पातको) का क्षय कर दिया हो। (जैन)

यथाजात—पु० [स० सुप्सुपा स०] जो अव भी वैसा ही (अज्ञानी) हो, जैसा जन्म के समय था, अर्थात् वहुत वडा ना-समझ, मूर्ख या नीच।

यथा-तथ—वि० [स० अव्य० स०] १ जैसा हो, वैसा। २. ऐसा वैसा, निकम्मा, रद्दी या वाहियात।

यथा-तथ शैली—स्त्री० [स० कर्म० स०] काव्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि मे वह शैली जिसमे हर एक चीज ज्यो की त्यो और अपने मूल रूप मे अकित या चित्रित की अथवा गढी जाती है।

यथा-तथा—अव्य० [स० द्व० स०] जैसे का तैसे।

यथातथ्य—वि० [स० अव्य० स०] जैसे का तैसा। ज्यो का त्यो। हू-वहू।

यथा-नियम—अव्य० [स० अव्य० स०] नियमानुसार।

यथानुक्रम—अव्य० [स० यथा-अनुक्रम, अव्य० स०] यथा-क्रम।

यथापूर्व—अव्य० [स० अव्य० स०] १ जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की तरह। पूर्ववत्। २ ज्यो का त्यो।

यथापूर्व स्थिति—स्त्री० [स०] किसी वात या विषय की वह स्थिति जो किसी विशिष्ट समय मे वर्तमान रही हो अथवा प्रस्तुत समय में वर्तमान हो। (स्टेटस को)

यथाभाग—अव्य० [स० अव्य० स०] १ अपने अपने अश या भाग के अनुसार जितना चाहिए, उतना। हिस्से के मुताविक। २ यथोचित।

यथा-मति—अव्य० [सं० अव्य० स०] मति अर्थात् वुद्धि के अनुसार।

यथा-मूल्य—अव्य० [स०] एक पद जिसका प्रयोग आयात और निर्यात पर लगानेवाले करो के सवध मे उस दशा मे होता है जव कर-निर्धारण उन वस्तुओ के मूल्य के आधार पर होता है। (एडवैलोरम)

यथा-योग्य—अव्य० [स० अव्य० स०] जैसा चाहिए, ठीक वैसा। उपयुक्त। यथोचित। मुनासिव।
पु० पत्र-व्यवहार मे इस आशय का सूचक पद कि वडो को हमारा नमस्कार, वरावर वालो को प्रेमपूर्ण अभिवादन और छोटो को आशीर्वाद।

यथारथ† —अव्य०=यथार्थ।

यथारुचि—अव्य० [स० अव्य० स०] रुचि के अनुसार।

यथार्थ—अव्य० [सं० यथा-अर्थ, अव्य० स०] १. जो अपने अर्थ (आशय, उद्देश्य, भाव आदि) आदि के ठीक अनुरूप हो। ठीक। वाजिव। उचित। २. जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा।
विशेष—यथार्थ और वास्तविक का अन्तर जानने के लिए दे० 'वास्तविक' का विशेष।
३. सत्यपूर्वक।

यथार्थतः (तस्)—अव्य० [स० यथार्थ+तस्] १ अपने यथार्थ रूप मे। वास्तव मे। वस्तुत। सचमुच। २ दे० 'वस्तुत.'।

यथार्थता—स्त्री० [स० यथार्थ+तल्—टाप] १ यथार्थ होने की अवस्था या भाव। २. सचाई। सत्यता। २ दे० 'वास्तविकता'।

यथार्थवाद—पु० [स० प० त०] १ दार्शनिक क्षेत्र मे, प्लेटो द्वारा प्रवर्तित यह मत कि किसी पद से जिस अमूर्त या मूर्त वात या वस्तु का वोध होता है, वह स्वतत्र सत्तावाली इकाई होती है। २ आज-कल साहित्यिक क्षेत्र मे (आदर्शवाद से भिन्न) यह मत या सिद्धान्त कि प्रत्येक घटना या वात अपने यथार्थ रूप मे अकित या चित्रित की जानी चाहिए। (रियालिज्म)
विशेष—इसमे आदर्शों का ध्यान छोडकर उसी रूप मे कोई चीज या वात लोगो के सामने रखी जाती है, जिस रूप मे वह नित्य या प्राय सवके सामने आती रहती है। इसमे कर्ता न तो अपनी ओर से टीका-टिप्पणी करता है, न अपना दृष्टिकोण वतलाता है और निष्कर्ष निकालने का काम दर्शको या पाठको पर छोड देता है।

यथार्थवादी (दिन्)—वि० [स० यथार्थवाद+इनि] १ यथार्थवाद से सवध रखनेवाला। २ यथार्थवाद के अनुरूप होनेवाला। ३ सत्यवादी।

पु० यथार्थवाद के सिद्धान्तों का समर्थक।

यथालब्ध—अ० य०[स० अव्य० स०] जितना प्राप्त हो, उसी के अनुसार।

पु० जैनियों के अनुसार, जो कुछ मिल जाय उसी से संतुष्ट रहने की वृत्ति।

यथालाभ—अव्य० [स० अव्य० स०] जो कुछ मिले, उसी के अनुसार।

यथावत्—अव्य० [स० यथा+वति] १. ज्यों का त्यों। जैसे का तैसा। २ जैसा होना चाहिए, वैसा। अच्छी या पूरी तरह से।

यथावसर—अव्य० [स० यथा-अवसर] अवसर के अनुसार।

यथावस्थित—अव्य० [स० यथा-अवस्थित, अव्य० स०] १ जैसा था, वैसा ही। २ सत्य। ३ अचल। स्थिर।

यथाविधि—अव्य० [स० अव्य० स०] निश्चित की अथवा बतलाई हुई विधि के अनुसार। विधिपूर्वक।

यथाविहित—अव्य० [स० अव्य० स०] विधान या विधि के अनुसार।

यथा-शक्ति—अव्य० [स० अव्य० स०] शक्ति के अनुसार। भरसक।

यथा-शक्य—अव्य० [स० अव्य० स०] शक्ति के अनुसार। भरसक।

यथा-शास्त्र—अव्य० [स० अव्य० स०] जो कुछ शास्त्रों में बतलाया गया हो, उसी के अनुसार। शास्त्रों के अनुकूल या मुताबिक।

यथासंख्य—पु० [स० अव्य० स०] क्रम नामक अलंकार का दूसरा नाम।

यथा-संभव—अव्य० [स० अव्य० स०] जहाँ तक या जितना संभव हो।

यथा-समय—अव्य० [स० अव्य० स०] १ ठीक या नियत समय आने पर। २. जब जैसा समय हो, तब उसके अनुसार।

यथा-साध्य—अव्य० [स० अव्य० स०] यथाशक्ति। भरसक।

यथा-सूत्र—अव्य० [स० अव्य० स०] जहाँ से सूत्र चलता हो, वहीं से। प्रारंभ से। शुरू से।

यथा-स्थान—अव्य० [स० अव्य० स०] ठीक जगह पर। अपने उचित या उपयुक्त स्थान पर। ठीक जगह पर।

यथा-स्थित—वि० [स०] [भाव० यथास्थिति] जिस रूप या स्थिति में अब तक चला आ रहा हो, और अब तक चल रहा हो।

यथा-स्थिति—स्त्री० दे० 'यथापूर्व स्थिति'।

अव्य० [स० अव्य० स०] जब जैसी स्थिति हो तब उसी के अनुसार।

यथेच्छ—अव्य० [स० यथा-इच्छा, अव्य० स०] १ जितना या जैसा इच्छित या अभीष्ट हो, उतना या वैसा। २ इच्छा के अनुसार। मनमाने ढंग से।

यथेच्छाचार—पु० [स० यथेच्छ-आचार, कर्म० स०] जो जी में आवे, वही करना। मनमाना काम करना। स्वेच्छाचार।

यथेच्छाचारी (रिन्)—वि० [स० यथेच्छाचार+इनि] १. मनमाना आचार करनेवाला। यथेच्छाचार करनेवाला। २. मनमौजी।

यथेच्छित—वि० [स० यथेष्ट] जितना या जैसा चाहा गया हो। मन-चाहा।

यथेष्ट—वि० [स० यथा-इष्ट, अव्य० स०] [भाव० यथेष्टता] १ जितना इष्ट या अभीष्ट हो। २ उतना, जितने से काम अच्छी तरह चल सकता हो।

विशेष—पर्याप्त की तरह इसका प्रयोग भी केवल ऐसी चीजों के संबंध में होना चाहिए जो अभीष्ट या प्रिय हों। जैसे—यथेष्ट भोजन। अन-भीष्ट या अप्रिय बातों के संबंध में इसका प्रयोग ठीक नहीं जान पड़ता। यह कहना ठीक नहीं होगा—मुझे यथेष्ट कष्ट (या चिंता) है।

यथेष्टाचरण—पुं० [स० यथेष्ट-आचरण, कर्म० स०] मनमाना आचरण। स्वेच्छाचार।

यथेष्टाचार—पुं० =यथेष्टाचरण।

यथेष्टाचारी (रिन्)—पु० [सं० यथेष्ट-आ√चर (गति)+णिनि] मनमाना आचरण या व्यवहार करनेवाला।

यथोक्त—अव्य० [स० यथा-उक्त, अव्य० स०] कहे हुए के अनुसार। जैसा कहा जा चुका हो, वैसे।

यथोक्तकारी (रिन्)—वि० [स० यथोक्त√कृ (करना)+णिनि] १ शास्त्रों में जो कुछ कहा गया हो, वही करनेवाला। २ आज्ञाकारी।

यथोचित—वि० [सं० यथा-उचित, अव्य० स०] जैसा चाहिए, वैसा। जैसा उचित या मुनासिब हो, वैसा।

यथोपयुक्त—वि० [स० यथा-उपयुक्त, अव्य० स०] =यथायोग्य।

यदपि†—अव्य० =यद्यपि।

यदा—अव्य० [स० यद्+दा] १. जिस समय। जिस वक्त। जब। २ जहाँ।

यदा-कदा—अव्य० [सं०] जब-तब। कभी-कभी।

यदि—अव्य० [सं० यद्+णिच्+इन्—णिलोप] अमुक अवस्था हो तो। अगर। जो।

यदिच, यदिचेत्—अव्य० [सं० द्व० स०] यद्यपि। अगरचे।

यदीय—वि० [स० यद्+छ—ईय] जिसका।

यदु—पुं० [स०√यज्+उ, पृषो० जस्य द.] १ देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का सबसे बड़ा पुत्र। २. एक प्राचीन राज्य जो मथुरा के समीप था। ३. यदुवंश।

यदु-नंदन—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्णचन्द्र।

यदु-नाथ—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-पति—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-भूप—पु०[स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदुराई—पु० [स० यदु+हिं० राइ=राजा] श्रीकृष्ण।

यदुराज, यदुराट्—पु० [स० ष० त०] यदुकुल के राजा श्रीकृष्ण।

यदु-वंश—पु० [स० ष० त०] यदु का वंश।

यदुवंशज—पु० [स० यदुवंश√जन् (उत्पत्ति)+ड] श्रीकृष्ण।

यदुवंश मणि—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्णचन्द्र।

यदुवंशी (शिन्)—वि० [स० यदुवंश+इनि] जिसने यदुवंश में जन्म लिया हो।

पु० श्रीकृष्ण।

यदु-वर—पु० [स० स० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-वीर—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदूत्तम—पु० [सं० यदु-उत्तम, स० त०] श्रीकृष्ण।

यदृच्छया—अव्य० [स० यदृच्छा का तृतीयान्त रूप] १. अकस्मात्। अचानक। २ इत्तफाक से। दैवयोग से। ३ मनमाने ढंग से।

यदृच्छयाभिज्ञ—पु० [स० यदृच्छया-अभिज्ञ, व्यस्त पद या अलुक् स०

स्मृतियो के अनुसार कृतसाक्षी के पाँच भेदो मे से एक। वह साक्षी जो घटना के समय आप से आप या अकस्मात् आ गया हो।

यदृच्छा—स्त्री० [स० यद्√ऋच्छ+अ—टाप्] १ केवल अपनी इच्छा के अनुसार किया जानेवाला व्यवहार। स्वेच्छाचरण। मनमानापन। २ आकस्मिक सयोग। इत्तफाक।

यद्यपि—अव्य० [स० यदि-अपि, द्वन्द्व स०] यदि ऐसा है भी। अगर ऐसा है भी।

विशेष—इसके साथ प्राय. इसका नित्य-सबधी 'तथापि' भी प्रयुक्त होता है।

यद्वातद्वा—अव्य० [स० व्यस्त पद] १ जब-तब। २ कभी-कभी। ३ जैसे-तैसे। किसी प्रकार।

यम—वि० [स०√यम् (नियत्रण करना)+अच्] जुडवाँ।

पु० १ जुडवाँ बच्चे। यमल। २ उक्त के आधार पर दो की सख्या। ३. रोक। नियत्रण। ४ अपने ऊपर किया जानेवाला नियत्रण। ५ कोई बहुत बडा धार्मिक या नैतिक कर्तव्य। ६ भारतीय आर्यो के एक प्रसिद्ध देवता जो सूर्य के पुत्र तथा दक्षिण दिशा के दिक्पाल कहे गये है और आज-कल मृत्यु के देवता माने जाते हैं। काल। कृतान्त। ७. चित्त को धर्म मे स्थिर रखनेवाले कर्मो का साधन। ८ कौआ। ९ शनि। १० विष्णु। ११ वायु।

यमक—पु० [स० यम√कै (प्राप्ति)+क] साहित्य मे एक शब्दालकार जो उस समय माना जाता है जब किसी चरण मे एक ही शब्द दो या अधिक बार आता है और हर बार अलग-अलग अर्थ मे आता है। जैसे—कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।—विहारी।

यमकाल, यमकातर—पु० [स० यम+हिं कातर] १ यम का छुरा या खाँडा। २ एक प्रकार की तलवार।

यम-कीट—पु० [स० मध्य० स०] केंचुआ।

यम-घंट—पुं० [स० यम√घट् (शब्द करना)+णिच् (स्वार्थ)+अण्] १ फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का दुष्ट योग जो रविवार को मघा या पूर्वा फाल्गुनी, सोमवार को पुष्य या श्लेषा, मगलवार को ज्येष्ठा, अनुराधा, भरणी या अश्विनी, बुधवार को हस्त या आर्द्रा, बृहस्पति को पूर्वाषाढा, रेवती या उत्तराभाद्रपद, शुक्र को स्वाती या रोहिणी और शनिवार को शतभिषा या श्रवण नक्षत्र के पडने पर माना जाता है। २ कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा।

यम-चक्र—पु० [स० प० त०] यमराज का शस्त्र।

यमज—वि० [स० यम√जन् (उत्पत्ति)+ड] जुडवाँ। यमल।

पु० १. जुडवाँ बच्चे। २ ऐसा घोडा जिसका एक ओर का अंग हीन और दुर्बल हो और दूसरी ओर का वही अग ठीक हो। ३. अश्विनीकुमार।

यमजित्—वि० [स० यम√जि (जय)+क्विप्, तुक् आगम] मृत्यु को जीतनेवाला। मृत्युजय।

पु० शिव।

यमत्व—पु० [स० यम+त्व] यम का धर्म, पद या भाव।

यमदड—पु० [स० प० त०] १. यम के हाथ मे रहनेवाला डडा। २. वह दड जो यम से प्राप्त होता है।

यम-दाढ़ा—स्त्री० [स० प० त०] १ यम की दाढ। २. वैद्यक के अनुसार आश्विन, कार्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्ट काल, जिसमे रोग और मृत्यु आदि का विशेष भय रहता है।

यमदग्नि—पु० [स० जमदग्नि]=जमदग्नि (परशुराम के पिता)।

यमदुतिया†—स्त्री०=यम-द्वितीया (भैया-दूज)।

यम-दूत—पु० [सं० प० त०] १. यमराज का दूत। २ कौआ। ३ नौ समिधो मे से एक।

यमदूतक—पु० [सं० यमदूत+कन्] १ यम का दूत। २. कौआ।

यम-दूतिका—स्त्री० [स० प० त०] इमली।

यम-देवता—स्त्री० [स० ब० स०] भरणी नक्षत्र, जिसके देवता यम माने जाते है।

यम-द्रुम—पु० [सं० उपमित स०] सेमर का पेड। (वृक्ष)।

यम-द्वितीया—स्त्री० [स० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई-दूज।

यम-धार—पु० [स० ब० स०] एक तरह की दुधारी तलवार।

यम-नक्षत्र—पु० [स० मध्य० स०] भरणी नक्षत्र, जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमनाह*—पु० [स० यमनाथ, प्रा० जमनाह] यमो के स्वामी, धर्मराज।

यमनिका—स्त्री०=यवनिका (रगमच का परदा)।

यमनी—वि० [अ० यमन] यमन देश-सबधी।

पु० १ यमन देश का निवासी। २ यमन देश की कृति या वस्तु।

यम-पुर—पु० [स० ष० त०] यम के रहने का स्थान। यमलोक।

मुहा०—(किसी को) यमपुर पहुँचाना=मार डालना। प्राण ले लेना।

यम-पुरी—स्त्री० [स० प० त०] यमलोक। यमपुर।

यम-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] १ यमराज। २ यम के दूत।

यम-प्रिय—पु० [सं० प० त०] वट (वृक्ष)।

यम-भगिनी—स्त्री० [स० प० त०] यमुना नदी।

यम-यातना—स्त्री० [स० मध्य० स०] पुराणानुसार मरने के समय यम के दूतो की दी हुई पीडा।

यम-रथ—पु० [स० प० त०] यम की सवारी, भैंसा।

यम-राज—पु० [स० कर्म० स०, टच् प्रत्यय] यमो के राजा धर्मराज, जो प्राणी के मरने के उपरान्त उसके कर्मों का विचार कर उसे दड अथवा शुभ फल देते है। (पुराणो मे इनकी सख्या १४ मानी गई है।)

यम-राज्य, यम-राष्ट्र—पु० [स० प० त०] यमलोक।

यमल—वि० [स० यम√ला (आदान)+क] जुडवाँ। युग्म।

पु० ऐसी दो सन्ताने जो एक साथ उत्पन्न हुई हो।

यमलार्जुन—पु० [स० यमल-अर्जुन, कर्म० स०] कुबेर के नलकूबर और मणिग्रीव नामक दोनों पुत्र जो शाप वश अर्जुन वृक्ष हो गए थे और जिन्हें श्रीकृष्ण ने शाप से मुक्त किया था।

यमली—स्त्री० [स० यमल+ङीप्] १ एक मे मिली हुई दो चीजें। जोड। जोडी। २ स्त्रियो के घाघरे और चोली की जोडी।

यम-लोक—पु० [स० प० त०] १ वह लोक जहाँ मरने के उपरात मनुष्य जाते है। यमपुरी। २ नरक।

यम-वाहन—पु० [स० प० त०] यम की सवारी, भैंसा।

यम-व्रत—पु० [स० प० त०] राजा का धर्म जिसके अनुसार उसे यमराज

की भाँति निष्पक्ष होकर सब को दंड देना चाहिए। राजा का दंड-नियम।

यम-सदन—पु० [स० ष० त०] यमपुर।

यमसू—पु० [स० यम√सू (प्रसूति)+क्विप्] सूर्य।
वि० स्त्री० जिसे एक साथ दो सन्तानें हुई हों।

यमहंता (तृ)—पु० [स० ष० त०] काल का नाश करनेवाले, शिव।

यमांतक—पु० [स० यम-अंतक, ष० त०] शिव।

यमानिका—स्त्री० [स० यमानी+क+टाप्] अजवायन।

यमानी—स्त्री० [स० यम्+ल्युट्—अन, पृषो० सिद्धि] अजवायन।

यमानुजा—स्त्री० [स० यम-अनुजा, ष० त०] यमराज की छोटी बहन, यमुना।

यमारि—पु० [स० यम-अरि, ष० त०] विष्णु।

यमालय—पु० [स० यम-आलय, ष० त०]=यमपुर।

यमित—भू० कृ० [स० यम] १ संयत। २. दबाया हुआ। ३ बँधा हुआ।

यमी—स्त्री० [स० यम+ङीष्] यम की बहन, यमुना (नदी)। (पुराण)
पु० यम, नियम आदि का पालन करनेवाला व्यक्ति। संयमी।

यमुना—स्त्री० [स० यम्+उनन्+टाप्] १ दुर्गा। २ यम की बहन यमी जो बाद में नदी के रूप में अवतरित हुई थी। (पुराण) ३. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी जो हिमालय के यमुनोत्तरी नामक स्थान से निकलकर प्रयाग के पास गंगा में मिलती है।

यमुना-कल्याणी—स्त्री० [स० उपमित स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

यमुनाभिद्—पु० [स० यमुना√भिद् (विदारण)+क्विप्] कृष्ण के भाई बलराम जिन्होंने अपने हल से यमुना के दो भाग किये थे।

यमुनोत्तरी—स्त्री० [स० यमुनोत्तर] हिमालय में गढ़वाल के पास का एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकली है।

यमेश—पु० [स० यम-ईश, ब० स०] भरणी नक्षत्र।

यमेश्वर—पु० [स० यम-ईश्वर, ष० त०] शिव।

ययाति—पु० [स०] १ राजा नहुष के पुत्र तथा राजा पुरु के पिता जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था। शुक्राचार्य द्वारा अभिशप्त होने पर इन्हें अकालिक वृद्धावस्था प्राप्त हुई थी। बाद में इन्होंने अपनी वृद्धावस्था अपने पुत्र पुरु को देकर उससे उसका यौवन लिया था और इस प्रकार १००० वर्षों तक सुख-भोग किया था। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा व्यक्ति जो शरीर से वृद्ध परन्तु मन से युवा हो।

ययावर—पु०=यायावर।

ययी (यिन्)—पु० [स०√या+ई, द्वित्व] १ शिव। २. किसी यज्ञ विशेषत अश्वमेध यज्ञ में बलि चढ़ाया जानेवाला घोड़ा। ३. घोड़ा। ४ मार्ग। पथ। रास्ता। ५ बादल।

ययु—पु० [स० या+उ, द्वित्व] ययी (घोड़ा)।

यरकान—पु० [अ० यरकान] कमल (रोग)।

यरकानी—पु० [अ० यरकानी] कमल रोग से ग्रस्त व्यक्ति।

यलधीस*—पु० [स० इलाधीश] राजा। (डिं०)

यलनाथ*—पु०=यलधीस (राजा)।

यला—स्त्री० [स० इला] पृथ्वी। (डिं०)
स्त्री०=एला (इलायची)।

यलाइंद—पु० [स० इला-इंद्र] राजा। (डिं०)

यलापत—पु० [स० इला+पति] राजा। (डिं०)

यव—पु० [स०√यु (मिश्रण)+अप्] १. जौ नामक एक प्रसिद्ध अन्न जिसका पिसान, सत्तू आदि मनुष्य खाते हैं। २. उक्त अन्न का पौधा। ३. प्राचीन काल की एक तौल जो जौ के एक दाने अथवा सरसों के बारह दानों के बराबर होती थी। ४. लंबाई की एक नाप जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ५ सामुद्रिक में उँगली आदि में होनेवाला एक शुभ लक्षण जो जौ के दाने की आकृति का होता है। ६ कोई ऐसी वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो।

यवक—पु० [स० यव+कन्] जौ।

यवक्य—वि० [स० यवक+यत्] (खेत) जो जौ की बोआई के लिए उपयुक्त हो।

यव-क्रीत—पु० [स० तृ० त०] भरद्वाज के पुत्र एक ऋषि।

यव-क्षार—पु० [मध्य० स०] जवाखार। (दे०)

यव-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] वैशाख शुक्ल-चतुर्थी।

यवज—पु० [स० यव√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. जवाखार। २ गेहूँ का पौधा। ३. अजवायन।
वि० यव से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।

यव-तिक्ता—स्त्री० [उपमित स०] शंखिनी (लता)।

यव-दोष—पु० [स० ष० त०] कुछ रत्नों में होनेवाला जौ के आकार का चिह्न जिसकी गिनती दोषों में होती है।

यव-द्वीप—पु० [मध्य० स०] जावा (द्वीप)।

यवन—पु० [स०√यु+युच्] [स्त्री० यवनी] १ वेग। तेजी। २. तेज चलनेवाला घोड़ा। ३ प्राचीन भारत में यूनान से आये हुए लोगों की संज्ञा। ४. परवर्ती भारत में मुसलमानों की संज्ञा। ५. काल-यवन नामक म्लेच्छ राजा जो कृष्ण से कई बार लड़ा था।

यवन-प्रिय—पु० [ष० त०] मिर्च।

यवनाचार्य—पु० [यवन-आचार्य, ष० त०] एक प्रसिद्ध यवन ज्योतिषाचार्य। ताजिकशास्त्र, रमलामृत आदि ग्रन्थों के रचयिता।

यवनानी—स्त्री० [स० यवन+ङीष्, आनुक्] १ यूनान की भाषा। २ प्राचीन भारत में, यवनों की लिपि।

यवनारि—पु० [यवन-अरि, ष० त०] श्रीकृष्ण, जो कालयवन के शत्रु थे।

यवनाल—स्त्री० [ब० स०] १ ज्वार का पौधा। २ ज्वार के दाने। ज्वार। ३ जौ के सूखे डंठल जो पशुओं को चारे के रूप में खिलाये जाते हैं।

यवनालज—पु० [स० यव-नाल, ष० त०,√जन्+ड] जवाखार। यवक्षार।

यव-नाश्व—पु० [स०] मिथिला के एक प्राचीन राजा जो बहुलाश्व का पिता था।

यवनिका—पु० [स०√यु+ल्युट्—अन, ङीप्+आनुक्+टाप्, ह्रस्व] १ कनात। २ परदा। ३. रंगमंच का परदा।

यवनी—स्त्री० [स०√यु+ल्युट्+अन+ङीप्] १ यूनान देश की स्त्री। २ यवन जाति की स्त्री। ३ विशेषत मुसलमान स्त्री।

यवनेष्ट—पु० [स० यवन-इष्ट, ष० त०] १ सीसा। २ मिर्च। ३ गाजर। ४ शलजम। ५ प्याज। ६ लहसुन। ७ नीम।

यव-फल—पु०[स० व० स०] १ इद्र जौ। २ कुटज। ३ प्याज। ४. वाँस। ५ जटामासी। ६ पाकर नामक वृक्ष।
यव-विंदु—पु०[स० व० स०] वह हीरा जिसमे विन्दु सहित यवरेखा हो।
यव-मंड—पु०[स० मध्य० स०] जौ का माँड जो पथ्य रूप मे कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगियो को दिया जाता है।
यव-मंथ—पु०[स० प० त०] जौ का सत्तू।
यवमती—स्त्री० [स० यव+मतुप+ङीप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके विषम चरणो मे क्रमश रगण, जगण और जगण तथा सम चरणो मे क्रमश जगण, रगण और गुरु होता है।
यव-मद्य—पु०[सं० मध्य०स०] सडाये हुए जौ के खमीर से वनी हुई शराव।
यव-मध्य—पु० [स० व० स०]१. एक प्रकार का चाद्रायण व्रत। २ पाँच दिनों मे समाप्त होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ। ३ एक प्राचीन नाप।
यव-रस—पु०[स०] जौ आदि अनाजो के दानो को पानी मे फुलाकर उनसे निकाला जानेवाला सार भाग जिसका प्रयोग मादक द्रव्य प्रस्तुत करने मे होता है और औषधो मे जिसका प्रयोग पौष्टिक तत्त्व के रूप मे होता है। (माल्ट)
यव-लास—पु०[स० व० स०] जवाखार।
यव-वर्णाभ—पु०[स० यव-वर्ण, प० त०, यववर्ण-आभा, व० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।
यव-शर्करा—स्त्री०[स०] रासायनिक प्रक्रिया से जौ से वनाई जानेवाली चीनी। (माल्टोज)
यव-शूक—पु०[स० प० त०+अच्] जवाखार।
यव-श्राद्ध—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का श्राद्ध जो वैशाख के शुक्ल पक्ष मे कुछ विशिष्ट दिनो और योगो मे तथा विषुव सक्राति अथवा अक्षय तृतीया के दिन होता है। इसमे जौ के आटे का व्यवहार होता है।
यवस—पु०[स०√ यु +असच्]१ घास। २. भूसा।
यवागू—पु०[स० यु+आगृच्]१ जौ अथवा किसी अन्य उवाले हुए अन्न का माँड। २ उक्त माँड की काँजी।
यवाग्र—पु०[स० यव-अग्र, ष० त०] जौ का भूसा।
यवाग्रज—पु०[स० यवाग्र√ जन्(उत्पत्ति)+ड] १ यवक्षार। २ अजवायन।
यवास (क)—पु०[स० √यु+आस]जवासा (क्षुप)।
यविष्ठ—पु०[स० युवन्+इष्ठन्, यवादेश]१ छोटा भाई। २. अग्नि। आग। ३ ऋग्वेद के एक मत्रद्रष्टा ऋषि। अग्नियविष्ठ।
वि०१ सवसे छोटा। कनिष्ठ। २ नौजवान। युवा।
यवीनर—पु०[स०]१ पुराणानुसार (क) अजमीढ का एक पुत्र। (ख) द्विमीढ का एक पुत्र।
यवीयान्(यस्)—पु०, वि०[स० युवन्+ईयसुन्, यवादेश]=यविष्ठ।
वि०[स०] १ यव, सववी। यवका। २ यव या जौ से वना हुआ।
यव्य—पु०[स० यव+यत्]=यव-रस।
यश (स्)—पु०[स०√अश् (व्याप्ति)+असुन, युट् आगम] १. किसी सप्रदाय या समाज मे होनेवाली किसी गुणी, भले व्यक्ति आदि की नेकनामी तथा ख्याति।
मुहा०—यश कमाना या लूटना=वहुत अधिक ख्यात तथा नेकनाम होना। २. कोई काम विशेषत किसी अच्छे काम के करने का श्रेय। वड़ाई। महिमा।
क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—लेना।
मुहा०—(किसी का) यश गाना=हर जगह किसी की वडाई करते फिरना। **(किसी का) यश मानना**=कृतज्ञतापूर्वक किसी का उपकार करना।
यशद लौह—पु०[स०] ऐसा लोहा जिस पर विद्युत् की धारा की सहायता से जस्ते का पानी या ऐसा ही और कोई रासायनिक द्रव्य लगा हो, और इसी लिए जिसपर जल्दी मोरचा न लगता हो।
यशदी-करण—पु०[स० यशद] लोहे आदि धातुओ पर विद्युत्-धारा की सहायता से जस्ते का पानी या ऐसा ही और कोई रासायनिक द्रव्य लगाना जिससे उसपर मोरचा न लग सके। । (गैल्वनाइजेशन)
यशव—पु०[अ० यश्व] एक प्रकार का हरा पत्थर जो चीन और लका मे वहुत होता है। सगे-यशव।
यशम—पु०=यशव।
यशस्कर—वि०[स० यशस्√कृ+ट] जिससे यश वढता हो या मिलता हो। यश-दायक।
यशस्काम—वि०[स० व० स०](वह) जो यशस्वी होना चाहता हो। यश की कामना करनेवाला।
यशस्य—वि०[स० यशस्+यत्]=यशस्कर।
यशस्वान्—वि०[स० यशस्+मतुप] [स्त्री० यशस्वती] यशस्वी।
यशस्विनी—स्त्री०[स० यशस्+विनि+ङीप्] १ गगा। २ वन-कपास। ३ महा-ज्योतिष्मती।
वि० यशस्वी का स्त्री०।
यशस्वी (स्विन्)—वि०[स० यशस्+विनि] [स्त्री० यशस्विनी] जिसका यश चारो ओर फैला हो। कीर्तिमान्।
यशीं—वि० =यशस्वी।
यशील*—वि०[स० यश+हिं० ईल (प्रत्य०)] यशस्वी।
यशुमति*—स्त्री० दे० 'यशोदा'।
यशोदा—पु०[स० यशस्√दा (दान)+क] पारा।
यशोदा—स्त्री०[स० यशोद+टाप्]१. नद की स्त्री जिन्होने श्रीकृष्ण का लालन-पालन किया था। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।
यशोदा-नंदन—पु०[स० प० त०] श्रीकृष्ण।
यशोधर—पु०[स० यशस्+धर, प० त०]१. कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ उत्सर्पिणी के एक अर्हत् का नाम। (जैन)। ३ श्रावण मास का पाँचवाँ दिन।
यशोधरा—स्त्री०[स० यशोधर√टाप्]१. गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता का नाम। २ सावन मास की चौथी रात।
यशोधरेय—पु०[स०] यशोधरा का पुत्र, राहुल।
यशोमति, यशोमती—स्त्री० =यशोदा।
यशोमत्य—पु०[स०] एक जाति। (मार्कंडेय पुराण)

यशोमाधव—पु०[सं० यशस्-माधव, मध्य० स०] विष्णु।

यष्टव्य—वि०[सं०√यज् (देवपूजा)+तव्यत्] यज्ञ में बलि चढ़ाये जाने के योग्य।

यष्टि—स्त्री०[सं० यज्+ति]१. किसी प्रकार की छड़ी, डंडा या लाठी। २ पताका का डंडा। ध्वज। ३. पेड़ की टहनी। डाल। शाखा। ४ मुलेठी। ५ तांत। ६ बेल। लता। ६ बाँह। भुजा। ७. गले में पहनने का एक प्रकार का मोतियों का हार।

यष्टिक—पु०[सं० यष्टि+कन्] १ तीतर पक्षी। २. छड़ी, डंडा या लाठी। ३ मजीठ।

यष्टिका—स्त्री०[सं० यष्टिक+टाप्]१ हाथ में रखने की बड़ी या छोटी लाठी। २. मुलेठी। ३ बावली। वापी। ४ एक प्रकार की मोतियों की माला।

यष्टिका-भरण—पु० [सं० ष० त०] सुश्रुत के अनुसार जल को ठंडा करने का उपाय।

यष्टि-मधु—पु०[सं० ब० स०] जेठी मधु। मुलेठी।

यष्टि-यंत्र—पु०[सं०] जमीन में गाड़ी हुई वह खूंटी या छड़ी जिसकी छाया से समय का अनुमान किया जाता है।

यष्टी—स्त्री०[सं० यष्टि+ङीष्]१ गले में पहनने का एक प्रकार का हार। २ मुलेठी।

यस्क—पु०[सं०√यस् (प्रयत्न)+क्विप्+कन्] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि जो यास्क के पिता थे।

यह—सर्व०[सं० इदं] [बहु० रूप ये] किसी ऐसी वस्तु, विचार या व्यक्ति (संज्ञा) के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द जो समीप हो, वर्तमान काल का हो, अभी सोचा गया हो अथवा जिसका अभी अभी उल्लेख हुआ हो। 'वह' का विरुद्धार्थक। जैसे—यह तो सबेरे से यहाँ बैठा है।

वि० जो वर्तमान या समीप हो अथवा जिसका अभी अभी उल्लेख किया गया हो।

यह-वह—पु०[हिं०] इधर-उधर की या टाल-मटोल की बात-चीत। जैसे—मुझसे यह-वह मत करो, अपना काम देखो।

यहाँ—अव्य० [सं० इह] १ (वक्ता की दृष्टि से) इस स्थान पर। २. किसी विशिष्ट स्थान या क्षेत्र के आस-पास या चारों ओर।

पद—**हमारे यहाँ**=जहाँ हम रहते हैं वहाँ। हमारे देश में। हमारे पास। जैसे—हमारे यहाँ नौकर नहीं हैं।

यहि—सर्व० वि०[हिं० यह] १. 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिन्दी में उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २. 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, जिसका व्यवहार आगे चलकर कर्म और सम्प्रदान में ही प्राय. होने लगा था। इसको। इसे।

यहिज—सर्व० [हिं०] १ यही। २ इसी।

यहिया—पु०[इब० यहया] एक यहूदी पैगम्बर जिसने ईसा के आविर्भाव की पूर्व-सूचना दी थी और जो अन्त में मार डाला गया था।

यही—अव्य०[हिं० यह+ही (प्रत्य०)] निश्चित रूप से यह। यह ही। जैसे—यही तो मैं भी कहता हूँ।

यहूद—पु०[इब०] यहूदी लोग।

यहूदी—पु०[इब० यहूद] [स्त्री० यहूदिन]१. यहूद देश का निवासी। २. उक्त देश की एक जाति जो अब सारे संसार में फैल गई है। ३ अर्थ-पिशाच व्यक्ति।

वि० यहूद देश का। यहूद देश-संबंधी।

स्त्री०=यहूद देश की भाषा।

यहूयहू—पु०[अनु०] कबूतर की एक जाति।

याँ—अव्य०=यहाँ।

याँचना†—स्त्री०=याचना।

यांचा—स्त्री०[सं० याचना] माँगने की क्रिया। प्रार्थनापूर्वक माँगना। याचना।

यांत्रिक—पु०[सं० यन्त्र+ठक्—इक] मशीनों का रूप जाननेवाला। उनके कल-पुरजों को यथा-स्थान बैठानेवाला और उनकी मरम्मत आदि करनेवाला कारीगर। (मैकेनिक)

वि० १. यंत्र-संबंधी। २ यंत्र के रूप में होनेवाला अथवा उसके कल-पुरजों से संबंध रखनेवाला। ३. यंत्र की भाँति एक चाल से चलने या होनेवाला। यंत्रवत् चलनेवाला। (मैकेनिकल)

यांत्रिकी—स्त्री०[सं० यांत्रिक से] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र बनाने चलाने, सुधारने आदि के उपायों तथा रीतियों का विवेचन होता है। (मैकेनिक्स)

या—स्त्री०[सं०√या (गति)+क्विप्]१ योनि। २ गति। चाल। ३ गाड़ी। रथ। ४. अवरोध। रुकावट। ५. सवारी। वाहन। ६. ध्यान। ७ प्राप्ति। लाभ।

अव्य०[सं० या से फा०]१. विकल्प-सूचक शब्द। अथवा। वा। २. संबोधन का शब्द।

सर्व० १ यह। (ब्रज०) उदा०—है गति बिना विवेक एक या और कुचाली।—दीनदयाल गिरि। २. यह का वह रूप जो उसे ब्रजभाषा में कारक चिह्न लगाने के पहले प्राप्त होता है। ३ इस। उदा०—या मोहन के मैं रूप लुभानी।—मीराँ।

याक—पु०[तिब्बती ग्याक. सं० चामर] तिब्बत तथा मध्य एशिया में होनेवाला जंगली भैंसा जिसकी पूँछ का चँवर बनता है। कुछ लोग इसको पालकर इस पर बोझ भी ढोते हैं।

वि०=एक (संख्या सूचक)।

याकूत—पु०[अ० याकूत] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य रत्न। लाल।

याकूती—वि०[अ० याकूती] याकूत सम्बन्धी। याकूत का।

स्त्री० यूनानी चिकित्सा प्रणाली में एक प्रकार का पौष्टिक अवलेह या ओषधि जिसमें याकूत की भस्म मिलाई गई होती है।

याक्ष्मिक—वि०[सं० यक्ष्मा+ठक्—इक] यक्ष्मा नामक रोग से संबंध रखनेवाला। यक्ष्मा का।

याक्ष्मिकी—स्त्री०[सं० याक्ष्मिक+ङीप्] आधुनिक चिकित्सा की वह शाखा जिसमें विशिष्ट रूप से यक्ष्मा रोग के कीटाणुओं आदि का नाश करने के उपायों और सिद्धान्तों का विवेचन होता है। (थाइसियॉलोजी)

याग—पु०[सं०√यज्+घञ्] यज्ञ।

याचक—वि०[सं०√याच् (याचना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० याचिका, भाव० याचकता]१. जो माँगता हो। माँगनेवाला। २. प्रार्थी।

पु० भिक्षुक। भिखमंगा।

याचकता—स्त्री०[सं० याचक+तल्—टाप्] १ याचक होने की अवस्था या भाव। २ भिक्षावृत्ति। भिखमगी।

याचन--पु०[सं०√याच्+ल्युट्—अन]१ भीख माँगने की क्रिया या भाव। २ नम्रतापूर्वक कुछ माँगने की क्रिया या भाव।

याचना—स्त्री०[सं०√ याच्+णिच्(स्वार्थे)+युच्—अन, टाप्] कुछ माँगने के लिए किसी से नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना।
स० याचना करना। माँगना।

याचमान—वि०[सं० √याच्+शानच्, मुक् आगम] याचक।

याचिका—स्त्री०[सं० याचक+टाप्, इत्व] १ आवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र। अर्जी। २ आज-कल विशिष्ट रूप से वह प्रार्थना-पत्र जो न्यायालय के सामने उपस्थित किया जाता है। (पिटिशन)

याचित—भू० कृ० [सं०√याच्+क्त] (बात) जिसके सबध मे याचना की गई हो। जो कुछ माँगा गया हो।

याचितक—पु०[सं० याचित+कन्] वह चीज या बात जिसके सबध मे याचना की गई हो।

याचिष्णु—वि०[सं०√याच्+इष्णुच्] जो प्राय याचनाएँ करता रहता हो।

याच्य—वि०[सं०√याच्+ण्यत्] (बात) जिसके सबध मे याचना की गई हो या की जा सकती हो।

याजक—पु०[सं०√ यज्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ यज्ञ-विधियो का वह ज्ञाता जो यज्ञ कराता हो। २ यज्ञ करानेवाला। ३ राजा का हाथी। ४ मस्त हाथी।

याजन—पु०[सं० √यज्+णिच्+ल्युट्—अन] यज्ञ करने या करानेवाला।

याजि—पुं०[सं० √ यज्+इञ्] यज्ञ करनेवाला।

याजी (जिन्)—पु०[सं०√यज्+णिनि] यज्ञ करनेवाला

याजुष—वि०[सं० यजुष्+अण्] [स्त्री० याजुषी] यजुर्वेद-सम्बन्धी। पु० यजुर्वेद का ज्ञाता अथवा उसका अनुयायी।

याजूज—पु०[अ०] कुरान मे वर्णित एक प्राचीन जाति।

याजूज माजूज—पु०[अ० याजूजो माजूज] १ याजूज और माजूज नाम के दो भाई जो हजनूह के वशज कहे जाते हैं, और जिनकी सतान आगे चलकर इसी नाम की एक जाति के रूप मे प्रसिद्ध हुई थी। कहते हैं कि ये लोग बहुत ही विकट शक्तिशाली होते थे और आस-पास की जातियो पर भीषण अत्याचार करते थे। चीन की दीवार इन्ही लोगो के आक्रमण से बचने के लिए बनाई गई थी। २ दो बहुत ही उपद्रवी और परम दुष्ट व्यक्तियों का जोडा।

याज्य—वि०[सं०√ यज्+ण्यत्]१ यज्ञ कराने योग्य। २ जो यज्ञ मे किसी रूप मे दिया जाने को हो अथवा यज्ञ के काम मे आने को हो। पु० वह दक्षिणा जो यज्ञ मे मिली हो।

याज्ञ—वि०[सं० यज्ञ+अण्] यज्ञ-सबधी। यज्ञ का।

याज्ञदत्ति—पु०[सं० यज्ञदत्त+इञ्]कुबेर।

याज्ञवल्क्य—पु०[सं०√वल्क् (बोलना)+अच्, यज्ञ-वल्क, ष० त०, +यञ्]१ एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो राजा जनक के दरबार मे रहते थे और जो योगीश्वर याज्ञवल्क्य के नाम से प्रसिद्ध है। मैत्रेयी और गार्गी इन्ही की पत्नियाँ थी। ३ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वशज एक स्मृतिकार।

याज्ञसेनी—स्त्री० [सं० यज्ञसेन+अण्—ङीप्] यज्ञसेन की पुत्री। द्रौपदी।

याज्ञिक—पु० [सं० यज्ञ+ठक्—इक] १ यज्ञ करने या करानेवाला व्यक्ति। २ गुजराती ब्राह्मणो की एक जाति।

यातन—पु० [सं०√ यत् (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्—अन] १ परिशोध। बदला। २ इनाम। पारितोषिक।

यातना—स्त्री०[सं०√ यत्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१. घोर शारीरिक कष्ट। २ वह कष्ट जो नरक मे भुगतना पडता है। ३. हिंसा।

यात-याम—वि०[सं० ब० स०]१. जिसके महत्त्वपूर्ण दिन बीत चुके हों। २ जो पुराना पडने के कारण इतना निरर्थक और महत्त्वहीन हो चुका हो कि प्रस्तुत काल मे उसका कोई उपयोग न हो सकता हो। गतावधि। 'अद्यतन' का विपर्याय। (आउट आफ डेट) उदा०—'भारतेन्दु' मे कुछ लेख ऐसे भी निकले थे, जो आज भी यात-याम नही हुए हैं। —रायकृष्ण दास।

यातव्य—वि०[सं०√ या (जाना)+तव्य](पडोसी शत्रु)जिसपर सहज मे आक्रमण किया जा सकता हो। (कौ०)

याता (तृ)—स्त्री०[सं०√यत्+तृन्] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।
वि०[√ या +तृच्]१ जानेवाला। २ रथ चलानेवाला। ३. मार डालने या हत्या करनेवाला।

यातायात—पु०[सं०√ या+क्त (भावे)=यात-आयात, द्व० स०] [वि० यातायातिक]१ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते रहने की क्रिया या भाव। आना-जाना। गमनागमन। २. वह साधन जिससे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जाता है। (कम्यूनिकेशन)

यातु—वि०[सं०√ या+तु]१ जानेवाला। २ रास्ता चलनेवाला। पथिक।
पु०१ काल। २. राक्षस। ३ वायु। हवा। ४ अस्त्र। ५ यातना।

यातुघ्न—पु०[सं०यातु√ हन् (हिंसा)+टक्]गुग्गुल।

यातुधान—पु०[सं० यातु√ धा (पोषण)+युच्—अन] राक्षस।

यात्निक—पु०[सं० यत्न+ठक्—इक] एक बौद्ध सम्प्रदाय।

यात्रा—स्त्री०[सं० √या+ ष्ट्रन्—टाप्]१ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २ कही जाने के लिए चलना या निकलना। प्रयाण। प्रस्थान। ३ धार्मिक भाव से किसी तीर्थ या देव-मदिर की ओर दर्शन, पूजन आदि के उद्देश्य से जाने की क्रिया। ४ उत्सव। ५ व्यवहार। ६ आज-कल बग देश मे प्रचलित एक प्रकार का धार्मिक अभिनय, जिसमे नाचना और गाना भी रहता है।

यात्राधिदेय—पु०[सं० यात्रा-अधिदेय, सुप्सुपा स०] दे० 'यात्रा-भत्ता'।

यात्रा-भत्ता—पु०[सं०+हिं०] यात्रा करनेवाले व्यय के बदले अर्थात् कही आने-जाने के समय किये जानेवाले व्यय के बदले मे अधिकारियों, कर्मचारियो आदि को मिलनेवाला भत्ता। (ट्रैवेलिंग एलाउन्स)

यात्रावाल—पु०[सं० यात्रा+हिं० वाला(प्रत्य०)]तीर्थयात्रियो को अपने यहाँ टिकाने तथा देवदर्शन करानेवाला पडा।

यात्रिक—पु०[सं० यात्रा+ठक्—इक]१ यात्रा का प्रयोजन। कही जाने का अभिप्राय या उद्देश्य। २ यात्रा करनेवाला व्यक्ति। यात्री। ३. यात्रा के समय साथ ले जाने की सामग्री। सफर का सामान।

वि० १ यात्रा-संबंधी। यात्रा का। २. जो बहुत दिनों से चलता चला आ रहा हो। परम्परा-गत।

यात्री (त्रिन्)—पु०[सं० यात्रा+इनि]१ वह जो यात्रा कर रहा हो। २. देवदर्शन अथवा तीर्थाटन के उद्देश्य से घर से निकला हुआ व्यक्ति।

याथातथ्य—पु०[सं० यथातथ्य+ष्यञ्] यथातथ होने की अवस्था या भाव। यथार्थता।

याद.पति—पु०[सं० ष० त०]१. समुद्र। २. वरुण।

याद—स्त्री०[फा०]१ स्मरण करने की क्रिया या भाव। २ स्मरण-शक्ति। स्मृति।

क्रि० प्र०—करना।—दिलाना।—पड़ना।—रखना।—रहना।—होना।

पु०[सं० यादस्] मछली, मगर आदि जल-जंतु।

यादगार—स्त्री० [फा०] १. चिन्हानी। २ स्मारक।

यादवाश्त—स्त्री०[फा०]१ स्मरण-शक्ति। स्मृति। २ संस्मरण।

यादव--पु०[सं० यदु+अण्] [स्त्री० यादवी] १ यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।

वि० यदु-सम्बन्धी। यदु का।

यादवी—स्त्री०[सं० यादव+ङीप्]१. यदु-कुल की स्त्री। २ दुर्गा।

यादवीय—वि०[सं० यादव+छ—ईय] यादव-सम्बन्धी।

पु० किसी जाति या देश के लोगों में आपस में होनेवाला लड़ाई-झगड़ा।

यादृच्छिक-आधि—स्त्री०[सं०] गिरवी या रेहन रखी हुई वह चीज जो बिना ऋण चुकाये लौटाई न जा सके।

यादृश—वि०[सं० यत्√दृश+कञ्, आकार आदेश] जिस प्रकार का। जैसा।

यान—पु०[सं०√या +ल्युट्—अन]१. वह उपकरण या साधन जिसपर सवार होकर यात्रा की जाती अथवा माल ढोया जाता है। जैसे—गाडी, छकड़ा, रथ साइकिल आदि। ३ आकाश-यान। विमान। ३. शत्रु देश पर की जानेवाली सैनिक चढ़ाई। ४ गति। चाल।

यान-मार्ग—पु०[सं० ष० त०] ऐसा मार्ग जिससे आदमी और सवारियाँ आती-जाती हों। जैसे—सडक।

यानी—अव्य०[अ०] अर्थ या आशय यह है कि। अर्थात्।

याने—अव्य०=यानी।

यापन—पु०[सं०√ या+णिच् पुक्+युच्—अन] [भू० कृ० यापित, वि० याप्य]१. चलाना। २ समय आदि के संबंध में, व्यतीत करना। गुजारना। बिताना। जैसे—काल-यापन। ३ काम-काज के सम्बन्ध में, पूरा करना। निपटाना। ४. परित्याग करना। छोडना।

यापना—स्त्री०[सं०√या+णिच्, पुक्+युच्—अन, टाप्] १ वाहन या सवारी चलाना। हाँकना। २. वह धन जो किसी को जीविका-निर्वाह के लिए दिया जाय। ३. बरताव। व्यवहार। ४. दे० 'यापन'।

यापनीय—वि०[सं०√या+णिच्, पुक्+अनीयर्]१ यापन किये जाने के योग्य। याप्य। २ महत्त्वहीन। तुच्छ।

याप्य—वि०[सं० √या+णिच् पुक्+यत्] १ जिसका यापन हो सके या होने को हो। यापनीय। २ छिपाये जाने के योग्य। गोपनीय। ३ तुच्छ और निंदनीय। ४. रक्षित रखने के योग्य। रक्षणीय।

पु० कोई ऐसा असाध्य रोग जिसमें दीर्घकाल तक रोगी को कष्ट भोगना पड़ता है।

याफ्त—स्त्री०[फा० याफ्त] १ प्राप्ति। २. आय। ३. लाभ। ४. किसी प्रकार से अथवा किसी रूप में होनेवाली ऊपरी आमदनी। ५. रिश्वत।

याफ्तनी—वि०[फा० याफ्तनी] १. मिलनेवाला। प्राप्य। २. प्राप्त करने के योग्य। किये जाने के योग्य।

याफ्ता—वि०[फा० याफ्तः]१. पाया हुआ। जैसे—सजा याफ्ता। २. जिसने कोई विशेष अनुभव या ज्ञान प्राप्त किया हो। जैसे—तालीम याफ्ता, सोहबत याफ्ता।

याब—प्रत्य०[फा०]१. प्राप्त होनेवाला या मिलनेवाला। जैसे—दस्त-याब=हस्तगत। २. प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। जैसे—फतह-याब=फतह पानेवाला।

याबी—स्त्री०[फा०] प्राप्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

याबू—पु०[तु०]१. छोटे डील-डौल का घोड़ा जो प्रायः बोझ ढोने के काम आता है। २. टट्टू।

याभ—पु०[सं० √यभ् (मैथुन) +घञ्]मैथुन।

याम—पु०[सं०√ यम् (नियंत्रण,+घञ्] १. दिन मान का आठवाँ अंश। तीन घंटे का समय। पहर। २ काल। समय। ३. एक प्रकार के देवगण जो संख्या में बारह कहे गये हैं।

वि० यम-संबंधी। यम का।

स्त्री० यामि (रात)।

यामकिनी—स्त्री०=यामि।

याम-घोष—पु० [सं० ब० स०] १. मुर्गा। २. शृगाल। ३. पहरों की सूचना देनेवाला घंटा। घड़ियाल।

याम-घोषा—स्त्री०[सं० ब० स० +टाप्] वह घंटा जो समय की सूचना देने के लिए बजता हो। घड़ियाल।

याम-नाली—स्त्री०[सं० ष० त०]समय बतानेवाली पुरानी चाल की घड़ी।

यामल—पु०[सं० यमल+अण्]१. जुड़वाँ बच्चे। यमल। २. तन्त्र शास्त्र का एक ग्रन्थ।

यामवती—स्त्री०[सं० याम+मतुप्+ङीप्] रात। निशा।

याम-वृत्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. रात के समय चौकसी करने या पहरा देने का काम। २ उक्त काम का पारिश्रमिक।

यामाता—पु०=जामाता (दामाद)।

यामायन—पु०[सं० यम+फक्—आयन] वह जो यम के गोत्र में उत्पन्न हो।

यामार्द्ध—पु०[सं० याम-अर्द्ध, ष० त०]याम अर्थात् पहर का आधा भाग। डेढ़ घंटे का समय।

यामि—स्त्री० [सं०√या+मि]१ कुल-वधू। कुल-स्त्री। २. बहन। भगिनी। ३ रात्रि। रात। ४. पुत्री। बेटी। ५ पुत्र-वधू। ६ दक्षिण दिशा। ७ धर्म की एक पत्नी।

यामिक—पु०[सं० याम+ठक्—इक] रात के समय चौकसी करने या पहरा देनेवाला व्यक्ति।

यामिका—स्त्री०[सं० यामिक+टाप्] रात।

यामिका-पति—पु०[स०]१ चद्रमा। २ कर्पूर।
यामित्र—पु०[स० जामित्र] जन्म-कुण्डली मे लग्न से सातवाँ स्थान।
यामित्र-वेध—पु०[स० जामित्र वेध] वेधशाला।
यामित(त्ति)—स्त्री० =यामिनी।
यामिनी—स्त्री०[स० याम+इनि+ङीप्]१. रात्रि। रात। २ हलदी।
यामिनी-चर—पु०[स० यामिनी√चर्+ट]१ राक्षस। निशाचर। २. उल्लू। ३ गुग्गुल।
यामुन—वि०[स० यमुना+अण्]१. यमुना-सबधी। २. यमुना मे रहने या होनेवाला।
पु०१. यमुना के किनारे वसनेवाले लोग। २ एक प्राचीन तीर्थ। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४ एक प्राचीन जनपद। ५ एक प्राचीन वैष्णव आचार्य। ६ आँख मे लगाने का अजन या सुरमा।
यामुनेष्टक—पु०[स० यामुन-इष्टक, उपमित स०] सीसा।
यामेय—पु०[स० यामि+ढक्—एय] १ यामिका पुत्र। २ वहन का लडका। भाँजा।
याम्य—वि०[स० यम+ष्यञ्] १. यम-सवधी। यम का। २. दक्षिण दिशा का। दक्षिणी।
पु०[यामी+यत्]१ विष्णु। २ शिव। ३. यमदूत। ४. अगस्त्य ऋषि का एक नाम। ५ चन्दन। ६ भरणी (नक्षत्र)।
याम्य-द्रुम—पु०[स० कर्म० स०] सेमल का पेड।
याम्या—स्त्री० [स० याम्य+टाप्]१ दक्षिण दिशा। २. भरणी नक्षत्र।
याम्यायन—पु०[स० याम्य-अयन, कर्म० स०] दक्षिणायन।
याम्योत्तर—वि०[स० याम्य-उत्तर, सुप्सुपा स०] जो दक्षिण से उत्तर की ओर या उक्त लव मे हो।
याम्योत्तर-दिगंश—पु० [स० कर्म० स०] लवाश। दिगश। (भूगोल, खगोल)
याम्योत्तर-रेखा—स्त्री०[स० कर्म० स०] खगोल और भूगोल मे वह कल्पित रेखा जो किसी विशिष्ट स्थान (जैसे—प्राचीन भारत मे उज्जयिनी और आज-कल इगलैण्ड के ग्रीनविच नगर) के ख-स्वस्तिक से चलकर सुमेरु और कुमेरु को पार करती हुई पृथ्वी का पूरा वृत्त बनाती है। (मेरीडियन)
याम्योत्तर-वृत्त—पु०[स० मध्य० स०] याम्योत्तर रेखा से बननेवाला वृत्त। (मेरीडियन)
यायावर—पु० [स० √या (गति)+यङ्+वरच्] १. अश्वमेध का घोडा। २ वह साधु या सन्यासी जो किसी एक स्थान पर टिककर न रहता हो, बराबर घूमता-फिरता हो। ३ उक्त प्रकार के मुनियो का एक गण या वर्ग। ४ वह जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो और जो खान-पान आदि के सुभीते के विचार से अपना डेरा कभी कहीं और कभी कही लगाता हो। खाना-बदोश। (नोमड) ५ जरत्कारु मुनि का एक नाम। ६. याचना। ७ वह ब्राह्मण जिसके यहाँ गार्हपत्य अग्नि बराबर रहती हो। साग्नि ब्राह्मण।
यायी(यिन्)—वि०[स०√ या+णिनि, युक् आगम] [स्त्री० यायिनी] जानेवाला। जो जा रहा हो। गमनशील।
यार—पुं०[फा०] [भाव० यारी] १. मित्र। दोस्त। २. किसी स्त्री के विचार से उसका प्रेमी या उपपति।
यारकद—पु०[तु० यारकद]१ चीनी तुर्किस्तान का एक प्राचीन नगर। २ एक प्रकार का वेल-बूटा जो कालीन मे बनाया जाता है।
यार-बाज—वि०[फा०] [भाव० यार-बाजी] यार-बाश। (दे०)
यार-बाश—वि०[फा०] [भाव० यारबाशी]१. जिसके बहुत से मित्र हो तथा जो मित्रो मे ही अधिक समय विताता हो। २. मित्रो मे रहकर अपना जीवन हँसी-खुशी से वितानेवाला। ३. जो सब के साथ मित्रता स्थापित कर लेता हो।
यार-बाशी—स्त्री०[फा०] यार-बाश होने की अवस्था या भाव।
यारमंद—पु०[फा०] [भाव० यारमदी] निष्ठापूर्वक मित्रता का निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। सच्चा मित्र।
यारमदी—स्त्री०[फा०] सच्ची मित्रता।
यार-मार—पु०[फा०+हिं०] [भाव० यार-मारी] मित्र को समय पर धोखा देने अथवा उससे अनुचित लाभ उठानेवाला व्यक्ति।
याराना—पु०[फा० यारान]१. यार होने की अवस्था, धर्म या भाव। मित्रता। मैत्री। दोस्ती। २ पर-स्त्री और पर-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध या प्रेम।
क्रि० प्र०—गाँठना।—लगाना।
वि० मित्रो-का सा। मित्रता का।
यारि—स्त्री०[फा० यार] प्रियतमा। प्रेयसी। उदा०—हरति ताप सब द्यौस को उर लगि यारि बयारि।—विहारी।
यारी—स्त्री०[फा०]१ यार होने की अवस्था या भाव। मैत्री। मित्रता। २. पर-स्त्री और पर-पुरुष का अनुचित प्रेम या सबध।
क्रि० प्र०—गाँठना।—जोडना।
याल—स्त्री०[तु०]१ गरदन। २. घोडे की गरदन के ऊपर के लबे वाल। अयाल।
याव—वि०[स०√यु (मिश्रण)+अप्+अण्] १ यव-सम्बन्धी। यव का। २ यव या जौ से बना या बनाया हुआ।
पु०१ जौ का सत्तू। २ लाक्षा। लाख। ३ महावर।
वि०[स०√यु+अप्+अव]१ जितना। २ पूरा। सब।
अव्य०१ जब तक। २ जहाँ-तक।
यावक—पु०[स० याव+कन्]१ जौ। २ जौ का सत्तू। ३ जौ की बनाई हुई कोई चीज। ४ बोरो धान। ५ साठी धान। ६ उड़द। ७ लाक्षा। लाख। ८ महावर।
यावज्जीवन—अव्य० [स० यावत्-जीवन, अव्य० स०] जब तक जीवन रहे या हो तब तक। जन्म-भर। आजीवन।
यावत्—वि०[सं० यद्-वतुप, आत्व]१. जितना। २ सब।
अव्य० [यद्+डावतु] जहाँ तक। (इसका नित्य सबधी तावत् है।)
यावन—वि०[स० यवन+अण्] [स्त्री० यावनी] १ यवन-सबधी। यवनो का। २ मुसलमानो का।
पु० लोबान।
यावनक—पु०[स० यावन+कन्] लाल रेंड। रक्त एरड।
यावनाल—पु०[स० यवनाल +अण्] ज्वार या मक्का नामक अन्न।
यावनाली—स्त्री०[स० यावनाल+ङीप्] मक्के से बनाई हुई चीनी। ज्वार की शक्कर।

यावनी—स्त्री०[स० यावन+ङीप्] करकशालि नामक ईख। रसाल। वि० 'यावन' का स्त्री०।

यावर—वि० [फा०] [भाव० यावरी] १. सहायक। मददगार। २. पोषक।

यावरी—स्त्री०[फा०]१ यावर अर्थात् सहायक होने की अवस्था या भाव। २. पोषण।

यावशूक—पु०[स० यवशूक+अण्] जवा-खार।

यावस—पु०[स० यवस्+अण्] घास, डठलों आदि का ढेर या पूला।

यावा—वि०[तु० याव:] अनर्गल। बेहूदा।

यावास—पु०[स० यवास+अण्]यवास से बनाया हुआ मद्य। जवासे की शराब।
वि० यवास-सबधी। जवासे का।

यावी—स्त्री०[स० याव+ङीप्]१. यज्ञिनी। २. यवतिक्ता नाम की लता।

याष्टीक—पु०[स० यष्टि+ईकक्] लाठी बाँधनेवाला योद्धा। लठैत।

यास—पु०[स० √यस् (प्रयास)+घञ्]लाल धमासा।
स्त्री०[अव्य०]१. निराशा। २ निराश होने पर मन मे उत्पन्न होनेवाला खेद।
स्त्री०[फा०] चमेली।

यासमन—स्त्री०[फा० यासमीन] चमेली का फूल।

यासमीन—स्त्री०[फा०] चमेली का फूल।

यासु—सर्व०=जासु।

यास्क—पु०[स० यस्क+अण्]१ यास्क ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति। २. वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

यास्कायनि—पु०[स० यास्क+फिञ्—आयन] यास्क के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष।

याहि*—सर्व०[हिं० या+हिं] इसको। इसे।

याहू—पद [फा०] ऐ खुदा। हे ईश्वर।
पु० एक प्रकार का कबूतर जो प्राय 'याहू याहू' शब्द करता है।

यियक्षु—वि ०[स० √यज् (देवपूजा)+सन्+उ] पूजा या यज्ञ की इच्छा करनेवाला।

यियप्सु—वि०[स०√यभ्(मैथुन)+सन्+उ]मैथुन या सभोग की इच्छा रखनेवाला। सभोगेच्छुक।

यियासा—स्त्री०[स० या (जाना)+सन्+अ,+टाप्] जाने की इच्छा।

यीशु—पुं०=ईसू (ईसा मसीह)।

युंजान—पु० [स०√युंज् (योग)+शानच्] १. सारथी। २ ब्राह्मण। विप्र। ३. दो प्रकार के योगियों मे से वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो, पर मुक्त न हुआ हो।

युंजानक—पु०[स० युजान+क]युजान नामक योगी। दे० 'युजान'।

युक्त—वि०[स०√युज+क्त] [भाव० युक्ति]१ किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। २ मिश्रित। सम्मिलित। ३ नियुक्त। मुकर्रर। ४ पूरा किया हुआ। सम्पन्न। ५ उचित। ठीक। वाजिब।
पु० १. वह योगी जिसने योग का अभ्यास कर लिया हो। २. रैवत मनु का एक पुत्र ३ चार हाथ लबी एक पुरानी नाप।

युक्त-रसा—स्त्री०[स० ब० स०, +टाप्] १. गधनाकुली। नाकुली कद। २. रास्ना।

युक्त-विकर्ष—पुं०[स० ष० त०] भाषा-विज्ञान मे शब्दो के उच्चारण मे होनेवाली वह प्रक्रिया जिससे शब्दों मे रहनेवाली कोई श्रुति(दे०) किसी नए वर्ण का रूप धारण करती है।

युक्ता—स्त्री०[स० युक्त+टाप्]१ एलापर्णी २ एक प्रकार का वृत्त जिसमें दो नगण और एक मगण होता है।

युक्ताक्षर—वि०[स० युक्त-अक्षर, कर्म० स०] सयुक्त वर्ण। मिलित वर्ण।

युक्तार्थ—वि०[स० युक्त-अर्थ ब० स०] ज्ञानी।

युक्ति—स्त्री० [सं√युज्+क्तिन्] १ युक्त अर्थात् मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मिलन। योग। २. कोई कठिन काम सरलतापूर्वक करने का उपाय या ढग। तरकीब। ३ किसी तथ्य का खडन या मडन करने के लिए कही जानेवाली कोई बुद्धिसगत बात। दलील। (रीजन) ४ प्रथा। रीति। ५ न्याय। ६ कौशल। चातुरी। ७. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे किसी उपाय या कौशल से अपनी कोई चेष्टा या रहस्य दूसरे से छिपाने का उल्लेख या वर्णन होता है।

युक्तिकर—वि०[स० युक्ति√कृ (करना)+ट]=युक्ति-युक्त।

युक्ति-युक्त—वि०[स० तृ० त०] जो युक्ति की दृष्टि से ठीक हो। युक्ति-सगत। ठीक। वाजिब।

युक्तिवाद—पु०[स० ष० त०]=बुद्धिवाद।

युक्ति-शास्त्र—पु० [स० मध्य० स०] तर्क-शास्त्र।

युगंकर—वि०[स०] नया युग उपस्थित करनेवाला। युगप्रवर्त्तक। जैसे—युगकर रवीन्द्रनाथ टैगोर।

युगंधर—पु०[स० युग√धृ (धारण)+खिच्, खच्, मुम्]१ पजाब का एक प्राचीन नगर जिसका वर्णन महाभारत मे आया है। २. एक प्राचीन पर्वत। ३. गाडी का बम। ४ बैलगाडी का वह लबा बाँस जिसमे जूआ लगाया जाता है।

युग—पु०[स०√ युज् (जोडना)+घञ्, नि० सिद्धि] [वि० युगीन]१. एकत्र दो वस्तुएँ। जोडा। युग्म। २ ऋद्धि और सिद्धि नाम की दो ओषधियाँ। ३ चौसर या पासे के खेल मे एक साथ एक घर मे बैठी हुई दो गोटियाँ। ४ वंश के अनुक्रम मे कोई स्थान। पीढी। पुश्त। ५ बैलो के कधो पर रखा जानेवाला जुआ। ६ काल। समय। जैसे—पूर्व युग।
मुहा०—**युग-युग**—बहुत दिनो तक। अनत काल तक।
७. काल-गणना के विचार से कल्प के चार उप-विभागों मे से प्रत्येक —सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। (पुराण) ८ वह समय विभाग जिसमे कुछ विशिष्ट प्रकार की घटनाओ, प्रवृत्तियों आदि की बहुलता रहती है। जैसे—भारतेन्दु युग, गान्धी युग, लौह युग आदि। ९ पाँच वर्ष का वह काल जिसमे बृहस्पति एक राशि मे स्थित रहता है।
वि० जो गिनती मे दो हों।

युग-कीलक—पु०[स० ष० त०] वह लकडी या खूँटा जो बम और जुए के मिले हुए छेदों मे डाला जाता है। सैल। सैला।

युगति—स्त्री०=युक्ति।

युग-धर्म—पु०[स० प० त०] कोई ऐसा काम जो किसी विशिष्ट युग मे प्राय सभी लोग साधारण रूप से करते हो। जैसे—चोरी, झूठ, बेईमानी तो आज-कल के युग-धर्म से जान पडने लगे है।

युगपत्(द्)—अव्य०[स० युग√पद् (गति)+क्विप्] एक ही समय मे। एक ही क्षण मे। साथ-साथ।

वि० एक ही समय मे और एक साथ होनेवाला। (साइमल्टेनियस)

युग-पत्र—पु०[स० ब० स०]१. कोविदार। कचनार। २ युग्मपत्र नामक वृक्ष। ३ पहाडी आबनूस।

युग-पत्रिका—स्त्री०[स० ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व] शीशम का पेड।

युग-पुरुष—पु०[स० प० त०] अपने युग या समय का बहुत बडा महापुरुष।

युग-बाहु—वि०[स० ब० स०] जिसके हाथ बहुत लबे हो। दीर्घबाहु।

युगम*—वि०, पु०=युग्म।

युगल—पु०[स०√युज्+कलच्, कुत्व] एक साथ और एक ही गर्भ से उत्पन्न होनेवाले दो जीव। युग्म।

युगलक—पु०[स० युगल√कै (प्रतीत होना)+क] साहित्य मे वह कुलक (गद्य) जिसमे दो श्लोकों या पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय करना पडता हो।

युगलाख्य—पु०[स० युगल-आ√ख्या (प्रकथन)+क] बबूल का पेड।

युगांत—पु०[स० युग-अत, प० त०]१ प्रलय। युग का अत। २. युग का अन्तिम काल या समय। ३ प्रलय।

युगांतक—पु०[स० युगात+कन्]१ प्रलय-काल। २ प्रलय।

युगांतर—पु०[स० युग-अतर, मयू० स०]१. प्रस्तुत युग के उपरान्त आनेवाला दूसरा युग। २ कुछ और ही प्रकार का जमाना, युग या समय।

मुहा०—**युगांतर उपस्थित करना**=समय का प्रवाह पूरी तरह से बदल देना। पुरानी प्रथा की जगह नई प्रथा या रीति चलाना।

युगांशक—पु०[स० युग-अशक, प० त०] वत्सर। वर्ष।

वि० युग का विभाजक।

युगादि—पु०[स० युग-आदि, प० त०]१ सृष्टि का प्रारभ। २. युग का आरम्भ।

स्त्री०[ब० स०] दे० 'युगाद्या'।

वि० १ युग के आरम्भिक काल का। २ बहुत पुराना।

युगादिकृत्—पु०[स० युगादि√कृ(करना)+क्विप्, तुक्-आगम] शिव।

युगाद्या—स्त्री०[स० युग-आद्या, प० त०] वह तिथि जिससे युग का आरम्भ होना माना जाता है। जैसे—वैशाख शुक्ल तृतीया, कार्तिक शुक्ल नवमी, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी और पूस की अमावस्या जो क्रमात सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग की आरम्भ की तिथियाँ हैं।

युगावतार—पु०[स० युग-अवतार, प० त०] युग का अवतारी महान पुरुष। युग-स्वरूप पुरुष।

युगेश—पु०[स० युग-ईश, प० त०] फलित ज्योतिष मे, बृहस्पति के वर्ष के राशि चक्र मे गति के अनुसार पाँच पाँच वर्ष के युगो के अधिपति।

युगोपरि—वि०[स० युग-उपरि, प० त०] अपने युग या समय के विचार से जो सबसे बढकर हो।

युग्म—पु०[स०√युज् (योग)+मक्, कुत्व]१ एक ही तरह की ऐसी दो चीजें जो प्राय या सदा साथ आती या रहती हो। जोड़ा। युग। २. ऐसी दो बातें या वस्तुएँ जो मुख्यत एक दूसरी पर अवलम्बित या आश्रित हों। ३ ज्योतिष मे, मिथुन राशि। ४. दे० 'युगलक'।

युग्मक—पु०[स० युग्म+क]१ युग्म। जोडा। २, युगलक।

युग्मज—पु०[स० युग्म√जन् (उत्पत्ति)+ड] एक साथ एक ही गर्भ से उत्पन्न होनेवाले दो जीव।

वि० (ऐसे दो) जो एक साथ उत्पन्न हुए हो।

युग्म-धर्मा (धर्मन्)—वि०[स० ब० स०,+अनिच्] १ जो स्वभावत. मिलता हो। मिलनशील। २ मैथुन करना जिसका धर्म हो।

युग्मन—पु० [स० युग्म+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० युग्मित] १. १ दो चीजों को आपस मे जोड, बाँध या मिलाकर एक साथ करने की क्रिया या भाव। (कपलिंग) २ युग्म बनाने की क्रिया या भाव। (कॉनजुगेशन)

युग्म-पत्र—पु०[स० ब० स०]१. कचनार का पेड। २. भोजपत्र का पेड। ३ छितवन। ४ ऐसा पेड जिसकी शाखा मे आमने-सामने दो-दो पत्ते एक साथ होते हो। युग्मपर्ण।

युग्म-पर्ण—पु० [स० ब० स०] १ लाल कचनार। २ छतिवन। ३. दे० 'युग्मपत्र'।

युग्म-पर्णा—स्त्री०[स० ब० स०, टाप्]वृश्चिकाली।

युग्म-फला—स्त्री०[स० ब० स०, टाप्] वृश्चिकाली।

युग्मांजन—पु०[स० युग्म-अजन, कर्म० स०] स्रोताजन और सौवीरांजन इन दोनो का समूह।

युग्मेच्छा—स्त्री० [स० युग्म-इच्छा, प० त०] मैथुन या सभोग की इच्छा।

युग्य—पु०[स० युग+यत् वा√युज+क्यप् नि०]१ वह गाड़ी जिसमे दो घोड़े या बैल जोते जाते हैं। जोडी। २ वे दो पशु जो एक साथ गाड़ी मे जोते जाते हो। जोडी।

वि० जो (गाडी आदि मे) जोते जाने के योग्य हो या जोता जाने को हो।

युग्याह—पु० [सं० युग्य√वह् (ढोना)+णिच्+अण्, उप० स०] १. युग्य (दो बैलों या दो घोडोवाली गाडी) हाँकनेवाला। २ किसी प्रकार की गाडी हाँकनेवाला व्यक्ति। गाडीवान।

युत—भू० कृ०[स०√यु (मिश्रण)+क्त]१ किसी से मिला या मिलाया हुआ। युक्त। सहित। जैसे—श्रीयुत। २ जुडा या सटा हुआ।

पुं०१ प्राचीन काल की चार हाथ की एक नाप। २ एक योग जो चन्द्रमा के पाप-ग्रह के साथ होने पर होता है। (फलित ज्योतिष)

युतक—पु०[स० युत+क]१ जोडा। युग्म। २ कपडे आदि का आँचल। ३ सन्देह। शक। ४ किसी को अपना मित्र बनाना। मैत्रीकरण। ५ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का पहनावा। ६ सूप के दोनो ओर के किनारे जो ऊपर उठे हुए होते है और पीछे के उठे हुए भाग मे जोडकर बाँधे रहते हैं।

युति—स्त्री०[स० यु+क्तिन्]१ एक चीज का दूसरी चीज के साथ मिलना, लगना या सटना। २ गणित मे, दो या अधिक सख्याओं का जोड। ३. वह स्थिति जिसमे दो ग्रह या दो नक्षत्र इतने आस-पास या आमने-सामने होते है कि दोनों एक जान पड़ने लगते है। 'योग' से भिन्न। जैसे—चद्रमा और रोहिणी की युति।

विशेष—ग्रहों की 'युति' और 'योग' का अन्तर जानने के लिए देखें 'योग' का विशेष।

युद्ध—पु० [सं०√ युध् (प्रहार)+क्त] १. अस्त्र-शस्त्रों की सहायता से शत्रु सैनिकों में होनेवाली लड़ाई। रण। संग्राम। २ किसी प्रकार के साधन से आपस में होनेवाली लड़ाई। जैसे—गदा-युद्ध, मुष्टि-युद्ध, वाक्-युद्ध।

मुहा०—युद्ध माँड़ना= लड़ाई छेड़ना।

युद्धक—पु०[सं० युद्ध+क]युद्ध। लड़ाई। जैसे—युद्धक विराम।

युद्धकारी (रिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० युद्धकारिणी] जो किसी से युद्ध कर रहा हो अथवा किसी युद्ध में किसी पक्ष में सम्मिलित हो। युद्ध-रत। (बेलिजरेन्ट)

युद्ध-गान्धर्व—पु०[सं० मध्य० स०] युद्ध के समय सैनिकों को उत्साहित करने के लिए गाये जानेवाले गीत।

युद्ध-पोत—पु०[सं० ष० त०] वह बहुत बड़ा समुद्री जहाज जिसपर से सैनिक युद्ध करते हैं। (वारशिप)

युद्ध-प्राप्त—वि०[सं० स० त०] युद्ध या लड़ाई में पकड़ा या पाया हुआ। जैसे—युद्ध-प्राप्त सामग्री।

पु० युद्धबंदी।

युद्ध-बंदी—पु०=युद्धबंदी।

स्त्री०[सं०+फा०] युद्ध का बंद होना। लड़ाई बंदी।

युद्ध-भूमि—स्त्री०[सं० ष० त०] लड़ाई का मैदान। रणक्षेत्र।

युद्धमय—वि०[सं० युद्ध=मयट्]१ युद्ध-संबंधी। २. युद्ध-प्रिय।

युद्धमान—वि० [सं० युध्यमान]=युद्धकारी जो किसी न किसी से प्राय युद्ध करता रहता हो। युद्ध में रत रहनेवाला।

युद्ध-रंग—पु० [सं० ब० स०] १ कार्तिकेय। स्कंद। २. युद्धस्थल। रण-क्षेत्र।

युद्ध-लिप्त—वि० [सं० स० त०] [भाव० युद्धलिप्तता] (दल या राष्ट्र) जो सदा किसी न किसी दल या राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध ठाने रहता हो। (बेलीजरेंट)

युद्ध-बंदी—पु० [सं०] वह सैनिक जो युद्ध में जीतकर बंदी बना लिया गया हो। लड़ाई का कैदी। (प्रिजनर आफ़ वार)

युद्ध-विराम—पुं० [सं०] चलता हुआ युद्ध इस उद्देश्य से रोकना कि दोनों पक्ष आपस में संधि की बात-चीत या शर्तें तै कर सकें। (सीज़-फायर)

युद्ध-सन्नाह—पु० [सं०]

युद्ध-सार—पु० [सं० ष० त०] घोड़ा।

युद्धस्थगन—पु० [सं० ष० त०] विभिन्न पक्षों का अनिश्चित काल के लिए युद्ध बंद करना जिसके फलस्वरूप उनमें समझौते की बात-चीत हो सके। (सीज़-फायर)

युद्धाचार्य—पु० [सं० युद्ध-आचार्य, ष० त०] वह जो सैनिकों को युद्ध-विद्या की शिक्षा देता हो।

युद्धोपकरण—पु० [सं० युद्ध-उपकरण, ष० त०] लड़ाई का सामान। जैसे—गोला, बारूद, तोप-बंदूक, तीर-कमान, ढाल-तलवार, आदि।

युद्धोन्मत्त—वि० [सं० युद्ध-उन्मत्त, च० त०] १. जो युद्ध करने के लिए उतावला हो रहा हो। जिसके सिर पर युद्ध करने का भूत सवार हो। २. जो युद्ध कर रहा हो।

युधाजित्—पु० [सं०] १ केकय राजा के पुत्र का नाम। २. श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

युधान—पु० [सं०√युध्+आनच्] १ योद्धा-जाति का व्यक्ति। योद्धा। २. दुश्मन। शत्रु।

युधामन्यु—पु० [सं०] एक राजा। (महा०)

युधिष्ठिर—पु० [सं० युधि-स्थिर अलुक्, स० त०] हस्तिनापुर के राजा पांडु के सबसे बड़े पुत्र जो परम धर्म-परायण और सत्य तथा न्यायवादी थे। महाभारत के युद्ध के बाद ये हस्तिनापुर के राजा बने थे। भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इनके छोटे भाई थे।

युध्म—पु० [सं०√युध्+मक्] १. संग्राम। युद्ध। २ धनुष। ३ बाण। ४ अस्त्र-शस्त्र। ५. योद्धा। ६ शरभ।

युध्य—वि० [सं० योध्य] जिससे युद्ध किया जा सके। युद्ध के योग्य।

युनिवर्सिटी—स्त्री० [अं०] =विश्वविद्यालय।

युयु—पु० [सं०√या+यङ+डु] घोड़ा।

युयुक्षमान—वि० [सं०√युज्+सन् (द्वित्वादि+शानच्] १ मिलन या संयोग चाहनेवाला। २ परमात्माओं में लीन होने की कामना रखने वाला। मोक्ष का अभिलाषी।

युयुत्सा—स्त्री० [सं०√युध्+सन्,द्वित्वादि+टाप्] १ युद्ध करने की प्रबल इच्छा। लड़ने की अभिलाषा। २ दुश्मनी। शत्रुता। ३. वैर-विरोध।

युयुत्सु—वि० [सं० √युध्+सन्, द्वित्वादि] जिसके मन में युद्ध करने की इच्छा हो।

पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

युयुधान—पु० [सं०√युध्+कानच्, द्वित्वादि] १ इंद्र। २. योद्धा। ३ क्षत्रिय। ४. सात्यकि का एक नाम।

युरोप—पु० [अं०] पूर्वी गोलार्द्ध के तीन महाद्वीपों में से एक जो एशिया के पश्चिम में काकेशस और यूराल पर्वतों के उस पार से आरम्भ होकर इंगलैंड और पुर्तगाल तक विस्तृत है।

युरोपियन—वि० [अं०] युरोप का। युरोप संबंधी।

पु० युरोप का निवासी।

युवक—पु० [सं० युवन्+कन्] नौजवान व्यक्ति विशेषत १६ से ३५ वर्षों के बीच की अवस्था का व्यक्ति। जवान आदमी।

युव-गंड—पु० [सं० ष० त०+अच्] मुहाँसा।

युव-जन—पु० [सं०] युवकों और युवतियों का वर्ग, समाज या समूह। जैसे—देश का सारा भविष्य हमारे युवजनों पर ही अवलम्बित है।

युवति—स्त्री० [सं० युवन्+ति]=युवती।

युवती—वि० स्त्री० [सं०√यु+शतृ+ङीप्] प्राप्त-यौवना। जवान (स्त्री)।

स्त्री० १. जवान स्त्री। २ प्रियंगुलता। ३ सोनजुही। ४ हलदी।

युवतीष्टा—स्त्री० [सं० युवती-इष्टा, ष० त०] स्वर्ण-यूथिका। सोनजुही।

युवनाश्व—पु० [सं०] १ एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था तथा मांधाता का पिता था। २ रामायण के अनुसार धुंधुमार के पुत्र का नाम।

युवराई*—स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद या भाव।
पु०=युवराज।

युवराज—पु० [स० कर्म० स०, समासान्त टच्] [स्त्री० युवराजी] वह सबसे बडा राजकुमार जो अपने पिता के राज्य का वास्तविक अधिकारी होता है।

युवराजत्व—पु० [स० युवराज+त्व] युवराज का भाव या धर्म। युवराज्य।

युवराजी—स्त्री० [स० युवराज+हिं० ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। युवराज्य।

युवा (वन्)—वि० [स०√यु (मिश्रण)+कनिन्] [स्त्री० युवती] जिसकी अवस्था सोलह से लेकर पैंतीस वर्ष के अदर तक हो। जवान।

युष्मदीय—वि० [स० युष्मद्+छ—ईय] तुम लोगो का।

यूं—अव्य=यो।

यूक—पु० [सं०√यु+कन्, दीर्घ] ढील। चीलर।

यूका—स्त्री० [स० यूक+टाप्] १ एक प्रकार का पुराना परिमाण जो एक यव का आठवाँ भाग और एक लिक्षा का अठगुना होता था। २. जूं नाम का कीडा। ३ खटमल। ४ अजवायन। ५ गूलर।

यूति—स्त्री० [स०√यु+क्तिन्, नि० दीर्घ] मिलाने की क्रिया। मिश्रण। मेल।

यूथ—पु० [स०√यु+थक् नि० दीर्घ] १ एक स्थान पर इकट्ठे होकर या मिलकर चरने, घूमने-फिरने वाले आदि पशुओ का समूह। २. मनुष्यो का जत्था। ३. सैनिको का दल। ४. फौज। सेना।

यूथक—पु० [स० यूथ+कन्] दल। समूह।

यूथग—पु० [स० यूथ√गम् (गति) ड] चाक्षुष मन्वतर के एक प्रकार के देवता।
वि० यूथ या झुड मे चलने या रहनेवाला।

यूथ-नाथ—पु० [स० ष० त०] १ यूथ का स्वामी। सरदार। २ सेनापति।

यूथप—पु० [स० यूथ√पा (रक्षण)+क] १. यूथ का प्रधान सरदार। २. सेनापति।

यूथ-पति—पु० [स० ष० त०] १ झुड या दल का नेता २ सेना नायक। सेनापति।

यूथपाल—पु० [स० यूथ√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] =यूथपति।

यूथिका—स्त्री० [स० यूथ+ठन्—इक, टाप्] १ एक प्रसिद्ध पौधा जो लता के रूप मे भी होता है और जिसके सफेद रग के छोटे छोटे फूल बहुत ही सुगधित होते है। जूही। २ उक्त पौधे या लता का फूल।

यूथी—स्त्री० [स० यूथ+अच् डीप्] यूथिका।

यूनर्का—पु० [?] गरी की खली।

यूनान—पु० [अ० ग्रीक आयोनिया] युरोप का एक दक्षिणी राज्य जो प्राचीन काल मे अपनी सभ्यता, शिल्प, कला, साहित्य, दर्शन आदि के लिए प्रसिद्ध था।

यूनानी—वि० [अ०] १. यूनान देश से सबध रखनेवाला। २ यूनान देश मे होनेवाला। यूनान के लोगो का।
पु० यूनान का निवासी।
स्त्री० १. यूनान की भाषा। २. यूनान की एक प्रसिद्ध चिकित्सा-प्रणाली। हकीमी।

यूनियन—स्त्री० [अ०] दे० 'सघ'।

यूनिवर्सिटी—स्त्री० [अ०]=विश्वविद्यालय।

यूनीफार्म—पु० [अ०] वरदी।

यूप—पु० [स०√यु+प, दीर्घ] १ यज्ञ का वह खभा जिसमे बलि-पशु बाँधा जाता है। २ वह स्तम्भ जो किसी विजय अथवा कीर्ति आदि की स्मृति मे बनाया गया हो।

यूपक—पु० [स० यूप+क] १ यूप। २ लकडियो के भेद या प्रकार।

यूप-कटक—पु० [स० ष० त०] यूप मे लगा रहनेवाला लोहे का कडा या छल्ला।

यूप-कर्ण—पु० [स० ष० त०] यज्ञ के यूप का वह भाग जो घी से अभिषिक्त किया जाता था।

यूपद्रु—पु० [स० च० त०] खर (वृक्ष)।

यूप-ध्वज—पु० [स० ष० त०] यज्ञ।

यूपांग—पु० [स० यूप-अग] यूप-सबधी कोई वस्तु।

यूपा—पु० [स० द्यूत] जुआ। द्यूत कर्म।

यूपाहुति—स्त्री० [स० यूप-आहुति च० त०] यज्ञ के यूप की स्थापना के समय का एक कृत्य जिसमे यूप के उद्देश्य से आहुति दी जाती थी।

यूप्य—पु० [स० यूप+यत्] पलास।

यूरप—पु०=युरोप।

यूराल—पु० १ एक बहुत बडा पहाड जो एशिया और युरोप के बीच में है। २ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश।
स्त्री० उक्त पर्वत से निकलनेवाली एक नदी।

यूरेमस—पु० [ग्री०] १ एक ग्रीक देवता। २ हमारे सौर जगत का एक ग्रह।

यूरेनियम—पु० [अ०] शुभ्र धातु-तत्त्व जो पानी से १८७ गुना भारी होता है तथा जो आण्विक शक्ति के उत्पादन मे काम आता है।

यूरेशियन—पु० [अ० युरोप+एशिया] वह जिसके माता पिता मे से कोई एक युरोप का और दूसरा एशिया का हो।

यूरोप—पु०=युरोप।

यूरोपीय—वि० [अ० यूरोप+हिं० ईय (प्रत्य०)] युरोप सबधी। युरोप का।

यूष—पु० [स०√यूष् (हत्या)+क] १ पकाई हुई दाल का जूस या रस। २. शहतूत का पेड।

यूसुफ—पु०[अ० युसुफ] याकूब के एक पुत्र जिनकी गिनती पैगम्बरो मे होती है। ये बहुत ही सुन्दर थे अत ईर्ष्यावश इन्हे भाइयो ने दास बनाकर बेच दिया था।

यूह*—पु०=यूथ।

ये—सर्व० ['यह' का बहु०] निर्दिष्ट समीपस्थ वस्तुएँ या व्यक्ति।
वि० दो या अधिक समीपस्थ वस्तुओ, व्यक्तियो आदि का बोध कराने के लिए प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—ये लोग।

येई*—वि० सर्व०=यही।

येऊ—अव्य० [हिं० ये+ऊ (प्रत्य०)] यह भी।

येती—पु० [ने०] एक प्रकार का कल्पित जन्तु जिसके अस्तित्व का अभी तक पता नही चला है। यह बहुत ही भीषण और विशाल माना जाता है, और आजकल हिम मानव के नाम से प्रसिद्ध है।

येतो*—वि० =एती (इतना)।

येन—सर्व० [सं०] जिससे।

पद—येनकेन-प्रकारेण =किसी न किसी प्रकार। किसी भी तरह, जैसे।

पु० [जा०] एक प्रकार का जापानी सिक्का।

येमन—पु० [सं०] जीमना। खाना।

येह†—सर्व० =यह।

येहू*—अव्य० [हि० यह+हू] यह भी।

यो—अव्य० [सं० एवमेव, प्रा० एमेव, अप० एम्वि] १. इस तरह से। इस प्रकार से। इस भाँति। ऐसे। जैसे—यों काम न चलेगा। २ साधारण अवस्था या रूप में। जैसे—यों आने में वह अच्छे ही मालूम होता है।

यों-ही—अव्य० [हि० यो+ही] १. इसी रूप, तरह या प्रकार से। इसी भाँति। २ विना किसी आवश्यकता या प्रयोजन के। निरर्थक। व्यर्थ। जैसे—यह कोठरी यों-ही बंद कर दी गई है।

यो†—सर्व० =यह।

योक्तव्य—वि० [सं० √युज् (जोड़ना) +तव्य] १ जोड़े जाने अथवा जोड़े जाने के योग्य। २ नियुक्त किये जाने के योग्य।

योक्ता (क्तृ)—वि० [सं०√युज्+तृच्] १ जोड़ने, मिलाने या जोतने वाला। २ उभाड़नेवाला। उत्तेजक।

पु० गाड़ीवान।

योक्त्र—पु० [सं०√युज्+ष्ट्रन्] १ रस्सी। २ वह रस्सी जिससे गाड़ी का बैल जूए से बँधा हो। ३ रस्सी बाँधने का फंदा या जोता।

योगंधर—पु० [सं० योग√धृ (धारण) +खच्, मुम् आगम] १. शस्त्र शोधन का एक प्राचीन यत्र। २ पीतल।

योग—पु० [सं०√युज्+घञ्] १ दो अथवा अधिक पदार्थों का एक मे मिलना अथवा उन्हें एक मे मिलाना। मिलाप। मेल। २ एक मे मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मिलन। संयोग। ३. दो या अधिक चीजों या बातों का आपस मे होनेवाला सम्बन्ध या लगाव। लगाव। ४. आत्म-तत्त्व का चिंतन करते हुए ईश्वर या परमात्मा के साथ मिलकर एक होना। ५ उक्त प्रकार की साधना के उपाय, प्रणाली, स्वरूप आदि बतलानेवाला शास्त्र। विशेष दे० 'योग शास्त्र'। ६ तपस्या। ७ ध्यान। ८ आपस मे होनेवाला प्रेम और सद्भाव। ९ किसी चीज या बात का किया जानेवाला उपयोग प्रयोग, या व्यवहार। १० उपयुक्त होने की अवस्था या भाव। उपयुक्तता। ११. नतीजा। परिणाम। १२ धन और सम्पत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना १३ धन-सम्पत्ति। दौलत। १४ आमदनी। आय। १५ नफा। लाभ। १६ उपाय। तरकीब। युक्ति। १७. किसी काम या बात के लिए मिलनेवाला उपयुक्त समय या सुभीता। १८ दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। मन को इधर-उधर भटकने न देना और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे एकाग्र करना।

विशेष—महर्षि पतंजलि का मत है कि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच प्रकार के क्लेश, मनुष्य को जीवन-मरण के चक्र मे फँसाए रखते है और वह योग की साधना करके ही इन क्लेशो से बचकर ईश्वर मे मिल अथवा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। उसे संसार मे विस्तार [illegible] प्राणायाम [illegible] [illegible] यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये [illegible] है। यह भी कहा गया है कि योग के द्वारा [illegible] अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियों या विभूतियों (दे० 'सिद्धि') की प्राप्ति [illegible] है, और [illegible] हैं।

१९. [illegible] २०. [illegible] २१. [illegible] [illegible] और [illegible] २३. [illegible] कुछ विशिष्ट स्थितियाँ [illegible] किसी विशिष्ट [illegible] २५. [illegible] में, किसी [illegible] (अर्थात् [illegible]) जैसे—[illegible]।

विशेष—[illegible] दिखाई देते [illegible] [illegible] कुछ विशिष्ट [illegible] [illegible] २६. [illegible] २७. [illegible] २८. [illegible]। मिलन। २९. [illegible] चातुरी। कुशलता। ३०. [illegible] ३१. [illegible] ३२. [illegible] ३३. [illegible] आदि [illegible] ३४. [illegible] ३५. [illegible] का ज्ञान। वैद्यक। ३६. [illegible] ३७. [illegible] ३८. [illegible] (हिं० में स्त्री०)। ३९. [illegible] ४०. ईश्वर। परमात्मा।

योग-अग्नि—स्त्री० [सं० योग-अग्नि (योगाग्नि) मध्य० स०] योग और साधना मार्ग में, वह अग्नि या ज्वाला जो साधक अपने शरीर को भस्म करने के लिए अपने अंदर से उत्पन्न करता है। उदा०—जब यहि जाग अगिनि तन जरा [illegible]।—[illegible]।

योग-क्षेम—पु० [सं० द्व० स०] १. जो वस्तु अपने पास न हो उसे प्राप्त करना और जो मिल चुकी हो, उसकी रक्षा करना। २ जीवन बिताना। गुजारा करना। ३ कुशल-मंगल। खैरियत। ४. दूसरे की सम्पत्ति आदि की रक्षा। ५. मुनाफा। लाभ। ६. राष्ट्र की शान्ति और सुव्यवस्था। ७. ऐसी वस्तु जो उत्तराधिकारियों में न बाँटी गई हो अथवा न बाँटी जाती हो।

योग-चक्षु(स्)—पु० [स० व० स०] ब्राह्मण।
योगचर—पु० [स० योग√चर् (गति)+ट, उप० स०] हनुमान्।
योगज—पु० [स० योग√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप० स०] १ योग साधन की वह अवस्था जिसमे योगी मे अलौकिक वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर दिखलाने की शक्ति आ जाती है।
वि० योग से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।
योगज-फल—पु० [स० कर्म० स०] वह अक या फल जो दो अको को जोडने से प्राप्त हो। जोड। योग।
योग-तारा—पु० [स० उपमित स० ?] किसी नक्षत्र का प्रधान तारा।
योग-तत्त्व—पु० [स० ष० त०] योग का धर्म या प्रभाव।
योग दर्शन—पु० [स० मयू० स०] महर्षि पतजलि कृत 'योग-सूत्र' नामक प्रसिद्ध दर्शन-ग्रन्थ जो हमारे यहाँ के छ दर्शनो मे से एक है।
विशेष—यह समाधि, साधन, विभूति और कैवल्य नामक चार पदो या भागो मे विभक्त है। इसमे योग अर्थात् ईश्वर-प्राप्ति के उद्देश्य, लक्षण तथा साधन के उपाय या प्रकार बतलाये गये हैं; और उसके भिन्न-भिन्न अगो का विवेचन किया गया है। इसमे चित्त की भूमियों या वृत्तियो का भी विवेचन है। इस योग-सूत्र का प्राचीनतम भाष्य वेद-व्यास का है जिस पर वाचस्पति का वार्तिक भी है।
योग-दान—पु० [स० तृ० त०] १ किसी को सहायता देना। (किसी का) हाथ बँटाना। २ योग की दीक्षा। ३ कपट-भाव से किया हुआ दान।
योग-धारा—स्त्री० [स० ष० त०] ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी।
योग-नाथ—पु० [स० ष० त०] शिव।
योग-निद्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ पुराणानुसार प्रत्येक युग के अत मे होनेवाली विष्णु की निद्रा। २ योग-साधन मे लगनेवाली समाधि। ३ रणक्षेत्र मे वीरो की होनेवाली मृत्यु।
योग-पट्ट—पु० [स० ष० त०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का पहनावा जो पीठ पर से लेकर, कमर मे बाँधा जाता था और जिसमे घुटनो तक के अग टके रहते थे। २ साधुओं का अँचला।
योग-पति—पु० [स० ष० त०] १ विष्णु। २ शिव।
योग-पदक—पु० [स० ष० त०] पूजन आदि के समय ओढा जानेवाला एक तरह का चार अगुल चौडा उत्तरीय।
योग-पाद—पु० [स० ष० त०] ऐसा कृत्य जिससे अभीष्ट की प्राप्ति होती हो। (जैन)
योग-पारग—पु० [स० स० त०] शिव।
वि० जो योग-साधन मे प्रवीण हो।
योग-पीठ—पु० [स० ष० त०] देवताओ का योगासन।
योग-फल—पु० [स० ष० त०] दो या अधिक सख्याओ का जोड।
योग-बल—पु० [स० मध्य० स०] योग से प्राप्त होनेवाला तेज या शक्ति।
योग-भ्रष्ट—वि० [स० ष० त०] जिसकी योग की साधना चित्त-विक्षेप आदि के कारण पूरी न हो सकी हो या बीच मे ही खडित हो गई हो। योग-मार्ग से च्युत।
योगमय—पु० [स० योग+मयट्] विष्णु।
योग-माता(तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] १ दुर्गा। २ पीवरी।
योग-माया—स्त्री० [स० मयू० स०] १ दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो मे ईश्वर या ब्रह्म की वह माया जिससे नाम, गुण और रूप से युक्त यह सारी सृष्टि बनी है और जिसके अन्दर ईश्वर या ब्रह्म का तत्त्व छिपा हुआ व्याप्त है। २ पुराणानुसार यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जिसे वसुदेव ले जाकर देवकी के पास रख आये थे और जिसके बदले मे श्रीकृष्ण को उठा लाये थे। कस ने इसी को देवकी की सतान समझकर जमीन पर पटककर मार डालना चाहा था, और यही अष्टभुजा देवी का रूप धारण करके कस को चेतावनी देती हुई ऊपर उठकर आकाश मे विलीन हो गई थी।

योग-मूर्तिधर—पु० [स० ष० त०] १ शिव। २ पितरो का एक गण या वर्ग।
योग-यात्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह योग जो यात्रा के लिए उपयुक्त हो।
योग-योगी(गिन्)—पु० [स० मध्य० स०] वह योगी जो योगासन लगाकर बैठा हो।
योग-रंग—पु० [स० ब० स०] नारगी।
योग-रथ—पु० [स० ष० त०] योग साधन का उपाय या मार्ग।
योग-राज-गुग्गुल—पु० [स० मध्य० स०] ओषधियो के योग से बना हुआ एक प्रसिद्ध औषध जिसमे गुग्गुल प्रधान है। (वैद्यक)
योग-रूढ़ि—स्त्री० [स० मध्य० स०] दो शब्दो के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोडकर कोई विशेष अर्थ बतावे।
योग-रोचना—स्त्री० [स० मध्य० स०] इद्रजाल करनेवालो का एक प्रकार का लेप।
योगवान् (वत्)—पु० [स० योग+मतुप्] [स्त्री० योगवती] योगी।
योग-वासिष्ठ—पु० [स० मध्य० स०] वेदातशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रथ जो वसिष्ठ जी का बनाया कहा जाता है।
योगवाह—पु० [स० योग√वह (ले जाना)+णिच्+अण्, उप० स०] अनुस्वार और विसर्ग।
योगवाही (हिन्)—पु० [स० योग√वह+णिनि] वह माध्यम जिसमे औषध आदि मिलाकर खाई जाती हो। जैसे—तुलसी या पान को पत्ती का रस, शहद आदि।
योग-विक्रय—पु० [स० तृ० त०] धोखे या बेईमानी के द्वारा होनेवाली बिक्री।
योगविद्—पु० [स० योग√ विद् (ज्ञान)+क्विप्] १ योग शास्त्र का ज्ञाता। २ वह जो ओषधियो के योग से द्रव्य प्रस्तुत करना जानता हो। दवाएँ बनानेवाला। ३ जादूगर। ४ शिव।
योग-विद्या—स्त्री० [स० ष० त०] १ वह विद्या या शास्त्र जिसमे योग सम्बन्धी क्रियाओं का विवेचन होता है। २ दे० 'योगदर्शन'।
योग-वृत्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०] चित्त की वह शुद्ध और शुभ वृत्ति जो योग के द्वारा प्राप्त होती है।
योग-शक्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ योग के द्वारा प्राप्त होनेवाली शक्ति। २ साहित्य मे योग शब्द(देखें) का अर्थ प्रकट करनेवाली शक्ति।
योग-शब्द—पु० [स० मध्य० स०] ऐसा शब्द जिसका प्रचलित या मान्य अर्थ व्युत्पत्ति से प्रकट तथा स्पष्ट होता है।
योग-शरीरी (रिन्)—पु० [स० ष० त०] योगी।
योग-शास्त्र—पु० [स० ष० त० या मध्य० स०] १ दे० 'योग-विद्या'। २ दे० 'योग-दर्शन'।

योग-शास्त्री (स्त्रिन्)—पुं० [सं० योगशास्त्र+इनि] योगशास्त्र का ज्ञाता।

योग-शिक्षा—स्त्री० [सं० ष० त०] एक उपनिषद्।

योग-संसिद्धि—स्त्री० [सं० ष० त०] योग-सिद्धि।

योग-सत्य—पुं० [सं० तृ० त०] किसी प्रकार के योग के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाला नाम। जैसे—दंड का योग होने पर 'दंडी' योग-सत्य होता है।

योग-सार—पुं० [सं० ष० त०] १. रोगमुक्त तथा स्वस्थ करनेवाला उपचार या उपाय। २ तपस्या।

योग-सिद्ध—पुं० [सं० तृ०त०] वह जिसने योग की सिद्धि प्राप्त कर ली हो। सिद्ध योगी।

योग-सिद्धि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. योग का साधन। २. वह अवस्था जिसमें योग साधन करनेवाला अपने किसी व्यापार द्वारा अभीष्ट सिद्ध करता है।

योग-सूत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] =योग-दर्शन।

योगांग—पुं० [सं० योग-अंग, ष० त०] योग के निम्न आठ अंगों में से हर एक—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योगांजन—पुं० [सं० योग-अंजन, मध्य० स०] १. आँखों का एक प्रकार का अंजन या प्रलेप जिसको आँखों में लगाने से अनेक रोग दूर होते हैं। २ दे० 'सिद्धांजन'।

योगांतराय—पुं० [सं० योग-अन्तराय, ष० त०] योग में विघ्न डालनेवाली आलस्य आदि दस बातें।

योगांता—स्त्री० [सं० योग-अंत, ब० स०-टाप्] बुध की एक गति जिसका भोगकाल आठ दिनों का होता है तथा जो मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों को प्राप्त करती है।

योगाकर्षण—पुं० [सं० योग-आकर्षण, ष० त० ?] वह शक्ति जिससे परमाणु परस्पर जुड़े हुए तथा अविभाज्य माने जाते हैं।

योगागम—पुं० [सं० योग-आगम, मध्य० स०] योग-दर्शन।

योगाचार—पुं० [सं० योग-आचार, ष० त०] १. योग का आचरण। योग-साधन। २ बौद्धों का एक संप्रदाय जो महायान की दो शाखाओं में से एक है तथा जिसका मत है कि पदार्थ जो दिखाई पड़ते हैं, वे शून्य हैं।

योगात्मा (त्मन्)—पुं० [सं० योग-आत्मन्, ब० स०] योगी।

योगानुशासन—पुं० [सं० योग-अनुशासन, मध्य० स०] योग-दर्शन।

योगाभ्यास—पुं० [सं० योग-अभ्यास, ष० त०] योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान या साधन।

योगाभ्यासी (सिन्)—पुं० [सं० योगाभ्यास+इनि] योग की साधना करनेवाला योगी।

योगारंग—पुं० [सं० योग-आरंग, तृ० त०] नारंगी।

योगाराधन—पुं० [सं० योग-आराधना, ष० त०] योग की क्रियाओं का अभ्यास करना। योगसाधन।

योगारूढ़—पुं० [सं० द्वि० त०] वह योगी जिसने इंद्रिय-सुख आदि की ओर से अपना चित्त हटाकर योगाभ्यास आरंभ कर दिया हो।

योगासन—पुं० [सं० योग-आसन, ष० त०] योग-साधन के लिए विहित आसन अर्थात् बैठने के ढंग या मुद्राएं।

योगित—भू० कृ० [सं० योग, इतच्] १. जिसपर योग का अभिचार हुआ हो या किया गया हो। २. वश-भूत किया हुआ। ३ सम्मोहित किया हुआ। ४ पागल।

योगिता—स्त्री० [सं० योगिन्+तल्—टाप्] योगी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

योगित्व—पुं० [सं० योगिन्+त्व] =योगिता।

योगि-दंड—पुं० [सं० ष० त०] बेंत।

योगि-निद्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] योगी की नींद। झपकी।

योगिनी—स्त्री० [सं० √युज् (योग)+णिनि—ङीप्] १. योग की साधना करनेवाली स्त्री। योगाभ्यासिनी। २. एक प्रकार की देवियाँ जिनमें चौंसठ मुख्य मानी गई हैं। ३ एक विशिष्ट प्रकार की देवियाँ जिनकी संख्या आठ कही गई है। ४ एक प्रकार की पिशाचिनी। ५ जादूगरनी। ६. आषाढ़ कृष्ण एकादशी। ७. पुराणानुसार एक लोक। ८ दे० 'योग-माया'।

योगिनी चक्र—पुं० [सं० मध्य० स०] तंत्र-शास्त्र में, योगिनियों की स्थिति सूचित करनेवाला एक तरह का चक्र। उस चक्र से यह जाना जाता है कि योगिनियाँ किधर या किस दिशा में है।

योगिया—पुं० १. दे० 'योगी'। २ =जोगिया (राग)।

योगिराज—पुं० [सं० ष० त०] योगियों में श्रेष्ठ बहुत बड़ा योगी।

योगींद्र—पुं० [सं० योगिन्-इंद्र, स० त०] बहुत बड़ा योगी।

योगी (गिन्)—पुं० [सं० √युज्+घिनुण्] १. दुःख, सुख आदि को समान भाव से ग्रहण करनेवाला व्यक्ति। आत्मज्ञानी। २ वह जो योग की साधना करता हो। ३ महादेव। शिव।
वि० जुड़ा हुआ। संयुक्त।

योगीनाथ—पुं० [सं० योगिनाथ] महादेव। शंकर।

योगीश—पुं० [सं० योगिन्-ईश, ष० त०] १ योगियों के स्वामी। २. बहुत बड़ा योगी। ३ याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगीश्वर—पुं० [सं० योगिन्-ईश्वर, ष० त०] १ योगियों में श्रेष्ठ। २ महादेव। ३. याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगीश्वरी—स्त्री० [सं० योगिन्-ईश्वरी, ष० त०] दुर्गा।

योगेंद्र—पुं० [सं० योग-इंद्र, ष० त०] १. बहुत बड़ा योगी। २ वैद्यक में एक प्रकार का रसौषध।

योगेश—पुं० [सं० योग-ईश, ष० त०] =योगीश।

योगेश्वर—पुं० [सं० योग-ईश्वर, ष० त०] १ परमेश्वर। २. महादेव। शिव। ३ श्रीकृष्ण। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५ बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वरत्व—पुं० [सं० योगेश्वर+त्व] योगेश्वर का भाव या धर्म।

योगेश्वरी—स्त्री० [सं० योग-ईश्वरी, ष० त०] १. दुर्गा। २ शाक्तों की एक देवी जो दुर्गा का एक विशिष्ट रूप है। ३. कर्कोटकी।

योगेष्ट—पुं० [सं० योग-इष्ट, स० त०] सीसा नामक धातु।

योग्य—वि० [सं० √युज्+णिच्, यत् ये योग+यत्] [भाव० योग्यता] १ जिसमें सोचने-विचारने तथा कुछ विशिष्ट प्रकार के कामों को सुचारु रूप से करने-धरने की सहज क्षमता या क्रियाशीलता हो। काबिल। लायक। (एबुल) २ विद्या-संपन्न तथा धीमान्। ३ अनेक प्रकार की युक्तियाँ जानने और उनका उपयोग करनेवाला। ४ उचित। ठीक। मुनासिब। ५ जो किसी कार्य, पद आदि के लिए

उपयुक्त हो। पात्र। ६. (भूमि) जो जोतने के लिए उपयुक्त हो। ७ योग करने अर्थात् जोडनेवाला। ८ दर्शनीय। सुन्दर। ९ आदरणीय। मान्य।

पु०१ पुष्य नक्षत्र। २ ऋद्धि नामक औषधि। ३ गाडी, छकडा, रथ, आदि सवारियाँ। ४ चन्दन।

योग्यता—स्त्री०[स० योग्य+तल्+टाप्]१ योग्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता या और कोई ऐसा गुण या सामर्थ्य जिससे कोई व्यक्ति किसी काम, पद या वात के लिए उपयुक्त सिद्ध हो सके। काबिलीयत। ३ बडप्पन। महत्ता। ४ औकात। शक्ति। सामर्थ्य। ५ अनुकूल या उपयुक्त होने की अवस्था या भाव। ६ गुण। सिफत। ७ इज्जत। प्रतिष्ठा। ८ साहित्य मे, अर्थ-बोध के विचार से वाक्य के तीन गुणों मे से एक गुण जिनका अस्तित्व उस दशा मे माना जाता है, जिसमे वाक्य के अर्थ या आशय की ठीक सगति बैठती है अथवा उसका आशय उपयुक्त अथवा संभव जान पडता है।

योग्यत्व—पु०[स० योग्य+त्व]=योग्यता।

योग्या—स्त्री०[स० योग्य+टाप्]१ कोई काम करने का अभ्यास। मश्क। २. सूर्य की स्त्री। ३ स्त्री।

योजक—वि०[स०√युज्+णिच्+ण्वुल्—अक]जोडने या मिलानेवाला। पु० भूडमरूमध्य।

योजन—पु०[स०√ युज्+णिच्+ल्युट्—अन] १ जोडने, मिलाने आदि की क्रिया या भाव। योग। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ दूरी नापने की एक पुरानी नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती थी।

योजन-गंधा—स्त्री०[स० व० स०, टाप्] १. व्यास की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती का एक नाम। २ सीता। ३. कस्तूरी।

योजन-गंधिका—स्त्री० [स० योजनगंधा+क+टाप्—इत्व] योजनगंधा।

योजन-पर्णी—स्त्री०[स० व० स०, ङीप्] मजीठ।

योजन-वल्ली—स्त्री०[स० व० स०] मजीठ।

योजना—स्त्री०[स०√युज्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ योग होना। मिलना। २ प्रयोग। व्यवहार। ३ किसी भावी कार्य के निष्पन्न करने का प्रस्तावित कार्य-क्रम। ऐसी रूप-रेखा जिसके अनुसार कार्य किया जाने को हो। (प्लैनिंग) ४. बनावट। रचना। ५ स्थिरता। ६ प्रबंध।

योजना-आयोग—पु०[स० ष० त०] वह प्रशासकीय सस्था जो राजकीय योजनाओं का सचालन करती है। (प्लैनिंग कमीशन)

योजनालय—पु०[स० योजना-आलय, ष०त०] वह भवन जिसमे योजनाएँ बनाई जाती हैं।

योजनीय—वि०[स०√युज्+अनीयर्]१ जो मिलाने के योग्य हो। २ जो जोडा या मिलाया जाने को हो। ३. जो किसी काम या वात मे लगाये जाने के योग्य हो।

योजिका—स्त्री० [स० योजक+टाप्, इत्व] लेखन शैली मे विशिष्ट समस्त पदो के बीच मे लगाया जानेवाला चिह्न। (हाइफन) जैसे—जीवन-ज्योति, पति-पत्नी आदि मे का चिह्न।

योजित—भू० कृ०[स०√युज्+णिच्+क्त]१. जिसकी योजना की गई हो। २ योजना के रूप मे लाया हुआ। ३ जोडा या मिलाया हुआ। ४. किसी काम या वात मे लगाया हुआ। ५ बनाया या रचा हुआ। रचित। ६. नियमो आदि से बँधा हुआ। नियमबद्ध।

योजी (जिन्)—पु०[स०√युज्+णिनि]वह तत्त्व या पदार्थ जो दो या अधिक अन्य तत्त्वों या पदार्थों को मिलाता हो।

वि० मिलानेवाला। (कनेक्टिव)

योज्य—वि०[स०√युज्+णिच्+यत्]१. जोडे या मिलाये जाने के योग्य। २ व्यवहार मे लाये जाने के योग्य।

पु० गणित मे जोडी जानेवाली सख्याएँ।

योत्र—पु० [स० यु (मिश्रण) +ष्ट्रन्] वह रस्सी जिससे बैल को गरदन मे जूआ बाँधा जाता है। जोत।

योद्धव्य—वि० [स०√ युध् (प्रहार) +तव्य] जिसमे युद्ध करना हो या युद्ध किया जाने को हो।

योद्धा(द्धृ)—पु०[सं० युध+तृच्] वह जो युद्ध करता हो। युद्ध करने-वाला सिपाही या सैनिक। (वारियर)

योध—पु०[स०√युध्+अच्] योद्धा। सिपाही।

योधक—पु०[सं०√ युध्+ण्वुल्—अक] योद्धा। सिपाही।

योधन—पु०[स०√ युध्+ल्युट्—अन]१ युद्ध की सामग्री। लडाई का सामान। २ युद्ध। लड़ाई।

योधा†—पु०=योद्धा।

योधि-वन—पु०[स० ष० त० स०] एक प्राचीन जगल या वन।

योधी (धिन्)—पु०[स०√ युध+णिनि]योद्धा। वीर।

योध्य—वि०[सं०√युध्+ण्यत्]१, जिसके साथ युद्ध किया जा सके। २ (कार्य या वात) जिसे आधार या कारण मानकर युद्ध करना हो।

योनल—पु०[सं० यव-नाल, ब० स०, पृषो० सिद्धि] ज्वार या मक्का नामक अन्न। यवनाल।

योनि—स्त्री०[स०√ यु (मिश्रण) +नि]१ स्त्री की जननेंद्रिय। गर्भा-शय और भग। २ स्त्री जाति के जीवों, पदार्थों आदि का वह अंग जिससे वे अपना वंश बढाने के लिए अपने ही वर्ग के अन्य जीव, पदार्थ आदि उत्पन्न करते हैं। ३ देह। शरीर। ४. उक्त के आधार पर जीवों, पदार्थों आदि के अलग अलग वर्ग या विभाग। जैसे—पक्षियों, पशुओं, मनुष्यों या वृक्षों की योनि मे जन्म लेना।

विशेष—हमारे यहाँ के पुराणो मे कुल चौरासी लाख योनियाँ कही गई हैं। जैसे मनुष्यो की चार लाख, पशुओं की तीन लाख, पक्षियों की दस लाख, कीडे मकोडो की ग्यारह लाख आदि आदि।

५ वह जिससे कोई वस्तु उत्पन्न हो। उत्पादक-कारण। ६ जन्म। ७ उत्पत्ति या उद्गम का स्थान। ८ आकर। खान। खानि। ९ जल। पानी। १० अंतःकरण। ११ पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

योनि-कंद—पु० [स० ष० त०] योनि मे होनेवाली एक तरह की गाँठ जिसमें से मवाद या रक्त बहता रहता है।

यौनिक—वि०[स० योनि+हि० क (प्रत्य०)] १ योनि-सबंधी। यौन। २. जिसमे योनि अर्थात् स्त्री-पुरुष या पति-पत्नीवाले सम्बन्ध की कोई वात हो (सेक्सी)

योनिज—वि० [सं० योनि√जन् (उत्पत्ति)+ड] जिसने योनि से जन्म लिया हुआ हो। अंडज से भिन्न।
पुं० योनि से उत्पन्न जीव या प्राणी।

योनि-देवता—पुं० [सं० ब० स०] पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र।

योनि-दोष—पुं० [सं० ष० त०] उपदंश रोग। गरमी। आतशक।

योनि-फूल—पुं० [सं० योनि+हिं० फूल] योनि के अंदर की वह गाँठ जिसके ऊपर एक छेद होता है।

योनि-भ्रंश—पुं० [सं० ष० त०] योनि का एक रोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है।

योनि-मुक्त—वि० [सं० पं० त०] जो किसी योनि में न हो अर्थात् जो जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति पा चुका हो।

योनि-मुद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तांत्रिक पूजन आदि के समय उँगलियों से बनाई जानेवाली योनि की आकृति।

योनि-यंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] कामाक्षा, गया आदि कुछ विशिष्ट तीर्थ स्थानों में बना हुआ एक प्रकार का बहुत ही संकीर्ण मार्ग, जिसमें होकर निकलने पर मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है।

योनि-वाद—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत में एक नास्तिक दार्शनिक सम्प्रदाय।

योनिवादी (दिन्)—वि० [सं० योनिवाद√इनि] योनिवाद-संबंधी। योनिवाद का।
पुं० योनिवाद का अनुयायी व्यक्ति।

योनि-शूल—पुं० [सं० ष० त०] योनि में होनेवाली पीड़ा।

योनिशूलघ्नी—स्त्री० [सं० योनिशूल√ हन् (हिंसा)+टक्+ङीप्] शतपुष्पा।

योनि-संकर—पुं० [सं० तृ० त०] वर्ण-संकर।

योनि-संकोचन—पुं० [सं० ष० त०] १. योनि को सिकोड़ने की क्रिया। २ ऐसी दवा जिसके प्रयोग से योनि का मुख छोटा हो जाता या सिकुड़ जाता हो।

योनि-संभव—वि० [सं० योनि-सम√भू (होना)+अप्, उप० स०] जो योनि से उत्पन्न हुआ हो। योनिज।

योनि-संवरण—पुं० [सं० ष० त०] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग जिसमें गर्भाशय का द्वार रुक जाता या बंद हो जाता है और जिससे दम घुटने के कारण अन्दर का बच्चा मर जाता है।

योन्यर्श—पुं० [सं० योनि-अर्श, मध्य० स०] योनिकंद। (दे०)

योम—पुं० [अ० यौम] १. दिन। रोज। २. तारीख। तिथि।

योरोप—पुं०=युरोप।

योरोपियन—पुं०=युरोपियन।

योषा—स्त्री० [सं०√ यु+स+टाप्] नारी। स्त्री। औरत।

योषित—स्त्री० [सं०√युष्+इति]=योषा।

योषिता—स्त्री० [सं० योषित+टाप्] स्त्री। नारी।

योषित्प्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] हल्दी।

यों—अव्य० दे० 'यों'।

यौ—सर्व०=यह।

यौक्तिक—वि० [सं० युक्ति+ठक्—इक] १ युक्ति के रूप में होनेवाला। युक्तिसंगत। युक्तियुक्त। ठीक। २ जो क्रीडा, विनोद आदि में साथ रहता हो। नर्मसखा। ३ क्रीडा। विनोद।

यौगंधर—पुं० [सं० युगन्धर+घञ्] अस्त्रों को विफल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगंधरायण—पुं० [सं० युगन्धर+फक्—आयन] १. वह जो युगंधर के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। २ उदयन का एक मन्त्री।

यौग—पुं० [सं० योग+अण] योग-दर्शन का अनुयायी।
वि० योग-सम्बन्धी। योग का।

यौगक—वि० [सं० योग+कन्] योग-संबंधी। योग का।

यौगिक—वि० [सं० योग+ठञ्—इक] १ योग अर्थात् जोड़ से संबंध रखनेवाला। २ योग अथवा जोड़ के रूप में अथवा योग के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—यौगिक पद।
पुं० १. व्याकरण में प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २ दो शब्दों के योग या मेल से बना हुआ पद। ३ छन्दशास्त्र में, अट्ठाइस मात्राओं वाले छंदों की संज्ञा।

यौजनिक—वि० [सं० योजन+ठञ्—इक] १ योजन-सम्बन्धी। योजन का। २. एक योजन तक जानेवाला।

यौतक—पुं० [सं० युतक+अण्] यौतुक। दहेज।

यौतुक—पुं० [सं० यौतु+कण्] १ विवाह के समय का मिला हुआ धन। दहेज। २ चढ़ावा। ३ उपहार।

यौथिक—वि० [सं० यूथ+ठक्—इक] १ यूथ-संबंधी। समूह का। २ यूथ या झुंड में रहनेवाला (जीव या प्राणी)।

यौथिकी—स्त्री० [सं० यूथ से] वैष्णव भक्तों के अनुसार ऐसी गोपियों का वर्ग जो किसी समय ऋषि-मुनियों के रूप में रहकर तपस्या कर चुकी थीं, और उसके फलस्वरूप अब श्रीकृष्ण के नित्य साथ रहकर लीला करती है।

यौद्धिक—वि० [सं० युद्ध+ठक्—इक] युद्ध-संबंधी।

यौधेय—पुं० [सं० योध+ढञ्—एय] १ योद्धा। २ युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम। ३ प्राचीन भारत की एक योद्धा जाति जो आधुनिक हरियाने के आस-पास रहती थी और जिसका उल्लेख पाणिनि तक ने किया है। ४. उक्त जाति के रहने का प्रदेश जो आज-कल के हरियाने के आस-पास था।

यौन—वि० [सं० योनि+अण्] [भाव० यौनता] १ योनि-संबंधी। २ पुरुष और स्त्रियों की जननेंद्रियों से संबंध रखनेवाला। जैसे—यौन विज्ञान, यौन संसर्ग आदि। ३ जिसमें योनि या स्त्रीलिंग और पुंलिंग का भेद हो। जैसे—यौन वनस्पतियाँ या पेड़-पौधे।
पुं० उत्तरापथ की एक प्राचीन जाति जिसका उल्लेख महाभारत में है।

यौनकी—स्त्री० [सं० यौन से] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा या शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि स्त्रियों और पुरुषों की जननेंद्रियों की कैसी बनावट होती है, उनमें किस प्रकार यौन सम्बन्ध तथा गर्भाधान होता है आदि आदि। (सेक्सालाजी)

यौनता—स्त्री० [सं० यौन+तल्—टाप्] १ यौन होने की अवस्था या भाव। यौनभाव। २ स्त्री और पुरुष या नर और मादा के स्वतन्त्र अस्तित्व की धारणा या भाव। लिंगिता। (सेक्सुएलिटी)

यौन-विकृति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] आधुनिक मनोविज्ञान में काम-

वासना की तृप्ति के लिए उत्पन्न होनेवाली वह विकृत स्थिति जो स्वाभाविक सभोग से भिन्न और उसके विपरीत हो। जैसे—आत्मरति, समलिंगी रति, अन्य जातियो या वर्गो के जीव-जतुओ के साथ की जानेवाली रति।

यौन-विज्ञान—पु०[स० कर्म० स०]=यौनिकी।

यौवत—पु०[स० युवती+अण्, पुवद्भाव]१ युवती स्त्रियो का समूह। २ लास्य नृत्य का एक भेद जिसमे स्त्रियाँ सामूहिक रूप से नाचती हैं।

यौवतेय—पु०[स० युवती+ढक—एय] युवती स्त्री का पुत्र या सतान।

यौवन—पु०[स० युवन+अण्]१ युवा या युवती होने की अवस्था या भाव। २ अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरान्त आरम्भ होता है, और जिसकी समाप्ति पर वृद्धावस्था आती है। जवानी। ३ किसी तत्त्व या वस्तु की वह अवस्था जिसमे वह अपने पूरे ओज, जोर या बाढ पर हो। बीच का सर्वोत्तम समय। ४ युवतियो का दल या समूह। ५ दे० 'जोवन'।

यौवन-कंटक—पु०[स० स० त०]मुँहासा जो पुरुषो और स्त्रियो के चेहरे पर युवावस्था मे होता है।

यौवन-पिड़का—पु०[स० म० त०] मुँहासा।

यौवन-लक्षण—पु०[स० प०त०]१ स्त्रियो का स्तन जो उनके यौवन का लक्षण है। २ चेहरे पर की चमक। लावण्य।

यौवनाधिरूढा—वि० [स० यौवन-अधिरूढा, स० त०] युवती। जवान (स्त्री)।

यौवनाश्व—पु०[स० युवनाश्व+अण्]राजा मांधाता का एक नाम।

यौवनिक—वि० [स० यौवन+ठक्—इक] यौवन-सबधी। यौवन का।

यौवराजिक—वि०[स० युवराज+ठञ् —इक] युवराज-सम्बन्धी। युवराज का।

यौवराज्य—पु०[स० युवराज+ष्यञ्]१ युवराज होने की अवस्था या भाव। २ युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक—पु० [स० यौवराज्य-अभिषेक, स०त०] प्राचीन भारत मे वह अभिषेक और उसके मत्र आदि का कृत्य तथा उत्सव जो किसीको युवराज के पद पर प्रतिष्ठित करनेके समय होता था। युवराज के अभिषेक-कृत्य।

र

र—हिंदी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यजन जो व्याकरण और भाषाविज्ञान की दृष्टि से अतस्थ, मूर्धन्य, घोष, अल्पप्राण तथा ईषत्स्पृष्ट है।
पु० [स० रा+ड] १ अग्नि। आग। २ काम-वासना का ताप। कामाग्नि। ३ जलना, झुलसना या तपना। ४. आँच। गरमी। ताप। ५ सोना। स्वर्ण। ६ पिंगल मे रगण का सक्षिप्त रूप। ७. सितार का एक बोल।
वि० तीव्र। प्रखर।

रंक—वि० [स०√रम्(तुष्ट होना)+क] १ गरीब। दरिद्र। कगाल। २. कजूस। कृपण। ३ आलसी। ४ मट्ठर। सुस्त।

रंकु—पु० [स०√रम्+कु] १ हिरनो की एक जाति। २. उक्त जाति का हिरन जिसके पृष्ठभाग पर सफेद चित्तियाँ होती है।

रंग—पु० [स०√रग् (गति)+अच् वा√रञ्ज् (राग)+घञ्] १ किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जो उसके आकार या रूप से भिन्न होता है और जिसका अनुभव केवल आँखो से होता है। वर्ण। जैसे—नीला, पीला, लाल, सफेद या हरा रग।

विशेष—वैज्ञानिक दृष्टि से, प्रकाश की भिन्न भिन्न प्रकार की और अलग अलग लबाइयोवाली किरणो के कारण हमे रग की अनुभूति या ज्ञान होता है। जिन पदार्थों पर ऐसी किरणें पडती है, उनके रासायनिक गुण या तत्त्व भी हमे रगो का बोध कराने मे सहायक होते है। जब किसी वस्तु पर प्रकाश की किरणें पड़ती है, तब तीन प्रकार की क्रियाएँ होती है। एक तो उनका परावर्तन या पीछे की ओर लौटना, दूसरे उनका वर्तन या किसी ओर मुडना और तीसरे उस पदार्थ के द्वारा होनेवाला शोषण जिस पर प्रकाश की किरणें पड़ती है। जिन पदार्थो पर से प्रकाश किरणो का पूरा परावर्तन होता है,वे सफेद दिखाई देती है। जिन पदार्थों पर से प्रकाश परावर्तित नही होता, केवल वर्तित तथा शोषित होता है, वे बिना रग के दिखाई देते है। जैसे—शुद्ध जल। और जो पदार्थ सारा प्रकाश सोख लेते हैं, वे काले दिखाई देते हैं। प्रकाश की किरणें मुख्यत सात रगो की होती है। यथा—बैंगनी, नीली, काली या आसमानी, हरी, पीली, नारगी के रग की और लाल। इन सातो रगो का मिश्रित रूप सफेद होता है, और रग मात्र का अभाव काला दिखाई देता है। अलग अलग प्रकार के पदार्थ अलग अलग प्रकार के रग सोखते और इसी लिए अलग अलग रगो के दिखाई देते हैं।

२ कुछ विशिष्ट रासायनिक क्रियाओ से बनाया हुआ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने या रंगीन बनाने के लिए होता है। जैसे—जल-रग, तैल-रग।

क्रि० प्र०—आना।—उडना।—उतरना।—करना।—चढाना।—पोतना। —लगाना।

पद—रंग-बिरंग।

मुहा०—**रंग खेलना**=होली के दिन मे पानी मे रग घोलकर एक दूसरे पर डालना। **(किसी पर) रग डालना**=(होली मे) पानी मे रग घोलकर किसी पर डालना। **रंग निखरना**=रग का चमकीला या तेज होना और फलत सुदर जान पडना। ३ किसी पदार्थ के ऊपरी तल या शरीर का ऊपरी वर्ण। वक्ष और चेहरे की रगत। वर्ण।

क्रि० प्र०—उडना।—उतरना।

मुहा०—**रग निकलना या निखरना**=चेहरे के रग का साफ होना। चेहरे पर रौनक आना।

४ चौपड की गोटियो के खेल के काम के लिए किये हुए दो काल्पनिक विभागो मे से हर एक।

मुहा०—**रंग जमना**=चौपड मे रग की गोटी का किसी अच्छे और उपयुक्त घर मे जा बैठना, जिसके कारण खेलाडी की जीत अधिक निश्चित होती है। **रग मारना**=(क) चौपड के खेल मे किसी रंग की गोटी मारना।

(ख) लाक्षणिक रूप में, बाजी जीतना। प्रतियोगिता आदि मे विजय प्राप्त करना।

५. रूप, रंग आदि की सुदरता के कारण दिखाई देनेवाली शोभा। छवि। रौनक। जैसे—आज तो इस पर रंग है।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढना।—पकडना।—होना।

पद—**रंग है**=वाह, क्या बात है। बहुत अच्छे।

मुहा०—**रंग पर आना**=ऐसी स्थिति मे आना कि यथेष्ट शोभा या सौंदर्य दिखाई पड़े। **रंग बरसना**=शोभा या सौंदर्य का इतना आधिक्य होना कि चारो ओर यथेष्ट प्रभाव पड रहा हो।

६ शृंगारिक क्षेत्र मे होनेवाला अनुराग या प्रेम। मुहब्बत।

मुहा०—**(किसी पर) रंग देना**=किसी को अपने प्रेम पाश में फँसाने के उद्देश्य से उसके प्रति उत्कट प्रेम प्रकट करना। (बाजारू) **(किसी पर) रंग डालना**=अपनी ओर अनुरक्त करना। उदा०—सतगुरु हों महाराज मोपै साईं रंग डारा—कबीर। **(किसी के) रंग में बोंधना**=किसी पर पूर्णरूपेण अनुरक्त होना।

७. किसी पर अनुरक्त होने के कारण उसके प्रति की जानेवाली कृपा या प्रकट की जानेवाली प्रसन्नता। ८ मनोविनोद के लिए की जानेवाली क्रीडा, और उससे प्राप्त होनेवाला आनंद या मजा। उदा०—मोको व्याकुल छाँडि कै आपुन करै जु रंग।—सूर।

क्रि० प्र०—आना।—उखडना।—जमना। मचाना।—रचाना

पद—**रंगरली या रंगरलियाँ।**

मुहा०—**रंग में भंग करना**=आनद मे बाधा डालना। होते हुए आमोद-प्रमोद को ठप करना। **रंग में होना**=मन की यथेष्ट उमंग या प्रसन्नता की दशा मे होना। जैसे—आज तो यह रंग मे है। **रंग में भंग पड़ना या होना**=आनंद और हर्ष के समय कोई दु:खद घटना घटित होना या कोई बाधक बात होना। **रंग रलना**=आमोद-प्रमोद करना। क्रीड़ा या भोग-विलास करना।

९ यौवन। जवानी। युवावस्था।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढना।

मुहा०—**रंग चूना या टपकना**=पूर्ण यौवन की अवस्था मे रूप या सौंदर्य का इतना आधिक्य होना कि औरों पर उसका पूरा पूरा प्रभाव पड़ता हो।

१० गुण, महत्त्व, योग्यता, शक्ति आदि का दूसरो के हृदय पर पडनेवाला आतंक या प्रभाव। धाक। रोब।

क्रि० प्र०—उखड़ना।—जमना।

मुहा०—**रंग बाँधना**=(क) धाक या रोब जमाने के उद्देश्य से लंबी-चौडी हाँकना। (ख) प्रभावित करने के लिए व्यर्थ का आडम्बर खडा करना या ढोंग रचना। **(किसी का) रंग बिगाडना**=(क) प्रभाव या महत्त्व कम होना या न रह जाना। (ख) अभिमान चूर्ण करना। शेखी किरकिरी करना। **रंग लाना**=अपना गुण या प्रभाव दिखाना। उदा०—रंग लाएगी हमारी फाका मस्ती एक दिन।—गालिब।

११ किसी प्रकार का अद्भुत दृश्य। विलक्षण कार्य या व्यापार। जैसे—आज तो तुमने वहाँ एक रंग खड़ा कर दिया। १२ नृत्य, गीत आदि का उत्सव।

पद—**नाच-रंग।**

१३. वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। नाचने, गाने आदि के लिए बना हुआ स्थान।

पद—**रंग-देवता, रंगभूमि, रंगमंच, रंगशाला।**

१४ अवस्था। दशा। हालत। जैसे—कहो, आज-कल उनका क्या रंग है। १५ ढंग। ढब।

पद—**रंग-ढंग।**

मुहा०—**रंग काढना**=कोई नई चाल या नया ढंग अख्तियार करना। **(किसी को अपने) रंग में ढालना या रँगना**=किसी को अपने ही विचारों का अनुयायी बना लेना। प्रभाव डालकर अपना सा कर लेना।

१६. भाँति। प्रकार। तरह।

पद—**रंग-बिरंगा।**

१७. युद्ध। लड़ाई। समर।

क्रि० प्र०—ठानना।—मचाना।

१८. लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। रणभूमि।

पु० [सं०+अच्] १. राँगा नामक धातु। २. खदिर सार।

रंगई—पु० [हिं० रंग+ई (प्रत्य०)] १. धोबियो की एक जाति जो विशेष रूप से रंगीन या छापे के कपडे धोती है। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

रंग-काष्ठ—पुं० [सं० ब० स०] पतंग नामक वृक्ष की लकडी। बक्कम।

रंग-क्षेत्र—पु० [सं० ष० त०] १. अभिनय करने का स्थान। रंगस्थल। २. उत्सव आदि के लिए सजाया हुआ स्थान। रंगभूमि।

रंग-गृह—पु० [सं० ष० त०] रंगशाला। (दे०)

रंग-चर—पुं० [सं० रंग√चर (गति)+ट, उप० स०] अभिनेता। नट।

रंग-चित्र—पु० [सं० मध्य० स०] विशेष प्रकार के रंगों के घोल से कूँची या तूलिका की सहायता से बनाया हुआ चित्र। (पेन्टिंग)

रंग-चित्रक—पु० [सं० रंगचित्र+णिच्+ण्वुल्—अक] रंगचित्र बनानेवाला चित्रकार। (पेन्टर)

रंग-चित्रण—पु० [सं० रंगचित्र+णिच्+ल्युट्—अन] रंग-चित्र बनाने की कला, क्रिया या भाव। (पेन्टिंग)

रंगज—पु० [सं० रंग√जन् (उत्पत्ति)+ड] सिंदूर।

वि० रंग से उत्पन्न, निकला या बना हुआ।

रंग-जननी—स्त्री० [सं० ष० त०] लाख। लाक्षा।

रंग-जीवक—पु० [सं० रंग√जीव (जीना)+ण्वुल्—अक, उप० स०] १. चित्रकार। २ अभिनेता। नट।

रंग-ढंग—पुं० [सं०+हिं०] १ गति-विधि आदि की प्रवृत्ति या स्वरूप। जैसे—इसका रंग-ढंग ठीक नहीं दिखाई देता। २. आचरण, व्यवहार आदि का प्रकार या रूप। तौर-तरीका। जैसे—अब वह धीरे-धीरे अपना रंग-ढंग बदल रहा है। ३ ऐसी दशा, बात या लक्षण जो किसी भावी व्यापार या स्थिति का सूचक हो। आसार। जैसे—आज तो आकाश मे वर्षा का रंग-ढंग है।

रंगत—स्त्री० [सं० रंग+हिं० त (प्रत्य०)] १. रंग से युक्त होने की अवस्था या भाव। २ किसी रंगीन पदार्थ की दिखाई पडनेवाली रंग की झलक। ३ किसी विलक्षण काम या बात मे आनेवाला आनंद या मजा। ४ अवस्था। दशा। हालत। ५ वे कपड़े जो रँगने के लिए

आये हो या रंगे जाने को हो। (रंगरेज) ६ छाप। प्रभाव।
मुहा०--(किसी की किसी पर) रंगत चढ़ना=किसी के विचारो या रहन-सहन आदि का प्रभाव किसी दूसरे पर लक्षित होना।

रंगतरा—पु० [हिं० रग] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारगी। सगरा।

रंगद—पु० [स० रग+√दा (काटना)+क] १ सोहागा। २. खदिर सार।

रंगदा—स्त्री० [स० रगद+टाप्] फिटकरी, जिससे रग पक्का होता है।

रंगदानी—स्त्री० [हिं० रग+फा०दानी] वह प्याली जिसमे चित्रकार आदि किसी चीज पर लगाने के लिए अपने सामने रग रखते हैं।

रंगदुनी—पुं० [?] खरगोश की तरह का एक प्रकार का पहाडी जन्तु जो हिमालय के ऊँचे पर्वतो पर रहता है। रंगरूट।

रंगदृढा—स्त्री० [स० उपमि० स०] फिटकरी, जिससे रग पक्का होता है। रगदा।

रंग-देवता—पु० [स० ष० त०] रग-भूमि के अधिष्ठाता।

रग-द्वार—पु० [स० ष० त०] १ रगमच का प्रवेश-द्वार। २. नाटक की प्रस्तावना।

रंगन--पु० [देश०] एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष जिसके हीर की लकडी कड़ी, चिकनी और मजबूत होती है। कोटा गधल।

रँगना—स० [स० रग+हिं० ना (प्रत्य०)] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज किसी एक या अनेक रगो से युक्त हो जाय। जैसे—(क) धोती या साडी रँगना। (ख) दीवार या छत रँगना। (ग) चित्र रँगना।
मुहा०—रँगे हाथ या रँगे हाथो पकड़ा जाना=अपराधी या दोपी का ठीक अपराध करते समय पकडा जाना।
२ लेखन मे, वहुत अधिक लिखना विशेपत लीपा-पोती करना। जसे—कापी या किताव रँगना। ३. किसी को अपने प्रेम मे फँसाना। अनुरक्त करना। ४. किसी को अपने अनुकूल वनाने के लिए अपने मतलव की वातें वतलाना या समझाना अथवा और किसी प्रकार अपने अनुकूल वनाना। ५ किसी के शरीर, विशेपत. सिर पर ऐसा भीषण आघात करना कि उसमे से रक्त की धार वहने लगे। (गुण्डे) ६ किसी को अपने प्रभाव से युक्त करना।
अ० १. रग से युक्त होना। २ किसी के प्रेम मे लिप्त होना। किसी पर आसक्त होना।
सयो० क्रि०—जाना।

रंगपत्री—स्त्री० [स० व० स० ङीप्] नीली (वृक्ष)।

रंग-पीठ—पु० [स० ष० त०] रगशाला।

रंगपुरी—स्त्री० [रगपुर=वगाल का एक नगर] एक तरह की छोटी नाव, जिसके दोनो ओर की गलही एक सी होती है।

रंग-पुष्पी—स्त्री० [स० व० स० ङीप्] रगपत्री। (दे०)

रंग-प्रवेश—पु० [स० स० त०] अभिनय के निमित्त रगमच पर अभिनेता या नट का आना।

रंग-वदल—पु० [हिं० रंग+वदलना] हल्दी। (सावू)

रंगवाज—वि० [स०+फा०] १. दूसरो पर अपना आतक जमानेवाला। रग वांधनेवाला। २. मौज-मस्ती करनेवाला। आनद मनानेवाला।

रंगवाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] १ रगवाज होने की अवस्था या भाव। २. चौसर का एक विशेप प्रकार का खेल जो स्त्री और पुरुष मिलकर खेलते हैं, और जो विशेप नियमो या प्रतिवधो के कारण अपेक्षाकृत अधिक कठिन होता है। ३ ताश का एक प्रकार का खेल।

रंग-वाती—स्त्री० [हिं०रग+वत्ती] शरीर मे लगाई जानेवाली सुगधित वस्तुओ की वत्ती।

रंग-विरंग(ा)—वि० [हिं० रंग+विरगा (अनु०)] १. कई रगो का। २ कई तरह या प्रकार का। भाँति-भाँति का। जैसे—रग-विरगे कपडे।

रंग-भरिया—पु० [हिं०] दीवारो, छतो आदि पर रग पोतने का काम करनेवाला कारीगर।

रंगभवन—पु० [सं० ष० त०] रंगमहल।

रंग-भूति—स्त्री० [सं० व० स०] आश्विन की पूर्णिमा।

रंग-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पर आमोद-प्रमोद के उद्देश्य से उत्सव, समारोह आदि किये जाते हैं। २ खेल-कूद, तमाशे आदि का स्थान। क्रीडास्थल। ३ नाटक खेलने का स्थान। रगमच। ४ कुश्ती लडने का अखाड़ा। ५ युद्ध-क्षेत्र। लडाई का मैदान।

रंग-भौन--पु०=रग-भवन (रगमहल)।

रंग-मंच—पु० [स० ष० त०] १ वह ऊँचा उठा हुआ स्थान जहाँ पर पात्र अभिनय करते है। २ लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसा स्थान जिसे आधार वनाकर कोई काम किया जाय।

रंग-मंडप—पु० [स० ष० त०] नृत्यशाला।

रंग-मल्ली—स्त्री० [स० च० त०] वीणा। वीन।

रंग-महल—पुं० [हिं०+अ०] १ भोग-विलास करने का महल। २. अंत पुर।

रंगमाता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] १ कुटनी। २. लाक्षा। लाख।

रंग-मातृका—स्त्री० [स० रगमातृ+कन्—टाप्] =रगमाता।

रंग-मार—पु० [हिं० रग+मारना] ताश का एक प्रकार का खेल।

रंग-रली—स्त्री० [हिं० रग+रलना] आमोद-प्रमोद। आनद। क्रीडा। चैन। मौज। (प्राय वहुवचन रूप मे प्रयुक्त)
क्रि० प्र०—मचना।—मनाना।

रंग-रस—पु० [हिं० रग+रस] आमोद-प्रमोद। आनद-मगल।

रंग-रसिया—पु० [हिं०] १. वह व्यक्ति जिसकी प्रवृत्ति सदा आमोद-प्रमोद के कार्यो मे रमती हो। २ विलासी पुरुष।

रंग-राज—पुं० [स० ष० त०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

रंगरूट—पु० [अ० रिक्रूट] १ पुलिस, सेना आदि मे भर्ती हुआ नया व्यक्ति। २ नौसिखुआ।

रंगरुड़ा† वि० [स० रग+हिं० रुढ (प्रत्य०) सुदर। उदा०—नहिं भावै थाँरो देस लड़ो रगरुडो।—मीराँ।

रंगरेज—पु० [फा० रँगरेज] [स्त्री० रँगरेजिन] वह जो कपडे रँगने का व्यवसाय करता हो।

रंगरेली†—स्त्री०=रगरली।

रंगरैनी—स्त्री० [हिं० रग+रैनी=जुगनू] रगी हुई लाल चुनरी।
रंग-लासिनी—स्त्री० [स० रग√लस् (शोभित होना)+णिच्+णिनि+ङीप्] शेफालिका।
रंगवा†—पु० [देश०] चौपायो का एक रोग।
रंगवाई—स्त्री० [हिं० रँगवाना] रँगवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। स्त्री०=रँगाई।
रँगवाना—स० [हिं० रँगना का प्रे०] रँगने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को रँगने मे प्रवृत्त करना।
रंग-विद्याधर—पु० [स० ष० त०] १. अभिनेता। नट। २. नृत्य-कला मे, कुशल नर्तक। ३ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)
रंगबीज—पु० [स० ब० स०] चाँदी।
रंग-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १. भोग-विलास का स्थान। २. वह स्थान जहाँ दर्शको को अभिनेतागण या नट लोग अपना अभिनय या करतब दिखाते हो। ३ नाट्यशाला।
रंगसाज—पु० [फा० हिं० रग+फा० साज] [भाव० रगसाजी] १ उपकरणो के योग से तरह-तरह के रग तैयार करनेवाला कारीगर। २ मेज, कुरसी, किवाड़, आदि पर रग चढानेवाला कारीगर। (पेंटर)
रंगसाजी—स्त्री० [हिं० रग+फा० साजी] १ रगने की कला या विद्या। २ रगसाज का काम, पेशा या भाव।
रंग-स्थल—पु० [स० ष० त०] १ आमोद-प्रमोद के लिए नियत स्थान। २ रगशाला।
रंग-स्थापक—पु० [स० ष० त०] कोई ऐसी चीज जिसकी सहायता से रंग, पतले पत्तर आदि दूसरी चीजो पर चिपक या जम जाते हो। (मारडेंट)
रंगांगण—पु० [स० रग-अगण, ष० त०] नाट्यशाला। २ रगभूमि।
रंगांगा—स्त्री० [स० रग-अग, ब०, स०-टाप्] फिटकरी।
रँगाई—स्त्री० [हिं० रग+आई (प्रत्य०)] रँगने का काम, पेशा, भाव या मजदूरी।
रंगाजीव—पु० [स० रग-आ√जीव् (जीना)+अण्] वह जिसकी जीविका का आधार रग सम्बन्धी काम हो। जैसे—रगसाज, रँगरेज आदि।
रँगाना—स० [हिं० रँगना का प्रे०] रँगवाना। दे०।
रँगामेजी—स्त्री० [फा०] १ किसी चीज मे यथास्थान तरह-तरह के रग भरने का काम। २ तरह-तरह की चीजें एक साथ बनाने या रखने की क्रिया या भाव। उदा०—रगामेजी का खेल जब हो तो क्यो न सब सृष्टि बने अनुरागी।—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'। ३. किसी बात को रोचक बनाने के लिए उसमे अपनी तरफ से भी कुछ बातें बढाना।
रंगारंग—वि० [हिं०] १. बहुत से रगोवाला। ३ अनेक प्रकार का। तरह-तरह का। जैसे—रगारग कपड़े या खिलौने।
पु० आकाश-वाणी का एक प्रकार का कार्यक्रम जिसमे अनेक प्रकार के गीत सुनाये जाते है।
रंगार—पु० [देश०] १ वैश्यो की एक जाति या वर्ग। २ राजपूतो की एक जाति या वर्ग।
रगारि—पु० [स० रग-अरि, ष० त०] कनेर।
रगालय—पु० [सं० रग-आलय, ष० त०] रगभूमि। रगशाला।
रंगावट—स्त्री० [हिं० रग+आवट (प्रत्य०)] १ रँगे हुए होने का भाव। २ वह झलक या आभा जो किसी रँगे हुए वस्त्र आदि मे से प्रकट होती है।
रंगावतारक—पु० [स० रग-अवतारक, ष० त०] १. रँगरेज। २ अभिनेता। नट।
रंगावतारी (रिन्)—पु० [स० रग-अव√तॄ (पार करना)+णिनि] अभिनेता। नट।
रंगासियार—पु० [हिं०] ऐसा व्यक्ति जो ऊपर से तो भला लगता हो परन्तु हो बहुत बडा चालाक और धूर्त।
रगिया†—पु० [हिं० रंग+इया (प्रत्य०)] १ कपडे रंगनेवाला। रगरेज। २. रगसाज।
रंगी—स्त्री० [स० रग+अच्+ङीप्] १ शतमूली। २. कैवर्त्तिकी लता।
वि० [हिं० रग] १ विनोदशील प्रकृति का। २ मनमौजी।
रंगीन—वि० [फा०] १ जिस पर कोई रग चढ़ा हो। रँगा हुआ। रगदार। जैसे—रगीन साड़ी, रगीन चित्र। २. जिसकी प्रकृति या स्वभाव मे विनोद, विलास आदि तत्वों की प्रधानता हो। आमोदप्रिय और विलासी। ३. चमत्कारपूर्ण तथा विलासमय। जैसे—रगीन तबीयत, रगीन महफिल।
रंगीनबाजी—स्त्री०=रँगबाजी (चौसर का खेल)।
रगीनी—स्त्री० [फा०] १ रगीन होने की अवस्था या भाव। २ बनाव-सिगार। सजावट। ३. प्रकृति या स्वभाव से रसिक और विनोदप्रिय होने की अवस्था या भाव।
रगीरेटा—पु० [देश०] एक प्रकार का जंगली वृक्ष जो दारजिलिंग मे अधिकता से होता है।
रंगीला—वि० [हिं० रग+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रँगीली] १. जिसकी प्रकृति या स्वभाव मे रसिकता, विनोदशीलता आदि बातें मुख्य रूप से हो। रसिक-प्रकृति। रसिया। २ कई रगो से युक्त होने के कारण आकर्षक और मनोहर लगनेवाला। जैसे—रगीले छैल खेलै होरी।
रंगीली टोडी—स्त्री० [हिं० रगीला+टोडी (रागिना)] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।
रँगैया—पु० [हिं० रग+ऐया (प्रत्य०)] रँगनेवाला।
रंगोपजीवी (विन्)—पु० [स० रग-उप√जीव् (जीना)+णिनि] अभिनय आदि के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला।
रंगोली†—स्त्री० [स० रगवल्ली] साँझी का वह रूप जो महाराष्ट्र मे प्रचलित है। (देखे 'साँझी')
रंगौंधी—स्त्री० [हिं० रग+औंधी (अधा से) प्रत्य०] आँखो का वह रोग जिसमे रोगी रग या वर्ण नही पहचान सकता। वर्णान्धता। (कलर ब्लाइन्डनेस)
रंगौनी*—स्त्री० [हिं० रग] लाल रग की एक प्रकार की चुनरी।
रंच-रंचक—वि० [स० न्यच, प्रा० णच] थोडा। अल्प। तनिक।
रंज—पु० [फा०] [वि० रजीदा] १ मन मे होनेवाला दुख। मानसिक दुख। २ मृतक का शोक। ३ अप्रसन्नता। नाराजगी।
रंजक—वि० [सं०√रज्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ रगनेवाला। २ प्राय. आनद-मगल करने और प्रसन्न रहनेवाला।

पु० [स०] १. रगसाज। २ रँगरेज। ३. ईंगुर। ४. भिलावाँ। ५. मेहदी। ६ सुश्रुत के अनुसार पेट की एक अग्नि जो पित्त के अतर्गत मानी जाती है।

स्त्री० [हि० रची=अल्प] १ वह थोडी सी बारूद जो वत्ती लगाने के वास्ते वंदूक की प्याली पर रखी जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

मुहा०—रंजक उड़ाना=वदूक या तोप की प्याली मे वत्ती लगाने के लिए वारूद रखकर जलाना। (प्याली का) **रंजक चाट जाना**=तोप या वदूक की प्याली मे रखी हुई वारूद का यो ही जलकर रह जाना और उससे गोला या गोली न छूटना। **रंजक पिलाना**=तोप या वदूक की प्याली मे रजक रखना।

२ गाँजे, तमाखू या सुलफे का दम। (बाजारू)

मुहा०—रंजक देना=गाँजे आदि का दम लगाना।

३ वह वात जो किसी को भडकाने या उत्तेजित करने के लिए कही जाय।

४ किसी प्रकार का ऐसा चटपटापूर्ण या और कोई पदार्थ जिसके सेवन से शरीर मे तत्काल स्फूर्ति आती हो।

रंजन—पु०[स०√रज्+ल्युट्—अन] १ रगने की क्रिया या भाव। २. वे पदार्थ जिनसे रग निकलते या वनते हो। ३. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। ४ शरीर मे का पित्त नामक तत्त्व। ५ लाल चन्दन। ६ मूज। ७ सोना। स्वर्ण। ८ जायफल। ९. कमीला नामक वृक्ष। १०. छप्पय छद के पचासवें भेद का नाम।

वि० [स्त्री० रजना] चित्त प्रसन्न करनेवाला। जैसे—चित्त-रजन।

रंजनक—पु०[सं० रजन+कन्] कटहल।

रँजना*—स०[स० रजन]१ रजन करना। २ मन प्रसन्न करना। आनदित करना। ३. मन लगाकर किसी को भजना या वार वार स्मरण करना। ४ दे० 'रँगना'।

वि० स्त्री० रजन करनेवाली।

रंजनी—स्त्री०[स० रंजन+ङीप्] १ ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति (सगीत)। २ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी। ३. नीली नामक पौधा। ४. मजीठ। ५ हलदी। ६ पर्पटी। ७ नागवल्ली। ८ जतुका लता। पहाडी।

रंजनीय—वि० [स०√रज्+अनीयर]१ जो रँगे जाने के योग्य हो। २ जिसका चित्त प्रसन्न किया जा सकता हो या किया जाने को हो।

रंजा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली जिसे उलवी भी कहते है।

रंजित—भू० कृ० [स० √रज्+क्त]१ जिस पर रग चढा या चढ़ाया गया हो। रगा हुआ। २ जिसका चित्त प्रसन्न किया गया हो या हुआ हो। ३ किसी के अनुराग या प्रेम मे पगा हुआ। अनुरक्त।

रंजिश—स्त्री०[फा०]१. किसी की ओर से मन मे वैठा हुआ रज। २ किसी के प्रति होनेवाली अप्रसन्नता या नाराजगी। ३ आपस मे होनेवाला मन-मुटाव या वैमनस्य।

रंजीदगी—स्त्री०[फा०] रजीदा होने की अवस्था या भाव।

रंजीदा—वि०[फा०]रजीद १ जिसे रज हो। दु खित २. अप्रसन्न। नाराज।

रंझना—अ०[स० रजन]१ रंग से युक्त होना। रजित होना। २ फलना-फूलना। जैसे—वृक्षो का रझना। ३ सपन्न, समृद्ध या सुखी होना। ४ स्थायी या स्थिर होना।

रंड—वि०[स०√रम् (क्रीडा)+ड]१. धूर्त्त। चालाक। २ विकल। वेचैन।

रंडक—पु०[स० रड+कन्]ऐसा पेड़ जो फूलता-फलता न हो।

रँडवा†—पु०=रँडुआ।

रंडा—वि० स्त्री०[स० रड+टाप्] राँड़। विधवा। वेवा।

पु०=रँडुआ। (पश्चिम)

रँडापा—पु०[हि० राँड+आपा (प्रत्य०)]१ राँड अर्थात् विधवा होने की दशा या भाव। २ राँड के रूप मे विताया जानेवाला समय।

रंडाश्रमी (मिन्)—पु० [स० रड+आश्रम ष० त०, रंडाश्रम+इनि] ४८ वर्ष से अधिक की अवस्था मे होनेवाला रँडुआ।

रडिया†—स्त्री० =राँड। २= रडी।

रंडी—स्त्री०[स० रडा]१ वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो। राँड। विधवा(पश्चिम) २. ऐसी स्त्री जो विधवा होने पर व्यभिचार से अपनी जीविका चलाती हो। ३. धन लेकर सभोग करानेवाली स्त्री। वेश्या। ४. युवती और सुन्दर स्त्री। (राज०)

रडीबाज—पु०[हि० रंडी+फा० वाज] [भाव० रंडीवाजी] वह जो प्राय रडियो के यहाँ जाकर उनसे सभोग करता हो। वेश्यागामी।

रंडीबाजी—स्त्री० [हि० रडी +फा० वाजी] १ रडीवाज होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. रडी के साथ की जानेवाली मित्रता या सभोग।

क्रि० प्र०—करना।

रँडुआ—पु०[हि० राँड+उआ (प्रत्य०)] ऐसा व्यक्ति जिसकी पत्नी मर चुकी हो और अन्य पत्नी अभी न आई हो। विधुर।

रँडुवा†—पु०=रँडुआ।

रँडोरा†—पु०=रँडुआ

रँडोरी—स्त्री०=राँड।

रता (तृ)—वि०[स० √रम् (क्रीड़ा)+तृच्] रमण करनेवाला।

रंति—स्त्री०[स० √ रम्+क्तिन्]१. केलि। क्रीडा। २ विराम।

रतिदेव—पु०[स०√रम्+तिक्, रन्तिदेव कर्म० स०] १. पुराणानुसार एक वहुत वडे दानी राजा जिन्होंने वहुत से यज्ञ किये थे। २ विष्णु का एक नाम। ३ कुत्ता।

रंतिनदी—स्त्री०[स०] चवल (नदी)।

रंतु—स्त्री०[स०√रम +तुन्]१. सडक। २ नदी।

रंतूला —पु०=रणतूर्य।

रंद—पु०[म० रध्र] १ झरोखा। रोशनदान। २ किले की दीवार मे का वह मोखा या झरोखा जिसमे से वाहर गोले फेंके जाते थे।

स्त्री०[हि० रँदना या फा०]वह छीलन जो लकडी को रँदने पर निकलती है।

रँदना—स०[हि० रदा+ना (प्रत्य०)]१ रदे से छीलकर लकडी की सतह चिकनी और समतल करना। २ छीलना। तराशना।

रंदा—पु०[स० रदन=काटना, चीरना मि० फा० रद] वढइयो का एक औजार जिससे वे लकडी की सतह छील कर चिकनी और समतल करते है।

रंधक—पु०[स० √ रध् (पाक-क्रिया)+ण्वुल्—अक]रसोई वनानेवाला। रसोइया।

वि० नष्ट करनेवाला। नाशक।

पु० मध्य युग और ब्रिटिश भारत मे वह काश्तकार जिससे रकम या धन लेने मे कोई खास रिआयत की जाती थी।

रकान--स्त्री०[?]१ तरीका। २ लगाम।

रकाब—स्त्री० [फा० रकाब]१. घोडे की काठी का झूलता हुआ पावदान जिस पर पैर रखकर घोडे पर सवार होते है और बैठने मे जिससे सहारा लेते है।

मुहा०—**रकाब पर पैर रखना**=कही जाने या चलने के लिए बिल्कुल तैयार होना।

२. दे० 'रकाबी'।

रकाबत—स्त्री०[अ०]१ रकीब होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ किसी प्रेमिका के सम्बन्ध मे उसके प्रेमियो मे होनेवाली प्रतिद्वद्विता।

रकाबदार—पु०[फा०]१. मुरब्बा, मिठाई आदि बनानेवाला कारीगर या हलवाई। २ रकाबियो मे खाना चुनने और परोसनेवाला। खान-सामा। ३ नवाबो, बादशाहो आदि के साथ उनका भोज लेकर चलने-वाला सेवक। खासाबरदार। ४ रकाब पकडकर घोडे पर सवार-करानेवाला नौकर। साईस।

रकाबा—पु०[फा० रकाब]१ बडी रकाबी। २ परात।

रकाबी—स्त्री०[फा०] छिछली गोल छोटी थाली।

वि० १ रकाब सम्बन्धी। २ रकाबी की तरह का। जैसे—रकाबी चेहरा।

रकाबी चेहरा—पु०[फा० हिं०] गोल या चौडा मुँह।

रकाबी मजहब—वि०[फा०+अ०] खुशामदी। चाटुकार।

रकार—पु०[स० र+कार] र वर्ण का बोधक अक्षर। र।

रकीक़—वि०[अ०] १ पानी की तरह पतला। तरल द्रव। २ कोमल। नरम। मुलायम।

पु० गुलाम। दास।

रक़ीब—पु०[अ०]१ वह जो किसी प्रेमिका के प्रेम के सबध मे उसके दूसरे प्रेमी से प्रतियोग करता हो। प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। २ प्रति-द्वद्वी। प्रतिस्पर्धी।

रकेबी—स्त्री०=रकाबी।

रक्कास—पु०[अ०] [स्त्री० रक्कासी] नाचनेवाला। नर्त्तक।

रक्खना—स०=रखना।

रक्त—वि०[स०√रज् (रँगना)+क्त] १ जिसका रजन हुआ हो। २ रँगा हुआ। ३ किसी के अनुराग या प्रेम से युक्त। अनुरक्त। ४ लाल रग का। सुर्ख। ५ आमोद-प्रमोद या विहार मे लगा हुआ। ६ शुद्ध और साफ किया हुआ।

पु० १ लाल रग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो नसो आदि मे से होकर सारे शरीर मे चक्कर लगाता रहता है। लहू। खून। रुधिर। शोणित। (मुहा० के लिए दे० 'खून' के मुहा०)२ उत्साहपूर्वक अग्रसर होने या आगे बढने वालो का दल या वर्ग। जैसे—काग्रेस को अब नये रक्त की आवश्यकता है। ३ केसर। ४ ताँबा। ५ कमल। ६ सिंदूर। ईंगुर। ७. लाल चन्दन। ८. लाल रग। ९ कुसुभ। १०. गुल दुपहरिया। बन्धूक। ११. पतग नामक वृक्ष की लकडी। १२ एक प्रकार का बेत। हिज्जल। १३ एक प्रकार की मछली। १४ एक प्रकार का जहरीला मेढक। १५ एक प्रकार का विच्छू। १६. अच्छी तरह पका हुआ आँवले का फल।

रक्तकंठ—पु०[स० ब० स०]१ कोयल २. बैगन। भटा।

वि० जिसका कठ या गला रक्त अर्थात् लाल हो।

रक्तकंद—पु०[स० ब० स०]१. विद्रुम। मूँगा। २ प्याज। ३. रतालू।

रक्त-कंदल—पु०[स० ब० स०] मूँगा। विद्रुम।

रक्तक—पु० [स० रक्त√कै (शब्द)+क]१. गुल दुपहरिया का पौधा और उसका फूल। बधुक। २ लाल सहिजन का पेड। ३ लाल रेड। ४ लाल कपडा। ५ लाल रग का घोडा। ६ केसर।

वि० १ रक्त वर्ण का। लाल। २ अनुरक्त। ३ विनोदप्रिय।

रक्त-कदंब—पु०[स० कर्म० स०]१ एक प्रकार का कदब जिसके फूल गहरे लाल रग के होते है। २ उक्त वृक्ष का फूल।

रक्त कदली—स्त्री०[स० कर्म० स०] चपा केला।

रक्त-कमल—पु०[स० कर्म० स०] लाल रग का कमल।

रक्त-करवीर—पु०[स० कर्म० स०] लाल रग का कनेर।

रक्त-कांचन—पु०[स० कर्म० स०] कचनार का वृक्ष। कचनाल।

रक्तकांता—स्त्री० [स०ब० स०, टाप्] लाल पुनर्नवा। लाल गदह-पूरना।

रक्त-कास—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का कास-रोग जिसमे फेफडे से मुँह के रास्ते खून निकलता है।

रक्त-काष्ठ—पु०[स० ब० स०] पतग की लकडी।

रक्त-कुमुद—पु०[स० कर्म० स०] कूँई। नीलोफर।

रक्त-कुरंडक—पु०[स० कर्म० स०] लाल कटसरैया।

रक्तकुष्ठ—पु०[कर्म० स०] विसर्प नामक रोग, जिसमे सारा शरीर लाल हो जाता है और इसमे बहुत जलन होती है और कुष्ठ की तरह अग गलने लगते हैं।

रक्त-कुसुम—पु०[स० ब० स०]१ कचनार। २ आक। मदार। ३ धामिन नामक वृक्ष। ४ फरहद। पारिभद्र।

रक्त-कुसुमा—स्त्री०[ब० स० टाप्] अनार का पेड।

रक्त-कृमिजा—स्त्री०[स० कर्म० स०√जन् (उत्पत्ति) +ड, टाप्] लाख। लाह।

रक्त-केशर—पु०[ब० स०] पारिभद्रक वृक्ष। फरहद का पेड।

रक्त कैरव—पु०[कर्म० स०] लाल कुमुद।

रक्तक्षय—पु०[स० प० त०]१ रक्त का क्षय होना। २ दे० 'रक्त क्षीणता'।

रक्त-क्षीणता—स्त्री०[सं०] शरीर की वह स्थिति जिसमे रक्त या खून की बहुत कमी हो जाती है। (एनीमिया)

रक्त-खदिर—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का खैर का वृक्ष जिसके फूल लाल रग के होते है। रक्तसार।

रक्त-गंधक—पु०[कर्म० स०] बोल नामक गध-द्रव्य।

रक्त-गत ज्वर—पु० [रक्त गत द्वि० त०, रक्त गत-ज्वर कर्म० स०] वह ज्वर जिसके कीटाणु रोगी के रक्त मे समा गये हो।

रक्त-गर्भा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] मेंहदी का पेड।

रक्त-गुल्म—पु०[मध्य० स०] स्त्रियो का एक रोग जिसमे उनके गर्भाशय मे रक्त की गाठ सी बँध जाती है।

रक्त-गैरिक—पुं०[कर्म० स०] स्वर्ण गैरिक। लाल गेरू।
रक्त-ग्रीव—पुं०[सं० ब० स०]१. कबूतर। २. राक्षस।
रक्तघ्न—पुं०[सं० रक्त √हन् (हिंसा)+टक्] रोहितक वृक्ष।
वि० रक्त का नाश करनेवाला।
रक्तघ्नी—स्त्री०[सं० रक्तघ्न+ङीप्] एक प्रकार की दूब। गंडदूर्वा।
रक्त-चंचु—पुं०[ब० स०] शुक। तोता।
रक्त-चंदन—पुं०[कर्म० स०] लाल रंग का चंदन। (दे० चंदन)
रक्त-चाप—पुं०[सं० रक्त और हिं० चाप]१. खून का जोर या दबाव। २. चिकित्सा-शास्त्र में एक रोग जो उस समय माना जाता है जब अवस्था के प्रसंग अनुपात से रक्त का दबाव या वेग घट या बढ़ गया होता है। (ब्लड प्रेशर)
रक्त-चित्रक—पुं०[कर्म० स०] लाल रंग का चित्रक या चीता वृक्ष।
रक्तचूर्ण—पुं० [कर्म० स०] १. सिंदूर। २. कमीला।
रक्तच्छर्दि—स्त्री०[ष० त०] खून की कै होना। रक्त-वमन।
रक्तज—वि०[सं० रक्त√जन् (उत्पत्ति)+ड]१. जो रक्त से उत्पन्न हो। २. (रोग) जो रक्त विकार के कारण उत्पन्न हो।
रक्तजकृमि—पुं० [कर्म० स०] वह कृमि जो रक्त-विकार के कारण उत्पन्न होता है।
रक्तजवा—स्त्री०[कर्म० स०] अड़हुल। जवा। देवीफूल।
रक्तजिह्व—पुं० [ब० स०] सिंह। शेर।
वि० लाल जीभवाला।
रक्तजूर्ण—पुं०[कर्म० स०] ज्वार। जोन्हरी।
रक्ततप्त—वि० [कर्म० स०] इतना अधिक तपा या तपाया हुआ कि देखने में लाल हो गया हो। बहुत अधिक तपा हुआ। (रेड हॉट)।
रक्ततर—पुं०[सं० रक्त+तरप्] गेरू।
रक्तता—स्त्री० [सं० रक्त+तल्+टाप्] रक्त होने की अवस्था या भाव। लाली। सुर्खी।
रक्तताप—पुं०[कर्म० स०] उस अवस्था की ताप या गरमी जब कोई चीज तपाने से लाल हो गई हो। (रेड-हीट)
रक्ततुंड—पुं०[सं० ब० स०] तोता।
रक्ततुंडक—पुं०[सं० रक्ततुंड+कन्] सीसा।
रक्ततृण—पुं०[कर्म० स०] एक प्रकार का लाल रंग का तृण।
रक्तदंतिका—स्त्री०[ब० स०, कप्+टाप्, इत्व] दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने शुंभ-निशुंभ को मारने के समय धारण किया था। चंडिका।
रक्तदंती—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्]=रक्तदंतिका।
रक्तदला—स्त्री०[ब० स०, टाप्] नालिका नामक गंध-द्रव्य।
रक्तदान बैंक—पुं०[सं० रक्तदान+अं० बैंक] वह स्थान जहाँ स्वस्थ व्यक्तियों के शरीर से निकाला हुआ रक्त इसलिए सुरक्षित रखा जाता है कि आवश्यकता पड़ने पर ऐसे रोगियों के शरीर में प्रविष्ट किया जा सके जो रक्त की कमी के कारण मरणासन्न हो रहे हों। (ब्लड बैंक)
रक्तदूषक—वि०[ष० त०] जिससे रक्त दूषित हो। खून-खराब करनेवाला।
रक्त-दृग्(श)—पुं०[ब० स०] १. कोयल। कोकिल। २. कबूतर। ३. चकोर।
वि० लाल आँखोंवाला।
रक्त-द्रुम—पुं०[कर्म० स०] लाल बीजासन वृक्ष।
रक्त-धरा—स्त्री०[ष० त०] वैद्यक के अनुसार मांस के अन्दर की दूसरी कला या झिल्ली जो रक्त को धारण किये रहती है।
रक्त-धातु—पुं०[कर्म० स०]१. गेरु। २. ताँबा।
रक्त-नयन—पुं०[ब० स०]१. कबूतर। २. चकोर।
रक्त-नाल—पुं०[ब० स०] सुसना नामक साग।
रक्त-नालिक—पुं०[ब० स०] उल्लू।
रक्त-नील—पुं०[कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला बिच्छू।
रक्त-नेत्र—पुं०[ब० स०]१. कोयल। २. सारस पक्षी। ३. कबूतर। ४. चकोर।
वि० लाल आँखोंवाला। जिसके नेत्र लाल हों।
रक्तप—वि०[सं० रक्त√पा (पान)+क] रक्त पान करने अर्थात् लहू पीनेवाला।
पुं०१. राक्षस। २. खटमल।
रक्त-पक्ष—पुं०[ब० स०] गरुड़।
रक्तपट—वि०[ब० स०] लाल रंग के कपड़े पहननेवाला।
पु० बौद्ध श्रमण।
रक्तपत्र—पुं०[ब० स०] पिंडालू।
रक्तपत्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्]१. लाल गदहपूरना। २. नाकुली।
रक्तपर्ण—पुं०[ब० स०] लाल गदहपूरना।
रक्त-पल्लव—पुं०[(सं०) ब० स०] अशोक का वृक्ष।
रक्तपा—स्त्री [सं० रक्तप+टाप्]१ जोंक। २. डाकिनी।
रक्त-पात—पुं० [ष० त०] १. लहू का गिरना या बहना। रक्तस्राव। २. ऐसी मारपीट या लड़ाई-झगड़ा जिसमें अधिक मारकाट के कारण अनेक शरीरों से खून बहता है। खून-खराबी।
रक्त-पाता—स्त्री०[सं०रक्त√पत (गिरना)+णिच्+अच्+टाप्] जोंक।
रक्त-पाद—पुं०[ब० स०]१. बरगद। २. तोता।
रक्त-पायी (यिन्)—वि०[सं० रक्त√पा+णिनि, युगागम] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। खून पीनेवाला।
पु०१. राक्षस। २. खटमल।
रक्तपारद—पुं०[कर्म० स०] हिंगुल। ईंगुर।
रक्त-पाषाण—पु०[कर्म० स०] १. लाल पत्थर। २. गेरू।
रक्त-पिंड—पुं०[उपमित स०] जवाफूल।
रक्त-पिंडक—पुं०[सं० रक्तपिंड+कन्]१. रतालू। २. अड़हुल। जवा।
रक्त-पिंडालु—पुं०[कर्म० स०] रतालू।
रक्त-पित्त—पुं०[मध्य० स०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक, कान, गुदा, योनि आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २ नाक से लहू बहने का रोग। नकसीर।
रक्तपित्तहा—स्त्री०[सं०√रक्तपित्त√हन् (हिंसा)+ड+टाप्] रक्तघ्नी नामक दूब।
रक्तपित्ती (त्तिन्)—पुं०[सं० रक्तपित्त+इनि] वह जो रक्तपित्त रोग से ग्रस्त हो।
रक्त-पुनर्नवा—स्त्री० [कर्म० स०] लाल गदहपूरना। २. वैशाखी।
रक्त-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. करवीर। कनेर। २. अनार का पेड़। ३. गुलदुपहरिया। बन्धूक। ४. पुन्नाग।

रक्त-पुष्पक—पु० [स० रक्तपुष्प+कन्] सेमल (पेड)।

रक्तपुष्पा—स्त्री० [स० रक्तपुष्प+टाप्] १. शाल्मली वृक्ष। सेमल। २. पुनर्नवा। ३. सिंदूरी। ४ चपा केला। ५ नागदौन।

रक्त-पुष्पिका—स्त्री० [सं० रक्तपुष्प+कन्-टाप्, इत्व] १. लाल पुनर्नवा। २. लजालू। लाजवंती।

रक्तपुष्पी—स्त्री० [सं० रक्तपुष्प+ङीप्] १ जवा। अड्हुल। २ नागदौन। ३. धौ। धव। ४. आवर्त्तकी लता। ५ पाढर।

रक्तपूतिका—स्त्री० [कर्म० स०] लाल रंग की पूतिका। लाल पोई।

रक्तपूरक—पु० [प० त०] इमली।

रक्त-पूर्ण—वि० [तृ० त०] खून से लथपथ।

रक्त-प्रतिश्याय—पु० [मध्य० स०] प्रतिश्याय या जुकाम का एक भेद जिसमे नाक से खून भी जाने लगता है।

रक्त-प्रदर—पु० [मध्य० स०] स्त्रियो के प्रदर रोग का वह भेद जिसमे उनकी योनि से रक्त वहता है।

रक्त-प्रमेह—पु० [कर्म० स०] दुर्गन्धियुक्त गरम, खारा और खून के रंग का पेशाव होने का एक पुरुष रोग।

रक्त-प्रवृत्ति—पु० [स० ब० स०] पित्त के प्रकोप के फलस्वरूप होनेवाला रोग।

रक्त-प्रसव—पु० [व० स०] १. लाल कनेर। २. मुचकुद वृक्ष।

रक्तफल—पु० [व० स०] १. शाल्मलि। सेमल। २. वड का पेड। वटवृक्ष।

रक्तफला—स्त्री० [व० स०, +टाप्] १. कुंदरू। तुण्टी। विंवी। २. स्वर्णवल्ली।

रक्त-फूल—पु० [सं० रक्त+हिं० फूल] १ जवा फूल। अडहुल का फूल। २ ढाक। पलास।

रक्त-फेनज—पु० [सं० रक्तफेन प० त०, रक्तफेन√जन् (उत्पन्न होना) +ड] फुफ्फुस। फेफडा।

रक्त-बीज—पु०=रक्त-वीज।

रक्त-भव—पु० [व० स०] गोश्त। मास।
वि० रक्त से उत्पन्न।

रक्त-मंजरी—स्त्री० [व० स०] लाल कनेर।

रक्त-मंडल—पुं० [व० स०] १. लाल कमल। २. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप। ३. एक जहरीला पशु।

रक्त-मत्त-वि० [तृ०त०] जो रक्त पीकर तृप्त हो। रक्त पीकर मतवाला होनेवाला।
पु० १ राक्षस। २. खटमल। ३. जोक।

रक्तमत्स्य—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार की लाल रग की मछली जो वहुत बड़ी नही होती।

रक्त-मस्तक—पु० [व० स०] लाल रग के सिरवाला सारस पक्षी।

रक्तमातृका—स्त्री० [स० रक्त-मातृ प० त०, कन्+टाप्] १ वैद्यक के अनुसार शरीर का वह रस (वातु) जिसकी उत्पत्ति पेट मे पचे हुए भोजन से होती है और जिससे रक्त वनता है। २ तत्र के अनुसार एक प्रकार का रोग।

रक्त-मुख—पु० [व० स०] १ रोहू (मछली)। २ यष्टिक धान्य।
वि० लाल मुँहवाला।

रक्तमूर्द्धा (र्द्धन्)—पुं० [व० स०] सारस।

रक्तमूलक—पुं० [व० स०, कप्] देवसर्पप नामक सरसों का पौधा।

रक्तमेह—पु०=रक्त-प्रमेह।

रक्तमोक्षण—पु० [प० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का उपचार या क्रिया जिससे शरीर का अथवा उसके किसी अग का खराव खून वाहर निकाला जाता है। फसद खोलना।

रक्त-मोचन—पु० [प० त०]=रक्त-मोक्षण।

रक्त-यष्ठि—स्त्री० [व० स०] मजीठ।

रक्तरंगा—स्त्री० [व० स०] मेहदी।

रक्त-रज (स्)—पु० [कर्म० स०] सिंदूर।

रक्त-रसा—स्त्री० [व० स०, टाप्] रास्ना (कंद)।

रक्त-रेणु—पुं० [व० स०] १ सिंदूर। २. पुन्नाग।

रक्त-रोग—पु० [मध्य० स०] १ ऐसा रोग जिसके फलस्वरूप शरीर का रक्त दूपित हो जाता है। २. रक्त के दूपित होने के कारण उत्पन्न होनेवाला रोग।

रक्तला—स्त्री० [सं० रक्त+√ला (आदान)+क+टाप्] १. काकतुडी। कौआ-ठोंठी २. गुंजा। घुंघची।

रक्तलोचन—पुं० [व० स०] १. कबूतर। २. कोयल। ३. सारस। ४ चकोर।
वि० लाल आँखोवाला।

रक्त-वटी—स्त्री० [कर्म० स०] शीतला रोग। चेचक। माता।

रक्त-वर्ग—पु० [व० स०] वैद्यक मे, अनार, ढाक, लाख, हलदी, दारुहलदी, कुसुम के फूल, मजीठ और दुपहरिया के फूल, इन सवका समूह।

रक्त-वर्ण—पु० [व० स०] १ वीरवहूटी नामक कीड़ा। २. गोमेद या लहसुनिया नामक रत्न। ३. मूँगा। ४ कमीला।
वि० लाल रग का।

रक्त-वर्तक—पु० [कर्म० स०] लाल वटेर।

रक्त-वर्द्धन—वि० [स० रक्त√वृध् (वृद्धि)+णिच्+ल्यु-अन] रक्त वढानेवाला। रक्त वर्धक।
पु० वैगन। भंटा।

रक्त-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] १ मजीठ। २ नलिका या पचारी नामक गन्ध द्रव्य। ३. दडोत्पल। ४ पित्ती नाम की लता।

रक्त-वसन—पु० [व० स०] संन्यासी।

रक्त-वह-तंत्र—पु० [स० रक्त√वह् (ले जाना)+अच् रक्तवह-तंत्र प० त०] शरीर की वे सव शिराएँ और अग, जो सारे शरीर मे रक्त पहुँचाने मे सहायक होते हैं। (सर्क्यूलेटरी सिस्टम)

रक्त-वात—पु० [मध्य० स०] वात-रक्त (दे०)।

रक्त-वालुक—पु० [व० स०] सिंदूर।

रक्त-विंदु—पु० [प० त०] १. रुधिर या लहू की वूँद। २ [व० स०] लाल चिचडा। ३ [कर्म० स०] रत्न आदि मे दिखाई पडनेवाला धव्वा जिसकी गिनती दोपो मे होती है।

रक्त-विद्रधि—पु० [मध्य० स०] रक्त-विकार के फलस्वरूप होनेवाला एक प्रकार का फोडा। इसमे किसी अग मे सूजन होती है और उसके चारो ओर काले रग की फुसियाँ हो जाती हैं।

रक्त-विस्फोटक—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गुंजा के समान लाल लाल फफोले पड़ जाते हैं।

रक्त-बीज—पुं० [ब० स०] १ लाल बीजोंवाला दाड़िम। अनार। २ रीठा। ३. शुंभ और निशुंभ का सेनापति एक राक्षस जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि धरती पर गिरनेवाली उसके रक्त की हर एक बूंद से एक एक राक्षस उत्पन्न होते थे।

रक्त-बीजा—स्त्री० [ब० स० टाप्] सिंदूरपुष्पी। सिंदूरिया।

रक्त-वृंतक—पुं० [स० कर्म० स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

रक्तवृंता—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] शेफालिका। निर्गुंडी।

रक्त-वृष्टि—स्त्री० [ष० त०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना। दे० 'रुधिर-वर्षण'।

रक्त-व्रण—पुं० [मध्य० स०] वह फोड़ा जिसमें मवाद के स्थान पर रक्त निकलता हो।

रक्त-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] शर्करा का वह तत्त्व जो शरीर के रक्त में रहता है। (ब्लड शुगर)

रक्त-शालि—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का लाल रंग का चावल। दाऊदखानी।

रक्त-शासन—पुं० [सं० रक्त√शास् (वश में करना)+ल्यु—अन] सिंदूर।

रक्त-शिग्रु—पुं० [कर्म० स०] लाल सहिजन।

रक्तशीर्षक—पुं० [स० ब० स०, कप्] १. गंधा बिरोजा। २ सारस पक्षी।

रक्त-शृंग—पुं० [कर्म० स०] हिमालय की एक चोटी।

रक्त-श्वेत—पुं० [कर्म० स०] एक तरह का अत्यधिक जहरीला बिच्छू। (सुश्रुत)।

रक्तष्ठीवि—पुं० [स० रक्त√ष्ठीव् (थूकना)+णिनि, उप० स०] एक प्रकार का घातक और असाध्य सन्निपात जिसमें मुँह से लहू आता है।

रक्त-संज्ञक—पुं० [ब०, स०, कप्] कुंकुम। केसर।

रक्त-संबंध—पुं० [ष० त०] कुलगत संबंध। एक ही कुल, परिवार या वंश की दृष्टि से होनेवाला सम्बन्ध।

रक्त-सवरण—पुं० [ष० त०] सुरमा।

रक्त-सर्षप—पुं० [कर्म० स०] लाल सरसों।

रक्त-सार—पुं० [ब० स०] १. लाल चंदन। २ पतंग। बक्कम। ३ अमलबेत। ४ खदिर। खैर। ४ वाराही कंद। गेंठी। ६ रक्त-बीजासन।

रक्त-स्तंभन—पुं० [ष० त०] शरीर के किसी अंग से बहते हुए रक्त को बंद करना या रोकना।

रक्त-स्राव—पुं० [ष० त०] १ शरीर के किसी अंग से रक्त निकलना या बहना। २. घोड़ों का एक रोग जिसमें उनकी आँखों से रक्त या लाल रंग का पानी बहता है।

रक्त-हर—पुं० [ष० त०] भिलावाँ।
वि० रक्त सुखाने या सोखनेवाला।

रक्तांग—पुं० [रक्त-अंग ब० स०] १ मंगल ग्रह। २ कमीला। ३ मूँगा। ४ खटमल। ५ केसर। ६ लाल चन्दन।
वि० लाल अंगोंवाला।

रक्तांगी—स्त्री० [सं० रक्तांग+ङीष्] १. मजीठ। २. जीवंती। ३. [illegible]।

रक्तांबर—पुं० [रक्त-अंबर कर्म० स०] १ लाल रंग का वस्त्र। गेरुआ वस्त्र। २. [ब० स०] संन्यासी, जो गेरुआ वस्त्र पहनता है।

रक्ता—स्त्री० [सं० रक्त+अच्+टाप्] १. संगीत में, पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति। २. गुंजा। घुंघची। ३ लाखा। लाख। ४. मजीठ। ५ इंद्रायण। ६ एक प्रकार का [illegible]। ७ लक्ष्मणा नामक कंद। ८ [illegible]। [illegible]। ९. एक प्रकार की मक्खी। १०. कान के पास की एक नस।

रक्ताकार—पुं० [रक्त-आकार ब० स०] मूँगा।

रक्ताक्त—वि० [रक्त-अक्त तृ० त०] १ लाल रंग में रँगा हुआ। २ जिसमें रक्त या खून लगा हो।
पुं० लाल चंदन।

रक्ताक्ष—पुं० [रक्त-अक्षि ब० स०, षच् प्रत्य०] १. [illegible]। २ चकोर। ३. सारस। ४. कबूतर। ५. भैंसा। ६. साठ संवत्सरों में से अट्ठावनवें संवत्सर का नाम।
वि० लाल आँखोंवाला।

रक्तातिसार—पुं० [सं० रक्त-अतिसार मध्य० स०] एक प्रकार का अतिसार रोग जिसमें दस्त में खून आता है।

रक्ताधर—वि० [रक्त-अधर ब० स०] [स्त्री० रक्ताधरा] लाल होंठों-वाला।

रक्ताधरा—स्त्री० [रक्त-अधर ब० स०, टाप्] किन्नरी।

रक्ताधार—पुं० [रक्त-आधार ष० त०] चमड़ा।

रक्तापह—पुं० [सं० रक्त-अप√हन् (हिंसा)+ड] बोल (गंधद्रव्य)।

रक्ताभ—पुं० [रक्त-आभा ब० स०] बीरबहूटी।
वि० रक्त की तरह की लाल आभावाला। जो कुछ कुछ लाली लिये हो।

रक्ताभा—स्त्री० [सं० रक्ताभ+टाप्] लाल जवा।

रक्ताभ्र—पुं० [रक्त-अभ्र कर्म० स०] लाल अबरक।

रक्तारि—पुं० [रक्त-अरि ष० त०] महाराष्ट्री नामक क्षुप (पौधा)।

रक्तार्बुद—पुं० [रक्त-अर्बुद ब० स०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में पकने और बहनेवाली गाँठें निकल आती हैं। २ शुक्रदोष से उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें लिंग पर काले फोड़े और उनके साथ लाल फुंसियाँ निकल आती हैं।

रक्तार्श (र्शस्)—पुं० [रक्त-अर्शस् मध्य० स०] खूनी बवासीर।

रक्तालु—पुं० [रक्त-आलु कर्म० स०] रतालू। (कंद)

रक्तावरोधक—वि० [रक्त-अवरोधक ष० त०] बहते हुए खून को रोकने-वाला।

रक्तावसेचन—पुं० [रक्त-अवसेचन ष० त०] १ शरीर के सात आशयों में से चौथा जिसमें रक्त का रहना माना जाता है। २. रक्त-मोक्षण।

रक्ताशोक—पुं० [रक्त-अशोक कर्म० स०] लाल अशोक का वृक्ष।

रक्ति—स्त्री० [सं०√रंज् (राग)+क्तिन्] १ अनुराग। प्रेम। २ रत्ती नामक तौल या परिमाण।

रक्तिका—स्त्री० [सं० रक्त+ठन्—इक, टाप्] १ घुघची। २. रत्ती नामक तौल या परिमाण।

रक्तिमा (मन्)—स्त्री० [सं० रक्त+इमनिच्] रक्तिम होने की अवस्था या भाव।

रक्तेक्षु—पु० [रक्त-इक्षु, कर्म० स०] लाल रंग का ऊख।

रक्तोत्पल—पु० [रक्त-उत्पल, कर्म० स०] १. लाल कमल। २. शाल्मलि। सेमल।

रक्तोदर—पु० [रक्त-उदर ब० स०] १. रोहू मछली। २. एक प्रकार का जहरीला बिच्छू।

रक्तोपदंश—पु० [रक्त-उपदंश, मध्य० स०] आतशक (रोग)।

रक्तोपल—पु० [रक्त-उपल, कर्म० स०] गेरू।

रक्ष—पुं० [सं०√रक्ष् (पालन)+अच्] १ रक्षक। रखवाला। २. रक्षा। रखवाली। हिफाजत। ३. लाक्षा। लाख। ४. छप्पय के साठवें भेद का नाम जिसमें ११ गुरु और १३० लघु मात्राएँ अथवा ११ गुरु और १२६ लघु मात्राएँ होती हैं।

पु०=राक्षस।

रक्षक—पु० [सं०√रक्ष्+ण्वुल्—अक] १ रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। हिफाजत करनेवाला। २. पहरेदार। ३. पालन-पोषण करनेवाला।

रक्षण—पु० [सं०√रक्ष्+ल्युट्—अन] १. रक्षा करना। हिफाजत करना। रखवाली। २ पालन-पोषण करना। ३ रक्षक।

रक्षणकर्त्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] रक्षा करनेवाला। रक्षक।

रक्षणीय—वि० [सं०√रक्ष्+अनीयर][स्त्री० रक्षणीया] रक्षा किये जाने के योग्य। जिसे रक्षित रखना हो।

रक्षन*—पु०=रक्षण।

रक्षना*—स० [सं० रक्षण] रक्षा करना। हिफाजत करना। सँभालना। बचाना।

रक्षपाल—पु० [सं० रक्ष√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्, उप० स०] वह जिसका काम रक्षा करना हो।

रक्षमाण—वि०=रक्ष्यमाण।

रक्षस*—पु०=राक्षस।

रक्षा—स्त्री० [सं०√रक्ष्+अ-टाप्] १. ऐसा काम जो आक्रमण, आघात, आपद, नाश आदि से बचने या बचाने के लिए किया जाता हो। हिफाजत। जैसे—अपनी रक्षा, घर की रक्षा, संकट में पड़े हुए मित्र की रक्षा। २ बालकों को भूत-प्रेत, नजर आदि से बचाने के उद्देश्य से बाँधा जानेवाला यंत्र या सूत्र। कवच। ३ गोंद। ४ भस्म।

रक्षाइत*—स्त्री०[हिं० रक्षा+आइत (प्रत्य०)] राजभवन।

रक्षा-कवच—पु० [मध्य० स०] १ तंत्र-मंत्र की विधि से बनाया हुआ वह कवच या यंत्र जो किसी को आपत्तियों आदि से रक्षित रखने के लिए पहनाया जाता है। २ कोई ऐसी चीज या बात जो सब प्रकार से किसी की रक्षा करने के लिए यथेष्ट मानी जाती हो। (सेफ-गार्ड)।

रक्षा-गृह—पु०[ष० त०] १ चौकी। २ सूतिका-गृह। जच्चा-खाना।

रक्षा-पति—पु० [ष० त०] नगर का शासन तथा रक्षा का प्रबंध करनेवाला एक प्राचीन भारतीय अधिकारी।

रक्षा-पत्र—पु०[ब० स०] १. भोजपत्र। २ सफेद सरसों।

रक्षापाल—पु०[सं० रक्षा√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] पहरेदार। संतरी।

रक्षा-पुरुष—पु० [ष० त०] पहरेदार। संतरी।

रक्षापेक्षक—पु०[रक्षा-अपेक्षक ष० त०] १ पहरेदार। संतरी। २ अंतःपुर का पहरेदार। ३ [illegible]। नट।

रक्षा-प्रदीप—पु०[ष० त०] भूत-प्रेत आदि की बाधा से बचे रहने के उद्देश्य से जलाया जानेवाला दीपक। (तंत्र)

रक्षा-बंधन—पु० [ष० त०] १. किसी के हाथ में रक्षा-सूत्र आदि का बाँधा जाना। २. हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को होता है; और जिसमें बहन अपने भाई तथा पुरोहित अपने यजमान की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधता है।

रक्षा-भूषण—पुं०[ष० त०] वह भूषण या गहना जिसमें किसी प्रकार का कवच आदि हो और जो भूत प्रेत या रोग आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिए पहना जाय।

रक्षा-मंगल—पु०[ष० त०] भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के उद्देश्य से किया जानेवाला अनुष्ठान।

रक्षामणि—पु० [ष० त०] वह मणि या रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से रक्षित रहने के लिए धारण किया जाय।

रक्षा-रत्न—पु०=रक्षामणि।

रक्षासूत्र—पु०[ष० त०] वह मंत्रपूत सूत या डोरा जो हाथ की कलाई में रक्षा-कारक मानकर बाँधा जाता है। राखी।

रक्षिक—वि०[सं०√रक्ष्+णिनि+कन्] रक्षक।

पु० पहरेदार। संतरी

रक्षिका—स्त्री०[सं० रक्षा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व] रक्षा। हिफाजत।

रक्षित—भू० कृ०[सं०√रक्ष्+क्त] [स्त्री० रक्षिता] १ जिसकी रक्षा की गई हो। हिफाजत किया हुआ। २ पाला-पोसा हुआ। ३ सँभाल कर रखा हुआ। जैसे—रक्षित धन। ४. किसी विशिष्ट कार्य, व्यक्ति आदि के उपयोग के लिए निश्चित किया या लगाया हुआ।

रक्षित-राज्य—पु०[सं० कर्म० स०] संरक्षित राज्य।

रक्षिता—स्त्री०[सं० रक्षित+टाप्] १ रक्षा। हिफाजत। २ [रक्षित+टाप्] बिना विवाह किये रखी हुई स्त्री। रखेली स्त्री।

रक्षिता (तृ)—पु० [सं०√रक्ष्+तृच्] रक्षक

रक्षी (क्षिन्)—पु०[सं०√रक्ष्+णिनि] १ रक्षक। २ पहरेदार। संतरी।

पु०[हिं० रक्षस् से] वह जो राक्षसों की उपासना करता हो।

रक्षी-दल—पु० [सं० रक्षि-दल] आधुनिक (पुलिस) विभाग के साधारण सिपाहियों के वर्ग का सामूहिक नाम। (कांस्टेबुलरी)

रक्षोघ्न—पु०[सं० रक्षस्√हन् (हिंसा)+टक्] १ हींग। २ भिलावाँ। ३. सफेद सरसों। ४. काँजी या वह पानी जो [illegible] जाने से खट्टा हो गया हो।

रक्षोघ्नी—स्त्री० [सं० रक्षोघ्न+ङीष्] वचा। बच।

रक्ष्य—वि० [सं०√रक्ष्+ण्यत्] जिसकी रक्षा करना [illegible] हो। रक्षणीय।

रक्ष्यमाण—वि०[सं०√रक्ष्+लृट् (कर्मणि)—शानच्, यक्, मुगागम] जिसकी रक्षा की जा रही हो या की जाने को हो।

रक्म—पु०[अ०] १ नाम। मूल्य। २ [illegible]

बार इधर-उधर हिलना-डोलना या घूमना कि वह नाचती हुई जान पड़े। जैसे—शमा का रक्स=मोमबत्ती की लौ का हवा से हिलना-डोलना।

रखरो-ताऊस—पुं०[अ०+फा०] मोर-नाच (देखें)।

रखा—स्त्री० रखा (चरी)।

रखटी—स्त्री०[देश०] ईख की एक जाति।

रखड़ा—पुं०=रखटी।

रखना—स०[सं० रक्षण, प्रा० रक्खण] १. किसी आधार, तल, वस्तु, व्यक्ति, स्थान, आदि पर कोई चीज टिकाना, धरना, ठहराना या स्थापित करना। जैसे—(क) मेज पर गिलास रखना। (ख) मुँह पर हाथ रखना। (ग) घाटे पर असबाब रखना। २. किसी वस्तु या दूसरे को देने, सौंपने या समर्पित करने के उद्देश्य से उपस्थित करना या छोड़ देना। जैसे—किसी पर निर्णय का भार रखना। ३. किसी व्यक्ति को किसी निर्दिष्ट पद पर या स्थिति में नियुक्त या स्थापित करना। तैनात या मुकर्रर करना। जैसे—घर के काम के लिए नौकर या कोठी के काम के लिए मुनीम रखना। ४. कोई बात या चीज किसी के सामने समझाने आदि के लिए उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—(क) पसंद करने के लिए ग्राहक के सामने चीजें रखना। (ख) सभा के सामने मामला या मसूदा रखना। (ग) श्रोताओं के सामने उदाहरण अथवा प्रसंग रखना। ५. कोई चीज या बात इस प्रकार अपने अधिकार या वश में करना कि उसका दुरुपयोग न हो और या वह दूसरे के अधिकार में न जाने पाए। जैसे—(क) सौ रुपए तुम अपने पास रखो हो। (ख) यह बात अपने मन में रखना, अर्थात् किसी से कहना मत।

मुहा०—(किसी का) कुछ रख लेना=इस प्रकार अपने अधिकार में कर लेना कि उसका वास्तविक स्वामी उसे पा या ले न सके। दबा लेना। जैसे—उन्होंने हमारा सारा माल भी रख लिया; और हमें रुपए भी नहीं दिये।

६. किसी प्रकार के उपयोग के लिये चीजें एकत्र करना। संग्रह या संचय करना। जैसे—(क) यह दूकानदार सब तरह की चीजें रखता है। (ख) हम हस्तलिखित ग्रन्थ और पुराने सिक्के रखते हैं। ७. पालन-पोषण, मनोविनोद, व्यवहार आदि के लिए अपने अधिकार में करना। अपनी अधीनता में लेना। जैसे—(क) कबूतर, कुत्ता या तोते रखना। (ख) गाड़ी, घोड़ा या मोटर रखना। (ग) रंडी या रखेली रखना। ८. किसी के टिकने, ठहरने या रहने के लिए स्थान की व्यवस्था करना। टिकाना। ठहराना। जैसे—बरातियों को तो उन्होंने अपने मकान में रखा; और नौकर-चाकरों को धर्मशाला में। ९. किसी प्रकार का आरोप करना। जिम्मे लगाना। सिर मढ़ना। जैसे—तुम तो सदा सारा दोष मुझ पर ही रखते हो। १०. कोई चीज गिरवी या बंधक में देना। रेहन करना। जैसे—घर के गहने रख कर ये ५००) लाया हूँ। ११ किसी का ऋणी या कर्जदार होना। जैसे—हम उनका कुछ रखते नहीं हैं, जो उनसे दबें। १२. किसी पुरुष का किसी स्त्री को (या किसी स्त्री का पर-पुरुष को) उपपत्नी (या उपपति) के रूप में ग्रहण करके उसे अपने यहाँ स्थान देना। जैसे—विधवा होने पर उसने अपने देवर (या नौकर) को रख लिया था। १३ अनंग-संभोग या सहवास करना। (बाजारू) जैसे—एक दिन तो तुमने भी उसे रखा था। १४ सामाजिक व्यवहार आदि में [illegible], [illegible] आदि का किसी प्रकार [illegible]। [illegible] न देना। जैसे—(क) [illegible], पर [illegible] तो उसने [illegible] है। (ख) [illegible] और [illegible] थी, कि [illegible]। १५. [illegible] देखभाल या रक्षा करना। [illegible], आदि से [illegible] करना। १६. [illegible] जैसे—[illegible] पर [illegible] लिया।

सयो० क्रि०—देना।

१७. [illegible] (खास मुहा० क्रि० के रूप में प्रयुक्त) जैसे—[illegible], [illegible], [illegible]। १८. [illegible] के रूप में [illegible] करना या स्थिर देना। जैसे—[illegible]। १९. [illegible] (बाज०) जैसे—[illegible]। २०. [illegible] करना। जैसे—[illegible]। २१. [illegible] जैसे—(क) [illegible]। (ख) [illegible]।

मुहा०—(कोई बात किसी पर) रखकर कहना—इस प्रकार कोई बात कहना कि [illegible] हो। [illegible] जैसे—[illegible]।

२२. [illegible] आदि के संबंध में, [illegible]। जैसे—[illegible] में [illegible] है।

विशेष—(क) [illegible] क्रि० के रूप में [illegible] आदि भी सूचित करती है। जैसे—[illegible], [illegible], [illegible] आदि। (ख) [illegible] है। जैसे—[illegible]। (ग) [illegible] क्रियाएँ भी सयो० क्रि० के रूप में [illegible] है। जैसे—[illegible], [illegible] लेना, [illegible]। ऐसे [illegible] की पूर्णता या समाप्ति ही सूचित होती है।

पुं० [सं० रक्षण] १. [illegible]। [illegible]। २. [illegible]। ३. [illegible]। [illegible]।

रखनी—स्त्री० [हिं० रखना+ई (प्रत्य०)] वह स्त्री जिससे विधिवत् विवाह न हुआ हो और जो यों ही घर में पत्नी के रूप में रख ली गई हो। रखेली। सुरैतिन।

क्रि० प्र०—बनाना।—रखना।

रख-रखाव—पुं०[हिं० रखना+रखाना] १. रक्षा। हिफाजत। २. मर्यादा, परंपरा, व्यवहार, सम्बन्ध आदि का उचित रूप में होनेवाला निर्वाह। उदा०—दुनिया है रख-रखाव की, हमसे मोहब्बत के नाम।—कोई शायर। ३. दोनों पक्षों की बात रखने तथा उन्हें संतुष्ट करने की क्रिया या भाव। ४. पालन-पोषण।

रखल—पु० [फा०] १ सूराख। छेद। २ नकव। सेंध। ३. हड्डी का टूटना ४ उपद्रव। फसाद।
रखला†—पु०=रहकला।
पु० [हिं० रहँकला] मध्य युग मे, तोप आदि लाद कर ले चलने की छोटी गाडी।
रखवाई—स्त्री० [हिं० रखना, या रखाना] १ खेतो की रखवाली। चौकीदारी। २ रखवाली करने का काम, भाव या मजदूरी। ३. ब्रिटिश शासन मे वह कर जो गाँवो से, उनमे चौकीदार रखने के वदले मे लिया जाता था।
रखवाना—स० [हिं० रखना का प्रेर०] १ रखने की क्रिया दूसरे से कराना। २ किसी को कुछ रखने अर्थात् निकालकर दे देने या सौंपने मे प्रवृत्त या विवश करना। ३. दे० 'रखाना'।
रखवार*†—पु०=रखवाला।
रखवारी†—स्त्री०=रखवाली।
रखवाला—पु० [हिं० रखना+वाला (प्रत्य०)] [भाव० रखवाली] १. वह जो किसी की या दूसरो की रक्षा करता हो। २. पहरा देनेवाला। चौकीदार।
रखवाली—स्त्री० [हिं० रखना+वाली (प्रत्य०)] १. रखनेवाले का काम। रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत। २ चौकीदारी। पहरेदारी।
रखशी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नेपाली शराव।
रखा—स्त्री० [हिं० रखना] गोचर भूमि। चरी।
रखाई—स्त्री० [हिं० रखना+आई (प्रत्य०)] १. रक्षा करने की क्रिया या भाव। रखवाली। २. रखवाली करने के वदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।
रखान†—स्त्री० [हिं० रखना] चराई की भूमि। चरी।
रखाना—स० [हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। दूसरे को कुछ रखने मे प्रवृत्त या विवश करना।
†अ० रखवाली या हिफाजत करना।
रखिया*†—वि० [हिं० रखना+इया (प्रत्य०)] रखनेवाला।
पु० १ गाँव के समीप का वह पेड जो पूजनार्थ रक्षित रहता है। २. रक्षक।
रखियाना—स० [हिं० राखी+इयाना (प्रत्य०)] १ राखी लगाना। २. बरतन आदि, राखी से रगड कर माँजना और साफ करना।
रखी†—पु०=ऋषि।
रखीराज†—पु०=ऋषिराज।
रखेड़िया†—पु० [हिं० राख+एडिया (प्रत्य०)] एक प्रकार के साधु जो शरीर पर भस्म लगाये रहते है।
रखेली—स्त्री० [हिं० रखना+एली (प्रत्य०)] विना विवाह किए ही घर मे पत्नी के रूप मे रखी हुई स्त्री। रखनी। सुरैतिन।
रखैया†—वि० [हिं० रखना+ऐया (प्रत्य०)] १ रखनेवाला। २ रक्षा करनेवाला। रक्षक।
रखैल†—स्त्री०=रखेली।
रखौंडी†—स्त्री० [हिं० राखी=रक्षा] रक्षासूत्र। राखी।
रखौत—गोचर भूमि। चरी।

रखौना—पु०=रखौत।
रखौनी†—स्त्री=राखी।
रग—स्त्री० [फा०] १ शरीर की नस या नाडी।
पद —रग-पट्ठा, रग-रेशा।
मुहा०—रग उतरना=(क) क्रोध, हठ आदि दूर होना। (ख) आँत उतरना (रोग)। रग चढना=मन में क्रोध, हठ आदि का आवेश होना। (किसी से) रग दवना=ऐसी स्थिति मे होना कि विवश होकर किसी के दवाव या प्रभाव मे रहना पडे। जैसे—तुम्ही से उसकी रग दवती है, तुम्हे तो वह कुछ समझता ही नही। रग फड़कना=किसी आनेवाली आपत्ति की पहले से ही आशका होना। माथा ठनकना। रग रग फड़कना=शरीर मे वहुत अधिक आवेश, उत्साह, चचलता आदि के लक्षण प्रकट होना। रग रग में =सारे शरीर के सभी भागो मे। सर्वांग मे।
२ जिद या हठ से जो शरीर की किसी रग के विकार का परिणाम माना जाता है। ३ पत्तो आदि मे दिखाई पडनेवाली नसें।
रगंड—पुं० [स० गड] हाथी का कपोल। (डिंगल)
रगड़—स्त्री० [हिं० रगडना] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। २ रगडे जाने की अवस्था या भाव। ३ वह चिन्ह जो किसी चीज से रगड़े जाने पर लक्षित होता है। ४ किसी काम के लिए की जानेवाली कडी मेहनत और दौड-धूप। ५ झगडा। तकरार। ६ धक्का। (कहार)
रगड़ना—स० [स० घर्षण] १ किसी चीज के तल पर किसी दूसरी चीज का तल वार वार दवाते हुए चलाना। जैसे—जमीन पर एडी रगडना। २ दो तलो के वीच मे रखी हुई वस्तु टुकडे-टुकडे या चूरचूर करना अथवा पीसना। जैसे—सिल-वट्टे से मसाला या भाँग रगडना। ३ निरतर परिश्रमपूर्वक कोई काम करते रहना। जैसे—सारा दिन कलम रगडते वीतता है। ४ किसी काम या वात का निरतर परिश्रमपूर्वक अभ्यास करना। जैसे—जव इसी तरह कुछ दिनो तक रगडते रहोगे तो इस काम मे चल निकलोगे। ५. किसी को कष्ट देते हुए या दवाते हुए वहुत तग या परेशान करना। जैसे—इस मुकदमे मे तुमने उन्हे खूव रगडा। ६ दड आदि के सवध मे कठोरतापूर्वक आदेश देना। जैसे—अदालत ने उन्हे दो वरस के लिए रगड दिया। ७ किसी के साथ काम-वासना की तृप्ति मात्र के लिए (प्रेमपूर्वक नही) प्रसग या सभोग करना। (वाजारू)
सयो० क्रि०—डालना-देना।
अ० वहुत मेहनत करना। अत्यत श्रम करना।
रगडवाना—स० [हिं० रगडना का प्रेर० रूप] रगडने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को रगड़ने मे प्रवृत्त करना।
रगड़ा—पु० [हिं० रगडना] १ रगडने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड। २ वह आघात जो किसी चीज पर उसे रगडने के उद्देश्य मे किया जाता है। ३. किसी चीज की रगड लगने पर होनेवाला आघात। ४ एक वार मे होनेवाली रगडाई। ५ निरन्तर किया जानेवाला वहुत अधिक परिश्रम। काफी और पूरी मेहनत। ६ वरावर कुछ दिनो तक चलता रहनेवाला झगड़ा या वैर-विरोध।
पद रगड़ा-झगड़ा=वहुत समय तक चलता रहनेवाला झगडा या लडाई।
रगड़ान—स्त्री० [हिं० रगडना+आन (प्रत्य०)] रगडने या रगडे जाने की क्रिया या भाव। रगडा।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लगाना।

रगड़ी—वि० [हिं० रगड़ा+ई (प्रत्य०)] रगड़ा अर्थात् लड़ाई-झगड़ा या हुज्जत करनेवाला। झगड़ालू। हुज्जती।

रगण—पुं० [स०ष० त०] छद-शास्त्र मे ऐसे तीन वर्णों का गण या समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है (ऽ।ऽ)।

रगत*—पुं०=रक्त।

रगदना†—स०=रगेदना (दे०)।

रगबल*—वि० [हिं०] कुबड़ा।

रग-पट्ठा—पुं० [फा० रग+हिं०पट्ठा] १. शरीर के भीतरी भिन्न-भिन्न अग, मुख्यत रगें और मास-पेशियाँ। २ किसी विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें।

मुहा०—(किसी के) रग पट्ठे से परिचित या वाकिफ होना। किसी के रग-ढग, शक्ति, स्वभाव आदि से परिचित होना। खूब पहचानना।

रगपत†—पुं०=रघुपति।

रगबत—स्त्री० [अ० रग्बत] १. इच्छा। कामना। चाह। २ किसी काम या बात की ओर होनेवाली प्रवृत्ति या रुचि।

क्रि० प्र०—आना।—रखना।—होना।

रगर†—स्त्री०=रगड।

रगरा†—पुं०=रगडा।

रग-रेशा—पुं० [फा० रग+रेशा] १. शरीर के अन्दर के अग। २. पत्तियों की नसें।

पद—रग-रेशे में=सारे शरीर मे। अग-अंग मे। जैसे—शरारत तो उसके रग-रेशे मे भरी है।

३. किसी काम, बात या वस्तु के अन्दर की गुप्त और सूक्ष्म बातें। जैसे—वह इस काम के रग-रेशे से वाकिफ है।

रगवाना*—स० [हिं० रगाना का प्रेर० रूप] १. चुप कराना। २. शात कराना।

रगा†—पुं० [देश०] मोर।

रगाना†—अ० [देश०] १ चुप होना। २. शात होना।

स० १ चुप कराना। २ शान्त करना।

रगी—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का मोटा अन्न।

†स्त्री=रग्गी।

वि०=रगीला।

रगीला—पुं० [हिं० रग=जिद+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रगीली] १. हठी। जिद्दी। दुराग्रही। २ दुष्ट। पाजी।

वि० [हिं० रग] जिसमे रगें या नसें हो। रगो से युक्त। रगोंवाला।

रगेद—स्त्री० [हिं० रगेदना] दौडने या भागने की क्रिया।

रगेदना—स० [स० खेट, हिं० खेदना] किसी को ढकेलते, धक्का देते या दौडते हुए दूर करना या हटाना। बल-प्रयोग करते हुए भगाना। खदेडना।

सयो० क्रि०—देना।

रग्गा—पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा अन्न। रगी।

†पुं० =रग्गी।

रग्गी—स्त्री० [?] वह धूप विशेषत. वर्षा ऋतु की कडी धूप जो पानी बरस जाने और बादल छँट जाने पर निकलती है।

†स्त्री०=रगी।

रघु—पुं० [सं०√लंघ्(गति)+कु, नलोप, घत्व] १. सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो रामचन्द्र के परदादा और प्रसिद्ध रघुवंश के मूल पुरुष तथा संस्थापक थे। २. रघु के वंश में उत्पन्न कोई व्यक्ति।

रघु-कुल—पुं० [ष० त०] राजा रघु का वंश।

रघुनंद—पुं० [सं० रघु√नन्द् (खुश)+णिच्+अच्] श्रीरामचन्द्र।

रघुनंदन—पुं० [सं० रघु√नन्द्+णिच्+ल्यु—अन] श्रीरामचन्द्र।

रघु-नाथ—पुं० [ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघु-नायक—पुं० [ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघु-पति—पुं० [ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघुराइ* पुं० रघुराज (श्रीरामचन्द्र)।

रघुराज—पुं० [ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघुराय—पुं० रघुराज।

रघुरैया*—पुं०=रघुराय।

रघु-वंश—पुं० [ष० त०] १. महाराज रघु का वंश या खानदान जिसमें दशरथ और रामचन्द्र जी उत्पन्न हुए थे। २ महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें राजा दिलीप की कथा और उनके वंशजों का वर्णन है।

रघुवंश-कुमार—पुं० [ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघुवंशी (शिन्)—पुं० [सं० रघुवंश+इनि] १. वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

रघु-वर—पुं० [स० त०] श्रीरामचंद्र।

रघु-वीर—पुं० [स० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघूत्तम—पुं० [रघु-उत्तम स० त०] श्रीरामचन्द्र।

रघूद्वह—पुं० [रघु-उद्वह ष० त०] श्रीरामचंद्र।

रघौती—स्त्री० [देश०] बडे व्यापारियों या आढ़तियों की ओर से छोटे दूकानदारों या व्यापारियों को भेजा जानेवाला वह पत्र जिसमें चीजों के भाव लिखे होते है। दर या भाव का परिपत्र। (रेट सर्क्युलर)

रचनी—पुं० [दे०] मतीरा। तर।

रचक—पुं० [सं०√रच्(रचना)+णिच्+ण्वुल्—अक] रचयिता।

†वि०=रचक।

रचना—स्त्री० [सं०√रच्+णिच्+युच्—अन+टाप्] १. कोई चीज रचने अर्थात् बनाने की क्रिया या भाव। जैसे—फूलों से होनेवाली मालाओं की रचना। निर्माण। २ किसी चीज के बनाये जाने का ढग या प्रकार जो उसका स्वरूप निश्चित करता है। बनावट। ३. बनाकर तैयार की हुई चीज। कृति। जैसे—किसी कवि या लेखक की नई रचना। ४. कोई चीज कौशलपूर्वक और सुदर रूप मे बनाने की क्रिया या भाव। जैसे—अनेक प्रकार की केश-रचनाएँ। ५. स्थापित करने की क्रिया। स्थापना। ६. उद्यमपूर्वक किया हुआ काम। ७. ऐसा गद्य या पद्य जिसमे कोई विशेष कौशल या चमत्कार हो। ८. पुराणानुसार विश्वकर्मा की पत्नी का नाम।

स० [स० रचन] १. कोई चीज हाथसे बनाकर तैयार करना। बनाना। निरजना। २. किसी बात का विधान या स्वरूप स्थिर करना। ३. किसी प्रकार की कृति प्रस्तुत करना।

जैसे—कविता या पुस्तक रचना। ४. उत्पन्न करना। पैदा करना। ५ किसी काम या वात का अनुष्ठान करना। ठानना। ६. अच्छी तरह ध्यान देते हुए कोई काम या उपाय करना या युक्ति लगाना।
पद—रचि रचि*=बहुत ही अच्छी तरह और ध्यान तथा युक्तिपूर्वक। ७. किसी प्रकार की काल्पनिक कृति, रूप या सृष्टि खडी करना। ८. अच्छी तरह सँवारना-सजाना। शृगार करना। ९. उचित क्रम से चीजें रखना या लगाना।
अ०[स० रजन]१. किसी के प्रेम मे फँसना। किसी पर अनुरक्त होना। २ रगो से युक्त होना। रँगा जाना।३. किसी चीज का अच्छी तरह और सुन्दर रूप मे वनाकर प्रस्तुत होना। ४. आकर्षक और सुन्दर जान पडना। फवना। जैसे—उसके मुँह मे पान और हाथ-पैरो मे मेहदी अच्छी रचती है।
स० १. रँगो से युक्त करना। रँगना। २. किसी के साथ अनुराग या प्रेम का संवध स्थापित करना। जैसे—वैरी से वच सज्जन से रच।—कहा०।
वि०[स्त्री० रचनी]जो सहज मे रच सके, अर्थात् अच्छा रग या रूप ला सके। जैसे—वाह! यह कैसी अच्छी रचनी मेहदी है।
रचना-तंत्र—पु०[ष० त०] १ किसी कलात्मक कृति का वह अग या ढग जो उसके रचना-कौशल से सवंध रखता हो और जो सूत्रो के रूप मे वद्ध हो सकता हो। रचना का कलात्मक और कौशलपूर्ण प्रकार। तकनीक। (टेक्निक) २. उक्त की अवस्था या भाव। प्राविधिकता। (टेक्निकैलटी)
रचना-तंत्री—वि०[स० रचनातत्रीय] रचना-तत्र से सवध रखनेवाला। (टेक्निकल) जैसे—किसी कृति का रचनातत्री ज्ञान।
रचयिता (तृ)—वि०[सं०√रच्+णिच्+तृच्]रचना करने या रचने वाला। वनानेवाला।
रचवाना—स०[हिं० रचना का प्रेर० रूप] १ दूसरे को रचना करने मे प्रवृत्त करना। २. हाथ-पैर मे मेहदी या महावर लगवाना। ३. अनुरक्त कराना ४. सुन्दर रूपरग दिलवाना।
रचाना|*—स०[स० रचना]१. अनुष्ठान या आयोजन करना। जैसे—व्याह रचाना, यज्ञ रचाना। २. दे० 'रचवाना'।
†अ०, स०=रचना।
रचिक|—अव्य०[हिं० रच] थोड़ा। अल्प।
रचित—भू० कृ० [स० रच्+णिच्+क्त] १ रचा अर्थात् वनाया हुआ। २. कृति आदि के रूप मे प्रस्तुत किया हुआ।
रची|—अव्य०=रचिक।
रच्छ|—पु०=रक्ष।
रच्छक|—पु०=रक्षक।
रच्छन|पु—रक्षण।
रच्छस|—पु०=राक्षस।
रच्छा|—स्त्री०=रक्षा।
रछ्या*—स्त्री०=रक्षा। उदा०—दान करै रछ्या मँझ मीरां।—जायसी।
रज(स्)—पु० [स०√रंज् (राग्)+असुन्, नलोप] १. गर्द। धूल। २. गर्द या धूल के वे छोटे-छोटे कण जो धूप मे इवर-उवर चलते हुए दिखाई देते हैं। ३ आठ परमाणुओ की एक पुरानी तौल या भाव। ४ फूलो का पराग। ५. जोता हुआ खेत। ६. आकाश। ७ जल। पानी। ८. भाप। वाष्प। ९ वादल। मेघ। १० भुवन। लोक। ११. श्वेतपापडा। १२. पाप। १३. अंधकार। अधेरा। १४ मन मे रहनेवाला अज्ञान, और उसके फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाले दूषित भाव। १५ एक प्रकार का पुराना वाजा जिसपर चमडा मढा होता था। १६. पुराणानुसार एक ऋषि जो वशिष्ठ के पुत्र कहे गये हैं। १७ धार्मिक क्षेत्रो मे, प्रकृति के तीन गुणो मे से दूसरा जिसके कारण जीवो मे भोग-विलास करने तथा वल-वैभव के प्रदर्शन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। रजोगुण। (अन्य दो गुण सत्त्व और तम हैं। १८ वह दूषित रक्त जो युवती तथा प्रौढा स्त्रियो और स्तनपायी मादा जतुओ की योनि से प्रति मास तीन चार दिनो तक वरावर निकलता रहता है। आर्तव। ऋतु। कुसुम। १९. स्कद की एक सेना का नाम। २० केसर।
वि०[हिं० राजा] हिं० 'राजा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरंभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—रजवाडा।
†स्त्री०=रजनी (रात)।
†पु०१ =रजत (चाँदी)। २ रजक (धोवी)।
रजअत—स्त्री०[अ० रज्अत] १. वापस जाना । लौटना। प्रत्यागमन। २ जिस स्त्री को तलाक दिया गया हो, उसे फिर से अपनी पत्नी वनाना। (मुसल०)
रजक—पु० [स०√रज्+ष्वुन्—अक, न-लोप] [स्त्री० रजकी] धोवी।
रजगज—पुं०[हिं० रज=राजा+गज अनु०] राजसी ठाठ-वाट।
रजगीर—पु०[देश०] कूटू (अन्न)। फफरा।
†पु०=राजगीर।
रजगुण—पु० दे० "रजोगुण"।
रज-तंत—पु०[सं० राजतत्त्व] शूरता। वीरता।
रजत—पु० [स०√रज्+अतच्, न-लोप] १ चांदी। रूपा। २ सोना। स्वर्ण। ३. हाथी-दाँत। ४ गले मे पहनने का हार। ५ रक्त। लहू। ६ पुराणानुसार शाकद्वीप के अस्ताचल का नाम।
वि० १ चाँदी के रग का। उज्ज्वल। शुभ्र। २ चाँदी का वना हुआ।
रजत-जयंती—स्त्री०[मध्य० स०] किसी व्यक्ति अथवा सस्था की २५वी वर्ष-गाँठ पर मनाई जानेवाली जयती। (सिलवर जुविली)
रजत-द्युति—पु० [व० स०] हनुमान।
रजत-पट—पु० [उपमित स०] वह परदा जिस पर सिनेमा-घर मे चित्र दिखलाये जाते हैं। (सिलवर स्क्रीन)
रजत-प्रस्थ—पु०[व० स०] कैलास पर्वत।
रजतमान—पु० [ष० त०] अर्थशास्त्र मे वह स्थिति जिसमे कोई देश अपनी मुद्रा की इकाई या मात्रक का अर्घ चाँदी की एक निश्चित तौल के अर्घ के वरावर रखता है। (सिलवर स्टैन्डर्ड)
रजत-मानक पु०=रजत-मान।
रजताई*—स्त्री०[हिं० रजत+आई (प्रत्य०)] शुभ्रता। सफेदी।
रजताकर—पु०[रजत-आकर, ष० त०] चाँदी की खान।
रजताचल—पु० [रजत-अचल, मध्य० स०] १. चाँदी का पहाड। २ चाँदी के टुकडो या आभूषणो का वह ढेर या ढेरी जो दान की जाती है। महादान का भेद। ३ कैलास पर्वत।
रजताद्रि—पु० [रजत-अद्रि मध्य० स०] रजताचल। (दे०)
रजतोपम—पु०[रजत-उपमा व० स०] रूपामाखी। रूपा-मक्खी।

रजधानी—स्त्री०=राजधानी।

रजन—स्त्री० [अं० रेजिन] राल नामक गोंद। दे० (राल)।
स्त्री० [हिं० रजना] रजने की अवस्था, क्रिया या भाव।

रजना—अ० [स० रजन] १ रंग से युक्त होना। रँगा जाना। २ अच्छी तरह तृप्त होना। जैसे—खा-पीकर रजना।
स० रग से युक्त करना। रँगना।
स्त्री० [स० रजन] सगीत मे एक प्रकार की मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—नि, स, रे, ग, म, प, ध। नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि। स, रे, ग, म, प, ध, नि।

रजनी—स्त्री० [सं० √रञ्ज्+कनि+ङीप्] १ रात। रात्रि। निशा। २. हल्दी। ३. जतुका लता। ४ नीली नामक पौधा। ५ दारु-हल्दी। ६ लाक्षा। लाख। ७ एक नदी। (पुराण०)

रजनीकर—पु० [स० रजनी √कृ० (करना)+ट] चद्रमा।

रजनी-गधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल रात के समय फूलते है। २. उक्त पौधे का फूल।

रजनीचर—पु० [स० रजनी √चर् (गति)+ट] १ राक्षस। २ चद्रमा।
वि० रात के समय निकल कर घूमने-फिरने या विचरण करने वाला।

रजनी-जल—पु० [सुप्सुपा स०] १ ओस। २. कोहरा।

रजनी-पति—पु० [प० त०] चद्रमा।

रजनीमुख—पु० [प० त०] सध्या। रात होने से कुछ पहले का समय। सूर्यास्त के चार दड बाद का समय। शाम।

रजनीश—पु० [रजनी-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

रजपूत*—पु०=राजपूत।

रजपूती†—स्त्री० [हिं० राजपूत+ई (प्रत्य०)] १ राजपूत होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ राजपूत का कोई कार्य अथवा उसके जैसा कार्य। ३ बहादुरी। वीरता।

रजब—पु० [अ०] अरबी साल का सातवाँ महीना।

रजबली—पु० [स० राजा+बली] राजा। (डिं०)।

रजबहा—पु० [स० राज, राजा=बडा+हिं० बहना] किसी बडी नदी या नहर से निकाला हुआ बडा नाला या छोटी नहर, जिससे और भी अनेक छोटे-छोटे नाले और नालियाँ निकलती है।

रजबार†—पु० राजद्वार।

रजल-बाह—पु० [स० जलवाह] मेघ। बादल (डिं०)।

रजवंती—वि० [स० रजोवती] रजस्वला।

रजवट—स्त्री० [हिं० राज+वट (प्रत्य०)] १. क्षत्रियत्व। २ बहा-दुरी। वीरता।

रजवती†—स्त्री० =रजवती (रजस्वला)।

रजवाड़ा—पु० [हिं० राज्य-वाडा] १ मध्य-युग तथा ब्रिटिश भारत मे, देशी रियासत। २. रियासत का मालिक, राजा।

रजवार*†—पु०=राजद्वार।

रजवी—वि० [अ० रिजवी] इमाम मूसा अली रजा से सबध रखनेवाला।
पु० वह जो इमाम का वशज हो।

रजस—स्त्री०='रज'।

रजस्वला—वि० स्त्री० [सं० रजस्+वलच्-टाप्] १ (स्त्री०) जिसका रज प्रवाहित हो रहा हो। रजवती। ऋतुमती। २. (बरसाती नदी) जिसका पानी बहुत गँदला और मट-मैला हो गया हो।

रजा—स्त्री० [अ० रिजा] १. इच्छा। मरजी। २ अनुमति। आज्ञा। ३ किसी की अनुमति से मिलनेवाली छुट्टी। रुखसत। ४. मंजूरी। स्वीकृति। ५ प्रसन्नता।
क्रि० प्र०—देना। —पाना। —मिलना। —लेना।
स्त्री० [अ०] आशा।

रजाइ*—स्त्री०=रजा।

रजाइस†—स्त्री० [अ० रज़ा+आइस (हिं० प्रत्य०)] १ आज्ञा। हुकम। २. दे० 'रजा'।

रजाई—स्त्री० [स० रजक=कपड़ा] एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। हलका लिहाफ।
स्त्री० [हिं० राजा+आई (प्रत्य०)] राजा होने की अवस्था या भाव। राजापन।
†स्त्री०=रजा (अनुमति या आज्ञा)। उदा०—चले सीस धरि राम रजाई।—तुलसी।

रजाकार—पु० [अ० रिजाकार] स्वय-सेवक।

रजाना—स० [हिं० रजना का स०] १. राज-सुख का भोग करना। २ बहुत अधिक सुख देना। ३. अच्छी तरह तृप्त या सन्तुष्ट करना। ४ पेट भरकर खिलाना।

रजामंद—वि० [अ० रिज़ा+फा० मद] [भाव० रजामदी] जो किसी बात पर राजी या सहमत हो।

रजामंदी—स्त्री० [अ० रिज़ा+फा० मंदी] रजामद अर्थात् राजी या सहमत होने की अवस्था या भाव। सहमति।

रजाय*—स्त्री० [प्रा० रजाएस] राजा की आज्ञा।
स्त्री०=रजा।

रजायस (सु)—स्त्री० [फा० रजाएस] १ राजा की आज्ञा। २. आज्ञा। हुकम। ३ अनुमति।

रजिया—स्त्री० [देश०] १ अनाज नापने का एक मान जो प्राय. डेढ़ सेर का होता है। २ उक्त मान से नापने का काठ का बरतन।

रजिस्टर—पु० [अ०] अंगरेजी ढग की बही या वह किताब जिसमे किसी मद का आय-व्यय अथवा किसी विषय का विस्तृत विवरण, सिलसिलेवार या खानेवार लिखा जाता है। पजी।

रजिस्टरी—स्त्री० [अं०] १ किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को कानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरो मे दर्ज कराने का काम। पजीयन। २ डाक से पत्र भेजने का एक प्रकार जिसमे कुछ अधिक महसूल देकर भेजे जानेवाला पत्र का तौल, पता आदि डाकखाने के रजिस्टर मे चढवाया जाता है।

रजिस्टर्ड—वि० [अ०] रजिस्टरी किया हुआ। पजीकृत।

रजिस्ट्रार—पु० [अ०] १. विधिक लेख्यो को राजकीय पजियो मे निबधित करनेवाला अधिकारी। २ विश्वविद्यालय का वह अधिकारी जिसकी देखरेख मे कार्यालय सबधी सब कार्य होते हैं।

रजिस्ट्री—स्त्री०=रजिस्टरी।

रजिस्ट्रेशन—पु० [अं०] रजिस्टर मे दर्ज करना, कराना या होना। पजीयन।

रज़ील—वि० [अ०] अधम। कमीना। नीच।
रजु†—स्त्री०=रज्जु।
रजोकुल*—पु० [स० राजकुल] राजवश।
रजोगुण—पु० [स० रजस्-गुण मयू० म०] प्रकृति के तीन गुणो मे से दूसरा गुण (सत्त्व और तम से भिन्न) जिससे जीवधारियो मे भोग-विलास तथा बल-वैभव के प्रदर्शन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। राजस। (दे० 'गुण)
रजोदर्शन—पु० [सं० रजस्-दर्शन ष० त०] स्त्रियो का रजस्वला होना।
रजोधर्म—पु० [स० रजस्-धर्म ष० त०] स्त्रियो का मासिक धर्म।
रजोनिवृत्ति—स्त्री० [स० रजस्-निवृत्ति] स्त्रियो की वह अवस्था या दशा जिसमे उनका मासिक रज निकलना सदा के लिए बद हो जाता है। (मेनोपाज)
रज्जाक—वि० [अ०] १ रिजक अर्थात् रोजी देनेवाला। अन्नदाता। २ खाना खिलानेवाला। पेट भरनेवाला।
पु० ईश्वर।
रज्जु—स्त्री० [स०√सृज् (रचना)+उ, नि० सिद्धि] १ डोरी। रस्सी। २ घोडे की लगाम। बागडोर। ३ स्त्रियो की चोटी बाधने की डोरी।
रज्जुमार्ग—पु० [स०] ऊँची-नीची पकिल या पहाडी जगहो, बडे-बडे कल-कारखानो आदि मे एक स्थान से दूसरे स्थान तक चीजें पहुँचाने के लिए बडे बडे खभो मे रस्से विशेषत. लोहे के छोटे रस्से बाधकर बनाया जानेवाला मार्ग। (रोप-वे)
रज्जु-सर्प न्याय—पु० [स०रज्जु-सर्प, सुप्सुपा स०, रज्जुसर्प-न्याय, ष० त०] रस्सी को अच्छी तरह न देख सकने के कारण भूल से साँप समझ लेने अथवा इसी प्रकार और किसी भ्रम मे पडने की स्थिति या न्याय।
रज़्म—स्त्री० [अ० रज़्म] युद्ध। सग्राम। लडाई।
रझना*—पु० [स० रचन वा रजन] रँगरेजो का वह पात्र, जिसमे वे रँगे हुए कपडे का रग निचोडते है।
रटंत—स्त्री० [चि० रटना+अत (प्रत्य०)] रटने की क्रिया या भाव। रटाई।
रटंती—स्त्री० [स०√रट् (रटना)] +झच्–अन्त+ङीप् माघ कृष्ण चतुर्दशी।
रट—स्त्री० [हिं० रटना] रटने की अवस्था, क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—मचाना।—लगाना।
रटन—स्त्री० [स०√रट् (रटना)+ल्युट्—अन] बार-बार किसी नाम, शब्द आदि का उच्चारण करने अर्थात् रटने की क्रिया या भाव। रट। रटाई।
पु० कहना। बोलना।
रटना—[स० रटन] कठस्थ करने तथा स्मृति-पथ मे लाने के लिए किसी पद, वाक्य आदि का बार-बार जोर-जोर से तथा जल्दी-जल्दी उच्चारण करना।
रटित—वि० [सं०√रट्+क्त] १ रटा हुआ। २ जो रटा जा रहा हो। उदा०—अगणित कठ रटित वन्दे मातरम् मत्र से।—पत।
रठ—वि० [?] रूखा। शुष्क।
रड़क—स्त्री० [हिं० रडकना] १. किसी चीज के चुभने तथा पीडा देने की अवस्था या भाव। जैसे—आँख मे होनेवाली रडक। २. हल्का दर्द या पीडा। कसक। जैसे—घाव मे कुछ रड़क हो रही है।
रड़कन†—स्त्री०=रटक।
रड़कना—अ० [अ०] १. हलका दरद होना। २. शरीर मे किसी गडी या चुभी हुई चीज की कष्टदायक अनुभूति होना। जैसे—आँख मे पडी हुई धूल या उसके कण का रडकना।
† स० धक्का देना।
रड़का—पु० [?] झाड़ू।
† स्त्री०=रडक।
रडकाना—स० [?] धक्का देकर निकालना या हटाना।
रडार—पु०=रँडर।
रढ़ना*—स० रटना।
रढ़िया†—स्त्री० [देश० या राढ देश] एक प्रकार की निम्न कोटि की देशी कपास।
वि० [हिं० रार] जिद्दी। हठी।
रण—पु० [स०√रण् (शब्द)+अप्] १. लडाई। युद्ध। जग।
पद—रण-क्षेत्र, रण-भूमि, रण-स्थल।
२ रमण। ३ आवाज। शब्द। ४ गति। चाल। ५ दुंबा नामक भेडा।
† पु० [स० अरण्य] जगल। वन।
रण-क्षेत्र—पु० [सं० ष० त०] युद्धभूमि। लडाई का मैदान।
रण-चंडी—स्त्री० [स० मध्य० स०] रण-क्षेत्र मे मार-काट करानेवाली देवी।
रण-छोड़—पु० [स० रण+हिं० छोडना] श्रीकृष्ण का एक नाम जो इस कारण पडा था कि वे जरासन्ध के आक्रमण के समय व्रज छोडकर द्वारका चले गये थे।
रणखेत* पु०=रणक्षेत्र।
रणत्कार—पु० [स०√रण्+शतृ=रणत्–कार ष० त०] १ झन-झनाहट। २ गुजन (मधु-मक्खी का)।
रणधीर—पु० [स० स०त०] युद्ध मे धैर्यपूर्वक लडनेवाला अर्थात् बहुत बडा योद्धा।
रणन—पु० [स०√रण्+ल्युट्—अन] शब्द करना। बजना।
रण-नाद—पु० [ष० त०] युद्ध के समय होनेवाली योद्धाओ की गरज।
रण-प्रिय—पुं० [ब० स०] १ विष्णु। २ बाज पक्षी। ३ उशीर। खस।
रण-भूमि—स्त्री० [ष० त०] लडाई का मैदान।
रणमंडा—स्त्री० [स० रण-मडन] पृथ्वी। (डिं०)
रण-मत्त—पु० [स० त०] हाथी।
वि० जो युद्ध करने के लिए उतावला हो रहा हो।
रण-रंग—पु० [ष० त०] १ लडाई या युद्ध का उत्साह। २ युद्ध। लडाई। ३ लडाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।
रण-रण—पु० [स० रणरण+अच्] १ व्यग्रता। घबराहट। व्याकुलता। २. पछतावा। पश्चात्ताप।
रणरणक—पु० [स० रणरण+कन्] १ कामदेव का एक नाम। २ प्रबल कामना। ३ घबराहट। विकलता।

स्त्री०=गान।

रतिकर—अव्य० [हिं० रत्ती] रत्ती भर; अर्थात् बहुत थोड़ा। जरा-सा।
वि० [सं० रति√कृ (करना)+ट] १ रति करनेवाला। २. आनन्द और सुख की वृद्धि करनेवाला। ३ अनुराग या प्रेम बढ़ानेवाला।
पु० कामुक और लपट व्यक्ति।

रति-करण—पु० [ष० त०] रति या संभोग करने का कौशल या ढग।

रति-कलह—पु० [ष० त०] मैथुन। संभोग।

रति-कांत—पु० [ष० त०] रति का पति, कामदेव।

रति-कुहर—पु० [ष० त०] योनि। भग।

रति-केलि—स्त्री० [ष० त०] मैथुन। सभोग।

रति-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] मैथुन। सभोग।

रतिगर|—अव्य० [हिं० रात+गर ?] प्रातःकाल। तड़के। सवेरे।

रति-गृह—पु० [ष० त०] योनि। भग।

रतिज्ञ—पु० [स० रति√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो रति-क्रिया मे चतुर हो। २ वह जो स्त्रियो को अपने प्रेम मे फँसाने की कला मे निपुण हो।

रति-तस्कर—पु० [ष० त०] वह जो स्त्रियों को अपने साथ व्यभिचार करने मे प्रवृत्त करता हो।

रति-दान—पु० [ष० त०] सभोग। मैथुन।

रति-देव—पु० [ष० त०] १ विष्णु। २ [ब० स०] कुत्ता। ३ चद्रवशी सांकृति के पुत्र एक राजा।

रति-नाथ—पु० [ष० त०] कामदेव।

रति-नायक—पु० [ष० त०] कामदेव।

रतिनाह—पु०=रतिनाथ (कामदेव)।

रति-पति—पु० [ष० त०] कामदेव।

रति-पाश—पु० [ष० त०] सोलह प्रकार के रति-बधो मे से एक भेद। (काम-शास्त्र)

रति-प्रिय—पु० [ष० त०] १ कामदेव। २ [ब० स०] मैथुन से आनदित होनेवाला व्यक्ति।
वि० [स्त्री० रति-प्रिया] रति (मैथुन) का शौकीन। कामुक।

रति-प्रिया—स्त्री० [ब० स०] १. तान्त्रिको के अनुसार शक्ति की एक मूर्त्ति का नाम। २ दाक्षायणी देवी का एक नाम। ३ मैथुन से आनदित होनेवाली स्त्री।

रति-प्रीता—स्त्री० [तृ० त०] १ वह नायिका जिसकी रति मे विशेष अनुराग हो। कामिनी। २ रति से आनदित होनेवाली स्त्री।

रति-बंध—पु० [स०त०] काम-शास्त्र मे बतलाये हुए संभोग करने के ८४ आसनो मे से हर एक।

रति-भवन—पु० [ष० त०] १. रति-क्रीडा या मैथुन करने का कमरा या भवन। २. योनि। भग।

रति-भाव—पु० [ष० त०] १ पति और पत्नी, प्रेमी और प्रेमिका या नायक और नायिका का पारस्परिक अनुराग। २. प्रीति। प्रेम। मुहब्बत।

रतिभौन—पुं०=रतिभवन।

रति-मंदिर—पु० [ष० त०] रति-भवन (दे०)।

रतिमदा—स्त्री० [स० ब० स०] अप्सरा।

रति-मित्र—पु० [स० त०] एक रतिबंध। (कामशास्त्र)

रतियाना*|—अ० [हिं० रति=प्रीति+आना (प्रत्य०)] किसी पर रत या अनुरक्त होना।

रति-रमण—पु० [ष० त०] १ रति-क्रीड़ा। मैथुन। २ कामदेव।

रतिराइ पु०=रतिराज। (कामदेव)।

रति-राज—पु० [ष० त०] कामदेव।

रतिवंत—वि० [स० रति+हिं० वत (प्रत्य०)] सुदर। खूबसूरत।

रति-वर—पु० [स० त०] १ रति मे प्रवीण कामदेव। २ वह धन या भेंट जो नायक नायिका को रति मे प्रवृत्त करने के उद्देश्य से देता है।

रति-वर्द्धन—वि० [स० ष० त०] काम-शक्ति बढ़ानेवाला।

रति-वल्ली—स्त्री० [ष० त०] प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

रतिवाही (हिन्)—पु० [स० रति√वह् (ढोना)+णिनि] संगीत मे एक प्रकार का राग, जिसका गान-समय रात को १६ दंड से २० दंड तक है।

रति-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमे रति के ढगों, आकारो, आसनो आदि का विवेचन होता है। कामशास्त्र।

रति सत्वरा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] असबरग। पृक्का।

रति-समर—पुं० [ष० त०] सभोग। मैथुन।

रति-साधन—पु० [ष० त०] पुरुष का लिंग। शिश्न।

रति-सुन्दर—पु० [स० त०] एक रति-बंध। (कामशास्त्र)

रती*|—स्त्री० [स० रति] १ कामदेव की पत्नी। रति। २ सौंदर्य। ३. शोभा। ४ मैथुन। सभोग। ५ आनन्द। मौज।
|स्त्री०=रत्ती।
अव्य० बहुत थोड़ा। जरा-सा।

रतीक—अव्य०=रतिक (थोड़ा सा)।

रतीश—पु० [रति-ईश, ष० त०] कामदेव।

रतुआ|—पु० [देश०] एक तरह की बरसाती घास।

रतून—पु० [देश०] वह ईख या गन्ना, जो एक बार काट लेने पर फिर उसी पहली जड़ या पेड़ी मे निकलता है। पेड़ी का गन्ना।

रतोपल*|—पु० [स० रक्तोत्पल] १ लाल कमल। २ लाल सुरमा। ३ लाल खड़िया। ४. गेरू।

रतौंधी—स्त्री० [हिं० रात+अंधा] आँख का एक प्रसिद्ध रोग जिसके कारण रोगी को रात के समय कुछ भी दिखाई नही पड़ता।

रतौन्हीं|—स्त्री०=रतौंधी।

रत्त*—पु०=रक्त।
वि०=रत।

रत्तक—पु० [स० रक्तक, प्रा० रत्त] एक तरह का लाल रंग का पत्थर।

रत्तरी|—स्त्री०=रात्रि।

रत्ती—स्त्री० [स० रक्ति, का प्रा० रत्तिआ] १ माशे के आठवें अंश के बराबर की एक तौल या मान। २ उक्त परिमाण का बटखरा। ३ घुघची का दाना जो साधारणतया तौल मे माशे के आठवें अंश के बराबर होता है।
पद—रत्ती भर=बहुत थोड़ा। जरा-सा
वि० बहुत ही थोड़ा। किंचित् मात्र।
स्त्री० [स० रति] १. छवि। शोभा। २ सौंदर्य।

रत्यी—स्त्री०=अरथी।

रत्न—पुं० [सं०√रम् (क्रीड़ा)+नि-प्रत्यय, तकार—आदेश] १. कुछ विशिष्ट छोटे, चमकीले खनिज पदार्थ या बहुमूल्य पत्थर, जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं। २. माणिक्य। मानिक। लाल। ३ वह जो अपनी जाति या वर्ग में औरों से बहुत अच्छा या बढ़-चढ़कर हो। ४. जैनों के अनुसार सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र।

रत्न-कंदल—पुं० [ष० त०] प्रवाल। मूँगा।

रत्नकर—पुं० [सं० रत्न√कृ (करना)+ट] कुबेर का एक नाम।

रत्न-कर्णिका—स्त्री० [मध्य० स०] कान में पहनने का एक जड़ाऊ गहना।

रत्न-कांति—स्त्री० [ब० स०] गंगा में मिलनेवाली एक नदी का नाम।

रत्न-कूट—पुं० [ब० स०] १. एक पौराणिक पर्वत का नाम। २ एक बोधिसत्व का नाम।

रत्न-गर्भा—पुं० [ब० स०] १ कुबेर का एक नाम। २. रत्नाकर। समुद्र। ३ एक बुद्ध का नाम।

रत्न गर्भा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] वह जिसके गर्भ में रत्न हों। पृथ्वी।

रत्नगिरि —पुं० [मध्य० स०] बिहार के एक पर्वत का प्राचीन नाम।

रत्न-चूड़—पुं० [ब० स०] एक बोधिसत्व।

रत्नछाया—स्त्री० [सं० रत्नच्छाया] रत्न की आभा, चमक या दमक।

रत्न-त्रय—पुं० [ष० त०] सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र। (जैन)

रत्न-दामा—स्त्री० [ष० त०] १. रत्नों की माला। २. सीता की माता। (गर्ग संहिता)

रत्न-दीप—पुं० [मध्य० स०] १. रत्नों से जड़ा हुआ दीपक। रत्न-जटित दीपक। २ एक कल्पित रत्न का नाम जो बहुत उज्ज्वल माना गया है।

रत्न-द्रुम—पुं० [ष० त०] मूँगा।

रत्न-द्वीप—पुं० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

रत्न-धर—पुं० [ष० त०] धनवान्।
वि० रत्नधारण करनेवाला।

रत्न-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] दान के उद्देश्य से रत्नों की बनाई हुई गौ की मूर्त्ति।

रत्न-ध्वज—पुं० [ब० स] एक बोधिसत्व।

रत्न-नाभ—पुं० [ब० स०] विष्णु।

रत्न-निधि—पुं० [ष० त०] १. खंजन पक्षी। ममोला। २. समुद्र। ३ मेरु पर्वत। ४. विष्णु।

रत्न-परीक्षक—पुं० [ष० त०] जौहरी।

रत्न-पर्वत—पुं० [ष० त०] सुमेरु पर्वत।

रत्न-पाणि—पुं० [ब० स०] एक बोधिसत्व।

रत्न-पारखी—पुं०=रत्न-परीक्षक (जौहरी)।

रत्न-प्रदीप—पुं० [मध्य०स०] ऐसा एक कल्पित रत्न जो दीपक के समान प्रकाशमान माना गया है।

रत्न-प्रभ—पुं० [ब० स०] देवताओं का एक वर्ग।

रत्न-प्रभा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. पृथ्वी। २ जैनों के अनुसार एक नरक।

रत्न-बाहु—पुं० [ब० स०] विष्णु।

रत्न-भूषण—पुं० [मध्य० स०] रत्न-जटित आभूषण। जड़ाऊ गहना।

रत्न-माला—स्त्री० [मध्य० स०] १. रत्नों की माला। २. [illegible] की कन्या का नाम।

रत्न-माली (लिन्)—पुं० [सं० रत्नमाला+इनि] [illegible]

रत्न-राज्—पुं० [सं० रत्न√राज् (शोभित) क्विप्, उप० स०] माणिक्य। मानिक।

रत्न-वती—स्त्री० [सं० रत्न+मतुप्+ङीप्] पृथ्वी।

रत्न-शाला—स्त्री० [ष० त०] १. [illegible] २. [illegible]

रत्न-सागर—पुं० [मध्य० स०] समुद्र का वह भाग जहाँ से प्रायः रत्न निकलते हों।

रत्न-सानु—पुं० [ब० स०] सुमेरु पर्वत।

रत्न-सू—स्त्री० [सं० रत्न√सू (प्रसव)+क्विप्] पृथ्वी।

रत्नाकर—पुं० [रत्न-आकर ष० त०] १. समुद्र। २. [illegible] जिनमें से रत्न निकलते हों। ३. वाल्मीकि का पहले का नाम। ४ गौतम बुद्ध का एक नाम।

रत्नागिरि—पुं०=रत्नगिरि (बिहार के निकट एक पर्वत)।

रत्नाभरण—पुं० [रत्न-आभरण, मध्य० स०] रत्नों से जड़ा हुआ गहना।

रत्नाद्रि—पुं० [रत्न-अद्रि, मध्य० स०] एक पर्वत। (पुराण)

रत्नाधिपति—पुं० [रत्न-अधिपति, ष० त०] कुबेर।

रत्नावली—स्त्री० [रत्न-आवली, ष० त०] १. रत्नों या मणियों की पंक्ति या श्रेणी। २. रत्नों की माला। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसमें [illegible] [illegible] [illegible]

रत्नी (त्निन्)—[illegible]

[illegible]

रथंतर—पुं० [सं० रथ√तृ (तरना)+खच्, मुमागम] १. एक साम का नाम। २. एक प्रकार का साम। ३. एक प्रकार की अग्नि।

रथ—पुं० [सं०√रम् (क्रीड़ा)+क्थन्] १. प्राचीन काल की एक प्रकार की गाड़ी जिसमें घोड़े या बैल जुते हुए चलते थे। गाड़ी। बहल। यान। स्यंदन। २. शरीर जो आत्मा का यान या सवारी है। उदा०—[illegible] है।—सेनापति। ३. पद या पैर जिनसे प्राणी चलते हैं। ४. क्रीड़ा या विहार का स्थान। ५. तिनिश का पेड़। ६ वह शिला-मंदिर जो किसी चट्टान को काटकर बनाया गया हो। (दक्षिण)

रथ-कल्पक—पुं० [सं० ष० त०] १. प्राचीन भारत में वह अधिकारी जो किसी राजा के रथों, यानों आदि की देख-रेख करता था। २ [illegible]।

३ घर। ४ प्राचीन भारत मे, धनवानो का वह प्रधान अधिकारी जो उनके घर आदि सजाता और उनके पहनने के वस्त्र आदि रखता था।

रथकार—पु० [स० रथ√कृ (करना)+अण्] १ रथ बनानेवाला कारीगर। २ बढई। ३. माहिष्य पिता से उत्पन्न एक वर्णसकर जाति।

रथ-कूबर—पु० [ष० त०] रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है।

रथ-क्रांत—पुं० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

रथ-क्रांता—स्त्री० [स० रथक्रात+टाप्] एक प्राचीन जनपद का नाम।

रथ-गर्भक—पु० [ब० स०,+कप्] कधो पर उठाई जानेवाली सवारी। जैसे—डोला, पालकी आदि।

रथ-गुप्ति—स्त्री० [ब० स०] रथ-नीड (दे०) के चारो ओर सुरक्षा की दृष्टि से लकडी, लोहे आदि का लगाया जानेवाला घेरा।

रथ-चरण—पु० [ष० त०] १ रथ का पहिया। [रथचरण+अच्] २ चकवा। चक्रवाक।

रथ-चर्या—स्त्री० [ष० त०] रथ पर चढकर भ्रमण करना।

रथ-द्रु—पु० [मध्य० स०] १ तिनिश का पेड। २ बेंत।

रथ-नीड—पु० [ष० त०] रथ मे वह स्थान जहाँ लोग बैठते है। गद्दी।

रथ-पति—पु० [ष० त०] रथ का नायक। रथी।

रथ-पर्याय—पु० [ब०स०] १ तिनिश का पेड़। २ बेत।

रथ-पाद—पु० =रथचरण।

रथ-महोत्सव—पु० [ष० त०] रथ यात्रा। (दे०)

रथ-यात्रा—स्त्री० [तृ० त०] हिन्दुओ का एक पर्व या उत्सव जो आषाढ शुक्ल द्वितीया को होता है और जिसमे जगन्नाथ, वलराम और सुभद्रा की मूर्तियाँ रखकर उनकी सवारी निकालते है।

रथ-योजक—पु० [ष० त०] सारथि।

रथ-वर्त्म (न्)—पु० [ष० त०] राजमार्ग।

रथवान् (वत्)—पु० [स० रथ+मतुप्] रथ हाँकनेवाला। सारथि।

रथवाह—पु० [स० रथ√वह् (ढोना)+अण्] १ रथ चलानेवाला। सारथि। २ रथ खीचनेवाला घोडा।

रथ-वाहक—पु० [स० रथवाह+कन्] सारथि।

रथ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ रथ रखे जाते हो। गाडी-खाना।

रथ-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] रथ चलाने की क्रिया।

रथ-सप्तमी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ शुक्ला सप्तमी।

रथस्था (स्था)—स्त्री० [स०] पचाल देश की राम-गगा नामक नदी का पुराना नाम।

रथांग—पु० [रथ-अग, ष० त०] १ रथ का पहिया। २ [रथाग+अच्] चक्र नामक अस्त्र। ३ चकवा पक्षी।

रथाग-धर—पु० [ष० त०] १ श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

रथाग-पाणि—पु० [ब० स०] विष्णु।

रथागी—स्त्री० [स० रथाग+ङीष्] ऋद्धि नामक ओषधि।

रथाक्ष—पु० [रथ-अक्षि, ष० त०] १. रथ का पहिया। २ रथ का धुरा। ३ कार्तिकेय का एक अनुचर। ४ चार अगुल का एक परिमाण।

रथाग्र—पु० [रथ-अग्र, ब० स०] वह जिसका रथ सबसे आगे हो, अर्थात् श्रेष्ठतम योद्धा।

रथिक—पु० [स० रथ+ठन्—इक] १ वह जो रथ पर सवार हो। रथी। २ तिनिश का पेड।

रथी (थिन्)—पु० [स० रथ+इनि] १ वह जो रथ पर चढकर चलता हो। रथी। २. रथ पर चढकर युद्ध करनेवाला। रथवाला योद्धा। **पद—महारथी।**

३ एक हजार योद्धाओ से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा। उदा०—पूरण प्रकृति सात धीर वीर है विख्यात रथी महारथी अतिरथी रण साजिके।—रघुराज।

वि० जो रथ पर सवार हो।

स्त्री०=अरथी (मृतक की)।

रथोत्सव—पु० [रथ-उत्सव, ष० त०] रथ-यात्रा। (दे०)

रथोद्धता—स्त्री० [रथ-उद्धता, उपमित स०] ग्यारह अक्षरो का एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका पहला, तीसरा, सातवाँ, नवाँ और ग्यारहवाँ वर्ण गुरु तथा अन्य वर्ण लघु होते है।

रथ्य—पु०[स० रथ+यत्]१ वह घोडा जो रथ मे जोता जाता हो। २ रथ चलानेवाला। सारथि। ३ पहिया।

रथ्या—स्त्री०[स० रथ्य+टाप्]१. रथो का समूह। २ वह मार्ग जो वनो मे रथ के चलने से बन जाता था। ३ बडे नगरो मे वह चौडा मार्ग या सडक जिसपर रथ चलते थे। ४ घर का आँगन या चौक। ५ नावदान। पनाला।

रद—पु०[स०√रद् (विलेखन)+अच्] दत। दाँत।

वि०=रद्द।

रद-क्षत—पु०[तृ०त० या ष० त०] रति आदि के समय दाँतो के गडने या लगने का चिह्न।

रदच्छद—पु०[स० रद√छद् (आच्छादन)+णिच्+घ, ह्रस्व] होठ। ओष्ठ।

रद-छत—पु०=रद-क्षत।

रद-दान—पु०[स० ष० त०](रति के समय) दातो से ऐसा दबाना कि चिह्न पड जाय। रद-क्षत करना।

रदन—पु०[स०√रद्+ल्युट्—अन] दशन। दात। दत।

रदनच्छद—पु०[स० रदन√छद्+णिच्+घ, ह्रस्व] ओष्ठ। अधर। होट।

रदनी (निन्)—वि०[स०रदन+इनि] दातवाला।

पु० हाथी।

रद-पट—पु०[स० ष० त०] अधर। होठ।

रद-बदल—स्त्री०[अ० रद्दोबदल] परिवर्तन

रदवास—पु०[स० रद+वास=आवरण] होठ। उदा०—अन्तरपट रदवास सरीरु।—नूर मोहम्मद।

रदी (दिन्)—पु०[स०√ रद्+इनि] हाथी। गज।

रदीफ—स्त्री० [अ० रदीफ]१ वह व्यक्ति जो घोडे पर मुख्य सवार के पीछे बैठता है। २ वह शब्द जो गजलो आदि मे प्रत्येक काफिए या अन्त्यानुप्रास के बाद आनेवाला शब्द या शब्द-समूह। जैसे—चला है ओ दिले राहत-तलब क्या शादियाँ होकर। जमीने कूए जानो

रज देनी आरमाँ होकर। में 'शादयाँ' और 'आस्माँ' काफिया है, तथा 'होकर' रदीफ है। ३. पीछे की ओर रहनेवाली सेना। पृष्ठ-भाग के सैनिक।

रदीफवार—अव्य० [अ०+फा०] १. रदीफ के अनुसार। २. वर्णमाला के क्रम से। अक्षर-क्रम से।

रद्द—वि० [अ०] १. बदला हुआ। परिवर्तित। २. (लिखित सामग्री) जो नापसद अथवा दूषित होने पर काट या छाँट दी गई हो। जो अनुपयुक्त समझकर निरर्थक या व्यर्थ कर दिया गया हो।
स्त्री० [देश०] कै। वमन।

रद्दा—पु० [फा० रदः] १ दीवार मे जुड़ाई की एक पक्ति। २. मिट्टी की दीवार उठाने मे उतना अश, जितना चारो ओर एक बार मे उठाया जाता है।
क्रि० प्र०—उठाना।—रखना।
३. थाली मे एक प्रकार की मिठाइयो का चुनाव जो स्तरो के रूप मे नीचे-ऊपर होता है।
क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।
४. नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओ का थाक या ढेर।
क्रि० प्र०—चुनना।
५ कुश्ती मे अपने प्रतिपक्षी को नीचे लाकर उसकी गरदन पर कुहनी और कलाई के नीचे की हड्डी से रगड़ते हुए आघात करना।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
६. चमड़े की वह मोहरी जो भालुओ के मुँह पर बाँधी जाती है।

रद्दी—वि० [फा० रद] १ जो व्यर्थ हो तथा किसी उपयोग मे न लाया जा सकता हो। जैसे—रद्दी कागज। २. जिसमे कुछ भी बढ़ियापन या अच्छाई न हो। बहुत ही निम्न कोटि या प्रकार का। जैसे—रद्दी कपड़ा।
स्त्री० लिखे अथवा छपे हुए ऐसे कागज जिनका कोई उपयोग अब न होने को हो। पुराने और व्यर्थ के कागज।

रद्दीखाना—पु० [हिं० रद्दी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ खराब और निकम्मी चीजें रखी या फेंकी जायँ।

रधार|—स्त्री० [देश०] ओढ़ने का दोहरा वस्त्र। दोहर।

रधेरा जाल—पु० [स० रध=छेद+ऐरा (प्रत्य०)+जाल] मछली फँसाने का छोटे छेदोवाला जाल।

रन*—पु० [स० रण] युद्ध। लड़ाई। सग्राम।
पु० [स० अरण्य] जगल। वन।
पु० [?] १. झील। ताल। २. समुद्र का वह छोटा खंड जो तीन ओर से स्थल से घिरा हो। छोटी खाड़ी।
पु० [अ०] क्रिकेट के खेल मे बल्लेबाज द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाई जानेवाली दौड़।

रनकना|—अ० [देश०, स० रणन=शब्द करना] घुँघरू आदि का मद-मंद शब्द होना।

रनछोर—पु०=रणछोड़ (श्रीकृष्ण)।

रनना*—अ० [स० रणन=शब्द करना] घुँघरुओ आदि का मन्द और मधुर शब्द मे बजना या बोलना।

रनबंका|—पु० [स० रण+हिं० बाँका] युद्ध-क्षेत्र मे वीरता दिखानेवाला योद्धा।

रन-बरिया|—स्त्री० [देश०] एक तरह की जगली भेंट।

रन-बाँकुरा—पुं०=रन-बंका।

रन-लपिका—स्त्री० [डिं०] गौ। गाय।

रनवादी*—पु० [सं० रण+वादी] योद्धा।

रन-वास—पु० [हिं० रानी+वास] १. महल का वह अंश जिसमे रानियाँ रहती थी। अंतःपुर। २. घर मे स्त्रियों के रहने का स्थान। जनानखाना।

रन-वासन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की फली।

रन-साजी—स्त्री० [सं० रण+फा० साजी] युद्ध छिड़ने या छेड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—गरजा सिवाजी की सवेग तेज बाजी नाहि गाजी गजनी के रनसाजी जु चहत हैं।—रत्ना०।

रनित*—भू० कृ०=रणित (बजता हुआ)।

रनिवास|—पु०=रनवास।

रनी—पु० [सं० रण+हिं० ई (प्रत्य०)] रण करनेवाला व्यक्ति। योद्धा।

रनेत|—पुं० [सं० रण+एत (प्रत्य०)] भाला। (डिं०)

रपट|—स्त्री० [हिं० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। २. ऐसा स्थान जहाँ पैर रपटता या फिसलता हो। ३. जल्दी-जल्दी रपटने अर्थात् तेजी से चलने की क्रिया या भाव। दौड़। ४. ढालुआँ स्थान। उतार। ढाल।
स्त्री० [अ० रब्त] आदत। टेव।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।—होना।
स्त्री० [अं० रिपोर्ट] चोरी, थाने आदि मे जाकर दी जानेवाली मार-पीट, चोरी-डाके आदि दुर्घटनाओं की सूचना।

रपटना|—अ० [सं० रफन=सरकना, मि० फा० रफतन्] १. निचली या ढालवी जमीन पर पाँव और फलतः व्यक्ति आदि का फिसलकर आगे बढ़ना। २. तेजी से चलना।
स० मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

रपटा—पु० [हिं० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान या स्थिति जिसमे पैर रपटता या फिसलता हो। फिसलन। ३. ढालुई भूमि। ढाल। ढलान। (रैम्प)

रपटाना—स० [हिं० रपटना] १. किसी को रपटने में प्रवृत्त करना। २. (काम) जल्दी से पूरा करना।

रपटीला—वि० [हिं० रपटन (ना)+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रपटीली] इतना या ऐसा चिकना जिसपर पैर फिसलता या फिसल सकता हो। पिच्छिल।

रपट्टा|—पु० [हिं० रपटना] १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपट। २ बहुत जल्दी जल्दी चलना। तेज चलना।
मुहा०—रपट्टा मारना=बहुत जल्दी जल्दी या तेजी से चलना।
३. दौड़-धूप। ४ दे० 'झपट्टा'।

रपाती—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

रपुर—पुं० [स० हरिपुर] स्वर्ग। (डिं०)

रफ—पु० [अ० रफ़] मचान।
वि० [अं०] १. (कागज, कपड़ा आदि) जिसमे चिकनापन न हो। खुरदरा। २. (विवरण, लेख आदि) जो अभी ऐसे रूप मे हो कि ठीक तथा

साफ किया जाने अर्थात् पुन. लिखा जाने को हो। नमूने के रूप मे तैयार किया हुआ।

रफता—वि०[अ० रफ्त]१ गया या बीता हुआ। गत। २ मृत।

रफता-रफता—अव्य०[अ० रफत. रफत.] शनै -शनै । धीरे-धीरे।

रफते-रफते—अव्य०=रफ्ता-रफ्ता।

रफल—स्त्री०[अ० राइफल] विलायती ढग की एक प्रकार की वदूक। राइफल।

पुं०[अ० रैंपर] एक तरह की ऊनी मोटी चादर।

रफा—वि०[अ० रफ्अ]१ दूर किया या हटाया हुआ। २ मिटाया हुआ। ३. समाप्त या पूरा किया हुआ। ४. निवारित या शात किया हुआ।

पद—रफा-दफा।

रफाह—स्त्री०[अ० रिफह]१ आराम। सुख। २ भलाई। हित।

रफीअ—वि० [अ० रफीअ] १ ऊँचा। वुलद। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

रफीक—पु०[अ० रफीक]१ साथी। संगी। २ सहायक । मददगार। ३. मित्र ।

वि० प्राय' या सदा साथ रहनेवाला।

रफीदा—पु०[अ० रफाद]१ वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसी जाती है। २ कपडे की वह गद्दी जिसे हाथ मे लगाकर नानवाई तदूर मे रोटी चिपकाते हैं। काबुक। ३. एक प्रकार की गोलाकार पगडी।

रफू—पुं०[फा०रफ़ू] १. एक प्रकार की सिलाई जिसमे बीच से कुछ कटा या फटा हुआ कपडा इस प्रकार वीच मे सूत भरकर मिलाया जाता है कि साधारणत जोड नही दिखाई पडता। २ असगत या असवद्ध वातो की संगति वैठाने की क्रिया।

मुहा०—(वात) रफू करना= कही हुई दो असवद्ध या असगत वातो मे सामजस्य स्थापित करना। वात वनाना।

रफूगर—पु०[फा० रफूगर] [भाव० रफूगरी] वह कारीगर जो कपडो मे रफू करने या वनाने का काम करता हो।

रफूगरी—स्त्री०[फा०] रफूगर का काम, पेशा या भाव।

रफू-चक्कर—वि०[अ० रफू+हिं० चक्कर] जो धीरे से तथा विना आहट दिये कही चला गया हो। चपत। गायव। (व्यक्तियो के लिए प्रयुक्त)

क्रि० प्र०—वनना।—होना।

रफ्त—स्त्री०[फा०] चलना या जाना। जैसे—आमद रफ्त=आना-जाना।

रफ्तनी—वि०[फा०] जो जानेवाला हो।

स्त्री०१ जाने की क्रिया या भाव। २ माल का कही वाहर भेजा जाना। निकासी। निर्यात।

रफ्तार—स्त्री०[फा०] १ गति। चाल। २ चलने-दौडने के समय और पार की जानेवाली दूरी के हिसाव से आनुपातिक गति। जैसे—मोटर ५० मील घटे की रफ्तार से चलती है। ३ प्रगति। ४ दशा। हालत।

रफ्तार-गुफ्तार—स्त्री० [फा०] उठने-वैठने, चलने-फिरने और वात-चीत करने का ढग या भाव। चाल-चलन। तौर-तरीका।

रफ्ता-रफ्ता—अव्य०=रफता रफता।

रब—पु०[अ०]१. मालिक। २. ईश्वर।

रवकना—अ०[?] [भाव० रवकी] डर से छिपना। दुवकना।

रवड़—पु०[अं० रवर] १. एक प्रकार का वृक्ष जो वट वर्ग के अन्तर्गत है, और जिसका सुखाया हुआ दूध इसी नाम से प्रसिद्ध है। २. उक्त दूधसे वना हुआ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जिससे गेंद, फीते आदि वहुत सी चीजें वनती है।

स्त्री०[हिं० रगडा] १. वहुत अधिक परिश्रम। रगड़ा। २. व्यर्थ का श्रम। फजूल की हैरानी।

क्रि० प्र०—खाना।—पडना।

३. रास्ते की ऐसी चक्करदार दूरी जिसमे परिश्रमपूर्वक वहुत चलना पडता हो।

रवड़ छंद—पु०[हिं०+स०] कविता का ऐसा छद जिसमे मात्राओ आदि की गिनती का कुछ विचार न हो। (व्यग्य)

रवड़ना—स०[हिं० रपटना या स० वर्तन, प्रा० वहन]१. घुमाना-फिराना। चलाना। २. किसी तरल पदार्थ मे कोई वस्तु (करछी आदि) डालकर चारो ओर चलाना या फेरना। फेंटना। ३ किसी से वहुत अधिक परिश्रम कराना।

अ० घूमना-फिरना।

स०=रगडना।

रवड़ी—स्त्री०[प्रा० रव्वा=अवलेह]गाढा किया हुआ दूध का लच्छेदार रूप। वसौंधी।

रवदा—पु०[हिं० रवडना]१ वह श्रम जो कही वार वार आने जाने या दौड-धूप करने से होता है। २. कीचड।

मुहा०—रवदा पड़ना=ऐसा पानी वरसना कि रास्ते मे कीचड हो जाय।

रवद्द—स्त्री०[?] आवाज। शब्द।

रवर—पु०=रवड।

रवाना—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा डफ जिसके मेडरे मे मजीरे भी लगे होते हैं।

रवाव—पु० [अ०] सितार, सारगी आदि की तरह का एक वाजा।

रवाविया—पु०=रवावी।

रवावी—पु० [अ०] रवाव वजानेवाला।

रवी—स्त्री० [अ० रवीअ] १ वसत ऋतु। वहार का मौसिम। २. उक्त ऋतु मे तैयार हानेवाली तथा काटी जानेवाली फसल। 'खरीफ' से भिन्न।

रवीव—पु० [अ०] स्त्री या पुरुष की दृष्टि से उसके पहले व्याह से उत्पन्न पुत्र।

रवील—स्त्री० [देश०] मँझोले आकार का एक प्रकार का पक्षी।

रव्त—पु० [अ०] १ अभ्यास। मश्क। मुहावरा। रपट।

क्रि० प्र०—पडना।—होना।

२. आपस मे होनेवाला मेल-जोल और आत्मीयता का सम्वन्ध।

रव्त-जात—स्त्री० [अ०] आपस मे होनेवाला मेल-जोल और सग-साथ।

रव्ध—भू० कृ० [सं०√रभ् (आरभ करना)+वत] [स्त्री० रव्धा] आरभ किया हुआ। शुरू किया हुआ।

रव्व—पु०=रव।

रव्वा—पु० [फा० अरावा] १. वह गाडी जिस पर तोप लादी जाती है। तोपखाने की गाडी। २.ऐसी गाडी या रथ जिसे वैल खीचते हो।

रव्वाव—पु०=रवाव।

रभस—पु० [सं० √रभ्+असच्] १ वेग। तेजी। २. प्रसन्नता। हर्ष। ३ प्रेमपूर्वक अथवा प्रेम के कारण मन मे होनेवाला उत्साह। ४. उत्सुकता। ५. मान। प्रतिष्ठा। सभ्रम। ६. पश्चात्ताप। पछतावा। ७ कार्य-कारण सम्बन्धी अथवा पूर्वापर का विचार। ८ अस्त्र निष्फल करने की विधि।

रम—पु०[स० रम(क्रीडा)+अच्]१ कामदेव। २ स्त्री का पति। ३ प्रेमी। प्रेमपात्र। ४ दिव्य व्यक्ति। ५ लाल अशोक।
वि०१ प्रिय। मनोरम। सुन्दर। ३ आनन्ददायक। ४ मनोरंजक।
वि०[हिं० राम] हिं० 'राम' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दो के आरम्भ मे रखने पर प्राप्त होता है। जैसे—रमक जरा, रमचेरा।
पु०[अ०] एक प्रकार की विलायती शराब।

रमइया†—पु०=राम।

रमक—पु० [स०√रम्+क्वुन्—अक] १ प्रेमपात्र। २. प्रेमी। ३. उपपति। जार।
स्त्री०[हिं० रमकना] १ झूलने की क्रिया या भाव। २ पेंग। ३ तरग। लहर।
स्त्री०[अ० रमक]१. अतिम स्वास। २. अतिम जीवन। ३. किसी चीज मे किसी दूसरी चीज का दिया जानेवाला हल्का पुट।

रमकजरा—पु० [हिं० राम+काजल] एक प्रकार का धान जो भादों मे पकता है।

रमकना—अ०[हिं० रमना]१ हिंडोले पर झूलना। हिंडोले पर पेंग मारना। २ झूमते हुए चलना।
अ०[हिं० रमक] किसी चीज मे किसी दूसरी चीज की हलकी गन्ध, छाया या प्रभाव दिखाई देना।

रमचकरा —पु० [हिं० राम+चक्र] बेसन की मोटी रोटी।

रमचा—पु०[हिं० चमचा] छोटी कलछी। चमचा।

रम-चेरा—पु०[हिं० राम+चेरा=चेला] छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला व्यक्ति। टहलुआ। (परिहास)

रमजान—पु०[अ० रमजान]अरबी वर्ष का नवाँ महीना जिसमे मुसलमान रोजा रखते हैं।

रम-झल्ला†—पु०=झमेला।

रम-झिगनी†—स्त्री० दे० 'भिंडी'।

रमझोला—पु०[हिं० राम+झूलना]पैर मे पहनने के घूँघरू। नूपुर।(डिं०)

रमझोल—पु०[?] व्रज मे, एक प्रकार का लोकगीत।

रमठ—पु०[स०√ रम्=अठन्] १. हीग। २ एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी।

रमड़ना—अ०[स० रमण]१. रमण करना। रमना। २ किसी बात मे मन लगाना। ३. युक्त होना।

रमण—पु०[स०√रम्+—ल्युट् अन]१. मन प्रसन्न करनेवाली क्रिया। क्रीडा। विलास। २ स्त्री-प्रसग। मैथुन। सभोग। ३. घूमना-फिरना या टहलना। विहार। ४. [√रम्+णिच्+ल्यु—अन] स्त्री का पति जो उसके साथ भोग-विलास करता है। ५ कामदेव। ६ गधा। ७ अडकोश। ८. सूर्य का अरुण नामक सारथि। ९. ९ एक प्राचीन वन। १०. एक प्रकार का वर्णिक छद।
वि० १. रमने या विहार करनेवाला। २. रमण के योग्य। ३ आनन्द या सुख देनेवाला। ४ प्रिय।

रमणक—पु०[स०√रमण+कन्] पुराणानुसार जबूद्वीप के अतर्गत एक वर्ष या खड। इसे रम्यक भी कहते हैं।

रमण गमना—स्त्री०[स० ब० स० टाप्] साहित्य मे एक प्रकार की नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि सकेत-स्थान पर नायक आया होगा और मै वहाँ उपस्थित न थी।

रमणी—स्त्री०[सं० रमण+ङीप्]१. रमण करने योग्य युवती और सुन्दर स्त्री। २. औरत। नारी। स्त्री। ३ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४ सुगन्धवाला।

रमणीक—वि०[सं० रमणीय] जिसमे मन रमण करता हो या रम सके, अर्थात् सुन्दर। मनोहर।

रमणीय—वि०[स०√रम्+अनीयर्] जिसमे मन रमण करे या रम सके। अर्थात् सुन्दर। मनोहर।

रमणीयता—स्त्री०[सं० रमणीय+तल्+टाप्]१. रमणीय होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. सुदरता। ३. साहित्य-दर्पण के अनुसार साहित्यिक कृति या रचना का वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं मे बना रहे या क्षण-क्षण में नवीन रूप धारण किया करे।

रमता—वि०[हिं० रमना=घूमना फिरना] जो एक जगह जमकर न रहे बल्कि बराबर इधर-उधर रमण करता हो। घूमता-फिरता। जैसे—रमता जोगी।

रमति—पु०[सं०√रम्+अतिच्] १ नायक। २ स्वर्ग। ३ कामदेव। ४ काल। ५. कौआ।

रमदी†—पु०[हिं० राम+स० आढ्य] एक प्रकार का जडहन जो अगहन के महीने मे पकता है। इसका चावल कई बरस तक रह सकता है।

रमन*—पु०, वि०=रमण।

रमनक—वि०=रमणक।

रमनकसोरा—पु०[देश०] एक प्रकार की मछली। कँवल-मोरा।

रमना—अ०[स० रमण] १. रमण करना। २ भोग-विलास या सुख प्राप्ति के लिए कही रहना या ठहरना। मन लगने के कारण कही ठहरना या रहना। ३ रति-क्रीडा या सभोग करना। ४ आनद या मौज करना। मजा लेना। ५ किसी चीज के अन्दर अच्छी तरह भरा हुआ या व्याप्त होना। ६ किसी काम, बात या व्यक्ति मे अनुरक्त या लीन होना। ७ किसी के आस-पास घूमना या चक्कर लगाना। ८ चुपके से चल देना। गायब या चपत होना।
सयो० क्रि०—जाना।—देना।
९ आनंदपूर्वक घूमना-फिरना। विहार करना।
पुं० [स० रमण] १. चरागाह। चरी। २ वह घेरा जिसमे घूमने-फिरने के लिए पशुओ को खुला छोडा जाता है। ३ उपवन। ४ कोई सुदर या रमणीक स्थान।

रमनी*—स्त्री०=रमणी।

रमनीक*—वि०=रमणीक।

रमनीय*—वि०=रमणीय।

रमल—पु०[अ०] १ भविष्यत् घटनाओ के सबंध मे पासे की बिंदियों की गणना आदि के आधार पर किया जानेवाला कथन। २ वह विद्या जिसके

द्वारा उक्त कथन किया जाता है। (यह फलित ज्योतिष का एक प्रकार है।)

रमा—स्त्री०[स०√रम्+णिच्+अच्+टाप] लक्ष्मी।

रमा-कात—पु०[प० त०] विष्णु।

रमाधव—पु०[प० त०] विष्णु।

रमा-नरेश*—पु०[हि० रमा+नरेश=पति] विष्णु।

रमाना—स०[हि० रमना का स० रूप] १ रमण कराना। २. अनुरजित करना। अनुरक्त बनाना। मोहित करना। लुभाना। ३ अनुरक्त करके अपने अनुकूल बनाना। ४ अनुरक्त करके अपने पास रोक रखना। ५ किसी के साथ जोडना या लगाना। सयुक्त करना। जैसे—किसी काम मे मन रमाना। ६ किसी काम या बात का अनुष्ठान आरभ करना। जैसे—रास रमाना=रास की व्यवस्था करना। ७ अपने अग या शरीर मे पोतना या लगाना। जैसे—शरीर मे भभूत रमाना।

रमा-निवास—पु०[हि० रमा+निवास] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमा-रमण—पु०[ष० त०] विष्णु।

रमाली—पु०[फा० रूमाली] एक तरह का बढिया पतला चावल।

रमा-बीज—पुं०[ष० त०] एक प्रकार का तात्रिक मत्र जिसे लक्ष्मीबीज भी कहते हैं।

रमा-वेष्ट—पु०[ष० त०]श्रीवास चदन जिससे तारपीन नामक तेल निकलता है।

रमास—पुं०=रवाँस (फली और दाने)।

रमित*—भू० कृ० [हि० रमना] लुभाया हुआ। मुग्ध।

रमी—स्त्री०[मलाय०] एक प्रकार की घास।

स्त्री०[अं०[एक प्रकार का ताश का खेल।

रमूज—स्त्री०[अ० रम्ज का बहु०] १ कटाक्ष। २ इशारा। सकेत ३ कोई ऐसी गूढ बात जो सहज मे न समझी जा सकती हो। गभीर विषय। ४ पहेली। ५. श्लिष्ट कथन या बात। श्लेष। ६ भेद या रहस्य की बात।

रमेश—पु०[रमा-ईश, प० त०] रमा के पति, विष्णु।

रमेश्वर—पु०[रमा-ईश्वर, ष० त०] विष्णु।

रमेसर†—पु०=रामेश्वर।

रमेसरी—स्त्री०[हि० रामेसर] लक्ष्मी। उदा०—पाँचई तेरासि दखिन रमेसरी।—जायसी।

रमैती—स्त्री०[देश०] १ किसानो की एक रीति जिसमे एक कृषक आवश्यकता पडने पर दूसरे के खेत मे काम करता है और उसके बदले मे वह भी उसके खेत मे काम कर देता है। इसे पूर्व मे गैठ और अवध के उत्तरीय भागो मे हँड कहते हैं।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२ वह नफरी या काम का दिन जो इस प्रकार कार्य करने मे लगे।

रमैनी—स्त्री०[हि० रामायण] कबीरदास के बीजक का एक भाग जिसमे दोहे और चौपाइयाँ है।

रमैया—पु०[हि० राम+ऐया (प्रत्य०)] १ राम। २ ईश्वर।

रम्ज—स्त्री०[अ०] [बहु० रमूज] १. आँख भौह आदि से किया जानेवाला इशारा। सकेत। २ भेद। रहस्य।

रम्माल—पु०[अ०] रमल विद्या का ज्ञाता।

रम्य—वि०[स०√रम्+यत्] [स्त्री० रम्या] १ जिसमे मन रमण करता या कर सकता हो। रमणीय। २ मनोहर। सुदर। रमणीक। पु०१ चपा का पेड। २ अगस्त का पेड। ३ परवल की जड। ४ पुरुष का वीर्य। शुक्र। ५ वायु के सात भेदो मे से एक।

रम्यक—पु०[स० रम्य+कन्] १ जबूद्वीप का एक खड। (पुराण) २ महानिब। बकायन।

रम्य-पुष्प—पु०[ब० स०] सेमल का पेड।

रम्य-फल—पु०[ब० स०] कुचला।

रम्य-श्री—पु०[ब० स०] विष्णु।

रम्य-सानु—पु०[कर्म० स०] पहाड के शिखर पर की समस्त भूमि। प्रस्थ।

रम्या—स्त्री०[स० रम्य+टाप्] १ रात। २ गगा नदी। स्थल-पद्मिनी। ४ महेन्द्र-वारुणी। इद्रायन। ५ लक्षणा नामक कद। ६ मेरु की एक कन्या जो रम्य को ब्याही थी। ७ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी। ७ सगीत मे, धैवत स्वर की तीन श्रुतियो मे से अतिम श्रुति का नाम।

रम्यामली—स्त्री०[सं० रम्या-आमली, कर्म० स०] भुँई आँवला।

रम्हाना—अ०=रँभाना।

रय—पु०[स०√रय्(गतौ)+घ] १ वेग। तेजी। २ प्रवाह। बहाव। ३ ऐल के ६ पुत्रो मे से एक।

† पु०=रज(धूल)।

रयणपत†—पु० [स० रजनीपति] चद्रमा। (डिं०)

रयणि†—स्त्री० [स० रजनी] रात। (डिं०)

रयन—स्त्री०=रयनि।

रयना—स० [स० रंजन] १. रग से भिगोना। सराबोर करना। २ अनुरक्त करना।

अ० १ रँगा जाना। रजित होना।२ किसी के प्रेम मे अनुरक्त होना। ३ किसी से सयुक्त होना। मिलना।

रयनि*—स्त्री०[स० रजनी, प्रा० रयणी] रात्रि।

रया—स्त्री०[अ०] १ लोगो को धोखे मे रखने के लिए बनाया हुआ बाहरी रूप। दिखावा। बनावट। २ धूर्तता। मक्कारी।

रयाकार—वि०[अ०+फा०] [भाव० रयाकारी] १ झूठा या दिखौआ बाहरी रूप बनानेवाला। आडंबरी। २ धूर्त। मक्कार।

रयासत†—स्त्री०=रियासत।

रय्यत†—स्त्री०[अ० रइयत] प्रजा। रिआया।

ररकार—पु०[स० रकार] रकार की ध्वनि।

ररः*†—स्त्री०[हि० ररना] ररने की क्रिया या भाव। रट। रटन।

ररक†—स्त्री०=रडक।

ररकना†—अ०=रडकना।

ररना†—अ०[प्रा० रड=खिसकना] १ अपनी जगह से खिसक कर नीचे आना। २ दीन भाव से प्रार्थना या याचना करते हुए रोना। ३ विलाप करना। रोना। उदा०—ररि दूबरि भइ टेक बिहूनी।—जायसी।

† स०=रटना।

ररिहा†—वि०[हि० ररना+हा (प्रत्य०)] ररने या गिडगिडानेवाला। पु० बहुत ही गिडगिडाते हुए पीछे पड़ जानेवाला। भिखमगा या याचक। पु०=ररुआ (उल्लू की जाति का पक्षी)।

ररीं—वि०[हिं० रार=झगड़ा] १. रार अर्थात् झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू। २. अधम। नीच।

पु०=ररिहा।

रलना†—अ०[स० ललन=लुब्ध होना] १ किसी चीज का दूसरी चीज मे अच्छी तरह से घुल-मिल जाना। जैसे—दूध मे चीनी रलना। २. व्यक्तियों आदि का किसी भीड़, दल आदि मे पहुँचना तथा मिलना। सम्मिलित होना। जैसे—दो दलो का रलना।

पद—रलना-मिलना।

रल-मिल—स्त्री० [हिं० रलना+मिलना] १ रलने-मिलने की क्रिया या भाव। २ सम्मिश्रण। मिलावट।

रलाना†—स० [हिं० रलना का सक० रूप] १ एक चीज को दूसरी चीज मे मिलाना। २. युक्त करना।

रलिका†—स्त्री०=रली।

रला-मिला—वि०[हिं० रलना-मिलना] [स्त्री० रली-मिली] १ जिसमे कई चीजो का मेल या मिश्रण हो। २ जिसका किसी से घनिष्ठ सम्बन्ध हो। ३ मिला-जुला मिश्रित।

रली—स्त्री० [स०ललन=केलि,क्रीडा] १ रलने अर्थात् मिलने की क्रिया दशा या भाव। २ विहार। क्रीडा। ३ आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष।

पद—रग-रली। (दे०)

स्त्री०[?] चेना नामक कदन्न।

रल्ल*—पु०=रेला।

रल्लक—पु०[स०√रग्+क्विप्, म-लोप, तुक्, रत्√ला+ क;रल्ल+कन्] १ एक प्रकार का मृग। २ कवल।

रव—पु० [स०√रु(ध्वनि)+अप्] १ आवाज। शब्द। २ कुछ देर तक निरन्तर होना रहनेवाला जोर का शब्द। ३ गुल। शोर। हल्ला।

† पु०=रवि(सूर्य)।

† स्त्री०=री (गति)।

रवका—पु०[?] एरड या रेड का वृक्ष।

रवकना—अ०[हिं० रमना=चलना] १. तेजी से आगे बढना। २ कोई चीज लेने के लिए उस पर झपटना। ३. उछलना।

रवण—पु०[स०√रु(ध्वनि)+युच्] १ कासा नामक धातु। २ कोयल। ३ ऊँट। ४ विदूषक। ५ [√रु+ल्युट्—अन]

वि०१ रव अर्थात् शब्द करता हुआ। २ तपा हुआ। गरम। ३ अस्थिर। चचल।

रवण-रेती—स्त्री०=रमण-रेती।

रवताई—स्त्री०[हिं०रावत+आई (प्रत्य०)]१ रावत होने की अवस्था या भाव। २ रावत का कर्तव्य, गुण या पद। ३ प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवथ—पु०[स०√रु+अथ] कोयल।

रवन*—पु०[स० रमण] पति। स्वामी।

वि० रमण करनेवाला।

रवना*—अ०[स० रव+हिं० ना (प्रत्य०)] १. शब्द होना। किसी शब्द या नाम से प्रसिद्ध होना। ३ बोला या पुकारा जाना।

अ०[स० रमण] १. रमण करना। २. कौतुक या क्रीडा करना। ३ किसी के साथ अच्छी तरह मिलना-जुलना। उदा०—राम-नाम रवि रहिबो।—कबीर

रवनि, रवनी*—स्त्री०=रमणी।

रवन्ना—पुं०[फा० रवाना] घरेलू काम-काज करनेवाला तथा बाजार से सौदा-सुलफ लानेवाला नौकर। जैसे—एक मेरे घर अना; दूसरे रवन्ना। २ वह कागज जिस पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा होता है। ३. कोई चीज कही से ले जाने का अनुमति पत्र। जैसे—चुंगी चुका देने पर मिलनेवाला रवन्ना।

वि०=रवाना।

रवाँ—वि०[फा०] १. बहता हुआ। प्रवाहित। २. जो चल रहा हो। जारी। प्रचलित। ३. (कार्य) जिसका अच्छी तरह अभ्यास हो गया हो; और जिसके निर्वाह या सम्पादन मे कोई कठिनता न होती हो। ४. अभ्यस्त। जैसे—रवाँ हाथ। ५. (शस्त्र) जिस की धार चोखी या तेज हो और इसी लिए जो ठीक और पूरा काम देता हो। ५. दे० 'रवाना'।

स्त्री० जान। रूह।

रवाँस—पुं०[देश०] बोडे की जाति का एक पौधा और उसकी फली जिसके बीजो की तरकारी बनती है।

रवा—पु०[स० रज, प्रा० रअ=धूल] [स्त्री० अल्पा० रई] १ किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। रेजा। जैसे—चाँदी का रवा, मिस्री का रवा। २. किसी चीज के वे कोणदार या लबोतरे टुकडे जो नमी निकल जाने पर प्रायः आपसे आप बन जाते है। कलम। (क्रिस्टल)

पद—रवा भर=बहुत थोडा। जरा-सा।

३ सूजी जिसके कण उक्त प्रकार के होते है। ४. बारूद का कण या दाना। ५. घुंघरू मे बजनेवाला कण या दाना।

वि०[फा०] १. उचित। वाजिब। २ प्रचलित।

रवाज—स्त्री०[फा०] १. तरीका। दस्तूर। २. समाज मे प्रचलित या मान्य कोई परंपरा या रूढि। प्रथा। रीति।

क्रि० प्र०=चलना।—देना।—निकलना।—पाना।—होना।

रवादार—वि०[फा०] [भाव० रवादारी] १ उचित प्रकार का व्यवहार करने तथा संबंध या लगाव रखनेवाला। उदारचेता। २. शुभचिन्तक। हितैषी। ३. सहनशील।

† वि०=रवेदार।

रवादारी—स्त्री०[फा०]१.रवादार होने की अवस्था या भाव। २. इस बात का ख्याल कि किसी को कष्ट या दुःख न दिया जाय। ३. उदारता। ४ सहृदयता।

रवानगी—स्त्री०[फा०] रवाना होने की क्रिया या भाव।प्रस्थान। चालान।

रवाना—वि०[फा० रवान.] १. जिसने कही से प्रस्थान किया हो। जो कही से चल पडा हो। प्रस्थित। २. कही से किसी के पास भेजा हुआ।

रवानी—स्त्री० [फा०] १. रवाँ होने की अवस्था या भाव। २. बहाव। ३. ऐसी गति जिसमे अटक आदि न होती हो। जैसे—पढने या बोलने मे रवानी होना। ४. प्रस्थान। रवानगी। (क्व०)

रवाव—पुं०=रबाब।

रवाविया—पुं०[देश०] लाल बलुआ पत्थर।

पुं०=रबाबिया।

रवायत—स्त्री०[अ०] १. कहानी। किस्सा। २. कहावत।
स्त्री०[अ० रिवायत] १. किसी के मुख से विशेषत. पैगम्बर के मुख से सुनी हुई बात दूसरो से कहना। २ इस प्रकार कही जानेवाली बात। ३ किंवदती। अफवाह। ४. कहावत। ५ किस्सा। कहानी।

रवा-रवी—स्त्री०[फा०] १. जल्दी। शीघ्रता। २ चल-चलाव। ३. भाग-दौड़।

रवासन—पुं०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके बीज और पत्ते ओषधि के काम आते हैं।

रवि—पुं०[स०√रु+इ] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३ अग्नि। ४ नायक। नेता। सरदार। ५ लाल अशोक का पेड। ६ पुराणानुसार एक आदित्य का नाम। ७ एक प्राचीन पर्वत। ८. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

रवि-उच्च—पु०[स०] किसी ग्रह की कक्षा या भ्रमण-पथ का वह बिंदु जो सूर्य से दूरतम पड़ता है। 'रवि-नीच' का विपर्याय। (एफेलियन)

रवि-कर—पु०[स० ष० त०] सूर्य की किरण।

रवि-कांत-मणि—पु०[स० रवि-कान्त, तृ० त०, रविकान्त-मणि, कर्म० स०] सूर्यकांत मणि।

रवि-कुल—पु०[ष० त०] क्षत्रियो का सूर्यवश।

रवि-चक्र—पु०[ष० त०] १ सूर्य का मडल। २ सूर्य के रथ का चक्र या पहिया। ३. फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जो मनुष्य के शरीर के आकार का होता है और जिसमे यथा-स्थान नक्षत्र आदि रख कर बालक के जीवन की शुभ और अशुभ बातो के सम्बन्ध मे फल कहा जाता है।

रविज—पु०[स० रवि√जन् (उत्पत्ति)+ड] शनैश्चर, जिसकी उत्पत्ति रवि या सूर्य से मानी जाती है।

रविज-केतु—पुं०[स० कर्म० स०] एक प्रकार के केतु या पुच्छल तारे जिनकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है।

रविजा—स्त्री०[स० रविज+टाप्] यमुना। कालिंदी।

रवि-जात—पु०[स० प० त०] सूर्य की किरण।
वि० रवि से उत्पन्न।

रवि-तनय—पु०[ष० त०] १ यमराज। २. शनैश्चर। ३ सुग्रीव। ४. कर्ण। ५ अश्विनी कुमार। ६. सावर्णि मनु। ७ वैवस्वत मनु।

रवि-तनया—स्त्री०[ष० त०] सूर्य की कन्या, यमुना।

रवि-तनुजा—स्त्री०=रवि-तनया (यमुना)।

रवि-दिन—पु०[ष० त०] रविवार।

रवि-नंद, रवि-नदन—पु०=रवि-तनय।

रवि-नंदिनी—स्त्री०[ष० त०] यमुना।

रवि-नाथ—पु०[ब० स०] पद्म। कमल।

रवि-नीच—पु०[सं०] किसी तरह ग्रह की कक्षा या भ्रमण-पथ का वह बिंदु जो सूर्य के निकटतम पडता है। 'रवि-उच्च' का विपर्याय। (पेरिहीलियन)

रवि-पुत्र—पु०=रवि-तनय।

रविपूत *—पु०=रविपुत्र (रवि-तनय)।

रवि-प्रिय—पु०[ब० स०] १. लाल कमल। २ लाल कनेर। ३ ताँबा। ४ आक। मदार। ५ लकुच या लकुट नामक वृक्ष और उसका फल।

रवि-प्रिया—स्त्री०[ब० स०+टाप्] एक देवी। (पुराण)

रवि-बिंब—पु०[ष० त०] १. सूर्य का मडल। २. माणिक्य या मानिक नामक रत्न।

रवि-मंडल—पुं०[ष० त०] वह लाल मडलाकार बिंब जो सूर्य के चारो ओर दिखाई देता है। रविबिंब।

रवि-मणि—पु०[मध्य० स०] सूर्यकात मणि।

रवि-मार्ग—पु० [स०] सूर्य के भ्रमण का मार्ग। क्रातिवृत्त। (ईक्लिप्टिक)

रवि-रत्न—पु०[मध्य० स०] सूर्यकांत मणि।

रवि-लोचन—पु०[ब० स०] विष्णु।

रवि-लौह—पु०[मध्य० स०] ताँबा।

रवि-वंश—पु०[ष० त०] क्षत्रियो का सूर्यकुल।

रवि-वंशी (शिन्)—वि०[स० रविवश+इनि] सूर्यवशी।

रवि-बाण—पु०[स० उपमित स०] पौराणिक कथाओ मे वर्णित वह बाण जिसके चलाने से सूर्य का सा प्रकाश उत्पन्न होता था।

रवि-वार—पु०[ष० त०] शनिवार और सोमवार के बीच का वार। एतवार।

रवि-वासर—पु० [ष० त०] रविवार।

रविश—स्त्री०[फा०] १ चलने की क्रिया, ढग या भाव। गति। चाल। २ आचार-व्यवहार। ३ तौर-तरीका। रग-ढग। ४ शैली। ५. बगीचो की क्यारियो के बीच मे चलने के लिए बना हुआ छोटा मार्ग। क्रि० प्र०—काटना।—बनाना।

रवि-संक्रांति—स्त्री०[ष० त०] सूर्य का एक राशि मे से दूसरी राशि मे जाना। सूर्य-सक्रमण। दे० 'सक्राति'।

रवि-सज्ञक—पु०[ब० स०, कप्] ताँबा।

रवि-सारथ—पु०[ष०त०] रवि अर्थात्, सूर्य का रथ हाँकनेवाला, अरुण।

रवि-सुंदर—पु० [स० उपमित स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जिसके सेवन से भगदर रोग नष्ट हो जाता है।

रवि-सुअन—पु०=रविनदन (रवि-तनय)।

रवि-सुत—पु०=रविनदन (रवि-तनय)।

रवि-सूनु—पु०=रविनदन (रवि-तनय)।

रवे-दार—वि०[हिं० रवा+फा० दार] जो रवो के रूप मे हो। जिसमे रवे हो।

रवैया—पु०[फा० रवीय] १ आचार-व्यवहार। २ चाल-चलन। ३. तौर-तरीका। रग-ढग।

रशना—स्त्री० [स०√अश् (भोजन)+युच्—अन,+टाप्, रशादेश] १. जीभ। रसना। २. रस्सी। ३. करधनी। मेखला।

रशना-कलाप—पु०[ष० त०] धागे आदि की बनी हुई एक प्रकार की करधनी जो प्राचीन काल मे स्त्रियाँ कमर मे पहनती थी।

रशना-गुण—पु०=रशनाकलाप।

रशनोपमा—स्त्री०=रसनोपमा (अलकार)।

रशाद—पु०[अ०] १. सदाचार। २. सन्मार्ग।

रशीद—वि०[अ०] १ रशाद अर्थात् सन्मार्ग पर चलनेवाला तथा दूसरो को सन्मार्ग पर चलाने वाला। २. गुरु-कृपा से जिसने किसी कला या विद्या मे निपुणता प्राप्त की हो।

रश्क—पु०[फा०] ईर्ष्याजन्य यह विचार कि जैसा वह है वैसा मुझे भी होना चाहिए, अथवा मैं किसी प्रकार उसके स्थान पर हो जाता।

रश्मि—स्त्री०[स०√अश्+मि, रशादेश] १ किरण। २. पलको परके बाल। बरौनी। ३. घोड़े की लगाम। बाग।

रश्मि-कलाप—पु०[ष० त०] मोतियो का वह हार जिसमे ६४ या ५४ लड़ियाँ हों।

रश्मि-केतु—पु०[मध्य० स०] १ वह केतु या पुच्छल तारा जो कृत्तिका नक्षत्र मे स्थित होकर उदित हो।

रश्मि-चित्रण—पु०[स०] रेडियो-चित्रण।

रश्मि-मापक—पु०[प० त०] विकिरणमापी।

रश्मि-मुक्—पु०[स० रश्मि√मुच्(छोडना)+क्विप्, उपपद स०] सूर्य।

रष्वना†—पु०=रक्षण।

रस—पु० [सं०√रस् (आस्वादन)+अच्] [वि० रसाल, रसिक] १. वनस्पतियो अथवा उनके फूल-पत्तो आदि मे रहनेवाला वह जलीय अश या तरल पदार्थ जो उन्हे कूटने, दबाने, निचोड़ने आदि पर निकलता या निकल सकता हे। (जूस) जैसे—अगूर, ऊख, जामुन आदि का रस। २ वृक्षो के शरीर से निकलने या पोछकर निकाला जानेवाला तरल पदार्थ। निर्यास। मद। (सैप) जैसे—ताड,शाल आदि वृक्षो मे से निकला या निकाला हुआ रस। ३. किसी चीज को उबालने पर निकलनेवाला अथवा तरल सार भाग। जूस। रस। शोरबा। ४ प्राणियो के शरीर मे से निकलनेवाला कोई तरल पदार्थ। जैसे—पसीना, दूध, रक्त आदि।

पद—गो-रस—दूध या उससे बने हुए दही, मक्खन आदि पदार्थ।

५. प्राणियो, विशेषत मनुष्यो के शरीर मे खाद्य पदार्थों के पचहुँने पर उनका पहले-पहल बननेवाला वह तरल रूप, जिसमे आगे चलकर रक्त बनता है। चर्मसार। रक्तसार। रसिका। (वैद्यक मे इसे शरीरस्थ सात धातुओं मे से पहली धातु माना जाता है।) ६. जल। पानी। उदा०—महाराजा किवड़िया खोलो,रस की बूदे पडी।—गीत। ७ पानी मे घोला हुआ गुड, चीनी, मिसरी या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—देहात मे किसी के घर जाने पर वह प्राय रस पिलाता है। ८ कोई तरल या द्रव पदार्थ। ९ घोडो, हाथियो आदि का एक रोग जिसमे उनके पैरो मे से जहरीला या दूषित पानी बहता या रसता हे। १० किसी पदार्थ का सार भाग। तत्त्व। सत्त। ११ पारा। उदा०—रस मारे रसायन होय। (कहा०) १२ धातुओ आदि को (प्राय पारे की सहायता से) फूँककर तैयार किया हुआ भस्म या रसौषध। जैसे—रस-पर्पटी, रस-माणिक्य, रस-सिंदूर आदि। १३ लासा। लुआब। १४ वीर्य। १५. सिंगरफ। हिंगुल। १६. गध-रस। शिलारस। १७ बोल नामक गध द्रव्य। १८ जहर। विष। १९ पहले खिचाव का शोरा जो बहुत तेज होता और बढिया माना जाता है। २०. खाने-पीने की चीज मुँह मे पडने पर उससे जीभ को होनेवाला अनुभव या मिलनेवाला स्वाद। रसनेंद्रिय मे होनेवाली अनुभूति या संवेदन। (फ्लेवर)

विशेष—हमारे यहाँ वैद्यक मे ये छ रस माने गये है,—अम्ल, कटु, कषाय, तिक्त, मधुर और लवण।

२१ कविता आदि मे उक्त रसो के आधार पर माना हुआ छ. की सख्या का वाचक शब्द। २२. कार्य, विषय, व्यक्ति, आदि के प्रति होनेवाला अनुराग। प्रीति। प्रेम। मुहब्बत।

पद—रस-रंग=रस-रीति।

मुहा०—रस खोटा होना=आपस के प्रेम-पूर्ण व्यवहार मे अन्तर पड़ना। २३. यौवन काल मे मनुष्य के मन मे अनुराग या प्रेम का होनेवाला सचार।

मुहा०—रस भीजना या भीनना=(क) मनुष्य में यौवन का आरभ होना (ख) मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम का सचार होना। (ग) किसी पदार्थ का ऐसा समय आना कि उससे पूरा आनद या सुख मिल सके।

२४. दार्शनिक क्षेत्र मे, इद्रियार्थो के साथ इद्रियो का सयोग होने पर मन या आत्मा को प्राप्त होनेवाला आनद या सुख। २५ लोक-व्यवहार मे,किसी काम या बात से किसी प्रकार का संबध होने पर उससे मिलनेवाला आनद या उसके फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली रुचि। मजा जैसे—कोई किसी रस मे मगन है तो कोई किसी रस मे। उदा०—राम पुनीत विषय रस रुखे। लोलुप भूप भोग के भूखे।—तुलसी २६. उपनिषदो के अनुसार आनद-स्वरूप ब्रह्म। २७ मन की उमग या तरंग। मौज। २८ मन का कोई आवेग। जोश। मनोवेग। २९ किसी काम या बात मे रहने या होनेवाला कोई प्रिय अथवा सुखद तत्त्व। जैसे—उसके गले (या गाने) मे बहुत रस है। ३० किसी कार्य या व्यापार के प्रति होनेवाली कुतूहलमूलक प्रवृत्ति या उससे होनेवाली सुखद अनुभूति। दिलचस्पी। (इन्टरेस्ट) जैसे—(क) इस पुस्तक मे हमे कोई रस नही मिला। (ख) वे अब सार्वजनिक कार्यो में विशेष रस लेने लगे हैं। ३१. साहित्यिक क्षेत्र मे (क) तात्त्विक दृष्टि से कथानको, काव्यो, नाटको आदि मे रहनेवाला वह तत्त्व जो अनुराग, करुणा,क्रोध, प्रीति, रति आदि मनोभाव को जाग्रत, प्रबल तथा सक्रिय करता है। यह तत्त्व कवियो, लेखको आदि की प्रतिभा, रचना-कौशल और उपयुक्त शब्द-योजना तथा वाक्य-विन्यास मे उत्पन्न होता है। (ख) भारत के प्राचीन साहित्यकारो के मत से उक्त तत्त्व का वह विशिष्ट स्वरूप जिसकी निष्पत्ति, अनुभाव, विभाव और सचारी के योग से होती है और जो सहृदय पाठको या दर्शको के मन मे रहनेवाले स्थायी भावो को परिपक्व, पुष्ट और जाग्रत या व्यक्त करके उत्कृष्ट या परम सीमा तक पहुँचाता और पाठको या दर्शको को प्रसन्न तथा संतुष्ट करके उनके साथ एकात्मता स्थापित करता है। (सेन्टिमेन्ट) इसके ये नौ प्रकार या भेद कहे गये हैं—अद्‌भुत्, करुण, भयानक, रौद्र, वीभत्स, वीर, शात,शृंगार और हास्य।

विशेष—प्रत्येक रस के ये चार अग कहे गये हैं—स्थायी भाव, विभाव (आलबन और उद्दीपन), अनुभाव और सचारी भाव।

३२ कविता मे उक्त नौ रसो के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द। ३३ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियो के वश मे रहने की अवस्था या भाव। उदा०—राजत अंग रस विरस अति, सरस-सरस रस भेद।—केशव। ३४ काम-क्रीडा। केलि। रति। विहार। ३५ काम-वासना। ३६. गुण, तत्त्व, रूप, विशेषता आदि के विचार से होने वाला वर्ग या विभाग। तरह। प्रकार। जैसे—एक रस, सम-रस। उदा०—(क) एक ही रस दुनी न हरव सोक सोसति सहति।—तुलसी। (ख) सम-रस

समर-सकोच-वस, विवस न ठिक ठहराइ।—विहारी। ३७ ढग। तर्ज। उदा०—तिनका बयार के वस भावै त्यो उडाइ लै जाइ अपने रस।—स्वामी हरिदास। ३८ गुण। सिफत। ३९ केशव के अनुसार रगण और सगण की सज्ञा।

†स्त्री०[?]एक प्रकार की भेड जो गिलगित्त के पामीर आदि उत्तरी प्रदेशो मे पाई जाती है।

रसक—पु०[स० रस+कन्] १ फिटकरी। २. सगेवसरी। खपरिया। †पु०=रश्क।

रसक-कारवेल्लक—पु०[स० कर्म० स०] पतला खपरिया। सगेवसरी।

रसक-दर्दुर—पु [स० कर्म० स०] दलदार मोटा खपरिया या सगेवसरी।

रस-कपूर—पु०[स० रसकर्पूर] एक प्रसिद्ध उपधातु जिसमे पारे का भी कुछ अश होता है और जो दवा के काम मे आता है। यह प्राय. ईंगुर के समान होता है, इसीलिए कही कही सफेद शिगरफ भी कहलाता है। (कैलोमेल)

रस-कर्म—पु० [प० त०] पारे की सहायता से रस आदि तैयार करने की क्रिया। (वैद्यक)

रस-कलानिधि—पु० [स० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रस-कुल्या—स्त्री०[प० त०] कुशद्वीप की एक नदी। (पुराण)

रस-केलि—स्त्री०[मध्य० स०] १ प्रेमी और प्रेमिका की क्रीडा या विहार। २ हँसी-दिल्लगी। मजाक।

रसकोरा—पु०[हिं० रस+कौर] रसगुल्ला नाम की मिठाई।

रसखीर—स्त्री०[हिं० रस+खीर] गुड या चीनी के शरवत अथवा ऊख के रस मे पकाए हुए चावल। मीठा भात।

रसगंध—पु०=रसगधक।

रसगंधक—पु०[स० रस-गध, ब० स०+कन्] १ गधक। २ रसाजन। रसौत ३. बोल नामक गन्ध द्रव्य। ४ ईंगुर। शिगरफ।

रसगत-ज्वर—पु०[स० रस-गत, द्वि० त०, रसगत-ज्वर, कर्म० स०]वैद्यक के अनुसार ऐसा ज्वर जिसके कीटाणु या विप शरीर की रस नामक धातु तक मे पहुँचकर समा गया हो।

रस-गर्भ—पुं०[ब० स०] १ रसौत। रसाजन २. ईंगुर। शिगरफ।

रस-गुनी †—पु० [स० रस+गुणी] काव्य, सगीत आदि का अच्छा ज्ञाता। रसज्ञ।

रस-गुल्ला—पु०[हिं० रस+गोला] छेने की एक प्रकार की बँगला मिठाई जो गुलाब जामुन के समान गोल और शीरे मे पगी हुई होती है।

रस-ग्रह—पु०[स० रस√ग्रह (ग्रहण)+अच्] जीभ। रसना।

रस-घन—पु०[स० ब० स०] आनदघन, श्रीकृष्णचद्र।

वि० १. बहुत अधिक रसवाला। २. स्वादिष्ट।

रसघ्न—पु०[स० रस√हन् (हिंसा)+टक्] सुहागा।

रसचंद्र—पु०[स०] संगीत मे बिलावल ठाठ का एक राग।

रसछन्ना—पु० [हिं० रस+छन्ना=छानने की चीज] [स्त्री० अल्पा० रसछन्नी] ऊख का रस छानने की एक प्रकार की चलनी।

रसज—पु०[स० रस√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ गुड। २. रसौत। ३. शराब की तलछट।

रस-जात—पु०[स० प० त०] रसौत।

रसज्ञ—वि०[स० रस√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० रसज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो। रस जाननेवाला। २ काव्य के रस का ज्ञाता। काव्य-मर्मज्ञ। ३ रासायनिक क्रियाएँ या प्रयोग करनेवाला। रसायनी। ४ किसी विषय का अच्छा जानकार। निपुण।

रसज्ञता—स्त्री०[स० रसज्ञ+तल+टाप्] रसज्ञ होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रसज्ञा—स्त्री०[स० रसज्ञ+टाप्] १. जीभ। २. गगा।

रस-ज्येष्ठ—पु० [सं० स० त०] १. मधुर या मीठा रस। २. साहित्य मे श्रृंगार रस।

रसडली—स्त्री० [हिं० रस+डली] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का गन्ना जिसका रग पीलापन लिए हुए हरा होता है। रसवली।

रसत†—स्त्री०=रसद।

रस-तन्मात्रा—स्त्री०[प० त०] जल की तन्मात्रा।

वि० दे० 'तन्मात्र'।

रसता—स्त्री०[स० रस+तल+टाप्] रस का धर्म या भाव। रसत्व।

रस-तेज(स्)— पु०[व० स०] खून। रक्त। लहू।

रस-त्याग—पु०[प०त०] मीठी अथवा रसपूर्ण वस्तुओ का किया जानेवाला त्याग। (जैन)

रसत्व—पु०[स० रस+त्व] रस का धर्म या भाव। रसता।

रसद—वि०[स० रस√दा (देना)+क]१. रस देनेवाला। २ स्वादिष्ट। ३ आनन्द तथा सुख देनेवाला।

पु०१ चिकित्सक। २ मध्ययुग मे वह भेदिया जो किसी को विप आदि खिलाता था।

स्त्री०[अ०]१. अश। हिस्सा। २ बाँट। ३ खाद्य सामग्री। विशेपत कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो। ४ वे खाद्य पदार्थ जो यात्री, सैनिक, आदि प्रवास-काल मे अपने साथ ले जाते है।

रसदा—स्त्री०[स० रसद+टाप्] सफेद निर्गुंडी।

रसदार—वि०[स० रस+फा० दार (प्रत्य०)]१ जिसमें रस अर्थात् जूस हो। जैसे—रसदार आम। २ जिसमे मिठास हो। जैसे—रसदार बात। ३ स्वादिष्ट। ४ रसेदार।

रस-दारु—पु०[मध्य० स०] वृक्षो मे वह ताजी बनी हुई लकडी जो उसकी हीर की लकडी और छाल के बीच मे रहती है। (सैप-उड)

रस-दालिका—स्त्री०[प० त०] ऊख। गन्ना।

रस-द्रव्य—पु०[मध्य० स०] वह द्रव्य या पदार्थ जो रासायनिक प्रक्रियाओ से बनता या उनमे काम आता हो। (केमिकल)

रसद्रावी (विन्)—पु०[स० रस√द्रु (गति)+णिच्+णिनि, उप०स०] मीठा जबीरी नीबू।

रस-धातु—पु०[स० मध्य० स०]१ पारा। २ शरीर मे बननेवाली रस नामक धातु। (दे० 'रस')

रस-धेनु—स्त्री०[मध्य० स०] दान के उद्देश्य से गुड की भेलियो आदि से बनाई जानेवाली गाय की मूर्ति।

रसन—पु०[स०√रस् (आस्वादन)+ल्युट्—अन] १ खाने-पीने की चीज का स्वाद लेना। चखना। २. ध्वनि। ३ जबान। जीभ। ४. शरीर के अन्दर का कफ। बलगम।

वि० पसीना लानेवाला (उपचार या औषध)।

†पुं०=रशना (रस्सा)।

रसना—स्त्री०[सं०√रस +णिच्+युच्—अन,+टाप्]१.जीभ। जबान। उदा०—सोइ रसना जो हरिगुन गावै।

मुहा०—रसना खोलना=कुछ समय तक चुप रहने के बाद बातें करना आरंभ करना। बोलने लगना। रसना तालू से लगाना=कुछ भी उत्तर न देना अथवा न बोलना।

२ न्याय के अनुसार ऐसा रस जिसका अनुभव रसना या जीभ से किया जाता है। स्वाद। ३. नागदौनी। रास्ना। ४. गंध-भद्रा नाम की लता। ५ रस्सी। रज्जु। ६. करधनी। मेखला। ७ लगाम। ८ चन्द्रहार। ९ बौद्ध हठयोग में पिंगला नाड़ी की संज्ञा।

अ०[हिं० रस+ना (प्रत्य०)]१ किसी चीज में से कोई तरल या द्रव अंश धीरे-धीरे बहना या टपकना। जैसे—छत में से पानी रसना। पद—रस रस या रसे रसे=धीरे धीरे।

२ गीले होने की दशा में, अन्दर का द्रव पदार्थ धीरे-धीरे निकलकर ऊपरी तल पर आना। जैसे—चन्द्रमा के सामने चन्द्रकांत मणि रसने लगती है। ३ रसमग्न होना। प्रफुल्ल होना। ४. अनुराग या प्रेम से युक्त होना। ५. किसी प्रकार के रस में मग्न होना। आनन्द या सुख में लीन होना। ६ किसी चीज या बात से अच्छी तरह युक्त होना।

रस-नाथ—पुं०[ष० त०] पारा।

रसना-पद—पुं०[ष० त०] नितंब। चूतड़।

रस-नायक—पुं०[ष० त०] १ शिव। २ पारा।

रसना-रव—पुं०[ब० स०] पक्षी, जो अपनी रसना से शब्द करते हैं।

रसनीय—वि०[सं०√रस्+अनीयर]१ जिसका रस या स्वाद लिया जा सके। चखे जाने या स्वाद लेने के योग्य। २ स्वादिष्ट।

रसनेंद्रिय—स्त्री०[सं० रसना-इंद्रिय, कर्म० स०]रस ग्रहण करने की इंद्रिय, जीभ। रसना

रसनेत्रिका—स्त्री० [सं० रस-नेत्र, उपमित स०, +ठन्—इक, टाप्] मैनसिल (खनिज द्रव्य)।

रसनेष्ट—पुं० [सं० रसना-इष्ट, ष० त०] ऊख। गन्ना।

रसनोपमा—स्त्री०[सं० रसना-उपमा, उपमित स०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें पहले उपमेय को किसी दूसरे उपमेय का उपमान, दूसरे उपमेय को तीसरे उपमेय का उपमान और इसी प्रकार उत्तरोत्तर उपमेय को उपमान बनाया जाता है।

रसपति—पुं०[सं० ष० त०]१ चन्द्रमा। २ पृथ्वी का स्वामी अर्थात् राजा। ३ पारा। ४ साहित्य का शृंगार रस।

रस-पर्पटी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] पारे को शोधकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस। (वैद्यक)

रस-पाकज—पुं०[सं० रस-पाक, ष० त०,√जन् (उत्पत्ति)+ड]१ गुड़। २ चीनी।

रस-पाचक—पुं०[सं० ष० त०] मधुर भोजन बनानेवाला। रसोइया।

रस-पूतिका—स्त्री०[सं०ब०स०, कप्,+टाप्]मालकगनी। २ शतावर।

रस-प्रबंध—पुं०[सं० मध्य० स०]१ ऐसी कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से परस्पर असंबद्ध पद्यों में कहा गया हो। २ नाटक। ३ प्रबंध काव्य।

रस-फल—पुं०[सं० ब० स०]१ नारियल का वृक्ष। २ आँवला।

रस-बंधन—पुं०[सं०ष० त०]शरीर के अंतर्गत नाड़ी के एक अंश का नाम। (वैद्यक)

रस-बत्ती—स्त्री०[हिं० रस? +बत्ती] एक प्रकार का पलीता जिससे व्यवहार में पुराने ढंग की तोपें और बंदूकें दागी जाती थीं।

रसबरी—स्त्री० =रसभरी।

रसभरी—स्त्री०[अं० रैस्पबेरी] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें खट-मीठे छोटे गोल फल लगते हैं। २. उक्त पौधे का फल। मकोय।

रसभव—पुं०[सं० रस√भू (होना)+अच्]रक्त। खून। लहू।

रस-भस्म—पुं०[सं० ष० त०] पारे का भस्म।

रस भीना—वि०[हिं० रस+भीनना] [स्त्री० रसभीनी]१. आनन्द में मग्न। २. (व्यंजन) आदि जो न तो अधिक रसेदार हों और न बिल्कुल सूखा हो। थोड़े रसवाला।

रस-भेद—पुं०[सं० ष० त०] वैद्यक में एक प्रकार का औषध जो पारे से बनता है।

रसभेदी (दिन्)—वि० [सं० रसभेद+इनि](फल) जो अधिक पकने पर और फलतः रस या रस के अधिक बढ़ जाने से फट गया हो।

रस मंजरी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

रसमड्डूर—पुं०[सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार का रसौषध जो हड़, गंधक और मंडूर से बनता है और जिसका व्यवहार शूल रोग में होता है।

रसम—स्त्री०=रस्म।

रस-मर्दन—पुं०[सं० ष० त०] पारे को भस्म करने या मारने की प्रक्रिया या भाव। (वैद्यक)

रस-मल—पुं०[सं०ष० त०]शरीर से निकलनेवाला किसी प्रकार का मल। जैसे—विष्ठा, मूत्र, पसीना, थूक आदि।

रस-मसा—वि०[हिं० रस+मसा (अनु०)]१ आर्द्र। गीला। २. पसीने से तर और थका हुआ। ३ आनन्दमग्न। ४ किसी के प्रेम में पूरी तरह से मग्न। ५. आनन्द देनेवाला। सुन्दर। जैसे—रस-मसे दिन।

रस-माणिक्य—पुं०[सं०ष०त०]वैद्यक में एक प्रकार का औषध जो हरताल से बनता है और जो कुष्ठ आदि रोगों में उपकारी माना जाता है।

रस-माता*—स्त्री०[सं० रस-मातृका] जीभ। रसना। जबान। (डिं०) वि० रस से मत्त या मस्त।

रस-मातृका—स्त्री०[सं० ष० त०] जीभ। जबान।

रस-मारण—पुं०[सं० ष० त०] पारा मारने अर्थात् शुद्ध करके उसका भस्म बनाने की क्रिया या भाव।

रसमाला—स्त्री०[सं० ष० त०] सिलारस नामक सुगंधित द्रव्य।

रसमि*—स्त्री०[सं० रश्मि]१ किरण। २. चमक। दीप्ति। ३. प्रकाश।

रसमुंडी—स्त्री०[हिं० रस +मुंडी ?]एक प्रकार की बँगला मिठाई।

रसमैत्री—स्त्री०[ष० त०] १. दो या अधिक रसों का मिश्रण। २. साहित्य में रसों में होनेवाला पारस्परिक मेल और सामंजस्य। इसका विपर्याय 'रस-विरोध' है। ३ खाद्य पदार्थों के संबंध में दो ऐसे रसों का मेल जिनसे स्वाद में वृद्धि हो। जैसे—तीता-नमकीन, खट-मीठा आदि।

रस-योग—पुं०[सं० ष० त०] वैद्यक में एक प्रकार का औषध।

रस-रंग—पु०[हिं०]१ प्रेम के द्वारा, उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला आनन्द या सुख। मुहब्बत का मजा। २ प्रेम के प्रसग मे की जानेवाली क्रीडा। केलि।

रस-रंजनी—स्त्री०[प० त०] सगीत मे विलावल ठाठ की एक रागिनी।

रसरा†—पु०[स्त्री० रसरी]=रस्सा।

रस-राज—पु०[स० प० त०]१. पारद। पारा। २ साहित्य का शृंगार रस। ३ रसाजन। रसौत। ४ वैद्यक मे एक प्रकार का औषध जो तावे के भस्म, गधक और पारे के योग से बनता है और जिसका व्यवहार तिल्ली, वरवट आदि मे होता है।

रसराय*—पु० =रसराज।

रसरी†—स्त्री० रसरा का स्त्री० अल्पा०।

रस-रीति—स्त्री० [स० प० त०] प्रेमी या प्रेमिका से वरताव करने का अच्छा ढग।

रसरेंना—वि० [स०रस+रमणी] [स्त्री० रस-रेंनी] रसिक। उदा०—अति प्रगलभ वैनी रस-रेंनी।—नददास।

रसल—वि०[सं० रस√ला (लेना)+क] रस से भरा हुआ। रसपूर्ण। रसवाला।

रसलेह—पु०[स० रस√लिह (आस्वादन)+अच्]१ पारा। २ रसांजन। रसौत।

रसवंत—पु०[स० रसवत्] रसिक। रसिया।
वि० रस से भरा हुआ। रसदार।

रसवंती—स्त्री०=रसौत (रसाजन)।

रसवट†—पु०=रसवर (नाव की सधियो मे भरने का मसाला)।

रसवत्—वि०[स० रस+मतुप्] [स्त्री० रसवती] जिसमे रस हो। रसवाला।
पु० साहित्य मे एक प्रकार का अलंकार जो उस समय माना जाता है, जब एक रस किसी दूसरे रस अथवा उसके भाव, रसाभास, भावाभास आदि का अग वनकर आता है। जैसे—युद्ध मे निहत वीरपति का हाथ पकडकर पत्नी का यह कहते हुए विलाप करना —यह वही हाथ है जो प्रेमपूर्वक मुझे आलिगन करता था। यहां शृंगार रस केवल करुण रस का अग वनकर आया है।

रसवत—स्त्री० १ दे० 'रसौत'। २ दे० 'दारुहल्दी'।

रसवती—स्त्री० [स० रसवत्+ङीप्]१. सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सव शुद्ध स्वर लगते हैं। २ रसोई-घर।
वि० स्त्री० रसवाली।

रसवत्ता—स्त्री० [रसवत्+तल्+टाप्]१ रसयुक्त होने की अवस्था, धर्म या भाव। रसीलापन। २ माधुर्य। मिठास। ३ सुन्दरता।

रसवर—पु० [हिं०रसना] नाव की सधि को वद करने के लिए उसमे लगाया जानेवाला मसाला।

रस-वर्णक—पु०[स० प० त०] वैद्यक की कुछ विशिष्ट वनस्पतियाँ जिनसे रग तैयार किये जाते है। जैसे—अनार का फूल, लाख, हल्दी, मंजीठ आदि।

रसवली—स्त्री०=रस-डली (गन्ना)।

रसवाई—स्त्री०[हिं० रस+वाई (प्रत्य०)]किसानो के यहां किसी फसल का ऊख पहली वार पेरने के समय होनेवाला एक कृत्य।

रसवाद—पु०[सं० प० त०]१. रस अर्थात् प्रेम या आनद की वातचीत। रसिकता की वातचीत। २ मन वहलाव के लिए होनेवाला परिहास। हँसी-ठट्ठा। ३ प्रेमी और प्रेमिका मे होनेवाली व्यर्थ की कहा-सुनी या वकवास। ४. साहित्यिक क्षेत्र में यह मत या सिद्धान्त कि रस के सम्वन्ध मे विचार करते हुए और उसके महत्त्व का ध्यान रखते हुए ही साहित्यिक रचना की जानी चाहिए।

रसवादी (दिन्)—वि०[स० रसवाद+इनि] रसवाद-सबधी।
पुं०रसवाद के सिद्धान्तो का प्रतिपादक या अनुयायी।

रसवान् (वत्)—पु०[स० रस+मतुप्] वह पदार्थ जिसमे ऐसा गुण या शक्ति हो जिसमे उसके कण रसना से सयुक्त होने पर विशेष प्रकार की अनुभूति या सवेदन हो।

रसवास—पु०[सं० व० स०] ढगण के पहले भेद (।ऽ) की संज्ञा।

रस-वाहिनी—स्त्री०[स० रस√वह् (प्रापण)+णिनि+ङीप्, उप० स०] वैद्यक के अनुसार खाए हुए पदार्थ से वने सार-भाग को फैलानेवाली नाडी।

रसविक्रयी (यिन्)—पु०[स०रस-वि√क्री (वेचना)+णिनि, उप० स०] वह जो मदिरा वेचता हो, अर्थात् कलवार।

रसविरोध—पु०[सं० प० त०] ऐसे रसो का मिश्रण या मेल जिनसे स्वाद विगड जाता है। (सुश्रुत) जैसे—तीते और मीठे मे, नमकीन और मीठे मे, कडुए और मीठे मे रसविरोध है। २ साहित्य मे एक ही पद्य मे होनेवाली दो परस्पर प्रतिकूल रसो की स्थिति।

रस-वेधक—पु०[स० प० त०] सोना।

रस-शार्दूल—पु०[स० स० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो अभ्रक, तांवे, लोहे, मैनसिल, पारे, गधक, सोहागे, जवाखार, हड और वहेडे आदि के योग से वनता है और जो सूतिका रोग के लिए विशेप उपकारी कहा गया है।

रस-शास्त्र—पु०[स० प० त०] रसायन-शास्त्र।

रस-शेखर—पु०[स० स० त०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रस जो पारे और अफीम के योग से वनता है और जो उपदश आदि रोगो मे गुणकारी कहा गया है।

रस-शोधन—पुं०[सं० प० त०]१. पारे को शुद्ध करने की क्रिया या भाव। २ सुहागा।

रस-संप्रदाय—पु०[सं०] साहित्यिक क्षेत्र मे ऐसे लोगो का वर्ग या समूह जो रसवाद के अनुयायी हो अथवा उसके सिद्धान्तो का पालन करते हों।

रस-संभव—पु०[स० प० त०] रक्त। लहू। खून।

रस-संरक्षण—पु० [सं० प० त०] पारे को शुद्ध और मूर्च्छित करने, वाँधने और भस्म करने की ये चारों क्रियाएँ। (वैद्यक)

रस-संस्कार—पु०[स० प० त०] पारे के मूर्च्छन, वधन, मारण आदि अठारह प्रकार के सस्कार। (वैद्यक)

रस-सागर—पु०[सं० प० त०] प्लक्ष द्वीप मे स्थित ऊख के रस का एक सागर। (पुराण)

रस-साम्य—पु० [स० प० त०] रोगी की चिकित्सा करने के पहले यह देखना कि शरीर मे कौन सा रस अधिक और कौन सा कम है। (वैद्यक)

रस-सार—पुं० [स० प० त०] १. मधु। शहद। २ जहर। विप। (डि०)

रस-सिंदूर—पु०[मध्य०स०] पारे और गधक के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस। (वैद्यक)

रस-स्थान—पु०[सं० ष० त०] इंगुर।

रसाँ (सा)—वि० [फा०] पहुँचाने या ले जानेवाला। जैसे—चिट्ठीरसाँ।

रसांगक—पु०[स० रस-अग, ब० स०+कन्] धूप सरल का वृक्ष। श्रीवेष्ठ।

रसांजन—पु०[स० रस-अजन, मध्य० स०] रसौत। रसवत।

रसांतर—पु०[स० रस-अतर, मयू० स०] एक रस की अवस्थिति मे दूसरे रस का होनेवाला आविर्भाव या सचार।

रसांतरण—पु०[स० रस-अतरण, ष० त०] एक रस की अवस्थिति हटा कर दूसरे रस का सचार करना। जैसे—प्रेम-चर्चा के समय विगडकर प्रिय की उपेक्षा करना या उसे भय दिखाना या क्रोध के समय हँसाकर प्रसन्न करना।

रसा—स्त्री०[स० रस+अच्+टाप्]१ पृथ्वी। जमीन। २ रासना। ३. पाढ़ा नामक लता। ४ शल्लकी। सलई। ५ कगनी नामक अन्न। ६ द्राक्षा। दाख। ७. मेदा। ८ शिलारस। लोबान। ९. आम। १० काकोली। ११ नदी। १२. रसातल। १३. रसना। जीभ।

पु०[हि० रस]१. तरकारी आदि का झोल। शोरवा।

पद—रसेदार=(तरकारी) जिसमे रसा भी हो। शोरवेदार। २ जूस। रस। जैसे—फलो का रसा।

वि०=रसाँ।

रसाइन†—पु०=रसायन।

रसाइनी†—स्त्री०=रसायनी।

पु०=रसायनज्ञ।

रसाई—स्त्री०[फा०]१ पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच। २. बुद्धि आदि के कही तक पहुँच सकने की शक्ति।

रसाकर्पण—पु०[स० रस-आकर्षण, ष० त०] वह प्रक्रिया जिससे शरीर का कोई अग रध्रो के द्वारा बाहर का रस खीचकर अपने अन्दर करता है। (ओस्मोसिस)

रसाग्रज—पु०[स० रस-अग्रज, ष० त०] रसौत।

रसाग्र्य—पु०[स० रस-अग्र्य, ष० त०]१ पारा। २ रसांजन। रसौत।

रसाज्ञान—पु०[स० रस-अज्ञान, ष० त०]१ इस बात की जानकारी न हो कि अमुक रस कौन है। २. वह स्थिति या दशा जिसमे रस अर्थात् स्वाद का ज्ञान न होता हो।

रसाढ्य—पुं०[स० रस-आढ्य, तृ० त०] अमड़ा। आम्रातक।

रसाढ्या—स्त्री०[रसाढ्य+टाप्] रासना।

रसातल—पु० [स० ष० त०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचेवाले सात लोको मे से छठा लोक।

मुहा०—रसातल पहुँचाना या रसातल में पहुँचाना=पूरी तरह से नष्ट या मटियामेट कर देना। मिट्टी मे मिला देना। बरबाद कर देना।

रसादार—वि०=रसेदार।

रसाधार—पु०[स० रस-आधार, ष० त०] सूर्य।

रसाधिक—पुं०[स० रस-अधिक, च० त०] सुहागा।

रसाधिका—स्त्री०[स० रस-अधिका, तृ० त०] किशमिश।

रसाध्यक्ष—पु०[सं० रस-अध्यक्ष, ष० त०] प्राचीन भारत मे वह राजकर्मचारी, जो मादक द्रव्यो की जाँच-पडताल और उनकी बिक्री आदि की व्यवस्था करता था।

रसापकर्षण—पु०[स० रस-अपकर्षण, ष० त०] वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शरीर का कोई अग अथवा अपने अदर का ऐसा ही और कोई पदार्थ रस-रध्रो द्वारा बाहर निकालता है। (एक्सोमोसिस)

रसा-पति—पु०[सं० ष० त०] पृथ्वी-पति। राजा।

रसापायी (यिन्)—वि०[स० रसा√पा (पीना)+णिनि] जो जीभ से पानी पीता हो। जैसे—कुत्ता, साँप आदि।

पु० कुत्ता।

रसाभास—पु०[स०रस-आ√भास् (चमकना)+अच्]१ भारतीय साहित्य शास्त्र के अनुसार किसी साहित्यिक रचना मे कही-कही दिखाई देनेवाली वह स्थिति जिसमे रस का पूरी तरह से परिपाक नही होने पाता, और इसलिए जिसके फलस्वरूप सहृदयो को ऐसा जान पडता है कि रस की पूर्ण निष्पत्ति नहीं हुई है उसका आभास मात्र दिखाई देता है। जैसे—यदि शृगार रस में हास्य रस का, हास्य रस मे वीभत्स रस का अथवा वीर रस मे भयानक रस का मिश्रण कर दिया जाय तो प्राथमिक या मूल रस का परिपाक नही होने पाता और रस के परिपाक के स्थान पर रसाभास मात्र होकर रह जाता है। कुछ आचार्यों का मत है कि रसाभास वस्तुत रस का बाधक और विरोधी तत्त्व है, पर कुछ आचार्य कहते हैं कि रसाभास होने पर भी रस-दशा ज्यों-की-त्यों आस्वाद्य बनी रहती है।

रसामृत—पु०[सं० रस-अमृत, कर्म० स०] पारे, गधक, शिलाजीत, चदन, गुडुच, धनियाँ, इंद्रजौ, मुलेठी आदि के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस।

रसाम्ल—पु०[सं० रस-अम्ल, ब० स०]१. अम्लवेतस्। अमलबेद। २. चुक नाम की खटाई। ३. वृक्षाम्ल। विषाविल।

रसाम्लक—पुं०[स० रसाम्ल+कन्] एक प्रकार की घास।

रसाम्ला—स्त्री०[स० रसाम्ल+टाप्] पलाशी नाम की लता।

रसायन—पु०[स० रस-अयन ब० स०]१. आरभिक भारतीय वैद्यक मे औषध, चिकित्सा आदि के क्षेत्रो मे रस अर्थात् पारे का प्रयोग करने की कला या विद्या। २ परवर्ती काल मे उक्त कला के आधार पर पारे के प्रयोगो से धातुओ आदि मे अद्भुत और असाधारण तात्त्विक परिवर्तन कर दिखाने अथवा उन्हे भस्म करने की कला या विद्या जिसके फलस्वरूप आगे चलकर भारत, पश्चिमी एशिया तथा युरोप के कुछ देशो मे बहुत से लोग इस बात की छानबीन और प्रयोग करने लगे थे कि पीतल, लोहे आदि को किस प्रकार सोने के रूप मे परिवर्तित किया जा सकता है। कीमियागरी।

विशेष—पाश्चात्य देशो मे इसी प्रकार के प्रयोग करते करते कुछ लोगों ने वे तत्त्व और सिद्धान्त ढूँढ निकाले थे, जिनके आधार पर आधुनिक रसायन-शास्त्र (देखें) का विकास हुआ है।

३. परवर्ती भारतीय वैद्यक मे कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे औषध या दवाएँ जिनके सबध मे यह माना जाता था कि इनके सेवन से मनुष्य कभी बीमार या बुड्ढा नही हो सकता और उसमे फिर से नया जीवन और युवावस्था आ जाती है। ४. आधुनिक भारतीय वैद्यक मे कुछ विशिष्ट प्रकार की ओषधियो से बनी हुई कुछ ऐसी दवाएँ जो मनुष्यो का बल-वीर्य आदि बढ़ानेवाली मानी जाती हैं। जैसे—आमलक रसा-

यन, ब्राह्मी, रसायन, हरीतकी रसायन आदि। ५. तक्र। मठा। ६. वायविडग। विडग। ७ जहर। विष। ८. कटि। कमर। ९. गरुड पक्षी।

रसायनज्ञ—पु०[स० रसायन√ज्ञा (जानना)+क] रसायन क्रिया का जाननेवाला। वह जो रसायन विद्या जानता हो।

रसायनफला—स्त्री०[व० स०,+टाप्] हर्रे। हड। हरीतकी।

रसायनवर—पु०[स० स० त०] लहसुन।

रसायनवरा—स्त्री०[स० स० त०]१ कँगनी। २ काकजघा।

रसायन-विज्ञान—पु०=रसायन-शास्त्र।

रसायन-शास्त्र—पु०[सं० प० त०] आधुनिक काल मे विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पदार्थो मे क्या क्या गुण और तत्त्व होते है, दूसरे पदार्थो के योग से उनमे क्या क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं, और उन्हे किस प्रकार रूपातरित किया जा सकता है। (कैमिस्ट्री)

विशेष—इस शास्त्र का मुख्य सिद्धान्त यह है कि सभी पदार्थ कुछ मूल तत्त्वो या द्रव्यो के अलग अलग प्रकार के परमाणुओ से बने हुए होते हैं। वैज्ञानिको ने अब तक ऐसे १०० से अधिक मूल तत्त्व या द्रव्य ढूँढ़ निकाले है। उनका कहना है कि जब एक प्रकार के परमाणु किसी दूसरे प्रकार के परमाणुओ से मिलते हैं, तब उनसे कुछ नये द्रव्य या पदार्थ बनते हैं. इस शास्त्र मे इसी बात का विचार होता है कि उन तत्त्वो मे किस किस प्रकार के परिवर्तन या विकार होते हैं, और उन परिवर्तनो का क्या परिणाम होता है।

रसायन-श्रेष्ठ—पु० [सं० स० त०] पारा।

रसायनिक—वि०=रासायनिक।

रसायनी—स्त्री० [स०रस√अय् (प्राप्ति)+ल्यु-अन+ङीप्] १ वह औषध जो बुढापे को रोकती या दूर करती हो। २ गुडुच। ३. काकमाची। मकोय। ४ महाकरज। ५ गोरखमुण्डी। अमृत सजीवनी। ६ मासरोहिणी। ७ मजीठ। ८ कन-फोडा नाम की लता। ९ कौंछ। केवाँच। १०. सफेद निसोथ। ११. शखपुष्पी। शखाहुली। १२. कदगिलोय। १३ नाडी नामक साग।

†पुं०=रसायन।

रसाल—वि०[स० रस-आ√ला (आदान)+क]१. रस से पूर्ण। रस से भरा हुआ। रसपूर्ण। २ मीठा। मधुर। ३. रसिक। रसीला। सहृदय। ४ साफ किया हुआ। परिमार्जित और शुद्ध। पुं०१ ऊख। गन्ना। २ आम। ३ गेहूँ। ४. वोल नामक गध-द्रव्य। ५ कटहल। ६ कदुर तृण। ७ अमलबेत। ८ शिलारस। लोवान।

पुं० [अ० इरसाल] कर। राजस्व। खिराज।

वि०=रिसाल।

रसालक—वि०[सं० रसाल+कन्] [स्त्री० रसालिका] १ मधुर। मृदु। २. सरस। ३ मनोहर। सुन्दर।

रसालय—पु०[स० रस-आलय, ष० त०]१ आम का पेड़। २ आमोद-प्रमोद का स्थान। क्रीडा-स्थल। ३. दे० 'रसशाला'।

रसाल-शर्करा—स्त्री०[स० मध्य० स०] गन्ने या ऊख के रस से बनाई हुई चीनी।

रसालस—पु०[हिं० रसाल] अद्भुत या विलक्षण बात। कौतुक।

रसालसा—स्त्री०[सं० रस-अलसा, तृ० त०]१. गन्ना। २. गेहूँ। ३. कुहुर नामक तृण।

रसाला—स्त्री० [स० रसाल+टाप्] १ सिखरन। श्रीखड। २ दही मे मिलाया हुआ सत्तू। ३ दूब। ४. विदारीकन्द। ५. दाख। ६ गन्ना। ७ जीभ। जवान। ८ एक तरह की चटनी।

†पुं०=रिसाला।

रसालाम्र—पु०[स० रसाल-आम्र, कर्म० स०] वढिया कलमी आम।

रसालिका—स्त्री०[स० रसाल√कन्+टाप्, इत्व]१ छोटा आम। अविया। २ सप्तला। सातला।

रसाली—स्त्री०[स० रसाल+ङीप्] गन्ना।

पु०[स० रस] भोग-विलास मे रस या आनन्द प्राप्त करनेवाला व्यक्ति।

रसाव—पु०[हिं० रसना]१ वह अवस्था जिसमे कोई तरल पदार्थ किसी चीज मे से रस या टपक रहा हो। २. किसी चीज मे से रसकर निकलनेवाला पदार्थ। ३ खेती जोतकर और पाटे से वरावर करके उसे कई दिनो तक यो ही छोड देने की क्रिया जिससे उसमे रस या उत्पादन शक्ति का आविर्भाव होता है।

रसावट†—पु०=रसावल।

रसावल—पु०[स० रस] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे दो यगण होते है। कुछ लोग दूसरे यगण की जगह मगण भी रखते है। पर कुछ लोगो के मत से 'रोला' ही रसावल है। अर्ध-भुजगी।

पु०[हिं० रस+चावल]१ ऊख के रस मे पकाये हुए चावल। २ देहातो मे विवाह के उपरात नववधू द्वारा प्रस्तुत रसावल जीमते समय गाये जानेवाले गीत।

रसावा†—पुं० [हिं० रस+आवा (प्रत्य०)] वह मटका जिसमे ऊख का रस रखा हुआ हे।

रसाश—पु०[स० रस-आश, ष० त०] मदिरा पान करना। शराव पीना।

रसाशी (शिन्)—पु० [स० रस√अश् (भोजन)+णिनि] मदिरा पान करनेवाला। शरावी।

रसाष्टक—पु०[स० रस-अष्टक, ष० त०] पारा, ईगुर, कातिसार, लोहा, सोनामक्खी, रूपामक्खी, वैक्रातमणि, और शख इन आठ महारसो का समाहार। (वैद्यक)

रसास्वादन—पु०[स० रस-आस्वादन, ष० त०]१ किसी प्रकार के रस का स्वाद लेना। रस चखना। २ किसी प्रकार के रस या आनन्द का भोग करना। सुख लेना। ३ किसी वात या विषय का रस चखना या लेना।

रसास्वादी (दिन्)—वि०[स० रस-आ√स्वद् (स्वाद लेना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० रसास्वादिनी]१ रस चखनेवाला। स्वाद लेनेवाला। २ आनन्द या मजा लेनेवाला। ३ किसी वात या विषय मे रस लेनेवाला।

पु० भ्रमर। भौरा।

रसाह्व—पु०[स० रस-आह्वा, व० स०] गधा-विरोजा।

रसाह्वा—स्त्री०[स० रसाह्व+टाप्]१ सतावर। २ रासना।

रसिआउर†—पु०=रसावल (रस मे पका हुआ चावल)।

रसिक—वि०[स० रस+ठन्—इक] [भाव० रसिकता, स्त्री० रसिका]

१ रसपान करनेवाला। २. किसी काव्य, कहानी, बातचीत आदि के रस से आनन्दित होनेवाला। ३. काव्य-मर्मज्ञ। ४. जिसके हृदय में सौंदर्य, मधुर बातों आदि के प्रति अनुराग हो। सहृदय।
पु०१ प्रेमी। २. सारस। ३ घोड़ा। ४. हाथी। ५ एक प्रकार का छंद।

रसिकता—स्त्री० [सं०रसिक+तल्+टाप्]१. रसिक होने की अवस्था, भाव या धर्म्म। २. हँसी-ठट्ठा या परिहास करने की वृत्ति।

रसिक-विहारी—पु०[सं० कर्म० स०] श्रीकृष्ण।

रसिका—स्त्री० [सं० रसिक+टाप्]१ दही का शरबत। सिखरन। २ ईख का रस। ३ शरीर में होनेवाला रस या धातु। ४ जीभ। जवान। ५ मैना पक्षी।
वि०=रसिक का स्त्री०।

रसिकाई†—स्त्री०=रसिकता।

रसिकेश्वर—पु०[सं० रसिक-ईश्वर, ष० त०] श्रीकृष्ण।

रसित—वि०[सं०√रस्(शब्द)+क्त]१ रस से बना हुआ। रस से युक्त किया हुआ। २. ध्वनि या शब्द करता हुआ। बजता या बोलता हुआ। ३ जिस पर रंग या रोगन किया गया हो। ४ चमकीला।
पु० १ ध्वनि। शब्द। २ अंगूर की शराब।

रसिया—पु०[सं० रस+हिं० इया (प्रत्य०)]१. रस अर्थात् आनन्द लेने का शौकीन। जैसे—गाने-बजाने का रसिया। २ कामुक और व्यसनी व्यक्ति। ३ बुंदेलखण्ड और ब्रज में होली के अवसर पर गाये जानेवाले हास-परिहास-मूलक एक तरह के गीत। ४.प्रेमी।

रसियाव—पु०[हिं० रस+इयाव (प्रत्य०)] रसावल। (दे०)

रसी—स्त्री०[देश०] उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रों में पाई जानेवाली एक तरह की क्षारयुक्त मिट्टी।
वि०=रसिक (या रसिया)।

रसीद—स्त्री०[फा०]१ कोई चीज कहीं पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया या भाव। प्राप्ति। पहुँच। जैसे—पारसल भेजा है, उसकी रसीद की इत्तला दीजियेगा।
मुहा०—रसीद करना=(थप्पड़, मुक्का आदि) लगाना। जड़ना। मारना। जैसे—थप्पड़ रसीद करूँगा, सीधा हो जायगा।
२ वह पत्र जिस पर ब्योरेवार यह लिखा हो कि अमुक वस्तु या द्रव्य अमुक व्यक्ति से अमुक कार्य के लिए अमुक समय पर प्राप्त हुआ।

रसीदी—वि०[हिं० रसीद] १. रसीद के रूप में होनेवाला। २. रसीद के संबंध में या उसके लिए काम में आनेवाला। जैसे—रसीदी टिकट=वह विशेष प्रकार का टिकट जो रुपये पाने की रसीद पर लगता है।

रसीला†—वि०=रसीला।

रसीला—वि०[हिं० रस+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रसीली, भाव० रसीलापन]१ रस से भरा हुआ। रसयुक्त। २. खाने में मजेदार। स्वादिष्ट। ३. (व्यक्ति) जिसके मन में रस अर्थात् आनन्द लेने की प्रवृत्ति या भोग-विलास के प्रति अनुराग हो। रसिक। रसिया। ४. देखने में बाँका निराला या सुन्दर हो। जैसे—रसीली आँख।

रसीलापन—पु०[हिं०रसीला+पन (प्रत्य०)] रसीले होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रसुन—पु०[सं०रस+उनन्]=लहसुन।

रसूम—पु०[अ० रस्म (परिपाटी या प्रथा) का बहु०] १ नियमों, रीतियों, विधानों आदि का वर्ग या समूह। २. कर। शुल्क। ३. वह धन जो कोई काम करने के बदले में राजकीय नियमों के अनुसार राज्य को दिया जाता है। राज्य के प्रति होनेवाला देय। जैसे—दरख्वास्त देने या दावा दायर करने के समय अदालत का रसूम दाखिल करना पड़ता है। ४ वह धन जो जमींदार को किसानों की ओर से नजराने या भेंट आदि के रूप में मिलता था।

रसूम अदालत—पु०[अ०] वह धन जो अदालत में कोई मुकदमा आदि दायर करने अथवा कोई दरख्वास्त देने के समय कानून के अनुसार सरकारी खजाने में दाखिल किया जाना और जिसकी प्राप्ति के प्रमाण-स्वरूप टिकट आदि मिलते हैं। कोर्टफीस। स्टाप।

रसूल—पुं० [अ०] लोककल्याण के उद्देश्य से ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर भेजा जानेवाला दूत। ईश्वरदूत।

रसूली—स्त्री० [अ० रसूल+ई (प्रत्य०)]१. एक प्रकार का गेहूँ। २. एक प्रकार का जौ। ३ एक प्रकार की काली मिट्टी।
वि० रसूल संबंधी। रसूल का।

रसेंद्र—पु०[सं० रस-इंद्र, ष० त०] १ पारद। पारा। २. राजमाष। लोबिया। ३. वैद्यक में एक प्रकार की रसौषध जो जीरा, धनियाँ, पीपल, शहद, त्रिकुट और रस-सिंदूर के योग से बनती है।

रसेंद्र-वेधक—पु०[सं० ष० त०] सोना।

रसे रसे—अव्य० [हिं० रसना] धीरे-धीरे। शनै-शनै।

रसेश—पु०[सं० रस-ईश, ष० त०]१ श्रीकृष्ण जो रस और रसिकों के शिरोमणि माने गये हैं। २ दे० 'रसेश्वर'।

रसेश्वर—पु० [सं० रस-ईश्वर, ष० त०] १ पारा। २ वैद्यक में एक प्रकार का रसौषध जो पारे, गंधक, हरताल और सोने आदि के योग से बनता है। ३. दे० 'रसेश्वर दर्शन'।

रसेश्वरदर्शन—पु०[सं०मध्य० स०] एक शैव दर्शन जो मुख्यत पारद या पारे के साधनों से संबंध रखनेवाली बातों पर आश्रित है।
विशेष—शैव आगमों में रसेश्वर अर्थात् पारद या पारे को शिव का वीर्य तथा गंधक को पार्वती का रज माना गया है और इसी आधार पर उनके संबंध में इस दर्शन की रचना हुई है। यह प्रसिद्ध ६ दर्शनों से पृथक् या भिन्न है।

रसेस*—पु०[सं० रसेश]रसिक शिरोमणि, श्रीकृष्ण।
पु०=रसेश्वर। (पारा)

रसोइन†—स्त्री० हिं० रसोइया (रसोइदार) का स्त्री०।

रसोइया—पु० [हिं० रसोई+इया (प्रत्य०)] रसोइ बनानेवाला। भोजन बनानेवाला। रसोइदार। सूपकार।
स्त्री०=रसोई।

रसोई—स्त्री०[हिं० रस+ओई (प्रत्य०)]१. पका हुआ खाद्यपदार्थ। बना हुआ भोजन।
विशेष—सनातनी हिंदुओं में रसोई दो प्रकार की मानी जाती है—कच्ची और पक्की। कच्ची रसोई वह कहलाती है जो जल और आग के योग से बनी हो, और जिसमें घी की प्रधानता न हो। जैसे—चावल, दाल, रोटी आदि। ऐसी रसोई चौके में बैठकर खाई जाती है। पक्की रसोई वह कहलाती है जिसके पकने में घी की प्रधानता रही हो। जैसे—

परांठा, पूरी, वडे, समोसे आदि। ऐसी चीजें चौके से वाहर भी खाई जा सकती हैं और इनमे छुआछूत का विशेष विचार नही होता।
मुहा०—**रसोई चढना**= रसोई का वनना आरम्भ होना। **रसोई तपना**=रसोई या भोजन वनाना।
२ दे० 'रसोई-घर'।

रसोई-खाना—पु०=रसोई-घर।

रसोई-घर—पु०[हिं० रसोई+घर] वह कमरा या स्थान जहाँ पर घर के लोगो के लिए भोजन पकाया जाता है। चौका।

रसोइदार†—पु० रसोइया।

रसोईदारी—स्त्री०[हिं० रसोईदार+ई (प्रत्य०)]१ रसोई वनाने का काम। भोजन वनाने का काम। २ रसोईदार का पद या भाव।

रसोईबरदार--पु० [हिं० रसोई+फा० वरदार] वह जो वडे आदमियो के साथ उनकी रसोई या भोजन ले जाकर पहुँचाता हो।

रसोत†—स्त्री०=रसौत।

रसोदर—पु०[स० व० स०] हिंगुल। शिगरफ।

रसोद्भव—पु०[सं० रस-उद्भव, व० स०]१ शिंगरफ। ईंगुर। २ रसाजन। रसौत।

रसोद्भूत—वि०[स० रस-उद्भूत, प०त०] रस मे उत्पन्न।
पु० रसौत।

रसोन—पु०[स० रस-ऊन तृ० त०] लहसुन।

रसोपल—पु०[स० रस-उपल, उपमि० स०] मोती।

रसोय*—स्त्री०[रसोई।

रसौत—स्त्री०[स० रसोद्भूत] एक प्रकार की प्रसिद्ध औषधि जो दारुहल्दी की जट और लकडी को पानी मे उवालकर और उसमे से निकले हुए रस को गाढा करके तैयार की जाती है।

रसौता—पु०=रसौती।

रसौती—स्त्री०[देश०] धान की वह वोआई जिसमे वर्षा होने से पहले ही खेत जोतकर वीज डाल दिये जाते हैं।

रसौर†—पुं०=रसावल।

रसौल—स्त्री०[?] एक प्रकार की कँटीली लता जो दवा के काम आती और जिसकी पत्तियो की चटनी वनाई जाती है।
पु०=रसावल।

रसौली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का रोग जिसमे आँख के ऊपर भौंहो के पास अथवा शरीर के और किसी अग मे वडी गिलटी निकल आती है।

रस्ता†—पु०=रास्ता।

रस्तोगी—पु०[देश०] वैश्यो की एक जाति।

रस्म—स्त्री०[अ०]१ चाल। परिपाटी। प्रथा।
पद—**राह-रस्म**।
२. कर। महसूल। ३ वेतन। तनख्वाह। ४ मेल-जोल।
मुहा०—(किसी से) **रस्म होना**=लैंगिक सम्वन्ध या आशनाई होना।

रस्मि*—स्त्री०=रश्मि।

रस्मी—वि०[अ०]१. रस्म सवधी। २. रस्म के रूप मे होनेवाला। औपचारिक। ३ मामूली। साधारण।

रस्मोरिवाज—पु०[अ०] रुढि और परम्परा।

रस्य—पु०[सं० रस+यत्]१. रक्त। खून। लहू। २ शरीर मे का मास।

रस्या—स्त्री०[स० रस्य+टाप्]१. रासना। २. पाठा।

रस्सा—पु०[स० रसना; प्रा० रसणा; हिं० रसना] [स्त्री० अल्पा० रस्सी]१ मूँज, सन आदि का वटा हुआ तथा मोटा रूप।
पद—**रस्सा-कशी**।
२ जमीन की एक नाप जो ७५ हाथ लबी और ७५ हाथ चौडी होती है। इसी को वीघा कहते है।
पु०[हिं० रसना=वहना] घोडे के पैरो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

रस्सा-कशी—स्त्री०[हिं०+फा०]१ एक प्रकार का व्यायाममूलक खेल जिसमे दो प्रतियोगी दल पक्ति वाँधकर एक दूसरे के पीछे खडे हो जाते है, और एक रस्सा पकडकर अपनी अपनी ओर खीचने का प्रयत्न करते है। २. लाक्षणिक रूप मे, आपस मे होनेवाली खीचातानी या प्रतियोगिता।

रस्सी—स्त्री० [हिं० रस्सा] रूई, सन या इसी प्रकार की और चीजो के रेशो को एक मे वटकर वनाया हुआ लवा खड जिसका व्यवहार चीजो को वाँधने, कूएँ से पानी खीचने आदि मे होता है। डोरी। गुण। रज्जु।
स्त्री०[?] एक प्रकार की सज्जी।

रस्सीवाट—पु०[हिं० रस्सी+वटना] रस्सी वटनेवाला। डोरी वनानेवाला।

रहंकला†—पु०=रहकता।

रहँचटा—पु०=रहचटा।

रहँट†—पु०=रहट।

रहँटा—पु०=रहटा।

रहँटी—पु०=रहटी।

रह—पु०[स० रथ] रथ।
स्त्री०=राह (रास्ता)।
प्रत्य० राह का वह रूप जो कुछ समस्त पदो मे प्रत्येक रूप मे लगता है। जैसे—रहनुमा, रहवर।

रहकला—पु०[हिं० रथ+कल]१ तोप आति ढोनेवाली एक तरह की पुरानी चाल की गाड़ी। २. उक्त गाडी पर रखी जानेवाली तोप।

रहचटा—पु०[स०रस+हिं०चाट]१ वह जिसे किसी प्रकार के रस (सुख) की चाट या चस्का लगा हो। २ उक्त प्रकार का चस्का या चाट।

रहचट्ट—स्त्री० [अनु०]१ चिडियो का बोलना। चहचहाहट। २ आदमियो की चहलपहल।
स्त्री० [हिं० रहचटा] रहचटे होने की अवस्था, गुण या भाव।

रह-चट्टना†—अ०=चहचहाना (पक्षियों का)।

रहट—पु०[स० अरघट्ट, प्रा० अरहट्ठ] खेतो की सिंचाई के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यत्र, जो गोलाकार पहिए के रूप मे होता है और जिसपर हाँडियो की माला पडी रहती है। इसी पहिये के घूमने से हाँड़ियो आदि मे भरकर पानी ऊपर आता है।

रहटा—पु०[हिं० रहट] चरखा।

रहटी†—स्त्री० [हिं० रँहटा]१. कपास ओटने की चरखी। २ ऋण देने का एक प्रकार जिसमे ऋणी से प्रति मास कुछ धन वसूल किया जाता है। हुडी।

रहठा—पु० [?] अरहर के पौधे का सूखा हुआ डंठल। कड़िया।

रहठान—पु० [हिं० रहना] १ रहने का स्थान। २ जगह। स्थान।

रहड़—पु० [सं० रथरूप, प्रा० रहरूप] १ ठेला-गाड़ी। २.बैलगाड़ी।

रहतिया—वि० [हिं० रहना+तिया (प्रत्य०)] (दुकान का माल) जो बहुत दिनों तक पड़ा रहने के कारण कुछ खराब हो गया हो।

रहन—स्त्री० [हिं० रहना] १ रहने की अवस्था, ढंग या भाव।

पद—रहन-सहन।

२. लोगों के साथ रहने और जीवन-निर्वाह तथा व्यवहार करने का ढंग या प्रकार। ३ किसी के साथ प्रेमपूर्वक रहने और निभाने की क्रिया या भाव। उदा०—जौ पै रहनि राम सों नाहीं।—तुलसी।

रहन-सहन—स्त्री० [हिं० रहना+सहना] घर-गृहस्थी या लोक में रहने और लोगों के साथ व्यवहार करने की क्रिया या ढंग।

रहनहारा—वि० [हिं० रहना+हार (प्रत्य०)] १ रहने अर्थात् निवास करने-वाला। निवासी। २ टिक कर या स्थायी रूप से बना रहने या रहने-वाला।

रहना—अ० [प्रा० रहण] १ किसी आधार या स्थान पर अवस्थित या स्थित होना। टिका या ठहरा हुआ होना। जैसे—इन्हीं खंभों (या दीवारों) पर छत रहेगी। २ किसी विशिष्ट दशा या स्थिति में स्थिर होना। एक रूप में अवस्थान करना। जैसे—गर्भ (या पेट) रहना। जीवन या जिंदगी रहना। उदा०—नीके हैं छींके छुए, ऐसे ही रह नारि।—बिहारी।

मुहा०—रह चलना या* रह जाना=प्रस्थान करने का विचार छोड़ देना। रुक जाना। ठहर जाना। रहा जाना=शांति या स्थिरता-पूर्वक अवस्थान करने में समर्थ होना। जैसे—(क) अब तो बिना बोले मुझसे रहा नहीं जाता। (ख) उसके बिना तुमसे रहा नहीं जाता।

३ किसी स्थान को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से अपने निवास का मुख्य केंद्र बनाकर वहाँ बसना। निवास करना। जैसे—आज-कल वह कलकत्ते में रहते हैं। ४ किसी स्थान पर कुछ समय के लिए विद्यमान होकर वहाँ समय बिताना। जैसे—दो-चार दिन यहाँ रहकर वे घर चले गये। उदा०—जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे बिदेस।

मुहा०—(स्त्री का पुरुष) से रहना=पर-पुरुष से संभोग करना। उदा०—मीरगुल से अब के रहने में हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी, पेड़ू पत्थर हो गया।—जानसाहब।

रहना-सहना=किसी स्थान पर निवास करते हुए कुछ समय बिताना। जैसे—जो आदमी जहाँ रहता-सहता है, वहीं उसका मन लगता है।

५ उपस्थित या विद्यमान रहना। जैसे—हमारे रहते तुम्हारा कोई बिगाड़ नहीं सकता।

मुहा०—(किसी वस्तु या व्यक्ति का) बना रहना=ठीक और अच्छी दशा में वर्तमान रहना। जैसे—तुम्हारा राज-पाट बना रहे। (किसी की) बनी रहना=किसी की प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि ज्यों की त्यों रहना। उदा०—किस की बनी रही है, किसकी बनी रहेगी।—कोई शायर।

६ जीविका चलाने के लिए नौकर आदि के रूप में कहीं या किसी पद पर स्थित रहकर निर्वाह करना या समय बिताना। जैसे—इधर साल भर में वह तीन चार जगह रह चुका; पर कहीं टिका नहीं। ७. किसी के साथ मैथुन या संभोग करना। (बाजारू) जैसे—यह भी तो कई बार उसके साथ रह चुका है। उदा०—मीरगुल से अबके रहने में हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी, पेड़ू पत्थर हो गया।—जान साहब।

८. व्यवहार आदि में नियम या मर्यादा का पालन करना। अच्छा और ठीक आचरण करना। उदा०—(क) धरम् बिचारि समुझि कुल रहई। (ख) हम जानति तुम यों नहिं रैहौ, रहियौ गारी खाय।—सूर।

९. बाधा, रुकावट आदि मानकर किसी बात से विरत होना।—उदा०—चितवन रोकें हूँ न रही।—सूर।

मुहा०—(व्यक्ति का) रह जाना=(क) थककर या हिम्मत हारकर आगे काम या गति से विमुख होना। (ख) प्रतियोगिता आदि में विफल होना। (ग) परीक्षा आदि में अनुत्तीर्ण होना। जैसे—इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षा में बहुत-से लड़के रह गये। (शरीर के अंग का) रह जाना=(क) अधिक परिश्रम के कारण इतना थक जाना कि आगे काम न हो सके। बहुत ही शिथिल तथा स्तब्ध हो जाना। जैसे—लिखते लिखते हाथ रह गया। (ख) रोग आदि के कारण निकम्मा या बे-काम हो जाना। जैसे—लकवे से उनका हाथ रह गया।

१०. अवशिष्ट रहना। बाकी बचना। जैसे—(क) अब तो सौ ही रुपए हाथ में रह गये हैं। (ख) और मकान तो बिक गये; वही एक रह गया है।

पद—रहा-सहा।

११. पीछे छूट जाना। पिछड़ना। १२. क्रिया, गति, योग आदि से रहित होना। जैसे—अब तो आप वहाँ जाने से भी रहे। १३. चुपचाप बैठे रहकर या बिना कुछ किये हुए समय बिताना। उदा०—समुझि चतुर चित बात यह रहत बिसूर बिसूर।—रसनिधि।

मुहा०—रह जाना=बिना कुछ किये हुए चुपचाप या शांत भाव से समय बिताना। जैसे—हम तुम्हारे कहने पर रह गये, नहीं तो उसे मजा चखा देते। रहने देना=(क) जिस अवस्था में हो, उसी में छोड़ देना। हस्तक्षेप न करना। जैसे—तुम रहने दो, मैं समझ लूँगा। (ख) ध्यान न देना। उपेक्षापूर्वक छोड़ देना या जाने देना। जैसे—रहने दो, इन बातों में क्या रखा है। रह-रहकर=बीच बीच में कुछ ठहर या रुककर। थोड़े थोड़े अन्तर पर या थोड़ी थोड़ी देर बाद। जैसे—रह-रहकर पेट (या सिर) में दरद होना।

१४. लेन-देन आदि में किसी के जिम्मे कोई रकम बाकी निकलना। बाकी पड़ना। जैसे—कभी का तुम्हारा कुछ रहता हो (या रह गया हो) तो बताओ।

रहनि†—स्त्री०=रहन।

रहनी†—स्त्री०=रहन।

रह-नुमा—वि० [फा० राहनुमा का संक्षिप्त रूप] [भाव० रह-नुमाई] ठीक रास्ता बतलानेवाला। मार्ग-दर्शक।

रह-नुमाई—स्त्री० [फा०] ठीक रास्ता बतलाना। मार्ग दर्शन।

रह-बर—वि० [फा०] [भाव० रह-बरी] रास्ता दिखलानेवाला।

रहम—पुं० [अ० रह्म] १. करुणा। दया। २. अनुकंपा। अनुग्रह।

पद—रहमदिल।

रहमत—स्त्री० [अ० रह्मत] १. ईश्वरीय कृपा। २. कृपा। दया।

रहमदिल—वि० [अ० रह्म+फा० दिल] करुणापूर्ण (व्यक्ति)। सहृदय।

रहमान—वि० [अ० रह्मान] बहुत बड़ा दयालु। कृपालु।

पुं० ईश्वर का एक नाम ।

रहर, रहरी†—स्त्री०=अरहर।

रहरू—स्त्री० [प० रिढना=घसिटना] छोटी देहाती गाडी, जिसमे किसान लोग घास या खाद ढोते है।

पु० [फा०] रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही।

रहरेठा†—पु० [हि० अरहर] अरहर के पौधे का सूखा डठल। कडिया। रहठा।

रहल—स्त्री० [अ०] एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी जो आवश्यकतानुसार खोली और बन्द की जा सकती है और जिस पर पढने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहलू†—स्त्री०=रहरु।

रहवाल—पु० [फा०] घोडा।

स्त्री० घोडे की चाल।

रहस्—पुं० [स०√रम् (क्रीडा)+असुन्, ह-आदेश] १ गुप्त भेद। छिपी बात। २ गूढ तत्व या रहस्य। ३ क्रीडा। खेल। ४. आनन्द। सुख। ५. एकात स्थान।

रहस†—पु०=रहस्।

†स्त्री०=रास (लीला)।

रहसना—अ०[हि० रहस+ना (प्रत्य०)] आनदित होना। प्रसन्न होना।

रहस-बधावा—पु० [हि० रहस+बधाई] विवाह की एक रीति जिसमे नव-विवाहिता वधू को वर अपने साथ जनवासे मे लाता है। वहा गुरुजन उसे देखते तथा उपहार देते हैं।

रहसाना†—स० [स० रहस्] प्रसन्न करना। प्रसन्न होना। उदा०—किछू डेराई किछू रहसाई।—नूरमोहम्मद।

रहसि*—स्त्री० [स० रहस्] १ गुप्त स्थान। २ एकात स्थान।

रहस्य—पु० [स० रहस्+यत्] १ वह बात जो सबको बतलाई न जा सकती हो, कुछ विशिष्ट लोग ही जिसे जानने के अधिकारी माने या समझे जाते हो। गुप्त या भेद की बात। २ किसी चीज या बात के अन्दर छिपा हुआ वह तत्त्व या बात जिसका पता ऊपर से यो ही देखने पर न चलता हो, और फलत जिसे जानने या समझने के लिए कुछ विशिष्ट पात्रता, बुद्धि-योग्यता आदि की आवश्यकता होती हो। भेद। मर्म। राज। ३. किसी प्रकार या किसी रूप मे अन्दर छिपी हुई बात। भेद। (सीक्रेट) क्रि० प्र०—खुलना।—खोलना।

४. आध्यात्मिक क्षेत्र मे ईश्वर और उसकी सृष्टि के सबध के वे गुप्त तत्त्व या भेद जो सब लोग नही जानते या नही जान सकते, और जिनकी अनुभूति केवल सात्त्विक वृत्तिवाले लोगो के अत करण मे ही होती है।

पद—रहस्यवाद। (देखें)

५. ऐसा तत्त्व जो केवल दीक्षा के द्वारा अधिकारियो या पात्रो को ही बतलाया जाता हो। ६ एक उपनिषद् का नाम। ७ हँसी-ठट्ठा। परिहास। मजाक।

वि० १ (तत्त्व या विषय) जो सबको ज्ञात न हो अथवा बतलाया न जा सके। २ (कार्य) जो औरो से छिपाकर किया जाय।

रहस्य-क्रीड़—पु०=रहस्य-क्रीडा।

रहस्य-क्रीडा—स्त्री० [स० कर्म० स०] एकात मे दूसरो की दृष्टि से दूर रहकर की जानेवाली क्रीड़ा। जैसे—नायक और नायिका की।

रहस्यवाद—पु० [म० प० त०] [वि० रहस्यवादी] रहस्य (देखें) अर्थात् ईश्वर तथा सृष्टि के परम तत्त्व या सत्य पर आश्रित और सात्त्विक आत्मानुभूति से सबध रखनेवाला एक वाद या सिद्धान्त (छायावाद से भिन्न) जो आध्यात्मिक तथा साहित्यिक क्षेत्रो मे, परमात्मा के प्रति होनेवाले जीवात्मा के अनुराग या प्रेम के द्योतन का सूचक है। (मिस्टिसिज्म)

विशेष—प्राय सभी कालो, जातियो, और देशो मे सात्त्विक वृत्तिवाले कुछ ऐसे लोग होते आये है, जो अपने समाज मे प्रचलित धार्मिक सिद्धान्त नही मानते, और उनसे ऊपर उठकर उसी को आध्यात्मिक सत्य मानकर ईश्वर की उपासना करते है जो उनके अत करण से स्फुरित होता है। ऐसे लोग प्राय ससार से विमुख तथा विरक्त होकर जिस प्रकार अथवा जिस सिद्धान्त के आश्रित होकर परम सत्य का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करते और लोक मे उसका अभिव्यजन करते हैं, वही साहित्य मे रहस्यवाद कहलाता है। इसके मूल मे मनुष्य की वह जिज्ञासा है जो उसके मन मे सृष्टि उत्पन्न करनेवाली अलौकिक या लोकोत्तर शक्ति के प्रति उत्पन्न होती है और जिसके साथ वह तादात्म्य स्थापित करना चाहता है।

रहस्यवादी (दिन्)—वि० [स० रहस्यवाद+इनि] रहस्यवाद-सबधी। रहस्यवाद का।

पु० वह जो रहस्यवाद के तत्त्व समझता अथवा उसके सिद्धान्तो का अनुकरण करता हो। रहस्यवाद का अनुयायी।

रहस्य-सचिव—पु०=मर्म-सचिव। (देखें)

रहस्या—स्त्री० [स० रहस्य+टाप्] १ एक प्राचीन नदी। (महा०) २ रासना। ३ पाठा।

रहाइश—स्त्री०=रिहाइश।

रहाई—स्त्री० [हि० रहना] १. रहने की क्रिया, ढग या भाव। २ सुखपूर्वक रहने की अवस्था या भाव। ३ आराम। चैन। सुख।

स्त्री० [फा०]=रिहाई।

रहाऊ†—पु० [हि० रहना] गीत मे का पहला पद। टेक। स्थायी। (पश्चिम)

वि० =रहतिया (माला)।

रहाना†—अ० [हि० रहना] १ रहना। उदा०—उण बिन पल न रहाऊँ।—मीराँ। २ बोना।

रहावना—स्त्री० [हि० रहना+आवन (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ गाँव-भर के सब पशु एकत्र होकर रहते हो। रहुनिया।

रहा-सहा—वि० [हि० रहना+सहना (अनु०)] [स्त्री० रही-सही] बहुत थोडा बाकी बचा हुआ। बचा-बचाया थोडा-सा। जैसे—अब तो उनकी रही-सही प्रतिष्ठा भी नष्ट हो गई।

रहि—स्त्री०=राह (रास्ता)।

रहित—वि० [स०√रह (त्याग)+क्त] [भाव० रहितत्व] १ समस्त पदो के अन्त मे, ... के बिना, ... के विहीन। जैसे—धन-रहित। २ अभावपूर्ण। ३ अलग तथा मुक्त।

रहितत्व—पु० [स० रहित+त्व] १ रहित होने की अवस्था या स्थिति। २ नियम, बधन, भार आदि से मुक्त या रहित किये जाने का भाव। (एग्जेम्पशन)

रहिम—पु० [अ०] रहम (गर्भाशय)।

रहिला†—पु० [?] चना।

रहीम—वि० [अ०] जो रहम करता या तरस खाता हो। करुणावान् तथा दयालु।
पुं० १ ईश्वर का एक नाम। २. अब्दुल रहीम खान खानाँ का साहित्यिक उपनाम।

रहुआ†—पुं० [हिं० रहना] किसी के यहाँ पड़ा रहने तथा उसकी रोटियों पर पलनेवाला व्यक्ति।

रहूगण—पुं० [सं०] १. अंगिरस् गोत्र के अंतर्गत एक शाखा या गण। (गौतम ऋषि इसी वंश के थे)। २ उक्त वंश का व्यक्ति।

राँक†—वि०=रंक (दरिद्र)।

राँकड़†—स्त्री०[देश०] कम उपजाऊ भूमि।

रांकव—पुं० [सं० रंकु+अण्] रंकु नामक भेड़ या मृग के रोओं का बना हुआ वस्त्र।

राँगा†—पुं०=राँगा।

रांग—वि० [सं० रंग+अण्] १. रंग-संबंधी। रंग या रंगों का। जैसे—रांग-विन्यास। २. रंगों से युक्त। रंगीन।

राँगड़—पुं० [?] मुसलमान राजपूतों की एक जाति।

राँगड़ी—स्त्री० [हिं० राँगड़] १. दक्षिणी-पश्चिमी मालव तथा मेवाड़ के आस-पास की प्रांतीय बोली या विभाषा। २ पंजाब में होनेवाला एक प्रकार का चावल।

राँगा—पुं० [सं० रंग] सफेद रंग की एक प्रसिद्ध धातु जो अपेक्षया नरम या मुलायम होती है।

राँच† —वि०=रंच (तनिक)।

राँचना—अ० [सं० रंजन] १. रंग से युक्त होना। रंग पकड़ना। २ किसी के प्रेम में अनुरक्त होना।
स० १ किसी को अपने प्रेम में अनुरक्त करना। २ रंग से युक्त करना रंगना।
†स०=रचना।

राँजना—स० [सं० रंजन] १ रंजित करना। रँगना।
स० [हिं० राँगा] राँगे के योग से कोई चीज जोड़ना। राँगा का टाँका लगाना।
स०=आँजना (आँखों में अंजन लगाना)।

राँटा†—पुं० [देश०] १. टिटिहरी चिड़िया। टिट्टिभ। २. चरखा। ३ चोरों की सांकेतिक बोली।
†पुं०=रहट।

राँटी—स्त्री० [हिं० राँटा] टिटिहरी।

राँड़—वि० स्त्री० [सं० रंडा] (स्त्री) जिसका पति मर चुका हो तथा जिसने दूसरा विवाह आदि न किया हो।
स्त्री० १. विधवा स्त्री। २. वेश्या। ३. स्त्रियों की एक गाली।

राँढ़—वि० स्त्री०=राँड़।
पुं० [हिं० राढ़ देश] बंगाल में होनेवाला एक प्रकार का चावल।

राँदना†—स० [सं० रुदन] विलाप करना। रोना।

राँध—पुं० [सं० परान्त=दूसरी ओर] पड़ोस। पार्श्व। बगल।
पद—राँध-पड़ोस।
अव्य० निकट। पास। समीप।
स्त्री० [हिं० राँधना] राँधने की क्रिया, ढंग या भाव।

राँधना—स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना। पाक करना। जैसे—दाल या चावल राँधना।

राँधपड़ोस†—पुं०[हिं० राँध=पास+पड़ोस]आसपास या पार्श्व का स्थान। प्रतिवेश। पड़ोस।

राँपी—स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औजार जिससे वे चमड़ा काटते, छीलते और साफ करते हैं।

राँभना—अ०=रँभाना।

राँवाँ—पुं० [?] १.गाँव या कस्बे के पास की जंगली या ऊसर भूमि। २ ऐसी भूमि पर पशु चराने का कर।
†सर्व० आप। श्रीमान्। (पूरब में सम्बोधन)

रा†—विभ०=का। उदा०—कामाणि करग मुबाण कामरा।—प्रिथीराज।

राआ†—पुं०=राजा।

राइ†—पुं०=राय (राजा)।
†वि० सबसे बढ़कर। उत्तम।
†स्त्री०=राय (सम्मति)।
†स्त्री०=राजि (पंक्ति)।

राइता†—पुं०=रायता।

राइफल—स्त्री० [अं०] वह विशिष्ट प्रकार की बढ़िया बन्दूक जिसकी नली या नाल के अन्दर चक्करदार गराड़ियाँ बनी होती हैं; और जिसकी गोली उन गराड़ियों में से चक्कर काटती हुई निकलती है। ऐसी बन्दूक की गोली दूर तक जाती ,प्राय. निशाने पर ठीक लगती और घातक मार करती है।

राइरंगा†—पुं०=रामदाना।

राई—स्त्री० [सं० राजिका प्रा० राइआ] १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों जिसका स्वाद बहुत तीक्ष्ण होता है।
पद—राई रत्ती करके=(क) छोटी से छोटी रकम या तौल का ध्यान रखते हुए। जैसे—राई रत्ती करके सारा मकान छान डालना। **तुम्हारी आँखों में राई नोन**=ईश्वर करे तुम्हारी बुरी नजर न लगने पावे।
मुहा०—राई काई करना=(क) बहुत छोटे छोटे टुकड़े कर डालना। (ख) पूरी तरह से कुचल या नष्ट कर देना। **राई नोन (या लोन) उतारना**=नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा या टोटका करके राई और नमक आग में डालना, जिससे नजर के प्रभाव का दूर होना माना जाता है। **(किसी पर) राई नोन फेरना**=किसी सुंदर व्यक्ति को बुरी नजर से बचाने के लिए उसके सिर के चारों ओर से राई और नमक घुमाकर या उतारकर फेंकना। (एक प्रकार का टोटका)। **राई से पर्वत करना**=(क) जरा सी बात को बहुत बढ़ा देना। (ख) बहुत तुच्छ या हीन को बहुत बड़ा बनाना।
२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण। जैसे—राई भर नमक और दे दो।
†स्त्री० [हिं० राइ] राइ अर्थात् राजा होने की अवस्था या भाव। राजापन।
†स्त्री० [?] १ एक प्रकार का नृत्य। २. वह मंडली जो उक्त नृत्य करती हो।

राउ*—पुं०=राव (छोटा राजा)।
पुं० [सं० रव] १. रव। शब्द। २ मधुर शब्द।

राउत—पुं०=रावत।

राउर*†—पुं० [सं० राज+पुर, प्रा० राय+उर] राजाओं के महल का अंत.पुर। रनवास। जनानखाना।
वि० श्रीमान् का। आप का।

राउल*†—पु०=रावल (छोटा राजा)।

राकस*†—पु० [स्त्री० राकसिन, राकसी] =राक्षस।

राकसगद्दा—पुं० [हिं० राकस+गद्दा] कदंब नामक बेल और उसकी जड़।

राकस ताल—पु० =राक्षस ताल।

राकस-पत्ता—पु० [हिं० राकस=राक्षस+हिं० पत्ता] जगली घीकुंआर जिसे कांटल और बबूर भी कहते हैं।

राकसिन—स्त्री०=राक्षसी।

राकसी—वि०, स्त्री०=राक्षसी।

राका—स्त्री० [स०√रा (दान)+क+टाप्] १ पूर्णिमा की रात। २. पूर्णिमा या पूर्णमासी का दिन अथवा पर्व। ३ खुजली नामक रोग। ४. युवती जिसे पहले-पहल रजोदर्शन हुआ हो।

राकापति—पुं० [स० ष० त०] चंद्रमा।

राकिम—वि० [अ०] लिखनेवाला। लेखक।

राकेश—पु० [स० राका-ईश, ष० त०] चद्रमा।

राक्षस—पु० [सं० रक्षस्+अण्] [स्त्री० राक्षसी] १ असुरो आदि की तरह की एक बहुत ही भीषण तथा विकराल योनि। इस योनि के व्यक्ति बहुत ही अत्याचारी, क्रूर और नृशस कहे गये हैं, और कुबेर के धन-कोश के रक्षक कहे गये हैं। दैत्य। निशिचर। निश्चर। २ आठ प्रकार के विवाहो मे से एक प्रकार का विवाह जो राक्षसो में प्रचलित था और जिसमें लोग कन्या को जबर्दस्ती उठा ले जाते और उससे विवाह कर लेते थे। ३ बहुत ही दुष्ट प्रकृति का और निर्दय व्यक्ति। ४ साठ सवत्सरो मे से उनचासवाँ संवत्सर। ५ वैद्यक मे गवक और पारे के योग से बननेवाला एक प्रकार का रसौषध।

राक्षस-ताल—पु० [हिं०] तिब्बत की एक झील। रावण-ह्रद। मान-तलाई।

राक्षसी—स्त्री० [स० राक्षस+ङीप्] १ राक्षस की स्त्री। २. राक्षस स्त्री। दुष्ट, क्रूर स्वभाववाली स्त्री।
वि० १ राक्षस का। राक्षस सबधी। २ राक्षसो की तरह का। अमानुषिक तथा निर्दयतापूर्ण। जैसे—राक्षसी अत्याचार।

राख—स्त्री० [स० रक्षा ?] किसी बिलकुल जले हुए पदार्थ का अवशेष। भस्म। खाक। जैसे—कोयले की राख।

राखना*†—स० [सं० रक्षण] १. किसी से कोई बात छिपाना। कपट करना। २ रोक रखना। जाने न देना। ३ किसी पर कोई अभियोग लगाना या आरोप करना। ४ दे० 'रखना' ५ दे० 'रखाना'।

राखी—स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा-बधन के दिन बहन द्वारा भाई को और ब्राह्मण द्वारा यजमान को बाँधा जानेवाला सूत्र।
क्रि० प्र०—बाँधना।
† स्त्री० १. =राख (भस्म)। २ =रखवाली।

राखीबंद—वि० [हिं० राखी+सं० बध] १ (पुरुष) जिसे किसी स्त्री ने राखी बाँधकर अपना भाई या भाई के समान बना लिया हो। २ (स्त्री) जो किसी पुरुष को राखी बाँधती हो; और इस प्रकार उसकी बहन बन गई हो।

राग—पुं० [सं०√रञ्ज् (रँगना)+घञ्] १ किसी चीज को रग से युक्त करने की क्रिया या भाव। रजित करना। रँगना। २ रँगने का पदार्थ या मसाला। रंग। ३ लाल रग। ४ लाल होने की अवस्था या भाव। लाली। ५. प्राचीन भारत मे, शरीर में लगाने का वह सुगंधित लेप जो कपूर, कस्तूरी, चदन आदि से बनाया जाता था। अगराग। ६ पैर मे लगाने का अलता। ७ किसी के प्रति होनेवाला अनुराग या प्रेम। ८. किसी अच्छी चीज या बात के प्रति होनेवाला अनुराग; और उसे प्राप्त करने की इच्छा या कामना। अभिमत या प्रिय वस्तु पाने की अभिलाषा। ९ मन मे रहनेवाली सुखद अनुभूति। १० खूबसूरती। सुंदरता। ११ क्रोध। गुस्सा। १२ कष्ट। तकलीफ। पीडा। १३ ईर्ष्या। द्वेष। मत्सर। १४. मन प्रसन्न करने की क्रिया मनोरंजन। १५ राजा। १६ सूर्य। १७ चद्रमा। १८ भारत के शास्त्रीय सगीत मे वह विशिष्ट गान-प्रकार, जिसका स्वरूप स्वरो के उतार-चढाव के विचार से निश्चित किया हुआ और ताल, लय आदि विशिष्ट अगो तथा उपांगो से युक्त होता है।
विशेष—आरभ मे भरत और हनुमत् के मत से ये छ मुख्य राग निरूपित हुए थे।—भैरव, कौशिक (मालकौस) हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ। कुछ परवर्ती आचार्यो के मत से श्री, वसंत, पंचम, भैरव, मेघ और नट नारायण, तथा कुछ आचार्यों के मत से मालव, मल्लार, श्री, वसत, हिंडोल और कर्णाट ये ६ राग हैं। परवर्ती आचार्यों ने प्रत्येक की ६-६ रागिनियाँ और ६–६ पुत्र भी माने थे, और वे सब पुत्र भी 'राग' कहलाने लगे थे। ये रागिनियाँ और राग अपने मूल या जनक राग की छाया से बहुत कुछ युक्त होते हैं। आगे चलकर सैकडो नई रागिनियाँ तथा राग बने थे, जिनकी स्वर-योजना आदि बहुत कुछ निरूपित तथा निश्चित है। इन सबकी गणना शास्त्रीय सगीत के अतर्गत होती है, और लोक मे इन्हें पक्का गाना कहते हैं।
मुहा०—अपना राग अलापना=अपनी ही बात कहना। अपने ही विचार प्रकट करना। दूसरो की बात न सुनना।
१९ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १३ अक्षर (र, ज, र, ज और ग) होते हैं।

रागचूर्ण—पुं० [स० ब० स०] १. कामदेव। २ खैर का पेड़।

रागच्छन्न—पु० [स० तृ० त०] १. कामदेव। २. श्रीरामचन्द्र।

रागदारी—स्त्री० [हिं० राग+फा० दारी] गाने का वह प्रकार जिसमे भरत के शास्त्रीय सगीत-शास्त्र के नियमो का ठीक तरह से पालन होता हो। ठीक तरह से राग-रागिनियाँ गाने की क्रिया या प्रकार।
विशेष—इसमे गीत के बोलो के ताल-बद्ध उच्चारण भी होते है और शास्त्रीय दृष्टि से तीन पलटे भी होते हैं।

रागद्रव्य—पु० [स० ष० त०] राग।

रागधर*—पु०=शारगधर (विष्णु)। उदा०—तुलसी तेरो रागधर तात, मात, गुरुदेव।—तुलसी।

रागना* †—अ० [स० राग] १. रँगा जाना। रजित होना। २ किसी के प्रति अनुरक्त होना। ३. किसी काम या बात मे निमग्न या लीन होना।

स० १ रँगना। २ प्रयत्न करना। ३. अनुरक्त करना।

स० [हिं० राग] १. गीत आदि गाना। २ राग अलापना।

राग-पुष्प—पु० [स० ब० स०] गुरु-दुपहरिया नामक पौधा और उसका फूल।

राग-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] जवा या जपा नामक फूल और उसका पौधा।

राग-माला—स्त्री० [स० ष० त०] कोई ऐसा गीत या गेय पद जिसमे एक-साथ कई शास्त्रीय रागो का प्रयोग किया गया हो।

राग-रंग—पु० [स० द्व० स०] १ आनद-मगल। २. कोई ऐसा उत्सव जिसमे आनद-मगल मनाया जाता हो।

राग-रज्जु—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

राग-लता—स्त्री० [स० मध्य० स०] कामदेव की स्त्री, रति।

राग-षाडव—पु० [स० मध्य० स०] १ अगूर तथा अनार के योग से बनाया जानेवाला एक तरह का खाद्य। २ आम का मुरब्बा।

राग-सागर—पु० [स० ष० त०] कोई ऐसा गीत या गेय पद जिसमे एक साथ बहुत से शास्त्रीय रागो का प्रयोग किया जाता हो।

रागसारा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] मैनसिल (खनिज पदार्थ)।

रागांगी—स्त्री० [स० राग-अग, ब० स०,+ङीप्] मजीठ (लता)।

रागान्वित—वि० [स० राग-अन्वित, तृ० त०] १ जिसे राग या प्रेम हो। २ क्रोध से युक्त। क्रुद्ध। ३ अप्रसन्न। नाराज।

रागारुण—वि० [स० राग-अरुण, तृ० त०] जो किसी प्रकार के राग (रग, प्रेम आदि) के कारण अरुण या लाल हो रहा हो। उदा०—मधुर माधवी सध्या मे जब रागारुण रवि होता अस्त।—पत।

रागिनी—स्त्री० [स० रागिणी] १ सगीत मे किसी राग की पत्नी। २ भारतीय शास्त्रीय सगीत मे कोई ऐसा छोटा राग जिसके स्वरो के उतार-चढाव आदि का स्वरूप निश्चित और स्थिर हो। ३ चतुर और विदग्धा स्त्री। ४ मेना की बडी कन्या का नाम। ५ जय श्री नामक लक्ष्मी।

रागिब—वि० [अ०] १. इच्छुक। २ प्रवृत्त।

रागी (गिन्)—वि० [स०√रज्+घिनुण्, वा राग+इनि] [स्त्री० रागिनी] १ राग से युक्त। २ रँगा हुआ। ३ रँगनेवाला। ४ किसी के प्रति अनुरक्त या आसक्त। ५ लाल सुर्ख। ६. विषय-वासना मे पडा या फँसा हुआ।

पु० [स० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १ अशोक वृक्ष। २ छ मात्रा-ओवाले छदो का नाम।

पु० [हिं० राग+ई० (प्रत्य०)] वह गवैया जो राग-रागिनियाँ गाता हो। शास्त्रीय सगीत का ज्ञाता। (पजाब)

† स्त्री० [?] मँडुआ या मकरा नामक कदन्न।

† स्त्री० =राज्ञी।

रागेश्वरी—स्त्री० [स० राग-ईश्वरी, ष० त०] सगीत मे खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

राघव—पु० [स० रघु+अण्] १ रघु के वश मे उत्पन्न व्यक्ति। २ श्रीरामचन्द्र। ३. दशरथ। ४ अज। ५ एक प्रकार की बहुत बडी समुद्री मछली।

राचना† —स० [हिं० रचना] रचना करना। बनाना।

अ० रचा या बनाया जाना। बनना।

स० [स० रजन] रग से युक्त करना। रँगना।

अ० १. रग से युक्त होना। रँगा जाना। २ किसी के प्रेम मे पडना। अनुरक्त होना। ३ किसी काम या बात मे मग्न या लीन होना। ४. प्रसन्न होना। ५. भला लगना। फबना। ६. गौन में पड़ना।

राछ—स्त्री० [स० रक्षा] १. कारीगरो का औजार। उपकरण। २. लकडी के अन्दर का ठोस और पक्का अश। हीर। ३. जुलाहो के करघे मे का कघी नामक उपकरण जिसकी सहायता से ताने के सूत ऊपर उठते और नीचे गिरते है। ४ बरात।

मुहा०—राछ घुमाना=विवाह के समय वर को पालकी पर चढाकर किसी जलाशय या कूएँ की परिक्रमा कराना।

५ जलूस। ६ वह खूँटा जिसके चारो ओर चरखी या जाँते का ऊपरी पाट घूमता या घुमाया जाता है। ६. हथौडा। ७ बुदेलखड मे, श्रावण मास मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

राछछ†—पुं०=राक्षस।

राछ-बँधिया—पु० [हिं० राछ+बाँधना] वह जो जुलाहे के साथ रहकर राछ बाँधने का काम करता हो।

राछस*—पु०=राक्षस।

राज—पु० [स० राज्य] १. राजा के अधिकार मे रहनेवाले क्षेत्र या भूखड। राज्य। २ राजकीय शासन। हुकूमत। ३ राजाओ का सा वैभव और सुख तथा उसका भोग।

मुहा०—राज रजना=(क) राज्य का शासन करना। (ख) राजाओ की तरह रहकर सब प्रकार के सुख भोगना। (किसी का) राज रजाना=राजाओ की तरह बहुत अधिक सुखपूर्वक रखना या सुख-भोग कराना।

४ किसी क्षेत्र या विषय मे होनेवाले किसी का पूरा अधिकार। जैसे—आज-कल तो पेशेवर नेताओ का राज है। ५ किसी के पूर्ण अधिकार या स्वामित्व की पूरी अवधि या काल। जैसे—मैं तो पिता जी के राज मे सब सुख भोग चुका।

वि० १ 'राजा' का वह सक्षिप्त रूप जो यौगिक के आरंभ मे लगाकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) राज-सबधी या राजा का। जैसे—राज-गुरु, राज-महल। (ख) प्रधान या मुख्य। जैसे—राजवैद्य। (ग) बहुत बडा या बढिया। जैसे—राजहस। २ राज या शासन सबधी। जैसे—राजनीति।

सर्व० राजाओ या बडो के लिए एक प्रकार का सबोधन। उदा०—राज लगे मेल्हियो रुपमणि।—प्रिथीराज।

पु० [स० राजन्] १. राजा। २ वह मिस्त्री जो ईंटो की जुडाई तथा पलस्तर आदि करता हो। मकान बनानेवाला कारीगर।

पु० [फा० राज] गुप्त या छिपी हुई बात। भेद। रहस्य।

राजक—वि० [स०√राज् (दीप्ति)+ण्वुल्—अक] प्रकाशमान्। चमकनेवाला।

पु० [राजन्+कन्] १ राजा। २ काला अगरु।

राज-कथा—स्त्री० [स० ष० त०] राजाओ का इतिहास या तवारीख।

राज-कदंब—पु० [स० ष० त०, परनिपात] कदब की एक जाति।

राज-कन्या—स्त्री० [स० ष० त०] १. राजा की पुत्री। राजकुमारी। २. केवड़े का फूल।

राजकर—पु० [स० मध्य० स०] राजा या राज्य की ओर से लगाया हुआ कर।

राजकर्कटी—स्त्री० [स० प० त०] एक प्रकार की वडी ककड़ी।

राज-कर्ण—पु० [स० प० त०] हाथी की सूँड।

राजकर्ता—पु० [स० प० त०] १ वह जो किसी को राजगद्दी पर बैठाता हो। २ फलत' ऐसा व्यक्ति जिसमे किसी को राजगद्दी पर बैठाने तथा उतारने की भी सामर्थ्य हो। ३ वह जो राजा या शासन-सम्बन्धी वड़े और महत्त्वपूर्ण कार्य करता हो।

राजकर्म (मंन्)—पु० [स० प० त०] १ राजा के कृत्य। २ राजा के कर्तव्य।

राजकला—स्त्री० [स० प० त०] चद्रमा की सोलह कलाओ मे से एक।

राजकल्याण—पु० [स०] सगीत मे कल्याण राग का एक प्रकार का भेद।

राजकशेरु—पु० [स० प० त०, परनिपात] नागरमोथा।

राजकाज—पु० [स० राजकार्य] राज्य या शासन के प्रतिदिन के या महत्त्व-पूर्ण काम।

राजकीय—वि० [स० राजन्+छ—ईय, कुक्-आगम] राज्य सबधी। राज्य का। जैसे—राजकीय अधिकारी।

राजकीय-समाजवाद—पु० [स०] आधुनिक समाजवाद की वह शाखा जिसका मुख्य सिद्धात यह है कि लोकोपयोगी कल-कारखाने और शिल्प राज्य के अधिकार और नियत्रण मे रहने चाहिए। (स्टेट सोशलिज्म)

राजकुंअर†—पु०=राजकुमार।

राजकुमार—पु० [स० प० त०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल—पु० [स० प० त०] १ राजा का कुल या वश। २ प्रासाद। ३ न्यायालय।

राजकोल—पु० [स० प० त०, परनिपात] वडा वेर (फल) और उसका पेट।

राजकोलाहल—पु० [स० ष० त० परनिपात] सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

राजकोष—पु० [स०] १. वह स्थान जहाँ राजकीय धनसपत्ति सुरक्षित रूप से रखी जाती है। सरकारी खजाना। २. आज-कल प्रमुख नगरो मे वह विशिष्ट स्थान जहाँ से राज्य के आर्थिक लेन-देन के सब काम होते हैं। (ट्रेजरी)

राजकोषातक—पु० [स० प० त०, परनिपात] वडी तरोई। वडा नेनुआ।

राजखर्जूरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] पिंडखजूर।

राजग—वि०, पुं०=राजगामी। (दे०)

राजगद्दी—स्त्री० [हिं० राजा+गद्दी] वह आसन या गद्दी जिस पर राजा बैठता है। राजसिंहासन। २ वह अधिकार जो उक्त आसन पर बैठने पर प्राप्त होता है। ३ नये राजा के पहले पहल गद्दी पर बैठने के समय का उत्सव तथा दूसरे कृत्य। राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ४ लाक्षणिक अर्थ मे, वहुत वडा अधिकार। (व्यग्य)

राजगामी—वि० [स०] (सपति) जो उत्तराधिकारी के अभाव मे राज्य या शासन के अधिकार मे आ जाय।

पु० ऐसी सपत्ति जो उत्तराधिकारी के अभाव मे राज्य के अधिकार मे आ गई हो। नजूल। (एस्चीट)

राज-गिद्ध—पु० [स० राज-गृध्र] काले चमकीले रग का एक प्रकर का गिद्ध जो प्राय अकेला ही रहता है।

राजगिरि—पु० [स० मध्य० स०] १. मगध देश का पर्वत। २ वथुआ नामक साग। ३ दे० 'राजगृह'।

राजगी†—स्त्री० [हिं० राजा+गी (प्रत्य०)] राजा होने की अवस्था, पद या भाव। राजत्व।

राजगीर—पु० [हिं० राज+फा० गीर] [भाव० राजगीरी] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगीरी—स्त्री० [हिं० राजगीर+ई (प्रत्य०)] राजगीर का कार्य या पद।

राजगृह—पु० [सं० प० त०] १ राजा के रहने का महल। राज-प्रासाद। २. विहार मे पटने के पास का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान जिसे पहले गिरिव्रज कहते थे।

राजघ—वि० [स० राजन्√हन् (हिंसा)+क] १ राजा को मार डालने-वाला। राजा की हत्या करनेवाला। २. वहुत तीव्र या तेज।

राज-घड़ियाल—पु० [हिं० राज+घडियाल] मध्य युग मे एक प्रकार का समय-सूचक यत्र जिसमे निश्चित समयो पर घडियाल या घटा भी वजता था। उदा०—नव पौरी पर दसँव दुआरा। तेहि पर वाज राज-घरियारा।—जायसी।

राजचंपक—पु० [स० प० त०, परनिपात] पुन्नाग का फूल। सुलताना चपा।

राजचार—पु० [स० राजाचार] राजाओ के यहाँ किये जाने या होनेवाले आचार-व्यवहार। उदा०—मैं भाँवरि नेवछावरि, राजचार सव कीन्ह।—जायसी।

राज-चिह्नक—पु० [स० प० त०, परनिपात+कन्] शिश्न। उपस्थ।

राजचूडामणि—पु० [स० प० त०] ताल के साठ भेदो मे से एक।

राजजंवू—पु० [स० प० त०, परनिपात] १. वडा जामुन। फरेंदा। जामुन। २ पिंड खजूर।

राजजीरक—पु० [स० प० त० परनिपात] एक प्रकार का जीरा।

राजतंत्र—पु० [स० प० त०] १ ऐसा राज्य या शासन जिसमे सारी सत्ता एक राजा के हाथ मे हो। (मॉनर्की) २ वह पद्धति या प्रणाली जिसके अनुसार उक्त प्रकार का शासन होता है। ३ राज्य के शासन करने के नियम, प्रकार और सिद्धात। (पॉलिटी)

राजत—वि० [स० रजत+अण्] १ रजत सबधी। चाँदी का। ३ रजत या चाँदी का वना हुआ।

पु०। रजत (चाँदी)।

राजतरंगिणी—स्त्री० [स० प० त०] कल्हण कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध सस्कृत ऐतिहासिक ग्रंथ जिसमे पीछे कई पडितो ने वहुत सी वातें वढाई थी। इसकी रचना का क्रम अव तक चल रहा है।

राजतरु—पु० [स० प० त०, परनिपात] १ कर्णिकार का वृक्ष। कनियारी। २ अमलतास।

राज-तरुणी—स्त्री० [स० प० त०] १ सफेद तथा वडे फूलोंवाली एक तरह की गुलाव की लता। २ वडी सेवती।

राजता—स्त्री० [स० राजन्+तल+टाप्] १ राजा होने की अवस्था, पद या भाव। राजत्व।

राज-तिलक—पु० [स० प० त०] १ राजा को लगाया जानेवाला तिलक।

२. विशेषत. राज्यारोहण के समय राजा को लगाया जानेवाला तिलक। ३ वह उत्सव जो नये राजा को राजसिंहासन पर बैठाकर तिलक लगाने के अवसर पर होता है।

राजत्व—पु० [स० राजन्+त्व] १. राजा होने की अवस्था, पद या भाव।

राज-दंड—पु० [स० प० त०] १. राजा के हाथ मे रहनेवाला वह दंड या डंडा जो उसके शासक होने का प्रतीक होता है। २. राजा या राज्य के द्वारा अपराधियों, दोषियों आदि को मिलनेवाला दंड या सजा।

राज-दंत—पु० [स० प० त०, परनिपात] दांतो की पंक्ति के बीच का वह दांत जो और दांतों से कुछ बड़ा और चौड़ा होता है। चौका।

राज-दारिका—स्त्री० =राज-पुत्री।

राज-दूत—पु० [स० प० त०] किसी राजा या राज्य का वह दूत जो दूसरे राजा के यहाँ या राज्य मे अपने राजा या राज्य का प्रतिनिधित्व करता है।

राजदृषद्—स्त्री० [स० प० त०, परनिपात] चक्की। जाँता।

राजदेशीय—वि० [स० राजन्+देशीयर] जो राजा न होने पर भी राजा के बहुत कुछ समान हो। राजा के तुल्य। राज-कल्प।

राज-द्रुम—पु० [स० प० त०, परनिपात] अमलतास।

राजद्रोह—पु० [स० प० त०] राजा या राज्य के प्रति किया जानेवाला द्रोह। वह कृत्य जिससे राजा या राज्य के नाश या बहुत बड़े अहित की संभावना हो। बगावत। जैसे—प्रजा या सेना को राजा या राज्य से लड़ने के लिए अथवा उसकी आज्ञाओं, नियमों, निश्चयों आदि के विरुद्ध काम करने के लिए उत्तेजित करना या भड़काना। (सेडिशन)

राजद्रोही (हिन्)—पु० [स० राजद्रोह+इनि] वह जिसने राजद्रोह किया हो। बागी।

राज-द्वार—पु० [स० प० त०] १ राजा के महल का द्वार। राजा की ड्योढ़ी। २ राजा का दरबार जहाँ अपराधियों का न्याय होता था। ३ कचहरी। न्यायालय।

राज-धर्म—पु० [स० प० त०] राजा का कर्तव्य या धर्म। जैसे—प्रजा का पालन, शत्रु से देश की रक्षा, देश मे शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना आदि।

राजधानी—स्त्री० [स० प० त०] १. किसी राज्य का वह नगर जिसमे स्थायी रूप से उसका राजा निवास करता हो। २. किसी राज्य का वह नगर जो उसका शासन-केंद्र हो।

राज-धान्य—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का धान। श्यामा।

राजधुस्तूरक—पु० [स० प० त०, परनिपात] १. एक प्रकार का धतूरा जिसके फूल बड़े और कई आवरण के होते है। २. कनक-धतूरा।

राज-नय—पु० [स० प० त०] राजनीति।

राजनयिक—वि०=राजनीतिक।

पु० राजनीतिज्ञ।

राजना—अ० [स० राजन=शोभित होना] १. किसी पदार्थ से किसी अन्य पदार्थ या स्थान की शोभा बढ़ना। सुशोभित होना। उदा०—मोर-मुकुट की चन्द्रिकनि यों राजत नद-नद। —विहारी। २ किसी व्यक्ति का किसी स्थान पर, विराजमान होकर उसकी शोभा बढ़ाना। उदा०—मन्दिर मँह सब राजहि रानी।—तुलसी।

राजनामा (मन्)—पु० [स० ब० स०] पटोल। परवल।

राजनायक—पु० [स०] राजमर्मज्ञ। (दे०)

राजनीति—स्त्री० [स० प० त०] [वि० राजनीतिक] १. वह नीति या पद्धति जिस के अनुसार किसी राज्य का प्रशासन किया जाता या होता है। २ गुटों, वर्गों आदि की पारस्परिक स्पर्धावाली तथा स्वार्थपूर्ण नीति। (पॉलिटिक्स) जैसे—विद्यालय की राजनीति से आचार्य महोदय दुःखी हैं।

राजनीतिक—वि० [स० राजनीति+ठक्—इक] राजनीति-संबंधी। राजनीति का। जैसे—राजनीतिक आंदोलन, राजनीतिक सभा।

राजनीतिज्ञ—वि० [स० राजनीति√ज्ञा (जानना)+क] राजनीति का ज्ञाता।

राजन्य—पुं० [स० राजन्+यत्] १ क्षत्रिय। २. राजा। ३ अग्नि। ४. खिरनी का पेड़ और उसका फल।

राजन्यबंधु—पु० [स० प० त०] क्षत्रिय।

राजपंगी—पु०=राजहस।

राजपथ*—पु०=राजपथ।

राजप—पुं० [स० राजन्√पा (रक्षा)+क, उप० स०] १ वह जिसे किसी राजा की अल्पवयस्कता, अनुपस्थिति, शारीरिक असमर्थता आदि के समय राजा या राज्य के शासन के सब काम सौंपे जायँ। शून्यपाल। २ कुछ संस्थाओं मे वह सर्व-प्रधान अधिकारी जो उसके शासन-संबंधी सब काम करता हो। (रीजेन्ट)

राज-पट्ट—पु० [स० प० त०] १. राजा का सिंहासन। २ चुंबक पत्थर।

राज-पति—पु० [स० प० त०] राजाओं का राजा। सम्राट्।

राज-पत्नी—स्त्री० [स० प० त०] १. राजा की स्त्री। रानी। २. पीतल नामक धातु।

राजपत्र—पु० [स०] राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होनेवाला वह सामयिक पत्र जिसमे राजकीय घोषणाएँ, उच्च-पदस्थ कर्मचारियों की नियुक्तियाँ, नये नियम और विधान तथा इसी प्रकार की और प्रमुख सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं। (गजट)

राजपत्रित—भू० कृ० [सं०] जिसका उल्लेख या घोषणा राजपत्र मे हो चुका हो। (गजटेड) जैसे—राजपत्रित पदाधिकारी, राजपत्रित सेवा।

राज-पथ—पु० [स० प० त०] राजमार्ग। (दे०)

राज-पद्धति—स्त्री० [स० प० त०] १ राजपथ। २. राजनीति।

राज-पलांडु—पु० [स० प० त०, परनिपात] लाल छिलकेवाला प्याज।

राज-पाट—पु० [स० राजपट्ट] १. राजा का सिंहासन और राज्य। २ राजा के अधिकार तथा कर्तव्य। ३. राज्य का शासन-प्रबंध।

राज-पाल—पुं० [स० राजन्√पाल्+अच्] वह जिससे राजा या राज्य की रक्षा हो। जैसे—सेना आदि।

†पु०=राज्यपाल।

राजपीलु—पु० [स० मध्य० स०] महापीलु (वृक्ष)।

राज-पुत्र—पु० [स० प० त०] १ राजा का पुत्र या बेटा। राजकुमार। २ प्राचीन भारत की एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और कर्ण जाति की माता से कही गई है। ३ एक प्रकार का बड़ा आम। ४. बुध ग्रह।

राजपुत्रक—पु०=राजपुत्र।

राज-पुत्रा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] राजमाता।

राजपुत्रिका—स्त्री० [स० राजपुत्री+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ राजा की

बेटी। राजकन्या। २ सफेद जूही। ३. पीतल नामक धातु। ४ एक प्रकार का पक्षी जिसे शरारि भी कहते हैं।

राज-पुत्री—स्त्री० [स० प० त०] १ राजा की बेटी या लडकी। राजकुमारी। २. रेणुका का एक नाम । ३ कडुआ कद्दू। ४ जाती या जाही नामक पौधा और उसका फूल। ५. मालती। ६ छछूंदर ।

राज-पुरुष—पु० [स० प०त०] राज्य का कोई प्रधान अधिकारी या कार्य-कर्ता। राजकर्मकारी ।

राज-पुष्प—पु० [स० प० त०, परनिपात] १ नागकेसर। २ कनक चपा।

राज-पुष्पी—स्त्री० [स० व० स०,+ङीष्] १ वन मल्लिका। २ जाती या जाही। ३ कोकण प्रदेश मे होनेवाला करुणी नामक पौधा और उसका फूल।

राज-पूजित—वि० [स० तृ० त०] १ जिसकी जीविका का प्रवध राजा या राज्य करता हो।

पु० ब्राह्मण।

राज-पूज्य—पु० [स० प० त०] सुवर्ण। सोना।

वि० राजा या राज्य जिसे आदरणीय और पूज्य समझता हो।

राजपूत—पु० [स० राजपुत्र] १ राजपूताने मे रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वश जो एक वडी और स्वतत्र जाति के रूप मे माने जाते हैं। २ राजपूताने का क्षत्रिय वीर।

राजपूताना—पु० [हिं० राजपूत+आना (प्रत्य०)] आधुनिक राजस्थान का पुराना नाम जो राजपूतो का गढ़ माना जाता है ।

राज-प्रिय—पु० [स० प० त०] १. राजपलाडु। २ कोकण का करुणी नामक पौधा और उसका फूल। ३ लाल धान। ४. लाल प्याज ।

राजप्रिया—स्त्री० [स० प० त०] १ एक प्रकार का धान जो लाल रग का होता है और जिसका चावल सफेद तथा स्वादिष्ट होता है। तिल-वासिनी। २ दे० 'राजप्रिय'।

राज-प्रेष्य—पु० [स० प० त०] राजकर्मचारी।

राज-फल—पु० [सं० मध्य० स०] १ पटोल। परवल। २ वडा और वढिया आम। ३. खिरनी ।

राज-फला—स्त्री० [स० व० स०+टाप्] जामुन।

राजवंसी—पु० [स० राज-वश] साँप।

राजवदर—पु० [स० प० त०, परनिपात] १ पैवदी या पेउँदी वैर। २. [प० त०] लाल आँवला, ३ नमक। लवण।

राज-बहा—पु० [हिं० राज+वहना] वह प्रधान या वडी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें खेतो को सीचने के लिए निकाली जाती हैं।

राज-बाड़ी—स्त्री० [स० राजवाटिका] १. राजा की वाटिका । राजवाटिका। २ राजा के रहने का महल।

राज-बाहा—पु०=राज-वहा।

राज-भंडार—पु० [स० राज-भाडार] राजा या राज्य का कोश या खजाना।

राज-भक्त—वि० [स० प० त०] [भाव० राजभक्ति] जो अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति तथा निष्ठा रखता हो ।

राज-भक्ति—स्त्री० [स० प० त०] राजा या राज्य के प्रति भक्ति अर्थात् निष्ठा और श्रद्धा।

राज-भट्टिका—स्त्री० [सं० प० त०] एक प्रकार का जलपक्षी। गोभाडीर। पकरीट ।

राज-भवन—पु० [स० प० त०] १. वह भवन जिसमे राजा अथवा राज्य का प्रधान अधिकारी निवास करता हो। २ राजमहल। प्रासाद। ३. वह सरकारी भवन जिसमे राजपाल रहते हो। ३ सरकारी अधि-कारियो के अतिथि के रूप मे ठहरने के लिए बना हुआ भवन।

राजभूय—पु० [स० राजन्√भू (सत्ता)+क्यप्] राजत्व। राज्य।

राज-भृत्य—पु० [स० प० त०] राजा का वेतनभोगी भृत्य।

राज-भोग—पु० [स० राजभोग्य] १. एक प्रकार का वढिया महीन चावल। २. एक प्रकार का वढिया आम।

राज-भोग्य—पु० [सं० तृ० त०] १ जावित्री। २ चिरौंजी। पयाल। ३. एक प्रकार का धान।

वि० जिसके भोग राजा लोग करते हो।

राज-मंडल—पु० [स० प० त०] किसी राज्य के आसपास तथा चारो ओर के राजाओ का मडल या उनका समाहार।

राज-मंडूक—पु० [सं० प० त०, परनिपात] एक प्रकार का वडा मेढक। महामडूक।

राज-मराल—पु० [स० प० त०, परनिपात] राजहस।

राज-मर्मज्ञ—पु० [स०] वह जो राज्य के शासन की सभी सूक्ष्म बातें अच्छी तरह समझता हो और राज्य-सचालन के कार्यों मे दक्ष हो। (स्टेट्समैन)

राज-महल—पु० [हिं० राज+महल] १ राजा के रहने का महल। राजप्रासाद। २. वगाल के सन्थाल परगने के पास का एक पर्वत।

राज-महिषी—स्त्री० [स० प० त०] पट्टरानी।

राजमात्र—पु० [स० राजन्+मात्रच्] नाम मात्र का राजा।

राज-मार्ग—पु० [स० प० त०] १ राजधानी अथवा किसी प्रमुख नगर की सबसे वडी और चौडी सडक। २. विशेषतः वह चौडी सडक जो राजभवन को जाती हो।

राज-माष—पु० [स० प० त०, परनिपात] काली उरद। कालामाष।

राज-माष्य—पुं० [स० राजमाष+यत्] वह खेत जिसमे माष बोया जाता हो। मलार।

राज-मुद्ग—पु० [स० प० त०, परनिपात] सुनहले रग का एक प्रकार का मूंग, जो बहुत स्वादिष्ट होता है।

राज-मुद्रा—स्त्री० [स० प० त०] १ सरकारी मोहर। २ उक्त मोहर की छाप।

राज-मुनि—पु० [स० उपमित० स०] राजर्षि।

राज-मृगांक—पु० [स० प० त०, परनिपात] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो यक्ष्मा रोग मे उपकारी माना जता है।

राज-यक्ष्मा (क्ष्मन्)—पुं० [स० प० त०, परनिपात] क्षय या यक्ष्मा नामक रोग। तपेदिक।

राज-यक्ष्मी (क्ष्मिन्)—वि० [स० राजयक्ष्मन्+इनि] जिसे राजयक्ष्मा रोग हुआ हो। क्षय रोग से पीडित (रोगी)।

राज-यान—पु० [स० प० त०] १ प्राचीन काल मे वह रथ जिसपर राजा की सवारी निकलती थी। २. राज मार्ग पर निकलनेवाली राजा की सवारी। ३ पालकी, जिसपर पहले केवल राजा लोग चलते थे।

राज-योग—पु० [स० प० त०, परनिपात] १. वह मूल योग जिकास प्रतिपादन पतजलि ने योगशास्त्र मे किया है। अष्टाग योग। २. फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट ग्रहो का योग जिसके जन्म-कुडली मे पडने से मनुष्य राजा या राजा के तुल्य होता है।

राज-योग्य—पु० [स० प० त०] चदन।

राज-रंग—पु० [स० मध्य० स०] चाँदी।

राज-रथ—पु० [स० प० त०] १ राजा की सवारी का रथ। २. बहुत बडा रथ।

राज-राज—पु० [स० प० त०] १. राजाओ का राजा। अधिराज। महाराज। २ कुबेर। ३ सम्राट्।

राज-राजेश्वर—पु० [स० राजराज-ईश्वर, प० त०] [स्त्री० राजराजेश्वरी] १. राजाओं का राजा। अधिराज। महाराज। २. वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जिसका प्रयोग दाद, कुष्ठ आदि रोगो मे होता है।

राज-राजेश्वरी—स्त्री० [स० राजराज-ईश्वरी, प० त०] १. राजराजेश्वर की पत्नी। महाराज्ञी। २. दस महाविद्याओ मे से एक का नाम। भुवनेश्वरी।

राज-रानी—स्त्री० [हिं०] १ राजा की रानी। २. बहुत ही सम्पन्न और सुखी स्त्री।

राज-रीति—पु० [स० प० त०, परनिपात] कासा।

राज-रोग—पु० [प० त०, परनिपात] ऐसा रोग जिससे पीछा छूटना असभव हो। असाध्य रोग। जैसे—यक्ष्मा, लकवा, श्वास आदि।

राजर्षि—पु० [स० राजन्-ऋषि, उपमित स०] वह ऋषि जिसका जन्म किसी राजवश अर्थात् क्षत्रिय कुल मे हुआ हो।

राजल—पु० [हिं० राजा+ल (प्रत्य०)] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

राज-लक्षण—पु० [स० प० त०] सामुद्रिक के अनुसार शरीर के वे चिह्न या लक्षण जो इस बात के सूचक होते है कि उनका धारणकर्ता राजा बनेगा।

राजलक्ष्म (क्ष्मन्)—पु० [स० प० त०] १ राजाओ के साथ चलनेवाले प्रतीक। राजचिह्न।

राज-लक्ष्मा (क्ष्मन्)—पु० [स० ब० स०] १ वह मनुष्य जिसमे सामुद्रिक के अनुसार राजाओं के लक्षण हो। राज-लक्षण से युक्त पुरुष। २. युधिष्ठिर का एक नाम।

राज-लक्ष्मी—स्त्री० [स० प० त०] १. राजाओ या राज्य का वैभव। राजश्री। २. राजा या राज्य की शोभा और सपदा।

राज-वंश—पु० [स० प० त०] राजा का कुल। राजकुल।

राजवंशी (शिन्)—वि० [स० राजवश+इनि] १. राज-वश सबधी। राज-वश का। २ जो राज-वश मे उत्पन्न हुआ हो।
पु० साँप।

राज-वश्य—वि०=राज-वशी।

राज-वर्चा (र्चस्)—पु० [स० प० त०] राजा का पद और शक्ति।

राज-वर्त्म (र्त्मन)—पु० [स० प० त०] राजमार्ग। राजपथ।

राजवला—स्त्री० [स०√राज् (दीप्ति)+अच्+टाप्, राजा-वला, कर्म० स०] प्रसारिणी लता।

राजवल्लभ—पु० [सं० प० त०] १. खिरनी। २ वड़ा और बढ़िया आम। ३ पैवन्दी और बडा बेर। ४ वैद्यक मे एक मिश्र औषध जो शूल, गुल्म, ग्रहणी, अतिसार आदि मे दी जाती है।

राज-वल्ली—स्त्री० [स० मध्य० म०] करेले की लता।

राज-वसति—स्त्री० [स० प० त०] राजा का महल। राजभवन।

राज-वाह—पु० [स० राजन्√वह् (ढोना)+अण्, उप० स०] घोडा।

राज-वाह्य—पु० [स० प० त०] हाथी।

राज-वि—पु० [स० प० त०] नीलकठ।

राज-विजय—पु० [स० प० त०] सपूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)

राज-विद्या—स्त्री० [म० प० त०] १ राज्य के शासन सबधी ज्ञातव्य बाते। २ राजनीति।

राज-विद्रोह—पु० [स० प० त०] राजा या राज्य के प्रति किया जानेवाला विद्रोह जो भीषण अपराध माना गया है। राजद्रोह। बगावत।

राजविद्रोही (हिन्)—पु० [स० राजविद्रोह+इनि] राजा या राज्य के प्रति विद्रोह करनेवाला व्यक्ति। बागी।

राज-विनोद—पु० [स० प० त०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

राजवी—पु० [स० राजवीजी] राजवशी। उदा०—नम नम नीसरियाह राण विना सहराजवी।—पृथ्वीराज।

राजवीजी (जिन्)—वि० [स० राजन्-बीज, प० त० +इनि] राजवशी।

राज-वीथी—स्त्री० [स० प० त०] १. राजमार्ग। राजपथ। चौडी सडक। २. प्राचीन भारत मे, वह गली या छोटी सडक जो आकर राजमार्ग मे मिली थी।

राज-वृक्ष—पु० [स० प० त०, परनिपात] १ आरग्वध या अमलतास का पेड़। २. चिरौंजी या पयाल का पेड़। ३ भद्रचूड नामक वृक्ष। ४ श्योनाक। सोनापाढा।

राजशण—पु० [स० प० त०] पटसन।

राजशफर—पु० [स० मध्य० स०] हिलसा (मछली)।

राज-शाक—पु० [स० प० त०, परनिपात वा मध्य० स०] वास्तुक शाक। बथुआ।

राज-शालि—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का जडहन धान जिसे राजभोग्य या राजभोग भी कहते हैं। इसका चावल बहुत महीन और सुगधित होता है।

राज-शिंबी—स्त्री० [स० प० त०, परनिपात] एक प्रकार की सेम जो चौडी और गूदेदार होती है।

राज-शुक—पु० [स० प० त०, परनिपात] एक प्रकार का लाल रग का तोता। नूरी।

राज-श्री—स्त्री० [स० प० त०] राजा का ऐश्वर्य या वैभव। राज-लक्ष्मी।

राज-संसद—पु० [स० प० त०] १. राजसभा। २ वह दरबार जिसमे राजा स्वय बैठकर अभियोगो का न्याय करता हो।

राजसंस्करण—पु० [स०] किसी पुस्तक के साधारण सस्करण से भिन्न वह सस्करण जो बहुत बढ़िया कागज पर छपा हो और जिस पर बढिया जिल्द बँधी हो। (डीलक्स एडिसन)

राजस—वि० [स० रजस्+अण्] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न अथवा युक्त। रजोगुणी। जैसे—राजस दान, राजस बुद्धि आदि।

राज-सत्ता—स्त्री० [स० प० त०] राजशक्ति। राजा या राज्य के हाथ मे होनेवाली सत्ता या शक्ति।

राज-सभा—स्त्री० [स० ष० त०] १. राजा की सभा। दरवार। २ वहुत से राजाओ की सभा या मजलिस।

राज-समाज—पु० [स० ष० त०] १ राजा का दरवार। राज-दरवार। २ राजाओ की सभा, वर्ग या समूह।

राज-सर्प—पु० [स० ष० त०, परनिपात] एक प्रकार का वडा साँप। भुजग-भोजी।

राज-सर्षप—पु० [स० ष० त०, परनिपात] राई।

राज-सायुज्य—पु० [स० ष० त०] राजत्व।

राज-सारस—पु० [स० ष० त०] मयूर। मोर।

राज-सिंहासन—पु० [स०ष०त०] वह सिंहासन जिस पर राजा दरवार मे वैठता है। राजगद्दी।

राजसिक—वि० [स० रजस्+ठञ्—इक] रजोगुण से उत्पन्न। राजस।

राजसिरी†—स्त्री०=राजश्री।

राजसी—वि० [हिं० राजा] जो राजाओ के महत्त्व, वैभव आदि के लिए उपयुक्त हो। जिसका उपयोग राजा ही करते या कर सकते हो, अथवा जो राजाओ को ही शोभा देता हो। जैसे—राजसी ठाठवाट, राजसी महल।

वि० [स०] जिसमे रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुण युक्त।

राजसूय—पु० [स० राजन्√सू(प्रसव)+क्यप्] एक प्रकार का यज्ञ जो वडे वडे राजा सम्राट्-पद के अधिकारी वनने के लिए करते थे। यह अनेक यज्ञो की समष्टि के रूप मे होता और वहुत दिनो तक चलता था। इस यज्ञ के उपरान्त राजा को दिग्विजय के लिए निकलना पडता था और दिग्विजय कर चुकने पर वह सम्राट् पद का अधिकारी होता था।

राजसूयिक—वि०[स० राजसूय+ठक्—इक] राजसूय यज्ञ के रूप मे होनेवाला अथवा उससे सवध रखनेवाला।

राजसूयी (यिन्)—पु०[स० राजसूय+इनि] राजसूय यज्ञ करनेवाला पुरोहित।

राज-स्कंध—पु०[स० ष० त०] घोडा।

राज-स्थान—पु०[स० ष०त०] गणतन्त्र भारत मे, पश्चिमोत्तर का एक राज्य जिसकी राजधानी जयपुर मे है और जिसमे पुराना राजपूताना अन्तर्भुक्त है।

राजस्व—पु० [स० मध्य० स०]१ राजा या राज्य की आय। २ वह धन जो राजा या राज्य को अधिकारिक रूप से मिलता हो। ३ वह शास्त्र जिसमे राज्य की आय के साधनो और उनकी व्यवस्था आदि का विवेचन होता है।

राज-स्वर्ण—पु० [स० ष० त०, परनिपात] राजधर्तूरक। राजधतूरा।

राज-स्वामी (मिन्)—पु०[स० ष० त०] विष्णु।

राज-हंस—पु०[स० ष० त०, परनिपात] [स्त्री० राजहसी]१ एक प्रकार का हस। २ सगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो मालव, श्रीराग और मनोहर राग के मेल से वनता है।

राज-हर्म्य—पु० [स० ष० त०] राजप्रासाद। राजमहल।

राजा (जन्)—पु०[स०√ राज्(दीप्ति)+कनिन्] [स्त्री० राज्ञी, रानी] १. वह जो किसी राज्य या भू-खड का पूरा मालिक हो और उसमे वसनेवाले लोगो पर सव प्रकार के शासन करता हो, उन्हे अपने नियत्रण मे रखता हो और दूसरे राजाओ के आक्रमणो आदि से रक्षित रखता हो। नृपति। भूप। २ अधिपति। मालिक। स्वामी। ३ वहुत वड़ा धनवान् या सपन्न व्यक्ति। ४ परमप्रिय के लिए शृगारिक सबोधन। (वाजारू)

राजाग्नि—स्त्री०[स० राजन्-अग्नि, ष० त०] राजा का कोप।

राजाज्ञा—स्त्री०[सं० राजन्-आज्ञा, ष० त०] राजा या राज्य की आज्ञा।

राजातन—पु०[स० राजन्-आ√तन्(विस्तार)+अच्] चिरौंजी का पेड़। पयार।

राजादन—पु०[स० राजन्-अदन् ष० त०]१ क्षीरिका। खिरनी। २. चिरौंजी। पयार। ३. टेसू।

राजादनी—स्त्री०[स० राजादन+ङीप्] खिरनी।

राजाद्रि—पु०[स० राजन्-अद्रि, ष० त०, परनिपात]१ एक प्राचीन पर्वत। २. एक प्रकार का अदरख। ववादा।

राजाधिकारी (रिन्)—पुं० [सं० राजन्-अधिकारिन्, ष० त०] न्यायाधीश। विचारपति।

राजाधिराज—पु०[स० राजन्-अधिराज,ष० त०] राजाओ का भी राजा। सम्राट्।

राजाधिष्ठान—पु०[स० राजन्-अधिष्ठान, ष० त०] १ राजधानी। २ वह नगर जहाँ राजा, शासक या शासकवर्ग रहता हो।

राजान्न—पु०[स० राजन्-अन्न, ष० त०]१ राजा का अन्न। २ आन्ध्र प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का शालिधान।

राजाभियोग—पु०[स० राजन्-अभियोग, ष० त०] राजा का वलपूर्वक या जवरदस्ती प्रजा से कोई काम कराना।

राजाम्र—पु० [स०राजन्-आम्र,ष०त०, परनिपात]एक प्रकार का वढिया और वडा आम (फल)।

राजाम्ल—पु०[स० राजन-अम्ल, ष० त०] अम्लवेतस। अमलवेत।

राजार्क—पु०[स० राजन-अर्क, ष० त०, परनिपात] सफेद फूलोवाला आक या मदार।

राजार्ह—पु० [स० राजन्√अर्ह् (पूजा)+अण्] १. अगरु। अगर। २. कपूर। ३ जामुन का पेड।

वि० राजाओ के योग्य।

राजार्हण—पु०[स० राजन्-अर्हण, ष० त०]१. राजा का दिया हुआ उपहार। २ राजा का दिया हुआ दान।

राजावर्त्त—पु०[स० राजन्-आ√वृत्(वरतना)+णिच्+अण्] लाजवर्द।

राजासन—पु०[स० राजन्-आसन ष० त०] राजसिंहासन।

राजासनी—स्त्री०[स०राजन्-आसनी, ष० त०] यज्ञ मे सोम का रस रखने की चौकी या पीढा।

राजाहि—पु०[स० राजन्-अहि, ष० त०, परनिपात] दोमुँहा साँप।

राजि—स्त्री० [स०√राज् (शोभा)+इन]१ पक्ति। अवली। कतार। २. रेखा। लकीर। ३ राई।

पु० ऐल के पौत्र और आयु के एक पुत्र का नाम।

राजिक—वि० [अ०] रिज्क अर्थात् रोजी देनेवाला। पालनकर्ता। परवरदिगार।

पु० ईश्वर। परमात्मा।

राजिका—स्त्री०[स०√राज्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १ केदार। क्यारी। २ राई। ३ आवली। पक्ति। ४ रेखा। लकीर।

राज्यप्रद—वि०[ष० त०] राज्य देनेवाला। जिससे राज्य मिलता हो।
राज्य-भंग—पु०[ष० त०]वह अवस्था जिसमे किसी राज्य की प्रभुसत्ता नष्ट हो जाती है।
राज्य-लक्ष्मी—स्त्री०[ष० त०]१ राज्य का वैभव और सम्पत्ति। राज्यश्री। २. विजयलक्ष्मी।
राज्यसभा—स्त्री०[स०] भारतीय शासन मे वह विधि-निर्मात्री सभा जिसमे राज्यो के चुने हुए प्रतिनिधि होते है। 'लोक-सभा' से भिन्न।
राज्यांग—पु०[स० राज्य-अग, ष० त०] राज्य के साधक अग जिन्हे प्रकृति भी कहते हैं। जैसे—आमात्य, कोष, दुर्ग, बल आदि।
राज्याभिषिक्त—भू० कृ० [स० राज्य-अभिषिक्त, स० त०] जिसका राज्याभिषेक हुआ हो।
राज्याभिषेक—पु०[स० राज्य-अभिषेक, म० त०] १ प्राचीन भारत मे राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ मे होनेवाले राजा का अभिषेक जो वेद के मत्रो द्वारा पवित्र तीर्थों के जल और ओषधियो से कराया जाता था। २ किसी नये राजा का राजसिंहासन पर बैठना या बैठाया जाना। राजगद्दी पर बैठने के कृत्य। राज्यारोहण। ३. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह।
राज्योपकरण—पु०[स० राज्य-उपकरण, ष० त०] राजोपकरण। (दे०)
राट्(ज्)—पु० [स०√राज् (दीप्ति)+क्विप्] १. राजा। २. प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि० जो किसी काम या बात मे औरो से बहुत चढा-बढा हो। (यौ० के अन्त में) जैसे—धूर्तराट्।
राटुल—वि० पु०=रातुल।
राठ†—पु०=राष्ट्र।
राठवर†—पुं० =राठौर।
राठौर—पुं० [स० राष्ट्रकूट] १. राजस्थान का एक प्रसिद्ध राजवश। जैसे—अमर सिंह राठौर। २ उक्त वश का क्षत्रिय।
राड़—स्त्री०[स० रारि] १ युद्ध। लडाई। २ दे० 'रार'।
वि० १ तुच्छ। नीच। २ निकम्मा। ३ कायर।
स्त्री०=राँड।
राड़ा—पु०[देश०]१ सरसो। २. एक तरह की घास। राढ़ी।
राढ—स्त्री०[स० रारि=लडाई]१ लडाई-झगडा। २ तकरार। हुज्जत। ३ दे० 'राड'।
पु०=राढ़ा।
राढ़ा—स्त्री०[स०]१ कान्ति। दीप्ति। २ छवि। शोभा।
पु०[स० राढ़ि] वग देश के उत्तर भाग का पुराना नाम।
स्त्री०[?] एक प्रकार की कपास।
राढ़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मोटी घास।
पु० [राढा (देश०)] एक प्रकार का आम।
राणा—पु०[स० राट्] [स्त्री० राणी] १ राजा। (नेपाल और राजस्थान) २. राजा के परिवार का कोई व्यक्ति।
राणापति—पु० [हिं० राणा+स० पति] सूर्य जिसे चित्तौर के राणा अपना मूल-पुरुष मानते है।
रातग—पु०[हिं०] गीध। गिद्ध।
रात—स्त्री०[स० रात्रि]१. समय का वह भाग जिसमे सूर्य्य का प्रकाश हम तक नही पहुँचता। सन्ध्या से प्रातःकाल तक का समय, जिसमें आकाश मे चन्द्रमा और तारे दिखाई देते है। 'दिन' का विपर्याय। निशा। रजनी। २ लाक्षणिक अर्थ मे अधकारपूर्ण तथा निराशामयी स्थिति।
रात की रानी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार का पुष्प, जिसमे रात के समय गुच्छो मे लगे हुए सुगधित फूल फूलते है। हुस्ने-हिना।
रातड़ी—स्त्री०=रात्रि (रात)।
रात-दिन—अव्य०[हिं०]१ हर समय। २ सदा। हमेशा।
रातना—अ०[स० रक्त, प्रा० रत्त+ना(हिं०प्रत्य०)]१ लाल रग से रँगा जाना। लाल हो जाना। २ रजित होना। रँगा जाना। ३ किसी पर आसक्त होना। ४. किसी काम या बात मे रत या लीन होना। ५ प्रसन्न होना।
स०१. रजित करना। रँगना। २ अनुरक्त करना। ३ प्रसन्न करना।
रात-राजा—पु०[हिं०] उल्लू नामक पक्षी।
रातरी—स्त्री०=रात्रि।
राता—वि०[स० रक्त, प्रा० रत्त] [स्त्री० राती]१. रक्तवर्ण। लाल। २ रँगा हुआ। ३ अनुरक्त। ४. प्रसन्न तथा हर्षित।
राति†—स्त्री०=रात।
रातिचर—पुं०[हिं० राति+सं० चर] निशाचर। राक्षस।
रातिब—पु० [अ०] १ एक दिन की खुराक। २ किसी पशु का एक दिन की खुराक। ३. वेतन। (क्व०)
रातुल—वि०[स० रक्तालु, प्रा० रत्तालु] सुर्ख रग का। लाल।
पु०[अ० रतल=एक तौल] वह बडा तराजू जो लट्ठा गाडकर लटकाया जाता है और जिसपर लोहा, लकडी आदि भारी चीजें तौली जाती है।
रातैल—पु० [हिं० राता+ऐल (प्रत्य०)] ज्वार की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक तरह का कीडा।
रात्रिंचर—वि० [सं० रात्रि√चर्(गति)+खच्, मुमागम] रात मे घूमनेवाला।
पु०राक्षस। निशाचर।
रात्रिंदिव—अ०[सं० द्व० स०, नि० सिद्धि] रात-दिन।
रात्रि—स्त्री०[स०√रा (देना)+क्विप्]१. निशि। रात।
पद—रात्रिंदिव।
२. हलदी। २ पुराणानुसार क्रौंच द्वीप की एक नदी।
रात्रिक—पुं०[स० रात्रि+क] एक प्रकार का बिच्छू।
रात्रिकार—पु०[स० रात्रि√कृ+ट]१ चद्रमा। २. कपूर।
रात्रिचर—पुं०[स०रात्रि√चर् (गति)+ट] राक्षस। निशाचर।
वि० रात के समय विचरने या घूमने-फिरनेवाला।
रात्रिचारी (रिन्)—पु०[स० रात्रि√चर्+णिनि]=रात्रिचर।
रात्रिज—पु०[स०रात्रि√जन् (उत्पत्ति)+ड] रात मे उत्पन्न होनेवाला।
पु० तारा, नक्षत्र आदि।
रात्रि-जागर—पु०[सं० रात्रि√जागृ (जागना)+अच्] १. रात मे होनेवाला जागरण। रत-जगा। २ कुत्ता, जो रात को जागता है।
रात्रि-नाशन—पु०[स० ष० त०] सूर्य।
रात्रि-पुष्प—पु० [स० ब० स०] रात मे खिलनेवाला पुष्प, कुँई।

रात्रि-चल—पु०[स० ब० स०] राक्षस।
रात्रिमट—पु०[स० रात्रि√अट् (गति)+अच्, मुम्-आगम]राक्षस।
रात्रि-मणि—पु०[स० ष० त०] चद्रमा।
रात्रि-राग—पु०[स० ष० त०] अधकार। अंधेरा।
रात्रि-वास (सस्)—पु०[स० ष० त०]१ रात के समय पहनने के कपडे। २. अधकार। अंधेरा।
रात्रि-विराम—पु०[स० ब० स०] तडका। प्रभात।
रात्रिवेद—पु०[स० रात्रि√विद् (ज्ञान) णिच्+अण्]मुर्गा।
रात्रिसाम(मन्)—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का साम।
रात्रि-सूक्त—पु०[स० मध्य० स०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम।
रात्रि-हास—पु०[स० ष० त०] कुमुद। कुईं।
रात्रिहिंडक—पु०[स० ष० त०] राजाओं के अन्त पुर का पहरेदार।
रात्री—स्त्री०[स० रात्रि+ङीप्]१ रात। २ हल्दी।
रात्र्यंध—वि०[सं० रात्रि-अंध, स० त०] जिसे रात को न दिखाई दे। पुं० १. रतौंधी रोग। २. कौआ, वदर आदि पशु पक्षी जिन्हे रात के समय दिखाई नही पडता।
राद—पुं० [अ०] विजली की कडक।
राद्ध—भू० कृ०[सं० √ राध (सिद्धि)+क्त] १. पका हुआ। रांधा हुआ। २. ठीक या तैयार किया हुआ। सिद्ध। ३. पूरा किया हुआ।
राद्धांत—पु०[स० राद्ध-अंत, ब० स०] सिद्धान्त। उसूल।
राद्धि—स्त्री० [स०√राध् (सिद्धि)+क्तिन्]१. सिद्धि। २ सफलता या साफल्य।
राध—पुं० [सं० राधा=विशाखा+अण्+ङीप्,=राधी+अण्]१. वैसाख मास। २. धन-संपत्ति।
स्त्री०[?]पीब। मवाद।
राधन—पु० [स०√राध +ल्युट्—अन]१. साधने की क्रिया। साधन। २ प्राप्त या हस्तगत होना। मिलना। ३ तुष्ट करना। तोषण। ४. किसी प्रकार का उपकरण या औजार। ५. कोई ऐसी चीज या बात जिससे कोई काम पूरा हो। साधन।
राधना—स०[सं० आराधना]१. आराधना या पूजा करना। २. पूरा या सिद्ध करना। ३ युक्ति से काम निकालना।
राधा—स्त्री० [स०√राध्+अच्+टाप्] १. प्रीति। प्रेम। २ वृषभानु गोप की कन्या जो पुराणानुसार श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की सबसे अधिक प्रिय सखी और प्रेयसी थी। ३. धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी जिसने कर्ण को पुत्रवत् पाला था। इसी से कर्ण का एक नाम 'राधेय' भी था। ४ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण, यगण और एक गुरु सब मिलाकर १३ अक्षर होते हैं। ५ विशाखा नक्षत्र। ६. वैशाख की पूर्णिमा। ७. बिजली। विद्युत्। ८ आँवला। ९. विष्णुक्रांता लता।
राधा-कांत—पु०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।
राधा-कुंड—पु०[स० ष० त०] गोवर्द्धन के निकट का एक प्रख्यात सरोवर जो तीर्थ माना जाता है।
राधा-तंत्र—पुं०[सं० मध्य० स०] तंत्र जिसमे मंत्रों आदि के अतिरिक्त राधा की उत्पत्ति का भी रहस्यपूर्ण वर्णन है।
राधा-वल्लभ—पु०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभी (भिन्)—पु०[स० राधावल्लभ+इनि] १. वैष्णवों का एक प्रसिद्ध सप्रदाय। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी।
राधाष्टमी—स्त्री०[सं० राधा-अष्टमी, ष० त०] भादों सुदी अष्टमी।
राधास्वामी—पु०[स०]१ एक आधुनिक मत प्रवर्त्तक आचार्य जिनका आगरे मे प्रसिद्ध केन्द्र है। २ उक्त आचार्य का चलाया हुआ संप्रदाय।
राधिका—स्त्री० [स० राधा+कन्,+टाप्, इत्व] १ वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १३ मात्राएं और ९ के विश्राम से २२ मात्राएँ होती हैं। लावनी इसी छद में होती है।
राधेय—पु०[सं० राधा+ढक्—एय] (धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी राधा द्वारा पालित) कर्ण।
राध्य—वि०[सं०√राध् (सिद्धि)+यत्] आराधना करने के योग्य। आराध्य।
रान—स्त्री०[फा०] जंघा। जाँघ।
रानतुरई—स्त्री०[हिं० रानी+तुरई] एक तरह की कडवी तरोई।
राना—पु०=राणा।
वि०[फा०] सुन्दर।
रानी—[स० राज्ञी, प्रा० राण्णी] १ राजा की स्त्री। २. स्त्रियों के नाम के साथ प्रयुक्त होनेवाला आदरसूचक पद। जैसे—देविका रानी, राधिका रानी आदि। ३ प्रेयसी या पत्नी के लिए प्रेमपूर्ण संबोधन। ४. ताश का एक पत्ता जिसमें रानी का चित्र होता है। बेगम।
वि० [फा० राना] प्रिय तथा सुन्दर। जैसे—रानी बेटी।
स्त्री०[फा०] चलाने का काम। (यौ० के अन्त मे) जैसे—जहाज-रानी।
रानी-काजर—पु०[हिं० रानी+काजल] एक प्रकार का धान।
रानी-मक्खी—स्त्री०[हिं०] मधुमक्खियों के छत्ते की वह मक्खी जिसका काम केवल अंडे देना होता है। जननी मक्खी। (क्वीन बी)
रापड़—पुं०[?] बंजर भूमि।
रापती—स्त्री०[देश०] एक छोटी नदी जो नैपाल के पहाडों से निकलकर गोरखपुर के निकट सरयू नदी मे गिरती है।
राप-रंगाल—पु० [सं० रंग√अल् (भूषण)+अच्, राप ब० स०, राप-रगाल, कर्म० स०] एक प्रकार का नृत्य।
रापी—स्त्री०=रांपी। (मोचियों का उपकरण)
राब—स्त्री०[स० द्रावक]१. आँच पर खूब औटाकर खूब गाढा किया हुआ गन्ने का रस जो गुड से पतला और शीरे से गाढा होता है। इसी को साफ करके खांड बनाई जाती है। २ वह भूमि जो उस पर का घास-फूस जलाकर जोतने-बोने के लिए तैयार की गई हो। (पूरब)
स्त्री०[देश०] नाव मे वह बडी लकडी जो उसकी पेंदी मे लबाई के बल एक सिरे से दूसरे सिरे तक होती है।
राबड़ी—स्त्री०=रबडी (बसौंधी)।
राबना—स०[?] खेत मे एक विशेष प्रकार से खाद डालना।
राबिस—स्त्री०[अ० रबिश=कूडा] ईंटो के भट्ठो आदि मे से निकले हुए कोयलो का चूरा और राख जो प्राय: इमारतो मे ईंटो की जोडाई करने मे काम आती है।
राम—पुं०[सं०√रम्(क्रीड़ा)+घञ्] १. महाराज दशरथ के पुत्र

जिनका विवाह जनक की कन्या जानकी या सीता से हुआ था और जो विष्णु के दस अवतारो मे से एक माने जाते है। रामायण की कथा इन्ही के चरित्र पर आधारित है। रामचन्द्र।

पद—राम नाम सत्य है=एक वाक्य जिसका प्रयोग कुछ हिन्दू जातियो मे मृतको को श्मशान ले जाने के समय होता है और ससार की असारता और मिथ्यात्व तथा ईश्वर की सत्यता का बोध कराया जाता है।

मुहा०—राम जाने=(क) मुझे नही मालूम। ईश्वर जाने। (ख) यदि मैं झूठ बोलता होऊँ तो ईश्वर उसका साक्षी रहे और मुझे उसके लिए दंड दे। **राम राम करके**=बहुत कठिनता से। किसी प्रकार। जैसे-तैसे। **राम राम करना**=(क) राम अर्थात् ईश्वर या भगवान का नाम जपना। (ख) किसी से भेट होने पर 'राम राम' कह करके अभिवादन करना। **(किसी का) राम राम हो जाना**=मर जाना। गत हो जाना। **(किसी से) राम राम होना**=भेंट होना। मुलाकत होना। **रामशरण होना**=(क) साधु होना। विरक्त होना। (ख) परलोकवासी होना। मरना। २. कृष्ण के बडे भाई बलराम या बलदेव। ३ परशुराम। ४ उक्त तीनो के आधार पर तीन की सख्या का वाचक शब्द। ५. ईश्वर। परमात्मा। ६. वरुण। ७ एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसमे ९ और ८ के विराम से प्रत्येक चरण मे १७ मात्राएँ होती हैं और अत मे यगण होता है। ८ रति-क्रीडा। ९ घोडा। १० अशोक वृक्ष। ११ बथुआ नाम का साग। १२ तेजपत्ता।

†वि०[स० रम्य] अभिराम। सुन्दर। उदा०—देखत अनूप सेनापति राम रूप छवि।—सेनापति।

वि०[फा०]१ ठीक। दुरुस्त। २ अनुकूल। ३ राजी। सहमत। जैसे—उसने बातो ही बातो मे उसे राम कर लिया। (पश्चिम)

राम-अंजीर—स्त्री० [हिं० राम+फा० अजीर] पाकर (वृक्ष)। पकरिया।

राम-कजरा—पु०[देश०] अगहन मे पककर तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

राम-कपास—स्त्री०[हिं० राम+कपास] देवकपास। नरमा।

राम-कली—स्त्री०[स०ब०स०] एक रागिनी जो भैरव राग की स्त्री मानी जाती है।

राम-कहानी—स्त्री०[हिं०]१ अपने जीवन तथा उसके किसी प्रसग का दूसरो को सुनाया जानेवाला वृत्तात। २ किसी पर बीती हुई घटनाओ का लबा या विस्तृत वर्णन।

क्रि० प्र०—कहना।—सुनाना।

राम-काँटा—पु० [हिं० राम+काँटा] एक प्रकार का बबूल।

राम-कपूर—पु०[हिं०] गधतृण।

राम-कुंतली—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

राम-कुसुमावलि—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

राम-केला—पु० [हिं० राम+केला]१ एक प्रकार का बढिया केला। २ एक प्रकार का बढिया पूर्वी आम।

राम-क्रिय—पु० सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

राम-क्षेत्र—पु०[स० ष० त०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन तीर्थ। (पुराण)

राम गंगरा—पु०[हिं० राम+गाँगरा]१ एक प्रकार की पहाडी चिडिया जिसका सिर, गरदन और छाती चमकीले काले रग की होती है। यह जाड़े मे भी मैदानो मे उतर आती है।

राम-गंगा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] उत्तर प्रदेश की एक नदी जो फर्रुखाबाद के पास गगा मे मिलती है।

राम-गिरि—पुं०[सं० मध्य० स०]१. मेघदूत में वर्णित एक पर्वत-शिखर जो आधुनिक नागपुर मे स्थित माना जाता है। राम-टेक। २. सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

राम-गिरी—स्त्री०=रामकली (रागिनी)।

पु०=रामगिरि।

राम-गीती—पु०[स०] एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३६ मात्राएँ होती हैं।

रामचंद्र—पु०[स० उपमित स०] अयोध्यापति राजा दशरथ के पुत्र जिन्होने रावण का वध किया था।

विशेष—हिन्दुओ मे ये विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

राम-चकरा—पु०[स०राम+चक्र]१. उरद की पीठी को तलकर तैयार किया जानेवाला बडा। २ बडी और मोटी देहाती रोटी। ३ बाटी। लिट्टी।

राम-चिड़िया—स्त्री०[देश०] मछरगा।

राम-जननी—स्त्री० [स० ष० त०] १ कौशल्या। २ रेणुका। ३ रोहिणी।

राम-जना—पु०[हिं० राम+जना=उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] १. वह जिसका पिता ईश्वर हो, अर्थात् जिसके पिता का पता न हो। वर्णसंकर। दोगला। २ एक सकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं।

राम-जनी—स्त्री०[हिं० राम-जना]१ ऐसी स्त्री जिसके पिता का पता न हो। २ रामजना जाति की स्त्री। ३ रडी। वेश्या।

राम-जमनी—पु०=रामजमानी।

राम-जमानी—पु०[स० राम+यवनी (अजवायन)] एक प्रकार का बहुत बारीक चावल।

राम-जामुन—पु०[हिं०राम+जामुन] मझोले आकार का एक प्रकार का जामुन (वृक्ष)।

राम-जुहारी—स्त्री०[हिं०]१. एक प्रकार का अभिवादन जिसका अर्थ है—राम राम या जयराम। २ दे० 'राम-दुहारी'।

राम-जौ—पु०[स० राम+हिं० जौ] एक प्रकार की जई जिसके दाने जौ के दानो के आकार के होते है।

राम-झोल—स्त्री०[स० राम+हिं० झूलना] पाजेब। पायल।

राम-टेक—पुं०[हिं० राम+टेक=टेकडी(पहाडी)] नागपुर जिले मे स्थित एक पर्वत शिखर। रामगिरि।

रामटोड़ी—स्त्री०[सं० ष० त०] एक सकर रागिनी जिसमे गंधार, कोमल और शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। (संगीत)

रामठ—पु०[स० √रम्+अठ्, वृद्धि]१ वृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो पश्चिम मे है। २ उक्त देश का निवासी। ३ हीग। ४ अखरोट का पेड। ५ मैनफल। ६. चिचडा।

रामठी—स्त्री०[स० रामठ+ङीप्] हीग।

रामणीयक—पु०[स० रमणीय+वुञ्—अक] रमणीयत्व। मनोहरता। वि० रमणीय।

राम-तरुणी—स्त्री० [स० ष० त०] १. रामचन्द्र की पत्नी, सीता। २ सेवती (सफेद गुलाब)।

राम-तरोई—स्त्री० [हिं० राम+तरोई या तुरई] भिंडी का पौधा और उसकी फली।

रामता—स्त्री० [स० राम+तल्+टाप्] राम होने की अवस्था, गुण या भाव। रामत्व। राम-पन।

राम-तापनीय—स्त्री० [स० मध्य० स० वा ष०त०] एक आधुनिक साम्प्रदायिक उपनिषद्।

राम-तारक—पु० [स० ष० त०] 'रा रामाय नम' नामक मत्र जो रामोपासक जपते हैं।

रामति—स्त्री० [हिं० रमना=घूमना फिरना] भिक्षा के लिए लगाई जानेवाली फेरी।

राम-तिल—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का तिल।

राम-तीर्थ—पु० [स० मध्य०स०] रामगिरि पर्वत-शिखर जो एक तीर्थ है।

राम-तुलसी—स्त्री० [स० मध्य० स०]=रामा-तुलसी (सफेद डठलोवाली तुलसी)।

राम-तेजपात—पु० [हिं० राम+तेजपात] तेजपात की जाति का एक प्रकार का वृक्ष और उसका पत्ता।

रामत्व—पु० [स० राम+त्व] राम होने की अवस्था, धर्म या भाव। रामता। राम-पन।

राम-दल—पु० [स० ष० त०] १ बदरो की वह सेना जिसकी सहायता से रामचन्द्र ने लका पर चढाई की थी। २ कोई बहुत बडा और प्रबल समूह या सेना। ३ दहशरे के अवसर पर रामचन्द्र की स्मृति मे निकलनेवाला जुलूस।

राम-दाना—पु० [स० राम+हिं०दाना] १ मरसे या चौराई की जाति का एक पौधा जिसमे सफेद रग के बहुत छोटे छोटे दाने या बीज लगते है। २ उक्त पौधो के दाने जो कई रूपो मे खाने के काम आते हैं। ३ एक प्रकार का धान।

राम-दास—पु० [स०प०त०] १ हनुमान्। २ शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास। ३ एक प्रकार का धान।

राम-दूत—पु० [स० ष० त०] हनुमान्।

राम-दूती—स्त्री० [सं० ष० त०] १. एकप्रकार की तुलसी। २ नागदौन। ३ नागपुष्पी।

रामदेव—पु० [सं० कर्म० स०] १ रामचन्द्र। २. राजपूताने मे प्रचलित एक सम्प्रदाय।

राम-धाम(न्)—पु० [स० ष० त०] साकेत लोक, जहाँ भगवान् नित्य राम रूप मे विद्यमान माने जाते है।

राम-ननुआ—पुं० [हिं० राम+ननुआ] १. धीया। २ कद्दू।

राम-नवमी—स्त्री० [स० मध्य० स०] भगवान रामचन्द्र का जन्म-दिवस चैत्र शुक्ल नवमी।

रामना—अ० [स० रमण] १ रमण करना। २ घूमना-फिरना।

रामनामी—स्त्री० [हिं० राम+नाम+ई (प्रत्य०)] १ गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। २ वह वस्त्र जिसपर सब जगह रामनाम छपा हुआ हो।

रामनौमी—स्त्री०=रामनवमी।

राम-पात—पु० [हिं० राम+पत्र] नील की जाति की एक प्रकार की झाडी जिसकी पत्तियो से रग तैयार किया जाता है।

रामपुर—पु० [स० ष० त०] १. स्वर्ग। वैकुठ। २ अयोध्या नगरी। साकेत।

राम-फल—पु० [हिं० राम+फल] शरीफा। सीताफल।

राम-बँटाई—स्त्री० [हिं० राम+बाँटना] ऐसा बँटवारा या विभाजन जिसमे आधा एक व्यक्ति और आधा दूसरे व्यक्त को मिले। आधे-आध की बँटाई।

राम-बबूल—पु० [हिं० राम+बबूल] एक प्रकार का बबूल।

राम-बाँस—पु० [हिं०] १. एक प्रकार का बाँस। २ केतकी की जाति का एक पौधा।

राम-बान—पु० [हिं० राम+स० बाण] १. एक प्रकार का नरसल। रामशर। २ दे० 'रामबाण'।

राम-बिलास—पु० [हिं०राम+स० विलास] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

राम-भक्त—वि० [स० ष० त०] रामचन्द्र का उपासक। पु० हनुमान्।

राम-भद्र—पु० [स० कर्म० स०] रामचन्द्र।

राम-भोग—पु० [हिं० राम+भोग] १. एक प्रकार का चावल। २ एक प्रकार का आम।

राम-मंत्र—पु० [स० ष० त०] 'रा रामाय नम.' मत्र जिसे रामभक्त भजते हैं।

राम-रक्षा—पु० [सं० मध्य० स०] राम जी का एक स्तोत्र जो सब प्रकार की आपत्तियो से रक्षा करनेवाला माना जाता है।

रामरज (स्)—स्त्री० [स० मध्य० स०] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं, तथा जो चूने आदि मे मिलाकर दीवारें, छतें आदि पोतने के काम भी आती है।

राम-रतन—पु० [हिं० राम+स० रत्न] चद्रमा। (डिं०)

राम-रस—पु० [हिं० राम+रस] १ नमक। २. पीने के लिए पीसी और घोली हुई भाँग। (दक्षिण भारत)

राम-रहारी—स्त्री० [हिं० राम राम] १. आपस मे मिलने पर होनेवाला अभिवादन। पारस्परिक व्यवहार की वह स्थिति जिसमे किसी से बातचीत होती हो। जैसे—अब तो उन लोगो मे राम-रहारी भी नही रह गई है।

राम-राज्य—पु० [स० ष० त०] १. भगवान् राम का राज्य या शासन। २ उक्त के आधार पर ऐसा राज्य या शासन जिसमे प्रजा सब प्रकार से निश्चित, सपन्न तथा सुखी हो। ३ मध्य युग मे मैसूर राज्य का एक नाम।

राम-राम—अव्य० [हिं०र ाम] १. भेंट के समय अभिवादन के लिए प्रयुक्त पद। २. आश्चर्य, दु ख आदि का सूचक अव्यय। †स्त्री० भेंट। विशेषत आकस्मिक तथा अल्पकालिक भेंट। जैसे—कई दिन हुए उनसे राम राम हुई थी।

रामल—वि० [स० रमल+अण्] रमल सम्बन्धी। रमल का।

राम-लवण—पु० [स० मध्य० स०] साँभर नमक।

राम-लीला—स्त्री० [स० ष० त०] १. राम की क्रीडा। २ रामायण मे

वर्णित घटनाओं के आधार पर होनेवाला अभिनय या नाटक। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २४ मात्राएं होती है और अंत मे 'जगण' का होना आवश्यक होता है।

राम-वल्लभी(भिन्)—पु० [स० रामवल्लभ] एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रामवाण—पु०[स०ष० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, गधक, सीगिया आदि के योग से बनता है और जो अजीर्ण रोग का नाशक कहा जाता है।
वि०१ जो अत्यन्त गुणकारी हो। २ तुरन्त प्रभाव दिखानेवाला। ३ न चूकनेवाला।

रामवीणा—स्त्री०[स० ष० त०] एक प्रकार की वीणा।

राम-शर—पु०[स० ष० त०] ऊख के आकार-प्रकार का एक प्रकार का नरसल या सरकडा जो ऊख के खेतो मे आप से आप ही उगता है।

राम-शिला—स्त्री० [स० ष० त०] गया जिले मे स्थित एक पर्वत-शिखर जो एक तीर्थ है।

राम-श्री—पु०[स० ष०त०] एक प्रकार का राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

राम-संडा—पु०[स०रामशर] एक प्रकार की घास जिससे रस्सी या वाध बनाते है। कांस।

राम-सखा—पु०[स० ष० त०] सुग्रीव।

राम-सनेही—पु० [हिं० राम+स्नेही] १ राजस्थान का एक वैष्णव सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
वि० राम से स्नेह या प्रीति रखनेवाला।

रामसर(स्)—पु० [स० मध्य० स०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।
†पु०=रामशर।

राम-सिरी—स्त्री०[स० राम-श्री]१ एक प्रकार की चिडिया। २ एक प्रकार की रागिनी।

राम-सीता—पु०[हिं० राम+सीता]शरीफा। सीताफल।

राम-सुंदर—स्त्री०[हिं० राम+सुन्दर] एक प्रकार की नाव।

राम-सेतु—पु०[स० मध्य० स०] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र मे पडी हुई चट्टानो का समूह जिसके विषय मे प्रसिद्ध हे कि यह वही पुल है जिसे राम ने लका पर चढाई करते समय वॅधवाया था।

रामा—स्त्री० [स०√रम् (क्रीडा)+णिच्+ण,+टाप्] १ सुन्दर स्त्री। २ गाने-नाचने मे प्रवीण स्त्री। ३ सीता। ४ लक्ष्मी। ५ रुक्मिणी। ६ राधा। ७ शीतला देवी। ८. नदी। ९ कार्तिक कृष्ण एकादशी की संज्ञा। १०. इद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना हुआ एक प्रकार का उपजाति वृत्त जिसके प्रथम दो चरण इन्द्रवज्रा के होते हैं। ११ आर्या छन्द का १७ वाँ भेद जिसमे ११ गुरु और ३५ लघु वर्ण होते है। १२ आठ अक्षरो का एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और दो लघु वर्ण होते है। १३ हीग। १४ ईंगुर। शिंगरफ। १५ घीकुंआर। १६. सफेद भटकटैया। १७ अशोक वृक्ष। १८ तमाल। १९ गोरोचन। २० सुगधवाला। २१. त्रायमाण लता। २२. गेरू।

राम-तुलसी—स्त्री० [स०]सफेद डठलोवाली एक प्रकार की तुलसी (पौधा)।

रामानंद—पु० [स०] रामावत नामक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य। (१३५६-१४६७ वि०)

रामानंदी—वि०[हिं० रामानंद+ई (प्रत्य०)]१ रामानन्द-सबधी। २ रामानन्द के सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखनेवाला।
पु० रामानन्द द्वारा प्रवर्तित रामावत सम्प्रदाय का अनुयायी।

रामानुज—पु०[स० राम-अनुज, ष० त०]१. राम का छोटा भाई। २. लक्ष्मण। ३ एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिन्होंने श्री वैष्णव सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था।

रामायण—पु०[स० राम-अयन, ष० त०]१ राम का जीवन-मार्ग अर्थात् चरित्र। २ वह ग्रन्थ जिसमे राम के चरित्र का वर्णन हो।

रामायणी—वि०[स०] रामायण सबधी। रामायण का।
पु०१ वह जो रामायण का अच्छा ज्ञाता या पडित हो। २ वह जो लोगो को रामायण की कथा सुनाता हो।

रामायन†—पु०=रामायण।

रामायुध—पु०[स० राम-आयुध, ष० त०] धनुष।

रामावत—पु० [स० रामावित] रामानन्द द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिज—वि० [अ०] रम्ज अर्थात् इशारा करनेवाला।

रामिल—पु०[स०]१ रमण। २ कामदेव। ३ स्त्री का पति। स्वामी। ४ प्रेमपात्र। ५ एक कवि।

रामी—स्त्री०[स० रामा] कांस नामक घास।

रामेश्वर—पु०[स० राम-ईश्वर, ष० त०]१ दक्षिण भारत मे समुद्र के तट पर एक शिवलिंग जो भगवान रामचन्द्र द्वारा स्थापित किया हुआ माना जाता है। २ पुरी या बस्ती जिसमे उक्त शिवलिंग स्थापित है।

रामोपनिषद्—स्त्री० [स० राम-उपनिषत्, मध्य० स०] अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् का नाम।

राय—पु०[स० राजा, प्रा० राया]१ राजा। २ छोटा राजा। सरदार या सामन्त। ३ मध्ययुग मे एक प्रकार की सम्मान-जनक उपाधि।
पद—**रायबहादुर, रायसाहब।**
४ बदीजनो या भाटो की उपाधि। ५. गन्धर्व जाति के लोगो की उपाधि। ६ दे० 'रायबेल'।
स्त्री०[फा०] सम्मति। सलाह।

राय-करौंदा—पु०[हिं० राय=बडा+करौदा] एक प्रकार का बडा करौदा (फल और झाड)।

रायगाँ—वि० [फा० राएगाँ] १ रास्ते मे पडा या फेंका हुआ अर्थात् निष्फल या व्यर्थ। २ नष्ट। बरबाद।

रायज—वि०[फा० राइज] जो चल रहा हो, अर्थात जिसका प्रचल या प्रचार हो। प्रचलित।

रायता—पु०[स० राज्यक्त]दही या मठे मे बुदिया, साग आदि डालकर तथा उसमे नमक, मिर्च, जीरा आदि मिलाकर बनाया जानेवाला व्यजन।

रायनी—स्त्री०=राजकुमारी। (डिं०)

राय-बहादुर—पु० [हिं० राय+फा० बहादुर] एक प्रकार की उपाधि जो ब्रिटिश-शासन मे भारतीय बड़े आदमियो को मिलती थी।

राय-वेल—स्त्री० [हिं० राय+वेल] एक प्रकार की लता जिसमें सुन्दर और सुगन्धित दोहरे फूल लगते हैं।

राय-भोग—पु० [स० राज+भोग] एक प्रकार का धान और उसका चावल। राज-भोग।

रायमुनी—स्त्री० [हिं० राय+मुनिया] लाल (पक्षी) की मादा। सदिया।

राय-रायान—पु० [हिं० राय+फा० आन (प्रत्य०)] राजाओं के राजा। राजाधिराज। (मुगलशासन-काल की एक उपाधि)

राय-रासि*—स्त्री० [स० रायराशि] राजा का कोष। शाही खजाना।

रायल—वि० [अ०] १ राजन्य। २ राजकीय। ३. राजकीय ठाठ-वाटवाला।

पु० छापे की कलो तथा कागज की एक नाप जो २० इच चौडी और २६ इच लबी होती है।

रायसा—पु० [स० रहस्य] वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवन-चरित्र वर्णित हो। रासा। रासो। जैसे—पृथ्वीराज रायसा।

रायसाहव—पु० [राय+फा० साहव] एक प्रकार की पदवी जो ब्रिटिश-शासन मे भारतीय वड़े आदमियों को मिलती और 'रायवहादुर' की उपाधि से निम्नकोटि की होती थी।

रायहंस—पु०=राजहंस।

रायहर—पु० [स० राज्यगृह ; प्रा० राइहर] राजा का महल। राजगृह। उदा०—हरम करी अनि रायहर।—प्रिथीराज।

रार—स्त्री० [स० रारि, प्रा० राडि=लडाई] १. ऐसा झगडा जिसमे वहुत कहा-सुनी हो और जो कुछ देर तक चलता रहे। तकरार। हुज्जत। क्रि० प्र०—करना।—ठानना।—मचाना।

२. ऐसी ध्वनि जिसमे रह-रहकर (रकार) र का सा शब्द होता है। जैसे—पेडो की मर्मर मे होनेवाली रार या पेटो के गिरने मे अरर या रार का स्वर निकले। उदा०—कलरव करते किलकार रार। ये मौन मूक तृण तरु दल पर।—पन्त।

†स्त्री०=राल।

राल—स्त्री० [स०] १. एक प्रकार का वहुत वडा सदावहार पेड़ जो दक्षिण भारत के जगलो मे होता है। २ उक्त वृक्ष का सुगंधित निर्यास जो प्राय. सुगन्ध के लिए जलाया जाता और औषधो, मसालो आदि के काम आता है। चूना।

विशेष—धूप नामक सुगन्धित द्रव्य मे प्राय. इसी की प्रधानता रहती है।

स्त्री० [स० लाला] १ मुंह से निकलनेवाला पतला रस। लार। (देखें) २ चौपायो का एक रोग जिसमे उन्हे खांसी आती है और उनके मुंह से पतला लसदार पानी गिरता है।

पु० [?] एक प्रकार का देशी कवल।

राली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वाजरा जिसके दाने वहुत छोटे होते है।

राव—पु० [स० राजा, प्रा० राय] १ राजा। २ राजा का दरवारी या सरदार। ३. वदीजन। भाट। ४ अमीर। रईस। ५. कच्छ के राजाओं की पदवी। ६ धीमा कोलाहल। हलका शोर। (नोएज)

पु०=रव (शब्द)।

पु० [देश०] छोटे आकार का एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ ललाई लिये चिकनी और मजबूत होती है। इसकी लकड़ी की प्राय. छड़ियां वनाई जाती है।

राव-चाव—पुं० [हिं० राव=राजा+चाव] १ नृत्य, गीत आदि का उत्सव। राग-रग। २. दुलार। लाड़। ३ अनुराग। प्रेम। ४ प्रेमपूर्ण व्यवहार।

रावट—पु० [स० राजावर्त्त] लाजवर्द नामक रत्न। उदा०—कनै पहार होत है रावट को राखै गहि पाई।—जायसी।

†पु०=रावल (राजमहल)।

रावटी—स्त्री० [हिं० रावट] १ कपडे का वना हुआ एक प्रकार का छोटा डेरा। छोलदारी। २. कपड़े का वना हुआ कोई छोटा घर। ३ वारहदरी।

रावण—वि० [स० √रु (शब्द)+णिच्+ल्यु—अन] जो दूसरों को रुलाता हो। रुलानेवाला।

पु० लका का एक राजा जिसका वध श्री राम ने किया था।

रावण-गंगा—स्त्री० [स० मध्य० स०] सिंहल द्वीप की एक नदी। (पुराण)

रावणारि—पु० [सं० रावण-अरि, ष० त०] रावण को मारनेवाले, रामचन्द्र।

रावणि—पु० [स० रावण+इञ्] १. रावण का पुत्र। २ मेघनाद।

रावत—पु० [स० राजपुत्र; प्रा० राय+उत] १. छोटा राजा। २ राजवंश का कोई व्यक्ति। ३. क्षत्रिय। ४ राजपूत। ५. सरदार। सामन्त। ५ शूरवीर। योद्धा। ७ सेनापति।

रावन—वि० [स० रमणीय] रम्य। रमणीय। उदा०—देखा सव रावन अव राऊ।—जायसी।

†पु०=रावण।

रावनगढ़*—पु० [हिं० रावण+गढ] लंका।

रावना*—स० [स० रावण=रुलाना] दूसरे को रोने मे प्रवृत्त करना। रुलाना।

†पुं० रावण।

राववहादुर—पुं० [हिं० राव+फा० वहादुर] ब्रिटिश-शासन मे दक्षिण भारत के वडे आदमियों को मिलनेवाली एक उपाधि।

रावर*—पु० [सं० राजपुर] रनिवास।

सर्व०, वि० [हिं० राउ+र (विभ०)] [स्त्री० रावरी] आपका। भवदीय।

राव-रसा—पु० [देश०] हिमालय में होनेवाला एक तरह का पेड़। वुरुल।

रावरा—सर्व०, वि०=रावर।

रावल—पुं० [सं० राजपुर, हिं० राउर] अन्तःपुर।

पु० [पा० राजुल] [स्त्री० रावली] १. राजा। २ राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। ३. कुछ विशिष्ट पदो, महन्तो तथा योगियो की उपाधि। ४ एक आदरपूर्ण सवोधन। ५. श्री वदरीनारायण के मुख्य पडे की उपाधि।

रावलो—सर्व०=रावर।

राव-साहव—पु० [हिं० राव+फा० साहव] ब्रिटिश-शासन मे दक्षिण भारत के वडे आदमियों को मिलने-वाली एक प्रकार की उपाधि।

रावी—स्त्री० [स० ऐरावती] पश्चिमी पजाव (पाकिस्तान) की एक प्रसिद्ध नदी जो मुलतान के पास चनाव नदी मे जा मिलती है।

राश—पु०[अ० मि० स० राशि] राशि। ढेर।

राशन—पुं०[अ० रैशन]१ खाने-पीने की वे चीजे जो अभी पकाई न गई हो, परन्तु उपयोग या व्यवहार के लिए एकत्र करके रखी या लोगो को दी गई हो। रसद। २ आज-कल वह व्यवस्था जिसके अनुसार उपयोग या व्यवहार की कुछ विशिष्ट वस्तुएँ लोगो को उनकी आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से और नियत मात्रा मे बाँटी या दी जाती हो। ३ उक्त का वह अश जो किसी विशिष्ट व्यक्ति को मिला या मिलता हो।

राशि—स्त्री० [स०√ राश् (शब्द)+इन्]१ किसी चीज के कणो, खण्डो, विंदुओ आदि का पुज या समूह। जैसे—जलराशि, रत्नराशि। २ गणित मे कोई ऐसी सख्या जिसके सवध मे जोड, गुणा, भाग आदि क्रियाएँ की जाती हो। ३ क्राति-वृत्त मे पडनेवाले विशिष्ट तारा समूह जिनकी सख्या वारह है और जिनके नाम इस प्रकार हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुभ और मीन।

विशेष—क्रान्ति-वृत्त अर्थात् पृथ्वी के परिभ्रमण-मार्ग के दोनो ओर प्राय ८० अश की दूरी तक लगभग सवा दो सौ बहुत वडे तारे है जो बहुत दूर होने के कारण हमे बहुत छोटे दिखाई देते है। हमे अपनी पृथ्वी तो चलती हुई दिखाई नही देती, और ऐसा जान पडता है कि चन्द्रमा और सूर्य ही इस क्रांति-वृत्त पर चल रहे है। चद्रमा के परिभ्रमण के विचार से उक्त सव तारे २७ तारक-पुजो मे विभक्त किए गए है, जिन्हे नक्षत्र कहते है। परन्तु सूर्य के परिभ्रमण के विचार से इन्ही तारो के १२ विभाग किए गए है, जिन्हे राशि कहते हैं। प्रत्येक राशि मे प्राय दो या इससे कुछ अधिक नक्षत्र पडते हैं, और उनके योग से कुछ विशिष्ट प्रकार की कल्पित आकृतियो वाली ये राशियाँ मानी गई है, और उन्ही आकृतियो के विचार से उन राशियो का नामकरण हुआ है। जैसे—तुला राशि की आकृति तराजू की तरह, मकर राशि की आकृति मगर की तरह, वृश्चिक राशि की आकृति विच्छू की तरह, सिंह राशि की आकृति शेर की तरह आदि आदि। जब सूर्य एक राशि को पार करके दूसरी राशि मे प्रवेश करता है, तब उस सधि-काल को सक्राति कहते है। विशेष दे० 'नक्षत्र'।

मुहा०—(किसी से किसी की) **राशि वैठाना या मिलाना**=(क) सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से अनुकूलता होना। मेल वैठना। (ख) फलित ज्योतिष की दृष्टि से ऐसी स्थिति होना जिससे दोनो मे वैवाहिक सवध होने पर अच्छी तरह जीवन-यापन या निर्वाह हो सके।

४. वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति किसी की धन-सपत्ति का उत्तराधिकारी होकर मालिक बनता है। रास।

विशेष—इस अर्थ से सवध रखनेवाले मुहा० के लिए दे० 'रास' के अतर्गत मुहा०।

राशि-चक्र—पु०[स० प० त०] आकाशस्थ बारह राशियो का वह मडल जो सूर्य के परिभ्रमण के विचार से क्रातिवृत्त मे पडता है। (जोडिएक)

राशि-नाम (मन्)—पु०[स० मध्य० स०] व्यक्ति के पुकारने के नाम से भिन्न वह नाम जो उसके जन्म के समय होनेवाली राशि के विचार से रखा जाता है।

विशेष—ऐसे नामो का आरम्भ विभिन्न राशियो के विचार से विभिन्न वर्णो से होता है।

४—६४

राशिप—पु०[स० राशि√पा (रक्षण)+क] किसी राशि का स्वामी या अधिपति देवता। (फलित ज्योतिष)

राशि-भाग—पु०[स० ष० त०] राशि-चक्र की किसी राशि का भाग या अश। भग्नाश। (ज्योतिष)

राशि-भोग—पु०[स० स० त०]१. किसी ग्रह के किसी राशि मे स्थित होने का भाव। २ उतना समय जितना किसी ग्रह को एक राशि मे स्थित रहना पडता है।

राशी—वि०[अ०] रिश्वत खानेवाला। घूसखोर।

†स्त्री०=राशि।

राष्ट—पु०[स० राष्ट्र] फारसी सगीत मे १२ मुकामो मे से एक।

राष्ट्र—पु०[स० √राज् (दीप्ति)+ष्ट्रन्]१ राज्य। देश। २ किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र मे रहनेवाले लोग जिनकी एक भाषा, एक से रीति-रिवाज तथा एक-सी विचार-धारा होती है। (नेशन) ३ किसी एक शासन मे रहनेवाले सव लोगो का समूह। ४ सारे देश मे एक साथ खडा होनेवाला कोई उपद्रव या बाधा। ईति। ५ पुराणानुसार पुरूरवा के वशज काशी के पुत्र का नाम।

वि० जो सव लोगो के सामने या जानकारी मे आ गया हो। सर्वविदित। जैसे—उनके कानो तक पहुँचते ही यह बात राष्ट्र हो जायगी। (सब को मालूम हो जायगा।)

राष्ट्रक—पु०[स० राष्ट्र+कन्]१ राज्य। २ देश।

वि० राष्ट्र सम्बन्धी। राष्ट्र का।

राष्ट्र-कर्षण—पु०[स० ष० त०] राजा या शासक का प्रजा पर अत्याचार करना। राष्ट्र या जनता को कष्ट देना।

राष्ट्र-कवि—पु० [स० ष० त०] वह कवि जिसकी कविताएँ राष्ट्र की आकाक्षाओ, आदर्शो, आदि की प्रतीक मानी जाती हो, और इसीलिए जो सारे राष्ट्र मे बहुत ही आदर की तथा पूज्य दृष्टि से देखा जाता हो। जैसे—राष्ट्र-कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त।

राष्ट्र-कुल—पु०=राष्ट्र-मडल।

राष्ट्र-कूट—पु०[स०]१. एक क्षत्रिय राजवश जो आज-कल राठौर नाम से प्रसिद्ध है। २ दे० 'राठौर'।

राष्ट्र-गोप—पु०[स० राष्ट्र√गुप् (रक्षा)+अप्] १. राजा। २ राजाओ के प्रतिनिधि के रूप मे काम करनेवाला कोई बहुत बडा शासक।

वि० राज्य की रक्षा करनेवाला।

राष्ट्र-तत्र—पु०[स० ष० त०] राष्ट्र की शासन-पद्धति।

राष्ट्रपति—पु०[स० ष० त०]१. किसी राष्ट्र का सर्वप्रधान शासनिक अधिकारी। २ प्रजातन्त्र शासन-पद्धति मे मतदाताओ द्वारा निर्वाचित वह व्यक्ति जिसके हाथ मे कुछ नियत काल के लिए राष्ट्र की प्रभुसत्ता विधित निहित होती है। (प्रेजीडेंट, उक्त दोनो अर्थो मे)

राष्ट्रपाल—पु० [स० राष्ट्र√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्, उप० स०] १ राजा। २ मथुरा के राजा कस का एक भाई।

राष्ट्र-भाषा—स्त्री०[स० ष० त०] किसी राष्ट्र की वह भाषा जिसका प्रयोग उसके निवासी सार्वजनिक पारस्परिक कामो मे करते हैं।

राष्ट्र-भृत—पु०[स० राष्ट्र√भृ (पोषण)+क्विप्, तुक्-आगम, उप० स०] १. राजा। २ शासक। ३ भरत का एक पुत्र। ४ प्रजा।

राष्ट्र-भृत्य—पु०[सं० ष० त०] १. वह जो राज्य की रक्षा या शासन करता हो। २ प्रजा।

राष्ट्र-भेद—पु०[स० ष० त०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे ऐसा उपाय या कार्य जिसके द्वारा किसी शत्रु राजा के राज्य मे उपद्रव, मत-भेद या विद्रोह खडा किया जाता था।

राष्ट्र-मंडल—पु०[स० ष० त०] समान हित और समान भाव से स्वेच्छा-पूर्वक आवद्ध होनेवाले स्वतन्त्र राष्ट्रों का मण्डल या समूह। (कामनवेल्थ) जैसे—ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल जिसमे आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, भारत आदि अनेक स्वतन्त्र राष्ट्र सदस्य रूप से सम्मिलित हैं।

राष्ट्र-वाद—पु०[सं० ष० त०] [वि० राष्ट्रवादी] यह मत या सिद्धात कि राष्ट्र के सभी निवासियो मे राष्ट्रीयता की भावना दृढतापूर्वक वनी रहनी चाहिए, राष्ट्रीय परम्पराओं के गौरव का ध्यान रखते हुए उनका पालन होना चाहिए। यह धारणा कि हमे मात्र अपने राष्ट्र की उन्नति, सम्पन्नता, विस्तार आदि का ध्यान रखना चाहिए। (नेशनलिज्म)

राष्ट्रवादी (दिन्)—वि० [स० राष्ट्रवाद+इनि] राष्ट्रवाद-सम्वन्धी। राष्ट्रवाद का।

पु० वह जो राष्ट्रवाद के सिद्धान्तो का अनुयायी, पोषक तथा समर्थक हो।

राष्ट्रवासी (सिन्)—पु० [स० राष्ट्र√वस् (निवास करना)+णिनि] [स्त्री० राष्ट्रवासिनी] १. राष्ट्र मे रहनेवाला। २ परदेसी। विदेशी।

राष्ट्र-विप्लव—पु०[स० प० त०] राज्य मे होनेवाला विप्लव। विद्रोह। वलवा।

राष्ट्र-संघ—पु०[स० ष० त०] १ ससार के प्रमुख राष्ट्रो की वह सस्था जो पहले युरोपीय महायुद्ध की समाप्ति पर वार्सेई की सन्धि के अनुसार १० जनवरी १९२० को सव के सामूहिक कल्याण तथा सुरक्षा के उद्देश्य से वनी थी। (लीग आफ नेशन्स) २ दे० 'सयुक्त राष्ट्र-सघ'।

राष्ट्रांतपालक—पु० [स० राष्ट्र-अत-पालक ष० त०] प्राचीन भारत मे वह जो राष्ट्र की सीमाओ की देख-रेख तथा रक्षा करता था। सीमा-रक्षक अधिकारी।

राष्ट्रिक—पु०[स० राष्ट्र+ठक्—इक] १. राजा। २ प्रजा।

वि० राष्ट्र-सम्वन्धी। राष्ट्र का।

राष्ट्रिय—पु० [स० राष्ट्र+घ—इय] [भाव० राष्ट्रियता] १. राष्ट्र का स्वामी, राजा। २ प्राचीन भारतीय नाटको मे, राजा के साले की सज्ञा।

वि० राष्ट्र सम्वन्धी। राष्ट्र का। राष्ट्रिक।

राष्ट्री (ष्ट्रिन्)—पु०[सं० राष्ट्र+इनि] १. राज्य का अधिकारी, राजा। २ प्रधान शासक।

स्त्री० रानी।

राष्ट्रीय—वि०[स० राष्ट्रिय] [भाव० राष्ट्रीयता] राष्ट्र-सम्वन्धी। राष्ट्र का। राष्ट्रिय।

विशेष—*राष्ट्रीय रूप स० व्याकरण से असिद्ध होने पर भी लोक मे चल गया है।*

राष्ट्रीयता—स्त्री० [स० राष्ट्रीय+तल्+टाप्] १ राष्ट्रीय अर्थात् राष्ट्र के अग या सदस्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ ऐसी धारणा या भावना कि हमे आपसी मत-भेद, वैर-विरोध आदि भूलकर सारे राष्ट्र की समान उन्नति, रक्षा, समृद्धि, सुरक्षा आदि का ध्यान रखना चाहिए। (नेशनलिज्म)

रास—स्त्री०[स० √ रास् (शब्द)+अञ्] १ कोलाहल। शोरगुल। हो-हल्ला। २. जोर की ध्वनि या शब्द। ३ वाणी। ४ प्राचीन भारत मे गोपो की एक क्रीडा जिसमे वे घेरा वाँधकर गाते और नाचते थे। ५. उक्त का वह विकसित रूप जो अब तक व्रज मे प्रचलित है और जिसमे श्री कृष्ण की वाल-लीलाओं का अभिनय सम्मिलित हो गया है।

पद—रास-धारी। रास-मंडली

६ मध्ययुग मे एक प्रकार के गेय पद जो गुजरात और राजस्थान मे प्रचलित थे और जो वाद मे 'रास' (देखें) के रूप मे विकसित हुए। ७. आनन्दमय क्रीडा। विलास। ८ एक प्रकार का चलता गाना। ९ लास्य नामक नृत्य। १०. नाचने-गानेवालों की मडली या समाज। ११. जजीर। शृंखला। १२ सगीत मे तेरह मात्राओं का एक ताल।

स्त्री० [स० राशि=ढेर] १. किसी चीज का ढेर या समूह। जैसे—खलिहान मे पडी हुई गेहूँ, चने या जौ की रास। २ उत्तराधिकार के विचार से धन, संपत्ति या प्राप्त होनेवाला उसका स्वामित्व। ३ गोद लिया हुआ लडका। दत्तक पुत्र।

मुहा०—(किसी का) किसी की रास वैठना=दत्तक वनकर या और किसी प्रकार उत्तराधिकारी होना। जैसे—अब तो आप उनकी रास वैठेंगे। (विशेषत. परिहास मे)

४. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ८+८+६ के विराम से २२ मात्राएँ और अन्त मे सगण होता है। ५. सख्याओं आदि का जोड़। योग। ६. व्याज। सूद। ७ एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है। इसका चावल सैकडों वर्षो तक रखा जा सकता है।

स्त्री०[स० राशि=राशि-चक्र मे का तारा-समूह,] प्रवृत्ति, रुचि, स्वभाव आदि की अनुकूलता। जैसे—उनसे किसी की रास नही वैठती।

क्रि० प्र०—वैठना।—वैठाना।

वि० १. उक्त अर्थ के विचार से, अनुकूल, लाभदायक, शुभ अथवा हितकर। जैसे—यह मकान उन्हें खूब रास आया है (अर्थात् इसे पाकर वे अच्छे सम्पन्न या सुखी हुए हैं)। २. उचित। ठीक। मुनासिव। वाजिव।

स्त्री०[फा०, मिलाओ स० रश्मि, प्रा० रस्सि] १. घोडे, वैल आदि पशुओं को चलाने की रस्सी। जैसे—घोडे की वागडोर या वैल की रास।

मुहा०—रास कड़ी करना=(क) घोडे की लगाम अपनी ओर खीचे रहना। (ख) लाक्षणिक रूप मे किसी पर कडा या पूरा नियत्रण रखना। रास में लाना=अपने अधिकार या वश मे करना।

२ रस्सा या रस्सी। उदा०—राणो पिमे न रास प्रथलो मांड प्रताप सी।—पृथीराज।

स्त्री०[इव० रास=सिर] १. चौपायो की गिनती के समय सख्या-सूचक इकाइयो के साथ लगनेवाली सज्ञा। (हेड ऑफ कैटल) जैसे—चार रास घोडे, पाँच रास वैल। २. चौपायो या पशुओ का झुड।

रासक—पु०[स० रास+कन्] एक तरह का हास्य-रस-प्रधान उपरूपक जिसमे पाँच अभिनेता होते है। इसका नायक मूर्ख और नायिका चतुर होती है।

रास-चक्र—पु० राशि-चक्र।

रास-धारी (रिन्)—पु०[स० रास+धृ (धारण)+णिनि] १. वह जो

रासलीला का व्यवस्थापक हो। २ रासलीला की मण्डली का प्रधान। ३ वह जो रास-लीला मे सम्मिलित होकर अभिनय, नृत्य आदि करता हो।

स्त्री० राजस्थानी नृत्य नाट्य की एक विशिष्ट शैली जो ब्रज की रास-लीला की तरह की होती और जिसमे धार्मिक लोक-नायको के चरित्र का अभिनय होता है।

रासन—वि०[स० रसना+अण्] स्वादिष्ठ। जायकेदार।
†पु०=राशन।

रास-नशीन—वि०[सं० राशि+फा० नशीन] १. जो किसी का रास अर्थात् सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हुआ हो। २ गोद बैठाया हुआ। दत्तक। मुतबन्ना (लडका)।

रासना—स्त्री०=रास्ना।

रास-नृत्य—पु०[स० मध्य० स०] गति के अनुसार नृत्य का एक भेद।

रास-पूर्णिमा—स्त्री०[सं० ष० त०] मार्गशीर्ष पूर्णिमा। श्री कृष्ण ने रास-क्रीडा इसी तिथि को आरम्भ की थी।

रास-मंडल—पु०[स० ष० त०] १ श्रीकृष्ण के रास-क्रीडा करने का स्थान। २ रास-क्रीडा या रास-लीला करनेवालो की मण्डली। ३ उक्त मण्डली का अभिनय।

रास-मंडली—स्त्री० [स० ष० त०] रासधारियो का समाज या टोली।

रास-यात्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] शरत् पूर्णिमा के दिन मनाया जानेवाला एक प्राचीन उत्सव। (पुराण) २ तान्त्रिको का एक उत्सव जिसे वे चैत्र पूर्णिमा को मनाते हैं।

रास-लीला—स्त्री०[सं० ष० त०]१ वे नृत्यात्मक क्रीडाएँ जो श्रीकृष्ण अपनी सखियो के साथ करते थे। २ वह नाटक या अभिनय जिसमे कृष्ण और गोपियो की प्रेम-सबधी क्रीडाएँ दिखाई जाती है।

रास-विलास—पु०[स० ष० त०] रास-क्रीडा।

रास-विहारी (रिन्)—पु० [स० रास-वि√हृ +णिनि, उप० स०] श्रीकृष्णचद्र।

रासा—पु०[हिं०रास=एक प्रकार के गेय पद]१ वह काव्य जिसमे किसी के वीरतापूर्ण कृत्यो या युद्धो का सविस्तर वर्णन हो। २ किसी प्रकार का कथा-काव्य। (राज०) ३ बाइस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे सगण होता है। ४ गहरी तकरार या हुज्जत। लडाई-झगडा।

रासायन—वि० [स० रसायन+अण्] १. रसायन-सबधी। २ रसायन के रूप मे होनेवाला।

रासायनिक—वि०[स० रसायन+ठक्—इक] रसायन-शास्त्र सबधी। रसायन का।
पु० वह जो रसायन-शास्त्र का ज्ञाता हो।

रासि†—स्त्री०=राशि।

रासिख़—वि०[अ० रासिख]१ पक्का। मजबूत। २. अटल। स्थिर।

रासी—स्त्री०[देश०]१. तीसरी बार खीची हुई शराब जो सबसे निकृष्ट समझी जाती है। २ सज्जी।
वि० १ खराब, झूठा या नकली। २. जिसमे खोट या मिलावट हो। जैसे— सोने का रासी तार।
†स्त्री०=राशि।

रासु*—वि० [फा० रास्त] १. सीधा। सरल। २. उचित। ठीक। वाजिब।

रासेरस—पु० [सं० अलुक् स०]१. गोष्ठी। २ रास-विहार। रास-क्रीडा। ३ शृगार। सजावट। ४ उत्सव। ५. परिहास। हँसी-ठठ्ठा।

रासेश्वरी—स्त्री०[सं० रास-ईश्वरी, ष० त०] राधा।

रासो—पु०[स०रहस्य] किसी राजा का पद्यमय जीवन-चरित्र। जैसे—पृथ्वीराज रासो।

रास्त—वि० [फा०] १. दाहिनी ओर पडने या होनेवाला। दाहिना। २ सीधा। सरल। ३. ठीक। दुरुस्त। ४ उचित। वास्तविक। वाजिब। ५. अनुकूल। मुआफिक।
क्रि० प्र०—आना।—पडना।—होना।

रास्तगो—वि०[फा०] [भाव० रास्तगोई] सच बोलनेवाला। सत्यवक्ता।

रास्तगोई—स्त्री०[फा ०]१ सत्य बोलना। २ सत्य-कथन।

रास्तबाज—वि०[फा० रास्तबाज़] [भाव० रास्तबाजी] ईमानदार और सच्चा। विशेषत लेन-देन मे साफ। २ नेकचलन। सदाचारी।

रास्तबाजी—स्त्री० [फा० रास्तबाजी]१ ईमानदारी। सच्चाई। २ सदाचार।

रास्ता—पु०[फा० रास्त]१ वह कच्ची या पक्की जमीन जिस पर लोग सामान्यतया चलते-फिरते या आते-जाते रहते हैं।
मुहा०—**रास्ता कटना**=चलने से रास्ता पार या पूरा होना। जैसे—बात-चीत मे ही आधा रास्ता कट गया। **(किसी का) रास्ता काटना**=किसी के चलने के समय उसके सामने से होकर किसी का निकल जाना। जैसे—बिल्ली रास्ता काट गई। **रास्ता देखना या पकड़ना**=(क) मार्ग का अवलबन करना। रास्ते पर चलना। (ख) कही से हटकर चले जाना। जैसे—अच्छा, अब तुम अपना रास्ता देखो (या पकडो)। **(किसी का) रास्ता देखना**=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। **(किसी को) रास्ता बताना**=(क) चलता करना। हटाना। (ख) इधर-उधर की बातें करके टालना। **रास्ते पर लाना**= सुमार्ग पर चलाना। अच्छे या ठीक रास्ते पर लगाना। **रास्ते लगना**=(क) चल पडना। (ख) ऐसे मार्ग पर लगना जिससे उद्देश्य सिद्ध हो।
२, प्रथा। रीति। चाल। जैसे—अब तो आपने यह नया रास्ता चला ही दिया है। ३. उपाय। तरकीब। युक्ति। जैसे—अभी तो इस सकट से निकलने का रास्ता सोचना है।
मुहा०—**(किसी को) रास्ता बताना**= (क) उपाय, तरकीब या युक्ति बताना। (ख) कोई काम करने का ढग बताना या सिखाना।

रास्ना—स्त्री० [स० √रस् (आस्वादन)+न, दीर्घ,+टाप्]१ गधना-कुली नामक कद जो आसाम, लका, जावा आदि मे अधिकता से होता है। २ गधनाकुली। ३ रुद्र की प्रधान पत्नी।

रास्निका—स्त्री०[स० रास्ना+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व]रास्ना।

रास्य—पु०[स० रास+यत्] श्रीकृष्ण।

राह—स्त्री०[फा०]१. मार्ग। पथ। रास्ता।
मुहा०—**राह पड़ना**= (क) रास्ते पर चलना या जाना। (ख) रास्ते मे चलनेवाले पर छापा डालना। लूटना। **राह मारना**=(क)

रास्ते में चलनेवाले को लूटना। (ख) दे० 'रास्ता' के अन्तर्गत (किसी का) रास्ता काटना।

विशेष—'राह' के सब मुहा० के लिए दे० 'रास्ता' के मुहा०।

२. कोई काम या बात करने का उचित और ठीक ढंग।

पद—राह राह का=ठीक ढंग या तरह का। उदा०—नखरो राह-राह को नीको।—भारतेन्दु। राह राह से=सीधी या ठीक तरह से।

३. प्रथा। रीति। ४ कायदा। नियम। ५ तरकीब। युक्ति।

†पु०=राहु (ग्रह)।

†स्त्री०=रोहू (मछली)।

राह-खरच—पु०[फा० राह+खर्च] यात्रा करते समय होनेवाला व्यय। मार्ग-व्यय।

राह-खरची†—स्त्री० राह-खरच (मार्ग-व्यय)।

राहगीर—पु०[फा०] वह जो रास्ता पकड़े हुए हो। बटोही।

राह-चलता—पु०[फा० राह+हिं० चलता] [स्त्री० राह-चलती] १. रास्ता चलनेवाला। पथिक। राहगीर। बटोही। २. व्यक्ति जिससे विशेष परिचय न हो। जैसे—यों ही राह-चलतों से मजाक नहीं करना चाहिए।

राहजन—पु०[फा० राहजन] [भाव० राहजनी] रास्ते में चलनेवालों को लूटनेवाला। बटमार।

राहजनी—स्त्री०[फा० राहजनी] रास्ते में चलनेवाले लोगों को लूटना। बटमारी।

राहड़ी—पु०[देश०] एक प्रकार का घटिया कंबल।

राहत—स्त्री०[अ०] १ आराम। सुख। चैन। २. वह आराम जो कष्ट, रोग आदि में कमी होने पर मिलता है। ३ बोझ, भार, उत्तरदायित्व से छुट्टी मिलने पर होनेवाली आसानी या सुगमता।

राहत-तलब—वि०[अ०] [भाव० राहत-तलबी]१ आराम-तलब। २. कामचोर।

राहदार—पु०[फा०]वह जो किसी रास्ते की रक्षा करता या उस पर आने-जानेवालों से कर वसूल करता हो।

राहदारी—स्त्री०[फा०]१ किसी दूर देश में जाने के लिए रास्ते पर चलना। २ वह कर जो प्राचीन काल में यात्रियों को कुछ विशिष्ट स्थानों पर चुकाना पड़ता था। दे० 'राहदारी का परवाना'।

राहदारी का परवाना—पु०[हिं०]प्राचीन काल में वह परवाना या अधिकार-पत्र जो दूर देश के यात्रियों को कुछ विशिष्ट मार्गों से आने-जाने के लिए राज्य की ओर से मिलता था। २ दे० 'पारपत्र'।

राहना—स०[हिं० राह ? (राह बनाना)]१ चक्की के पाटों को खुरदरा करके पीसने योग्य बनाना। जाँता कूटना। २. रेती आदि को खुरदुरा करके ऐसा रूप देना कि वह ठीक तरह से चीजें रेत सके।

†पु०=रहना।

राहनुमा—वि० [फा०] [भाव० राहनुमाई] पथ-प्रदर्शक।

राहनुमाई—स्त्री०[फा०] पथ-प्रदर्शन।

राहबर—वि०[फा०]=रहबर (मार्ग-प्रदर्शक)।

राहर—पु०=अरहर (अन्न)।

राह-रस्म—स्त्री०[फा०]१. मेल-जोल। व्यवहार। घनिष्ठता। २ चाल। परिपाटी। प्रथा।

राह-रीति—स्त्री० [हिं० राह+सं० रीति] १ पारस्परिक राह-रस्म। व्यवहार। २ जान-पहचान। परिचय। ३ आचरण, व्यवहार आदि का उचित या ठीक तरह से किया जानेवाला पालन।

राहा—पु०[हिं० रहना] मिट्टी का वह चबूतरा जिस पर चक्की के नीचे का पाट जमाया रहता है।

राहिन—वि०[अ०] रेहन अर्थात् गिरों या बंधक रखनेवाला।

राही—पु० [फा०] राहगीर। मुसाफिर। रास्ता चलनेवाला व्यक्ति। पथिक।

मुहा०—राही करना=चलता बनाना। (बाजारू) राही होना=चलता बनना। रास्ता पकड़ना। (बाजारू)

स्त्री०[सं० राधिका, प्रा० रहिया] राधा या राधिका। उदा०—राज मती राही जी सी। —नरपति नाल्ह।

राहु—पु०[सं०√रह् (त्याग)+उण्]१. पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक जो विप्रचित्ति के वीर्य से सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

विशेष—प्राचीन काल में चन्द्रमा के आरोह-पात और अवरोह-पात वाले बिंदुओं को क्रमात् राहु और केतु कहते थे। (दे० 'पात') पर आगे चलकर पौराणिक काल में राहु की राक्षस रूप से कल्पना होने लगी, और समुद्र-मंथन वाली कथा के प्रसंग में उसका सिर काटने की बात भी सम्मिलित हुई, तब केतु उस राक्षस का कबंध तथा राहु उसका सिर माना जाने लगा। लोक में ऐसा माना जाता है कि उसी के ग्रसने से चन्द्रमा और सूर्य को ग्रहण लगता है।

२ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा व्यक्ति या पदार्थ जो किसी की सत्ता के लिए विशेष रूप से कष्टदायक या घातक हो।

पु०[सं० राघव] रोहू मछली।

राहु-ग्रसन—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-ग्रास—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-दर्शन—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-भेदी (दिन्)—पु० [सं० राहु√भिद् (विदारण)+णिनि] विष्णु।

राहु-माता (तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] राहु की माता सिंहिका।

राहु-रत्न—पु०[सं० मध्य० स०] गोमेद मणि जो राहु के दोषों का शमन करनेवाली मानी जाती है।

राहुल—पु०[सं०] यशोधरा के गर्भ से उत्पन्न गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

राहु-सूतक—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-स्पर्श—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहूत—पु० [?] सूफी मत के अनुसार ऊपर के नौ लोकों में से आठवाँ लोक।

रिंग—स्त्री०[अं०]१ अँगूठी। छल्ला। २ किसी प्रकार का गोलाकार घेरा। चूड़ी। वलय।

रिंगण—पु०[सं०√रिंग् (गति)+ल्युट्—अन]१ रेंगना। २ फिसलना। ३. खिसकना। सरकना। ४ विचलित होना। डिगना।

रिंगन—स्त्री०[सं० रिंगण] घुटनों के बल चलना। रेंगना।

रिंगना†—अ०=रेंगना।

रिंगनी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की ज्वार और उसका पौधा।

रिंगल—पु०[देश०] एक तरह का पहाड़ी बाँस।

रिंगाना—स०=रेंगाना।

रिंगिन—स्त्री०[अ० रिगिंग] वह रस्सी जिससे जहाज के मस्तूल आदि बाँधे जाते हैं। (लश०)

रिंद—पु०[फा०] [भाव० रिंदी]१ ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक बातो पर अंध-विश्वास न रखता हो,और तर्क तथा बुद्धि के विचार से केवल युक्ति-संगत बातें मानता हो। धार्मिक विषयो मे उदार तथा स्वतन्त्र विचारोवाला व्यक्ति। २ धार्मिक वृत्तिवाले मुसलमानो की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति जो मद्यपान करता और श्रृंगारिक भोग-विलास मे विशेष प्रवृत्ति रखता हो, फिर भी अपने आपको अच्छा मुसलमान समझता हो। ३ मनमौजी और स्वच्छन्द प्रकृतिवाला व्यक्ति। उदा०—एक तुम्ही हो जो बहक जाते हो तोबा की तरफ। वर्ना रिंदो मे बुरा और चलन किसका है।—कोई शायर।

वि० मतवाला। मस्त।

रिंदगी—स्त्री०[फा०] १ रिंद होने की अवस्था या भाव। रिंदापन।

रिंदा—वि० [फा० रिंद] उद्दंड, निरकुश, निर्लज्ज और लुच्चा। तुच्छ और बेहूदा।

रिअना—पु० [देश०] एक प्रकार का कीकर। रीआँ।

रिआयत—स्त्री०[अ०]१ किसी चीज के सामान्य मूल्य मे किसी के लिहाज आदि के कारण की जानेवाली कमी। जैसे—उन्होने ५०) रुपए की रिआयत की। २ किसी नियम, बधन मे किसी कारणवश अथवा किसी के लिए की जानेवाली ढिलाई या दिया जानेवाला सुभीता। ३ किसी से सख्ती न करके किया जानेवाला दयापूर्ण व्यवहार। (कन्सेशन) ४ कमी। न्यूनता। ५. खयाल। ध्यान। जैसे—इस दवा मे खाँसी की भी रिआयत रखी गई है, अर्थात् यह ध्यान भी रखा गया है कि खाँसी दूर हो।

रिआयती—वि०[अ०]१. जो रिआयत के रूप मे हो। २ जिसमे किसी तरह की रिआयत की गई हो। जैसे—दुर्गा पूजा मे रेल के रिआयती टिकट मिलते है।

रिआया—स्त्री०[अ० रआया] प्रजा।

रिकवँछ—स्त्री०[देश०] एक प्रकार के पकौडे जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तो या इसी प्रकार के कुछ और पत्तो से बनता है। पतौड। उदा०—पान लाइकै रिकवँछ छौंके, हीगु मिरिच औ नाद।—जायसी।

रिकशा—पु०[जापानी जिन् रिक्शा=आदमी के द्वारा खीची जानेवाली गाडी] एक प्रकार की छोटी गाडी जिसे आदमी खीचते हैं और जिसमे एक या दो आदमी बैठते है।

विशेष—अब आदमी के बदले इसमे अधिकतर बाइसिकिल के पहिए और कल-पुरजे लगाये जाते है, जिसे साइकिल रिक्शा कहते है।

रिकसा—स्त्री०[स० रिक्षा] लीख।

पु०=रिकशा।

रिकाब—स्त्री०=रकाब।

रिकाबी—स्त्री०=रकाबी।

रिकार्ड—पु० दे० 'रेकार्ड'।

रिक्त—वि०[स०√ रिच् (अलग करना)+क्त]१ खाली। शून्य। जैसे—रिक्त घट, रिक्त स्थान। २ गरीब। निर्धन।

पु० जगल। वन।

रिक्त-कुंभ—पु०[सं० कर्म० स०]१ साहित्य मे ऐसी भाषा जो समझ मे न आवे अथवा जिसका कुछ भी अर्थ न निकलता हो। साधारण लोक-व्यवहार मे ऐसी चीज जो देखने भर को हो, काम मे आने योग्य न हो।

रिक्तता—स्त्री० [स० रिक्त+तल्+टाप्]१ रिक्त या खाली होने की अवस्था या भाव। २ नौकरी के लिए पद या स्थान रिक्त होने की अवस्था या भाव। (वैकेन्सी)

रिक्ता—स्त्री०[स० रिक्त+टाप्] फलित ज्योतिष मे चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ जो शुभ कामो के लिए वर्जित है।

रिक्तार्क—पु०[स० रिक्ता-अर्क, मध्य० स०] रविवार को पड़नेवाली कोई रिक्ता तिथि।

रिक्थ—पु०[स० रिच्+थक्]१ वह सम्पत्ति जो उत्तराधिकारी को दी जाय। २ वह धन-सम्पत्ति या ऐसी ही कोई और चीज जो किसी को उत्तराधिकारी के रूप मे मिली हो या मिले। (लिगेसी)३ व्यापार मे लगी हुई सारी पूँजी और उससे सबध रखनेवाली सारी सम्पत्ति।

रिक्थ-पत्र—पु०[स० प० त०]इच्छा-पत्र। वसीयतनामा।

रिक्थहारी (रिन्)—पु०[स० रिक्थ√ हृ (हरण)+णिनि]१ रिक्थ प्राप्त करने का उचित या वास्तविक अधिकारी। २ मामा।

रिक्थी (क्थिन्)—पु० [स० रिक्थ+इनि] [स्त्री० रिक्थिनी] वह जिसे उत्तराधिकार मे धन या सम्पत्ति मिले या मिलने को हो। रिक्थहारी।

रिक्ष†—पु०=रीक्ष।

रिक्षपति†—पुं० ऋक्षपति। जामवत।

रिक्षा—स्त्री० [स० लिक्षा] १ जूँ का अंडा। लीख। लिक्षा। २. त्रसरेणु।

पु०=रिकशा।

रिख—पु०[स० ऋक्ष] तारा। नक्षत्र। उदा०—राजति रद रिखपति रुख।—प्रिथीराज।

रिखभ—पु०= ऋषभ।

रिखिय—पु०=ऋषि।

रिखू—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की ऊख।

रिखेसर—पु०=ऋषीश्वर।

रिग—पु०=ऋक।

रिगाना†—स०=रेगाना।

रिचा—स्त्री० ऋचा।

रिचीक—पु० ऋचीक (जमदग्नि के पिता)।

रिच्छ—पु०=रीछ (भालू)।

रिच्छा—स्त्री०=रक्षा।

रिजक—पु०[अ० रिज्क] रोजी। जीविका। जीवन-वृत्ति।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

मुहा०—(किसी का) रिजक मारना=किसी की जीविका या रोजी मे बाधक होना। जीविका के साधन से वचित करना।

रिजर्व—वि०[अ०] जिसे किसी विशिष्ट काम या व्यक्ति के लिए रक्षित किया गया हो। जिसका उपयोग दूसरे कामो या व्यक्तियो के लिए न हो सकता हो।

रिजाला—पुं०[अ०]१. बदमाश। आवारा। बेशर्म आदमी। २ कमीना। नीच।

रिज़ीली—स्त्री०[फा० रज़ील=नीच] 'रिजाला' होने की अवस्था या भाव। कमीनापन। नीचता।

रिजु—वि०=ऋजु (सीधा)।

रिज्क—पुं०=रिजक।

रिझकवार—वि०[हिं० रीझना+वार (प्रत्य०)] १. रीझनेवाला। २ जो प्राय अच्छी बातों पर रीझ जाता हो।
पुं०= रिझवार (प्रेमी)।

रिझवाना—स०=रिझाना।

रिझवार—वि०[हिं० रीझना+वार (प्रत्य०)] [स्त्री० रिझवारी] जिसका मन किसी के गुण, रूप, व्यापार आदि पर रीझता हो।
पुं०=प्रेमी।

रिझाना—स०[स० रजन] अपने गुण, चेष्टा, रूप आदि से किसी का ध्यान आकृष्ट करते हुए उसे अपनी ओर अनुरक्त बनाना।

रिझामल†—वि०=रिझावर।

रिझाव—पु०[हिं० रीझना+आव (प्रत्य०)]१ रीझने की अवस्था या भाव। २ रिझाने की क्रिया या भाव।

रिझावना—स०=रिझाना।

रिटायर्ड—वि० [अं०] जो अपने काम से अवसर-ग्रहण कर चुका हो। अवकाश-प्राप्त।

रिड़कना—स० [?] दही आदि बिलोना। मथना।
अ० १. खटकना। २ गड़ना। चुभना।

रिण†—पु०=ऋण।
†पु०=रण। (डिं०)

रिणाई—वि०[सं० ऋण+दायिन्] जिसने ऋण लिया हो। उदा०—छिन जेही रिणी रिणाई।—प्रिथीराज।

रित†—स्त्री०=ऋतु।

रितना—अ०[सं० रिक्त, हिं० रीता] रिक्त या खाली होना। शून्य होना।

रितवना—स०[हिं० रीता+ना] रीता अर्थात् खाली करना। रिक्त करना।

रितु—स्त्री०=ऋतु।

रितुराज—पु० =ऋतुराज (वसत)।

रितुवंती —स्त्री०=ऋतुमती (रजस्वला)।

रितुसारी—पु०[स० ऋतु+सारी] एक प्रकार का चावल।

रिद—पु०=हृदय।

रिद्धि—स्त्री०=ऋद्धि।

रिद्धि-सिद्धि—स्त्री०=ऋद्धि-सिद्धि।

रिध—स्त्री०=ऋद्धि।

रिन—पु०=ऋण।

रिनबंधी—पुं०[स० ऋण+बध] ऋणी।

रिनियाँ—वि०[स० ऋण] जिसने ऋण लिया हो। ऋणी।

रिनी—वि०=ऋणी (कर्जदार)।

रिपटना—अ०=रपटना (फिसलना)।

रिपु—पु० [स० √ रप् (बोलना)+कु, इत्व] [भाव० रिपुता]१. उन दो व्यक्तियों, दलों आदि में से हर एक जिनमें एक दूसरे के प्रति शत्रुता का भाव हो। दुश्मन। शत्रु। २. लाक्षणिक अर्थ में वह गुण, तत्त्व या वस्तु जो अत्यन्त हानिकर तथा नाशक प्रभाववाली हो। जैसे—षट्-रिपु। ३ जन्मकुण्डली में लग्न से छठा स्थान जिससे लोगों के शत्रुभाव का विचार होता है।

रिपुघ्न—वि० [सं० रिपु√ हन् (हिंसा)+क] शत्रुओं का नाश करनेवाला।

रिपुता—स्त्री० [सं० रिपु+तल्+टाप्] १ रिपु होने की अवस्था या भाव। दुश्मनी। शत्रुता।

रिपोर्ट—स्त्री०[अं०]१ किसी घटना आदि का वह विवरण जो किसी अधिकारी को उसकी जानकारी के लिए दिया जाता है। प्रतिवेदन। २ किसी संस्था आदि के कार्यों का विस्तृत विवरण। कार्य-विवरण। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति के सम्बन्ध की जानने योग्य बातों का ब्योरा।

रिपोर्टर—पुं०[अं०] संवाददाता (समाचार पत्रों का)।

रिफाकत—स्त्री० [अ० रिफाक, रफीक का बहुवचन] १. मित्रगण। साथी लोग। २ रफीक या साथी होने की अवस्था या भाव। मित्र। ३. संग-साथ।

रिफार्म—पुं०[अं०] ऐब, खराबियाँ, दोष आदि दूर करने की क्रिया या भाव। सुधार।

रिफार्मर—पुं०[अं०] १. सुधारक। २ समाज-सुधारक।

रिफार्मेटरी—स्त्री० [अं०] वह स्थान जहाँ छोटी अवस्था के विशेषतः अल्प-वयस्क अपराधी बालक चरित्र-सुधार की दृष्टि से कैद करके रखे जाते हैं।

रिबन—पुं० [अं०]१ पतली पट्टी। २ फीते के तरह की वह चौड़ी पट्टी जिससे स्त्रियाँ बाल आदि बाँधती है। ३. फीता। जैसे—टाइप राइटर का रिबन।

रिभु—पु०=ऋभु (देवता)।

रिम—पुं०[सं० अरिम् या रिपु] शत्रु। (डिं०)
स्त्री०=रीम।

रिम-झिम—स्त्री०[अनु०]छोटी-छोटी बूँदों का लगातार गिरना। हलकी फुहार पड़ना।
मुहा०—रिमझिम बरसना—छोटी-छोटी बूँदो के रूप मे पानी बरसना। उदा०—भादों भय भारी लगे, रिम-झिम बरसे मेह।—गीत।

रिमहर—पुं०[?] शत्रु। (डिं०)

रिमाइंडर—पु०[अं०] स्मृति-पत्र। स्मारक।

रिमिका—स्त्री० [?] काली मिर्च की लता। (अनेकार्थ)

रिया—स्त्री०[अ०]१ पाखंड। २ प्रदर्शन। ३. दिखावा।

रियाकर—वि०[अ०+फा०] [भाव०,रियाकारी]ढोंगी। मक्कार।

रियाकारी—स्त्री०[अ० +फा०] पाखंड।

रियाज—पु० [अ० रियाज]१. तपस्या। २ किसी काम या बात मे प्रवीणता प्राप्त करने के लिए परिश्रमपूर्वक और नियमित रूप से किया जानेवाला उसका अभ्यास। जैसे—गाने-बजाने का रियाज करना। ३. ऐसा बढ़िया और बारीक काम जो उक्त प्रकार से यथेष्ट अभ्यास कर चुकने पर बहुत परिश्रम पूर्वक किया गया हो। जैसे—ताजमहल में नक्काशी का सारा काम बहुत रियाज का है।

रियाजत—स्त्री०[अ० रियाज़त]१ उद्यम। परिश्रम। २ अभ्यास। ३ जप-तप। तपस्या।

रियाजी—वि०[अ० रियाज़ी] जिसका ज्ञान रियाज़ करने पर प्राप्त होता हो।

पु० गणित की विद्या।

रियासत—स्त्री०[अ०] १ रईस होने की अवस्था या भाव। अमीरी। वैभव। ऐश्वर्य। २. राज्य विशेषत. ब्रिटिश भारत मे देशी नरेशो का राज्य। ३. आधिपत्य। स्वामित्व।

रियासती—वि०[अ०] रियासत सम्बन्धी। रियासत का।

रियाह—पुं०[अ० रेह का बहु०]शरीर के अन्दर की वायु जो विकृत होकर किसी रोग के रूप मे प्रकट होती है।

रिर—स्त्री०[अनु०] बहुत गिडगिड़ाकर और आग्रहपूर्वक किया जानेवाला अनुरोध या प्रार्थना।

रिरना—अ०[अनु०] बहुत गिडगिडाते हुए अपनी दीनता प्रकट करना।

रिरिंसा—स्त्री०[स०]१ चित्त प्रसन्न करने या किसी प्रकार के विनोद से सुख प्राप्त करने की इच्छा। २. काम-वासना तृप्त करने की इच्छा।

रिरियाना—अ०=रिरना।

रिरिहा—वि० [हिं० रिरना] बहुत गिडगिड़ाकर या रट लगाकर प्रार्थना करनेवाला।

रिरी—स्त्री० [स०√रि (गति)+क्विप्, पृषो० द्वित्व] पीतल। (धातु)

†स्त्री०=रिर।

रिलना*—अ०[हिं० रेलना मि० प० रलना=मिलना] प्रवेश करना। पैठना। घुसना।

†अ०=रलना (मिलना)

रिलीफ—स्त्री०[अं०]१. कष्टपूर्ण या दु खद वातावरण या स्थिति के उपरान्त मिलनेवाला आराम या चैन। २. सहायता। ३ उक्त प्रकार के प्रसगो मे दी जानेवाली सहायता।

रिव—पु०=रवि। (डिं०)

रिवाज—पु०=रवाज (प्रथा)।

रिवायत—स्त्री०[अ०]१ सुनी-सुनाई बात दूसरो से कहना। २ इस प्रकार कही जानेवाली बात। ३ कहावत। लोकोक्ति।

रिवाल्वर—पु० [अं०] गोली चलाने या छोडने का एक प्रकार का छोटा उपकरण। तमचा।

रिव्यू—स्त्री०[अं०]१ समीक्षा। आलोचना। २ नजरसानी।

रिशवत—स्त्री०[अ० रिश्वत] वह धन जो किसी अधिकारी को खुश करने तथा उससे कोई जायज या नाजायज काम कराने के उद्देश्य से दिया जाता है। उत्कोच। घूस। लाँच।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मिलना।—लेना।

रिशवतखोर—पु०[अ० रिश्वत+फा० खोर] [भाव० रिश्वतखोरी] वह जो रिश्वत लेता हो। घूस खानेवाला।

रिशवतखोरी—स्त्री० [अ० रिश्वत+फा० खोरी] १ रिश्वत लेने की अवस्था या भाव। २ दूसरे से रिश्वत लेने की आदत या लत।

रिश्ता—पु० [फा० रिश्त] व्यक्तियो मे होनेवाला पारिवारिक या वैवाहिक सम्बन्ध। नाता।

रिश्तेदार—पु० [फा० रिश्त:दार] [भाव० रिश्तेदारी] वह जिससे कोई रिश्ता हो। सबंधी। नातेदार।

रिश्तेदारी—स्त्री०[फा० रिश्त दारी] रिश्ता होने की अवस्था या भाव। संबध। नाता।

रिश्तेमंद—पु०[फा०]=रिश्तेदार।

रिश्तेमंदी—स्त्री०=रिश्तेदारी।

रिश्य—पु०[स०√रिश् (हिंसा+क्यप्]मृग।

रिश्वत—स्त्री०=रिशवत।

रिषभ—पु०=ऋषभ (बैल)।

रिषि—पु०=ऋषि।

रिष्ट—पु०[स०√रिष् (हिंसा)+क्त]१ कल्याण। मगल। २. अकल्याण। अमंगल। ३. अभाव। ४. नाश। ५ पाप। ६. खड्ग।

वि० नष्ट। बरबाद।

वि० [स० हृष्ट]१ मोटा-ताजा। २ प्रसन्न और संतुष्ट।

रिष्टि—स्त्री०[स०√ रिष् (हिंसा)+क्तिन्]१. खड्ग। २ अमंगल।

रिष्यमूक—पु० [स० ऋष्यमूक] रामचरित मानस के अनुसार दक्षिण भारत का एक पर्वत जिस पर राम और सुग्रीव की भेंट हुई थी।

रिस—स्त्री०[स० रुष]१ किसी के प्रति मन मे होनेवाला रोष। २. मन मे दबी हुई नाराजगी।

मुहा०—रिस मारना=गुस्सा काबू मे करना।

रिसना—अ०=रसना (तरल पदार्थ अन्दर से बाहर निकलना)।

रिसवाना—स० [हिं०रिसाना का प्रे०] रिसाने (किसी से अप्रसन्न होने) मे प्रवृत्त करना।

रिसहा—वि०[हिं० रिस+हा (प्रत्य०)] जो बात-बात पर क्रुद्ध हो उठता हो।

रिसहाया—वि०[हिं० रिसाया] [स्त्री० रिसहाई] कुपित। जिसके मन मे रिस उत्पन्न हुई हो। रुष्ट। अप्रसन्न। नाराज।

रिसान—पु०[?] ताने के सूतो को फैलाकर उनको साफ करने का काम। (जुलाहे)

रिसाना—अ०[हिं० रिस+आना (प्रत्य०)] क्रुद्ध होना। खफा होना। गुस्सा होना।

स० किसी पर क्रोध करना। नाराजी जाहिर करना।

रिसाल—पु०[अ० इरसाल] वह धन जो कर के रूप मे वसूल करके सरकारी खजाने या राजधानी मे भेजा जाता था।

रिसालत—स्त्री०[अ०]१. रसूल अर्थात् दूत का काम, पद या भाव। २. इस्लाम मे मुहम्मद साहब को ईश्वर का दूत मानने की अवस्था या सिद्धान्त।

रिसालदार—पु० [फा० रिसाल दार] १ घुडसवार। सैनिको का नायक। २ वह कर्मचारी जो कर वसूल करके खजाने मे पहुँचाता था।

रिसाला—पु० [फा० रिसाल:]१ घोड-सवारो की सेना। अश्वारोही सेना। २ सामरिक पत्र। पत्रिका। ३ पुस्तिका।

रिसि—स्त्री०=रिस।

रिसिआना—अ०=रिसाना।

रिसिक—स्त्री०[स० रिषीक] तलवार।

रिसौहाँ—वि०[हिं० रिस+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रिसौही]१.

रुक्म-कारक—पुं० [सं० ष०त०] सोने के गहने बनानेवाला अर्थात् सुनार।

रुक्मपाश—पुं० [सं० मध्य० स०] सूत का बना हुआ वह फंदा या लड़, जिसमें गहनों की गुरियाँ मनके आदि पिरोये रहते हैं।

रुक्मपुर—पुं० [सं०] पुराणानुसार एक नगर जहाँ गरुड़ का निवास है।

रुक्मरथ—पुं० [सं० ब० स०] १. शल्य का एक पुत्र। २. भीष्मक का एक पुत्र। ३. द्रोणाचार्य का एक नाम।

रुक्मवती—स्त्री० [सं० रुक्म+मतुप्+ङीप्] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 'भ म स ग (SIISSSIISS) होते हैं। इसे 'रूप्य-वती' तथा 'चम्पकमाला' भी कहते हैं।

रुक्म-वाहन—पुं० [सं० ब० स०] द्रोणाचार्य।

रुक्मसेन—पुं० [सं०] रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मि—पुं० [सं०] रम्यक और हिरण्यवर्ष के बीच स्थित पाँचवाँ वर्ष। (जैन)

रुक्मिण—स्त्री०=रुक्मिणी।

रुक्मिणी—स्त्री० [सं० रुक्म+इनि+ङीप्] श्रीकृष्ण की पटरानियों में से बड़ी और पहली रानी जो विदर्भ राजा भीष्मक की कन्या थी।

रुक्मि-दर्प—पुं० [सं० ब० स०] बलदेव।

रुक्मिदारी (रिन्)—पुं० [सं० रुक्मिन्√दृ (विदारण)+णिनि] बलदेव।

रुक्मी (क्मिन्)—पुं० [सं० रुक्म+इनि] रुक्मिणी के बड़े भाई का नाम।

रुक्ष—वि० [सं० रूक्ष] [भाव० रुक्षता] १ (वस्तु) जिसका तल चिकना तथा मुलायम न हो, बल्कि रूखा तथा ऊबड़-खाबड़ हो। २. अस्निग्ध। ३. असहृदय। नीरस। ४. कठोर।

पुं०=रूख (वृक्ष)।

रुक्षता—स्त्री० [सं० रूक्षता] १. रूक्ष होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. रुखाई। ३ असहृदयता।

रुख—पुं० [फा०] १ कपोल। गाल। २ चेहरा या मुँह जो प्रायः मनोभावों का सूचक होता है।

मुहा०—रुख मिलाना=बातचीत करने के लिए मुँह सामने करना।

३. आकृति या चेहरे से प्रकट होनेवाली प्रवृत्ति या मनोभाव। जैसे—(क) उनका रुख देखकर ही मैंने समझ लिया कि इस बात पर राजी नहीं होंगे। (ख) आदमी का रुख देखकर बातचीत छेड़नी चाहिए।

मुहा०—(किसी ओर) रुख देना=उन्मुख या प्रवृत्त होना। रुख फेरना (बदलना)=(क) किसी पर से ध्यान (विशेषतः कृपापूर्ण दृष्टि) फेर या हटा लेना। (ख) अप्रसन्न या नाराज होना।

४ सामने या आगे का भाग। जैसे—(क) वह मकान दक्खिन रुख का है। (ख) कुर्सी का रुख इधर कर दो। ५ किसी ओर का तल या पार्श्व। स्तर। जैसे—इस कागज का रुख सफेद और दूसरा हरा है। ६ शतरंज का किश्ती या हाथी नाम का मोहरा।

अव्य० १. तरफ। ओर। २ सामने।

पुं० [सं० रुक्ष] १. एक प्रकार की घास जिसे वल्क तृण कहते हैं। २ पेड़। वृक्ष।

†वि०=रूखा।

वि० [सं० रुच्] शोभायमान। उदा०—राजति रद रिखमति रुख।—प्रिथीराज।

रुख-चढ़वा—पुं० [हिं० रूख+चढ़ना] १. शाखा-मृग। बंदर। २. भूत या प्रेत जिसका निवास प्रायः वृक्षों पर माना जाता है।

रुखदार—वि० [रुखदार] (बाजार भाव) जिसमें नित्य तेजी-मंदी आती रहती हो।

रुखसत—स्त्री० [अ० रुख्सत] १. कहीं से चलने के समय विदा होने की क्रिया या भाव। २ नौकरी, सेवा आदि से मिलनेवाली अल्पकालीन छुट्टी। अवकाश। ३. अनुज्ञा। अनुमति। परवानगी। (क्व०) ४. उर्दू काव्य में दुलहन का दूल्हे के घर जाना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

वि० जो कहीं से विदा होकर चल पड़ा हो। जिसने प्रस्थान किया हो।

रुखसताना—पुं० [फा० रुख्सतान] रुखसत अर्थात् विदाई के समय दिया अथवा बाँटा जानेवाला धन।

रुखसती—वि० [अ० रुख्सत+ई (प्रत्य०)] १ रुखसत सम्बन्धी। रुखसत का। २. जिसे रुखसत या छुट्टी मिली हो।

स्त्री० १. रुखसत। विदाई। २ मैके से विवाहित कन्या के घर जाने की क्रिया या भाव। ३ उक्त विदाई के समय कन्या या दामाद को मिलनेवाला धन।

रुखसार—पुं० [फा० रुख्सार] कपोल। गाल।

रुखा—वि० [फा० रुख] [स्त्री० रुखी] रुख या पार्श्व वाला। (यौ० के अन्त में) जैसे—दोरुखा, चौरुखा आदि।

रुखाई—स्त्री० [हिं० रूखा+आई (प्रत्य०)] १. रूखे होने की अवस्था, धर्म या भाव। रूखापन। रुखावट। २ नीरसता। शुष्कता। ३. व्यवहार आदि की कठोरता और नीरसता। बेमुरौवती।

रुखानी†—स्त्री०=रुखानी।

रुखानल—पुं० [सं० रोषानल] क्रोधाग्नि। (डिं०)

रुखाना—अ० [हिं० रूखा+आना (प्रत्य०)] १. रूखा होना। चिकना न रह जाना। २ नीरस या फीका होना।

स० १. रूखा करना। २ नीरस या फीका करना।

अ० [फा० रुख] किसी ओर रुख होना।

स० किसी ओर रुख करना।

रुखानी—स्त्री० [सं० रोक=छेद+खनित्र खोदने की चीज] १. बढ़इयों का लकड़ी छीलने का एक छोटा धारदार उपकरण। २. संगतराशों की टाँकी।

रुखापट—स्त्री०=रुखाई।

रुखावट—स्त्री०=रुखावट (रुखाई)।

रुखिता—स्त्री० [सं० रुषिता] वह नायिका जो रोष या क्रोध कर रही हो। रूठी हुई मानवती नायिका।

रुखिया—स्त्री० [हिं० रुख+इया (प्रत्य०)] पेड़ों की छाया से युक्त भूमि।

वि० छायादार।

रुखुरी—स्त्री० [हिं० रूखा] भुना हुआ चना आदि। चबेना। (पूरब)

स्त्री० [हिं० रूख] बहुत छोटा पौधा।

रुखौहाँ—वि० [हिं० रूखा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रुखौंही] जिसमें रूखापन हो। जैसे—रुखौहैं नैन।

रुगना—पुं० [हिं० रोग] पशुओं का एक रोग। टपका।

रुगिया—वि०=रोगी।

रुगौना—पु० [देश०] घलुआ। घाल।

रुग्ण—वि० [स०√ रुज् (रोग)+क्त, त—न] १ जो किसी रोग से ग्रस्त हो। बीमार। २. जिसमें किसी प्रकार का दूषित विकार हुआ हो। ३ टेढा। ४. टूटा हुआ।

रुग्णता—स्त्री० [स० रुग्ण+तल्+टाप्] रुग्ण होने की अवस्था या भाव।

रुग्णालय—पुं० [स०] १. रोगियो के रखे जाने का स्थान। २. आज-कल किसी बडे भवन या सस्था मे वह कमरा या स्थान, जहाँ घायल, रोगी आदि चिकित्सा के लिए रखे जाते है।

रुग्णावकाश—पु० [स० रुग्ण-अवकाश, ष० त०] रुग्णावकाश के कारण ली जानेवाली छुट्टी। बीमारी की छुट्टी। (मेडिकल लीव)

रुग्वाह—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का सन्निपात जो बीस दिनो तक रहता है, और प्राय. असाध्य माना जाता है।

रुच—स्त्री०=रुचि।

रुचक—वि० [√ रुच् (दीप्ति) +क्वुन्—अक]१ रुचनेवाला। रुचि के अनुकूल प्रतीत होनेवाला। रोचक। २ जायकेदार। स्वादिष्ट।
पुं०१. वास्तु विद्या के अनुसार ऐसा घर जिसके चारो ओर के अलिंद (चबूतरा या परिक्रमा) मे से पूर्व और पश्चिम का सर्वथा नष्ट हो गया हो और उत्तर तथा दक्षिण का समूचा ज्यो का त्यो हो। इसका उत्तर का द्वार अशुभ और शेष द्वार शुभ माने गए है। २ चौकीदार खभा। ३. पुराणानुसार सुमेरु पर्वत के पास का एक पर्वत। ४ जैन हरिवंश के अनुसार हरिवर्ष का एक पर्वत। ५ मागल्य द्रव्य। ६ माला। ७. घोड़ो आदि को पहनाये जानेवाले गहने । ८ प्राचीन काल का निष्क नामक सिक्का। ९ दात। १०. कबूतर। ११. रोचना। १२. नमक। १३. काला नमक। १४. सज्जी खार। १५. वायविडग। १६ दिशा। बिजौरा नीबू। १७ दक्षिण दिशा।

रुचदान—वि० [स० रुचि-दान=देनेवाला] भला लगने योग्य। जो अच्छा लग सके।

रुचना—अ० [सं० रुच+हिं० ना (प्रत्य०)] रुचि के अनुकूल प्रतीत होना। प्रिय तथा भला लगना।
पद—रुच रुच=रुचिपूर्वक।

रुचा—स्त्री० [स०√ रुच्+क्विप्+टाप्]१ दीप्ति। प्रकाश। २ छवि। शोभा। ३. इच्छा। कामना। ४. चिडियो के बोलने का शब्द।

रुचि—स्त्री० [स० √रुच्+इन्] १ आभा। चमक। २ छवि। शोभा। ३. प्रकाश की किरण। ४. खाने पीने की चीजों मे आने या होनेवाला स्वाद। ५ मन की वह प्रवृत्ति या स्थिति जिसके फलस्वरूप कुछ काम, चीजे या बाते अच्छी और प्रिय जान पडती है, अथवा उनकी ओर मनुष्य झुकता या बढता है। जैसे—(क) वृद्धावस्था मे प्राय धर्म की ओर लोगो की रुचि होने लगती है। (ख) इस समय कुछ खाने की हमारी रुचि नही है। ६ मनुष्य की वह योग्यता या शक्ति जिसके आधार पर वह कला , सगीत, साहित्य आदि के गुण या विशेषताएँ परखता और उनका आदर करता है। जैसे—(क) इस विषय मे उनकी रुचि असाधारण और विलक्षण है। (ख) यह तो अपनी अपनी रुचि की बात है। ७. इच्छा। कामना। ८. किसी पदार्थ या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुराग या आसक्ति। ९ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन। १० गोरोचन।
वि० रुचिर।
पु० रौच्य मनु के पिता का नाम, जो एक प्रजापति माने गये हैं।

रुचिकर—वि० [स० ष० त०]१. (विषय) जिसमे रुचि होती तथा मन रमता हो। २. भला लगनेवाला। ३. रुचि उत्पन्न करनेवाला। ४. भूख बढानेवाला। (वैद्यक)

रुचिकारक—वि० [स० ष० त०] रुचिकर (दे०)।

रुचिकारी (रिन्)—वि० [स० रुचि√कृ करना)+णिनि, उप० स०] १. रुचि उत्पन्न करनेवाला। रुचिकर। २. स्वादिष्ट। ३ मनोहर। सुन्दर।

रुचित—भू० कृ० [सं० रुच+कितच्] १. जो रुचि के अनुकूल प्रतीत हुआ हो। पचाया हुआ। (वैद्यक)। ३. [√रुच्+क्त] चाहा हुआ।
पु० १. इच्छा। २. मधुर और रुचनेवाला पदार्थ।

रुचि-धाम (मन्)—पु० [स० ष० त०] सूर्य।

रुचि-फल—पु० [स० मध्य० स०] नासपाती।

रुचिभर्त्ता (र्तृ)—पु० [स० ष० त०]१ सूर्य्य। २ मालिक। स्वामी।
वि० आनन्ददायक। सुखद।

रुचिमती—स्त्री० [स० रुचि+मतुप्+ङीप्] उग्रसेन की पत्नी जो कृष्णचन्द्रजी की नानी तथा देवकी की माता थी।

रुचिर—वि० [स०√रुच्+किरच्]१. जो रुचि के अनुकूल हो। अच्छा। भला। २ मनोहर। सुन्दर। ३. मधुर। मीठा।
पु०१. केसर। २. लौंग। ३ मूली।

रुचिरता—स्त्री० [स० रुचिर+तल्+टाप्] रुचिर होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रुचिरांजन—पु० [स० रुचिर-अजन, कर्म० स०] शोभाजन । सहिंजन।

रुचिरा—स्त्री० [स० रुचिर+टाप्]१ सुप्रिया नामक छद का एक नाम। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ज, भ, स, ज, ग (।ऽ। ऽ।।-।।ऽ।ऽ। ऽ) होते हैं। ३. रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी। ४. केसर। ५. लौंग। ६ मूली।

रुचिराई—स्त्री०=रचिरता।

रुचि-वर्द्धक—वि० [स० ष० त०] १ रुचि उत्पन्न करने या बढानेवाला। २. भोजन की रुचि या भूख बढानेवाला। (वैद्यक)

रुचिष्य—पु० [स०√ रुच् (प्रीति)+किष्यन्] खाने का मधुर खाद्य पदार्थ।
वि० जिसके प्रति रुचि हो अथवा हो सकती हो। रुचनेवाला।

रुची—स्त्री० [स० रुचि+ङीष्]=रुचि।

रुच्छ—वि० [स० रूक्ष]१. रुखा। रूक्ष। २. अप्रसन्न। नाराज।
†पु०=रुख (वृक्ष)।

रुच्य—वि० [स०√रुच+क्यप्]१ रुचिकर। २. मनोहर। सुन्दर।
पु०१. सेंधा नमक। २ जडहन धान। ३. पति। स्वामी।

रुज—पु० [स०√रुज्+क घञर्थ] १ टूटने या अस्थिभंग होने का भाव। २. कष्ट। वेदना। ३ क्षत। घाव। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमडा मढा होता था।

रुजगार—पु०=रोजगार।

रुज-ग्रस्त—वि० [स० तृ० त०] रुग्ण। रोगी।

रुजा—स्त्री० [स०√रुज्+क्विप्,+टाप्]१. टूटने फूटने या भग होने का

भाव। २. रोग। बीमारी। ३. कष्ट। पीड़ा। ४. कुष्ठ नामक रोग। कोढ़। ५. भेड़।

रुजाकर—वि० [स० ष० त०] रोग उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।
पुं० १. रोग। बीमारी। २ कमरख (फल)।

रुजाली—स्त्री० [सं० रुजा-आली, ष० त०] १ रोगों या कष्टों का समूह। २. ऐसी स्थिति जिसमें एक साथ कई रोग सता रहे हों। ३ एक पर एक अथवा एक न एक रोग लगा रहना।

रुजी—वि० [स० रुज्=रोग] रुग्ण। रोगी।

रुजू—वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] १. जिसकी तबीयत किसी ओर झुकी या लगी हो। २. जो किसी ओर प्रवृत्त हो।

रुझना—अ० [स० रुद्ध, प्रा० रुज्झ] घाव आदि का भरना या पूजना।
†अ० १ =रुकना। २.=उलझना।
अ० [स० रजन] १. मन बहलाने के लिए किसी काम में लगे रहना। २ मन का इस प्रकार किसी काम में लगे रहना। ३ किसी कार्य के सम्पादन में प्रवृत्त होना या लगना।

रुझनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लंबी चोंचवाली छोटी चिड़िया जिसकी पीठ काली और छाती सफेद होती है।

रुठ—स्त्री० [सं० रुष्ट, प्रा० रुट्ठ] १. रूठने की क्रिया या भाव। २. क्रोध। गुस्सा। रोष।

रुठना—अ०=रूठना।

रुणा—स्त्री० [स०] सरस्वती नदी की एक शाखा।

रुणित—भू० कृ० [स० रणित] मधुर ध्वनि या शब्द करता हुआ। बजता हुआ।

रुत—पुं० [स०√रु (शब्द)+क्त] १. पक्षियों का शब्द। कलरव। २. ध्वनि। शब्द।
†स्त्री०=ऋतु।

रुतबा—पुं० [अ० रुत्ब.] १. सामाजिक दृष्टि से होनेवाली वह अच्छी और ऊँची स्थिति जिसमें यथेष्ट आदर, प्रतिष्ठा या सत्कार हो। २. राज्य या शासन की सेवा में मिलनेवाला कोई अच्छा और ऊँचा पद। ३. बड़ाई। महत्ता। श्रेष्ठता।

रुदंती—स्त्री० [सं०√रुद् (रोना)+शतृ—अन्त,+ङीप्] एक प्रकार का छोटा क्षुप। संजीवनी। रुद्रवंती।

रुदथ—पुं० [स०√रुद्+अथ] १ कुत्ता। २. छोटा बच्चा। ३. मुर्गा।

रुदन—पुं० [स० रोदन] १. रोने की क्रिया या भाव। २. रोने पर होनेवाला शब्द।

रुदराछ—पुं०=रुद्राक्ष।

रुदित—भू० कृ० [सं०√रुद् (रोना)+क्त] रोता हुआ।

रुदुआ—पुं० [देश०] अगहन मास में होनेवाला एक प्रकार का धान।

रुद्ध—भू० कृ० [सं०√रुध् (आवरण)+क्त] १ रुका या रोका हुआ। बाधित। २. घिरा या घेरा हुआ। ३ पकड़ा हुआ। ४. जिसकी चाल या गति बंद हो गई हो। बंद। ५. मुँदा हुआ।

रुद्ध-कंठ—वि० [सं० ब० स०] करुणा, दया, प्रेम आदि के कारण जिसका गला रुँध गया हो, और फलत: जिसके मुँह से ठीक तरह से और पूरी बात न निकलती हो।

रुद्धक—पुं० [सं० रुद्ध+कन्] नमक।

रुद्ध-मूत्र—पुं० [स० ब० स०] मूत्रकृच्छ्र (रोग)।

रुद्धार्त्तव—पुं० [स०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनका मासिक धर्म उचित समय से पहले ही बंद हो जाता या रुक जाता है। (एमेनोरिया)

रुद्र—वि० [स०√रुद्+णिच्+रक्, णि-लुक्] १. रुलानेवाला। २ रोने से छुटाने या रोना बन्द करनेवाला। ३ डरावना। भयंकर।
पुं० १ एक प्रकार के गण देवता जिनकी उत्पत्ति सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा की भौंहो से मानी गई है और जो संख्या में ११ कहे गये है। २. उक्त के आधार पर ११ सूचक संख्या की संज्ञा। ३ शिव का एक रूप। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा। ५ आक या मदार का पौधा। ६. साहित्य में रौद्र रस।

रुद्रक—पुं०=रुद्राक्ष।

रुद्र-कमल—पुं० [मध्य० स०] रुद्राक्ष।

रुद्र-कलश—पुं० [मध्य० स०] वह कलश जिसकी स्थापना ग्रहों आदि की शांति के उद्देश्य से की जाती है।

रुद्र-काली—स्त्री० [कर्म० स० या ष० त०] शक्ति या दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

रुद्र-कोटि—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जिसमें रुद्रों का निवास माना गया है।

रुद्र-गण—पु० [स० ष० त०] पुराणानुसार शिव के पारषद् या अनुचर जिनकी संख्या तीन करोड़ मानी जाती है।

रुद्र-गर्भ—पुं० [स० ब० स०] अग्नि। आग।

रुद्रज—पुं० [स० रुद्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] पारा।
वि० रुद्र से उत्पन्न।

रुद्र-जटा—स्त्री० [ष० त०] १ ईसरमूल। २ सौंफ। ३ एक प्रकार का क्षुप। जिसके पत्ते मयूर-शिखा के पत्तों की तरह के होते हैं।

रुद्रट—पु० [स०] काव्यालंकार नामक ग्रन्थ के रचयिता संस्कृत साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जो रुद्रभ और शतानंद भी कहलाते थे।

रुद्र-तनय—पु० [स०] जैन हरिवंश के अनुसार तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम।

रुद्र-ताल—पु० [सं० मध्य०स०] मृदंग का एक ताल जो सोलह मात्राओं का होता है। इसमे ११आघात और ५ खाली होते हैं।

रुद्र-तेज (जस्)—पुं० [स ष० त०] स्वामी कार्तिकेय।

रुद्रत्व—पुं० [स० रुद्र+त्व] रुद्र होने की अवस्था या भाव।

रुद्र-पति—पु० [ष० त०] शिव। महादेव।

रुद्र-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] १. दुर्गा का एक नाम। २. अतसी। अलसी।

रुद्र-पीठ—पु० [ष० त०] तान्त्रिकों के अनुसार एक पीठ या तीर्थ।

रुद्र-पुत्र—पु० [ष० त०] बारहवें मनु। रुद्रसावर्णि का एक नाम।

रुद्र-प्रयाग—पु० [ष० त०] उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले के अन्तर्गत एक तीर्थ।

रुद्र-प्रिय—पु० [ष० त०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रुद्र-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] १ पार्वती। २. हरीतकी-हड़। हर्रे।

रुद्र-बीसी—स्त्री० [सं० रुद्र+हि० बीस] फलित ज्योतिष में प्रभव आदि साठ संवत्सरों में अंतिम बीस संवत्सर या पर्व जो संसार के लिए बहुत कष्टदायक कहे गये है। रुद्र-विंशति।

रुद्र-भू—पुं०[ष० त०] श्मशान। मरघट।

रुद्र-भूमि—स्त्री०[ष० त०]१ श्मशान। २. एक विशेष प्रकार की भूमि। (ज्यो०)

रुद्र-भैरवी—स्त्री०[ष० त०] दुर्गा की एक मूर्ति।

रुद्र-यज्ञ—पुं०[मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो रुद्र के उद्देश्य से किया जाता है।

रुद्रयामल—पुं०[मध्य० स०] तान्त्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें भैरव और भैरवी का संवाद है।

रुद्र-रोदन—पुं०[सं०] स्वर्ण। सोना।

रुद्र-रोमा—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

रुद्र-लता—स्त्री० [मध्य० स०] रुद्र जटा (क्षुप)।

रुद्र-लोक—पुं० [ष० त०] वह लोक या स्थान जिसमें शिव और रुद्रों का निवास माना जाता है।

रुद्रवंती—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध वनौषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग में होती है।

रुद्रवत—पुं०=रुद्रवान्।

रुद्र-वदन—पुं०[ष० त०]१. महादेव के पाँच मुख। २ पाँच की संख्या का सूचक शब्द।

रुद्रवान् (वत्)—वि०[सं० रुद्र+मतुप्] रुद्रगणों से युक्त।
पुं० १ सोम। २ अग्नि। ३ इन्द्र।

रुद्र-विंशति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] साठ संवत्सरों के अन्तिम २० संवत्सरों का समूह जो अमांगलिक और कष्ट-प्रद कहा गया है। रुद्रबीसी।

रुद्र-वीणा—स्त्री०[ष० त०] एक तरह की पुरानी चाल की वीणा।

रुद्र-सावर्णि—पुं०[सं० मध्य० स०] बारहवें मनु। (पुराण)

रुद्र-सुंदरी—स्त्री०[ष० त०] देवी की एक मूर्ति।

रुद्र-सू—स्त्री०[सं० रुद्र√सू (प्रसव)+क्विप्] वह जननी या माता जिसकी ग्यारह संतानें हों।

रुद्र-स्वर्ग—पुं०=रुद्र-लोक। (दे०)

रुद्र-हिमालय—पुं०[मध्य० स०] हिमालय पर्वत की एक चोटी।

रुद्र-हृदय—पुं०[ष० त०] एक उपनिषद् जो प्राचीन दस उपनिषदों से अलग है।

रुद्रा—स्त्री०[सं० रुद्र+टाप्]१. रुद्रजटा नामक क्षुप। २ नलिका नाम गन्ध द्रव्य। अदित-मंजरी। मुक्तवर्चा।

रुद्र-क्रीड—पुं०[रुद्र-आक्रीडा, ब० स०] रुद्र या शिव का क्रीडा-स्थल; अर्थात् मरघट या श्मशान।

रुद्राक्ष—पुं०[रुद्र-अक्षि, ष० त०,+अच्]१ एक प्रकार का वृक्ष जिसके बीजों को पिरोकर पहनने तथा जपने के लिए मालाएँ बनाई जाती हैं। २. उक्त पेड़ का बीज जो शिव का परम प्रिय कहा गया है।

रुद्राणी—स्त्री० [सं० रुद्र+ङीष् आनुक्] १ रुद्र अर्थात् शिव की पत्नी पार्वती। शिवा। २. ग्यारह वर्षों की कन्या की संज्ञा। ३. रुद्र-जटा नामक लता। ४ संगीत में एक प्रकार की रागिनी, जो मेघ-राग की पुत्र-वधू कही गई है। (कुछ लोग इसे मकर रागिनी भी मानते हैं)

रुद्रारि—पुं०[रुद्र-अरि, ब० स०] कामदेव।

रुद्रावास—पुं०[रुद्र-आवास, ष० त०] शिव का निवास स्थान। काशी, कैलास, श्मशान आदि।

रुद्राप—पुं०=रुद्राक्ष।

रुद्रिय—पुं०[सं० रुद्र+घ—इय] १. रुद्र संबंधी। रुद्र का। २. रुद्र से उत्पन्न। ३. रुद्र की तरह भयानक। डरावना। ४. आनन्द देने-वाला।

रुद्री—स्त्री०[सं० रुद्र+ङीप्] १ वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ जिनका पाठ बहुत शुभ माना जाता है। २. एक प्रकार की वीणा। रुद्र वीणा।

रुद्रोपनिषद्—स्त्री०[सं० रुद्र उपनिषद्, मध्य० स०] एक उपनिषद् का नाम।

रुधिर—पुं०[सं०√रुध् (आवरण)+किरच्]१ शरीर में का रक्त। शोणित। लहू। खून।
विशेष—मुहा० के लिए दे० 'खून' और 'लहू' के मुहा०।
२ कुंकुम। केसर। ३ मंगल ग्रह। ४. रुधिराख्य नामक रत्न।

रुधिर-गुल्म—पुं०[मध्य० स०] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके पेट में एक तरह का गोला-सा घूमता रहता है। (जिससे गर्भ का भ्रम होता है।) (वैद्यक)

रुधिरपायी (यिन्)—वि०[सं० रुधिर√पा (पीना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० रुधिरपायिनी] १ खून पीने वाला। २ रक्त पिपासक।
पुं० राक्षस।

रुधिर-लीहा—स्त्री० [मध्य० स०] प्लीहा नामक रोग का एक भेद। (वैद्यक)

रुधिर-विज्ञान—पुं०[ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें रुधिर में रहनेवाले तत्वों और उनमें उत्पन्न होनेवाले कीटाणुओं या विकारों का विवेचन होता है। (हेमोकालोजी)

रुधिर-वृद्धि-दाह—पुं० [सं० रुधिर-वृद्धि, ष० त०, रुधिरवृद्धि-दाह, ब० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह में से एक प्रकार की बू निकलने लगती है।

रुधिराक्त—वि०[सं० रुधिर-अक्त, तृ० त०]१ जिसमें बहुत-सा रुधिर या लहू हो। खून से भरा। २ रुधिर या लहू की तरह लाल। ३. खून से तर या भीगा हुआ।

रुधिराख्य—पुं०[रुधिर-आख्या, ब० स०] एक प्रकार का रत्न।

रुधिरानन—पुं०[रुधिर-आनन, ब० स०] फलित ज्योतिष में मंगल ग्रह की एक प्रकार की वक्र गति।

रुधिरामय—पुं० [रुधिर-आमय, मध्य० स०] रक्तपित्त नामक रोग।

रुधिराशन—वि०[रुधिर-अशन, ब० स०] जिसका भोजन रुधिर हो। (खटमल, जोंक, मच्छर आदि)

रुधिराशी (शिन्)—वि० पुं०[सं० रुधिर √अश् (खाना)+णिनि]=रुधिराशन।

रुधिरोद्गारी (रिन्)—पुं० [सं० रुधिर-उद्√गृ (लीलना)+णिनि, उप० स०] [illegible] साठ संवत्सरों में से सत्तावनवाँ संवत्सर।

अंग से होनेवाला शब्द। २. झनकार

रुनाई—स्त्री०[स० अरुण+हि० आई (प्रत्य०)] लालहोने की अवस्था या भाव। लाली। सुर्खी।
रुनित—वि०=रुणित (बजता हुआ)।
रुनी—पु०[देश०] घोडो की एक जाति।
रुनक-झुनुक—स्त्री०[अनु०] रुनझुन। (दे०)
रुनुल—पु०[देश०] एक प्रकार का वेत।
रुपना—अ०[हि० रोपना का अ०] १ रोपा जाना। जैसे—खेत मे धान रुपना। २ दृढतापूर्वक गाडा, जमाया या लगाया जाना। जैसे—पैर रुपना।
रुपमनि—वि०=रुपवती।
रुपया—पु०[स० रूप्य]१ चाँदी का सिक्का। २ पुराने ६४ पैसो या १०० नए पैसो के मूल्य का नोट या सिक्का।
मुहा०—रुपया उठाना=धन व्यय करना। रुपया खड़ा करना=नकद धन उगाहना या प्राप्त करना। रुपया ठीकरी करना=रुपए का बहुत बुरी तरह से अपव्यय करना।
३. धन-दौलत। सम्पत्ति।
मुहा०—रुपया पानी मे फेंकना=धन बरबाद करना या लुटाना।
पद—रुपया पैसा =धन-दौलत। सम्पत्ति।
रुपल्ली—स्त्री०[हि० रुपया]=रुपया (उपेक्षा और तुच्छता का सूचक) उदा०—एम० ए० बी० ए० पास करके चालीस-चालीस रुपल्ली की नौकरी के लिए मारे-मारे फिरते है। —राहुल साकृत्यायन।
रुपहरा†—वि०=रुपहला।
रुपहला—वि०[हि० रुपा=चाँदी+हला (प्रत्य०)] [स्त्री० रुपहली] रुपा अर्थात् चाँदी के रग का। चाँदी का सा। उज्ज्वल तथा चमकीला। जैसे—रुपहला गोटा, रुपहला काम।
रुपा—पु०=१.=रुपया। २ =रूपा (चाँदी)।
रुपैया†—पु०=रुपया।
रुपौला—वि०[स्त्री० रुपौली]=रुपहला।
रुबा—वि०[फा०] [भाव० रुबाई]१ ले जानेवाला। २ मोहित करने या लुभानेवाला। जैसे—दिलरुबा।
रुबाई—स्त्री०[अ०] [बहु० रुबाईयात]१ उर्दू फारसी मे एक प्रकार की मुक्तक कविता जिसमे चार चरण या मिसरे होते है और जो प्राय हजाज नामक छद मे होती है। इसमे तीसरे चरण या मिसरे को छोडकर शेष तीनो मे काफिया और रदीफ दोनो होते है। फारसी मे इसे 'तराना' भी कहते है। २ एक प्रकार का चलता गाना।
स्त्री० [फा०] रुबा होने की अवस्था या भाव।
रुबाई एमन—पु०[हि०रुबाई+एमन] एक प्रकार का राग। (सगीत)
रुमंचा—पु०=रोमाच।
रुमण—पु०[स०]रामायण के अनुसार एक वानर जो सौ करोड वानरो का यूथपति कहा गया है।
रुमण्वान् (ण्वत्)—पु०[स०]१ एक प्राचीन ऋषि। २ पुराणानुसार एक पर्वत।
रुमांचित†—वि०=रोमाचित।
रुमा—स्त्री०[स०] सुग्रीव की पत्नी। (वाल्मीकि)
रुमाल—पु०=रूमाल।
रुमालिया—स्त्री०१ =रूमाल। २.=रुमाली।
रुमाली—स्त्री०[फा० रुमाल]१. एक प्रकार का लगोट जिसमें दोनों ओर कमर मे बाँधने के लिए बंद लगे रहते हैं। २. मुगदर घुमाने का एक ढग।
रुमावली—स्त्री०=रोमावली।
रुराई—स्त्री० [हि० रुरा+आई(प्रत्य०)] रुरा होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता।
रुरु—पु० [स०√रु (शब्द)+क्रुन्]१. काला हिरन। कस्तूरी मृग। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३ एक भैरव का नाम। ४. एक प्रकार का फूलदार वृक्ष। ५. एक क्रूर तथा भयानक जतु। ६. एक ऋषि। ७ देवताओ का एक गण। ८ सावर्णि मनु के मन्तर्षियों मे से एक।
रुरुआ—पु०[हि० ररना, ररुआ] एक तरह का उल्लू।
रुलना—अ०[स०लुलन]१. स्थायी वास स्थान का अभाव होने पर कभी कही तो कभी कही भटकते फिरना। २. दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर मारा फिरना। ३. (वस्तु का) इधर-उधर पड़ी होना अथवा उठाई-पटका या छोडी-फेंकी होना।
रुलाई—स्त्री०[हि० रोना+आई (प्रत्य०)] १ रोने की क्रिया या भाव। २. रोने की प्रवृत्ति।
क्रि० प्र०—आना।—छूटना।
रुलाना—स० [हि० रोना का प्रे०] दूसरे को रोने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम या बात करना जिससे कोई रोने लगे।
स० [हि०रुलना] ऐसा काम करना जिससे कोई चीज या व्यक्ति रुले।
रुलनी—स्त्री०[देश०] रोहिणी की तरह की पर उससे छोटी एक वनस्पति।
रुल्ल, रुल्ला—स्त्री० [देश०] वह भूमि जिसकी उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो और जिसे परती छोड़ने की आवश्यकता हो।
रुवा†—पुं०= रुआ।
रुवाई=रुलाई।
रुवाब—पुं०=रोब।
रुशना—स्त्री०[स०] रुद्र की एक पत्नी। (भागवत)
रुष्—पु०[सं०√रुष्(क्रोध)+क्विप्]क्रोध। गुस्सा। रोष।
रुषा—स्त्री०[स०√ रुष्+टाप्] क्रोध। गुस्सा।
रुषित—भू० कृ०[सं०√ रुष्+क्त]१. जिसे रोष हुआ हो। अप्रसन्न। क्रुद्ध। नाराज। २ जिसे दु.ख पहुँचा हो। दुखित।
रुषेसर—पुं०=ऋषीश्वर।
रुष्ट—भू० कृ०[सं० रुष्+क्त]१. रोष से भरा हुआ। क्रुद्ध। २ रूठा हुआ। ३ अप्रसन्न। नाराज।
रुष्टता—स्त्री० [स० रुष्ट+तल्+टाप्] रुष्ट होने की दशा या भाव। रुष्ट व्यक्ति के मन मे होनेवाला भाव। अप्रसन्नता। नाराजगी।
रुष्ट-पुष्ट—वि०=हृष्ट-पुष्ट।
रुष्टि—स्त्री०[स०√रुष्+क्तिन्]१. रुष्टता। २. रोष।
रुसना—अ०=रूसना।
रुसवा—वि०[फा० रुस्वा] [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो। निंदित। बदनाम।

रुसवाई—स्त्री०[फा० रुस्वाई]रुस्वा होनेकी अवस्था या भाव। बदनामी। निंदा।

रुसा—पु०=रूसा (अडूसा)।

रुसित—वि०=रुषित (रुष्ट)।

रुसूख—पु०[अ०]१. पहुँच। रसाई। २. एतबार। विश्वास। ३ दृढता। ४. मेल-जोल। प्रेम-व्यवहार। ५ कुशलता। दक्षता।

रुसूम—पु० [अ० 'रस्म' का बहु० रूप] रस्में।
†पु०=रसूम (कर)।

रुसूल—पु०[अ०]'रसूल' का बहु० रूप।

रुस्ट—वि०=रुष्ट।

रुस्तम—पु०[अ०]१. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन ईरानी पहलवान, जो अपने समय मे सबसे अधिक बलवान माना जाता था।
विशेष—फिरदौसी शाहनामे मे इसकी वीरता का वर्णन किया है।
२. बहुत बड़ा शूर-वीर।
पद—छिपा रुस्तम।(दे०)

रुस्तमखानी—स्त्री०[फा०] १. रुस्तम का सा पौरुष अथवा बल-वीर्य। २. अपने महत्त्व या शक्ति का बहुत बड़ा अभिमान या घमड।

रुहठि—स्त्री० [हिं० रूठना] रूठे हुए होने की अवस्था या भाव।

रुहा—स्त्री०[स०√रुह् (उगना)+क+टाप्]१ दूब। २ अतिबला। ३ मास रोहिणी लता। ४ लजालू। लाजवती।

रुहिर— पु०=रुधिर (खून)।

रुहेलखड—पु० [हिं० रुहेला] अवध के उत्तर-पश्चिम पडनेवाला प्रदेश जहाँ रुहेले पठान बसे थे।

रुहेला—पु० [?] पठानो की एक जाति जो प्राय किसी समय अवध के उत्तर-पश्चिम मे आकर बसी थी।

रूंख—पु०=रूख (वृक्ष)।

रूंखड़—पु० [हिं०रूखा] 'अलख' कह कर भिक्षा माँगनेवाले एक प्रकार के साधु।
विशेष—ये साधु कमर मे एक बडा सा घुघरू बाँधे रहते है।
† पु०=रोगटा।

रूंगटा—पु०=रोगटा।

रूंगटाली—स्त्री० [हिं० रूंगटा+वाली=आली] भेड़। गाडर।

रूंगा—पु० [स० रुक=उदारता] खरीददार को सतुष्ट रखने के लिए उसे सौदे से अधिक या अतिरिक्त दी जानेवाली चीज। उदा०—जो आप अपने सौजन्य के साथ रूंगे मे दे रहे है।—अज्ञेय।

रूंदना--स० १.=रौंदना। २.=रूंधना।

रूंध—स्त्री० [हिं० रूंधना] रूंधने या रूंधे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
† वि०रुद्ध (रुका हुआ)।

रूंधना—स० [स० रुधना] १ मार्ग आदि रोक या बद कर देना। रास्ते मे रुकावट खडी करना या विघ्न डालना। २ खेत आदि को काँटेदार झाड़ो या तारो से घेरना। ३ घेरना।

रू—पु० [फा०] १. चेहरा। मुँह।
पद—रू-रिआयत=(क) पक्षपात। (ख) शील-सकोच। मुरौवत।
मुहा०—रू से=अनुसार। जैसे—कानून या मजहब की रू से ऐसा नही होना चाहिए।
२. आगे ऊपर या सामने का भाग।
पद—रू-पुश्त=बाहर-भीतर, आगे-पीछे या दोनो ओर।
३. कारण। वजह। ४ आशा। उम्मीद।

रूआ—स्त्री० [हिं० रूसा] एक प्रकार की बहुत सुगधित घास।

रूई—स्त्री० [स० रोम, प्रा० रोवा=हिं० रोवा, रोईं] १. कपास के ढोढ़ी या कोश के अन्दर का घूआ। तूल।
क्रि०प्र०—तूमना।—धुनकना।—धुनना।
पद—रूई का गाला=(क) रुई के गाले की तरह कोमल या सफेद। (ख) सुदर तथा सुकुमार।
मुहा०—रूई की तरह तूम डालना=(क) अच्छी या पूरी तरह से छिन्न-भिन्न या दुर्दशाग्रस्त करना।(ख) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ग) गहरी छान-बीन करना। रूई की तरह धुनना=अच्छी तरह मारना पीटना।(अपनी)रूई सूत मे उलझना या लिपटना=अपने काम मे लगना। अपने काम-काज मे फँसना।
२. बीजो आदि के ऊपर का रोआँ। जैसे—सेमल की रुई।

रूईदार—वि० [हिं० रूई+फा० दार (प्रत्य०)] (सिला हुआ वस्त्र) जिसमे रूई भरी गई हो। जैसे—रूईदार अगा, रूईदार बडी।

रूक—पु० [स० वृक्ष, प्रा०रुक्ख] एक प्रकार का पेड जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं।
† पु० [स० रुक] रूँगा हुआ। घलुआ।
स्त्री० [स० रूक्षा] तलवार। (डि०)

रूका—पु० [?] पुकारने की क्रिया या भाव। पुकार।
क्रि० प्र०—पडना।

रूक्ष—वि० [स०√रूक्ष् (कठोर)+अच्] [स्त्री० रूक्षा] १ पदार्थ जो चिकना या कोमल न हो। रूखा। स्निग्ध का उलटा। २ कडा तथा खुरदुरा। ३ (व्यक्ति) जिसके स्वभाव मे, उदारता, कोमलता, सौजन्य, स्नेह आदि बाते न हो।

रूख—पु० [स०वृक्ष, प्रा० रुक्खा] १. पेड। वृक्ष। २.नरकट। नरसल।
† वि०=रूखा।

रूखड़ा—पु० [हिं० रूख] [स्त्री० अल्पा० रूखडी] पेड। वृक्ष।
वि०=रूखा।

रूखना—अ०=रूठना।

रूखरा—पु०=रूखडा (वृक्ष)।
वि०=रूखा।

रूखा—वि० [स० रूक्ष; प्रा० रूख]१. जिसमे चिकनाहट या स्निग्धता का अभाव हो। अस्निग्ध। 'चिकना' का विपर्यय। २ जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पडे या न लगे हो। जैसे—रूखी रोटी। ३. (भोजन) जिसके साथ कोई स्वादिष्ट पदार्थ न हो अथवा जिसे स्वादिष्ट बनाने का प्रयत्न न किया गया हो। जैसे—रूखी-सूखी खाकर दिन बिताना।
पद—रूखा सूखा, रूखो-सूखो। (दे०)
४ जिसमे आर्द्रता या रस न हो। रूखा। शुष्क। नीरस। ५ (व्यक्ति या स्वभाव) जिसमे कोमलता, दयालुता, स्नेह आदि मधुर वृत्तियो का अभाव हो।६ (कथन या व्यवहार) जिसमे आत्मीयता, उदारता,

सौजन्य आदि का अभाव हो। जैसे—रूखी बातें या रूखा व्यवहार। मुहा०—रूखा पड़ना या होना=(क) बेमुरौवती करना। (ख) क्रुद्ध या नाराज होना।
७. उदासीन। विरक्त। ८ जिसका तल सम न हो। खुरदुरा। जैसे—यह कागज कुछ रूखा दिखाई पड़ता है।
पद—रूखा माल=नक्काशी किया हुआ बरतन। (कसेरे)
पु० एक प्रकार की छेनी।

रूखापन—पु० [हिं० रूखा+पन (प्रत्य०)] १ रूखे होने की अवस्था, गुण या भाव। रुखाई। २ खुश्की। नीरसता। ३ व्यवहार आदि की कठोरता या हृदयहीनता।

रूखा-सूखा—वि० [हिं०] [स्त्री० रूखी-सूखी] (रोटी या भोजन) बिना घी तथा मसाले का बना हुआ।

रूचना—अ०, स०=रुचना।

रूछ—वि०=रूक्ष (रूखा)।

रूज—पु० [अ०] एक प्रकार की बुकनी जिससे सोने-चादी पर कलई करते हैं।

रूझना†—अ०=अरुझना (उलझना)।

रूठ—स्त्री० [स० रुष्ठि;प्रा० रुट्ठि] १ रुठने की क्रिया या भाव। २. क्रोध। गुस्सा।

रूठन—स्त्री०=रूठ।

रूठना—अ० [स० रुष्ट प्रा० रुट्ठ+ना (प्रत्य०)] १ किसी के विरुद्ध आचरण करने के कारण किसी से अप्रसन्न होना। जैसे—पैसा न मिलने के कारण बच्चे का रूठना। २. किसी के अनुचित या अप्रत्याशित व्यवहार से इतना दुखी होना कि उसके बुलाने तथा मनाने पर भी जल्दी न बोलना तथा न मानना।

रूठनि—स्त्री०=रूठन।

रूड़ा† —वि०=रूरा।

रूढ़—वि० [स०√रुह् (उद्भव)+क्त] [स्त्री० रूढ़ा] १ किसी के ऊपर चढ़ा हुआ। आरूढ़। २ उत्पन्न। जात। ३. ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ४ लोक में चलता हुआ। प्रचलित। जैसे—इस शब्द का रूढ़ अर्थ तो यही है। ५ उजड्ड। गँवार। ६. कठोर। कड़ा। ७. अविभाज्य (गणित की सख्या)। ८. व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान में वह शब्द जो यौगिक से भिन्न किसी और अर्थ में प्रयुक्त होता हो।

रूढ़-यौवना—स्त्री०=आरूढ़ यौवना। (नायिका)

रूढ़ा—स्त्री० [स० रूढ़+टाप्]=रूढ़ि-लक्षण।

रूढ़ि—स्त्री० [स०√रुह् +क्तिन्] १ चढ़ाई। चढ़ाव। २ बढ़ती। वृद्धि। ३. उठान या उभार। ४ आविर्भाव या उत्पत्ति। ५ ख्याति। प्रसिद्धि। ६ परपरा से चली आई हुई कोई ऐसी चाल या प्रथा जिसे साधारणत सब लोग मानते हों अथवा जिसका पालन लोक में होता हो। (कन्वेन्शन) ७. मन में की हुई धारणा निश्चय या विचार। ८. वह शब्दशक्ति जिससे शब्द अपने रूढ़ अर्थ का ज्ञान कराता है।

रूढ़ि-लक्षणा—स्त्री० [स० मध्य०स०] साहित्य मे, लक्षणा के दो प्रमुख भेदों में से एक, जिसमें मुख्य अर्थ के बाधित होने पर अर्थ-सम्बन्धी कोई दूसरा लक्ष्यार्थ निकलता या लिया जाता है। (दूसरा प्रमुख भेद प्रयोजनवती लक्षणा है।)

रूतना—अ० [स० रत] किसी काम में रत होना। लगना। उदा०—णाणा रण रूता नर नेहीं करै।—कबीर।

रूदाद—स्त्री० [फा० रूएदाद] १. समाचार। वृत्तात। हाल। २. अवस्था। दशा। हालत। ३. कैफियत। विवरण। ४ प्रबंध। व्यवस्था। ५. अदालत में किसी मुकदमे के सबध में होनेवाली कार्यवाही। ६. किसी काम या बात का वह रग-ढग जिससे उसके भविष्य का अनुमान हो सकता है।

रूनुमा—वि० [फा०] [भाव० रूनुमाई] मुँह दिखानेवाला।

रूनुमाई—स्त्री० [फा०] मुह-दिखाई।

रूप—पु० [स०√रूप् (बनाना, देखना आदि)+अच्] १. किसी पदार्थ का वह बाह्य गुण या विशेषता (आयतन, वर्ण आदि से भिन्न) जिससे उसकी बनावट का पता चलता है। पिंड, शरीर आदि की बनावट का प्रकार और स्थिति सूचित करनेवाला तत्त्व। आकृति। शकल। सूरत।
पद—रूप-रेखा। (देखें)
२. देह। शरीर। किसी विशिष्ट प्रकार की आकृति, वेश-भूषा आदि से युक्त शरीर। जैसे—बहुरुपिया, नित्य नए-नए रूप धारण करता है। मुहा०—रूप भरना=(क) भेस बनाना। वेश धारण करना। (ख) किसी तरह का तमाशा, मजाक या स्वाग खड़ा करना।
३. किसी तत्व, बात या वस्तु की वह स्थिति जिसके फलस्वरूप वह किसी पृथक् तथा स्वतन्त्र गुण या विशेषता से युक्त होकर कुछ अलग या नए प्रकार का काम करता या परिणाम दिखलाता है। प्रकार। भेद। जैसे—(क) प्राचीन भारत में शासन के कई रूप प्रचलित थे। (ख) उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगाकर किसी शब्द के अनेक रूप बनाये जा सकते हैं। (ग) इस योजना को अब एक नया रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है ४. कोई कार्य करने की नियत और व्यवस्थित पद्धति या प्रणाली। जैसे—(क) उनके कुल मे विवाह सदा इसी रूप मे होता चला आया है। (ख) यह मत्र सदा इसी रूप में लिखा जाना चाहिए। ५. दृश्य पदार्थ या वस्तु। जैसे—प्रकृति कहीं पर्वत के रूप मे और कहीं समुद्र के रूप मे व्यक्त होती है। ६. खूबसूरती। सुदरता। (किसी का) रूप हरना=अपनी बढ़ी हुई सुन्दरता के फलस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि सामनेवाली चीज या व्यक्ति कुछ भी सुन्दर न जान पड़े।
७. प्रकृति स्वभाव। ८ प्रकार। भेद। ९ नमूना। प्रतिमान। १०. बराबरी। समता। समानता। ११. गणित में एक की सूचक सज्ञा। १२. नाटक। रूपक।
वि० खूबसूरत। रूपवान्। सुन्दर।
अव्य० किसी के रूप के तुल्य या सदृश्य बराबर या समान। उदा०—बोलहु सुआ पियारे नाहाँ। मोरे रूप कोऊ जग माहाँ।—जायसी।
†पु०=रूपा (चाँदी)।

रूपक—वि० [सं०√रूप्+णिच्+ण्वुल्–अक] जिसका कोई रूप हो। रूप से युक्त। रूपी।
पु० १. किसी रूप की बनाई हुई प्रतिकृति या मूर्ति। २. किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। ३. प्रकार। भेद। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राचीन परिमाण। ५. चाँदी। ६. रुपया नाम का सिक्का

जो चाँदी का होता है। ७ चाँदी का बना हुआ गहना। ८. ऐसा काव्य या और कोई साहित्यिक रचना, जिसका अभिनय होता हो, या हो सकता हो। नाटक।

विशेष—पहले नाटक के लिए 'रूपक' शब्द ही प्रचलित था, और रूपक के दस भेदो मे नाटक भी एक भेद मात्र था। पर अब इसकी जगह नाटक ही विशेष प्रचलित हो गया है। रूपक के दस भेद ये हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अक, वीथी और प्रहसन।

९. साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे बहुत अधिक साम्य के आधार पर प्रस्तुत मे अप्रस्तुत का आरोप करके अर्थात् उपमेय मे उपमान के साधर्म्य का आरोप करके और दोनो भेदो का अभाव दिखाते हुए उपमेय का उपमान के रूप मे ही वर्णन किया जाता है। इसके साग रूपक, अभेद रूपक, तद्रूप रूपक, न्यून रूपक, परम्परित रूपक आदि अनेक भेद हैं। १० बोल-चाल मे कोई ऐसी बनावटी बात, जो किसी को डरा-धमकाकर अपने अनुकूल बनाने के लिए कही जाय। जैसे—तुम डरो मत, यह सब उनका रूपक भर है।

क्रि० प्र०—कसना। —बाँधना।

११. संगीत मे सात मात्राओ का एक दो-ताला ताल, जिसमे दो आघात और एक खाली होता है।

रूपक-कार्यक्रम—पु० [स० ष० त०] आकाश वाणी द्वारा प्रसारित होनेवाले नाटकों, प्रहसनों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला कार्यक्रम। (फीचर प्रोग्राम)

रूप-कर्ता (र्तृ)—पु० [सं० ष० त०] विश्वकर्मा।

रूपकातिशयोक्ति—स्त्री० [स० रूपक-अतिशयोक्ति, कर्म० स०] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे वर्णन तो रूपक की तरह का ही होता है, पर केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेय का स्वरूप उपस्थित किया जाता है।

रूपकृत्—पु० [स० रूप√कृ (करना)+क्विप्] विश्वकर्मा।

रूपक्राता—स्त्री० [स०] सत्रह अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

रूप-गर्विता—स्त्री० [स० तृ० स०] साहित्य मे, वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो।

रूप-घनाक्षरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] ३२ वर्णोवाला एक प्रकार का मुक्तक दडक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ वर्णो पर यति होती है। इसके अत मे लघु होना आवश्यक है।

रूप-चतुर्दशी—स्त्री० [स० मध्य० स०] कार्तिक बदी चौदस। नरक चतुर्दशी।

रूप-जीविनी—स्त्री० [स०रूप√जीव् (जीना)+णिनि+ङीप्] रूप जिसकी जीविका का आधार हो। रडी। वेश्या।

रूपण—पुं० [स०√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आरोप करना। आरोपण। २. प्रमाण। सबूत। ३. जाँच। परीक्षा।

रूपता—स्त्री० [स० रूप+तल्+टाप्] रूप का गुण, धर्म या भाव। २ खूबसूरती। सौन्दर्य।

रूपधर—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० रूपधरा] सुदर। खूबसूरत।

रूप-धेय—पु० [स० रूप+धेय] किसी प्रकार के ठोस पदार्थ (पिंड, भूमि आदि) की समोच्च रूप रेखा। (कॉन्टूर)

रूप-नाशक—पु० [स० ष० त०] उल्लू। वि० रूप नष्ट करनेवाला।

रूप-पति—पु० [स० ष० त०] विश्वकर्मा।

रूप-भेद—पु० [स० ष० त०] किसी काम या बात के रूप मे किया हुआ आंशिक परिवर्तन।

रूप-मंजरी—स्त्री० [स० रूप+मजरी] १. एक प्रकार का फूल। २. सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

पु० एक प्रकार का धान और उसका चावल।

रूप-मनी—वि० [हिं० रूपमान] रूपवती।

रूपमय—वि० [स० रूप+मयट्] [स्त्री० रूपमती] रूप अर्थात् सौन्दर्य से भरा हुआ या पूर्णत युक्त। परमसुन्दर।

रूप-मांजरी—स्त्री०, पु०=रूप-मजरी।

रूपमान—वि० [स्त्री० रूपमनी]=रूपवान्।

रूप-माला—स्त्री० [स० ष० त०] १. एक प्रकार का सम-वृत्त मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ और १० के विश्राम मे २४ मात्राएँ होती हैं। २. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमसे रगण, मगण, जगण, जगण, भगण और अत मे गुरु लघु होता है।

रूपमाली (लिन्)—स्त्री० [स० रूपमाला+इनि] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन मगण या नौ दीर्घ वर्ण होते है।

रूपया—पु०=रुपया।

रूप-रूपक—पु० [स० मध्य० स०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम है।

रूप-रेखा—स्त्री० [स० ष० त०] १. रेखाओ आदि के रूप मे होनेवाला वह अकन जिसमे किसी पदार्थ के आकार-प्रकार का स्थूल ज्ञान होता हो, फिर भी जिससे उस पदार्थ के उभार, गहराई, मोटाई आदि का ज्ञान हो। रेखाओ द्वारा अकित चित्र। २ किसी कार्य के संबंध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक तथा ब्योरे आदि की बातो से रहित होती और उसके सक्षिप्त विवरण या साराश के रूप में होती है। ३. किसी चित्र की वह बाहरी रेखा जिसमे वह चित्र घिरा रहता है। (आउट लाइन, सभी अर्थों मे)

रूपवंत—वि० [स० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] जिसमे सौन्दर्य हो। खूबसूरत। रूपवान्।

रूपव—वि०=रूपवान्।

रूपवती—स्त्री० [स० रूप+मतुप्+ङीप्] १. केशव के अनुसार एक प्रकार का छद, जिसे छदप्रभाकर मे 'गौरी' कहा गया है। २ चपक-माला वृत्त का एक नाम।

वि० सुदरी (स्त्री)।

रूपवान् (वत्)—वि० [स० रूप+मतुप्] [स्त्री० रूपवती] सुदर रूप-वाला। खूबसूरत।

रूप-विधान—पु० [स० ष० त०] १. भाषा विज्ञान और व्याकरण का वह अग या शाखा जिसमे शब्दो की बनावट या रूप और उसमे होनेवाले विकारो आदि का विवेचन होता है। (मॉरफॉलोजी) २ दे० 'आकृति विज्ञान'।

रूपशाली (लिन्)—वि० [स० रूप√शाल् (शोभित होना)+णिनि] [स्त्री० रूपशालिनी] रूपवान्। सुन्दर।

रूप-श्री—स्त्री० [स० ष० त०] सम्पूर्ण जाति की एक सकर रागिनी।

बेल और बीच में काम बना रहता है और जो तिकोना दोहर कर ओढ़ने के काम में लाया जाता है। मुसलमानी शासन-काल में यह कमर में भी लपेटा जाता था। ३ पायजामे की काट में वह चौकोर कपड़ा जो दोनों मोहरियों की सन्धि में लगाया जाता है। मियानी। ४ ठगों का वह रूमाल जिसके एक कोने में चांदी का एक टुकड़ा बँधा रहता था।
क्रि० प्र०—लगाना।

रूमाली—स्त्री०[फा० रूमाल]१. छोटा रूमाल। २. एक प्रकार का लँगोट। ३ दे० 'रुमाली'।

रूमी—वि०[फा०]१. रूम देश संबंधी। रूम का। २ जो रूम देश में उत्पन्न हो या वहाँ से आता हो। जैसे—रूमी मस्तगी।
पुं० रूम देश का निवासी।
स्त्री० रूम देश की भाषा।

रूरना—अ०[सं० रोरवण]१. ऊँचे स्वर में बोलना। चिल्लाना। २ दहाड़ना। गरजना।

रूरा—वि०[सं० रूढ=प्रशस्त] [स्त्री० रूरी]१ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. खूबसूरत। सुन्दर।

रू-रिआयत—स्त्री० [फा०+अ०] किसी का ध्यान रखते हुए उसे दिया जानेवाला सुभीता या उसके साथ की जानेवाली रिआयत।

रूल—पु०[अं०] १. नियम। कायदा। २. शासन। ३. वह डंडा या पट्टी जिसकी सहायता से सीधी रेखाएँ या लकीरें खींची जाती हैं। रूलर। ४. सीधी खींची हुई रेखा या लकीर।
क्रि० प्र०—खींचना।

रूलदार—वि०[अं० रूल+फा० दार] जिस पर समानान्तर तथा सीधी रेखाएँ खिंची या बनी हो।

रूलर—पुं०[अं०]१ लकीर खींचने का डंडा या पट्टी। सलाका। २. शासक।

रूव—पुं०=रूख। (वृक्ष)।

रूपक—पु०[स०√रूप् (सजाना, ढकना) +ण्वुल्—अक]अडूसा। वासक।

रूषण—पु०[स०√रूष्+ल्युट्—अन] १ अलंकृत या भूषित करना। २. लेप लगाना। अनुलेपन। ३ ढकना। आच्छादन।

रूषा—वि०=रूखा।

रूस—पुं०[फा०]एक प्रसिद्ध देश जिसका आधा भाग युरोप में और आधा एशिया में पड़ता है।
स्त्री०[फा० रविश]चाल। (लश०)
स्त्री०[हिं० रूसना] रूसने की क्रिया या भाव।

रूसना—अ०[हिं० रोष]१ रुष्ट होना। रूठना।
सयो० क्रि०—जाना।—बैठना।
२. क्रुद्ध होना।

रूसा—पु०[स० रोहिष] एक प्रकार की सुगंधित घास। भूतृण।
†पुं०=अडूसी।

रूसी—वि०[फा०] १ रूस देश का। रूस देश सवंधी।
२. रूस देश में उत्पन्न या प्रचलित।
पुं० रूस देश का निवासी।
स्त्री० रूस देश की भाषा।
स्त्री०[देश०]सिर में पड़ी हुई भूसी की तरह दिखाई पड़नेवाली मैल।

रूह—स्त्री०[अ०]१. आत्मा। २. प्राण वायु। ३. अतःकरण। जैसे—वहाँ जाने को मेरी रूह नहीं कर रही है। ४ कई बार का खींचा हुआ अरक या इत्र।

रूह-अफज़ा—वि०[अ०+फा०] जीवन बढ़ानेवाला। प्राणवर्धक।

रूहड़—पु०[हिं० रूई]१ पुराने गद्दों, तकियों, लिहाफों आदि में की वह पुरानी रूई जो जमकर गुठलों या गूदड़ के रूप में हो गई हो। २. रूई का गुठला।

रूहना—अ०[स० रोहण] १ ऊपर चढ़ना। २. वेगपूर्वक आगे बढ़ना। उमड़ना।
स०=रूँधना।

रूहानियत—स्त्री०[अ०]१ आत्मवाद। २ अध्यात्मवाद।

रूहानी—वि०[अ०]१ रूह या आत्मा संबंधी। आत्मिक। जैसे—रूहानी ताकत। २ अंतःकरण सबंधी। हार्दिक। दिली।

रूही—वि०[देश०] एक वृक्ष।

रूहीमूल—पु०[हिं० रूही+मूल] रूही नामक वृक्ष की छाल और जड़। ईसरमूल।

रेंक—स्त्री०[हिं० रेंकना]रेंकने की क्रिया, भाव या शब्द।

रेंकना—अ०[अनु०]१ गधे का बोलना। २ बहुत बुरी तरह से चिल्लाते हुए गाना या बोलना।

रेंग—स्त्री०[हिं० रेंगना] रेंगने की क्रिया या भाव।

रेंगटा†—पु० [हिं० रेंग +टा] गधे का बच्चा।

रेंगना—अ०[स० रिंगण] १ जमीन के साथ पेट सटाकर हाथों-पैरों के बल खिसकते हुए आगे बढ़ना या चलना। जैसे—च्यूँटी या साँप का रेंगना। २ बच्चों का या बच्चों की तरह धीरे-धीरे और लड़खड़ाते हुए चलना। (बुन्देल०)
†अ०=रेंकना।

रेंगनी—स्त्री०[हिं० रेंगना] भट-कटैया।

रेंगाना—स०[हिं० रेंगना]१ किसी से रेंगने की क्रिया कराना। किसी को रेंगने में प्रवृत्त करना। २. बच्चों आदि को धीरे-धीरे चलाना। ३. व्यक्ति को चलाना या दौड़ाना।

रेंट—पु० [देश०] श्लेष्मा मिश्रित मल जो नाक से (विशेषत. जुकाम होने पर) निकलता है। नाक का मल।
क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

रेंटा—पुं०[देश०] लिसोढ़ा (फल)।
†पु०=रेंट।

रेंटिया—पु०[?]१. सूत कातने का चरखा। (गुज०)

रेंड़—पु०[स० एरण्ड]१. एक प्रकार का पौधा जो ६-७ हाथ ऊँचा होता है। २ इस पौधे के बीज जिनसे तेल निकलता है और जो दवा के काम आते हैं। ३. एक प्रकार की ईख। रेंडा।

रेंड़-खरबूजा—पुं०[हिं० रेंड+खरबूजा] पपीता।

रेंड़ना—अ०[हिं० रेड] फसली पौधों का विकसित होना।

रेंड़-मेवा—पु०[हिं० रेंड+मेवा] पपीता।

रेंड़ा—पु०[हिं० रेंड़]कुआर-कातिक में तैयार होनेवाला एक प्रकार का पेड़।
स्त्री० एक प्रकार की ईख।

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभाशुभ फल कहे जाते हैं। जैसे—अकुश-रेखा, ऊर्ध्व रेखा, कमल-रेखा आदि। ५ वह कल्पित लकीर जो आरभिक भारतीय ज्योतिषी अक्षाश सूचित करने के लिए सुमेरु से उज्जयिनी होती हुई लका तक खिंची या बनी हुई मानते थे। (दे० 'रेखा भूमि') ६ हीरे आदि रत्नो के बीच मे दिखाई पडने वाली लकीर जो एक दोष मानी जाती है। ७ आकार। आकृति। रूप। सूरत। ८ कतार। पक्ति।

रेखा-गणित—पु०[स० ब० स०] ज्यामिति। (दे०)।

रेखाचित्र—पु०[स० मध्य० स०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप का वह चित्र जो केवल रेखाओ से अकित किया गया हो। (ड्राइग) २ ऐसा चित्र जो केवल रेखाओ से बनाया गया हो, अर्थात् जिसमे बीच के उतार-चढाव, उभार-धँसाव आदि न हो। (डेलोनिएशन)

रेखा-भूमि—स्त्री०[स०मध्य० स०] वह भूमि या प्रदेश जो उस कल्पित रेखा के आस-पास पडते थे, जो प्राचीन काल मे अक्षाश स्थिर करने के लिए सुमेरु से उज्जयिनी होती हुई लका तक गई हुई मानी जाती थी।

रेखा-लेख—पु०[सं० सुप्सुपा स०] १ प्राय चित्र के रूप मे होनेवाला कोई ऐसा अकन जो परिकल्पनाओ, विचारो, स्थितियो आदि का परिचायक हो। आरेख। (डायाग्राम) २ दे० 'रेखा-चित्र'।

रेखावती—स्त्री० [सं० रेखा+मतुप्+ङीप्, वत्व] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

रेखित—भू० कृ०[स० रेखा+इतच्] १ रेखा के रूप मे खिंचा हुआ। अकित। लिखित। २ जिस पर रेखा अकित की गई हो। ३ दरकने, फटने आदि के कारण जिस पर रेखा पड गई हो।

रेख्ता—वि० पुं०=रेखता।

रेख्ती—स्त्री०=रेखती।

रेग—स्त्री०[फा०] रेत।

रेगमाही—पु०[फा०] प्राय रेतीले मैदानो मे रहनेवाला एक प्रकार का जानवर जिसका मास बहुत पौष्टिक माना जाता है। सकूकर।

रेगिस्तान—पु०[फा०][वि० रेगिस्तानी] भूमि का वह प्राकृतिक विस्तृत भाग जिसके ऊपर रेत या बालू ही भरा हो। मरुदेश।

रेगाना—स०[रे ग, आदि स्वर] १ सस्वर या स्वर लय से पाठ करना या गाना। २ रेकना। (दे०)

रेचक—वि०[स०+रिच् (विरेचन)+णिच्+ण्वुल्—अक] जिसके खाने से दस्त आवे। कोष्ठशुद्धि करनेवाला। दस्तावर।
पु० १ जमालगोटा। २ जवाखार। ३ पिचकारी। ४ प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमे खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

रेचन—पु०[स०√ रिच्+णिच्+ल्युट्—अन] १ दस्त लाकर पेट से मल निकालना। २ वह ओषधि जो पेट का मल निकालकर उसे साफ करे। जुलाब।

रेचनक—पु०[स०√रिच्+णिच्+ल्यु—अन+कन्] कमीला (वृक्ष)।

रेचनी—स्त्री० [स० रेचन+ङीप्] १ कमीला। २ दती। ३ बट-पत्री। ४ कालाजनी।

रेचित—पु० [स०√ रिच्+णिच्+क्त] १. घोडो की एक चाल। २. नृत्य मे हाथ से भाव बताने का एक प्रकार।

भू० कृ० रेचन क्रिया के द्वारा बाहर निकाला हुआ।

रेच्य—पु०[सं०√रिच् +णिच्+यत] १ प्राणायाम करते समय छोडी जानेवाली वायु। २ पेट से मल निकालने के लिए की जानेवाली दवा या क्रिया जानेवाला उपचार। जुलाब।
वि० जो रेचन क्रिया के द्वारा बाहर निकाला जाने को हो या निकाला जा सके।

रेज़—स्त्री०[फा०] १. पक्षियो का चहचहाना। कल-रव। २. गिराना। बहाना।
वि० गिराने या बहानेवाला। जैसे—अश्करेज़।

रेजगारी—स्त्री०[फा० रेज़गारी] १. एक रुपए के मूल्य के छोटे सिक्के। २. छोटे सिक्के।

रेजगी—स्त्री० [फा०] १. छोटे सिक्के। रेजगारी। २. सोना-चाँदी के तार के छोटे टुकड़े।

रेजस—पु०[फा०] घोडे का जुकाम।

रेजस छींभा—पु०=रेजस।

रेजा—पु०[फा० रेज़ः] १ किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकडा। सूक्ष्म खंड। कण। जर्रा। २ बहुमूल्य कपडो के खड या स्थान। ३ रत्नो आदि के खड या टुकडे। नग। ४. मजदूर लड़का जो बडे राजगीरो के साथ काम करता है। ५ वेश्या वृत्ति कराने के उद्देश्य से कुटनियो द्वारा पाली हुई लड्की। (बाजारू) ६ स्त्रियो के पहनने की अगिया। (बुदेल०) ७ सुनारो का एक औजार जिसमे गला हुआ सोना या चाँदी डालकर पासे के आकार का बना लेते हैं।

रेजिडेंट—पु०[अ०] वासामात्य। (दे०)

रेजिमेंट—स्त्री०[अ०] सेना का एक भाग। रिजमिट।

रेजिश—स्त्री०[फा०] जुकाम। प्रतिश्याय।

रेजु—पु०[हि०रेजा] एक प्रकार का रेशा जो पहले ब्रुश या कूँची बनाने के लिए विदेशो से आता था।

रेट—पु०[अं०] भाव। निर्ख।
†पु०=रेंट।

रेडक्रास—पु० [अ०] एक बहुत प्रसिद्ध अतर्राष्ट्रीय सस्था, जिसकी शाखाएं प्राय सभी सभ्य देशो और राष्ट्रो मे हैं, और जो राजनीतिक प्रपचो से बिलकुल अलग रहकर युद्ध और प्राकृतिक सकटो आदि के समय जनसेवा का काम करती है।

रेडियो—पु०=रेडियो।

रेडियम—पु०[अ०] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य प्रकार का खनिज पदार्थ जो कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज द्रव्यो से बहुत ही अल्पमात्रा मे पाया जाता है और अनेक वैज्ञानिक कार्यो के लिए बहुत अधिक उपयोगी होता है।

रेडियो—पु०[अ०] १ आधुनिक विज्ञान की वह क्रिया या प्रणाली जिसके अनुसार ध्वनियाँ, शब्द और सकेत बीच के तार द्वारा सबध स्थापित किये बिना ही केवल विद्युत् की सहायता से आकाश मार्ग से दूर दूर तक पहुँचाये जाते है। २ वे यन्त्र जो उक्त प्रकार से ध्वनियाँ, शब्द आदि चारो ओर प्रसारित करते है। ३ विशिष्ट रूप से वह छोटा यंत्र जिसकी सहायता से लोग घर बैठे उक्त प्रकार से प्रसारित की हुई ध्वनियाँ आदि सुनते हैं।

रेडियो चिकित्सा—स्त्री०[अ०+सं०] चिकित्सा की वह प्रणाली, जिसमे

रेडियो की रश्मियों के प्रभाव और प्रयोग से रोग अच्छे किये जाते हैं। (रेडियो थेरैपी)

रेडियो-चित्रण—पुं०[अं०+सं०] वह वैज्ञानिक क्रिया जिसमें घन पदार्थों के भीतरी अंगों, विकारों आदि के चित्र एक्सरे या रेडियो की रश्मियों की सहायता से लिये जाते अथवा किसी तल या परदे पर लिये जाते हैं। एक्स-रे चित्रण। (रेडियोग्राफी)

रेडियो नाटक—पुं०[अं०+सं०] रेडियो द्वारा प्रसारित किया जानेवाला कोई छोटा नाटक या रूपक जो श्रव्य ही होता है, दृश्य नहीं होता।

रेणु—स्त्री०[सं०√री (गति)+नु] १. धूल। बालू। ३. किसी चीज का बहुत छोटा कण। ४. वाय-विडंग। ५ सँभालू के बीज। ६. पृथ्वी। (डिं०)

रेणुका—स्त्री०[सं० रेणु+कन्+टाप्] १. बालू। रेत। २. धूल। रज। ३. सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ। ४. परशुराम की माता का नाम। ५. पृथ्वी। (डिं०)

रेणु-वास—पुं०[सं० ब० स०] भौंरा। भ्रमर।

रेणु-सार—पुं०[सं० ब० स०] कपूर।

रेत:कुल्या—स्त्री० [सं० ष० त०] एक नरक का नाम।

रेत (तस्)—पुं०[सं०√री (क्षरण)+असुन्, तुट्—आगम] १. वीर्य। शुक्र। २ पारा। ३ जल। पानी।

स्त्री० १. बालू। २ बालू से भरी भूमि। रेता।

†पुं०[हिं० रेती] बड़ी रेती (औजार)।

रेत-कुंड—पुं०[सं० रेत:कुंड] १ एक नरक। रेत: कुल्या। २ कुमायूँ के पास का एक तीर्थ।

रेतन—पुं०[सं० रेतस्] १ वीर्य। २ बीज।

रेतना—स०[हिं० रेती] १ रेती (औजार) से किसी बड़े पदार्थ का खुरदुरा तल इस प्रकार रगड़ना कि उस पर के महीन कण गिर जायँ और वह तल चिकना या सुडौल हो जाय। २ किसी वस्तु को काटने के लिए औजार की धार रगड़ना। जैसे—आरी से रेतना। ३. किसी तेज धारवाली चीज से धीरे-धीरे रगड़ते हुए कोई चीज काटना। जैसे—बकरी या मुरगी का गला रेतना। ४. लाक्षणिक अर्थ में किसी को निरंतर कष्ट या हानि पहुँचाना।

मुहा०—(किसी का) गला रेतना। (दे०)

रेतल—पुं० [देश०] भूरे रंग का एक प्रकार का छोटा पक्षी।

रेतला—वि०=रेतीला।

रेता—पुं०[हिं० रेत] १. बालू। २. गर्द। धूल। ३. मिट्टी। ४. बलुआ मैदान।

रेतिया—पुं० [हिं० रेतना+इया (प्रत्य०)] वह जो रेतने का काम करता हो। चीजें रेतनेवाला कारीगर।

वि०=रेतीला।

रेती—स्त्री० [हिं०रेतना] एक प्रकार का दानेदार औजार जिससे रगड़ या रेत कर पदार्थों का तल चिकना किया या छीला जाता है। (फाइल)

स्त्री०[हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] १. वह स्थान जहाँ रेत प्रचुर मात्रा में हो। २ रेतीला मैदान। ३. नदी की धारा के बीचो बीच टापू की तरह बलुई जमीन जो पानी घटने पर निकल आती है। नदी का टापू। जैसे—गंगाजी में इस साल रेती पड़ जाने से दो धाराएँ हो गई हैं।

क्रि० प्र०—पड़ना।

रेतीला—वि०[हिं० रेत+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] १ (स्थान) जहाँ पर बालू पड़ा या बिछा रहता हो। जैसे—रेतीला प्रदेश। २. (मिट्टी) जिसमें बालू मिला हुआ हो। बालुकामय।

रेत्र—पुं०[सं०√री (क्षरण)+त्र] १. वीर्य। शुक्र। २ अमृत। पीयूष। ३ खेमे, डेरे आदि जो रहने के लिए कपड़े से बनाये जाते हैं।

रेना—पुं० [देश०] किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से सटा या टिकाकर लटकाना।

रेनी—स्त्री०[सं० रंजनी] १ वस्तु जिससे रंग निकलता हो। रंग देने-वाली वस्तु।

स्त्री०[हिं० रेना=लटकाना] (रंगरेजों की) अलगनी।

रेनु—पुं०=रेणु।

रेनुका—स्त्री०=रेणुका।

रेप—वि०[सं०√रप् (गति)+अच्] १ निंदित। बुरा। २ क्रूर। निर्दय। ३ कंजूस। कृपण।

रेफ—पुं०[सं०√रिफ्+घञ् या र+इफन्] १ शब्द के बीच में पड़नेवाले र का वह रूप जो ठीक बादवाले स्वरांत व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। जैसे—कर्म, धर्म, विकर्ण। २. र अक्षर। रकार। ३. राग। ४. रव। शब्द।

वि०१. अधम। नीच। २. कुत्सित। निन्दनीय।

रेरना†—स०=टेरना।

रेरुआ—पुं०=रुरुआ (बड़ा उल्लू)।

रेल—स्त्री०[अं०] १. जमीन पर बिछी हुई लोहे की वह पटरी जिस पर रेलगाड़ी के पहिए चलते हैं। २. रेलगाड़ी।

स्त्री०[हिं० रेलना] १. रेलने की क्रिया या भाव। २. पानी का बहाव। ३. तीव्र प्रवाह। ४. अधिकता। ५. धक्कम-धक्का।

पद—रेल-पेल।

रेल-गाड़ी—स्त्री०[अं० रेल+हिं० गाड़ी] भाप, बिजली आदि की सहायता से लोहे की पटरियों पर चलनेवाली गाड़ी।

रेलना—स० [हिं० रेला+ना (प्रत्य०)] १. रेले या औरों को ढकेलते हुए आगे बढ़ना। रेला या धक्का देना। २. प्रबल प्रवाह का किसी को अपने साथ बहा ले जाना। ३. ठूँस कर भरना। ४ बहुत अधिक भोजन करना।

रेल-पेल—स्त्री० [हिं० रेलना+पेलना] १ ऐसी भीड़ जिसमें लोग एक दूसरे को धक्के दे रहे हों या धकेल रहे हों। २. बहुत अधिकता। बाहुल्य। भर-मार। जैसे—बाजार में आमों की रेल-पेल है।

रेलवे—स्त्री० [अं०] १. रेल की बिछी हुई पटरियाँ जिन पर रेल-गाड़ी चलती है। २ रेल का महकमा या विभाग।

रेल-वेल—स्त्री०=रेल-पेल।

रेला—पुं० [देश०] १. किसी चीज या बात का प्रबल प्रवाह। जैसे—पानी का रेला, भीड़ का रेला। ३ भीड़ से होनेवाला धक्कम-धक्का। ३ आक्रमण। चढ़ाई। धावा। ४ किसी चीज या बात की अधिकता। बहुतायत। ५ तबला बजाने की एक रीति, जिसमें कुछ विशिष्ट प्रकार से हल्के तथा मधुर बोल बजाये जाते हैं।

रेलिंग—स्त्री० [अ०] मुडेर की तरह ऊँची वह रचना जो छत के सिरो पर शोभा और सुरक्षा के लिए बनाई या लगाई जाती है।
रेवँछा—पु० [देश०] एक द्विदल अन्न जिसकी वर्तुलाकार पतली लबोतरी फलियाँ बालिश्त भर लबी होती हैं।
रेवंद—पु० [फा०] हिमालय पर ग्यारह-बारह हजार फुट की ऊँचाई पर होनेवाला एक तरह का पेड।
रेवंद-चीनी—स्त्री० [फा० रेवद+चीन (देश०)] चीन देशमे होने वाला उक्त प्रकार का पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।
रेवट—पु० [स०√रेव् (गति)+अटन्] १ शूकर। सूअर। २ बाँस। ३. विषो की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। विषवैद्य। ४. दक्षिणावर्त्त शख।
रेवड़—पु० [देश०] १. भेड-बकरियों का झुड। २. झुड। समूह।
रेवड़ा—पु० [हिं० रेवडी] बडी और मोटी रेवड़ी।
रेवड़ी—स्त्री० [देश०] पगी हुई चीनी या गुड की वह छोटी टिकिया जिस पर सफेद तिल चिपकाए रहते है।
मुहा०—रेवड़ी के फेर में आना या पड़ना=लालच मे पड़ना।
रेवडी के लिए मसजिद ढाना=अपने बहुत थोड़े लाभ के लिए दूसरो की बहुत बड़ी हानि करना।
२.लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज, जिसे सरलता से नष्ट किया जा सके।
रेवत—पु० [स०√रेव् (गति)+अतच्] १. जबीरी नीबू। २ अमलतास। ३ बलराम की पत्नी रेवती के पिता जो एक राजा थे।
रेवतक—पु० [स० रेवत+कन्] १ पारावत। परेवा। २. एक प्रकार की खजूर।
रेवती—स्त्री० [स० रेवत+ङीप्] १ ज्योतिष मे सत्ताइसवाँ नक्षत्र, जिसमे ३२ तारे स्थित माने गए हैं। २. एक मातृका का नाम। ३ दुर्गा। ४. गौ। ५. रेवत मनु की माता का नाम। ६ राजा रेवत की कन्या जो बलराम को ब्याही थी। ७ एक बालग्रह जो बच्चो को कष्ट देता है।
रेवती-भव—पु० [स० ब० स०] शनि (ग्रह)।
रेवती-रमण—पु० [ष० त०] १ बलराम। २. विष्णु।
रेवती-रंग—पु०=रेवती-रमण।
रेवना—स०=रेना। (दे०)
रेवरा—पुं०=रेवडा।
रेवा—स्त्री० [स०√रेव् (गति)+अच्+टाप्] १. नर्मदा नदी। २. नर्मदा नदी के आस-पास का प्रदेश। आधुनिक रीवाँ और बघेलखंड। ३. कामदेव की पत्नी। रति। ४ दुर्गा। ५. एक प्रकार का साम। ६. सगीत मे पूर्वी अग की एक रागिनी जिसे कुछ लोग दीपक राग की पत्नी मानते हैं। ८ नदियो मे होनेवाली एक प्रकार की मछली।
रेवाउतन—पुं० [स० रेवा-उत्पन्न] हाथी। (डिं०)
रेश—स्त्री० [फा०] लबी दाढी।
रेशम—पु० [फा०] [वि० रेशमी] एक विशिष्ट प्रकार के कीडो के कोश पर के रोओ से तैयार किये जानेवाले बहुत चमकीले, चिकने और मुलायम तंतु या रेशे जो प्राय. कपडे बनाने के काम आते हे। कोशा। कौशेय।
विशेष—इस कीडे की अनेक जातियाँ होती है, जिनसे अलग-अलग प्रकार के रेशम के तागे बनते है।
रेशमी—वि० [फा०] १. रेशम का बना हुआ। जैसे—रेशमी रूमाल या साडी। २ रेशम की तरह चमकीला और मुलायम। जैसे—रेशमी बाल।
रेशा—पु० [फा० रेश] १. वह ततु या महीन सूत, जो पौधो की छालो आदि से निकलता है या कुछ फलो के अन्दर भी पाया जाता है। २. वे ततु जिनसे शरीर का मास तथा कुछ और अग बने होते हैं। ३ कोई ऐसा तत्त्व जो बुनावट के रूप मे हो और जिसके ततु या सूत अलग किये जाते हो। (फाइबर) ४ शरीर के अन्दर की नस। रग।
रेशा खत्मी—पु० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति, जिसका प्रयोग हकीमी दवाओ मे होता है।
मुहा०—रेशा खतमी हो जाना=बहुत गद्गद् या पुलकित होना। (परिहास)
रेष—पु० [स०√रिष् (हिंसा)+घञ्] १ क्षति। हानि। २ हिंसा।
† स्त्री०=रेख।
रेषण—पु० [स०√रेष् (हिनहिनाना)+ल्युट्—अन] १ घोडे का हिनहिनाना २ चीते, बाघ आदि का गरजना।
रेषा—स्त्री० [स०√रेष्+अ+टाप] १. घोडे की हिनहिनाहट। २ सिंह की गरजन या दहाड।
† स्त्री०=रेखा।
रेसमान—पु० [फा० रीस मान=रस्सी] डोरी। रस्सी। (लश्करी)
रेस्तराँ—पु० [फ्रे०] भोजनालय। आहारगृह।
रेह—स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी, जो ऊसर मैदानो मे पाई जाती है।
† स्त्री०=रेख (रेखा)। उदा०—कुसुमवान बिलास कानन केस सुन्दर रेह।—विद्यापति।
रेहण—पु०=रेहन (सोने की मैल)। उदा०—कायर रेहण कर गया, दीपै कनक दुरग।—बाँकीदास।
रेहन—पु० [फा० रिह्न] रुपया उधार लेने की वह रीति, जिसमे महाजन के पास कुछ माल या जायदाद इस शर्त पर रखी रहती है कि जब ऋण चुका दिया जायगा, तब माल या जायदाद वापस मिलेगी। बंधक। गिरवी। (प्लेज, मार्टगेज)
क्रि० प्र०—करना।—रखना।
पुं०=अरहन।
पु० [?] मिलावटी सोने मे से निकली हुई तलछट या मैल।
स्त्री० [हिं० रहना] रहने की क्रिया या भाव।
रेहनदार—पु० [फा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी गई हो।
रेहननामा—पु० [फा०] वह कागज जिस पर चीज रेहन आदि रखने की शर्तें लिखी गई हो।
रेहल—स्त्री०=रिहल।
रेहुआ—वि० [हिं० रेह] (जमीन या मिट्टी) जिसमे रेह बहुत हो।
रेहु—पु०=रोहू (मछली)।
रै—अव्य० [?] के पास। के यहाँ। उदा०—राम रिसन आया राजा रै।—प्रिथीराज।
रैअति—स्त्री०=रैयत। (रिआया)

रैंकेट—पु० [अं०] १. टेनिस खेलने का बल्ला। २ आकाश बाण। ३. आकाश बाण के आकार का वह बहुत बड़ा यंत्र जो आकाश मे वैज्ञानिक परीक्षणो आदि के लिए बहुत ऊपर तक जा सकता है।

रैडर—पु० [अं०] रेडियो शक्ति की सहायता से काम करनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध आधुनिक यंत्र जिससे यह पता चलता है कि किस दिशा मे और कितनी दूरी पर कोई चीज आकाश या समुद्र मे विचर रही है और किधर से किधर आ या जा रही है।

रैण†—स्त्री०=रैन। (रात)
स्त्री० [सं० रेणु] धूल। उदा०—चाहत जा पद-रैन।—सूरदास।

रैणज—अव्य० [हिं० रैण=रात] रात भर। सारी रात। उदा०—लोक सोवै सुख नीदड़ी, थे क्यूँ रैणज भूली।—मीराँ।

रैता—पु०=रायता।

रैतिक—वि० [सं० रीति+ठक्—इक] रीति अर्थात् पीतल संबंधी।

रैतुवा—पु०=रायता।

रैत्य—पु० [सं० रीति+ष्यञ्] रीति अर्थात् पीतल का बना हुआ बरतन।
वि० रैतिक (पीतल का)।

रैदास—पु० [सं० रविदास] १. एक भक्त जो जाति के चमार थे तथा रामदास के शिष्यों मे से थे। २. चमार।

रैदासी—पु० [हिं० रैदास+ई] १ महात्मा रैदास के सम्प्रदाय का अनुयायी। २. एक प्रकार का मोटा जड़हन धान।

रैन, रैनि—स्त्री० [सं० रजनी] रात्रि।

रैनी—स्त्री० [हिं० रेना] तार खीचने की चाँदी-सोने की गुल्ली।

रैमुनिया—स्त्री० [हिं० रायमुनी] १ एक प्रकार की अगहन। २. लाल पक्षी की मादा।

रैयत—स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

रैया-राव—पु० [हिं० राजा+राव] १ छोटा राजा। २. मध्ययुग मे, राजाओ द्वारा अपने सरदारो को दी जानेवाली पदवी।

रैल—स्त्री० [?] १ राशि। २. समूह। झुड।

रैवंता—पु० [हिं० रजवत] घोड़ा। (डि०)

रैवत—पु० [सं० रेवती+अञ्] १. एक साममंत्र। २. महादेव। शिव। ३. मेघ। बादल। ४ रैवत नामक पर्वत। ५. रेवती के पुत्र मनु। ६ एक दैत्य जिसकी गिनती बालग्रहो मे होती है।

रैवतक—पु० [सं० रैवत+कन्] द्वारका के पास का एक पर्वत। (पुराण)

रैशन—पुं०=राशन।

रैशनिंग—स्त्री०=राशनिंग।

रैसा—पु०=रैहर।

रैहर—पु० [सं० रेष=हिंसा] झगड़ा। लड़ाई।

रैहाँ—पु० [अ०] १ एक प्रकार की सुगन्धित वनस्पति, जिसके फूल और बीज दवा के काम आते है। बालगूँ। २ कोई सुगंधित घास या वनस्पति। ३. उक्त प्रकार की घास या वनस्पति के फूल। ४. अरबी फारसी आदि लिपियो की एक प्रकार की सुन्दर लेख-प्रणाली।

रोआँ—पु०=रोआँ।

रोंग—पु०=रोम (रोआँ)।

रोंगटा—पु० [हिं० रोंग+टा] रोम। रोआँ।
मुहा०—रोंगटे खड़े होना=किसी भयानक या क्रूर कांड को देखकर शरीर में क्षोभ उत्पन्न होना। जी दहल जाना। रोमांच होना।

रोंगटी—स्त्री० [हिं० रोना] १. वह [illegible] जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे से [illegible] है। २. खेल में की जानेवाली चालाकी या बेईमानी।

रोंघट—स्त्री० [?] १ मैल। २. मिट्टी। ३. मल।

रोंठा—पु० [देश०] कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक। अमचुर। आम-कली।

रोंव—पु० =रोआँ (शरीर पर के रोम)।

रोंसा—पु० [देश०] लोबिया या बोड़े की फली।

रोआँ—पु० [सं० रोमन्] शरीर पर का कोई पतला छोटा तथा नरम बाल। रोम।
क्रि० प्र०—उखड़ना।—जमना।—गिरना।
मुहा०—(किसी का) रोआँ तक न उखड़ना=कुछ भी हानि न होना। रोआँ पसीजना=मन में करुणा या दया उत्पन्न होना। रोएँ खड़े होना=रोमांच होना।

रोआई—स्त्री० =रुलाई।

रोआब—पु०=रोब।

रोआस—स्त्री० [हिं० रोना+आस] रोने की प्रवृत्ति।

रोआसा—वि० [हिं० रोना] [स्त्री० रोआसी] जो रोने को उद्यत हो। जिसे रुलाई आना चाहती हो।

रोइँया—पु०=रोआँ (रोम)।

रोइया—पु० [देश०] जमीन में गाड़ा हुआ लकड़ी का वह खूँटा जिस पर रख-कर गन्ने के टुकड़े काटे जाते हैं।

रोऊँ—पु०=रोआँ।

रोक—स्त्री० [सं०√रुच् (दीप्ति)+घञ्] १ नकद धन। नकदी। २. नकद दाम देकर कुछ खरीदना। ३. [illegible]।
वि० गतिमान।
स्त्री० [हिं० रोकना] १. रोकने की क्रिया या भाव। २. वह चीज, तत्त्व या बात जिसके कारण कोई काम नहीं किया जा सकता। रोकने-वाली चीज।
पद—रोक-टोक।
३ निषेध। मनाही।
पद—रोक-टोक।

रोक-झोंक—स्त्री०=रोक-टोक।

रोक-टीप—स्त्री० [सं० रोक+अनु० टीप] वह पुरजा जो विक्रेता क्रेता को कुछ खरीद करने पर देता है। नकदी पुर्जा। (कैश मेमो)

रोक-टोक—स्त्री० [हिं० रोकना+टोकना] १ किसी को रोकने और टोकने की क्रिया या भाव। २. किसी के रोकने या टोकने के कारण मार्ग में आनेवाली अड़चन। बाधा। रुकावट। ३ वह पूछ-ताछ जो किसी के कहीं जाने या कुछ करने के समय की जाय। (अशुभ)

रोकड़—स्त्री० [सं० रोक=नकद] १ नकद रुपया-पैसा आदि विशेषत वह रकम जिसमें से आय-व्यय होता हो। नकद रुपया।
मुहा०—रोकड़ मिलाना=आय-व्यय का जोड़ लगाकर यह देखना कि रकम घटती या बढ़ती तो नहीं है।

२ धन-सम्पत्ति। ३ मूल-धन। पूँजी। ४ वह वही जिसमे प्रतिदिन के आय-व्यय का हिसाव लिखा जाता है। रोकड-वही।

रोकड़-वही—स्त्री० [हिं० रोकड+वही] दे० 'रोकड' ४।

रोकड़-वाकी—स्त्री० [हिं०] किसी नियत समय पर आय, व्यय आदि को जोड़ने और घटाने के उपरात हाथ मे वची रहनेवाली रोकड या नकद धन। (कैश-वैलेन्स)

रोकड़-विक्री—स्त्री० [हिं० रोकड+विक्री] नकद दाम पर की हुई विक्री।

रोकड़िया— पु० [हिं० रोकड+इया (प्रत्य०)] वह कर्मचारी जिसके पास रोकड और आय-व्यय का हिसाव रहता हो। खजानची।

रोक-थाम—स्त्री० [हिं० रोकना+थामना] ऐसा काम करना जिससे प्रक्रिया, प्रवृत्ति आदि का पुनर्भव, प्रसार, वृद्धि आदि न होने पाये तथा वह छूट या रह न जाय। जैसे—चोरियो, डकैतियो या रोगो की रोक-थाम।

रोकना—स० [स० रोधन] १ अधिकारत अथवा वलात् किसी को आगे न वढने देना अथवा कही जाने न देना। जैसे—(क) सिपाही का हाथ के इशारे से मोटर रोकना। (ख) मित्र का अपने अतिथि को रोकना। २ किसी को कोई क्रिया न करने देना। जैसे—(क) ड्राइवर का मोटर रोकना। (ख) चालक का इजन रोकना। ३ आदेश, प्रार्थना, वल-प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी वाधा या रुकावट खडी करना कि वह आगे न जा सके। जैसे—(क) सरकार ने अनाज का वाहर जाना रोक दिया। (ख) पुलिस ने जुलूस रोक दिया। ४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम को आगे न वढने देना। जैसे—(क) वाल-विवाह अव रोक दिया गया है। (ख) इस तेल ने वालो का गिरना रोक दिया है। ५ आते हुए आघात या प्रहार के वीच मे ऐसी अडचन या वाधा खडी करना कि वह अपना काम पूरा न कर सके। जैसे—लाठी पर तलवार का वार रोकना। ६ किसी प्रकार के नियन्त्रण या वश मे रखना। जैसे—(क) इच्छा या मन को रोकना। (ख) वीमारी को फैलने से रोकना।

रोग—पु० [स०√रुज् (हिंसा)+घञ्] [वि० रोगी, रुग्ण] १. वह अवस्था जिससे शरीर का स्वास्थ्य विगड जाय और जिसके वढने पर शरीर के समाप्त हो जाने की आशका हो। वीमारी। मर्ज। व्याधि। जैसे—(क) जीव-जन्तुओ, वनस्पतियो आदि मे सैकडो प्रकार के रोग होते है। (ख) जान पडता है कि इस पेड को कोई रोग हो गया है। २. शरीर मे उत्पन्न होनेवाला कोई ऐसा घातक या नाशक विकार जो कुछ विशिष्ट कारणो से उत्पन्न होता है, और जिसके कुछ विशिष्ट लक्षण होते हैं। वीमारी। मर्ज (डिज़ीज़) जैसे—दमा (या लकवा) वहुत वुरा रोग है। ३. कोई ऐसी वुरी आदत, चीज या वात जो आगे चलकर कष्टप्रद या हानिकारक सिद्ध हो। जैसे—तमाकू, वीडी या सिगरेट की आदत लगना भी एक रोग ही है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।—होना।

मुहा०—रोग पालना=जान-वूझकर कोई मुसीवत मोल लेना या आदत डालना।

रोग-काष्ठ—पु० [स० मध्य० स०] वक्कम की लकडी।

रोग-ग्रस्त—वि० [स० तृ० त०] जिसे कोई रोग लगा हो। रोग से पीडित। वीमारी मे पडा हुआ।

४—६७

रोगन—पु० [फा० रौगन] १. कोई गाढा और चिकना तरल पदार्थ। जैसे—घी, चरवी, तेल आदि। २. तेल, लाख आदि का वना हुआ पक्का रग जो चीजो पर चमक आदि लाने के लिए चढाया जाता है। जैसे—मिट्टी के वरतनो पर लगाया जानेवाला रोगन। ३. आज-कल कोई ऐसा रासायनिक लेप जिसे लगाने से चीजे धूप, वर्षा आदि के प्रभाव से रक्षित रहती और चिकनी होकर चमकने लगती है। वारनिश। ४. ४. चमडे को मुलायम करने के लिए कुसुम या वर्रे के तेल से बनाया हुआ एक प्रकार का मसाला।

रोगनदार—वि० [फा०] जिस पर रोगन किया गया हो। चमकीला।

रोग-नाशक—वि० [स० ष० त०] वीमारी दूर करनेवाला।

रोग-निदान—पु० [स० ष० त०] रोग के लक्षण, उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान। तशखीस। (डायगनोसिस)

रोगनी—वि० [फा०] १. रोगन किया हुआ। २. जिस पर रोगन पोता या लगाया गया हो। रोगनदार। जैसे—रोगनी वरतन। ३. जिसमे रोगन चुपडा, मिलाया या लगाया गया हो। जैसे—रोगनी रोटी।

रोग-परीसह—पु० [स० ष० त०] उग्र रोग होने पर कुछ ध्यान न करके चुप-चाप कष्ट सहने की वृत्ति या व्रत।

रोग-विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे रोग की प्रकृति या स्वरूप और उसके कारण होनेवाले शारीरिक विकारो आदि का विवेचन होता है। (पैथॉलोजी)

रोग-शिला—स्त्री० [स० च० त०] मन शिला। मैनसिल।

रोगाक्रात—वि० [स० रोग-आक्रात, तृ० त०] रोग से ग्रस्त। व्याधि से पीड़ित।

रोगाणु—पु० [स० रोग-अणु, ष० त०] वे दूषित या विषाक्त अणु जो शरीर मे पहुँचकर अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते है, अथवा कुछ अवस्थाओ मे पदार्थों मे खमीर उठाते है। जीवाणु। (वैक्टीरिया)

रोगातुर—वि० [स० रोग-आतुर, तृ० त०] रोग से घवराया हुआ। व्याधि से पीडित।

रोगार्त्त—वि० [स० रोग-आर्त्त, तृ० त०] रोग से दु:खी।

रोगिणी—वि० 'रोगी' का स्त्री०।

रोगित—वि० [स० रोग+इतच्] जिसे रोग हुआ हो। रोग-युक्त। रोगी।

पु० कुत्ते को होनेवाला पागलपन।

रोगिया—पु० [हिं० रोग+इया (प्रत्य०)] रोगी। वीमार।

रोगी (गिन्)—वि० [स०√रुज् (हिंसा)+घिनुण्] [स्त्री० रोगिणी] जिसे कोई रोग हुआ हो। रोगयुक्त। अस्वस्थ। वीमार।

रोचक—वि० [स०√रुच् (प्रीति)+णिच्+ण्वुल्—अक] [भाव० रोचकता] १ रुचने या अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २. मनोरजक। पु० १ क्षुधा। भूख। २. केला। ३ प्याज। ४ एक प्रकार की ग्रथिपर्णी जिसे नेपाल मे 'भँडेउर' कहते हैं। ५ काँच की कुप्पियाँ, प्यालियाँ आदि वनानेवाला कारीगर।

रोचकता—स्त्री० [स० रोचक+तल्+टाप्] १ रोचक होने की अवस्था या भाव। २ किसी चीज का वह गुण जिसके फलस्वरूप वह रोचक प्रतीत होती है।

रोचक-द्रव्य—पु० [सं० ष० त०] विट् लवण और सैंधव लवण। (वैद्यक)

रोचन—वि० [सं०√रुच् (प्रीति)+णिच्+ल्यु—अन] १ अच्छा या प्रिय लगनेवाला। रुचनेवाला। रोचक। २. दीप्तिमान। चमकीला। ३ शोभा देने या फबनेवाला।

पु० १. कूट शाल्मलि। काला सेमल। २. कमीला। ३ सफेद सहिजन। ४. प्याज। ५. अमलतास। ६. करंज। कंजा। ७ अखरोट। अकोल। ८. अनार। ९ रोचना। रोली। १०. गोरोचन। ११ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। १२. पुराणानुसार एक पर्वत। १३. रोगों के अधिष्ठाता एक प्रकार के देवता। (हरिवंश) १४ स्वारोचिष् मन्वंतर के इन्द्र का नाम।

रोचनक—पु० [सं० रोचन+कन्] १. जंबीरी नीबू। २. वन-रोचन।

रोचन-फल—पु० [मं० ब० स०] बिजौरा नीबू।

रोचना—स्त्री० [सं०√रुच्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. उज्ज्वल आकाश। २. रक्त कमल। ३. वंशलोचन। ४. काला सेमल। ५. गोरोचन। ६ सुंदर स्त्री। ७. वासुदेव की पत्नी।

रोचनी—स्त्री० [सं० रोचन+ङीप्] १ आमलकी। आँवला। २ गोरोचन। ३. मैनसिल। ४ सफेद सेमल। ५. कमीला। ६. दंती। ७ तारागण।

रोचमान—वि० [सं०√रुच् (दीप्ति)+शानच्, मुक्-आगम] १ चमकता हुआ। २. सुशोभित होता हुआ।

पु० १ घोड़े की गरदन पर की एक भँवरी। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

रोचि (चिस्)—स्त्री० [सं०√रुच्+इसुन्] १. प्रभा। दीप्ति। २. किरण। रश्मि। ३. चारों ओर फैली हुई शोभा।

रोचिष्णु—वि० [सं०√रुच्+इष्णुच्] १. चमकदार। चमकीला। २ जगमगाता हुआ।

रोची—स्त्री० [सं०√रुच्+इन+ङीप्] एक प्रकार का साग। हिलमोचिका।

रोज—पु० [फा० रोज़] १. दिन। दिवस। जैसे—उसे गए चार रोज हो गए। २ प्रतिदिन के हिसाब से मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी। जैसे—आज-कल वह ३) रोज पर काम करता है।

अव्य० प्रतिदिन। जैसे—उसे रोज आना-जाना पड़ता है।

पु० [सं० रोदन] १. रोना। रुदन। उदा०—रोज सरोजनि के परै, हँसी ससी की होय।—बिहारी। २. रोना-पीटना। विलाप।

रोजगार—पु० [फा० रोज़गार] १. वह काम जो किसी को जीविका निर्वाह के लिए रोज या प्रतिदिन करना पड़ता हो। पेशा। जैसे—उनका भीख माँगना रोजगार बन गया है। २. व्यवसाय। व्यापार। जैसे—उनका लकड़ी का रोजगार है।

रोजगारी—पु० [फा० रोजगारी] वह जो कोई रोजगार करता हो। व्यापारी। सौदागर।

रोजनामचा—पु० [फा० रोजनामच] १ वह छोटी किताब या वही जिस पर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है। दिनचर्या की पुस्तक। दैनंदिनी। जैसे—पटवारियों या पुलिस का रोजनामचा। २. वह वही जिस पर नित्य प्रति की आय और व्यय लिखा जाता है।

रोज-ब-रोज—अव्य० [फा० रोज ब रोज] प्रतिदिन। नित्य।

रोजमर्रा—अव्य० [फा० रोजमर्रः] प्रतिदिन। हर रोज। नित्य।

पु० १. नित्य प्रति होता रहनेवाला काम। २. नित्य की बोल-चाल की भाषा। दे० 'बोल चाल' के अंतर्गत पारिभाषिक अर्थ।

रोज़ा—पु० [फा० रोज़ा] १ व्रत। उपवास। २ विशेषतः रमज़ान के महीने में हर दिन रखा जानेवाला उपवास या व्रत।

क्रि० प्र०—खोलना।—टूटना।—रखना।

३ रमज़ान का प्रत्येक दिन, जिसमें व्रत रखने का विधान है। जैसे—आज पाँचवाँ रोज़ा है।

† पु०=रोजा (नमाज़)।

रोज़ाखोर—पु० [फा० रोज़ाखोर] रोज़ा न रखनेवाला व्यक्ति। (मुसलमान)

रोज़ादार—पु० [फा० रोज़ादार] वह मुसलमान जो रमज़ान में नियमित रूप से महीने भर रोज़ा रखता हो।

रोज़ाना—अव्य० [फा० रोज़ानः] प्रतिदिन। हर रोज़। नित्य।

पु० प्रतिदिन के हिसाब से मिलनेवाला पारिश्रमिक या वेतन।

रोज़ी—स्त्री० [फा० रोज़ी] १ रोज़ का खाना। नित्य का भोजन।

पद—रोज़ी, रोज़गार।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

मुहा०—रोज़ी चलना=भोजन-वस्त्र मिलता जाना। जीविका का निर्वाह होता रहना। रोज़ी से लगना=जीविका-निर्वाह का साधन प्राप्त करना।

२. काम-धंधा। रोज़गार। व्यापार। ३. मध्य युग में एक प्रकार का पुराना कर या महसूल जिसके अनुसार व्यापारियों को एक एक दिन राज्य का काम करना पड़ता था।

स्त्री० [देश०] गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की कपास जिसके फूल पीले होते हैं।

रोज़ीदार—वि० [फा०] १. जिसको रोज़ाना खर्च के लिए कुछ मिलता हो। २. जो किसी रोज़ी में लगा हो। जिसको जीविका का साधन वर्तमान हो।

रोज़ीना—वि० [फा० रोज़ीनः] रोज़ का। नित्य। दैनिक।

पु० प्रतिदिन के हिसाब से नित्य मिलनेवाली मजदूरी, वेतन, वृत्ति आदि। जैसे—उसको २) रोज़ीना मिलता है।

रोज़ी-बिगाड़—वि० [फा० रोज़ी+हि० बिगाड़] १ अपनी या दूसरों की लगी हुई रोज़ी जानबूझकर बिगाड़ देनेवाला। २ निखट्टू।

रोज़ी-रोज़गार—पु० [फा०] जीविका के निर्वाह का साधन। जैसे—उनके चारों लड़के रोज़ी-रोज़गार में लगे हैं।

क्रि० प्र०—में लगना।

रोझ—स्त्री० [देश०] नील गाय। गवय। उदा०—हरिन रोझ लगुना वन बसे।—जायसी।

रोट—पु० [हि० रोटी] १. गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी। लिट्टी। २ देवताओं आदि पर चढ़ाने के लिए एक प्रकार की मीठी मोटी रोटी। मुहा०—रोट होना या हो जाना=दब या पिसकर सपाट (अर्थात् निकम्मा और नष्ट) होना। उदा०—बिनरै भुगुति होतु तुम रोटा।—जायसी।

३. हाथी का रातिब।

रोटका—पु० [देश०] बाजरा।

रोटिका—स्त्री०[सं० √रुद्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] छोटी रोटी। चपाती।

रोटिहा—पु०[हिं० रोटी+हा (प्रत्य०)] केवल रोटी अर्थात् साधारण भोजन के बदले में काम करनेवाला नौकर। (तुच्छता-सूचक) जैसे—रोटिहा चाकर मुसहा घोड। (कहा०)

रोटिहान—पु०[हिं० रोटी] चूल्हे के पास का मिट्टी का वह छोटा चबूतरा जिसपर पकाई हुई रोटियाँ रखी जाती हैं।

रोटी—स्त्री०[?] १. गेहूँ, जौ, बाजरे मक्का आदि अन्नों के गूँधे हुए आटे से आँच पर सेंककर पकाई हुई वह चिपटी, पतली और वर्तुल चीजें जो अधिकतर देशों में लोग नित्य पेट भरने के लिए खाते हैं। (इसके चपाती, पराँठा, फुलका आदि अनेक रूप होते है।)

पद—रोटी का पेट=रोटी का वह तल जो पहले गरम तवे पर डाला जाता है। **रोटी की पीठ**—रोटी का वह तल या पार्श्व जो उसका विपरीत तल या पार्श्व पक जाने पर उलटकर तवे पर डाला जाता है।

क्रि० प्र०—खाना।—पकाना।—बनाना।—सेंकना।

२. एक समय प्रायः एक साथ बनाई जानेवाली कुछ विशिष्ट चीजें जिनमे उक्त खाद्य पदार्थ के सिवा चावल, दाल, तरकारी आदि भी सम्मिलित रहती हैं। रसोई। जैसे—(क) उनके यहाँ दोनो समय रोटी बनाने के लिए ब्राह्मणी आती है। (ख) हम चार दिन दिल्ली रहे, पर उन्होंने किसी दिन रोटी तक के लिए न कहा।

पद—रोटी-कपड़ा, रोटी-दाल।

मुहा०—(किसी की या किसी के यहाँ) रोटियाँ तोडना=किसी के घर पडे रहकर उसकी कृपा से अपना पेट पालना। बैठे-बैठे किसी का दिया खाना। जैसे—साल भर से तो वह अपने ससुर की (या ससुर के यहाँ) रोटियाँ तोड रहा है। (किसी को) रोटियाँ लगना=किसी को पूरा और मुफ्त का भोजन मिलने से मोटाई सूझना। भर-पेट भोजन पाकर इतराते फिरते रहना।

३ उक्त प्रकार की चीजें खाने के लिए किसी के यहाँ मिलनेवाला निमन्त्रण। जैसे—आज भाई साहब के यहाँ उनकी रोटी है (अर्थात् उन्हें रोटी आदि खाने का निमन्त्रण मिला है)। ४ जीविका-निर्वाह का ऐसा साधन जिससे अपना और अपने परिवार का पेट पाला जाता हो।

मुहा०—रोटी कमाना=जीविका उपार्जन करना। (किसी काम या बात की) रोटी खाना=किसी काम या बात के द्वारा ही अपनी जीविका चलाना या निर्वाह करना। जैसे—वह तो दूसरो मे लडाई-झगडा कराने की ही रोटी खाता है। रोटियों लगना =ऐसी स्थिति मे आना या होना कि अपना और बाल-बच्चों का पेट भरने का कष्ट न रह जाय। जीविका निर्वाह का साधन प्राप्त होना। जैसे—उन्हें नौकरी मिल गई, चलो रोटियो से लग गए।

रोटी-कपड़ा—पु०[हिं०]१ भोज्य पदार्थ और पहनने के वस्त्र। रोटी-कपडे के लिए अर्थात् भरण-पोषण के लिए दिया जानेवाला धन। जैसे—उसने अपने पति पर रोटी-कपडे का दावा किया है।

रोटी-दाल—स्त्री० [हिं०]१. चावल, दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई। २ साधारण रूप से चलनेवाली जीविका। जैसे—आज-कल तो रोटी-दाल चली चले यही बहुत है।

क्रि० प्र०—चलना।

रोटी-फल—पु०[हिं० रोटी+फल] १. एक प्रकार के वृक्ष का फल जो खाने मे बहुत अच्छा होता है। २. उक्त का पेड जो अनन्नास और कटहल के पेड़ो की तरह होता है।

रोठा—पु०[देश०] १. एक प्रकार का बाजरा। २. गुठली की तरह की कोई गोलाकार कड़ी और ठोस चीज। उदा०—कँवल सो कँवल सुपारी रोठा।—जायसी।

†पु०=रोडा।

रोडवेज—पु०[अं०]आधुनिक भारत मे किराये पर चलनेवाली बडी मोटर गाडियों (बसो) के द्वारा जनसाधारण के परिवहन का राजकीय विभाग।

रोडा—पु०[स० लोष्ठ, प्रा० लोट्ठ,]१. ईंट, पत्थर आदि का टुकडा। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसी चीज जो किसी काम मे बाधक होती है। जैसे—रोडे, चलनेवाले के मार्ग मे बाधक होते हैं।

मुहा०—(किसी काम में) रोड़ा अटकाना या डालना=विघ्न या बाधा डालना।

३ घर या मकान जो ईंटो, पत्थरो, रोडो (अर्थात् मकान बनाने की सामग्री) से बनता है। उदा०—'या खाय घोडा या खाय रोडा।' (कहा०) ४ [स्त्री० अल्पा० रोडी] किसी चीज का टुकडा। भेली। जैसे—गुड की रोड़ी।

पुं०[स० आरट्ट] पजाब की अरोडा नामक जाति।

पु०[?] पजाब मे होनेवाला एक प्रकार का धान जिसके लिए सिंचाई की आवश्यकता नही होती।

रोडी—स्त्री०[हिं० रोडा] वह छोटे छोटे पत्थर के टुकडे जो सडक आदि बनाने के काम आते हैं।

रोद (स्)—पुं०[सं० √रुद् (रोना)+असुन्] १. स्वर्ग। २ भूमि।

पुं०[?] मुसलमान । (डिं०)

रोदन—पु०[स० √ रुद् (रोना)+ल्युट्—अन] १ अश्रुपात करना। रोना। २ क्रंदन। विलाप करना।

रोदना†—अ०=रोना।

रोदसी—स्त्री०[स० रोदस्+ङीप्] १. स्वर्ग। २ जमीन। भूमि। ३ पृथ्वी।

रोदा—पु०[स० रोध=किनारा] १. धनुष की डोरी। चिल्ला। २. वह बारीक ताँत जिससे सितार के परदे बाँधे जाते हैं।

रोध—पु०[स०√ रुध् (रोकना)+अच्]१. आगे बढने से रोकनेवाली चीज, तत्त्व या बात। २. चारो ओर से रोकने के लिए बनाया हुआ घेरा। (ब्लाकेड, सीज)३ [√रुध्+घञ्] जलाशयो आदि का बाँध। (डैम) ४ [√रुध्+अच्] तट। किनारा। ५. छोटा बगीचा। बारी।

रोध-अधिकार—पुं० [सं०]=निषेधाधिकार। (दे०)

रोधक—वि०[स० √ रुध्+ण्वुल्—अक] रोकनेवाला।

रोधकृत्—पु० [स० रोध√ कृ (करना)+क्विप्, तुक्—आगम] साठ संवत्सरो मे से पैंतालीसवाँ संवत्सर। (फलित ज्योतिष)

रोधन—पुं०[स०√रुध्+ल्युट्—अन]१ रोकने की क्रिया या भाव। २. बाधा। रुकावट। ३. दमन। ४. बुध ग्रह।

†पु०=रुदन (रोना)।

रोधना—स०[स० रोधन]१ रोकना। २ रूँधना।

मुहा०—रोम-रोम में=शरीर के सभी छोटे-बड़े अंगों में अर्थात् सारे शरीर में। मुहा०—रोम रोम से=तन-मन से। पूर्ण तथा शुद्ध हृदय से। जैसे—रोम-रोम से आशीर्वाद देना।
पद—रोमराजी, रोमलता, रोमावली।
३. छेद। सूराख। ४. जल। पानी।
पु०१ रूम देश। २. इटली देश की राजधानी।
रोमक—पु०[सं० रोमन्√कै (प्रतीत होना)+क] १. साँभर झील का नमक। शाकंभरी लवण। पांशु लवण। २. रोम नामक देश या नगर का निवासी। ३ रोम नामक देश और नगर। ५ ज्योतिष सिद्धान्त का एक भेद या शाखा।
वि० रोम देश या नगर का।
रोम-कूप—पु० [सं० ष० त०] शरीर के वे छिद्र जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं। लोम-छिद्र।
रोम-केशर—पुं०[सं० ष० त०] चँवर। चामर।
रोम-गुच्छ—पु०[सं० ष० त०] चँवर। चामर।
रोम-द्वार—पु०[सं० ष० त०] रोम-कूप। (दे०)
रोमन—वि०[रोम नगर से] रोम देश सम्बन्धी। रोम का।
पु० रोम देश का निवासी।
स्त्री० रोम देश की लिपि का वह परिष्कृत रूप जिसमें आज-कल अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
रोमन-कैथलिक—पु०[अं०] ईसाइयों का एक संप्रदाय जिसमें प्रायः ईसा की मूर्ति रखकर पूजी जाती है, और उसकी उपासना की जाती है।
रोम-पट—पु०[सं० ष० त०] ऊनी कपड़ा।
रोम-बद्ध—वि०[सं० तृ० त०] जो रोओं से बँधा, बना या बुना हो।
पु०१. ऊनी कपड़ा। २ ऊन की बनी हुई कोई चीज।
रोम-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] चमड़ा। त्वक्।
रोम-राजी—स्त्री०[सं० ष० त०] १. रोमावलि। रोओं की पंक्ति। रोओं की वह रेखा जो नाभि से ठीक ऊपर की ओर जाती है।
रोम-लता—स्त्री०[सं० ष० त०] रोमावलि। रोमराजी।
रोम-हर्ष—पुं०[सं० ष० त०] आतंक, भय, बीभत्सता आदि के कारण रोंगटे खड़े होना। रोमांच। पुलक।
रोम-हर्षक—वि० [सं० ष० त०] रोम-हर्ष उत्पन्न करनेवाला। रोंगटे खड़े करनेवाला अर्थात् दारुण या भीषण।
रोम-हर्षण—पु०[सं० ष० त०] १. रोमांच। सिहरन। रोओं का खड़ा होना, जो अत्यन्त आनन्द के सहसा अनुभव अथवा भय से होता है। २ सूत पौराणिक।
वि० रोंगटे खड़े करनेवाला। भीषण।
रोमांच—पु०[सं० रोमन्-अंच, ष० त०] १. आश्चर्य, भय, हर्ष आदि के कारण शरीर के रोओं का खड़ा होना। पुलक। २ भय आदि से अथवा बीभत्स दृश्यों आदि के कारण रोएँ खड़े होना।
रोमांचित—भू० कृ० [सं० रोमांच+इतच्] जिसे रोमांच हुआ हो। पुलकित।
रोमांतिका मसूरिका—स्त्री०[सं० रोमन्-अंतिका, ष०त०, रोमांतिका और मसूरिका, व्यस्त पद] चेचक की तरह का एक रोग।
रोमाग्र—पु० [सं० रोमन्-अग्र, ष० त०] रोएँ की नोक या सिरा।
रोमाली—स्त्री०[सं० रोमन्-आली, ष० त०] रोओं की पंक्ति। रोमावली। रोमराजी।
रोमावलि, रोमावली—स्त्री० [सं० रोमन्-अवलि (ली), ष० त०] रोओं की पंक्ति जो पेट के बीचों-बीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमावली। रोमराजी।
रोमिका—स्त्री०[न०] १ छोटा रोआँ। २ जैव और वानस्पतिक कोषाणुओं पर उगनेवाले बहुत छोटे-छोटे रोएँ। (सिलिया)
विशेष—पुलक और रोमांच में मुख्य अन्तर यह है कि पुलक तो केवल आनन्द या हर्ष से होता है, परन्तु रोमांच का कारण हर्ष के सिवा आश्चर्य, भय आदि अन्य मनोविकार भी हो सकते हैं।
रोमिल—वि०[सं० रोमवत्] जिस पर रोम हों। रोएँदार। बालोंवाला।
रोमोद्गम—पु०[सं० रोमन्-उद्गम, ष० त०] रोमांच।
रोयाँ—पुं०=रोआँ।
रोर—स्त्री०[अनु०]१ बहुत से लोगों के एक साथ चिल्लाने का शब्द। शोर-गुल। हल्ला। २ उपद्रव। उत्पात। ३ आंदोलन। ४. शब्द। उदा०—मेरे उर में भी भर मधु रोर।—पन्त।
वि० १. प्रचंड। २ उपद्रवी।
रोरा—वि०[हिं० रूरा] [स्त्री० रोरी] सुन्दर। रुचिर।
†पु० १.=रोर। २=रोड़ा।
रोरी—स्त्री०[हिं० रोर]१=चहल-पहल। धूम। २. दे० 'रोर'।
†स्त्री०[?] लहसुनिया नामक रत्न।
स्त्री०=रोली।
रोलंब—पु०[सं०√रु (शब्द)+विच्, रो√लम्ब्+अच्] १ भ्रमर। भौंरा। भँवर। २ सूखी जमीन।
वि० सहसा किसी का विश्वास न करनेवाला।
रोल—पुं०[हिं० रोलना] रोलने की क्रिया या भाव।
पु०[देश०] कमेरों का एक उपकरण।
†पु०=रोर।
†पुं०=रेला।
रोलना—स०[?]१ किसी चीज में उँगलियाँ डालकर उसे हिलाना-डुलाना। जैसे—मोती रोलना। २. किसी चीज को छेड़ना, हिलाना-डुलाना या घुमाना-फिराना। उदा०—घोड़ा और फोड़ा जितना ही रोलो उतना ही बढ़े। (कहा०) ३ बहुत अधिक मात्रा में कोई चीज पाकर मनमाने ढंग से उसे इधर-उधर करना या छितराना। ४ उबटन, लेप आदि अंगों में लगाना।
रोलर—पु०[अं०]१ ढुलकनेवाली वस्तु। २ बेलन। बेलना। ३ छापे की कल में वह बेलन जिससे अक्षरों पर स्याही लगती है। ४. कंकड़ आदि दबाकर सड़क चौरस करनेवाला बेलन जो यों ही खींचा या इंजन के आगे लगाकर चलाया जाता है।
रोला—पु०[सं०]१ एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों में ११+१३ के विश्राम से २४-२४ मात्राएँ होती हैं।
†पुं०=रोर। (पश्चिम)
पुं०[हिं० रोलना] जूठे बरतन माँजने का काम और मजदूरी।
रोली—स्त्री०[सं० रोचनी] एक प्रकार का चूर्ण जो हल्दी और चूने के योग से बनता है, और पवित्र माना जाता है।

रोवनहार—वि०[हिं० रोवना+हार (प्रत्य०)] रोनेवाला।
पुं० किसी के मर जाने पर उसके लिए रोकर शोक मनानेवाला उत्तराधिकारी।

रोवना—अ०, वि०=रोना।

रोवनिहारा—वि०=रोवनहार।

रोवनी-धोवनी—स्त्री०=रोनी-धोनी।

रोवाँ—पुं०=रोआँ।

रोवाँसा—वि०[स्त्री० रोवाँसी] रोआँसा।

रोशन—वि०[फा०]१ रोशनी या प्रकाश से युक्त। प्रकाशमान्। २ जलता हुआ। प्रदीप्त। जैसे—चिराग रोशन होना। ३ जिसमें खूब चहल-पहल और आनन्द-मंगल हो। जैसे—महफिल रोशन होना। ४ किसी प्रकार की कीर्ति या यश से युक्त, और फलतः प्रसिद्ध या विख्यात। ५ जाहिर। प्रकट। विदित। जैसे—यह बात सब पर रोशन हो जायगी।

रोशन-चौकी—स्त्री०[फा०] १ नफीरी नामक बाजा। २. शहनाई नामक वाद्य-समूह।

रोशन-दान—पुं०[फा०]१ कमरे की दीवार के ऊपरी भाग में बना हुआ वह थोड़ा खुला स्थान, जिसमें से प्रकाश आता है। २ उक्त स्थान में लगी हुई कोई जाली अथवा लकड़ी आदि का ढाँचा।

रोशनाई—स्त्री०[फा०]१ अक्षर आदि लिखने की स्याही। मसि।
†स्त्री०=रोशनी।

रोशनी—स्त्री०[फा०] १. उजाला। प्रकाश। २ चिराग। दीपक। ३ आनन्दोत्सव के समय बहुत-से दीपक जलाकर किया जानेवाला प्रकाश। दीपोत्सव। ४ ज्ञान आदि का प्रकाश।
मुहा०—रोशनी डालना=किसी विषय को अधिक सुबोध तथा स्पष्ट करना।

रोष—पुं०[सं०√ रुष्(क्रोध)+घञ्] [वि० रुष्ट] १. क्रोध। कोप। गुस्सा। २ ऐसा क्रोध जो मन में ही दबा या छिपा रहे। कुढ़न। ३ वैर। विरोध।

रोषण—पुं०[सं० √ रुष्+युच्—अन]१ पारा। २ कसौटी। ३. ऊसर जमीन।
वि० रोष उत्पन्न करनेवाला। २ मन में रोष करनेवाला। ३ क्रोध प्रकट करनेवाला। क्रुद्ध।

रोषानल—पुं०[सं० रोष-अनल,कर्म० स०] क्रोध रूपी अग्नि। ऐसा विकट क्रोध जो जलाकर भस्म या नष्ट कर डालना चाहता हो।

रोषान्वित—भू० कृ०[सं० रोष-अन्वित, तृ० त०] रोष से युक्त। क्रुद्ध। नाराज।

रोषित—भू० कृ०[सं० रोष+इतच्] जो क्रोध से युक्त हुआ हो। क्रुद्ध। नाराज।

रोषी(षिन्)—वि० [सं० रोष+इनि] रोष अर्थात् क्रोध करनेवाला। क्रोधी।

रोसा†—पुं०=रोष।
स्त्री०=रोग।

रोसनाई—स्त्री०=रोशनाई।

रोसनी†—स्त्री०=रोशनी।

रोसा†—पुं०=रूसा (घास)।

रोह—पुं०[सं०√ रुह् (उद्भव)+अच्]१. ऊपर चढ़ना। चढ़ाई। २. कली। ३ अंकुर। अँखुआ।
†पुं०[?] नील गाय।
पुं०[सं० रोहित] अफगानिस्तान का मध्ययुगीन नाम।

रोहक—वि०[सं०√ रुह् +ण्वुल्—अक] चढ़नेवाला।
पुं० वह जो किसी सवारी पर चढ़कर चलता हो। सवार।

रोहग—पुं०[सं०] सिंहल द्वीप का एक पहाड़। आदम चोटी। विदूराद्रि।

रोहज—पुं०[?] नेत्र। (डिं०)

रोहण—पुं०[सं०√ रुह् (उद्भव)+ल्युट्—अन] १. ऊपर की ओर बढ़ना। २. किसी पर चढ़ना। ३ सवार होना। ४ बीज या पौधे का उगना या जमना। अंकुरित होना। ५. वीर्य। शुक्र। ६. रोहग पर्वत।

रोहन—पुं०[देश०] एक तरह का वृक्ष।
†पुं०=रोहण।

रोहना—अ०[सं० रोहण] १. ऊपर की ओर जाना या बढ़ना। ऊपर चढ़ना। २ किसी के ऊपर चढ़ना। ३. सवार होना।
स०१. ऊपर की ओर बढ़ाना। २ चढ़ाना। ३. सवार कराना। ४. अपने शरीर पर धारण करना या लेना।

रोहा—पुं०[हिं० रोहना] ऐसी नाली या और कोई चीज जिसका प्रवाह ऊपर की ओर होता हो।
पुं०[सं० रोह=अंकुर] पलक के भीतरी भाग में होनेवाले एक प्रकार के दाने।

रोहि—पुं०[सं०√ रुह्+इन्]१. वृक्ष। पेड़। २ बीज। ३. तपस्वी।

रोहिण—पुं०[सं०√ रुह्+इनन्] १ पीपल। २ गूलर। ३. रूसा घास। ४ दिन का दूसरा पहर।

रोहिणिका—वि०[सं० रोहिणी+कन्+टाप्, ह्रस्व] (स्त्री) जिसका मुँह क्रोध, रोग आदि के कारण लाल हो।

रोहिणी—स्त्री०[सं० रोहिण+ङीप्]१. गाय। गौ। २ बिजली। विद्युत्। ३ सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं। ४. वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थी। ५ जैनों की एक देवी। ६. स्मृतियों के अनुसार ऐसी कन्या, जो अभी हाल में रजस्वला होने लगी हो। ७ धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से दूसरी श्रुति। ८ रोहू की तरह की एक प्रकार की मछली। ९. करज। १०. रीठा। ११. मजीठ। १२. ब्राह्मी। १३ काश्मरी। १४. गंभारी। १५. कुटकी। १६. सफेद कौआठोंठी। १७. लाल गदहपूरना। १८. छोटी, लंबी, पीली हड़ जो गोल न हो। इसे 'वण रोहिणी' भी कहते हैं। १९. एक प्रकार का विकट संक्रामक रोग, जिसमें ज्वर के साथ गले में पीड़ा और सूजन होती है। (डिप्थीरिया) २०. त्वचा की छठी परत। (वैद्यक)

रोहिणी-अष्टमी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिसमें चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र में रहता है।

रोहिणी-पति—पुं०[सं० ष० त०] चन्द्रमा।

रोहिणी-योग—पुं०[सं० ष० त०] आषाढ़ के कृष्णपक्ष में रोहिणी का चन्द्रमा के साथ होनेवाला योग।

रोहिणी-वल्लभ—पुं०[सं० ष० त०]१. चन्द्रमा। २. वसुदेव।

रोहिणीश—पुं०[सं० रोहिणी-ईश, ष० त०] १. चन्द्रमा। २ वसुदेव
रोहित—वि०[सं० √रुह (उद्भव)+इतन्] लाल रंग का। रक्तवर्ण। लोहित।
पुं०१. लाल रंग का। २ रोहू मछली। ३. एक प्रकार का हिरन। ४. रोहितक वृक्ष। ५ इन्द्रधनुष। ६ कुसुम या वर्रे का फूल। ७. केसर। ८ रक्त। लहू। ९ वाल्मीकि के अनुसार एक प्रकार के गन्धर्व।
रोहितक—पुं०[सं० रोहित+कन्] रोहित (पेड)।
रोहिताश्व—पुं०[सं० रोहित-अश्व, ब० स०] १ अग्नि। २ महाराज हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम। ३ आधुनिक रोहतास (गढ और बस्ती) का पुराना नाम।
रोहित्र—पुं०[सं०] दे० 'परिणामित्र'।
रोहिनी—स्त्री०=रोहिणी।
रोहिष—पुं०[सं०√ रुह+इषन्]१ रूसा नामक घास जिसकी जडें सुगधित होती है। २ एक तरह का हिरन। ३. एक तरह की मछली। रोहू।
रोही (हिन्)—वि०[√रुह् +णिनि] [स्त्री० रोहिणी] १. ऊपर की ओर जानेवाला। २ चढनेवाला।
पुं० १. गूलर का पेड। २. पीपल। ३. रोहिष घास। ४ एक प्रकार का हिरन। ५. रोहित या रुहेडा नामक वृक्ष। ६. रोहू मछली।
†पुं०[?]१ जगल। वन। २ एक प्रकार का हथियार(सिरोही)।
पुं०[सं० रोहित]खून। रक्त।
वि० लाल। सुर्ख।
रोहू—स्त्री०[सं० रोहिष]१ एक प्रकार की बडी मछली। २ एक प्रकार का पहाडी वृक्ष।
रौंटि†—स्त्री०[हिं० रोना] खेलते हुए बच्चो मे से किसी का चिढ या रूठ कर रोने का-सा मुँह बना लेना, और कुढ या चिढ जाना। उदा०—रौंटि करत तुम खेलत ही मैं।—सूर।
रौंद—स्त्री०[हिं० रौंदना] रौंदने की क्रिया या भाव।
स्त्री०[अ० राउंड] पहरेदार या सिपाहियो का गश्त लगाना।
रौंदन†—स्त्री०=रौंद।
रौंदना—स०[सं० मर्दन]१.किसी चीज को पैरो से इस प्रकार दबाना अथवा उस पर इस प्रकार चलना कि वह टुकडे-टुकडे हो जाय अथवा बहुत ही विकृत हो जाय। २. पैरो से बहुत अधिक मार-मार कर अजर-पजर ढीले करना।
सयो० क्रि०—डालना।
रौंदी—स्त्री०[हिं० रौंदना] चौपायो के रहने का घेरा या बाडा।
रौंस—स्त्री०[फा० रविश] १. गति। चाल। २. चाल-ढाल। तौर-तरीका। रग-ढग। ३ मकान का ऐसा छज्जा, जिस पर लोग आ-जा सकें। ४ बगीचे की क्यारियो के बीच बना हुआ आने-जाने का मार्ग।
रौंसा—पुं०[सं० लोमश, रोमश=रोएँवाला] १ केवाँच। कौंछ। २ बोडा। लोबिया।
रौ—स्त्री०[फा०] १. गति। चाल। २ पानी का बहाव। ३ किसी प्रकार के मनोवेग की गति अथवा प्रवृत्ति। किसी काम या बात की धुन। जैसे—उस समय तुम रौ मे आगे बढते चले गए, मेरी बात तुमने नही मानी।
वि० [फा०] १ चलनेवाला। जैसे—पेश-रौ=आगे चलनेवाला, अर्थात् नेता। २. आगे बढनेवाला। ३. उगने या उत्पन्न होनेवाला। जैसे—खुद-रौ=आप से आप उगने और बढनेवाला।
पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड।
†पुं०=रव (शब्द)।
रौक्म—वि० [सं० रुक्म+अण्] १ रुक्म-सबंधी। २. सोने का बना हुआ।
रौक्ष्य—पुं०[सं०√रुक्ष्+ष्यञ्] रूखापन। रुखाई। रूक्षता।
रौखुर—स्त्री०[देश०] वह भूमि जिसकी मिट्टी बाढ के कारण बलुई हो गई हो।
रौगन—पुं०=रोगन।
रौगनी—वि०=रोगनी।
रौचनिक—वि०[सं० रोचना+ठक्—इक] १. गोरोचन या रोली सबधी। २ गोरोचन या रोली से बना या रँगा हुआ।
रौच्य—पुं० [सं० रुचि+ष्यण्] बेल की शाखा का दंड धारण करनेवाला संन्यासी।
रौजन—पुं० [फा० रौज़न] १ छिद्र। बिल। सूराख। २. दरज। दरार। ३. गवाक्ष। झरोखा। वातायन।
रौजा—पुं०[अ० रौज़ा] १ बाग। बगीचा। २. किसी बडे आदमी की कब्र के ऊपर बनी हुई बडी इमारत। समाधि। जैसे—ताजबीबी का रौजा।
†पुं० दे० 'रोजा'।
रौत—पुं०[हिं० रावत] ससुर।
रौताइन—स्त्री०[हिं० राव, रावत] १ राव या रावत की पत्नी। ठकुराइन। २ स्त्रियो के लिए आदरसूचक सबोधन।
रौताई—स्त्री०[हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] १ राव या रावत होने की अवस्था, पद या भाव। २. रावतो या बडे आदमियों की-सी अकड या ऐठ। उदा०—रौताई और कूसल खेमा।—जायसी।
रौदा—पुं०[?] एक प्रकार का चावल। उदा०—झिनवा, रौदा, दाउद खानी।—जायसी।
†पुं०=रोदा (धनुष की डोरी)।
रौद्र—वि०[सं० रुद्र+अण्] [भाव० रुद्रता] १ रुद्र-सबधी। रुद्र का। २. बहुत ही उग्र, प्रचड, भीषण या विकट। ३. बहुत अधिक क्रोध या कोप का परिचायक अथवा सूचक।
पुं० १. क्रोध। गुस्सा। रोष। २ आतप। घाम। धूप। ३ यमराज। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ५ साहित्य मे नौ रसो मे से एक जो किसी प्रकार का अत्याचार, अन्याय, अपमान, अशिष्टता आदि का व्यवहार देखकर उसे रोकने या उसका प्रतिकार करने के विचार से मन मे होनेवाले क्रोध से उत्पन्न होता है। ६ गरमी। ताप। ७ ग्यारह मात्राओवाले छदो की सज्ञा। ८. साठ संवत्सरों मे से ५४वा सवत्सर। ९. दे० 'रौद्र-केतु'।
रौद्र-केतु—पुं०[सं० कर्म० स०]आकाश के पूर्व दक्षिण मे शूल के अगले भाग

के समान कपिश (कपासी) रूक्ष (रूखा) ताम्रवर्ण किरणों से युक्त एक केतु। (बृहत्संहिता)

रौद्रता—स्त्री०[सं० रौद्र+तल्+टाप्] १. रुद्र होने की अवस्था, भाव या गुण। २. भयंकरता। भीषणता। ३ प्रखरता। प्रचंडता।

रौद्र-दर्शन—वि०[सं० ब० स०] देखने में डरावना। भीषण आकृति या रूपवाला। जिसे देखने से डर लगे।

रौद्रार्क—पु०[सं०रौद्र-अर्क, उपमित० स०] १३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

रौद्री—स्त्री०[सं० रौद्र+ङीप्] १. रुद्र की पत्नी, गौरी। २. गांधार स्वर की दो श्रुतियों में से पहली श्रुति।

रौन†—पुं०=रमण।

रौनक—स्त्री०[अ० रौनक] १ सुन्दर वर्ण और आकृति या रूप। २. चमक-दमक और उसके कारण होनेवाली शोभा। जैसे—यह सुनते ही उनके चेहरे पर रौनक आ गई। ३. प्रसन्न वदन लोगों की चहल-पहल या जमवट। बहार। जैसे—सन्ध्या को इस बाजार में बहुत रौनक रहती है।

रौनकी—वि०[हिं० रौनक] १. रौनक लगनेवाला। २. (स्थान) जहाँ रौनक हो।

रौना—पु० [फा० रवाना] द्विरागमन। गौना। मुकलावा।

†अ०=रोना।

†पुं०=रावण। (उपेक्षासूचक)

रौनी†—स्त्री०=रमणी।

रौप्य—पु०[सं० रूप्य+अण्] चाँदी। रूपा।

वि० चाँदी का बना हुआ।

रौमक—पु०[सं० रुमा+वुल्—अक] साँभर नमक।

रौम-लवण—पु०[सं० कर्म० स०] साँभर नमक।

रौर*—स्त्री०=रौर।

रौरव—वि० [सं० रुरु+अण्] १ रुरु मृग-सम्बन्धी। रुरु मृग का। २. भयकर। ३. घोर। भीषण। ४ धूर्त और बेईमान। ५ अपनी बात पर दृढ़ रहनेवाला।

पु० पुराणानुसार पाँचवाँ नरक जो बहुत भीषण कहा गया है।

रौरा†—पु०= रौला।

वि० रावरा (आपका)।

रौराना—स० [हिं० रौर, रौरा] व्यर्थ बोलना या हल्ला करना। प्रलाप करना। बकना।

रौरि*—स्त्री०=रौर।

रौरे—सर्व०[हिं० राव, रावल] आप। (आदरसूचक संबोधन)

रौलांग—पु०[?] [स्त्री० रौलांगी] जोगी।

रौला—पुं०[सं० रवण] १. शोर। हल्ला। २. झंझट। बखेड़ा। ३. ऐसा उपद्रव जिसमें खूब हुल्लड़ हो, और यह पता न लगे कि क्या हुआ।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

रौलि—स्त्री० [देश०] १. तमाचा। थप्पड़। २. धौल (सिर पर मारी जानेवाली)।

रौशन—वि०=रोशन।

रौशनदान—पुं०=रोशनदान।

रौशनाई—स्त्री०=रोशनाई।

रौशनी—स्त्री०=रोशनी।

रौस†—स्त्री०=रौस।

रौसली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिकनी उपजाऊ मिट्टी जिसे बरसाती नदी अपने किनारों पर छोड़ जाती है।

रौसा—पुं०=रौंस।

पुं०=रौसा (केवाँच)।

रौहाल—पु०[देश०] १. घोड़ा। २. घोड़ों की जाति। ३. घोड़ों की एक प्रकार की गति या चाल।

रौहिण—पु०[सं० रोहिण+अण्] चंदन।

रौहिणेय—पुं०[सं० रोहिणी+ढक्—एय] रोहिणी के पुत्र, बलराम। २. बुध ग्रह। ३. पन्ना या मरकत नामक रत्न। ४. गौ का बच्चा। बछड़ा।

वि० रोहिणी-सम्बन्धी।

र्‌यासत†—स्त्री०=रियासत।

र्‌योरी†—स्त्री०=रेवड़ी।

र्‌वाब†—पु०=रोब।

ल

ल—व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान के विचार से तालव्य, घोष, अल्पप्राण, ईषत्स्पृष्ट तथा अन्तःस्थ व्यंजन।

पुं० [सं०√ली+ड] १ इन्द्र। २. पृथ्वी।

प्रत्य० कुछ स्थानों के नाम के साथ 'कूल' के संक्षिप्त रूप के रूप में प्रयुक्त। जैसे—काबुल (कुभा+कूल), गोमल (गोमत+कूल)।

लंक—स्त्री० [सं०] कमर। कटि।

†पु० [?] ढेर। राशि। जैसे—देखते-देखते उसने किताबों का लंक लगा दिया।

क्रि० प्र०—लगाना।

†स्त्री०=लंका (द्वीप)।

लंक-टंकटा—स्त्री० [सं०] १. सुकेश राक्षस की माता और विद्युत्केश की कन्या का नाम। २. पुराणानुसार सन्ध्या की कन्या का नाम।

लंक-दीप— पु०=लंका (द्वीप)।

लंक-नाथ—पुं० [सं० लंकानाथ] १. रावण। २. विभीषण।

लंकनायक—पुं०=लंकनाथ।

लंक-लाट—पु० [अं० लांग क्लाथ] एक प्रकार का चिकना मोटा कपड़ा।

लंका—स्त्री०[सं०√रम् (रमण)+क बा०, रस्यल+टाप्] १. भारत के दक्षिण का एक प्रसिद्ध द्वीप जहाँ पहले रावण का राज्य था। लोगों का विश्वास है कि रावण के समय यह टापू सोने का था। २. मध्य-कालीन साहित्य में आधुनिक सिंहल से भिन्न एक और द्वीप, जिसे

लंपट—वि० [सं०√रम् (क्रीडा)+अटन्=पुक्, रस्य लः] जो कामुक होने के कारण जगह जगह व्यभिचार करता फिरता हो।
पुं० स्त्री का उपपति। यार।

लंपटता—स्त्री० [सं० लंपट+तल्+टाप्] लपट होने की अवस्था या भाव। दुराचार। कुकर्म।

लंपाक—पुं० [सं०] १. लंपट। दुराचारी। २. पुराणानुसार उत्तर पश्चिमी भारत के मुरंड देश का एक नाम।

लंब—वि० [सं०√लंब् (लटकना आदि)+अच्] १. जो किसी तल से किसी ओर इस प्रकार सीधा गया हो कि उसके दो समकोण बनते हो। (पर्पेन्डिकुलर) २ नीचे की ओर झूलता या लटकता हुआ।
पुं० १. किसी रेखा पर खडी और सीधी गिरनेवाली रेखा। २. कोई लंबी और बिलकुल सीधी रेखा। ३. ज्योतिष मे, ग्रहो की एक गति। ४ एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। इसी को 'प्रलबासुर' भी कहते है। ५ नाचनेवाला। नर्तक। ६. एक प्राचीन मुनि। ७. स्त्री का पति। स्वामी। ८ शुद्ध राग का एक भेद। ९. अंग। अवयव। १०. विलब। देर।
वि०=लंबा।

लंबक—पु० [सं०√लंब+कन्] १. किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। २. मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३. फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार के योग जिनकी संख्या १५ कही गई है।

लंब-कर्ण—वि० [सं० ब० स०] लबे कानोवाला। जिसके कान लंबे हो।
पुं० १ बकरा। २. हाथी। ३. राक्षस। ४. बाज नामक पक्षी। ५. गधा। ६. खरगोश। ७ अंकोल वृक्ष।

लंब-ग्रीव—वि० [सं० ब० स०] लंबी गरदनवाला।
पुं० ऊँट।

लंब-तड़ंग—वि० [सं० लब-ताड-अग] १. ताड के समान लंबा। बहुत लंबा। २ विशालकाय और हृष्ट-पुष्ट।

लंबन—पुं० [सं०√लंब्+ल्युट्—अन] १. लंबा करने की क्रिया या भाव। २ लटकने या झूलने की क्रिया या भाव। ३ किसी काम या बात को टालते हुए दूर करना या हटाना। ४ गले मे पहनने का ऐसा हार जो नाभि तक लटकता हो। ५ अवलंब। आश्रय। सहारा। ६. कफ। बलगम।

लंब-पयोधरा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

लंबमान—वि० [सं०√लंब्+शानच्] दूर तक गया या फैला हुआ। लंबाई मे या सीधे बल।

लंबर†—पु०=नबर।

लंबरदार=पुं०=नबरदार।

लंबा—वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी, भाव० लंबाई] १ (पदार्थ) जिसका एक सिरा उसके दूसरे सिरे से अधिक दूरी पर हो। जिसके दोनो सिरो के बीच का विस्तार बहुत हो। 'चौड़ा' का विपर्यय। जैसे—लंबा कपडा, लबे बाल, लंबी लाठी।
पद—लंबा-चौड़ा=(क) जिसका आयतन और विस्तार दोनो बहुत अधिक हो। जैसे—लंबा-चौड़ा मैदान। (ख) अनावश्यक और असाधारण रूप से व्यर्थ बढ़ाया हुआ। जैसे—लंबी-चौडी बातें करना।
२. जो ऊपर की ओर दूर तक उठा हो। अपेक्षया अधिक ऊँचाईवाला। जैसे—लबा आदमी, लंबा पेड, लंबा बाँस आदि। ३. बीचवाले अवकाश, काल आदि के विचार से जो नाप या मान मे अधिक हो। जो कम या थोडा न हो। जैसे—लंबी अवधि, लबा सफर, लंबा स्वर।
मुहा०—(किसी को) लंबा करना=(क) पीछा छुड़ाने के लिए किसी को चलता करना या दूर हटाना। धता बताना। जैसे—जब वह बहुत गिडगिडाने लगा, तब मैंने उसे एक रुपया देकर लंबा किया। (ख) इतना मारना-पीटना कि आदमी जमीन पर बेसुध होकर गिर पडे। लंबा साँस लेना=बहुत अधिक दुःखी या निराश होने पर दीर्घ निःश्वास लेना। ठढी साँस लेना। लंबा या लंबे होना=पीछा छुडाने या जान बचाने के लिए कही से चल देना। खिसक या हट जाना। जैसे—आप तो एक बात कहकर लबे हुए, और वह मेरी जान खाने लगा।
४. आयतन या विस्तार के विचार से किसी निश्चित मान का। जैसे—गज भर लबा साँप, दस हाथ लंबी रस्सी। ५. जिसका विस्तार किसी नियत या साधारण मान से अधिक हो। जैसे—लबी कहानी, लंबा खर्च, लंबा वादा। ६ जो किसी बात मे अपने पूरे विस्तार तक आगे बढ़ा या खिंचा हुआ हो। जैसे—हाथ लंबा करो तो देखें कि कहाँ चोट लगी है।
मुहा०—लंबी तानना=लंबाई के बल सीधे लेटकर, खूब पैर फैलाकर और चादर आदि ओढकर या ऊपर तानकर निश्चिंत भाव से सोना।

लंबाई—स्त्री० [हिं० लंबा] १. लंबा होने की अवस्था या भाव। लबा-पन। २ किसी वस्तु का सबसे बडा आयाम या पक्ष। (चौडाई और मोटाई से भिन्न।)

लंबान—स्त्री०=लबाई।

लंबाना—स०, अ० [हिं० लबा]लंबा करना। लंबा होना।

लंबायमान—वि० [सं० लबमान] १. लबा किया हुआ। २. लबाई के बल लेटा हुआ।

लंबा हाथ—पु० [हिं०] १. ऐसा हाथ (या उसका अंगी व्यक्ति) जिसकी पहुँच या प्रभाव बहुत दूर तक हो। २. ऐसी चाल या दाँव, जिसमे बहुत अधिक प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हुई या होती हो। जैसे—इस बार तो तुमने लबा हाथ मारा।
क्रि० प्र०—मारना।

लंबिका—स्त्री० [सं०√लंब्+ण्वुल्—अक,+टाप् इत्व] गले के अन्दर की घटी। कौआ।

लंबित—भू० कृ० [सं०√लंब+क्त] १. लंबा किया हुआ। २. निश्चय, विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। स्थगित किया हुआ। (पेन्डिंग) ३. लटकता हुआ। ४ लंब के रूप मे आया हुआ। ५. आधारित।
पुं० गोश्त। मास।

लंबी—वि० हिं० लबा का स्त्री० रूप।
मुहा० दे० 'लंबा' के अन्तर्गत।

लंबुक—पुं० [सं०] लबक (योग)।

लंगर-गाह—पुं० [फा०] किनारे पर का वह स्थान जहाँ लंगर डालकर जहाज ठहराये जाते हैं। बन्दरगाह।

विशेष—यद्यपि फा० में गाह (जगह) स्त्री० ही है, फिर भी हिन्दी में उससे बने हुए बन्दरगाह, लंगरगाह आदि शब्द प्रायः पुं० रूप में ही प्रचलित हैं।

लँगराई—स्त्री० [हिं० लंगर+आई (प्रत्य०)] लंगर अर्थात् दुष्ट या पाजी होने की अवस्था, क्रिया या भाव। नटखटी। शरारत।

लँगराना—अ०=लँगड़ाना।

लँगरैया—स्त्री०=लँगराई।

लंगल—पुं० [सं०√लग्+कलच्] हल।

लंगी—स्त्री० [फा० लंग=लँगड़ा] कुश्ती का एक दाँव, जिसमें अपनी एक टाँग लँगड़ी करके, विपक्षी की टाँग में अड़ाकर उसे गिराया जाता है।

लंगुन—पुं० [?] एक तरह का धान्य।

लंगूर—पुं० [सं० लांगूलिन्] १ एक प्रकार का बन्दर जिसका मुँह और हाथ-पैर काले, सारा शरीर भूरा या सफेद और दुम बहुत लंबी होती है, जिससे वह प्रायः कोड़े की तरह आघात करता है। २ दुम। पूँछ।

लंगूर-फल—पुं० [हिं० लंगूर+सं० फल] नारियल।

लंगूरी—स्त्री० [हिं० लंगूर+ई (प्रत्य०)] १. घोड़े की एक प्रकार की चाल जिसमें वह लंगूरों की तरह उछल-उछल कर चलता है। २ वह इनाम जो चोरों को चोरी गए हुए मवेशियों का पता लगाने पर दिया जाता है।

लंगूल—पुं० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लंगोचा—पुं० [?] कीमे में भरकर तली हुई जानवर की आँत। कुलमा। गुलमा।

लँगोट—पुं० [सं० लिंग+पट] [स्त्री० लँगोटी] कमर में बाँधने का एक प्रकार का वस्त्र, जिसमें केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।

पद—लँगोट-बंद।

मुहा०—लंगोट का ढीला=जो सुयोग मिलने पर पर-स्त्री से निस्संकोच संभोग कर सकता हो। लँगोट का सच्चा=जो कभी पर-स्त्री से संभोग न करता हो।

लँगोट-बंद—वि० [हिं०] [भाव० लंगोटबंदी] जिसने स्त्री-संभोग या पर-स्त्री संभोग न करने की प्रतिज्ञा कर रखी हो।

लँगोटा—पुं०=लँगोट।

लँगोटी—स्त्री० [हिं० लँगोट] १ छोटा लँगोट। २ वह छोटा-सा कपड़ा, जो बच्चों की कमर में उपस्थ आदि ढकने के लिए बाँधा जाता है।

पद—लँगोटिया यार=उस समय का मित्र जब कि दोनों लँगोटी बाँधकर फिरते थे। बचपन का मित्र।

३. गरीबों, साधुओं आदि के पहनने का बहुत छोटा पतला वस्त्र। कौपीन।

पद—लँगोटी में मस्त=पास में कुछ न रहने पर भी प्रसन्न रहनेवाला।

मुहा०—लँगोटी पर फाग खेलना=पास में कुछ भी न होने पर या बहुत ही कम धन होने पर भी आनंद-मंगल और भोग-विलास करना। (किसी को) लँगोटी बँधवाना=बहुत दरिद्र कर देना। इतना धनहीन कर देना कि पास में पहनने को लँगोटी के सिवा और कुछ न रह जाय। (किसी की) लँगोटी बिकवाना=इतना दरिद्र कर देना कि पहनने को लँगोटी तक न रह जाय।

लंघक—वि० [सं०√लंघ् (गति)+ण्वुल्—अक] १. लाँघनेवाला। अतिक्रमण करनेवाला। २. नियम भंग करनेवाला।

लंघन—पुं० [√लंघ्+ल्युट्—अन] १ लाँघने की क्रिया या भाव। उल्लंघन करना। २. बिना कुछ खाये पिये दिन-रात बिताना। उपवास या फाका करना। ३. घोड़े की एक प्रकार की चाल। ४. ऐसा उपाय, जिससे मार्ग में पड़नेवाली बाधाएँ व्यर्थ सिद्ध होती हो और काम जल्दी तथा सुभीते से होता हो।

लंघनट—पुं० [सं०] कलाबाजी के खेल दिखानेवाला नट।

लंघना—स०=लाँघना। (पश्चिम)

वि० जिसने उपवास किया हो। भूखा।

लंघनीय—वि० [सं०√लंघ्+अनीयर] १. जिसे लाँघा जा सके। जो लाँघे जाने के योग्य हो, अथवा लाँघा जाने को हो। २. जिसका उल्लंघन या अवज्ञा हो सके। ३. उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य।

लँघाना—स० [हिं० लाँघना का प्रे०] १. किसी को लाँघने में प्रवृत्त करना। २ रास्ते की कठिनाइयों आदि से बचाते हुए पार कराना या पहुँचाना।

लंघित—भू० कृ० [सं०√लंघ्+क्त] १. जिसे लाँघा गया हो। २. अतिक्रमित। ३. उपेक्षित तथा तिरस्कृत।

लंघ्य—वि० [सं०√लंघ्+ण्यत्] १. जिसे लाँघ सकें। २. जिसे लंघन या उपवास करा सकें।

लंच—पुं० [अं०] दोपहर के समय किया जानेवाला भोजन।

लंज—पुं० [सं०√लंज्+अच्)] १. पैर। पाँव। २ काछ। लाँग। ३. दुम। पूँछ। ४. लपटता। ५. सोता। स्रोत।

लंजा—स्त्री० [सं० लंज+टाप्] १. लक्ष्मी। २ निद्रा। नींद। ३. सोता। ४. कुलटा। पुंश्चली।

लंजिका—स्त्री० [सं०√लंज्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] वेश्या। रंडी।

लंठ—वि० [देश०] [भाव० लठई] १. जिसमें कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। २ उजड्ड।

लंठई—स्त्री० [हिं० लंठ] लंठ होने की अवस्था या भाव। लंठपन।

लंड—पुं० [सं०√लंड् (ऊपर फेंकना)+घञ्] गू। विष्ठा।

पुं० [सं० लिंग] पुरुष की जननेंद्रिय। लिंग।

लंडी—स्त्री० [हिं० लंड] दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा।

लँडूरा—वि० [देश०] [स्त्री० लँडूरी] १. (पक्षी) जिसकी पूँछ न हो अथवा काट दी गई हो। २. जिसका कोई शोभाजनक अंग नष्ट हो गया हो या रह गया हो।

लंडो—स्त्री०=लंडी (कुलटा)।

लंतरानी—स्त्री० [अ०] शेखी में आकर कही जानेवाली लंबी-चौड़ी तथा आत्म-प्रशंसा सूचक बात।

लंदराज—पुं० [?] एक तरह की मोटी चादर।

लंप—पुं० [अं० लैम्प] पाश्चात्य ढंग का विशेष प्रकार का दीपक जिसमें प्रकाश बढ़ाने और फैलाने के लिए प्रायः शीशे की चिमनी लगी रहती है।

लंपट—वि० [सं०√रम् (क्रीड़ा)+अटन्=पुक्, रस्य लः] जो कामुक होने के कारण जगह जगह व्यभिचार करता फिरता हो।
पुं० स्त्री का उपपति। यार।

लंपटता—स्त्री० [सं० लंपट+तल्+टाप्] लंपट होने की अवस्था या भाव। दुराचार। कुकर्म।

लंपाक—पुं० [सं०] १. लंपट। दुराचारी। २. पुराणानुसार उत्तर पश्चिमी भारत के मुरंड देश का एक नाम।

लंब—वि० [सं०√लंब् (लटकना आदि)+अच्] १. जो किसी तल से किसी ओर इस प्रकार सीधा गया हो कि उसके दो समकोण बनते हों। (पर्पेन्डिकुलर) २. नीचे की ओर झूलता या लटकता हुआ।
पुं० १. किसी रेखा पर खड़ी और सीधी गिरनेवाली रेखा। २. कोई लंबी और बिलकुल सीधी रेखा। ३. ज्योतिष में, ग्रहों की एक गति। ४. एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। इसी को 'प्रलंबासुर' भी कहते हैं। ५. नाचनेवाला। नर्तक। ६. एक प्राचीन मुनि। ७. स्त्री का पति। स्वामी। ८. शुद्ध राग का एक भेद। ९. अंग। अवयव। १० विलंब। देर।
वि०=लंबा।

लंबक—पुं० [सं०√लंब+कन्] १. किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। २. मुँह में होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३. फलित ज्योतिष में, एक प्रकार के योग जिनकी संख्या १५ कही गई है।

लंब-कर्ण—वि० [सं० ब० स०] लंबे कानोंवाला। जिसके कान लंबे हों।
पुं० १. बकरा। २. हाथी। ३. राक्षस। ४ बाज नामक पक्षी। ५. गधा। ६ खरगोश। ७. अंकोल वृक्ष।

लंब-ग्रीव—वि० [सं० ब० स०] लंबी गरदनवाला।
पुं० ऊँट।

लंब-तड़ंग—वि० [सं० लंब-ताड़-अग] १. ताड़ के समान लंबा। बहुत लंबा। २ विशालकाय और हृष्ट-पुष्ट।

लंबन—पुं० [सं०√लंब्+ल्युट्—अन] १. लंबा करने की क्रिया या भाव। २ लटकने या झूलने की क्रिया या भाव। ३. किसी काम या बात को टालते हुए दूर करना या हटाना। ४ गले में पहनने का ऐसा हार जो नाभि तक लटकता हो। ५ अवलंब। आश्रय। सहारा। ६. कफ। बलगम।

लंब-पयोधरा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

लंबमान—वि० [सं०√लंब्+शानच्] दूर तक गया या फैला हुआ। लंबाई में या सीधे बल।

लंबर†—पुं०=नंबर।

लंबरदार=पुं०=नंबरदार।

लंबा—वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी, भाव० लंबाई] १. (पदार्थ) जिसका एक सिरा उसके दूसरे सिरे से अधिक दूरी पर हो। जिसके दोनों सिरों के बीच का विस्तार बहुत हो। 'चौड़ा' का विपर्यय। जैसे—लंबा कपड़ा, लंबे बाल, लंबी लाठी।
पद—लंबा-चौड़ा=(क) जिसका आयतन और विस्तार दोनों बहुत अधिक हों। जैसे—लंबा-चौड़ा मैदान। (ख) अनावश्यक और असाधारण रूप में व्यर्थ बढ़ाया हुआ। जैसे—लंबी-चौड़ी बातें करना।
२. जो ऊपर की ओर दूर तक उठा हो। अपेक्षया अधिक ऊँचाईवाला। जैसे—लंबा आदमी, लंबा पेड़, लंबा बाँस आदि। ३. बीचवाले अव-काश, काल आदि के विचार से जो नाप या मान में अधिक हो। जो कम या थोड़ा न हो। जैसे—लंबी अवधि, लंबा सफर, लंबा स्वर।
मुहा०—(किसी को) लंबा करना=(क) पीछा छुड़ाने के लिए किसी को चलता करना या दूर हटाना। चंपत बनाना। जैसे—जब वह बहुत गिड़गिड़ाने लगा, तब मैंने उसे एक रुपया देकर लंबा किया। (ख) इतना मारना-पीटना कि आदमी जमीन पर बेसुध होकर गिर पड़े। लंबा साँस लेना=बहुत अधिक दुःखी या निराश होने पर दीर्घ निःश्वास लेना। ठंढी साँस लेना। लंबा या लंबे होना=पीछा छुड़ाने या जान बचाने के लिए कहीं से चल देना। खिसक या हट जाना। जैसे—आप तो एक बात कहकर लंबे हुए, और वह मेरी जान खाने लगा।
४. आयतन या विस्तार के विचार से किसी निश्चित मान का। जैसे—गज भर लंबा साँप, दस हाथ लंबी रस्सी। ५. जिसका विस्तार किसी नियत या साधारण मान से अधिक हो। जैसे—लंबी कहानी, लंबा खर्च, लंबा वादा। ६ जो किसी बात में अपने पूरे विस्तार तक आगे बढ़ा या खिंचा हुआ हो। जैसे—हाथ लंबा करो तो देखें कि कहाँ चोट लगी है।
मुहा०—लंबी तानना=लंबाई के बल सीधे लेटकर, खूब पैर फैलाकर और चादर आदि ओढ़कर या ऊपर तानकर निश्चिंत भाव से सोना।

लंबाई—स्त्री० [हिं० लंबा] १ लंबा होने की अवस्था या भाव। लंबा-पन। २. किसी वस्तु का सबसे बड़ा आयाम या पक्ष। (चौड़ाई और मोटाई से भिन्न।)

लंबान—स्त्री०=लंबाई।

लंबाना—स०, अ० [हिं० लंबा] लंबा करना। लंबा होना।

लंबायमान—वि० [सं० लंबमान] १ लंबा किया हुआ। २ लंबाई के बल लेटा हुआ।

लंबा हाथ—पुं० [हिं०] १ ऐसा हाथ (या उसका अंगी व्यक्ति) जिसकी पहुँच या प्रभाव बहुत दूर तक हो। २. ऐसी चाल या दाँव, जिसमें बहुत अधिक प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हुई या होती हो। जैसे—इस बार तो तुमने लंबा हाथ मारा।
क्रि० प्र०—मारना।

लंबिका—स्त्री० [सं०√लंब्+ण्वुल्—अक,+टाप् इत्व] गले के अन्दर की घंटी। कौआ।

लंबित—भू० कृ० [सं०√लंब+क्त] १. लंबा किया हुआ। २. निश्चय, विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। स्थगित किया हुआ। (पेन्डिंग) ३ लटकता हुआ। ४. लंब के रूप में आया हुआ। ५. आधारित।
पुं० गोश्त। मांस।

लंबी—वि० हिं० लंबा का स्त्री० रूप।
मुहा० दे० 'लंबा' के अन्तर्गत।

लंबूक—पुं० [सं०] लंबक (योग)।

लंबू—वि० [हिं० लंबा] जो आकार में अपेक्षया अधिक ऊँचा हो। (परिहास और व्यंग)
पुं० [?] चिता पर रखे हुए मृत शरीर को जलाने के लिए उसमें आग लगाना। मृत का दाह-कर्म।
क्रि० प्र०—देना।

लंबूषा—स्त्री० [सं०] सात लड़ियोंवाला हार।

लंबोतरा—वि० [हिं० लंबा] जो प्रायः गोलाकार होने पर कुछ-कुछ लंबा हो। जिसमें गोलाई के साथ लंबाई भी हो। जैसे—लंबोतरा मोती।

लंबोदर—वि० [सं० लंब-उदर, ब० स०] १ लंबे या मोटे पेटवाला। २. बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।
पुं० गणेश।

लंबोष्ठ—वि० [सं० लंब-ओष्ठ, ब० स०] लंबे होठोंवाला।
पुं० १. ऊँट। २. एक देवता।

लंभ—पुं० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+घञ्, नुम्] प्राप्ति।

लंभन—पुं० [सं०√लभ्+ल्युट्—अन, नुम्] १. ध्वनि। शब्द। २ कलंक। लांछन।

लंभनीय—वि० [सं०√लभ्+अनीयर, नुम्] प्राप्त किये जाने के योग्य।

लंभित—भू० कृ० [सं०√लभ्+क्त, नुम्] १. प्राप्त किया हुआ। २. दिया हुआ। ३. कहा हुआ।

लँहगा—पुं०=लहँगा।

लँहदा—स्त्री०=लहँदा।

लउआ†—पुं०=लौआ (कद्दू या घीया)।

लउटी†—स्त्री०=लकुटी (छड़ी)।

लऊक़—पुं० [अ० लऊक़] चाटकर खाने की औषधि। अवलेह।

लक—पुं० [सं०√लक् (आस्वाद)+अच्] १ ललाट। २ जंगली धान की बाल।

लकड़—पुं० [हिं० लकड़ी] १. हिं० लकड़ी का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लकड़हारा। २. पूर्वजों के कुछ संबंधसूचक नामों के साथ लगनेवाला एक शब्द जो 'पर' से भी ऊपर की स्थिति का वाचक होता है। जैसे—लकड़-दादा, लकड़-नाना।

लकड़-दादा—पुं० [हिं० लकड़+दादा] [स्त्री० लकड़-दादी] पर-दादा से बड़ा दादा।

लकड़बग्घा—पुं० [हिं० लकड़+बाघ] भेड़िये की जाति का एक पशु।

लकड़हारा—पुं० [हिं० लकड़+हारा (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो जंगल से लकड़ियाँ काटकर अपनी जीविका चलाता हो।

लकड़ा—पुं० [हिं० लकड़ी] लकड़ी का मोटा कुंदा। लक्कड़।

लकड़ाना†—अ० [हिं० लकड़ी] १ सूखकर लकड़ी की तरह सख्त हो जाना। २. लकड़ी की तरह बिलकुल दुबला हो जाना। ३. (अंग, रोगी आदि का) ऐंठकर लकड़ी की तरह कड़ा होना।

लकड़ी—स्त्री० [सं० लगुड] १ वृक्षों, झाड़ियों आदि के तनों और डालियों का वह कटा और ठोस अंश जो छाल के नीचे रहता है, और काट लिये जाने पर प्राय. जलाने तथा इमारतें बनाने के काम आता है। काठ। काष्ठ। २. इसका वह मोटा और सुखाया हुआ रूप जो प्रायः चूल्हे आदि में जलाने के काम आता है। ईंधन। ३. कुछ विशिष्ट प्रकार के वृक्षों आदि की वह पतली और लंबी शाखा जो काटकर छड़ी, डंडे आदि के रूप में लाई जाती है, और जिससे चलने में सहारा लिया जाता तथा आवश्यकता होने पर किसी पर आघात या प्रहार भी किया जाता है।
वि० सूखा हुआ।
पद—लकड़ी-सा=बहुत दुबला-पतला।
मुहा०—(किसी को) लकड़ी देना=किसी मृत शरीर या शव को चिता पर रखकर जलाना। (पदार्थ का) सूखकर लकड़ी होना=अपेक्षित कोमलता से रहित होकर कठोर या सख्त होना। जैसे—सबेरे की रखी हुई रोटी सूखकर लकड़ी हो गई है। (व्यक्ति का) सूखकर लकड़ी होना=चिंता, धनाभाव, रोग आदि के कारण शरीर का बहुत ही क्षीण या दुर्बल होना। लकड़ी चलाना=लाठी से मार-पीट करना।

लक-दक—पुं० [फा०] ऐसा मैदान जहाँ पेड़, पौधे और घास न हो। चटियल मैदान। बंजर।
वि० बहुत अधिक अलंकरणों से लदा हुआ।

लकब—पुं० [अ० लक़ब] १. उपाधि। खिताब। पदवी। २. उपनाम।

लकरी†—स्त्री०=लकड़ी।

लक़लक़—पुं० [अ०] लंबी गर्दनवाला एक जलपक्षी। ढेंक।
वि० बहुत दुबला-पतला।

लकलका—पुं० [अ० लक़लक़ा] १. साँप की बोली। २. साँपों आदि के बार-बार जीभ हिलाने की क्रिया। ३. [illegible]। ४. दबदबा। रोब।

लकवा—पुं० [अ० लक़वा] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध वात रोग जिसमें रोगी का मुँह टेढ़ा हो जाता है। २. पक्षाघात।
क्रि० प्र०—मारना।

लकसी—स्त्री० [हिं० लकड़ी+अँकुसी] फल आदि तोड़ने की ऐसी लग्गी जिसके सिरे पर अँकुसी लगी रहती है।

लका—पुं० [अ० लक़ा] १. चेहरा। आकृति। २ [illegible] कबूतर।

लकाटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नर बिल्ली जिसके अंडकोशों में से एक प्रकार का मुश्क निकलता है।

लकीर—स्त्री० [सं० रेखा] १. वह चिह्न जो लंबाई के बल में कुछ दूर तक बना या बनाया गया हो। जैसे—कलम से कागज पर या बाण से जमीन पर लकीर खींचना।
क्रि० प्र०—खींचना।—बनाना।
२. कोई ऐसा चिह्न जो दूर तक रेखा के समान बना हो। ३ अक्षरों आदि की पंक्ति। सतर।
४. बहुत दिनों से रेखा आदि के रूप में चली आई हुई प्रणाली, प्रथा या रीति।
पद—लकीर का फकीर=वह जो बिना समझे-बूझे किसी प्राचीन प्रथा पर चलता हो। आँखें बन्द करके पुराने ढंग पर चलनेवाला।

मुहा०—लकीर पीटना=बिना समझे-बूझे पुरानी प्रथा पर चलना।
लकुच—पु० [स०√लक् (आस्वाद)+उचन्]=लकुट।
लकुट—पु० [स०√लक्+उटन्] लाठी। छड़ी।
पु० [स० लकुच] १ मध्यम आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल गुलाब-जामुन के समान होता है। २. उक्त वृक्ष का फल जो खाया जाता है। लुकाठ। लखोट।
लकुटिया†—स्त्री०=लकुटी।
लकुटी—स्त्री० [स० लकुट+ङीप्] छोटी लाठी। छडी।
लकुरी†—स्त्री०=लकुटी।
लकोटा—पु० [देश०] एक प्रकार का पहाडी बकरा जिसके बालो से शाल, दुशाले आदि बनाये जाते हैं।
लक्कड़—पु० [हिं० लकडी] बड़ी और मोटी लकडी। काठ का बडा कुदा।
लक्का—पु० [फा० लका] एक प्रकार का कबूतर जो छाती उभार कर चलता है, और जिसकी पूँछ पखे सी होती है।
लक्खना—वि० [स० लक्षण] [स्त्री० लक्खनी] लक्षणोवाला। उदा०—कुआँरि बतीसौं लक्खनी अस सब माँह अनूप।—जायसी।
लक्खा—वि० [हिं० लाख] [वि० स्त्री० लक्खी] १ जिसमे एक ही तरह की लाखो चीजें हो। जैसे—आमो का लक्खा बगीचा। २ जो लाखो मे एक हो। बहुत बढ़ा-चढा। जैसे—लक्खा योद्धा, लक्खी बेसवा (बहुत ही चतुर और धूर्त दुश्चरित्र स्त्री या वेश्या)। ३. दे० 'लक्खी'।
लक्खी—वि० [हिं० लाख (सख्या)] १. लाख (सख्या) से सम्बन्ध रखनेवाला। लाख या लाखो का। २ जिसके पास लाख या लाखो रुपये हो। लखपती।
वि० [हिं० लाख=लाक्षा] लाख के रग का। लाखी।
पुं० उक्त प्रकार के रग का घोडा।
लक्त—वि० [स०√रक्त] लाल। सुर्ख।
लक्तक—पु० [स० लक्त+कन्] १ अलता, जो स्त्रियाँ पैरो मे लगाती हैं। अलक्तक। २ कपडे का बहुत फटा हुआ छोटा टुकडा। चिथडा। लत्ता।
लक्ष—वि० [स०√लक्ष् (दर्शन)+अच्] सौ हजार। एक लाख।
पु० १ वह जिस पर दृष्टि रखकर काम किया जाय। २ पैर। ३ चिह्न। निशान। ४ अस्त्रो का एक प्रकार का सहार।
लक्षक—वि० [स०√लक्ष्+ण्वुल्—अक] लक्षित करनेवाला।
पु० [स०√लक्ष् (दर्शन)+ण्वुल्] वह शब्द जो सबध या प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करे।
लक्षण—पु० [स०√लक्ष्+ल्युट्—अन] १. किसी पदार्थ की आकृति आदि मे दिखाई देनेवाली वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। असार। जैसे—आकृति से बुद्धिमत्ता के या आकाश मे वर्षा के लक्षण दिखाई देना।
विशेष—चिह्न और लक्षण मे मुख्य अतर यह है कि चिह्न तो सदा मूर्त और स्पष्ट होता है, पर लक्षण प्राय अमूर्त और अस्पष्ट होता है। इसके सिवा चिह्न का प्रयोग तो भूत, प्रस्तुत या वर्तमान के सबध मे होता है, परतु लक्षण का प्रयोग भावी घटनाओ आदि के प्रसग मे ही होता है।
२. किसी वस्तु या व्यक्ति मे होनेवाला कोई ऐसा गुण या विशेषता जो सहसा औरो मे न दिखाई देती हो। (ट्रेट) जैसे—यही सब तो प्रतिभा के लक्षण हैं। ३ शब्दो मे पदो, वाक्यो आदि की ऐसी परिभाषा या व्याख्या, जिससे उनकी ठीक ठीक स्थिति या स्वरूप प्रकट होता हो। जैसे—साहित्य मे किसी अलकार के लक्षण बतलाना। ४ शरीर मे दिखाई पडनेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हो। जैसे—इस रोगी मे क्षय के सभी लक्षण दिखाई देते हैं। ५. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के वे चिह्न जो शुभाशुभ फलो के सूचक माने जाते हैं। जैसे—यदि हाथ मे अमुक लक्षण हो तो आदमी बहुत धनी होता है। ६ शरीर मे होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग जो बालक के गर्भ मे रहने के समय सूर्य या चन्द्रग्रहण लगने के कारण बन जाता है। लच्छन। ७ आचार, व्यवहार आदि के ऐसे ढग या प्रकार जो भले या बुरे होने के सूचक हो। जैसे—इस लडके के लक्षण अच्छे नही दिखाई देते। ८ नाम। सज्ञा। ९. दर्शन। १०. सारस पक्षी।
पुं० लक्ष्मण।
लक्षणक—पु० [स० लक्षण+कन्] चिह्न। निशान।
लक्षण-कार्य—पु० [स० प० त०] १. किसी चीज या बात की पहचान बतलाने के लिए उसके गुणो, विशेषताओ आदि का वर्णन करना। २. परिभाषा।
लक्षणा—स्त्री० [स०√लक्ष्+न, अडागम,+अच्+टाप्] शब्द की तीन शक्तियो मे से दूसरी शक्ति जो अभिधेय से भिन्न परन्तु उसी से सबधित दूसरा अर्थ प्रकट करती है। जैसे—मोहन गधा है। यहाँ गधा अपने अभिधेय अर्थ मे विशिष्ट पशु का वाचक नही बल्कि उसी विशिष्ट पशु की ज्ञान-हीनता का सूचक है।
लक्षणी(णिन्)—वि० [स० लक्षण+इनि] १ जिसमे कोई लक्षण या चिह्न हो। लक्षणोवाला। २ लक्षण जाननेवाला।
लक्षण्य—वि० [स० लक्षण+यत्] १ लक्षण या चिह्न बतलानेवाला। २. लक्षण या चिह्न का काम देनेवाला।
लक्षना*—स्त्री०=लक्षणा।
स०=लखना।
लक्षा—स्त्री० [स० लक्ष+टाप्] एक लाख की सूचक सख्या।
लक्षि—स्त्री०=लक्ष्मी।
पु०=लक्ष्य।
लक्षित—भू० कृ० [स०√लक्ष्+क्त] १ लक्ष्य या ध्यान मे आया या लाया हुआ। जिसकी ओर लक्ष गया हो। २ जिसकी ओर दूसरो का ध्यान लगाया गया हो। निर्दिष्ट। ३ अनुभव से जाना या समझा हुआ। ४ किसी प्रकार के लक्षण या चिह्न से युक्त। ५ जिस पर चिह्न लगाया गया हो।
पु० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति द्वारा ज्ञात होता है।
लक्षित-लक्षणा—स्त्री० [स० स० त०] शब्द की वह शक्ति जो मुख्यार्थ को छोडकर लक्ष्यार्थ का ग्रहण कराती है।
लक्षितव्य—वि० [स०√लक्ष्+तव्य] १ जिसकी ओर लक्ष्य होना उचित हो। २. जिन पर चिह्न किया जाने को हो। ३ जिसकी परिभाषा की जाने को हो।

लक्षिता—स्त्री० [सं० लक्षित+टाप्] साहित्य में, वह नायिका जिसके लक्षणों से उसका पर-पुरुष प्रेम जानकर किसी सखी ने उस पर प्रकट किया हो।

लक्षितार्थ—पुं० [सं० लक्षित-अर्थ, कर्म० स०] शब्द की लक्षणा-शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

लक्षी—स्त्री० [सं० लक्ष+ङीप्] गंगोदक नामक 'सवैया' का दूसरा नाम।
वि० अच्छे चिह्नों या लक्षणोंवाला।

लक्ष्म (क्ष्मन्)—पुं० [सं०√लक्ष+मनिन्] १. चिह्न। २ दाग। ३. विशेषता। ४ परिभाषा। ५. सारस पक्षी। ६. लक्ष्मण।
वि० प्रधान। मुख्य।

लक्ष्मण—पुं० [सं० लक्ष्मन्+अच्] १ लक्षमण। चिह्न। २. सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के एक पुत्र जो शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। ३. दुर्योधन का एक पुत्र। ४. सारस। ५ नाग।
वि० १ लक्षण या चिह्न से युक्त। २ भाग्यवान्। ३ उन्नतिशील।

लक्ष्मण-रेखा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] ऐसी रेखाकार सीमा जो किसी प्रकार लाँघकर पार न की जा सकती हो। (लक्ष्मण जी की खींची हुई उस रेखा के आधार पर जो उन्होंने सोने के हिरन का पीछा करने से पहले सीता के चारों ओर खींची थी।)

लक्ष्मण-लीका—स्त्री०=लक्ष्मण-रेखा।

लक्ष्मणा—स्त्री० [सं० लक्ष्मण+टाप्] १ श्री कृष्ण की एक पत्नी जो मद्रदेश के राजा वृहत्सेन की पुत्री थी। २. दुर्योधन की एक कन्या। ३ श्रीकृष्ण के पुत्र सांब की पत्नी। ४ एक प्रकार की जड़ी जो पुत्रदा मानी जाती है। यह जड़ी चौड़े पत्ते तथा श्वेत कदवाली होती है तथा पर्वतों पर पाई जाती है। इसका कद औषध के लिए प्रयोग में आता है। नागपत्री। पुत्रदा।

लक्ष्मी—स्त्री० [सं०√लक्ष्+ई, मुट्-आगम] १ भगवान् विष्णु की पत्नी जो धन की अधिष्ठात्री देवी मानी गई हैं। कमला। पद्मा। २. धन-सम्पत्ति। दौलत। ३. शोभा। श्री। ४. दुर्गा। ५ सीता का एक नाम। ६. धन-धान्य बढानेवाली भाग्यवती स्त्री। ७. घर की मालकिन या स्वामिनी के लिए आदरसूचक संबोधन या संज्ञा। ८. कमल। पद्म। ९ हल्दी। १०. शमी वृक्ष। ११. मोती। १२. सफेद तुलसी। १३. मेढ़ासिंगी। १४. ऋद्धि नामक ओषधि। १५. वृद्धि नामक ओषधि। १६ मोक्ष की प्राप्ति। १७ फलने-फूलनेवाला अथवा फला-फूला हुआ वृक्ष। फूलदार वृक्ष। १८ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण,एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। १९ आर्याछंद के २६ भेदों में से पहला भेद जिसके प्रत्येक चरण में २७ गुरु और तीन (३) लघु वर्ण होते हैं।

लक्ष्मीक—वि० [सं० लक्ष्मी√कै (शोभित होना)+क] १ धनवान्। अमीर। २ भाग्यवान्।

लक्ष्मी-कांत—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मी-गृह—पुं० [सं० ष० त०] लाल कमल जिसमें लक्ष्मी का निवास माना जाता है।

लक्ष्मी-जनार्दन—पुं० [सं० मध्य० स०] काले रंग के एक प्रकार के शाल-ग्राम जिन पर चार चक्र बने होते हैं।

लक्ष्मी-टोड़ी—स्त्री० [सं० लक्ष्मी+हिं० टोड़ी] एक एक प्रकार की सकर रागिनी जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

लक्ष्मी-ताल—पुं० [सं० मध्य० स०] १. संगीत में १८ मात्राओं का एक ताल जिसमें १५ आघात और तीन खाली होते हैं। २. श्रीताल नामक वृक्ष।

लक्ष्मी-धर—पुं० [सं० ष० त०] १ विष्णु। २ स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम।

लक्ष्मी-नारायण—पुं० [सं० मध्य० स०] १ लक्ष्मी और नारायण की युगल-मूर्ति। २. लक्ष्मी जनार्दन नामक चक्र-चिह्न युक्त तथा कृष्ण वर्ण शालग्राम।

लक्ष्मी-नृसिंह—पुं० [मध्य० स०] दो चक्र और वनमाला धारण किए हुए विष्णु की एक मूर्ति।

लक्ष्मी-पति—पुं० [ष० त०] १ विष्णु। नारायण। २. श्रीकृष्ण। ३ राजा। ४ लौंग का पेड़। ५ सुपारी का पेड़।

लक्ष्मी-पुत्र—पुं० [ष० त०] धनवान् व्यक्ति। अमीर। २. सीता के पुत्र लव और कुश। ३. कामदेव। ४. माणिक्य या लाल नामक रत्न। ५ घोडा।

लक्ष्मी-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. पद्म। कमल। २ लौंग। ३. माणिक। लाल।

लक्ष्मी-पूजा—स्त्री० [ष० त०] दीपावली के रोज रात में लक्ष्मी की की जानेवाली पूजा।

लक्ष्मी-फल—पुं० [ब० स०] बेल। श्रीफल।

लक्ष्मी-रमण—पुं० [ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मीवत्—पुं० [सं० लक्ष्मी+मतुप् म-व] १ नारायण। विष्णु। २. धनवान् व्यक्ति। ३. कटहल का पेड़। ४. अश्वत्थ। पीपल।

लक्ष्मी-वल्लभ—पुं० [ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मीवान् (वत्)—वि० [सं० लक्ष्मी+मतुप्] १. धनवान्। २ सुन्दर।
पुं० १. विष्णु। २. कटहल। ३ रोहित वृक्ष।

लक्ष्मी-वार—पुं० [ष० त०] गुरुवार।

लक्ष्मी-बीज—पुं० [ष० त०] बीज (मंत्र)।

लक्ष्मीश—पुं० [लक्ष्मी-ईश, ष० त०] १ विष्णु। २ धनवान्। अमीर। ३. आम का पेड़।

लक्ष्मी-सहज—पुं० [ष० त०] १. चन्द्रमा। २ कपूर। ३. इन्द्र का घोड़ा। ४. शंख।

लक्ष्मी-सहोदर—पुं० [ष० त०]=लक्ष्मी-सहज।

लक्ष्य—पुं० [सं०√लक्ष् (दर्शन)+ण्यत्] १. वह वस्तु जिस पर किसी उद्देश्य की सिद्धि के विचार से दृष्टि रखी जाय। निशान। जैसे—(क) चिड़िया को लक्ष्य करके उस पर ढेला फेंकना या तीर चलाना। (ख) किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य की बात करना। २. वह काम या बात जिसकी सिद्धि अभीष्ट हो और इसी लिए जिस पर दृष्टि या ध्यान रखा जाय। उद्देश्य। जैसे—जीवन-भर धन संग्रह ही एक मात्र लक्ष्य रहा। ३ प्राचीन भारत में, अस्त्रों आदि का एक प्रकार का संहार। ४ वह जिसका अनुमान किया गया हो या किया जाय। अनुमेय। ५ शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। ६. बहाना। हीला।

वि० १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. लाख।

लक्ष्यज्ञ—पु० [स० लक्ष्य√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो किसी लक्ष्य की पूर्ति या सिद्धि के लिए अग्रसर तथा प्रयत्नशील हो। २. वह जो यह जानता हो कि मेरा लक्ष्य क्या है।

लक्ष्यज्ञत्व—पु० [स० लक्ष्यज्ञ+त्व] १ वह ज्ञान जो चिह्नो को देखने से उत्पन्न हो। २ वह ज्ञान जो दृष्टात के आधार पर प्राप्त हो।

लक्ष्यता—स्त्री० [स० लक्ष्य+तल्+टाप्] लक्ष्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। लक्ष्यत्व।

लक्ष्यत्व—पु० [सं० लक्ष्य+त्व]=लक्ष्यता।

लक्ष्य-भेद—पु० [ष० त०] =लक्ष्य-वेध।

लक्ष्य-वीथी—स्त्री० [ष० त०] १ वह उपाय या कर्म जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध होता हो। २. ब्रह्मलोक जाने का मार्ग। ३. देव-ध्यान।

लक्ष्य-वेध—पु० [ष० त०] चलते या उडते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना लगाना।

लक्ष्य-वेधी (धिन्)—पु० [स०लक्ष्य√विध् (वेधना)+णिनि] जो लक्ष्य-वेध करता हो। उडते या चलते हुए पदार्थ या जीवो पर निशाना लगाने-वाला।

लक्ष्य-साधन—पु० [ष० त०] १ कोई काम करने से पहले उसके सब अंग या ऊँच-नीच अच्छी तरह देखना। २. अस्त्र चलाने से पहले अच्छी तरह देख लेना जिससे वह निशाने या लक्ष्य पर ठीक जाकर लगे। (साइटिंग)

लक्ष्यार्थ—पुं० [स० लक्ष्य-अर्थ, मध्य० स०] शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। किसी शब्द का वाच्य अर्थ से भिन्न किन्तु उससे सबद्ध अर्थ।

लक्ष्योपमा—स्त्री० [स० लक्ष्य-उपमा, मध्य० स०] साहित्य मे उपमा अलकार का एक भेद जिसमे सम, समान आदि शब्दो या इनके वाचक अन्य शब्दो का प्रयोग न करके यह कहा जाता है कि यह वस्तु अमुक कोटि या वर्ग की है, उसे लज्जित करती है, उससे होड करती है अथवा इसने उससे अमुक गुण या बात चुरा या छीन ली है।

लखघर†—पु०=लाक्षागृह।

लखड़ा†—पु०=रखटी (एक प्रकार का ऊख)।

लखण†—पु० १ =लक्षण। २ लक्ष्मण।

लखन—स्त्री० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

†पु०=लक्ष्मण।

लखना—स० [स० लक्ष] १ लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। २ जरा सा या एक झलक देखकर ही जान या समझ लेना। ३ देखना। ४ इस प्रकार का ध्यान देते हुए देखना कि औरो को पता न चलने पावे। उदा०—आज लखना कि देखता है या नही तुम्हारी ओर। —वृन्दावनलाल वर्मा।

लखपती—पुं० [स० लक्ष+पति] वह जिसके पास लाखो रुपयो की संपत्ति हो। वडा अमीर या धनवान्।

लख-पेड़ा—वि० [हिं० लाख+पेड] (वाग) जिसमे लाख के लगभग अर्थात् बहुत अधिक पेड हों।

लखमी-तात—पुं० [स० लक्ष्मी-तात] समुद्र। (डिं०)

लखमी-वर—पु० [स० लक्ष्मी+वर] विष्णु। (डिं०)

लखर—पु० [देश०] काकडा-सिंगी (वृक्ष)।

लखराऊँ (वँ)—पु० [हिं० लाख]=लख-पेडा (वाग)।

लखलख—वि० फा० लकलक] क्षीण-काय। दुबला-पतला।

लखलखा—पु० [फा० लखलख:] १. अवर, अगर तथा कस्तूरी का वह मिश्रण जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि इसके सुँघाये जाने पर बेहोशी दूर होती है। २ उक्त के आधार पर बेहोशी दूर करनेवाला कोई सुगधित पदार्थ। जैसे—गुलावजल छिडकी हुई चिकनी मिट्टी आदि।

लखलखाना—अ० [अनु०] अधिक भूख से विकल होना। भूख-प्यास से विलखना।

लखलुट—वि० [हिं लाख+लुटाना] लाखो रुपए लुटा देनेवाला, अर्थात् बहुत वडा अपव्ययी।

लखवट*—पु०=लुकाठ।

लखाई†—स्त्री०=लखाव।

लखाउ†—पु०=लखाव।

लखाघर†—पु०=लाक्षा-गृह।

लखाना—स० [हिं० लखना का प्रे०] १ किसी को कुछ लखने मे प्रवृत्त करना। २. दिखलाना।

†अ० १ लखने मे आना। लखा जाना। २ दिखाई देना।

लखाव—पु० [हिं० लखना] १ लखने या लखे जाने की अवस्था या भाव। २ पहचान। लक्षण। ३. चिह्न। निशान। ४. दृश्य। नजारा।

लखित†—वि०=लक्षित।

लखिमी*—स्त्री० १. =लक्ष्मी। २ =धन-सपत्ति।

लखिया—वि० [हिं० लखना+इया (प्रत्य०)] लखने अर्थात् देखने या ताडनेवाला।

लखी—पु०=लाखी (घोडा)।

लखुआ—पु० [हिं० लाखा+उआ (प्रत्य०)] १. गेहूँ की फसल को हानि पहुँचानेवाला लाल रग का एक कीडा। २. लाल मुँहवाला वदर।

† वि०=लखिया।

लखेदना†—स० १ =खदेडना। २ =लथेडना।

लखेरा—पु० [हिं० लाख+एरा (प्रत्य०)] १ लाख की चूड़ियाँ वनाने-वाला कारीगर। २ हिंदुओ मे उक्त प्रकार का काम करनेवाली एक जाति।

लखोखा—पु० [वि० लाखो+लाख] कई लाख। जैसे—उनके पास लखोखा रुपए है।

लखोखापति—पु० [हिं० लखोखा+स० पति] वह जिसके पास कई लाख रुपए हो।

विशेष—साधारणत लखपती से लखोखापति वहुत अधिक धनवान् होता है।

लखोट, लखोठ—पु०=लुकाठ।

लखौट—स्त्री० [हिं० लाख+औट (प्रत्य०)] लाख की चूडी आदि जो स्त्रियाँ हाथो मे पहनती है।

लखौटा—पु० [हिं० लाख+औटा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का वढिया

उबटन जिसमे केसर, चदन आदि मिला रहता है। २ वह छोटा डब्बा जिसमे स्त्रियाँ टिकली, सिन्दूर, आदि प्रसाधन और सौभाग्य की छोटी-मोटी चीजे रखती हैं।

† पु०=लिखावट।

लखौरी—स्त्री० [स० लक्ष, हिं० लाख (सख्या)] १ किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल आदि चढाने की क्रिया या भाव। जैसे—शिव जी को बेलपत्र की या लक्ष्मी नारायण को तुलसी की लखौरी चढाना।

क्रि० प्र०—चढाना।

स्त्री० [हिं० लाख (सख्या)+औरी (प्रत्य०)] २. एक प्रकार की छोटी पतली ईंट जो प्राय. पुराने मकानो मे पाई जाती है। नौ-तेरही ईंट। ककैया ईट।

विशेष—यह पहले प्रति लाख ईंटो के भाव से बिकती थी, इसी लिए 'लखौरी' कहलाती थी।

स्त्री० [स० लाक्षा, हिं० लाख+औरी (प्रत्य०)] भँवरी द्वारा अपने रहने के लिए बनाया हुआ मिट्टी का घरौंदा।

लख्त—पु० [फा० लख्त] टुकडा। खण्ड। जैसे—लख्ते जिगर=कलजे का टुकडा, अर्थात परम प्रिय (प्राय सन्तान के लिए प्रयुक्त)।

लगंत—स्त्री० [हिं० लगना+अत (प्रत्य०)] १. लगने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी काम या बात के लिए लगनेवाली धुन। लगन। ३ स्त्री-प्रसग। सभोग। (बाजारू)

लग—स्त्री० [हिं० लगना] १. लगे हुए होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात की गहरी धुन। लगन। ३ अनुराग। प्रेम।

† अव्य० १ निकट। पास। २ तक। पर्यन्त। ३ लिए। वास्ते। ४ साथ। सह।

लगजिश—स्त्री० [फा० लगज़िश] १. फिसलन। २. लटपटाहट। ३. भूल-चूक।

लगड़-पेंचा—पु०=दाँव-पेंच।

लगढगा—अव्य०=लगभग।

लगण—पु० [सं०] पलक पर होनेवाली एक तरह की गाँठ।

† पु०=लग्न।

लगदी—स्त्री० [देश०] छोटे बच्चो के गू, मूत्र आदि से सुरक्षित रखने के लिए बिस्तर पर बिछाया जानेवाला कपडा।

लगन—स्त्री० [हिं० लगना] १. लगने की क्रिया या भाव। २. एकाग्र भाव से किसी काम या बात की ओर ध्यान या मन लगाने की अवस्था या भाव। एकात ध्यान और प्रवृत्ति की लौ। जैसे—आज-कल तो उन्हे कविताएँ लिखने की लगन लगी है, अर्थात् उनका सारा ध्यान कविताएँ लिखने की ओर है। उदा०—भूखे गरीब दिल की खुदा से लगन न हो।—नजीर। ३. शृगारिक क्षेत्र मे, प्रगाढ प्रेम। बहुत अधिक मुहब्बत।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

पु० [स० लग्न] १. विवाह के लिए स्थिर किया हुआ कोई शुभ मुहूर्त या साइत।

मुहा०—लगन धरना या रखना=विवाह का मुहूर्त या समय निश्चित करना।

२. वे विशिष्ट दिन और महीने जिनमे हिंदुओ के यहाँ विवाह होना विहित है। सहालग। जैसे—आज-कल लगन-बरात के दिन हैं, इसलिए मजदूर कम मिलते हैं। ३. दे० 'लग्न'।

पुं० [फा०] १ ताँबे या पीतल की एक प्रकार की थाली जिसमे रखकर मोमबत्ती जलाई जाती है। २ किसी प्रकार की बडी थाली या परात। ३ मुसलमानो मे व्याह की एक रीति जिसमे विवाह से पहले थालियो मे मिठाइयाँ आदि भरकर वर के यहाँ भेजी जाती हैं।

लगन-पत्री—स्त्री० [स० लग्न-पत्रिका] कन्या-पक्ष द्वारा वर-पक्ष-वालो के यहाँ भेजा जानेवाला वह पत्र या लेख जिसमे विवाह-सबधी विभिन्न कृत्यों का समय लिखा होता है।

लगनवट—स्त्री० [हिं० लगन] शृगारिक क्षेत्र मे किसी के साथ होने-वाला प्रेम-सम्बन्ध।

लगना—अ० [स० लग्न] १. एक पदार्थ के तल या पार्श्व का दूसरे पदार्थ के तल या पार्श्व के साथ आंशिक अथवा पूर्ण रूप से मिलना या सटना। सलग्न होना। सटना। जैसे—(क) किताब की जिल्द पर कपडा या कागज लगना। (ख) दीवार पर तसवीरे लगना। (ग) किसी के गले (या पैरो) लगना। २. एक चीज का दूसरी चीज पर (या मे) जडा, जोड़ा, टाँका, बैठाया, रखा या सटाया जाना। जैसे—(क) लिफाफे पर टिकट, तसवीर मे चौखटा या साडी मे गोटा लगना। (ख) दीवार मे खिड़की या दरवाजा लगना। (ग) मकान मे नल या बिजली लगना। (घ) दरवाजे मे कुंडी लगना। ३ किसी चीज का उपभोग मे आने के लिए यथा-स्थान आकर जमना, बैठना या स्थित होना। जैसे—नाव मे पाल लगना, बाँस मे झंडी लगना। ४. किसी तल पर किसी गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप मे अथवा यो ही जमाया या पोता जाना। जैसे—पैरो मे महावर लगना, दीवारो पर पलस्तर या रग लगना, चीजो पर निशान लगना, माथे पर तिलक लगना, कपडो मे कीचड लगना। ५. किसी प्रकार की गति की दशा मे एक चीज का पास-वाली दूसरी चीज से रगड खाना या सपृक्त होना। जैसे—(क) यत्र के पहिए का किसी डडे या दूसरे पहिये से लगना। (ख) चलते समय घोड़े का पैर लगना, अर्थात् एक पैर का दूसरे से टकराना या रगड खाना। ६. किसी रूप मे शामिल या सम्मिलित होना। जैसे—(क) पुस्तक मे परिशिष्ट लगना। (ख) कुत्ते का बिल्ली के पीछे लगना।

मुहा०—(किसी के पीछे या साथ) लग चलना—अनुगामी या सगी साथी बनना। जैसे—तुम्हे तो जिससे कुछ प्राप्ति होगी, उसी के पीछे लग चलोगे। (किसी के पीछे) लगना=किसी का भेद लेने या रहस्य जानने अथवा उसे किसी प्रकार की हानि पहुँचाने के लिए छिपकर उसके पीछे चलना। पीछा करना। जैसे—आजकल पुलिस उनके पीछे लगी है।

७ किसी अनिष्ट या कष्टदायक तत्त्व या बात का किसी के साथ सबद्ध या सलग्न होना। जैसे—(क) किसी के पीछे कोई आफत या जहमत लगना। (ख) किसी को रोग या लू लगना। (ग) भूत या प्रेत लगना।

मुहा०—लगी-लिपटी बात कहना=ऐसी बात कहना जो अप्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी दूसरी बात के साथ सबद्ध हो। अस्पष्ट और भ्रामक या द्व्यर्थक बात कहना।

८. आवरण, निरोध आदि के रूप मे रहनेवाली चीज या उसके विभागो का इस प्रकार आकर कही गिरना, बैठना या सटना कि उसके नीचे या पीछे की चीज छिप या ढक जाय अथवा वद हो जाय। आवरण का आकर यथास्थान बैठना। जैसे—दरवाजे के किवाड या कुडी लगना, आँख की पलके या सदूक का ढक्कन लगना (वद होना)। ९ किसी काम, चीज, वात या व्यक्ति का ऐसे स्थान पर पहुँचना या ऐसी स्थिति मे आना कि उसका उपयोग, परिणाम, सार्थकता या सिद्धि हो सके। जैसे—(क) काम ठिकाने या पार लगना। (ख) डाकखाने मे पारसल या रजिस्ट्री लगना। (ग) खाने-पीने की चीजो का अग लगना (अर्थात् शरीर को पुष्ट करना)। १०. किसी चीज का ऐसे क्रम या रूप मे आना या प्रस्तुत होना कि उसका नियमित और यथोचित उपयोग हो सके। जैसे—(क) दूकान या वाजार लगना। (ख) कमरे मे मेज-कुर्सी या गद्दी, तकिया, विछौना आदि लगना। (घ) पान या उसके वीडे लगना। ११. किसी चीज का अनिवार्य और आवश्यक रूप से उपयोग मे आते हुए व्यय होना। काम मे आकर समाप्त होना। जैसे—(क) इस काम मे १०० (या दो महीने) लगेगे। (ख) इस पुस्तक की ५०० प्रतियाँ तो सरकार मे ही लग जायँगी। (ख) दोनो मकान कर्ज चुकाने मे लग गये। १२ व्यक्ति का कार्य मे लगकर उसका सपादन करना। जैसे—सवेरा होते ही वह अपने काम मे लग जाता है।

पद—लगकर=अच्छी और पूरी तरह से। खूब मन लगाकर। जैसे—लगकर इलाज करोगे तभी तुम अच्छे होगे।

१३ किसी का किसी काम या पद पर नियुक्त या नियोजित होना। कर्त्तव्य से संवद्ध होना। जैसे—(क) किसी का काम या नौकरी लगना। (ग) किसी जगह चौकी या पहरा लगना। १४. किसी प्रकार के आघात या प्रहार का आकार प्राप्त होना या अपना परिणाम उत्पन्न करना। किसी तरह की चोट या वार का किसी अग, शरीर या स्थान पर पडना। जैसे—(क) गोली, थप्पड, मुक्का या लाठी लगना। (ख) मन मे किसी की वात लगना।

मुहा०—लगती हुई वात कहना=ऐसी वात कहना जिससे किसी के मन पर आघात हो या चोट लगे। मर्म-भेदी वात कहना। जैसे—चार आदमियो के सामने इस तरह की लगती हुई वात नही कहनी चाहिए।

१५. धारदार या नुकीली चीज की धार या नोक शरीर मे गडना, चुभना, या धँसना। जैसे—(क) हजामत वनाते समय गाल पर उस्तरा लगना। (ख) पैर मे काँटा लगना। (ग) जानवर का दाँत या नाखून लगना। १६. किसी चीज या वात का प्रयुक्त होने पर अपना ठीक और पूरा काम करना अथवा प्रभाव या फल दिखलाना। जैसे—(क) इस वीमारी मे कोई दवा लगती ही नही। (ख) यह ताली इस ताले मे लग जायगी। १७ किसी के साथ इस प्रकार की वातचीत या व्यवहार करना कि वह कुढे या चिढे अथवा लडने पर उतारू हो। छेड़खानी या छेडछाड करना। जैसे—ऐसे लुच्चो से लगना ठीक नही।

मुहा०—(किसी के) मुंह लगना=किसी वडे के साथ उद्दडता या धृष्टता की वातें करना। अश्लीलता की ओर वढ-वढकर वातें करना। जैसे—यह नौकर घर-भर के मुँह लगा है; अर्थात् सबसे वढ-वढकर वाते करता है।

१८ किसी ऐसे काम, चीज, वात या सवध का आरम्भ होना जो कुछ अधिक समय तक निरतर चलता या वना रहे। जैसे—(क) कचहरी, दरवार या मेला लगना। (ख) नया महीना या साल लगना। (ग) किसी काम या वात की आदत या चसका लगना। (घ) किसी से प्रेम, लडाई-झगडा या होड लगना।

मुहा०—(किसी से) लगी होना=पहले से चले आनेवाले उक्त प्रकार के कार्य या सवध का वरावर पूर्ववत् चलता रहना। जैसे—उन दोनो मे वहुत दिनो से लगी है (अर्थात् उसमे प्रेम, लडाई, होड़ आदि का भाव वरावर चला आ रहा है)।

१९. किसी विषय मे या किसी व्यक्ति पर किसी चीज या वात का आरोप या प्रयोग होना। जैसे—(क) किसी पर कोई अभियोग या कलक लगना। (ख) किसी अपराध मे कोई धारा या किसी विषय मे कोई नियम लगना। (ग) एक के दोष के लिए दूसरे का नाम लगना। २०. लाक्षणिक रूप मे और मुख्यत' धार्मिक क्षेत्र मे कोई अनिष्ट वात या स्थिति अनिवार्य रूप से किसी के जिम्मे पडना या होना। निश्चित रूप से किसी अनिष्ट या असद् वात का भागी वनना या होना। जैसे—दोष, पाप, सूतक या हत्या लगना। २१. किसी काम, चीज या वात की किसी रूप मे मानसिक या शारीरिक अनुभूति या प्रतीति होना। जान पडना। जैसे—(क) गरमी, जाड़ा या डर लगना। (ख) खाने-पीने की चीज का खट्टा या मीठा लगना। (ग) किसी आदमी, काम, चीज या वात का अच्छा या वुरा लगना। २२. किसी प्रकार की मानसिक वृत्ति का दृढता या स्थिरतापूर्वक किसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—(क) काम मे जी या मन लगना। (ख) ईश्वर का ध्यान लगना। (ग) घर पहुँचने की चिंता लगना। २३. किसी काम या वात का क्रियात्मक रूप धारण करना या घटित होना। जैसे—ग्रहण लगना, ढेर लगना, देर लगना, नैवेद्य लगना, समाधि लगना, सेंध लगना। २४. किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धि या स्थापना होना। जैसे—वाजी या शर्त लगना, क्रम या सिलसिला लगना। २५. किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक होना। जैसे—(क) इस महीने घर मे दो मन अनाज लगेगा। (ख) यह पुस्तक शास्त्री परीक्षा के पाठ्य-क्रम मे लगी है। (ग) जव काम लगे तव आकर यह सामान ले जाना। २६ पारिवारिक सवध या रिश्ते के विचार से किसी रूप मे किसी के साथ सवद्ध होना। जैसे—वह भी रिश्ते मे हमारे भाई ही लगते हैं। २७ लिखने-पढने के क्षेत्र मे, किसी पद, वाक्य या शब्द का ठीक-ठीक अर्थ या आशय समझ मे आना। जैसे—किसी चौपाई या श्लोक का अर्थ लगना। २८ गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूरी उतरना। ठीक तरह से हिसाव होना। जैसे—जोड या वाकी लगना। २९ आर्थिक क्षेत्र मे अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दातव्य या देन निश्चित होना अथवा हिस्से लगना। जैसे—(क) कर, जुरमाना, या महसूल लगना। (ख) उधार लिए हुए रुपयो पर सूद लगना। (ग) रोजगार मे दाँव पर रुपए लगना। ३०. यानो, सवारियो आदि के सवध मे किसी स्थान पर आकर, टिकना, ठहरना या रुकना। जैसे—(क) किनारे पर नाव या जहाज लगना। (ख) दरवाजे पर गाडी या पालकी लगना। (ग) प्लेट-फार्म पर इजन या रेलगाडी के डिव्वे लगना। ३१. जहाजो, नावो

आदि के संबंध मे चलते समय छिछले पानी मे नीचे की जमीन या तल के साथ इस प्रकार उनका पेंदा टिकना या सटना कि उनकी गति रुक जाय। टिकना। जैसे—रास्ते मे पानी छिछला होने के कारण नाव कई जगह लग गई। ३२. वनस्पतियों आदि के संबंध मे उनके आवश्यक अंग अंकुरित या प्रस्फुटित होना। जैसे—फल, फूल या मंजरी लगना। ३३. पेड़-पौधों आदि के संबंध मे किसी स्थान पर जमकर जीवित रहना और फलना-फूलना। जैसे—(क) कहीं से आया हुआ पेड़ बगीचे मे लगना। (ख) क्यारी मे गुलाब की कलमें लगना। ३४. सेंद्रिय पदार्थों के संबंध मे किसी प्रकार के दबाव, रोग, विकार, संघर्ष आदि के कारण सड़ायँध उत्पन्न होना। गलने या सड़ने की क्रिया का आरंभ होना। जैसे—(क) घोड़े की पीठ या बैल का कंधा लगना; अर्थात् उसमे घाव होना। (ख) बरसात मे पड़े पड़े फलों का लगना, अर्थात् उनका सड़ना आरंभ होना। ३५. किसी पदार्थ मे ऐसा रासायनिक विकार उत्पन्न होना जिससे उसकी आयु तथा शक्ति दिन पर दिन क्षीण होने लगती है। जैसे—(क) दीवार मे नोना लगना। (ख) लोहे मे जंग या मोरचा लगना। ३६. किसी पदार्थ मे ऐसे कीड़े आदि उत्पन्न होना या बाहर से आकर सम्मिलित होना जो उस चीज को खाकर या और किसी प्रकार नष्ट करते हों। जैसे—(क) लकड़ी मे घुन या दीमक लगना। (ख) ऊनी या रेशमी कपड़ों मे कीड़े लगना। (ग) गुड़ मे च्यूँटे या मिठाई मे च्यूँटियाँ लगना। ३७ खाद्य पदार्थों के संबंध मे, कड़ी आँच पाने या जल आदि कम होने के कारण उबाले या पकाये जाने वाले पदार्थ का कुछ अंश बरतन के पेंदे मे जम, चिपक या सट जाना। जैसे—हलुआ चलाते रहो, नहीं तो लग जायगा। ३८. गौ, भैंस बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दुहा जाना। जैसे—यह भैंस दिन मे तीन बार लगती है। ३९ आक्रामक या घातक जीवों, व्यक्तियों आदि का प्रायः स्थान विशेष पर आते रहना और चोट करना, अथवा कष्ट या हानि पहुँचना। जैसे—(क) इस रास्ते मे डाकू लगते है। (ख) इस जंगल मे भालू (या शेर) लगते हैं। (ग) छत पर (या बगीचे में) मच्छर लगते हैं। ४०. किसी चीज या दाम का भाव आँका जाना। मूल्यांकन होना। जैसे—इस अँगूठी का बाजार मे जो दाम लगे, वह मुझे दे देना। ४१ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)

विशेष—(क) इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी संज्ञाओं और क्रियाओं के साथ अलग अलग प्रकार के अर्थों मे होता है। और इसीलिए तात्त्विक दृष्टि से ऐसे प्रयोगों की गणना मुहा० मे होती है। जैसे—किसी चीज पर दाँत या निगाह लगना, किसी काम या चीज मे हाथ लगना, कोई चीज हाथ लगना आदि। (ख) अनेक अवसरों पर यह क्रिया दूसरी क्रियाओं के साथ संयो० क्रि० के रूप मे भी लगकर अनेक प्रकार के अर्थ देती है। अधिकतर ऐसे अवसरों पर इसका प्रयोग यह सूचित करता है कि किसी ऐसी क्रिया का आरंभ हुआ है, जो अभी कुछ समय तक चलती या होती रहेगी। जैसे—(क) कुछ कहने, पढ़ने बोलने या लिखने लगना। (ख) चलने, दौड़ने या भागने लगना। (ग) झगड़ने या लड़ने लगना आदि।

लगनि—स्त्री०=लगन।

लगनी—स्त्री० [फा० लगन] १ छोटी थाली। तश्तरी। रिकाबी। २. पानदान के अन्दर की पान रखने की छोटी तश्तरी।

लगनीय—वि० [सं०√लग् (मिलना)+अनीयर] जो संबद्ध या संयुक्त किया जा सके। लगाये जाने के योग्य।

लग-भग—अव्य० [हिं० लग+अनु० भग] मान, संख्या, समय आदि की अनुमानित अवधि या मात्रा बहुत-कुछ निश्चित भाव से द्योतित करनेवाला अव्यय। जैसे—(क) इस काम में लगभग सौ रुपये लगेंगे। (ख) वे वहाँ लगभग चार महीने रहे।

लगमात—स्त्री०=लगमात्रा।

लगमात्रा—स्त्री० [हिं० लगना+सं०मात्रा] स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिए व्यंजनों में जोड़े जाते हैं। जैसे—ए का े ओ का ो। पुं० १. वह जो किसी के साथ उक्त प्रकार से प्रायः या सदा लगा रहता हो। २. स्त्री का उपपति। यार। (परिहास और व्यंग)। उदा०—अच्छे ही किये ढूँढ़े के पैदा ये दुगाना। लगमात्रे दोनों हैं तरहदार हमारे।—जान साहब।

लगर†—पुं०=लग्घड़। (शिकारी पक्षी)।

लग-लग—स्त्री० [हिं० लगना] १ किसी प्रकार की लगावट या आरंम्भिक या हलका रूप। २. किसी प्रकार के संबंध की ऐसी बात-चीत जो अभी चल रही हो। जैसे—उनके लड़के का अभी व्याह तो नहीं हुआ है पर लग-लग लगी है; अर्थात् बात-चीत चल रही है। वि० [अव्य० लकलक] १. बहुत दुबला-पतला २. कोमल। सुकुमार।

लगव—वि०=लगौ (झूठ)।

लगवाना—स० [हिं० लगाना का प्रे०] १. किसी को कुछ लगाने मे प्रवृत्त करना। २. संभोग कराना (बाजारू)।

लगवार—पुं० [हिं० लगना=प्रसंग करना+वार (प्रत्य०)] स्त्री का उपपति। यार। आशना।

लगवीयत—स्त्री० [अ० लग्वियत] बेहूदगी।

लगहर—पुं० [हिं० लाग+हर (प्रत्य०)] ऐसा काँटा या तराजू जिसमे पासंग हो और इसीलिए जिससे तौलने पर चीज अपेक्षया कम तुलती हो।

लगा—पुं० [हिं० लगना] किसी के साथ लगा रहनेवाला, और फलतः तुच्छ या हीन व्यक्ति। (बाजारू) जैसे—लगे की मूँछें उखड़वाउँगी। (स्त्रियाँ)

लगाई—स्त्री० [हिं० लगना] १. लगने या लगे रहने की अवस्था, भाव या मजदूरी। २ इधर की बात उधर लगाने की क्रिया या भाव।

लगाई-बुझाई—स्त्री० [हिं० लगाना+बुझाना] कहीं झगड़ा खड़ा करना और फिर इधर-उधर की बातें करके उसे शान्त करने का प्रयत्न करना।

लगाई-लुतरी—स्त्री० [हिं० लगाना+लुतरा] आपस मे झगड़ा कराने के लिए झूठी-सच्ची बातें इधर-उधर करते फिरना।

लगाऊ—वि० [हिं० लगाना] लगानेवाला।

लगातार—अव्य० [हिं० लगना+तार=सिलसिला] बराबर एक के बाद एक। सिलसिलेवार। निरंतर। सतत। जैसे—वह दिन भर लगातार काम करता रहा।

लगान—स्त्री० [हिं० लगना या लगाना] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. किसी के साथ लगे या सटे हुए होने की अवस्था या भाव। लाग। जैसे—इस मकान मे बगल वाले मकान से लगान पड़ती है। ३ वह स्थान जहाँ मजदूर आदि सुस्ताने के लिए अपने सिर पर का बोझ उतार कर रखते हैं। टिकान। ४. वह स्थान जहाँ नावें आकर ठहरती हैं और मल्लाह विश्राम करते हैं। ५ किसी की टोह मे उसके पीछे लगने की क्रिया या भाव। जैसे—उसके पीछे तो पुलिस की लगान लगी है। ६. भूमि पर लगनेवाला वह कर जो खेतिहरो की ओर से जमीदार या सरकार को मिलता है। राजस्व। भू-कर। जमाबदी। पोत।

विशेष—इस अन्तिम अर्थ मे यह शब्द अधिकतर पु० रूप मे ही प्रयुक्त होता दिखाई देता है।

लगाना—स० [हिं० लगना का स०] १. एक पदार्थ के तल या पार्श्व को दूसरे पदार्थ के तल या पार्श्व के पास इस प्रकार पहुँचाना कि वह आंशिक या पूर्ण रूप से उसके साथ मिल या सट जाय। संलग्न करना। सटाना। जैसे—पुस्तक पर जिल्द या दीवार पर कागज लगाना। २ एक चीज को दूसरी चीज पर जोड़ना, टाँकना, बैठाना या रखना। जैसे—(क) तसवीर पर या दरवाजे मे शीशा लगाना। (ख) टोपी या पगडी पर कँलगी लगाना। (ग) घडी मे नया पुरजा या नई सूई लगाना। ३. कोई चीज ठीक तरह से काम मे लाने के लिए उसे यथास्थान खडा या स्थित करना। जैसे—(क) जहाज या नाव मे पाल लगाना। (ख) दरवाजे के आगे परदा लगाना। ४ किसी तल पर कोई गाढा तरल पदार्थ पोतना, फेरना या मलना। लेप करना। जैसे—(क) खिडकियो या दरवाजो मे रग लगाना। (ख) पैरो या हाथो मे मेहदी लगाना। (ग) शरीर के किसी अंग मे तेल या दवा लगाना। (घ) जूते पर पालिश लगाना। ५ किसी रूप मे कोई चीज किसी के पीछे या साथ सम्मिलित करना। जैसे—पुस्तक मे अनुक्रमणिका या परिशिष्ट लगाना। ६ किसी व्यक्ति का भेद लेने या उससे कोई उद्देश्य सिद्ध कराने के लिए किसी को उसके पीछे या साथ नियुक्त करना। जैसे—(क) किसी के पीछे जासूस लगाना। (ख) किसी से कोई काम कराने के लिए उसके पीछे आदमी लगाना। ७ कोई अनिष्ट या कष्टदायक तत्त्व या बात किसी के साथ संबद्ध या सलग्न करना। जैसे—(क) किसी के पीछे कोई आफत या मुकदमा लगाना। (ख) किसी को कोई बुरी आदत या व्यसन लगाना। ८. आवरण, निरोधन आदि के रूप मे काम आनेवाली चीज इस प्रकार यथास्थान बैठाना कि उससे रुकावट हो सके। जैसे—(क) कमरे के किवाड या दरवाजे लगाना अर्थात् कमरा बन्द करना। (ख) डिबिया या सदूक का ढक्कन लगाना; अर्थात् डिबिया या सदूक बन्द करना। ९. किसी काम, चीज, या बात या व्यक्ति को ऐसे स्थान या स्थिति मे पहुँचाना या लाना कि उसका ठीक उपयोग, सार्थकता या सिद्धि हो सके। जैसे—(क) नाव किनारे पर या पार लगाना। (ख)। मनीआर्डर या रजिस्ट्री लगाना। (ग) किसी आदमी को काम या नौकरी पर लगाना। १०. चीज (या चीज़ें) ऐसे क्रम से या रूप मे रखना कि नियमित रूप से उसका यथोचित उपयोग हो सके। जैसे—(क) आलमारी मे किताबे या फर्श पर गद्दी-तकिया लगाना। (ख) पगत के आगे पत्तलें लगाना। (ग) दूकान या बिस्तर लगाना। ११. किसी पदार्थ का उपभोग करने के लिए उसे ठीक स्थान पर रखना। जैसे—(क) सिर पर टोपी या पगडी लगाना। (ख) सहारे के लिए पीठ के पीछे या हाथ के नीचे तकिया लगाना। १२ कोई चीज या उसके उपकरण किसी विशिष्ट क्रम या विधान से यथास्थान स्थित करना। जैसे—(क) पुस्तको का क्रम लगाना। (ख) बीडा बनाने के लिए पान लगाना, अर्थात् पान पर कत्था, चूना आदि रखकर उसे मोडना। १३ किसी चीज का उपयोग करते हुए उसका व्यय करना। जैसे—(क) व्याह शादी मे रुपए लगाना। (ख) काम मे समय लगाना। (ग) काम करने मे देर लगाना, अर्थात् अधिक समय व्यय करना। १४ किसी को किसी कर्त्तव्य, कार्य, पद आदि पर नियुक्त या नियोजित करना। मुकर्रर करना। जैसे—(क) किसी जगह पर पहरा लगाना। (ख) किसी को काम या नौकरी पर लगाना। १५ आघात या प्रहार करने के लिए अस्त्र, शस्त्र आदि उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचाना। जैसे—(क) किसी को थप्पड या मुक्का लगाना। (ख) किसी पर गोली का निशाना लगाना। (ग) किसी चीज पर दाँत या नाखून लगाना। १६ कोई कार्य पूरा करने के लिए किसी प्रकार के उपकरण या साधन का उपयोग या प्रयोग करना। जैसे—(क) कमरा बन्द करने के लिए किवाड, कुडी या सिटकिनी लगाना। (ख) दरवाजे मे ताला या ताले मे ताली लगाना। १७ किसी की कोई झूठी-सच्ची निन्दा की बात किसी दूसरे से जाकर कहना। कान भरना। जैसे—इधर की बात उधर लगाना।

पद—लगाना-बुझाना=आपस मे लोगो को लडाना और फिर समझा-बुझा कर शात करना।

१८ किसी प्रकार का कार्य या व्यवहार आरभ करना। जैसे—(क) किसी को किसी बात की आदत या चसका लगाना। (ग) भाई-भाई मे झगडा लगाना।

मुहा०—(किसी को) मुँह लगाना=किसी के साथ इतनी नरमी या रियायत का व्यवहार करना कि वह अशालीनता की, उद्दडतापूर्ण या दुष्टता की बातें और व्यवहार करने लगे। जैसे—नौकरो को बहुत मुँह लगाना ठीक नही है।

१९ किसी विषय मे या व्यक्ति पर किसी चीज या बात का आरोप करना। जैसे—(क) किसी पर अभियोग या दोष लगाना। (ख) किसी विषय मे कोई धारा या नियम लगाना। (ग) स्वय काम बिगाडकर दूसरे का नाम लगाना। २०. किसी प्रकार की शारीरिक अनुभूति कराना या अपेक्षा उत्पन्न करना। जैसे—किसी दवा का प्यास या भूख लगाना। २१ मानसिक वृत्ति को किसी ओर ठीक तरह से प्रवृत्त करना। जैसे—(क) किसी काम या बात मे मन लगाना। (ख) पूजन या भजन मे ध्यान लगाना। (ग) आसन या समाधि लगाना। २२ किसी काम या बात को क्रियात्मक रूप देना। घटित करना। जैसे—(क) कपडो या किताबो का ढेर लगाना। (ख) किसी का दाह-कर्म करने के लिए चिता लगाना अथवा चिता मे आग लगाना। (ग) देर, बाजी या शर्त लगाना। (घ) नैवेद्य या भोग लगाना। २३ किसी पद, वाक्य या शब्द का अर्थ या आशय समझकर स्थिर करना। जैसे—(क) चौपाई या श्लोक का अर्थ लगाना। (ख) किसी की बातो का कुछ का कुछ

विशेष—प्राय बन्दरो के आने पर लोग 'लगे लगे' कह कर उन्हे भगाने के लिए चिल्लाते हैं। इसी से इसका यह अर्थ हुआ है।

लगैं—अव्य० [हिं० लगना] १ के लिए। वास्ते। उदा०—लगैं मेल्हियौ रुपमणी।—प्रिथिराज। २. तक। पर्यन्त।

लगो—वि० [अ०] १ जो किसी काम का न हो। २ असंगत और वेतुका।

स्त्री० बिलकुल झूठी और व्यर्थ की बात।

लगौंहाँ—वि० [हिं० लगना+औहाँ (प्रत्य०)] १ जिसमे लगन या लगने की कामना या प्रवृत्ति हो। लगने का आकांक्षी। २ रिझवार।

लग्गत—स्त्री० [हिं० लगना] १. व्यापार मे लगाया हुआ धन। पूंजी। (इन्वेस्टमेन्ट) २ दे० 'लागत'।

लग्गा—पु० [स० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लग्गी] १ कई प्रकार के कार्यों मे काम आनेवाला लवा बाँस। जैसे—नाव चलाने का लग्गा। २. पेड से फल तोड़ने का लग्गा।

मुहा०—लग्गे से पानी पिलाना=बिलकुल अलग या बहुत दूर रहकर नाम मात्र के लिए थोडी-सी या नही के बराबर सहायता करना।

३. फरसे के आकार का काठ का एक उपकरण जिससे कीचड, घास आदि समेटते या हटाते हैं।

पुं० [हिं० लगना] १ कार्य आरम्भ करने के लिए उसमे हाथ लगाने की क्रिया या भाव। जैसे—मकान बनाने मे लग्गा लग गया है। ३ किसी दाँव पर जुआरी से भिन्न किसी और व्यक्ति द्वारा लगाया जानेवाला धन। ३. बराबरी की टक्कर या मुकाबला। (लखनऊ)

मुहा०—लग्गा खाना=किसी की टक्कर या बराबरी का होना। जैसे—इन बातो मे वह तुमसे लग्गा नही खा सकता।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

लग्गू—वि० [हिं० लगना] १. लगनेवाला। २ किसी के साथ रहने या आने-जानेवाला। जैसे—पिछलग्गू।

†पु० स्त्री का उपपति या यार। (बाजारू)

लग्गू-बझ्झू—पु० [हिं० लगना+बझना] वे लोग जो किसी बडे आदमी के साथ लगे रहते हो और उसकी हाँ मे हाँ मिलाते रहते हो।

लग्घड़—पु० [देश०] १ एक प्रकार का छोटा चीता जो पशुओ का शिकार करने के लिए पाला और सधाया जाता है। २ बाज की जाति का भूरे रंग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी जो प्राय तीतर, बटेर आदि पकडकर खाता है।

लग्घा—पु० [स्त्री० अल्पा० लग्घी] =लग्गा।

लग्घी—स्त्री० १ =लग्गी। २ वह बाँस जिससे नदी के तल पर टेक लगाकर नाव किसी ओर बढ़ाई जाती है।

लग्न—वि० [स० √लग् (लगना)+क्त, नि० त—न] १. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। २ लज्जित। शरमिंदा। ३ आसक्त।

पु० १ फलित ज्योतिष मे, किसी राशि के पूर्वी या उदय क्षितिज पर लगे हुए या वर्तमान होने की स्थिति जो सभी कामो और बातो मे शुभाशुभ फल देनेवाली मानी जाती है।

विशेष—सूर्य प्रत्येक राशि मे एक-एक महीने रहता है। अत जिस राशि का सूर्य जिन दिनो होता है वही राशि उन दिनो उसके उदय क्षितिज अर्थात् पूर्वी क्षितिज पर रहती है, परन्तु पृथ्वी अपने अक्ष पर बराबर घूमती रहती है इस लिए दिन-रात मे बारहों राशियाँ दो-दो घटो के लिए पूर्वी क्षितिज पर आती रहती है। यही दो घटे का समय हर राशि का लग्न-काल माना जाता है। उदाहरणार्थ—यदि सूर्योदय के समय मेष लग्न हो तो उसके दो-दो घन्टे बाद वृष, मिथुन, कर्क आदि राशियो का लग्न-काल होता जाता है। परन्तु सूर्य और पृथ्वी दोनो अपनी कक्षा पर आगे भी बढते रहते हे और दिनमान भी घटता-बढता रहता है। इसके फलस्वरूप प्रत्येक राशि का लग्न-काल भी प्रतिदिन प्राय ४ मिनट आगे बढता रहता है। जितने समय तक कोई राशि पूर्वी अथवा उदय क्षितिज पर स्थित रहती है, उतना समय उसी राशि के नाम से अभिहित होता है। जैसे—यदि कहा जाय कि कन्या लग्न मे विवाह होगा तो इसका आशय यह होगा कि जिस समय कन्या राशि पूर्वी या उदय क्षितिज पर स्थित होगी, उस समय विवाह होगा।

२ कोई शुभ काम करने के लिए फलित ज्योतिष के अनुसार निश्चित किया हुआ मुहूर्त। जैसे—यज्ञोपवीत या विवाह का लग्न। ३ विवाह। व्याह। ४ वे दिन जिसमे फलित ज्योतिष के अनुसार विवाह आदि कृत्य विहित होते हैं। ५ वदीजन सूत। ६ दे० 'लगन'।

लग्न-कंकण—पु० [स० मध्य० स०] वह ककण या मंगल-सूत्र जो विवाह के पूर्व वर और कन्या के हाथ मे बाँधा जाता है।

लग्नक—पु० [स० लग्न+कन्] १ वह जो किसी की जमानत करे। प्रतिभू। जामिन। २ सगीत मे एक प्रकार का राग जो हनुमान् के मत से मेघ राग का पुत्र है।

लग्न-कुडली—स्त्री० [सं० ष० त०] फलित ज्योतिष मे वह चक्र या कुडली जिससे यह जाना जाता है कि किसी के जन्म के समय कौन-कौन से ग्रह किस किस राशि मे स्थित थे। जन्म-कुंडली।

लग्न-दण्ड—पु० [स०] गाने या बजाने के समय स्वर के मुख्य अंश या श्रुतियो को आपस मे एक दूसरे से अलग न होने देना और सुदरता से उनका सयोग करना। लाग-डाँट। (सगीत)

लग्न-दिन—पु० [स० ष० त०] वह दिन जिसमे विवाह का मुहूर्त निकला हो।

लग्न-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमे विवाह सबधी कृत्यों तथा उनके समय का विवरण रहता है।

लग्न-पत्रिका—स्त्री० [स० ष० त०]=लग्नपत्र।

लग्न-पत्री—स्त्री०=लग्न-पत्र।

लग्नायु (स्)—स्त्री० [स० लग्न-आयुस्, मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे लग्न-कुडली के अनुसार स्थिर होनेवाली आयु।

लग्नेश—पु० [स० लग्न-ईश, ष० त०] किसी लग्न का स्वामी ग्रह। (ज्यो०)

लग्नोदय—पु० [स० लग्न-उदय, ष० त०] १ किसी लग्न का उदय अर्थात् आरभ होना। २ किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमी पुष्प—पु० [स० लक्ष्मी पुष्प] पद्मराग मणि। लाल। माणिक्य। (डिं०)

लघिमा (मन्)—स्त्री० [स० लघु+इमनिच्] १ लघु अर्थात् छोटे होने की अवस्था या भाव। २ आठ सिद्धियो मे से एक, जिसकी प्राप्ति हो जाने पर मनुष्य लघुतम रूप धारण कर सकता है।

लघु—वि० [सं०√लघ् (गति)+कु, न-लोप] [भाव० लघिमा, लघुता, लाघव] १. जो बड़ा न हो। छोटा। २. किसी की तुलना में छोटा। कनिष्ठ। जैसे—लघु भ्राता। ३. जिसमें उग्रता या तीव्रता न हो। कोमल। हलका। जैसे—लघु स्वर। ४ तीव्र गति वाला। तेज चलने वाला। ५. अच्छा। बढ़िया। ६. सुन्दर। ७. जिसमें किसी प्रकार का सार या तत्त्व न हो। निःसार। ८. थोड़ा। कम। ९. तुच्छ। नीच। १०. दुबला-पतला और कमजोर। दुर्बल।

पु० १ काला अगर। २ उशीर। खस। ३ पन्द्रह क्षण का समय। ४. पिंगल में ऐसा वर्ण जो एक ही मात्रा का हो। इसका चिह्न (।) है। ५ ह्रस्व स्वर। (व्याकरण) ६ बारह मात्राओं का प्राणायाम। ७ ज्योतिष में, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र।

लघु-कटाई—स्त्री० [स० लघु-कटकी] भटकटैया।

लघु-करण—पु० [स० ष० त०] किसी काम चीज या बात को छोटा या हलका करना। छोटे आकार-प्रकार में लाना। संक्षिप्त करना। (कम्यूटेशन)

लघु-कर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] मूर्वा। मरोड़फली।

लघु-काय—पु० [स० ब० स०] बकरा।

वि० छोटे शरीर वाला।

लघु-काष्ठ—पु० [कर्म० स०] वह डंडा जिससे बड़े डंडे का वार रोका जाता है।

लघु-क्रम—पु० [कर्म० स०] जल्दी जल्दी चलने की क्रिया। तेज चाल।

लघु-गण—पु० [कर्म० स०] अश्विनी, पुष्य और हस्त इन तीनों नक्षत्रों का समूह।

लघु-गति—वि० [ब० स०] तेज चलनेवाला।

लघु-चंदन—पु० [कर्म० स०] अगर नाम की सुगंधित लकड़ी।

लघु-चित्त—वि० [ब० स०] चंचल चित्तवाला।

लघु-चेता (तस्)—वि० [ब० स०] तुच्छ या छोटे विचारोंवाला। नीच। क्षुद्र।

लघुच्छदा—स्त्री० [ब० स०] बड़ी शतावर।

लघु-जांगल—पु० [स०] लवा (पक्षी)।

लघुतम—वि० [स० लघु+तमप्] सबसे छोटा।

लघुतम-समापवर्त्य—पुं० [कर्म० स०] वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओं से पूरी-पूरी बँट जाय।

लघुता—स्त्री० [स० लघु+तल्+टाप्] लघु होने की अवस्था या भाव। लघुत्व। छोटाई।

लघु-तुपक—स्त्री० [स०] एक तरह की छोटी बंदूक। तमंचा।

लघुत्तमापवर्त्य—पु० [स० कर्म० स०]=लघुतम समापवर्त्य।

लघुत्व—पु० [स० लघु+त्व] लघु होने की अवस्था या भाव। लघुता।

लघु-द्राक्षा—स्त्री० [कर्म० स०] किशमिश।

लघुद्रावी (विन्)—पुं० [स० लघु√द्रु (गति)+णिनि] पारा।

लघु-नामा (मन्)—पु० [सं० ब० स०] अगर नामक सुगन्धित लकड़ी।

लघु-पंचमूल—पु० [सं० कर्म० स०] शालपर्णी, पिठवन, कटाई (छोटी), कटेहरी (बड़ी) और गोखरू इन पाँचों की जड़ों का समाहार।

लघु-पत्र—पुं० [ब० स०] रमोंजा।

लघु-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] अश्वत्थ वृक्ष।

लघु-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ मूर्वा। मरोड़फली। २ सत-मूली। शतावर।

लघु-पाक—वि० [कर्म० स०] (खाद्य पदार्थ) जो जल्दी या सहज में पच जाय।

लघुपाती (तिन्)—पु० [सं० लघु√पत्+णिनि ?] [illegible]।

वि० = लघुपात।

लघु-पुष्प—पु० [ब० स०] भूई कदंब।

लघु-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] पीला केवड़ा। स्वर्ण केतकी।

लघु-प्रयत्न—वि० [ब० स०] बहुत थोड़ा प्रयत्न करनेवाला। फलतः अकर्मण्य और आलसी।

लघु-फल—पु० [ब० स०] गूलर (वृक्ष)।

लघुभुक् (भुज्)—वि० [सं० लघु√भुज् (खाना)+क्विप्] कम खानेवाला। अल्पाहारी।

लघु-मति—वि० [ब० स०] १ जिसे बहुत थोड़ी बुद्धि हो। २. छोटे या तुच्छ विचारवाला।

लघुमना (नस्)—वि० [ब० स०] छोटे या तुच्छ मन (अर्थात् विचारों) वाला।

लघु-मांस—पु० [ब० स०] तीतर (पक्षी)।

लघु-मान—पु० [कर्म० स०] नाटक में किसी दूसरे व्यक्ति से बात-चीत करते समय [illegible] द्वारा उस पर प्रकट किया जानेवाला रोष।

लघु-मेद—पु० [कर्म० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

लघु-लता—स्त्री० [कर्म० स०] १. करैले की बेल। २ [illegible]।

लघु-वृत्ति—वि० [कर्म० स०] छोटे या हलके विचारोंवाला।

लघु-शंका—स्त्री० [कर्म० स०] मूत्रोत्सर्ग। पेशाब करना।

लघु-सार—पुं० [कर्म० स०] सीसा।

लघु हस्त—वि० [ब० स०] १ जो बहुत जल्दी जल्दी बाण चला सकता हो। अच्छा धनुर्धर। २. फुर्ती से और अच्छा काम करनेवाला।

लघ्वाशी (शिन्)—वि० [सं० लघु√अश् (खाना)+णिनि, उप० स०] कम खानेवाला। अल्पाहारी।

लघ्वी—स्त्री० [सं० लघु+ङीप्] १. बेर नामक फल। २ [illegible]।

†स्त्री०=लघु-शंका। (महाराष्ट्र)

लचा—स्त्री०=लचक।

लचक—स्त्री० [हि० लचकना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। जैसे—कमर की लचक।

क्रि० प्र०—खाना।

२ वह गुण जिसके कारण कोई चीज लचकती या झुकती है। ३ कमर आदि में लचकने के कारण होनेवाली पीड़ा।

क्रि० प्र०—पड़ना।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी नाव।

लचकना—अ० [?] १. किसी लम्बी चीज का दबाव आदि के फल-

स्वरूप मध्य भाग पर से कुछ झुकना या मुड़ना। २. चलते समय कमर का थोड़ा झुकना या मुड़ना जो सौंदर्यसूचक माना जाता है।
लचकनि†—स्त्री०=लचक।
लचका—पु० [हिं० लचकना] १. लचकने के कारण लगनेवाला आघात।
क्रि० प्र०—आना। —लगना।
२. लचक। ३. जल-विहार के काम आनेवाली एक प्रकार की नाव। ४. कपड़े पर टाँका जानेवाला एक प्रकार का साज जो सुनहला और रुपहला दोनों प्रकार का होता है।
लचकाना—स० [हिं० लचकना] किसी पदार्थ को लचकने में प्रवृत्त करना। झुकाना। लचाना।
लचकीला—वि०=लचीला।
लचकौहाँ—वि० [हिं० लचकना+औहाँ (प्रत्य०)] १ जो रह-रह-कर लचकता हो। २. लचकने की प्रवृत्ति रखनेवाला। ३. लचीला।
लचन—स्त्री०=लचक।
लचना—अ०=लचकना।
लचलचा—वि०=लचीला।
लचाका†—पु० १.=लचक। २=लचका।
लचाकेदार—वि० [हिं० लचाका+फा० दार (प्रत्य०)] मज़ेदार। बढ़िया। (बाजारू)
लचाना†—स० [हिं० लचना का स० रूप] लचने या लचकने में प्रवृत्त करना। लचकाना।
लचार—वि०=लाचार।
लचारी—स्त्री० [हिं० अचार] आम का एक प्रकार का खट्टा अचार जिसमें तेल नहीं छोड़ा जाता है।
स्त्री० [?] १. भेंट। २. एक तरह का गीत।
स्त्री०=लाचारी।
लचीला—वि० [हिं० लचना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लचीली] जो दबाये जाने पर कुछ या अधिक झुक या मुड़ जाता हो परन्तु दबाव छूटने पर फिर अपनी सामान्य स्थिति प्राप्त कर लेता हो।
लचुई—स्त्री०=लुच्ची (मैदे की पूरी)।
लच्छ—पु०=लक्ष।
वि०=लक्ष (लाख)।
†स्त्री०=लक्ष्मी।
लच्छण—पु० [स० लक्षण] १. स्वभाव। (डिं०) २. लक्षण। (डिं०)
†पु०=लक्ष्मण।
लच्छन*—पु० १.=लक्षण। २ =लक्ष्मण।
लच्छना—स्त्री०=लक्षणा।
लच्छमण—वि० [स० लक्ष्मीवान्] धनवान्। अमीर। (डिं०)
पु०=लक्ष्मण।
लच्छमी—स्त्री०=लक्ष्मी।
लच्छा—पु० [अनु०] [स्त्री० अल्पा० लच्छी] १ कुछ विशेष प्रकार से लगाये गये बहुत से तारों या डोरों का समूह। गुच्छे या झब्बे के रूप में लगाए हुए तार। जैसे—रेशम का लच्छा, सूत का लच्छा। २. किसी चीज के सूत की तरह ऐसे लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े जो आपस में उलझकर मिल जाते हों। जैसे—अदरक, गरी, पेठे या प्याज का लच्छा। ३. किसी उबाली या पकायी हुई गाढ़ी चीज के रूप के लचीले अंश जो प्रायः आपस में मिले रहते हैं। जैसे—मलाई या रबड़ी के लच्छे। ४. मैदे की एक प्रकार की मिठाई जो प्रायः पतले लंबे सूत की तरह और देखने में उलझी हुई डोर के समान होती है। ५. पतली और हलकी जंजीरों से बना हुआ एक प्रकार का गहना जो हाथ या पैर में पहना जाता है। ६. एक प्रकार का घटिया और मिलावटी केसर।
लच्छा साख—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मकर रागिनी।
लच्छि*—स्त्री०=लक्ष्मी।
लच्छित†—वि०=लक्षित।
लच्छिनाथ*—पु० [स० लक्ष्मीनाथ] लक्ष्मीपति। विष्णु। (डिं०)
लच्छि निवास*—पु० [स० लक्ष्मी निवास] विष्णु। नारायण।
लच्छिमी*—स्त्री०=लक्ष्मी।
लच्छी—स्त्री० [हिं० लच्छा का स्त्री० अल्पा०] सूत, रेशम, ऊन, कलाबत्तू इत्यादि की लपेटी हुई गुच्छी। अट्टी। छोटा लच्छा।
पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
स्त्री०=लक्ष्मी।
लच्छेदार—वि० [हिं० लच्छा+फा० दार (प्रत्य०)] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे पड़े या बने हों। लच्छोंवाला। जैसे—लच्छेदार रबड़ी। २. (बात) जो चिकनी-चुपड़ी तथा मजेदार हो।
लछन†—पु०=लक्षण।
लछना†—अ०=लखना।
लछमन†—पु०=लक्ष्मण।
लछमन झूला—पु० [हिं० लछमन+झूला] १. बदरीनारायण के मार्ग में एक स्थान जहाँ पहले पुरानी चाल का रस्सों का एक लटकौवाँ पुल था, जिसे झूला कहते थे। २. रस्सों या तारों आदि का वह पुल जो बीच में झूले की तरह नीचे लटकता हो। झूला पुल। ३. एक प्रकार की बेल या लता।
लछमना—स्त्री०=लक्ष्मणा।
लछमी—स्त्री०=लक्ष्मी।
लछारा—वि० [?] १. लम्बा। २. बड़ा।
लछिआना—स० [हिं० लच्छा] डोरे, सूत आदि का लच्छा या लच्छी बनाना।
†अ० डोरे, सूत की तरह के पदार्थों के लच्छे या लच्छी के रूप में आना या बनाना।
† अ० [सं० लक्ष] दिखाई देना। प्रकट या लक्षित होना। उदा०—लच्छन चिन्हन जो लछिआई।—नददान।
लज†—स्त्री०=लाज।
लजना†—अ०=लजाना
लजनी—स्त्री० [हिं० लजाना] लजालू का पौधा।
लजवंत—वि०=लाजवंत।
लजवंती—स्त्री०=लाजवंती।
लजवाना—[हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना। शर्मिन्दा करना।

लजाधुर—वि० [सं० लज्जाधर] जो बहुत अधिक लज्जा करे। लज्जावान्। शर्मीला।
†पु०=लजालू। (पौधा)।
लजाना—अ० [हिं० लाज] लाज या शर्म से सिर नीचा करना। लज्जित होना।
स० किसी को लज्जित करना।
लजारू—वि०, पु०=लजालू।
लजालू—पु० [सं० लज्जालु] हाथ डेढ़ हाथ ऊँचा एक काँटेदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुडकर बद हो जाती है, और फिर थोडी देर मे धीरे धीरे फैलती है। छुई-मुई।
वि० प्राय बहुत लज्जा करनेवाला। लज्जाशील।
लजावन—वि० [हिं० लजाना=लज्जित करना] लज्जित करनेवाला।
लजावनहार—पु० [हिं० लजावन] लज्जित करनेवाला।
लजावना—वि० [हिं० लजाना] १ लजाने या लज्जित करनेवाला। लजानेवाला। लजीला।
स०=लजाना (लज्जित करना)।
लजियाना—अ०, स०=लजाना।
लजीज—वि० [अ०, लजीज] (पदार्थ) जो स्वाद मे बहुत अच्छा हो। स्वादिष्ट।
लजीला—वि० [हिं० लाज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लजीली] शरमानेवाला। लज्जाशील।
लजुरी—स्त्री० [सं० रज्जु, मार० लज्जु] १ कूएँ से पानी खीचने की डोरी। २. रस्सी।
लजोर†—वि०=लजीला।
लजौना॰—वि० [हिं० लज्जा] १ लज्जित करनेवाला। २. दे० 'लजौहाँ'।
लजौहाँ—वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौही] लाज से युक्त।
लज्ज—स्त्री० [सं० रज्जु] १ कुएँ से पानी निकालने की रस्सी। २. नकेल। ३. लगाम।
† स्त्री०=लज्जा।
लज्जत—स्त्री० [अ० लज्जत] १ लजीज होने की अवस्था या भाव। २ खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद। जायका।
लज्जतदार—वि० [अ० लज्जत+फा० दार] स्वादिष्ट। जायकेदार।
लज्जरी—स्त्री० [सं० लर्जिरि] लजालू लता। लज्जावती।
लज्जा—स्त्री० [सं०√लज्ज् (लजाना)+अ+टाप्] [वि० लज्जित] १. अन्त करण की वह वृत्ति जिससे स्वभावत. या किसी निन्दनीय आचरण की भावना के कारण दूसरों के सामने वृत्तियाँ सकुचित हो जाती हैं, चेष्टा मद पड जाती है, मुँह से बात नही निकलती, सिर तथा दृष्टि नीची हो जाती है। लाज। शर्म। हया।
मुहा०—(किसी की बात की) लज्जा करना=किसी बात की बड़ाई की रक्षा का ध्यान करना। मर्यादा का विचार करना। जैसे—अपने कुल की लज्जा करो।
२. मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। जैसे—ईश्वर ने लज्जा रख ली।
क्रि० प्र०—बचाना।—रखना।
लज्जा-पट—पु० [मध्य० स०] घूँघट।

लज्जा-प्रद—वि० [ष० त०] (कृत्य या बात) जिसके कारण उसके कर्त्ता को लज्जित होना पड़े।
लज्जा-प्रिया—स्त्री० [तृ० त०] केशव के अनुसार मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।
लज्जालु—पु० [सं० लज्जा+आलु] लजालू नाम का पौधा। लाजवंती।
वि० जो बहुत अधिक शरमाता हो। लज्जाशील। जैसे—लज्जालु स्त्री।
लज्जावंत—वि० [सं० लज्जावत्] जिसे या जिसमें लज्जा का भाव हो। लजीला।
लज्जावती—स्त्री० [सं० लज्जा+मतुप्, म-व,+ङीप्] लजालू नाम का पौधा।
वि० लज्जावान् का स्त्री०।
लज्जावान् (वत्)—वि० [सं० लज्जा+मतुप्, म-व] [स्त्री० लज्जावती] जिसे अधिक व प्राय लज्जा होती हो। शर्मदार। हयादार।
लज्जा-शील—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसे स्वभावतः लज्जा आती हो।
लज्जा-शून्य—वि० [तृ० त०] लज्जा से रहित। निर्लज्ज।
लज्जा-हीन—वि० [तृ० त०] लज्जाशून्य।
लज्जित—भू० कृ० [सं० लज्जा+इतच्] १ किसी प्रकार के अपराध, दोष या हीन-भावना के फलस्वरूप जो दूसरों के सम्मुख घबराये हुए चुप-चाप खड़ा हो। जिसे लज्जा हुई हो। २. जो अपने दूषित कृत्य के लिए अपने को अपमानित तथा लज्जा का पात्र समझता हो।
लज्या†—स्त्री०=लज्जा।
लटंका—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो बरमा से आता है।
लट—स्त्री० [सं० लट्ट या लट्वा] १. मुँह या गालों पर लटकता हुआ चिकने तथा परस्पर चिपके हुए सिर के बालों का गुच्छा। अलक। जुल्फ।
मुहा०—लट छटकाना=स्त्रियों के सिर के बाल खोलकर इधर-उधर गिरा या फैला देना। (किसी के नीचे) लट दबना=किसी की अधीनता या दबाव मे होना।
२. सिर के उलझे और एक मे गुथे हुए बाल।
स्त्री० [हिं० लटना] लटने की क्रिया या भाव।
स्त्री०=लपट (लौ)।
लटक—स्त्री० [हिं० लटकना] १ लटकने की क्रिया या भाव। नीचे की ओर गिरता सा रहने का भाव। झुकाव। २ चलने, फिरने आदि मे शरीर के अगो मे पडनेवाली लचक जो स्त्रियो में प्राय सुन्दर जान पडती है। ३ अगो की मनोहर चेष्टा। ४ बात-चीत करने या गाने आदि मे दिखाई देनेवाली कोमल भाव-भगी। ५ मन का आकस्मिक उद्वेग। जैसे—बैठे-बैठे तुम्हे यह क्या लटक सूझी। ६ ढालू जमीन। ढाल। (पालकी के कहार)
वि० (गति) जिसमे लटक हो। उदा०—साँवलिया की लटक चाल मोरे मन मे बस गई रे।—गीत।
लटकन—पु० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। नीचे की ओर झूलते रहने का भाव। २. लटकती हुई कोई वस्तु।

३ नाक मे पहनने का एक प्रकार का गहना जो झूलता रहता है। ४. रत्नों का वह गुच्छा जो कलँगी मे लगाते थे। ५. मालखभ की एक कसरत जिसमे दोनों पैरो के अँगूठे मे वेत फँसाकर पिंडली को लपेटते हुए नीचे की ओर लटकते है। ६ कोई ऐसा फालतू पदार्थ या व्यक्ति जो किसी महत्त्वपूर्ण पदार्थ या व्यक्ति के साथ यो ही लगा रहता है या लगा फिरता हो। ७ अडकोश (बाजारू)।

पु० १. एक प्रकार का पेड जिसमे लाल रग के फूल लगते हैं। २. उक्त रग के फूलो से सुगधित बीज जिन्हे पानी मे पीसने से गेरुआ रग निकलता है। इस रग से प्राय कपडे रँगते हैं।

लटकना—अ० [स० लडन] १ किसी पदार्थ या व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि उसका एक सिरा या अग किसी ऊँचे आधार मे अटका या फँसा हुआ हो और शेष भाग अधर मे नीचे की ओर हो। २ किसी सीधी, खडी, टिकी या बनी हुई वस्तु का कोई भाग किसी ओर थोडा झुकना। जैसे—(क) बरामदा आगे की ओर कुछ लटक गया है। (ख) बेहोशी मे उसका सिर पीछे की ओर लटक गया था।

पद—लटक या लटकती चाल=ऐसी चाल जिसमे मस्ती, हर्ष आदि के कारण आदमी झूमता हुआ चलता हो।

३ किसी काम, बात या व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे आना, रहना या होना कि उसके सबध मे आवश्यक और उचित निर्णय न हो अथवा अभीष्ट सिद्ध न हो। असमजस या दुविधा की स्थिति मे अपेक्षया अधिक समय तक पडा या बना रहना। जैसे—(क) अदालतो मे मुकदमे बरसों लटके रहते है। (ख) नौकरी की दरख्वास्त देने पर उसे महीनो लटके रहना पडा।

संयो० क्रि०—रहना।

४ परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होना और इस प्रकार पहलेवाली कक्षा मे ही रुका रहना।

सयो० क्रि०—जाना।

वि० [स्त्री० लटकनी] लटकवाली मनोहर अग-भगी से युक्त। उदा०—बज्र जाइ खग ज्यो प्रिय छवि लटकनी लस।—सूर।

लटकवाना—स० [हि० लटकाना का प्रे०] लटकाने का काम दूसरे से कराना।

लटका—पु० [हि० लटक] १ ऐसी चाल जिसमे मनोहर लटक हो। २. बात-चीत आदि मे दिखाई देनेवाली जनानी चेष्टा या हाव-भाव और स्वरो का उतार-चढाव। जैसे—उन्होने बडे लटके से कहा कि हम नही जायँगे। ३. उपचार, चिकित्सा, तत्र-मत्र आदि के क्षेत्र मे कोई ऐसी छोटी प्रक्रिया या विधि जिसमे जल्दी और सहज मे उद्देश्य सिद्ध होता हो। जैसे—उन्हे वैद्यक के ऐसे सैकडो लटके मालूम हैं। ४. एक प्रकार का चलता गाना। ५. अडकोश। (बाजारू)

लटकाना—स० [हि० लटकना का स०] १. किसी को लटकाने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना कि कोई या कुछ लटके। जैसे—कपडा या हाथ लटकाना।

सयो० क्रि०—देना।—रखना।—लेना।

२ किसी खडी वस्तु को किसी ओर झुकाना। नत करना। ३. कोई काम पूरा न करके अनिश्चित दशा मे अधिक समय तक पडा रहने देना। ४ किसी व्यक्ति को कोई आशा मे रखकर उसका उद्देश्य या कार्य पूरा न करना। असमंजस या दुविधा की स्थिति में रखना।

सयो० क्रि०—रखना।

लटकीला—वि० [हि० लटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लटकीली] लटकता और लहराता हुआ। जैसे—लटकीली चाल।

लटकू—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जिसकी छाल से रग निकलता है।

लटकौआँ—वि० [हि० लटकाना] जो लटकाया जाता हो। जैसे—लटकौआँ फानूस।

लट-जीरा—पु० [हि० लट+जीरा] १. अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का धान और उसका चावल। २ अपामार्ग। चिचडा।

लटना—अ० [सं० लड=हिलना, डोलना] १. परिश्रम, रोग आदि के कारण बहुत ही शिथिल, दुर्बल और प्राय असमर्थ-सा होना। अशक्त और असमर्थ होना।

सयो० क्रि०—जाना।

२. बेचैन या विकल होना।

अ० [स० लल, लड=ललचाना] १ लेने के लिए लपकना। लालायित होना। २ अनुरागपूर्वक प्रवृत्त होना। ३ किसी काम या बात मे लिप्त या लीन होना।

लट-पट—स्त्री० [हि० लटपटाना] १ लटपटाने की अवस्था या भाव। २. अनुचित या दूषित उद्देश्य की सिद्धि के लिए होनेवाला नया-नया मेल-जोल या सबध।

वि०=लटपटा।

लट-पटा—वि० [हि० लटपटाना] [स्त्री० लट-पटी] १ जोश, मस्ती, यौवन, लापरवाही आदि के कारण इधर-उधर गिरता-पडता या लड़खडाता हुआ। ठीक और सीधे तरह मे न चलता हुआ। जैसे—लटपटी चाल। २ जो ठीक बँधा न रहने के कारण ढीला होकर नीचे की ओर खिसक आया हो। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। ढीला-ढाला। ३ जो ठीक तरह से सँवार या सजाकर नहीं, बल्कि अल्हड़पन से बनाया लगाया गया हो। जैसे—लटपटी पाग (पगडी)। ४ (कथन, बात या शब्द) जिसका ठीक, पूरा और स्पष्ट उच्चारण न हुआ हो। ५ अस्तव्यस्त। अव्यवस्थित। अंड-बड। ६ थकावट, दुर्बलता आदि के कारण बहुत ही शिथिल और हारा हुआ। ७. (रसेदार खाद्य पदार्थ) जो न बहुत गाढा हो और न बहुत पतला। जैसे—लटपटी तरकारी, लटपटा हलुआ। ८ गीजा और मसला हुआ। मला-दला।

लटपटान—स्त्री० [हि० लटपटाना] १. लटपटाने की क्रिया या भाव। लड़खडाहट। २ आकर्षक और मनोहर गति या चाल।

लटपटाना—अ० [स० लड=हिलना-डोलना+पत्=गिरना] १. दुर्बलता, मन्दता, लापरवाही आदि के कारण ठीक और सीधे ढंग से न चलकर इधर-उधर झुके पडना। लड़खडाना। उदा०—उठे पर, पैर उनके लटपटाये।—मैथिलीशरण।

सयो० क्रि०—जाना।

२. अपने स्थान पर दृढतापूर्वक जमे, टिके या ठहरे न रहकर इधर-उधर होते रहना। विचलित होना। डिगना। ३. सहसा चूक या भूल जाने के कारण इधर-उधर हो जाना। लडखडाना। जैसे—

बोलने में जीभ या चलने में पैर लटपटाना। ४. अपने आप को सँभाल न सकने के कारण किसी पर विवश भाव से आसक्त या मोहित होना। ५ किसी काम या बात में लिप्त या लीन होना।

लटा—वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १ लोलुप। लंपट। २. गिरा हुआ। पतित। ३. लपट और व्यभिचारी। ४. बदमाश। लुच्चा। ५. तुच्छ। हीन। ६. नीच। हेय। ७ खराब। बुरा। ८. बहुत दुबला-पतला या कमजोर।

लट-पटा—पु० [हिं० लट-पट] १. व्यर्थ की चीज। २. व्यर्थ का कार्य। ३ आडंबर। ढोंग। उदा०—बाहर का अनावश्यक लट-पटा मुझसे सहा नहीं जाता।—अज्ञेय।
वि० बहुत ही क्षीण, दुर्बल या हीन।
पद—लटे पटे दिन=कठिनाई या कष्ट के दिन।

लटा-पटी—स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लटपटाने की क्रिया या भाव। २. लड़ाई-झगड़ा। ३. गुत्थम-गुत्था। भिड़ंत।

लटा-पोट—वि०=लोट-पोट।

लटिया—स्त्री० [हिं० लट] सूत आदि का छोटा लच्छा। लच्छी।
मुहा०—लटिया करना=सूत की आँटी बनाना।

लटियासन—पु० [हिं० लट+सन] पटसन।

लटी—स्त्री० [हिं० लटा=बुरा] १ बुरी बात। २ झूठी या व्यर्थ की बात। गप।
मुहा०—लटी मारना=गप्प हाँकना।
३ भक्तिन। ४. वेश्या।

लटुआ†—पुं०=लट्टू।

लटुक—पु०=लकुट (वृक्ष और फल)।

लटुरी—स्त्री० दे० 'लटूरी'।

लटू†—पु०=लट्टू।

लटूरा—पु० [हिं० लट्टू] कुप्पा।
†पु० [हिं० लट] [स्त्री० लटूरी] बड़े-बड़े बालों की उलझी हुई लट। जटा।
वि० जिसके सिर पर बड़े-बड़े बालों की लट हो। जटावाला। जैसे—लटूरा जोगी।

लटूरिया—वि० [हिं० लट] लटों अर्थात् लम्बे बालोंवाला।
पु० भूत-प्रेत या हौआ। (बच्चों को डराने के लिए)
वि०=लटूरा।

लटूरी—स्त्री० [हिं० लट] विशेषत छोटे बच्चो के बालो की लट।

लटोरा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी गर्दन और मुँह काला, डैने नीलापन लिये हुए भूरे और दुम काली होती है। इसके कई भेद होते हैं। जैसे—मटिया, कजला, खारला।
पु०=लसोड़ा।

लट्ट-पट्ट—वि०=लट-पट।
वि०=लथ-पथ।

लट्टू—पु० [देश०] १ लकडी का एक गोल खिलौना जिसके मध्य भाग में कील जड़ी रहती है तथा जो चलाये जाने पर उक्त कील पर घूमने या चक्कर लगाने लगता है। २. कोई ऐसा खिलौना जो इस प्रकार घूमता रहता हो। ३. लाक्षणिक अर्थ में, व्यक्ति जिसमें किसी के प्रति उत्कट प्रेम हो तथा जो उसके कारण बावला हो रहा हो।
मुहा०—(किसी पर) लट्टू होना=किसी पर पूरी तरह से मोहित होना।
४. शीशे का वह गोलाकार उपकरण जिसके अन्दर बिजली के द्वारा प्रकाश उत्पन्न होता है। बल्ब।

लट्टूदार—वि० [हिं० लट्टू+फा० दार] जिस पर या जिसमें लट्टू के आकार की गोल रचना बनी या लगी हो। जैसे—लट्टूदार छड़ी, लट्टूदार पगड़ी (एक विशेष प्रकार की पगड़ी जिसके अगले ऊपरी भाग का कपड़ा लट्टू की तरह लपेटा हुआ रहता है।)

लट्ठ—पु० [सं०यष्टि, प्रा० लट्ठि] बड़ी लाठी। मोटा लम्बा डंडा।
पद—लट्ठबाज, लट्ठमार।
मुहा०—(किसी के पीछे) लट्ठ लिये फिरना=(क) किसी के साथ इतना बैर या शत्रुता होना कि मिलते ही उसे घायल करके मार डालने को जी चाहता हो। (ख) लाक्षणिक रूप से पूरी तरह से किसी के विपक्ष में या विरुद्ध रहना। जैसे—अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना, अर्थात् इतना निर्बुद्धि होना कि मानों बुद्धिमत्ता से बैर ठान रखा हो।
वि० बहुत बड़ा निर्बुद्धि या मूर्ख। जैसे—यह नौकर तो निरा लट्ठ है।

लट्ठबाज—वि० [हिं० लट्ठ+फा० बाज] [भाव० लट्ठबाजी] लाठी से लड़नेवाला। लठैत।

लट्ठबाजी—स्त्री० [हिं० लट्ठ+फा० बाजी] लाठियों से होनेवाली मार-पीट।

लट्ठमार—वि० [हिं० लट्ठ+मारना] १. (व्यक्ति) जो बहुत बड़ा उजड्ड और उद्दंड हो। २. (कथन या बात) जिसमें नम्रता, शालीनता, सौजन्य आदि का पूर्ण अभाव हो।

लट्ठर—वि० [हिं० लट्ठ] १. कठोर। कड़ा। २. कर्कश।

लट्ठा—पु० [हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बहुत बड़ा मोटा और लंबा टुकड़ा। बल्ला। शहतीर। जैसे—तालाब के बीच में लगा हुआ लट्ठा; सीमा का सूचक लट्ठा। २. धरन। ३ वह ५॥ फुट लंबा बाँस जिससे जमीन नापी जाती है।
पद—लट्ठाबंदी। (दे०)
४. लकलाट (कपड़ा)। (पश्चिम)

लट्ठा-बंदी—स्त्री० [हिं० लट्ठा+फा० बंदी] लट्ठे अर्थात् ५॥ फुट लंबे बाँस के द्वारा जमीन की की जानेवाली नाप-जोख।

लट्व—पुं० [सं०√लट् (बालभाव)+क्वन्] १. घोड़ा। २. एक प्रकार का राग। (संगीत)

लट्वा—पुं० [स० लट्व+टाप्] १. बालों की लट। २. एक प्रकार का करंज। ३. कुसुंभ। ४. गौरा पक्षी। ५. एक प्रकार का बाजा। ६. चित्र बनाने की कूँची। तूलिका। ७ पुंश्चली। व्यभिचारिणी।

लठ—पुं०=लट्ठ।

लठियल—वि० [हिं० लाठी+इयल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जो लाठी धारण किये रहता हो। लठैत।

लठिया—स्त्री० [हिं० लाठी का अल्पा०] छोटी लाठी, छड़ी या डंडा।

लठैत—पु० [हिं० लठ+ऐत (प्रत्य०)] वह जो लाठी चलाकर लड़ने का अभ्यस्त हो। लाठी की लड़ाई लड़नेवाला। लट्ठबाज।

लठैती—स्त्री० [हिं० लठैत] लाठियो से लड़ने और मार-पीट करने की क्रिया या भाव। लट्ठबाजी।

लड़ंग—स्त्री० [हिं० लड] १. लडी। लड़। २ पक्ति। कतार। पुं० [?] झुंड। समूह। जैसे—गौओ या घोडो का लडग।

लड़ंत—स्त्री० [हिं० लडना] १ लडने की क्रिया या भाव। जैसे—पतगों की लडत, पहलवानो की लडत। २. लडाई-झगड़ा। ३ विरोधी दलो से होनेवाला मुकाबला या सामना।

लड़ंता—वि० [हिं० लडत] [स्त्री० लडती] १. कुश्ती आदि लडनेवाला। जैसे—लडता पहलवान। २. लडाई-झगड़ा करनेवाला।

लड़—पु० [स० यष्टि; प्रा० लट्ठि] [स्त्री० अल्पा० लड़ी] १ सीव मे गुथी हुई या एक दूसरे से लगी हुई एक ही प्रकार की वस्तुओ की पक्ति। माला। जैसे—मोतियो का लड। सिकडी का लड। २. रस्सी आदि के रूप मे वटा हुआ लवा खंड। जैसे—तीन लड का रस्सा। ३ कतार। पंक्ति। श्रेणी। ४ किसी के साथ घनिष्ठता या दृढतापूर्वक गुथे या मिले हुए होने की अवस्था या भाव।

मुहा०—(किसी के साथ) लड़ मिलाना=मेल मिलाप करना। मित्रता स्थापित करना। (किसी के) लड़ में रहना=गुट या दल मे रहना।

५. दे० 'लड़ी'।

लड़इता†—वि०=लड़ैता।

लड़क—पुं० हिं० लड़का का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लड़क-बुद्धि।

लड़कई†—स्त्री०=लड़कपन।

लड़क-खेल—पु० [हिं० लड़का+खेल] १. वालकों का खेल। २ लड़को के खेल की तरह का वहुत ही सहज या साधारण काम।

लड़कपन—पु० [हिं० लड़का+पन] १. 'लडका' होने की अवस्था या भाव। वाल्यावस्था। जैसे—वह लड़कपन से ही वहुत ही चतुर था। २ लडको का-सा आचरण या व्यवहार, जिसमे वुद्धि का परिपाक न दिखाई देता हो। जैसे—तुम इतने वड़े हुए पर अभी तक तुम्हारा लड़कपन नही गया।

लड़क-वुद्धि—स्त्री० [हिं० लड़का+सं० वुद्धि] वालको की-सी समझ। अपरिपक्व वुद्धि। अज्ञता। नासमझी।

लड़क-वुध—स्त्री०=लड़क वुद्धि।

लड़का—पु० [स० लाडिक] [स्त्री० लडकी] १. थोड़ी अवस्था का मनुष्य। वह जिसकी उमर कम हो। वह जो अभी तक युवक न हुआ हो। वालक। २. औरस नर संतान। पुत्र। वेटा।

पद—लड़का-वाला=संतान। वाल-वच्चा। लड़कों का खेल=वहुत ही छोटा सहज और साधारण काम।

मुहा०—लड़का जनना=नर सतान प्रसव करना।

लड़काई†—स्त्री०=लडकई (लड़कपन)।

लड़कानि†—स्त्री०=लडकपन।

लड़का-वाला [हिं० लड़का+स० वाला] १ लड़का और लडकी। पुत्र और पुत्री दोनो अथवा इनमे से कोई एक औलाद। संतान। २. कुटुंव। परिवार।

लड़किनी†—स्त्री०=लड़की।

लड़की—स्त्री० [हिं० लड़का] १. पुरुष जाति का मादा वच्चा। वच्ची।

विशेष—वृद्ध तथा प्रौढ़ स्त्रियों को छोडकर शेष अवस्थावाली स्त्रियों के लिए भी इसका प्रयोग होता है। जैसे—(क) इस लडकी ने एम० ए० पास किया है। (ख) इस लडकी के दो वच्चे हैं।

२. पुत्री। वेटी। जैसे—वह अपनी लडकी को साथ लेते गए हैं। ३. अल्पवयस्क या युवा नौकरानी।

लड़कीवाला—पु० [हिं० लडकी+वाला (प्रत्य०)] १. वह जिसके यहाँ लड़की या लडकियाँ हो। २ कन्या-पक्ष। 'वर-पक्ष' का विरुद्धार्थक। जैसे—लडकीवालो से जो सरते वनता है वह लड़की को देते हैं।

लड़केवाला—पु० [हिं०] विवाह-सवंघ मे वर का पिता या उसका अभिभावक अथवा सरक्षक। वर-पक्ष।

लड़कोरी (कौरी)—वि० [हिं० लड़का+औरी (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसकी गोद मे वच्चा हो। पुत्रवती।

लड़खड़ाना—अ० [स० लड=डोलना+खड़ा] [भाव० लडखड़ाहट] चलते समय सीवे स्थित न रह सकने के कारण इधर-उधर झुक पड़ना। चलने मे झोका खाना। डगमगाना। डिगना। जैसे—तेज चलने मे वह (या उसका पैर) लड़खडाया और वह गिरते गिरते वचा।

संयो० क्रि०—जाना।

२. चलते समय डगमगा कर गिरना। झोंका खाकर नीचे आ जाना। ३. कोई काम करते समय किसी अग का वीच मे ठीक तरह से काम न कर सकने के कारण इधर-उवर होना। विचलित होना। जैसे—(क) वोलने मे जवान लडखडाना। (ख) कुछ उठाते समय हाथ लड़खड़ाना।

लड़खड़ाहट—स्त्री० [हिं० लड़खडाना+आहट (प्रत्य०)] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव। डगमगाहट।

लड़खड़ी†—स्त्री०=लड़खड़ाहट।

लड़ना—अ० [सं० रणन] [भाव० लड़ाई] १ आपस मे शारीरिक वल का प्रयोग करते हुए एक दूसरे को घायल करने, चोट पहुँचाने या मार डालने के उद्देश्य से घात-प्रतिघात करना। लड़ाई करना। भिड़ना। जैसे—पशुओ या सैनिको का आपस मे लड़ना। २ आपस मे एक दूसरे को गिराने, दवाने, नीचा दिखाने आदि के लिए ऐसी क्रिया, आचरण या व्यवहार करना जिसमे शक्ति का प्रयोग होता हो। जैसे—कचहरी मे मुकदमा लडना। ३ आर्थिक, वौद्धिक, शारीरिक आदि वलो का प्रयोग करते हुए विपक्षी या विरोधी को परास्त करने या हराने के लिए उपाय या क्रिया करना। जैसे—(क) शास्त्रार्थ के समय पडितों का आपस मे लड़ना। (ख) अखाडे मे पहलवानो का लडना। ४. अपने पक्ष का स्थापन करने के लिए अशिष्टतापूर्वक वात-चीत या वाद-विवाद करना। झगडना। जैसे—ये लोग जरा-जरा सी वात पर रोज यो ही घटो लड़ते रहते हैं।

पद—लड़ना-भिड़ना।

संयो० क्रि०—जाना।—पडना।—वैठना।

५ दो वस्तुओं का वेग के साथ एक दूसरे से जा लगना। टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। जैसे—रेलगाड़ियों का लड़ना, मोटर से वैल-

गाड़ी का लड़ना। ६ दो ऐसे अंगों का परस्पर रगड़ खाना जिनमे वस्तुत कुछ दूरी होनी चाहिए। जैसे—(क) टायर का रिम से लड़ना। (ख) जांघो का लड़ना। ७ ऐसी स्थिति मे आना, पहुँचना या होना जिसमे हार-जीत का प्रश्न हो अथवा निकट विरोधी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हो। जैसे—(क) किसी काम मे जान लड़ना। (ख) किसी बात मे बुद्धि लड़ना। (ग) रोजगार मे रुपए या जूए मे माल लड़ना। ८ ऐसी स्थिति मे आना या पहुँचना कि ठीक तरह से बराबरी या सामना हो अथवा किसी प्रकार की अनुकूलता या समानता सिद्ध होती हो। जैसे—(क) किसी से आँखें लड़ना। (ख) एक की बात से दूसरे की बात लड़ना।

मुहा०—हिसाब लड़ना=(क) जोड़, बाकी आदि का लेखा या हिसाब ठीक और पूरा उतरना। (ख) किसी काम या बात के लिए अनुकूल या उपयुक्त अवसर मिलना या सुभीता निकलना।

९ किसी जानवर का आकर काटना या डंक मारना। जैसे—उसे कुत्ता (या बिच्छू) लड़ गया है। (पश्चिम)

लड़वड़ा—वि० [अनु०] १. लटपटा। २ नपुंसक। ३. ढीला-ढाला।

लड़वड़ाना†—अ०=लड़खड़ाना।

लड़-बावरा†—वि० [स्त्री० लड़-बावरी] लाड़-बावला।

लड़-बावला—वि० [स० लड=लड़को का-सा+बावला] [स्त्री० लड़बावली] जिसमे अभी लड़कपन और नासमझी की बहुत सी बातें या लक्षण हो। निरा अल्हड़ और मूर्ख।

लड़बौरा—वि० [स्त्री० लड़-बौरी]=लड़बावला।

लड़ाई—स्त्री० [हि० लड़ना+आई (प्रत्य०)] १. आपस मे लड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह क्रिया या स्थिति जिसमे लोग आपस मे मार-पीट करके दूसरो को घायल करने या मार डालने का प्रयत्न करते है। भिड़त। ३. वह स्थिति जिसमे विरोधी दलों या पक्षो के लोग विशेषत सशस्त्र सैनिक एक दूसरे को मार डालने या घायल करने का प्रयत्न करते हैं। जैसे—राज्यों के सीमा क्षेत्रो मे प्राय. लड़ाइयाँ होती रहती हैं।

पद—लड़ाई का मैदान=वह स्थान जहाँ एकत्र होकर सैनिक युद्ध करते हों। युद्ध-क्षेत्र। समर-भूमि।

मुहा०—लड़ाई पर जाना=योद्धा या सैनिक के रूप मे रणक्षेत्र मे युद्ध करने के लिए जाना।

४ ऐसी स्थिति जिसमे आपस मे एक दूसरे को दबाने या हटाने का प्रयत्न करते हों। जैसे—आज-कल दोनों भाई कचहरी की लड़ाई लड़ रहे हैं। ५ ऐसी स्थिति जिसमे आपस मे अशिष्टतापूर्ण वाद-विवाद और कटु शब्दो का प्रयोग होता हो। तकरार। हुज्जत। जैसे—पचायत (या सभा) मे लोग बातें क्या करते थे, लड़ाई लड़ते थे। ६ ऐसी स्थिति जिसमे आपस मे बहुत अधिक वैमनस्य और वैर-विरोध हो, तथा पारस्परिक सामाजिक व्यवहार आदि बन्द हो। जैसे—इधर महीनो से दोनो भाइयों मे गहरी लड़ाई चल रही है। ७. किसी वस्तु पर अधिकार प्राप्त करने या अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए होनेवाली वाद-विवादात्मक बल-परीक्षा या बल-प्रयोग। जैसे—हमे तो यही पता नही चलता कि आप लोगो मे लड़ाई किस बात की है।

पद—लड़ाई-झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई।

८. दो वस्तुओं का वेग के साथ एक दूसरी मे जा लगना। टक्कर। (पश्च०)

लड़ाका—वि० [हि० लड़ना+आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १. युद्ध में लड़नेवाला योद्धा। सिपाही। २ बात-बात मे या प्राय सबसे लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

लड़ाकू—वि० [हि० लड़ना] १ युद्ध मे व्यवहृत होनेवाला। लड़ाई मे काम आनेवाला। जैसे—लड़ाकू जहाज। २. दे० 'लड़ाका'।

लड़ाना—स० [हि० लड़ना का प्रे०] १. किसी को या लोगो को मारने-काटने या युद्ध करने में प्रवृत्त करना। २ कलह, लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध मे प्रवृत्त करना। जैसे—दोनों भाइयों को तुम्हीं लड़ा रहे हो। ३ पहलवानो का अपने शिष्यो को अभ्यास कराने के लिए अपने साथ कुश्ती लड़ाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—वह पहलवान रोज अखाड़े मे बीसियों लड़कों को लड़ाता था। ४ कौशल, बल, बुद्धि आदि की परीक्षा करने के लिए दो चीजो या जीवों को किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा या होड़ मे प्रवृत्त करना। जैसे—पतंग, बटेर, मुर्गा या मेढ़ा लड़ाना। ५. अपना कोई अंग दूसरे के उसी अंग के सामने लाकर बराबरी करना या उससे सबध रखनेवाली किसी प्रकार की परीक्षा करना। जैसे—आँखें लड़ाना, पंजा लड़ाना। ६ विकट परिस्थितियाँ पार करने के लिए कौशल, चातुरी, बुद्धि आदि का प्रयोग करना। जैसे—(क) तरकीब या युक्ति लड़ाना। (ख) दिमाग या बुद्धि लड़ाना। ७ एक वस्तु को दूसरी मे वेग या झटके के साथ मिलाना। टकराना। भिड़ाना। ८ दो रेखाओं को एक दूसरी से छुआना या टकराना।

स० [हि० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार करना। दुलार करना। प्रेम से चुमकारना।

लड़ायता†—वि० [स्त्री० लड़ायती]=लड़ैता।

लड़ी—स्त्री० [हि० लड का स्त्री० अल्पा०] १ सीध मे गुथी हुई या एक दूसरे से लगी हुई एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। जैसे—मोतियो की लड़ी। २. डोरी, रस्सी आदि की रचना मे उन कई विभागीय तारों आदि मे से प्रत्येक जिन्हे बटकर डोरी या रस्सी बनाई जाती है। ३ किसी काम, चीज या बात का ऐसा क्रम, शृंखला या सिलसिला जो लगातार कुछ दूर तक चला चले। जैसे—(क) टीलो या पहाड़ियो की लड़ी। (ख) बातों की लड़ी। ४ फूलो की पतली गुथी हुई माला। दे० 'लड़'।

लड़ीला†—वि०=लाड़ला।

लड़ुआ†—पु०=लड्डू।

लड़ैता—वि० [हि० लाड=प्यार+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १. जिसे बहुत लाड-प्यार से पाला-पोसा गया हो। लाडला। २ प्यारा। प्रिय। ३ बहुत लाड़-प्यार के कारण जिसका आचरण और व्यवहार कुछ बिगड़ गया हो।

पु० [हि० लड़ना] योद्धा।

लड्डुक—पु० [स०] लड्डू।

लड्डू—पु० [स० लड्डुक] १. छोटे गेंद के आकार की कोई गोलाकार बँधी हुई मिठाई। जैसे—खोए, बूँदी या बेसन का लड्डू।

पद—ठग के लड्डू=किसी को धोखे मे लाकर अपना लाभ करने के लिए

की जानेवाली युक्ति या साधन। (मध्य युग मे ठग लोग यात्रियो को जहरीले या नशीले लड्डू धोखे से खिलाकर उन्हे बेहोश कर देते थे और तब उनका माल लूट लेते थे। इसी आधार पर यह पद बना है।)
मुहा०—मन के लड्डू खाना=मन ही मन यह समझकर झूठी आशा मे प्रसन्न होना कि हमे अमुक शुभ फल की प्राप्ति होगी या हमारा अमुक अभीष्ट सिद्ध हो जायगा।
२ शून्य सख्या का सूचक शब्द। (परिहास) जैसे—उन्हे अँगरेजी मे लड्डू मिला है। ३ किसी प्रकार की अच्छी और लाभदायक बात। जैसे—वहाँ जाने से तुम्हे कौन-सा लड्डू मिल जायगा।

लड़्याना*—स० [हि० लाड़=प्यार] लाड-प्यार या दुलार करना।

लढ़ा—पु० [हि० लुढकना] [स्त्री० अल्पा० लढिया] बैलगाडी।

लढ़िया—स्त्री० [हि० लुढना, लुढकाना] बैलगाडी।

लत—स्त्री० [अ० इल्लत] बुरी टेक।
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
स्त्री० [हि० लात] 'लात' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लतखोर, लत-मर्दन।
†स्त्री०=लता।

लत-खोर—वि० [हि० लात+फा० खोर खानेवाला] (व्यक्ति) जो प्राय लात खाता अर्थात् घुडकी-झिडकी आदि सुनते रहने का अभ्यस्त हो गया हो। जो निर्लज्ज बना रहकर बुरी आदतें न छोड़ता हो या ठीक तरह से काम न करता हो।
†पु०=लत-खोरा।

लत-खोरा—पु० [हि० लत+फा० खोर=खानेवाला] [स्त्री० लत-खोरिन] दरवाजे पर पडा हुआ पैर पोछने का कपड़ा या पायदाज। पावदान।
वि०=लतखोर।

लतड़ी†—स्त्री०=लतरी।

लतपत—वि०=लथपथ।

लत-मर्दन—स्त्री० [हि० लात+स० मर्दन] १. पैरो से कुचलने या रौंदने की क्रिया या भाव। २. लातो से किसी को मारने की क्रिया या भाव।

लतर—स्त्री० [स० लता]। १. लता। बेल। २ चित्रकला मे, लता की आकृति या अकन।

लतरा—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा अन्न। बरवरा। रेवँछ।

लतरी—स्त्री० [हि० लतर] एक प्रकार की घास या पौधा जो खेतो मे मटर के साथ बोया जाता है। इसी के बीज खेसारी कहलाते हैं, जो गरीब लोग खाते है।
†स्त्री० [हि० लात] १ पुरानी चाल की एक तरह की हलकी जूती। २ फटा-पुराना जूता।

लतहा—वि० [हि० लात+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० लतही] (पशु) जो लात मारता हो। जैसे—लतहा घोडा।

लतांगी—स्त्री० [स० ब० स०] १ कर्कटश्रृगी। काकडासीगी। २ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

लता—स्त्री० [स०√लत् (लपेटना)+अच्+टाप्] १ ऐसे विशिष्ट प्रकार के पौधो की संज्ञा जिनके कांड और शाखाएं पतली नरम तथा लचीली होती हैं तथा जो किसी आधार के सहारे खड़ी होती है और आधार के अभाव मे जमीन पर फैल जाती हैं। जैसे—अगूर की लता २. कोमल काड या शाखा। जैसे—पद्मलता। ३. सुन्दरी स्त्री।

लता-करंज—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का करंज या कंजा। कंट करेज।

लता-कर—पु० [मध्य० स०] नाचने मे हाथ हिलाने का एक प्रकार

लता-कस्तूरी—स्त्री० [मध्य० स०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके अगो का उपयोग वैद्यक मे होता है।

लता-कुंज—पु० [प० त०] लताओ मे छाया हुआ स्थान।

लता-गृह—पु० [मध्य० स०] लता-कुज। (दे०)

लता-जाल—पु० [प० त०] बहुत-सी लताओ के योग मे बना हुआ जाल, या उसके नीचे का छायादार स्थान।

लता-जिह्व—पु० [ब० स०] सर्प। साँप।

लताड़—स्त्री० [हि० लताडना] १. लताडने की क्रिया या भाव। २ कठिनता। दिक्कत। ३ परेशानी। हैरानी। ४. दे० 'लथाड'।

लताड़ना—स० [हि० लात] १ लातो या पैरो से कुचलना। रौंदना। २ लातो से मारना। ३ किसी लेटे हुए व्यक्ति के विशिष्ट अगो पर खड़े होकर धीरे धीरे इस प्रकार चलना कि उसकी पीडा या थकावट दूर हो जाय और उसे आराम मिले। ४ तग या परेशान करना।

लता-तरु—पु० [उपमित स०] १ नारगी का पेड। २ ताड़ का पेड़। ३ शाल वृक्ष। साखू।

लता-पता—पु० [स० लतापत्र] १ लता और पत्ते। पेड़-पत्ते। पेड़ो और पौधो का समूह। २ पौधो, वनस्पतियो आदि की हरियाली। ३. जडी-बूटी। ४ निकम्मी और रद्दी चीजें।

लता-पनस—पु० [ब०स०] तरबूज।

लतापर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] १. तालमूल। २ मधूरिका। मेवड़ी।

लता-पाश—पु०=लता-जाल।

लताफत—स्त्री० [अ०] १ लतीफ होने की अवस्था या भाव। सूक्ष्मता। २ कोमलता। ३ उत्तमता। ४. स्वादिष्टता।

लता-फल—पु० [स० ब० स०] पटोल। परवल।

लता-बंध—पु० [ब० स०] कामशास्त्र मे सयोग का एक आसन। बध या मुद्रा।

लता-भवन—पुं०=लता-कुंज।

लता-मंडप—पु० [मध्य० स०] छाई हुई लताओ से बना हुआ मडप या छायादार स्थान।

लता-मणि—पु० [उपमित स०] प्रवाल। मूंगा।

लता-यष्टि—स्त्री० [उपमित स०] मजिष्ठा। मजीठ।

लतार्क—पु० [लता-अर्क, ब० स०] प्याज का पौधा।

लता-वृक्ष—पु० [उपमित स०] सल्लई का पेड। शल्लकी।

लता-वेष्ट—पु० [लता-आवेष्ट, ब० स०] १. काम शास्त्र मे एक प्रकार का रति-बध या आसन। २ पुराणानुसार द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत।
वि० लताओ से घिरा हुआ।

लता-साधन—पुं० [तृ० त०] तंत्र या वाम मार्ग में एक प्रकार की साधना जिसमें प्रधान अधिकरण लता अर्थात् स्त्री होती है।

लतिका—स्त्री० [सं० लता+कन्+टाप्, इत्त] छोटी लता। बेल।

लतियर—वि०=लतियल (लतखोर)।

लतियल—वि० [हिं० लात+इयल (प्रत्य०)] १ जो लतियाया जाता हो अथवा जो बिना लतियाये जाने से सीधे रास्ते पर न आता हो। २ जिसे लात खाने अर्थात् घुड़की-झिड़की सुनने और मार खाने की आदत पड़ गई हो।

लतियाना—स० [हिं० लात+आना (प्रत्य०)] १ पैरों से कुचलना या रौंदना। २ लातों से मारना।
स० [हिं० लती] लती या डोरी से लट्टू को खोलना उदा०—लतियावहु जे तौ लट्टून को तेतहि मारै।—रत्न०

लतिहर (हल)—वि०=लतियल।

लतीफ़—वि० [अ०] १ जायकेदार। स्वादिष्ट। २ मजेदार। रसमय। ३. कोमल। मुलायम। ५ सुपाच्य (भोजन)। ६ उत्तम। बढ़िया।

लतीफ़ा—पुं० [अ० लतीफ़] १ हास्यपूर्ण छोटी कहानी। चुटकुला। २. हँसी की अनोखी या विलक्षण बात।

लत्त—स्त्री०=लता।

लत्ता—पुं० [सं० लत्तक] १. फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २ कपड़े का टुकड़ा।
पद—कपड़ा-लत्ता।
मुहा०—लत्ता (या लत्ते) लेना किसी की हँसी उड़ाते हुए उसे बहुत ही उपेक्ष्य सिद्ध करना।
† स्त्री०=लता।

लत्तिका—स्त्री० [सं०√लत् (आघात्) विच्+कन्+टाप्] गोधा। गोह (जन्तु)।

लत्ती—स्त्री० [हिं० लात] पशुओं द्वारा लात से किया जानेवाला आघात।
स्त्री० [हिं० लत्ता] १ कपड़े की लम्बी धज्जी। २ गुड्डी या पतंग के नीचेवाले कोने में बाँधी जानेवाली कपड़े की धज्जी। ३ सूत की वह डोरी जो लट्टू नचाने के लिए उस पर लपेटी जाती है। ४ बाँस में बँधी हुई कपड़े की धज्जी जिसे ऊँचा करके कबूतर उड़ाते हैं।

लथ-पथ—वि० [अनु०] १. जो किसी तरल पदार्थ से बहुत अधिक भीग या तर हो गया हो। जैसे—खून से लथपथ, पसीने से लथपथ। २. कीचड़, धूल, मिट्टी आदि से सना हुआ।

लथाड़—स्त्री० [हिं० लथाड़ना] १. लथाड़ना की क्रिया या भाव। २. जमीन पर घसीटने की क्रिया। ३ गहरी डाँट-फटकार।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—पड़ना।
४. बुरी तरह से होनेवाली हार।
क्रि० प्र०—पड़ना।
५. बहुत बड़ी हानि।

लथाड़ना—स०=लथेड़ना।
† स०=लताड़ना।

लथेड़ना—स० [हिं०] १. [illegible] में [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४. बहुत बुरी तरह से [illegible] ५. [illegible]
संयो० क्रि०—[illegible]

लदन—स्त्री० [हिं० लदना] [illegible] की क्रिया या भाव। [illegible]

लदना—अ० [हिं० [illegible]] [illegible] १. [illegible] जैसे—[illegible] २. [illegible] ३. [illegible] जैसे—[illegible] ४. [illegible] ५. [illegible] जैसे—[illegible]
संयो० क्रि०—जाना।

लदनी†—स्त्री० [illegible]।

लद-फद—अव्य० [अनु०] [illegible] जैसे—[illegible] गिर गये।

लदवाना—स० [हिं० लादना का प्रे०] [illegible] लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाई—स्त्री० [हिं० लादना] लादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लदाऊ—वि० [हिं० लदाना] [illegible]।
[illegible]
पुं० [illegible]।

लदान—स्त्री० [हिं० लादना] १. लादे जाने की क्रिया या भाव। (लोडिंग) २. एक बार में लादा या लाद कर ले जाया जानेवाला सामान।

लदाना—स० [हिं० लादना का प्रे०] लादने का काम दूसरे से कराना।
† पुं० एक पर एक ईंटें जमाकर बनाया हुआ घेर।
क्रि० प्र०—[illegible]।

लदा-फँदा—वि० [हिं० लदना+फँदना] बोझ से भरा या लदा और जगह जगह से फँसा या बँधा हुआ।

लदाव—पुं० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। २ लादा हुआ बोझ या भार। ३ छत पाटने का वह प्रकार जिसमें लकड़ियाँ या धरनें नहीं लगती, केवल ईंट या पत्थर एक दूसरे पर टेढ़े तिरछे जमाकर मेहराब के आकार की पाटन की जाती है। डाटे की पाटन। जैसे—इस मकबरे की छत लदाव की है।

लबुआ†—वि०=लद्दू।

लद्दू—वि० [हिं० लादना] १. जिस पर केवल बोझ लादा जाता हो। लदा हुआ। भार ढोनेवाला। २. जो सवारी नही, वल्कि बोझ ढोता हो। जैसे—लद्दू घोडा, लद्दू नाव, लद्दू वैल।

लद्धड़—वि० [हिं० लदना=भारी होना] [भाव० लद्धडपन] १. भारी भरकम होने के कारण जिसमें तेजी या फुरती न हो। जैसे—लद्धड आदमी, लद्धड घोडा। २. आलसी, निकम्मा और सुस्त। जैसे—लद्धड नौकर।

लद्धड़पन—पु० [हिं० लद्धड+पन (प्रत्य०)] लद्धड होने की अवस्था या भाव।

लद्धना—स० [स० लब्ध; प्रा० लद्ध=प्राप्त] प्राप्त होना। मिलना।

लनतरानी—स्त्री०=लतरानी (डीग)।

लना—पु० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़ जिससे पजाव मे सज्जी निकाली जाती है। इसका एक भेद 'गोरालना' है। २ शीरा।

लनी—स्त्री० [देश०] १ पान की वारी मे की क्यारी। २. दे० 'लना'।

लप—स्त्री० [अनु०] १. लपने अर्थात् लचकने की क्रिया या भाव। २. पदार्थों का वह गुण या स्थिति जिसमे वे वीच से लपते या लचककर झुकते है।

क्रि० प्र०—खाना।

३. किसी चमकीली चीज के लपने के कारण रह-रह कर उत्पन्न होनेवाली चमक।

मुहा०—लप मारना=उक्त प्रकार की स्थिति मे आने के कारण चमकना। लप लप करना=(क) रह-रहकर वीच में लपना या लचकना। (ख) रह-रहकर चमक उत्पन्न करना। जैसे—कटार, तलवार या हीरे का लप लप करना।

पु० [देश०] १ दोनो हथेलियो को मिलाकर वनाया हुआ सपुट जिसमे कोई वस्तु रखी जा सके। अजुलि। २ उतनी वस्तु जितनी उक्त सपुट मे आती हो। जैसे—एक लप आटा।

पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे सुरारी भी कहते है।

लपक—स्त्री० [हिं० लपकना] लपकने या लचककर चलने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [अनु० लप से] चमक। दीप्ति। जैसे—गहनो या रत्नो की लपक, विजली की लपक।

†स्त्री०=लपट (आग की)।

लपकना—अ० [हिं० लपक] १. सहसा वहुत जल्दी, तेजी या फुरती से आगे वढना। जैसे—(क) चोर को पकडने के लिए लोगो का लपकना। (ख) कोई चीज पाने या लेने के लिए किसी का हाथ लपकना। २ जल्दी जल्दी पैर उठाते हुए तेजी से आगे वढना या चलना। जैसे—सव लोग लपके हुए मेले की तरफ जा रहे थे।

पद—लपककर=(क) वहुत तेजी या फुरती से। (ख) जल्दी जल्दी आगे वढकर। जैसे—वाज ने लपक कर चिडिया को पकड लिया।

स० फुरती से आगे वढकर कोई चीज उठा या ले लेना। जैसे—उसने ऊपर ही ऊपर अँगूठी लपक ली।

लपकपन—पु० [हिं० लपकना+पन (प्रत्य०)] लपककर कुछ उठा लेने या किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने की मनोवृत्ति।

लपका—पु० [हिं० लपकना] १ लपकने की क्रिया या भाव। २. वह जिसे लपककर चीजें उठा लेने का अभ्यास और आदत हो। उचक्का। ३ आवारा और लुच्चा आदमी। ४. किसी तरह की बुरी आदत, टेव या वान। चस्का। लत।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

लपकाना—स० [हिं० लपकना का स०] किसी को लपकने अर्थात् फुरती से आगे वढने मे प्रवृत्त करना। जैसे—(क) किसी को पकड़ने के लिए आदमी लपकाना। (ख) कोई चीज उठाने के लिए हाथ लपकाना।

लपकी—स्त्री० [हिं० लपकना] १ लपकाने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की सीधी सिलाई।

लपकेवाजी—स्त्री०=लपकपन।

लपझप—वि० [अनु० लप+हिं० झपट] १. स्थिर न रहनेवाला। चचल। चपल। २ अधीर और उतावला। ३ तेज। फुरतीला। ४. वेढंगा और भद्दा। जैसे—लप-झप चाल।

अव्य० १. वहुत जल्दी या तेजी से। २. वेढगी और भद्दी तरह से।

स्त्री० ऐसी चचलतापूर्ण या चपल स्थिति या स्वभाव जिसमे आवश्यक या उचित से अधिक चालाकी या तेजी हो। लपकपन।

लपट—स्त्री० [स० लोक, हिं० लौ+पट=विस्तार] तेज आग जलने पर उसमे से निकलकर ऊपर उठनेवाली जलती हुई वायु की लहर। आग की लौ। अग्नि-शिखा।

क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।

२ तपी हुई वायु या लू का रह-रहकर आनेवाला झोका। जैसे—जेठ मे दोपहर को आग की लपटें लगती हैं।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

३. किसी प्रकार की गध से भरा हुआ वायु का झोका। जैसे—क्या अच्छी गुलाव की लपट आ रही है।

† स्त्री०=लिपट।

लपटना—अ०=लिपटना।

लपटा—पु० [हिं० लपसी] १ गाढी गीली वस्तु। २ कढी। ३. लपसी। ४. लेई। ५. थोडा-वहुत लगाव या सवध।

लपटाना†—स०=लिपटाना।

† अ०=लिपटना।

† स०=लपेटना।

लपटीला—वि० [हिं० लपटना] [स्त्री० लपटीली] रह-रहकर लपटनेवाला।

† वि०=रपटीला।

लपटौआँ—पु० [हिं० लपटना] एक प्रकार की घास जिसके वाल कपड़ो मे लिपटकर फँस जाते हैं।

लपन—पु० [स०√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] १ मुख। मुँह। २. कहना या वोलना। भाषण।

स्त्री० [हिं० लपना] लपने की क्रिया या भाव। लप।

लपना—अ० [अनु० लप-लप] १. वेंत या लचीली छडी का एक छोर

पकड़कर जोर से हिलाये जाने से इधर-उधर झुकना। झोंक के साथ इधर-उधर लचना। २. झुकना या लचना।
संयो० क्रि०—जाना।
३ हैरान होना।
मुहा०—लपना-झपना=परेशान होना।
† अ०=लपकना।

लपलपाना—अ० [अनु० लप लप] लप लप शब्द करना।
अ० [हिं० लपना] १. किसी लचीली चीज के हिलने या हिलाये जाने पर उसके किसी अंग या अंश का बीच से थोडा मुडना। बार-बार या रह-रहकर लचकना या लचना। जैसे—छडी तलवार या बेंत का लपलपाना। २ किसी लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना या किसी वस्तु के अन्दर से बार-बार निकलना। जैसे—साँप की जीभ का लपलपाना।
मुहा०—(किसी की) जीभ लपलपाना=कुछ कहने, खाने आदि की प्रबल उत्सुकता या प्रवृत्ति होना। बहुत अधिक लिप्सा या लोभ होना।
स० किसी लचीली चीज को पकडकर इस प्रकार हिलाना कि उसका कुछ अंग रह-रहकर झुके या लचे, और फलत उसमे से कुछ चमक निकले। जैसे—(क) भाँजने के समय तलवार लपलपाना। (ख) किसी को मारने से पहले बेत लपलपाना। (ग) साँप का अपनी जीभ लपलपाना।

लपलपाहट—स्त्री० [हिं० लपलपाना+आहट (प्रत्य०)] १. लपलपाने की क्रिया या भाव। लचीली छडी या टहनी आदि का झोंक के साथ इधर-उधर लचकना। २ उक्त प्रकार की क्रिया के कारण उत्पन्न होनेवाली चमक। जैसे—तलवार की लपलपाहट से आँखे चौंधियाना।

लपसी—स्त्री० [स० लप्सिका] १ एक प्रकार का पतला हलुआ। २. उक्त प्रकार का वह रूप जिसमे चीनी के घोल के स्थान पर नमक का घोल मिलाया गया हो। ३ कोई गाढा तरल पदार्थ।

लपहा—पु० [देश०] पान की बेल मे लगनेवाली गेरुई (रोग)।

लपाना—स० [अनु० लपलप] १ किसी चीज को लपने मे प्रवृत्त करना। २ लचीली छडी आदि को झोंक के साथ इधर-उधर लचाना। ३ आगे की ओर बढाना या सरकाना।

लपित—भू० कृ० [स०√लप् (कहना)+क्त] कहा या बोला हुआ। उक्त। कथित।

लपेट—स्त्री० [हिं० लपेटना] १ लपेटने की क्रिया या भाव। २. लपेटे हुए होने की अवस्था या भाव। ३ लपेटनेवाली चीज का हर बार का फेरा या बन्धन। ४ वह चिह्न या निशान जो लपेटी हुई चीज के उस अंश पर पडता है, जहाँ से वह किसी ओर मुडती है। तह या परत मे सिरे पर पडनेवाला मोड या उसका निशान। ५. ऐंठन। बल। मरोड। ५ किसी मोटी लंबी वस्तु की मोटाई के चारो ओर का विस्तार। घेरा। परिधि। जैसे—इस खम्भे की लपेट ३ फुट है। ६ किसी प्रकार की उलझन, घुमाव-फिराव या चक्कर की ऐसी स्थिति जिसमे कुछ या कोई आकर उलझता या फँसता हो। जैसे—(क) वह भी इस मुकदमे की लपेट मे आ गए है (ख) उनकी बातों की लपेट मे मत आना।
पद—लपेट-झपेट।
७. कुश्ती का एक पेंच।

लपेट-झपेट—स्त्री० [हिं० लपेटना-झपेटना] ऐसी स्थिति जिसके फलस्वरूप कोई आकर उलझता या फँसता हो और उस पर किसी प्रकार का आघात होता हो। जैसे—उत्पात (या उपद्रव) की लपेट-झपेट में बहुत से लोग आ गए थे।

लपेटन—स्त्री० [हिं० लपेटना] १. लपेटने की क्रिया या भाव। लपेट। २. लपेटने के फलस्वरूप पडनेवाला फेरा या बल। ३ उलझन। ४. ऐंठन।
पुं० १. वह वस्तु जिसे किसी वस्तु के चारो ओर घुमा या लपेटकर बाँधते हैं। २. बेठन। ३. पैरो मे उलझनेवाली चीज। (पालकी के कहार) ४. जुलाहों का तूर या बेलन नामक उपकरण।

लपेटना—स० [स० लिप्त] १. कोई पतली और लंबी चीज किसी दूसरी चीज के चारो ओर घुमाकर इस प्रकार बाँधना कि उस दूसरी चीज का कुछ या सारा तल ढक जाय। वेष्टित करना। जैसे—(क) खंभे पर कपडा लपेटना। (ख) बाँस पर डोरी या रस्सी लपेटना। २. मोडे हुए कपडे, कागज आदि के अन्दर करके बंद करना। कपडे आदि के अन्दर बाँधना। जैसे—पुस्तक लपेटकर रख दो। ३ डोरी, सूत या कपडे की सी फैली हुई वस्तु को तह पर तह मोडते या घुमाते हुए संकुचित करना। समेटना। जैसे—तागा लपेटकर उसकी गोली या लच्छी बनाना। ४ किसी को चारो ओर से घेरकर इस प्रकार कसना या जकड़ना कि वह कुछ कर न सके या बेदम हो जाय। जैसे—उसे ऐसा लपेटो कि वह भी याद करे। ५. अच्छी तरह पकड या बाँधकर अपने वश मे करना। ६. उलझन, झंझट या बखेड़े में डालना या फँसाना। जैसे—उसने इस मामले मे कई आदमियो को लपेटा है। ७. किसी तल पर कोई चीज पोतना या लगाना। जैसे—सारे शरीर मे कीचड या भभूत लपेटना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

लपेटनी—स्त्री० [हिं० लपेटना] जुलाहो की लपेटन नाम की लकडी। लपेटना। तूर।

लपेटवाँ—वि० [हिं० लपेटना] १. जो लपेटा गया हो या लपेटकर बनाया गया हो। २. जो लपेटा जा सकता हो। ३. जिसके ऊपर कुछ लपेटा गया हो। ४. जिसमे बहुत कुछ घुमाव-फिराव या लपेट हो। चक्करदार। जैसे—लपेटवी बात-चीत।

लपेटा—पु०=लपेट।

लपेटुआँ—वि०=लपेटवाँ।

लपेत—पु० [स०] बाल रोगो के अधिष्ठाता एक देवता। (पारस्कर गृह्य सूत्र)

लप्पड़—पु०=थप्पड़।

लप्पा—पु० [देश०] १. छत मे लटकती हुई वह लकडी जिसमे करघे की बहुत सी रस्सियाँ बाँधी जाती है। २. एक प्रकार का गोटा। (जरी का)।
पु०=लप।

लप्सिका—स्त्री० [सं०] लपसी।

लफंगा—वि० [फा० लफग] १ लपट। व्यभिचारी। २. बहुत बडा चरित्रहीन या दुश्चरित्र। परम कुमार्गी और तुच्छ या हीन। ३. बहुत बडा बदमाश या लुच्चा। शोहदा।

लफटेंट—पु० [अ० लेफ्टिनेंट] १ सेना का एक छोटा अफसर। २ किसी का अधीनस्थ कर्मचारी या कार्यकर्ता।

लफना†—अ०=लपना।

लफ्ज—पु० [अ० लफ्ज] भाषा मे प्रयुक्त होनेवाला सार्थक शब्द।

लफ्जी—वि० [अ० लफ्ज़ी] लफ्ज या शब्द से सबध रखनेवाला। शाब्दिक। जैसे—लफ्जी माने=शब्दार्थ।

लफ्फाज—वि० [अ० लफ्फाज़] १ खूब लच्छेदार बाते करनेवाला। वातूनी। २ बहुत बढ-चढकर बातें बनाने या डीग हाँकनेवाला।

लफ्फाजी—स्त्री० [अ०] १ लफ्फाज होने की अवस्था या भाव। वाचालता। २ बात-चीत मे होनेवाला आडबरपूर्ण शब्दावली का प्रयोग।

लब—पु० [फा०] १. ओष्ठ। ओठ। होठ। २. होठ पर की थूक। जैसे—लब लगाकर लिफाफा बन्द करना अच्छा नही। ३ जलाशय आदि का किनारा या तट। ४. बरतन आदि मे ऊपरवाले सिरे का घेरा। पद—लबालब।
४ किसी चीज का किनारा या सिरा। जैसे—लबे सड़क=सडक के ठीक किनारे पर।

लबझना—अ०=उलझना।

लबड़-धोंधों—स्त्री० [हि० लबाड़+धूम] १. झूठ-मूठ का हल्ला। व्यर्थ का गुल-गपाडा। २ वास्तविक बात को दबाकर झूठ-मूठ इधर-उधर की की जानेवाली बातें। बडी-बडी बातें बनाकर असल काम या बात टालना।
क्रि० प्र०—मचाना।
३. उक्त प्रकार की बातें करनेवाला व्यक्ति। (पश्चिम) ४. कुव्यवस्था। ५ अन्याय। अधेर।

लबड़ना—अ० [हि० लबाड] १. झूठ बोलना। लबाडी करना। २ गप हाँकना।
† अ०, स०=लिबडना।

लबदा†—पु०=लबेदा।

लबनी—स्त्री० [देश०] १ वह हाँडी जिसमे ताड के पेड का रस चुआया जाता है। ताडी चुआने की हाँडी। २. बडी डोई।

लबरा—वि० [स्त्री० लबरी] झूठ बोलनेवाला।

लबलबी—स्त्री०=लिबलिबी।

लब-लहका—वि० [हि० लपना+लहकना] [स्त्री० लबलहकी] १ किसी वस्तु को देखते ही उसकी ओर लपकनेवाला। अधीर और लालची। २ अकारण और व्यर्थ हर चीज इधर से उधर करनेवाला।

लब-लहजा—पु० [फा० लब+लहज:] उच्चारण करने या बोलने का ढग।

लबाड़—वि० [स० लपन=बकना] १ झूठा। मिथ्यावादी। २ गप्पी।

लबाडिया—वि०=लबाड।

लबाड़ी—स्त्री० [हि० लबाड] १ व्यर्थ की कही जानेवाली झूठी बातें। २. गप।
वि०=लबाड।

लबादा—पु० [फा० लबाद] १ रूईदार चोगा। दगला। २ अगरखे की तरह का एक प्रकार का भारी और लंबा पहनावा। अबा। चोगा।

लबाब—वि० [अ०] खालिस। बेमेल। शुद्ध।
पु० १. सारभाग। साराश। २. गूदा। मगज।

लबार†—वि०=लबाड़।

लबारी†—स्त्री०=लबाडी।

लबालब—वि० [फा०] लब अर्थात् किनारे या किनारो तक भरा हुआ। जैसे—लबालब भरा हुआ तालाब।

लबासी†—वि०=लबाड।
स्त्री०=लबाडी।

लबी—स्त्री०=राब (गुड का शीरा)।

लबेद—पु० [स० वेद का अनु०] १. ऐसी बात जो वेद शास्त्रो से सम्मत न हो, बल्कि उनके विरुद्ध भले ही हो। २ फालतू और व्यर्थ की बात।
वि० वेद विरुद्ध बातें कहनेवाला।

लबेदा—पु० [स० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा तथा बडा डडा।

लबेदी—स्त्री० [हि० लबेद] लबेद के रूप मे होनेवाला आचरण, कृत्य या व्यवहार।

लबेरा—पु०=लसोडा।

लब्ध—भू० कृ० [सं०√लभ् (पाना)+क्त] १ मिला या प्राप्त किया हुआ। २ उपार्जित किया या कमाया हुआ। ३ भाग करने से निकला हुआ। शेषफल। भाग फल। ४ जिसने पाया या प्राप्त किया हो। यौ० के आरम्भ मे। जैसे—लब्ध-काम, लब्ध कीर्ति आदि।
पु० दस प्रकार के दासो मे से एक प्रकार का दास। (स्मृति)

लब्ध-प्रतिष्ठ—वि० [ब० स०] जिसने किसी कार्य या क्षेत्र मे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की हो। प्रतिष्ठित। सम्मानित।

लब्ध-प्रशमन—पु० [ष० त०] मिले हुए धन का सत्पात्र को दिया जानेवाला दान। (मनु०)

लब्ध-लक्ष—पु० [ब० स०] १. जिसने ठीक निशाने पर वार किया हो। २ जिसे अभिप्रेत वस्तु प्राप्त हो गई हो।

लब्ध-वर्ण—पु० [स०] वह जिसने वर्णो (अक्षरो और शब्दो) का ज्ञान प्राप्त किया हो, अथात् पडित।

लब्धव्य—वि० [स०√लभ् (प्राप्ति)+तव्य] प्राप्त किये जाने के योग्य।

लब्धांक—पु० [लब्ध-अक, कर्म० स०] भागफल। (दे०)

लब्धा (ब्धृ)—वि० [स०√लभ् (पाना)+तृच्] प्राप्त करनेवाला।
स्त्री०=विप्रलब्धा (नायिका)।

लब्धि—स्त्री० [स०√लभ् (पाना)+क्तिन्] १ लब्ध होने की अवस्था या भाव। प्राप्ति। २ भागफल। लब्धाक।

लभन—पु० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+ल्युट्—अन] [वि० लभ्य, लब्ध] प्राप्त करना। हासिल करना। पाना।

लभस—पु० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+असच्] १. घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी। २ धन। ३ मंगन। याचक।

लभ्य—वि० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+यत्] १ जो पाया जा सके या मिल सके। २. उचित। न्याय-संगत।

लभ्यांश—पु० [सं० लभ्य-अंश, कर्म० स०] आर्थिक लाभ या उसका अंश। मुनाफा। लाभ। (प्रॉफिट)

लम—वि० [हिं० लंबा] लंबा का उपसर्ग की तरह प्रयुक्त वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लम-छड़, लम-ढेंक, लम-तड़ंग।

लमई—स्त्री० [देश०] एक तरह की मधुमक्खी।

लमक—पु० [सं०√रम् (क्रीडा)+क्वुन्—अक, र-ल] १ जार। उपपति। २ लंपट। व्यभिचारी।

स्त्री० [हिं० लमकना] लमकने की क्रिया या भाव।

लमकना—अ० [हिं० लंबा] लंबाई के बल नीचे की ओर लटकना। (पश्चिम)

† अ०=लपकना।

लम-गजा—पु० [हिं० लम+गज] इकतारा नाम का बाजा।

लम-गिरदा—पु० [हिं० लम+फा० गिर्द] एक तरह की मोटी रेती जो नारियल की जटा रेतने के काम आती है।

लम-गोड़ा—वि० [हिं० लम+गोड़=पाँव] जिसकी टाँगें लम्बी हों।

लम-घिचा—वि० [हिं० लम+घीच=गर्दन] [स्त्री० लामघिची] लंबी गर्दनवाला।

लमचा—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

लम-चिता—पु० [हिं० लम (लंबा)+चित्ती] तेंदुए की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी हिंसक पशु जिसके शरीर पर बड़ी बड़ी काली चित्तियाँ के धब्बे होते हैं।

लम-छड़—पु० [हिं० लम+छड़] १. बरछा। भाला। २ कबूतर उड़ाने की लग्गी। ३ पुरानी चाल की लंबी बंदूक।

वि० पतला और लंबा।

लमछुआ—वि० [हिं० लम] [स्त्री० लमछुई] साधारण से कुछ अधिक लम्बा। जैसे—गोरी रंगत, बड़ी बड़ी आँखें, लमछुई नाक। (लखनऊ)

लमजक—पुं० [सं० लमज्जक] कुश की तरह की एक सुगंधित घास जो औषध के रूप में काम आती है। लामज।

लमज्जक—पु०=लमजक।

लम-टंगा—वि० [हिं० लम+टाँग] [स्त्री० लमटंगी] लंबी टाँगों-वाला। जैसे—लमटंगी धोबिन।

पु० सारस पक्षी।

लमटेंग—वि० [हिं० लम+ढेंक] बहुत अधिक लंबा।

पु०=लम ढेंग।

लम-ढेंक—पुं० [हिं० लम+ढेंक (पक्षी)] सारस की तरह का पर उससे भी बड़ा एक प्रकार का पक्षी। हड़-गीला।

लम-तड़ंग—वि० [हिं० लंबा+ताड़+अंग] [स्त्री० [लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा और हृष्ट-पुष्ट। जैसे—लमतड़ंग आदमी।

लमती—स्त्री० [हिं० लम] कुछ दूर का स्थान। (पूरब)

लमधार—पु० [हिं० लम+धार] कुदाल के मुँह पर का टेढ़ा भाग।

लमधी—पु० [हिं० समधी का अनु०] १. संबंध के विचार से समधी का पिता। २. समधी के विचार से समधी का दूसरा समधी।

लमहा—पु० [अ० लमह] निमेष। पल। क्षण।

लमाना—स० [हिं० लम+आना (प्रत्य०)] १ लंबा करना। २ दूर तक आगे बढ़ाना।

अ० बहुत आगे या दूर निकल जाना।

लय—पु० [सं०√ली (मिलना)+अच्] १ एक पदार्थ का दूसरे में मिलकर उसमें पूरी तरह से समा जाना। अपनी सत्ता गँवाकर दूसरे में विलीन होना। विलय। २ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के साथ मिलना या संश्लिष्ट होना। ३ कार्य का आगे कारण में समाविष्ट होना या फिर कारण के रूप में परिणत होना। ४. दार्शनिक क्षेत्र में, वह स्थिति जिसमें सृष्टि की सभी चीजों का समाप्त होकर अव्यक्त प्रकृति के रूप में परिणत या विलीन होना। प्रलय। ५ किसी पदार्थ का होनेवाला लोप या विनाश। ६. नियत समय तक किसी अधिकार या सुभीते का उपयोग न करने के कारण उस अधिकार या सुभीते के फल-भोग से वंचित होने का भाव या स्थिति। (लैप्स) ७ चित्त की वृत्तियों को सब ओर से हटाकर एक ओर प्रवृत्त होना। एकाग्र भाव से किसी ध्यान में डूबना। ८ ठहराव। स्थिरता। ९ मूर्च्छा। बेहोशी। १०. छिपना। लुकना। ११. पाटा जिससे खेत के ढेले तोड़कर मिट्टी बराबर करते हैं। (वैदिक)

स्त्री० [सं० लय से लिंग-विपर्यय] १. कविता और संगीत में गति या प्रवाह और यति या विराम पर आश्रित वह तत्त्व जो नियमित रूप से होनेवाले उतार-चढ़ाव तथा आपेक्षिक पुनरावृत्तियों से उत्पन्न होता और कृतियों (कविता, पाठ, गायन, नृत्य आदि) में विशेष प्रकार की कोमलता, माधुर्य और लावण्य का आविर्भाव करता है। गति सामंजस्य। (रिदिम)

विशेष—तात्त्विक दृष्टि से इसका मुख्य संबंध उस काल से है जो कविताओं, गीतों, मंत्रों आदि के सस्वर उच्चारण में लगता है, और इसी को नियन्त्रित या संयत रखने के लिए संगीत में ताल से सहायता ली जाती है।

२. शास्त्रीय संगीत में लगनेवाले समय के विचार से जल्दी, धीरे या सहज में गाने का ढंग या प्रकार जिसके ये तीन भेद कहे गये हैं—विलंबित, मध्य और द्रुत। (दे० ये शब्द) ३ संगीत में स्वरों के उच्चारण की दृष्टि से गाने का प्रकार। जैसे—वह बहुत मधुर लय से गाता (या बजाता) है।

मुहा०—लय देखना=गाने-बजाने, नाचने आदि में लय का ठीक और पूरा ध्यान रखना।

स्त्री०=लौ (लगन)। उदा०—मन ते सकल वासना भागी। केवल रामचरण लय लागी।—तुलसी।

क्रि० प्र०—लगना।

लयक—वि० [सं० लय] १. लय से संबंध रखनेवाला। २. संगीत

की लय के रूप मे अथवा उसके ढग पर होनेवाला। (रिदिमकल) जैसे—नाडी या हृदय का लयक स्पदन।

लयन—पु० [स०√ली+ल्युट्—अन] १. लय होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. विश्राम। ३. शाति। ४ आड़ या आश्रय मे होने की क्रिया या भाव। ५ आश्रय या विश्राम का स्थान।

लय-लीन†—वि०=लव-लीन।

लयार्क—पु० [स० लय-अर्क, मध्य० स०] प्रलय काल का सूर्य।

लयिक—वि०=लयक।

लर—स्त्री०=लड (लडी)। उदा०—टेढी पाग, लर लटके।—मीराँ।

लरकई—स्त्री० [हि० लरका=लडका] १ लडकाई। लड़कपन। ३ लडको का-सा आचरण, व्यवहार या स्वभाव।

लरकना—अ० [स० लड़न=झूलना] १ लटकना। २ झुकना। ३ खिसक कर नीचे आना।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।—पड़ना।

लरका†—पु०=लड़का।

लरकाना†—स० [हि० लरकना] किसी को लरकने मे प्रवृत्त करना।

लरकिनी†—स्त्री०=लडकी।

लरखरनि—स्त्री०=लडखड़ाहट।

लरखराना†—अ०=लड़खड़ाना।

लरज—पु० [हि० लरजना] सितार के छ तारो मे से पाँचवाँ तार जो पीतल का होता है।

लरजना—अ० [फा० लर्ज़=कप] १. काँपना। थरथराना। २. इधर-उधर हिलना।

संयो० क्रि०—उठना।—जाना।—पडना।

३ डर जाना। दहल जाना।

लरजाँ—वि० [फा०] काँपता हुआ। कपित।

पु० [फा० लर्ज़] १ कंपकँपी। थरथराहट। २ भूकप। भूचाल। ३. जूड़ी बुखार जिसके आने पर रोगी थर-थर काँपने लगता है।

लरजिश—स्त्री०[फा० लरज़िश] कँपकँपी। थरथराहट।

लरझर—वि० [हि० लड+झडना] १ वरसता हुआ। २ वहुत अधिक। प्रचुर।

लरना†—अ०=लडना।

लरनि—स्त्री० [हि० लडना] लडने की क्रिया, ढग या भाव। लड़ाई।

लराई†—स्त्री०=लडाई।

लराका†—वि०=लडाका।

लरिकई†—स्त्री०=लरकई।

लरिक-लोरी—स्त्री० [हि० लरिका+लोल=चंचल] १ लड़को का-सा खेल। २ खेलवाड।

लरिका†—पु० [स्त्री० लरकिनी, लरिकी]=लड़का।

लरिकाई†—स्त्री०=लरकई।

लरिकिनी—स्त्री०=लडकी।

लरी—स्त्री०=लड़ी।

ललंतिका—स्त्री० [सं०√लल्+शतृ+ङीष्+कन्,+टाप्, ह्रस्व] १. नाभि तक लटकती हुई माला या हार। २ गोह नामक जंतु।

लल—स्त्री०=ललसा।

स्त्री० [देश०] १ झूठी वात। २ धोखा देने के लिए कही जाने-वाली वात। जैसे—तुम उनकी लल मे आकर दस रुपये गँवा वैठे।

ललक—स्त्री० [हि० ललकना] ललकने की अवस्था, गुण या भाव।

ललकना—अ० [देश०] १. किसी वस्तु को पाने की गहरी इच्छा या लालसा करना। २ अभिलाषा। चाह से भरा हुआ होना।

ललकार—स्त्री० [हि० ललकारना] १ ललकारने की क्रिया या भाव। २. प्रतियोगिता, लडाई आदि के लिए किसी का किया जानेवाला आह्वान या किया जानेवाला आमत्रण। यह कहना कि आओ सामना करके देख लो। ३ किसी को किसी पर आक्रमण करने के लिए दिया जानेवाला प्रोत्साहन या वढावा।

ललकारना—स० [देश०] १. प्रतियोगिता, लडाई आदि के लिए किसी को आमन्त्रित या आहूत करना। २ किसी को किसी से लडने के लिए वढावा देना।

ललकित—वि० [हि० ललक] गहरी चाह से भरा हुआ। (असिद्ध रूप)

ललचना—अ० [हि० लालच+ना (प्रत्य०)] १. लालच या लोभ से ग्रस्त होना। २ किसी दूसरे की अच्छी चीज देखकर उसे प्राप्त करने के मोह से अधीर होना। ३ किसी पर आसक्त, मोहित या लुब्ध होना।

ललचाना—स० [हि० ललचना] १ ऐसा काम करना जिससे किसी के मन मे किसी काम, चीज या वात की प्राप्ति या सिद्धि का लालच उत्पन्न हो। २. कोई चीज दिखाकर किसी के मन मे लोभ का भाव जाग्रत करना तथा उसे वह चीज न देकर अधीर या उत्सुक करना। ३. अपने रूप-रग, हाव-भाव से किसी के मन मे अनुराग या मोह उत्पन्न करना।

† अ०=ललचना।

ललचौहाँ—वि० [हि० लालच+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललचौही] लालच से भरा हुआ। ललचाया हुआ। जिससे प्रवल लालसा प्रकट हो।

ललछौहाँ—वि० [हि० लाल+छाँह=छाया] जिसमे हलके लाल रग की झलक हो। उदा०—ललछौहे सूखे पत्ते की समानता पर लेता है।—महादेवी।

लल-जिह्व—वि० [स० ललज्जिह्व] १ जीभ लपलपाता हुआ। २ भयकर। भीषण।

पुं० १ कुत्ता। २ ऊंट।

ललदेया—पु० [देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

ललन—पु० [स०√लल् (चाहना)+ल्युट्—अन] १. प्यारा वालक। दुलारा लडका। २ वालक। लड़का। ३ प्रेमी का प्रेम सूचक सम्वोधन। ४ केलि। क्रीडा। ५. साखू का पेड़। साल वृक्ष। ६ चिरौंजी का पेड़। पयार।

ललना—स्त्री० [स०√लल्+णिच्+ल्यु—अन,+टाप्] १. सुन्दर स्त्री। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३. वौद्ध हठ-योग मे इड़ा

ललिता-सप्तमी—स्त्री० [स० मध्य० स०] भादो सुदी सप्तमी। भाद्र शुक्ल सप्तमी।

ललितोपमा—स्त्री० [स० ललिता-उपमा, कर्म० स०] साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे उपमेय और उपमान की समता दिखलाने के लिए सम, समान, तुल्य, लौ, इव आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाये जाते हैं, जिनसे बराबरी, मुकाबला, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि के भाव प्रकट होते है।

ललिया—पु० [हिं० लाल+इया (प्रत्य०)] लाल रग का वैल।
† स्त्री०=लली।

लली—स्त्री० [हिं० लाल का स्त्री०] १. लडकी के लिए प्यार का शब्द। २. दुलारी पुत्री या वेटी। ३ नायिका या प्रेमिका के लिए प्रेमसूचक सवोधन।

ललौहाँ—वि० [हिं० लाल+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललौही] कुछ कुछ लाली लिये हुए। प्राय. लाल। लल-छौहाँ।

लल्लर—वि० [स०] हकलानेवाला।

लल्ला—पु० [हिं० लाल, लला] [स्त्री० लल्ली] १ लडके या वेटे के लिए प्यार का शब्द। २. दुलारा लडका।

लल्लो—स्त्री० [स० ललना] जीभ। जिह्वा। जवान। (स्त्रियों मे प्रयुक्त, उपेक्षासूचक) जैसे—इसकी लल्लो वहुत चलती है।

लल्लो-चप्पो—स्त्री० [हिं० लल्लो+अनु० चप्पो] किसी को प्रसन्न रखने के लिए उसके अनुकूल कही जानेवाली चिकनी-चुपडी वात। ठकुरसुहाती।

लल्लो-पत्तो—स्त्री०=लल्लो-चप्पो।

लल्हरा—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियो का साग खाया जाता है।

ललही-छठ—स्त्री० [स० हल षष्ठी] भाद्र कृष्ण पक्ष को छठ या षष्ठी तिथि।

लवंग—पु० [स०√लू (छेदन)+अगच्] लौग नामक वृक्ष और उसकी कलियाँ या फूल।

लवंग-लता—स्त्री० [स० ष० त०] १ लौग का पेड या उसकी शाखा। २. एक प्रकार की वँगला मिठाई।

लव—वि० [स०√लू+अप्] बहुत ही अल्प या थोडा। उदा०—मोह-निशा लव नही वहाँ पर।—निराला।
पु० १. काटने या छेदने की क्रिया। २. विनाश। ३. रामचन्द्र के दो यमज पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम। ४. काल का एक वहुत छोटा मान जो दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का होता है। (कुछ लोग एक निमेष के साठवें भाग को लव मानते है।)५ किसी चीज की वहुत ही छोटी या थोडी मात्रा। वहुत ही थोडा परिमाण।
पद—लव भर=वहुत ही थोडा।
६. लवा नाम की चिड़िया। ७. लवग। लौग। ८. जातीफल। ९. ज्वराकुश या लामज्जक नामक तृण। १०. पक्षियो के शरीर से कतरकर निकाला जानेवाला ऊन, पर या वाल। १२. सुरा गाय की पूँछ के वाल जिनकी चँवर वनती है।

लवक—वि० [स०√लू+ण्वुल्—अक] काटनेवाला।

लवकना†—अ०=लौकना।

लवका—स्त्री० [हिं० लौकना] १. लौका। विजली। २. चमक।

लवण—पु० [स०√लू+ल्यु—अन, पृषो० णत्व] १. नमक। लोन। २. दे० 'लवणासुर'। ३. दे० 'लवण समुद्र'।
वि० १. नमकीन। २. लावण्ययुक्त। सुन्दर। सलोना। ३. खारा।

लवण-त्रय—पु० [स० ष० त०] इन तीन प्रकार के नमको का समूह, सैंधव, विट् और सॉचर।

लवण-भास्कर—पु० [स० उपमित स०] वैद्यक मे एक प्रकार का पाचक चूर्ण।

लवण-मेह—पु० [स० मध्य० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह जिसमे पेशाव के साथ लवण के समान स्राव होता है।

लवण-यंत्र—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का यत्र जिसमे ओष-धियो का पाक वनाया जाता है। (वैद्यक)

लवण-वर्ष—पु० [स० मध्य० स०] कुश द्वीप का एक खण्ड। (पुराण)

लवण-समुद्र—पु० [स० ष० त०] सात समुद्रो मे से खारे पानी का एक समुद्र। (पुराण)

लवणा—स्त्री० [स्त्री० लवण्+टाप्] १. दीप्ति। आभा। २. महा-ज्योतिष्मती नाम की लता। ३. चुक। ४. चँगेरी। ५. अमलोनी नामक शाक। ६ लूनी नदी का पुराना नाम।

लवणाकर—पु० [स० लवण-आकर, ष० त०] १ नमक की खान। २ सौदर्य का आगार।

लवणाचल—पु० [स० लवण-अचल, मध्य० स०] पहाड के रूप मे लगाया हुआ नमक का ढेर जो दान किया जाता है।

लवणाब्धि—पु० [स० लवण-अब्धि, ष० त०]=लवण-समुद्र।

लवणार्व—पु० [स०] १ =लवण-समुद्र। २ समुद्र। सागर।

लवणालय—पु० [स० लवण-आलय, ष० त०] आधुनिक मथुरा नगरी का प्राचीन नाम। मधुपुरी।

लवणासुर—पु० [स० लवण-असुर, कर्म० स०] एक राक्षस जो मधु का पुत्र था तथा जिसने मधुपुरी नगरी (आधुनिक मथुरा) को वसाया था। इसका वध शत्रुघ्न ने किया था।

लवणित—भू० कृ० [स० लवण+इतच्] १ नमक से युक्त किया हुआ। जिसमे नमक डाला गया हो। २. सुन्दर।

लवणिम (मन्)—स्त्री० [स० लवण+इमनिच्] १ नमकीनी। सलोनापन। २ सौदर्य।

लवणोत्तम- पु० [स० लवण-उत्तम, स० त०] सेंधा नमक।

लवणोदक—पु० [स० लवण-उदक, मध्य० स०] १. नमक मिला हुआ पानी। २ खारे पानीवाला समुद्र। क्षार समुद्र।

लवणोदधि—पु० [स० लवण-उदधि, ष० त०] लवण समुद्र।

लवन—पु० [स०√लू (छेदन)+ल्युट्—अन] [वि० लवनीय, लव्य] १. काटना। छेदना। २ खेत की फसल की कटाई। लवनी। लुनाई। लौनी। ३. खेत की फसल काटने के वदले मे मिलनेवाला अन्न या धन।

लवना—स० [हिं० लुनना] [भाव० लवनाई] १ पकी हुई फसल काटना। लुनना। २. खेत मे काटकर रखे हुए डठलो को वटोरना।

लसलसाहट—स्त्री० [हिं० लसलसा] लसदार होने की अवस्था या भाव। चिपचिपाहट।
लसिका—स्त्री० [सं० लस+कन्+टाप्, इत्व] १ लाला। थूक। २. पेशी।
लसित—भू० कृ० [सं०√लस् (चमकना, क्रीडा)+क्त] १. शोभित। २. प्रकट। ३ क्रीडाशील।
लसी—स्त्री० [हिं० लस] १ चिपचिपाहट। चेप। लस। २ ऐसी अवस्था जिसमे किसी प्रकार के आकर्षण, लाभ आदि के कारण साथ लगे रहने की इच्छा या प्रवृत्ति हो। जैसे—कुछ न कुछ लसी है, तभी तो तुम उसके साथ लगे रहते हो। ३ साधारण मेल-जोल या संपर्क।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
†स्त्री०=लस्सी।
लसीका—स्त्री०=लसिका।
लसीला—वि० [हिं० लस+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लसीली] लसदार। जिसमे लस हो। चिपचिपा।
वि० [हिं० लसना] जो लस रहा हो, अर्थात् शोभायुक्त। सुन्दर।
लसुन†—पु०=लहसुन।
लसुनिया—पु०=लहसुनिया।
लसोड़ा—पु० [हिं० लस=चिपचिपाहट] १ एक प्रकार का छोटा पेड। २ उक्त पेड के फल जो बेर के-से होते है। इनमे लसदार गूदा होता है, और औषधि मे इनका प्रयोग होता है। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी के साथ लगा रहनेवाला व्यक्ति।
लसौटा—पु० [हिं० लासा+औटा (प्रत्य०)] चिडियाँ फँसाने की वह लग्गी जिस पर लासा लगा होता है।
लस्टम-पस्टम—अव्य० [अनु०] १. बहुत ही मद गति तथा साधारण रूप से। जैसे-तैसे। जैसे—अब तक लस्टम पस्टम थोडा बहुत काम हो ही रहा है।
लस्त—वि० [सं०√लस् (क्रीडा)+क्त] १ क्रीडित। २. शोभायुक्त। सुन्दर। ३. फबता या भला लगता हुआ।
वि० [सं० श्लथ] १ थका हुआ। शिथिल। श्रम या थकावट से ढीला। जैसे—चलते-चलते शरीर लस्त हो गया। २ जिसमे कुछ करने की शक्ति न रह गई हो। अशक्त।
लस्तक—पु० [सं० लस्त+कन्] धनुष का मध्य भाग।
लस्तकी (किन्)—पु० [सं० लस्तक+इनि] धनुष।
लस्तगा†—पु० [हिं० लस+लगाव] १ बहुत थोडा सम्पर्क या सबध। २ क्रम। सिलसिला।
लस्सान—वि० [अ०] [भाव० लस्सानी] १ अधिक बोलनेवाला। वाचाल। २ लच्छेदार बातें कहनेवाला।
लस्सी—स्त्री० [सं० लप्सिका] दही का घोल विशेषत वह घोल जिसे मथकर मक्खन निकाल लिया गया हो।
वि० लाक्षणिक अर्थ मे तरल। पतला।
†स्त्री०=लसी।
लहँगा—पु० [हिं० लक=कमर+अगा] १ कमर के नीचे का सारा अग ढकने के लिए स्त्रियो का एक घेरदार पहनावा। घाघरा। २. उक्त प्रकार का वह आधुनिक पहनावा जिसे स्त्रियाँ धोती या साडी के नीचे पहनती हैं। साया।
लहँड़ा—पु० [?] जन्तुओं का झुंड। गल्ला। जैसे—भेड़-बकरियों का लहँडा। उदा०—सिंहन के लहँडे नहीं, हंसन की नहिं पांत।—कबीर।
लहँदा—पु०=लहँदी।
लहँदी—स्त्री० [प० लहँदा=पश्चिम दिशा] पश्चिमी पजाब की बोली जो लडा लिपि मे लिखी जाती है। हिंदकी।
लहक—स्त्री० [हिं० लहकना] १ लहकने की क्रिया या भाव। २ आग की लपट। ३ चमक। ४ छवि। शोभा।
लहकना—अ० [सं० लता=हिलना-डोलना या अनु०] १ हवा मे इधर-उधर हिलना। झोंके खाना। लहराना। २ हवा का झोंका आना। हवा कुछ जोर से चलना। उदा०—तीर ऐसे त्रिविध समीर लागे लहकन।—देव। ३ आग का प्रज्वलित होना। दहकना।
सयो० क्रि०—उठना।
४. दे० 'ललकना'।
लहका—पु०=लचका (पतला गोटा)।
लहकाना—स० [हिं० लहकना] १ हवा मे इधर-उधर हिलना-डुलना। झोंका खिलाना। २. उत्तेजित करना। उकसाना। भडकाना। ३ प्रज्वलित करना। दहकाना। ४ लालसा से युक्त या उत्कंठित करना।
सयो० क्रि०—देना।
लहकारना—स०=लहकाना।
लहकौर—स्त्री० [हिं० लहना+कौर (ग्रास)] १ विवाह की एक रस्म जिसमे वर कन्या के मुख मे और कन्या वर के मुख मे ग्रास डालती है। २ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीत। ३ वर-वधू को कोहवर मे खेलाये जानेवाले खेल।
लहजा—पु० [अ० लह्‌ज] १. स्वरो के उतार-चढाव की दृष्टि से, बोलने का ढग। २ कोई बात कहने का ऐसा ढग जो शब्दों या स्वर के ढग से अच्छा या बुरा लगे। ३ बहुत थोडा समय। क्षण या पल। लमहा।
लहटोरा—पु० [?] एक प्रकार की खाकी या सफेद रग की चिड़िया। जिसकी दुम लम्बी और बीच मे काली होती है। यह कीडे-मकोडे, टिड्डे तथा छोटी मोटी चिड़ियाँ खाती है।
लहठी—स्त्री० [हिं० लाह=लाक्षा] लाख की चूड़ी।
लहन—पु० १=लहना (प्राप्तव्य) २ =कजा (वनस्पति)।
लहनदार—पु० [हिं० लहना+फा० दार] वह मनुष्य जिसका कुछ लहना किसी पर बाकी हो। अपना प्राप्य धन पाने या लेने का अधिकारी व्यक्ति।
लहना—स० [सं० लभन्, प्रा०लहन] १ प्राप्त करना। लाभ करना। पाना। २ आधिकारिक रूप से वह धन जो किसी से प्राप्य हो या किसी की ओर बाकी निकलता हो। पावना।
पद—लहना-पावना=औरो को दिया हुआ ऐसा धन जो आधिकारिक रूप से प्राप्य हो।
३ भाग्य।
स० [सं० लवन] १ काटना। छेदना। २ खेत की फसल काटना।

लहरीला†—वि०=लहरदार।

लहल—पु० [?] एक प्रकार का राग जो दीपक राग का पुत्र कहा गया है।

लहलहा—वि० [हिं० लहलहाना] [स्त्री० लहलही] १ फूल-पत्तो से भरा और सरस लहलहाता हुआ।
हरा-भरा। २ परम प्रसन्न और प्रफुल्ल।

लहलहाट—स्त्री० [हिं० लहलहाना] १. लहलहाते हुए होने की अवस्था या भाव। २ हरियाली। जैसे—है इस हवा मे क्या क्या बरसात की बहारें। सब्जो की लहलहाहट बागात की बहारे।—नजीर।

लहलहाना—अ० [हिं० लहरना (पत्तियो का)] १. लहरानेवाली हरी पत्तियो से भरना। फूल-पत्तियो से सरस और सजीव दिखाई देना। हरा-भरा होना। २ सूखे पेड पौधो का फिर से हरा-भरा होना। पनपना।
सयो० क्रि०—उठना।—जाना।
३ आनन्द या हर्ष से पूर्ण होना। प्रफुल्ल होना। ४. दुबले शरीर का फिर से सबल या हृष्ट-पुष्ट होना।
संयो० क्रि०—उठना।

लहली—स्त्री० [देश०] वह दल-दल जो किसी जलाशय के सूखने पर रह जाती है।

लहसुआ—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जिसका साग या रोटी बनाकर गरीब लोग खाते हैं। कन-कौआ।
† पु०लिसोडा।

लहसुन—पु० [स० लशुन] १. मसाले के काम आनेवाली प्याज की तरह की एक गाँठ और उसका पौधा। २. शरीर पर होनेवाला उक्त के आकार का एक प्रकार का चिह्न या लक्षण। ३ मानिक का एक दोष जिसे सस्कृत मे 'अशोभक' कहते है।

लहसुनिया—पु० [हिं० लहसुन] धूमिल रग का एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर। रुद्राक्षक।

लहा—पु०=लाह।

लहा-छेह—पु० [?] नृत्य की क्रियाओ मे से चौथी क्रिया। नाच की एक गति। इसमे मुख्यत बहुत तेजी या फुरती दिखाई जाती है। उदा०—लहा-छेह अति गतिन की सबनि लखे सब पाय।—बिहारी।
वि० १. तीव्र गतिवाला। २ चचल।

लहाना—स० [स० लभन] प्राप्त कराना। मिलाना।
स० [हिं० लहना] १. ऐसे ढग से बात कहना या उक्ति करना कि अभिप्राय सिद्ध हो जाय। २ कोई चीज ठीक जगह पर बैठाना या लगाना।
† स०[?] गँवाना।

लहालह—वि०=लहलहा।

लहालोट—वि० [हिं० लाभ, लाह+लोटना] १ हँसी से लोटता हुआ। २. आनन्द या प्रसन्नता से भरा हुआ। ३. प्रेम मे विभोर।

लहास—स्त्री०=लाश।

लहासन—स्त्री० [देश०] वह काली भेड जिसकी कनपटी से माथे तक का भाग लाल होता है। (गडरिये)

लहासी—स्त्री० [सं० लभस, प्र० लहस=रस्सी] १. वह मोटी रस्सी जिससे नाव या जहाज बाँधे जाते है। २. डोरी। रस्सी। ३ रास्ते मे निकली हुई पेड-पौधो की खूटियाँ। (पालकी के कहार)

लहि—अव्य० [हिं० लहना+प्राप्त होना, पहुँचना] पर्य्यंत। तक।

लहीम—वि० [अ०] १. लहम अर्थात् मास से युक्त। मासल। २ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

लहु—वि० [सं० लघु] १ छोटा। २. अल्प। कम। थोडा।
उदा०—माघ लहुलहु सीत लागे।—ग्राम्य गीत।

लहुरा—वि० [सं० लघु, प्रा० लहु+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० लहुरी] वय मे छोटा। कनिष्ठ। जैसे—लहुरा भाई।

लहू—पु० [स० लोह, हिं० लोहू] शरीर मे का रक्त। रुधिर। खून।
पद—लहू-लुहान।
मुहा०—(खाना-पीना) **लहू करना**=किसी का मन इतना अधिक दु खी कर देना कि उसे खाना-पीना तक बहुत बुरा लगने लगे। **लहू का घूँट पीना**=बहुत अधिक मानसिक कष्ट चुपचाप मन मे ही दबा रखना या सह लेना। (किसी के) **लहू का प्यासा होना**=किसी से इतना अधिक वैर या शत्रुता होना कि उसके प्राण तक ले लेने को जी चाहे। (आँखों से) **लहू टपकना**=बहुत अधिक क्रोध के कारण आँखें लाल होना। (शरीर से) **लहू टपकना**=शरीर मे यथेष्ट बल-वीर्य होने के कारण उसका रग लाल होना। (किसी का) **लहू पीना**=किसी को बहुत अधिक तग या दुखी करना। **लहू लगाकर शहीदों मे मिलना**=बिना कुछ भी त्याग या परिश्रम किये अपने आप को बडे लोगो मे गिनना या समझना।

लहू-लुहान—वि०[हिं० लहू+अनु० लुहान] आघात, क्षत आदि के कारण जिसका सारा शरीर लहू से भर गया हो। रक्ताक्त।

लहेरा—पु० [हिं० लाह=लाख+एरा (प्रत्य०)] १. वह जो लाख की चूडियाँ आदि बनाने या चीजो पर लाह का रग चढाने का काम करता हो। २. वह रगरेज जो रेशमी कपडे रँगने का काम करता हो।
पु० [?] एक प्रकार का सदा-बहार पेड जिसकी लकडी बढिया और मजबूत होने के कारण मेज-कुर्सियाँ आदि बनाने के काम आती है।

लहेसना†—स०=लेसना (चिपकाना या सटाना)

लाँक—स्त्री० [स० लक=डठल या बाल] १ ताजी कटी हुई फसल। २ भूसा।
स्त्री० लक (कमर)। उदा०—फटै धर प्रेत बटै सिर फाँक, लटै मन केक उहै उर लाँका।—कविराजा सूर्यमाल।

लाँग—स्त्री० [स० लागूल] पहनी हुई धोती या लँगोट का वह छोर जिसे जाँघो के नीचे से निकाल कर पीछे कमर मे खोंसा जाता है। काछ।

लांगल—पु० [स०√लग् (गति)+कलच्, पृषो० वृद्धि] १. खेत जोतने का हल। २. शुक्ल पक्ष की द्वितीया और उसके कुछ दिन बाद दिखाई देनेवाले चन्द्रमा के दोनो श्रृंग या नुकीले सिरे। ३. पुरुष का लिंग। शिश्न। ४. ताड का पेड। ५ जहाज या नाव का लगर। ६ एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

लांगलक—पु० [स० लागल+कन्] हल की आकृति का वह चीरा जो भगदर रोग मे लगाया जाता है। (सुश्रुत)

लांगल-चक्र—पु० [म० मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे, हल के आकार

का एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से भावी फसल के संबंध में शुभाशुभ फल जाना जाता है।

लांगल-दंड—पुं० [स० प० त०] हरिस।

लांगल-ध्वज—पुं० [स० ब० स०] बलराम।

लांगलि—पुं० [सं० लांगली] १. कलियारी नाम का जहरीला पौधा। २. मंजीठ। ३. जल पीपल। ४ पिठवन। ५. केवाँच। ६. गजपीपल। ७ चव्य। ८ महाराष्ट्री लता। ९ ऋषभक नामक अष्ट वर्ग की ओषधि।

लांगलिक—पुं० [स० लांगल+ठन्—इक] एक प्रकार का स्थावर विष।

वि० लांगल अर्थात् हल-संबंधी।

लांगलिका—स्त्री०=लांगली (कलियारी)।

लांगली (लिन्)—पुं० [स० लांगल+इनि] १. श्री बलराम जी। २ नारियल। ३ साँप।

स्त्री० [लांगल+अच्+ङीष्] १ एक नदी का नाम। (पुराण) २. कलियारी। ३ मजीठ। ४ पिठवन। ५ केवाँच। कौंछ। ६. जलपीपल। ७ गजपीपल। ८. नाग। चव्य। ९. महाराष्ट्री लता। १० ऋषभक नामक अष्ट वर्ग की ओषधि।

लांगा—पुं०=लहँगा।

लांगूल—पुं० [स०√लग्+ऊलच्,] १. पूँछ। दुम। २. लिंग। शिश्न।

लांगूली (लिन्)—पुं० [स० लांगूल+इनि] १ बंदर। २. ऋषभ नामक ओषधि।

लांघन—स्त्री० [हिं० लांघना] १ लाँघने या लाँघे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—बच्चे पर लांघन पड़ना। २ वह स्थिति जिसमें कोई चीज या जगह किसी ने लाँघी हो। जैसे—ऐसी औरतों की तो लांघन भी बचानी चाहिए, अर्थात् उनकी लाँघी हुई चीज या जगह भी नहीं लाँघनी चाहिए।

क्रि० प्र०—पड़ना।

लाँघना—स० [स० लंघन] १. डग भरकर या छलाँग लगाकर अवकाश या स्थान पार करना। जैसे—घोड़े का नाला लाँघना। २ डग भर कर या छलाँग लगाकर किसी खाद्य वस्तु के ऊपर से होकर जाना जो अनुचित माना जाता है। जैसे—किसी की थाली लाँघना। ३ अवकाश, स्थान आदि को पीछे छोड़ते हुए आगे निकलना। जैसे—गाड़ी पहाड़ों को लाँघती हुई जा रही थी। ४ नर पशु का मादा के साथ संभोग करना। जैसे—यह घोड़ी अभी लाँघी नहीं गई है।

लाँघनी उड़ी—स्त्री० [हिं० लाँघना+उड़ी=कुदान] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

लाँच—स्त्री० [देश०] रिश्वत। घूस। उत्कोच। (महाराष्ट्र)

लांछन—पुं० [स०√लांछ् (चिह्नित करना)+ल्युट्—अन] १ चिह्न। निशान। २ दाग। धब्बा। ३. कोई निन्दनीय या बुरा काम करने पर चरित्र पर लगनेवाला धब्बा। कलंक।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

४. ऐब। दोष।

लांछना—स्त्री०=लांछन।

लांछित—भू० कृ० [सं०√लांछ्+क्त] १. जिस पर लांछन लगा हो। कलंकित। २ चिह्नों से युक्त। ३. अलंकृत।

लाँची—पुं० [सं० लाज] एक प्रकार का धान।

लाँप—स्त्री० [देश०] बाधा। विघ्न।

लाँड़—पुं०=लंड (शिश्न)।

लांपट्य—पुं० [सं० लंपट+ष्यञ्] लंपटता।

लाँबा—वि० [स्त्री० लाँबी]=लंबा।

ला—प्रत्य० [अ०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के आरम्भ में लगकर अभाव या राहित्य सूचित करता है। जैसे—ला-जवाब, ला-परवाह, ला-वारिस आदि।

लाइ—पुं० [सं० अलात=लूक; प्रा० अल्लाय] अग्नि। आग।

स्त्री० [हिं० लाना] लगन। लगावट।

लाइक—वि०=लायक।

लाइची—स्त्री०=इलायची।

लाइट—स्त्री० [अं०] रोशनी। प्रकाश। उजाला।

लाइट हाउस—पुं० [अं०] प्रकाश-गृह। प्रकाश-स्तम्भ।

लाइन—स्त्री० [अं०] १. अवली। पंक्ति। कतार। २. रेखा। लकीर। ३. रेल की पटरी। ४ वह की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं। बैरिक।

मुहा०—लाइन सपुर्द करना=किसी सिपाही पर कोई आरोप होने पर उसका विचारार्थ लाइन या बैरक में भेजा जाना।

लाइब्रेरियन—पुं० [अं०] पुस्तकाध्यक्ष।

लाइब्रेरी—स्त्री० [अं०] पुस्तकालय।

लाइसेंस—पुं० [अं०] १. कोई विशेष कार्य करने के लिए दिया जानेवाला अनुज्ञापत्र। २ अनुज्ञा।

लाई—स्त्री० [सं० लाजा] धान, बाजरे आदि को भुनाकर और गरम बालू में भूनकर बनाई हुई खीलें। लावा।

पद—लाई का सत्तू=उक्त प्रकार की खीलों को पीसकर बनाया हुआ सत्तू जो बहुत जल्दी हजम होता और इसलिए दुर्बल रोगियों को खिलाया जाता है।

स्त्री० [हिं० लाना=लगाना] १. आपस में विरोध उत्पन्न कराने या एक की दृष्टि में दूसरे को तुच्छ या बुरा सिद्ध करने के लिए एक की बात दूसरे से जाकर कहना। इधर की बात उधर लगाना। चुगली।

पद—लाई-लुतरी।

क्रि० प्र०—लगाना।

लाई-लुतरी—स्त्री० [हिं०] १. चुगली। २. शिकायत।

वि० स्त्री० एक की बात दूसरे से कह करके आपस में विरोध कराने अथवा एक की दृष्टि में दूसरे को तुच्छ या हीन सिद्ध करनेवाली (स्त्री)।

लाउड स्पीकर—पुं० [अं०] बिजली की सहायता से चलनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध यंत्र जिसके द्वारा सब तरह की आवाजें इच्छानुसार तेज अथवा धीमी की जा सकती है।

लाऊ—पुं०=लौआ (घिया)।

लाकड़ा—पुं० [स्त्री० लाकडी]=लकड़ा।

लाकुटिक—वि० [सं० लकुट+ठञ्—इक] लकुट या डंडा धारण करनेवाला।

पुं० १. पहरेदार। २. चाकर। सेवक।

लॉकेट—पु० [अं०] १. जजीर आदि मे शोभा के लिए लगाया जाने-वाला लटकन। २. गले मे पहनी जानेवाली वह स्वर्णमाला जिसमे लटकन भी हो।

लाक्षण—वि० [सं० लक्षण+अण्] लक्षण-सवंधी। लक्षण का।

लाक्षणिक—वि० [स० लक्षण+ठक्—इक] १. लक्षण-सवधी। २ जिससे लक्षण प्रकट हो। ३ लक्षणो से युक्त। ४ (अर्थ या प्रयोग) जो शब्द की लक्षणा शक्ति पर आश्रित या उससे संवद्ध हो। ५. लक्षण के रूप मे होनेवाला।

पु० १. वह जो लक्षणो का ज्ञाता हो। लक्षण जाननेवाला। २ ऐसा छंद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है।

लाक्षण्य—वि० [स० लक्षण+ष्यञ्] १. लक्षण-सवधी। २ लक्षण बतलानेवाला। ३ लक्षणो का ज्ञान रखनेवाला।

लाक्षा—स्त्री० [सं०√लक्ष्य+अ+टाप्] लाख नामक लाल पदार्थ जो कुछ वृक्षो पर कीडे बनाते हैं। दे० 'लाख'।

लाक्षा-गृह—पु० [स० ष० त०] लाख का वह गृह जिसे दुर्योधन ने पाडवो को जला देने की इच्छा से बनवाया था पर इसमे आग लगने से पहले ही सूचना पाकर पाडव लोग इसमे से निकल गये थे।

लाक्षा-रस—पु० [स० ष० त०] महावर जो पहले पानी मे लाख उवाल कर बनाते थे।

लाक्षा-वृक्ष—पु० [स० मध्य० स०] १. ढाक। पलास। २ कोशाम्र। कोसम।

लाक्षिक—वि० [स० लाक्षा+ठक्—इक] १. लाक्षा संबधी। लाख का। २. लाख का बना हुआ।

लाख—वि० [स० लक्ष, प्रा० लाख] जो सख्या मे सौ हजार हो।

पद—लाख टके की बात=अत्यन्त उपयोगी तथा मूल्यवान् बात।

पु०सौ हजार की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१,०००,००

मुहा०—लाख से लीख होना=धन कुवेर का निर्धन होना।

क्रि० वि० वहुत अधिक। वहुतेरा। जैसे—मैंने उन्हे लाख समझाया पर उन्होने कुछ सुनी नही।

स्त्री० [स० लाक्षा] लाल रग का एक प्रसिद्ध पदार्थ जो पलास, पीपल आदि के वृक्षो की टहनियो पर कई प्रकार के लाख कीडो की कुछ प्राकृतिक क्रियाओं से बनता है, और जिसका उपयोग चूडियो आदि बनाने, पत्थर और लोहे को जोडकर एक करने तथा रग आदि बनाने के कामो मे होता है। लाह।

लाखना—अ० [हिं० लाख] १. बरतनो के छेदो पर लाख लगाकर उन्हे वन्द करना। २ लाख के घोल से मिट्टी के बरतनो पर लेप करना।

† स०=लखना।

लाखपती†—पु०=लखपती।

लाखा—पु० [हिं० लाख] १ लाख का बना हुआ एक प्रकार का रग जिसे स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए होठो पर लगाती है।

क्रि० प्र०—जमाना।—लगाना।

२. गेहूँ के पौधो मे लगनेवाला एक रोग जिससे पौधे की नाल लाल रग की होकर सड जाती है। इसे गेरुआ या कुकुहा भी कहते हैं।

क्रि० प्र०—लगना।

३ मारवाड के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

वि० [स्त्री० लाखी] लाख के रग का। जैसे—लाखी गाय।

लाखागृह—पु०=लाक्षागृह। (दे०)

ला-खिराज—वि० [फा०] (भूमि) जिसका खिराज अर्थात् लगान न देना पडे। कर या लगान से मुक्त।

ला-खिराजी—स्त्री० [फा० लाखिराज+ई (प्रत्य०)] १. वह भूमि जिस पर खिराज या लगान न देना पड़े।

२. कर या लगान से होनेवाली छूट।

वि०=ला-खिराज।

लाखी—वि० [हिं० लाख+ई (प्रत्य०)] लाख के रग का। मटमैला। लाखा।

पुं० उक्त प्रकार का मटमैला लाल रग।

लाखो—वि० [हिं० लाख] १. कई लाख। २ अत्यधिक, विशेषत असख्य।

लाग—स्त्री० [हिं० लगना] १ लगे हुए होने की अवस्था या भाव। लगाव। सपर्क। सवध। जैसे—इस मकान मे वगल वाले मकान से लाग है, अर्थात् उसमे से इसमे सहज मे कोई आ सकता है। २. मानसिक दृष्टि से होनेवाली किसी प्रकार की लगावट। जैसे—अनुराग, प्रेम, लगन आदि। ३ प्रतिस्पर्धा। होड।

पद—लाग-डॉट।

४ दुश्मनी। वैर। शत्रुता। ५ कोई ऐसा उपाय, तरकीव या उक्ति जो अन्दर-अन्दर या गुप्त रूप से काम करती हो, और ऊपर सहसा न दिखाई देती हो। जैसे—(क) लाग का खेल। (ख) जादू टोना या मत्र-तन्त्र। ६. उक्त के आधार पर एक प्रकार का ऐसा स्वाँग, जिसमे विशेष कौशल हो और जो जल्दी समझ मे न आवे। जैसे—किसी के पेट या गरदन के आर पार (वास्तव मे नही, बल्कि कौशल से दिखलाने भर के लिए) तलवार या कटार गई हुई दिखलाना। ७ वह नियत धन जो विवाह आदि शुभ अवसरो पर ब्राह्मणो, भाटो, नाइयों आदि को अलग अलग रस्मो के सवध मे दिया जाता है। ८. खाने-पीने का कच्चा सामान। रसद। (बुन्देल) ९. भूमि-कर। लगान। १० धातुओ को फूँक कर तैयार किया हुआ रस। भस्म। ११. एक प्रकार का नृत्य। १२. वह चेप जिससे चेचक का अथवा इसी प्रकार का और कोई टीका लगाया जाता है।

वि० काम मे आने या लग सकने के योग्य। उदा०—तुरी लाग ले ताकि तिम।—प्रिथीराज।

* अव्य० [स० लग्न] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास। ३. लिए। वास्ते।

लाग-डॉट—स्त्री० [सं० लग्न-दड या हिं० लाग-वैर+डॉट] १. आपस मे होनेवाली ऐसी प्रतिस्पर्धा पूर्ण स्थिति जिसमे कुछ वैर-विरोध का भाव भी सम्मिलित हो। २. दे० 'लग्न-दड' (नृत्य)।

लागत—स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी पदार्थ के निर्माण मे होनेवाला व्यय। जैसे—इस कारखाने पर ५० हजार लागत वैठी है।

क्रि० प्र०—आना।—वैठना।—लगना।

२. वह पूँजीगत व्यय जो विक्रयार्थ वनाई हुई किसी वस्तु पर पड़ता है

लाजा—स्त्री० [सं० लाज+टाप्] १. चावल। २. भूने हुए धान की खील। लावा।

लाजिम—वि० [अ० लाजिम] आवश्यक और उचित। कर्तव्य के विचार से अपरिहार्य।

लाजिमी—वि०=लाजिम।

लाट—पु० [सं०] १. एक प्राचीन देश जहाँ अब भड़ौच, अहमदाबाद आदि नगर है। गुजरात का एक भाग। २ उक्त देश का निवासी। ३. कपडा, विशेषत फटा-पुराना कपडा। ४ 'लाटानुप्रास'।

स्त्री० [हिं० लट्ठ ?] १ ऊँचा, वड़ा और मोटा खभा। जैसे—तालाव के वीच मे गाडी हुई लाट। २ उक्त प्रकार की कोई वास्तु-रचना। मीनार। जैसे—कुतुवमीनार की लाट। ३ वह लवा वाँध जो किसी मैदान के पानी के वहाव को रोकने के लिए वनाया जाता है।

पु० [अ० लार्ड] व्रिटिश शासन मे भारत के किसी प्रान्त या देश का सवसे वड़ा शासक। गवर्नर।

पु० [अ० लॉट] व्यापारिक क्षेत्र मे कटी-फटी, टूटी-फूटी या पुरानी रखी हुई वहुत सी चीजो का वह विभाग या समूह जो एक ही साथ रखा, वेचा या नीलाम किया जाय।

पद—लाट-घाट, लाट-वंदी।

†पु०=लाठ।

लाट-घाट—पु० [अ० लाट=ढेर+हिं० घाट=स्थान] व्यापारिक क्षेत्र मे वह स्थिति जिसमे कटा-फटा या रद्दिया माल एक साथ सस्ते दामो पर थोक वेच दिया गया हो। जैसे—इस दूकान मे तो अधिकतर लाट-घाट का ही माल रहता है।

लाट-वंदी—स्त्री० [अ० लॉट+फा० वदी] चीजो के अलग-अलग विभाग करके उनकी राशि या वर्ग वनाने की क्रिया या भाव।

लॉटरी—स्त्री० [अ०] रुपये या सामान के रूप मे पुरस्कार देने की व्यवस्था जिसमे विके हुए टिकटो या दिये हुए कूपनो के सख्याओ की चिट्ठी डालकर विजेता का नाम निश्चित किया जाता है।

लाटा†—पुं० [देश०] भुने हुए महुए और तिलो को कूटकर वनाए हुए लड्डू।

लाटानुप्रास—पु० [सं० लाट-अनुप्रास, मध्य० स०] एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे शब्दो की पुनरुक्ति तो होती हे परन्तु अन्वय मे हेर-फेर करने से तात्पर्य भिन्न हो जाता है। जैसे—पूत सपूत तो क्यो धन सचय। पूत कपूत तो क्यो धन सचय। (कहा०)

लाटिक—स्त्री०=लाटी (साहित्यिक शैली)।

लाटी—स्त्री० [सं० लाट+अच्+ङीष्] सस्कृत साहित्य मे रचना की वह विशिष्ट प्रणाली या शैली जो लाट तथा उसके आस-पास के देशो मे प्रचलित थी और जो वैदर्भी तथा पाचाली के मध्य की रीति थी, और गौड़ी की ही तरह भयानक, रौद्र, वीर, आदि उग्र रसो के लिए उपयुक्त मानी जाती थी। लाटिका।

स्त्री० [अनु० लट लट=गाढा या चिपचिपा होना] वह अवस्था जिसमे मुँह का थूक और होठ सूख जाते हैं।

क्रि० प्र०—लगना।

लाटीय—वि० [सं० लाट+छ—ईय] लाट नामक देश का। लाटक।

लाठ—स्त्री० [सं० यष्टि पु० हिं० लट्ठ] १ कोल्हू मे लगी हुई वह वल्ली जो वरावर घूमती रहती है। २ दे० 'लाट'।

लाठा-लाठी—स्त्री० [हिं० लाठी] आपस मे लाठियो से होनेवाली मार-पीट या लडाई।

लाठी—स्त्री० [सं० यष्ठी, प्रा० लट्ठी] ठस या ठोस वाँस का ६-७ फुट लवा टुकड़ा।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—वाँधना।—मारना।

२ लाक्षणिक रूप मे, सहारा। जैसे—यही लडका तो वुढापे की लाठी है।

लाठी-चार्ज—पु० [हिं०+अं०] लोगो को तितर-वितर करने के लिए पुलिस का भीड आदि पर लाठियाँ चलाना।

लाड (ड़)—पु० [सं० ललन] वच्चो को प्रसन्न करने या रखने के लिए प्रेमपूर्ण व्यवहार। दुलार।

क्रि० प्र०—करना।—लड़ाना।

लाड़-लड़ा—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप जो प्राय. वृक्षो पर रहता है।

लाड-लड़ैता—वि० [हिं० लाड+लडाना] १ जिसका वहुत अधिक लाड़ किया गया हो। २ प्यारा। दुलारा।

लाड़ला—वि० [हिं० लाड+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० लाड़ली] जिसका या जिसके साथ वहुत लाड किया जाय। प्यारा। दुलारा।

लाड़ा—स्त्री० [हिं० लाड] [स्त्री० लाडी] वर। दूल्हा। (पश्चिम)

लाडी—स्त्री० [सं० लाडा का स्त्री०] नव-विवाहिता वधू। दुलहन। उदा०—लिछमी मकी रुक्मणी लाडी।—प्रिथीराज।

लाडू—पु० [हिं० लडडू] १ लडडू। मोदक। २ दक्षिणी नारगी।

लाडो—स्त्री० [हिं० लाड] ऐसी लडकी या युवती जिसका वहुत लाड हुआ हो या होता हो।

लढ़िया—पु० [देश०] वह दलाल जो दुकानदार से मिला रहता है और ग्राहको को धोखा देकर उसका माल विकवाता हो।

लढ़ियापन—पु० [हिं० लढिया+पन (प्रत्य०)] १ लढिया होने की अवस्था या भाव। २ चालाकी। धूर्तता।

लात—स्त्री० [?] १ पैर के नीचे का भाग। पाँव। २ उक्त अंग से किया जानेवाला आघात या प्रहार। पदाघात। उदा०—काहू लात, चपेटन केहू।—तुलसी।

क्रि० प्र०—जडना।—देना।—मारना।—लगाना।

मुहा०—लात खाना=(क) पैरो की ठोकर या मार सहना। (ख) मार खाना। **लात चलाना**=पैर से आघात या प्रहार करना। **लात जाना**=गौ भैंस आदि का दूध देते समय दुहनेवाले को लात मार कर दूर हट जाना। **(किसी चीज को या पर) लात मारना**=वहुत ही तुच्छ समझकर दूर करना या हटाना। जैसे—वह नौकरी को लात मार कर घर चला गया। **(खाट या रोग को) लात मार कर खड़ा होना**=वहुत अधिक रुग्णावस्था मे से विशेषत स्त्रियो का प्रसव के उपरात, नीरोग होकर चलने-फिरने के योग्य होना।

लातर—स्त्री० [हिं० लतरी] पुराना जूता।

लातरना†—अ० [हिं० लात] १ चलते-चलते थक जाना। २ पथ-भ्रष्ट होना। उदा०—थिर नृप हिन्दुसथान, लातरना मग लोभ

लाभ-कारक—वि० [सं० ष० त०] जिससे लाभ होता हो। फल करानेवाला। फायदेमद।

लाभकारी (रिन्)—वि० [स० लाभ√कृ+णिनि] लाभकारक।

लाभ-दायक—वि० [स० ष० त०] जो लाभ कराता हो। लाभ देनेवाला।

लाभ-मद—पु० [स० मध्य० स०] वह मद या अहकार जिसके कारण मनुष्य अपने आपको लाभवाला और दूसरे को हीन-पुण्य समझे। (जैन)

लाभ-स्थान—पु० [स० ष० त०] जन्म-कुडली मे लग्न से ग्यारहवाँ स्थान जो धन-धान्य, सतान, विद्या, आयु आदि का सूचक होता है। (फलित-ज्योतिष)

लाभांतराय—पु० [स० लाभ-अतराय, स० त०] वह अतराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ मे विघ्न पडता है। (जैन)

लाभांश—पु० [स० लाभ-अश, ष० त०] लाभ का वह अश जो किसी कारखाने के हिस्सेदारों को उनके द्वारा लगाई हुई पूँजी के अनुपात मे मिलता है। (डिविडेन्ड)

लाभार्थी (थिन्)—पु० [स० लाभ√अर्थ (चाहना)+णिनि] १. वह जो किसी प्रकार के लाभ की कामना करता हो। २ दे० 'हिताधिकारी'।

लाभालाभ—पु० [स० लाभ-अलाभ, द्व० स०] लाभ और अलाभ। हानि-लाभ। (प्राफिट ऐंड लॉस)

लाम—पु० [फा०] १. सेना। फौज।

मुहा०—लाम वाँधना=किसी पर चढाई करने के लिए सेना इकट्ठी करना।

पु० [अ०] अरवी वर्ण-माला मे ल् (लघुतम) ध्वनि की इकाई के सूचक अक्षर की सज्ञा।

पद—लाम-काफ—गन्दी, वेहूदी और वाहियात वात। अप-शब्द। क्रि० प्र०—कहना।—वकना।

मुहा०—लाम वाँधना=चढाई के लिए सेना तैयार करना।

२ जन-समूह। भीड-भाड।

मुहा०—लाम वाँधना=वहुत से लोगो को इकट्ठा करना।

क्रि० वि० दूरी पर। दूर।

लामज—पु० [स० लामज्जक] खस की तरह का पीले रग का एक प्रकार का तृण जो ओपधि के रूप मे काम आता है।

लामज्जक—पु० [स०√ला+क्विप्, ला-मज्जा, व० स०,+कप्] १. लामज नामक तृण। २ उशीर। खस।

लामन—पु० [?] १ झूलना या लटकना। २. लहँगा। उदा०—लामन लिखियो सोतली चलत फिरत रँग जाय।—गीत।

लाम-वंदी—स्त्री० [हिं० लाम+फा० वदी] सेनाओ को शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित कर युद्धार्थ प्रयाण के लिए तैयार रखना। युद्ध-सन्नाह। (मोविलाइजेशन)

लामा—पु० [ति० ब्लामा=मठाधीश] तिव्वत मे वौद्ध धर्मावलवियो के गुरु जो वहाँ के सर्वोच्च शासक भी है। जैसे—दलाई लामा, पचन-लामा।

पु० [पेरू देश की भापा] घास खाने और पागुर करनेवाला एक प्रकार का जतु जो ऊँट की तरह होता है। यह दक्षिणी अमेरिका मे पाया जाता है। इसका थूक विषैला होता है, इसे पानी की आवश्यकता नही होती।

†वि० [स्त्री० लामी] =लवा।

लामी—स्त्री० [देश०] राजपूताने का एक प्रकार का फल जो तरकारी वनाने के काम आता है।

लामे—अव्य० [हिं० लाम=दूर] १ कुछ दूरी पर। २ एक ओर। हटकर। जैसे—लामे रखना। (पूरव)

लाय—स्त्री० [स० अलात, प्रा० अलाप] १ आग की लपट। ज्वाला। लौ। २ अग्नि। आग।

लायक—वि० [अ०] [भाव० लायकी] १. उचित। ठीक। वाजिव। २. उपयुक्त। मुनासिव। ३. गुणवान्। गुणी। ४ कुछ कर सकने के योग्य। समर्थ।

लायकियत—स्त्री० [अ०] लायक होने की अवस्था या भाव। लायकी। योग्यता।

लायकी—स्त्री० [अ० लायक+ई (प्रत्य०)] १. लायक होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ योग्यता।

लायची—स्त्री०=इलायची।

लायन—पुं० [हिं० लगाना=वदले मे देना] १. नकद दाम देकर वेची जानेवाली वस्तु। २ वह वस्तु जिसे रेहन रखकर ऋण लिया गया हो।

लार—स्त्री० [स० लाला] १ मुँह मे से तार के रूप मे निकलनेवाली थूक।

मुहा०—लार टपकना=कोई चीज देखकर या सुनकर उसे पाने के लिए लालायित होना।

२ लसीला पदार्थ। लासा। लुआव। ३ किसी को जाल या धोखे मे फँसानेवाली चीज या वात।

मुहा०—लार लगाना=किसी को जाल या धोखे मे फँसाने का उपाय या काम करना।

स्त्री० [?] अवली। कतार। पक्ति।

अव्य० [राज० लैर=पीछे] किसी के पीछे या साथ लगकर।

उदा०—दिया लिया तेरे सँग चलेगा, और नही तेरे लार।

लारी—स्त्री० [अ०] वडी मोटर गाडी, जिसमे विशेष रूप से सवारियाँ और उनका सामान ढोया जाता है।

† अव्य०=लार (पीछे या सग)।

लारू—पु०=लाडू (लड्डू)।

लारे—अव्य० [?] १ वास्ते। लिए। २ आधार पर। उदा०—राग को आदि जिती चतुराई सुजान कहै सव याही के लारे।—सुजान।

लार्ड—पु० [अ०] १ परमेश्वर। ईश्वर। २ मालिक। ३. जमीदार। ४. इगलैड के राजा द्वारा उच्च कोटि के कार्यकर्त्ताओ को प्रदान की जानेवाली एक उपाधि।

लाल—पु० [स० लालक से] १. छोटा और प्रिय वालक। प्यारा वच्चा। २ पुत्र। वेटा। उदा०—तेरे लाल मेरो माखन खायो।—सूर। ३. वालक। लडका। ४ प्रिय व्यक्ति। ५ श्री कृष्ण का एक नाम।

पु० [स० लालन] दुलार। लाड।

स्त्री० १ =लालसा। २ =लार।

पु० [अ० लअल] १. माणिक या मानिक नामक रत्न। २ मानिक का रग।

मुहा०—लाल उगलना=बोलने के समय बहुत अच्छी और प्यारी बातें कहना।

वि० १ उक्त रत्न के रग का। रक्त वर्ण का। सुर्ख। जैसे—लाल कपडा, लाल कागज। २ आवेश, क्रोध तथा लज्जा आदि के कारण जिसका वर्ण रक्त हो गया हो। जैसे—आँखे या चेहरा लाल होना। तप कर लाल अगारा होना।

मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना।

३. (चौसर के खेल की गोटी) जो चारो ओर से घूमकर बिलकुल बीच-वाले खाने मे पहुँच गई हो, और जिसके लिए कोई चाल बाकी न रह गई हो।

मुहा०—(किसी की) गोटी लाल होना =यथेष्ट प्राप्ति या फल-सिद्धि होना।

४ (चौसर के खेल का खिलाडी) जिसकी सब गोटियाँ बीच के घर मे पहुँच चुकी हो और जिसे कोई चाल चलना बाकी न रह गया हो। ऐसा खिलाडी जीता हुआ समझा जाता है। ५ (खिलाडी) जो खेल मे औरो से पहले जीत गया हो। ६ धन-सम्पत्ति, सन्तान आदि से परम सुखी।

मुहा०—लाल होना या लालो लाल होना=यथेष्ट सम्पन्न और सुखी होना।

पु० १ एक प्रसिद्ध छोटी चिडिया जिसका शरीर कुछ भूरापन लिये लाल रग का होता है। इसकी मादा को 'मुनियाँ' कहते हैं। २. चौपायों के मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

लाल अंबारी—स्त्री० [हिं० लाल+अम्बारी] एक प्रकार का पटुआ जिसके बीज दवा मे काम आते है।

लाल अगिन—पु० [हिं० लाल+अगिन] भूरे लाल रग का एक पक्षी, जिसका •ला नीचे की ओर सफेद होता है।

लाल आलू—पु० [हिं० लाल+आलू] १. रतालू। २. अरुई। घुइयाँ।

लाल इलायची—स्त्री० [हिं० लाल+इलायची] बड़ी इलायची।

लालक—वि० [स०√लल् (इच्छा)+ण्वुल्—अक] (लालन अर्थात्) दुलार-प्यार करनेवाला।

पु० विदूषक।

लाल कच्चू—पु० [हिं० लाल+कच्चू] गजकर्ण आलू। बटा।

लाल कलमी—पु० [हिं० लाल+कलमी] चाँदनी या गुल चाँदनी नाम का पौधा और उसका फूल।

लाल कीन—पु०=नानकीन।

लाल कोठी—स्त्री० [हिं०] व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा जहाँ वे कसब कमाती है।

लाल घास—स्त्री० [हिं० लाल+घास] गोमूत्र नामक तृण।

लाल चंदन—पु० [हिं०+स०] रक्त चदन।

लालच—पु० [स० लालसा] [वि० लालची] कोई चीज पाने या लेने के लिए मन मे होनेवाली ऐसी अत्यधिक चाह या लालसा जो अनुचित या अशोभन होने के कारण सहसा औरों पर प्रकट न की जा सकती हो। लोलुपतापूर्ण लोभ। जैसे—बहुत लालच करना अच्छा नहीं होता।

लालचहा—वि०=लालची।

लालची—वि० [हिं० लालच+ई (प्रत्य०)] बहुत लालच करनेवाला। लोभी।

लाल चीता—पु० [हिं० लाल+चीता] लाल फूलो वाला चित्रक या चीता।

लाल चीनी—पु० [हिं० लाल+चीनी] एक प्रकार का कबूतर, जिसका सारा शरीर सफेद और सिर पर बहुत सी लाल बिंदियाँ होती है।

लालटेन—स्त्री० [अं० लैंटर्न] किसी प्रकार का ऐसा आधान या उप-करण जिसमे तेल भरने का खजाना और जलाने के लिए बत्ती लगी रहती है और जलती हुई बत्ती को बुझाने से बचाने के लिए चारो ओर शीशे का अथवा और किसी प्रकार का आवरण भी लगा रहता है। कंडील।

लालड़ी—स्त्री० [हिं० लाल (रत्न)+ड़ी (प्रत्य०)] नत्थ, बाली आदि मे लगाया जानेवाला एक तरह का नग।

लालदाना—पु० [हिं० लाल+दाना] लाल रग की खसखस। (पूरब)

लालन—पु० [स०√लाल् (इच्छा)+णिच्+ल्युट्—अन] यथेष्ट प्रेम-पूर्वक बालको का आदर करना। लाड-प्यार।

पद—लालन-पालन।

†पुं० [हिं० लाल] १ प्रिय पुत्र। प्यारा बेटा। २ बालक। लड़का।

†स्त्री० [?] चिरौंजी। पयाल।

लालना—स० [स० लालन] १ लाड या दुलार करना। उदा०—लालन जोग लखन लघु लोने।—तुलसी। २ पालन-पोषण करना। पालना। उदा०—कलप बेलि जिमि बहु बिधि लाली।—तुलसी।

लालनीय—वि० [स०√लल्+णिच्+अनीयर्] जिसका लालन करना उचित हो या किया जाने को हो।

लाल-पगड़ी—स्त्री० [हिं०] पुलिस का सिपाही या अधिकारी। (उत्तर-प्रदेश)

लाल-पतंग—पु० [हिं०] कपास के पौधो मे लगनेवाला एक प्रकार का लाल कीड़ा।

लाल पानी—पु० [हिं० लाल+पानी] शराब। मद्य।

लाल पिलका—पु० [हिं० लाल+पिलका] सफेद डैनो तथा दुमवाला लाल रग का एक प्रकार का कबूतर।

लाल पेठा—पुं० [हिं० लाल+पेठा] कुम्हड़ा।

लाल-फीता—पु० [हिं०] १. लाल रग की पट्टी या फीता जिससे सर-कारी कार्यालयो मे कागज-पत्र, नत्थियाँ आदि बाँधी जाती है। २. लाक्षणिक और व्यग्यात्मक रूप से सरकारी कार्यों के सपादन निर्णय आदि मे लगनेवाली अनावश्यक देर। दीर्घ-सूत्रता। (रेडटेप)

लाल-बुझक्कड़—पु० [हिं० लाल+बूझना] ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो वास्तव मे जानता तो कुछ भी न हो, फिर भी अटकल-पच्चू और ऊट-पटाग अनुमान लगाकर दुरूह बातो का कारण तथा समस्याओं का समा-धान करने मे न चूकता हो।

लाल-बीबी—स्त्री० [हिं०] सैनिकों की परिभाषा मे निम्न कोटि की और कसब कमानेवाली वेश्या।

लाल-बेग—पु० [हिं० लाल+तु० बेग] १ एक कल्पित पीर। २. लाल रग का एक प्रकार का कीड़ा।

लाल-बेगी—पु० [हिं०] लाल बेग नामक पीर का अनुयायी अर्थात् मुसलमान भगी।

लाल-भक्त—पु० [हिं० लाल+स० भक्त] खोई या लावा का पकाया हुआ भात, जो रोगियों को पथ्य मे दिया जाता है।

लाल-भरेंडा—पु० [हिं०] एक तरह का छोटा झाड।

लाल-मन—पु० [हिं० लाल+मणि] १. श्री कृष्ण। २. लाल रंग का एक प्रकार का तोता जिसकी चोंच गुलाबी, दुम काली और डैने हरे होते हैं।

लाल-मिर्च—पु० [हिं०] १. एक तरह का छोटा पौधा जिसमे फली के आकार के फल होते हैं। जो आरभ मे हरे तथा पकने पर लाल हो जाते हैं। २. उक्त पौधे की फली अथवा उसकी बुकनी जो कटु, तीक्ष्ण स्वाद वाली होती है और नमकीन व्यजनो मे डाली जाती है।

लाल-मुँहाँ—पुं० [हिं०] मुँह मे निकलने वाले रग के छाले जिसकी गिनती रोग मे होती है। निनावाँ का एक प्रकार।
वि०—लाल मुँहवाला।

लाल-मुनियाँ—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

लाल-मुरगा—पुं० [हिं०] १. एक प्रकार का पहाड़ी शिकारी पक्षी जिसका शिकार किया जाता है। २. गुल-मखमली नाम का पौधा और उसका फूल । मयूर-शिखा।

लाल-मूली—स्त्री० [हिं० लाल+मूली] शलजम। शलगम।

लालरी—स्त्री०=लालड़ी।

लाल-लाडू—पु० [हिं० लाल+लाडू=लड्डू] एक प्रकार की नारगी।

लाल-शक्कर—स्त्री० [हिं० लाल+शक्कर] बिना साफ की हुई चीनी। खाँड।

लाल-सफरी—स्त्री० [हिं०] अमरूद।

लाल-समुद्र—पु०=लाल सागर।

लाल-सर—पु० [हिं० लाल+सर] एक प्रकार का पक्षी जिसकी गरदन और सिर लाल रंग का होता है।

लालसा—स्त्री० [सं०√लस्(दीप्ति)+यङ्, द्वित्व,+अ+टाप्] १. बहुत दिनों से मन मे बनी रहनेवाली इच्छा। साध। जैसे—माँ के दर्शनों की लालसा पूरी न हो सकी। २ गर्भिणी की इच्छा। दोहद। ३. अनुनय। ४ खेद। ५ एक प्रकार का वृत्त ।

लाल-साग—पुं० [हिं० लाल+साग] मरसा नाम का साग।

लाल सागर—पु० [हिं० लाल+स० सागर] भारतीय महासागर का वह अग जो अरब और अफ्रीका के बीच मे पड़ता है और जिसके पानी मे कुछ ललाई झलकती है।

लाल-सिखी—पु० [हिं० लाल+शिखा] मुर्गा।

लाल-सिरा—पु० [हिं० लाल+सिरा=सिर] एक प्रकार की बत्तख जिसका सिर लाल होता है।

लालसी—वि० [स० लालसा+ई (प्रत्य०)] लालसा या अभिलाषा करनेवाला।

लाला—स्त्री० [स०√लड् (इच्छा)+णिच्+अच्+टाप्] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।
पुं० [स० लालक] १. प्राय कायस्थों, बनियों, पजाबियों आदि के नाम के पहले लगनेवाला आदरसूचक शब्द। जैसे—लाला लाजपत राय। २. बातचीत मे प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का आदरसूचक सबोधन।
मुहा०—(किसी से) लाला भइया करना=किसी को आदरपूर्वक सबोधन करते हुए उससे बातचीत करना या उसे समझाना-बुझाना। बीच बीच मे लाला, भइया आदि मर्यादासूचक सबोधन करते हुए बातें करना। जैसे—तुम्हें लाला भइया करके उनसे अपना काम निकालना चाहिए।
३. कायस्थ जाति या कायस्थों का सूचक शब्द। जैसे—ये लाला लोग बहुत चतुर होते हैं। ४. छोटे बच्चो के लिए प्रेमसूचक सबोधन।
पु० [फा०] पोस्ते का लाल रग का फूल जिसमे प्राय काली खस-खस पैदा होती है। गुले लाला।
†वि०=लाल।

लाला-ग्रंथि—स्त्री० [म० मध्य० स०] मुँह के अन्दर की वे ग्रन्थियाँ जो लाला या लार उत्पन्न करती हैं। (सैलिवरी ग्लैण्ड)

लालाटिक—वि० [स० ललाट+ठक्—इक] १. ललाट अर्थात् मस्तक संबंधी। २ लाक्षणिक अर्थ मे, नियति या भाग्य से सबधित अथवा उस पर आधारित। ३ सतर्क। ४ निकम्मा। व्यर्थ।
पुं० १ कामशास्त्र मे एक प्रकार का आलिंगन। २. सेवक।

लाला-प्रमेह—पु० [म० प० त०] प्रमेह का वह प्रकार जिसमे पेशाब लाला (लार) की तरह तार बाँधकर होता है।

लाला-मेह—पु०=लाला प्रमेह।

लालायित—भू० कृ० [स० लाला+क्यच्+क्त] १. जिसके मुँह मे बहुत अधिक लालच के कारण लाला अर्थात् लार या पानी भर आया हो। २. जिसका अच्छी तरह लालन अर्थात् दुलार या लाड़ किया गया हो।

लाल-विष—पुं० [स० ब० स०] ऐसा जतु जिसके मुँह की लार मे विष रहता हो। जैसे—मकड़ी, छिपकली आदि।

लाला-स्रव—पु० [स० प० त०] १ मुँह से लार बहना। २. वह जिसके मुँह से लार बहती हो। जैसे—छिपकली, मकड़ी।

लाला-स्राव—पु० [स० प० त०] १ मुँह से थूक या लार गिरना। २. मकड़ी का जाला।

लालि—स्त्री०=लालसा। उदा०—ये सोरहौ सिंगार बरनि के करहिं देवता लालि।—जायसी।

लालित—भू० कृ० [स०√लल् (इच्छा)+णिच्+क्त] १ जिसका लालन किया गया हो। दुलारा हुआ। २. जो पाला-पोसा गया हो।

लालितक—पु० [स० लालित+कन्] वह प्रिय जीव या प्राणी जिसका लालन-पालन किया गया हो।

लालित्य—पु० [स० ललित+ष्यञ्] १ ललित होने की अवस्था, गुण या भाव। २. रमणीयता। ३ हाव-भाव।

लालिनी—स्त्री० [स०√लल्+णिनि+ङीप्] कामुक स्त्री।

लालिमा—स्त्री० [हिं० लाल] लाल होने की अवस्था या भाव। लाली।

लाली—स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १. लाल होने की अवस्था

या भाव। अरुणता। ललाई। लालपन। सुर्खी। २ इज्जत, प्रतिष्ठा या सम्मान जिसके बने रहने पर चेहरा लाल रहता है। रौनक। शोभा। (प्राय. चेहरे या मुँह के साथ प्रयुक्त) जैसे—चलो, तुम्हारे चेहरे(या मुँह)की लाली रह गई; अर्थात् प्रतिष्ठा बनी रह गई। नष्ट नहीं होने पाई। ४. यश। कीर्ति। ५. पकी ईटो का चूर्ण। सुर्खी।
पु० [स० लालिन्] १. लालन-पालन करनेवाला व्यक्ति।
२. व्यक्तियो को कुमार्ग पर ले जानेवाला पुरुष।

लाले—पु० बहु० [हिं० लाला] अभिलाषाएँ।
मुहा०—(किसी चीज के) लाले पड़ना=अप्राप्य या दुष्प्राप्य वस्तु के लिए बहुत अधिक तरसना। जान के लाले पडना=विकट या सकट-पूर्ण स्थिति मे पहुँचना।

लालो—पु०=लाले।

लाल्य—वि० [स०√लल् (इच्छा)+णिच्+यत्] लालनीय।

लाल्हा—पु० दे० 'मरसा' (साग)।

लाव—पु० [स०√लू (छेदना)+ण] १. लवा नामक पक्षी। २. लौंग। ३. काटने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [देश० या स० रज्जु] मोटा रस्सा।
मुहा०—लाव चलाना=चरसे के द्वारा कूएँ से पानी निकालकर खेत सीचना।
२. उतनी भूमि जितनी एक दिन मे एक चरसे से सीची जा सके। ३. लगर मे बाँधने का रस्सा ४ डोरी। रस्सी।
पु० [हिं० लाना] ऋण के रूप मे किसी को दिया जानेवाला धन।
मुहा०—लाव उठाना=(क) चीज बधक रखकर रुपया उधार देना। (ख) कष्ट के समय खेतिहरो की सहायता करने के लिए उन्हे धन देना। लाव लगाना=उधार लिया हुआ रुपया, अन्नादि देकर चुकाना।
स्त्री० [हिं० लाव=आग] अग्नि। आग।

लावक—पु० [स० लाव+कन्] लवा (पक्षी)।
पु० [देश०] १. चावल की जाडे की फसल। २. चरसा। ३. उतना समय जितना एक बार मोट खीचने मे लगता है।

लावण—पु० [स० लवण+अण्] सुँघनी। नस्य।
वि० १. लवण सबधी। नमक का। २ जिसमे नमक मिला हो। नमकीन। ३. (ओषधि आदि) जिसका लवण या नमक के द्वारा सस्कार हुआ हो।

लावणिक—पु० [स० लवण+ठञ्—इक] १. वह जो नमक बनाता या बेचता हो। नमक का व्यापारी। २. नमक रखने का बर्तन। नमकदान।
वि०=लावण।

लावण्य—पु० [स० लवण+ष्यञ्] १ लवण का धर्म या भाव। नमकपन। २. शील या स्वभाव की उत्तमता। ३. आकृति आदि मे होनेवाली नमकीनी। चेहरे या शरीर का नमक अर्थात् सलोनापन।

लावण्या—स्त्री० [स० लावण्य+अच्+टाप्] ब्राह्मी (बूटी)।

लावदार—वि० [हिं० लाव=आग+फा०+दार (प्रत्य०)] भरी हुई तोप।
पु० वह जो पुरानी चाल की तोपो मे बत्ती लगाकर उन्हे चलाता या छोडता था।

लावनता†—स्त्री०=लावण्य।

लावना—स० [हिं० लगना] १ लगना। स्पर्श करना। उदा०—अतर पट दे खोल सवद उर लावरी।—कबीर। २ पूरा करना। उदा०—नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा।—तुलसी।

लावनि—स्त्री० [स० लावण्य] लावण्य। सुन्दरता।
स्त्री०=लावनी।

लावनी—स्त्री० [स० लावणी] १. सगीत मे देशी रागो के अतर्गत एक उपराग जिसका विकास मगध के पास लावाणक नामक प्रदेश के लोक-गीतो मे हुआ था। उसके कई भेद है। यथा—लावनी कलिंगडा, लावनी जगला, लावनी भूपाली, लावनी रेखता आदि। २ लोक मे प्रचलित उपराग के वे विशिष्ट प्रकार जो प्राय. चग या डफ बजाकर उसके साथ गाये जाते है। ३ उक्त प्रकार की वह कविता या गीत जो चग या डफ बजाकर गाया जाता हो।

लावनी बाज—पुं० [हिं०+फा०] [भाव० लावनी-बाजी] वह जो चग या डफ पर लावनियाँ गाता हो।

ला-बवाल—वि० [अ० ला+फा० बवाल] १. ला-परवाह। २. आवारा। ३. अविचारी।

ला-बवाली—स्त्री० [अ०+फा०] १. ला-बवाल होने की अवस्था या भाव। २. आवारागर्दी। ३. अविचार।

ला-वल्द—वि० [फा०] [भाव०-लावल्दी] जो पिता न हो अर्थात् जिसके आगे सन्तान न हो। नि सतान।

लावा—पु० [स० लाजा] ज्वार, धान, रामदाने आदि को बालू मे भूनने पर तैयार होनेवाला वह रूप जिसमे दाने फूटकर फैल जाते है।
मुहा०—(किसी पर) लावा मेलना†=(क) किसी को अधिकार या वश मे करने के लिए मत्र पढते हुए उस पर लावा फेंकना। (ख) अधिकार या वश मे करना।
वि० [हिं० लावना] लगाई-बुझाई करनेवाला। दो पक्षो मे झगडा खडा करनेवाला।
पु० [हिं० लवना] फसल काटनेवाला मजदूर।
†पु०=लवा।
पु० [अ० लावत] राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो प्राय. ज्वालामुखी पर्वतो के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है।

लावाणक—पु० [स०] मगध का निकटवर्ती एक देश।

लावा-परछन*—पु० [हिं०] एक वैवाहिक रीति जिसमे कन्या की झोली अथवा उसके हाथ मे पकडी हुई डलिया मे उसके भाई लावा डालते या छोडते है।

ला-वारिस—वि० [अ०] [भाव० ला-वारिसी] १. (व्यक्ति) जिसका कोई वारिस अर्थात् उत्तराधिकारी न हो। २ (वस्तु) जिसे सभालकर न रखा गया हो और जो यो ही इधर-उधर पडी रहती हो। ३. (माल) जिसकी देख-रेख करनेवाला या मालिक न हो।

ला-वारिसी—स्त्री० [अ० ला-वारिस] ला-वारिस होने की अवस्था या भाव।
वि०=ला-वारिस।

लावा-लुतरा—वि० [हिं०] इधर की बातें उधर लगाकर लोगों को आपस में लड़ानेवाला।

लावु—पु० [हिं० अलावू] कद्दू। घीया। लौआ।

लाव्य—वि० [स०√लू (छेदन)+ण्यत्] लवने अर्थात् काटने के योग्य।

लाश—स्त्री० [फा०] १ किसी प्राणी का मृत शरीर। शव। जैसे—हाथी की लाश। २ क्षत-विक्षत तथा मृतप्राय शरीर। जैसे—लाशें तड़प रही थी। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत भारी व्यक्ति।

लाशा—वि० [फा०] अति दुर्बल, क्षीणकाय।
पुं० मृत शरीर। लाश। शव।

लाष—स्त्री०=लाख (लाक्षा)।

लाषना—स०=लाखना।

लास—पु० [स०√लस् (शोभित होना)+घञ्] १ एक प्रकार का नाच। २. थिरकने या मटकने की क्रिया या भाव। ३ जूस। रस। शोरवा।
पु० [हिं० लसना] १. लसने अर्थात् सुन्दर जान पड़ने की अवस्था या भाव। २ छवि। शोभा। ३. चमक। दीप्ति।
पु० [?] उस छड के दोनों कोने जो पाल बाँधने के लिए मस्तूल मे लटकाया जाता है। (लश०)
मुहा०—लास करना=चलती हुई नाव को रोकने के लिए डाँडो को बहते पानी मे वेडे वल मे ठहराना। (लश०)
†स्त्री०=लाश (शव)।

लासक—पु० [स०√लस् (क्रीड़ा)+ण्वुल्—अक] १. लास्य अर्थात् कोमल अग-भगी से युक्त नृत्य करनेवाला नर्तक। २ मयूर। मोर। ३ शिव। ४ घडा। मटका। ५ एक रोग जिसमे शरीर का कोई अग बराबर हिलता-डुलता रहता है।
वि० १. नाचनेवाला। २ हिलता-डुलता रहनेवाला। ३. खेलवाड़ी। ४. क्रीडा रस।

लासकी—स्त्री० [स० लासक+ङीप्] नर्तकी।

लासकीय—वि० [स० लासक+छ—ईय] १. लासक सबधी। २. लासक रोग से ग्रस्त या पीडित।

लासन—पुं० [अ० लैशिंग] जहाज बाँधने का मोटा रस्सा। लहासी।
पु० [स०] नाचने की क्रिया या भाव।

लासा—पु० [हिं० लस] १. कोई लसवाला या लसीला पदार्थ। विशेषत ऐसा पदार्थ जिसके द्वारा दो चीजें परस्पर चिपकाई जाती है। २. वह लसीला पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं। चेंप। लोपन।
मुहा०—लासा लगाना=किसी को फँसाने की युक्ति रचना। लासा होना=सदा साथ लगे रहना।
३ वह साधन जिससे किसी को फँसाया जाय।

ला-सानी—वि० [अ०] जिसका सानी या जोड का कोई न हो। अद्वितीय। वेजोड़।

लासि—पु०=लास्य।

लासिक—वि० [स० लास+ठन्—इक] [स्त्री० लासिका] नाचनेवाला।

लासिका—स्त्री० [स० लासिक+टाप्] १. नर्तकी। २ वेश्या। ३. उपरूपक का एक भेद।

लासी—स्त्री० [देश०] गेहूँ, सरसों आदि की फसल मे लगनेवाला एक तरह का काला छोटा कीडा।

लासु—स्त्री०=लाश।

लास्य—पु० [स०√लस् (क्रीडा)+ण्यत्] १. नृत्य। नाच। २ दो प्रकार के नृत्यों मे से एक। (दूसरा प्रकार तांडव कहलाता है।)
विशेष—लास्य वह नृत्य कहलाता है, जिसमे कोमल अग-भगियों के द्वारा मधुर भावों का प्रदर्शन होता है, और जो शृंगार आदि कोमल रसो को उद्दीप्त करने वाला होता है। इसमे गायन तथा वादन दोनो का योग रहता है।
वि० कोमल तथा मधुर। जैसे—स्वरो मे र की ध्वनि लास्य है।

लाह—स्त्री० [स० लाक्षा] लाख। चपडा।
स्त्री० [?] चमक। दीप्ति।
†पुं०=लाभ।

लाहक—वि० [हिं० लाह] १. इच्छा करने या चाहनेवाला। २ लाभ के रूप मे प्राप्त होनेवाला। ३ आदर या कदर करनेवाला।

लाहन—पुं० [देश०] १. पशुओं को खिलाया जानेवाला महुए का फल जिसमे से मद्य खीच लिया गया हो। २ जूसी और महुए को मिलाकर उठाया हुआ खमीर। ३. किसी चीज का और किसी तरह उठाया हुआ खमीर। ४ गौओ आदि के व्याने पर उन्हे पिलाई जानेवाली दवाएँ। ५ खलिहान मे अनाज ढोकर लाने की मजदूरी।

लाहल†—अव्य० =ला हौल।

लाहा—पुं०=लाह (लाभ)।

लाही—वि० [हिं० लाहा] लाल या लाखी रग का।
स्त्री० १ लाल रग के वे छोटे कीडे जो लाख बनाते है। २ ऊख की फसल मे लगनेवाला लाल रग का एक तरह का छोटा कीडा।
स्त्री० [देश०] १. सरसो। २. काली सरसो। ३ तीसरी बार साफ किया हुआ शोरा।
स्त्री०=लाई (धान, बाजरे आदि का लावा)।

लाहु†—पुं०=लाह (लाभ)।

लाहौरी नमक—पुं० [हिं०] सेंधा नमक।

लाहौल—अव्य० [अ०] अरबी के एक प्रसिद्ध वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्राय भूत-प्रेत आदि को भगाने या किमी बात के सबध मे परम उपेक्षा अथवा घृणा प्रकट करने के लिए किया जाता है। पूरा वाक्य इस प्रकार है—'*लाहौल व ला कूव्वत इल्ला बिल्लाह*', जिसका अर्थ है, ईश्वर के सिवा और किसी मे कुछ सामर्थ्य नही है।
मुहा०—लाहौल पढना= (क) उक्त वाक्य का उच्चारण करना। (ख) परम उपेक्षा, घृणा या तिरस्कार सूचित करना।

लिंग—पु० [स०√लिंग् (गति)+घञ् वा अच्] [वि० लैंगिक] १ कोई ऐसा चिह्न या निशान जिससे किसी काम, चीज या बात की पहचान होती है। लक्षण। २ किसी वर्ग या समूह का प्रतिनिधित्व करनेवाला तत्त्व, पदार्थ या बात। प्रतीक। ३. न्याय शास्त्र मे कोई ऐसी चीज या बात जिसमे किसी प्रकार की घटना या तथ्य का ठीक अनुमान या कल्पना होती हो अथवा प्रमाण मिलता हो। साधक हेतु। जैसे—

धूम भी अग्नि का एक लिंग है। अर्थात् धूआँ दिखाई पड़ने पर आग का अनुमान होता या प्रमाण मिलता है।

विशेष—हमारे यहाँ न्याय शास्त्र में यह चार प्रकार का कहा गया है—(क) संबद्ध; जैसे—आग के साथ रहनेवाला धूआँ उसका सबद्ध लिंग है। (ख) गौ, बैल आदि के सिर में लगे रहनेवाले सींग उनके न्यस्त लिंग हैं। (ग) मनुष्य के साथ लगी रहनेवाली भाषा उसका सहवर्ती लिंग है; और (घ) किसी अच्छी या बुरी बात के साथ विपरीत रूप में लगी रहनेवाली बुरी या अच्छी बात उसका विपरीत लिंग है। जैसे—गुण और अवगुण, पाप और पुण्य आदि।

४. मीमांसा में वे छः लक्षण जिनके आधार पर लिंग का निर्णय होता है। यथा—उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, अर्थवाद और उपपत्ति। ५. सांख्य में मूल प्रकृति जिसमें सारी विकृतियाँ फिर से लीन होती हैं। ६. लोक-व्यवहारों में अर्थ की दृष्टि से जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों अथवा पुरुष और स्त्री वाले दो प्रसिद्ध विभागों में से प्रत्येक विभाग। वह स्थिति जिसके कारण या द्वारा हम किसी को नर या मादा अथवा पुरुष या स्त्री कहते और मानते हैं। (सेक्स) ७. उक्त के आधार पर वह तत्व जो पुरुषों और स्त्रियों को अपनी काम वासना पूरी करने अथवा संतान उत्पन्न करने में प्रवृत्त करता है। (सेक्स) ८. व्याकरण के क्षेत्र में शब्द-गत दृष्टि से संज्ञाओं और सर्वनामों (तथा उनसे सम्बद्ध क्रियाओं और विशेषणों) का वह वर्गीकरण जिसमें यह सूचित होता है कि कोई संज्ञा या सर्वनाम पुरुष जाति का वाचक है या स्त्री जाति का।

विशेष—संस्कृत, मराठी, फारसी, अँगरेजी आदि अनेक भाषाओं में पुंलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग ये तीन लिंग होते हैं। परन्तु हिन्दी उर्दू, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में स्त्रीलिंग और पुंलिंग ये दो ही लिंग होते हैं। बंगला आदि कुछ भाषाओं में यह लिंग तत्त्व संज्ञाओं तक ही परिमित रहता है, सर्वनामों, विशेषणों, क्रियाओं आदि के रूपों पर लिंग-भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, सभी लिंगों में उनके रूप एक से रहते हैं। ९. साहित्य में पदों, वाक्यों आदि में शब्दों की वह स्थिति जिसमें यह सूचित होता है कि पद या वाक्य में आये हुए दूसरे शब्दों के साथ किसी विशिष्ट शब्द का कैसा अथवा क्या संबंध है।

विशेष—इसका विशेष विवेचन काव्य-प्रकाश में देखा जा सकता है। १०. पुरुष की जननेन्द्रिय या गुह्य इंद्रिय। उपस्थ। शिश्न। ११. शिव का एक विशिष्ट प्रकार का प्रतीक या मूर्ति जो पुरुष की जननेन्द्रिय के रूप में होती है।

विशेष—हमारे यहाँ शिव के दो रूप माने गये हैं। पहला निष्क्रिय और निर्गुण शिव जो अलिंग कहा गया है और दूसरा जगत् की उत्पत्ति करनेवाला शिव जो लिंग रूप है। इसी दूसरे और लिंग या प्रकृति के मूल कारण वाले रूप में शिव को 'लिंगी' भी कहते हैं। और इसी रूप में भारत में उनकी पूजा होती है। (विशेष दे० 'लिंग-पूजा'।)

१२. वह छोटी डिबिया या पिटारी जिसमें लिंगायत लोग शिव-लिंग की मूर्ति बंद करके गले में पहने या लटकाये रहते हैं। १३. देवता की प्रतिमा या मूर्ति। विग्रह। १४. वेदान्त में आत्मा का वह बहुत छोटा और सूक्ष्म रूप जो शरीर के ढाँचे के आकार का होता और मृत्यु के उपरांत शरीर से बाहर निकलता है। दे० 'लिंग-शरीर' १५. दे० 'लिंग-पुराण'।

लिंगता—स्त्री० [सं० लिंग+तल्—टाप्] लिंग से युक्त होने की अवस्था या भाव।

लिंग-देह—पुं०=[सं० मध्य० स०] =लिंग-शरीर।

लिंग-देही (हिन्)—पुं० [सं० लिंगदेह+इनि] वह जिसका मन, कर्म और वचन सब एक-रूप हों।

लिंगधर—पुं० [सं० ष० त०] १. लिंगी अर्थात् चिह्न धारण करनेवाला व्यक्ति। २. ढोंगी व्यक्ति।

लिंगन—पुं०=आलिंगन।

लिंग-नाश—पुं० [सं० ष० त०] १. ऐसी अवस्था जिसमें किसी लिंग अर्थात् चिह्न या लक्षण की पहचान न हो सकती हो। २. अंधकार। ३. अंधता। अन्धापन।

लिंग-पुराण—पुं० [सं० मध्य० स०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण जिसमें शिव और उनके लिंग की पूजा का माहात्म्य वर्णित है।

लिंग-पूजक—पुं० [सं० ष० त०] वह जो लिंग-पूजा (देखें) करता हो। (फेलिसिस्ट)

लिंग-पूजा—स्त्री० [सं० ष० त०] पुरुष की जनन-शक्ति के प्रतीक के रूप में लिंग की पूजा करने की प्रथा जो अनेक प्राचीन जातियों में प्रचलित थी और अब भी हिन्दुओं में जो शिव-लिंग की पूजा के रूप में प्रचलित है। (फेलिसिज्म)

विशेष—प्राचीन काल में अरब, जापान, मिस्र, रोम, यूनान आदि अनेक देशों में पुरुष की जननेन्द्रिय या लिंग ही सारे जगत् का मूल कारण माना जाता था और इसी लिए वहाँ भी ईश्वर या स्रष्टा देवता के रूप में लिंग की ही पूजा होती थी। यहाँ तक कि काबुल के पुराने मंदिरों में बहुत से ऐसे लिंग निकले हैं, जो भारतीय शिव-लिंग से बहुत कुछ मिलते हैं। वैदिक काल में अनेक अनार्य भारतीय जातियों में भी यह लिंग-पूजा प्रचलित थी।

लिंगवर्द्धिनी—स्त्री० [सं० लिंग√वृध् (बढ़ना)+णिच्+णिनि+ङीप्] अपामार्ग। चिचड़ा।

लिंगवस्ति—पुं० [सं० मध्य० स०]=लिंगार्श (रोग)।

लिंगवान् (वत्)—[सं० लिंग+मतुप्] जो लिंग अर्थात् चिह्न या लक्षण से युक्त हो। लक्षण युक्त।

पुं० शैवों का लिंगायत सम्प्रदाय।

लिंग-वृत्ति—पुं० [सं० ब० स०] जो केवल लिंग अर्थात् चिन्ह या वेश बनाकर जीविका चलाता हो। आडम्बरी।

वि० झूठे चिह्न धारण करके जीविका चलानेवाला। ढोंगी।

स्त्री० १. लिंग अर्थात् चिह्न धारण करके जीविका उपार्जित करना। २. ढोंग रचना।

लिंग-शरीर—पुं० [मध्य० स०] हिंदू शास्त्रों के अनुसार मृत्यु के उपरान्त प्राणी की आत्मा को आवृत्त रखनेवाला वह सूक्ष्म शरीर जो पाँचों प्राणों, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों सूक्ष्मभूतों, मन, बुद्धि और अहंकार से युक्त होता है परन्तु स्थूल अन्नमय कोश से रहित होता है। लोक-व्यवहार में इसी को सूक्ष्म-शरीर कहते हैं।

विशेष—कहते हैं कि जब तक पुनर्जन्म न हो या मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक यह शरीर बना रहता है।
लिंगशरीरी (रिन्)—वि० [सं० लिंगशरीर+इनि] लिंग-शरीरधारी।
लिंगस्थ—पुं० [सं० लिंग√स्था (ठहरना)+क] ब्रह्मचारी। (मनुस्मृति)।
लिंगांकित—पुं० [सं० लिंग-अंकित, तृ० त०]=लिंगायत शैव सम्प्रदाय।
लिंगानुशासन—पुं० [सं० लिंग-अनुशासन, ष० त०] वह शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि वाक्य-रचना मे कौन सा शब्द किस अवस्था मे किस लिंग मे प्रयुक्त होता है।
विशेष—हमारे यहाँ की संस्कृत, पालि, प्राकृत, आदि पुरानी भाषाओ मे एक ही शब्द भिन्न भिन्न प्रसंगो मे भिन्न भिन्न लिंगो मे प्रयुक्त होता था। यथा—पाले या हिम के अर्थ मे 'शिशिर' शब्द पुं०, शीत काल के अर्थ मे 'पुन्नपुंसक (देखे) और शीतलता से युक्त पदार्थ के अर्थ मे विशेष्य-लिंग (देखें) होता है। यही बात कुछ शब्दो मे पर्यायो के संबंध मे भी होती है। यथा—स्त्री शब्द स्त्री-लिंग है और 'कलत्र' नपुंसक लिंग है। इन सब विभेदो के कारण और नियम बतलाना ही 'लिंगानुशासन' कहलाता है।
लिंगायत—पुं० [हिं०] १. एक प्रसिद्ध शैव सम्प्रदाय। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
लिंगार्चन—पुं० [सं० लिंग-अर्चना ष० त०]=लिंग-पूजा।
लिंगार्श(स्)—पुं० [सं० लिंग-अर्शस्, ष० त०] पुरुष की जननेन्द्रिय का एक रोग।
लिंगित—भू० कृ० [सं० √लिंग+क्त] लिंग् अर्थात् चिह्न या लक्षण से युक्त किया हुआ।
लिंगिनी—स्त्री० [सं० लिंग+इनि+ङीप्] एक प्रकार की लता जिसे पंच गुरिया कहते है।
लिंगी (गिन्)—वि० [सं० लिंग+इनि] [स्त्री० लिंगिनी] लिंग अर्थात् चिह्न या चिह्नो से युक्त। लिंग-धारी।
पुं० १. शिव। महादेव। २ शिव लिंग का उपासक या पूजक। शैव। ३ ब्रह्मचारी। ४. परमात्मा। ५ ढोंगी। ६ हाथी। ७ दे० 'लिंग-देही'।
स्त्री० [सं० लिंग] छोटा शिव लिंग।
लिंगेंद्रिय—पुं० [सं० लिंग-इंद्रिय मध्य० स०] पुरुषों की मूत्रेन्द्रिय। लिंग।
लिंट—पुं० [अं०] एक तरह का मुलायम जालीदार कपड़ा जो घाव पर दवा आदि लगाकर रखा जाता है।
लिए—अव्य० [?] 'के' संबंध सूचक से युक्त होकर 'के लिए' रूप मे प्रयुक्त होनेवाला सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिह्न। जैसे—राम के लिए फल मैं लाया हूँ।
विशेष—'इसलिए' आदि मे 'इस' के बाद वाले 'के' का लोप हो गया है।
लिकटी—स्त्री० [?] चिह्न अंकित करने का आब-रंग नामक रंग।
लिकिन—पुं० [देश०] लंबी टाँगो वाला मटमैले रंग का एक पक्षी।
लिकुच—पुं०=लकुच।
लिक्खाड़—पुं० [हिं० लिखना] खूब मँजा हुआ और बहुत लिखनेवाला लेखक।
लिक्षा—स्त्री० [सं०√लिश् (गति)+श, कित्त्व,+टाप्] १. जूँ का अंडा। २ प्राचीन काल का एक बहुत छोटा परिमाण, जो किसी के मत से चार अणुओ के बराबर, किसी के मत से आठ बाल के बराबर और किसी के मत से राई या सरसो के छठे भाग के बराबर होता है।
लिखत—स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखने की क्रिया या भाव। २ लिखे हुए होने की अवस्था या भाव।
मुहा०—लिखत पढ़त होना=लिखा-पढ़ी मे होना।
३. वह दस्तावेज जो विधिक दृष्टि से प्रामाणिक माना जा सकता हो। आपस मे की हुई लिखा-पढ़ी। (इस्ट्रूमेंट)। ५ भाग्य का लेख।
अव्य०=लिखित।
लिखतम—स्त्री० [हिं० लिखना] १ लिखावट। २. लिखा-पढ़ी।
उदा०—इनकी लिखतम का, इनकी बात का कोई भरोसा नहीं। वृन्दावनलाल वर्मा।
लिखधार—वि० [हिं० लिखना+धार (प्रत्य०)] लिखनेवाला।
पुं० मुहर्रिर। लेखक।
लिखन—स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखने की क्रिया या भाव। २. लेख। ३. लिखावट। ४ भाग्य का लेख। ५. दे० 'लिखत'।
लिखना—स० [सं० लिखन] १. किसी तल पर वर्ण, रेखाएँ, फूल, पत्तियाँ आदि अंकित करना। २. कलम, पेंसिल आदि की सहायता से कागज, दफ्ती आदि पर कोई बात, लेख या विचार अक्षरो या वर्णो के द्वारा अंकित करना। लिपिबद्ध करना।
मुहा०—(किसी के) नाम लिखना=यह लिखना कि अमुक वस्तु या रकम अमुक व्यक्ति के जिम्मे है।
पद—लिखा-पढ़ी=शिक्षित व्यक्ति।
३. किसी साहित्यिक-कृति की रचना करना।
४ कूँची आदि की सहायता से चित्र विशेषत रंग-चित्र बनाना।
उदा०—लिखित सुधाकर लिखि गा राहू।—तुलसी।
लिखनी—स्त्री०=लेखनी (कलम)।
लिखवाई—स्त्री० [हिं० लिखवाना] लिखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
लिखवाना—स० [हिं० लिखना] किसी दूसरे को लिखने मे प्रवृत्त करना। लिखने का काम किसी से कराना।
लिखवार—वि० [हिं० लिखना] लिखनेवाला।
पुं० लेखक।
लिखहार—वि० [हिं० लिखना+हार (प्रत्य०)] १ लिखनेवाला। लेखक। २. हिसाब-किताब या लेखा रखनेवाला।
लिखा—पुं० [हिं० लिखना] वह जो कुछ लिखित रूप मे हो। जैसे—भाग्य मे लिखा।
वि० जिसे लिखना आता हो। जैसे—पढ़ा-लिखा।
लिखाई—स्त्री० [हिं० लिखना] १ लिखने की क्रिया, ढंग या भाव।
पद—लिखाई-पढ़ाई=लिखने-पढ़ने आदि की शिक्षा।
२. लिखी हुई लिपि और उसकी बनावट। ३ चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव। ४ चित्र-कला मे कोई विशिष्ट परिरूप या तरह अंकित करने की क्रिया या भाव। जैसे—कमखाब की लिखाई=भूमिका आदि का ऐसा अंकन जो देखने मे कमखाब की तरह जान पड़े।
लिखाना—स० [हिं० लिखना] १ किसी को कुछ लिखने मे प्रवृत्त

करना। लिखने का काम कराना। २. किसी को लिखना सिखलाना। अथवा लिखने का अभ्यास कराना।

लिखा-पढ़ी—स्त्री० [हिं० लिखना+पढना] १ लिखने और पढने की क्रिया या भाव। २. पत्रो का आना और उनके उत्तर जाना। पत्र-व्यवहार। ३. अनुबन्ध, संधि, समझौते आदि की शर्तो का लिखा हुआ होना।

लिखावट—स्त्री० [हिं० लिखना+आवट (प्रत्य०)] १. लिखने का प्रकार या ढंग। २ किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर। हस्ताक्षर। (हैंड-राइटिंग)

लिखित—अव्य० [स०] एक पद जिसका प्रयोग हस्तलिखित ग्रन्थो के अंत मे या चित्रो के नीचे उनके लेखक या चित्रकार के नाम के पहले उनका कर्तृत्व सूचित करने के लिए होता था।

लिखित—भू० कृ० [स० लिख् (लिखना)+क्त] १. लिखा हुआ। लिपिबद्ध किया हुआ। अंकित। २ जो लेख या लेख्य के रूप मे हो। लेख्य। (डाक्यूमेंट्स)

पुं० १. लिखी हुई बात। लेख। २. लिखा हुआ प्रमाण पत्र। सनद।

लिखितक—पु० [स० लिखित] एक प्रकार की प्राचीन लिपि जिसके अक्षर चौकोर होते थे। इसके लेख खुतन (मध्य एशिया) मे पाये गये शिला लेखो मे मिलते हैं।

लिखिमी—स्त्री०=लक्ष्मी।

लिखेरा—वि०=लिखनेवाला।

लिगदी—स्त्री० [देश०] कमजोर छोटी घोडी।

लिचेन—पु० [देश०] एक प्रकार की घास जो पानी मे होती है।

लिच्चड—वि०=लीचड।

लिच्छिवि—पु० [स०] २००० वर्ष पूर्व का एक प्राचीन भारतीय राज-वंश जिसका मगध, नैपाल, कोशल आदि पर शासन था।

लिटाना—स०=लेटना।

लिटोरा—पु०=लसोडा।

लिट्ट—पु० [हिं० लिट्टी का पु० रूप] बडी लिट्टी। (पकवान)

लिट्टी—स्त्री० [देश०] टिकिया के आकार की वह गोल छोटी रोटी जो आग पर आटे के पेडे को सेंकने से तैयार होती है।

लिठोर—पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन पकवान।

लिड़बिडा—वि० [देश०] १ कमजोर। २ नपुसक।

लिडार—पु० [देश०] शृगाल। गीदड़।

वि० कायर। डरपोक।

लिडौरी—स्त्री० [देश०] वे दाने हो दँवरी के बाद की बालो मे लगे रह जाते है।

लिपटना—अ० [स० लिप्त] १ किसी चीज का दूसरी चीज के चारो ओर घूमते हुए उसके साथ इस प्रकार लगना कि सहसा दोनो अलग न हो सकें। जैसे—लता का वृक्ष मे लिपटना। २. एक चीज का दूसरी चीज पर इस प्रकार लगना, सटना या सलग्न होना कि जल्दी दोनो अलग न हो सके। जैसे—(क) पुत्र का पिता के गले से लिपटना। (ख) पैरो मे कीचड लिपटना। ३. अपनी सारी शक्ति लगाते हुए किसी काम मे प्रवृत्त होना। जैसे—चारो आदमी लिपट जाओ तो सन्ध्या तक यह काम पूरा हो जाय। ४. किसी काम, चीज या बात मे इस प्रकार उल-झना या फँसना कि जल्दी छुटकारा न हो सके। जैसे—अभी तो ये अपने मुकदमे मे ही लिपटे हुए हैं। ५ किसी रूप मे लपेटा हुआ होना। जैसे—कागज मे लिपटे हुए रुपए रखे है। ६. किसी के साथ झगडा या तकरार करने मे प्रवृत्त होना। उलझना। जैसे—झगडा तो तुम्हारा उनसे है, मुझसे क्यो व्यर्थ लिपटते हो।

संयो० क्रि०—जाना।

लिपटाना—स० [हिं० लिपटाना का स०] १. एक वस्तु को दूसरी के चारो ओर लपेटना। २. संलग्न करना। सटाना। परिवृत करना। ३. आलिगन करना। गले लगाना।

अ०=लिपटना। उदा०—जिमि जीवहि माया लिपटानी।—तुलसी।

लिपड़ा—वि० [हिं० लेप] लेई की तरह गीला और चिपचिपा।

पु०=लुगडा (फटा पुराना कपडा।)

लिपड़ी—स्त्री०=लिबड़ी।

लिपना—अ० [हिं० लीपना का अ०] १ लेप से युक्त होना। २. लेपा जाना। ३. किसी गाढी चीज का किसी तल पर अव्यवस्थित रूप मे लगकर फैलना।

संयो० क्रि०—जाना।

लिपवाना—स० [हिं० लीपना] लीपने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को लीपने मे प्रवृत्त करना।

लिपाई—स्त्री० [हिं० लिपना] लिपाने या लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। पोताई।

लिपाना—स०=लिपवाना।

लिपि—स्त्री० [स० लिप् (लीपना)+इन्, कित्व] १ लेप करने की क्रिया या भाव। लीपना। २. लिखने की क्रिया या भाव। ३ किसी लघुतम ध्वनि का सूचक अक्षर। जैसे—क्, ख्, ग् आदि। ४ किसी भाषा के लघुतम ध्वनि-अक्षरो का समूह जो लिखने मे प्रयुक्त होते हो।

लिपिक—पु० [स० लिपिकार] वह जो किसी कार्यालय मे पत्रो की प्रतिलिपियाँ या साधारण पत्र आदि लिखता हो। मुहर्रिर। लेखक। (क्लर्क)

लिपिकर—पु० [स० लिपि√कृ+ट] १. प्राचीन भारत मे, वह शिल्पी जो शिलाओं आदि पर लेख अंकित करता या उकेरता था। २ दे० 'लिपिक'।

लिपिका—स्त्री० [स० लिपि+कन्+टाप्] लिपि। लिखावट।

लिपिकार—पु० [स० लिपि√कृ+ अण्] लिखनेवाला। लेखक। लिपिक।

लिपि-काल—पु० [स० ष० त०] किसी ग्रंथ या लेख का वह समय (सन् या संवत्) जब कि वह लिखा गया हो।

लिपि-फलक—पु० [स० ष० त०] काठ, धातु, पत्थर आदि का वह टुकडा या फलक जिस पर कोई लिपि या लेख अंकित किया गया हो।

लिपि-बद्ध—भू० कृ० [स० तृ० त०] [भाव० लिपिबद्धता] १. लिपि या लेख के रूप मे लाया हुआ। लिखित। २. (कथन या बात) जिसकी लिखा-पढ़ी हो चुकी हो।

लिपी—स्त्री० [स० लिपि+ङीप्]=लिपि।

लिप्त—वि० [स०√लिप्+क्त] १. (पदार्थ) जिस पर लेप हुआ हो। २. (पदार्थ) जिससे लेप किया गया हो। पोता हुआ। ३. जो किसी के साथ इस प्रकार लगा हो कि जल्दी उससे अलग न हो सके। जैसे—भोग मे लिप्त होना।

लिप्तक—वि० [सं० लिप्त+कन्] विप मे बुझाया हुआ।
पु० विप मे बुझाया हुआ। वाण।

लिप्ता—स्त्री० [स० लिप्त+टाप्] १ ज्योतिप के अनुसार काल का एक मान जो प्राय. एक मिनट के वरावर होता है। २. अश का साठवाँ भाग।

लिप्तिका—स्त्री०=लिप्ता।

लिप्सा—स्त्री० [स०√लभ् (प्राप्ति)+सन्, द्वित्व,+अ+टाप्] प्राप्ति की इच्छा। पाने की चाह।

लिप्सित—भू० कृ० [स०√लभ्+सन्, द्वित्वादि+क्त] चाहा हुआ।

लिप्सु—वि० [स०√लभ्+सन्, द्वित्व+उ] लिप्सा करने या चाहनेवाला। इच्छुक।

लिफाफ़ा—पु० [अ०] १. कागज की बनी हुई वह प्रसिद्ध चौकोर थैली जिसके अन्दर चिट्ठी या कागज-पत्र रखकर कही भेजे जाते है। जैसे—लिफाफे मे वद करके पत्र डाकखाने मे छोड देना। २ किसी प्रकार का ऊपरी आवरण, विशेपत. ऐसा आवरण जो दोप या वास्तविक स्थिति छिपाने के लिए प्रयुक्त होता हो।
मुहा०—**लिफाफा खुल जाना**=भेद या रहस्य खुल जाना। छिपी हुई वात प्रकट हो जाना।
३ शरीर पर धारण किये जानेवाले अच्छे कपडे। (वाजारू) ४. झूठी तडक-भडक। आडम्वर।
मुहा०—**लिफाफा वनाना**=झूठा आडम्वर खडा करना।
५ जल्दी नष्ट हो जानेवाली और दिखावटी चीज। काजू-भोजू चीज। जैसे—यह खाली लिफाफा ही है। (अर्थात् इसमे तत्त्व या वास्तविकता वहुत कम है।)

लिफाफिया—वि० [हिं० लिफाफा] जो ऊपर से देखने भर को अच्छा या भव्य हो, पर अन्दर से थोथा या सारहीन हो।

लिवड़ना—अ० [अनु०] कपडे, हाथ आदि से किसी गीली चीज का चिपकना या लगना। जैसे—उँगलियो मे आटा या पैरो मे कीचड लिवडना।
स० लथ-पथ करना। अव्यवस्थित रूप से पोतना या लगाना।

लिवड़ी—स्त्री० [अ० लिवरी] १ कपडा-लत्ता। २ छोटा-मोटा सामान।

लिवड़ी-वतान—पु० [अ० लिवरी+वर्दी+,वटन=सिपाहियो का डडा] घर-गृहस्थी का सामान। (उपेक्षा और तुच्छता का सूचक)

लिवरल—वि० [अ०] उदार नीतिवाला।
पु०कोई ऐसा राजनीतिक दल जिसके विचार अपेक्षया अधिक उदार हो।

लिवलिवी—स्त्री० [अनु०] १ यत्रो आदि मे कोई ऐसा खटका जिसे खीचने या दवाने से कोई कमानी निकलती हो या कोई पुरजा चलता हो। २ तमचे, पिस्तौल, वदूक आदि मे नीचे की तरफ का वह खटका या सिटकिनी जिसे खीचने से घोडा गिरता और उसके आगे की गोली निकलकर निशाने की तरफ वढ़ती हो। (ट्रिगर)

लिवास—पु० [अ०] शरीर पर पहनने के कपडे। पोशाक।

लियाकत—स्त्री० [अ०] १. लायक होने की अवस्था या भाव। योग्यता। २. व्यक्तियो मे होनेवाला किसी तरह का गुण या योग्यता। ३ शक्ति या सामर्थ्य। ४. व्यवहार आदि की भद्रता। शालीनता।

लिलकना—अ०=ललकना।

लिलाट—पु०=ललाट।

लिलार—पु० [स० ललाट] १ कूएँ का वह सिरा जहाँ मोट का पानी उलटते है। २. दे० 'ललाट'।

लिलारी—पु० [हिं० नील, लील+कार] रँगरेज।

लिलाही—पु० [देश०] हाथ का वटा हुआ देशी सूत।

लिलोहा—वि० [स० लाल=चहकना।] लालची। लोभी।

लिव—स्त्री०=लौ (लगन)।

लिवाना—स० [हिं० लाना का प्रे०] १ आते समय किसी को अपने साथ लेते आना। २ उठा कर कोई चीज किसी के यहाँ ले जाना।
स० [हिं० लेना का प्रे०] १ लेने का काम दूसरे से कराना। ग्रहण कराना। २ थमाना। पकडना।
सयो० क्रि०—देना।

लिवाल—पु०=लेवाल।

लिवैया—पु० [हिं० लेना] कोई चीज लेने विशेपत. खरीद कर लेनेवाला व्यक्ति।
वि० [हिं० लिवाना] लिवानेवाला।

लिशकना—अ० [अनु०] वहुत तेजी से चमकना। (पश्चिम) जैसे—तलवार लिशकना, विजली लिशकना। उदा०—वह खजर इस तरह लिशक रहा था कि मै आपसे क्या कहूँ।—सआदत हसन मन्टो।

लिशकाना—स० [अनु०] तेज चमक निकालना। खूब चमकाना। (पश्चिम)

लिसना—अ०=लसना। उदा०—ता मधि माथे मे हीरा गुह्यो। सु गई गडि केसन की छवि सो लिसि।—देव।

लिसान—स्त्री० [अ०] जीभ। जवान। वोली।

लिसोड़ा—पु० [हिं० लस=चिपचिपा गूदा] १ मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड़ जिसके पत्ते वीडियाँ वनाने के काम आते है। २ उक्त वृक्ष का फल जो प्राय छोटे वेर के वरावर होता और खाँसी, दमे आदि रोगो मे गुणकारी माना जाता है। लभरा। लिटोरा। लसोड़ा

लिस्ट—स्त्री० [अ०] सूची।

लिह—वि० [स०√लिह् (आस्वादन)+क] चाटनेवाला। (वहुधा समस्त पदो के अन्त मे प्रयुक्त)

लिहना—स०=लिखना।
†स०=लेना।

लिहाज—पु० [अ० लिहाज़] १. व्यवहार या वरताव मे किसी वात या व्यक्ति का आदरपूर्वक रखा जानेवाला ध्यान। जैसे—वडो का लिहाज करना सीखो। २. किसी वात का किसी रूप मे रखा जानेवाला ध्यान। जैसे—(क) इस नुस्खे मे खाँसी का भी लिहाज रखा गया है। (ख) मैंने उसकी गरीवी का लिहाज करके उसे छोड दिया। ३. शील, सकोच आदि के विचार से रखा जानेवाला ध्यान? जैसे—

काम-बिगड जाने पर वह किसी का लिहाज न करेगा, सबको निकाल देगा। ३ तरफदारी। पक्षपात। ५ लज्जा। शर्म। हया।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

लिहाजा—अव्य० [अ०] अत। इसलिए।—

लिहाड़ा—वि० [देश०] १. वेहूदा और वाहियात। (व्यक्ति) २. निकम्मा या निरर्थक (पदार्थ)।

लिहाड़ी—स्त्री० [देश०] किसी को वहुतो मे उपहासास्पद सिद्ध करने के लिए किया जानेवाला मजाक।

मुहा०—(किसी की) लिहाड़ी लेना=किसी को तुच्छ या निन्दनीय ठहराते हुए उसका उपहास करना।

लिहाफ—पु० [अ० लिहाफ] जाड़े के दिनो मे सोते समय ओढने की रूईदार भारी या मोटी रजाई।

लिहित—वि० [स० लीढ] चाटा हुआ।

लीक—स्त्री० [स० लिख्] १ लबी, पतली रेखा के रूप मे बना हुआ अथवा बनाया हुआ चिह्न। लकीर। जैसे—(क) गिनती या सख्या सूचित करने के लिए खीची जानेवाली लीक। उदा०—भट मंह प्रथम लीक जग जासू।—तुलसी। (ख) कच्ची जमीन पर आने-जानेवाली बैलगाडियो के पहियो के कारण बनी हुई लीक। (ख) खेतो, जगलो आदि मे आदमियो के आने-जाने के कारण पग-डडियो के रूप मे बनी हुई लीक। उदा०—लीक लीक गाडी चलै लीकै चलै कपूत।

मुहा०—लीक करना या खींचना=प्राचीन परम्परा के अनुसार किसी प्रकार की प्रतिज्ञा करने अथवा अपने कथन की दृढता या पुष्टि सूचित करने के लिए जमीन पर तर्जनी उँगली आदि से छोटी सीधी रेखा खीचना या बनाना। **लीक पकडना**=आदमियो, गाडियो आदि के आने-जाने से बनी हुई लीक पर चलते हुए कही जाना। जैसे—यही लीक पकडकर सीधे चले जाओ।

२ आचरण या लोक-व्यवहार के क्षेत्र मे, बहुत दिनो से चली आई हुई कोई परम्परा, रीति या विधि जो कुछ प्रसंगो मे तो प्रतिष्ठा या मर्यादा की सूचक होती है और कुछ प्रसगो मे त्याज्य तथा निदनीय भी मानी जाती है। उदा०—(क) नन्द-नदन के नेह-मेह जिन लोक-लीक लोपी।—सूर। (ख) अजहुँ गाव स्रुति चिन्ह कै लीका।—तुलसी।

मुहा०—लीक पीटना=(क) किसी पुरानी चली आई हुई निकम्मी प्रथा या रीति का बिना सोचे-समझे अनुकरण करते चलना। जैसे—अशिक्षित, गँवार आदि अब भी ब्याह-शादी मे वही पुरानी लीक पीटते चलते हैं। (ख) कोई दुर्घटना या हानि हो चुकने के उपरान्त उसके अवशिष्ट चिह्नो आदि पर अपना रोष प्रकट करना। जैसे—साँप तो चला गया, अब लीक पीटने से क्या होगा। **लीक लीक चलना**=पुरानी परिपाटी या प्रथा का पालन करना। उदा०—लीक लीक गाडी चलै लीकै चलै कपूत।

३. किसी काम या बात के सबध मे नियत की हुई मर्यादा। सीमा। हद। ४ दुष्कर्म, दुर्नाम आदि का सूचक चिह्न। कलक की रेखा। लाछन। उदा०—तिहिं देखत मेरो पट काढ़त, लीक लगी तुम काज।—सूर।

क्रि प्र०—लगना।

स्त्री० [देश०] मटियाले रग की एक चिड़िया जो बत्तख से कुछ छोटी होती है।

लीकति—स्त्री०=लीक।

लीख—स्त्री० [स० लिक्षा] जूँ का अंडा।

लीग—स्त्री० [अ०] १. जातियो, देशों राष्ट्रो आदि के योग से बनी हुई ऐसी सभा या सस्था जो सबके सामूहिक कल्याण का ध्यान रखती हो। जैसे—लीग ऑफ नेशन, मुस्लिम लीग आदि। २. भारतीय राजनीति मे, मुस्लिम लीग जिसके आदोलन से भारत का बँटवारा और पाकिस्तान की स्थापना हुई थी। ३. दूरी की एक नाप जो स्थल मे प्राय तीन मील और समुद्र मे प्राय. साढे तीन मील लबी होती है।

लीग ऑफ नेशन्स—स्त्री० दे० 'राष्ट्र-सघ'।

लीगी—वि० [अ० लीग] १ किसी लीग का सदस्य। २. भारतीय राजनीति मे मुसलिम लीग का अनुयायी या सदस्य।

लीचड़—वि० [देश०] १. जो कोई काम जल्दी-जल्दी तथा ठीक समय पर न कर सकता हो। सुस्त। काहिल। २ निकम्मा। फालतू। ३. जल्दी पीछा न छोडनेवाला। ४ लेन-देन के व्यवहार के विचार से बहुत ही तुच्छ प्रकृति का।

लीची—स्त्री० [चीनी ली-चू] १. एक सदा बहार बडा पेड। २. इस पेड का फल जो खाने मे बहुत मीठा होता है। फल के छिलके के ऊपर कटावदार-दाने और अन्दर गूदे के सिवा मोटी गुठली होती है।

लीझा—वि० [देश०] [स्त्री० लीझी] १ नीरस। निस्सार। २. व्यर्थ का। निकम्मा। फालतू।

लीझी—स्त्री० [देश०] १. शरीर पर लगाये हुए उबटन को हथेली से रगडने पर छूटनेवाली मैल की बत्ती। २ सीठी। फोक।

लीडर—पु० [अं०]=नेता।

लीडरी—स्त्री० [अ० लीडर से] नेतृत्व। (परिहास और व्यग्य।)

लीढ—भू० कृ० [सं०√लिह् (आस्वादन)+क्त] चाटा या खाया हुआ। चखा हुआ। आस्वादित।

लीतड़ा—पु० [हिं० चिथडा] फटा हुआ पुराना जूता।

लीथो—पु० [अ०] चित्रो, पुस्तको आदि की छपाई का वह प्रकार जिसमे छापी जानेवाली चीज, चित्र या लेख पहले हाथ से कागज पर अकित करते या लिखते हैं और तब उसकी प्रतिकृति एक विशेष प्रकार के पत्थर पर उतार कर छापते हैं। पत्थर का छापा।

लीथोग्राफ—पु० [अं०] लीथो की छपाई।

लीद—स्त्री० [कश्मीरी लेद] ऊँट, गधे, घोड़े, हाथी आदि पशुओ का मल।

लीन—वि० [स०√ली (लय)+क्त, त—न] [भाव० लीनता] १. जिसका लय हो चुका हो। जो किसी मे समा गया हो। २. जो किसी काम मे इस प्रकार लगा हुआ हो कि उसे और कामो या बातो का ध्यान या चिन्ता न रहे। ३ अधिकार या सुभीता जो नियत अवधि तक उपयोग मे न आने के कारण हाथ से निकल गया हो। (लैप्स्ड)

लीनता—स्त्री० [सं० लीन+तल्+टाप्] १ लीन होने की अवस्था या भाव। २ जैनो मे, वह अवस्था जब वे उदासीनतापूर्वक रहते हैं।

लीनो टाइप मशीन—स्त्री० [अ०] छापे के अक्षर बैठाने का एक प्रकार का यन्त्र।

लीन्हें—अव्य० [हिं० लीन्ह=लिया] १ लिए। वास्ते। २. चक्कर या फेर मे पडकर। उदा०—कचन मनि तजि काँचहि सैतत या माया के लीन्हे।—सूर।

लीपना—स० [स० लेपन] १ किसी चीज पर गाढे या पतले तरल पदार्थ का लेप करना। जैसे—जमीन पर गोवर लीपना। २. लिखे हुए गीले अक्षरो की स्याही को कागज, पट्टी आदि पर इस प्रकार फैलाना कि वह गदी हो जाय। ३ चौपट या वरवाद करना।

मुहा०—लीप-पोत कर वरावर करना=पूरी तरह से चौपट या नष्ट करना।

लीपा-पोती—स्त्री० [हिं०] १. गोवर आदि से जमीन, दीवार आदि लीपने या पोतने की क्रिया या भाव। २ किसी के कुकर्म या दुष्कर्म के लिए उसे दण्ड न देकर ऐसी कार्रवाई करना कि वह दण्ड का भागी ही न रह जाय। ३ करा-धरा काम चौपट या नष्ट करना।

लीवर—वि० [?] १. मैल, कीचड आदि से भरा हुआ।
पु० १. गदगी। मैलापन। २ कीचड। ३ आँखो का कीचड़।

लीम—पु० [देश०] १ एक प्रकार का चीड जिसमे से तारपीन या अलकतरा निकलता हो। २ एक प्रकार का पक्षी।

लीर—स्त्री० [?] १ किसी कपडे मे से निकाली हुई पट्टी या धज्जी। २ फटे हुए या रद्दी कपडे का छोटा टुकडा। ३. चिथड़ा

लील—पु० [स० नील] १. नील। २ नीले रग का घोडा।
वि० नीला।
विशेष—'लील' के यौ० के लिए दे० 'नील' के यौ०।
पु० [हिं० लीलना] लीलने की क्रिया या भाव।

लीलक—पु० [हिं० लील] वह हरा चमडा जो देशी जूतो की नोक पर लगाया जाता है।
वि० नीला।

लीलना—स० [स० गिलन या लीन] १ निगलना। २. किसी की सम्पत्ति आदि पूरी तरह से हडप कर जाना।
संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

लीलम†—पु०=नीलम।

लीलया—क्रि० वि० [सं० लील शब्द का तृतीयान्त रूप] १ लीला के रूप मे। २ खेल या खेलवाड के रूप मे। ३. विना किसी परिश्रम के। वहुत ही सहज मे। अनायास।

लीलहिं—क्रि० वि०=लीलया। उदा०—लीलहि नाघऊँ जलनिधि खारा।—तुलसी।

लीला—स्त्री० [स०√ली (लय)+क्विप्, ली√ला (आदान)+क+टाप्] १. कोई ऐसा काम या व्यवहार जो चित्त की उमग से केवल मनोरजन के लिए किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। जैसे—वाल-लीला। २ लडको का खेलवाड। ३ लडको के खेलवाड की तरह का वहुत ही साधारण या सुगम काम। ४. किसी प्रकार के विलास की इच्छा और उसके फल-स्वरूप किये जानेवाला अनेक प्रकार के आचरण, कार्य या व्यवहार। जैसे—यह सव ईश्वर की लीला है।

विशेष—दार्शनिक क्षेत्रो मे माना जाता है कि लीला ऐसी वृत्ति या व्यापार है जिसका आनन्द-प्राप्ति के सिवा और कोई अभिप्राय या उद्देश्य नही होता। इसीलिए कहते हैं—सृष्टि और प्रलय सव ईश्वर की लीला ही है। अवतार धारण करने पर इस लोक में आकर भगवान जो कृत्य करते है, उन सव की गिनती भी भक्ति-मार्ग मे लीलाओं मे ही होती है।

५ लोक-व्यवहार में वे सव कृत्य जो भगवान के किसी अवतार के कार्यो के अनुकरण पर अभिनय या नाटक के रूप में लोगो को दिखाये जाते हैं। जैसे—कृष्ण-लीला, राम-लीला आदि। ६. उक्त प्रकार के अभिनय का कोई ऐसा अग या अंश जो इकाई के रूप मे अभिनीत होता है। जैसे—गो-चरण लीला, चीर हरण लीला, धनुष-यज्ञ लीला आदि। ७. शृगारिक क्षेत्र मे नायिकाओं का एक हाव जिसमे वे मधुर आंगिक चेष्टाओ के द्वारा नायक की वात-चीत, वेष-भूषा आदि का अनुकरण या नकल करती हैं। जैसे—(क) गोपी का कृष्ण-वेष धारण करके वशी वजाना। (ख) पत्नी का अपने पति के वेष मे कुरसी पर बैठना आदि।

विशेष—साहित्य शास्त्र मे इसकी गिनती नायिका के दस स्वभावज अलकारो मे की गई है।

८. कोई अद्भुत या रहस्यपूर्ण काम या व्यापार। उदा०—छाया-पथ मे तारक द्युति सी मिल मिल की मृदु लीला।—प्रसाद। ९ कोई ऐसा काम, चीज या वात जो वास्तविक के अनुकरण पर केवल मनोविनोद के लिए वना हो या होता है। (यौ० के आरम्भ मे) जैसे—लीलाकलह, लीलाभरण लीलालघु। (दे०) १०. वारह मात्राओ का एक प्रकार का छद जिसके अंत मे एक जगण होता है। ११. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, नगण और एक गुरु होता है। १२ चौवीस मात्राओं का एक प्रकार का छद जिसमे ७+७+७+३ के विराम से २४ मात्राएँ और अत मे सगण होता है। १३ विशेषक नामक छद का दूसरा नाम।
†वि० [स्त्री० लीली]=नीला।
†पु० नीले या काले रग का घोडा।

लीला-कलह—पु० [सं० च० त०] वह कलह या लडाई-झगडा जो वास्तविक न हो वल्कि केवल दूसरो को दिखाने के लिए या वनावटी हो। जैसे—चाणक्य ने एक वार चन्द्रगुप्त के साथ लीला-कलह का आयोजन किया था।

लीला-पुरुषोत्तम—पु० [स० मध्य० स०] श्रीकृष्ण।

लीला-भरण—पु० [सं० लीला-आभरण, च० स०] केवल क्रीडा या मनोविनोद के लिए वनाया हुआ किसी चीज का आभूषण। जैसे—फूलो का कगन, फूलो की टोपी या मुकुट।

लीलामय—वि० [स० लीला+मयट्] क्रीडा से भरा हुआ। क्रीड़ा-युक्त। जैसे—लीला-मय भगवान।

लीलायुध—पु० [स० लीला+आयुध, च० त०] ऐसा आयुध जो वास्तविक न हो, वल्कि खेल या खिलवाड के लिए हो।

लीलावतार—पु० सं० लीला-अवतार, च० त०] भगवान के वे सव अवतार जो इस पृथ्वी पर अव तक हुए है, और जिनमे उन्होंने अनेक प्रकार की लीलाएँ की हैं। इनकी सख्या २४ मानी जाती है।

लीलावती—स्त्री० [सं० लीला+मतुप्+ङीप्] १. लीला या क्रीडा करनेवाली। विलासवती। २. प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। पीछे भास्कराचार्य ने भी इस नाम की एक पुस्तक बनाई थी। ३. संपूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत) ४. ३२ मात्राओं का एक प्रकार का छंद, जिसमे लघु-गुरु का विचार नहीं होता।

लीलावान् (वत्)—वि० [सं० लीला+मतुप्] १. क्रीडाशील। २. बहुत ही रमणीय तथा सुन्दर।

लीला-स्थल—पु० [सं० ष० त०] लीला या क्रीडा करने का स्थान।

लीलैव—क्रि० वि० [सं० लीला-एव] लीला करते हुए अर्थात् खेलवाड में ही। बहुत सहज रूप मे। उदा०—लीलैव हर को धनु साँध्यो।—केशव।

लीलोद्यान—पु० [सं० लीला-उद्यान, च० त०] १. वह उद्यान या स्थान जहाँ रामलीला होती हो। २. क्रीडा-क्षेत्र।

लीवर—पुं० [अं०] १. यत्रों मे लगा हुआ कोई ऐसा खटका जिसके आघात से कोई पुरजा चलता हो अथवा किसी प्रकार की कोई और क्रिया होती हो। २. पेट के अन्दर का तिल्ली या यकृत् नामक अंग। मुहा०—लीवर होना या बढना=यकृत में सूजन आना जो रोग माना जाता है।

लीह—स्त्री० [हिं० लीक] १. रेखा। लकीर। २. चिह्न, निशान। ३. लकीर की तरह का बना हुआ छोटा पतला और लम्बा रास्ता लीक।

लुंगा—पुं० [देश०] पजाब मे धान रोपने की एक रीति। माय।
†पुं०=लुँगाड़ा (लुच्चा)।

लुँगाड़ा—पु० [देश०] १ लुच्चा। २ आवारा और बदचलन।

लुंगी—स्त्री० [हिं० लंगोट या लांग] १. टखनों तक लटकती हुई कमर में बाँधी जानेवाली ढाई गज लंबी छोटी धोती या बडा अँगोछा। तहमत। २ कपडे का टुकडा जो हजामत बनाते समय नाई इसलिए पैर पर आगे डाल देता है जिसमे बाल उसी पर गिरे। ३. खारुआ नामक लाल कपड़ा।
स्त्री० [?] मोर की तरह का एक पहाडी पक्षी।

लुंचन—पु० [सं०√लुंच् (उखाडना)+ल्युट्—अन] १. चुटकी से पकड कर झटके के साथ उखाडना। नोचना। उत्पाटन। जैसे—केश-लुंचन। २ जैन यतियो की एक क्रिया जिसमे उनके सिर के बाल चुटकी मे पकडकर नोचे जाते हैं। ३. काटना। तराशना।

लुंचित—भू० कृ० [सं०√लुंच+क्त] नोचा, उखाडा, काटा या छीला हुआ

लुंचित-केश—पुं० [सं० ब० स०] जैन यति या साधु जिनके सिर के बाल नोच लिये गये होते हैं।
वि० जिनके सिर के बाल नोचे हुए हों।

लुंज—वि० [सं० लुंचन=काटना, उखाडना] १. बिना हाथ पैर का। लँगड़ा। लूला। २. लाक्षणिक अर्थ मे ऐसा व्यक्ति जो कोई काम-धाम न करता हो बल्कि यों ही बैठा रहता हो। ३. (वृक्ष) जिसके पत्ते, डालियाँ आदि काट ली गई हों।

लुंजा—वि०=लुंज।

लुंठक—पु० [सं०√लुंठ् (स्तेय)+ण्वुल्—अक] लुटेरा।

लुंठन—पु० [सं०√लुंठ्+ल्युट—अन] १ लूटना। २ लुढ़कना।
वि०=लुंठित।

लुंठा—स्त्री० [सं०√लुंठ्+अ+टाप्]=लुंठन (लूट)।

लुंठित—वि० [सं०√लुंठ्+क्त] १. लूटा या चुराया हुआ (माल)। २. लूटा हुआ (व्यक्ति)। ३. लुढ़का हुआ।

लुंठी—स्त्री० [सं०√लुंठ्+इन्+ङीप्] गधे या घोड़े का जमीन पर लेटना।

लुंट—पु० [सं०√लुंट् (स्तेय)+अच्] चोर।
†पुं०=रुंड।

लुंड-मुंड—वि० [सं० रुंड+मुंड] १. जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों, केवल धड का लोथडा रह गया हो। २. जिसके हाथ-पैर कटे हों। लँगडा या लूला। ३. जिसके आवश्यक या उपयोगी अंग कट गये हों। ४. गठरी आदि की तरह गोल-मोल किया हुआ।

लुंडा—वि० [सं० रुंड] [स्त्री० अल्पा० लुंडी] १. जिसकी पूँछ पर बाल न हों (बैल)। २ जिसके पर और पूँछ के बाल टूट कर या झड गये हों। (पक्षी)
पुं० [हिं० लुंडी] बडा लुंडा या गोला।

लुंडिका—स्त्री० [सं०√लुंड+इन्+कन्+टाप्] गोल पिंड। लुंडी।

लुंडियाना—स० [हिं० लुंडी] सूत, रस्सी आदि को लुंडी या गोले के रूप मे लपेटना। लुंडी के रूप मे लाना।

लुंडी—स्त्री० [सं० लुंडिका] लपेटे हुए सूत की गोलाकार पिंडी।

लुंबिनी—स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन या उपवन जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।

लुआठा—पुं० [सं० लोक=चमकना, प्रज्वलित होना+काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] वह लंबी पतली लकड़ी जिसका एक सिरा जल रहा हो।

लुआब—पु० [अ०] चिपचिपा अंश। लासायुक्त अंश।

लुआर—स्त्री०=लू।

लुपाजन|—पुं०=लोपाजन

लुकंवर—वि० [हिं० लुकना] १. (वह) जो लुक-छिप जाता हो। २. फलत. सामना या मुकाबला न करने वाला। भग्गू।

लुक—पुं० [सं० लोक=चमकना] १. वह लेप जिसे फेरने से वस्तुओं पर चमक आ जाती है। चमकदार रोगन। वार्निश।
क्रि० प्र०—फेरना।
२. आग की लपक। ज्वाला। लौ।

लुकना—अ० [सं० लुक=लोप] ऐसी जगह जाकर रहना जहाँ कोई देख न सके। आड़ मे होना। छिपना।
संयो० क्रि०—जाना।—रहना।
पद—लुक-छिपकर=ऐसे प्रकार से या रूप मे जिसमे लोग देख न सकें। चोरी से।

लुकमा—पु० [अ० लुक्मा] भोजन का इतना अंश जितना एक बार मुँह मे डाला या लिया जाय। कौर। ग्रास। निवाला।

लुकमान—पुं० [अ०] कुरान मे वर्णित एक हकीम जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध है।
लुकरी—स्त्री०=लुकारी।
लुकसाज—पु० [हिं० लुक=चमकीला+फा० साज] १ वह जो लुक अर्थात् चमकदार लेप बनाता या लगाता हो। २. एक प्रकार का चमड़ा जो सिझाया और चमकीला किया हुआ होता है।
लुका-छिपी—स्त्री० [हिं० लुकना+छिपना] १. लुकने-छिपने की क्रिया या भाव। २. लुकने-छिपने का बच्चो का एक खेल।
लुकाठ—पु० [चीनी लु.+क्यू से स० लकुट] १. एक प्रकार का पेड़ जिसके फल आमडे के बराबर और खाने मे खट्टे-मीठे होते हैं। २. उक्त फल।
लुकाना—स० [हिं० लुकना] [भाव० लुकाव] लुकने मे प्रवृत्त करना। छिपाना।
अ०=लुकना।
लुकारी—स्त्री० [हिं० लुक] १. फूस का पूला या लकडी जिसका एक छोर जलता हो। मशाल की तरह जलती हुई लकडी। २. अग्नि। आग।
लुकाव—पुं० [हिं० लुकाना] लुकाने की क्रिया या भाव।
लुकेठा—पु०=लुआठा।
लुकोना—स०=लुकाना।
लुक्का—पु०=लुक।
लुक्का—पु० [हिं० लुकना] लुक छिपकर दुष्कर्म करनेवाला या दुष्ट व्यक्ति। उदा०—हमने न मालूम तुम सरीखे कितने लुक्को को तो चुटकी से ही मसल दिया है।—वृन्दावनलाल वर्मा।
लुखिया—स्त्री० [?] १. धूर्त औरत। २ पुश्चली। ३. वेश्या। ४. कुलटा।
लुगड़ा—पु० [स्त्री० अल्पा० लुगडी]=लूगा (कपडा)।
लुगड़ी—स्त्री० [देश०] पीठ पीछे की जानेवाली निंदा। चुगली।
स्त्री० हिं० 'लुगाडा' का स्त्री०।
लुगत—स्त्री० [अ०] १. भापा। जवान। २. ऐसा शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट या प्रसिद्ध न हो। ३. शब्द कोश। अभिधान।
लुगदा—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लुगदी] गीले चूर्ण का पिंड या लौंद।
लुगरा—पुं०=लुगा (कपडा)।
लुगवी—वि० [अ०] १. लुगत-सम्बन्धी। शब्दकोश का। २. शब्द कोशो मे आया हुआ। कोश-गत। ३ (शब्द का अर्थ) जो मूल वास्तविक या व्युत्पत्तिक हो।
लुगाई—स्त्री० [हिं० लोग का स्त्री०]=औरत।
लुगात—स्त्री०[अ० लुगत का बहु०] शब्दो और उनके अर्थो का सग्रह। शब्द-कोश।
लुगी—स्त्री० [हिं० लूगा] १. छोटा कपडा। २ फटा पुराना कपडा। ३ लहँगे आदि का चौटा किनारा।
लुग्गा—पुं० दे० 'लूगा'।
लुघड़ना—अ०=लुढकना।
लुचकना—स० [स० लुचन] झटके के साथ छीनना।
सं० क्रि०—लेना।
लुचरी—स्त्री०=लुच्ची (मैंदे की पूरी)।
लुचवाना—स०=नोचवाना।
लुचुई—स्त्री०=लुच्ची (मैंदे की पूरी)।
लुच्चा—वि० [स० लुंचा, हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] १. दूसरे के हाथ से वस्तु लुचककर भागनेवाला। चाई। २. कमीना, दुष्ट और पाजी। ३. दुराचारी। लफंगा। शोहदा।
लुच्ची—स्त्री० [?] मैंदे की बनी हुई एक प्रकार की बहुत बड़ी तथा पतली पूरी।
वि० हिं० 'लुच्चा' का स्त्री० रूप।
लुज्जा—पुं० [देश०] समुद्र मे का गहरा स्थल। (लश०)
लुटत—स्त्री०=लूट।
लुटकना—अ० [हिं० लुढकना] १ लुढ़कना। २. मारा मारा फिरना। ३. इधर-उधर फेंका-पटका रहना।
लुटना—अ० [सं० लुट्=लुटना] १. (व्यक्ति या वस्तु का) लूट लिया जाना।
मुहा०—घर लुटना=घर की सब सामग्री का लूटा जाना या औरो के द्वारा अपहृत होना।
२. कोई अत्यन्त प्रिय और बहुमूल्य वस्तु छिन या हाथ से निकल जाना।
लुटपुटना—अ०=लटपटाना।
लुटरना—अ० [हिं० लोटना] १ लोटना। २ लुढकना। ३ बिखर कर इधर-उधर गिरना। छिटकना। छितराना।
लुटरा—वि० [स्त्री० लुटरी] घुंघराला। उदा०—लुटरी, खुली अलक, रज धूसर बाँहे आकर लिपट गई।—प्रसाद।
लुटाना—स० [हिं० लूटना का प्रे०] १. किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह लूटा जाय। २. अपनी चीज या माल इस प्रकार दूसरो के सामने करना या रखना कि वे मनमाने रूप से उस पर अधिकार कर सकें। जैसे—उन्होंने लाखो रुपए यो ही लुटा दिए। ३. बरबाद करना। व्यर्थ में फेंकना या व्यय करना। ४. बहुत ही थोड़े या नाम मात्र के मूल्य पर औरो को अपनी चीजें देना। सस्ते भाव से बेचना। ५. खुलकर बाँटना या दान करना।
लुटावना—स०=लुटाना।
लुटिया—स्त्री० [हिं० लोटा का स्त्री० अल्पा०] छोटा लोटा।
मुहा०—लुटिया डूबना=सारा काम नष्ट होना या बुरी तरह से विगड जाना।
लुटेरा—पु० [हिं० लूटना+एरा (प्रत्य०)] १ वह जो दूसरों की धन-सपत्ति लूटकर अपनी जीविका चलाता हो। डाकू। २ वह दूकानदार जो बहुत महँगा सौदा देता हो या डडी मारता हो।
लुट्टस—स्त्री०=लूट।
लुठन—पुं० [सं०]=लुठन।
लुठना—अ० १ =लुढना। २. =लोटना।
लुठाना—स० १. =लुढकाना। २. =लोटना।
लुड़कना—अ०=लुढकना।
लुड़काना—स०=लुढकना।
लुड़की—स्त्री०=लुटकी।

लुड़खुड़ाना—अ०=लडखडाना।

लुढ़कना—अ० [स० लुंठन, हिं० लुढना+क] १ सीधे खडे न रहकर जमीन पर गिरते हुए इस प्रकार किसी ओर इधर-उधर होते हुए बढना कि कभी कोई अग नीचे हो और कभी कोई अग ऊपर। ढुलकना। जैसे—(क) जमीन पर रखा हुआ लोटा लुढकना। (ख) पहाडी पर से आदमी या पत्थर का लुढ़ककर नीचे आना।

सयो० क्रि०—जाना।—पडना।

२. किसी ओर या पर झुकना। आकृष्ट होना। ३. मर जाना। जैसे—इस बार हैजे मे सैकड़ो आदमी लुढक गये। ३. धन का व्यर्थ व्यय होना। जैसे—जरा सी बीमारी मे सैकडो रुपये लुढक गये।

सयो० क्रि०—जाना।

लुढ़काना—स० [हिं० लुढकना का स०] किसी को लुढकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई लुढके।

सयो० क्रि०—देना।

लुढकी—स्त्री० [हिं० लुढकना] बहुत गाढे दही मे घोरी हुई भाँग।

†स्त्री०=लुरकी।

लुढना—अ०=लुढकना।

लुढ़ाना—स०=लुढकाना।

लुढ़ियाना—स० १.=लुंडियाना। २ =लुढकाना।

लुतरा—वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १ इधर की बात उधर लगानेवाला। २. चुगलखोर। ३ दुष्ट। पाजी।

लुत्ती—स्त्री०=लूती (लुआठी)।

लुत्थ—स्त्री०=लोथ।

लुत्फ—पु० [अ०] १. अनुग्रह। कृपा। दया। २ किसी काम या बात से मिलनेवाला आनन्द या सुख। मजा।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना।

मुहा०—लुत्फ उठाना=आनन्द या मजा लेना।

२ किसी चीज या बात मे होनेवाला कोई विशिष्ट और सुखद गुण। खास खूबी।

लुनना—स० [सं० लवन=काटना, लून=कटा हुआ,+ना] १. पकी खड़ी फसल की कटाई करना। लुनाई करना। २ चुनना। ३. काटकर या और किसी प्रकार अलग या दूर करना। हटाना। ४. नष्ट या बरबाद करना। उदा०—दीपक हजारन अँध्यार लुनियतु है।—देव।

लुनाई—स्त्री० [हिं० लुनना] लुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। [हिं० लोन=नोन] नमकीन। लावण्य।

लुनेरा—पु० [हिं० लुनना] खेत की फसल काटने या लुननेवाला मजदूर।

†पु०=नोनिया (जाति)।

लुपड़ी—स्त्री०=लुगडी।

लुपना—अ० [स० लुप] १ लुप्त या गायब होना। छिपना। लुकना।

लुप्त—भू० कृ० [स०√लुप् (छेदन)+क्त] १. जो अन्तर्हित हो गया हो या छिप गया हो। गायब। २. जो न रह गया हो। जिसका लोप हो गया हो।

पु० चोरी का धन या माल।

लुप्त मास—पुं० [सं०] हिंदू पचाग की चाद्र गणना मे वह मास जिसका सर्वथा लोप होता है और जिसका नाम ही पचाग मे नही आने पाता। क्षय मास से भिन्न।

विशेष—ऐसा मास बहुत कम और बहुत दिनो पर होता है।

लुप्ताकार—पु० [स० लुप्त-आकार, कर्म० स०] सस्कृत वर्णमाला का एक चिह्न जो आधे अ का सूचक होता है। इसका रूप यह है—ऽ।

लुप्तोपमा—स्त्री० [सं० लुप्ता-उपमा कर्म० स०] उपमा अलकार का वह प्रकार या भेद जिसमे उपमेय, उपमान, धर्म और उपमावाचक शब्द मे से कोई एक नही होता।

लुबधना—अ० [स० लुब्ध] लुब्ध होना।

लुबुध—वि०=लुब्ध।

पु०=लुब्धक (बहेलिया या शिकारी)।

लुबुधना—अ० [हिं० लुबुध+ना (प्रत्य०)] लुब्ध होना।

लब्ध—वि० [स०√लुभ् (लोभ करना)+क्त] १ किसी प्रकार के लोभ मे आया या पडा हुआ। २ जो किसी पर विशेष रूप से आसक्त हुआ हो। ३. मन मे किसी चीज या बात का बहुत लोभ या वासना रखनेवाला। जैसे—धन-लुब्ध। रूप-लुब्ध।

लुब्धक—पु० [स० लुब्ध+कन्] १ व्याध। बहेलिया। २ शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत चमकीला तारा। (आधुनिक)

लुब्धना—अ०=लुबुधना। (लुब्ध होना)।

लुब्धापति—स्त्री० [स० ष० त०] केशव के अनुसार प्रौढा नायिका का भेद। ऐसी प्रौढा नायिका जो पति और कुल के सब लोगो से लज्जा करे।

लुब्ब—पु० [अ०] १ सारभाग। २ गूदा।

लुब्ब-लुबाब—पुं० [अ०] १ गूदा। सार। २. सारभाग। साराश।

लुभाना—अ० [हिं० लोभ+आना (प्रत्य०)] १ कुछ या किसी को पाने के लिए लोभ से युक्त होना। लालच या लालसा मे पड़ना। २. उक्त अवस्था के कारण तन-मन की सुध भूलना। मोह मे पडना। ३. किसी पर आसक्त या मोहित होना।

सयो० क्रि०—जाना।

स० १. अपने गुण, रूप आदि के कारण किसी के मन मे लोभ या लालसा उत्पन्न करना। २. किसी के मन मे लोभ या लालसा उत्पन्न कराना। २ किसी के मन मे अपने प्रति अनुराग, आसक्ति या प्राप्ति की कामना उत्पन्न करना और फलत. ऐसी दशा मे लाना कि वह सुध-बुध भूल जाय। मोह से युक्त करना।

सयो० क्रि०—लेना।

लुभावना—वि० [हिं० लुभाना] [स्त्री० लुभावनी] मन को मोहित या लुब्ध करनेवाला। मनोहर। सुन्दर।

अ०, स०=लुभाना।

लुभित—भू० कृ० [सं०√लुभ्+क्त] १. लोभ मे आया या पडा हुआ। २ मुग्ध। ३. घबराया हुआ।

लुभौहाँ—वि० [हिं० लुभाना+औहाँ (प्रत्य०)] १ प्रायः लुब्ध होनेवाला। २ दे० 'लुभावना'।

लुर—पु० [?] १. ईरानी नसल की एक पहाड़ी जाति जो अपने

उजड्डपन के लिए प्रसिद्ध है। २. शुअर।
वि० बहुत बड़ा उजड्ड या मूर्ख।

लुरकना†—अ० १ =लुढकना। २.=लटकना।

लुरका—पु० [हिं० लुरकना=लरकना] झुमका (कान का गहना)।

लुरकी—स्त्री०—लुढ़की।
स्त्री० [हिं० लुरकना] कान मे पहनने की बाली। मुरकी।

लुरना—अ० [स० लुलनी=झूलना] १ ऊपर से तनी चली आई हुई वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना। लरकना। झूलना। लहरना। २ झुका या ढलक पडना। ३. अचानक आ पड़ना या आ पहुँचना। ३. प्रवृत्त होना। ५. मुग्ध या मोहित होना।
सयो० क्रि०—पडना।

लुरियाना—अ० [हिं० लुरना] १ प्रेम-पूर्वक स्पर्श करना। २ थपथपाना।

लुरी—स्त्री० [हिं० लेरुआ=बछड़ा] ऐसी गाय जिसे व्याये कुछ ही दिन हुए हो।

लुलन—पु० [स०√लुल् (विमर्दन)+ल्युट्] [वि० लुलित] हिलना-डोलना। झूलना।

लुलना—अ० [सं० लुलन] १. हिलना-डुलना। २ झूलना। ३. लहराना।

लुलित—भू० कृ० [स०√लुल् (हिलना)+क्त] १. लटकता या झूलता हुआ। आदोलित। २ अशांत। ३ बिखरा हुआ। ४. दबाया हुआ। ५ ध्वस्त। ६. सुन्दर।

लुलुआना—अ० [अनु० लूल्लू से] लूलू कह करके किसी का उपहास करना।

लुवार—स्त्री०=लुआर (लू)।

लुहँगी—स्त्री०=लोहाँगी।

लुहना—अ० [स० लुभन] लुब्ध या मोहित होना।

लुहनी—पु० [देश०] अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

लुहाँगी—स्त्री०=लोहाँगी।

लुहार—पु०=लोहार।

लुहारा—पु० [हिं० लोहार] १. वह स्थान जहाँ बैठकर लोहार काम करते हो। २ लोहारो की बस्ती या महल्ला।

लुहारिन—स्त्री० [हिं० लुहार] लुहार या लोहार जाति की स्त्री।

लुहारी—स्त्री० [हिं० लुहार+ई (प्रत्य०)] १.लुहार का काम या पेशा। लोहे की चीज बनाने का काम। २.लोहार जाति की स्त्री। लोहारिन।

लुहुर—स्त्री० [स० लघु, हिं० लहुरा] छोटे कानोवाली भेड।

लूंबरी—स्त्री०=लोमडी।

लू—स्त्री० [सं० लूक, हिं० लौ] ग्रीष्म ऋतु मे चलनेवाली बहुत गरम हवा।
क्रि० प्र०—मारना।—लगना।
२. उक्त का वह कुप्रभाव जिसमे व्यक्ति ज्वर से पीडित होता तथा जलन से छटपटाने या तडपने लगता है।

लूक—स्त्री० [स० लुक=जलन] १. अग्नि की ज्वाला। आग की लपट। २ जलती हुई लकडी। लुत्ती। ३ दे० 'लू'।
स्त्री० [स० उल्का] आकाश से छूटकर गिरनेवाला तारा।

लूकना—स० [हिं० लूक+ना (प्रत्य०)] आग लगना। जलाना।
†अ०=लुकना (छिपना)।

लूका—पु० [स० लुक=जलना] [स्त्री० अल्पा० लूकी] १ आग की लौ या लपट। २. लुआठी। लूती।
मुहा०—(किसी के मुँह में) लूका लगाना=तुच्छ समझकर दूर हटाना। मुँह फूँकना। (स्त्रियो की गाली)

लूकी—स्त्री० [हिं० लूका] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २ दे० 'लूका'।

लूक्ष—वि०=रूक्ष (रूखा)।

लूखा†—वि० [स्त्री० लूखी]=रूखा।

लूगड़—पु० [हिं० लूगा] १ वस्त्र। कपडा। २ चादर।

लूगा—पु० [स० लत्तक] १. कपडा। वस्त्र। २. विशेषत फटा-पुराना कपडा। ३. धोती।

लूघा—पु० [देश०] वह व्यक्ति जो ठगो के साथ रहकर उन लोगो की लाशें गाडने के लिए गड्ढे खोदता था, जिन्हे ठग लोग मार डालते थे।

लूट—स्त्री० [हिं० लूटना] १ लूटने की क्रिया या भाव। २. किसी को डरा-धमका कर या मार-पीटकर जबरदस्ती उसकी चीजें छीन लेना।
पद—लूट-खसोट, लूट-पाट, लूट-मार। (दे०)
३ आज-कल किसी की विवशता से लाभ उठाकर अनुचित रूप से अपना आर्थिक लाभ करना। जैसे—यहाँ के दुकानदारो ने तो लूट मचा रखी है।
क्रि० प्र०—पडना।—मचना।—मचाना।
४. किसी को लूटने से मिलनेवाला धन या सम्पत्ति।

लूटक†—पु०=लुटेरा।

लूट-खसोट,—स्त्री० [हिं०] बहुत से लोगो का किसी की चीजें लूट या छीन लेना।
क्रि० प्र०—मचना।

लूटना—स० [स० लुट्=लूटना] १ बलात् अथवा डरा-धमका कर किसी की धन-सम्पत्ति उससे ले लेना या छीन लेना। जैसे—लुटेरो ने राह चलते मुसाफिरो को लूट लिया। २ किसी के घर, मकान, दूकान आदि मे अनधिकार प्रवेश कर उसमे रखा हुआ सामान उठा ले जाना। जैसे—उपद्रवियो का सारा बाजार लूटना। ३ फेंकी, लुटाई अथवा किसी के अधिकार या बधन से निकली हुई वस्तु को हस्तगत करना। जैसे—(क) गुड्डी या पतग लूटना। (ख) पैसे लूटना। ४ अन्याय या धोखे से किसी का धन अपहरण करना। जैसे—नौकर-चाकरो का नवाब साहब को लूटना। ५ उचित से बहुत अधिक मूल्य लेना। अधिक दाम लेकर बेचना। जैसे—आज कल के दुकानदार ग्राहको को खूब लूटते है। ६ किसी रूप मे किसी का सब कुछ या बहुत कुछ मनमाने ढग से ले लेना। जैसे—मजा लूटना। ७ किसी को अपने प्रति मोहित या लुब्ध करना, अथवा इस प्रकार अपना बनाना कि वह वशीभूत हो जाय।

लूटा—पु०=लुटेरा। उदा०—लोभी लौंद मुकरवा झगरू बडा पढैली लूटा।—सूर।

लूटि†—स्त्री०=लूट।
लूण—पुं० [स० लवण] नमक।
लूत—पुं० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगम्बर।
लूता—स्त्री० [सं०√लू (छेदन)+तन्+टाप्] १. मकडी। २. मकडी के स्पर्श के विष के कारण शरीर मे पडनेवाले फफोले। मकडी का रोग। वृक्का। ३ च्यूँटी।
†पु०=लूका।
लूतामय—पु० [स०√लूता+मयट्] मकड़ी नामक रोग।
लूती—पु० [अ०] वह जो अस्वाभाविक रूप से मैथुन करे। बालको के साथ संभोग करनेवाला। लौंडेबाज।
पुं०=लूता।
लून—वि० [सं०√लू (छेदन)+क्त, त—न] कटा हुआ। छिन्न। जैसे—लून-पक्ष=जिसके पर कटे हों।
†पुं०=नोन (नमक)।
लूनक—पु० [हिं० लोन] १. सज्जी खार। २ अमलोनी का साग।
लूनना—स०=लुनना (लुनाई करना)।
लूबरर†—स्त्री०=लोमडी।
†वि०=लूमर।
लूम—पुं० [स०√लू (छेदन)+मक्] १ लागूल। पूँछ। दुम। २. चक्कर। फेरा। उदा०—आता लूम लेता हुआ पूर्ण घट नीचे से।—मैथिलीशरण गुप्त। ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।
पु० [?] कला-बत्तू की लच्छी।
पुं० [अ०] कपडा बुनने का करघा।
लूमड़ी—स्त्री०=लोमड़ी।
लूमना†—अ० [सं० लूम] १. लटकना। झूलना। २ लहरना। ३. (बादलों का) घिरना। ४. चक्कर खाना।
लूमर—वि० [देश०] अवस्था मे बड़ा। वयस्क। जैसे—इतने बड़े लूमर हुए, पर बात करने का शऊर न आया।
लूम-विष—पु० [सं० ब० स०] ऐसे जन्तु जिनकी दुम या पूँछ मे विष हो। जैसे—बिच्छू।
लूर—पुं० [?] कोई काम ठीक तरह से करने का ढग। शऊर। जैसे—तुम्हे तो किसी बात का लूर नहीं है।
लूरना†—अ०=लुरना।
लूला—वि० [स० लून=कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १ जिसका हाथ कट गया हो या बेकाम हो गया हो। बिना हाथ का। लुंजा। टुंडा। २ जो कुछ भी करने मे असमर्थ हो।
लूलू—वि० [देश०] परम मूर्ख। निरा बेवकूफ।
मुहा०—(किसी को) लूलू बनाना=किसी को बेवकूफ बनाकर उसका उपहास करना।
पु० बच्चो को डराने के लिए 'जूजू' 'हौआ' आदि की तरह के एक कल्पित विकट जीव की संज्ञा।
लूसना—स० [?] मटिया-मेट करना। चौका लगाना। उदा०—सब ग्रथनि के पढ़े जो सो सब लूस।—रत्ना०।
स०=लूटना।
अ० दे० 'ललचाना'। (पश्चिम)
लूह—स्त्री०=लू।
लूहर—स्त्री०=लू।
लेंड—पुं० [सं० लेण्ड] मल की बँधी हुई कड़ी बत्ती। बँधा हुआ और सूखा मल (शौच के समय का)।
लेंड़ी—स्त्री० [हिं० लेंड] १ मल की बँधी हुई कडी छोटी बत्ती। २. दे० 'मेगनी'।
लेंडुआ—पु० [देश०] बच्चो का मतवाला (देखें) नाम का खिलौना।
लेंस—पुं० [अ०] शीशे का ऐसा ताल जो प्रकाश की किरणो को एकत्र या केन्द्रीभूत करता हो। जैसे—चश्मे का लेंस, फोटोग्राफी का लेंस।
लेंहड़ा†—स्त्री०=लेहड़ा।
लेंहड़ा—पु० [देश०] जंगली जानवरो का झुंड। विशेषत. शेरो का झुंड।
ले—अव्य० [स० लग्न, हिं० लग० लगि] तक। पर्यंत
अव्य० [हिं० लेना] संबोधन के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला शब्द, जिसका अर्थ होता है—(क) अच्छा ऐसा ही सही। जैसे—ले मैं ही यहाँ से चला जाता हूँ। (ख) अब समझ मे आया न। जैसे—ले, कैसा फल मिला।
लेइ—अव्य० [सं० लग्न; हिं० लगि] तक। पर्यंत।
लेई—स्त्री० [स० लेहिन, लेही या लेह्य] १. पानी मे घुले हुए किसी चूर्ण को गाढा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। जैसे—अवलेह, लपसी आदि। २ घुला हुआ आटा या मैदा जो आग पर पकाकर गाढ़ा और लसदार बना लिया जाता है और कागज आदि चिपकाने के काम मे आता है। ३ गाढा घोला हुआ चूना और बरी या बालू और सीमेंट जो इमारत बनाते समय ईंटो आदि की जोड़ाई के काम आता है। गारा।
लेई-पूँजी—स्त्री० [हिं० स०] सारी धन-सम्पत्ति।
लेओ—स० हिं० लेना क्रिया का विधि-वाला रूप। लो। उदा०—चूर्ण करो गत सस्कारो को लेओ प्राण उबार।—पन्त।
लेक्चर—पुं० [अं०] व्याख्यान। वक्तृता।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—लेक्चर झाड़ना=लगातार कुछ समय तक बढ-बढकर उपदेशात्मक बातें कहते चलना।
लेक्चरबाज—पु० [अ०+फा०] [भाव० लेक्चरबाजी] १. उपदेशात्मक बातें दूसरो से कहते रहनेवाला व्यक्ति। २ प्रायः व्याख्यान देते रहनेवाला।
लेक्चरबाजी—स्त्री० [अं० लेक्चर+फा० बाजी] खूब या प्राय लेक्चर देने की क्रिया। (व्यंग्य)
लेक्चरर—पुं० [अ०] १. लेक्चर या व्याख्यान देनेवाला। २ विश्व-विद्यालय का उप-प्राध्यापक।
लेख—पुं० [सं०√लिख् (लिखना)+घञ्] १ लिखे हुए अक्षर। २. लिखावट। ३ लिखी हुई बात, विचार या विषय। ४ दैनिक, मासिक आदि पत्रो मे छपनेवाला सामयिक निबंध। जैसे—आज के अखबार मे राजा जी का भी लेख है। ५ कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो नियम या विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने

प्रचलित किया हो। (रिट्) ६. ताम्र-पत्रों शिला-लेखों, सिक्कों आदि मे लिखी हुई बातें या विवरण। (इन्सक्रिप्सन) ७ लेखा। हिसाव।
†वि०=लेख्य।
†पु० [सं० लेखर्षभ] देवता।

लेखक—पुं० [सं०√लिख्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० लेखिका] १. वह जो लिखता हो। लेखन कार्य करनेवाला। जैसे—कहानी लेखक, समाचार लेखक। २. वह जो मनोरंजन या जीविका के लिए कहानियाँ, उपन्यास, लेख, साहित्यिक ग्रन्थ आदि लिखता हो। साहित्य-जीवी। ३. किसी गद्य या कृति का रचयिता।

लेखन—पु० [सं०√लिख्+ल्युट्—अन] [वि० लेखनीय, लेख्य] १. अक्षर आदि लिखने का कार्य। अक्षर-विन्यास। अक्षर बनाना। २. अक्षर आदि लिखने की कला या विद्या। ३. तूलिका से चित्र आदि अंकित करने की क्रिया या विद्या। चित्रांकन। ४. किसी रूप में किसी प्रकार के चिह्न आदि अंकित करना। जैसे—नख-लेखन=नाखूनों से खरोंचकर किसी प्रकार की आकृति या चिह्न बनाना। ५. हिसाव करना। लेखा लगाना। कूतना। ६ कै या वमन करना। छर्दन। ७ ताड़पत्र और भोजपत्र जिन पर प्राचीनकाल में लेख आदि लिखे जाते थे। ८ वैद्यक मे वह क्रिया जिससे शरीर के अन्दर की धातुएँ तथा मल या विकार या तो पतले करके शरीर के वाहर निकाले जाते या अन्दर ही अन्दर सुखाये जाते हैं। ९. उक्त प्रकार की क्रियाएँ करनेवाली दवा या ओषधि। १०. वैद्यक मे शस्त्र द्वारा कोई दूषित अंग काटना या छेदना। चीर-फाड। १०. खाँसी नामक रोग।

लेखन-वस्ति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक मे पिचकारी की सहायता से शरीर के अन्दर की धातुओं और वातादि दोषों को पतला करने की क्रिया।

लेखन-सामग्री—स्त्री० [सं० ष० त०] लिखने के काम आनेवाली चीजें या सामग्री। जैसे—कागज, कलम, स्याही आदि। (स्टेशनरी)

लेखनहार—वि० [सं० लेखन+हि० हार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। उदा०—आपुहि कागद आपु मसि आपुहि लेखनहार।—कबीर।

लेखना—स० [सं० लेखन] १. अक्षर, चित्र या चिह्न बनाना। लिखना। २. लेखा या हिसाव करना। गणित की क्रिया करना। ३ किसी को गिनती के योग्य या महत्त्वपूर्ण समझना। ४ मन ही मन कोई बात सोचना-समझना या निश्चित करना। ५. प्राप्त या भोग करना। उदा०—स्वर्ग का लाभ यही मैं लेखूं। —मैथिलीशरण गुप्त।

लेखनिक—पु० [सं० लेखन+ठन्—इक] १. लेखक। २ पत्रवाहक। ३. वह निरक्षर या असमर्थ जो लेख आदि पर स्वयं हस्ताक्षर न करके दूसरों से उन पर अपना नाम लिखवाता हो।

लेखनिका—स्त्री० [सं० लेखनिक+टाप्]=लेखनी।

लेखनी—स्त्री० [सं० लेखन+ङीप्] वह वस्तु जिससे लिखें या अक्षर बनावें। वर्ण तूलिका। कलम।
मुहा०—लेखनी उठाना=कुछ लिखना आरम्भ करना। लेखनी चलाना=लिखना।

लेखनीय—वि० [सं०√लिख्(लिखना)+अनीयर्] लिखे जाने के योग्य।

लेख-पत्र—पु० [सं० ष० त०] १. लिखित पत्र। लिखा हुआ कागज। २. दस्तावेज। लेख्य।

लेखपाल—पुं० [सं० लेख√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] वह सरकारी कर्मचारी जो गाँवों के खेतों और उनकी उपज, लगान आदि का लेखा रखता है। (पुराने पटवारियों की नई संज्ञा)

लेख-प्रणाली—स्त्री० [सं० ष० त०] लिखने की शैली या ढंग।

लेखर्षभ—पुं० [सं० लेख-ऋषभ, स० त०] देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र।

लेख-शैली—स्त्री० [स० ष० त०] लिखने की वह विशिष्ट शैली (देखें) जो लेखक की विशेषताओं से युक्त होती है।

लेखहार—पु० [सं० लेख√हृ (हरण)+अण्] चिट्ठी ले जानेवाला। पत्रवाहक।

लेखा—पु० [सं० लेख, हिं० लिखना] १. वह लेख जो आय-व्यय की धन-राशि आदि से संबद्ध रखनेवाले अंकों या संख्याओं से युक्त होता है। हिसाव। (एकाउन्ट) २ इस बात का विचार कि कुल चीजें कितनी और किस अनुपात में हैं। जैसे—कितनी चीजें आई हैं, उन सब का लेखा तैयार करो।
क्रि० प्र०—लगाना। —लिखना।
मुहा०—(किसी का) लेखा चुकाना=हिसाव करने पर जो बाकी निकलता हो, वह देकर चुकता करना। लेखा डालना=वही आदि में कोई नया खाता खोलना या बढ़ाना। नया खाता डालना। लेखा डेवढ़ करना=(क) हिसाव चुकता करना। देन चुकाना। (ख) जमा और खर्च की मदें बराबर करके हिसाव पूरा करना। (ग) चौपट या नष्ट करना। (व्यंग्य)
३ राशियों, संख्याओं आदि के संबंध में किया जानेवाला अनुमान। कूत। ४. किसी के महत्त्व, मान, योग्यता आदि के संबंध में मन में किया जानेवाला विचार।
मुहा०—(किसी के) लेखे=किसी के ध्यान, विचार या समझ के अनुसार। जैसे—हमारे लेखे उसका आना और न आना दोनों बराबर है। किसी लेखे=किसी ढंग, प्रकार या साधन से। किसी तरह। उदा०—सब कर मरनु बना एहि लेखे।—तुलसी।
५ जीवन-निर्वाह, व्यवहार आदि के संबंध रखनेवाली दशा या स्थिति। जैसे—ऊँचे पर चढ़ देखा। घर घर एकहि लेखा। (कहा०)
स्त्री० [सं०√लिख् (लिखना)+अ+टाप्] १ लिपि। लिखावट। २ रेखा। जैसे—चन्द्र-लेखा।

लेखा-कर्म—पु० [स० ष० त०] आय, व्यय आदि का हिसाव लिखने या रखने का काम। (एकाउन्टेन्सी)

लेखाकार—पुं० [स०] वह जो किसी महाजनी कोठी, संस्था आदि के आय-व्यय या लेन-देन का लेखा लिखता हो। (एकाउन्टेन्ट)

लेखागार—पु० [सं० लेखा-आगार] वह स्थान, विशेषतः किसी राज्य या सरकार का वह स्थान जहाँ शासन तथा सार्वजनिक हित से संबंध रखनेवाले सब प्रकार के लेख्य इसलिए सुरक्षित रखे जाते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर प्रमाण या साक्ष्य के रूप में उपस्थित किये जा सकें। (आर्किव्ज)

लेखा-चित्र—पु० [स० मध्य० स०] अनेक रेखाओंवाला वह बड़ा चौकोर अंकन जो किसी घटना या व्यापार में होते रहनेवाले उतार-चढ़ाव या परिवर्तन अथवा कुछ तथ्यों के पारस्परिक संबंध का सूचक

होता है। (ग्राफ) जैसे—जन्म-मरण, तेजी-मंदी, आयात-निर्यात आदि का लेखा-चित्र।

लेखाध्यक्ष—पु० [सं० लेखा-अध्यक्ष, ष० त०] लेखाकार।

लेखा-परीक्षक—पु० [सं० ष० त०] वह जो किसी विषय, व्यक्ति, संस्था आदि के लेख या हिसाब-किताब को जाँचता हो। (आडीटर)

लेखा-परीक्षण—पु० [सं०] किसी प्रकार के कार-बार, लेन-देन या आय-व्यय आदि की जाँच करने की क्रिया या भाव। (आडिटिंग)

लेखापाल—पु० [सं० लेखा√पाल् (रखना)+णिच्+अण्] वह जो आय-व्यय आदि लिखने का काम करता हो। बही-खाते आदि लिखने-वाला कर्मचारी। (एकाउन्टेन्ट)

लेखा-पुस्तिका—स्त्री० [सं०] वह पुस्तिका जो बैंक की ओर से उन लोगों को मिलती है जिनके रुपए बैंक में जमा होते हैं और जिसमें उनके खाते के लेन-देन की सब रकमें लिखी रहती है। (पासबुक) २. दे० 'लेखा-बही'।

लेखा-बही—स्त्री० [हिं० लेखा+बही] वह बही जिसमें रोकड़ के लेन-देन का ब्योरा लिखा रहता है। (एकाउन्ट बुक)

लेखा-शास्त्र—पु० [सं० ष० त०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें, इस बात का विवेचन होता है कि सब तरह के लेखे या हिसाब किस तरह से रखे या लिखे जाते हैं। (एकाउन्टेन्सी)

लेखिका—स्त्री० [सं० लेखक+टाप्, इत्व] स्त्री लेखक।

लेखित—भू० कृ० [सं०√लिख् (लिखना)+णिच्+क्त] लिखवाया हुआ।

लेखी (खिन्)—वि० [सं० लेख+इनि] लिखने की क्रिया करनेवाला। जैसे—चित्रकार, लेखक आदि।

स्त्री० [सं० लेख] १ खाते में लिखे जाने की क्रिया या भाव। इदराज। २ खाते में लिखी जानेवाली रकम या मद। (एन्ट्री)

लेखे—अव्य० दे० 'लेखा' के अन्तर्गत मुहा०।

लेख्य—वि० [सं०√लिख् (लिखना)+ण्यत्)] १ लिखे जाने के योग्य। जो लिखा जा सके। २ जो लिखा जाने को हो। ३ जो लेख के रूप में और फलत: प्रामाणिक हो। दस्तावेजी। (डाक्यूमेन्टरी)

पु० १ लिखी हुई कोई बात या विषय। लेख। २ विविध क्षेत्रों में, कोई ऐसा लेख जो प्रमाण या साध्य के रूप में काम आता या आ सकता हो। दस्तावेज। (डाक्यूमेन्ट) ३. चित्रकला में, वह रेखा-चित्र जो कोयले, खड़िया, रंग आदि की सहायता से अंकित होता है और जिसमें किसी घटना, दृश्य आदि के संबंध में चित्रकार के आन्तरिक भाव व्यक्त होते हैं। (ड्राइंग)

लेजं—स्त्री०=लेजुरी (रस्सी)।

लेजम—स्त्री० [फा०] १ कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। २. वह कमान जिसमें लोहे की जंजीर और कटोरियाँ रहती है और जिससे पहलवान लोग कसरत करते हैं।

क्रि० प्र०—भाँजना।—हिलाना।

लेजरंग—पु० [लेज ?+हिं० रंग] मरकट या पन्ने की एक रंगत जो उसका गुण मानी जाती है।

लेजुर—स्त्री० [सं० रज्जु, मागधी प्रा० लेज्जु] १ रस्सी। डोरी। २. कूएँ से पानी खींचने की डोरी या रस्सी।

लेजुरा—पु० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रहता है।

†पु०=बड़ी लेजुरी (रस्सी)।

लेजुरी—स्त्री०=लेजुर।

लेट—पु० [देश०] १ सुरखी, कंकड़, और चूने आदि का गारा तथा सीमेंट का वह सम्मिश्रण, जो फर्श बनाने के लिए जमीन पर बिछाया जाता है।

क्रि० प्र०—डालना।—पीटना।

वि० [अं०] जो देर से आया हो अथवा जिसने आने में देर लगाई हो। जैसे—आज गाड़ी लेट है।

लेटना—अ० [सं० लुठन, हिं० लोटना] १. विश्राम करने के लिए हाथ-पैर और सारा शरीर लंबाई के बल पसार जमीन या किसी सतह पर टिका कर पड़ रहना। जमीन या बिस्तरे से पीठ लगाकर बदन की सारी लंबाई उस पर ठहराना। पौढ़ना। जैसे—जाकर चारपाई पर लेट रहो, तबीयत ठीक हो जायगी।

संयो० क्रि०—जाना।—रहना।

२. खड़े बल में रहनेवाली चीज या बगल की ओर झुककर जमीन पर गिरना या जमीन से सटना। जैसे—आँधी से पेड़ों या फसल का लेटना।

संयो० क्रि०—जाना।

३. किसी पदार्थ का ठीक दशा में न रहकर बिगड़ जाना या खराब होना। ४. मर जाना। (बाजारू)

लेट-पेट—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

लेटर—पु० [अं०] १. अक्षर। २. चिट्ठी।

लेटर-बक्स—पु० [अं० लेटर-बाक्स] १. डाकखाने का वह संदूक जिसमें कहीं भेजने के लिए लोग चिट्ठियाँ डालते हैं। २ प्राय: घरों के दरवाजों पर लगी हुई वह पेटी या संदूक जिसमें डाकिये या और लोग आकर मालिक मकान की चिट्ठियाँ छोड़ या डाल जाते हैं। पत्र-पेटी।

लेटाना—स० [हिं० लेटना का प्रे०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई लेट जाय। २. खड़ी चीज को जमीन पर बेड़े बल में रखना या फैलाना।

लेड—पु० [अं०] सीसा नामक धातु।

पु० [अं०] प्राय: दो अंगुल चौड़ी सीसे की ढली हुई पतली पटरी या पट्टी जो छापाखाने में अक्षरों की पंक्तियों के बीच में (अक्षरों को ऊपर नीचे होने से रोकने के लिए) लगाई जाती है।

लेडी—स्त्री० [अं०] १. भले घर की स्त्री। महिला। २. इँगलैंड में किसी लार्ड या सरकार की पत्नी के नाम के पहले लगनेवाली उपाधि। जैसे—लेडी मिन्टो।

लेथो—पु०=लीथो।

लेद—पु० [देश०] एक प्रकार के गीत जो बुन्देलखण्ड में माघ फागुन में गाये जाते हैं।

लेवार—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

लेवी—स्त्री० [देश०] १. जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २. घास का वह पूला जो हल के नीचे के भाग में इसलिए बाँध देते हैं कि कूँड अधिक चौड़ी न होने पावे।

ले-दे—स्त्री० [हिं० लेना+देना] १. लेने और देने की क्रिया या भाव। **लेन-देन**। २ सासारिक काम-धन्धे और झगडे-वखेडे। उदा०—हर एक पडा है अपनी ले-दे मे।—वच्चन।

लेन—पु० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव।

पद—**लेन-देन**।

२. वह धन जो किसी से लिया जाने को हो। पावना। लहना।

लेनदार—पु० [हिं० लेना+फा० दार (प्रत्य०)] १. वह जो अधिकारत या न्यायत किसी से अपना हक अथवा उसे दी हुई चीज ले सकता हो। २ वह जो किसी से उधार दिया हुआ धन पाने का अधिकारी हो। महाजन।

लेन-देन—पु० [हिं० लेना+देना] १ लेन और देन का व्यवहार। आदान-प्रदान। २ व्यापारिक और सामाजिक क्षेत्रो मे किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने का व्यवहार। जैसे—हमारा उनका लेन-देन वहुत दिनो से वन्द है। ३ लोगो को रुपए उधार देने और फिर उससे सूद सहित मूल धन लेने का व्यवसाय। महाजनी। जैसे—उनके यहाँ पुश्तो से लेन-देन चलता है।

लेना—स० [स० लभन; पु० हिं० लहना] १ जो वस्तु कोई दे रहा हो, उसे ग्रहण या प्राप्त करना। किसी की दी हुई चीज अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—किसी से दान या धन लेना।

पद—**लेना एक न देना दो**=कोई प्रयोजन, सवध या सरोकार नही है। कुछ गरज या वास्ता नही है। जैसे—लेना एक न देना दो, हम क्यो व्यर्थ इस प्रपच मे पडने जायँ।

मुहा०—**लेने के देने पड़ना**=प्राप्ति, लाभ आदि की आशा से कोई काम करने पर उलटे पास का कुछ खोना या गँवाना अथवा कष्ट या सकट मे पड़ना। जैसे—वह चले तो थे चोरी पकडने पर उन्हे उलटे लेने के देने पड गये।

२ कोई चीज किसी प्रकार या किसी रूप मे अपने अधिकार या हाथ मे करना। हस्तगत करना। जैसे—(क) वाजार से कपडे (या किताबें) मोल लेना। (ख) किराये पर मकान लेना। ३ कोई चीज अपने अग पर धारण करना या किसी रूप मे रखना। जैसे—(क) हाथ मे घडी या छाता लेना। (ख) कन्धे पर या गोद मे वच्चा लेना।

मुहा०—**ले लना**=अधिकृत कर लेना। वल प्रयोग से प्राप्त कर लेना। जैसे—(क) थोड़े ही दिनो मे अगरेजो ने सारा पंजाव ले लिया। (ख) डाकुओ ने उसका सारा धन ले लिया।

३ कोई चीज अपने अग पर धारण करना या किसी रूप मे रखना। ४ उधार के रूप मे या माँगकर प्राप्त करना। जैसे—महाजनो से रुपए ले लेकर काम चलाना। ५ खाने-पीने की चीज मुँह मे रखकर गले के नीचे या पेट मे उतारना। सेवन करना। जैसे—रोगी का दवा या दूध लेना। ६. किसी प्रकार का उत्तरदायित्व, प्रतिज्ञा या भार अगीकृत करना। निर्वाह, वहन आदि के लिए उत्तरदायी वनना या कृतसकल्प होना। जैसे—(क) किसी काम का उत्तरदायित्व या पद का भार लेना। (ख) व्रत, शपथ या सन्यास लेना।

मुहा०—**(अपने आपको) लिये दिये रहना**=अपने आपको इस प्रकार सँभालकर रखना कि कोई अनुचित या अशिष्टतापूर्ण आचरण या व्यवहार न होने पावे। **(अपने) ऊपर लेना**=निर्वाह वहन आदि का भार ग्रहण करना। जैसे—उसका सारा ऋण (या भार) मैंने अपने ऊपर ले लिया है। ७ अमूर्त वातो, विचारो, विषयो आदि के सवध मे किसी रूप मे गृहीत या प्राप्त करना। जैसे—(क) किसी से परामर्श या सलाह लेना। (ख) किसी के मन की थाह लेना। (ग) किसी का आशीर्वाद या गालियाँ लेना।

मुहा०—**ले-देकर**=(क) सब कुछ हो जाने पर अत मे। जैसे—ले-देकर यह वदनामी ही हाथ आई। **ले-दे करना**=(क) कहा-सुनी, तकरार या हुज्जत करना। जैसे—भठियारो की तरह यह ले-दे करना ठीक नही है। (ख) किसी कार्य की पूर्ति या सिद्धि के लिए वहुत परिश्रम या प्रयत्न करना। जैसे—इतनी ले-दे करने पर तव कही दिन भर मे यह काम पूरा हुआ है।

८ भागनेवाले का पीछा करते हुए उसके पास पहुँचकर उसे पकडना। जैसे—(क) इतने मे सिपाहियो ने वहाँ पहुँचकर उसे पकड लिया। (ख) लेना, जाने न पावे। ९ किसी काम या वात की सिद्धि करते हुए उसके सवध मे कोई क्रिया करना। (कुछ विशिष्ट सयो० क्रि० के साथ प्रयुक्त) जैसे—ले चलना, ले जाना, ले भागना, ले रखना, ले लेना आदि।

मुहा०—**ले उड़ना**=(क) कही से कुछ लेकर इस प्रकार अलग या दूर होना कि कोई समझ न पावे। जैसे—कही से कोई वात सुन पाई, और ले उडे। (ख) कही से कुछ लेकर उसे अपना वताते या वनाते हुए आडंवरपूर्वक अपना पौरुष या योग्यता प्रकट करना। **ले डालना**=खराव, चौपट या नष्ट करना। जैसे—(क) तुमने यह किताव भी ले डाली अर्थात् नष्ट कर दी। (ख) इस गोटे ने तो साडी की सारी शोभा ही ले डाली अर्थात् विगाड दी। **ले डूवना या ले वीतना**=स्वय नष्ट या समाप्त होने के साथ ही साथ दूसरे को भी वुरी तरह से नष्ट या समाप्त करना। जैसे—उनकी यह चालाकी ही उन्हे ले डूवेगी या ले वीतेगी। **(कोई काम या वात) ले वैठना**=अच्छा काम या वात छोडकर किसी तुच्छ अथवा साधारण काम या वात मे लग जाना। जैसे—तुम भी यह कहाँ का झगडा (या पचडा) ले वैठे। **(किसी को या कोई चीज अपने साथ) ले वैठना**=किसी काम, चीज या वात का अपने दोष, भार आदि के कारण स्वयं नष्ट होते हुए दूसरे को भी अपने साथ नष्ट करना। जैसे—(क) यह छज्जा सारा मकान ले वैठेगा। (ख) यह दुर्व्यसन उनका सारा कार-वार ले वैठेगा। **ले लेना**=उद्देश्य की सिद्धि अथवा कार्य की समाप्ति के वहुत निकट तक पहुँच जाना। जैसे—वहुत-सा काम हो चुका है, अव ले ही लिया है, अर्थात् समाप्ति मे अधिक विलव नहीं है।

१० किसी प्रकार या किसी रूप मे एकत्र या प्राप्त करना। जैसे—(क) वगीचे से फूल लेना। (ख) लोगो से चन्दा लेना। (ग) कही से लडका गोद लेना।

मुहा०—**ले पालना**=कन्या या पुत्र के रूप मे अपने पास रखकर पालन-पोषण करना।

११ किसी वस्तु या व्यक्ति का ठीक और पूरा उपभोग करना अथवा

उसे काम मे प्रवृत्त करना। जैसे—(क) यह काम बहुत परिश्रम लेता है। (ख) उसे नौकरो से काम लेना नही आता। १२. प्रतियोगिता, होड आदि मे विजयी या सफल होना। जैसे—किसी से बाजी लेना या ले जाना। १३. कुछ विशिष्ट इद्रियो के संबध मे किसी बात या विषय का ग्रहण करना। जैसे—अपने मन मे किसी देवता या फूल का नाम लो।

मुहा०—(कोई बात) कान मे लेना=सुनना। (क्व०)

१४ अतिथि का सत्कार या स्वागत करने के लिए आगे बढकर उससे मिलना। अगवानी या अभ्यर्थना करना। जैसे—उन्हे लेने के लिए बहुत से लोग स्टेशन पहुँचे थे। १५ किसी का उपहास करते हुए उसे लज्जित करना और तुच्छ या हीन सिद्ध करना।

मुहा०—(किसी को) आड़े हाथो लेना=बहुत अधिक उपहास तथा भर्त्सना करते हुए निरुत्तर करना। **(किसी का) लिया जाना**=उपहासास्पद और लज्जाजनक स्थिति मे लाया जाना। जैसे—आज वह वहाँ अच्छी तरह लिया गया।

१६. स्त्री के साथ मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

मुहा०—(किसी का) लिया जाना=मैथुन या सभोग की स्थिति मे लाया जाना। **(किसी को) ले पड़ना**=किसी को अपने साथ लेटाकर उससे सभोग करना।

विशेष—रखना, लगाना आदि की तरह लेना का भी बहुत-सी क्रियाओ के साथ सयो० क्रि० के रूप मे प्रयोग होता है; और ऐसे अवसरो पर यह प्राय. उस क्रिया की पूर्ति या समाप्ति का सूचक होता है। जैसे—उठा लेना, कह लेना, खा लेना, सुन लेना आदि। कुछ अवस्थाओ मे यह इस बात का भी सूचक होता है कि कर्ता कोई क्रिया बहुत ही कठिनता से, जैसे-तैसे अथवा भद्दे या बहुत ही साधारण रूप मे कोई क्रिया पूरी करने मे समर्थ होता है। जैसे—(क) वह भी टूटी-फूटी हिन्दी पढ या बोल लेता है। (ख) मैं भी कुछ कुछ सस्कृत समझ लेता हूँ। (ग) रोगी अब सौ दो सौ कदम चल लेता है।

लेना-देना—पु० [हिं०] १ लेने और देने की क्रिया या भाव। लेन-देन।

मुहा०—लिये-दिये=साथ मे लिये हुए। साथ लेकर। उदा०—विचरूँगी व्योम मे भी उनको लिये-दिये। —मैथिली शरण गुप्त। **ले-देकर**=सब बातो के हो चुकने पर। अत मे। जैसे—सब ले-देकर यही कलक हाथ आया। **(किसी से कुछ) लेना-देना होना**=कोई सबध या सरोकार होना। जैसे—वह जहन्नुम मे जाय, हमे उससे क्या-लेना-देना है।

२ वास्ता। सबध। सरोकार।

पद—ले-दे=आपस मे होनेवाली कहा-सुनी या हुज्जत। जैसे—इतनी ले-दे के बाद भी नतीजा कुछ न निकला।

लेनिहार—वि०=लेनदार।

लेप—पु० [स० लिप् (लीपना)+घञ्] १ गीली या घोली हुई वस्तु जो किसी दूसरी चीज पर पोती जाने को हो। २ इस प्रकार पोती हुई वस्तु की परत।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—लगाना।

३ शरीर पर लगाया जानेवाला उवटन। बटना। ४ लगाव। सपर्क।

लेपक—वि० [स०√लिप्+ण्वुल्—अक] लेप करने अर्थात् पोतने या लगानेवाला कारीगर।

पु० १ चूना छूनेवाला मिस्तरी। ३. साँचा बनानेवाला कारीगर।

लेप-कामिनी—स्त्री० [स० मध्य० स०] साँचे मे ढली हुई स्त्री की मूर्ति।

लेपकार—वि०, पु० [स० लेप√कृ (करना)+अण्]=लेपक।

लेपन—पु० [स०√लिप्+ल्युट्—अन] [वि० लेपित, लेप्य, लिप्त] १ लेप लगाना। २ चूना छूना।

लेपना—स० [सं० लेपन] पतले या गाढे घोल मे उँगलियाँ, कूची या पुचारा भिगोकर किसी अग, दीवार, छत, चूल्हे-चौके या और किसी पदार्थ पर इस प्रकार फेरना या लगाना कि उस पर उक्त घोल की एक परत चढ या जम जाय। लीपना।

लेपनीय—वि० [स०√लिप्+अनीयर्] जो लेप के रूप मे लगाया जा सके या लगाया जाने को हो।

ले-पालक—पु० [हिं० लेना+पालना] १. किसी दूसरे का ऐसा लड़का जो अपने आप लड़के की तरह रखकर पाला-पोसा गया हो। २ गोद लिया हुआ लडका। दत्तक पुत्र।

लेपी (पिन्)—वि० [स०√लिप्+णिनि] लेप करनेवाला।

पु०=लिपिक।

लेप्य—वि० [स०√लिप्+ण्यत्] १. जो लेप के रूप मे लगाया जा सकता हो। २. जिस पर लेप लगाया जा सकता हो। ३. साँचे मे ढाले जाने के योग्य।

लेप्य-नारी—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. वह स्त्री जिसने चदन आदि का लेप लगाया हो। २. पत्थर या मिट्टी की बनी हुई स्त्री की प्रतिकृति या मूर्ति।

लेफ्टिनेंट—वि० [अं०] (अधिकारी) जो किसी दूसरे अधिकारी से पद मे कुछ घटकर हो तथा विशिष्ट अवसरो पर उसका प्रतिनिधित्व करता हो और उसकी अनुपस्थिति मे उसके सब अधिकार ग्रहण करता हो। जैसे—लेफ्टिनेंट-गवर्नर, लेफ्टिनेन्ट-कर्नल।

पु० १. एक सैनिक पद जो कप्तान के पद से घटकर होता है। २. उक्त पद पर काम करनेवाला अधिकारी।

लेबर—पु० [अ०] १. श्रम (बौद्धिक और शारीरिक) २ श्रमिक-वर्ग। ४. श्रमिको का संघटन या समुदाय।

लेबर यूनियन—स्त्री० [अ०] मजदूरो या श्रमिको का सघ या सस्था। श्रमिक।

लेबरर—पु० [अ०] मजदूर। श्रमिक।

लेबुल—पु० [अ०] किसी चीज पर लगी हुई वह परची जिस पर उस चीज का विवरण लिखा होता है।

लेबोरेटरी—स्त्री० [अ०] दे० 'प्रयोगशाला'।

लेमन-चूस—पु० [अ० लेमन-ड्रॉप्स] १. बच्चो के खाने के लिए चीनी की वह छोटी टिकियाँ जिनमे नीबू का सत आदि पड़ा रहता है। २. चूसी जानेवाली चीनी की गोली या टिकिया।

लेमनेड—पु० [अ०] पाश्चात्य ढग से बनाया हुआ नीबू का वह शरबत जो बोतलो मे बन्द करके बाजारो मे बेचा जाता है। मीठा पानी।

लेमर—पुं० [अं०] बन्दरो से मिलता-जुलता अफ्रीका का एक प्रकार का जन्तु जो पेडो पर रहता है।
लेमू—पुं० [फा०] नीबू।
लेरु, लेरुआ—पुं० [?] गौ, बकरी, भेड़, भैंस आदि का बच्चा।
लेला†—पुं० [?] [स्त्री० लेली] १ बच्चा। २. शिशु। (पश्चिम)
लेलिह—पुं० [स०√लिह् (आस्वादन)+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह+अच्] १. जूँ। लीख। २. साँप।
लेलिहान—वि० [स०√ लिह्+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह्+ शानच्] १. चखने या चाटनेवाला। २ ललचाया हुआ।
पुं० १. वार-वार चाटना। २. लप लप करना। लपलपाना। ३ शिव का एक नाम या रूप। ४. सर्प। साँप।
लेलिह्य—वि० [स०√लिह्+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह्+ण्यत्] १. बार-बार चाटे जाने के योग्य। २. जो लप लप करता या कर सकता हो।
लेव—पुं० [स० लेप] १. दाल-भात आदि पकाने की डेगची या हाँडी के निचले बाहरी अश पर किया जानेवाला मिट्टी का लेप। २ लेप।
मुहा०—लेव चढ़ना=आदमी का मोटा होना। (व्यग्य)
लेवक—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी इमारत के काम आती है।
लेवरना†—वि०=लेवारना।
लेवा—वि० [हिं० लेना] लेनेवाला। जैसे—नाम-लेवा, जान-लेवा।
पुं० [सं० लेप्य हिं० लेप] १. किसी चीज पर चढ़ाया जानेवाला मिट्टी आदि का लेप। लेव। २. गीली मिट्टी जो लेपने या लेवा लगाने के काम आती हो। गिलावा।
क्रि० प्र०—लगाना।
३ अधिक पानी विशेषत. वर्षा के कारण खेत का गिलाव। ४. थन। ५. नाव की पेंदी पर का वह तख्ता जो सिरे से पतवार तक लगाया जाता है।
†पुं०=लेव।
लेवा-देई†—स्त्री०=लेन-देन।
लेवार—पुं० [स०] अग्रहार।
पुं० २=लेव या लेवा (गिलाव)।
लेवारना—स० [हिं० लेवार] १. लेप लगाना। लेपना। २. आग पर चढाने से पहले बरतन के पेंदे मे लेवा लगाना।
लेवाल—वि० [हिं० लेना+वाला] १. लेनेवाला। जैसे—नाम लेवाल =नाम लेनेवाला। २. खरीदनेवाला। खरीदार। 'बेचवाल' का विपर्याय।
लेश—पुं० [स०√लिश् (कम होना)+घञ्] १ अणु। २. किसी चीज का बहुत थोडा अश। ३ सूक्ष्मता। ४. चिह्न। निशान। ४ लगाव। सबध। ६ साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी दोष के साथ अच्छाई का या अच्छाई के साथ दोष का भी उल्लेख होता है। ७ एक प्रकार का गाना।
वि० थोड़ा।
लेशी (शिन्)—वि० [स० लिश्+णिनि] जिसमे किसी दूसरी चीज का लेश या सूक्ष्म अश हो।
लेशोक्त—वि० [स० लेश-उक्त, तृ० त०] संक्षेप मे या सकेत रूप मे कहा हुआ।
लेश्या—स्त्री० [स० लिश्+ण्यत्+टाप्] जैनियो के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसमे वह कर्मो से बँधता है।
लेष—पुं० १ =लेस। २.=लेश।
लेषना—स०=लेखना।
लेषनी—स्त्री०=लेखनी।
लेस—स्त्री० [स० श्लेष] १. लसीला पदार्थ। २ लासा। ३. लेसने की क्रिया या भाव। ४. लगाव। सबध। उदा०—निरखि नवोढा नारितन छुटत लरिकई लेस।—विहारी।
लेसना—स० [स० लेश्या (दीप्ति), प्रा० लेस्या या स० लसा] जलाना। जैसे—दीया लेसना।
स० [हिं० लेस या लस] १. कोई चिपचिपी चीज लगाकर चिपकाना या सटाना। जैसे—दीवार पर कागज लेसना। २ लेप लगाना। पोतना। ३ दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। ४. किसी की निन्दासूचक या लडाई-झगड़ा करनेवाली बात दूसरे से जाकर कहना। जैसे—हमने तुमको यो ही एक बात कही थी, तुमने वहाँ जाकर उनसे लेस दी।
लेहँड़ा†—पुं० लहँडा (जन्तुओ का)।
लेह—पुं० स०√लिह्+घञ्] १. चाटकर खाई जानेवाली चीज। २. अवलेह। २ ग्रहण का एक भेद जिसमे पृथ्वी की छाया (या राहु) सूर्य या चद्र बिम्ब को जीभ के समान चाटती हुई जान पड़ती है।
लेहन—पुं० [स०√लिह् (आस्वादन) +ल्युट्—अन] जीभ से चाटना।
लेहना—पुं० [हिं० लहना] १. खेत मे कटे हुए शस्य या फसल का वह अग जो काटने वाले मजदूरो को मजदूरी के रूप मे दिया जाता है। २ कटी हुई फसल की वह डठल जो नाई, धोबी आदि को दिया जाता है। ३. डठल या पयाल आदि की वह मात्रा जो उठाने वाले के दोनो हाथो मे आ सके। ४. दे० 'लहवा'।
†स० [स० लेहन] चाटना।
†स०=लेसना।
लेहसित*—वि० [हिं० लसना] १ शोभा देने या सुन्दर लगनेवाला। २ किसी से मिश्रित या युक्त। उदा०—लखैंगी लाल की ओर लाज लेहसित नैननि सो—रत्नाकर।
लेहसुआ—†पुं०=लहसुआ (घास)।
लेहाजा—अव्य० [अ०] इसलिए। इस वास्ते। इस कारण।
लेहाड़ा†—वि०=लिहाड़ा।
लेहाड़ी—स्त्री०=लिहाडी।
लेहाफ—पुं०=लिहाफ।
लेही (हिन्)—वि० [स०√लिह (आस्वादन)+णिनि] चाटनेवाला।
लेह्य—पुं० [स०√लिह् (आस्वादन)+ण्यत्] १. वह पदार्थ जो चाटकर खाया जाता है। जैसे—अचार, चटनी आदि, (यह भोजन के छ प्रकारो मे से एक है।) २ अवलेह।
वि० (पदार्थ) जो चाटकर खाया जाता हो।
लैंग—वि० [स० लिंग+अण्] लिंग-सम्बन्धी। लिंग का।
लैंगिक—पुं० [स० लिंग+ठक्—इक] वैशेषिक दर्शन के अनुसार अनुमान।

प्रमाण। वह ज्ञान जो लिंग द्वारा प्राप्त हो। इसी को न्याय में अनुमान कहते हैं।

वि० १. लिंग-सम्बन्धी। लिंग का। लैंग। २. स्त्री या पुरुष के लिंग या जननेंद्रिय से संबंध रखनेवाला। योनि-संबंधी। (सेक्सुअल)

लैंडो—स्त्री०[अं०] एक प्रकार की छायादार घोड़ा-गाड़ी।

लैंप—पुं०[अं०] दीपक। चिराग। लंप।

लै—स्त्री०=लय (संगीत की)।

पुं०=लय (लीनता)।

†अव्य०=लौं (तक)।

लैटिन—स्त्री० इटली देश की प्राचीन भाषा जो किसी समय सारे यूरोप में विद्वानों तथा पादरियों की भाषा थी। इसका साहित्य बहुत उन्नत था इसी लिए अब भी इसका अध्ययन किया जाता है।

वि० प्राचीन रोम नगर से संबंध रखनेवाला।

लैन—स्त्री०=लाइन।

लैपा—पुं० [हिं० लपना] वह धान जो अगहन में काटा जाता है। अगहन। शाली। लवक।

†स्त्री०=लाई।

लैर—पुं०[?] किसी आदमी या चीज का पिछला भाग। पीछा। (राज०) अव्य० १. साथ साथ। २ पीछे पीछे।

लैरु—पुं०[?] बछड़ा।

लैल—स्त्री० [फा०] रात।

पद—लैलोनिहार=रात और दिन।

लैला—स्त्री०[फा०]१. लैला-मजनूँ की प्रेम कहानी की प्रसिद्ध नायिका और मजनूँ की प्रेमिका। २. प्रेयसी। ३. सुन्दरी।

लैसंस—पुं०[अं० लाइसेंस] अनुज्ञा। (दे०)

लैस—पुं० [हिं० लेस] एक प्रकार का सिरका २. लंबी नोकवाला एक प्रकार का तीर। ३. कमानी।

वि०[अं० लेस]१. वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार। २. सब प्रकार के आयोजन, सामग्री आदि से युक्त और काम में लाये जाने के योग्य।

स्त्री० कपड़ों पर टाँकने का किसी प्रकार का कामदार बेल-बूटेवाला फीता या बेल।

लौं—अव्य०=लौं।

लोंदा—पुं०[स्त्री० अल्पा०, लोंदी]१. गीले पदार्थ का वह अंश जो ढेले की तरह बँधा हो। जैसे—घी का लोंदा, दही का लोंदा, मिट्टी का लोंदा। २. गली या घुली हुई वस्तु की वह अवस्था या आकृति जो उसे गलने के बाद ठंढा होने के लिए छोड़ने पर प्राप्त होती है।

लो—अव्य०[हिं० लेना] लीजिए की तरह प्रयुक्त एक निरर्थक अव्यय जिसका प्रयोग सहसा सुनी हुई कोई आश्चर्यजनक बात किसी दूसरे को सुनाते समय किया जाता है। जैसे—लो और सुनो।

लोइ—स्त्री० [सं० रोचि, प्रा० लोई]१ प्रभा। दीप्ति। २. आग की लौ।

†पुं० १.=लोग। २.=लोग।

लोइन—पुं० १.=लोचन (आँख)। २. लावण्य।

लोई—स्त्री०[सं० लोप्ती; प्रा० लोवी] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जो एक रोटी बनाने के लिए निकालकर गोली के आकार का बनाया जाता है और जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।

स्त्री०[सं० लोमीय=लोई]१. एक प्रकार का कंबल जो पतले ऊन से बुना जाता है, और साधारण कंबल से कुछ अधिक लंबा और चौड़ा होता है। २. कबीर की तथा-कथित पत्नी का नाम। प्रवाद है कि यह नवजात शिशु के रूप में किसी को लोई में लपेटी हुई मिली थी, इसी से इसका यह नाम पड़ा था।

लोकंजना—पुं०=लोपांजन।

लोकंदा—पुं०[हिं० लोकना] [स्त्री० लोकंदी]१. विवाह में कन्या के डोले के साथ दास या दासी भेजने की क्रिया। २ वह दास जो कन्या के डोले के साथ उसकी सेवा के लिए भेजा जाता है। ३. चंचल, चरित्रहीन और दुष्ट व्यक्ति। उदा०—नंद को पूत वह धूत लोकंदा।

लोक—पुं०[सं० √ लोक् (दर्शन)+घञ्]१. कोई ऐसा स्थान जिसका बोध देखने से होता हो। जगह। २. जगत् या संसार। ३. विश्व का कोई विशिष्ट भाग या स्थान जिसमें कुछ अलग प्रकार के जीव या प्राणी रहते हैं। जैसे—जीवलोक, देवलोक। ब्रह्मलोक, मनुष्यलोक आदि। ४ पुराणानुसार किसी विशिष्ट देवता के रहने का वह स्थान जहाँ मरने पर उसके भक्त जाकर रहते हैं। जैसे—विष्णुलोक।

विशेष—हमारे यहाँ अनेक दृष्टियों से कई प्रकार के लोक माने गये हैं, और इनकी अलग अलग संख्याएँ कही गई हैं। मूलत. तीन ही लोक माने जाते थे, स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल। पर आगे चलकर चौदह लोक माने जाने लगे जिसमें से सात हमारे ऊपर और सात हमारे नीचे कहे गये हैं। ऊपर के सात लोक ये हैं भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक तपर्लोक और सत्यलोक या ब्रह्मलोक। नीचे के सात लोकों के नाम क्रमात् ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल। ४ उक्त के आधार पर सात अथवा चौदह की सूचक संख्या। ५. पृथ्वी की कोई विशिष्ट दिशा या प्रांत।

पद—लोक-पाल।

६. सारी मानवजाति। ७. किसी राजा या राज्य के अधीन रहनेवाले लोग। प्रजा। ८. किसी देश या स्थान में रहनेवाले सब मनुष्यों का वर्ग, समाज या समूह। लोग। ९ देश का कोई प्रान्त या विभाग। प्रदेश। १० लोगों में प्रचलित प्रणाली, प्रथा, या रीति। ११. जीव। प्राणी। १२. देखने की इन्द्रिय या शक्ति। दृष्टि। १३. कीर्ति। यश।

पुं०[?] बत्तख की तरह का एक प्रकार का बड़ा पक्षी।

लोक-कंटक—पुं०[सं० ष० त०]१. वह जो समाज का कलंक, विरोधी या हानिकारक हो। दुष्ट प्राणी। २. कोई ऐसा काम या बात जिससे लोगों को कष्ट होता हो। (नुएन्सेन्स)

वि० जन-साधारण को कष्ट देने या पीड़ित करनेवाला।

लोक-कथा—स्त्री०[सं० ष० त०] लोक विशेषतः ग्राम्य लोगों में प्रचलित कोई प्राचीन गाथा।

लोक-कर्ता (र्तृ)—पुं०[सं० ष० त०]१. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महेश।

लोक-काम—वि०[सं० लोक√कम् (चाहना)+णिङ्+अण्, उप० स०] किसी विशेष लोक में जाने की कामना करनेवाला।

लोककार—पुं०[सं० लोक√ कृ+अण्, उप० स०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

लोक-गत—वि० [स० द्वि० त०] जिसे जन-साधारण ने अपनाकर स्वीकृत कर लिया हो। लोक मे प्रचलित तथा प्रिय।

लोक-गति—स्त्री० [स० प० त०] लोकाचार।

लोक-गाथा—स्त्री० [स० मध्य० स०] परंपरा से चले आये हुए वे गीत आदि जो लोक मे प्रचलित हो।

लोक-गीत—पुं० [स० मध्य० स० या प० त०] गाँव-देहातो मे गाये जानेवाले जन-साधारण के वे गीत जो परम्परा से किसी जन-समाज मे प्रचलित तथा लय-प्रधान हो। (फोक साँग) जैसे—भिन्न भिन्न ऋतुओ मे त्योहारो पर अथवा धार्मिक उत्सवो, सस्कारो आदि के समय गाये जानेवाले गीत।

लोक-घोषणा—स्त्री० [स० स० त०] सब लोगो की जानकारी के लिए की जानेवाली घोषणा। (मैनिफेस्टो)

लोक-चक्षु (स्)—पुं० [स० प० त०] सूर्य।

लोकचार—पु०=लोकाचार।

लोकजित्—पु० [स०लोक√जि (जय) + क्विप्, तुगागम] गौतम बुद्ध।

लोक-जीवन—पु० [स० मध्य० स०] १ घरेलू जीवन से भिन्न वह चर्या जिसमे व्यक्ति सार्वजनिक महत्त्व के कार्यों मे संलग्न रहता है। २ वह अवधि या भोग-काल जिसमे कोई व्यक्ति सार्वजनिक कार्य करता है। (पब्लिक लाइफ)

लोकज्ञ—वि० [स० लोक √ज्ञा (जानना) +क] १ लोगो की प्रवृत्तियो, मनोभाव आदि जाननेवाला। २ लौकिक या सासारिक व्यवहारो मे कुशल। दुनियादार।

लोकटी†—स्त्री०=लोमड़ी।

लोक-तंत्र—पु० [स० प० त०] [वि० लोकतात्रिक] वह शासन-प्रणाली जिसमे जन-साधारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे अपने राष्ट्र या राज्य पर शासन करता हो। जनता का शासन। (डिमोक्रेसी)

लोक-तंत्रिक—वि० [स०लोकतात्रिक] लोकतन्त्र-सम्बन्धी। (डिमोक्रेटिक)

लोक-तंत्री (त्रिन्)—वि० [सं० लोकतत्र+इनि] लोक तत्र के सिद्धान्तो का प्रतिपादक या समर्थक। (डैमोक्रैट)

लोकतांत्रिक—वि० [स० लोकतत्र+ठक्—इक] =लोक-तात्रिक।

लोक-दूषण—वि० [स०प० त०] १.लोगो को हानि पहुँचानेवाला। २ लोगो मे दोष निकालनेवाला।

लोक-धर्म—पु० [स० प० त०] वास्तविक धर्म से भिन्न वे बातें या कृत्य जो जन-साधारण मे प्राय धर्म के रूप मे ही प्रचलित हो। जैसे—तत्र-मत्र भूत-प्रेत की पूजा-वीर पूजा आदि।

लोक-धारिणी—स्त्री० [स० प० त०] पृथ्वी।

लोक धुनि—स्त्री० [स० लोक-ध्वनि] अफवाह। किंवदती।

लोकन—पु० [स०√लोक् (देखना) +ल्युट्—अन्] अवलोकन।

लोकना—स० [?] १ उडती गिरती या फेंकी हुई वस्तु को जमीन छूने से पहले ही हवा मे पकड लेना। जैसे—उछाला हुआ गेंद या कटी हुई पतग लोकना। बीच मे उडा या हडप लेना।
पु० [स्त्री० लोकनी] दे० 'लोकदा'।

लोक-नाट्य—पु० [सं० मध्य० स०] शास्त्रीय नियमो से बननेवाले नाटको से भिन्न वे नाटक या अभिनय जो जन-साधारण बिना नाट्य-कला सीखे अपनी उद्भावना से बनाते और जन-साधारण को दिखलाते हैं। जैसे—कठपुतली का नाच, नौटकी, रासलीला आदि।

लोक-नाथ—पु० [स० प० त०] १ ब्रह्मा। २ लोकपाल। ३ गौतम बुद्ध।

लोक-निर्माण—पु० [स० प० त०] लोक-वस्तु।

लोकनी†—स्त्री०=लोकंदी।

लोकनीय—वि० [स० √ लोक् (दर्शन)+अनीयर्] अवलोकन करने योग्य। दर्शनीय।

लोक-नृत्य—पु० [स० मध्य० स०] शास्त्रीय नृत्य-कला से रहित ऐसे नाच जो गाँव-देहात के लोग उमग मे आकर नाचते है। (फोक डान्स) जैसे—अहीरो, धोबियो आदि के नृत्य, मणिपुरी, मन्थाली आदि नृत्य।

लोक-पद—पु० [स०] लोक या जनता की सेवा से सम्बन्ध रखनेवाला राजकीय पद या ओहदा। (पब्लिक आफिस)

लोक-पाल—पु० [स० लोक√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] १ दिक्पाल। २. नरेश।

लोक-पितामह—पु० [स० प० त०] ब्रह्मा।

लोक-प्रत्यय—पु० [स० ब० स०] वह जो ससार मे सर्वत्र दिखाई देता या मिलता हो।

लोक-प्रवाद—पु० [स० स० त०] १ ऐसी साधारण बात जो ससार के सभी लोग कहते और समझते हो। २ लोक मे प्रचलित प्रवाद या किंवदती।

लोक-प्रवाही (हिन्)—वि० [सं० लोक-प्रवाह,प० त०,+इनि] लोगो की प्रवृत्ति या रुख देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला।

लोक-प्रिय—वि० [स० प० त०] [भाव० लोक प्रियता] १ जो जन-साधारण को प्रिय तथा रुचिकर प्रतीत होता हो। २. समाज के बहुमत की पसद या रुचि के अनुकूल होनेवाला। जैसे—लोकप्रिय-साहित्य।

लोकप्रियता—स्त्री० [स० लोकप्रिय+तल्+टाप्] लोकप्रिय होने की अवस्था या भाव। (पॉपुलेरिटी)

लोक-बंधु—पु० [स० प० त०] १. शिव। २ सूर्य।

लोक-बाह्य—वि० [स०प०त०] १. जो इस लोक या संसार मे न होता या न दिखाई देता हो। २ जो साधारण जन-समाज मे न होता हो। ३. बिरादरी या समाज से निकाला हुआ। ४. झक्की। सनकी।

लोक-भावन—पु० [स० प० त०] १. लोक की रचना करनेवाला। २ लोक की भलाई करनेवाला।

लोक-भावना—स्त्री० [स०प० त०] लोक अर्थात् जनता का उपकार, सेवा आदि करने की भावना या वृत्ति। (पब्लिक स्पिरिट)

लोक-मत—पु० [स० प० त०] किसी बात या विषय मे देश या समाज में रहनेवाले सब अथवा अधिकतर लोगो का मत, राय या विचार। समाज के बहुत से लोगो का ऐसा मत जो किसी एक दल या वर्ग का नही बल्कि समष्टि के विचार या हित का सूचक हो। (पब्लिक ओपीनियन)

लोक-माता (तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] १ लक्ष्मी। २ गौरी।

लोक-यात्रा—स्त्री० [सं० प०त०] संसार मे रहकर लोगो के साथ व्यवहार करना।

लोक-रजन—पु० [स० प० त०] सब को प्रसन्न तथा सुखी रखना।
वि० सबको प्रसन्न तथा सुखी रखनेवाला।

लोक-रंजनी—स्त्री० [सं० ष० त०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

लोक-रक्षक—वि० [सं० ष० त०] सब लोगो की रक्षा करनेवाला। पु० १ राजा। २ शासक।

लोकल—वि० [अं०] १ (निवासियो की दृष्टि से उनके) नगर या गाँव की सीमा के अन्दर-अन्दर होनेवाला। जैसे—लोकल पालिटिक्स। २ जिसका संबंध किसी विशिष्ट गाँव, नगर आदि मे ही सीमित हो। जैसे—लोकल पोस्टकार्ड।

लोक-लीक—स्त्री० [सं० लोक+हिं० लीक] लोक मे प्रचलित प्रथाएँ और मर्यादा।

लोक-लोचन—पु० [सं० ष० त०] सूर्य।

लोक-वदंती—स्त्री० [मं० मध्य० स०] लोक मे प्रचलित चर्चा। अफवाह। किंवदंती।

लोक-वाद—पु० [सं० ष० त०] १ कहावत। २ किंवदंती। अफवाह।

लोक-वार्ता—स्त्री० [सं० ष० त०] इतिहास, पुरातत्त्व आदि के अध्ययन का वह अंग जिसमे लोक मे प्रचलित पुरानी धारणाओं, प्रथाओ, विश्वासो आदि से संबंध रखनेवाली बातो का विचार या विवेचन होता है। (फोक-लोर)

लोक-वास्तु—पु० [सं० ष० त०] १. राज्य या शासन का वह विभाग जो लोक के उपयोग तथा कल्याण के लिए इमारतें, नहरें, सडकें आदि बनाता है। (पब्लिक वर्क्स) २. जन-साधारण तथा राजकीय विभागो के काम मे आनेवाली इमारतें, सडकें आदि।

लोक-वाहक—पु० [सं० ष० त०] जनता का सामान ढोने लिए प्रयुक्त मोटर गाडियाँ आदि। (पब्लिक कैरियर)

लोक-विरुद्ध—वि० [सं० तृ० त०] (आचरण, कथन या कार्य) जो लोक मे प्रचलित न हो और इसी लिए ठीक न माना जाता हो।

लोक-विश्रुत—वि० [सं० स० त०] ससार भर मे अर्थात् सब जगह प्रसिद्ध। जगद्विख्यात।

लोक-वेद—पु० [सं०, लोक और वेद से] हिन्दुओ मे प्रचलित वे पौराणिक और सामाजिक आचार-विचार जिन्हे लोग वेदो के विधान के समान ही आवश्यक और मान्य समझते हैं।

लोक-व्यवहार—पु० [सं० ष० त०] १ वह व्यवहार जो लोक मे सब लोगो से मेल-जोल बनाए रखने के लिए करना पडता है। लोकाचार। २ समाज की मर्यादा के विचार से किया जानेवाला शिष्ट व्यवहार।

लोक-शांति—स्त्री० [सं० स० त०] लोक अर्थात् जन-साधारण या समाज मे बनी रहनेवाली ऐसी शांति जिसमे किसी प्रकार का उत्पात, उपद्रव या लड़ाई-झगड़ा न हो। (पब्लिक पीस)

लोक-शासन—पु० [सं० ष० त०] देश या राज्य का ऐसा शासन या सरकार जो लोक-मत के आधार पर चलती हो। जन-तन्त्र। (पापुलर गवर्नमेंट)

लोक-श्रुति—स्त्री० [सं० स० त०] जनश्रुति। अफवाह।

लोक-संग्रह—पु० [सं० ष० त०] १ सब लोगो को प्रसन्न रखकर उन्हे अपने साथ मिलाये रखना। २ ससार के सभी लोगो के कल्याण या मगल का ध्यान रखना। ३ लोगो को अपनी ओर मिलाना या अपने पक्ष मे करना।

लोक-संग्रही (हिन्)—वि० [सं० लोक-संग्रह+इनि] जो सब लोगो को प्रसन्न रखकर अपने पक्ष मे करता हो।

लोक-संस्कृति—स्त्री० [सं० ष० त०] साधारण जन-समाज मे प्रचलित वे सब बातें जो सिद्धान्तत: संस्कृति के क्षेत्र से संबद्ध हों।

लोक-सत्ता—स्त्री० [सं० ष० त०] लोक-तात्रिक शासन प्रणाली के द्वारा लोक या सारी जनता को प्राप्त होनेवाली सत्ता।

लोक-सत्ताक—वि० =लोक-सत्तात्मक।

लोक-सत्तात्मक—वि० [सं० लोकसत्ता-आत्मन्, ब० स०+कप्] १ लोक-सत्ता संबंधी। लोक-सत्ता का। २. (देश या राज्य) जिसमे लोक-तान्त्रिक शासन-प्रणाली प्रचलित हो।

लोक-सदन—पु० [सं० ष० त०] लोक-सभा। (दे०)

लोक-सभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. प्रतिनिधि सत्तात्मक या प्रजातन्त्र शासन मे साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियो की वह सभा जो देश के लिए विधान आदि बनाती है। २ भारतीय संविधान मे उक्त प्रकार की केन्द्रीय सभा। (हाउस आफ पीपुल्स) ३. इंगलैण्ड मे उक्त प्रकार की सभा। (हाउस आफ कामन्स)

लोक-सिद्ध—वि० [सं० स० त०] इतिहास या शास्त्र-सम्मत न होने पर भी जिसे जन-साधारण ठीक मानता हो। जन-सामान्य मे मान्य और प्रचलित।

लोक-सुंदर—वि० [सं० स० त०] जो सब की दृष्टि मे अच्छा हो। पु० गौतम बुद्ध।

लोक-सेवक—पु० [सं० ष० त०] १. वह जो लोक अर्थात् जनता की सेवा या हित के कामो मे लगा रहता हो। २. वह अधिकारी या कर्मचारी जो राज्य या शासन की ओर से जनता की सेवा और हित के लिए नियुक्त हो। (पब्लिक सर्वेन्ट)।

लोक-सेवा—स्त्री० [सं० ष० त०] १ जन-साधारण की सेवा अर्थात् उपकार या हित के लिए नि:स्वार्थ भाव से किये जानेवाले काम। २ राज्य या शासन की नौकरी जो वस्तुत: जन-साधारण की सेवा या हित के लिए होती है। (पब्लिक सर्विस)

लोक-सेवा-आयोग—पु० [सं० ष० त०] राज्य द्वारा नियुक्त कुछ व्यक्तियो का वह आयोग या समिति जिसके जिम्मे राजकीय सेवाओ से सम्बन्ध रखनेवाले पदो पर नियुक्त करने के लिए प्रार्थियो मे से उपयुक्त तथा योग्य व्यक्ति चुनने का काम होता है। (पब्लिक सर्विस कमीशन)

लोक-स्वास्थ्य—पु० [सं०] सार्वजनिक रूप से जनता या लोगो का स्वास्थ्य। (पब्लिक हेल्थ)

लोक-हार—पु० [सं० लोक√हृ (हरण)+अण्, उप० स०] संसार का नाश करनेवाले शिव।

लोक-हित—पु० [सं० ष० त०] लोक-सेवा। (दे०)

लोकांतर—पु० [सं० अन्य-लोक, मयू० स०] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है। पर-लोक।

लोकांतरण—पु० [सं० लोकांतर+णिच्+ल्युट्—अन] इस लोक से हटाकर दूसरे लोक मे कर देना।

लोकांतरित—भू० कृ० [सं० लोकांतर+णिच्+क्त] १. जो इस लोक से दूसरे लोक मे चला गया हो। २. जो मर चुका हो।

लोकाचार—पुं०[सं० लोक-आचार, प० त०] १ वह व्यवहार जो दूसरों से सामाजिक संबंध बनाए या स्थिर रखने के लिए आवश्यक समझा जाता हो। २ दे० 'लोक व्यवहार'।

लोकाचारी (रिन्)—वि० [सं० लोकाचार+इनि] १. लोकाचार का आचरण या पालन करनेवाला। २ दिखावटी आचरण या व्यवहार करनेवाला। ढोंगी। ३. लोक को प्रसन्न रखनेवाला आचरण अथवा व्यवहार करनेवाला। दुनियादार।
स्त्री०=लोकाचार।

लोकाट—पुं०=लुकाट।

लोकाधिक—वि०[सं० लोक-अधिक, प० त०] लोक अर्थात् संसार से परे या बाहर, अर्थात् असाधारण।

लोकाधिप—पुं० [सं० लोक-अधिप, ष० त०] १. लोकपाल। २. बुद्ध।

लोकाना—स०[हिं० लोकने का प्रे०] ऊपर से फेंकना। उछालना।

लोकानुग्रह—पुं० [सं० लोक अनुग्रह, स० त०] लोगों का कल्याण। लोक-हित।

लोकापवाद—पुं०[सं० लोक-अपवाद, स० त०] लोक-निंदा। बदनामी।

लोकायत—पुं०[सं० लोक-आयत=विस्तीर्ण]१. वह जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २. भारतीय दर्शन में एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय जिसके प्रवर्तक देव-गुरु बृहस्पति कहे जाते हैं। इसलिए इसे बार्हस्पत्य भी कहते हैं। प्रवाद है कि बृहस्पति ने असुरों का नाश कराने के लिए ही उनमें इस मत का प्रचार किया था।
विशेष—कुछ लोगों का मत है कि किसी समय लोक में इसी नास्तिक मत का सबसे अधिक प्रचार था। इसी लिए इसका नाम लोकायत पड़ा। इस मत का मुख्य सिद्धान्त यह है कि आत्मा, परलोक, नरक और स्वर्ग की कल्पनाएँ मिथ्या हैं, और वर्णाश्रम आदि का विधान व्यर्थ है।
३. चार्वाक दर्शन, जिसमें परलोक या परोक्षवाद का खंडन है। ४. दुर्मिल छंद का एक नाम।

लोकायतिक—वि०[सं० लोकायत+ठन्—इक] लोकायत-सम्बन्धी। लोकायत का।
पुं० १. लोकायत सम्प्रदाय का अनुयायी। २. नास्तिक।

लोकालोक—पुं०[सं० लोक-आलोक, कर्म० स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सातों समुद्रों और द्वीपों को चारों ओर से घेरे हुए है, और जिसके उस पार घोर अंधकार है। बौद्ध ग्रन्थों में इसी को चक्रवाल कहा गया है।

लोकित—वि०[सं० √लोक् (दर्शन)=क्त] देखा हुआ।

लोकेश्वर—पुं०[सं० लोक-ईश्वर, ष० त०] १ लोक का स्वामी। परमात्मा। २ गौतम बुद्ध।

लोकैषणा—स्त्री०[सं० लोक-एषणा, ष० त०] १. सांसारिक अभ्युदय की कामना। समाज में प्रतिष्ठा और यश की कामना। २. स्वर्ग-सुख की कामना।

लोकोक्ति—स्त्री०[सं० लोक-उक्ति, मध्य० स०] १ लोक में सनातन रूप से प्रचलित बात। कहावत। मसला। २ साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब लोकोक्ति के प्रयोग से काव्य में अधिक रोचकता आ जाती है।

लोकोत्तर—वि०[सं० लोक-उत्तर, पं० त०] लोक में होनेवाले पदार्थों या बातों से अधिक बढ़कर या श्रेष्ठ। जो इस लोक में न होता हो (पदार्थ या बात)।

लोकोपकार—पुं०[सं० लोक-उपकार, ष० त०] लोक या जन-साधारण के उपकार, लाभ या हित के काम।

लोकोपकारी (रिन्)—वि०[सं० लोकोपकार+इनि]१. लोगों का उपकार करनेवाला। २ लोकोपकार-संबंधी। ३. जिससे लोगों का उपकार होता हो।

लोकोपयोगि-सेवा—स्त्री०[सं० उपयोगिनी-सेवा कर्म० स०, लोक-उपयोगि-सेवा, ष० त०] वह सेवा या कार्य जो जनता के लिए विशेष उपयोगी या काम का हो। जैसे—नगर की जल-कल व्यवस्था, बिजली, सफाई आदि के काम। (पब्लिक युटिलिटी सर्विस)

लोखड़ी—स्त्री०=लोमड़ी।

लोखर—पुं०[हिं० लोहा+खण्ड]१. नाई के औजार। जैसे—छुरा, कैंची, नहरनी आदि। २. बढ़इयों, लोहारों आदि के लोहे के औजार। ३ दुकानदारों के लोहे के बटखरे।

लोग—पुं०[सं० लोक] [स्त्री० लुगाई] १. बहुत से मनुष्यों का दल, वर्ग समूह या समाज। २ दे० 'लोक'।

लोग-बाग—पुं०[हिं० लोग+बाग (अनु०)] साधारण लोग। जन-साधारण। (बहु० में प्रयुक्त)

लोगाई—स्त्री०=लुगाई (स्त्री)।

लोच—स्त्री०[हिं० लचक]१ वह गुण जिसके कारण कोई चीज दबाने पर दब जाती हो और दबाव न रहने पर फिर अपना सामान्य रूप प्राप्त कर लेती हो। २ कोमलता। मृदुता। ३ कोमलता पूर्ण सौन्दर्य।
पुं०[सं० लुंचन] जैन साधुओं का अपने सिर के बालों को उखाड़ना। लुंचन।
†स्त्री०=रुचि।

लोचक—वि०[सं० √ लोच् (दर्शन)+ण्वुल्—अक] १. जिसका आहार दूध हो। २ मूर्ख। बेवकूफ।
पुं० १. आँख का तारा या पुतली। २. काजल। ३. मांस-पिंड। ४. माथे पर पहनने का एक गहना। ५ केला। ६ साँप की केंचुली। ७. धनुष की पतंचिका।

लोचन—पुं०[सं०√लोच्+ल्युट्—अन] आँख। नेत्र। नयन।
वि० चमकानेवाला।

लोचना†—स०[सं० लोचन]१. प्रकाशित करना। चमकाना। २ इच्छा या कामना करना। ३ किसी में किसी बात का अनुराग या रुचि उत्पन्न करना। ४ विचार करना। सोचना। ५ देखना।
अ० १. इच्छा, कामना या रुचि होना। २. तरसना या ललचाना। ३ शोभा देना। फबना। ४ तृप्त होना। उदा०—लोचन उतावरे है, लोचै हाय कैसे हो।—घनानंद।
पुं० दर्पण। शीशा। विशेषतः हज्जामों के पास रहनेवाला शीशा।
मुहा०—(कहीं)लोचना भेजना=नाई या हज्जाम के द्वारा संबंधियों

आदि के यहाँ शुभ समाचार अथवा धार्मिक संस्कार का निमंत्रण भेजना।

लोचून—पु०=लोह-चून।

लोजग—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की नाव।

लोट—स्त्री०[हिं० लोटना]१. लोटने की क्रिया या भाव।

मुहा०—लोट मारना या लगाना=लेटना। **(किसी पर) लोट होना**=(क) आसक्त या मोहित होना। (ख) विकल होना।

२ जलाशय के किनारे पर का घाट। ३ त्रिवली।

†पु०=नोट।

लोटन—वि० [हिं० लोटना]१ लोटने अर्थात् जमीन पर उलटबाजी लगानेवाला। जैसे—लोटन कबूतर। २ लुढकनेवाला।

स्त्री० १ लोटने की क्रिया या भाव। २ छोटी कंकडियाँ जो तेज हवा चलने पर इधर-उधर लुढकने लगती हैं। ३ कटीली झाडी। ४ एक प्रकार की सब्जी।

पु० एक तरह का कबूतर जो चोंच से पकडकर जमीन पर लुढकाये जाने पर लोटने लगता है। २ एक प्रकार का छोटा हल।

लोटना—अ०[हिं० लोट] १ थकावट आदि मिटाने के उद्देश्य से लेटे लेटे पेट और पीठ के बल लुढकना या उलटे-पुलटे होते रहना। २ क्रोध, जिद, दु:ख, शोक आदि के कारण उक्त प्रकार से पडकर इधर-उधर होना।

मुहा०—लोट जाना=(क) मर जाना या मृतप्राय हो जाना। (ख) दिवालिया हो जाना। **(किसी बात) पर लोटना**=जिद करना। हठ करना।

३ अधिक प्रसन्नता के फलस्वरूप इधर-उधर गिरना पडना। जैसे—हँसते हँसते लोट जाना। ४ किसी पर पूरी तरह से आसक्त होना।

सयो० क्रि०—जाना।

अ०[हिं० लोटना] मुकर जाना।

लोट-पटा—पु०[हिं० लोटना+पाटा]१ विवाह के समय पीढा या स्थान बदलने की रीति। इससे वर के स्थान पर वधू को और वधू के स्थान पर वर को बैठाया जाता है। २ किसी को धोखा देने के लिए किया जानेवाला उलट-फेर या दाँव-पेच।

लोट-पोट—स्त्री०[हिं० लोटना] लेटे-लेटे करवटें बदलने या लोटने की क्रिया या भाव।

वि० १ हँसते हँसते अपने को सभाल न सकने के कारण लोट जानेवाला। २ बहुत अधिक प्रसन्न। ३ उलटा-पुलटा हुआ। विपर्यस्त। ४ छिन्न-भिन्न किया हुआ।

लोटा—पु० [हिं० लोटना] [स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक प्रकार का प्रसिद्ध गोलाकार बरतन जो पानी रखने के काम आता है।

पद—बे पेंदी का लोटा=ऐसा व्यक्ति जिसका अपना कोई मत या सिद्धान्त नही होता, वरन् जो दूसरो की बातो पर इधर उधर ढुलकता फिरता हो।

लोटिया—स्त्री०=लुटिया।

लोटी—स्त्री०[हिं० लोटा+ई(प्रत्य०)]१ लोटे के आकार का वह बरतन जिससे तमोली पान सींचते हैं। २ छोटा लोटा। लुटिया।

स्त्री०[हिं० लूटना]१ लूटने की क्रिया या भाव। लूट। २ वह अवस्था जिसमे हर कोई किसी चीज पर लूटने के लिए झपटता है। (पश्चिम)

क्रि० प्र०—मचना।

लोडन—पु०[स० √लोड् (मथन) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० लोडित] १. हिलाने डुलाने या क्षुब्ध करने की क्रिया। २. मथन।

लोडना—स०[पं० लोड=आवश्यकता] आवश्यकता होना। दरकार होना।

लोढना—स०[स० लुचन] १. (पौधों से फूल) नोचना। २ (कपास) ओटना।

लोढ़ा—पु०[स०लोष्ट] [स्त्री० अल्पा० लोढिया] पत्थर का वह लबोतरा टुकडा जिससे सिल पर रखकर चीजे पीसी जाती हैं। बट्टा।

पद—लोढ़ा ढाल=पूरी तरह से चौपट या नष्ट किया हुआ।

मुहा०—लोढ़ा डालना या ढालना=कुचल या पीसकर नष्ट या बरबाद करना।

लोढ़िया—स्त्री०[हिं० लोढा का स्त्री० अल्पा०] छोटा लोढ़ा।

लोढ़ी—स्त्री०[प०]१. मकर संक्रान्ति से पहले वाले दिन का एक त्योहार जिसमे रात के समय अग्नि की पूजा होती है। (पश्चिम) २ उक्त त्योहार के उपलक्ष मे गाये जानेवाले गीत।

लोण—पु०[स०] लोनी साग।

पु० लोन (नमक)।

लोथ—स्त्री०[सं० लोष्ट या लोठ] किसी प्राणी का मृत शरीर। लाश। शव।

मुहा०—(किसी का) लोथ डालना= किसी को मारकर उसका शव जमीन पर गिराना।

लोथड़ा—पु०[हिं० लोथ+डा] शरीर से कटकर अलग गिरा हुआ मास का ऐसा बडा टुकडा जिसमे हड्डी न हो। मास पिंड।

लोथ-पोथ—वि० =लथ-पथ।

लोथारी—स्त्री०[स० लुठन]१ कम पानी मे से नाव को खीचते या धीरे-धीरे खेते हुए किनारे लगाना। (लश०)

लोथारी लंगर—पु०[हिं० लोथारी+हिं० लगर] जहाज का सबसे छोटा लगर जो उस जगह डाला जाता है, जहाँ यह जानना अभिप्रेत होता है कि यह किनारे पर जाने का मार्ग है या नही।

लोद—स्त्री०=लोध (वृक्ष)।

लोदी—पु०[?] पठानों की एक जाति।

लोध—स्त्री०[स० लोध्र]१. पर्वतीय प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का बड़ा पेड जिसकी छाल रगने के काम आती है।

लोधरा—पु०[स० लोध्र] एक प्रकार का तावा।

लोधी—पु०=लोदी।

लोध्र—पु० [स०√ रुध् (रोकना)+रन्, लत्व]१ लोध नामक वृक्ष। २ एक प्राचीन जाति। ३ लोधरा नाम का तावा।

लोध्र-तिलक—पु० [स० प० त० ?] साहित्य मे एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद कहा गया है।

लोन—पु०[स० लवण]१ लवण। नमक।

मुहा०—(किसी चीज को) लोन चराना= नमकीन बनाना। जैसे—आम को लोन चराना। **(किसी का) लोन न मानना**=किसी का उप-

कार न मानना। कृतघ्न होना। (किसी का) लोन निकालना=कृतघ्नता या नमक-हरामी का फल भोगना।
पुं०[अ०] ऋण।

लोन-हरामी—वि०=नमक हराम।

लोना—वि०[हिं० लोन] [भाव० लोनाई] १. नमकीन। सलोना। २. लावण्ययुक्त। सुन्दर।
पुं०१. नमक की तरह का वह सफेद पदार्थ जो सीड के कारण ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि की दीवारों में लगता है। इससे दीवार कमजोर होकर झड़ने लगती है। यह रोग प्राय. नीव की ओर से आरम होता है और क्रमश. ऊपर बढ़ता है। नोना।
क्रि० प्र०—लगना।
२ वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर दीवार से झड़कर गिरती है। यह खाद के रूप मे खेत मे डाली जाती है।
क्रि० प्र०—झड़ना।
३. खार मिली हुई वह मिट्टी जिससे शोरा बनता है। ४. वह क्षार जो चने की पत्तियो पर इकट्ठा होता है, और जिसके कारण उसकी पत्तियाँ चाटने मे खट्टी जान पडती हैं। ५. घोंघे की जाति का एक प्रकार का कीड़ा जो प्राय. नाव के पेंदे मे चिपका हुआ मिलता है। ६. अमलोनी नामक घास जिसका प्रयोग धातु सिद्ध करने मे करते हैं। उदा०—कहाँ सो खोए बीरी लोना।—जायसी।
स० खेत मे की तैयार फसल काटना। लवना।
स्त्री०एक कल्पित चमारी जिसके नाम से ओझा लोग मंत्र आदि पढ़ते हैं।

लोनाई—स्त्री० १.=लुनाई। २.=लवनी।

लोनारा—पु०[हिं० लोन] वह स्थान जहाँ नमक निकलता, बनता या बनाया जाता या मिलता हो।

लोनिका—स्त्री०=अमलोनी (साग)।

लोनिया—स्त्री०=अमलोनी (साग)।
†पु०=नोनियाँ (जाति)।

लोनी—स्त्री०=अमलोनी।

लोप—पु०[सं० √लुप् (काटना)+घञ्] १. किसी चीज के न रह जाने की अवस्था या भाव। जैसे—कार्यों का लोप होना। २. न मिलने की अवस्था या भाव। अभाव। ३. अदृश्य होने की अवस्था या भाव। अदर्शन। ४. व्याकरण के चार प्रधान नियमो मे से एक जिसके अनुसार शब्द के साधन मे कोई वर्ण उड़ा या हटा दिया जाता है।

लोपक—वि०[स०√ लुप्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. लोप करनेवाला। २. बाधक।
पुं० भाँग। विजया।

लोपन—पु०[स०√ लुप्+णिच्+ल्युट्—अन] १ लोपन करने की क्रिया या भाव। २. छिपाना। ३. नष्ट करना। न रहने देना।

लोपना—स०[सं० लोपन] १. लुप्त करना। छिपाना। २. न रहने देना। नष्ट करना। ३. उपेक्षा करना।
अ० लुप्त होना।

लोप-विभ्रम—पुं०[स० तृ० त०] दे० 'भूल-चूक' (हिसाब की)।

लोपांजन—पु० [सं० लोप-अंजन, मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि इस से लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है, उसे कोई देख नही सकता।

लोपा—स्त्री० [सं० √लुप् (काटना)+णिच्+अच्+टाप्] १. विदर्भ नरेश की पालिता कन्या और अगस्त्य की पत्नी। २ अगस्त्य मण्डल के पास उदित होनेवाला एक प्रकार का तारा।

लोपापक—पुं०[सं० लोप-आपक, ष० त०] [स्त्री० लोपापिका] गीदड़। सियार।

लोपामुद्रा—स्त्री० [स० न√मुद्+रा+क+टाप्=अमुद्रा, लोप-अमुद्रा, स० त०] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री जो उन्होंने स्वय सब प्राणियों के उत्तम उत्तम अगो को लेकर बनाई थी और तब विदर्भ राज को सौंप दी थी। युवती होने पर अगस्त्य जी ने इसी से विवाह किया। २. एक तारा जो दक्षिण मे अगस्त्य मडल के पास उदय होता है।

लोपी (पिन्)—वि०[सं० √ लुप्+णिनि] १. लोप करनेवाला। २. छिपानेवाला। नष्ट करनेवाला। ४. जिसका लोप हो सके। जैसे—मध्यम पद लोपी समास।

लोप्ता (प्तृ)—वि०[स० √लुप्+तृच्] लोप करनेवाला।

लोफर—पु०[अं०] १. आवारा। २. लफंगा। ३. टुकड़-गदाई।

लोबान—पुं०[अ०] एक प्रकार के वृक्ष का सुगन्धित गोंद। इसका वृक्ष अफ्रीका के पूर्वी किनारो पर, और अरब के दक्षिणी समुद्र तट पर होता है। यह जलाने के काम के सिवा दवाओ मे भी काम आता है। धूना।

लोबानी—वि० [अ०] १. लोबान संबंधी। लोबान का। २ जिससे लोबान निकलता हो। ३. लोबान के रग का, सफेद।
पुं० लोबान की तरह का सफेद रग।

लोबिया—पु० [अ०] एक प्रकार का बडा सफेद बोडा जिसके बीजो से दाल और दालमोंठ बनाते है।

लोबिया-कंजई—पु० [हिं० लोबिया+कजई] गहरा हरा रग।
वि० उक्त प्रकार के रग का।

लोभ—पु० [स०√ लुभ् (लोभ करना)+घञ्] [वि० लुब्ध, लोभी] १. दूसरे की चीज पाने या लेने की प्रबल कामना या लालसा। २. कुछ प्राप्त करने की ऐसी प्रबल लालसा जिसकी पूर्ति हो जाने पर भी तृप्ति या संतोष न हो। पूरी हो जाने पर भी बनी रहनेवाली कामना या लालसा (ग्रीड)। ३ जैन धर्म मे वह कर्म जिसके फलस्वरूप मनुष्य किसी प्रकार का त्याग नहीं कर सकता। ४ कजूसी। ५ कृपणता।

लोभन—पु० [स० √लुभ+ल्युट्—अन] १. लालच। लोभ। २ सोना। स्वर्ण।

लोभना—अ०[हिं० लोभ] लुब्ध होना। मुग्ध होना। लुभाना। उदा०—भौंर चारो ओर रहे गध लोभि के वार के। —भारतेन्दु।
स० लुब्ध या मुग्ध करना। लुभाना

लोभनीय—वि०[स०√ लुभ्+अनीयर्] १ जिसके प्रति लोभ हो सके। २ लुभानेवाला। मनोहर। आकर्षक।

लोभाना—अ०, स०=लुभना।
*वि०=लुभावनी।

लोभार*—वि०=लुभावना।

लोभित—भू० कृ०[स० √लुभ्+णिच्+क्त] लुभाया हुआ। जो लुब्ध किया गया हो।

लोभी (भिन्)—वि०[स० लोभ+इनि] १ जिसे किसी बात का लोभ

हो। २. जो प्राय. अधिक लोभ करता हो। लालची। ३ लुभाया हुआ। लुब्ध। (ग्रीडी)

लोम्य—वि०[स० √ लुभ्+ण्यत्]=लोभनीय।

लोम—पु०[स० √ लू (छेदन)+मनिन्]१ शरीर पर के छोटे-छोटे बाल। रोऍं। रोम। २. केश। बाल।

पु० [स० लोमश] लोमडी।

लोम-कर्ण—पु०[स० ब० स०] शशक। खरगोश।

लोम-कूप—पु०=रोमकूप।

लोमघ्न—पु०[स० लोमन√हन् (मारना) क] सिर का गज नामक रोग।

वि०=लोम नाशक।

लोमड़ी—स्त्री०[स० लोमटक]१ कुत्ते की तरह का एक जगली हिंसक पशु, जिसकी चालाकी बहुत प्रसिद्ध है। २. लाक्षणिक अर्थ मे, चालाक स्त्री।

लोम-नाशक—वि०[स० प० त०] (औषध या पदार्थ) जिसे लगाने से शरीर के रोऍं या बाल झड़ जाते हो।

लोमपाद—पु०[स० ब० स०] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे। रोमपाद।

लोमपादपुर—पु०[स० प० त०] चपा नगरी (आधुनिक भागलपुर) का एक पुराना नाम।

लोम-विलोम—पु०[स०] साहित्य मे एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे किसी पद या वाक्य की रचना इस प्रकार की जाती है कि सीधी तरह से पढने से तो उसका अर्थ निकलता ही है, उलटी तरह से अर्थात् अन्त से आरम्भ करके पढने पर भी उसका कुछ भिन्न अर्थ निकलता है। जैसे—'चीर मवे निमि काल फलै' को उलटी तरह से पढें तो रूप होगा।—लै फल कामिनि वेम रची।

लोमश—पु०[स० लोमन्+श] १ एक ऋषि जिन्हे पुराणो मे अमर माना गया है। महाभारत के अनुसार ये युधिष्ठिर के साथ तीर्थयात्रा को गये थे और उन्हे सब तीर्थों का वृत्तान्त इन्होंने बतलाया था। २ भेडा। मेष।

वि० बडे बडे रोमो या रोओवाला।

लोमश-मार्जार—पु०[सं० कर्म स०] गध-विलाव।

लोमशा—स्त्री०[स०] १. वैदिक काल की एक स्त्री जो कई मत्रो की रचयिता मानी जाती है। २.काक-जघा। ३. वच। ४ अति-बला। ५ केवांच।

लोमस—पु०=लोमश।

लोमहर्षक—वि०=रोमहर्षक।

लोम-हर्षण—पुं०[स० प० त०] १. पुराणों के अनुसार व्यास के एक शिष्य का नाम जो उग्रस्रवा के पुत्र थे। इन्ही को सूत भी कहते हैं। २. रोमाच।

वि०=रोम-हर्षक।

लोमांच—पु०=रोमाच।

लोमावली—स्त्री०[सं० लोमन्-आवली, प० त०]=छाती से नाभि तक उगे हुए बालो की पक्ति।

लोमाश—पु०[स० लोमन्√अश् (भोजन)+अण्] [स्त्री० लोमाशिका] गीदड़। शृगाल।

लोय—पु०[स० लोक] लोग।

पुं०=लोयन(लोचन)।

†स्त्री०=लौ (लपट)।

†अव्य०=लौ (तक)।

लोयन—पु०[?] लासा, जिससे चिड़िया फँसाई जाती है।

लोर—वि० [सं० लोल] १. लोल। चचल। २. अभिलाषी। उत्सुक।

पु०[स० लोल] १. कान का कुडल। २. लटकन।

पुं०=रोर। (शब्द)।

लोरना—अ०[स० लोल] १. चंचल होना। २. इधर-उधर झुलना, लहराना या हिलाना। ३. पाने के लिए उत्सुक होना। ललचना। ४. पाने के लिए तेजी से आगे बढ़ना। लपकना। ५. लिपटना। ६. झुकना। ७. लोटना।

स० १. चलायमान या चंचल करना। २. हिलाना-डुलाना। ३. नत करना। झुकाना। ४. किसी को नम्र अथवा विनीत करना अथवा बनाना।

स०[?] निर्मल या स्वच्छ करना। उदा०—हमरा जीवन निरु लोरै। —कबीर।

लोरिक—पुं०[?] १. उत्तर प्रदेश मे प्रचलित एक गीत-कथा का नायक जो आभीर जाति का था, और जिसका प्रेम किसी दूसरे आभीर की चन्दा नामक पत्नी से हो गया था। २. प्रेमी।

लोरी—स्त्री०[स० लाल] वे गीत जो स्त्रियां छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं। ललवी।

पुं०[?] एक प्रकार का तोता।

लोल—वि० [सं०√लोड् (विक्षिप्त होना)+अच्, ड—ल.] १. हिलता हुआ। कंपायमान। २. चंचल। ३. परिवर्तनशील। ४. क्षणिक। ५. उत्सुक।

पु०१. समुद्र मे उठनेवाली बहुत बड़ी तथा ऊँची लहर। २. लिंगेन्द्रिय।

स्त्री०[?] चोच।

लोलक—पु०[स० लोल से] १. नथ, बाली आदि मे पिरोया जाने वाला लटकन। लटकन। २. कान की लौ। लोलकी। ३ घटों या घटे के बीच लगा हुआ वह लटकन जो हिलाने से इधर-उधर टकराकर शब्द उत्पन्न करता है।

लोल-कर्ण—वि०[स० ब० स०] जो हर किसी की बात सुनकर सहज में ही उस पर विश्वास कर लेता हो। कान का कच्चा।

लोलकी—स्त्री०[हिं० लोलकी] कान के नीचे का वह कोमल भाग जिसमे छेद करके कुण्डल, बाली आदि पहनते है।

लोल-जिह्व—वि०[सं० ब० स०] लालची। लोभी।

पु० सॉंप।

लोल-दिनेश—पु०[सं० कर्म० स०] लोलार्क।

लोलना—अ०[सं० लोल] इधर-उधर लहराना या हिलना-डुलना।

लोला—स्त्री०[सं० लोल+टाप्] १. जिह्वा। जीभ। २. लक्ष्मी। ३. मधु नामक दैत्य की माता। ४. एक योगिनी। ५ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, सगण, मगण, भमण और अत मे दो गुरु होते हैं। ६. एक प्रकार का छोटा डंडा जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

लोलार्क—पु०[सं० लोल-अर्क, कर्म० स०] बारह आदित्यों मे से एक आदित्य।

लोलित—भू० कृ० [स०√लुल् (विमर्दन)+घञ् =लोल+इत्] १. हिला या हिलाया हुआ। २ क्षुब्ध।

लोलिनी—स्त्री०[सं० लोल+इनि-ङीप्] चचल या चपल स्त्री।

लोलुप—वि० [सं०√लुभ्+यङ, लुक्, द्वित्वादि+अतच्] [भाव० लोलुपता] १ लोभी। लालची। २. चटोरा। ३ परम उत्सुक। जैसे—युद्ध-लोलुप।

लोलुपता—स्त्री०[स० लोलुप+तल्+टाप्] लोलुप होने की अवस्था या भाव।

लोलुपत्व—पु० [सं० लोलुप+त्व]=लोलुपता।

लोवा—स्त्री०=लोमड़ी।

स्त्री०[स० लोपाक] लोमडी।

पुं०=लवा (पक्षी)।

लोशन—पु०[अ०] घोल।

लोष्ट—पु०[स०√लोष्ट् (ढेर करना)+घञ्] १. पत्थर। २. मिट्टी आदि का ढेला। ३. चित्र का काम देनेवाली कोई वस्तु। ४ लोहे मे लगनेवाला जग। मोरचा।

लोष्टघ्न—पुं०[स० लोष्ट√हन्+क] खेतो मे मिट्टी के ढेले तोडने का पटेला। पाटा।

लोष्ट-लोह—पु०[स० उपमित स०] दे० 'कच्चा लोहा'।

लोहंडा—पु०[सं० लौह-भाड] [स्त्री० लोहँडी] लोहे का एक प्रकार का वडा तसला।

लोह—पु०[सं०√लू (छेदन)+ह (करण)] १. लोहा नामक धातु। २. रक्त। लहू। ३ लाल बकरा। ४. मछली फँसाने का काँटा। ५ हथियार। ६. अगर।

वि० ताँबे के रंग का, लाल। २. लोहे का बना हुआ।

लोहकार—पु०[स० लोह√कृ (करना)+अण्, उप० स०] लोहार।

लोह-किट्ट—पु० [स० ष० त०] लोह चून। (दे०)

लोह-चून—पु०[स० लोह+चूर्ण] १. लोहे की मैल जो गलाने पर निकलती है। लोह किट्ट। २ लोहे को काटने, रेतने आदि पर निकलनेवाले उनके छोटे छोटे कण।

लोह-जाल—पु०[स० मध्य० स०] १. लोहे की बनी हुई जाली या जाल। २ योद्धाओ के पहनने का झिलम। ३ आज-कल बीच मे खडा किया हुआ ऐसा आवरण या व्यवस्था जिसके कारण अन्दर की स्थिति आदि का बाहर वालो को पता न चल सके। (आयरन कर्टेन)

लोहड़ा—पु०=लोढा।

पु०=लोहँडा।

लोहड़ी—स्त्री०=लोढी (त्योहार)।

लोहद्रावी (विन्)—पु०[स० लोह√द्रु (गति)+णिच्+णिनि] १. सुहागा। २ अम्लवेत।

लोह-नाल—पु० [स० ब० स०] नाराच (अस्त्र)।

लोह-पाश—पु०[स० मध्य० स०] लोहे की जजीर या सिक्कड।

लोह बंदा—पु० दे० 'लोहाँगी।

लोहबान—पु०=लोहबान।

पुं०[हिं० लोहा] युद्ध।

लोह-लगर—पु०[हिं० लोहा+लगर] १. जहाज का लगर। २ बहुत भारी वस्तु।

लोह-शंकु—पु०[स० ष० त०] १. लोहे का काँटा। २ एक नरक।

लोहस—वि० [स० लोह से] (द्रव्य) जिसमे लोहे का भी कुछ अश या मेल हो। (फेरस)

लोहसार—पु०[स० ष० त०] १ पक्का लोहा। फौलाद। २ फौलाद की जंजीर।

लोहाँगी—स्त्री०[हिं० लोहा+अंग+ई] ऐसी लाठी जिसके ऊपरी या निचले अथवा दोनो सिरो पर लोहा लगा हो। (इसका प्रयोग प्राय मार-पीट के लिए होता है।

लोहा—पु०[स० लोह] १. प्राय. काले रग की एक प्रसिद्ध धातु जिससे अनेक प्रकार के अस्त्र, उपकरण बरतन, यंत्र आदि बनाये जाते है। (आयरन)

पद—लोहे की स्याही, लोहे के चने। (दे० स्वतत्र पद)

२ उक्त धातु से बने हुए अस्त्र जो युद्ध मे शत्रुओ को काटने-मारने के काम आते हे। जैसे—कटार, तलवार, भाला, आदि।

मुहा०—लोहा गहना=किसी से लड़ने के लिए हथियार उठाना। लोहा बजना—तलवारो, भालो आदि से युद्ध या लडाई होना। मार-काट होना। लोहा बरसना=युद्ध-क्षेत्र मे अस्त्रो आदि का बहुत अधिकता से उपयोग होना। घमासान युद्ध होना। (किसी का) लोहा मानना=किसी काम या बात मे किसी की योग्यता, शक्ति आदि की श्रेष्ठता स्वीकृत करते हुए उसके सामने झुकना या दबना, और उसे अपने से अधिक योग्य या शक्तिशाली समझना। (किसी से) लोहा लेना=(क) किसी से डटकर मार-पीट युद्ध या लडाई करना। (ख) किसी के सामने आकर उसके बल, योग्यता आदि का मुकाबला करना। टक्कर लेना। भिड़ना। लोहा सहना =लोहा लेना। (राज०)

३. लोहे का बना हुआ कोई उपकरण। लोहे की चीज या सामान। जैसे—लोहे का रोजगार लोहे की दूकान। ४ लाल रग का बैल।

वि०[स्त्री० लोही] १ लाल। २ बहुत अधिक कठोर या कडा।

लोहाना—अ० [हिं० लोहा+आना (प्रत्य०)] किसी चीज का अधिक समय तक लोहे के बरतन मे रखे रहने के कारण लोहे के गुण, रग, स्वाद आदि से युक्त होना।

पु० वैश्यो की एक जाति।

लोहार—पु०[सं० लौहकार] [स्त्री० लोहारिन या लोहाइन] एक जाति जो लोहे की चीजें बनाने का काम करती है।

लोहारखाना—पु०[हिं० लोहार+फा० खानः] वह स्थान जहाँ बैठकर लोहार लोग लोहे की चीजें बनाते हैं।

लोहारी—स्त्री०[हिं० लोहार+ई (प्रत्य०)] लोहार अथवा लोहे की चीजें बनाने का काम या पेशा।

लोहा सारंग—पु० [हिं०] लगलग की जाति का एक प्रकार का पक्षी।

लोहित—वि० [स०√रुह् (उगना)+इतन्, र—ललम्] १. लाल रग का। लाल। २ ताँबे का बना हुआ।

पु० १. लाल रंग। २. लाल चन्दन। ३. मंगल ग्रह। ४. साँप। ५.

एक तरह का हिरन। ६. ब्रह्मपुत्र नद। ७ पलक-संबंधी एक रोग। ८ गौतम बुद्ध का एक नाम।

लोहितक—पु०[स० लोहित+कन्] १ पद्मराग या लाल की तरह का एक प्रकार का घटिया रत्न। २. फूल नामक धातु। ३ आधुनिक रोहतक नगर का पुराना नाम। ४. दे० 'लोहित'।

लोहित-चंदन—पु०[स० उपमित स०] केसर।

लोहित-मृत्तिका—स्त्री०[स० कर्म० स०] गेरू।

लोहित सागर—पु० [स०] अफरीका और अरब के बीच का वह समुद्र जो पहले भू-मध्य सागर से पृथक् था, पर अब बीच मे स्वेज की नहर बन जाने से उक्त सागर के साथ सबद्ध हो गया। (रेड सी)

लोहितांग—पुं०[सं० लोहित-अग, ब० स०] १. मगल ग्रह। २. कांपिल्ल वृक्ष।

लोहिताक्ष—पु० [सं० लोहित-अक्षि, ब० स०,+षच्] १. एक तरह का सांप। २ कोयल। ३ विष्णु। ४ कांख। कोख। ५. चूतड। नितंब।

लोहिताक्षक—पु० [सं०] एक तरह का सांप।

लोहिताश्व—पु० [स० लोहित-अश्व, ब० स०] १. अग्नि। २. शिव।

लोहितिमा (मन्)—स्त्री० [स० लोहित+इमनिच्] रग के विचार से लोहित होने की अवस्था या भाव। लालिमा। लाली।

लोहितोद—पु० [स० लोहित-उदक, ब० स०, उदादेश] एक नरक। (पुरा०)

लोहित्य—पु०[सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २ पुराणानुसार एक समुद्र जो कुश द्वीप के पास है। ३ एक प्राचीन जनपद या वस्ती।

लोहिनी—स्त्री०[स० लोहित+ङीप्, न—आदेश] लाल वर्णवाली स्त्री।

लोहिया—वि०[हिं० लोहा+इया (प्रत्य०)] १. लोहे का बना हुआ। २ लाल रंग का। जैसे—लोहिया घोडा।

पु० १ लोहे की चीजो का व्यापार करनेवाला व्यक्ति। लोहे का रोजगारी। २. राजस्थानी वैश्यो की एक जाति। ४. लाल रग का बैल।

लोही—वि०[सं० लोहित्] [स्त्री० लोहिनी] लाल रग का। सुर्ख।

†स्त्री०[स० लोह] प्रभात के समय की लाली।

मुहा०—लोही फटना=प्रभात के समय सूर्य की किरणो की लाली दिखाई देना। पौ फटना।

†स्त्री० १. =लोई (चुगली) २. =लोई (ऊनी चादर)।

लोहू—पुं०=लहू (रक्त)।

लोहे की स्याही—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का काला रग जो शीरे मे लोह-चून का खमीर उठाकर बनाई जाती और कपड़ो की छपाई, रँगाई आदि में काम आती है।

लोहे के चने—पु० [हिं०] बहुत ही कठिन, दुष्कर तथा श्रम-साध्य काम।

मुहा०—लोहे के चने चबाना=उतना ही दुस्साध्य तथा लगभग असंभव कार्य करना जितना लोहे के चने चबाना होता है।

लोहोत्तम—पु०[सं० लोह-उत्तम, स० त०] सोना।

लोह्य—पु०[स०] पीतल।

लौं—अव्य०[हिं० लग का स्थानिक रूप] १. तक। पर्यंत। २. तुल्य। बराबर। समान। ३. किसी की तरह या भांति। (ब्रज०)

लौंकड़ा—पु०[?] अविवाहित नव-युवक। कुँआरा जवान।

पद—लौंकड़ा बीर=हनुमान।

लौंकना—अ०=लौकना (दिखाई पड़ना)।

लौंग—पु० [स० लवंग] १. एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिणी भारत, जावा, मलाया आदि मे अधिकता से होता है। २. उक्त वृक्ष की कली जो खिलने से पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है और मसालों तथा दवाओं में सुगन्धि तथा गुण के लिए मिलाकर काम में लाई जाती हैं। ३ उक्त कली के आकार-प्रकार का आभूषण जो नाक तथा कान में पहना जाता है।

लौंग-चिड़ा—पु०[हिं० लौंग+चिड़ा=चिड़िया] एक प्रकार का कबाब जो बेसन मिलाकर बनाया जाता है। २. आग पर सेंककर फुलाई हुई रोटी। फुलका।

लौंग-मुश्क—पु०[हिं० लौंग+मुश्क] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

लौंगरा—पु०[हिं० लौंग] एक तरह का साग जिसमें लौंग की तरह की कलियाँ लगती हैं।

लौंग-लता—स्त्री०[स० लवंग-लता] समोसे के आकार की मैदे की एक तरह की मिठाई जिसमें खोआ भरा रहता तथा ऊपर से लौंग भी खोंसा जाता है।

लौंगिया—वि०[हिं० लौंग] १. लौंग की तरह का छोटा पतला और लंबा। जैसे—लौंगिया फूल, लौंगिया मिर्च। २ लौंग (कली) के रंग का।

पुं० कुछ मटमैलापन लिये एक प्रकार का काला रंग। (क्लोव)

लौंगिया मिर्च—स्त्री०[हिं०लौंग+मिर्च] एक प्रकार की बहुत कड़वी मिर्च जिसका पौधा बहुत बडा और फल लौंग के आकार के छोटे छोटे होते हैं। मिरची।

लौंजी—स्त्री० [सं० लून=काटा हुआ] आम की फाँक जो अचार चटनी आदि के काम आती है।

†स्त्री०—न्योजी।

लौंठा—पुं०[हिं० लुआठा] ऐसा हृष्ट-पुष्ट नवयुवक जिसे कुछ भी बुद्धि या समझ न हो।

लौंडा—पु०[?] [स्त्री० लौंडी, लौंडिया] १. छोकरा। बालक। लड़का २. अबोध और नासमझ अथवा छिछोरा नव-युवक। ३ ऐसा लड़का जिसके साथ लोग अस्वाभाविक मैथुन करते हों।

लौंडापन—पु०[हिं० लौंडा+पन (प्रत्य०)] १. लौंडा होने की अवस्था या भाव। २. ऐसी नासमझी जिसमे छिछोरापन या लड़कपन भी मिला हो।

लौंडी—स्त्री०[हिं० लौंडा+ई (प्रत्य०)] १. वह बालिका या स्त्री जो दूसरो के यहाँ छोटे छोटे काम करने के लिए नौकर हो। दासी।

लौंडेबाज—वि०[हिं० लौंडा+फा० बाज] [भाव लौंडेबाजी] १. (पुरुष) जो बालकों के साथ प्रकृति विरुद्ध सभोग करता हो। २ (स्त्री) जो नव-युवको से प्रेम रखती हो। (बाजारू)

लौंडेबाजी—स्त्री०[हिं० लौंडा+फा० बाजी] १. लौंडेबाज होने की अवस्था या भाव। २. लौंडेबाज का अप्राकृतिक कार्य।

लौंडो-घेरी—स्त्री०[हिं० लौंडा+घेरना] ऐसी दुश्चरित्रा स्त्री जिसके पास प्राय नवयुवक आते-जाते रहते हों।

लौंद—पु०[?] अधिमास। मलमास।

लौंदरा—पु०[हिं० लव=वालू] वह पानी जो ग्रीष्म ऋतु मे वर्षा आरम्भ होने के पूर्व बरसता है। लवद। दौंगरा।

लौंन—पु०=लौंदा।

लौंदी—स्त्री०[देश०] वह करछी जिससे खँडसार के शीरे का पाग चलाया जाता है। (बुंदेल०)

लौंन—पु०१. =लवन। २. =लौद। ३. =लोन (नमक)।

लौ—स्त्री०[स० लयी] १. आग की लपट। ज्वाला। २ दीपो की टेम। दीप-शिखा।
स्त्री० दे० 'लगन'।
क्रि० प्र०—लगना।

लौआ—पु०[स० लावुक] कद्दू। घीआ।

लौकना—अ० [स० लोकन] १. चमकना। उदा०—होइ अँधियार बीजु खग लौ कै जबहि चीरगहि झांपु।—जायसी। २. आँखो मे चकाचौंध होना। ३. दिखाई पडना। ४. लपलपाना (जीभ का)।

लौकांतिक—पु०[स०] पाँचवे स्वर्ग मे वास करनेवाला जीव। (जैन)

लौका—पु०[सं० लावुक] [स्त्री० लौकी] कद्दू।
†स्त्री०[हिं० लौकना] १. चमक। दीप्ति। २ कांति। शोभा।

लौकायतिक—पु०[स० लोकायत+ठक्—इक] १. लोकायत (दर्शन) का अनुयायी। २. नास्तिक।

लौकिक—वि०[सं० लोक+ठक्—इक] १. लोक-सबंधी। २. इस लोक अर्थात् पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाला। ऐहिक। सांसारिक। ३. लोक-व्यवहार से सबध रखने वाला। व्यावहारिक।
पु० सात मात्राओ के छदों की सज्ञा।

लौकिक-विवाह—पुं०[स० कर्म० स०] धर्म, सम्प्रदाय आदि का विचार छोड़कर केवल कानून या विधि द्वारा निश्चित नियमो के अनुसार होने-वाला विवाह। (सिविल मैरेज)

लौकी—स्त्री०[स० लावुक] १. कद्दू। घीआ। २. भभके मे लगाई जाने वाली वह नली जिससे शराब चुआई जाती है।

लौक्य—वि० [सं० लोक+ष्यञ्] १. लोक-सबधी। लौकिक। २ सब जगह समान रूप से पाया जानेवाला या होनेवाला। सामान्य।

लौछार—स्त्री०[हिं० बौछार] १. कटाक्ष, व्यग आदि की हलकी रंगत या पुट। जैसे—इसमें हास्य रस की अच्छी लौछार है। २. किसी पर किया जानेवाला कटाक्ष या व्यग्य। जैसे—उनकी बातो मे कई आद-मियो पर लौछार था।

लौज—पु०[अ० लौज] १. बादाम। २. पिसे हुए बादाम की एक प्रकार की बरफी।

लौ-जोरा—पु०[हिं० लौ+जोडना] आग की लौ या लपट की सहायता से धातुओ के टुकडे जोडनेवाला कारीगर।

लौट—स्त्री०[हिं० लौटना] १. लौटने की क्रिया या भाव। २. लौटे अर्थात् उलटे किये अथवा घुमाए हुए होने की अवस्था या भाव। घुमाव।

लौटना—अ० [हिं० उलटना] १. एक स्थान से किसी दिशा मे जाकर फिर उसी स्थान पर वापस आना। जैसे—शहर या विदेश से घर लौटना। २. पीछे की ओर घूमना। मुड़ना। ३. किसी को काम चलाने के लिए दी हुई चीज का वापस मिलना।
स०=उलटना (पलटना)।

लौट-पौट—स्त्री०[हिं०लौट+(अनु०)पौट] १. कपडे आदि की ऐसी छपाई जिसमे दोनो ओर एक से बेल-बूटे दिखाई पडे। वह छपाई जिसमे उलटा सीधा न हो। दो-रुखी छपाई। २ उलटने-पलटने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०=लोट-पोट।

लौट-फेर—पु०[हिं० लौट+फेर] १ इधर का उधर हो जाना। २ बहुत बडा परिवर्तन। उलट-फेर।

लौटान—स्त्री०[हिं० लौटना] लौटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

लौटाना—स०[हिं० लौटना का स०] १. जो कही से आया हो, उसे लौटने अर्थात् वही जाने मे प्रवृत्त करना। जो जहाँ से आया हो, उसे वही वापस भेजना। जैसे—किसी के नौकर को जवाब देकर लौटाना। २. किसी से ली हुई चीज उसे वापस करना या देना। जैसे—दुकानदार के यहाँ से आई हुई चीज लौटाना।
संयो० क्रि०—देना।
†स०=उलटना।

लौटानी—स्त्री०[हिं० लौटना] लौटने की क्रिया या भाव।
पद-लौटानी मे=लौटते समय। लौटती बार।

लौड़ा—पु०[स० लोल या हिं० लड] पुरुष की मूत्रेन्द्रिय। लिंग।

लौद, लौदरा—पुं०[स०नव=डाली] [स्त्री०लौदड़ी, लौदरी] अरहर आदि की नरम डाली जिससे छानी छाने का काम लेते हैं। (दुआब व अंतर्वेद)

लौन*—पु०[सं० लवण] नमक।
मुहा०—(किसी का) **लौन मानना**=जिसने पालन-पोषण किया हो, उसके प्रति कृतज्ञ या निष्ठ रहना। उदा०—बडे भए तब लौन मानि यह जहँ तहँ चलत भगाई।—सूर। (उक्त पद मे यह मुहा० व्यंग्यात्मक रूप से आया है।)

लौनहार—पु०[हिं० लौन+हार (प्रत्य०)] [स्त्री० लौनहारिन] खेत काटनेवाला। लवनी या लौनी करनेवाला।

लौना—स० [स० लवन] खेत की फसल काटना। लवना।
स्त्री०=लवनी।
पु०[?] जलाने की लकडी। ईंधन।
पु०[स० लूम या रोम] वह रस्सी जिसमे किसी पशु को भागने से रोकने के लिए उसका एक अगला और एक पिछला पैर बांधा जाता है।

लौनी—स्त्री०[हिं० लौना] १ फसल की कटनी। कटाई। लवनी। २. फसल के कटे हुए डठलो का मुट्ठा।
†स्त्री०[सं० नवनीत] मक्खन।

लौमना—पु०=लौना।

लौमनी—स्त्री० १ =लौना। २.=लौनी।

लौरी—स्त्री०[?] बछिया।

लौल्य—पु०[स० लोल+ष्यञ्] १. लाल होने की अवस्था या भाव। लोलता। चचलता। २. लालच। लोभ।

लौस—पु०[फा०] १. किसी काम या बात मे लिप्त होना। लीनता। २ मिलावट। २ धब्बा। ४. लगाव। सम्पर्क।

लौह—पु०[सं० लोह+अण्] १. लोहा। २ शस्त्रास्त्र।
वि० लोहे का। लौह-सबधी।
स्त्री०[अ०] १. तख्ती। २. पुस्तक का पृष्ठ।

लौहकार—पु०[सं० लौह√कृ+अण्] लोहार।

लौहज—वि० [सं० लौह√जन् (उत्पत्ति)+ड] लोहे से निकला या बना हुआ।

लौह-पट—पुं० [सं० मध्य स०] १ लोहे का परदा। २ ऐसी व्यवस्था जिसकी आड़ में होनेवाली बातें किसी प्रकार दूसरों पर प्रकट न हो सकती हों। (आयरन कर्टेन)

लौह-युग—पुं० [सं० मध्य० स०] संस्कृति के इतिहास में वह युग जब उपकरण तथा अस्त्र-शस्त्र लोहे के ही बनने थे। अन्य धातुओं का आविष्कार नहीं हुआ था। (आयरन एज)

लौह-सार—पुं० [सं० ष० त०] रासायनिक प्रक्रिया से बनाया हुआ एक प्रकार का लवण जो लोहे से बनाया जाता है और ओषधियों में काम आता है।

लौहाचार्य—पुं० [सं० लौह-आचार्य, ष० त०] धातुओं के तत्त्व जानने वाला। वह जो धातु-विद्या का अच्छा ज्ञाता हो।

लौहासव—पुं० [सं० लौह-आसव, मध्य० स०] लोहे के योग से बनाया जानेवाला आसव।

लौहिक—वि० [सं० लौह+ठक्—इक] १ लोहे का बना हुआ। लोहे का। २. लोहे से संबंध रखनेवाला। ३. दे० 'लौहज'।

लौहित—पुं० [सं० लोहित+अण्] शिव का त्रिशूल।

लौहिताश्व—पुं० [सं० लोहिताश्व+अण्] १. अग्नि। २ शिव।

लौहित्य—पुं० [सं० लोहित+ष्यञ्] १. एक प्रकार का धान जिसके चावल प्रदेश लाल रंग के होते हैं। २. ब्रह्मपुत्र नद। ३. बरमा की सीमा पर स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम। ५. लाल समुद्र या लाल सागर का पुराना नाम।

ल्याना—स० =लाना। (पश्चिम)

ल्यारी—पुं० [देश०] भेड़िया।

ल्यौ—स्त्री० =लौ।

ल्वारि—स्त्री० =लुआर (लू)।

ल्हासा—पुं० =लासा।

ल्हीक—स्त्री० १. =लीख। २. =लीक

ल्हेसना—अ०, स० =लगना (चिपकाना)।

ल्हेसित—वि० =लेहसित (फबनेवाला)।